

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

—≡ ग्रन्थ-सूची ≡—

[चतुर्थ भाग]

(जयपुर के बारह जैन ग्रंथ भण्डारों में संग्रहीत दस हजार से अधिक ग्रंथों की सूची, १८०
ग्रंथों की प्रशस्तियां तथा ४२ प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों का परिचय सहित)

भूमिका लेखक:—

डा० वासुदेव शरण अग्रवाल

अध्यक्ष हिन्दी विभाग, काशी विश्व विद्यालय, वाराणसी



सम्पादक:—

डा० कस्तूरचंद कासलीवाल

एम. ए. पी-एच. डी., शास्त्री

पं० अनूपचंद न्यायतीर्थ

साहित्यरत्न



प्रकाशक :—

केशरलाल बरुशी

मंत्री :—

प्रबन्धकारिणी कमेटी

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी

महावीर भवन, जयपुर

पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

१. मंत्री श्री दिगम्बर जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी
महावीर भवन, सवाई मानसिंह हाईवे, जयपुर (राजस्थान)
२. मैनेजर दिगम्बर जैन अ० क्षेत्र श्री महावीरजी
श्री महावीरजी (राजस्थान)



प्रथम संस्करण

५०० प्रति

महावीर जयन्ति

वि० सं० २०१९

अप्रैल १९६२



मुद्रक :—

भैरवलाल न्यायतीर्थ

श्री वीर प्रेस, जयपुर ।

★ विषय-सूची ★

१ प्रकाशकीय	पत्र संख्या १-२
२ भूमिका	३-४
३ प्रस्तावना	५-२३
४ प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों का परिचय	२४-४८
५ " " विवरण	४९-५६
६ विषय		पत्र संख्या
१ सिद्धान्त एवं चर्चा	१-४७
२ धर्म एवं आचार शास्त्र	४८-६८
३ अध्यात्म एवं योगशास्त्र	६९-१२८
४ न्याय एवं दर्शन	१२९-१४१
५ पुराण साहित्य	१४२-१५६
६ काव्य एवं चरित्र	१६०-२१२
७ कथा साहित्य	२१३-२५६
८ व्याकरण साहित्य	२५७-२७०
९ कोश	२७१-२७८
१० ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान	२७९-२९५
११ आयुर्वेद	२९६-३०७
१२ चन्द्र एवं अलंकार	३०८-३१५
१३ संगीत एवं नाटक	३१६-३१८
१४ लोक विज्ञान	३१९-३२३
१५ सुभाषित एवं नीति शास्त्र	३२४-३४६
१६ मंत्र शास्त्र	३४७-३५२
१७ काम शास्त्र	३५३
१८ शिल्प शास्त्र	३५४

	पत्र संख्या
१६ लक्षण एवं समीक्षा	३५५-३५६
२० फागु रासा एवं वेलि साहित्य	३६०-३६७
२१ गणित शास्त्र	३६८-३६९
२२ इतिहास	३७०-३७८
२३ स्तोत्र साहित्य	३७९-४५२
२४ पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य	४५३-५५६
२५ गुटका संग्रह	५५७-७६६
२६ अवशिष्ट साहित्य	७६६-८००
७ ग्रंथानुक्रमणिका	८०१-८८४
८ ग्रंथ एवं ग्रंथकार	८८५-९२८
९ शासकों की नामावलि	९२९-९३०
१० ग्राम एवं नगरों की नामावलि	९३१-९३६
११ शुद्धाशुद्धि पत्र	९४०-९४३



★ प्रकाशकीय ★

ग्रंथ सूची के चतुर्थ भाग को पाठकों के हाथों में देते हुये मुझे प्रसन्नता होती है। ग्रंथ सूची का यह भाग अब तक प्रकाशित ग्रंथ सूचियों में सबसे बड़ा है और इसमें १० हजार से अधिक ग्रंथों का विवरण दिया हुआ है। इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भंडारों के ग्रंथों की सूची दी गई है। इस प्रकार सूची के चतुर्थ भाग सहित अब तक जयपुर के १७ तथा श्री महावीरजी का एक, इस तरह १८ भंडारों के अनुमानतः २० हजार ग्रंथों का विवरण प्रकाशित किया जा चुका है।

ग्रंथों के संकलन को देखने से पता चलता है कि जयपुर प्रारम्भ से ही जैन साहित्य एवं संस्कृति का केन्द्र रहा है और दिगम्बर शास्त्र भंडारों की दृष्टि से सारे राजस्थान में इसका प्रथम स्थान है। जयपुर बड़े बड़े विद्वानों का जन्म स्थान भी रहा है तथा इस नगर में होने वाले टोडरमल जी, जयचन्द जी, सदासुखजी जैसे महान् विद्वानों ने सारे भारत के जैन समाज का साहित्यिक एवं धार्मिक दृष्टि से पथ-प्रदर्शन किया है। जयपुर के इन भंडारों में विभिन्न विद्वानों के हाथों से लिखी हुई पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई हैं जो राष्ट्र एवं समाज की अमूल्य निधियों में से हैं। जयपुर के पाटोदी के मन्दिर के शास्त्र भंडार में पं० टोडरमल जी द्वारा लिखे हुये गोम्मट्टसार जीवकांड की मूल पाण्डुलिपियां प्राप्त हुई हैं जिसका एक चित्र हमने इस भाग में दिया है। इसी तरह ब्रह्म रायमल्ल, जोधराज गोदीका, खुशालचंद आदि अन्य विद्वानों के द्वारा लिखी हुई प्रतियां हैं।

इस ग्रंथ सूची के प्रकाशन से भारतीय साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य को कितना लाभ पहुँचेगा इसका सही अनुमान तो विद्वान् ही कर सकेंगे किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इस भाग के प्रकाशन से संस्कृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी की सैकड़ों प्राचीन एवं अज्ञात रचनायें प्रकाश में आयी हैं। हिन्दी की अभी १३ वीं शताब्दी की एक रचना जिनदत्त चौपई जयपुर के पाटोदी के मन्दिर में उपलब्ध हुई है जिसको संभवतः हिन्दी भाषा की सर्वाधिक प्राचीन रचनाओं में स्थान मिल सकेगा तथा हिन्दी साहित्य के इतिहास में वह उल्लेखनीय रचना कहलायी जा सकेगी। इसके प्रकाशन की व्यवस्था शीघ्र ही की जा रही है। इससे पूर्व प्रद्युम्न चरित की रचना प्राप्त हुई थी जिसको सभी विद्वानों ने हिन्दी की अपूर्व रचना स्वीकार किया है।

उक्त सूची प्रकाशन के अतिरिक्त क्षेत्र के साहित्य शोध संस्थान की ओर से अब तक ग्रंथ सूची के तीन भाग, प्रशस्ति संग्रह, सर्वार्थसिद्धिसार, तामिल भाषा का जैन साहित्य, Jainism a key to true happiness. तथा प्रद्युम्नचरित आठ ग्रंथों का प्रकाशन हो चुका है। सूची प्रकाशन के अतिरिक्त राजस्थान के विभिन्न नगर, कस्बे एवं गांवों में स्थित ७० से भी अधिक भंडारों की ग्रंथ सूचियां बनायी जा

चुकी हैं जो हमारे संस्थान में हैं, तथा जिनसे विद्वान एवं साहित्य शोध में लगे हुये विद्यार्थी लाभ उठाते रहते हैं। ग्रंथ सूचियों के साथ २ करीब ४०० से भी अधिक महत्वपूर्ण एवं प्रचीन ग्रंथों की प्रशस्तियां एवं परिचय लिये जा चुके हैं जिन्हें भी पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने की योजना है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी पद भी इन भंडारों में प्रचुर संख्या में मिलते हैं। ऐसे करीब २००० पदों का हमने संग्रह कर लिया है जिन्हें भी प्रकाशित करने की योजना है तथा संभव है इस वर्ष हम इसका प्रथम भाग प्रकाशित कर सकें। इस तरह खोज पूर्ण साहित्य प्रकाशन के जिस उद्देश्य से क्षेत्र ने साहित्य शोध संस्थान की स्थापना की थी हमारा वह उद्देश्य धीरे धीरे पूरा हो रहा है।

भारत के विभिन्न विद्यालयों के भारतीय भाषाओं मुख्यतः प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश हिन्दी एवं राजस्थानी भाषाओं पर खोज करने वाले सभी विद्वानों से निवेदन है कि वे प्राचीन साहित्य एवं विशेषतः जैन साहित्य पर खोज करने का प्रयास करें। हम भी उन्हें साहित्य उपलब्ध करने में दत्तशक्ति सहयोग देंगे।

ग्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के जिन जिन शास्त्र भंडारों की सूची दी गई है मैं उन भंडारों के सभी व्यवस्थापकों का तथा विशेषतः श्री नाथूलालजी बज, अनूपचंदजी दीवान, पं० भंवरलालजी न्यायतीर्थ, श्रीराजमलजी गोधा, समीरमलजी झावड़ा, कपूरचंदजी रांवका, एवं प्रो. सुल्तानसिंहजी जैन का आभारी हूँ जिन्होंने हमारे शोध संस्थान के विद्वानों को शास्त्र भंडारों की सूचियां बनाने तथा समय समय पर वहां के ग्रंथों को देखने में पूरा सहयोग दिया है। आशा है भविष्य में भी उनका साहित्य सेवा के पुनीत कार्य में सहयोग मिलता रहेगा।

हम श्री डा० वासुदेव शरणजी अग्रवाल, हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी के हृदय से आभारी हैं जिन्होंने अस्वस्थ होते हुये भी हमारी प्रार्थना स्वीकार करके ग्रंथ सूची की भूमिका लिखने की कृपा की है। भविष्य में उनका प्राचीन साहित्य के शोध कार्य में निर्देशन मिलता रहेगा ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है।

इस ग्रंथ के विद्वान् सम्पादक श्री डा० कस्तूरचंदजी कासलीवाल एवं उनके सहयोगी श्री पं० अनूपचंदजी न्यायतीर्थ तथा श्री सुगनचंदजी जैन का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने विभिन्न शास्त्र भंडारों को देखकर लगन एवं परिश्रम से इस ग्रंथ को तैयार किया है। मैं जयपुर के सुयोग्य विद्वान् श्री पं० चैन-सुखदासजी न्यायतीर्थ का भी हृदय से आभारी हूँ कि जिनका हमको साहित्य शोध संस्थान के कार्यों में पथ-प्रदर्शन व सहयोग मिलता रहता है।

भूमिका

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी, जयपुर के कार्यकर्त्ताओं ने कुछ ही वर्षों के भीतर अपनी संस्था को भारत के साहित्यिक मानचित्र पर उभरे हुए रूप में टांक दिया है। इस संस्था द्वारा संचालित जैन साहित्य शोध संस्थान का महत्वपूर्ण कार्य सभी विद्वानों का ध्यान हठान् अपनी ओर खींच लेने के लिए पर्याप्त है। इस संस्था को श्री कस्तूरचंद जी कासलीवाल के रूप में एक मौन साहित्य साधक प्राप्त हो गए। उन्होंने अपने संकल्प बल और अद्भुत कार्यशक्ति द्वारा जयपुर एवं राजस्थान के अन्य नगरों में जो शास्त्र भंडार पुराने समय से चले आते हैं उनकी छान बीन का महत्वपूर्ण कार्य अपने ऊपर उठा लिया। शास्त्र भंडारों की जांच पड़ताल करके उनमें संस्कृत, प्राकृत अपभ्रंश, राजस्थानी और हिन्दी के जो अनेकानेक ग्रंथ सुरक्षित हैं उनकी क्रमबद्ध वर्गीकृत और परिचयात्मक सूची बनाने का कार्य बिना रुके हुए कितने ही वर्षों तक कासलीवाल जी ने किया है। सौभाग्य से उन्हें अतिशय क्षेत्र के संचालक और प्रबंधकों के रूप में ऐसे सहयोगी मिले जिन्होंने इस कार्य के राष्ट्रीय महत्व को पहचान लिया और सूची पत्रों के विधिवत् प्रकाशन के लिए आर्थिक प्रबंध भी कर दिया। इस प्रकार का मणिकांचन संयोग बहुत ही फलप्रद हुआ। परिचयात्मक सूची ग्रंथों के तीन भाग पहले मुद्रित हो चुके हैं। जिनमें लगभग दस सहस्र ग्रंथों का नाम और परिचय आ चुका है। हिन्दी जगत् में इन ग्रंथों का व्यापक स्वागत हुआ और विश्वविद्यालयों में शोध करने वाले विद्वानों को इन ग्रंथों के द्वारा बहुत सी अज्ञात नई सामग्री का परिचय प्राप्त हुआ।

उससे प्रोत्साहित होकर इस शोध संस्थान ने अपने कार्य को और अधिक वेगयुक्त करने का निश्चय किया। उसका प्रत्यक्ष फल ग्रंथ सूची के इस चतुर्थ भाग के रूप में हमारे सामने है। इसमें एक साथ ही लगभग १० सहस्र नए हस्तलिखित ग्रंथों का परिचय दिया गया है। परिचय यद्यपि संक्षिप्त है किन्तु उसके लिखने में विवेक से काम लिया गया है जिससे महत्वपूर्ण या नई सामग्री की ओर शोधकर्त्ता विद्वानों का ध्यान अवश्य आकृष्ट हो सकेगा। ग्रंथ का नाम, ग्रंथकर्त्ता का नाम, ग्रंथ की भाषा, लेखन की तिथि, ग्रंथ पूर्ण है या अपूर्ण इत्यादि तथ्यों का यथा संभव परिचय देते हुए महत्वपूर्ण सामग्री के उद्धरण या अवतरण भी दिये गये हैं। प्रस्तुत सूची पत्र में तीन सौ से ऊपर गुटकों का परिचय भी सम्मिलित है। इन गुटकों में विविध प्रकार की साहित्यिक और जीवनोपयोगी सामग्री का संग्रह किया जाता था। शोधकर्त्ता विद्वान यथावकाश जब इन गुटकों की व्योरेवार परीक्षा करेंगे तो उनमें से साहित्य की बहुत सी नई सामग्री प्राप्त होने की आशा है। ग्रंथ संख्या ५५०६ गुटका संख्या १२५ में भारतवर्ष के भौगोलिक विस्तार का परिचय देते हुए १२४ देशों के नामों की सूची अत्यन्त उपयोगी है। पृथ्वीचंद्र चरित्र आदि वर्णक ग्रंथों में इस प्रकार की और भी भौगोलिक सूचिया मिलती हैं। उनके साथ इस सूची

का तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी होगा। किसी समय इस सूची में ६८ देशों की संख्या रूढ़ हो गई थी। ज्ञात होता है कालान्तर में यह संख्या १२४ तक पहुँच गई। गुटका संख्या २२ (ग्रंथ संख्या ५४०२) में नगरों की बसापत का संवत्वार व्यौरा भी उल्लेखनीय है। जैसे संवत् १६१२ अकबर पातसाह आगरो बसायो : संवत् १७१४ औरंगसाह पातसाह औरंगाबाद बसायो : संवत् १२४५ विमल मंत्री स्वर हुवो विमल बसाई।

विकास की उन पिछली शक्तियों में हिन्दी साहित्य के कितने विविध साहित्य रूप थे यह भी अनुसंधान के लिए महत्वपूर्ण विषय है। इस सूची को देखते हुये उनमें से अनेक नाम सामने आते हैं। जैसे स्तोत्र, पाठ, संग्रह, कथा, रासो, रास, पूजा, मंगल, जयमाल, प्रश्नोत्तरी, मंत्र, अष्टक, सार, समुच्चय, वर्णन, सुभाषित, चौपई, शुभमालिका, निशाणी, जकडी, व्याहलो, बधावा, विनती, पत्री, आरती, बोल, चरचा, विचार, बात, गीत, लीला, चरित्र, छंद, छाप्य, भावना, विनोद, कल्प, नाटक, प्रशस्ति, धमाल, चौढालिया, चौमासिया, बारासा, बटोई, बेलि, हिंडोलणा, चूनडी, सञ्जाय, बाराखड़ी, भक्ति, बन्दना, पच्चीसी, बत्तीसी, पचासा, बावनी, सतसई, सामायिक, सहस्रनाम, नामावली, गुरुवावली, स्तवन, संबोधन, मोडलो आदि। इन विविध साहित्य रूपों में से किसका कब आरम्भ हुआ और किस प्रकार विकास और विस्तार हुआ, यह शोध के लिये रोचक विषय है। उसकी बहुमूल्य सामग्री इन भंडारों में सुरक्षित है।

राजस्थान में कुल शास्त्र भंडार लगभग दो सौ हैं और उनमें संचित ग्रंथों की संख्या लगभग दो लाख के आंकी जाती है। हर्ष की बात है कि शोध संस्थान के कार्यकर्ता इस भारी दायित्व के प्रति-जागरूक हैं। पर स्वभावतः यह कार्य दीर्घकालीन साहित्यिक साधना और बहुव्यय की अपेक्षा रखता है। जिस प्रकार अपने देश में पूना का भंडारकर इन्स्टीट्यूट, तंजोर की सरस्वती महल लाइब्रेरी, मद्रास विश्वविद्यालय की ओरियन्टल मेनस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी या कलकत्ते की बंगाल एशियाटिक सोसाइटी का ग्रंथ भंडार हस्तलिखित ग्रंथों को प्रकाश में लाने का कार्य कर रहे हैं और उनके कार्य के महत्व को मुक्त कंठ से सभी स्वीकार करते हैं, आशा है कि उसी प्रकार महावीर अतिशय क्षेत्र के जैन साहित्य शोध संस्थान के कार्य की ओर भी जनता और शासन दोनों का ध्यान शीघ्र आकृष्ट होगा और यह संस्था जिस सहायता की पात्र है, वह उसे सुलभ की जायगी। संस्था ने अब तक अपने साधनों से बड़ा कार्य किया है, किन्तु जो कार्य शेष हैं वह कहीं अधिक बड़ा है और इसमें संदेह नहीं कि अवश्य करने योग्य है। ११ वीं शती से १६ वीं शती के मध्य तक जो साहित्य रचना होती रही उसकी संचित निधि का कुबेर जैसा समृद्ध कोष ही हमारे सामने आ गया है। आज से केवल १५ वर्ष पूर्व तक इन भंडारों के अस्तित्व का पता बहुत कम लोगों को था और उनके संबंध में छान बीन का कार्य तो कुछ हुआ ही नहीं था। इस सबको देखते हुये इस संस्था के महत्वपूर्ण कार्य का व्यापक स्वागत किया जाना चाहिये।

प्रस्तावना

राजस्थान शताब्दियों से साहित्यिक क्षेत्र रहा है। राजस्थान की रियासतें यद्यपि विभिन्न राजाओं के अधीन थी जो आपस में भी लड़ा करती थीं फिर भी इन राज्यों पर देहली का सीधा सम्पर्क नहीं रहने के कारण यहां अधिक राजनीतिक उथल पुथल नहीं हुई और सामान्यतः यहां शान्ति एवं व्यवस्था बनी रही। यहां राजा महाराजा भी अपनी प्रजा के सभी धर्मों का समादर करते रहे इसलिये उनके शासन में सभी धर्मों को स्वतन्त्रता प्राप्त थी।

जैन धर्मानुयायी सदैव शान्तिप्रिय रहे हैं। इनका राजस्थान के सभी राज्यों में तथा विशेषतः जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, उदयपुर, बूंदी, कोटा, अलवर, भरतपुर आदि राज्यों में पूर्ण प्रभुत्व रहा। शताब्दियों तक वहां के शासन पर उनका अधिकार रहा और वे अपनी स्वामिभक्ति, शासनदक्षता एवं सेवा के कारण सदैव ही शासन के सर्वोच्च स्थानों पर कार्य करते रहे।

प्राचीन साहित्य की सुरक्षा एवं नवीन साहित्य के निर्माण के लिये भी राजस्थान का वातावरण जैनों के लिये बहुत ही उपयुक्त सिद्ध हुआ। यहां के शासकों ने एवं समाज के सभी वर्गों ने उस ओर बहुत ही रुचि दिखलाई इसलिये सैकड़ों की संख्या में नये नये ग्रंथ तैयार किये गये तथा हजारों प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपियां तैयार करवा कर उन्हें नष्ट होने से बचाया गया। आज भी हस्तलिखित ग्रंथों का जितना सुन्दर संग्रह नागौर, बीकानेर, जैसलमेर, अजमेर, आमेर, जयपुर, उदयपुर, ऋषभदेव के ग्रंथ भंडारों में मिलता है उतना महत्वपूर्ण संग्रह भारत के बहुत कम भंडारों में मिलेगा। ताड़पत्र एवं कागज दोनो पर लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रतियां इन्हीं भंडारों में उपलब्ध होती हैं। यही नहीं अपभ्रंश, हिन्दी तथा राजस्थानी भाषा का अधिकांश साहित्य इन्हीं भंडारों में संग्रहीत किया हुआ है। अपभ्रंश साहित्य के संग्रह की दृष्टि से नागौर एवं जयपुर के भंडार उल्लेखनीय हैं।

अजमेर, नागौर, आमेर, उदयपुर, डूंगरपुर एवं ऋषभदेव के भंडार भट्टारकों की साहित्यिक गतिविधियों के केन्द्र रहे हैं। ये भट्टारक केवल धार्मिक नेता ही नहीं थे किन्तु इनकी साहित्य रचना एवं उनकी सुरक्षा में भी पूरा हाथ था। ये स्थान स्थान पर भ्रमण करते थे और वहां से ग्रंथों को बटोर कर इनको अपने मुख्य मुख्य स्थानों पर संग्रह किया करते थे।

शास्त्र भंडार सभी आकार के हैं कोई छोटा है तो कोई बड़ा। किसी में केवल स्वाध्याय में काम आने वाले ग्रंथ ही संग्रहीत किये हुये होते हैं तो किसी किसी में सब तरह का साहित्य मिलता है। साधारणतः हम इन ग्रंथ भंडारों को ४ श्रेणियों में बांट सकते हैं।

१. पांच हजार ग्रंथों के संग्रह वाले शास्त्र भंडार
२. पांच हजार से कम एवं एक हजार से अधिक ग्रंथ वाले शास्त्र भंडार

३. एक हजार से कम एवं पांचसौ से अधिक ग्रंथ वाले शास्त्र भंडार
४. पांचसौ ग्रंथों से कम वाले शास्त्र भंडार

इन शास्त्र भंडारों में केवल धार्मिक साहित्य ही उपलब्ध नहीं होता किन्तु काव्य, पुराण, ज्योतिष, आयुर्वेद, गणित आदि विषयों पर भी ग्रंथ मिलते हैं। प्रत्येक मानव की रुचि के विषय, कथा कहानी एवं नाटक भी इनमें अच्छी संख्या में उपलब्ध होते हैं। यही नहीं, सामाजिक राजनीतिक एवं अर्थशास्त्र पर भी ग्रंथों का संग्रह मिलता है। कुछ भंडारों में जैनेतर विद्वानों द्वारा लिखे हुये अलभ्य ग्रंथ भी संग्रहीत किये हुये मिलते हैं। वे शास्त्र भंडार खोज करने वाले विद्यार्थियों के लिये शोध संस्थान हैं लेकिन भंडारों में साहित्य की इतनी अमूल्य सम्पत्ति होते हुये भी कुछ वर्षों पूर्व तक ये विद्वानों के पहुँच के बाहर रहे। अब कुछ समय बदला है और भंडारों के व्यवस्थापक ग्रंथों के दिखलाने में उतनी आना-कानी नहीं करते हैं। यह परिवर्तन वास्तव में खोज में लीन विद्वानों के लिये शुभ है। आज के २० वर्ष पूर्व तक राजस्थान के ६० प्रतिशत भंडारों को न तो किसी जैन विद्वान ने देखा और न किसी जैनेतर विद्वान ने इन भंडारों के महत्व को जानने का प्रयास ही किया। अब गत १०, १५ वर्षों से इधर कुछ विद्वानों का ध्यान आकृष्ट हुआ है और सर्व प्रथम हमने राजस्थान के ७५ के करीब भंडारों को देखा है और शेष भंडारों को देखने की योजना बनाई जा चुकी है।

ये ग्रंथ भंडार प्राचीन युग में पुस्तकालयों का काम भी देते थे। इनमें बैठ कर स्वाध्याय प्रेमी शास्त्रों का अध्ययन किया करते थे। उस समय इन ग्रंथों की सूचियां भी उपलब्ध हुआ करती थी तथा ये ग्रंथ लकड़ी के पुट्टों के बीच में रखकर सूत अथवा सिल्क के फीतों से बांधे जाते थे। फिर उन्हें कपड़े के वेष्टनों में बांध दिया जाता था। इस प्रकार ग्रंथों के वैज्ञानिक रीति से रखे जाने के कारण इन भंडारों में ११ वीं शताब्दी तक के लिखे हुये ग्रंथ पाये जाते हैं।

जैसा कि पहिले कहा जा चुका है कि वे ग्रंथ भंडार नगर कस्बे एवं गांवों तक में पाये जाते हैं इसलिये राजस्थान में उनकी वास्तविक संख्या कितनी है इसका पता लगाना कठिन है। फिर भी यहां अनुमानतः छोटे बड़े २०० भंडार होंगे जिनमें १॥, २ लाख से अधिक हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है।

जयपुर प्रारम्भ से ही जैन संस्कृति एवं साहित्य का केन्द्र रहा है। यहां १५० से भी अधिक जिन मंदिर एवं चैत्यालय हैं। इस नगर की स्थापना संवत् १७८४ में महाराजा स्वाई जयसिंहजी द्वारा की गई थी तथा उसी समय आमेर के बजाय जयपुर को राजधानी बनाया गया था। महाराजा ने इसे साहित्य एवं कला का भी केन्द्र बनाया तथा एक राज्यकीय पोथीखाने की स्थापना की जिसमें भारत के विभिन्न स्थानों से लाये गये सैकड़ों महत्वपूर्ण हस्तलिखित ग्रंथ संग्रहीत किये हुये हैं। यहां के महाराजा प्रतापसिंहजी भी विद्वान् थे। इन्होंने कितने ही ग्रंथ लिखे थे। इनका लिखा हुआ एक ग्रंथ संगीतसार जयपुर के बड़े मन्दिर के शास्त्र भंडार में संग्रहीत है।

१८ वीं एवं १९ वीं शताब्दी में जयपुर में अनेक उच्च कोटि के विद्वान् हुये जिन्होंने साहित्य की अपार सेवा की। इनमें दौलतराम कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) टोडरमल (१८ वीं शताब्दी) गुमानीराम (१८, १९ वीं शताब्दी) टेकचन्द (१८ वीं शताब्दी) दीपचन्द कासलीवाल (१८ वीं शताब्दी) जयचन्द्र झाबड़ा (१९ वीं शताब्दी) केशरीसिंह (१९ वीं शताब्दी) नेमिचन्द पाटनी (१९ वीं शताब्दी) नन्दलाल झाबड़ा (१९ वीं शताब्दी) स्वरूपचन्द विलाला (१९ वीं शताब्दी) सदासुख कासलीवाल (१९ वीं शताब्दी) मन्नालाल खिन्दूका (१९ वीं शताब्दी) पारसदास निगोत्या (१९ वीं शताब्दी) जैतराम (१९ वीं शताब्दी) पन्नालाल चौधरी (१९ वीं शताब्दी) दुलीचन्द (१९ वीं शताब्दी) आदि विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं। इनमें अधिकांश हिन्दी के विद्वान् थे। इन्होंने हिन्दी के प्रचार के लिये सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत ग्रंथों पर भाषा टीका लिखी थी। इन विद्वानों ने जयपुर में ग्रंथ भण्डारों की स्थापना की तथा उनमें प्राचीन ग्रंथों की लिपियां करके विराजमान की। इन विद्वानों के अतिरिक्त यहां सैकड़ों लिपिकार हुये जिन्होंने श्रावकों के अनुरोध पर सैकड़ों ग्रंथों की लिपियां की तथा नगर के विभिन्न भण्डारों में रखी गई।

ग्रंथ सूची के इस भाग में जयपुर के १२ शास्त्र भण्डारों के ग्रंथों का विवरण दिया गया है ये सभी शास्त्र भण्डार यहां के प्रमुख शास्त्र भण्डार हैं और इनमें दस हजार से भी अधिक ग्रंथों का संग्रह है। महत्वपूर्ण ग्रंथों के संग्रह की दृष्टि से अ, ज तथा झ भण्डार प्रमुख हैं। ग्रंथ सूची में आये हुये इन भण्डारों का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है।

१. शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पाटोदी (अ भण्डार)

यह भण्डार दि० जैन पाटोदी के मन्दिर में स्थित है जो जयपुर की चौकड़ी मोदीखाना में है। यह मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध जैन पंचायती मन्दिर है। इसका प्रारम्भ में आदिनाथ चैत्यालय^१ भी नाम था। लेकिन बाद में यह पाटोदी का मन्दिर के नाम से ही कहलाया जाने लगा। इस मन्दिर का निर्माण जोधराज पाटोदी द्वारा कराया गया था। लेकिन मन्दिर के निर्माण की निश्चित तिथि का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। फिर भी यह अवश्य कहा जा सकता है कि इसका निर्माण जयपुर नगर की स्थापना के साथ हुआ था। मन्दिर निर्माण के पश्चात् यहां शास्त्र भण्डार की स्थापना हुई। इसलिये यह शास्त्र भण्डार २०० वर्ष से भी अधिक पुराना है।

मन्दिर प्रारम्भ से ही भट्टारकों का केन्द्र बना रहा तथा आमेर के भट्टारक भी यहीं आकर रहने लगे। भट्टारक ज्ञेमेन्द्रकीर्ति सुरेन्द्रकीर्ति, सुखेन्द्रकीर्ति एवं नरेन्द्रकीर्ति का क्रमशः संवत् १८१५,

१८२२, १८६३, तथा १८७६ में यहीं पट्टाभिषेक^१ हुआ था। इस प्रकार इनका इस मन्दिर से करीब १०० वर्ष तक सीधा सम्पर्क रहा।

प्रारम्भ में यहां का शास्त्र भंडार भट्टारकों की देख रेख में रहा इसलिये शास्त्रों के संग्रह में दिन प्रतिदिन वृद्धि होती रही। यहां शास्त्रों की लिखने लिखवाने की भी अच्छी व्यवस्था थी इसलिये श्रावकों के अनुरोध पर यहीं ग्रंथों की प्रतिलिपियां भी होती रहती थी। भट्टारकों का जब प्रभाव क्षीण होने लगा तथा जब वे साहित्य की ओर उपेक्षा दिखलाने लगे तो यहां के भंडार की व्यवस्था श्रावकों ने संभाल ली। लेकिन शास्त्र भंडार में संग्रहीत ग्रंथों को देखने के पश्चात् यह पता चलता है कि श्रावकों ने शास्त्र भंडार के ग्रंथों की संख्या वृद्धि में विशेष अभिरुचि नहीं दिखलाई और उन्होंने भंडार को उसी अवस्था में सुरक्षित रखा।

हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या

भंडार में शास्त्रों की कुल संख्या २२५७ तथा गुटकों की संख्या ३०८ है। लेकिन एक एक गुटके में बहुत से ग्रंथों का संग्रह होता है इसलिये गुटकों में १८०० से भी अधिक ग्रंथों का संग्रह है। इस प्रकार इस भंडार में चार हजार ग्रंथों का संग्रह है। भक्तामर, स्तोत्र एवं तत्त्वार्थसूत्र की एक एक ताडपत्रीय प्रति को छोड़ कर शेष सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। इसी भंडार में कपडे पर लिखे हुये कुछ जम्बूद्वीप एवं अढाईद्वीप के चित्र एवं यन्त्र, मंत्र आदि का उल्लेखनीय संग्रह है।

भंडार में महाकवि पुष्पदन्त कृत जसहर चरित (यशोधर चरित) की प्रति सबसे प्राचीन है जो संवत् १४०७ में चन्द्रपुर दुर्ग में लिखी गई थी। इसके अतिरिक्त यहां १५ वीं, १६ वीं, १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये ग्रंथों की संख्या अधिक है। प्राचीन प्रतियों में गोम्मटसार जीवकांड, तत्त्वार्थ सूत्र (सं० १४५८) द्रव्यसंग्रह वृत्ति (ब्रह्मदेव-सं० १६३५), उपासकाचार दोहा (सं० १५५५), धर्म-संग्रह श्रावकाचार (संवत् १५४२) श्रावकाचार (गुणभूषणाचार्य संवत् १५६२,) समयसार (१५६४), विद्यानन्द कृत अष्टसहस्री (१७६१) उत्तरपुराण टिप्पण प्रभाषन्द (सं० १५७५) शान्तिनाथ पुराण (अशोककवि सं. १५५२) ऐमिणाह चरिए (लक्ष्मण देव सं. १६३६) नागकुमार चरित्र (मल्लिषेण कवि सं. १५६४) वरांग चरित्र (वर्द्धमान देव सं. १५६४) नवकार श्रावकाचार (सं० १६१२) आदि सैकड़ों ग्रंथों की उल्लेखनीय प्रतियां हैं। ये प्रतियां सम्पादन कार्य में बहुत लाभप्रद सिद्ध हो सकती हैं।

विभिन्न विषयों से सम्बन्धित ग्रंथ

शास्त्र भंडार में प्रायः सभी विषयों के ग्रंथों का संग्रह है। फिर भी पुराण, चरित्र, काव्य, कथा, व्याकरण, आयुर्वेद के ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। पूजा एवं स्तोत्र के ग्रंथों की संख्या भी पर्याप्त

जयपुर के प्रसिद्ध साहित्य सेवी



पंडित करवशांन अलपमतिनां हि वषानैं जो है ग्रंथ अत्र
 परे सभाषा के मां ही वांचे वहुत हलोक या मह संखे ना ही
 सब गिरथ की वनिन आवे नौ इ जी वंधर तनी
 अब सिमेव करनी सुभाषा यही हो जी भी इ ह भ नी सिनी
 चतुर मुष वीत सोहि दौलति उर धारी से ठ वेल जी सुध
 रजा ति ह म उहित कारी सा ग वा ड हे वा स अ व ल को ल ग
 निघण्टे सी सुभाषा अर भी लोक धरें क धा पुत्र के री
 तिन नै आग्रह करि क ही फुनि दौलति के मन में व सी
 संसकृत ते भाष की नी इ हे क था हे नौर सी १॥ संब के
 धर ह से जु पे च आ का ल सु मा सा ति थि दो इ न गुर

वार पदा सुकल नु सुभभासा ती जै पर सु ए ह ग्रंथ
 सुभ पूरण ह वो श्री जिन धर्म प्रसा व सकल भव प्रमत्
 नू वी नं दौ विरधो जगत मां ही जौ लग चंद दि वा करा ति
 दौ न वानि के हिये नै नवर सवरण नै ते भरा ॥ ६ ॥ हा ते श्री ज
 वंधर स्वामि चरित्र संपूर्ण सुभ भवत कल्याण मस्तु ॥ ७ ॥

पं० दौलतरामजी कासलीवाल कृत जीवन्धर चरित्र की
 मूल पाण्डुलिपि के दो पत्र

है। गुटकों में स्तोत्रों एवं कथाओं का अच्छा संग्रह है। आयुर्वेद के सैकड़ों नुसखे इन्हीं गुटकों में लिखे हुये हैं जिनका आयुर्वेदिक विद्वानों द्वारा अध्ययन किया जाना आवश्यक है। इसी तरह विभिन्न जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी पदों का भी इन गुटकों में एवं स्वतन्त्र रूप से बहुत अच्छा संग्रह मिलता है। हिन्दी के प्रायः सभी जैन कवियों ने हिन्दी में पद लिखे हैं जिनका अभी तक हमें कोई परिचय नहीं मिलता है। इसलिये इस दृष्टि से भी गुटकों का संग्रह महत्वपूर्ण है। जैन विद्वानों के पद आध्यात्मिक एवं स्तुति परक दोनों ही हैं और उनकी तुलना हिन्दी के अच्छे से अच्छे कवि के पदों से की जा सकती है। जैन विद्वानों के अतिरिक्त फवीर, सूरदास, मल्लकराम, आदि कवियों के पदों का संग्रह भी इस भंडार में मिलता है।

अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथ

शास्त्र भंडार में संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा में लिखे हुये सैकड़ों अज्ञात ग्रंथ प्राप्त हुये हैं जिनमें से कुछ ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय आगे दिया गया है। संस्कृत भाषा के ग्रंथों में व्रतकथा कोष (सकलकीर्ति एवं देवेन्द्रकीर्ति) आशाधर कृत भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र की संस्कृत टीका एवं रत्नत्रय विधि भट्टारक सकलकीर्ति का परमात्मराज स्तोत्र, भट्टारक प्रभाचंद का मुनिसुत्रत छंद, आशाधर के शिष्य विनयचंद की भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र की टीका के नाम उल्लेखनीय हैं। अपभ्रंश भाषा के ग्रंथों में लक्ष्मण देव कृत गेमिणाह चरित, नरसेन की जिनरात्रिविधान कथा, मुनिगुणभद्र का रोहिणी विधान एवं दशलक्षण कथा, विमल सेन की सुगंधदशमीकथा अज्ञात रचनायें हैं। हिन्दी भाषा की रचनाओं में रत्न कविकृत जिनदत्त चौपई (सं. १३५४) मुनिसकलकीर्ति की कर्मचूरिवेलि (१७ वीं शताब्दी) ब्रह्म गुलाल का समोशरणवर्णन, (१७ वीं शताब्दी) विश्वभूषण कृत पार्श्वनाथ चरित्र, कृपाराम का ज्योतिष सार, पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणीवेलि की हिन्दी गद्य टीका, बूचराज का भुवनकीर्ति गीत, (१७ वीं शताब्दी) विहारी सतसई पर हरिचरणदास की हिन्दी गद्य टीका, तथा उनका ही कविवल्लभ ग्रंथ, पद्मभगत का कृष्णरुक्मिणीमंगल, हीरकवि का सागरदत्त चरित (१७ वीं शताब्दी) कल्याणकीर्ति का चारुदत्त चरित, हरिवंश पुराण की हिन्दी गद्य टीका आदि ऐसी रचनाएं हैं जिनके सम्बन्ध में हम पहिले अन्धकार में थे। जिनदत्त चौपई १३ वीं शताब्दी की हिन्दी पद्य रचना है और अब तक उपलब्ध सभी रचनाओं से प्राचीन है। इसी प्रकार अन्य सभी रचनायें महत्वपूर्ण हैं। ग्रंथ भंडार की दशा संतोषप्रद है। अधिकांश ग्रंथ वेष्टनों में रखे हुये हैं।

२. बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार (क भंडार)

बाबा दुलीचन्द का शास्त्र भंडार दि० जैन बड़ा तेरहपंथी मन्दिर में स्थित है। इस मन्दिर में दो शास्त्र भंडार हैं जिनमें एक शास्त्र भंडार की ग्रंथ सूची एवं उसका परिचय ग्रंथसूची द्वितीय भाग में

दे दिया गया है। दूसरा शास्त्र भंडार इसी मन्दिर में बाबा दुलीचन्द द्वारा स्थापित किया गया था इस लिये इस भंडार को उन्हीं के नाम से पुकारा जाता है। दुलीचन्दजी जयपुर के मूल निवासी नहीं थे किन्तु वे महाराष्ट्र के पूना जिले के फल्टन नामक स्थान के रहने वाले थे। वे जयपुर हस्तलिखित शास्त्रों के साथ यात्रा करते हुये आये और उन्होंने शास्त्रों की सुरक्षा की दृष्टि से जयपुर को उचित स्थान जानकर यहीं पर शास्त्र संग्रहालय स्थापित करने का निश्चय कर लिया।

इस शास्त्र भंडार में ८५० हस्तलिखित ग्रंथ हैं जो सभी दुलीचन्दजी द्वारा स्थान स्थान की यात्रा करने के पश्चात् संग्रहीत किये गये थे। इनमें से कुछ ग्रंथ स्वयं बाबाजी द्वारा लिखे हुये हैं तथा कुछ श्रावकों द्वारा उन्हें प्रदान किये हुये हैं। वे एक जैन साधु के समान जीवन यापन करते थे। ग्रंथों की सुरक्षा, लेखन आदि ही उनके जीवन का एक मात्र उद्देश्य था। उन्होंने सारे भारत की तीन बार यात्रा की थी जिसका विस्तृत वर्णन जैन यात्रा दर्पण में लिखा है। वे संस्कृत एवं हिन्दी के अच्छे विद्वान् थे तथा उन्होंने १५ से भी अधिक ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद किया था जो सभी इस भंडार में संग्रहीत हैं।

यह शास्त्र भंडार पूर्णतः व्यवस्थित है तथा सभी ग्रंथ अलग अलग वेष्टनों में रखे हुये हैं। एक एक ग्रंथ तीन तीन एवं कोई कोई तो चार चार वेष्टनों में बंधा हुआ है। शास्त्रों की ऐसी सुरक्षा जयपुर के किसी भंडार में नहीं मिलेगी। शास्त्र भंडार में मुख्यतः संस्कृत एवं हिन्दी के ग्रंथ हैं। हिन्दी के ग्रंथ अधिकांशतः संस्कृत ग्रंथों की भाषा टीकायें हैं। वैसे तो प्रायः सभी विषयों पर यहां ग्रंथों की प्रतियां मिलती हैं लेकिन मुख्यतः पुराण, कथा, चरित, धर्म एवं सिद्धान्त विषय से संबंधित ग्रंथों ही का यहां अधिक संग्रह है।

भंडार में आप्तमीमांसालंकार (आ० विद्यानन्द) की सुन्दर प्रति है। क्रियाकलाप टीका की संवत् १५३४ की लिखी हुई प्रति इस भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो मांडवगढ में सुल्तान गया-सुदीन के राज्य में लिखी गई थी। तत्त्वार्थसूत्र की स्वर्णमयी प्रति दर्शनीय है। इसी तरह यहां गोम्मटसार, त्रिलोकसार आदि कितने ही ग्रंथों की सुन्दर सुन्दर प्रतियां हैं। ऐसी अच्छी प्रतियां कदाचित् ही दूसरे भंडारों में देखने को मिलती हैं। त्रिलोकसार की सचित्र प्रति है तथा इतनी बारीक एवं सुन्दर लिखी हुई है कि वह देखते ही बनती है। पन्नालाल चौधरी के द्वारा लिखी हुई डालूराम कृत द्वादशांग पूजा की प्रति भी (सं० १८७६) दर्शनीय ग्रंथों में से है।

१६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान् पं० पन्नालालजी संधी का अधिकांश साहित्य यहां संग्रहीत है। इसी तरह भंडार के संस्थापक दुलीचन्द की भी यहां सभी रचनायें मिलती हैं। उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों में अल्लू कवि का प्राकृतछन्दकोष, विनयचन्द की द्विसंधान काव्य टीका, वादिचन्द्र सूरि का पवनदूत काव्य, झानार्णव पर नयविलास की संस्कृत टीका, गोम्मट-सार पर सकलभूषण एवं धर्मचन्द की संस्कृत टीकायें हैं। हिन्दी रचनाओं में देवीसिंह झावडा कृत

उपदेशरत्नमाला भाषा (सं० १७६६) हरिकिशन का भद्रवाहु चरित (सं० १७८७) ब्रह्मपति जैसवाल की मन-
मोदन पंचविंशति भाषा (सं० १६१६) के नाम उल्लेखनीय हैं। इस भंडार में हिन्दी पदोंका भी अच्छा
संग्रह है। इन कवियों में माणकचन्द, हीराचंद, दौलतराम, भागचन्द, संगलचन्द, एवं जयचन्द छाबडा
के हिन्दी पद उल्लेखनीय हैं।

३. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोबनेर (ख भंडार)

यह शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर जोबनेर में स्थापित है जो खेजडे का रास्ता, चांदपोल बाजार
में स्थित है। यह मन्दिर कब बना था तथा किसने बनवाया था इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता है लेकिन
एक ग्रंथ प्रशस्ति के अनुसार मन्दिर की मूल नायक प्रतिमा पं० पन्नालाल जी के समय में स्थापित हुई
थी। पंडितजी जोबनेर के रहने वाले थे तथा इनके लिखे हुये जलहोमविधान, धर्मचक्र पूजा आदि
ग्रंथ भी इस भंडार में मिलते हैं। इनके द्वारा लिखी हुई सबसे प्राचीन प्रति संवन् १६२२ की है।

शास्त्र भंडार में ग्रंथ संग्रह करने में पहिले पं० पन्नालालजी का तथा फिर उन्हीं के शिष्य
पं० बख्तावरलाल जी का विशेष सहयोग रहा था। दोनों ही विद्वान ज्योतिष, अयुर्वेद, मंत्रशास्त्र, पूजा
साहित्य के संग्रह में विशेष अभिरुचि रखते थे इसलिये यहां इन विषयों के ग्रंथों का अच्छा संकलन है।
भंडार में ३४० ग्रंथ हैं जिनमें २३ गुटके भी हैं। हिन्दी भाषा के ग्रंथों से भी भंडार में संस्कृत के ग्रंथों
की संख्या अधिक है जिससे पता चलता है कि ग्रंथ संग्रह करने वाले विद्वानों का संस्कृत से अधिक
प्रेम था।

भंडार में १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी के ग्रंथों की अधिक प्रतियां हैं। सबसे
प्राचीन प्रति पद्मनन्दपंचविंशति की है जिसकी संव ११५७ में प्रतिलिपि की गई थी। भंडार के उल्लेखनीय
ग्रंथों में पं० आशाधर की आराधनासार टीका एवं नागौर के भट्टारक जेमेन्द्रकीर्ति कृत गजपंथामंडलपूजन
उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। आशाधर ने आराधनासार की यह वृत्ति अपने शिष्य मुनि विनयचंद के लिये की
थी। प्रेमी जी ने इस टीका को जैन साहित्य एवं इतिहास में अप्राप्य लिखा है। रघुवंश काव्य की भंडार
में सं० १६८० की अच्छी प्रति है।

हिन्दी ग्रंथों में शांतिकुशल का अंजनारास एवं पृथ्वीराज का रुक्मिणी विवाहलो उल्लेखनीय ग्रंथ
हैं। यहां बिहारी सतसई की एक ऐसी प्रति है जिसके सभी पद्य वर्ण क्रमानुसार लिखे हुये हैं। मानसिंह
का मानविनोद भी आयुर्वेद विषय का अच्छा ग्रंथ है।

४. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर (ग भंडार)

यह मन्दिर बौली के कुआ के पास चौकड़ी मोदीखाना में स्थित है पहिले यह 'नेमिनाथ के मंदिर'
के नाम से भी प्रसिद्ध था लेकिन वर्तमान में यह चौधरियों के चैत्यालय के नाम से प्रसिद्ध है। यहां छोटा

सा शास्त्र भंडार है जिसमें केवल १०८ हस्तलिखित ग्रंथ हैं। इनमें ७५ हिन्दी के तथा शेष संस्कृत भाषा के ग्रंथ हैं। संग्रह सामान्य है तथा प्रतिदिन स्वाध्याय के उपयोग में आने वाले ग्रंथ हैं। शास्त्र भंडार करीब १४० वर्ष पुराना है। कालूरामजी साह यहाँ उत्साही सज्जन हो गये हैं जिन्होंने कितने ही ग्रंथ लिखवाकर शास्त्र भंडार में विराजमान किये थे। इनके द्वारा लिखवाये हुये ग्रंथों में पं. जयचन्द्र छाबड़ा कृत ज्ञानार्णव भाषा (सं. १८२२) खुशालचन्द्र कृत त्रिलोकसार भाषा (सं० १८८४) दौलतरामजी कासलीवाल कृत आदि पुराण भाषा सं. १८८३ एवं द्वीतर ठोलिया कृत होलिका चरित (सं. १८८३) के नाम उल्लेखनीय हैं। भंडार व्यवस्थित है।

५. शास्त्र भंडार दि. जैन नया मन्दिर बैराठियों का जयपुर (घ भंडार)

‘घ’ भंडार जौहरी बाजार मोतीसिंह भोमियों के रास्ते में स्थित नये मन्दिर में संग्रहीत है। यह मन्दिर बैराठियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। शास्त्र भंडार में १५० हस्तलिखित ग्रंथ हैं जिनमें वीरनन्द कृत चन्द्रप्रभ चरित की प्रति सबसे प्राचीन है। इसे संवत् १५२४ भाद्रवा बुदी ७ के दिन लिखा गया था। शास्त्र संग्रह की दृष्टि से भंडार छोटा ही है किन्तु इसमें कितने ही ग्रंथ उल्लेखनीय हैं। प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों में गुणभद्राचार्य कृत उत्तर पुराण (सं० १६०६,) ब्रह्मजिनदास कृत हरिवंश पुराण (सं० १६४१,) दीपचन्द्र कृत ज्ञानदर्पण एवं लोकसेन कृत दशलक्षणकथा की प्रतियां उल्लेखनीय हैं। श्री राजहंसोपाध्याय की षष्ठ्यधिक शतक की टीका संवत् १५७६ के ही अग्रहन मास की लिखी हुई है। ब्रह्मजिनदास कृत अठावीस मूलगुणरास एवं दान कथा (हिन्दी) तथा ब्रह्म अजित का हंसतिलकरास उल्लेखनीय प्रतियों में हैं। भंडार में ऋषिमंडल स्तोत्र, ऋषिमंडल पूजा, निर्वाणकान्ड, अष्टान्हिका जयमाल की स्वर्णाक्षरी प्रतियां हैं। इन प्रतियों के वार्डर सुन्दर बेल वूटों से युक्त हैं तथा कला पूर्ण हैं। जो बेल एक बार एक पत्र पर आगई वह फिर आगे किसी पत्र पर नहीं आई है। शास्त्र भंडार सामान्यतः व्यवस्थित है।

६. शास्त्र भंडार दि. जैन मन्दिर संधीजी जयपुर (ङ भंडार)

संधीजी का जैन मन्दिर जयपुर का प्रसिद्ध एवं विशाल मन्दिर है। यह चौकड़ी मोदीखाना में महावीर पार्क के पास स्थित है। मन्दिर का निर्माण दीवान भूथारामजी संधी द्वारा कराया गया था। ये महाराज जयसिंहजी के शासन काल में जयपुर के प्रधान मंत्री थे। मन्दिर की मुख्य चंवरी में सोने एवं काच का कार्य हो रहा है। वह बहुत ही सुन्दर एवं कला पूर्ण है। काच का ऐसा अच्छा कार्य बहुत ही कम मन्दिरों में मिलता है।

मन्दिर के शास्त्र भंडार में ६७६ हस्तलिखित ग्रंथों का संग्रह है। सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। अधिकांश ग्रंथ १८ वीं एवं १९ वीं शताब्दी के लिखे हुये हैं। सबसे नवीन ग्रंथ णमोकारकाव्य है जो संवत् १६६५ में लिखा गया था। इससे पता चलता है कि समाज में अब भी ग्रंथों की प्रति-

लिपियां करवा कर भंडारों में विराजमान करने की परम्परा है। इसी तरह आचार्य कुन्दकुन्द कृत पंचास्तिकाय की सबसे प्राचीन प्रति है जो संवत् १४८७ की लिखी हुई है।

ग्रंथ भंडार में प्राचीन प्रतियों में भ. हर्षकीर्ति का अनेकार्थशत संवत् १६६७, घर्मकीर्ति की कौमुदीकथा संवत् १६६३, पद्मनन्दि श्रावकाचार संवत् १६१३, भ. शुभचंद्र कृत पाण्डवपुराण सं. १६१३, बनारसी विलास सं० १७१५, मुनि श्रीचन्द्र कृत पुराणसार सं० १५४३, के नाम उल्लेखनीय हैं। भंडार में संवत् १५३० की किरातार्जुनीय की भी एक सुन्दर प्रति है। दशरथ निगोत्या ने धर्म परीक्षा की भाषा संवत् १७१८ में पूर्ण की थी। इसके एक वर्ष बाद सं० १७१६ की ही लिखी हुई भंडार में एक प्रति संग्रहीत है। इसी भंडार में महेश कवि कृत हम्मीररासो की भी एक प्रति है जो हिन्दी की एक सुन्दर रचना है। किशनलाल कृत कृष्णबालविलास की प्रति भी उल्लेखनीय है।

शास्त्र भंडार में ६६ गुटके हैं। जिनमें भी हिन्दी एवं संस्कृत पाठों का अच्छा संग्रह है। इनमें हर्षकवि कृत चंद्रहंसकथा सं० १७०८, हरिदास की ज्ञानोपदेश वत्तीसी (हिन्दी) मुनिभद्र कृत शांतिनाथ स्तोत्र (संस्कृत) आदि महत्वपूर्ण रचनायें हैं।

७. शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर (च भंडार)

(श्रीचन्द्रप्रभ दि० जैन सरस्वती भवन)

यह सरस्वती भवन छोटे दीवानजी के मन्दिर में स्थित है जो अमरचंदजी दीवान के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। ये जयपुर के एक लंबे समय तक दीवान रहे थे। इनके पिता शिवजीलालजी भी महाराजा जगतसिंहजी के समय में दीवान थे। इन्होंने भी जयपुर में ही एक मन्दिर का निर्माण कराया था। इसलिये जो मन्दिर इन्होंने बनाया था वह बड़े दीवानजी का मन्दिर कहलाता है और दीवान अमरचंदजी द्वारा बनाया हुआ है वह छोटे दीवानजी के मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध है। दोनों ही विशाल एवं कला पूर्ण मन्दिर हैं तथा दोनों ही गुमान पंथ आम्नाप के मन्दिर हैं।

भंडार में ८३० हस्तलिखित ग्रंथ हैं। सभी ग्रंथ कागज पर लिखे हुये हैं। यहां संस्कृत ग्रंथों का विशेषतः पूजा एवं सिद्धान्त ग्रंथों का अधिक संग्रह है। ग्रंथों को भाषा के अनुसार निम्न प्रकार विभाजित किया जा सकता है।

संस्कृत ४१८, प्राकृत ६८, अपभ्रंश ४, हिन्दी ३४० इसी तरह विषयानुसार जो ग्रंथ हैं वे निम्न प्रकार हैं।

धर्म एवं सिद्धान्त १४७, अध्यात्म ६२, पुराण ३०, कथा ३८, पूजा साहित्य १५२, स्तोत्र ८१ अन्य विषय ३२०।

इन ग्रंथों के संग्रह करने में स्वयं अमरचंदजी दीवान ने बहुत रुचि ली थी क्योंकि उनके

समयकालीन विद्वानों में से नवलराम, गुमानीराम, जयचन्द्र छावड़ा, डालूराम । मन्नालाल खिन्दूका, स्वरूपचन्द्र बिलाला के नाम उल्लेखनीय हैं और संभवतः इन्हीं विद्वानों के सहयोग से वे ग्रंथों का इतना संग्रह कर सके होंगे । प्रतिमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन सं. १८७७, गोम्मटसार सं. १८८६, पंचतन्त्र सं. १८८७, नत्र चूडामणि सं० १८६१ आदि ग्रंथों की प्रतिलिपियां करवा कर इन्होंने भंडार में विराजमान की थी ।

भंडार में अधिकांश संग्रह १६ वीं २० वीं शताब्दी का है किन्तु कुछ ग्रंथ १६ वीं एवं १७ वीं शताब्दी के भी हैं । इनमें निम्न ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं ।

पूर्णचन्द्राचार्य	उपसर्गहरस्तोत्र	ते. का सं० १५५३	संस्कृत
पं० अभ्रदेव	लब्धिविधानकथा	सं० १६०७	"
अमरकीर्ति	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	सं० १६२२	अपभ्रंश
पूज्यपाद	सर्वार्थसिद्धि	सं० १६२५	संस्कृत
पुष्पदन्त	यशोधर चरित्र	सं० १६३०	अपभ्रंश
ब्रह्मनेमिदत्त	नेमिनाथ पुराण	सं० १६४६	संस्कृत
जोधराज	प्रवचनसार भाषा	सं० १७३०	हिन्दी

अज्ञात कृतियों में तेजपाल कविकृत संभवजिणणाह चरिए (अपभ्रंश) तथा हरचंद गंगवाल कृत सुकुमाल चरित्र भाषा (२० का० १६१८) के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं ।

८. दि० जैन मन्दिर गोधों का जयपुर (छ भंडार)

गोधों का मन्दिर घी वालों का रास्ता, नागोरियों का चौक जौहरी बाजार में स्थित है । इस मन्दिर का निर्माण १८ वीं शताब्दी के अन्त में हुआ था और मन्दिर निर्माण के पश्चात ही यहां शास्त्रों का संग्रह किया जाना प्रारम्भ हो गया था । बहुत से ग्रंथ यहां सांगानेर के मन्दिरों में से भी लाये गये थे । वर्तमान में यहां एक सुव्यवस्थित शास्त्र भंडार है जिसमें ६१६ हस्तलिखित ग्रंथ एवं १०२ गुटके हैं । भंडार में पुराण, चरित, कथा एवं स्तोत्र साहित्य का अच्छा संग्रह है । अधिकांश ग्रंथ १७ वीं शताब्दी से लेकर १६ वीं शताब्दी तक के लिखे हुये हैं । शास्त्र भंडार में व्रतकथाकोश की संवत् १५८६ में लिखी हुई प्रति सबसे प्राचीन है । यहां हिन्दी रचनाओं का भी अच्छा संग्रह है । हिन्दी की निम्न रचनायें महत्वपूर्ण हैं जो अन्य भंडारों में सहज ही में नहीं मिलती हैं ।

चिन्तामणिजययाल	ठक्कुर कवि	हिन्दी	१६ वीं शताब्दी
सीमन्धर स्तवन	"	"	" "
गीत एवं आदिनाथ स्तवन	पल्ह कवि	"	" "

नेमीश्वर चौजासा	मुनि सिंहनन्दि	हिन्दी	१७ वीं शताब्दी
चेतनगीत	"	"	" "
नेमीश्वर रास	मुनि रतनकीर्ति	"	" "
नेमीश्वर हिंडोलना	"	"	" "
द्रव्यसंग्रह भाषा	हेमराज	"	२० का० १७१६
चतुर्दशीकथा	डालूराम	"	१७६५

उक्त रचनाओं के अतिरिक्त जैन हिन्दी कवियों के पदों का भी अच्छा संग्रह है। इनमें बूचराज, झीहल, कनककीर्ति, प्रभाचन्द, मुनि शुभचन्द्र, मनराम एवं अजयराम के पद विशेषतः उल्लेखनीय हैं। संवत् १६२६ में रचित डूंगरवाघि की होलिका चौपई भी ऐसी रचना है जिसका परिचय प्रथम बार मिला है। संवत् १८३० में रचित इरचंद गंगवाल कृत पंचकल्याणक पाठ भी ऐसी ही सुन्दर रचना है।

संस्कृत ग्रंथों में उमारवामि विरचित पंचपरमेष्ठी स्तोत्र महत्वपूर्ण है। सूची में उसका पाठ उद्धृत किया गया है। भंडार में संग्रहीत प्राचीन प्रतियों में विमलनाथ पुराण सं० १६६६, गुणभद्राचार्य कृत धन्यकुमार चरित सं० १६५२, विदग्धमुखमंडन सं० १६-३, सारस्वत दीपिका सं० १६५७, नाममाला (धनंजय) सं० १६४३, धर्म परीक्षा (अमितगाति) सं० १६५३, समयसार नाटक (बनारसीदास) सं० १७०४ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

६ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर यशोदानन्दजी जयपुर (ज भंडार)

यह मन्दिर जैन यति यशोदानन्दजी द्वारा सं० १८४८ में बनवाया गया था और निर्माण के कुछ समय पश्चात् ही यहां शास्त्र भंडार की स्थापना कर दी गई। यशोदानन्दजी स्वयं साहित्यक व्यक्ति थे इसलिये उन्होंने थोड़े समय में ही अपने यहां शास्त्रों का अच्छा संकलन कर लिया। वर्तमान में शास्त्र भंडार में ३५३ ग्रंथ एवं १३ गुटके हैं। अधिकांश ग्रंथ १८ वीं शताब्दी एवं उसके बाद की शताब्दियों के लिखे हुये हैं। संग्रह सामान्य है। उल्लेखनीय ग्रंथों में चन्द्रप्रभाकव्य पंजिका सं० १५६४, पं० देवीचन्द कृत हितोपदेश की हिन्दी गद्य टीका, हैं। प्राचीन प्रतियों में आ० कुन्दकुन्द कृत समयसार सं० १६१४, आशाधर कृत सागारधर्मामृत सं० १६२८, केशवमिश्रकृत तर्कभाषा सं० १६६६ के नाम उल्लेखनीय हैं। यह मन्दिर चौड़ा रास्ते में स्थित है।

१० शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर विजयराम पांड्या जयपुर (भ भंडार)

विजयराम पांड्या ने यह मन्दिर कब बनवाया इसका कोई उल्लेख नहीं मिलता लेकिन मन्दिर की दशा को देखते हुये यह जयपुर बसने के समय का ही बना हुआ जान पड़ता है। यह मन्दिर

पानों का दरीवा चो० रामचन्द्रजी में स्थित है। यहां का शास्त्र भंडार भी कोई अच्छी दशा में नहीं है। बहुत से ग्रंथ जीर्ण हो चुके हैं तथा बहुत सों के पूरे पत्र भी नहीं हैं। वर्तमान में यहां २७५ ग्रंथ एवं ७६ गुटके हैं। शास्त्र भंडार को देखते हुये यहां गुटकों का अच्छा संग्रह है। इनमें विश्वभूषण की नेमीश्वर की लहरी, पुण्यरत्न की नेमिनाथ पूजा, श्याम कवि की तीन चौबीसी चौपाई (र. का. १७५६) स्योजी-राम सोगारी की लग्नचन्द्रिका भाषा के नाम उल्लेखनीय हैं। इन छोटी छोटी रचनाओं के अतिरिक्त रूपचन्द्र, दरिगह, मनराम, हर्षकीर्ति, कुमुदचन्द्र आदि कवियों के पद भी संग्रहीत हैं साह लोहट कृत षट्लेखावेलि एवं जसुराम का राजनीतिशास्त्र भाषा भी हिन्दी की उल्लेखनीय रचनायें हैं।

११ शास्त्र भंडार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ जयपुर (ज भंडार)

दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ जयपुर का प्रसिद्ध जैन मन्दिर है। यह खवासजी का रास्ता चो० रामचन्द्रजी में स्थित है। मन्दिर का निर्माण संवत् १८०५ में सोनी गोत्र वाले किसी श्रावक ने कराया था इसलिये यह सोनियों के मन्दिर के नाम से भी प्रसिद्ध है। यहां एक शास्त्र भंडार है जिसमें ५४० ग्रंथ एवं १८ गुटके हैं। इनमें सबसे अधिक संख्या संस्कृत भाषा के ग्रंथों की है। माणिक्य सूरि कृत नलोदय काव्य भंडार की सबसे प्राचीन प्रति है जो सं० १४४५ की लिखी हुई है। यद्यपि भंडार में ग्रंथों की संख्या अधिक नहीं है किन्तु अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों तथा प्राचीन प्रतियों का यहां अच्छा संग्रह है।

इन अज्ञान ग्रंथों में अपभ्रंश भाषा का विजयसिंह कृत अजितनाथ पुराण, कवि दामोदर कृत रोमिणाह चरिए, गुणनन्दि कृत वीरनन्दि के चन्द्रप्रभकाव्यकी पंजिका, (संस्कृत) महापंडित जगन्नाथ कृत नेमिनरेन्द्र स्तोत्र (संस्कृत) मुनि पद्मनन्दि कृत वर्द्धमान काव्य, शुभचन्द्र कृत तत्ववर्णन (संस्कृत) चन्द्रमुनि कृत पुराणसार (संस्कृत) इन्द्रजीत कृत मुनिमुप्रत पुराण (हि०) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

यहां ग्रंथों की प्राचीन प्रतियां भी पर्याप्त संख्या में संग्रहीत हैं। इनमें से कुछ प्रतियों के नाम निम्न प्रकार हैं।

सूची की क्र. सं.	ग्रंथ नाम	ग्रंथकार नाम	ले. काल	भाषा
१५३५	पटपाहुड़	आ० कुन्दकुन्द	१५१६	प्रा०
२३५०	वर्द्धमानकाव्य	पद्मनन्दि	१५१८	संस्कृत
१८३६	स्याद्वादमंजरी	मल्लिषेण सूरि	१५२१	"
१८३६	अजितनाथपुराण	विजयसिंह	१५८०	अपभ्रंश
२०६८	रोमिणाहचरिए	दामोदर	१५८२	"
२३२३	यशोधरचरित्र टिप्पण	प्रभाचन्द्र	१५८५	संस्कृत
११७६	सागारधर्मामृत	आशाधर	१५६५	"

सूची की क्र. सं.	ग्रंथ नाम	ग्रंथ कार नाम	ले. काल	भाषा
२५४१	कथाकोश	हरिषेणाचार्य	१५६७	संस्कृत
३८७६	जिनशतकटीका	नरसिंह भट्ट	१५६४	"
२२५	तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र	१६३३	"
२०८६	क्षत्रचूडामणि	वादीभसिंह	१६०५	"
२११३	धन्यकुमारचरित्र	आ० गुणभद्र	१६०३	"
२११५	नागकुमार चरित्र	धर्मधर	१६१६	"

इस भंडार में कपड़े पर संवत् १५१६ का लिखा हुआ प्रतिष्ठा पाठ है। जयपुर के भंडारों में उपलब्ध कपड़े पर लिखे हुये ग्रंथों में यह ग्रंथ सबसे प्राचीन है। यहां यशोधर चरित की एक सुन्दर एवं कला पूर्ण सचित्र प्रति है। इसके दो चित्र ग्रंथ सूची में देखे जा सकते हैं। चित्र कला पर मुगल कालीन प्रभाव है। यह प्रति करीब २०० वर्ष पुरानी है।

१२ आमेर शास्त्र भंडार जयपुर (ट भंडार)

आमेर शास्त्र भंडार राजस्थान के प्राचीन ग्रंथ भंडारों में से है। इस भंडार की एक ग्रंथ सूची सन् १९४८ में क्षेत्र के शोध संस्थान की ओर से प्रकाशित की जा चुकी है। उस ग्रंथ सूची में १५०० ग्रंथों का विवरण दिया गया था। गत १३ वर्षों में भंडार में जिन ग्रंथों का और संग्रह हुआ है उनकी सूची इस भाग में दी गई है। इन ग्रंथों में मुख्यतः जयपुर के छाबड़ों के मन्दिर के तथा बाबू ज्ञानचंदजी खिन्डूका द्वारा भेट किये हुये ग्रंथ हैं। इसके अतिरिक्त भंडार के कुछ ग्रंथ जो पहिले वाली ग्रंथ सूची में आने से रह गये थे उनका विवरण इस भाग में दे दिया गया है।

इन ग्रंथों में पुष्पदंत कृत उत्तरपुराण भी है जो संवत् १३६६ का लिखा हुआ है। यह प्रति इस सूची में आये हुये ग्रंथों में सबसे प्राचीन प्रति है। इसके अतिरिक्त १६ वीं १७ वीं एवं १८ वीं शताब्दी में लिखे हुये ग्रंथों का अच्छा संग्रह है। भंडार के इन ग्रंथों में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति विरचित छांदसीय कवित्त (हिन्दी), ब्र० जिनदास कृत चौरासी न्यातिमाला (हिन्दी), लाभवर्द्धन कृत पान्डव-चरित (संस्कृत), लाखो कविकृत पार्श्वनाथ चौपाई (हिन्दी) आदि ग्रंथों के नाम उल्लेखनीय हैं। गुटकों में मनोहर मिश्र कृत मनोहरमंजरी, उदयभानु कृत भोजरासो, अग्रदास के कवित्त, तिपरदास कृत रुक्मिणी कृष्णजी का रासो, जनमोहन कृत स्नेहलीला, श्याममिश्र कृत रागमाला, विनयकीर्ति कृत अष्टाहिका रासो तथा बंसीदास कृत रोहिणीविधिवथा उल्लेखनीय रचनायें हैं। इस प्रकार आमेर शास्त्र भंडार में प्राचीन ग्रंथों का अच्छा संकलन है।

ग्रंथों का विषयानुसार वर्गीकरण

ग्रंथ सूची को अधिक उपयोगी बनाने के लिये ग्रंथों का विषयानुसार वर्गीकरण करके उन्हें २५ विषयों में विभाजित किया गया है। विविध विषयों के ग्रंथों के अध्ययन से पता चलता है कि जैन आचार्यों ने प्रायः सभी विषयों पर ग्रंथ लिखे हैं। साहित्य का संभवतः एक भी ऐसा विषय नहीं होगा जिस पर इन विद्वानों ने अपनी कलम नहीं चलाई हो। एक ओर जहाँ इन्होंने धार्मिक एवं आगम साहित्य लिख कर भंडारों को भरा है वहाँ दूसरी ओर काव्य, चरित्र, पुराण, कथा कोश आदि लिख कर अपनी विद्वत्ता की छाप लगाई है। श्रावकों एवं सामान्य जन के हित के लिये इन आचार्यों एवं विद्वानों ने सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सूक्ष्म से सूक्ष्म विषय का विश्लेषण किया है। सिद्धान्त की इतनी गहन एवं सूक्ष्म चर्चा शायद ही अन्य धर्मों में मिल सके। पूजा साहित्य लिखने में भी ये किसी से पीछे नहीं रहे। इन्होंने प्रत्येक विषय की पूजा लिखकर श्रावकों को इनको जीवन में उतारने की प्रेरणा भी दी है। पूजाओं की जयमालाओं में कभी कभी इन विद्वानों ने जैन धर्म के सिद्धान्तों का बड़ी उत्तमता से वर्णन किया है। ग्रंथ सूची के इसही भाग में १५०० से अधिक पूजा ग्रंथों का उल्लेख हुआ है।

धार्मिक साहित्य के अतिरिक्त लौकिक साहित्य पर भी इन आचार्यों ने खूब लिखा है। तीर्थ-करों एवं शलाकाओं के महापुरुषों के पावन जीवन पर इनके द्वारा लिखे हुये बड़े बड़े पुराण एवं काव्य ग्रंथ मिलते हैं। ग्रंथ सूची में प्रायः सभी महत्वपूर्ण पुराण साहित्य के ग्रंथ आगये हैं। जैन सिद्धान्त एवं आचार शास्त्र के सिद्धान्तों को कथाओं के रूप में वर्णन करने में जैन आचार्यों ने अपने पारिडित्य का अच्छा प्रदर्शन किया है। इन भंडारों में इन विद्वानों द्वारा लिखा हुआ कथा साहित्य प्रचुर मात्रा में मिलता है। ये कथायें रोचक होने के साथ साथ शिक्षाप्रद भी हैं। इसी प्रकार व्याकरण, ज्योतिष एवं आयुर्वेद पर भी इन भंडारों में अच्छा साहित्य संग्रहीत है। गुटकों में आयुर्वेद के नुसखों का अच्छा संग्रह है। सैकड़ों ही प्रकार के नुसखे दिये हुये हैं जिन पर खोज होने की अत्यधिक आवश्यकता है। इस बार हमने क्लगु, रासो एवं बेलि साहित्य के ग्रंथों का अतिरिक्त वर्णन दिया है। जैन आचार्यों ने हिन्दी में छोटे छोटे सैकड़ों रासो ग्रंथ लिखे हैं जो इन भंडारों संग्रहीत हैं। अकेले ब्रह्म जिनदास के ४० से भी अधिक रासो ग्रंथ मिलते हैं। जैन भंडारों में १४ वीं शताब्दी के पूर्व से रासो ग्रंथ मिलने लगते हैं। इसके अतिरिक्त अध्ययन करने की दृष्टि से संग्रहीत किये हुये इन भंडारों में जैनैतर विद्वानों के काव्य, नाटक, कथा, ज्योतिष, आयुर्वेद, कोष, नीतिशास्त्र, व्याकरण आदि विषयों के ग्रंथों का भी अच्छा संकलन मिलता है। जैन विद्वानों ने कालिदास, माघ, भारवि आदि प्रसिद्ध कवियों के काव्यों का संकलन ही नहीं किया किन्तु इन पर विस्तृत टीकायें भी लिखी हैं। ग्रंथ सूची के इसी भाग में ऐसे कितने ही काव्यों का उल्लेख आया है। भंडारों में ऐतिहासिक रचनायें भी पर्याप्त संख्या में मिलती हैं। इनमें भट्टारक पट्टावलिां, भट्टारकों के छन्द, गीत, चोमासा वर्णन, वंशोत्पत्ति वर्णन, देहली के बादशाहों एवं अन्य राज्यों के राजाओं के वर्णन एवं नगरों की बसापत का वर्णन मिलता है।

विविध भाषाओं में रचित साहित्य

राजस्थान के शास्त्र भंडारों में उत्तरी भारत की प्रायः सभी भाषाओं के ग्रंथ मिलते हैं। इनमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी एवं गुजराती भाषा के ग्रंथ मिलते हैं। संस्कृत भाषा में जैन विद्वानों ने वृहद् साहित्य लिखा है। आ० समन्तभद्र, अकलंक, विद्यानन्दि, जिनसेन, गुणभद्र, वर्द्धमान भट्टारक, सोमदेव, वीरनन्दि, हेमचन्द्र, आशाधर, सकलकीर्ति आदि सैकड़ों आचार्य एवं विद्वान् हुये हैं जिन्होंने संस्कृत भाषा में विविध विषयों पर सैकड़ों ग्रंथ लिखे हैं जो इन भंडारों में मिलते हैं। यही नहीं इन्होंने अजैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये काव्य एवं नाटकों की टीकायें भी लिखी हैं। संस्कृत भाषा में लिखे हुये यशस्विलक चम्पू, वीरनन्दि का चन्द्रप्रभकाव्य, वर्द्धमानदेव का वरांगचरित्र आदि ऐसे काव्य हैं जिन्हें किसी भी महाकाव्य के समकक्ष विठाया जा सकता है। इसी तरह संस्कृत भाषा में लिखा हुआ जैनाचार्यों का दर्शन एवं न्याय साहित्य भी उच्च कोटि का है।

प्राकृत एवं अपभ्रंश भाषा के क्षेत्र में तो केवल जैनाचार्यों का ही अधिकांशतः योगदान है। इन भाषाओं के अधिकांश ग्रंथ जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये ही मिलते हैं। ग्रंथ सूची में अपभ्रंश में एवं प्राकृत भाषा में लिखे हुये पर्याप्त ग्रंथ आये हैं। महाकवि स्वयंभू, पुष्पदंत, अमरकीर्ति, नयनन्दि जैसे महाकवियों का अपभ्रंश भाषा में उच्च कोटि का साहित्य मिलता है। अब तक इस भाषा के १०० से^१ भी अधिक ग्रंथ मिल चुके हैं और वे सभी जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हैं।

इसी तरह हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा के ग्रंथों के संबंध में भी हमारा यही मत है कि इन भाषाओं की जैन विद्वानों ने खूब सेवा की है। हिन्दी के प्रारंभिक युग में जब कि इस भाषा में साहित्य निर्माण करना विद्वत्ता से परे समझा जाता था, जैन विद्वानों ने हिन्दी में साहित्य निर्माण करना प्रारम्भ किया था। जयपुर के इन भंडारों में हमें १३ वीं शताब्दी तक की रचनाएं मिल चुकी हैं। इनमें जिनदत्त चौपई सर्व प्रमुख है जो संवत् १३५४ (१२६७ ई.) में रची गयी थी। इसी प्रकार भ० सकलकीर्ति, ब्रह्म जिनदास, भट्टारक मुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द्र, छीहल, बूचराज, ठक्कुरसी, पल्ह आदि विद्वानों का बहुतसा प्राचीन साहित्य इन भंडारों में प्राप्त हुआ है। जैन विद्वानों द्वारा लिखे हुये हिन्दी एवं राजस्थानी साहित्य के अतिरिक्त जैनेतर विद्वानों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों का भी यहां अच्छा संकलन है। पृथ्वीराज कृत कृष्णरुक्मिणी वेलि, बिहारी सतसई, केशवदास की रसिकप्रिया, सूर एवं कबीर आदि कवियों के हिन्दीपद, जयपुर के इन भंडारों में प्राप्त हुये हैं। जैन विद्वान कभी कभी एक ही रचना में एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग भी करते थे। धर्मचन्द्र प्रबन्ध इस दृष्टि से अच्छा उदाहरण कहा जा सकता है।

१. देखिये कासलीवालजी द्वारा लिखे हुये Jain Granth Bhandars in Rajasthan का चतुर्थ परिशिष्ट।

स्वयं ग्रंथकारों द्वारा लिखे हुये ग्रंथों की मूल प्रतियां

जैन विद्वान् ग्रंथ रचना के अतिरिक्त स्वयं ग्रंथों की प्रतिलिपियां भी किया करते थे। इन विद्वानों द्वारा लिखे गये ग्रंथों की पाण्डुलिपियां राष्ट्र की धरोहर एवं अमूल्य सम्पत्ति है। ऐसी पाण्डुलिपियों का प्राप्त होना सहज बात नहीं है लेकिन जयपुर के इन भंडारों में हमें स्वयं विद्वानों द्वारा लिखी हुई निम्न पाण्डुलिपियां प्राप्त हो चुकी हैं।

सूची की क्र. सं.	ग्रंथकार	ग्रंथ नाम	लिपि संवत्
८४८	कनककीर्ति के शिष्य सदाराम	पुरुषार्थ सिद्धयुपाय	१७०७
१०४२	रत्नकरन्दश्रावकाचार भाषा	सदासुख कासलीवाल	१६२०
६७	गोम्मटसार जीवकांड भाषा	पं. टोडरमल	१८ वीं शताब्दी
२६२५	नाममाला	पं० भारामल्ल	१६४३
३६५२	पंचमंगलपाठ	खुशालचन्द काला	१८४४
५४३३	शीलरासा	जोधराज गोदीका	१७५०
५३८२	मिथ्यात्व खंडन	वख्तराम साह	१८३५
५७२८	गुटका	टेकचंद	—
५६५७	परमात्म प्रकाश एवं तत्वसार	डालूराम	—
६०४४	छीयालीस ठाणा	ब्रह्मरायमल्ल	१६१३

गुटकों का महत्व

शास्त्र भंडारों में हस्तलिखित ग्रंथों के अतिरिक्त गुटके भी संग्रह में होते हैं। साहित्यिक रचनाओं के संकलन की दृष्टि से ये गुटके बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इनमें विविध विषयों पर संकलन किये हुए कभी कभी ऐसे पाठ मिलते हैं जो अन्यत्र नहीं मिलते। ग्रंथ सूची में आये हुये बारह भंडारों में ८५० गुटके हैं। इनमें सबसे अधिक गुटके अ भंडार में हैं। अधिकांश गुटकों में पूजा स्तोत्र एवं कथायें ही मिलती हैं लेकिन प्रत्येक भंडार में कुछ गुटके ऐसे भी मिल जाते हैं जिनमें प्राचीन एवं अलभ्य पाठों का संग्रह होता है। ऐसे गुटकों का अ, ज, ज एवं ट भंडार में अच्छा संकलन है। १३ वीं शताब्दी की हिन्दी रचना जिनदत्त चौपई अ भंडार के एक गुटके में ही प्राप्त हुई है। इसी तरह अपभ्रंश की कितनी ही कथायें, ब्रह्मजिनदास, शुभचन्द, छीहल, ठक्कुरसी, पल्ह, मनराम आदि प्राचीन कवियों की रचनायें भी इन्हीं गुटकों में मिली हैं। हिन्दी पदों के संकलन के तो ये एकमात्र स्रोत है। अधिकांश हिन्दी विद्वानों का पद साहित्य इनमें संकलित किया हुआ होता है। एक एक गुटके में कभी कभी तो ३००, ४०० पद संग्रह किये हुये मिलते हैं। इन गुटकों में ही ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध होती है। पट्टावलिां, छन्द, गीत, वंशावलि, बादशाहों के विवरण, नगरों की बसापत आदि सभी इनमें

ही मिलते हैं। प्रत्येक शास्त्र भंडार के व्यवस्थापकों का कर्तव्य है कि वे अपने यहां के गुटकों को बहुत ही सम्हाल कर रखें जिससे वे नष्ट नहीं होने पावें क्योंकि हमने देखा है कि बहुत से भंडारों के गुटके बिना वेष्टनों में बंधे हुये ही रखे रहते हैं और इस तरह धीरे धीरे उन्हें नष्ट होने की मानों आह्ला दे दी जाती है।

शास्त्र भंडारों की सुरक्षा के संबंध में :

राजस्थान के शास्त्र भंडार अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं इसलिये उनकी सुरक्षा के प्रश्न पर सबसे पहिले विचार किया जाना चाहिये। छोटे छोटे गांवों में जहां जैनों के एक-एक दो-दो घर रह गये हैं वहां उनकी सुरक्षा होना अत्यधिक कठिन है। इसके अतिरिक्त कस्बों की भी यही दशा है। वहां भी जैन समाज का शास्त्र भंडारों की ओर कोई ध्यान नहीं है। एक तो आजकल छपे हुये ग्रंथ मिलने के कारण हस्तलिखित ग्रंथों की कोई स्वाध्याय नहीं करते हैं, दूसरे वे लोग इनके महत्व को भी नहीं समझते हैं। इसलिये समाज को हस्तलिखित ग्रंथों की सुरक्षा के लिये ऐसा कोई उपाय ढूंढना चाहिये जिससे उनका उपयोग भी होता रहे तथा वे सुरक्षित भी रह सकें। यह तो निश्चित ही है कि छपे हुए ग्रंथ मिलने पर इन्हें कोई पढ़ना नहीं चाहता। इसके अतिरिक्त इस ओर रुचि न होने के कारण आगे आने वाली सन्तति तो इन्हें पढ़ना ही भूल जावेगी। इसलिये यह निश्चित सा है कि भविष्य में ये ग्रंथ केवल विद्वानों के लिये ही उपयोगी रहेंगे और वे ही इन्हें पढ़ना तथा देखना अधिक पसन्द करेंगे।

ग्रंथ भंडारों की सुरक्षा के लिये हमारा यह सुझाव है कि राजस्थान के अभी सभी जिलों के कार्यालयों पर इनका एक एक संग्रहालय स्थापित हो तथा उप प्रान्त के सभी शास्त्र भंडारों के ग्रंथ उन संग्रहालय में संग्रहीत कर लिये जावें, किन्तु यदि किसी किसी उपजिलों एवं कस्बों में भी जैनों की अच्छी बस्ती है तो उन्हीं स्थानों पर भंडारों को रहने दिया जावे। जिलेवार यदि संग्रहालय स्थापित हो जावें तो वहां रिसर्च स्कालर्स आसानी से पहुंच कर उनका उपयोग कर सकते हैं तथा उनकी सुरक्षा का भी पूर्णतः प्रबन्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त राजस्थान में जयपुर, अलवर, भरतपुर, नागौर, कोटा, बूंदी, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, बांसवाडा आदि स्थानों पर इनके बड़े बड़े संग्रहालय खोल दिये जावें तथा अनुसन्धान प्रेमियों को उन्हें देखने एवं पढ़ने की पूरी सुविधाएं दी जावें तो ये हस्तलिखित के ग्रंथ फिर भी सुरक्षित रह सकते हैं अन्यथा उनका सुरक्षित रहना बड़ा कठिन होगा।

जयपुर के भी कुछ शास्त्र भंडारों को छोड़कर अन्य भंडार कोई विशेष अच्छी स्थिति में नहीं हैं। जयपुर के अब तक हमने १६ भंडारों की सूची तैयार की है लेकिन किसी भंडार में वेष्टन नहीं हैं नो कहीं बिना पुष्टों के ही शास्त्र रखे हुये हैं। हमारी इस असावधानी के कारण ही सैकड़ों ग्रंथ अपूर्ण हो गये हैं। यदि जयपुर के शास्त्र भंडारों के ग्रंथों का संग्रह एक केन्द्रीय संग्रहालय में कर लिया जावे तो उस

समय हमारा वह संग्रहालय जयपुर के दर्शनीय स्थानों में से गिना जावेगा। प्रति वर्ष सैकड़ों की संख्या में शोध विद्यार्थी आवेंगे और जैन साहित्य के विविध विषयों पर खोज कर सकेंगे। इस संग्रहालय में शास्त्रों की पूर्ण सुरक्षा का ध्यान रखा जावे और इसका पूर्ण प्रबन्ध एक संस्था के अधीन हो। आशा है जयपुर का जैन समाज हमारे इस निवेदन पर ध्यान देगा और शास्त्रों की सुरक्षा एवं उनके उपयोग के लिये कोई निश्चित योजना बना सकेगा।

ग्रंथ सूची के सम्बन्ध में

ग्रंथ सूची के इस भाग को हमने सर्वांग सुन्दर बनाने का पूर्ण प्रयास किया है। प्राचीन एवं अज्ञात ग्रंथों की ग्रंथ प्रशस्ति एवं लेखक प्रशस्तियां दी गई हैं जिनसे विद्वानों को उनके कर्ता एवं लेखन-काल के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी मिल सके। गुटकों में महत्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध होती है इसलिये बहुत से गुटकों के पूरे पाठ एवं शेष गुटकों के उल्लेखनीय पाठ दिये हैं। ग्रंथ सूची के अन्त में ग्रंथानुक्रमणिका, ग्रंथ एवं ग्रंथकार, ग्राम नगर एवं उनके शासकों का उल्लेख ये चार परिशिष्ट दिये हैं। ग्रंथानुक्रमणिका को देखकर सूची में आये हुये किसी भी ग्रंथ का परिचय शीघ्र मालूम किया जा सकता है क्योंकि बहुत से ग्रंथों के नाम से उनके विषय के सम्बन्ध में स्पष्ट जानकारी नहीं मिलती। ग्रंथानुक्रमणिका में ४२०० ग्रंथों का उल्लेख आया है जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि ग्रंथ सूची में निर्दिष्ट पं. सभी ग्रंथ मूल ग्रंथ हैं तथा शेष उन्हीं की प्रतियां हैं। इसी प्रकार ग्रंथ एवं ग्रंथकार परिशिष्ट से एक ही ग्रंथकार के इस सूची में कितने ग्रंथ आये हैं इसकी पूर्ण जानकारी मिल सकती है। ग्राम एवं नगरों के परिशिष्ट में इन भंडारों में किस किस ग्राम एवं नगरों में रचे हुये एवं लिखे हुये ग्रंथ संग्रहीत हैं यह जाना जा सकता है। इसके अतिरिक्त ये नगर कितने प्राचीन थे एवं उनमें साहित्यिक गतिविधियां किस प्रकार चलती थी इसका भी हमें आभास मिल सकता है। शासकों के परिशिष्ट में राजस्थान एवं भारत के विभिन्न राजा, महाराजा एवं बादशाहों के समय एवं उनके राज्य के सम्बन्ध में कुछ २ परिचय प्राप्त हो जाता है। ऐतिहासिक तथ्यों के संकलन में इस प्रकार के उल्लेख बहुत प्रामाणिक एवं महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। प्रस्तावना में ग्रंथ भंडारों के संक्षिप्त परिचय के अतिरिक्त अन्त में ४६ अज्ञात ग्रंथों का परिचय भी दिया गया है जो इन ग्रंथों की जानकारी प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगा। प्रस्तावना के साथ में ही एक अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूची भी दी गई है इस प्रकार ग्रंथ सूची के इस भाग में अन्य सूचियों से सभी तरह की अधिक जानकारी देने का पूर्ण प्रयास किया है जिससे पाठक अधिक से अधिक लाभ उठा सकें। ग्रंथों के नाम, ग्रंथकर्ता का नाम, उनके रचनाकाल, भाषा आदि के साथ-साथ उनके आदि अन्त भाग पूर्णतः ठीक २ देने का प्रयास किया गया है फिर भी कमियां रहना स्वाभाविक है। इसलिये विद्वानों से हमारा उदार दृष्टि अपनाने का अनुरोध है तथा यदि कहीं कोई कमी हो तो हमें सूचित करने का कष्ट करें जिससे भविष्य में इन कमियों को दूर किया जा सके।

धन्यवाद समर्पण

हम सर्व प्रथम क्षेत्र की प्रबन्ध कारिणी कमेटी एवं विशेषतः उसके मंत्री महोदय श्री केशरलालजी बख्शी को धन्यवाद देते हैं जिन्होंने ग्रंथ सूची के चतुर्थ भाग को प्रकाशित करवा कर समाज एवं जैन साहित्य की खोज करने वाले विद्यार्थियों का महान् उपकार किया है। क्षेत्र कमेटी द्वारा जो साहित्य शोध संस्थान संचालित हो रहा है वह सम्पूर्ण जैन समाज के लिये अनुकरणीय है एवं उसे नई दिशा की ओर ले जाने वाला है। भविष्य में शोध संस्थान के कार्य का और भी विस्तार किया जावेगा ऐसी हमें आशा है। ग्रंथ सूची में उल्लिखित सभी शास्त्र भंडार के व्यवस्थापक महोदयों को एवं विशेषतः श्री नथमलजी बज, समीरमलजी छाबड़ा, पूनमचंदजी सोगाणी, इन्दरलालजी पापड़ीवाल एवं सोहनलालजी सोगाणी, अनूपचंदजी दीवाण, भंवरलालजी न्यायतीर्थ, राजमलजी गोधा, प्रो० सुल्तानसिंहजी, कपूरचंदजी रांवका, आदि सज्जनों के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने हमें ग्रंथ भंडार की सूचियां बनाने में अपना पूर्ण सहयोग दिया एवं अब भी समय समय पर भंडार के ग्रंथ दिखलाने में सहयोग देते रहते हैं। श्रद्धेय पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ के प्रति हम कृतज्ञांजलियां अर्पित करते हैं जिनकी सतत प्रेरणा एवं मार्ग-दर्शन से साहित्योद्धार का यह कार्य दिया जा रहा है। हमारे सहयोगी भा० सुगनचंदजी को भी हम धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते जिनका ग्रंथ सूची को तैयार करने में हमें पूर्ण सहयोग मिला है। जैन साहित्य सदन देहली के व्यवस्थापक पं० परमानन्दजी शास्त्री के श्री हृद्य से आभारी हैं। जिन्होंने सूची के एक भाग को देखकर आवश्यक सुझाव देने का कष्ट किया है।

अन्त में आदरणीय डा. वासुदेवशरणजी सा. अग्रवाल, अध्यक्ष हिन्दी विभाग काशी विश्व-विद्यालय, वाराणसी के हम पूर्ण आभारी हैं जिन्होंने ग्रंथ सूची की भूमिका लिखने की कृपा की है। डाक्टर सा. का हमें सदैव मार्ग-दर्शन मिलता रहता है जिसके लिये उनके हम पूर्ण कृतज्ञ हैं।

महावीर भवन, जयपुर

दिनांक १०-११-६१

कस्तूरचंद कासलीवाल

अनूपचंद न्यायतीर्थ

प्राचीन एवं अज्ञात रचनाओं का परिचय

१ अमृतधर्मरस काव्य

श्रावक धर्म पर यह एक सुन्दर एवं सरस संस्कृत काव्य है। काव्य में २४ प्रकरण हैं भट्टारक गुणचन्द्र इसके रचयिता हैं जिन्होंने इसे लोहट के पुत्र सावलदास के पठनार्थ लिखा था। स्वयं ग्रंथकार ने अपनी प्रशस्ति निम्न प्रकार लिखी है—

पट्टे श्रीकुंदकुंदाचार्ये तत्पट्टे श्रीसहस्रकीर्ति तत्पट्टे श्रीत्रिभुवनकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री गुरु-
रत्नकीर्ति तत्पट्टे श्री ऋगुणचन्द्रदेवभट्टविरचितमहाग्रंथ कर्मक्षयार्थ लोहट सुत पंडित श्री सावलदास
पठनार्थ ॥ काव्य की एक प्रति जं भंडार में है। प्रति अशुद्ध है तथा उसमें प्रथम २ पृष्ठ नहीं हैं।

२ आघ्यात्मिक गाथा

इस रचना का दूसरा नाम षट् पद छप्पय है। यह भट्टारक लक्ष्मीचन्द्र की रचना है जो संभवतः भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में हुये थे। रचना अपभ्रंश भाषा में निबद्ध है तथा उच्चकोटि की है। इसमें संसार की नश्वरत्न का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया गया है। इसमें २५ पद हैं। एक पद नीचे देखिये—

विरला जाणंति पुणो विरला सेवंति अप्पणो सामि, विरला ससहावरया परदव्व परम्मुहा विरला ।
ते विरला जगि अत्थि जिकिवि परदव्वु ए इच्छहिं, ते विरला ससहाष करहिं रुइ गियमणि पिच्छहिं ॥
विरला सेवहिं सामि णित्तु णिय देह वसंतउ, विरला जाणहिं अप्पु शुद्ध चेरण गुणवंतउ ।
मणु पत्तणु दुल्लह लहिवि सरवय कुल्लु उत्तमु जियउ, जिणु एम पयंपइ णिसुणि वुह गाह भरिण छप्पउ कियउ ॥

इसकी एक प्रति जं भंडार में सुरक्षित है। यह प्रति आचार्य नेमिचन्द्र के पढ़ने के लिये लिखी गई थी।

३ आराधनासार प्रबन्ध

आराधनासार प्रबन्ध में मुनि प्रभाचंद्र विरचित संस्कृत कथाओं का संग्रह है। मुनि प्रभा-
चन्द्र देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे। किन्तु प्रभाचन्द्र के शिष्य थे मुनि पद्मनन्दि जिनके द्वारा विरचित 'वर्द्ध-
मान पुराण' का परिचय आगे दिया गया है। प्रभाचन्द्र ने प्रत्येक कथा के अन्त में अपना परिचय दिया
है। एक परिचय देखिये—

श्रीमूलसंधे वरभारतीये गच्छे बलात्कारगणेति रम्ये ।

श्रीकुंदकुंदाख्यमुनीन्द्रवंशे जातं प्रभाचन्द्रमहायतीन्द्रः ॥

देवेन्द्रचन्द्रार्कसम्मार्चितेन तेन प्रभाचन्दमुनीश्वरेण ।
अनुग्रहार्थं रचितः सुवाक्यैः आराधनासारकथाप्रबन्धः ॥
तेन क्रमेणैव मया स्वशक्त्या श्लोकैः प्रसिद्धै रचनिगद्यते च ।
मार्गेण किं भानुकरप्रकाशे स्वसीलया गच्छति सर्वलोकैः ॥

आराधनासार बहुत सुन्दर कथा ग्रंथ है । यह अभी तक अप्रकाशित है ।

४ कवि वल्लभ

क भंडार में हरिचरणदास कृत दो रचनायें उपलब्ध हुई हैं । एक विहारी सतसई पर हिन्दी गद्य टीका है तथा दूसरी रचना कवि वल्लभ है । हरिचरणदास ने कृष्णोपासक प्राणनाथ के पास विहारी सतसई का अध्ययन किया था । ये श्रीनन्द पुरोहित की जाति के थे तथा 'मोहन' उनके आश्रयदाता थे जो बहुत ही उदार प्रकृति के थे । विहारी सतसई पर टीका इन्होंने संवत् १८३४ में समाप्त की थी । इसके एक वर्ष पश्चात् इन्होंने कविवल्लभ की रचना की । इसमें काव्य के लक्षणों का वर्णन किया गया है । पूरे काव्य में २८४ पद्य हैं । संवत् १८५२ में लिखी हुई एक प्रति क भंडार में सुरक्षित है ।

५ उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा

देवीसिंह झाबडा १८ वीं शताब्दी के हिन्दी भाषा के विद्वान् थे । ये जिनदास के पुत्र थे । संवत् १७६६ में इन्होंने श्रावक माधोदास गोलालारे के आग्रह वश उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला की छन्दो-बद्ध रचना की थी । मूल ग्रंथ प्राकृत भाषा का है और वह नेमिचन्द्र भंडारी द्वारा रचित है । कवि नरवर निवासी थे जहां कूर्म वंश के राजा छत्रसिंह का राज्य था ।

उपदेश सिद्धान्तरत्नमाला भाषा हिन्दी का एक सुन्दर ग्रंथ है जो पूर्णतः प्रकाशन योग्य है । पूरे ग्रंथ में १६८ पद्य हैं जो दोहा, चौपई, चौबोला, गीताछंद, नाराच, सोरठा आदि छन्दों में निबद्ध है । कवि ने ग्रंथ समाप्ति पर जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है—

वातसल गोती सूचरो, संचई सकल बखान ।

गोलालारे सुभमती, माधोदास मुजान ॥१६०॥

चौपई

महाकठिन प्राकृत की वांती, जगत मांहि प्रगट सुखदानी ।
या विधि चिंता मनि सुभाषी, भाषा छंद मांहि अभिलाषी ॥
श्री जिनदास तनुज लघु भाषा, खंडेलवाल सावरा साखा ।
देवीस्यंध नाम सब भाषै, कवित मांहि चिंता मनि राखै ॥

गीता छंद

श्री सिद्धान्त उपदेशमाला रतनगुन मंडित करी ।
सब मुकवि कंठा करहु, भूषित सुमनसोभित विधिकरी ॥
जिम सूर्य के प्रकास सेती तम वितान विलात है ।
इमि पढ़ै परमागम सुवांनी विदत रुचि अवदात है ॥

दोहा

सुखविधान नरवरपती, छत्रस्थंघ अवतंस ।
कीरति वंत प्रवीन मति, राजत कूरम वंश ॥१६४॥
जाकै राज सुचैन सौं, विनां ईति अरु भीति ।
रच्यो प्रंथ सिद्धान्त सुभ, यह उपगार सुनीति ॥१६५॥
सत्रहसै अरु छएनवै, संबत् विक्रमराज ।
भादव बुदि एकादसी, शनिदिन सुविधि समाज ॥१६६॥
प्रंथ कियो पूरन सुविधि नरवर नगर मंझार ।
जै समझै याको अरथ ते पावै भवपार ॥१६७॥

चौबोला

सावन बदि की तीज आदि सौ आरंभ्यो यह प्रंथ ।
भादव बदि एकादशि तक लौं परमपुन्य को पंथ ॥
एक महिना आठ दिना मैं कियो समापत आनि ।
पढ़ै गुनै प्रकटै चिंतामनि बोध सदा सुख दांनि ॥१६८॥

इति उपदेशसिद्धांतरत्नमाला भाषा ॥

६ गोम्मटसार टीका

गोम्मटसार की यह संस्कृत टीका आ० सकलभूषण द्वारा विरचित है । टीका के प्रारम्भ में लिपिकार ने टीकाकार के विषय में लिखा है वह निम्न प्रकार है:—

“अथ गोम्मटसार प्रंथ गाथा बंध टीका करणाटक भाषा में है उसके अनुसार सकलभूषण नै संस्कृत टीका बनाई सो लिखिये है ।

टीका का नाम मन्दप्रबोधिका है जिसका टीकाकार ने मंगलाचरण में ही उल्लेख किया है:—

मुनिं सिद्धं प्रणम्याहं नेमिचन्द्रजिनेश्वरं ।
टीकां गुम्मतसारस्य कुर्वे मंदप्रबोधिकां ॥१॥

लेकिन अभयचन्द्राचार्य ने जो गोम्मतसार पर संस्कृत टीका लिखी थी उसका नाम भी मन्द-प्रबोधिका ही है । 'मुख्तार साहब ने उसको गाथा नं० ३८३ तक ही पाया जाना लिखा है, लेकिन जयपुर के 'क' भण्डार में संग्रहीत इस प्रति में आ० सकल भूषण दिया है । इसकी विद्वानों द्वारा विस्तृत खोज होनी चाहिये । टीका के अन्त में जो टीकाकाल लिखा है वह संवत् १५७६ का है ।

विक्रमादित्यभूपस्य विख्यातो च मनोहरे ।
दशपंचशते वर्षे षड्भिः संयुतसप्ततौ (१५७६)

टीका का आदि भाग निम्न प्रकार है:—

श्रीमदप्रतिहतप्रभावस्याद्वादशासन-गुहाअंतरनिवासि प्रवादिमदांधसिधुरसिंहायमानसिहनंदि मुनीन्द्राभिनंदित गंगवंशललामराज सर्वज्ञाचनेकगुणनामधेय-श्रीमद्रामल्लदेव महावल्लभ-महामात्य पदविराजमान रणरंगमल्लसहाय पराक्रमगुणरत्नभूषण सम्यक्त्वरत्ननिलयादिविविधगुणनाम समासादितकीर्तिकांतश्रीमच्छामुंडराय भव्यपुंडरीक द्रव्यानुयोगप्रशनानुरूपरूपं महाकर्मप्राभृतसिद्धान्त जीवस्थानाख्यप्रथमखंडार्थसंग्रहं गोम्मतसारनामधेयं [पंचसंग्रहशास्त्र प्रारभ समस्तसैद्धान्तिकचूडामणि श्रीमन्नेमिचंद्रसैद्धान्तचक्रवर्ति तद् गोमटसारप्रथमावयवभूतं जीवकांडं विरचयस्तत्रादौमलगालनपुण्यावाप्ति शिष्टाचारपरिपालननास्तिकतापरिहारादिफलजननसमर्थ विशिष्टेष्टदेवतानमस्काररूपधर मंगलपूर्वक प्रकृतशास्त्रकथनप्रतिज्ञासूचकं गाथा सूचकं कथयति ।

अन्तिम भाग

नत्वा श्रीवर्द्धमानांतान् वृषभादि जिनेश्वरान् ।
धर्ममार्गोपदेशत्वात् सर्वकल्याणदायिकान् ॥ १ ॥
श्रीचन्द्रादिप्रभांतं च नत्वा स्याद्वाददेशकं ।
श्रीमद्गुम्मतसारस्य कुर्वे शस्तां प्रशस्तिकां ॥ २ ॥
श्रीमतः शकराजस्य शाके वर्त्तति सुन्दरे ।
चतुर्दशशते चैक-चत्वारिंशत्-समन्विते ॥ ३ ॥
विक्रमादित्यभूपस्य विख्याते च मनोहरे ।
दशपंचशते वर्षे षड्भिः संयुतसप्ततौ ॥ ४ ॥

कार्तिके चाशिते पक्षे त्रयोदश्यां शुभ दिने ।
 शुके च हस्तनक्षत्रे योगो च प्रीति नामनि ॥ ५ ॥
 श्रीमच्छ्रीमूलसंघे च नंदाम्नाये तसद्गणे ।
 वलात्कारे जगन्मने गच्छे सारस्वताभिधे ॥ ६ ॥
 श्रीमच्छुं दकुं वाख्य सुरैरन्वयके भवत् ।
 पद्मादिर्नदि दित्याख्यो भट्टारकविचक्षणः ॥ ७ ॥
 तत्पट्टांभोजमार्तडः चंद्रांतरच शुभादिके ।
 तत्पदस्थोभवच्छ्रीमान् जिनचंद्रामिषोगणी ॥ ८ ॥
 तत्पट्टे सद्गुणैयुक्तो भट्टारकपदेश्वरः ।
 पंचाचाररतो नित्यं प्रभाचन्द्रो जितेन्द्रियः ॥ ९ ॥
 तत्सुशेष्यो धर्मचन्द्रश्च तत्कामांबुधि चंद्रमा ।
 तदाम्नाये भवत् भव्यास्ते वस्यति यथाक्रमं ॥ १० ॥
 कुरे मागपुरे रम्ये राजी महामखानके ।
 पादणीगोत्रके धुर्ये खण्डेलवालान्वयभूषणे ॥ ११ ॥
 वामादिमिशुं यैधुं क्तः लूणानामविचक्षणः ।
 तस्य भार्या भवत् शस्ता लूणाश्री चाभिवामिका ॥ १२ ॥
 तयोः पुत्रः समाख्यातः पर्वताख्यो विचारकः ।
 राज्यमान्यो जनैः सेव्यः संधमारधुरंधरं ॥ १३ ॥
 तस्य भार्यास्ति सत्साध्वी पर्वतश्रीति नामिका ।
 शीलादिगुणसंपन्ना पुत्रत्रयसमन्विताः ॥ १४ ॥
 प्रथमो जिनदासाख्यो गृहभरिधुरंधरः ।
 तस्य भार्या भवत्साध्वी जौणादेयविचक्षणा ॥ १५ ॥
 दानादिगुणसंयुक्ता द्वितीया च सुहागिणी ।
 प्रथमायास्तु पुत्रः स्यात् तेजपालो गुणाभिवी ॥ १६ ॥
 द्वितीयो देवदत्ताख्यो गुरुभक्तः प्रसन्नधीः ।
 पतिव्रतां गुणैयुक्ता भार्यादिवासिरीति च ॥ १७ ॥
 पितुर्भक्तौ गुणैयुक्तौ होलानामातृतीयकः ।
 होलादेया च तद्भार्या होलश्री द्वितीयिका ॥ १८ ॥
 लिखायि दत्तं निखिलै सुभक्तितः ।
 सिद्धान्तशास्त्रमिदं हि गुम्भटं ॥

धर्मादिचंद्राय स्वकर्महानये ।
हितोक्तये श्री सुखिने नियुक्तये ॥१६॥

७ चन्दनमलयागिरि कथा

चन्दनमलयागिरि की कथा हिन्दी की प्रेम कथाओं में प्रसिद्ध कथा है । यह रचना मुनि भद्रसेन की है जिसका वर्णन उन्होंने निम्न प्रकार किया है—

मम उपकारी परमगुरु, गुण अक्षर दातार, वंदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ॥३॥

रचना की भाषा पर राजस्थानी का पूर्ण प्रभाव है । कुछ पद्य पाठकों के अवलोकनार्थ नीचे दिये जा रहे हैं:—

शीतल जल सरवर भरे, कमल मधुप ऋणकार । पणघट पांणी भरण कौं, लार बहुत पणिहार ॥

× × × × ×

चंदन विनु मलयागरी, दिन दिन सूकत जात । ज्यौं पावस जलधार विनु, वनवेली कुमिलात ॥

× × × × ×

अग्नि मांझि जरिवौ भलौ, भलौ ज विष कौ पान । शील खंडिवौ नहिं भलौ, कहि कहु शील समान ॥

× × × × ×

चंदन आवत देखि करि, ऊठि दियो सनमान । उतरौ आपणौ धाम है, हम तुम होई पिछान ॥

रचना में कहीं कहीं गाथायें भी उद्धृत की हुई हैं । पद्य संख्या १८८ है । रचनाकाल एवं लेखन काल दोनों ही नहीं दिये हुये हैं लेकिन प्रति की प्राचीनता की दृष्टि से रचना १७ वीं शताब्दी की होनी चाहिये । भाषा एवं शैली की दृष्टि से रचना सुन्दर है । श्री मोतीलाल^१ मेनारिया ने इसका रचना काल सं. १६७५ माना है । इसका दूसरा नाम कलिकापंचमी^२ कथा भी मिलता है । अभी तक भद्रसेन की एक ही रचना उपलब्ध हुई है । इस रचना की एक सचित्र प्रति अभी हाल में ही हमें भंडारकीय शास्त्र भंडार डूंगरपुर में प्राप्त हुई है ।

८ चारुदत्त चरित्र

यह कल्याणकीर्ति की रचना है । ये भट्टारक सकलकीर्ति की परम्परा में होने वाले मुनि देवकीर्ति के शिष्य थे । कल्याणकीर्ति ने चारुदत्त चरित्र को संवत् १६६२ में समाप्त किया था । रचना में

१. राजस्थानी भाषा श्रीर साहित्य पृष्ठ सं० १६१

२. राजस्थान के जैन शास्त्र भंडारों की ग्रंथ सूची भाग २ पृ० सं० २३६

सेठ चारुदत्त के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। रचना चौपई एवं दूहा छन्द में है लेकिन राग भिन्न भिन्न है। इसका दूसरा नाम चारुदत्तरास भी है।

कल्याणकीर्ति १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। अब तक इनकी पार्श्वनाथ^१ रासो: (सं० १६६७) बावनी^२, जीराचलि पार्श्वनाथ स्तवन: (सं०) नवग्रह स्तवन (सं०) तीर्थकर विनती^३ (सं० १७२३) आदी-स्वर^४ बधावा आदि रचनायें मिल चुकी हैं।

६ चौरासी जातिजयमाल

ब्रह्म जिनदास १५ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान् थे। ये संस्कृत एवं हिन्दी दोनों के ही प्रगाढ विद्वान् थे तथा इन दोनों ही भाषाओं में इनकी ६० से भी अधिक रचनायें उपलब्ध होती हैं। जयपुर के इन भंडारों में भी इनकी अभी कितनी ही रचनायें मिली हैं जिनमें से चौरासी जातिजयमाल का वर्णन यहां दिया जा रहा है।

चौरासी जातिजयमाल में माला की बोली के उत्सव में सम्मिलित होने वाली ८४ जैन जातियों का नामोल्लेख किया है। माला की बोली बढाने में एक जाति से दूसरी जाति वाले व्यक्तियों में बढी झुंझुक्ता रहती थी। इस जयमाल में सबसे पहिले गोलालार अन्त में चतुर्थ जैन भावक जाति का उल्लेख किया गया है। रचना ऐतिहासिक है एवं इसकी भाषा हिन्दी (राजस्थानी) है। इसमें कुल ४३ पद्य हैं। ब्रह्म जिनदास ने जयमाल के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है।

ते समकित बंतह बहु गुण जुत्तहं, माल सुणो तहमे एकमनि।

ब्रह्म जिनदास भासै विबुध प्रकासै, पढई गुणै जै धर्म धनि ॥४३॥

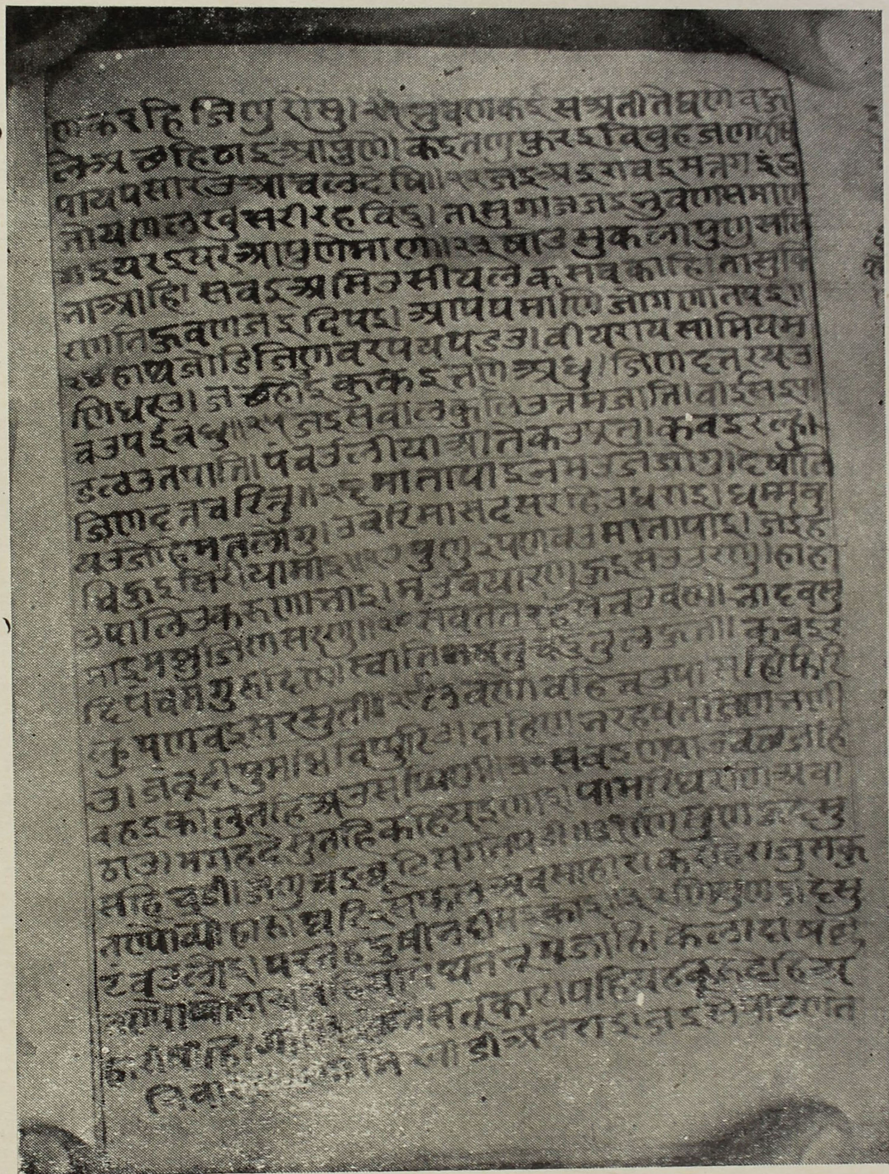
इसी चौरासी जाति जयमाला समाप्त।

इति जयमाल के आगे चौरासी जाति की दूसरी जयमाल है जिसमें २६ पद्य हैं और वह संभवतः किसी अन्य कवि की है।

१० जिनदत्तचौपई

जिनदत्त चौपई हिन्दी का आदिकालिक काव्य है जिसको रल्ल कवि ने संवत् १३५४ (सन् १२६७) भादवां सुदी पंचमी के दिन समाप्त किया था।

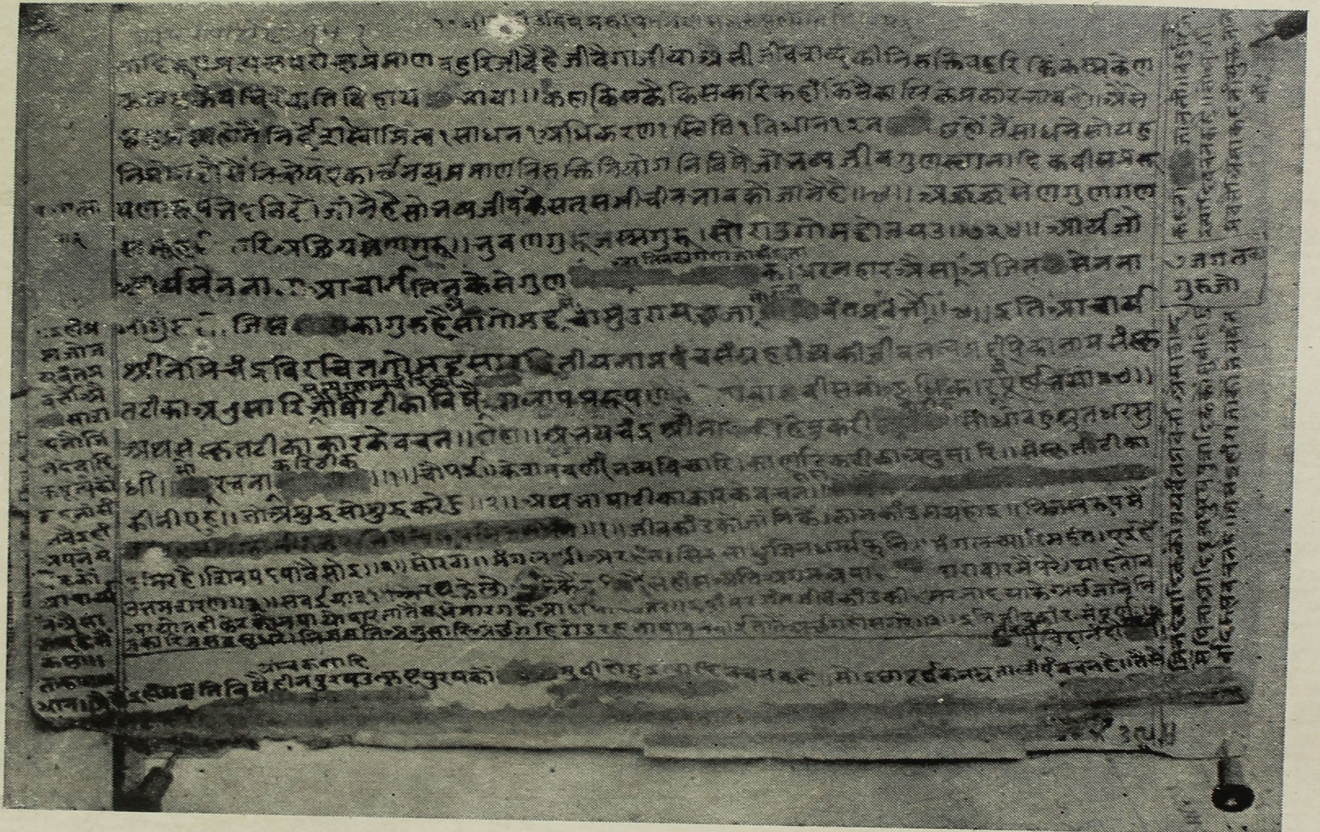
१.	राजस्थान जैन शास्त्र भंडारों की ग्रंथ सूची भाग २	पृष्ठ ७४
२.	” ” ” ”	पृष्ठ १०६
३.	” ” भाग ३	पृष्ठ १४१
४.	” ” ” ”	पृष्ठ १५२



रत्न कवि द्वारा संवत् १३५४ में रचित हिन्दी की अति प्राचीन कृति जिनदत्त चौपई का एक चित्र:—

पान्डुलिपि जयपुर के दि० जैन मन्दिर पाटोदी के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है ।

(इसका विस्तृत परिचय प्रस्तावना की पृष्ठ संख्या ३० पर देखिये)



१८ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध साहित्य सेवी महा पंडित टोडरमलजी द्वारा रचित एवं लिखित
गोष्मटसार की मूल पाण्डुलिपि का एक चित्र ।

यह ग्रन्थ जयपुर के दि० जैन मंदिरपाटोदी के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है ।

(सूची क्र. सं. ६७ वे. सं. ४०३)



संवत् तेरहसे चउवण्ये, भादव सुदिपंचमगुरु दिण्ये ।
स्वाति नखत्त चंदु तुलहती, कवइ रलहु पणवइ सुरसती ॥२८॥

कवि जैन धर्मावलम्बी थे तथा जाति से जैसवाल थे । उनकी माता का नाम सिरीया तथा पिता का नाम आते था ।

जइसवाल कुलि उत्तम जाति, वाईसइ पाडल उतपाति ।
पंचऊलीया आतेकउपूतु, कवइ रलहु जिणदत्तु चरित्तु ॥

जिनदत्त चौपई कथा प्रधान काव्य है इसमें कविने अपनी काव्यत्व शक्ति का अधिक प्रदर्शन न करते हुये कथा का ही सुन्दर रीति से प्रतिपादन किया है । ग्रंथ का आधार पं. लाखू द्वारा विरचित जिणयत्तचरिउ (सं. १२७५) है जिसका उल्लेख स्वयं ग्रंथकार ने किया है ।

मइ जोयउ जिनदत्तपुराणु, लाखू विरयउ अइसू पषाण ॥

ग्रंथ निर्माण के समय भारत पर अलाउद्दीन खिलजी का राज्य था । रचना प्रधानतः चौपई छन्द में निबद्ध है किन्तु वस्तुबंध, दोहा, नाराच, अर्धनाराच आदि छन्दों का भी कहीं २ प्रयोग हुआ है । इसमें कुल पद्य ५५४ हैं । रचना की भाषा हिन्दी है जिस पर अपभ्रंश का अधिक प्रभाव है । वैसे भाषा सरल एवं सरस है । अधिकांश शब्दों की उकारान्त बनाकर प्रयोग किया गया है जो उस समय की परम्परा सी मालूम होती है । काव्य कथा प्रधान होने पर भी उसमें रोमांचकता है तथा काव्य में पाठकों की उत्सुकता बनी रहती है ।

काव्य में जिनदत्त मगध देशान्तर्गत बसन्तपुर नगर सेठ के पुत्र जीवदेव का पुत्र था । जिनेन्द्र भगवान की पूजा अर्चना करने से प्राप्त होने के कारण उसका नाम जिनदत्त रखा गया था । जिनदत्त व्यापार के लिये सिंघल आदि द्वीपों में गया था । उससे व्यापार में अतुल लाभ के अतिरिक्त वहां से उसे अनेक अलौकिक विद्यायें एवं राजकुमारियां भी प्राप्त हुई थी । इस प्रकार पूरी कथा जिनदत्त के जीवन की सुन्दर कहानियों से पूर्ण है ।

११ ज्योतिषसार

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है ज्योतिषसार ज्योतिष शास्त्र का ग्रंथ है । इसके रचयिता हैं श्री कृपाराम जिन्होंने ज्योतिष के विभिन्न ग्रंथों के आधार से संवत् १७४२ में इसकी रचना की थी । कवि के पिता का नाम तुलाराम था और वे शाहजहांपुर के रहने वाले थे । पाठकों की जानकारी के लिये ग्रंथ में से दो उद्धरण दिये जा रहे हैं:—

केदरियों चौथो भवन, सपतमदसमौ जान । पंचम अरु नोमौ भवन, येह त्रिकोण बखान ॥६॥
तीजो षसटम ग्यारमों, धर दसमों कर लेखि । इनकौ उपत्रै कहत है, सर्वग्रंथ में देखि ॥७॥

वरष लग्यो जा अंस में, सोह दिन चित धारि । वा दिन उतनी घडी, जु पल बीते लप्रविचारि ॥४०॥
लगन लिखे ते गिरह जो, जा घर बैठो आय । ता घर के मूल सुफल को कीजे मित बनाय ॥४१॥

१२ ज्ञानार्णव टीका

आचार्य शुभचन्द्र विरचित ज्ञानार्णव संस्कृत भाषा का प्रसिद्ध ग्रन्थ है । स्वाध्याय करने वालों का प्रिय होने के कारण इसकी प्रायः प्रत्येक शास्त्र भंडार में हस्तलिखित प्रतियां उपलब्ध होती हैं । इसकी एक टीका विद्यानन्द के शिष्य श्रुतसागर द्वारा लिखी गई थी । ज्ञानार्णव की एक अन्य संस्कृत टीका जयपुर के अ भंडार में उपलब्ध हुई है । टीकाकार है पं. नयविलास । उन्होंने इस टीका को मुगल सम्राट अकबर जलालुद्दीन के राजस्व मंत्री टोडरमल के सुत रिषिदास के श्रवणार्थ एवं पठनार्थ लिखी थी । इसका उल्लेख टीकाकार ने ग्रन्थ के प्रत्येक अध्याय के अंत में निम्न प्रकार किया है:—

इति शुभचन्द्राचार्यविरचिते ज्ञानार्णवमूलसूत्रे योगप्रदीपाधिकारे पं. नयविलासेन साह पासा तत्पुत्र साह टोडर तत्पुत्र साह रिषिदासेन स्वश्रवणार्थं पंडित जिनदासोद्यमेन कारापितेन द्वादशभावना प्रकरण द्वितीयः ।

टीका के प्रारम्भ में भी टीकाकार ने निम्न प्रशस्ति लिखी है—

शास्वत् साहि जलालदीनपुरतः प्राप्त प्रतिश्रोदयः ।
श्रीमान् मुगलवंशशारद-शशि-विश्वोपकारोद्यतः ।
नाम्ना कृष्ण इति प्रसिद्धिरभवत् सत्तात्रधर्मोन्नतेः ।
तन्मन्त्रीश्वर टोडरो गुणयुतः सर्वाधिकाराधितः ॥६॥
श्रीमत् टोडरसाह पुत्र निपुणः सहानर्चितामणिः ।
श्रीमत् श्रीरिषिदास धर्मनिपुणः प्राप्तोन्नतिस्वश्रिया ।
तेनाहं समवादि निपुणो न्यायाचलीलाह्वयः ।
श्रोतुं वृत्तिमता परं सुविषया ज्ञानार्णवस्य स्फुटं ॥७॥

सक्त प्रशस्ति से यह जाना जा सकता है कि सम्राट अकबर के राजस्व मंत्री टोडरमल संभवतः जैन थे । इनके पिता का नाम साह पाशा था । स्वयं मंत्री टोडरमल भी कवि थे और इनका एक भजन “अब तेरो मुख देखूं जिनंदा” जैन भंडारों में कितने ही गुटको में मिलता है ।

नयविलास की संस्कृत टीका का उल्लेख पीटर्सन ने भी किया है लेकिन उन्होंने नामोल्लेख के अतिरिक्त और कोई परिचय नहीं दिया है । पं. नयविलास का विशेष परिचय अभी खोज का विषय है ।

१३ गेमिणाह चरिए—महाकवि दामोदर

महाकवि दामोदर कृत गेमिणाह चरिए अपभ्रंश भाषा का एक सुन्दर काव्य है । इस काव्य में पांच संधियां हैं जिनमें भगवान नेमिनाथ के जीवन का वर्णन है । महाकवि ने इसे संवत् १२८७ में समाप्त किया था जैसा निम्न दुवई छन्द (एक प्रकार का दोहा) में दिया हुआ है:—

वारहसियाई सत्तसियाई, विष्कमरायहो कालहं । पमारहं पट्ट समुद्धरणु, एरवर देवापालहं ॥१४५॥

दामोदर मुनि सूरसेन के प्रशिष्य एवं महामुनि कमलभद्र के शिष्य थे । इन्होंने इस ग्रंथ की पंडित रामचन्द्र के आदेश से रचना की थी । ग्रंथ की भाषा सुन्दर एवं ललित है । इसमें घत्ता, दुवई, वस्तु छंद का प्रयोग किया गया है । कुल पद्यों की संख्या १४५ है । इस काव्य से अपभ्रंश भाषा का शनैः शनैः हिन्दी भाषा में किस प्रकार परिवर्तन हुआ यह जाना जा सकता है ।

इसकी एक प्रति अ भंडार में उपलब्ध हुई है । प्रति अपूर्ण है तथा प्रथम ७ पत्र नहीं हैं । प्रति सं० १५८२ की लिखी हुई है ।

१४ तत्त्ववर्णन

यह मुनि शुभचन्द्र की संस्कृत रचना है जिसमें संक्षिप्त रूप से जीवादि द्रव्यों का लक्षण वर्णित है । रचना छोटी है और उसमें केवल ५१ पद्य हैं । प्रारम्भ में ग्रंथकर्त्ता ने निम्न प्रकार विषय वर्णन करने का उल्लेख किया है:—

तत्त्वातत्वस्वरूपज्ञं सार्व्वं सर्व्वगुणाकरं । वीरं नत्वा प्रवक्ष्येऽहं जीवद्रव्यादिलक्षणं ॥१॥

जीवाजीवमिदं द्रव्यं युग्ममाहु जिनेश्वरा । जीवद्रव्यं द्विधातत्र शुद्धाशुद्धविकल्पतः ॥२॥

रचना की भाषा सरल है । ग्रंथकार ने रचना के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है:—

श्री कंजकीर्त्तिसद्देवैः शुभेदुमुनितेरितै । जिनागमानुसारेण सम्यक्त्वव्यक्ति-हेतवे ॥५०॥

मुनि शुभचन्द्र भट्टारक शुभचन्द्र से भिन्न विद्वान हैं । ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान थे । इनके द्वारा लिखी हुई अभी हिन्दी भाषा की भी रचनायें मिली हैं । यह रचना अ भंडार में संग्रहीत है । यह आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी ।

१५ तत्त्वार्थसूत्र भाषा

प्रसिद्ध जैनाचार्य उमास्वामि के तत्त्वार्थसूत्र का हिन्दी पद्यमें अनुवाद बहुत कम विद्वानों ने किया है । अभी क भंडार में इस ग्रंथ का हिन्दीपद्यानुवाद मिला है जिसके कर्त्ता हैं श्री छोटेलाल, जो अलीगढ प्रान्त के मेडूगांव के रहने वाले थे । इनके पिता का नाम मोतीलाल था । ये जैसवाल जैन थे तथा काशी नगर में आकर रहने लगे थे । इन्होंने इस ग्रंथ का पद्यानुवाद संवत् १६३२ में समाप्त किया था ।

छोटेलाल हिन्दी के अच्छे विद्वान थे । इनकी अब तक तत्त्वार्थसूत्र भाषा के अतिरिक्त और रचनायें भी उपलब्ध हुई हैं । ये रचनायें चौबीस तीर्थंकर पूजा, पंचपरमेष्ठी पूजा एवं नित्यनियमपूजा हैं । तत्त्वार्थ सूत्र का आदि भाग निम्न प्रकार है ।

मोक्ष की राह बनावत जे । अरु कर्म पहाड करै चकचूरा,
विश्वसुतत्त्व के ज्ञायक है ताही, लब्धि के हेत नमौं परिपूरा ।
सम्यग्दर्शन चरित ज्ञान कहे, याहि मारग मोक्ष के सूरा,
तत्व को अर्थ करो सरधान सो सम्यग्दर्शन मजहूरा ॥१॥

कवि ने जिन पद्यों में अपना परिचय दिया है वे निम्न प्रकार हैं:—

जिलो अलीगढ जानियो मेडूगाम सुधाम । मोतीलाल सुपुत्र है छोटेलाल सुनाम ॥१॥
जैसवाल कुल जाति है श्रेणी वीसा जान । वंश इष्याक महान में लयो जन्म भू आन ॥२॥
काशी नगर सुआय कै सैनी संगति पाय । उदयराज भाई लखो सिखरचन्द गुण काय ॥३॥
छंद भेद जानों नहीं और गणागण सोय । केवल भक्ति सुधर्म की बसी सुहृदय मोय ॥४॥
ता प्रभाव या सूत्र की छंद प्रतिज्ञा सिद्धि । भाई सु भवि जन सोधियो होय जगत प्रसिद्ध ॥५॥
मंगल श्री अर्हत है सिद्ध साध चपसार । तिन नुति मनवच काय यह मेटो विघन विकार ॥६॥
छंद बंध श्री सूत्र के किये सु बुधि अनुसार । मूलग्रंथ कूं देखिके श्री जिन हिरदै धारि ॥७॥
कारमास की अष्टमी पहलो पक्ष निहार । अठसटि उन सहस्र दो संवत रीति विचार ॥८॥

इति छंदबद्धसूत्र संपूर्ण ।

संवत् १६५३ चैत्र कृष्णा १३ बुधे ।

१६ दर्शनसार भाषा

नथमल नाम के कई विद्वान हो गये हैं । इनमें सबसे प्रसिद्ध १८ वीं शताब्दी के नथमल बिलाला थे जो मूलतः आगरे के निवासी थे किन्तु बाद में हीरापुर (हिएडौन) आकर रहने लगे थे । उक्त विद्वान के अतिरिक्त १६ वीं शताब्दी में दूसरे नथमल हुये जिन्होंने कितने ही ग्रंथों की भाषा टीका लिखी । दर्शनसार भाषा भी इन्हीं का लिखा हुआ है जिसे उन्होंने संवत् १६२० में समाप्त किया था । इसका उल्लेख स्वयं कवि ने निम्न प्रकार किया है ।

बीस अधिक उगणीस सै शात, श्रावण प्रथम चोथि शनिवार ।

कृष्णपक्ष में दर्शनसार, भाषा नथमल लिखी सुधार ॥५६॥

दर्शनसार मूलतः देवसेन का ग्रंथ है जिसे उन्होंने संवत् ६६० में समाप्त किया था । नथमल ने इसी का पद्यानुवाद किया है ।

नथमल द्वारा लिखे हुये अन्य ग्रंथों में महीपालचरितभाषा (संवत् १६१८), योगसार भाषा (संवत् १६१६), परमात्मप्रकाश भाषा (संवत् १६१६), रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा (संवत् १६२०), षोडश-

कारणभावना भाषा (संवत् १६२१) अप्राहिकाकथा (संवत् १६२२), रत्नत्रय जयमाल (संवत् १६२४) उल्लेखनीय हैं ।

१७ दर्शनसार भाषा

१८ वीं एवं १९ वीं शताब्दी में जयपुर में हिन्दी के बहुत विद्वान् होगये हैं । इन विद्वानों ने हिन्दी भाषा के प्रचार के लिए सैकड़ों प्राकृत एवं संस्कृत के ग्रंथों का हिन्दी गद्य एवं पद्य में अनुवाद किया था । इन्हीं विद्वानों में से पं० शिवजीलालजी का नाम भी उल्लेखनीय है । ये १८ वीं शताब्दी के विद्वान थे और इन्होंने दर्शनसार की हिन्दी गद्य टीका संवत् १८२३ में समाप्त की थी । गद्य में राजस्थानी शैली का उपयोग किया गया है । इसका एक उदाहरण देखिये:—

सांच कहतां जीव के उपरिलोक दूखो वा तूषो । सांच कहने वाला तो कहै ही कहा जग का भय करि राजदंड छोडि देता है वा जूँवा का भय करि राजमनुष्य कपडा पटकि देय है ? तैसे निंदने वाले निंदा, स्तुति करने वाले स्तुति करो, सांच बोला तो सांच कहै ।

१८ धर्मचन्द्र प्रबन्ध

धर्मचन्द्र प्रबन्ध में मुनि धर्मचन्द्र का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । मुनि, भट्टारकों एवं विद्वानों के सम्बन्ध में ऐसे प्रबन्ध बहुत कम उपलब्ध होते हैं इस दृष्टि से यह प्रबन्ध एक महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक रचना है । रचना प्राकृत भाषा में है विभिन्न छन्दों की २० गाथायें हैं ।

प्रबन्ध से पता चलता है कि मुनि धर्मचन्द्र भ० प्रभाचन्द्र के शिष्य थे । ये सकल कला में प्रवीण एवं आगम शास्त्र के पारगामी विद्वान थे । भारत के सभी प्रान्तों के श्रावकों में उनका पूर्ण प्रभुत्व था और समय २ पर वे आकर उनकी पूजा किया करते थे ।

प्रबन्ध की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ३६६ पर दी हुई है ।

१९ धर्मविलास

धर्मविलास ब्रह्म जिनदास की रचना है । कवि ने अपने आपको सिद्धान्तचक्रवर्ति आ० नेमिचन्द्र का शिष्य लिखा है । इसलिये ये भट्टारक सकलकीर्ति के अनुज एवं उनके शिष्य प्रसिद्ध विद्वान ब्र० जिनदास से भिन्न विद्वान हैं । इन्होंने प्रथम मंगलाचरण में भी आ० नेमिचन्द्र को नमस्कार किया है ।

भवकमलमायंडं सिद्धजिण तिहुपनिंद सदपुज्जं । नेमिशसिं गुरुवीरं पणमीय तियशुद्धभोवमहणं ॥१॥

ग्रंथ का नाम धर्मपंचविंशतिका भी है । यह प्राकृत भाषा में निबद्ध है तथा इसमें केवल २६ गाथायें हैं । ग्रंथ की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रवर्त्याचार्यश्रीनेमिचन्द्रस्य प्रियशिष्यब्रह्मजिनदासविरचितं धर्मपंच-
विंशतिका नाम शास्त्रसमाप्तम् ।

२० निजामणि

यहाँ प्रसिद्ध विद्वान् ब्रह्म जिनदास की कृति है जो जयपुर के 'क' भण्डार में उपलब्ध हुई है । रचना छोटी है और उसमें केवल ५४ पद्य हैं । इसमें चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति एवं अन्य शलाका महापुरुषों का नामोल्लेख किया गया है । रचना स्तुति परक होते हुये भी आध्यात्मिक है । रचना का आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है:—

श्री सकल जिनेश्वर देव, हूँ तह्य पाय करू सेव ।
हवे निजामणि कहु सार, जिम लपक तरे संसार ॥ १ ॥
हो लपक सुणे जिनवाणि, संसार अथिर तू जाणि ।
इहां रखा नहिं कोई थीर, हवे मन दृढ करो निज थीर ॥ २ ॥
ग्या आदिश्वर जगीसार, ते जुगला धर्म निवार ।
ग्या अजित जिनेश्वर चंग, जिने कियो कर्म नो भंग ॥ ३ ॥
ग्या संभव भव हर स्वामी, ते जिनवर मुक्ति हि गामी ।
ग्या अभिनंदन आनंद, जिने मोड्यो भव नो कंद ॥ ४ ॥
ग्या सुमति सुमति दातार, जिने रण मुमी जित्यो मार ।
ग्या पद्मप्रभ जगिवास, ते मुक्ति तणा निवास ॥ ५ ॥
ग्या सुपार्श्व जिन जगीसार, जसु पास न रहियो भार ।
ग्या चंद्रप्रभ जगीचंद्र, जिने त्रिभुवन कियो आनन्द ॥ ६ ॥

× × × ×

ए निजामणि कहि सार, ते सयल सुख भंडार ।
जे लपक सुणे ए चंग, ते सौख्य पाये अभंग ॥ ५३ ॥
श्री सकलकीर्त्ति गुरु ध्याउ, मुनि भुवनकीर्त्ति गुणगाउ ।
ब्रह्म जिनदास भणोसार, ए निजामणि भवतार ॥ ५४ ॥

२१ नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

यह स्तोत्र वादिराज जगन्नाथ कृत है । ये भट्टारक नरेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य थे तथा टोडारायसिंह (जयपुर) के रहने वाले थे । अब तक इनकी श्वेताम्बर पराजय (केवलि मुक्ति निराकरण), सुख निधान, चतुर्विंशति संधान स्वोपज्ञ टीका एवं शिव साधन नाम के चार ग्रंथ उपलब्ध हुये थे । नेमिनरेन्द्र स्तोत्र

उनकी पांचवी कृति है जिसमें टोडारायसिंह के प्रसिद्ध नेमिनाथ मन्दिर की मूलनायक प्रातमा नेमिनाथ का स्तवन किया गया है। ये १७ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। रचना में ४१ छन्द हैं तथा अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है:—

श्रीमन्नेमिनरेन्द्रकीर्तिरतुलं चित्तोत्सवं च कृतात् ।
पूर्वानिकभवार्जितं च कलुषं भक्तस्य वै जर्हतात् ॥
उद्धृत्या पद एव शर्मदपदे, स्तोतृनहो.....।
शाश्वत् छ्रीजगदीशनिर्मलहृदि प्रायः सदा वर्ततात् ॥४१॥

उक्त स्तोत्र की एक प्रति ज भण्डार में संग्रहीत है जो संवत् १७८४ की लिखी हुई है।

२२ परमात्मराज स्तोत्र

भट्टारक सकलकीर्ति द्वारा विरचित यह दूसरी रचना है जो जयपुर के शास्त्र भंडारों में उपलब्ध हुई है। यह सुन्दर एवं भावपूर्ण स्तोत्र है। कवि ने इसे महास्तवन लिखा है। स्तोत्र की भाषा सरल एवं सुन्दर है। इसकी एक प्रति जयपुर के क भंडार में संग्रहीत है। इसमें १६ पद्य हैं। स्तोत्र की पूरी प्रति ग्रंथ सूची के पृष्ठ ४०३ पर दे दी गयी है।

२३ पासचरिए

पासचरिए अपभ्रंश भाषा की रचना है जिसे कवि तेजपाल ने सिवदास के पुत्र घूघलि के लिये निबद्ध की थी। इसकी एक अपूर्ण प्रति न भण्डार में संग्रहीत है। इस प्रति में ८ से ७७ तक पत्र हैं जिन में आठ संधियों का विवरण है। आठवीं संधि की अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इयसिरि पास चरित्तं रइयं कइ तेजपाल साणंदं अणुसंणियसुहइं घूघलि सिवदास पुत्तेण सग्गग्गवाल छीजा सुपसाएण लव्भए णूणं अरविंद दिक्त्वा अट्टमसंधी परिसमत्तो ॥

तेजपाल ने ग्रंथ में दुवई, घत्ता एवं कडवक इन तीन छन्दों का उपयोग किया है। पहिले घत्ता फिर दुवई तथा सबके अन्त में कडवक इस क्रम से इन छन्दों का प्रयोग हुआ है। रचना अभी अप्रकाशित है।

तेजपाल १४ वीं शताब्दी के विद्वान् थे। इनकी दो रचनाएं संभवनाथ चरित एवं वरांग चरित पहिले प्राप्त हो चुकी हैं।

२४ पार्श्वनाथ चौपई

पार्श्वनाथ चौपई कवि लाखो की रचना है जिसे उन्होंने संवत् १७३४ में समाप्त किया था।

कवि राजस्थानी विद्वान् थे तथा वणहटका ग्राम के रहने वाले थे । उस समय मुगल बादशाह औरंगजेब का शासन था । पार्श्वनाथ चौपई में २६८ पद्य हैं जो सभी चौपई में हैं । रचना सरस भाषा में निबद्ध है ।

२५ पिंगल छन्द शास्त्र

छन्द शास्त्र पर माखन कवि द्वारा लिखी हुई यह बहुत सुन्दर रचना है । रचना का दूसरा नाम माखन छंद विलास भी है । माखन कवि के पिता जिनका नाम गोपाल था स्वयं भी कवि थे । रचना में दोहा चौबोला, छप्पय, सोरठा, मदनमोहन, हरिमालिका संखधारी, मालती, डिल्ल, करहंचा समानिका, मुजंगग्रयात, मंजुभाषिणी, सारंगिका, तरंगिका, भ्रमरावलि, मालिनी आदि कितने ही छन्दों के लक्षण दिये हुये हैं ।

माखन कवि ने इसे संवत् १८६३ में समाप्त किया था । इसकी एक अपूर्ण प्रति 'अ' भण्डार के संग्रह में है । इसका आदि भाग सूची के ३१० पृष्ठ पर दिया हुआ है ।

२६ पुण्यासत्रकथा कोश

टेकचन्द १८ वीं शताब्दी के प्रमुख हिन्दी कवि हो गये हैं । अबतक इनकी २० से भी अधिक रचनायें प्राप्त हो चुकी हैं । जिन में से कुछ के नाम निम्न प्रकार हैं:—

पंचपरमेष्ठी पूजा, कर्मदहन पूजा, तीनलोक पूजा (सं० १८२८) सुदृष्टि तरंगिणी (सं० १८३८) सोलहकारण पूजा, व्यसनराज बर्णन (सं० १८२७) पञ्चकल्याण पूजा, पञ्चमेरु, पूजा, दशाध्याय सूत्र गद्य टीका, अध्यात्म बारहखडी, आदि । इनके पद भी मिलते हैं जो अध्यात्म रस से ओतप्रोत हैं ।

टेकचंद के पितासह का नाम दीपचंद एवं पिता का नाम रामकृष्ण था । दीपचंद स्वयं भी अच्छे विद्वान् थे । कवि खण्डेलवाल जैन थे । ये मूलतः जयपुर निवासी थे लेकिन फिर साहिपुरा में जाकर रहने लगे थे । पुण्यासत्रकथाकोश इनकी एक और रचना है जो अभी जयपुर के 'क' भण्डार में प्राप्त हुई है । कवि ने इस रचना में जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है:—

दीपचन्द साधर्मी भए, ते जिनधर्म विषै रत थए ।
तिन से पुरस तरुं संगपाय, कर्म जोग्य नहीं धर्म सुहाय ॥ ३२ ॥
दीपचन्द तन तैं तन भयो, ताको नाम हली हरि दीयो ।
रामकृष्ण तैं जो तन थाय, हठीचंद ता नाम धराय ॥ ३३ ॥
सो फिरि कर्म उदै तैं आय, साहिपुरै थिति कीनी जाय ।
तहां भी बहुत काल विन ज्ञान, खोयो मोह उदै तैं आनि ॥

×

×

×

साहिपुरा सुभथान में, भलो सहारो पाय ।
 धर्म लियो जिन देव को, नरभव सफल कराय ॥
 नृप उमेद ता पुर विषै, करै राज बलवान ।
 तिन अपने भुजबलथकी, अरि शिर कीहनी आनि ॥
 ताके राज सुराज मैं ईतिभीति नहीं जान ।
 अबलूँ पुर में सुखथकी तिष्ठे हरष जु आनि ॥
 करी कथा इस ग्रंथ की, छंद बंध पुर मांहि ।
 ग्रंथ करन कछू बीचि में, आकुल उपजी नांहि ॥ ५३ ॥
 साहि नगर साह्यै भयो, पायो सुभ अवकास ।
 पूरण ग्रंथ सुख तै कीयौ, पुण्याश्रव पुण्यावास ॥ ५४ ॥

चौपई एवं दोहा छन्दों में लिखा हुआ एक सुन्दर ग्रंथ है । इसमें ७६ कथाओं का संग्रह है । कवि ने इसे संवत् १८२२ में समाप्त किया था जिसका रचना के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख है:—

संवत् अष्टादश सत जांनि, उपरि बीस दोय फिरि आंनि ।
 फागुण सुदि ग्यारसि निसमांहि, कियो समापत उर हुल साहि ॥ ५५ ॥

प्रारम्भ में कवि ने लिखा है कि पुण्याश्रव कथा कोश पहिले प्राकृत भाषा में निबद्ध था लेकिन जब उसे जन साधारण नहीं समझने लगा तो सकल कीर्ति आदि विद्वानों ने संस्कृत में उसकी रचना की । जब संस्कृत समझना भी प्रत्येक के लिए क्लिष्ट होगया तो फिर आगरे में धनराम ने उसकी वचनिका की । टेकचंद ने संभवतः इसी वचनिका के आधार पर इसकी छन्दोबद्ध रचना की होगी । कविने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

साधर्मी धनराम जु भए, संस्कृत परवीन जु थए ।
 तौ यह ग्रंथ आगरै थान, कीयो वचनिका सरल बखान ॥
 जिन धुनि तो बिन अक्षर होय, गएधर समझै और न कोय ।
 तो प्राकृत मैं करै बखान, तब सब ही सुंनि है गुणखानि ॥ ३ ॥
 तब फिरि बुधि हीनता लई, संस्कृत वानी श्रुति ठई ।
 फेरि अल्प बुध ज्ञान की होय, सकल कीर्ति आदिक जोय ॥
 तिन यह महा मुग्ध करि लीए, संस्कृत अति सरल जु कीए ॥

२७ बारहभाषा

पं० रङ्गू अपभ्रंश भाषा के प्रसिद्ध कवि माने जाते हैं । इनकी प्रायः सभी रचनायें अपभ्रंश

भाषा में ही मिलती हैं जिनकी संख्या २० से भी अधिक है। कवि १५ वीं शताब्दी के विद्वान थे और मध्यप्रदेश-ग्वालियर के रहने वाले थे। बारह भावना कवि की एक मात्र रचना है जो हिन्दी में लिखी हुई मिली है लेकिन इसकी भाषा पर भी अपभ्रंश का प्रभाव है। रचना में ३६ पद्य हैं। रचना के अन्त में कवि ने ज्ञान की अगाधता के बारे में बहुत सुन्दर शब्दों में कहा है:—

कथन कहाणी ज्ञान की, कहन सुनन की नांहि। आपन्ही मैं पाइए, जब देखै बट मांहि ॥

रचना के कुछ सुन्दर पद्य निम्न प्रकार है:—

संसार रूप कोई वस्तु नांहि, भेदभाव अज्ञान। ज्ञान दृष्टि धरि देखिए, सब ही सिद्ध समान ॥

× × × × × × ×

धर्म करावौ धरम करि, किरिया धरम न होय। धरम जुं जानत वस्तु है, जो पहचानै कोय ॥

× × × × × × ×

करन करावन ग्यान नहिं, पदि अर्थ बखानत और। ग्यान दिष्टि विन उपजै, मोहा तणी हु कौर ॥

रचना में रङ्गू का नाम कहीं नहीं दिया है केवल ग्रंथ समाप्ति पर “इति श्री रङ्गू कृत बारह भावना संपूर्ण” लिखा हुआ है जिससे इसको रङ्गू कृत लिखा गया है।

२८ भुवनकीर्ति गीत

भुवनकीर्ति भट्टारक सकलकीर्ति के शिष्य थे और उनकी मृत्यु के पश्चात् ये ही भट्टारक की गद्दी पर बैठे। राजस्थान के शास्त्र भंडारों में भट्टारकों के सम्बन्ध में कितने ही गीत मिले हैं इनमें बूचराज एवं भ० शुभचन्द द्वारा लिखे हुये गीत प्रमुख हैं। इस गीत में बूचराज ने भट्टारक भुवनकीर्ति की तपस्या एवं उनकी बहुश्रुतता के सम्बन्ध में गुणानुवाद किया गया है। गीत ऐतिहासिक है तथा इससे भुवन कीर्ति के व्यक्तित्व के सम्बन्ध में जानकारी मिलती है। बूचराज १६ वीं शताब्दी के प्रसिद्ध विद्वान थे इनके द्वारा रची हुई अबतक पांच और रचनाएं मिल चुकी हैं। पूरा गीत अविकल रूप से सूची के पृष्ठ ६६६-६६७ पर दिया हुआ है।

२६ भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्रटीका

महा पं० आशाधर १३ वीं शताब्दी के संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान् थे। इनके द्वारा लिखे गये कितने ही ग्रंथ मिलते हैं जो जैन समाज में बड़े ही आदर की दृष्टि से पढ़े जाते हैं। आपकी भूपाल चतुर्विंशतिस्तोत्र की संस्कृत टीका कुछ समय पूर्व तक अप्राप्य थी लेकिन अब इसकी २ प्रतियां जयपुर के अ भंडार में उपलब्ध हो चुकी हैं। आशाधर ने इसकी टीका अपने प्रिय शिष्य विनयचन्द्र के लिये

की थी। टीका बहुत सुन्दर है। टीकाकार ने विनयचन्द्र का टीका के अन्त में निम्न प्रकार उल्लेख दिया है:—

उपशम इव मूर्तिः पूतकीर्तिः स तस्माद् । अजनि विनयचन्द्रः सच्चकोरैकचन्द्रः ॥
जगदमृतसगर्भाः शास्त्रसन्दर्भगर्भाः । शुचिचरित सहिष्णोर्यस्य धिन्वन्ति वाचः ॥

विनयचन्द्र ने कुछ समय पश्चात् आशाधर द्वारा लिखित टीका पर भी टीका लिखी थी जिसकी एक प्रति 'अ' भण्डार में उपलब्ध हुई है। टीका के अन्त में "इति विनयचन्द्रनरेन्द्रविरचितभूपाल-स्तोत्रसमाप्तम्" लिखा है। इस टीका की भाषा एवं शैली आशाधर के समान है।

३० मनमोदनपंचशती

कवि छत्त अथवा छत्रपति हिन्दी के प्रसिद्ध कवि होगये हैं। इनकी मुख्य रचनाओं में 'कृष्ण-जगावन चरित्र' पहिले ही प्रकाश में आचुका है जिसमें तुलसीदास के समकालीन कवि ब्रह्म गुलाल के जीवन चरित्र का अति सुन्दरता से वर्णन किया गया है। इनके द्वारा विरचित १०० से भी अधिक पद हमारे संग्रह में हैं। ये अवांगढ के निवासी थे। पं० बनवारीलालजी के शब्दों में छत्रपति एक आदर्शवादी लेखक थे जिनका धन संचय की ओर कुछ भी ध्यान न था। ये पांच आने से अधिक अपने पास नहीं रखते थे तथा एक घन्टे से अधिक के लिये वह अपनी दूकान नहीं खोलते थे।

छत्रपति जैसवाल थे। अभी इनकी 'मनमोदनपंचशति' एक और रचना उपलब्ध हुई है। इस पंचशती को कवि ने संवत् १६१६ में समाप्त किया था। कवि ने इसका निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

वीर भये असरीर गई षट सत पन वरसहि । प्रघटो विक्रम दैत तनौ संवत सर सरसहि ॥
उनिसइसत षोडशहि पोष प्रतिपदा उजारी । पूर्वाषांड नडत्र अर्क दिन सब सुखकारी ॥
वर वृद्धि जोग मिद्धत इहमंथ समापित करिलियो । अनुपम असेष आनंद घन भोगत निवसत थिर थयो ॥

इसमें ५१३ पद्य हैं जिसमें सवैया, दोहा आदि छन्दों का प्रयोग किया गया है। कवि के शब्दों में पंचशती में सभी स्फुट कवित्त है जिनमें भिन्न २ रसों का वर्णन है—

सकलसिद्धियम सिद्धि कर पंच परमगुर जेह । तिन पद पंकज कौ सदा प्रनमौ धरि मन नेह ॥
नहि अधिकार प्रबंध नहि फुटकर कवित्त समस्त । जुदा जुदा रस वरनऊं स्वादो चतुर प्रशस्त ॥

मित्र की प्रशंसा में जो पद्य लिखे हैं उनमें से दो पद्य देखिये।

मित्र होय जो न करें चारि बात कौं । उछेद तन धन धर्म मंत्र अनेक प्रकार के ॥
दोष देखि दावै पीठ पीछे होय जस गावै । कारज करत रहै सदा उपकार के ॥

साधारण रीति नहीं स्वार्थ की प्रीति जाके । जय तव वचन प्रकासत प्यार के ॥
 दिल को उदार निरवाहै जो पै दे करार । मति कौ सुठार गुनवीसरै न यार के ॥२१३॥
 अंतरंग वाहिज मधुर जैसी किसमिस । धनखरचन कौ कुवेरवांनि धर है ॥
 गुन के बधाय कूं जैसे चन्द सायर कूं । दुख तम चूरिवे कूं दिन दुपहर है ॥
 कारज के सारिवे कूं हऊ बहू बिधना है । मंत्र के सिखायवे कूं मानों सुरगुर है ॥
 ऐसे सार मित्र सौ न कीजिये जुदाई कभी । धन मन तन सब बारि देना कर है ॥२१४॥

इस तरह मनमोदन पंचशती हिन्दी की बहुत ही सुन्दर रचना है जो शीघ्र ही प्रकाशन योग्य है ।

३१ मित्रविलास

मित्रविलास एक संग्रह ग्रंथ है जिसमें कवि घासी द्वारा विरचित विभिन्न रचनाओं का संकलन है । घासी के पिता का नाम वहालसिंह था । कवि ने अपने पिता एवं अपने मित्र भारामल के आग्रह से मित्र विलास की रचना की थी । ये भारामल संभवतः वे ही विद्वान हैं जिन्होंने दर्शनकथा, शीलकथा, दानकथा आदि कथायें लिखी हैं । कवि ने इसे संवत् १७८६ में समाप्त किया था जिसका उल्लेख ग्रंथ के अन्त में निम्न प्रकार हुआ है:—

कर्म रिपु सो तो चारों गति मैं घसीट फिर्यौ, ताही के प्रसाद सेती घासी नाम पायौ है ।
 भारामल मित्र वो वहालसिंह पिता मेरो, तिनकीसहाय सेती ग्रंथ ये बनायौ है ॥
 या मैं भूल चूक जो हो सुधि सो सुधार ली जो, मो पै कृपा दृष्टि कीज्यो भाव ये जनायौ है ।
 दिगनिध सतजान हरि को चतुर्थ ठान, फागुण सुदि चौथ मान निजगुण गायौ है ॥

कवि ने ग्रंथ के प्रारम्भ में वर्णनीय विषय का निम्न प्रकार उल्लेख किया है:—

मित्र विलास महासुखदैन, वरनुं वस्तु स्वाभाविक ऐन ।
 प्रगट देखिये लोक मंभार, संग प्रसाद अनेक प्रकार ॥
 शुभ अशुभ मन की प्रापति होय, संग कुसंग तणो फल सोय ।
 पुद्गल वस्तु की निरणय ठीक, हम कूं करनी है तहकीक ॥

मित्र विलास की भाषा एवं शैली दोनों ही सुन्दर है तथा पाठकों के मन को लुभावने वाली है । ग्रंथ प्रकाशन योग्य है ।

घासी कवि के पद भी मिलते हैं ।

३२ रागमाला—श्याममिश्र

राग रागनियों पर निबद्ध रागमाला श्याम मिश्र की एक सुन्दर कृति है । इसका दूसरा नाम

कासम रसिक विलास भी है। श्याममिश्र आगरे के रहने वाले थे लेकिन उन्होंने कासिमाखां के संरक्षणता में जाकर लाहौर में इसकी रचना की थी। कासिमाखां उस समय वहां का उदार एवं रसिक शासक था। कवि ने निम्न शब्दों में उसकी प्रशंसा की है।

कासमखांन सुजान कृपा कवि पर करी।
रागनि की माला करिवे को चित धरी ॥

दोहा

सेख खांन के वंश में उपज्यौ कासमखांन।
निस दीपग ज्यौ चन्द्रमा, दिन दीपक ज्यौ भान ॥
कवि वरनै छवि खान की, सौ वरनी नहीं जाय।
कासमखांन सुजान की अंग रही छवि छाया ॥

रागमाला में भैरौराग, मालकोशराग, हिंडोलनाराग, दीपकराग, गुणकरीराग, रामकली, ललितरागिनी, विलावलरागिनी, कामोद, नट, केदारो, आसावरी, मल्हार आदि रागरागिनियों का वर्णन किया गया है।

श्याममिश्र के पिता का नाम चतुर्भुज मिश्र था। कवि ने रचना के अन्त में निम्न प्रकार वर्णन किया है—

संबत् सौरहसे वरष, उपर बीते दोइ।
फागुन बुदी सनोदसी, सुनौ गुनी जन कोइ ॥

सोरठा

पोथी रची लाहौर, श्याम आगरे नगर के।
राजघाट है ठौर, पुत्र चतुरभुज मिश्र के ॥

इति रागमाला ग्रंथ श्याममिश्र कृत संपूरण।

३३ रुक्मणिकृष्णजी को रासो

यह तिपरदास की रचना है। रासो के प्रारम्भ में महाराजा भीमक की पुत्री रुक्मिणी के सौन्दर्य का वर्णन है। इसके पश्चात् रुक्मिणी के विवाह का प्रस्ताव, भीमक के पुत्र रुक्मि द्वारा शिशुपाल के साथ विवाह करने का प्रस्ताव, शिशुपाल को निमंत्रण तथा उनके सदलबल विवाह के लिये प्रस्ताव, रुक्मिणी का कृष्ण को पत्र लिख सन्देश भिजवाना, कृष्णजी द्वारा प्रस्ताव स्वीकृत करना तथा

सदलबल के साथ भीमनगरी की ओर प्रस्थान, पूजा के बहाने रुक्मिणी का मन्दिर की ओर जाना, रुक्मिणी का सौन्दर्य वर्णन, श्रीकृष्ण द्वारा रुक्मिणी को रथ में बैठाना, कृष्ण शिशुपाल युद्ध वर्णन, रुक्मिणी द्वारा कृष्ण की पूजा एवं उनका द्वारिका नगरी को प्रस्थान आदि का वर्णन किया गया है।

रासो में दूहा, कलश, त्रोटक, नाराच जाति छंद आदि का प्रयोग किया गया है। रासो की भाषा राजस्थानी है।

नाराच जातिछंद

आणंद भरीए सोहती, त्रिभवरूप मोहती ।
 रुणं ऋणंत नेवरी, सुचल चरण घुघरी ॥
 भव भवै भवक भाल, श्रवण हंस सोमती ।
 रतन हीर जडत जाम, खीर ली अनोपती ॥
 भलमलै ज चंद सूर, सीस फूल सोहए ।
 बासिग बेणि रुलै जेम, सिरह मणिज मोहए ॥
 सोवन मै रलहार, जडित कंठ में रुलै ।
 अबंध मोति जडित जोति, नाकिउ जलादुलै ॥

३४ लग्नचन्द्रिका

यह ज्योतिष का ग्रंथ है जिसकी भाषा स्योजीराम सौगाणी ने की थी। कवि आमेर के निवासी थे। इनके पिता का नाम कंवरपाल तथा गुरु का नाम पं० जैचन्दजी था। अपने गुरु एवं उनके शिष्यों के आग्रह से ही कवि ने इसकी भाषा संवत् १८७४ में समाप्त की थी। लग्नचन्द्रिका ज्योतिष का संस्कृत में अच्छा ग्रंथ है। भाषा टीका में ५२३ पद्य हैं। इसकी एक प्रति भू भंडार में सुरक्षित है।

इनके लिखे हुये हिन्दी पद एवं कवित्त भी मिलते हैं:—

३५ लब्धि विधान चौपई

लब्धि विधान चौपई एक कथात्मक कृति है इसमें लब्धिविधान व्रत से सम्बन्धित कथा दी हुई है। यह व्रत चैत्र एवं भाद्रव मास के शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, द्वितीया एवं तृतीया के दिन किया जाता है। इस व्रत के करने से पापों की शान्ति होती है।

चौपई के रचयिता हैं कवि भीषम जिनका नाम प्रथमवार सुना जा रहा है। कवि सांगानेर (जयपुर) के रहने वाले थे। ये खण्डेलवाल जैन थे तथा गोधा इनका गोत्र था। सांगानेर में उस समय स्वाध्याय एवं पूजा का खूब प्रचार था। इन्होंने इसे संवत् १६१७ (सन् १५६०) में समाप्त किया था।

दोहा और चौपई मिला कर पद्यों की संख्या २०१ है। कवि ने जो अपना परिचय दिया है वह निम्न प्रकार है:—

संवत् सोलहसै सतरौ, फागुण मास जबै उतरौ ।
उजल पाखि तेरसि तिथि जाण, ता दिन कथा गढी परवाणि ॥६६॥
बरतै निवाली मांहि विख्यात, जैनधर्म तसु गोधा जाति ।
यह कथा भीषम कवि कही, जिनपुराण मांहि जैसी लही ॥६७॥
सांगानेरी बसै सुभ गांव, मांन नृपति तस चहु खंड नाम ।
जहि कै राजि सुखी सब लोग, सकल वस्तु को कीजे भोग ॥६८॥
जैनधर्म की महिमा बणी, संतिक पूजा होई तिहघणी ।
श्रावक लोक बसै सुजाण, सांफ संवारा सुणै पुराण ॥६९॥
आठ विधि पूजा जिणेश्वर करै, रागदोष नहीं मन मैं धरै ।
दान चारि सुपात्रा देय, मनिष जन्म कौ लाहौ लेय ॥७०॥
कडा बंध चौपई जाणि, पूरा हूवा दोइसै प्रमाण ।
जिनवाणी का अन्त न जास, भवि जीव जे लहै सुखवास ॥७१॥
इति श्री लब्धि विधान की चौपई संपूर्ण ।

३६ वद्धमानपुराण

इसका दूसरा नाम जिनरात्रिव्रत महात्म्य भी है। मुनि पद्मनन्दि इस पुराण के रचयिता हैं। यह ग्रंथ दो परिच्छेदों में विभक्त है। प्रथम सर्ग में ३५६ तथा दूसरे परिच्छेद में २०५ पद्य हैं। मुनि पद्मनन्दि प्रभाचन्द्र मुनि के पट्ट के थे। रचना संवत् इसमें नहीं दिया गया है लेकिन लेखन काल के आधार से यह रचना १५ वीं शताब्दी से पूर्व होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त ये प्रभाचन्द्र मुनि संभवतः वेही हैं जिन्होंने आराधनासार प्रबन्ध की रचना की थी और जो भ० देवेन्द्रकीर्ति के प्रमुख शिष्य थे।

३७ विषहरन विधि

यह एक आयुर्वेदिक रचना है जिसमें विभिन्न प्रकार के विष एवं उनके मुक्ति का उपाय बतलाया गया है। विषहरन विधि संतोष वैद्य की कृति है। ये मुनिहरष के शिष्य थे। इन्होंने इसे कुछ प्राचीन ग्रंथों के आधार पर तथा अपने गुरु (जो स्वयं भी वैद्य थे) के बताये हुए ज्ञान के आधार पर हिन्दी पद्य में लिखकर इसे संवत् १७४१ में पूर्ण किया था। ये चन्द्रपुरी के रहने वाले थे। ग्रंथ में १२७ दोहा चौपई छन्द हैं। रचना का प्रारम्भ निम्न प्रकार से हुआ है:—

अथ विषहरन लिख्यते—

दोहरा—श्री गनेस सरस्वती, सुमरि गुर चरनतु चितलाय ।
षेत्रपाल दुखहरन कौ, सुमति सुबुधि वताय ॥

चौपई

श्री जिनचंद सुवाच बखानि, रच्यौ सोभाग्य ते यह हरष मुनिजान ।
इन सीख दीनी जीव दया आनि, संतोष वैद्य लइ तिरहमनि ॥२॥

३८ व्रतकथाकोश

इसमें व्रत कथाओं का संग्रह है जिनकी संख्या ३७ से भी अधिक हैं। कथाकार पं० दामोदर एवं देवेन्द्रकीर्ति हैं। दोनों ही धर्मचन्द्र सूरि के शिष्य थे। ऐसा मालूम पड़ता है कि देवेन्द्रकीर्ति का पूर्व नाम दामोदर था इसलिये जो कथायें उन्होंने अपनी गृहस्थावस्था में लिखी थीं उनमें दामोदर ऋत लिख दिया है तथा साधु बनने के पश्चात् जो कथायें लिखी उनमें देवेन्द्रकीर्ति लिख दिया गया। दामोदर का उल्लेख प्रथम, षष्ठ, एकादश, द्वादश, चतुर्दश, एवं एकविंशति कथाओं की समाप्ति पर आया है।

कथा कोश संस्कृत गद्य में है तथा भाषा, भाव एवं शैली की दृष्टि से सभी कथायें उच्चस्तर की हैं। इसकी एक अपूर्ण प्रति अ भंडार में सुरक्षित है। इसकी दूसरी अपूर्ण प्रति ग्रंथ संख्या २५४३ पर देखें। इसमें ४४ कथाओं तक पाठ है।

३९ व्रतकथाकोश

भट्टारक सकलकीर्ति १५ वीं शताब्दी के प्रकांड विद्वान् थे। इन्होंने संस्कृत भाषा में बहुत ग्रंथ लिखे हैं जिनमें आदिपुराण, धन्यकुमार चरित्र, पुराणसार संग्रह, यशोधर चरित्र, वर्द्धमान पुराण आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। अपने जबरदस्त प्रभाव के कारण उन्होंने एक नई भट्टारक परम्परा को जन्म दिया जिसमें ४० जिनदास, भुवनकीर्ति, ज्ञानभूषण, शुभचन्द जैसे उच्चकोटि के विद्वान् हुये।

व्रतकथा कोश अभी उनकी रचनाओं में से एक रचना है। इसमें अधिकांश कथायें उन्हीं के द्वारा विरचित हैं। कुछ कथायें अभ्र पंडित तथा रत्नकीर्ति आदि विद्वानों की भी हैं। कथायें संस्कृत पद्य में हैं। ४० सकलकीर्ति ने सुगन्धदशमी कथा के अन्त में अपना नामोल्लेख निम्न प्रकार किया है:—

असमगुण समुद्रान, स्वर्ग मोक्षाय हेतून ।
प्रकटित शिवमार्गान्, सद्गुरुन् पंचपूज्यान् ॥

त्रिभुवनपतिभवैस्तीर्थनाथादिमुख्यान् ।
जगति सकलकीर्त्या संस्तुवे तद् गुणाप्त्यै ॥

प्रति में ३ पत्र (१४३ से १४५) वाद में लिखे गये हैं । प्रति प्राचीन तथा संभवतः १७ वीं शताब्दी की लिखी हुई है । कथा कोश में कुल कथाओं की संख्या ५० है ।

४० समोसरण

१७ वीं शताब्दी में ब्रह्म गुलाल हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि हो गये हैं । इनके जीवन पर कवि छत्रपति ने एक सुन्दर काव्य लिखा है । इनके पिता का नाम हल्ल था जो चन्दवार के राजा कीर्त्ति के आश्रित थे । ब्रह्म गुलाल स्वांग भरना जानते थे और इस कला में पूर्ण प्रवीण थे । एक बार इन्होंने मुनि का स्वांग भरा और ये मुनि भी बन गये । इनके द्वारा विरचित अब तक ८ रचनाएं उपलब्ध हो चुकी हैं । जिसमें त्रेपन क्रिया (संवत् १६६५) गुलाल पच्चीसी, जलगालन क्रिया, विवेक चौपई, कृपण जगावन चरित्र (१६७१), रसविधान चौपई एवं धर्मस्वरूप के नाम उल्लेखनीय हैं ।

‘समोसरण’ एक स्तोत्र के रूप में रचना है जिसे इन्होंने संवत् १६६८ में समाप्त किया था । इसमें भगवान महावीर के समवसरण का वर्णन किया गया है जो ६७ पद्यों में पूर्ण होता है । इन्होंने इसमें अपना परिचय देते हुये लिखा है कि वे जयनन्दि के शिष्य थे ।

स रहसै अढसठिसमै, माघ दसै सित पक्ष ।
गुलाल ब्रह्म भनि गीत गति, जयोनन्दि पद सिद्ध ॥६६॥

४१ सोनागिर पच्चीसी

यह एक ऐतिहासिक रचना है जिसमें सोनागिर सिद्ध क्षेत्र का संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है । दिगम्बर विद्वानों ने इस तरह के क्षेत्रों के वर्णन बहुत कम लिखे हैं इसलिये भी इस रचना का पर्याप्त महत्व है । सोनागिर पहिले दतिया स्टेट में था अब वह मध्यप्रदेश में है । कवि भागीरथ ने इसे संवत् १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४ को पूर्ण किया था । रचना में क्षेत्र के मुख्य मन्दिर, परिक्रमा एवं अन्य मन्दिरों का भी संक्षिप्त वर्णन दिया हुआ है । रचना का अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है:.....

मेला है जहा कौ कातिक सुद पूतौ को,
हाट हू वजार नाना भांति जुरि आए हैं ।
भावधर वंदन कौ पूजत जिनेंद्र काज,
पाप मूल निकंदन कौ दूर हू सै धाए है ॥
गोठै जैउ नारे पुनि दान दैह नाना विधि,
सुर्ग पंथ जाइवे कौ पूरन पद पाए है ।

कीजिये सहाइ पाइ आए हैं भागीरथ,
गुरुन के प्रताप सौन गिरी के गुण गाए हैं ॥

दोहा

जेठ सुदी चौदस भली, जा दिन रची बनाइ ।
संवत् अष्टादस इकिसठ, संवत् लेउ गिनाइ ॥
पढ़ै सुनै जो भाव धर, ओरे देइ सुनाइ ।
मनवंछित फल कौ लिये, सो पूरन पद को पाइ ॥

४२ हम्मीररासो

हम्मीररासो एक ऐतिहासिक काव्य है जिसमें महेश कवि ने महिमासाह का बादशाह अलाउद्दीन के साथ झगडा, महिमासाह का भागकर रणथम्भौर के महाराजा हम्मीर की शरण में आना, बादशाह अलाउद्दीन का हम्मीर को महिमासाह को छोड़ने के लिये बार २ समझाना एवं अन्त में अलाउद्दीन एवं हम्मीर का भयंकर युद्ध का वर्णन किया गया है । कवि की वर्णन शैली सुन्दर एवं सरल है ।

रासो कब और कहां लिखा गया था इसका कवि ने कोई परिचय नहीं दिया है । उसने केवल अपना नामोल्लेख किया है वह निम्न प्रकार है ।

मिले रावपति साही धीर ज्यौ नीर समाही ।
ज्यों पारिस कौ परसि वजर कंचन होय जाई ॥
अलादीन हमीर से हुआ न हौस्यौ होयसे ।
कवि महेस यम उचरै वै सभांसहै तसु पुरवसै ॥

अज्ञात एवं महत्वपूर्ण ग्रंथों की सूची

क्रमांक ग्रं., सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
१.	४३८१ अनंतव्रतोद्यापनपूजा	श्री० गुराचंद्र	सं०	अ	१६३०
२.	४३६२ अनंतचतुर्दशीपूजा	शांतिदास	सं०	ख	×
३.	२८६५ अभिधान रत्नाकर	धर्मचंद्रगण	सं०	अ	×
४.	४३६१ अभिषेक विधि	लक्ष्मीसेन	सं०	ज	×
५.	५६६ अमृतधर्मरसकाव्य	गुराचंद्र	सं०	अ	१६ वीं शताब्दी
६.	४४०१ अष्टाह्निकापूजाकथा	सुरेन्द्रकीर्ति	सं०	अ	१८५१
७.	२५३५ आराधनासारप्रबन्ध	प्रभाचंद्र	सं०	ट	×
८.	६१६ आराधनासारवृत्ति	पं० प्राशाधर	सं०	ख	१३ वीं शताब्दी
९.	४४३५ ऋषिमण्डलपूजा	ज्ञानभूषण	सं०	ख	×
१०.	४४८० कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा	ललितकीर्ति	सं०	अ	×
११.	२५४३ कथाकोश	देवेन्द्रकीर्ति	सं०	अ	×
१२.	५४५६ कथासंग्रह	ललितकीर्ति	सं०	अ	×
१३.	४४४६ कर्मचूरव्रतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	सं०	ख	×
१४.	३८२८ कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका	देवतिलक	सं०	अ	×
१५.	३८२७ कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका	पं० प्राशाधर	सं०	अ	१३ वीं "
१६.	४४६७ कलिकुण्डपाशर्वनाथपूजा	प्रभाचंद्र	सं०	अ	१५ वीं "
१७.	२७५८ कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचूरि	चारित्रसिंह	सं०	अ	१६ वीं "
१८.	४४७३ कुण्डलगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	सं०	अ	×
१९.	२०२३ कुमारसंभवटीका	कनकसागर	सं०	अ	×
२०.	४४८४ गजपंथामण्डलपूजनविधान	भ० क्षेमेन्द्रकीर्ति	सं०	ख	×
२१.	२०२८ गजसिंहकुमारचरित्र	विनयचन्द्रसूरि	सं०	ड	×
२२.	३८३६ गीतवीतराग	अभिनव चारुकीर्ति	सं०	अ	×
२३.	११७ गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	कनकनन्दि	सं०	क	×
२४.	११८ गोम्मटसारकर्मकाण्डटीका	ज्ञानभूषण	सं०	क	×
२५.	६१ गोम्मटसारटीका	सकलभूषण	सं०	क	×
२६.	५४३६ चंदनषष्ठीव्रतकथा	छत्रसेन	सं०	अ	×
२७.	२०४८ चंद्रप्रभकाव्यपंजिका	गुरानंदि	सं०	अ	×

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
२८.	४५१२	चारित्रशुद्धिविधान	सुमतिब्रह्म	सं०	च	×
२९.	४६१४	ज्ञानपंचविंशतिकाव्रतोद्यापन	भ० सुरेन्द्रकीर्ति	सं०	च	×
३०.	४६२१	णमोकारपैतीसीव्रतविधान	कनककीर्ति	सं०	ड	×
३१.	२१३	तत्त्ववर्णन	शुभचंद्र	सं०	ज	×
३२.	५४४६	त्रेपनक्रियोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	सं०	अ	×
३३.	४७०५	दशलक्षणव्रतपूजा	जिनचन्द्रसूरि	सं०	ड	×
३४.	४७०६	दशलक्षणव्रतपूजा	मल्लभूषण	सं०	छ	×
३५.	४७०२	दशलक्षणव्रतपूजा	सुमतिसागर	सं०	ड	×
३६.	४७२१	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्र कीर्ति	सं०	अ	१७७२
३७.	४७२४	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	पद्मनदि	सं०	अ	×
३८.	४७२५	” ” ”	जगत्कीर्ति	सं०	च	×
३९.	७७२	धर्मप्रश्नोत्तर	विमलकीर्ति	सं०	ज	×
४०.	२१५२	नागकुमारचरित्रटीका	प्रभाचन्द्र	सं०	ट	×
४१.	४८१	निजस्मृति	×	सं०	ट	×
४२.	४८१६	नेमिनाथपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	सं०	अ	×
४३.	४८२३	पंचकल्याणकपूजा	”	सं०	क	×
४४.	३६७१	परमात्मराजस्तोत्र	सकलकीर्ति	सं०	अ	×
४५.	५४२८	प्रशस्ति	दामोदर	सं०	अ	×
४६.	१६१८	पुराणसार	श्रीचंदमुनि	सं०	अ	१०७७
४७.	५४४०	भावनाचौतीसी	भ० पद्मनन्दि	सं०	अ	×
४८.	४०५३	भूपालचतुर्विंशतिटीका	आशाधर	सं०	अ	१३ वीं शताब्दी
४९.	४०५५	भूपालचतुर्विंशतिटीका	विनयचंद	सं०	अ	१३ वीं ”
५०.	५०५७	मांगीतुंगीगिरिमंडलपूजा	विश्वभूषण	सं०	ख	१७५६
५१.	५३८१	मुनिसुव्रतछंद	प्रभाचंद्र	सं० हि०	अ	×
५२.	६७६	मूलाचारटीका	वसुनन्दि	प्रा० सं०	अ	×
५३.	२३२३	यशोधरचरित्रटिप्पण	प्रभाचंद्र	सं०	ज	×
५४.	२६८३	रत्नत्रयविधि	आशाधर	सं०	अ	×
५५.	२६३५	रूपमञ्जरीनाममाला	रूपचंद	सं०	अ	१६४४
५६.	२३५०	वर्द्धमानकाव्य	मुनिपद्मनन्दि	सं०	ज	१३ वीं ”

क्रमांक	मं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
५७.	३२६५	वाग्भट्टालंकारटीका	वादिराज	सं०	अ	१७२६
५८.	५४४७	वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनंदि	सं०	अ	×
५९.	५२२५	शरदुत्सवदीपिका	सिंहनंदि	सं०	अ	×
६०.	५८२६	शांतिनाथस्तोत्र	गुणभद्रस्वामी	सं०	क	×
६१.	४१०७	शांतिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	सं०	अ	×
६२.	५१६६	षणवतिक्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	सं०	अ	×
६३.	५४६	षष्ठ्यधिकशतकटीका	राजहंसोपाध्याय	सं०	ब	×
६४.	१८२३	सप्तनयावबोध	मुनिनेत्रसिंह	सं०	अ	×
६५.	५४६७	सरस्वतीस्तुति	प्राशाधर	सं०	अ	१३ वीं "
६६.	४६४६	सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचंद्र	सं०	ड	×
६७.	२७३१	सिंहासनद्वात्रिंशिका	क्षेमकरमुनि	सं०	ख	×
६८.	३८१८	कल्याणक	समन्तभद्र	प्रा०	क	×
६९.	३६३१	धर्मचन्द्रप्रबन्ध	धर्मचन्द्र	प्रा०	अ	×
७०.	१००५	यत्याचार	प्रा० वसुनंदि	प्रा०	अ	×
७१.	१८३६	अजितनाथपुराण	विजयसिंह	अप०	अ	१५०५
७२.	६४५४	कल्याणकविधि	विनयचंद्र	अप०	अ	×
७३.	५४४	चूनडी	"	"	अ	×
७४.	२६८८	जिनपूजापुरंदरविधानकथा	अमरकीर्ति	अप०	अ	×
७५.	५४३६	जिनरात्रिविधानकथा	नरमेन	अप०	अ	१७ वीं
७६.	२०६७	शोमिणाहचरित	लक्ष्मणदेव	अप०	अ	×
७७.	२०६८	शोमिणाहचरिय	दामोदर	अप०	अ	१२८७
७८.	५६०२	त्रिशतजिनचउवीसी	महर्णसिंह	अप०	अ	×
७९.	५४३६	दशलक्षणकथा	गुणभद्र	अप०	अ	×
८०.	२६८८	दुधारसविधानकथा	विनयचंद्र	अप०	अ	×
८१.	४६८६	नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्ति	अप०	अ	×
८२.	२६८८	निर्भरपंचमीविधानकथा	विनयचंद्र	अप०	अ	×
८३.	२१७६	पासचरिय	तेजपाल	अप०	ट	×
८४.	५४३६	रोहिणीविधान	गुणभद्र	अप०	अ	×
८५.	२६८३	रोहिणीचरित	देवनंदि	अप०	अ	१५ वीं

क्रमांक प्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल	
८६.	२४३७ सम्भवजिण्णाहचरित	तेजपाल	प्र०	च	×	
८७.	५४५४ सम्यक्त्वकौमुदी	सहरापाल	प्र०	अ	×	
८८.	२६८८ सुखसंपत्तिविधानकथा	विमलकीर्ति	प्र०	अ	×	
८९.	५४३९ सुगन्धदशमीकथा	"	प्र०	अ	×	
९०.	५३९१ अंजनारास	धर्मभूषण	हि०	प०	अ	×
९१.	४३४७ अक्षयनिधिपूजा	ज्ञानभूषण	हि०	प०	ड	×
९२.	२५०८ अठारहनातेकीकथा	ऋषिलालचंद	हि०	प०	अ	×
९३.	६००३ अनन्तकेळरपय	धर्मचन्द्र	हि०	प०	भ	×
९४.	४३८१ अनन्तव्रतरास	ब्र० जिनदास	हि०	प०	अ	१५ वीं
९५.	४२१५ अर्हणकचौदालियागीत	विमलकीर्ति	हि०	प०	अ	१६८१
९६.	५७६७ आदित्यवारकथा	रायमल्ल	हि०	प०	ड	×
९७.	५४२५ आदित्यवारकथा	वादिचन्द्र	हि०	प०	अ	×
९८.	५३९२ आदीश्वरकासमवसरन	×	हि०	प०	अ	१६६७
९९.	५७३० आदित्यवारकथा	सुरेन्द्रकीर्ति	हि०	प०	घ	१७४१
१००.	५९१५ आदिनाथस्तवन	पल्ह	हि०	प०	छ	१६ वीं
१०१.	५४८७ आराधनाप्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्ति	हि०	प०	अ	×
१०२.	३८६४ आरतीसंग्रह	ब्र० जिनदास	हि०	प०	अ	१५ वीं शताब्दी
१०३.	३४०० उपदेशखत्तीसी	जिनहर्ष	हि०	प०	अ	×
१०४.	४४२८ ऋषिमंडलपूजा	आ० गुणनिदि	हि०	प०	अ	×
१०५.	२५४० कठियारकानडरीचौपई	×	हि०	प०	अ	१७४७
१०६.	६०५२ कवित्त	अगरदास	हि०	प०	ट	१८ वीं शताब्दी
१०७.	६०६५ कवित्त	बनारसीदास	हि०	प०	ट	१७ वीं शताब्दी
१०८.	५३९७ कर्मचूरव्रतवेलि	मुनिसकलचंद	हि०	प०	अ	१७ वीं शताब्दी
१०९.	५६०८ कविवल्लभ	हरिचरणदास	हि०	प०	अ	×
११०.	३८६४ कृपणछंद	चन्द्रकीर्ति	हि०	प०	अ	१६ वीं शताब्दी
१११.	५४८७ कृष्णरुक्मिणीवेलि	पृथ्वीराज	हि०	प०	अ	१६३७
११२.	२५५७ कृष्णरुक्मिणीमंगल	पदमभगत	हि०	प०	अ	१८९०
११३.	५९१५ गीत	पल्ह	हि०	प०	छ	१६ वीं शताब्दी
११४.	३८६४ गुरुछंद	शुभचंद	हि०	प०	अ	१६ वीं शताब्दी

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
११५.	५६३२	चतुर्दशीकथा	ढालूराम	हि०	प० छ	१७६५
११६.	५४१७	चतुर्विंशतिद्वय	गुणकीर्ति	हि०	प० अ	१७७७
११७.	४५२६	चतुर्विंशतितीर्थकरपूजा	नेमिचंदपाटनी	हि०	प० क	१८८०
११८.	४५३५	चतुर्विंशतितीर्थकरपूजा	सुगनचंद	हि०	प० च	१९२६
११९.	२५६२	चन्द्रकुमारकीवार्त्ता	प्रतापसिंह	हि०	प० ज	१८४१
१२०.	२५६४	चन्दनमलयागिरीकथा	चत्तर	हि०	प० अ	१७०१
१२१.	२५६३	चन्दनमलयागिरीकथा	भद्रसेन	हि०	प० अ	×
१२२.	१८७६	चन्द्रप्रभपुराण	होरालाल	हि०	प० क	१९१३
१२३.	१५७	चर्चासागर	चम्पालाल	हि०	ग० अ	×
१२४.	१५४	चर्चासार	पं० शिवजीलाल	हि०	ग० क	×
१२५.	२०५८	चारुदत्तचरित्र	कल्याणकीर्ति	हि०	प० अ	१६६२
१२६.	५६१५	चिंतामणिजयमाल	ठक्कुरसी	हि०	प० छ	१६ वीं शताब्दी
१२७.	५६१५	चेतनगीत	मुनिसिंहनंदि	हि०	प० छ	१७ वीं शताब्दी
१२८.	५४०१	जिनचौबीसीभवान्तररास	विमलेन्द्रकीर्ति	हि०	प० अ	×
१२९.	५५०२	जिनदत्तचौपई	रल्हकवि	हि०	प० अ	१३५४
१३०.	५४१४	ज्योतिषसार	कूपाराम	हि०	प० अ	१७९२
१३१.	६०६१	ज्ञानबावनी	मतिशेखर	हि०	प० ट	१५७४
१३२.	५८२६	टंडाणागीत	बूचराज	हि०	प० छ	१६ वीं शताब्दी
१३३.	३६६	तत्त्वार्थसूत्रटीका	कनककीर्ति	हि०	ग० ड	१८ वीं "
१३४.	३६८	तत्त्वार्थसूत्रटीका	पांडेजयवन्त	हि०	ग० छ	१८ वीं "
१३५.	३७४	तत्त्वार्थसूत्रटीका	राजमल्ल	हि०	ग० अ	१७ वीं "
१३६.	३७८	तत्त्वार्थसूत्रभाषा	शिक्षरचंद	हि०	प० क	१९ वीं "
१३७.	४६२७	तीनचौबीसीपूजा	नेमीचंदपाटणी	हि०	प० क	१८६४
१३८.	६००६	तीसचौबीसीचौपई	श्याम	हि०	प० अ	१७४६
१३९.	५८८१	तेईसबोलविवरण	×	हि०	प० छ	१६ वीं शताब्दी
१४०.	१७३६	दर्शनसारभाषा	नथमल	हि०	प० क	१९२०
१४१.	१७४०	दर्शनसारभाषा	शिवजीलाल	हि०	ग० क	१९२३
१४२.	४२४५	देवकीकीदाल	जुणकरणकासलीवाल	हि०	प० अ	×
१४३.	४६८	द्रव्यसंग्रहभाषा	बाबा दुलीचंद	हि०	ग० क	१९६६

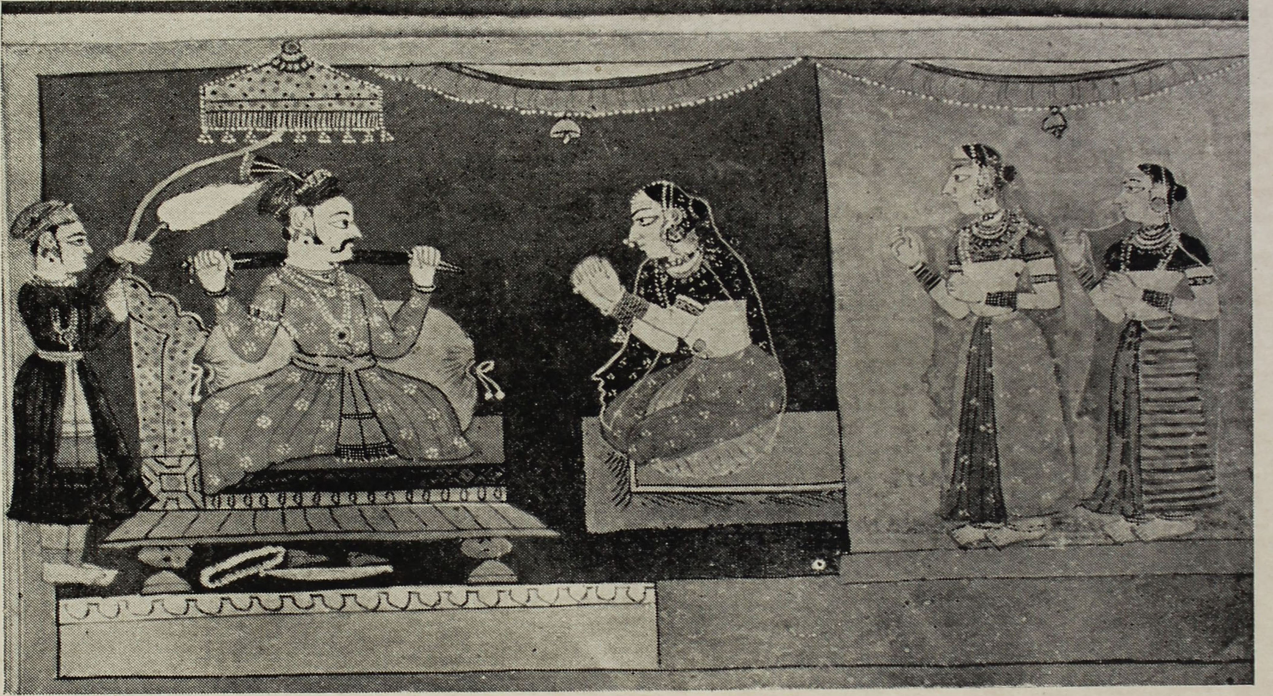
क्रमिक सं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
१४४.	५८८१ द्रव्यसंग्रहभाषा	हेमराज	हि० ग०	छ	१७३१
१४५.	५४०२ नगरी की वसापतका विवरण	×	हि० ग०	अ	×
१४६.	२६०७ नागमंता	×	हि० प०	अ	१८६३
१४७.	४२४६ नागश्रीसज्जाय	विनयचंद	हि० प०	अ	×
१४८.	८११ निजामणि	ब० जिनदास	हि० प०	क	१५ वीं शताब्दी
१४९.	५४४६ नेमिजिनंदव्याहली	खेतसी	हि० प०	अ	१७ वीं "
१५०.	२१५८ नेमीजीका चरित्र	आणन्द	हि० प०	अ	१८०४
१५१.	५३६२ नेमिजीकोमंगल	विश्वभूषण	हि० प०	अ	१६६८
१५२.	३८६४ नेमिनाथछंद	शुभचंद	हि० प०	अ	१६ वीं "
१५३.	४२५४ नेमिराजमतिगीत	हीरानंद	हि० प०	अ	×
१५४.	२६१४ नेमिराजुलव्याहली	गोपीकृष्ण	हि० प०	अ	१८६३
१५५.	५४२६ नेमिराजुलविवाद	ब० ज्ञानसागर	हि० प०	अ	१७ वीं "
१५६.	५६१५ नेमीश्वरकाचीमासा	मुनिसिंहनंदि	हि० प०	छ	१७ वीं "
१५७.	५८२६ नेमिश्वरकाहिंडोलना	मुनिरत्नकीर्ति	हि० प०	छ	×
१५८.	४८२६ नेमीश्वररास	मुनिरत्नकीर्ति	हि० प०	छ	×
१५९.	३६५० पंचकल्याणकपाठ	हरचंद	हि० प०	छ	१८२३
१६०.	२१७३ पांडवचरित्र	लामवर्द्धन	हि० प०	ट	१७६८
१६१.	४२५७ पद	ऋषिशिवलाल	हि० प०	अ	×
१६२.	१४३६ परमात्मप्रकाशटीका	खानचंद	हि०	क	१८३६
१६३.	५८३० प्रद्युम्नरास	कृष्णाराय	हि० प०	छ	×
१६४.	५३६८ पार्श्वनाथचरित्र	विश्वभूषण	हि०	अ	१७ वीं "
१६५.	४२६० पार्श्वनाथचौपई	पं० लाखो	हि० प०	ट	१७३४
१६६.	३८६४ पार्श्वछन्द	ब० लेखराज	हि० प०	अ	१६ वीं "
१६७.	३२७७ पिंगलछंदशास्त्र	माखनकवि	हि० प०	अ	१८६३
१६८.	२६२३ पुराणसूत्रकथाकोश	टेकचंद	हि० प०	क	१६२८
१६९.	५२५ बंधुदयसत्ताचौपई	श्रीलाल	हि० प०	ट	१८८१
१७०.	५८२६ बिहारीसतसईटीका	कृष्णाराय	हि० प०	छ	×
१७१.	५६०८ बिहारीसतसईटीका	हरचरणदास	हि० प०	अ	१८३४
१७२.	५४६७ मुंवनकीर्त्तिगीत	बूचराज	हि० प०	अ	१६ वीं "

क्रमिक सं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथमंडार	रचना काल
१७३.	२२५४ मंगलकलशमहामुनिचतुष्पदी	रंगविनयगणि	हि० प०	अ	१७१४
१७४.	३४८६ मनमोदनपंचशती	छत्रपति	हि० प०	क	१६१६
१७५.	६०४६ मनोहरमञ्जरी	मनोहरमिश्र	हि० प०	ट	×
१७६.	३८६४ महावीरछंद	शुभचंद	हि० प०	अ	१६ वीं
१७७.	२६३८ मानतुंगमानवार्तचौपई	मोहनविजय	हि० प०	ख	×
१७८.	३१८५ मानविनोद	मानसिंह	हि० प०	ख	×
१७९.	३४६१ मित्रविलास	वासी	हि० प०	क	१७८६
१८०.	१६४८ मुनिसुव्रतपुराण	इन्द्रजीत	हि० प०	ब्र	१८८५
१८१.	२३१३ यशोधरचरित्र	गारवदास	हि० प०	—	१५८१
१८२.	२३१५ यशोधरचरित्र	पन्नालाल	हि० ग०	क	१६३२
१८३.	५११३ रत्नावलिब्रतविधान	ब्र० कृष्णदास	हि० प०	अ	१६ वीं
१८४.	५५०१ रचित्रतकथा	जयकीर्ति	हि० प०	अ	१७ वीं
१८५.	६०३८ रागमाला	श्याममिश्र	हि० प०	ट	१६०२
१८६.	३४६४ राजनीतिशास्त्र	जमुराम	हि० प०	क	×
१८७.	५३६८ राजसभारंजन	गंगादास	हि० प०	अ	×
१८८.	६०५५ रुक्मणिकृष्णजीकोरास	तिपरदास	हि० प०	ट	×
१८९.	२६८६ रैदव्रतकथा	ब्र० जिनदास	हि० प०	क	१५ वीं
१९०.	६०२७ रोहिणीविधिकथा	बंसीदास	हि० प०	ट	१६६५
१९१.	५६६६ लग्नचन्द्रिकाभाषा	स्योजीरामसोगाणी	हि० प०	ज	×
१९२.	६०८६ लब्धिविधानचौपई	भोषमकवि	हि० प०	ट	१६१७
१९३.	५६५१ लहुरीनेमीश्वरकी	विश्वभूषण	हि० प०	ट	×
१९४.	६१०५ बसंतपूजा	अजयराज	हि० प०	ट	१८ वीं
१९५.	५५१६ वाजिदजी के अडिल्ल	वाजिद	हि० प०	अ	×
१९६.	२३५६ विक्रमचरित्र	अभयसोम	हि० प०	अ	१७२४
१९७.	३८६४ विजयकीर्तिछंद	शुभचंद	हि० प०	अ	१६ वीं
१९८.	३२१३ विषहरनविधि	संतोषकवि	हि० प०	ख	१७४१
१९९.	२६७५ वैदरभीविवाह	पेमराज	हि० प०	अ	×
२००.	३७०४ षट्लेशयावेलि	साहलोहट	हि० प०	क	१७३०
२०१.	५४०२ शहरमारोठ की पत्री		हि० ग०	अ	×

क्रमांक	ग्रं. सू. क्र.	ग्रंथ का नाम	ग्रंथकार	भाषा	ग्रंथभंडार	रचना काल
२०२	५४१७	शीलरास	गुणकीर्ति	हि० प०	अ	१७१३
२०३	५६४१	शीलरास	ब्र० रायमलादेवसूरि	हि० प०	भ	१६वीं
२०४	३६६६	शीलरास	विजयदेवसूरि	हि० प०	अ	१६वीं
२०५	२७०१	श्रेणिकचौपई	डू गावैद	हि० प०	म	१८२६
२०६	२४३२	श्रेणिकचरित्र	विजयकीर्ति	हि० प०	अ	१८२०
२०७	५३६२	समोसरण	ब्र० गुलाल	हि० प०	अ	१६६८
२०८	५५२८	स्यामबत्तीसी	नंददास	हि० प०	अ	×
२०९	२४३८	सागरदत्तचरित्र	हीरकवि	हि० प०	अ	१७२४
२१०	१२१६	सामायिकपाठभाषा	तिलोकचंद	हि० प०	च	×
२११	३७०६	हम्मीररासो	महेशकवि	हि० प०	ड	×
२१२	१६६४	हरिवंशपुराण	×	हि० ग०	अ	१६७१
२१३	२७४२	होलिका चौपई	डूगरकवि	हि० प०	छ	१६२६



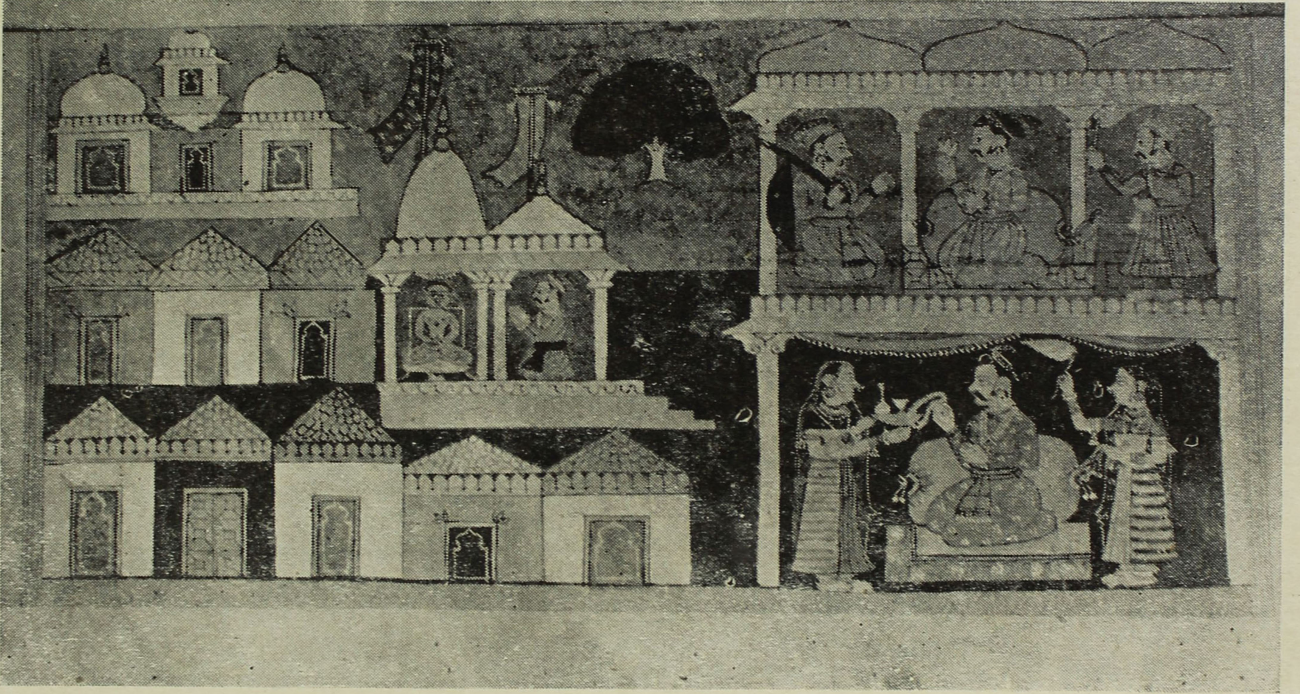
भट्टारक सकलकीर्ति कृत यशोधर चरित्र की सचित्र प्रति के दो सुन्दर चित्र



यह सचित्र प्रति जयपुर के दि० जैन मंदिर पार्श्वनाथ के शास्त्र भण्डार में संग्रहीत है ।
राजा यशोधर दुःस्वप्न की शांति के लिये अन्य जीवों की बलि न
चढा कर स्वयं की बलि देने को तैयार होता है ।
रानी हाहाकार करती है ।

[दूसरा चित्र अगले पृष्ठ पर देखिये]

चित्र नं० २



जिन चैत्यालय एवं राजमहल का एक दृश्य
(ग्रंथ सूची क्र. सं. २२६५ वेष्टन संख्या ११४)

ॐ श्री महावीराय नमः ॐ

राजस्थान के जैन शास्त्र भण्डारों

की

ग्रन्थसूची

विषय-सिद्धान्त एवं चर्चा

१. अर्थदीपिका—जिनभद्रगणि । पत्र सं० ५७ से ६८ तक । आकार १०×४^३/_४ इंच । भाषा-प्राकृत ।
विषय-जैन सिद्धान्त । रचना काल × । लेखन काल × । अपूर्ण । वेष्टन संख्या २ । प्राप्ति स्थान घ भण्डार ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

२. अथप्रकाशिका—सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० ३०३ । आ० ११^३/_४×८ इंच । भा० राजस्थानी
(द्वंद्वद्वारी गद्य) विषय-सिद्धान्त । २० काल सं० १६१४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३ । प्राप्ति स्थान क भण्डार ।

विशेष—उमास्वामी कृत तत्त्वार्थ सूत्र की यह विवाद व्याख्या है ।

३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल × । वे० सं० ४८ । प्राप्ति स्थान क भण्डार ।

४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२७ । ले० काल सं० १६३५ आसोज बुदी ६ । वे० सं० १८१६ । प्राप्ति
स्थान ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर एवं आकर्षक है ।

५. अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन..... । पत्र सं० ४६ । आ० ६×६ इंच । भा० हिन्दी (गद्य) । विषय—
आठ कर्मों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।

विशेष—ज्ञानावररणादि आठ कर्मों का विस्तृत वर्णन है । साथ ही गुणस्थानों का भी अन्वया विवेचन
किया गया है । अन्त में व्रतों एवं प्रतिमाओं का भी वर्णन दिया हुआ है ।

६. अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन..... । पत्र सं० ७ । आ० ८×५ इंच । भा० हिन्दी । विषय—आठ
कर्मों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५८ । प्राप्ति स्थान ख भण्डार ।

७. अर्हत्प्रवचन..... । पत्र सं० २ । आ० १२×५^३/_४ इंच । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८२ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—सूत्र मात्र है। सूत्र संख्या ८५ हैं। पांच अध्याय हैं।

८. अहोप्रवचनव्याख्या.....। पत्र सं० ११। आ० १०×४३ इंच। भा० संस्कृत। १० काल ×।
ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६१। प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम त्रतुर्दश सूत्र भी है।

९. आचारंगसूत्र.....। पत्र सं० ५३। आ० १०^३×५५ इंच। भा० प्राकृत। विषय—आगम।
१० काल ×। ले० काल सं० १८२०। अपूर्ण। वे० सं० ६०६। प्राप्ति स्थान अ भण्डार।

विशेष—छठा पत्र नहीं है। हिन्दी में टक्का टीका दी हुई है।

१०. आनुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णक.....। पत्र सं० २। आ० १०×४३ इंच। भा० प्राकृत।
विषय—आगम। १० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० २८। प्राप्ति स्थान च भण्डार।

११. आश्रवत्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ३१। आ० ११^३×५^३ इंच। भा० प्राकृत।
विषय—सिद्धान्त। १० काल ×। ले० काल सं० १८६२ वैशाख सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १८२। प्राप्ति स्थान ज
भण्डार।

१२. प्रति सं० ०। पत्र सं० १३। ले० काल ×। वे० सं० १८४३ प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

१३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २१। ले० काल ×। वे० सं० २६५। प्राप्ति स्थान अ भण्डार।

१४. आश्रवत्रिभंगी.....। पत्र सं० ६। आ० १२×५^३ इंच। भा० हिन्दी। विषय—सिद्धान्त।
१० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० २०१५। प्राप्ति स्थान अ भण्डार।

१५. आश्रववर्णन.....। पत्र सं० १४। आ० ११^३×६^३ इंच। भा० हिन्दी। विषय—सिद्धान्त।
१० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६०। प्राप्ति स्थान झ भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है।

१६. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० १६६। प्राप्ति स्थान झ भण्डार।

१७. इक्कीसठाणाचर्चा—सिद्धसेन मूरि। पत्र सं० ४। आ० ११×४^३ इंच। भा० प्राकृत।
विषय—सिद्धान्त। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६५। प्राप्ति स्थान ट भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम एकविंशतिस्थान-प्रकरण भी है।

१८. उत्तराध्ययन.....। पत्र सं० २५। आ० ६^३×५ इंच। भा० प्राकृत। विषय—
आगम। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८०। प्राप्तिस्थान अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है।

१६. उत्तराध्ययनभाषाटीका..... । प० सं० ३ । आ० १०×४ इंच । भा० हिन्दी ।
विषय—आगम । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२४४ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का प्रारम्भ निम्न प्रकार है ।

परम दयाल दया करू, आमा पूरण काज ।
चउबीमे जिरणवर नमुं, चउबीमे गणधार ॥ १ ॥
धरम ध्यान दाता मुगुरु, अहनिस ध्यान धरेस ।
वाणी वर देसी सरस, विघन हार विघनेस ॥ २ ॥
उत्तराध्ययन चउदमष्ट, मित्र ज्ञए अधिकार ।
अलप अकल गुण द्दड घणा, कहं बात मति अनुसार ॥ ३ ॥
चतुर चाह कर सांभलो, ऐ अधिकार अतुप ।
निश विकथा परिहरी, मुण ज्यो आलस मूढ ॥ ४ ॥

आगे माकेत नगरी का वर्णन है । कई ढालें दी हुई हैं ।

२०. उद्यसत्ताबंधप्रकृति वर्णन..... । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भा० संस्कृत ।
विषय—सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८४० । प्राप्ति स्थान ट भण्डार ।

२१. कर्मग्रन्थसत्तरी..... । पत्र सं० २८ । आ० ६×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त ।
१० काल × । ले० काल सं० १७८६ माह बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १२२ । प्राप्तिस्थान अ भण्डार ।

विशेष—कर्म सिद्धान्त पर विवेचन किया गया है ।

२२. कर्मप्रकृति—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० १२ । आ० १० इंच × ४ इंच । भा० प्राकृत । विषय—
सिद्धान्त । १० काल × । ले० काल सं० १६८१ मंगसिर मुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २६७ । प्राप्तिस्थान अ भण्डार ।

विशेष—पांडे डालू के पठनार्थ नागपुर में प्रतिलिपि की गई थी । संस्कृत में संक्षिप्त टीका दी हुई है ।

प्रशस्ति—संवत् १६८१ वर्षे मिति मागसिर वदि १० शुभ दिने श्रीमन्नागपुरे पूर्णकृता पांडे डालू
पठनार्थ लिखितं मुरजन मुनि सा० धर्मदासेन प्रदत्ता ।

२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ८५ । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है ।

२४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० १४० । प्राप्ति स्थान अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है ।

२५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १७६८ । अपूर्णा । वे० सं० १२६३ । अ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य वृन्दावन ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

२६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८०२ फाल्गुन बुदी ७ । वे० सं० १०५ । अ

भण्डार ।

विशेष—डमकी प्रतिलिपि विद्यानन्दि के शिष्य अखैराम मल्लकचन्द ने रुडमल के लिये की थी । प्रति के दोनों ओर तथा ऊपर नीचे संस्कृत में संक्षिप्त टीका है ।

२७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६७१ आषाढ सुदी २ । वे० सं० २६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । मालपुरा में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई तथा सं० १६८७ में मुनि नन्दकीर्ति ने प्रति का संशोधन किया ।

२८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८२३ ज्येष्ठ बुदी १४ । वे० सं० ६०५ । अ भण्डार ।

२९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८१६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ६१ । अ

भण्डार ।

३०. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० ६१ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संकेत दिये हुये हैं ।

३१. प्रति सं० १० । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० २८६ । अ भण्डार ।

विशेष—१५६ गाथायें हैं ।

३२. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७६३ वैशाख बुदी ११ । वे० सं० १६२ । अ

भण्डार ।

विशेष—अम्बावती में पं० रुडा महात्मा ने पं० जीवाराम के शिष्य मोहनलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३३. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १७ । ले० काल X । वे० सं० १२३ । अ भण्डार ।

३४. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १७ । ले० का० सं० १६४४ कार्तिक बुदी १० । वे० सं० १२६ । अ

भण्डार ।

३५. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० २१५ । अ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावन में राव सूर्यमेन के राज्य में प्रतिलिपि हुई थी ।

३६. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १६ । ले० काल X । वे० सं० ४०५ । व्य भण्डार ।

३७. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ३ मे १८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २८० । व्य भण्डार ।

३८. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १७ । ले० काल X । वे० सं० ४०५ । व्य भण्डार ।

३९. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १४ । ले० काल X । वे० सं० १६० । व्य भण्डार ।

४०. प्रति सं० १९ । पत्र सं० ५ मे १७ । ले० काल सं० १७६० । अपूर्ण । वे० सं० २००० । ट भंडार ।

विषय—वृन्दावती नगरी में पार्वनाथ चैत्यालय में श्रीमान् बुधसिंह के विजय राज्य में आचार्य उदयभूषण के प्रशिष्य पं० तुलसीदास के शिष्य त्रिलोकभूषण ने संशोधन करके प्रतिलिपि की । प्रारम्भ के तथा बीच के कुछ पत्र नहीं है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४१. प्रति सं० २० । पत्र सं० १३ मे ४३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । गुजराती टीका सहित है ।

४२. कर्मप्रकृतिटीका—टीकाकार सुमतिकीर्त्ति । पत्र सं० २ से २२ । आ० १२X५ $\frac{३}{४}$ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० १२५२ । अपूर्ण । व्य भण्डार ।

विशेष—टीकाकार ने यह टीका भ० जानभूषण के सहाय्य से लिखी थी ।

४३. कर्मप्रकृति..... । पत्र सं० १० । आ० ८ $\frac{३}{४}$ X४ $\frac{३}{४}$ इंच । भा० हिन्दी । २० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । व्य भण्डार ।

४४. कर्मप्रकृतिविधान—बनारसीदास । पत्र सं० १६ । आ० ८ $\frac{३}{४}$ X४ $\frac{३}{४}$ इंच । भा० हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे सं० ३७ । व्य भण्डार ।

४५. कर्मविपाकटीका—टीकाकार सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १४ । आ० १२X५ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल सं० १७६८ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १५६ । व्य भण्डार ।

विशेष—कर्मविपाक के मूलकर्ता आ० नेमिचन्द्र है ।

४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल X । वे सं० १२ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४७. कर्मस्तवसूत्र—देवेन्द्रसूरि । पत्र सं० १२ । आ० ११X६ इंच । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । वे० सं० १०५ । व्य भण्डार ।

विशेष—गाथाओं पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४२. कल्पसिद्धान्तसंग्रह..... पत्र सं० ५२ । आ० १०×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय—
आगम । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । अ मण्डार ।

विशेष—श्री जिनसागर सूरि की आज्ञा से प्रतिलिपि हुई थी । गुजराती भाषा में टीका सहित है ।

अन्तिम भाग—मूलः—तेरां कालेरां तेरा समयरां.....सित्तरां पडि बुद्धा ।

अर्थ—तिराइ कालइं गर्भापहार कालइ तिराइ समयइ गर्भापहार थकी पहिली धमग भगवंत श्री महावीर त्रिहु ज्ञानेकरि सहित इ जिहुंता ते भणी इमजि जाणइ नेहरिणे गाम परियवतायइं । इहां थकी लेइ तिसलानी कूंखइ संक्रमाबिस्यइं । अनइ जिगि वलासइ संक्रमावइ ने वेला न जाणइ । अपहरणकाल अंतमुहूर्त्त मंजात्रियइ अनइ उद्योग काल पिरिण अंतमुहूर्त्त प्रमाणा । पर छद्यस्थनाउपयोग धिकउ । संहरण काल मृधम जाणिवउ बली श्री आचारांग मांहि कहिउछइ । संहरण काल िरिण जाणइ । परं ए पाठ समलइ नहीं । ते भणी आवीरान ही । तिसलानी कूंखि आया पछी जाणइ । जिगी रात्रिइ श्रमण भगवंत श्री महावीर देवारांदा ब्राह्मणी सुखशय्या सूती । कांई सूती, कांई जागती । यहं वाउदार स्फाटं जिस्या पूर्वइ वर्णव्या तिस्या चउदह महास्वप्न त्रिशला क्षत्रियाणी पइ माहुराहभा खासी लीधा । इसउ स्वप्न देखि जागी । जे भणी कल्याण कारियां निरूपहइन । धन धान्य ना करणहार । मंगलीक । स श्री कजियइ घरि बाजइ बीपइ घर पहुंचता । हिवइ त्रिशला क्षत्रियाणी जिणइ पुकारइ सुपिना देखिस्यइ ते प्रमांतइ वाचेस्या । य श्री कल्प सिद्धान्तनी वाचना तराइ अधिकारइ । एवं भाम्भवंतं दान छइ । शील पालइ । तप तपइ । भावना भावइ एवंविध धर्म कर्तव्य करइं ते श्री देवगुरु तराउ प्रसाद देवनइ अधिकारइ विधि चैत्यालय पूज्यमान श्री पार्श्वनाथ तराइ प्रसादि गुहनी परंपरायइ सुविहित चक्रवृडामणि श्री उद्योतनसूरि श्री वर्द्धमान सूरि श्री । श्री जिनेश्वर सूरि । श्री अभयदेव सूरि युगप्रधान श्री जिनदत्तसूरि श्रीमज्जिन कुशलसूरि श्री इकब्बर पातिसाहि प्रतिबोधकं युगप्रधान श्री मज्जिनसूरि तटाट्टे प्रभाकर श्री मज्जिनसिंह सूरि तत्पट्टे प्रभाकर भट्टारक श्री जिनसागर सूरिनी आज्ञा प्रवर्त्तइ । श्रीरस्तु । संस्कृत में श्लोक तथा प्राकृत में कई जगह गाथाएँ दी हैं ।

४३. कल्पसूत्र (भिक्षु अजकयणं)..... पत्र सं० ४१ । आ० १०×४ इंच । भा० प्राकृत ।
विषय—आगम । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६०६ । पूर्ण । अ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

४६. कल्पसूत्र—भद्रबाहु । पत्र सं० ११६ । आ० १०×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय—आगम ।
२० काल × । ले० काल सं० १८६४ । अपूर्ण । वे० सं० ३६ । छ मण्डार ।

विशेष—२ रा तथा ३ रा पत्र नहीं है । गाथाओं के नीचे हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से ४०२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८७ । ट मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत तथा गुजराती छाया सहित है ; कहीं २ टब्बा टीका भी दी हुई है ; बीच के कई पत्र नहीं हैं ।

१. कल्पसूत्र—भद्रबाहु । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भा० प्राकृत । विषय—आगम ।
२० का × । ले० का सं० १५६० आमांज सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १८४६ । ट भण्डार ।

५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ मे २७४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६४ । ट भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । गाथाओं के ऊपर अर्थ दिया हुआ है ।

५३. कल्पसूत्र टीका—समयसुन्दरोपध्याय । पत्र सं० २५ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आगम । २० काल × । ले० काल सं० १७२५ कार्तिक । पूर्ण । वे० सं० २८ । ख भण्डार ।

विशेष—लूणकर्णसर ग्राम में ग्रंथ की रचना हुई थी । टीका का नाम कल्पलता है । सारक ग्राम में पं०
भाष्य त्रिशाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५४. कल्पसूत्रवृत्ति..... । पत्र सं० १२६ । आ० ११×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भा० प्राकृत । विषय—
आगम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८१८ । ट भण्डार ।

५५. कल्पसूत्र । पत्र सं० १० से ४४ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—
आगम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २००२ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण भी दिया हुआ है ।

५. क्षपणासारवृत्ति—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव । पत्र सं० ६७ । आ० १२×७ $\frac{१}{२}$ इंच । भा०
संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल शक सं० ११२५ वि० सं० १२६० । ले० काल सं० १८१६ वैशाख बुदी ११ ।
पूर्ण । वे० सं० ११७ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ के मूलकर्ता नेमिचन्द्राचार्य हैं ।

५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४४ । ले० काल सं० १६५५ । वे० सं० १२० । क भण्डार ।

५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १८४७ आषाढ बुदी २ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के पठनार्थ जयपुर में प्रतिलिपि की गयी थी ।

५९. क्षपणासार—टीका..... । पत्र सं० ६१ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भा० संस्कृत ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११८ । क भण्डार ।

६०. क्षपणासारभाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० २७३ । आ० १३×८ इंच । भा० हिन्दी ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १८१८ माघ सुदी ५ । ले० काल १६४६ । पूर्ण । वे० सं० ११६ । क भण्डार ।

विशेष—क्षपणासार के मूलकर्ता आचार्य नेमिचन्द्र हैं । जैन सिद्धान्त का यह अपूर्व ग्रन्थ है । महा पं०
टोडरमलजी की गोमट्टसार (जीव-काण्ड और कर्मकाण्ड) लब्धिसार और क्षपणासार की टीका का नाम सम्बन्धान्त
चन्द्रिका है । इन तीनों की भाषा टीका एक ग्रन्थ में भी मिलता है । प्रति उत्तम है ।

६१. गुणस्थानचर्चा । पत्र सं० ४५ । आ० १२×५ इंच । भा० प्राकृत । विषय—
मिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०३ । अ भण्डार ।

६२. प्रति सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ५०४ । अ भण्डार ।

६३. गुणस्थानक्रमारोहसूत्र—रत्नशेखर । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । भा० संस्कृत ।
विषय—मिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३५ । अ भण्डार ।

६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७३५ ग्रामांज बुदी १८ । वे० सं० ३७६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टोका सहित ।

६५. गुणस्थानचर्चा । पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इंच । भा० हिन्दी । विषय—
मिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १३६० । अपूर्ण । अ भण्डार ।

६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ मे २४ । वे० सं० १३७ । ड भण्डार ।

६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २२ मे ५१ । अपूर्ण । ले० काल × । वे० सं० १३६ ड भण्डार ।

६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० का० सं० १६६३ । वे० सं० ५३६ । च भण्डार ।

६९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५ । ले० का० × । वे० सं० २३६ अ भण्डार ।

७०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ३४६ । झ भण्डार ।

७१. गुणस्थानचर्चा—चन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ३६ । आ० ७×७ इंच । भा० हिन्दी । विषय—मिद्धान्त ।
२० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११६ ।

७२. गुणस्थानचर्चा एवं चौबीस ठाणा चर्चा । पत्र सं० ८ । आ० १२×५ इंच । भा०
संस्कृत । विषय—मिद्धान्त । २० का० × । ले० का० × । अपूर्ण । वे० सं० २०३१ । ट भण्डार ।

७३. गुणस्थानप्रकरण । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ इंच । भा० संस्कृत । विषय—मिद्धान्त
२० का० × । ले० का० × । पूर्ण । वे० सं० १३८ । 'ड' भण्डार ।

७४. गुणस्थानभेद । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भा० संस्कृत । विषय—मिद्धान्त ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६३ । अ भण्डार ।

७५. गुणस्थानमार्गणा । पत्र सं० ४ । आ० ८×६ इंच । भा० हिन्दी । विषय—मिद्धान्त
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । च भण्डार ।

७६. गुणस्थानमार्गणारचना । पत्र सं० १८ । आ० ११×४ इंच । भा० संस्कृत ।
विषय—मिद्धान्त २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७७ । च भण्डार ।

७७. गुणस्थानवर्णन पत्र सं० २० आ० १०×५ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८ । च भण्डार ।

विशेष—१४ गुणस्थानों का वर्णन है ।

७८. गुणस्थानवर्णन पत्र सं० १५ से ३१ । आ० १२×५ इंच । भा० हिन्दी ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

७९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७६३ । वे० सं० ४६६ । ज भण्डार ।

८०. गोम्भटसार (जीवकाण्ड)—आ० नैमिचन्द्र । पत्र सं० १३ । आ० १३×५ इंच । भा०—
प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १५५७ आषाढ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ११८ ।
अ भण्डार ।

प्रवास्ति—संवत् १५५७ वर्षे आषाढ शुक्ल नवम्यां श्रीमूलसंघे नंदाम्नाय बलात्कारणो सरस्वतीगन्धे
श्री कुंडकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्त-
त्पिण्य मुनि श्री मंडलाचार्य रत्नकीर्ति देवास्तत्पिण्य मुनि हेमचंद्र नामा तदाम्नाये सहूलवालवंसे सा० देल्हा भार्या
देल्ही तत्पुत्र सा० भोजा तद्भार्या अणभास्तत्पुत्रा सा० भावद्यो द्वितीय अमरद्यो तृतीय जाल्हा एतै सप्तत्रयिभ्यं लेखयित्वा
नस्मै ज्ञानपात्राय मुनि श्री हेमचंद्राय भक्त्या प्रदत्तं ।

८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ११६४ । अ भण्डार ।

८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १७२६ । वे० सं० १११ । अ भण्डार ।

८३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ से ४८ । ले० काल सं० १६२४ । चैत्र सुदी २ । अपूर्ण । वे०
सं० १२८ । क भण्डार ।

विशेष—हरिभद्र के पुत्र मुनपर्था ने प्रतिलिपि की थी ।

८४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३६ । क भण्डार ।

८५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । ख भण्डार ।

८६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३७५ । ले० काल सं० १७३८ आषाढ सुदी ५ । वे० सं० १४ । घ
भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है । श्री वीरदास ने अगबराबाद में प्रतिलिपि की थी ।

८७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८६१ आषाढ सुदी ७ । वे० सं०
१३८ । क भण्डार ।

८८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी ३ । वे० सं० ७६ । च भण्डार ।

८९. प्रति सं० १० । पत्र सं० १७२-२४१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८० । च भण्डार ।

९०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८४ । च भण्डार ।

९१. गोम्मटसारटीका—सकलभूषण । पत्र सं० १४३४ । प्रा० १२३ X ७ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १५७६ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल सं० १६४५ । पूर्ण । वे० सं० १४० । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द्र ने पन्नालाल चौधरी ने प्रतिलिपि कराई । प्रति २ वेष्टनो में बंधी है ।

९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३१ । ले० काल X । वे० सं० १३७ । क भण्डार ।

९३. गोम्मटसारटीका—धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३३ । प्रा० १० X ५ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १३६ । क भण्डार ।

विशेष—पत्र १३१ पर प्राचार्य धर्मचन्द्र कृत टीका की प्रशस्ति का भाग है । नागपुर नगर (नागौर) में महमदशां के शासनकाल में गालहा आदि चांदवाड गोत्र वाले श्रावकों ने भट्टारक धर्मचन्द्र को यह प्रति लिखकर प्रदानकी थी ।

९४. गोम्मटसारवृत्ति—केशववर्णी । पत्र सं० ५३२ । प्रा० १० इंच X ४ इंच । भा० संस्कृत । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३८१ । च भण्डार ।

विशेष—मूल गाथा सहित जीवकाण्ड एवं कर्मकाण्ड की टीका है । प्रति अभयचन्द्र द्वारा संशोधित है । 'पं० गिरधर की पोथी है' ऐसा लिखा है ।

९५. गोम्मटसारवृत्ति..... । पत्र सं० ३ से ६१२ । प्रा० १० इंच X ४ इंच । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२३८ । अ भण्डार ।

९६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१४ । ले० काल X । वे० सं० ८६ । छ भण्डार ।

९७. गोम्मटसार (जीवकाण्ड) भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० २२१ से ३६४ । प्रा० ६ इंच X ६ इंच । भा० हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४०३ । अ भण्डार ।

विशेष—पंडित टोडरमलजी के स्वयं के हाथ का लिखा हुआ ग्रंथ है । जगह २ कटा हुआ है ।

टीका का नाम सम्यक्ज्ञानचन्द्रिका है । प्रदर्शन—योग्य ।

९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६७ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३७५ । अ भण्डार ।

१९६. प्रति सं० २। पत्र सं० ६५६। ले० का० सं० १६८८ भाद्रवा सुदी १५। वे० सं० १४१। क भण्डार।

१९७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२६५। अ भण्डार।

१९९. प्रति सं० ४। पत्र सं० ५७६। ले० काल सं० १८८५ माघ सुदी १५। वे० सं० १८। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साहू तथा मन्नालाल काशलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी

१९२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३२८। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४६। ड भण्डार।

विशेष—२७४ में आगे ५४ पत्रों पर गुणस्थान आदि पर यंत्र रचना है।

१९३. प्रति सं० ६। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। वे० सं० १५०। ड भण्डार।

विशेष—केवल यंत्र रचना ही है।

१९४. गोम्मटसार-भाषा—पं० टोडरमल। पत्र सं० २१३। आ० १५×१० इंच। भा० हिन्दी।
विषय—सिद्धान्त। २० काल सं० १८१८ माघ सुदी ५। ले० काल सं० १६४२ भाद्रवा सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १५१।
क भण्डार।

विशेष—लब्धिसार तथा क्षपणासार की टीका है। गणेशलाल सुंदरलाल पांड्या ने यंत्र की प्रतिलिपि करवायी।

१९५ प्रति सं० २। पत्र सं० १११०। ले० काल सं० १८५७ सावण सुदी ५। वे० सं० ५३८।
च भण्डार।

१९६. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६७१ से ७६५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२६। ज भण्डार।

१९७. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८१८। ले० काल सं० १८८७ वैशाख सुदी ३। अपूर्ण। वे० सं०
७२१८। ट भण्डार।

विशेष—प्रति बड़े आकार एवं सुन्दर लिखाई की है तथा वर्णनीय है। कुछ पत्रों पर बीच में कलापूर्वक
गोलाकार दिये हैं। बीच के कुछ पत्र नहीं हैं।

१९८. गोम्मटसारपीठिका-भाषा—पं० टोडरमल। पत्र सं० ६२। आ० १५×७ इंच। भा० हिन्दी।
विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। वे० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३२। झ भण्डार।

१०६. गोम्मटसारटीका (जीवकाण्ड)..... पत्र सं० २६५। आ० १३५×६३ इंच। भा० संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२६। ज भण्डार।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वप्रदीपिका है।

११०. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३१। ज भण्डार।

१११. गोम्मटसारसंहिता—पंच टोडरमल। पत्र सं० ८२। आ० १५×७ इंच। भा० हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०। ग भण्डार।

११२. प्रति सं० २। पत्र सं० ४८ से २०४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५३६। च भण्डार।

११३. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड)—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ११६। आ० ११×५ इंच। भा० संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल सं० १८८५। चैत सुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ८१। च भण्डार।

११४. प्रति सं० २। पत्र सं० १८३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८२। च भण्डार।

११५. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८३। च भण्डार।

११७. प्रति सं० ४। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १८४४। चैत बुदी १४। अपूर्ण। वे० सं० १८२०।

ट भण्डार।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के विद्वान छात्र सर्वसुख के अध्ययनार्थ अटोगि नगर में प्रतिलिपि की गई।

११७. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका—कनकनंदि। पत्र सं० १०। आ० ११ इंच। भा० संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। (तृतीय अधिकांश तक)। वे० सं० १३५। क भण्डार।

११८. गोम्मटसार (कर्मकाण्ड) टीका—भट्टारक ज्ञानभूषण। पत्र सं० ५४। आ० ११ इंच। भा० संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल सं० १६५७। माघ सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १३८। क भण्डार।

विशेष—सुमतिकीर्ति की सहाय्य से टीका लिखी गयी थी।

११९. प्रति सं० २। पत्र सं० ८३। ले० काल सं० १६७३। फाल्गुण सुदी ५। वे० सं० १३९। अ भण्डार।

१२०. प्रति सं० ३। पत्र सं० २५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८४७। अ भण्डार।

१२१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५१। ले० काल ×। वे० सं० २५। ख भण्डार।

१२२. प्रति सं० ४। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १७५.....। वे० सं० ४६०। ज भण्डार।

१२३. गोम्मतसार (कर्मकाण्ड) भाषा—पं० टोडरमल। पत्र सं० ६६४। आ० १३×८ इंच। भा० हिन्दी गद्य (हूँढारी)। विषय—सिद्धान्त। २० काल १६ वीं शताब्दी। ले० काल सं० १६४६ ज्येष्ठ सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १३०। क भण्डार।

विशेष—प्रति उत्तम है।

१२४. प्रति सं० २। पत्र सं० २४०। ले० काल ×। वे० सं० १८८। छ भण्डार।

विशेष—मंष्ट्रि सहित है।

१२५. गोम्मतसार (कर्मकाण्ड) भाषा—हेमराज। पत्र सं० ५२। आ० ६×५ इंच। भा० हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। २० काल सं० २०१७। ले० काल सं० १७८८ पीप सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० १०५। अ भण्डार।

३

विशेष—प्रश्न साह आनन्दरामजी खण्डेलवाल ने पूछ्या तिम ऊपर हेमराज ने गोम्मतसार को देख के क्षयोपशम माफिक पत्री में जबाव लिखने रूप चर्चा की वासना लिखी है।

१२६. प्रति सं० २। पत्र सं० ८५। ले० काल सं० १७१७ आसोज बुदी ११। वे० सं० १२६।

विशेष—स्वपठनार्थ रामपुर में कल्याण गहाडिया ने प्रतिलिपि करवायी थी। प्रति जीर्ण है। हेमराज १८ वीं शताब्दी के प्रथम भाग के हिन्दी गद्य के अच्छे विद्वान हुये हैं। इन्होंने १० से अधिक प्राकृत व संस्कृत रचनाओं का हिन्दी गद्य में रूपांतर किया है।

१२७. गोम्मतसार (कर्मकाण्ड) टीका.....। पत्र सं० १६। आ० ११½×५ इंच। भा० संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८३। च भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

१२८. प्रति सं० २। पत्र सं० ६८। ले० काल सं० ×। वे० सं० ६६। छ भण्डार।

१२९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४८। ले० काल ×। वे० सं० ६१। छ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है:—

इति प्रायः श्रीगुप्तसारमूलात् टीकाच्च निःकाश्यक्रमेण एकीकृत्य लिखिता। श्री नेमिचन्द्रसिद्धान्ती विरचितकर्मप्रकृतिग्रन्थस्य टीका समाप्ताः।

१३०. गौतमकुलक—गौतम स्वामी । पत्र सं० २ । आ० १०×४^१/_२ इंच । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति गुजराती टीका सहित है २० पद्य हैं ।

१३१. गौतमकुलक..... । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० १२४२ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१३२. चतुर्दशसूत्र..... । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भा० प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६१ । ख भण्डार ।

१३३. चतुर्दशसूत्र—विनयचन्द्र मुनि । पत्र सं० २६ । आ० १०^१/_२×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आगम । २० काल × । ले० काल सं० १६८२ गौष बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० १८२ । छ भण्डार ।

१३४. चतुर्दशांगवाक्यविवरण । पत्र सं० ३ । आ० ११×६ इंच । भा० संस्कृत । विषय—आगम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१४ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रत्येक अंग का पद प्रमाण दिया हुआ है ।

१३५. चर्चाशतक—द्यानतराय । पत्र सं० १०३ । आ० ११^३/_४×८ इंच । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—सिद्धान्त । २० काल १८ वीं शताब्दी । ले० काल सं० १६२६ आषाढ बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १४६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य टीका भी दी है ।

१३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६३७ फागुण सुदी १२ । वे० सं० १५० । क भण्डार ।

१३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ४६ । अपूर्ण । ख भण्डार ।

विशेष—टिप्पणी टीका सहित ।

१३८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १६३१ मंगसिर सुदी २ । वे० सं० १७१ । छ भण्डार ।

१३९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८ । ले० काल-× । वे० सं० १७२ । छ भण्डार ।

१४०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १६३४ कार्तिक सुदी ८ । वे० सं० १७३ । छ भण्डार ।

विशेष—नीले कागजों पर लिखी हुई है। हिन्दी गद्य में टीका भी दी हुई है।

१४१. प्रति सं० ७। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १९६८। वे० सं० २८३। झ भण्डार।

विशेष—निम्न रचनायें ग्रौर हैं।

१. अक्षर बावनी - दानतराय - हिन्दी

२. गुरु विनती - भूधरदास - ”

३. बारह भावना - नवल - ”

४. समाधि मरण - ”

१४२. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४६। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १५६३। ट भण्डार।

विशेष—गुटकाकार है।

१४३. चर्चावर्णन—। पत्र सं० ८१ से ११४। आ० १०^३×६ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—सिद्धान्त।
२० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १७०। ड भण्डार।

१४४. चर्चासंग्रह.....। पत्र सं० ३९। आ० १०^३×६ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—सिद्धान्त।
२० काल X। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० १७६। छ भण्डार।

१४५. चर्चासंग्रह.....। पत्र सं० ३। आ० १२×५^३ इञ्च। भाषा संस्कृत—हिन्दी। विषय सिद्धान्त।
२० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० २०५१। अ भण्डार।

१४६. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल X। वे० सं० ८९। ज भण्डार।

विशेष—विभिन्न आचार्यों की संकलित चर्चाओं का वर्णन है।

१४७. चर्चासमाधान—भूधरदास। पत्र सं० १३०। आ० १०×५ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—
सिद्धान्त। २० काल सं० १८०६ माघ सुदी ५। ले० काल सं० १८६७। पूर्ण। वे० सं० ३८६। अ भण्डार।

१४८. प्रति सं० २। पत्र सं० ११०। ले० काल सं० १९०८ आषाढ बुदी ६। वे० सं० ४४३। अ
भण्डार।

१४९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११७। ले० काल सं० १८२२। वे० सं० २६। अ भण्डार।

१५०. प्रति सं० ४। पत्र सं० ९९। ले० काल सं० १९४१ वैशाख सुदी ५। वे० सं० ५०। ख भंडार।

१५१. प्रति सं० ५। पत्र सं० ८०। ले० काल सं० १९६४ चैत सुदी १५। वे० सं० १७४। छ भंडार।

१५२. प्रति सं० ६। पत्र सं० ३४ से १६६। ले० काल X। अपूर्ण। वे० सं० ५३। छ भण्डार।

१५३. प्रति सं० ७। पत्र सं० ७४। ले० काल सं० १८८३ पौष सुदी १३। वे० सं० १६७। छ भण्डार।

विशेष—जयनगर निवासी महात्मा चंदालाल ने मवाई जयपुर में प्रतिलिपी की थी।

१५४. चर्चासार—पं० शिवजीलाल। पत्र सं० १३३। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। २० काल—×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४८। क भण्डार।

१५५. चर्चासार.....। पत्र सं० १६२। आ० ८×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४०। छ भण्डार।

१५६. चर्चासागर.....। पत्र सं० ३६। आ० १३×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७८६। अ भण्डार।

१५७. चर्चासागर—चंपालाल। पत्र सं० ३०४। आ० १३×६ $\frac{१}{२}$ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—सिद्धान्त। २० काल सं० १६१०। ले० काल सं० १६३१। पूर्ण। वे० सं० ४३६। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ में १४ पत्र विषय सूची के अलग दे रखे हैं।

१५८. प्रति सं० २। पत्र सं० ४१०। ले० का० सं० १६३८। वे० सं० १४७। क भण्डार।

१५९. चौदहगुणस्थानचर्चा—अखयराज। पत्र सं० ४१। आ० ११×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च। भा० हिन्दी गद्य। (राजस्थानी) विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६२। अ भण्डार।

१६०. प्रति सं० २। पत्र सं० १-४१। ले० का० ×। वे० सं० ८६०। अ भण्डार।

१६१. चौदहमार्गणा.....। पत्र सं० १०। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०३६। अ भण्डार।

१६२. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० १८५५। ट भण्डार।

१६३. चौबीसठाणाचर्चा—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ६। आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल। सं० १८२० बैशाख सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० १५७। क भण्डार।

१६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५६। क भण्डार।

१६५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८१७ पौष बुदी १२। वे० सं० १६०। क भण्डार।

विशेष—पं० ईश्वरदास के शिष्य रूपचन्द्र के पठनार्थ नरायणा ग्राम में ग्रन्थ की प्रतिलिपी की।

१६६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १६४६ कार्तिक बुदि ५। वे० सं० ५१। ख भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है। श्री मदनचन्द्र की शिष्या आर्या बाई शीलश्री ने प्रतिलिपि कराई।

१६७. प्रति सं० ५। पत्र सं० २२। ले० काल सं० १७४० ज्येष्ठ बुदी १३। वे० सं० ५२। ख भण्डार।

विशेष—श्रेष्ठी मानसिहजी ने जानावरगीय कर्म क्षयार्थ पं० प्रेम से प्रतिलिपि करवायी।

१६८. प्रति सं० ६। पत्र सं० १ मे ४३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ५३। ख भण्डार।

विशेष—संस्कृत टक्वा टीका सहित है। १४३वीं गाथा मे ग्रन्थ प्रारम्भ है। ३७५ गाथा तक है।

१६९. प्रति सं० ७। पत्र सं० ५६। ले० काल ×। वे० सं० ५४। ख भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टक्वा टीका सहित है। टीका का नाम 'अर्थसार टिप्पण' है। आनन्दराम के पठनार्थ टिप्पण लिखा गया।

१७०. प्रति सं० ८। पत्र सं० २५। ले० का० सं० १६४६ चैत मुदी २। वे० सं० १२६। छ भण्डार।

१७१. प्रति सं० ९। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १३५। छ भण्डार।

१७२. प्रति सं० ०। पत्र सं० ३२। ले० काल ×। वे० सं० १३५। छ भण्डार।

१७३. प्रति सं० ११। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। वे० सं० १४५। छ भण्डार।

विशेष—२ प्रतियों का मिश्रण है।

१७४. प्रति सं० १२। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० २९१। ज भण्डार।

१७५. प्रति सं० १३। पत्र सं० २ मे २५। ले० काल सं० १६९५। कार्तिक बुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० १२१५। ट भण्डार।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है। अन्तिम प्रशस्तिः—संवत् १६९५ वर्षे कार्तिक बुदि ५ बुद्धवासरे श्रीचन्द्रापुरी महास्थाने श्री पार्वनाथ चैत्यालये चौबीस ठाणे ग्रन्थ संपूर्ण भवति।

१७६. प्रति सं० १४। पत्र सं० ३३। ले० काल सं० १८१४ चैत बुदि ९। वे० सं० १२९६। ट भण्डार।

प्रशस्ति—संवत्सरे वेद समुद्र सिद्धि चंद्रमिते १८४४ चैत्र कृष्ण नवम्यां सोमवासरे हनुवती देगे अराह्यपुरे भट्टारक श्री मुरेन्द्रकीर्ति नेदं विद्वद् छात्र सर्व सुखह्वयाध्यापनार्थ लिपिकृतं स्वशयेना चन्द्र तारकं स्थीयतामिदं पुस्तकं।

१७७. प्रति सं० १५। पत्र सं० ६६। ले० का० सं० १८४० माघ मुदी १५। वे० सं० १८१७। ट भण्डार।

विशेष—नेरवा नगर में भट्टारक मुरेन्द्रकीर्ति तथा छात्र विद्वान् तेजपाल ने प्रतिलिपि की।

१७८. प्रति सं० १६। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० १८८९। ट भण्डार।

विशेष—५ पत्र तक चर्चाओं है इससे प्रागे शिक्षा की बातें तथा फुटकर श्लोक है । चौबीस तीर्थद्वारों के चित्र आदि का वर्णन है ।

१७६. चतुर्विंशति स्थानक-नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ४६ । आ० ११×५ इञ्च । भा० प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५ । ड भण्डार ।

विशेष-संस्कृत टीका भी है ।

१८०. चतुर्विंशति गुणस्थान पीठिका..... । पत्र सं० १८ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२५ । ट भण्डार ।

१८१. चौबीस ठाणा चर्चा..... । पत्र सं० २ से २४ । आ० १२×५ इञ्च । भा० संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६४ । अ भण्डार ।

१८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ मे ५१ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×२ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा संस्कृत । ले० काल सं० १८६१ नौप मुदी १० । वे० सं० १६६६ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष-पं० रामबक्सेन धारानगरमध्ये लिखितं ।

१८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० १६८ । अ भण्डार ।

१८४. चौबीस ठाणा चर्चा वृत्ति..... । पत्र सं० १२३ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२८ । अ भण्डार ।

१८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८४१ जेठ सुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० ७७७ । अ भण्डार ।

१८६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० १५५ । क भण्डार ।

१८७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८१० कार्तिक बुदि १० । जीर्ण-शीर्ण । वे० सं० १५६ । क भण्डार ।

विशेष-पं० ईश्वरदास के शिष्य तथा गोभाराम के गुरुभाई हयचंद्र के पठनार्थ मिश्र गिरधारी के द्वारा प्रतिनिधि करवायी गई । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१८८. चौबीस ठाणा चर्चा..... । पत्र सं० ११ । आ० ६ $\frac{१}{२}$ ×४ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३० । अ भण्डार ।

विशेष-ममाप्ति में ग्रन्थ का नाम 'चौबीस ठाणा' प्रकरण भी लिखा है ।

१८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८२६ । वे० सं० १०४७ । अ भण्डार ।

१६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३६ । अ भण्डार ।

१६१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ३८२ । अ भण्डार ।

१६१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १५८ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टीका दी हुई है ।

१६३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । क भण्डार ।

१६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२ । क भण्डार ।

१६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १६७६ । वे० सं० २३ । ख भण्डार ।

विशेष—वेनीराम की पुस्तक से प्रतिलिपि की गई ।

१६६. छियालीसठाणाचर्चा । पत्र सं० १० । आ० ६३×४३ इंच । भाषा संस्कृत ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल—× । ले० काल सं० १८२२ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० २६८ । ख भण्डार ।

१६७. जम्बूद्वीपफल । पत्र सं० ३२ । आ० १२३×६ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—
सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १८२८ चैत सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ११५ । अ भण्डार ।

१६८. जीवस्वरूप वर्णन । पत्र सं० १४ । आ० ६×४ इंच । भाषा प्राकृत । २० काल × ।
ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ६ पत्रों में तत्त्व वर्णन भी है । गोम्मटसार में से लिया गया है ।

१६९. जीवाचारविचार । पत्र सं० ५ । आ० ६×४ इंच । भाषा प्राकृत । विषय—
सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । अ भण्डार ।

२००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १८१८ मंगसिर बुदी १० । वे० सं० २०५ ।
क भण्डार ।

२०१. जीवसमासटिप्पण । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा प्राकृत । विषय—
सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३५ । अ भण्डार ।

२०२. जीवसमासभाषा । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा प्राकृत । विषय—
सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० १६७१ । ट भण्डार ।

२०३. जीवाजीवविचार । पत्र सं० ३२ । आ० १२×५ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—
सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० २००४ । ट भण्डार ।

२०४. जैन नदाचार मार्चण्ड नामक पत्र का प्रत्युत्तर—बाबा तुलीचन्द्र । पत्र सं० २५ ।
आ० १२×७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा हिन्दी । विषय—चर्चा समाधान । २० काल सं० १९४६ । ले० काल × । पूर्ण ।
वे० सं० २०८ । क भण्डार ।

२०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २९ । ले० काल × । वे० सं० २१७ । क भण्डार ।

२०६. ठाणांगसूत्र..... । पत्र सं० ४ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—आगम ।
२० काल × । ले० काल । अपूर्ण । वे० सं० १९२ । अ भण्डार ।

२०७. तत्त्वकौस्तुभ—पं० पन्नालाल सघी । पत्र सं० ७२७ । आ० १२×७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा हिन्दी ।
विषय—सिद्धान्त । २० का० × । ले० काल सं० १९४४ । पूर्ण । वे० सं० २७१ । क भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ तत्त्वार्थराजवार्त्तिक की हिन्दी गद्य टीका है । यह १० अध्यायों में विभक्त है । इस प्रति
में ४ अध्याय तक हैं ।

२०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४६ । ले० काल सं० १९४५ । वे० सं० २७२ । क भण्डार ।

विशेष—५वें अध्याय में १०वें अध्याय तक की हिन्दी टीका है । नवां अध्याय अपूर्ण है ।

२०९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२८ । २० काल सं० १९३४ । ले० काल × । वे० सं० २४० । क भण्डार
विशेष—राजवार्त्तिक के प्रथमाध्याय की हिन्दी टीका है ।

२१०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२८ में ७७६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २४१ । क भण्डार ।
विशेष—तीसरा तथा चौथा अध्याय है । तीसरे अध्याय के २० पत्र अलग और हैं । ४७ अलग पत्रों में
सूचीपत्र है ।

२११. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०७ में ८०७ । ले० काल × । वे० सं० २४२ । क भण्डार ।

विशेष—५, ६, ७, ८, ९, १०वें अध्याय की भाषा टीका है ।

२१२. तत्त्वदीपिका— । पत्र सं० ३१ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{३}{४}$ भाषा हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०१४ । अ भण्डार ।

२१३. तत्त्ववर्णन—शुभचन्द्र । पत्र सं० ४ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६ । अ भण्डार ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखी गई थी ।

२१४. तत्त्वसार—देवसेन । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा प्राकृत । विषय—सिद्धान्त ।
२० काल × । ले० काल सं० १७१९ पीप बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २२५ ।

विशेष—पं० विहारीदास ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० २६६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है । अन्तिम पत्र नहीं है ।

२१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल X । वे० सं० १८१२ । ट भण्डार ।

२१७. तत्त्वसारभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ४४ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ X ५ इञ्च । भाषा हिन्दी ।
विषय—सिद्धान्त । १० काल सं० १६३१ वैशाख बुदी ७ । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० २६७ । क भण्डार ।

विशेष—देशसेन कृत तत्त्वसार की हिन्दी टीका है ।

२१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल X । वे० सं० २६८ । क भण्डार ।

२१९. तत्त्वार्थदर्पण..... । पत्र सं० ३६ । आ० १३ $\frac{३}{४}$ X ५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।
१० काल X । ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० १२६ । च भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम अध्याय तक ही है ।

२२०. तत्त्वार्थबोध— पत्र सं० १८ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ X ५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । १०
काल X । ले० काल X । वे० सं० १४७ । ज भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ से श्री देवमन कृत आलापपद्धति दी हुई है ।

२२१. तत्त्वार्थबोध—बुधजन । पत्र सं० १४५ । आ० ११ X ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
सिद्धान्त । १० काल सं० १८७६ । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० ३६७ । अ भण्डार ।

२२२. तत्त्वार्थबोध । पत्र सं० ३६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ X ५ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त ।
१० काल X । ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० ५६६ । च भण्डार ।

२२३. तत्त्वार्थदर्पण..... । पत्र सं० १० । आ० १३ X ५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।
१० काल X । ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० ३५ । ग भण्डार ।

विशेष—प्रथम अध्याय तक पूर्ण, टीका सहित । ग्रन्थ गोमतीलालजी भोंसा का भेंट किया हुआ है ।

२२४. तत्त्वार्थबोधिनीटीका— । पत्र सं० ४२ । आ० १३ X ५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।
१० काल X । ले० काल सं० १६५२ प्रथम वैशाख सुदि ३ । पूर्णा । वे० सं० ३६ । ग भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ गोमतीलालजी भोंसा का है । श्लोक सं० २२५ ।

२२५. तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० १२६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ X ४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा संस्कृत ।
विषय—सिद्धान्त । १० काल X । ले० काल सं० १६७३ आसोज बुदी ५ । वे० सं० ७२ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रभाचन्द्र भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे । अ० हरदेव के लिए ग्रंथ बनाया था । संगही कँवर ने
जांशी गंगाराम से प्रतिलिपि करवायी थी ।

२२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १६३३ आषाढ बुदी १० । वे० सं० १३७ ।
घ भण्डार ।

२२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७२ । ले० काल > । अपूर्ण । वे० सं० ३७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

२२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ मे ६१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६३६ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पृष्पिका— इति तत्त्वार्थ रत्नप्रभाकरग्रन्थे मुनि श्री धर्मचन्द्र शिष्य श्री प्रभाचन्द्रदेव विर-
चिने ब्रह्मजैत साधु हावादेव देव भावना निमित्ते मोक्ष पदार्थ कथनं दशम सूत्र विचार प्रकरण समाप्ता ॥

२२९. तत्त्वार्थराजवार्तिक—भट्टकलंकदेव । पत्र सं० ३६० । आ० १६X७ इच्छ । भाषा- संस्कृत ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० १०७ । अ भण्डार ।

विशेष—इस प्रति को प्रतिलिपि सं० १५७८ वाली प्रति में जयपुर नगर में की गई थी ।

२३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२२८ । ले० काल सं० १६४१ भादवा सुदी ६ । वे० सं० २३७ ।
क भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ २ वेष्टनों में है । प्रथम वेष्टन में १ मे ६०० तथा दूसरे में ६०१ मे १२२८ तक पत्र हैं ।
प्रति उत्तम है । मूल के नीचे हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

२३१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल X । वे० सं० ६४ । ख भण्डार ।

विशेष—मूलमात्र ही है ।

२३२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५०० । ले० काल सं० १६७४ पौष सुदी १३ । वे० सं० २४४ ।
ङ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में म्होरीलाल भावमा ने प्रतिलिपि की ।

२३३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ६५६ । ङ भण्डार ।

२३४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७४ मे २१० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२७ । च भण्डार ।

२३५. तत्त्वार्थराजवार्तिकभाषा..... । पत्र सं० ५८२ । आ० १२X८ इच्छ । भाषा—हिन्दी मद्य ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २४५ । ङ भण्डार ।

२३६. तत्त्वार्थवृत्ति—पं० योगदेव । पत्र सं० ६७ । आ० ११३X७^१ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—
सिद्धान्त । रचनाकाल X । ले० काल सं० १९५८ जैत बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २५२ । क भण्डार ।

विशेष—वृत्ति का नाम मुखबोध वृत्ति है । तत्त्वार्थ सूत्र पर यह उत्तम टीका है । पं० योगदेव कुम्भनगर के
निवासी थे । यह नगर कनारा जिले में है ।

२३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४७ । ले० काल X । वे० सं० २५२ । ज भण्डार ।

२३८. तत्त्वार्थसार—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५० । आ० १३X५ इच्छ । भाषा संस्कृत । विषय—
सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २३८ । क भण्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ में ६१= श्लोक है जो ६ अध्यायों में विभक्त हैं । इनमें ७ तत्त्वों का वर्णन किया
गया है ।

२३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४४ । ले० काल X । वे० सं० २३६ । क भण्डार ।

२४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल X । वे० सं० २४२ । क भण्डार ।

२४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७ । ले० काल X । वे० सं० ६५ । ख भण्डार ।

२४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४२ । ले० काल X । वे० सं० ६६ । छ भण्डार ।

विशेष—पुस्तक दीवान जानचन्द की है ।

२४३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल X । वे० सं० १३२ । अ भण्डार ।

२४४. तत्त्वार्थसार दीपक—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ६१ । आ० ११X५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २८४ । अ भण्डार ।

विशेष—भ० सकलकीर्ति ने 'तत्त्वार्थसारदीपक' में जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का वर्णन किया है । रचना १२ अध्यायों में विभक्त है । यह तत्त्वार्थसूत्र की टीका नहीं है जैसा कि इसके नाम से प्रकट होता है ।

२४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८२८ । वे० सं० २४० । क भण्डार ।

२४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १८६४ आसोज सुदी २ । वे० सं० २४१ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा हीरानन्द ने प्रतिनिधि की ।

२४७. तत्त्वार्थसारदीपकभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० २८६ । आ० १२३X५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १६३७ ज्येष्ठ बुदी ७ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २६६ ।

विशेष—जिन २ ग्रन्थों की पन्नालाल ने भाषा लिखी है सब की सूचा दी हुई है ।

२४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८७ । ले० काल X । वे० सं० २४३ । क भण्डार ।

२४९. तत्त्वार्थ सूत्र—उमाम्बाति । पत्र सं० २९ । आ० ७X३½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल X । ले० काल सं० १४५८ श्रावण सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २१६६ (क) अ भण्डार ।

विशेष—लाल पत्र हैं जिन पर श्वेत (रजत) अक्षर हैं । प्रति प्रदर्शनी में रखने योग्य है । तत्त्वार्थ सूत्र समाप्ति पर भक्तामर स्तोत्र प्रारम्भ होता है लेकिन यह अपूर्ण है ।

प्रगति—सं० १४५८ श्रावण सुदी ६

२५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६६६ । वे० सं० २२०० अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों में है । पत्रों के किनारों पर सुन्दर बेलें हैं । प्रति दर्शनीय एवं प्रदर्शनी में रखने योग्य है । नवान प्रति है । सं० १६६६ में जीहरीलालजी नन्दबालजी धी वालों ने अतोद्यापन में प्रति लिखा कर चढ़ाई ।

२५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३७ । ले० काल X । वे० सं० २२०२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति ताडपत्रीय एवं प्रदर्शनी योग्य है ।

२५२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १८५५ । अ भण्डार ।
२५३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८८८ । वे० सं० २४६ । अ भण्डार ।
२५४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० ३३० । अ भण्डार ।
२५५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४८ । अ भण्डार ।
२५६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८३७ । वे० सं० ३६२ । अ भण्डार ।
विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।
२५७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १०७५ । अ भण्डार ।
२५८. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । वे० सं० १०३० । अ भण्डार ।
विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है । पं० अमीचंद ने अलवर में प्रतिलिपि की ।
२५९. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ६५ । अ भण्डार ।
२६०. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७७५ । अ भण्डार ।
विशेष—पत्र १७ से २० तक नहीं है ।
२६१. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ६ से ३३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १००८ । अ भण्डार ।
२६२. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ४७ । अ भण्डार ।
विशेष—संस्कृत टीका सहित ।
२६३. प्रति सं० १५ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ४८ । अ भण्डार ।
२६४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८२० चैत्र वृदी ३ । वे० सं० ८१६ ।
विशेष—संक्षिप्त हिन्दी अर्थ दिया हुआ है ।
२६५. प्रति सं० १७ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० २००८ । अ भण्डार ।
२६६. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ११ से २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२३४ । अ भण्डार ।
२६७. प्रति सं० १९ । पत्र सं० १६ ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० १२४४ । अ भण्डार ।
२६८. प्रति सं० २० । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० १२७५ । अ भण्डार ।
२६९. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० १३३१ । अ भण्डार ।
२७०. प्रति सं० २२ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २१४३ । अ भण्डार ।
२७१. प्रति सं० २३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २१५६ । अ भण्डार ।
२७२. प्रति सं० २४ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १९४३ कालिक मुदी ५ । वे० सं० २००६ ।
अ भण्डार ।
विशेष—संस्कृत टिप्पणा सहित है । फूलचंद विदायक्या ने प्रतिलिपि की ।

२७३. प्रति सं० २५ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६ । वे० सं० २००७ । अ भण्डार ।

२७४ प्रति सं० २६ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४१ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२७५. प्रति सं० २७ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८०४ ज्येष्ठ सुदी २ । वे० सं० २४६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों में है । शाहजहानाबाद वाले श्री बूलचन्द बाकलीवाल के पुत्र श्री ऋषभदाम दौलतराम ने जैसिंहपुरा में इसकी प्रतिलिपि कराई थी । प्रति प्रदर्शनी में रखने योग्य है ।

२७६. प्रति सं० २८ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १६३६ भाद्रवा सुदी ४ । वे० सं० २५८ । क भण्डार ।

२७७. प्रति सं० २९ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० २५९ । क भण्डार ।

२७८. प्रति सं० ३० । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १६४५ वैशाख सुदी ७ । वे० सं० २५० । क भण्डार ।

२७९. प्रति सं० ३१ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० २५७ । क भण्डार ।

२८०. प्रति सं० ३२ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ३७ । ग भण्डार ।

विशेष—महुवा निवासी पं० नानगरामने प्रतिलिपि की थी ।

२८१. प्रति सं० ३३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३८ । ग भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी । पुस्तक चिम्मनलाल बाकलीवाल की है ।

२८२. प्रति सं० ३४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३९ । ग भण्डार ।

२८३. प्रति सं० ३५ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८६१ माघ बुदी ४ । वे० सं० ४० ।

ग भण्डार ।

२८४. प्रति सं० ३६ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ३३ । घ भण्डार ।

२८५ प्रति सं० ३७ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ३४ घ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

२८६. प्रति सं० ३८ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३५ । घ भण्डार ।

२८७. प्रति सं० ३९ । पत्र सं० ५८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २४६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२८८. प्रति सं० ४० । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० २४७ । ङ भण्डार ।

२८९. प्रति सं० ४१ । पत्र सं० ८ से २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २४८ । ङ भण्डार ।

२९०. प्रति सं० ४२ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० २४९ । ङ भण्डार ।

२९१. प्रति सं० ४३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० २५० । ङ भण्डार ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र भी है ।

२६२. प्रति सं० ४४ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० २५१ । ड. भण्डार ।

२६३. प्रति सं० ४५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० २५२ । ड. भण्डार ।

विशेष—सूत्रों के ऊपर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

२६४. प्रति सं० ४६ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । वे० सं० २५३ । ड. भण्डार ।

२६५. प्रति सं० ४७ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० २५४ । ड. भण्डार ।

२६६. प्रति सं० ४८ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १९२१ कार्तिक बुदी ४ । वे० सं० २५५ । ड. भण्डार ।

२६७. प्रति सं० ४९ । पत्र सं० ३७ । ले० काल × । वे० सं० २५६ । ड. भण्डार ।

२६८. प्रति सं० ५० । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० २५७ । ड. भण्डार ।

२६९. प्रति सं० ५१ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५८ । ड. भण्डार ।

३००. प्रति सं० ५२ । पत्र सं० ९ से १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५९ । ड. भण्डार ।

३०१. प्रति सं० ५३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६० । ड. भण्डार ।

३०२. प्रति सं० ५४ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २६१ । ड. भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

३०३. प्रति सं० ५५ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६२ । ड. भण्डार ।

३०४. प्रति सं० ५६ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६३ । ड. भण्डार ।

३०५. प्रति सं० ५७ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० २६५ । ड. भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम अध्याय ही है । हिन्दी अर्थ सहित है ।

३०६. प्रति सं० ५८ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १२८ । च. भण्डार ।

विशेष—संक्षिप्त हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

३०७. प्रति सं० ५९ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२९ । च. भण्डार ।

३०८. प्रति सं० ६० । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८८२ फागुन सुदी १३ । जीर्ण । वे० सं० १३० ।

च. भण्डार ।

विशेष—मुरलीधर अग्रवाल जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की ।

३०९. प्रति सं० ६१ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १९५२ ज्येष्ठ सुदी १ । वे० सं० १३१ । च. भण्डार ।

३१०. प्रति सं० ६२ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८७१ जेठ सुदी १२ । वे० सं० १३२ । च. भण्डार ।

३११. प्रति सं० ६३ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १९३९ । वे० सं० १३४ । च. भण्डार ।

विशेष—छाजूलाल सेठी ने प्रतिलिपि करवायी ।

३१२. प्रति सं० ६४ । पत्र सं० १९ । ले० काल × । वे० सं० १३३ । च. भण्डार ।

३१३. प्रति सं० ६५ । पत्र सं० २१ से २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५ । च. भण्डार ।

३१४. प्रति सं० ६६ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । च. भण्डार ।

३१५. प्रति सं० ६७ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३७ । च. भण्डार ।

विशेष—टब्बा टीका सहित । १ ला पत्र नहीं है ।

३१६. प्रति सं० ६८ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १९६३ । वे० सं० १३८ । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१७. प्रति सं० ६९ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १९६३ । वे० सं० ५७० । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१८. प्रति सं० ७० । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम ४ पत्रों में तत्त्वार्थ सूत्र के प्रथम, पंचम तथा दशम अधिकार हैं । इसमें आगे भक्तान्तर स्तोत्र है ।

३१९. प्रति सं० ७१ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

३२०. प्रति सं० ७२ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३८ । ज भण्डार ।

३२१. प्रति सं० ७३ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १९२२ फागुन सुदी १५ । वे० सं० ८८ । ज भण्डार ।

३२२. प्रति सं० ७४ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० १४२ । झ भण्डार ।

३२३. प्रति सं० ७५ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० ३०५ । झ भण्डार ।

३२४. प्रति सं० ७६ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० २७१ । झ भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल के पठनार्थ लिखा गया था ।

३२५. प्रति सं० ७७ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १६२९ चैत सुदी १४ । वे० सं० २७३ । झ भण्डार ।

विशेष—मण्डलाचार्य श्री चन्द्रकीर्ति के शिष्य ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६. प्रति सं० ७८ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ४४८ । झ भण्डार ।

३२७. प्रति सं० ७९ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । वे० सं० ३४ ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है ।

३२८. प्रति सं० ८० । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० १६१५ ट भण्डार ।

३२९. प्रति सं० ८१ । पत्र सं० १९ । ले० काल × । वे० सं० १६१६ । ट भण्डार ।

३४०. प्रति सं० ८२ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० १६३१ । ट भण्डार ।

विशेष—हीरालाल विद्यायक्या ने गोरूलाल पांड्या से प्रतिलिपि करवायी । पुस्तक लिखमीचन्द्र छाबड़ा खजांची की है ।

३४१. प्रति सं० ८३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १९३१ । वे० सं० १९४२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है । ईसरदा वाले ठाकुर प्रतापसिंहजी के जयपुर आगमन के समय सवाई रामसिंह जी के शासनकाल में जीवरणलाल काला ने जयपुर में हजारीलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की ।

३४२. प्रति सं० ८४ । पत्र सं० ३ से १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६९ ।

विशेष—चतुर्थ अध्याय में है। इसके आगे कलिकुण्डपूजा, पार्श्वनाथपूजा, क्षेत्रपालपूजा, क्षेत्रपालस्तोत्र तथा चिन्तामणिपूजा है।

३४३. तत्त्वार्थ सूत्र टीका श्रुतसागर। पत्र सं० ३५६। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल सं० १७३३ प्र० श्रावण सुदी ७; वै० सं० १६०। पूर्ण। अ भण्डार।

विशेष—श्री श्रुतसागर सूरि १६ वीं शताब्दी के संस्कृत के अच्छे विद्वान थे। इन्होंने ३८ से भी अधिक ग्रंथों की रचना की जिसमें टीकाएँ तथा छोटी २ कथाएँ भी हैं। श्री श्रुतसागर के गुरु का नाम विद्यानंदि था जो अज्ञानक पद्मनंदि के प्रशिष्य एवं देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य थे।

३४४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१५। ले० काल सं० १७४८ फागुन सुदी १४। अपूर्ण। वै० सं० २५५। क भण्डार।

विशेष—३१५ से आगे के पत्र नहीं हैं।

३४५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५३। ले० काल—×। वै० सं० २६६। ड भण्डार।

३४६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३५३। ले० काल—×। वै० सं० ३३०। ज भण्डार।

३४७. तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति—सिद्धसेन गणि। पत्र सं० २४८। आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल×। ले० काल—×। अपूर्ण। वै० सं० २५३। क भण्डार।

विशेष—तीन अध्याय तक ही हैं। आगे पत्र नहीं हैं। तत्त्वार्थ सूत्र की विस्तृत टीका है।

३४८. तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति.....। पत्र सं० ६३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल—×। ले० काल—सं० १६३३ फागुण बुदी ५। पूर्ण। वै० सं० ५८। अ भण्डार।

विशेष—मालपुरा में श्री कनककीर्ति ने अपने पठनार्थ मु० जेसा से प्रतिलिपि करवायी।

प्रशस्ति—संवत् १६३३ वर्षे फागुण मासे कृष्ण पक्षे पंचमी तिथी रविवारे श्री मालपुरा नगरे। भ० श्री ५ श्री श्री श्री चंद्रकीर्ति विजय राज्ये ब्र० कमलकीर्ति लिखापितं आत्मार्थे पठनीया तू मु० जेसा केन लिखितं।

३४९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२०। ले० काल सं० १६५६ फागुण सुदी १५। तीन अध्याय तक पूर्ण। वै० सं० २५४। क भण्डार।

विशेष—बाला बल्लभ शर्मा ने प्रतिलिपि की थी। टीका विस्तृत है।

३५०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५ मे ५६३। ले० काल—×। अपूर्ण। वै० सं० २५६। क भण्डार।

विशेष—टीका विस्तृत है।

३५१. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६३। ले० काल सं० १७८६। वै० सं० १०४५। अ भण्डार।

३५२. प्रति सं० ५। पत्र सं० २ मे २२। ले० काल—×। अपूर्ण। वै० सं० ३२६। 'ब' भण्डार।

३५३. प्रति सं० ६। पत्र सं० १६। ले० काल—×। अपूर्ण। वै० सं० १७६३। 'ट' भण्डार।

३५४. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—पं० सदासुख कासलीवाल। पत्र सं० ३३३। आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—सिद्धान्त। २० काल सं० १६१० फागुण बुदी १०। ले० काल—×। पूर्ण। वै० सं० २४५। क भण्डार।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र पर हिन्दी गद्य में सुन्दर टीका है ।

३५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५१ । ले० काल सं० १९४३ श्रावण सुदी १५ । वे० सं० २४६ ।
क भण्डार ।

३५६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १९४० मंगसिर बुदी १३ । वे० सं० २४७ ।
क भण्डार ।

३५७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९६ । ले० काल सं० १९१५ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० ६६ । अपूर्ण ।
ख भण्डार ।

३५८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२ ।

विशेष—पृष्ठ ९० तक प्रथम अध्याय की टीका है ।

३५९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २८३ । ले० काल सं० १९३५ माह सुदी ८ । वे० सं० ३३ । क भण्डार

३६०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ९३ । ले० काल सं० १९९६ । वे० सं० २७० । क भण्डार ।

३६१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०२ । ले० काल × । वे० सं० २७१ । क भण्डार ।

३६२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२८ । ले० काल सं० १९४० चैत्र बुदी ८ । वे० सं० २७२ । क भण्डार ।

विशेष—होरीलालजी खिन्दूका ने प्रतिलिपि करवाई ।

३६३. प्रति सं० १० । पत्र सं० ९७ । ले० काल सं० १९३६ । वे० सं० ५७३ । च भण्डार ।

विशेष—मांगीलाल श्रामाल ने यह ग्रन्थ लिखवाया ।

३६४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १९५५ । वे० सं० १८५ । क भण्डार ।

विशेष—आनन्दचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई ।

३६५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७१ । ले० काल १९१५ आषाढ सुदी ६ वे० सं० ९१ । क भण्डार ।

विशेष—मोतीलाल गंगवाल ने पुस्तक चढाई ।

३६६. तत्त्वार्थ सूत्र टीका—पं० जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ११८ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा हिन्दी
(गद्य) । २० काल सं० १८५९ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५१ । क भण्डार ।

३६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६७ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० ५७२ । च भण्डार ।

३६८. तत्त्वार्थ सूत्र टीका—पांडे जयवंत । पत्र सं० ६६ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० २४१ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है :—

केइक जीव अचोर तथ करि सिद्ध छै केइक जीव उर्द्ध सिद्ध छै इत्यादि ।

इति श्री उमास्वामी विरचित सूत्र की बालाबोधि टीका पांडे जयवंत कृत संपूर्ण समाप्ता । श्री सवाई के
कहने से वैष्णव रामप्रसाद ने प्रतिलिपि की ।

३६६. तत्त्वार्थसूत्र टीका—आ० कनककीर्ति । पत्र सं० १४५ । आ० १२^१×५^३ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६६ । ड भण्डार ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र की श्रुतसागरी टीका के आधार पर हिन्दी टीका लिखी गयी है । १४५ में आगे पत्र नहीं है ।

३७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०२ । ले० काल × । वे० सं० १३८ । झ भण्डार ।

३७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६१ । ले० काल सं० १७८३ । चैत्र सुदी ६ । वे० सं० २७२ । झ भण्डार ।

विशेष—लालसोट निवासी ईश्वरलाल अजमेरा ने प्रतिलिपि की थी ।

३७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६२ । ले० काल × । वे० सं० ४४६ । झ भण्डार ।

३७३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १६११ । वे० सं० १६३८ । ट भण्डार ।

विशेष—वेद्य अमीचन्द काला ने ईसरदा में शिवनारायण जोशी से प्रतिलिपि करवायी ।

३७४. तत्त्वार्थसूत्र टीका—पं० राजमल्ल । पत्र सं० ५ से ४८ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६१ । । अ भण्डार ।

३७५. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—छोटीलाल जैसवाल । पत्र सं० २१ । आ० १३×५^३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १६३२ आसोज बुदी ८ । ले० काल सं० १६५२ आसोज सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २४४ । क भण्डार ।

विशेष—मथुराप्रसाद ने प्रतिलिपि की । छोटीलाल के पिता का नाम मोतीलाल था यह अलीगढ़ जिला के मड़ू ग्राम के रहने वाले थे । टीका हिन्दी पद्य में है जो अत्यन्त सरल है ।

३७६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० २६७ । क भण्डार ।

३७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । । ले० काल × । वे० सं० २६८ । क भण्डार ।

३७८. तत्त्वार्थसूत्र भाषा—शिखरचन्द्र । पत्र सं० २७ । आ० १०^३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १८६८ । ले० काल सं० १६५३ । पूर्ण । वे० सं० २४८ । क भण्डार ।

३७९. तत्त्वार्थसूत्र भाषा..... । पत्र सं० ६४ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३६ ।

३८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ४६ । ले० काल सं० १८५० बैशाख बुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ६७ । ख भण्डार ।

३८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ६८ । ख भण्डार ।

विशेष—द्वितीय अध्याय तक है ।

३८२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२ । ले० काल सं० १६४१ फागुण बुदी १४ । वे० सं० ६६ । ख भण्डार ।

३८३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० ४१ । ग भण्डार ।

३८४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४६८ से ८१३ । ले० काल सं० × । अपूर्ण । वे० सं० २६४ । ड भण्डार ।

३८५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८७ । २० काल- \times । ले० काल सं० १९१७ । वे० सं० ५७१ ।
च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टिप्पण सहित ।

३८६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५३ । ले० काल \times । वे० सं० ५७४ । च भण्डार ।

विशेष—पं० सदासुखजी की वचनिका के अनुसार भाषा की गई है ।

३८७. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३२ । ले० काल \times । वे० सं० ५७५ । च भण्डार ।

३८८. प्रति सं० १० । पत्र सं० २३ । ले० काल \times । वे० सं० १८५ । छ भण्डार ।

३८९. तत्त्वार्थसूत्र भाषा..... । पत्र सं० ३३ । आ० १० \times ६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
सिद्धान्त । २० काल \times । ले० काल \times । अपूर्ण । वे० सं० ८८९ ।

विशेष—१५वां तथा ३३ से आगे पत्र नहीं है ।

३९०. तत्त्वार्थसूत्र भाषा..... । पत्र सं० ६० से १०८ । आ० ११ \times ४३ इञ्च । भाषा— \times ।
हिन्दी । २० काल \times । ले० काल सं० १७१९ । अपूर्ण । वे० सं० २०८१ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १७१९ मिति श्रावण सुदी १३ पातिसाह औरंगसाहि राज्य प्रवर्तमाने इदं तत्त्वार्थ शास्त्रं
मुज्ञानात्मक अन्य जन बोधाय विदुषा जयवंता कृतं साह जगन.....पठनार्थं बालाबोध वचनिका कृता । किमर्थं सूत्राणां ।
मूलसूत्रं अतीव गंभीरतर प्रवर्तत तस्य अर्थ केनापि न अवबुध्यते । इदं वचनिका दीपमालिका कृता कश्चित् भव्य इमां
पठति ज्ञानो=द्योतं भविष्यति । लिखापितं साह विहारीदास खाजांनची सावडावासी आमेर का कर्मक्षय निमित्त लिखाई
साह भोला, गोधा की सहाय से लिखी है राजश्री जैसिंहपुरामध्ये लिखी जिहानाबाद ।

३९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २९ । ले० काल सं० १८६० । वे० सं० ७० । ख भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टिप्पण रूप में अर्थ दिया है ।

३९२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । २० काल \times । ले० काल सं० १९०२ आसोज बुदी १० । वे० सं०
१६८ । भू भण्डार ।

विशेष—टट्वा टीका सहित है । हीरालाल कासलीवाल फागी वाले ने विजयरामजी पांड्या के मन्दिर के
वास्ते प्रतिलिपि की थी ।

३९३. त्रिभंगीसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६६ । आ० ६३ \times ४६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—
सिद्धान्त । २० काल \times । ले० काल सं० १८५० सावन सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ७४ । ख भण्डार ।

विशेष—लालचन्द टोंग्या ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की ।

३९४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १९१९ । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । च भण्डार ।

विशेष—जोहरीलालजी गोधा ने प्रतिलिपि की ।

३९५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६९ । ले० काल सं० १८७६ कार्तिक सुदी ४ । वे० सं० २४ । व्य भण्डार ।

विशेष—भ० क्षेमकीर्ति के शिष्य गोवर्द्धन ने प्रतिलिपि की थी ।

३६६. त्रिभंगीसार टीका—विबेकनन्दि । पत्र सं० ४८ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १८२४ । पूर्ण । वे० सं० २८० । क भण्डार ।

विशेष—पं० महाचन्द्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १११ । ले० काल × । वे० सं० २८१ । क भण्डार ।

३६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ से ६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६३ । छ भण्डार ।

३६९. दशवैकालिकसूत्र..... । पत्र सं० १८ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२५१ । अ भण्डार ।

४००. दशवैकालिकसूत्र टीका..... । पत्र सं० १ से ४२ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आगम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०९ । छ भण्डार ।

४०१. द्रव्यसंग्रह—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । २० काल × । ले० काल सं० १६३५ माघ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १८५ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६३५ वर्षके मात्र मामे शुक्लपक्षे १० तिथी ।

४०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ९२९ । अ भण्डार ।

४०३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८४१ आसोज बुदी १३ । वे० सं० १३१० । अ भण्डार ।

४०४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ से ९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०२५ । अ भण्डार ।

विशेष—टब्बा टीका सहित ।

४०५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २९२ । अ भण्डार ।

४०६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८२० । वे० सं० ३१२ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित ।

४०७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८१६ भाद्रवा सुदी ३ । वे० सं० ३१३ । क भण्डार ।

४०८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८१५ पौष सुदी १० । वे० सं० ३१४ । क भण्डार ।

४०९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८४४ श्रावण बुदी १ । वे० सं० ३१५ । क भण्डार ।

विशेष—संक्षिप्त संस्कृत टीका सहित ।

४१०. प्रति सं० १० । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८१७ ज्येष्ठ बुदी १२ । वे० सं० ३१५ । क भण्डार ।

४११. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३१६ । क भण्डार ।

४१२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३११ । क भण्डार ।

विशेष—गाथाओं के नीचे संस्कृत में छाया दी हुई है ।

४१३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १७८९ ज्येष्ठ बुदी ८ । वे० सं० ८६ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । टोंक में पार्वनाथ चैत्यालय में पं० इंगरसी के दिग्गज वैमराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई ।

४१४. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८११ । वे० सं० २६५ । ख भण्डार ।

४१५. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ४० । घ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

४१६. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २ से ८ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ४२ । घ भण्डार ।

४१७. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४३ । घ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

४१८. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३१२ । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

४१९. प्रति सं० १९ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३१३ । ङ भण्डार ।

४२०. प्रति सं० २० । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० ३१४ । ङ भण्डार ।

४२१. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ३१६ । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत और हिन्दी अर्थ सहित है ।

४२२. प्रति सं० २२ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १६७ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

४२३. प्रति सं० २३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० १६९ । च भण्डार ।

४२४. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६६ द्वि० प्राणाद मुदी २ । वे० सं० १२२ ।

छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में बालावबोध टीका सहित है । पं० चतुर्भुज ने नागपुर ग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

४२५. प्रति सं० २५ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७८२ भादवा बुदी ९ । वे० सं० ११२ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है । ऋषभसेन खतरगच्छ ने प्रतिलिपि की थी ।

४२६. प्रति सं० २६ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । ज भण्डार ।

विशेष—टक्का टीका सहित है ।

४२७. प्रति सं० २७ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । झ भण्डार ।

४२८. प्रति सं० २८ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । झ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

४२९. प्रति सं० २९ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० २६४ । झ भण्डार ।

४३०. प्रति सं० ३० । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २७५ । झ भण्डार ।

४३१. प्रति सं० ३१ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० ३७८ । झ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४३२. प्रति सं० ३२ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७८५ पौष मुदी ३ । वे० सं० ४९४ । झ भण्डार ।

विशेष—प्रति टट्टा टीका सहित है। सीलोर नगर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में मूलसंघ के अंबावती पट्ट के भट्टारक जगतकीर्ति तथा उनके पट्ट में भ० देवेंद्रकीर्ति के आम्नाय के शिष्य मनोहर ने प्रतिलिपि की थी।

४३३. प्रति सं० ३३। पत्र सं० १५। ले० काल ×। वै० सं० ४६५। अ भण्डार।

विशेष—३ पत्र तक द्रव्य संग्रह है जिसके प्रथम २ पत्रों में टीका भी है। इसके बाद 'सज्जनचित्तवल्लभ' मल्लिषेणाचार्य कृत दिया हुआ है।

४३४. प्रति सं० ३४। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १६२२। वै० सं० १६४९। ट भण्डार।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं।

४३५. प्रति सं० ३५। पत्र सं० २ से ६। ले० काल सं० १७८४। अपूर्ण। वै० सं० १८४५। ट भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४३६. द्रव्यसंग्रहवृत्ति—प्रभाचन्द्र। पत्र सं० ११। आ० ११३×५३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १८२२ मंगसिर बुदी ६। पूर्ण। वै० सं० १०५३। अ भण्डार।

विशेष—महाचन्द्र ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

४३७. प्रति सं० २। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १६५९ पौष सुदी ३। वै० सं० ३१७। क भण्डार।

४३८. प्रति सं० ३। पत्र सं० २ से ३२। ले० काल सं० १७३०। अपूर्ण। वै० सं० ३१७। क भण्डार।

विशेष—आचार्य कनककीर्ति ने फागपुर में प्रतिलिपि की थी।

४३९. प्रति सं० ४। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १७१४ द्वि० श्रावण बुदी ११। वै० सं० १६८।

च भण्डार।

विशेष—यह प्रति जोधराज गोदीका के पठनार्थ रूपसी भावमा जोबनेर वालों ने सांगानेर में लिखी।

४४०. द्रव्यसंग्रहवृत्ति—ब्रह्मदेव। पत्र सं० १०८। आ० ११३×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। र० काल ×। ले० काल सं० १६३५ आमोज बुदी १०। पूर्ण। वै० सं० ६०।

विशेष—इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि राजाधिराज भगवंतदास विजयराज मानसिंह के शासनकाल में मालपुरा में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में हुई थी।

प्रशस्ति—शुक्लादिपक्षे नवमदिने पुष्यनक्षत्रे सोमवासरे संवत् १६३५ वर्षे आसोज बदि १० शुभ दिने राजाधिराज भगवंतदास विजयराज मानसिंह राज्य प्रवर्तमाने मातृपुर वास्तव्ये श्री चन्द्रप्रभनाथ चैत्यालये श्री मूलसंघे नवाम्नाये बलभारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रोपद्यनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे मं० श्री प्रभाचन्द्र देवास्तत्सिष्य मं० श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत्सिष्य मं० श्री ललितकीर्तिदेवास्तत्सिष्य मं० श्री चन्द्रकीर्ति देवास्तदाम्नाए खंडेलवालान्वये गंगवालगोत्रे सा. नानिग द्वि. पदारथा। सा. नानिग भार्या नायकदे तत्पुत्र सा. खामा तद्भाग्यो द्वे। प्र. खमिसिरि। द्व० हरमदे तत्पुत्र कमा तद्भार्या करणादे। द्वि० सा. पदारथ तद् भार्या पिदिमदे तत्पुत्र सा. गोइंद तद्भार्या मोरादे तत्पुत्रापंच प्र. वीका, द्वि. नराइण, तृ. उदा, चतुर्थ चिरम सं० दसरथ। प्र. वीका भार्या विन्नम दे एनेपां सा. कमा इंद सास्त्र लिख्याप्य आचार्य श्री सिधनंदए षटापितं।

४४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १२४ । अ भण्डार ।

४४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १८१० कार्तिक बुदी १३ । वे० सं० ३२३ । क भण्डार ।

४४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९९ । ले० काल सं० १८०० । वे० सं० ४४ । ख भण्डार ।

४४४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४९ । ले० काल सं० १७८४ अषाढ बुदी ११ । वे० सं० १११ । ख भण्डार ।

४४५. द्रव्यसंग्रहटीका..... पत्र सं० ५८ । आ० १०×४१ इञ्च । भाषा—संस्कृत । २० काल × । ले० काल सं० १७३१ माघ बुदी १३ । वे० सं० ५१० । ब्य भण्डार ।

विशेष—टीका के प्रारम्भ में लिखा है कि आ० नेमिचन्द्र ने मालवदेश की धारा नगरी में भोजदेव के शासनकाल में श्रीपाल मंडलेश्वर के आश्रम नाम नगर में मोमा नामक श्रावक के लिए द्रव्य-संग्रह की रचना की थी ।

४४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५८ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम वृहद् द्रव्य संग्रह टीका है ।

४४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २९ । ले० काल सं० १७७८ पौष सुदी ११ । वे० सं० २९५ । अ भण्डार ।

४४८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९६ । ले० काल सं० १६७० भाद्रवा सुदी ५ । वे० सं० ८५ । ख भण्डार ।

विशेष—नागपुर निवासी खंडेलवाल जातीय सेठी गौत्र वाले सा ऊदा की भार्या ऊदलदे ने पत्य व्रतोद्या-पन में प्रतिलिपि कराकर चढाया ।

४४९. प्रति सं० ९९ । ले० का० सं० १९०० चैत्र बुदी १३ । वे० सं० ४५ । घ भण्डार ।

४५०. द्रव्यसंग्रह भाषा..... पत्र सं० ११ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १७७१ सावण बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में निम्न प्रकार अर्थ दिया हुआ है ।

गाथा—दध्व-संगहमिणां मुणिराहा दोस-संचयचुदा सुदपुष्णा ।

सोधयंतु तानुमुत्तधरेण रोमिचंद मुणिरा भणियं जं ॥

अर्थ— भो मुनि नाथ ! भो पंडित कैमे हौ तुम्ह दोष संचय नुति दोषनि के जु संचय कहिये समूह तिनते जु रहित हौ । मया नेमिचंद्र मुनिना भणितं । यत् द्रव्य संग्रह इमं प्रत्यक्षी भूतां में जु हौ नेमिचंद्र मुनि तिन जु कह्यौ यह द्रव्य संग्रह शास्त्र । ताहि सोधयंतु । सौ धौ हूं कि कि सौ हूं । तनु मुत्त धरेण तनु कहिये थोरों सौ सूत्र कहिये । सिद्धांत ताकौ जु धारक ह्यौ । अल्प शास्त्र करि संयुक्त हौ जु नेमिचंद्र मुनि तेन कह्यौ जु द्रव्य संग्रह शास्त्र ताकौ भो. पंडित सोधी ।

इति श्री नेमिचंद्राचार्य विरचितं द्रव्य संग्रह बालबोध संपूर्ण ।

संवत् १७७१ शके १६३६ प्र० श्रावण मासे कृष्णपक्षे तृयोदश्यां १३ बुधवासरे लिप्यकृतं विद्याधरेण स्वात्मार्थे ।

४५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २९३ । अ भण्डार ।

४५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल सं० १८३५ ज्येष्ठ सुदी ८ । वे० सं० ७७४ । अ
भण्डार ।

विशेष—हिन्दी सामान्य है ।

४५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १८१४ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं० ३६३ । अ भण्डार
विशेष—धर्मार्थी रामचन्द्र की टीका के आधार पर भाषा रचना की गई है ।

४५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १५५७ आसोज सुदी ८ । वे० सं० ८८ । ख भण्डार

४५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ४४ । ग भण्डार ।

४५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १७४३ श्रावण बुदी १३ । वे० सं० १११ । छ
भण्डार ।

प्रारम्भ—बालानामुपकाराय रामचन्द्रेण सभाषया । द्रव्यसंग्रहशास्त्रस्य व्याख्यालेशो वितन्यते ॥१॥

४५७. द्रव्यसंग्रह भाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र सं० १६ । आ० १३×५ $\frac{३}{२}$ इञ्च । भाषा—गुजराती ।
लिपि हिन्दी । विषय—छह द्रव्यों का वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १८०० माघ बुदि १३ । वे० सं० २१/२६२
छ भण्डार ।

४५८. द्रव्यसंग्रह भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १६ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—छह द्रव्यों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२ । घ भण्डार ।

४५९. द्रव्यसंग्रह भाषा—जयचन्द्र छाबडा । पत्र सं० ३१ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी
गद्य । विषय—छह द्रव्यों का वर्णन । २० काल सं० १८८३ सावन बुदि १४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१२ ।
अ भण्डार ।

४६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८३३ सावण बुदी १४ । वे० सं० ३२१ । क
भण्डार ।

४६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । वे० सं० ३१८ । क भण्डार ।

४६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० १६५८ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र ४२ के आगे द्रव्यसंग्रह पद्य में है लेकिन वह अपूर्ण है ।

४६२. द्रव्यसंग्रह भाषा—जयचन्द्र छाबडा । पत्र सं० ५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा हिन्दी (पद्य)
विषय—छह द्रव्यों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२२ ; क भण्डार ।

४६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ३१८ । ड भण्डार ।

४६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १६३३ । वे० सं० ३१६ । ड भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी अर्थ दिया हुआ है ।

४६५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८७६ कार्तिक बुदी १४ । वे० सं० ५६१ । च
भण्डार ।

विशेष—पं० मदासुख कामलीवाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की है ।

४६६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० १६४ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी अर्थ दिया गया है ।

४६७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३७ । ले० काल × । वे० सं० २४० । क भण्डार ।

४६८. द्रव्यसंग्रह भाषा—बाबा दुलीचन्द । पत्र सं० ३८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—
छह द्रव्यों का वर्णन । २० काल सं० १६६६ आसोज सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२० । क भण्डार ।

विशेष—जयचन्द छाबड़ा की हिन्दी टीका के अनुसार बाबा दुलीचन्द ने इसकी दिल्ली में भाषा लिखी थी ।

४६९. द्रव्यस्वरूप वर्णन । पत्र सं० ६ से १६ तक । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—छह
द्रव्यों का लक्षण वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १६०५ माघन बुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० २१३७ । ट भण्डार ।

४७०. धवल..... । पत्र सं० २८ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—जैनागम । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५० । क भण्डार ।

४७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ से १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५१ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका भी दी हुई है ।

४७२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३५२ । क भण्डार ।

४७३. नन्दीसूत्र..... । पत्र सं० = । आ० १२×४½ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । २०
काल × । ले० काल सं० १५६० । वे० सं० १८४८ । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—सं० १५६० वर्षे श्री खरतरगच्छे त्रिजयराज्ये श्री जिनचन्द्र सूरि पं० नयसमुद्रगणि नामा देव ?
तस्नु शिष्ये वी. गुणलाभ गणिभि लिखेत् ।

४७४. नवतत्त्वगाथा..... । पत्र सं० ३ । आ० ११½×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—६ तत्त्वों
का वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १८१३ मंगसिर बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—पं० महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

४७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वे० सं० १०५० । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ से ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७६ । च भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

४७७. नवतत्त्व प्रकरण—लक्ष्मीवल्लभ । पत्र सं० १४ । आ० ६½×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
६ तत्त्वों का वर्णन । २० काल सं० १७४७ । ले० काल सं० १८०६ । वे० सं० । ट भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का सम्मिश्रण है । राघवचन्द शक्तावत ने शक्तिसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की ।

४७८. नवतत्त्ववर्णन.....। पत्र सं० ५। आ० ८३×४३ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—जीव अजीव आदि ९ तत्त्वों का वर्णन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६०१। च भण्डार।

विशेष—जीव अजीव, पुण्य पाप, तथा आश्रव तत्त्व का ही वर्णन है।

४७९. नवतत्त्व वचनिका—पन्नालाल चौधरी। पत्र सं० ५१। आ० १२×५ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—९ तत्त्वों का वर्णन। २० काल सं० १९३४ आषाढ सुदी ११। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६४। व भण्डार।

४८०. नवतत्त्वविचार.....। पत्र सं० ६ से २४। आ० १×४ इञ्च। भाषा हिन्दी। विषय—९ तत्त्वों का वर्णन। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २५६। ज भण्डार।

४८१. निजस्मृति—जयतिलक। पत्र सं० ५ से १३। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३१। ट भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इत्यागमिकाचार्यश्रीजयतिलकरचितं निजस्मृत्ये बंध-स्वामित्वाख्यं प्रकरणमेतच्चतुर्थः। संपूर्णोऽयं ग्रन्थः। ग्रन्थाग्रन्थ ५६० प्रमाणं। केतरांतरां श्री तपोगच्छीय पंडित रत्नाकर पंडित श्री श्री श्री १०८ श्री श्री श्री मौभाग्य-विजयगणि तच्छिष्य मु० सिधविजयेन। पं० धन्नालाल ऋषभचन्द्र की पुस्तक है।

४८२. नियमसार—आ० कुन्दकुन्द। पत्र सं० १००। आ० १०३×५३ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३। घ भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४८३. नियमसार टीका—पद्मप्रभमलधारिदेव। पत्र सं० २२२। आ० १२३×७ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल सं० १८३८ माघ बुदी ९। पूर्ण। वे० सं० ३८०। क भण्डार।

४८४. प्रति सं० २। पत्र सं० ८७। ले० काल सं० १८६६। वे० सं० ३७१। ज भण्डार।

४८५. निरयावलीसूत्र.....। पत्र सं० १३ से ३६। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—आगम। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८६। घ भण्डार।

४८६. पञ्चपरावर्तन.....। पत्र सं० ३। आ० ११×५३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८३८। अ भण्डार।

विशेष—जीवों के द्रव्य क्षेत्र आदि पञ्चपरिवर्तनों का वर्णन है।

४८७. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ४१३। क भण्डार।

४८८. पञ्चसंग्रह—आ० नेमिचन्द्र। पत्र सं० २६ से २४८। आ० १२×५३ इञ्च। भाषा—प्राकृत संस्कृत। विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४००। ड भण्डार।

४८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८१२ कार्तिक बुदी ८ । वे० सं० १३८ । अ
भण्डार ।

विशेष—उदयपुर नगर में रत्नरुचिगणि ने प्रतिलिपि की थी । कहीं कहीं हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

४८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०७ । ले० काल × । वे० सं० ५०६ । अ भण्डार ।

४८१. पञ्चसंग्रहवृत्ति—अभयचन्द्र । पत्र सं० १२० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
सिद्धांत । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८ । अ भण्डार ।

विशेष—नवम अधिकार तक पूर्ण । २४-२५वां पत्र नवीन लिखा हुआ है ।

४८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०६ से २५० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०६ अ भण्डार ।

विशेष—केवल जीव काण्ड है ।

४८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५२ से ६१५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११० । अ भण्डार ।

विशेष—कर्मकाण्ड नवमां अधिकार तक । वृत्ति—रचना पार्श्वनाथ मन्दिर चित्रकूट में साधु तांगा के सह-
योग से की थी ।

४८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५८६ से ७६३ तक । ले० काल सं० १७२३ फागुन सुदी २ । अपूर्ण । वे०
सं० ७८१ । अ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती में पार्श्वनाथ मन्दिर में श्रीरंगशाह (श्रीरंगजेव) के शासनकाल में हाडा वंशोत्पन्न राज
श्री भात्रसिंह के राज्यकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

४८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४३० । ले० काल सं० १८६८ माघ बुदी २ । वे० सं० १२७ । क भण्डार

४८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६२४ । ले० काल सं० १६५० वैशाख सुदी ३ । वे० सं० १३१ । क भण्डार

४८७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २ से २०८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र भी नहीं है ।

४८८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७४ से २१४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५ । च भण्डार ।

४८६. पंचसंग्रह टीका—अमितगति । पत्र सं० ११४ । आ० ११×५^१ इञ्च । भाषा संस्कृत ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १०७३ (शक) । ले० काल सं० १८०७ । पूर्ण । वे० सं० २१४ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ संस्कृत गद्य और पद्य में लिखा हुआ है । ग्रन्थकार का परिचय निम्न प्रकार है ।

श्रीमाधुराणामनघद्युतीनां संघोऽभवद्वृत्तविमूषितानाम् ।

हारो मीणानामवतापहारी सूत्रानुसारी शशिरश्मिशुभ्रः ॥ १ ॥

माधवसेनगणीगणीयः शुद्धतमोऽजनि तत्र जनीयः ।
 भूयसि सत्यवतीव शशांकः श्रीमति सिधुपतावकनंकः ॥ २ ॥
 शिष्यस्तस्य महात्मनोऽमितगतिमोक्षाधिनामग्रणी ।
 रेतच्छास्त्रमशेषकर्मसमितिप्रख्यापनापाकृत ॥
 त्रोरस्येव जिनेश्वरस्य गणभृद्भव्योपकारोद्यतो ।
 दुर्वारस्मरदंतिदारणहरिः श्रीगौतमोऽनुत्तमः ॥ ३ ॥
 यदत्र सिद्धान्त विरोधिवद्ग्राह्यं निराकृत्यतदेतदार्यैः ।
 शृण्वन्ति लोका ह्युपकारियन्नावं निराकृत्य फलं पवित्रं ॥ ४ ॥
 अनश्वरं केवलमर्चनीयं यावस्थिरं तिष्ठतिमुक्तपन्तौ ।
 तावद्धरायामिदमत्रशास्त्रं स्थेयान्छुभं कर्मनिरामकारि ॥
 त्रिसप्तत्यधिकेन्दनां सहस्रे शकविद्विषः ।
 मसूतिकापुरे जातमिदं शास्त्रं मनोरमं ॥ ५ ॥
 इत्यमितगतिकृता नैणमार तपणच्छे ।

५००. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१५ । ले० काल सं० १७६६ माघ बुदी १ । वै० सं० १८७ । अ भण्डार
 ५०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८० । ले० काल सं० १७२४ । वै० सं० २१६ । अ भण्डार ।
 विशेष—जीर्ण प्रति है ।

५०२. पञ्चसंग्रह टीका—। पत्र सं० २५ । आ० १२×५१ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।
 २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ३६६ । ड भण्डार ।

५०३. पंचास्तिकाय—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० ५३ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय—
 सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १७०३ । पूर्ण । वै० सं० १०३ । अ भण्डार ।

५०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १६४० । वै० सं० ४०४ । अ भण्डार ।

५०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । वै० सं० ४०२ । क भण्डार ।

५०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६६ । वै० सं० ४०३ । क भण्डार ।

५०७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वै० सं० ३२ । क भण्डार

विशेष—द्वितीय स्कन्ध तक है । गाथाओं पर टीका भी दी है ।

५०८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वै० सं० १८७ । ज भण्डार ।

५०९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १७२४ आषाढ बुदी ५ । वै० सं० १६६ । अ भण्डार ।

विशेष—अंबावती में प्रतिलिपि हुई थी ।

५१०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १९६ । छ भण्डार ।

५११. पंचास्तिकाय टीका—अमृतचन्द्र सूरि । पत्र सं० १२४ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×७ इञ्च । भाषा संस्कृत
विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १९३८ श्रावण बुदी १४ । पूर्णा । वे० सं० ४०५ । क भण्डार ।

५१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १४८७ वैशाख सुदी १० । वे० सं० ४०२ ।
छ भण्डार ।

५१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७९ । ले० काल × । वे० सं० २०२ । च भण्डार ।

५१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १९५६ । वे० सं० २०३ । च भण्डार ।

५१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १५४१ कार्तिक बुदी १४ । वे० सं० । च भण्डार ।

प्रशस्ति—चन्द्रपुरी वास्तव्ये खण्डेलवालान्वये सा, फहरौ भार्या धमला तयोः पृथधानु तस्य भार्या धनमिरि
नाभ्यां पुत्र सा, होलु भार्या मुनखत तस्य रामाद मा, हंमराज तस्य आता देवपति एवै पुस्तक पंचास्तिकायात्रिधे लिखात्तां
कुलभूषणस्य कर्मक्षयार्थं दत्तं ।

५१६. पञ्चास्तिकाय भाषा—पं० हीरानन्द । पत्र सं० ६३ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १७०० ज्येष्ठ सुदी ७ । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ४०७ । क भण्डार ।

विशेष—जहानाबाद में बादशाह जहांगीर के समय में प्रतिलिपि हुई ।

५१७. पञ्चास्तिकाय भाषा—पांडे हेमराज । पत्र सं० १७५ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ४०६ । क भण्डार ।

५१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३५ । ले० काल सं० १९४७ । वे० सं० ४०८ । क भण्डार ।

५१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४९ । ले० काल × । वे० सं० ४०३ । छ भण्डार ।

५२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५० । ले० काल सं० १९५४ । वे० सं० ६२० । च भण्डार ।

५२१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४४ । ले० काल सं० १९३६ आषाढ सुदी ४ । वे० सं० ६२१ । च भण्डार ।

५२२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३६ । २० काल × । वे० सं० ६२२ च भण्डार ।

५२३. पञ्चास्तिकाय भाषा—बुधजन । पत्र सं० ६११ । आ० ११×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १८९२ । ले० काल × । वे० सं० ७१ । झ भण्डार ।

५२४. पुण्यतत्त्वचर्चा— । पत्र सं० ६ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त ।
२० काल सं० १८८१ । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २०४१ । ट भण्डार ।

५२५. बंध उदय सत्ता चौपई—श्रीलाल । पत्र सं० ६ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १८८१ । ले० काल × । वे० सं० १९०५ । पूर्णा । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ ।

विमल जिनेश्वरप्रणमुं पाय, मुनिमुन्नत कूं सीस नवाय ।

सतगुरु सारद हिरदै धरूं, बंध उदय सत्ता उचरूं ॥ १ ॥

अन्तिम—बंध उदै सत्ता बखारौ, ग्रन्थ त्रिभंगीसार तै जाणि ।

सुद्ध असुद्ध सुधा रसु नारा, अल्प बुद्धि में कहूं बखारण ॥ १२ ॥

साहिव राम मुभकूं बुध दई, नगर पचेवर मांही लही ।

मुभ उतपत डगी कै माहि, श्रावक कुल गंगवान कहाहि ॥ १३ ॥

काल पाय कै पंडित भयो, नैराचन्द कै शिष्य म थयो ।

नगर पचेवर माहि गयो, आदिनाथ मुभ दर्शण दियो ॥ १४ ॥

पापकर्म तै विछत भयो, लाव जा कर रहतो भयो ।

शीतल जिनकूं करि परिणाम, स्वपर कारण तै कहै बखारण ॥ १५ ॥

संवत् अठरासै का कहा, अवर अक्यासी ऊपर लहा ।

पढत सुगत अघ खय होम, पुन्य बंध बुधि बहु होय ॥ १६ ॥

॥ इति श्री उदै बंध सत्ता समाप्ताः ॥

इससे आगे चौबीस ठाण की चौपाई है—

प्रारम्भ—देव धर्म गुरु ग्रन्थ पद बंदौ मन वच काय ।

गुणठाणनि परि ग्रन्थ की रचना कहूं बगाय ॥

अन्तिम—इह विधि जस गुणस्थान की रचना वरणी सार ।

भूल चूक जो होय तो, बुधिजन लेहु मुधार ।

छेठि मंगसिर कृष्ण की लावा नगर मभार ।

उगरीसै अरु पांच के साल जाय श्रीलाल ॥

॥ इति सम्पूर्ण ॥

५०६. भगवतीसूत्र—पत्र सं० ५० । आ० ११×५^३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आगम । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२०७ । अ भण्डार ।

५२७. भावत्रिभंगी—नेमिचन्द्रचार्य । पत्र सं० ५१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र दुबारा लिखा गया है ।

५२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १=११ माव मुदी ३ । वे० सं० ५६० । क भण्डार ।

विशेष—पं० रूपचन्द ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर में की थी ।

५२९. भावदीपिका भाषा—। पत्र सं० २१= । आ० १२=७^३ । भाषा—हिन्दी । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६७ । क भण्डार ।

५३०. मरणकरंडिका..... । पत्र सं० ८ । आ० ९^३×४^३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८ ।

विशेष—आचार्य शिवकोटि की आराधना पर अमितिगति का टिप्पण है ।

५३१. मार्गणा व गुणस्थान वर्णन—। पत्र सं० ३-५५ । आ० १४×५ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४२ । ट भण्डार ।

५३२. मार्गणा समास—। पत्र सं० ३ मे १८ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१४६ । ट भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका तथा हिन्दी अर्थ सहित है ।

५३३. रायपसेणी सूत्र—। पत्र सं० १५३ । आ० १०×४^१/_४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-आगम । २० काल × । ले० काल सं० १७६७ आसोज मुदी १० । वे० सं० २०३२ । ट भण्डार ।

विशेष—गुजराती मिश्रित हिन्दी टीका सहित है । सेमसागर के शिष्य लालसागर उनके शिष्य सकलसागर ने स्वपठनार्थ टीका की । गाथाओं के ऊपर छाया दी हुई है ।

५३४. लब्धिसार—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३२१ । च भण्डार ।

विशेष—५७ मे आगे पत्र नहीं है । संस्कृत टीका सहित है ।

५३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३२२ । च भण्डार ।

५३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० १६०० । ट भण्डार ।

५३७. लब्धिसार टीका—। पत्र सं० १५७ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १६५६ । पूर्ण । वे० सं० ६३८ । क भण्डार ।

५३८. लब्धिसार भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० १८० । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल १६४६ । पूर्ण । वे० सं० ६३६ । क भण्डार ।

५३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६३ । ले० काल × । वे० सं० ७५ । ग भण्डार ।

५४०. लब्धिसार क्षणसासार भाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० १०० । आ० १५×६^१/_४ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६ । ग भण्डार ।

५४१. लब्धिसार क्षणसासार संहृष्टि—पं० टोडरमल । पत्र सं० ४६ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-सिद्धान्त । २० काल सं० १८८६ जैत बुदी ७ । वे० सं० ७७ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

५४२. बिपाकसूत्र—। पत्र सं० ३ मे ३५ । आ० १२×४^३/_४ इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय-आगम । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१३१ । ट भण्डार ।

५४३. विशेषसत्तात्रिभंगी—आ० नेमिचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० ११×४^३/_४ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४३ । अ भण्डार ।

५४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ३४३ । अ भण्डार ।

५४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १००२ आसोज बुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० = ५४ ।

अ भण्डार ।

विशेष—३० मे ३४ तक पत्र नहीं हैं । जयपुर में प्रतिनिधि हुई ।

५४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० = ५५ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल आश्रव त्रिभङ्गी ही है ।

५४७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६० । अ भण्डार ।

विशेष—दो तीन प्रतियों का सम्मिश्रण है ।

५४८. षट्श्लेष्या वर्णन ... पत्र सं० १ । आ० १०×४६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सिद्धान्त ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६० । अ भण्डार ।

विशेष—षट् श्लेष्याओं पर दोहे हैं ।

५४९. षष्ठ्याधिक शतक टीका—राजहंसोपाध्याय । पत्र सं० ३१ । आ० १०^६×५ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १५७६ भाद्रवा । ले० काल सं० १५७६ अग्रहन बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १३५ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

श्रीमज्जडकढाभिखो गोत्रे गौत्रावतंसिके, नुश्रावकशिरोरत्न देल्हाख्यो ममभूत्पुरा ॥ १ ॥

स्वजन—जलधिचन्द्रस्तत्तनूजो वितन्द्रो, विबुधकुमुदचन्द्रः सर्वविद्यासमुद्रः ।

जयति प्रकृतिभद्रः प्राज्यराज्ये समुद्रः, खल हरिणा हरीन्द्रो रायचन्द्रो महीन्द्रः ॥ २ ॥

तदंगजनमाजिनजैनभक्तः परोपकारव्यसनैकशक्तः सदा सदाचारविचारविजः मीहगराज मुकुतीकृतजः ॥ ३ ॥

श्रीमाल—भूपालकुलप्रदीप, समेदिनी मल्लइ प्रावनीय । नंदादमंघ गुरुमादधान, तत्सुनुरस्युनगुगप्रधान ॥ ४ ॥

भार्यावद्यगुगौरार्या करमाद्रपतिव्रता, कमलत्र हरेस्तस्य याम्बामागे विराजते ॥ ५ ॥

तन्पुत्रोभयचन्द्रोस्ति भव्यश्चन्द्र इवापरः निर्भयो निष्कलंकश्च तिःकुुरंगः कलानिधिः ।

तस्याभ्यर्थनया नया विरचिता श्रीराजहंसाभिघोपाध्यायै यतपष्ठिकस्य विमलावृत्तिः शिशूनां हिता ।

वर्षे नन्द मुनिपुत्रं सहिते सावाच्यमाना बुधै । मामे भाद्रपदे सिकंदरपुरे नंदाच्चिरं भूतले ॥ ७ ॥

स्वच्छे खरतरगच्छे श्रीमाज्जनदत्तमूरिसंताने । जिनतिलकमूरिसुगुरो शिष्य श्रीहर्षतिलकोऽभूत् ॥ ८ ॥

तच्छिष्येन कृतेयं पाठकमुख्येन राजहंसेन षष्ठ्याधिकशतप्रकरणटीका नंदाच्चिरं मह्या ॥ ९ ॥

इति षष्ठ्याधिकशतप्रकरणस्य टीका कृता श्री राजहंसोपाध्यायैः ॥ समयहंसेन लि० ॥

संवत् १५७६ समये अग्रहण वदि ६ रविवामरे लेखक श्री भिलारीदामेन लेखि ।

५५०. श्लोकवार्तिक—आ० विद्यानन्दि । पत्र सं० १५५५ । आ० १२×७^६ । भा० संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल १२४४ प्रावण बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ७०७ । क भण्डार ।

विशेष—यह तत्त्वार्थसूत्र की बृहद् टीका है। पन्नालाल चौधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी। ग्रन्थ तीन वेष्टनों में बंधा हुआ है। हिन्दी अर्थ सहित है।

५५१. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० ७८। अ भण्डार।

तत्त्वार्थसूत्र के प्रथम अध्याय की प्रथम सूत्र की टीका है।

५५२. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६५। अ भण्डार।

५५३. संग्रहणीसूत्र.....। पत्र सं० ३ से २८। आ० १०×४ इञ्च। भाषा प्राकृत। विषय—आगम।
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०२। ख भण्डार।

विशेष—पत्र सं० ६, ११, १६ से २०, २३ से २५ नहीं है। प्रति सचित्र है। चित्र सुन्दर एवं दर्शनीय हैं। ४, २१ और २८वें पत्र को छोड़कर सभी पत्रों पर चित्र हैं।

५५४. प्रति सं० २। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० २३३। छ भण्डार। ३११ गाथायें हैं।

५५५. संग्रहणी बालावबोध—शिवनिधानगणि। पत्र सं० ७ से ५३। आ० १०^१/_२×४^१/_२। भाषा—
प्राकृत—हिन्दी। विषय—आगम। २० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १००१। अ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

५५६. सत्ताद्वार.....। पत्र सं० ३ से ७ तक। आ० ८^३/_४×४^३/_४ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—सिद्धान्त
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६१। च भण्डार।

५५७. सत्तात्रिभंगी—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० २ से ४०। आ० १२×६ इञ्च। भाषा प्राकृत।
विषय—सिद्धान्त। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८४२। ट भण्डार।

५५८. सर्वार्थसिद्धि—वृज्यपाद। पत्र सं० ११८। आ० १३×६ इञ्च। भाषा संस्कृत। विषय—सिद्धान्त
२० काल ×। ले० काल सं० १८७६। पूर्ण। वे० सं० ११२। अ भण्डार।

५५९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३६८। ले० काल सं० १६४४। वे० सं० ७६८। क भण्डार।

५६०. प्रति सं० ३। पत्र सं०.....। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८०७। छ भण्डार।

५६१. प्रति सं० ४। पत्र सं० १२२। ले० काल ×। वे० सं० ३७७। च भण्डार।

५६२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७२। ले० काल ×। वे० सं० ३७८। च भण्डार।

विशेष—चतुर्थ अध्याय तक ही है।

५६३. प्रति सं० ६। पत्र सं० १-१३३, २००-२६३। ले० काल सं० १६२५। माघ सुदी ५। वे०
सं० ३७६। च भण्डार।

निम्नकाल और दिये गये हैं—

सं० १६६३ माघ शुक्ला ७-६ कालाढेरा में श्रीनारायण ने प्रतिलिपि की थी। सं० १७१७ कार्तिक सुदी
१३ ब्रह्म नाथू ने भेंट में दिया था।

५६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८२ । ले० काल × । वे० सं० ३८० । च भण्डार ।

५६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १५८ । ले० काल × । वे० सं० ८४ । छ भण्डार ।

५६६. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १३४ । ले० काल सं० १८८३ ज्येष्ठ बुदी २ । वे० सं० ८५ । छ भण्डार ।

५६७. प्रति सं० १० । पत्र सं० २७४ । ले० काल सं० १७०४ बैशाख बुदी ९ । वे० सं० २१९ । अ
भण्डार ।

५६८. सर्वार्थसिद्धि भाषा—जयचन्द्र छात्राडा । पत्र सं० ६४३ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा हिन्दी
विषय—सिद्धान्त । २० काल सं० १८६१ चैत सुदी ५ । ले० काल सं० १९२९ कार्तिक सुदी ९ । पूर्ण । वे० सं० ७६९
क भण्डार ।

५६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१८ । ले० काल × । वे० सं० ८०८ । छ भण्डार ।

५७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४६७ । ले० काल सं० १९१७ । वे० सं० ७०५ । च भण्डार ।

५७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७० । ले० काल सं० १८८३ कार्तिक बुदी २ । वे० सं० १६७ । अ
भण्डार ।

५७२. सिद्धान्तार्थसार—पं० रङ्गभू । पत्र सं० ९९ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा अंग्रेज़ी । विषय—
सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल सं० १९५६ । पूर्ण । वे० सं० ७९९ । क भण्डार ।

विशेष—यह प्रति सं० १५९३ वाली प्रति से लिखी गई है ।

५७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९६ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ८०० । च भण्डार ।

विशेष—यह प्रति भी सं० १५९३ वाली प्रति से ही लिखी गई है ।

५७४. सिद्धान्तसार भाषा—। पत्र सं० ७५ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—सिद्धान्त ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७१६ । च भण्डार ।

५७५. सिद्धान्तलेशसंग्रह..... । पत्र सं० ९४ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा हिन्दी । विषय—सिद्धान्त ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४४८ । अ भण्डार ।

विशेष—वैदिक साहित्य है । दो प्रतियों का सम्मिश्रण है ।

५७६. सिद्धान्तसार दीपक—सकलकीर्ति । पत्र सं० २२२ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा संस्कृत ।
विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६१ ।

५७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८४ । ले० काल सं० १८२६ पौष बुदी ५ । वे० सं० १९८ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० चोखचन्द के शिष्य पं० किशनदास के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

५७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५५ । ले० काल सं० १७९२ । वे० सं० १३२ । अ भण्डार ।

५७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३६ । ले० काल सं० १८३२ । वे० सं० ८०२ । क भण्डार ।

विशेष—सन्तोपराम पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।

५८०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७८ । ले० काल सं० १८१३ । बैशाख सुदी ८ । वे० सं० १२६ । अ
भण्डार ।

विशेष—शाहजहानाबाद नगर में लाला शीलापति ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी ।

५८१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७३ । ले० काल सं० १८२७ बैशाख बुदी १२ । वे० सं० २६२ । ज
भण्डार ।

विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हैं ।

५८२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७८-१२४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५२ । छ भण्डार ।

५८३. सिद्धान्तसारदीपक..... पत्र सं० ६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४ । ख भण्डार ।

विशेष—केवल ज्योतिषलोक वर्णन वाला १४वां अधिकार है ।

५८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८४ । ले० काल × । वे० सं० २२५ । ख भण्डार ।

५८५. सिद्धान्तसार भाषा—नथमल बिलाला । पत्र सं० ८७ । आ० १३ई×५ इञ्च । भाषा हिन्दी ।
विषय-सिद्धान्त । २० काल सं० १८४५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२४ । घ भण्डार ।

५८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५० । ले० काल × । वे० सं० ८५० । ङ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल 'ङ' भण्डार की प्रति में है ।

५८७. सिद्धान्तसारसंग्रह—आ० नरेन्द्रदेव । पत्र सं० १४ । आ० १२×५ई इञ्च । भाषा संस्कृत ।
विषय-सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६५ । अ भण्डार ।

विशेष—तृतीय अधिकार तक पूर्ण तथा चतुर्थ अधिकार अपूर्ण है ।

५८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०० । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० १६४ । अ भण्डार ।

५८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १८३० मंगसिर बुदी ४ । वे० सं० १५० । ज भण्डार

विशेष—पं० रामचन्द्र ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

५९०. सूत्रकृतांग..... पत्र सं० १६ से ५६ । आ० १०×४ई इञ्च । भाषा प्राकृत । विषय-आगम ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १५ पत्र नहीं हैं । प्रति संस्कृत टीका सहित है । बहुत से पत्र दीमकों ने खा लिये हैं ।
बीच में मूल गथायें हैं तथा ऊपर नीचे टीका है । इति श्री सूत्रकृतांगदीपिका षोडशमाध्याय ।

विषय-धर्म एवं आचार शास्त्र

५६१. अट्टाईसमूलगुणवर्णन पत्र सं० १ । आ० १०^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
मुनिधर्म वर्णन । २० काल × । पूर्ण । वेष्टन सं० २०३० । अ भण्डार ।

५६२. अनगारधर्मामृत—पं० आशाधर । पत्र सं० ३७७ । आ० ११^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—मुनिधर्म वर्णन । २० काल सं० १३०० । ले० काल सं० १७७७ माघ सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ६३१ । अ
भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वांरज टीका सहित है । बोंली नगर में श्रीमहाराजा कुशलसिंहजी के शासनकाल में माहजी
रामचन्द्रजी ने प्रतिलिपि करवायी थी । सं० १८२६ में पं० सुखराम के शिष्य पं० केशव ने ग्रन्थका संग्रहण किया था ।
६२ मे १६१ तक नवीन पत्र है ।

५६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२३ । ले० काल × । वे० सं० १८ । ग भण्डार ।

५६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७७ । ले० काल सं० १६५३ कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० १६ ।
ग भण्डार ।

५६५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३७ । ले० काल × । वे० सं० ४६७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । पं० माधव ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ का दूसरा नाम 'धर्माभूतमूर्ति
संग्रह' भी है ।

५६६. अनुभवप्रकाश—दीपचन्द्र कासलीवाल । पत्र सं० ४४० । आकार १२×५^३ इञ्च । भाषा—
हिन्दी (राजस्थानी) गद्य । विषय—धर्म । २० काल सं० १७८१ पौष सुदी ५ । ले० काल सं० १८१४ । अपूर्ण । वे० सं०
१ । घ भण्डार ।

५६७ प्रति सं० २ । पत्र सं० २ मे ७४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१ । छ भण्डार ।

५६८. अनुभवानन्द पत्र सं० ५६ । आ० १३^३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० १३ । छ भण्डार ।

अमृतधर्मरसकाव्य—गुणचन्द्रदेव । पत्र सं० ३ मे ६६ । आ० १०^३×४^३ भाषा—संस्कृत । विषय—
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६८५ पौष सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० २३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के दो पत्र नहीं हैं । अन्तिम पुष्पिका:—इति श्री गुणचन्द्रदेवविरचितअमृतधर्मरसकाव्य
व्यावर्गनं श्रावकव्रतनिरूपणं चतुर्विंशति प्रकरण संपूर्ण । प्रगति निम्न प्रकार है—

पट्टे श्री कुंदकुंदाचार्ये तत्पट्टे श्री सहस्रकीर्ति तत्पट्टे त्रिभुवनकीर्तिदेवभट्टारक तत्पट्टे श्री पद्मनंददेव
भट्टारक तत्पट्टे श्री जसकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री ललितकीर्तिदेव तत्पट्टे श्री गुरुग्नकीर्ति तत्पट्टे श्री ५ गुणचन्द्रदेव भट्टारक

विरचित महाग्रन्थ कर्मक्षयार्थ । लोहटमुत्त पंडितश्री सावलदास पठनार्थ । अन्तिसीध्यासावपट्टप्रकाशन धर्मउपदेशकनार्थ । चन्द्रप्रभ चैत्यालय माघ मासे कृष्णशके पूष्यनक्षत्रे पार्थिवि दिने १ शुक्रवारे सं० १६८५ वर्षे वैरागरग्रामे चौधरी चन्द्र-मेनिमहाये तदमुत्त चतुर्भुज जगमनि परसरामु खेमराज भ्राता पंच सहायिका । शुभं भवतु ।

६००. आगमविलास—द्यानतराय । पत्र सं० ७३ । आ० १०१×६१ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) विषय—धर्म । २० काल सं० १७८३ । ले० काल सं० १६२८ । पूर्ण । वे० सं० ४२ । क भण्डार ।

विशेष—रचना संवत् मम्बन्धी पद्य—“गुरा वसु शैल सितंश”

ग्रन्थ प्रशस्ति के अनुसार द्यानतराय के पुत्र ने उक्त ग्रन्थ की मूल प्रति को भाङ्गू को बेचा तथा उसके पान ने वह मूल प्रति जगतराय के हाथ में आयी । ग्रन्थ रचना द्यानतराय ने प्रारम्भ की थी किन्तु बीच ही में स्वर्गवास होजाने के कारण जगतराय ने संवत् १७८४ में मैनपुरी में ग्रन्थ को पूर्ण किया । आगम विलास में कवि की विविध रचनाओं का संग्रह है ।

६०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६५४ । वे० सं० ४३ । क भण्डार ।

६०२. आचारसार—धीरनंदि । पत्र सं० ४६ । आ० १२×५१ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वे० सं० १२७ । अ भण्डार ।

६०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ४४ । क भण्डार ।

६०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४ । घ भण्डार ।

६०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२ से ७२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४८५ । ज भण्डार ।

६०६. आचारसार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० २०३ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचारशास्त्र । २० काल सं० १६३४ वैशाख बुदी ६ । ले० काल × । वे० सं० ४५ । क भण्डार ।

६०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६२ । ले० काल × । वे० सं० ४६ । क भण्डार ।

६०८. आराधनासार—देवसेन । पत्र सं० २० । आ० ११×४१ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल—१०वीं शताब्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७० । अ भण्डार ।

६०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल × । वे० सं० २२० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है

६१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ३३७ । अ भण्डार

६११. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २८४ । ख भण्डार ।

६१२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० २१५१ । ट भण्डार ।

६१३. आराधनासार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६३१ चैत्र बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति का अंतिम पत्र नहीं है ।

६१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० ६६ । क भण्डार ।

६१५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५२ । ले० काल × । वे० सं० ६६ । क भण्डार ।

६१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ७५ । क भण्डार ।

विशेष—गाथायें भी हैं ।

६१७. आराधनासार भाषा..... । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२१ । ट भण्डार ।

६१८. आराधनासार वचनिका—बाबा तुलीचन्द । पत्र सं० २२ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा—
हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । २० काल २०वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३ । छ भण्डार ।

६१९. आराधनासार वृत्ति—पं० आशाधर । पत्र सं० ८ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—धर्म । २० काल १३वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १० । ख भण्डार ।

विशेष—मुनि नयचन्द्र के लिए ग्रन्थरचना की थी । टीका का नाम आराधनासार दर्पण है ।

६२०. आहार के छियालीस दोष वर्णन—भैया भगवतीदास । पत्र सं० २ । आ० ११×७½ इञ्च ।
भाषा—हिन्दी । विषय—आचारशास्त्र । २० काल सं० १७५० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०४ । झ भण्डार ।

६२१. उपदेशरत्नमाला—धर्मदासस्मिणी । पत्र सं० २० । आ० १०×४½ । भाषा—प्राकृत । विषय—
धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १७५५ कार्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ८२८ । अ भण्डार ।

६२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३४८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

६२३. उपदेशरत्नमाला—सकलभूषण । पत्र सं० १२६ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—धर्म । २० काल सं० १६२७ श्रावण सुदी ६ । ले० काल सं० १७६७ श्रावण सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ११ ।
अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर में श्री गोपीराम बिलाला ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

६२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३६ । ले० काल × । वे० सं० २७ । अ भण्डार ।

६२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १७२० श्रावण सुदी ४ । वे० सं० २८० । अ
भण्डार ।

६२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६१ । ले० काल सं० १६८८ कार्तिक सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० ८५०
अ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० ६० से ६३ तथा १०८ नहीं है । प्रशस्ति में निम्नप्रकार लिखा है—“जैरपुर की समस्त
श्रावणगी ज्ञान कल्याण निर्मित इस शास्त्र को श्री पार्वतीनाथ निमित्त भण्डार में रखवाया ।”

६२७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५ से १२३ । ले० काल × । वे० सं० ११७५ । अ भण्डार ।

६२८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३८ । ले० काल × । वे० सं० ७७ । क भण्डार ।

६२९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२८ । ले० काल × । वे० सं० ८२ । ड भण्डार ।

६३०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३६ से ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । ड भण्डार ।

६३१. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६४ से १४५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०६ । छ भण्डार ।

६३२. प्रति सं० १० । पत्र सं० ७२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

६३३. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १६७ । ले० काल सं० १७२७ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० ३१ । व्य भण्डार ।

६३४. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १८१ । ले० काल × । वे० सं० २७० । व्य भण्डार ।

६३५. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १६५ । ले० काल सं० १७१८ फागुण सुदी १२ । वे० सं० ४५२ ।

अ भण्डार ।

६३६. उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला—भंडारी नेमिचन्द्र । पत्र सं० १६ । आ० १२×७३ इञ्च । भाषा—
प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६४३ आषाढ सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

६३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७६ । क भण्डार ।

६३८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८३४ । वे० सं० १२५ । घ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

६३९. उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला भाषा—भागचन्द्र । पत्र सं० २८ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—
हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६१२ आषाढ बुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ को सं० १६६७ में कालूराम पोल्याका ने खरीदा था । यह ग्रन्थ षट्कर्मोपदेशमाला का
हिन्दी अनुवाद है ।

६४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १६२६ ज्येष्ठ सुदी १३ । वे० सं० ८० । क भण्डार ।

६४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । क भण्डार ।

६४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १६४३ सावण बुदी ३ । वे० सं० ८२ । क भण्डार ।

६४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । वे० सं० ८३ । क भण्डार ।

६४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ८४ । क भण्डार ।

६४५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० ८७ । अपूर्ण । क भण्डार ।

६४६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५८ । ले० काल × । वे० सं० ८४ । ड भण्डार ।

६४७. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० ८५ । ड भण्डार ।

६४८. उपदेशरत्नमालाभाषा—बाबा तुलीचन्द्र । पत्र सं० २० । आ० १०^३×१७ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धर्म । २० काल सं० १६६४ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ८५ । क भण्डार ।

६४६. उपदेश रत्नमाला भाषा—देवीसिंह छावड़ा । पत्र सं० २० । आ० ११३/७३ इच्छ । भाषा—हिन्दी पद्य । २० काल सं० १७६६ भाद्रवा बुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८६ । क भण्डार ।

विशेष—नरवर नगर में ग्रन्थ रचना की गई थी ।

६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वै० सं० ८८ । क भण्डार ।

६४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वै० सं० ८६ । क भण्डार ।

६४२. उपसर्गार्थ विवरण—बुपाचार्य । पत्र सं० १ । आ० १०३/४३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३६० । अ भण्डार ।

६४३. उपासकाचार दोहा—आचार्य लक्ष्मीचन्द्र । पत्र सं० २७ । आ० ११/५ इच्छ । भाषा—अवभ्रंश । विषय—श्रावक धर्म वर्गन । २० काल × । ले० काल सं० १५५५ कार्तिक मुदी १५ । पूर्ण । वै० सं० २२३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ का नाम श्रावकाचार भी है । पं० लक्ष्मण के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । विस्तृत प्रशस्ति निम्न प्रकार है:—

स्वस्ति संवत् १५५५ वर्षे कार्तिक मुदी १५ मोमे श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ० विद्यानंदी पट्टे भ० मल्लिमूषण तच्छिष्य पंडित लक्ष्मण पठनार्थ दूहा श्रावकाचार शास्त्रं समाप्तं । ग्रंथ सं० २७० । दोहों की संख्या २२४ है ।

६४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वै० सं० २४८ । अ भण्डार ।

६४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वै० सं० १७ । अ भण्डार ।

६४६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वै० सं० २६४ । अ भण्डार ।

६४७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७७ । ले० काल × । वै० सं० ६६५ । क भण्डार ।

६४८. उपासकाचार..... । पत्र सं० ६५ । आ० १३३/६ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक धर्म वर्गन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण (१५ परिच्छेद तक) वै० सं० ४२ । अ भण्डार ।

६४९. उपासकाध्ययन..... । पत्र सं० ११४-३४१ । आ० ११३/५ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल । अपूर्ण । वै० सं० २०६ । अ भण्डार ।

६६०. ऋद्धिशतक—स्वरूपचन्द्र बिलाला । पत्र संख्या ६ । आ० १०३/५ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६०२ ज्येष्ठ मुदी १ । ले० काल सं० १६०६ बैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वै० सं० २० । अ भण्डार ।

विशेष—हीरानन्द की प्रेरणा से सवाई जयपुर में इस ग्रन्थ की रचना की गई ।

६६१. कुशीलखंडन—जयलाल । पत्र सं० २६ । आ० १२/७३ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४११ । अ भण्डार ।

६६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० कात × । वे० सं० १२७ । ड भण्डार ।

६६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० १७६ । छ भण्डार ।

६६४. केवलज्ञान का व्यौरा..... । पत्र सं० १ । आ० १२३×५३ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

६६५. क्रियाकलाप टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० १२२ । आ० ११३×५३ । भाषा—संस्कृत । विषय—
श्रावक धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३ । अ भण्डार ।

६६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १६५६ चैत्र सुदी १ । वे० सं० ११५ । क भण्डार ।

६६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १७६५ भाद्रवा सुदी ४ । वे० सं० ७५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति सवाई जयपुर में महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल में चन्द्रप्रभ चैत्यानय में लिखी गई थी ।

६६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०७ । ले० काल सं० १५७७ बैशाख बुदी ४ । वे० सं० १८८७ । ट
भण्डार ।

विशेष—‘प्रशस्ति संग्रह’ में ६७ पृष्ठ पर प्रशस्ति छप चुकी है ।

६६९. क्रियाकलाप..... । पत्र सं० ७ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक धर्म
वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७७ । छ भण्डार ।

६७०. क्रियाकलाप टीका..... । पत्र सं० ६१ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक
धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १५३६ भाद्रवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ११६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

राजाधिराज मांडौगढदुर्गे श्री सुलतानगयामुद्दीनराज्ये चन्देरीदेशमहाशेरखानव्याप्रीयमाने त्रिसरे ग्रामे
वास्तव्य कायस्थ पदमसी तत्पुत्र श्री राधौ लिखितं ।

६७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ से ६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०७ । अ भण्डार ।

६७२. क्रियाकलापवृत्ति..... । पत्र सं० ६६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—श्रावक
धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १३६६ फागुण सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १८७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

एवं क्रिया कलाप वृत्ति समाप्ता । छ ॥ छ ॥ छ ॥ सा० पूना पुत्रेण छाजूकेन लिखितं श्लोकानामष्टादश-
गतानि ॥ पूरी प्रशस्ति ‘प्रशस्ति संग्रह’ में पृष्ठ ६७ पर प्रकाशित हो चुकी है ।

६७३. क्रियाकोष भाषा—किशनसिंह । पत्र सं० =१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—श्रावक धर्म वर्णन । २० काल सं० १७८४ भाद्रवा सुदी १५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०२ । अ भण्डार ।

६७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १८३३ मंगसिर सुदी ६ । वे० सं० ४२६ । अ
भण्डार ।

६७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५८ । अ भण्डार ।

६७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५० । ले० काल सं० १८८५ आषाढ़ बुदी १० । वे० सं० ८ । ग भण्डार
विशेष—श्यालालजी साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

६७७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १६ से ११५ । ले० काल सं० १८८८ । अपूर्ण । वे० सं० १३० । ह
भण्डार ।

६७८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । वे० सं० १३१ । इ भण्डार ।

६७९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५३४ । च भण्डार ।

६८०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १८५१ मंगसिर बुदी १३ । वे० सं० १६५ ।

छ भण्डार ।

६८१. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६५६ आषाढ़ मुदी ६ । वे० सं० १६६ । छ
भण्डार ।

विशेष—प्रति किशनगढ़ के मन्दिर की है ।

६८२. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४ से ९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३०४ । ज भण्डार ।

६८३. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १ से १४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८७ । ट भण्डार ।

विशेष—१४ से आगे पत्र नहीं है ।

६८४. क्रियाकोश..... । पत्र सं० ५० । आ० १०^३×५^४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—श्रावक धर्म
वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०६ । अ भण्डार ।

६८५. कुगुरुलक्षण..... । पत्र सं० १ । आ० ६×४^१ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७१६ । अ भण्डार ।

६८६. समावत्तीसी—जिनचन्द्रसूरि । पत्र सं० ३ । आ० ६^१×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४१ । अ भण्डार ।

६८७. क्षेत्र समासप्रकरण..... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४^१ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २०
काल × । ले० काल सं० १७०७ । पूर्ण । वे० सं० ८२६ । अ भण्डार ।

६८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० × । अ भण्डार ।

६८९. क्षेत्रसमासटीका—टीकाकार हरिभद्रसूरि । पत्र सं० ७ । आ० ११×४^१ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३० । अ भण्डार ।

६९०. गणसार..... । पत्र सं० ८ । आ० ११^१×५^१ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले०
काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३५ । च भण्डार ।

६९१. चउसरण प्रकरण..... । पत्र सं० ४ । आ० ११×४^१ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २०
काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४६ । अ भण्डार ।

विशेष—

प्रारम्भ—सावज्जजोगविरइ उक्तिण गुणवउ अरडिवती ।

रवलि अस्सय निदणावण तिगिच्छ गुण धारणा चव ॥१॥

चारित्तस्स विसोही कीरई सामाईयण किलइहय ।

सावज्जे अरजोगाणं वज्जणा सेवणत्तणउ ॥२॥

दसणयारविसोही चउवीसा इच्छणण किज्जइय ।

अच्चपत्त अगुण कित्तण रुवेणं जिणवरिदाणं ॥३॥

अन्तिम—मदणभावाबद्धा तिव्वणु भावाउ कुणई ताचिव ।

असुहाऊ निरणु बंधउ कुणई निव्वाउ मंदाउ ॥ ६० ॥

ता एवं कायव्वं बुहेहि निच्चंपि संकिलेसंमि ।

होई तिव्कालं सम्मं असंकिले संमि सुगइफलं ॥ ६१ ॥

चउरंगो जिणधम्मो नकउ चउरंगसरण मवि नकमं ।

चउरंगभवच्छेउ नकउ हादा हारिउ जम्मो ॥ ६२ ॥

इ अजीव पमीयमहारि वीरंभद्दं तमेव अम्लयणं ।

भाए मुति संक्रम वंभं कारणं निव्वुइ सुहाणं ॥ ६३ ॥

इति चउसरण प्रकरणं संपूर्णं । लिखितं गणिवीर विजयेन मुनिहर्षविजय पठनार्थं ।

६६२. चारभावना.....। पत्र सं० ६ । आ० १०^१/_३ × ६^१/_३ । भाषा—संस्कृत । विसय—धर्म । २० काल ×

ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ भी दिया हुआ है ।

६६३. चारित्रसार—श्रीमन्नामुंडराय । पत्र सं० ६६ । आ० ६^३/_४ × ४^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

माचार धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १५४५ बैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २४२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति सकलागमसंघमसम्पन्न श्रीमज्जिनमेनभट्टारक श्रीपादपद्मप्रासादासारित चतुरनुयोगपारावार पारगधर्मविजयश्रीमन्नामुब्धमहाराजद्विरचिते भावनासारसंग्रहे चरित्रसारे अनागारधर्मसमाप्तः ॥ ग्रन्थ संख्या १८५० ॥

सं० १५४५ वर्षे बैशाख बुदी ५ भौमवासरे श्री मूलसंघे नञ्चाम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनदिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्र देवाः तत् शिष्य आचार्य श्री मुनिरत्नकीर्तिः तद्दाम्नाम्नाये खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे सह चान्वा भार्या मन्दोवरी तयोः पुत्राः साह डावर भार्या लक्ष्मी साह अर्जुन भार्या दामातयोः पुत्र साह पूत (?) साह ऊदा भार्या कर्मा तयोः पुत्रः साह दामा साह योजा भार्या होली तयोः पुत्रौ रणमल क्षेमराजसा, डाकुर भार्या खेत तयोः पुत्र हरराज । सा, जालप साह तेजा भार्या त्यजसिरि पुत्रपौत्रादि प्रभृतीनां एतेषां मध्ये सा, अर्जुन इदं चारित्रसारं शास्त्रं लिखाप्य सत्पात्राय आर्यसारंगाय प्रदत्तं लिखितं ज्योतिष्गुण ।

६६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १६३५ आषाढ मुदी ४ । वै० सं० १५१ । क
भण्डार ।

विशेष—बा० दुलीचन्द ने लिखवाया ।

६६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १५८५ मंगसिर बुदी २ । वै० सं० १७७ । ड
भण्डार ।

६६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । वै० सं० ३२ । अ भण्डार ।

विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

६६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १७८३ कार्तिक मुदी ८ । वै० सं० १३५ । अ
भण्डार ।

विशेष—हीरापुरी में प्रतिलिपि हुई ।

६६८. चरित्रसार भाषा—मन्नालाल । पत्र सं० ३७ । आ० १२×६ । भाषा—हिन्दी(गद्य) । विषय—धर्म ।
२० काल सं० १८७१ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २७ । ग भण्डार ।

६६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १८७७ आसोज मुदी ६ । वै० सं० १७८ ।
ङ भण्डार ।

७००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १९६० कार्तिक बुदी १३ । वै० सं० १७९ ।
छ भण्डार ।

७०१. चरित्रसार..... । पत्र सं० २२ से ७६ । आ० ११×५ । भाषा—संस्कृत । विषय—आचारशास्त्र
२० काल × । ले० काल सं० १६४३ ज्येष्ठ बुदी १० । अपूर्ण । वै० सं० २१६४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १६४३ वर्षे आके १५०७ प्रवर्तमाने ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे दशम्यां तिथौ सोमवामरे यातिसाह श्री अक-
बरराज्येप्रवर्तते पोथी लिखितं माधौ तत्पुत्र जोसी गोदा लिखितं मालपुरा ।

७०२. चौबीस दण्डकभाषा—दौलतराम । पत्र सं० ६ । आ० ९१×४१/२ । भाषा—हिन्दी । विषय—
धर्म । २० काल १८वीं अतादि । ले० काल सं० १८४७ । पूर्ण । वै० सं० ४५७ । अ भण्डार ।

विशेष—लहरीराम ने रामपुरा में पं० निहालचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

७०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० १८६६ । अ भण्डार ।

७०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १९३७ फागुण मुदी ४ । वै० सं० १५४ । क भण्डार ।

७०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० १९० । छ भण्डार ।

७०६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वै० सं० १९१ । ड भण्डार ।

७०७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वै० सं० १९२ । ङ भण्डार ।

७०८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८१८ । वै० सं० ७३५ । च भण्डार ।

७०६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ७३६ । च भण्डार ।

७१०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—५७ पद्य है ।

७११. चौरामी आसादना..... । पत्र सं० १ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४३ । अ भण्डार ।

विशेष—जैन मन्दिरों में वर्जनीय ८४ क्रियाओं के नाम हैं ।

७१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ४४७ । अ भण्डार ।

७१३. चौरासी आसादना..... । पत्र सं० १ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ । भाषा—मंस्कृत । विषय—धर्म । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टक्का सहित है ।

७१४. चौरामीलाल उत्तर गुण..... । पत्र सं० १ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३३ । अ भण्डार ।

विशेष—१८००० शील के भेद भी दिये हुए हैं ।

७१५. चौसठ ऋद्धि वर्णन... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५१ । अ भण्डार ।

७१६. छहढाला—दौलतराम । पत्र सं० ६ । आ० १०×६ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २०
काल १८वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२२ । अ भण्डार ।

७१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० १३२५ । अ भण्डार ।

७१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १८६१ बैशाख सुदी ३ । वे० सं० १७७ । क भण्डार
विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

७१९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त २२ परीपह, पंचमंगलपाठ, महावीरस्तोत्र एवं संकटहरगुणिनती आदि भी
शी हुई हैं ।

७२०. छहढाला—बुधजन । पत्र सं० ११ । आ० १०×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—धर्म ।
२० काल सं० १८५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । छ भण्डार ।

७२१. छेदपिएड—इन्द्रनंदि । पत्र सं० ३६ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—प्रायश्चित्त
शास्त्र । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८२ । क भण्डार ।

७२२. जैनागारप्रक्रियाभाषा—बा० दुलीचन्द्र । पत्र सं० २४ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी
विषय—प्रायश्चित्त धर्म वर्णन । २० काल सं० १६३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८ । क भण्डार ।

७२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १९६६ आसोज सुदी १० । वे० सं० २०६ । क भण्डार ।

७२४. ज्ञानानन्दश्रावकाचार—साधर्मी भाई रायमल्ल । पत्र सं० २३१ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । र० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३३ । क भण्डार ।

७२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५६ । ले० काल × । वे० सं० २६६ । क भण्डार ।

७२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१ । क भण्डार ।

७२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३२ । ले० काल सं० १९३२ श्रावण सुदी १४ । वे० सं० २२२ । क भण्डार ।

७२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०२ मे २७४ । ले० काल × । वे० सं० ५६७ । च भण्डार ।

७२९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६८ । च भण्डार ।

७३०. ज्ञानवितामणि—मनोहरदास । पत्र सं० १० । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५५३ । अ भण्डार ।

विशेष—५ से ८ तक पत्र नहीं है ।

७३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८६४ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० ३३ । ग भण्डार

७३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० १८७ । च भण्डार ।

विशेष—१२८ छन्द हैं ।

७३३. तत्त्वज्ञानतरंगिणी—भट्टारक ज्ञानभूषण । पत्र सं० २७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । र० काल सं० १५६० । ले० काल सं० १९३५ श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १८६ । अ भण्डार ।

७३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७६६ चैत बुदी ८ । वे० सं० ३३३ । अ भण्डार ।

७३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १९३४ ज्येष्ठ बुदी ११ । वे० सं० २६३ । क भण्डार ।

७३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८१४ । वे० सं० २६४ । क भण्डार ।

७३७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७० । ले० काल × । वे० सं० २४३ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

७३८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७८० फागुण सुदी १५ । वे० सं० ५१३ । च भण्डार ।

७३९. त्रिवर्णाचार—भ० सोमसेन । पत्र सं० १०७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार-धर्म । र० काल सं० १६६७ । ले० काल सं० १८५२ भाद्रपद बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २८८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २५ पत्र ठूमरी लिपि के हैं ।

७४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८१ । ले० काल सं० १८३८ कार्तिक सुदी १३ । वे० सं० ८१ । क भण्डार ।

विशेष—पंडित वखतराम और उनके शिष्य शम्भूनाथ ने प्रतिलिपि की थी ।

७४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४३ । ले० काल × । वे० सं० २८६ । व्य भण्डार ।

७४२. त्रिवर्णाचार । पत्र सं० १८ । आ० १०^३×४^३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८ । ख भण्डार ।

७४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० २८५ । अपूर्ण । छ भण्डार ।

७४४. त्रेपनक्रिया । पत्र सं० ३ । आ० १०×६ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—श्रावक की क्रियाओं का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८४ । च भण्डार ।

७४५. त्रेपनक्रियाकोश—दौलतराम । पत्र सं० ८२ । आ० १२×६^३ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—
आचार । २० काल सं० १७६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८५ । च भण्डार ।

७४६. दण्डकपाठ । पत्र सं० २३ । आ० ८×३ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य
(आचार) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६० । अ भण्डार ।

७४७. दर्शनप्रतिमास्वरूप । पत्र सं० १६ । आ० ११^३×५^३ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६१ । अ भण्डार ।

विशेष—श्रावक की ग्यारह प्रतिमाओं में से प्रथम प्रतिमा का विस्तृत वर्णन है ।

७४८. दशभक्ति । पत्र सं० ५६ । आ० १२×४ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × ।
२० काल सं० १६७३ आसोज बुदी ३ । वे० सं० १०६ । व्य भण्डार ।

विशेष—दश प्रकार की भक्तियों का वर्णन है । भट्टारक पद्मनंदि के आम्नाय वाले खण्डेलवात्र ज्ञातीय सा०
ठाकुर वंश में उत्पन्न होने वाले साह भोखा ने चन्द्रकीर्ति के लिए मौजमाबाद में प्रतिलिपि कराई ।

७४९. दशलक्षणधर्मवर्णन—पं० सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० ४१ । आ० १२×५^३ इच्छ ।
भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वे० सं० २६५ । छ भण्डार ।

विशेष—रत्नकरण्ड श्रावकाचार की गद्य टीका में से है ।

७५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० २६६ । छ भण्डार ।

७५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० २६७ । छ भण्डार ।

७५२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

७५३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६६३ कार्तिक सुदी ६ । वे० सं० १८६ ।
छ भण्डार ।

विशेष—श्री गोविन्दराम जैन शास्त्र लेखक ने प्रतिलिपि की ।

७५४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १६४१ । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ७ पत्र बाद में लिखे गये हैं ।

७५५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × ।। वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

७५६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

७५७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० १७०६ । ट भण्डार ।

७५८. दशलक्षणधर्मवर्णन । पत्र सं० २८ । आ० १२ $\frac{१}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८७ । च भण्डार ।

७५९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १६१७ । ट भण्डार ।

विशेष—जवाहरलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

७६०. दानपंचाशत—पद्मनंदि । पत्र सं० ८ । आ० ११×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । वे० सं० ३२५ । च भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री पद्मनंदि मुनिराश्रित मुनि पुण्यदान पंचाशत ललितवर्ण त्रयो प्रकरण ॥ इति दान पंचाशत समाप्त ॥

७६१. दानकुल..... । पत्र सं० ७ । आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल × ।
ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० ८३३ । अ भण्डार ।

विशेष—गुजराती भाषा में अर्थ दिया हुआ है । लिपि नागरी है । प्रारम्भ में ४ पत्र तक चैत्यबंदनक भाष्य दिया है ।

७६२. दानशीलतपभावना—धर्मसी । पत्र सं० १ । आ० ९ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५३ । ट भण्डार ।

७६३. दानशीलतपभावना..... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ९३६ । अ भण्डार ।

विशेष—७५ पत्र नहीं हैं । प्रति हिन्दी अर्थ सहित है ।

७६४. दानशीलतपभावना..... । पत्र सं० १ । आ० ९ $\frac{३}{४}$ ×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२६६ । अ भण्डार ।

विशेष—मोती और कांकड़े का संवाद भी बहुत मुन्बर रूप में दिया गया है ।

७६५. दीपमालिकानिर्णय । पत्र सं० १२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । क भण्डार ।

विशेष—लिपिकार बाबूलाल व्यास ।

७६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०५ । क भण्डार ।

७६७. दोहापाहुड—रामसिंह । पत्र सं० २० । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—आचार
शास्त्र । २० काल १०वीं गतादि । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६२ । अ भण्डार ।

विशेष—कुल ३३३ दोहे हैं । ६ में १६ तक पत्र नहीं है ।

७६८. धर्मचाहना.....। पत्र सं० ८ । आ० ८३×७ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२८ । ड. भण्डार ।

७६९. धर्मपंचविंशतिका—ब्रह्मजिनदास । पत्र सं० ३ । आ० ११३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल १५वीं शताब्दी । ले० काल सं० १८२७ पौष बुदी ९ । पूर्ण । वे० सं० ११० । छ. भण्डार । विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति त्रिविधसैद्धान्तिकचक्रवर्त्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रस्य शिष्य ब्र० श्री जिनदास विरचितं धर्मपंचविंशतिका नामशास्त्रं समाप्तम् । श्रीचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

७७०. धर्मप्रदीप्रभाषा—पन्नालाल संघी । पत्र सं० ९४ । आ० १२×७३ । भाषा—हिन्दी । २० काल सं० १९३५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । ड. भण्डार ।

विशेष—संस्कृतमूल तथा उसके नीचे भाषा दी हुई है ।

७७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १९६२ आसोज मुदी १४ । वे० सं० ३३७ । ड. भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम दशावतार नाटक है । पं० फतेहलाल ने हिन्दी गद्य में अर्थ लिखा है ।

७७२. धर्मप्रश्नोत्तर—विमलकीर्ति । पत्र सं० ५० । आ० १०३×४३ । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १८१६ फागुन मुदी ५ । अ. भण्डार ।

विशेष—१११६ प्रश्नों का उत्तर है । ग्रन्थ में ६ परिच्छेद हैं । परिच्छेदों में निम्न विषय के प्रश्नों के उत्तर हैं— १. दशलाक्षणिक धर्म प्रश्नोत्तर । २. श्रावकधर्म प्रश्नोत्तर वर्णन । ३. रत्नत्रय प्रश्नोत्तर । ४. तन्त्र पृच्छा वर्णन । ५. कर्म विपाक पृच्छा । ६. सज्जन चित्त वल्लभ पृच्छा ।

मङ्गलाचरण :— तीर्थेशान् श्रीमतो विश्वान् विश्वनाथान् जगद्गुरुन् ।

अनन्तमहिमारूढान् वन्दे विश्वहितकारकान् ॥ १ ॥

चोखन्द के शिष्य रायमल ने जयपुर में शांतिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

७७३. धर्मप्रश्नोत्तर। पत्र सं० २७ । आ० ८३×४ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १९३० । पूर्ण । वे० सं० ४०० । अ. भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम हितोपदेश भी दिया है ।

७७४. धर्मप्रश्नोत्तरी.....। पत्र सं० ४ से ३४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १९३३ । अपूर्ण । वे० सं० ५९८ । च. भण्डार ।

विशेष—पं० खेमराज ने प्रतिलिपि की ।

७७५. धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचारभाषा—चम्पाराम । पत्र सं० १७७ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—श्रावकों के आचार का वर्णन है । २० काल सं० १८६८ । ले० काल सं० १८९० । पूर्ण । वे० सं० ३३८ । ड. भण्डार ।

७७६. धर्मप्रश्नोत्तरश्रावकाचार। पत्र सं० १ मे ३५। आ० ११३×५३ इञ्च। भाषा—संस्कृत।
विषय—श्रावक धर्म वर्णन। २० काल ×; ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३०। झ भण्डार।

७७७. प्रति सं० २। पत्र सं० ३५। ले० काल ×। वे० सं० २६८। अ भण्डार।

७७८. धर्मरत्नाकर—संग्रहकर्ता प० मंगल। पत्र सं० १६१। आ० १३×७ इञ्च। भाषा—संस्कृत।
विषय—धर्म। २० काल सं० १६८०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३४०। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १६८० वर्षे काष्ठासंघे नंदतट ग्रामे भट्टारक श्रीभूषण शिष्य पंडित मङ्गल कृत शास्त्र रत्नाकर नाम
शास्त्र संपूर्ण। संग्रह ग्रन्थ है।

७७९. धर्मरसायन—पद्मनंदि। पत्र सं० २३। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—धर्म।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३४१। क भण्डार।

७८०. प्रति सं० २। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १७६७ वैशाख बुदी ५। वे० सं० ४३। अ भण्डार।

७८१. धर्मरसायन। पत्र सं० ८। आ० ११३×५३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। २०
काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६५। अ भण्डार।

७८२. धर्मलक्षण। पत्र सं० १। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—धर्म। २० काल ×।
ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१५५। ट भण्डार।

७८३. धर्मसंग्रहश्रावकाचार—पं० मेधावी। पत्र सं० ४८। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत।
विषय—श्रावक धर्म वर्णन। २० का सं० १५४१। ले० काल सं० १५४२ कार्तिक सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० १६६।
अ भण्डार।

विशेष—प्रति बाद में संशोधित की हुई है। मंगलाचरण को काट कर दूसरा मंगलाचरण लिखा गया
है। तथा पुष्पिका में शिष्य के स्थान में अंतेवासिना शब्द जोड़ा गया है। लेखक प्रशस्ति निम्न है—

श्री विक्रमादित्यराज्यात् संवत् १५४२ वर्षे कार्तिक सुदी ५ गुरुदिने श्री वर्द्धमानचैत्यालयविराजमाने
श्रीहिसार परोजावत्तने सुलतानश्रीवहलोलसाहिराज्यप्रवर्त्तमाने श्री मूलसंघे नंद्याम्नाये सारस्वतगच्छे बलात्कारगणे
भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवाः। तत्पट्टे कुवलयवनत्रिकासनैकचन्द्र श्री शुभचन्द्रदेवाः। तत्पट्टे षट्त्पर्कचक्रवतिकृतसेवाः
भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः तत्शिष्ये मंडलाचार्ये मुनि श्री रत्नकीर्तिः तस्य शिष्यो दिगम्बर मूर्तिर्मुनि श्री विमलकीर्ति
पंडितश्रीमीहास्यः तदाप्नाये खंडेलवालान्वये भौसा गोत्रे परमश्रावकसाधु साधुनामा तरयाद्या भार्या देवगुरुपादारविद
मेवनततरा साध्वी लाल्छिसंज्ञिका तयो श्रावकाचारोत्पन्नौ साधुभोजा-केशोभिधानौ। साधुनाम्नो, द्वितीय भार्या छाह्धी
इति नाम्नी। तन्मन्दनो निमित्तज्ञानविदारसाधुसात्रलाभिधेयः अथ साधुभोजापत्नीपातिव्रत्यादिगुणानिलयाभोलसिरि
संज्ञा। तयोः प्रथमपुत्रः साधुधामीस्य। तद्भ्रायदेवगुरुचरणारविदचंचरीका साध्वी धनश्रीः। द्वितीय पुत्रः श्री गिर-
नारिगिरौ श्री नेमीश्वर यात्राकारक संघपति रुह्या नामा। तस्य गेहिनी शीलशालिनी जही इति संज्ञिका। तयोर्ज्येष्ठ-
पुत्रश्चतुर्विधदानवितरणकल्पवृक्षः शान्तिदासः तस्य भामिनी अनेकगुणमालिनी साध्वी हितसिरि नाम-

धेयाः । द्वितीय पुत्रः पंचाणुव्रतप्रतिपालको नेमिदासः तस्य भार्या विहितानेकधर्मकार्या गुरासिरि इति प्रसिद्धिः तत्पुत्रौ त्रिरंजीविनी संसार चंदराय चंदाभिधानौ । अथ साधु केसाकस्य ज्येष्ठा जायाशीलादिगुरारत्नखानिः साध्वी कमलश्री द्वितीयग्रनेकव्रतनियमानुष्ठानकारिका परमश्राविकासाध्वी सूवरीनामा तत्तनूजः सम्यवत्वालंकृतद्वादशव्रतपालकः । संधपति जूगराह । तत्कलत्र नानाशीलविनयादिगुरापात्रं साधु लाडी नाम धेयं । तयोः सुतो देवपूजादिषट्क्रिया कमलिनीविकास-नेकमार्तण्डोपमा जिनदासः तन्महिलाधर्मकर्मठ कर्म श्रीरतिनाम । एतेषां मध्येसंधपति हल्हाह्यं भार्या जही नाम्ना निजपुत्र शांतिदासनेमिदासयो न्योपाजितवित्तेन इदं श्री धर्मसंग्रह पुस्तकपंचकं पंडितश्रीमीहाख्यस्योपदेशेन प्रथमतो लोके प्रवर्तनार्थं लिखापितं भव्यानां पठनाय । निजज्ञानावरणकर्मक्षयार्थं आचन्द्रावर्कादिनंदतान् ।

७८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ३४५ । क भण्डार ।

७८५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १७८६ । वे० सं० ३४२ । ड भण्डार ।

७८६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८८६ चैत सुदी १२ । वे० सं० १७२ । च भण्डार ।

७८७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८ से ५५ । ले० काल सं० १६४२ बैशाख सुदी ३ । वे० सं० १७३ । च भण्डार ।

७८८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १८५६ माघ सुदी ३ । वे० सं० १०८ । छ भण्डार ।

विशेष—भखतराम के शिष्य संपतिराम हरिवंशदास ने प्रतिलिपि करवाई ।

७८९. धर्मसंग्रहश्रावकाचार..... । पत्र सं० ६६ । आ० ११३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक धर्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० २०३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति दीमक ने खा ली है ।

७९०. धर्मसंग्रहश्रावकाचार..... । पत्र सं० २ से २७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—श्रावक धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४१ । छ भण्डार ।

७९१. धर्मशास्त्रप्रदीप..... । पत्र सं० २३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—वैदिक साहित्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४६६ । अ भण्डार ।

७९२. धर्मसरोवर—जोधराज गोदीका । पत्र सं० ३६ । आ० ११३×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्मोपदेश । २० काल सं० १७२४ ग्राषाढ सुदी ३५ । ले० काल सं० १६४७ । पूर्ण । वे० सं० ३३४ । क भण्डार । विशेष—नागबद्ध, धनुषबद्ध तथा चक्रबद्ध कविताओं के चित्र हैं । प्रति सं० २ के आधार से रचना संवत् है ।

७९३. प्रति सं० २ । ले० काल सं० १७२७ कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० ३४४ । क भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि सांगानेर में हुई थी ।

७९४. धर्मसार—पं० शिरोमणिदास । पत्र सं० ३१ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १७३२ बैशाख सुदी ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०४० । अ भण्डार ।

७९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८८५ फागुण बुदी ५ । वे० सं० ४६ । ग भण्डार ।

विशेष—श्री शिवलालजी साह ने सबई माधोपुर में सोनपाल भौसा से प्रतिलिपि करवाई ।

७६६. धर्माभूतसूक्तिसंग्रह—आशाधर । पत्र सं० ६५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आचारएवं धर्म । २० काल सं० १२६६ । ले० काल सं० १७४७ आसोज बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० २६५ ।

विशेष—संवत् १७८७ वर्षे आसोज बुदी २ बुधवासरे अयं द्वितीय सागरधर्म स्कंधः पद्यान्यत्रपद्मसव्य-
धिकानि चत्वारिशतानि ॥४७६॥ छ ॥

ग्रंथमहंतमश्लेषी रम मुद्ध्यं सिमापन्ता ॥

हुति असंख्य जीवानिदिग सव्वदरसी ॥ बुधा गाथा ॥

संगर कइ मिथीमूगचणोगमसू कम्मासं ।

एव सर्वं विदलं वज्जोपव्वापयत्रेण ॥ १ ॥

विदलं जी भी पछा मुहं च पत्तं च दोविधो विज्जा ।

अहवावि अत्र पत्तो भुंजिज्जं गोरसाईय ॥ २ ॥

इति विदल गाथा ॥ श्रो ॥

रचना का नाम 'धर्माभूत' है । यह दो भागों में विभक्त है । एक सागाधर्माभूत तथा दूसरा अनागार धर्माभूत ।

७६७. धर्मोपदेशपीयूषश्रावकाचार—सिंहनंदि । पत्र सं० ३६ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १७८५ माघ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४८ । घ
भण्डार ।

७६८. धर्मोपदेशश्रावकाचार—अमोघवर्ष । पत्र सं० ३३ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १७८५ माघ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४८ । घ भण्डार ।

विशेष—कोटा में प्रतिलिपि की गई थी ।

७६९. धर्मोपदेशश्रावकाचार—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र सं० २६ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २४५ । छ भण्डार । अन्तिम पत्र नहीं है ।

८००. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६६ ज्येष्ठ सुदी ३ । वे० सं० ८० । ज भण्डार ।

विशेष—भवानीचन्द ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

८०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० २३ । ज भण्डार ।

८०२. धर्मोपदेशश्रावकाचार..... । पत्र सं० २६ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४ ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

८०३. धर्मोपदेशसंग्रह—सेवारास साह । पत्र सं० २१८ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धर्म । २० काल सं० १८५८ । ले० काल × । वे० सं० ३४३ ।

विशेष—ग्रन्थ रचना सं० १८५८ में हुई किन्तु कुछ अंश सं० १८६१ में पूर्ण हुआ ।

८०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६० । ले० काल × । वे० सं० ५६७ । च भण्डार ।

८०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७६ । ले० काल × । वे० सं० १८६५ । ट भण्डार ।

८०६. नरकदुःखवर्णन—भूधरदास । पत्र सं० ३ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—नरक के दुखों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । अ भण्डार ।

विशेष—भूधर कृत पार्श्वपुराण में से है ।

८०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ६६६ । अ भण्डार ।

८०८. नरकवर्णन..... । पत्र सं० ८ । आ० १०^३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नरकों का वर्णन ।
२० काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ६०० । च भण्डार ।

विशेष—सदासुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की ।

८०९. नवकारश्रावकाचार..... । पत्र सं० १४ । आ० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—
श्रावकों का आचार वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १६१२ बैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ६५ । अ भण्डार

विशेष—श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में खंडेलवाल गोत्र वाली बाई तोल्हू ने श्री अग्रिका विनय श्री की भेंट
किया । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६१२ वर्षे बैशाख सुदी ११ दिने श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये श्री मूलसंधे सरस्वती गच्छे बलात्कार-
गणे श्रीकुं दकुं दाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनिदि देवा तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तत्-
शिष्य मण्डलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवा तत्शिष्यमण्डलाचार्य श्री ललितकीर्तिदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये सोनी गोत्रे बाई
तोल्हू इदं शास्त्रं नवकारे श्रावकाचारं ज्ञानावरणी कर्मक्षयं निमित्तं अजिका विनैसिरीए दत्तं ।

८१०. नष्टोद्दिष्ट..... । पत्र सं० ३ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × ।
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३३ । अ भण्डार ।

८११. निजामणि—ब्र० जिनदास । पत्र सं० २ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६८ । क भण्डार ।

८१२. नित्यकृत्यवर्णन..... । पत्र सं० १२ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५८ । उ भण्डार ।

८१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३५६ । उ भण्डार ।

८१४. निर्माल्यदोषवर्णन—बा० दुलीचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १०^३×८^३ भाषा—हिन्दी । विषय—
श्रावक धर्म वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८१ । क भण्डार ।

८१५. निर्वाणप्रकरण..... । पत्र सं० ६२ । आ० ६^३×८^३ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल सं० १८६६ बैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २३१ । ज भण्डार ।

विशेष—गुटका साइज में है । यह जैनेतर ग्रन्थ है तथा इसमें २६ सर्ग हैं ।

८१६. निर्वाणमोदकनिर्णय—नेमिदास । पत्र सं० ११ । आ० ११^३×७^३ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—महावीर-निर्वाण के समय का निर्णय । २० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० ६७ । ख भण्डार ।

८१७. पंचपरमेष्ठीगुण.....। पत्र सं० ५ । आ० ७×५^३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२० । अ भण्डार ।

८१८. पंचपरमेष्ठीगुणवर्णन—डालूराम । पत्र सं० ७३ । आ० ४३×४३ । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं सर्व साधु पंच परमेष्ठियों के गुणों का वर्णन । २० काल सं० १८६५ फागुण सुदी १० । ले० काल सं० १८६६ आषाढ बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १७ । अ भण्डार ।

विशेष—६०वें पत्र से द्वादशानुप्रेक्षा भाषा है ।

८१९. पद्मनंदिपंचविंशतिका—पद्मनंदि । पत्र सं० ५ से ८३ । आ० १२^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १५८९ चैत सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० १९७१ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है किन्तु निम्न प्रकार है—

श्री धर्मवन्द्रास्तदात्मनाये वैद्य गोत्रे खंडेलवालान्वये रामसरिवास्तव्ये राव श्री जगमाल राज्यप्रवर्तमाने साह सोनपाल.....।

८२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२९ । ले० काल सं० १५७० ज्येष्ठ सुदी प्रतिपदा । वे० सं० २४५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है—संवत् १५७० वर्षे ज्येष्ठ सुदी १ रवौ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्री सकलकीर्तिस्तच्छिष्य भ० भुवनकीर्तिस्तच्छिष्य भ० श्री ज्ञानभूषण तच्छिष्य ब्रह्म तेजसा पठनार्थ । देलुलि ग्रामे वास्तव्ये व्या० शबदासेन लिखिता । शुभं भवतु ।

विषय सूची पर "सं० १६८५ वर्षे" लिखा है ।

८२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ५२ । अ भण्डार ।

८२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९० । ले० काल सं० १८७२ । वे० सं० ४२२ । क भण्डार ।

८२३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५१ । ले० काल × । वे० सं० ४२० । क भण्डार ।

८२४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । वे० सं० ४२१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

८२५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १७४८ माघ सुदी ४ । वे० सं० १०२ । अ भण्डार ।

विशेष—भट्ट बल्लभ ने अवंती में प्रतिलिपि की थी । ब्रह्मचर्याष्टक तक पूर्ण ।

८२६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३९ । ले० काल सं० १५७८ माघ सुदी २ । वे० सं० १०३ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति निम्नप्रकार है— संवत् १५७८ माघ सुदी २ बुधे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदि देवास्तत्वट्टे भट्टारक श्री सकलकीर्तिदेवास्तत्वट्टे भट्टारक श्री भुवनकीर्तिदेवास्त-
त्रातृ आचार्य श्री ज्ञानकीर्तिदेवास्तत्वशिष्य आचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवास्तच्छिष्य आचार्य श्री यशःकीर्ति उपदेशान् हंबड

ज्ञातीय बागड़देशे सागवाड़ शुभस्थाने श्री आदिनाथ चैत्यालये हंबड़ ज्ञातीय गांधी श्री पोपट भार्या धर्मदिस्तयोःसुत गांधी रामा भार्या रामादे सुत हूंगर भार्या दाडिमदे ताभ्यां स्वज्ञानावर्णां कर्म क्षयार्थं लिखाप्य इयं पंचविंशतिका दत्ता ।

८२७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २८८ । ले० काल सं० १६३८ आषाढ़ सुदी ६ । वे० सं० ५४ । घ भण्डार
विशेष—बैराठ नगर में प्रतिलिपि की गई थी ।

८२८. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ४१८ । ङ भण्डार ।

८२९. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ५१ से १४६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ४१९ । ङ भण्डार ।

८३०. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ४२० । ङ भण्डार ।

८३१. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ८१ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ४२१ । ङ भण्डार ।

८३२. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १६८२ पौष बुदी १० । वे० सं० २६० । ज भण्डार
विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हैं ।

८३३. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १७३२ सावण सुदी ६ । वे० सं० ४६ । झ
भण्डार ।

विशेष—पंडित मनोहरदास ने प्रतिलिपि कराई ।

८३४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १३७ । ले० काल सं० १७३५ कार्तिक सुदी ११ । वे० सं० १०८ । झ
भण्डार ।

८३५. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ७८ । ले० काल × । वे० सं० २६४ । झ भण्डार ।

विशेष—प्रति सामान्य संस्कृत टीका सहित है ।

८३६. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १५८५ बैशाख सुदी १ । वे० सं० २१२० । ट
भण्डार ।

विशेष—१५८५ वर्षे बैशाख सुदी १५ सोमवारे श्री काष्ठासंघे मात्रार्णके (माधुरान्बे) पुष्करगणे भट्टारक
श्री हेमचन्द्रदेव । तत्..... ।

८३७. पद्मनंदिपंचविंशतिटीका..... । पत्र सं० २०० । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६५० भाद्रवा बुदी ३ । अपूर्णा । वे० सं० ४२३ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ५१ पृष्ठ नहीं हैं ।

८३८. पद्मनंदिपञ्चीसीभाषा—जगतराय । पत्र सं० १८० । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी
पद्य । २० काल सं० १७२२ फागुण सुदी १० । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ४१६ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना औरङ्गजेब के शासनकाल में आगरे में हुई थी ।

८३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७१ । २० काल सं० १७५८ । वे० सं० २६२ । झ भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

८४०. पद्मनंदिपञ्चीसीभाषा—मन्नालाल खिन्दूका । पत्र सं० ६४१ । आ० १३×८३ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । २० काल सं० १९१५ मंगसिर बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४१६ । क भण्डार

विशेष—इम ग्रन्थ की वचनिका लिखना जानचन्द्रजी के पुत्र जौहरीलालजी ने प्रारम्भ की थी । 'सिद्ध स्तुति' तक लिखने के पश्चात् ग्रन्थकार को मृत्यु होगई । पुनः मन्नालाल ने ग्रन्थ पूर्ण किया । रचनाकाल प्रति सं० ३ के आधार से लिखा गया है ।

८४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१७ । ले० काल × । वै० सं० ४१७ । क भण्डार ।

८४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५७ । ले० काल सं० १९४४ चैत बुदी ३ । वै० सं० ४१७ । ड भण्डार ।

८४३. पद्मनंदिपञ्चीसीभाषा..... । पत्र सं० ६७ । आ० ११×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ४१८ । क भण्डार ।

८४४. पद्मनंदिभ्रावकाचार—पद्मनंदि । पत्र सं० ४ से ५३ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार ज्ञास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६१३ । अपूर्ण । वै० सं० ४२८ । ड भण्डार

८४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० से ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २१७० । ट भण्डार ।

८४६. परीषहवर्णन..... । पत्र सं० ६ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४४१ । ड भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र आदि का संग्रह भी है ।

८४७. पुच्छीसेण..... । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । वै० सं० १२७० । पूर्ण । अ भण्डार ।

८४८. पुरुषार्थसिद्धयु पाय—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० १६ । आ० १३३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १७०७ मंगसिर सुदी ३ । वै० सं० ५३ । अ भण्डार ।

विशेष—आचार्य कनककीर्ति के शिष्य सदाराम ने फागुईपुर में प्रतिलिपि की थी ।

८४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० ५५ । छ भण्डार ।

८५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १८३२ । वै० सं० १७८ । अ भण्डार ।

८५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १९३४ । वै० सं० ४७१ । क भण्डार ।

विशेष—श्लोकों के ऊपर नीचे संस्कृत टीका भी है ।

८५२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वै० सं० ४७२ । ड भण्डार ।

८५३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वै० सं० ६७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । ग्रन्थ का दूसरा नाम जिन प्रवचन रहस्य भी दिया हुआ है ।

८५४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८१७ भादवा बुदी १३ । वे० सं० ६८ । छ
भण्डार ।

विशेष—प्रति टक्का टीका सहित है तथा जयपुर में लिखी गई थी ।

८५५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ३३१ । ज भण्डार ।

८५६. पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० ६७ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—
हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १८२७ । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ४०५ । अ भण्डार ।

८५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १६५२ । वे० सं० ४७३ । छ भण्डार ।

८५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४८ । ले० काल सं० १८२७ मंगसिर सुदी २ । वे० सं० ११८ । क
भण्डार ।

८५९. पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा—भूधरदास । पत्र सं० ११६ । आ० ११३×८ इञ्च । भाषा—
हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १८०१ भादवा सुदी १० । ले० काल सं० १६५२ । पूर्ण । वे० सं० ४७३ । क

८६०. पुरुषार्थसिद्धयुपाय वचनिका—भूधर मिश्र । पत्र सं० १३६ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—
हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १८७१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७२ । क भण्डार ।

८६१. पुरुषार्थानुशासन—श्री गोविन्द भट्ट । पत्र सं० ३८ से ६७ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १८५३ भादवा बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ४५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति विस्तृत दी हुई है । दयोजीराम भांवसा ने प्रतिलिपि की थी ।

८६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । वे० सं० १७६ । अ भण्डार ।

८६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७१ । ले० काल × । वे० सं० ४७० । क भण्डार ।

८६४. प्रतिक्रमण..... । पत्र सं० १३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—किये हुये दोषों
की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३१ । च भण्डार ।

८६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३२ । च भण्डार ।

८६६. प्रतिक्रमण पाठ..... । पत्र सं० २६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय किये हुये
दोषों की आलोचना २० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० ३२ । ज भण्डार ।

८६७. प्रतिक्रमणसूत्र..... । पत्र सं० ६ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—किये हुये दोषों
की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६८ । अ भण्डार ।

८६८. प्रतिक्रमण..... । पत्र सं० २ से १८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—किये हुये
दोषों की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । ट भण्डार ।

८६९. प्रतिक्रमणसूत्र—(वृत्ति सहित)..... । पत्र सं० २२ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत
संस्कृत । विषय किये हुए दोषों की आलोचना । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । घ भण्डार ।

८७८. प्रतिमाउत्थापक कृं उपदेश—जगरूप । पत्र सं० ४७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १८२५ । पूर्ण । वे० सं० ११२ । ग भण्डार ।

विशेष—गौरङ्गाबाद में रचना की गयी थी ।

८७९. प्रत्याख्यान..... । पत्र सं० १ । आ० १०×४^१/_२ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७२ । ट भण्डार ।

८८०. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार । पत्र सं० २५ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६१८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी व्याख्या सहित है ।

८८३. प्रश्नोत्तरश्रावकाचारभाषा—बुलाकीदास । पत्र सं० १६८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल सं० १७४७ बैशाख सुदी २ । ले० काल सं० १८८६ मंगसिर सुदी ६ । वे० सं० ६२ । ग भण्डार ।

विशेष—श्यालालजी के पुत्र छाजूलालजी साह ने प्रतिलिपि करायी । इस ग्रन्थ का द्वै भाग जहानाबाद तथा चौथाई द्वै भाग पत्नीवत में लिखा गया था ।

‘तीन हिस्से या ग्रन्थ को भये जहानाबाद ।

चौथाई जलपथ विषे बीतराम परसाद ॥’

८८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १८८५ सावण सुदी १ । वे० सं० ६३ । ग भण्डार । विशेष—श्यालालजी साह ने सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि कराकर चौधरियों के मन्दिर ग्रन्थ चढ़ाया ।

८८५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५० । ले० काल सं० १८६४ चैत्र सुदी ५ । वे० सं० ५२१ । ड भण्डार ।

विशेष—सं० १८२६ फागुण सुदी १३ को बखतराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी और उसी प्रति में इस की नकल उतारी गई है । महात्मा सीताराम के पुत्र लालचन्द ने इसकी प्रतिलिपि की ।

८८६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० ६४८ । अपूर्ण । च भण्डार ।

८८७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १६३३ माघ सुदी १२ । वे० सं० १६१ । छ भण्डार ।

८८८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२० । ले० काल सं० १८८३ पौष बुदी १४ । वे० सं० १६ । झ भण्डार ।

८८९. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार भाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ३४८ । आ० १२^१/_२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल सं० १६३१ पौष बुदी १४ । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ण । वे० सं० ५१८ । क भण्डार ।

८९०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४०० । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ५१५ । क भण्डार ।

८८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३१ से ४६० । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ६४६ । च भण्डार ।

८८२. प्रश्नोत्तरश्रावकाचार..... । पत्र सं० ३३ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८३२ । पूर्णा । वे० सं० ११६ । ख भण्डार ।

विशेष—आचार्य राजकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

८८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३० । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ६४७ । च भण्डार ।

८८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३०० । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ५१८ । ड भण्डार ।

८८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३०० । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ५१९ । ड भण्डार ।

८८६. प्रश्नोत्तरोपासकाचार—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० १३१ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६९५ फागुण सुदी १० । पूर्णा । वे० सं० १४२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थाग्रन्थ संख्या २६०० ।

प्रशस्ति—संवत् १६९५ वर्षे फागुण सुदी १० सोमे त्रिराड्देशे पनवाड़नगरे श्री चन्द्रप्रमचैत्यालये श्री
काष्ठासंघे नंदीतगच्छे विद्यागणे भट्टारक श्री रामसेनान्वये भ० श्रीलक्ष्मीसेनदेवास्तत्पट्टे भ० श्री भीमसेनदेवास्तत्पट्टे भ०
श्री सोमकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री विजयसेनदेवास्तत्पट्टे श्रीमदुदयसेनदेवा भ० श्री त्रिभुवनकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री
रत्नभूषणदेवास्तत्पट्टाभरण भ० जयकीर्तिस्तच्छिष्योपाध्याय श्री वीरचन्द्र लिखितं ।

८८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १६६६ पौष सुदी १ । वे० सं० १७४ । अ
भण्डार ।

८८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १८८१ मंगस्तिर सुदी ११ । वे० सं० १९७ । अ
भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज सवाई जयसिंहजी के शासनकाल में जैतराम साह के पुत्र श्योजीलाल की भार्या
ने प्रतिलिपि कराई । ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर में अंबावती (आमेर) बाजार में स्थित आदिनाथ चैत्यालय के नीचे
जती तनसागर के शिष्य मन्नालाल के यहाँ सवाईराम गोधा ने की थी । यह प्रति जैतरामजी के घड़ों में (१२वें दिन पर)
श्योजीरामजी ने पाटोदी के मन्दिर में सं० १८९३ में भेंट की ।

८८९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १९०० । वे० सं० २१७ । अ भण्डार ।

८९०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१९ । ले० काल सं० १९७६ आसोज बुदी ५ । वे० सं० २११ । अ
भण्डार ।

विशेष—नानू गोधा ने प्रतिलिपि कराई थी ।

प्रशस्ति—संवत् १९७६ वर्षे आसोज वदि शनिवासरे रोहणी नक्षत्रे मोजाबादनगरे राज्यश्रीराजाभावसिंह
राज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंघे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंददेवास्तत्पट्टे
भट्टारकश्रीशुभचन्द्रदेवान्तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्तितत्पट्टे
भट्टारकश्रीदिवेन्द्रकीर्तित्तदाम्नाये गोधा गोत्रे जाचक-जनसंदोहकल्पवृक्ष श्रावकाचारचरण-निरत-चित साह श्री धनराज

तद्भार्या सीलतोय-तरङ्गिणी विनय-त्रागेश्वरी धनमिरि तयोः पुत्राः त्रयः प्रथमपुत्रधर्मधुराधरण धीरसाह श्री रुपा तद्भार्या दानसीलगुणभूषणभूषितगात्रानाम्ना भूजरि तयोः पुत्र राजसभा शृंगारहारस्वप्रताग्दिनकरमुकुलिकृतशत्रुमुखकुमुदा-
कर स्वज.....निसाकरभ्राह्मादित कुवलयदानगुण अस्वीकृतकल्पपादप श्रीः पंचरमेष्टिचिन्तन पवित्रितविन सकलगुणि-
जनविभ्रामस्थान साह श्री नानूतन्मनोरमाः पंच प्रथमनारंगदे द्वितीया हरखमदे तृतीया मुजानदे चतुर्था सलालदे पंचम
भार्या लाडी । हरखमदेजनितपुत्राः त्रयः स्वकुलनामप्रकाशनैकचन्द्राः प्रथम पुत्र साह आशकर्ण तद्भार्या अहंकारदेपुत्र
नाथु । दुतीभार्यालाडमदे पुत्र केसवदास भार्या कपूरदे द्वितीय पुत्र चि० लूणकरण भार्या द्वे प्रथमललतादे पुत्र रामकर्ण
द्वितीय लाडमदे । तृतीय पुत्र चि० बलिकर्ण भार्या बालमदे । चतुर्थ पुत्र चि० पूर्णमल भार्या पुरवदे । साह धनराज द्विती
पुत्र साह श्री जोधा तद्भार्या जौणादेतयोः पुत्रास्त्रयः प्रथमपुत्रधार्मिक साह करमचन्द तद्भार्या सोहागदे तयो पुत्र चि०
दयालदास भार्या दाडमदे । द्वितीयपुत्र साह धर्मदान तद्भार्याद्वे । प्रथम भार्या धारादे द्वितीय भार्या लाडमदे तयो पुत्र साह
हंगरसी तद्भार्या दाडिमदे तत्पुत्रौ द्वे । प्र० पु० लक्ष्मीदास द्वि० पुत्र चि० तुलसीदास । जोधा तृतीय पुत्र जिणचरणकमल-
मधुप साह पदारथ तद्भार्या हमीरदे । साह धनराज तृतीय पुत्र दानगुणश्रेयांससकल जनानन्दकारकस्ववचनप्रतिपालन-
समर्थसर्वोपकारकसाहश्रीरतनसी तद्भार्या द्वे प्रथम भार्या रत्नादे द्वितीय भार्या नौलादे तयो पुत्राश्चत्वारः प्रथम पुत्र
शुपाल तद्भार्या सुप्यारदे तयोःपुत्र चि० भोजराज तद्भार्या भावलदे । श्रीरतनसी द्वितीय पुत्र साह गेगराज तद्भार्या गौरादे
तयोपुत्राः त्रयः प्रथम पुत्र चि० सार्दूल द्वि० पुत्र चि० सिंघा तृतीय पुत्र चि० सलहदी । साह रतनसी तृतीय पुत्र साह
भरथा तद्भार्या भावलदे चतुर्थ पुत्र चि० परवत तद्भार्या पाटमदे । एतेषां मध्ये सिंघत्री श्री नानू भार्या प्रथम नारंगदे ।
भट्टारकश्रीचन्द्रकीर्ति शिष्य आ० श्री शुभचन्द्र इदं शास्त्रं व्रतनिमित्तं घटापितं कर्मक्षयनिमित्तं । ज्ञानवान ज्ञानदाने....

८६१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४६ से १६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८३ । अ भण्डार ।

८६२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १३० । ले० काल सं० १८६२ । अपूर्ण । वे० सं० १०१६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है । बीच के कुछ पत्र नहीं हैं । पं० केशरीसिंह के शिष्य लालचन्द ने महात्मा
शंभुराम से सवाई जयपुर में प्रतिलिपि करायी ।

८६३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १६५ । ले० काल सं० १६८२ । वे० सं० ५१६ । क भण्डार ।

८६४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८१ । ले० काल सं० १६५८ । वे० सं० ५२० । क भण्डार ।

८६५. प्रति सं० १० । पत्र सं० २२१ । ले० काल सं० १६७७ पौष मुदी । वे० सं० ५१७ । क
भण्डार ।

८६६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १८८..... । वे० सं० ११५ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० रूपचन्द ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

८६७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० ६४ । ख भण्डार ।

८६८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २ से २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१७ । ड भण्डार ।

८६९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१७ । ड भण्डार ।

९००. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १२६ । ले० काल × । वे० सं० ५२० । ड भण्डार ।

६०१. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १४५ । ले० काल × । वै० सं० १०६ । छ भण्डार ।
विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम पत्र बाद में लिखा हुआ है ।

६०२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १८५६ माघ सुदी ३ । वै० सं० १०८ । छ भण्डार ।

६०३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १७७४ फागुण बुदी ८ । वै० सं० १०९ ।
विशेष—पांचोलास में चातुर्मास योग के समय पं० सोभागविमल ने प्रतिलिपि की थी । सं० १८२५ ज्येष्ठ बुदी १४ को महाराजा पृथ्वीसिंह के शासनकाल में घासीराम छाबड़ा ने सांगानेर में गोश्री के मन्दिर में चढ़ाई ।

६०४. प्रति सं० १९ । पत्र सं० १९० । ले० काल सं० १८२६ मंगसिर बुदी १४ । वै० सं० ७८ । छ भण्डार ।

६०५. प्रति सं० २० । पत्र सं० १३२ । ले० काल × । वै० सं० २२३ । छ भण्डार ।

६०६. प्रति सं० २१ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १७५९ मंगसिर बुदी ८ । वै० सं० ३०२ ।
विशेष—महात्मा धनराज ने प्रतिलिपि की थी ।

६०७. प्रति सं० २२ । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १६७४ ज्येष्ठ सुदी २ । वै० सं० ३७५ । छ भण्डार ।

६०८. प्रति सं० २३ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १६८८ पौष सुदी ५ । वै० सं० ३४३ । छ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति तदाम्नाये खंडेलवालान्वये पहाड्या साह श्री कान्हा इदं पुस्तकं लिखापितं ।

६०९. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १३१ । ले० काल × । वै० सं० १८७३ । छ भण्डार ।

६१०. प्रश्नोत्तरोद्धार ... । पत्र संख्या ५० । आ०—१०^१/_२ × ५^३/_४ इन्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
आचार शास्त्र । २० काल—× । ले० काल—सं० १९०५ सावन बुदी ५ । अपूर्ण । वै० सं० १९९ । छ भण्डार ।

विशेष—चूरु नगर में स्थौजीराम कोठारी ने प्रतिलिपि कराई ।

६११. प्रशस्तिकाशिका—बालकृष्ण । पत्र संख्या १९ । आ० ९^१/_२ × ४^३/_४ इन्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—धर्म । २० काल—× । ले० काल—सं० १८४२ कार्तिक बुदी ८ । वै० सं० २७८ । छ भण्डार ।

विशेष—बख्तराम के शिष्य शंभु ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—नत्वा गणपति देवं सर्व विघ्न विनाशनं ।

गुरुं च करुणानाथं ब्रह्मानंदाभिधानकं ॥१॥

प्रशस्तिकाशिका दिव्या बालकृष्णेन रच्यते ।

सर्वेषामुपकाराय लेखनाय त्रिपाठिना ॥ २ ॥

चतुर्णामपि वर्णानां क्रमतः कार्यकारिका ।

लिख्यते सर्वविद्यार्थि प्रबोधाय प्रशस्तिका ॥ ३ ॥

यस्या लेखन मात्रेण विद्याकीर्तिपगोपि च ।

प्रतिष्ठा लभ्यते शीघ्रमनायामेन धीमता ॥ ४ ॥

६१२. प्रातः क्रिया..... । पत्र सं० ४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार ।
२० काल—X । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० १६१६ । ट भण्डार ।

६१३. प्रायश्चित्त ग्रंथ..... । पत्र सं० ३ । आ० १३×६ इन्च । भाषा—संस्कृत । विषय—किये हुए
दोषों की आलोचना । २० काल—X । ले० काल—X । अपूर्ण । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

६१४ प्रायश्चित्त विधि—अकलंक देव । पत्र सं० १० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—किये हुए दोषों की आलोचना । २० काल—X । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

६१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल—X । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

विशेष—१० पत्र में आगे अन्य ग्रंथों के प्रयश्चित्त पाठों का संग्रह है ।

६१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १६३४ चैत्र बुदी १ । वे० सं० ११७ । व भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालाल ने जोबनेर के मंदिर जयपुर प्रतिलिपि की थी ।

६१७. प्रति सं० ४ । ले० काल—X । वे० सं० ५२३ । ड भण्डार ।

६१८. प्रति सं० ५ । ले० काल—सं० १७४४ । वे० सं० २४४ । च भण्डार ।

विशेष—आचार्य महेन्द्रकीर्ति ने पूंवावती (अंवावती) में प्रतिलिपि की ।

६१९. प्रति सं० ५ । ले० काल—सं० १७६६ । वे० सं० ८ । व्य भण्डार ।

विशेष—बगरू नगर में पं० हीरानंद के शिष्य पं० चोखचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

६२०. प्रायश्चित्त विधि..... । पत्र सं० ५६ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—किये हुए
दोषों की आलोचना । २० काल—X । ले० काल सं० १८०५ । अपूर्ण । वे० सं०—१२८० । अ भण्डार ।

विशेष—२२ वां तथा २६ वां पत्र नहीं है ।

६२१. प्रायश्चित्त विधि..... । पत्र सं० ६ । आ० ८^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—किये
हुये दोषों का परचाताप । २० काल—X । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० १२८१ । अ भण्डार ।

६२२. प्रायश्चित्त विधि—भ० एकसंधि । पत्र सं० ४ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
किये हुए दोषों की आलोचना । २० काल—X । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० ११०७ । अ भण्डार ।

६२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल—X । वे० सं० २४५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठासार का दशम अध्याय है ।

६२४. प्रति सं० ३ । ले० काल सं० १७६६ । वे० सं० ३३ । व्य भण्डार ।

६२५. प्रायश्चित्त शास्त्र—इन्द्रनन्दि । पत्र सं० १४ । आ० १०^३/_४ इञ्च । भाषा—प्राकृत ।
विषय—किये हुए दोषों का परचाताप । २० काल—X । ले० काल—X । पूर्ण । वे० सं० १६३ । अ भण्डार ।

६२६. प्रायश्चित्त शास्त्र..... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—गुजराती (लिपि

देवनागरी) विषय—किये हुए दोषों की आलोचना २० काल-× । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० १९६८ । ट भण्डार ।

६२७. प्रायश्चित्त समुच्चय टीका—नंदिगुरु । पत्र सं० ८ । आ० १२×६ । भाषा—संस्कृत । विषय—किये हुए दोषों की आलोचना । २० काल-× । ले० काल-सं० १९३४ चैत्र बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ११८ । ख भण्डार ।

६२८. प्रौषध दोष वर्णन... । पत्र सं० १ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-× । ले० काल-× । वे० सं० १४७ । पूर्ण । छ भण्डार ।

६२९. बाईस अभद्र्य वर्णन—बाबा दुलीचन्द्र । पत्र सं० ३२ । आ० १० $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{3}{4}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—श्रावकों के नखाने योग्य पदार्थों का वर्णन । २० काल-सं० १९४१ बैशाख सुदी ५ । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ५३२ । क भण्डार ।

६३०. बाईस अभद्र्य वर्णन... × । पत्र सं० ९ । आ० १०×७ । भाषा—हिन्दी । विषय—श्रावकों के नखाने योग्य पदार्थों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३३ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति संशोधित है ।

६३१. बाईस परीषह वर्णन—भूधरदास । पत्र सं० ६ । आ० ९×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—मुनियों द्वारा सहन किये जाने योग्य परीषहों का वर्णन । २० काल १८ वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९९७ । अ भण्डार ।

६३२. बाईस परीषह... × । पत्र सं० ६ । आ० ९×४ । भाषा—हिन्दी । विषय—मुनियों के सहने योग्य परीषहों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९९७ । इ भण्डार ।

६३३. बालाबिबेध (एमांकार पाठ का अर्थ)... × । पत्र सं० २ । आ० १०×४ $\frac{1}{2}$ । भाषा—प्राकृत, हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८६ । छ भण्डार ।

विशेष—मुनि माणिक्यचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

६३४. बुद्धि विलास—बखतराम साह । पत्र सं० ७५ । आ० ७×६ । भाषा—हिन्दी । विषय—आधार शास्त्र । २० काल सं० १८२७ मंगसिर सुदी २ । ले० काल सं० १८३२ । पूर्ण । वे० सं० १८८१ । ट भण्डार ।

६३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० १९५५ । ट भण्डार ।

विशेष—बखतराम साह के पुत्र जीवणराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

६३६. ब्रह्मचर्यव्रत वर्णन... × । पत्र सं० ४ । आ० ८×५ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । वे० पूर्ण । वे० सं० २३१ । झ भण्डार ।

६३७. बोधसार... × । पत्र सं० ३७ । आ० १२×५ $\frac{1}{2}$ । भाषा—हिन्दी विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १९२८ । काती सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १२५ । ख भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ बीसपंथ की आम्नाय की मान्यतानुसार है ।

६३८. भगवद्गीता (कृष्णार्जुन संवाद).....X । पत्र सं० २२ मे ४६ । आ० ६३X५ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—वैदिक साहित्य । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण वे० सं० १५६७ । ट भण्डार ।

६३९. भगवती आराधना—शिवाचार्य । पत्र सं० ३२१ । आ० ११३X५३ इच्छ । भाषा—प्राकृत । विषय—मुनि धर्म वर्णन । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण वे सं० ५४९ । क भण्डार ।

६४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११२ । ले० काल X । वे० सं० ५५० । क भण्डार ।

विशेष—पत्र ६६ तक संस्कृत में गाथाओं के ऊपर पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं ।

६४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०३ । ले० काल X । वे० सं० २५९ च भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ एवं अन्तिम पत्र बाद में लिखकर लगाये गये हैं ।

६४२. प्रति सं० ४ । २६५ । ले० काल X । वे० सं० २६० च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

६४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१ ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ६३ । ज भण्डार ।

विशेष—कहीं २ संस्कृत में टीका भी दी है ।

६४४. भगवती आराधना टीका—अपराजितसूरि श्रीनंदिगण । पत्र सं० ४३४ । आ० १२X६ इच्छ । भाषा—संस्कृत । विषय—मुनि धर्म वर्णन । २० काल X । ले० काल सं० १७६३ माघ बुदी ७ पूर्ण । वे० सं० २७६ । अ भण्डार ।

६४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१५ । ले० काल सं० १५६७ वैशाख बुदी ६ । वे० सं० ३३१ । अ भण्डार ।

६४६. भगवती आराधना भाषा—पं० सदासुखकासलीवाल । पत्र सं० ६०७ । आ० १२३X८३ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६०८ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५४८ । क भण्डार ।

६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३० । ले० काल सं० १६५५ माघ बुदी १३ । वे० सं० ५६० । क भण्डार ।

६४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७२२ । ले० काल सं० १६११ जेठ सुदी ९ । वे सं० ६६५ । च भण्डार ।

६४९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७ से ५१९ । ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० २५३ । ज भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ हीरालालजी बगडा का है । मिति १६४२ माघ सुदी १० को आचार्य जी के कर्मदहन व्रत के उद्यापन में चढ़ाई ।

६५०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३०५ । ज भण्डार ।

६५१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३२५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे सं० १६६७ । ट भण्डार ।

६५१. भावदीपक—जोधराज गोदीका । पत्र सं० १ से २७७ । आ० १०×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५६ । च भण्डार ।

६५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल—सं० १८५७ पौष सुदी १५ । अपूर्ण । वे० सं० ६५६ । च भण्डार ।

६५३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७३ । २० काल × । ले० काल—सं० १९०४ कार्तिक सुदी १० । वे० सं० २५४ । ज भण्डार ।

६५४. भावनासारसंग्रह—चामुण्डराय । पत्र सं० ४१ । आ० ११×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल—× । ले० काल—सं० १५१६ श्रावण बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १८४ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५१६ वर्षे श्रावण बुदी अष्टमी सोमवासरे लिखितं बाई धानी कर्मक्षयनिमित्तं ।

६५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १५३१ फागुण बुदी ५५ । वे० सं० २११६ । ट भण्डार ।

६५६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल—× । अपूर्ण । वे० सं० २१३६ । ट भण्डार ।

विशेष—७४ से आगे के पत्र नहीं हैं ।

६५७. भावसंग्रह—देवसेन । पत्र सं० ४९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल—× । ले० काल—सं० १६०७ फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ कर्ता श्री देवसेन श्री विमलसेन के शिष्य थे । प्रशस्ति निम्नप्रकार है:—

संवत् १६०७ वर्षे फागुण वदि ७ दिने बुधवासरे विशाखानक्षत्रे श्री आदिनाथचैत्यालये तक्षकगढ महादुर्गे महाराज श्री रामचंद्रराजप्रवर्तमाने श्री मूलसंधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा..... ।

६५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४५ । ले० काल—सं० १६०४ भाद्रपद सुदी १५ । वे० सं० ३२६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है:—

संवत् १६०४ वर्षे भाद्रपद सुदी पूर्णिमातिथौ भौमदिने शतभिषा नाम नक्षत्रे धृतनाम्नियोगे सुरित्राण सनेमसाहिराज्यप्रवर्तमाने सिकंदराबादशुभस्थाने श्रीमत्काष्ठासंधे माथुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीमलयकीर्ति देवाः तत्पट्टे भट्टारक श्रीगुणभद्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्रीभानुकीर्ति तस्य शिक्षणी वा० मोमा योग्य भावसंग्रहाख्य शास्त्रं प्रदत्तं ।

६५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल—× । वे० सं० ३२७ । अ भण्डार ।

६६०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४९ । ले० काल—सं० १८६४ पौष सुदी १ । वे० सं० ५५८ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६६१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ से ४५ । ले० काल-सं० १५६४ काणुण बुदी ५ । अपूर्ण ।
वे० सं० २१६३ । ट भण्डार ।

६६२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४० । ले० काल-सं० १५७१ अषाढ बुदी ११ । वे० सं० २१६६ ।
ट भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्नप्रकार है—

संवत् १५७१ वर्षे आषाढ बदि ११ आदित्यवारे पेरोजा साहे । श्री मूलसंघे पंडितजिएदामेन लिखापितं ।

६६३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० २१७६ । ट भण्डार ।

विशेष—६ से आगे पत्र नहीं है ।

६६४. भावसंग्रह—श्रुतमुनि । पत्र सं० ५६ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—
धर्म । १० काल-× । ले० काल-सं० १७६२ । अपूर्ण । वे० सं० ३१६ । अ भण्डार ।

विशेष—बीसवां पत्र नहीं है ।

६६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० १३३ । ख भण्डार ।

६६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल-सं० १७८३ । वे० सं० ५६६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

६६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल-× । वे० सं० १८४१ । ट भण्डार ।

विशेष—कहीं २ संस्कृत में अर्थ भी दिये हैं ।

६६८. भावसंग्रह—पं० वामदेव । पत्र सं० २७ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
धर्म । १० काल-× । ले० काल-सं० १८२८ । पूर्ण । वे० सं० ३१७ । अ भण्डार ।

६६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० १३४ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० वामदेव की पूर्ण प्रशस्ति दी हुई है । २ प्रतियों का मिश्रण है । अन्त के पृष्ठ पानी में भीगे
हुये हैं । प्रति प्राचीन है ।

६७०. भावसंग्रह..... । पत्र सं० १४ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।
१० काल-× । ले० काल-× । वे० सं० १३५ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । १४ से आगे पत्र नहीं है ।

६७१. मनोरथमाला..... । पत्र सं० १ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
१० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ५७० । अ भण्डार ।

६७२. मरकतविलास—पन्नालाल । पत्र सं० ६१ । आ० १२×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
श्रावक धर्म वर्णन । १० काल-× । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६६२ । च भण्डार ।

६७३. मिथ्यात्वखंडन—बख्तराम । पत्र सं० ५८ । आ० १४×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।
विषय—धर्म । १० काल-सं० १८२१ पौष बुदी ५ । ले० काल-सं० १८६२ । पूर्ण । वे० सं० ५७७ । क भण्डार ।

६७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७० । ले० काल-× । वे० सं० ६७ । ग भण्डार ।

६७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६१ । ले० काल-सं० १८२४ । वे० सं० ६६४ । च भण्डार ।

६७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३७ से १०५ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० २०३६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३७ पत्र नहीं हैं । पत्र फटे हुये हैं ।

६७७. मित्थात्वखंडन..... । पत्र सं० १७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म ।
२० काल-× । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० १४६ । ख भण्डार ।

विशेष—१७ से आगे पत्र नहीं है ।

६७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ५६४ । ङ भण्डार ।

६७९. मूलाचार टीका—आचार्य वसुनन्दि । पत्र सं० ३६८ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—
प्राकृत संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-× । ले० काल-सं० १८२६ मंगसिर बुदी ११ । पूर्ण ।
वे० सं० २७५ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७३ । ले० काल-× । वे० सं० ५८० । क भण्डार ।

६८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५१ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ५६८ । ङ भण्डार ।

विशेष—५१ से आगे पत्र नहीं है ।

६८२. मूलाचारप्रदीप—सकलकीर्ति । पत्र सं० १२६ । आ० १२½×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आचारशास्त्र । २० काल-× । ले० काल-सं० १८२८ । पूर्ण । वे० सं० १६२ ।

विशेष—प्रतिलिपि जयपुर में हुई थी ।

६८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल-× । वे० सं० ८४६ । अ भण्डार ।

६८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८१ । ले० काल-× । वे० सं० २७७ । च भण्डार ।

६८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५५ । ले० काल-× । वे० सं० ६८ । ङ भण्डार ।

६८६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६३ । ले० काल-सं० १८३० पौष सुदी २ । वे० सं० ६३ ।

अ भण्डार ।

विशेष—पं० चोखचंद के शिष्य पं० रामचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

६८७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८० । ले० काल-सं० १८५६ कार्तिक बुदी ३ । वे० सं० १०१ ।

ब भण्डार ।

विशेष—महात्मा सर्वमुख ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६८८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १३७ । ले० काल-सं० १८२६ चैत बुदी १२ । वे० सं० ४५५ ।

ख भण्डार ।

६८९. मूलाचारभाषा—ऋषभदास । पत्र सं० ३० से ६३ । आ० १०×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विषय—आचार शास्त्र । २० काल-सं० १८८८ । ले० काल-सं० १८६१ । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । च भण्डार ।

६६०. मूलाचार भाषा.....। पत्र सं० ३० मे ६३। आ० १०१×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—
आचार शास्त्र। २० काल—X। ले० काल—X। अपूर्ण। वे० सं० ५६७।

६६१. प्रति सं० २। पत्र सं० १ से १००, ३४६ से ३६०। आ० १०१×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी।
विषय—आचार शास्त्र। २० काल—X। ले० काल—X। अपूर्ण। वे० सं० ५६६। छ भण्डार।

६६२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १ से ८१, १०१ से ६००। ले० काल—X। अपूर्ण। वे० सं० ६००।

६६३. मौल्यपैडी—बनारसीदास। पत्र सं० १। आ० ११३×६३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—
धर्म। २० काल—X। ले० काल—X। पूर्ण। वे० सं० ७६५। अ भण्डार।

६६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल—X। वे० सं० ६०२। छ भण्डार।

६६५. मोक्षमार्गप्रकाशक—पं० टोडरमल। पत्र सं० ३२१। आ० १२१×८ इञ्च। भाषा—हूंदारी
(राजस्थानी) गद्य। विषय—धर्म। २० काल—X। ले० काल—सं० १६५४ श्रावण सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ५८३।
क भण्डार।

त्रिगोष—हूंदारी शब्दों के स्थान पर शुद्ध हिन्दी के शब्द भी लिखे हुये हैं।

६६६. प्रति सं० २। पत्र सं० २६२। ले० काल—सं० १६५४। वे० सं० ५८४। क भण्डार।

६६७. प्रति सं० ३। पत्र सं० २१२। ले० काल—सं० १६४०। वे० सं० ५६५। क भण्डार।

६६८. प्रति सं० ४। पत्र सं० २१२। ले० काल—सं० १८८८ वैशाख बुदी ६। वे० सं० ६८।

ग भण्डार।

विशेष—छात्रलाल साह ने प्रतिलिपि कराई थी।

६६९. प्रति सं० ५। पत्र सं० २२८। ले० काल—X। वे० सं० ६०३। छ भण्डार।

१०००. प्रति सं० ६। पत्र सं० २७६। ले० काल—X। वे० सं० ६५८। च भण्डार।

१००१. प्रति सं० ७। पत्र सं० १०१ से २१६। ले० काल—X। अपूर्ण। वे० सं० ६५९।

च भण्डार।

१००२. प्रति सं० ८। पत्र सं० १२३ से २२५। ले० काल—X। अपूर्ण। वे० सं० ६६०। च भण्डार।

१००३. प्रति सं० ९। पत्र सं० ३५१। ले० काल—X। वे० सं० ११९। भू भण्डार।

१००४. यतिदिनचर्या—देवसूरि। पत्र सं० २१। आ० १०३×४३ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—
आचार शास्त्र। २० काल—X। ले० काल—सं० १६६८ चैत सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १६२६। ट भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री सुविहितशिरोमणिश्रीदेवसूरिविरचिता यतिदिनचर्या संपूर्णा।

प्रशस्तिः—संवत् १६६८ वर्षे चैत्रमासे शुक्लपक्षे नवमीभौमवासरे श्रीमत्तपामच्छाधिराज भट्टारक
श्री श्री ५ त्रिजयमेन सूरेश्वराय लिखितं ज्योतिषी उधव श्री गुजाउलपुरे।

१००५. यत्याचार—आ० वसुनंदि। पत्र सं० ६। आ० १२३×५३ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—

मुनि धर्म वर्णन । १० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० १२० । अ भण्डार ।

१००६. रत्नकरण्डश्रावकाचार—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं० ७ । आ० १०^३/_४×^५/_६ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । १० काल-× । ले० काल-× । वे० सं० २००६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम परिच्छेद तक पूर्ण है । ग्रंथ का नाम उपासकाध्याय तथा उपासकाचार भी है ।

१००७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल-× । वे० सं० २६४ । अ भण्डार ।

विशेष—कहीं कहीं संस्कृत में टिप्पणियां दी हुई है । १६३ श्लोक हैं ।

१००८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल-× । वे० सं० ६१२ । क भण्डार ।

१००९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल-सं० १६३८ माह सुदी १० । वे० सं०

१५६ । ख भण्डार ।

विशेष—कहीं २ संस्कृत में टिप्पण दिया है ।

१०१०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७७ । ले० काल-× । वे० सं० ६३० । ड भण्डार ।

१०११. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६३१ । ड भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

१०१२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४८ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६३३ । ड भण्डार ।

१०१३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३८-५६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६३२ । ड भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

१०१४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२ । ले० काल-× । वे० सं० ६३४ । ड भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी सूरजमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१०१५. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४० । ले० काल-× । वे० सं० ६३५ । ड भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में पन्नालाल संघी कृत टीका भी है । टीका सं० १६३१ में की गयी थी ।

१०१६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २६ । ले० काल-× । वे० सं० ६३७ । ड भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

१०१७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ४२ । ले० काल-सं० १६५० । वे० सं० ६३८ । ड भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका सहित है ।

१०१८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १७ । ले० काल-× । वे० सं० ६३९ । ड भण्डार ।

१०१९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३८ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० २६१ । च भण्डार ।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नहीं है । संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है ।

१०२०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० २० । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० २६२ । च भण्डार ।

१०२१. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ११ । ले० काल-× । वे० सं० २६३ । च भण्डार ।

१०२२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ९ । ले० काल-× । वे० सं० २६४ । च भण्डार ।

१०२३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १३ । ले० काल-× । वे० सं० २६५ । च भण्डार ।
 १०२४. प्रति सं० १९ । पत्र सं० ११ । ले० काल-× । वे० सं० ७४० । च भण्डार ।
 १०२५. प्रति सं० २० । पत्र सं० १३ । ले० काल-× । वे० सं० ७४२ । च भण्डार ।
 १०२६. प्रति सं० २१ । पत्र सं० १३ । ले० काल-× । वे० सं० ७४३ । च भण्डार ।
 १०२७. प्रति सं० २२ । पत्र सं० १० । ले० काल-× । वे० सं० ११० । छ भण्डार ।
 १०२८. प्रति सं० २३ । पत्र सं० १० । ले० काल-× । वे० सं० १४४ । ज भण्डार ।
 १०२९. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । झ भण्डार ।
 १०३०. प्रति सं० २५ । पत्र सं० १२ । ले० काल-सं० १७२१ ज्येष्ठ सुदी ३ । वे० सं० १५८ ।

ञ भण्डार ।

१०३१. रत्नकरण्डश्रावकाचार टीका—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ४३ । आ० १०३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-× । ले० काल-सं० १८६० श्रावण बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३१६ ।
 अ भण्डार ।

१०३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल-× । वे० सं० १०६५ । अ भण्डार ।
 १०३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१-५३ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ३८० । अ भण्डार ।
 १०३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६-६२ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ३२६ । झ भण्डार ।
 विशेष—इसका नाम उपामकाध्ययन टीका भी है ।

१०३५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १६ । ले० काल-× । वे० सं० ६३६ । ङ भण्डार ।
 १०३६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल-सं० १७७६ फागुण सुदी ५ । वे० सं० १७४ ।

अ भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति की ग्राम्नाय में खंडेलवाल जातीय भौसा गोत्रोत्पन्न साह छजमलजी के वंशज साह चन्द्रभाण की भार्या ल्होडी ने ग्रंथ की प्रतिलिपि कराकर आचार्य चन्द्रकीर्ति के शिष्य हर्षकीर्ति के लिये कर्मलय निमित्त भेंट की ।

१०३७. रत्नकरण्डश्रावकाचार—पं० सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० १०४२ । आ० १२३×८३ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—आचार शास्त्र । २० काल सं० १६२० चैत्र बुदी १४ । ले० काल सं० १६४१ । पूर्ण । वे० सं० ६१६ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ २ वेष्टनों में है । १ से ४५५ तथा ४५६ से १०४२ तक है । प्रति सुन्दर है ।

१०३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६२० । क भण्डार ।
 १०३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६१ से १७६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६४२ । क भण्डार ।
 १०४०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१६ । ले० काल-ग्राम्नाय बुदि ८ सं० १६२१ । वे० सं० ६६६ ।
 च भण्डार ।

१०४१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६७० । च भण्डार ।

विशेष—नेमीचंद कालख वाले ने लिखा और सदासुखजी डेढाकाने लिखाया—यह ग्रन्थ में लिखा हुआ है ।

१०४२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३४६ । ले० काल-× । वे० सं० १८२ । छ भण्डार ।

विशेष—“इस प्रकार मूलग्रंथ के प्रसाद तै सदासुखदास डेडाका का अपने हस्त तै लिखि ग्रंथ समाप्त किया ।”

अन्तिम पृष्ठ पर ऐसा लिखा है ।

१०४३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २२१ । ले० काल-सं० १६६३ कार्तिक बुदी ५५ । वे० सं० १६८ ।

छ भण्डार ।

१०४४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५३६ । ले० काल-सं० १६५० वैशाख सुदी ६ । वे० सं० ।

क भण्डार ।

विशेष—इस ग्रंथ की प्रतिलिपि स्वयं सदासुखजी के हाथ से लिखे हुये सं० १६१६ के ग्रंथ से सामोद में प्रतिलिपि की गई है । महासुख सेठी ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

१०४५. रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा—नथमल । पत्र सं० २६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-सं० १६२० माघ सुदी ६ । ले० काल-× । वे० सं० ६२२ । पूर्ण । क भण्डार ।

१०४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल-× । वे० सं० ६२३ । क भण्डार ।

१०४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल-× । वे० सं० ६२१ । क भण्डार ।

१०४८. रत्नकरण्डश्रावकाचार—संधी पन्नालाल । पत्र सं० ४४ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-सं० १६३१ पौष बुदी ७ । ले० काल-सं० १६५३ मंगसिर सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ६१४ । क भण्डार ।

१०४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल-× । वे० सं० ६१४ । क भण्डार ।

१०५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल-× । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

१०५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७ । ले० काल-× । वे० सं० १८६ । छ भण्डार ।

१०५२. रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा..... । पत्र सं० १०१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-सं० १६५७ । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ६१७ । क भण्डार ।

१०५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७० । ले० काल-सं० १६५३ । वे० सं० ६१६ । क भण्डार ।

१०५४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल-× । वे० सं० ६१३ । क भण्डार ।

१०५५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ से १५६ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० ६४० । छ भण्डार ।

१०५६. रत्नमाला—आचार्य शिवकोटि । पत्र सं० ४ । आ० ११ $\frac{१}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भः—

सर्वज्ञं सर्ववागीशं वीरं मारमदायहं ।

प्रणमामि महामोहशांतये मुक्तिप्राप्तये ॥१॥

मारं यत्सर्वमारेषु वृद्धं यद्वदिनेष्वपि ।

अनेकांतमयं वंदे तदर्हन् वचनं सदा ॥२॥

अन्तिम—यो नित्यं पठति श्रीमान् रत्नमालामिमांपरा ।

सशुद्धचरणो नूतं शिवकोटित्वमाप्नुयान् ॥

इति श्री समन्तभद्र स्वामी शिष्य शिवकोट्याचार्य विरचिता रत्नमाला समाप्ता ।

१०५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल-× । अपूर्ण । वे० सं० २११५ । ट भण्डार ।

१०५८. रयणसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० १० । आ० १०३×५३ इञ्च । भाषा—प्राकृत ।

विषय—आचार शास्त्र । २० काल-× । ले० काल-सं १८८३ । पूर्ण । वे० सं० ६४६ । अ भण्डार ।

१०५९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल-× । वे० सं० १८१० । ट भण्डार ।

१०६०. रात्रि भोजन त्याग वर्णन..... पत्र सं० १६ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—आचार शास्त्र । २० काल-× ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ४८० । अ भण्डार ।

१०६१. राधा जन्मोत्सव..... पत्र सं० १ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ११५१ । अ भण्डार ।

१०६२. रक्तविभाग प्रकरण..... पत्र सं० २६ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

आचार शास्त्र । २० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ५७ । ज भण्डार ।

१०६३. लघुसामायिक पाठ..... पत्र सं० २ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।

२० काल-× । ले० काल-सं० १८१४ । पूर्ण । वे० सं० २०२१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्तिः—

१८१४ अगहन सुदी १५ सनै बुन्दी नग्रे नेमनाथ चैत्याले लिखितं श्री देवेंद्रकृति आचारज सीरोज के पट्ट स्वयं हस्ते ।

१०६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल-× । वे० सं० १२४३ । अ भण्डार ।

१०६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ । ले० काल-× । वे० सं० १२२० । अ भण्डार ।

१०६६. लघुसामायिक..... पत्र सं० ३ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत—हिन्दी । विषय—

धर्म । २० काल-× । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ६४० । क भण्डार ।

१०६७. लाटीसंहिता—राजमल्ल । पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार

शास्त्र । २० काल-सं० १६४१ । ले० काल-× । पूर्ण । वे० सं० ८८ ।

१०६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७३ । ले० काल-सं० १८६७ वैशाख बुदी.....रविवार

वे० सं० ६६५ । क भण्डार ।

१०६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल-सं० १८६७ मंगसिर बुदी ३ । वे० सं० ६६६ ।

क भण्डार ।

विशेष—महात्मा शंभूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१०७०. वज्रनाभि चक्रवर्ति की भावना—भूधरदास । पत्र सं० २ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पत्र । विषय—धर्म । २० काल—× । ले० काल—× पूर्ण । वे० सं० ६६७ । अ भण्डार ।

विशेष—पार्वपुराण में से है ।

१०७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल—सं० १८८८ पौष सुदी २ । वे० सं० ६७२ । च भण्डार ।

१०७२. वनस्पतिसत्तरी—मुनिचन्द्र सूरि । पत्र सं० ५ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल—× । ले० काल—× । पूर्ण । वे० सं० ८४१ । अ भण्डार ।

१०७३. वसुनंदिश्रावकाचार—आ० वसुनंदि । पत्र सं० ५६ । आ० १०½×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—श्रावक धर्म । २० काल—× । ले० काल—सं० १८६२ पौष सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २०६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रंथ का नाम उरासकाध्ययन भी है । जयपुर में श्री पिरागदास ब्राकलीवाल ने प्रतिलिपि करायी । संस्कृत में भाषान्तर दिया हुआ है ।

१०७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से २३ । ले० काल—सं० १९११ पौष सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० ८४८ । अ भण्डार ।

विशेष—सारंगपुर नगर में पाण्डे दासू ने प्रतिलिपि की थी ।

१०७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल—सं० १८७७ भाद्रवा बुदी ११ । वे० सं० ६५२ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा शंभूनाथ ने सवाई जयपुरमें प्रतिलिपि की थी । गाथाओं के नीचे संस्कृत टीका भी दी है ।

१०७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४४ । ले० काल—× । वे० सं० ८७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३३ पत्र प्राचीन प्रति के हैं तथा शेष फिर लिखे गये हैं ।

१०७७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५१ । ले० काल—× । वे० सं० ४५ । च भण्डार ।

१०७८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २२ । ले० काल—सं० १५६८ भाद्रवा बुदी १२ । वे० सं० २६६ ।

अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत् १५६८ वर्षे भाद्रवा बुदी १२ गुरु दिने पुष्यनक्षत्रेऽमृतसिद्धिनामउपयोगे श्रीपथस्थाने मूलसंधे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्री प्रभाचन्द्रदेवा तस्य शिष्य मंडलाचार्य धर्मकीर्ति द्वितीय मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र एतेषां मध्ये मंडलाचार्य श्री धर्मकीर्ति तत् शिष्य मुनि वीरनंदिने इदं शास्त्रं लिखापितं । पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि करके सं० १८६७ में पार्वनाथ (सोनियों) के मंदिर में चढाया ।

१०७९. वसुनंदिश्रावकाचार भाषा—पन्नालाल । पत्र सं० २१८ । आ० १२½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—आचार शास्त्र । २० काल—सं० १६३० कार्तिक बुदी ७ । ले० काल—सं० १६३८ माह बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६५० । क भण्डार ।

१०८०. प्रति सं० २ । ले० काल सं० १६३० । वे० सं० ६५१ । क भण्डार ।

१०८१. वार्त्तासंग्रह..... पत्र सं० २५ से ६७ । आ० ६×५^१/_२ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

१०८२. विद्वज्जनबोधक..... पत्र सं० २७ । आ० १२^१/_२×८^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७६ । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । ४ अध्याय तक है ।

१०८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४० । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है । पत्र क्रम से नहीं है और कितने ही बीच के पत्र नहीं हैं । दो प्रतियों का मिश्रण है ।

१०८४. विद्वज्जनबोधक भाषा—संघी पन्नालाल । पत्र सं० ८६० । आ० १४×७^१/_२ इञ्च । भाषा—
संस्कृत, हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६३६ माघ सुदी ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७७ ।
छ भण्डार ।

१०८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४३ । ले० काल सं० १६४२ आसोज सुदी ४ । वे० सं० ६७७ ।
छ भण्डार ।

विशेष—छाजूलाल साह के पुत्र नन्दलाल ने अपनी माताजी के व्रतोद्यापन के उपलक्ष में ग्रन्थ मन्दिर
दीवान अमरचन्दजी के में चढ़ाया । यह ग्रन्थ के द्वितीयखण्ड के अन्त में लिखा है

१०८६. विद्वज्जनबोधकटीका..... पत्र सं० ४४ । आ० ११^१/_२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । क भण्डार ।

विशेष—प्रथमखण्ड के पाचवें उल्लास तक है ।

१०८७. विवेकविलास..... पत्र सं० १८ । आ० १०^१/_२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार
शास्त्र । २० काल सं० १७७० फागुण बुदी । ले० काल सं० १८८८ चैत बुदी ३ । वे० सं० ८२ । क भण्डार ।

१०८८. वृहत्प्रतिक्रमण..... पत्र सं० १६ । आ० १०×४^१/_२ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४८ । ट भण्डार ।

१०८९. प्रति सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २१५६ । ट भण्डार ।

१०९०. प्रति सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० २१७६ । ट भण्डार ।

१०९१. वृहत्प्रतिक्रमण..... पत्र सं० १६ । आ० ११×४^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । विषय—
धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३ । अ भण्डार ।

१०९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १५६ । अ भण्डार ।

१०६३. बृहत्प्रतिक्रमण । पत्र सं० ३१ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२२ । ट भण्डार ।

१०६४. व्रतों के नाम..... । पत्र सं० ११ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६ । अ भण्डार ।

१०६५. व्रतनामावली..... । पत्र सं० १२ । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल सं० १६०४ । पूर्ण । वे० सं० २६५ । ख भण्डार ।

१०६६. व्रतसंख्या..... । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५७ । अ भण्डार ।

विशेष—१५१ व्रतों एवं ४१ मंडल विधानों के नाम दिये हुये हैं ।

१०६७. व्रतसार..... । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८१ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल २२ पद्य हैं ।

१०६८. व्रतोद्यापनश्रावकाचार..... । पत्र सं० ११३ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३ । घ भण्डार ।

१०६९. व्रतोपवासवर्णन..... । पत्र सं० ५७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३८ । अ भण्डार ।

विशेष—५७ से आगे के पत्र नहीं हैं ।

११००. व्रतोपवासवर्णन । पत्र सं० ४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४७८ । अ भण्डार ।

११०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४७९ । अ भण्डार ।

११०२. षट् आवश्यक (लघुमामायिक)—महाचन्द्र । पत्र सं० ३ । विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६४० । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । ख भण्डार ।

११०३. षट् आवश्यकविधान—पन्नालाल । पत्र सं० १४ । आ० १४×७ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल सं० १६३२ । ले० काल सं० १६३४ बैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ७४४ । ड भण्डार ।

११०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १६३२ । वे० सं० ७४५ । ड भण्डार ।

११०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ४७६ । ड भण्डार ।

विशेष—विद्वज्जन बोधक के तृतीय व पञ्चम उल्लास का हिन्दी अनुवाद है ।

११०६. षट्कर्मोपदेशरत्नमाला (छक्कर्मोपदेश)—महाकवि अमरकीर्ति । पत्र सं० ३ से ७१ ।
 आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—आध्रंश । विषय—आचार शास्त्र । २० काल सं० १२४७ । ले० काल सं० १६२२ चैत्र
 मुदी १३ । वे० सं० ३५६ । च भण्डार ।

विशेष—नागपुर नगरमें खण्डेलवालान्वय पाटनीगौत्रवाले श्रीमतीहरपमदे ने ग्रन्थकी प्रतिलिपि करवायी थी ।

११०७. षट्कर्मोपदेशरत्नमालाभाषा — पांडे लालचन्द । पत्र संख्या १२६ । आ० १२×६ इञ्च ।
 भाषा—हिन्दी । विषय—आचार शास्त्र । २० काल सं० १८१८ माघ मुदी ५ । ले० काल सं० १८४६ शाके १७०५
 भाद्रवा मुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४२६ । अ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी देवकरण ने महात्मा भूरा से जयपुर में प्रतिलिपि करवायी ।

११०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२८ । ले० काल सं० १८६६ माघ मुदी ६ । वे० सं० ६७ । च भण्डार ।

विशेष—पुस्तक पं० सदामुख दिल्लीवालों की है ।

११०९. षट्संहननवर्णन—मकरन्द पद्मावति पुरवाल । पत्र सं० ८ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च ।
 भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १७८६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१५ । क भण्डार ।

१११०. षड्भक्तिवर्णन..... । पत्र सं० २२ से २६ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
 धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६६ । च भण्डार ।

११११. षोडशकारणभावनावर्णनवृत्ति—पं० शिवजिदरूण । पत्र सं० ४६ । आ० ११×५ इञ्च ।
 भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २००४ । ख भण्डार ।

१११२. षोडशकारणभावना—पं० सदामुख । पत्र सं० ८० । आ० १२×७ इञ्च । भाषा हिन्दी गद्य ।
 विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—रत्नकरण्डश्रावकाचार भाषा में से है ।

१११३. षोडशकारणभावना जयमाल—नथमल । पत्र सं० २८ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—
 हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६२५ सावन मुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१६ । क भण्डार ।

१११४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ७४६ । क भण्डार ।

१११५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ७४६ । क भण्डार ।

१११६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७५० । क भण्डार ।

१११७. षोडशकारणभावना..... । पत्र सं० ६४ । आ० १३ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
 धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६६२ कार्तिक मुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ७५३ । क भण्डार ।

विशेष—रामप्रताप ध्यास ने प्रतिलिपि की थी ।

१११८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० ७५४ । क भण्डार ।

१११६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ७५५ । ङ भण्डार ।

११२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ ।

विशेष—३० से आगे पत्र नहीं है ।

११२१. षोडशकारणभावना..... । पत्र सं० १७ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ × ७ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२१ (क) । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संकेत भी दिये हैं ।

११२२. शीलनववाङ्..... । पत्र सं० १ । आ० १० × ४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । रचना—काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२६ । अ भण्डार ।

११२३. श्राद्धपडिकमणसूत्र..... । पत्र सं० ६ । आ० १० × ४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । घ भण्डार ।

विशेष—पं० जसवन्त के पौत्र तथा मानसिंह के पुत्र दीनानाथ के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । गुजराती टव्वा टीका सहित है ।

११२४. श्रावकप्रतिक्रमणभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ५० । आ० ११ $\frac{३}{४}$ × ७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १६३० माघ बुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६८ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्दजी की प्रेरणा से भाषा की गयी थी ।

११२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल × । वे० सं० ६६७ । क भण्डार ।

११२६. श्रावकधर्मवर्णन..... । पत्र सं० १० । आ० १० $\frac{३}{४}$ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—श्रावक धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४६ । च भण्डार ।

११२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४७ । च भण्डार ।

११२८. श्रावकप्रतिक्रमण..... । पत्र सं० २५ । आ० १० $\frac{३}{४}$ × ५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १८२३ आसोज बुदी ११ । वे० सं० १११ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टव्वा टीका सहित है । हुक्मीजीवण ने अहिपुर में प्रतिलिपि की थी ।

११२९. श्रावकप्रतिक्रमण..... । पत्र सं० १५ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६ । ख भण्डार ।

११३०. श्रावकप्रायश्चित्त—वीरसेन । पत्र सं० ७ । आ० १२ × ६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३४ । पूर्ण । वे० सं० १६० ।

विशेष—पं० पन्नालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

११३१. श्रावकाचार—अभित्तिगति । पत्र सं० ६७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६४ । क भण्डार ।

विशेष—कहीं कहीं संस्कृत में टीका भी है । ग्रन्थ का नाम उपासकाचार भी है ।

११३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४४ । च भण्डार ।

११३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८ । छ भण्डार ।

११३४. श्रावकाचार—उमास्वामी । पत्र सं० २३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८६ । अ भण्डार ।

११३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १६२६ आषाढ सुदी २ । वे० सं० २६० । अ
भण्डार ।

११३६. श्रावकाचार—गुणभूषणाचार्य । पत्र सं० २१ । आ० १०^१/_२×४^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६२ वैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति :

संवत् १५६२ वर्षे वैशाख बुदी ४ श्री मूलसंधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ०
श्री पद्मनन्दि देवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवा तदाम्नाये
खंडेलवालान्वये सा० मोत्रे सं० परवत्त तस्य भार्या रोहातपुत्र नेता तस्य भार्या नारंगदे । तत्पुत्र मलिदास तस्य भार्या
अमरी दुतीय पुत्र उर्वा तस्य भार्या वोरवी तत्पुत्र नथमल दुतीय खीवा सा० नरसिंह महादास एतेषामध्ये इदंशास्त्रं
लिखायतं कर्मक्षयनिमित्तं श्रावकाचार । अजिका पदमसिरिज्योम्य बाई नारिग घटापित्तं ।

११३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १५२६ भाद्रवा बुदी १ । वे० सं० ५०१ । अ
भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५२६ वर्षे भाद्रपद १ पक्षे श्री मूलसंधे भ० श्री जिनचन्द्र ब्र० नरसिंह खंडेलवालान्वये
सं० भास्वय भार्या जैश्री पुत्र हाम्य लिखावदन्तु ।

११३८. श्रावकाचार—पद्मनन्दि । पत्र सं० २ से २६ । आ० ११^३/_४×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१०७ ।

विशेष—३६ से आगे भी पत्र नहीं है ।

११३९. श्रावकाचार—पूज्यपाद । पत्र सं० ६ । आ० ६^३/_४×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आचार
शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८५४ वैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १०२ । घ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम उपासकाचार तथा उप.सकाध्ययन भी है ।

११४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८८० वैश्व बुदी १५ । वे० सं० ८६ । छ
भण्डार ।

११४१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १८८४ आषाढ़ बुदी २। वे० सं० ४३। च भण्डार

११४२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८०४। भाद्रवा सुदी ६। वे० सं० १०२।

छ भण्डार।

११४३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० २१५१। ट भण्डार।

११४४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० २१५८। ट भण्डार।

११४५. श्रावकाचार—सकलकीर्ति। पत्र सं० ६६। आ० ८३×६३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—
आचार शास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० २०८८। अ भण्डार।

११४६. प्रति सं० २। पत्र सं० १२३। ले० काल सं० १८५५। वे० सं० ६६३। क भण्डार।

११४७ श्रावकाचारभाषा—दं० भागचन्द। पत्र सं० १८६। आ० १२×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य।
विषय—आचार शास्त्र। २० काल सं० १६२२ आषाढ़ सुदी ८। ले० काल ×। पूर्णा। वे० सं० २८।

विशेष—अमितिगति श्रावकाचार की भाषा टीका है। अन्तिम पत्र पर महावीराष्टक है।

११४८. श्रावकाचार.....। पत्र संख्या १ से २१। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आचार
शास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० २१८२। ट भण्डार।

विशेष—इससे आगे के पत्र नहीं हैं।

११४९. श्रावकाचार.....। पत्र सं० ७। आ० १०^३/_२×४^३/_३ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—आचारशास्त्र।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्णा। वे० सं० १०८। छ भण्डार।

विशेष—६० गाथायें हैं।

११५०. श्रावकाचारभाषा.....। पत्र सं० ५२ से १३१। आ० ९^३/_२×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—
आचार शास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० २०९४। अ भण्डार।

विशेष—प्रति प्राचीन है।

११५१. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० ६६६। क भण्डार।

११५२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १११ से १७४। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० ७०६। छ भण्डार।

११५३. प्रति सं० ४। पत्र सं० ११६। ले० काल सं० १६६४ भाद्रवा बुदी १। पूर्णा। वे० सं० ७१०।

छ भण्डार।

विशेष—गुणभूषण कृत श्रावकाचार की भाषा टीका है। संबत् १५२६ चैत सुदी ५ रविवार को यह
ग्रन्थ जिहानाबाद जैसिहपुरा में लिखा गया था। उस प्रति में यह प्रतिलिपि की गयी थी।

११५४. प्रति सं० ५। पत्र सं० १०८। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० ६८२। च भण्डार।

११५५. श्रुतज्ञानवर्णन ... । पत्र सं० ८ । आ० ११३×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०१ । क भण्डार ।
११५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ७०२ । क भण्डार ।
११५७. समश्लोकीगीता..... । पत्र सं० २ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७४० । ट भण्डार ।
११५८. समकितढाल—आसकरण । पत्र सं० १ । आ० ६ $\frac{१}{२}$ ×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १८३५ । पूर्ण । वे० सं० २१२६ । अ भण्डार ।
११५९. समुद्धातभेद..... । पत्र सं० ४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सिद्धान्त । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८८ । ड भण्डार ।
११६०. सम्मेदशिखर महात्म्य—दीक्षित देवदत्त । पत्र सं० ८१ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । २० काल सं० १६४५ । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० सं० २८२ । अ भण्डार ।
११६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४७ । ले० काल × । वे० सं० ७६५ । ड भण्डार ।
११६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७५ । च भण्डार ।
११६३. सम्मेदशिखरमहात्म्य—लालचन्द । पत्र सं० ६५ । आ० १३×५ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—धर्म । २० काल सं० १८४२ फागुण सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । क भण्डार ।
- विशेष—भट्टारक श्री जगतकीर्ति के शिष्य लालचन्द ने रेवाड़ी में यह ग्रन्थ रचना की थी ।
११६४. सम्मेदशिखरमहात्म्य—मनमुखलाल । पत्र सं० १०६ । आ० ११×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६४१ आसोज बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १०५६ । अ भण्डार ।
- विशेष—रचना संवत् सम्बन्धी दोहा—
- बान वेद शशिगये विक्रमार्क तुम जान ।
अश्वनि सित दशमी सुगुरु ग्रन्थ समापत ठान ॥
- लोहाचार्य विरचित ग्रन्थ की भाषा टीका है ।
११६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १८८४ चैत सुदी २ । वे० सं० ७८ । ग भण्डार ।
११६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८८७ चैत सुदी १५ । वे० सं० ७६६ । ड भण्डार ।
- विशेष—दयोजीरामजी भावसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की ।
११६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १६११ पौष बुदी १५ । वे० सं० २२ । भ भण्डार ।
११६८. सम्मेदशिखरविलास—केशरीसिंह । पत्र सं० ३ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल २०वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६७ । ड भण्डार ।

११६६. सम्मेदशिखर विलास—देवान्नह । पत्र सं० ४ । आ० ११३×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—धर्म । २० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६१ । ज भण्डार ।

११७०. संसारस्वरूप वर्णन पत्र सं० ५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२६ । ज भण्डार ।

११७१. सागारधर्मामृत—पं० आशाधर । पत्र सं० १४३ । आ० १२३×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—श्रावकों के आचार धर्म का वर्णन । २० काल सं० १२६६ । ले० काल सं० १७६८ भादवा बुदी ५ । पूर्ण ।
वे० सं० २२८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ संस्कृत टीका सहित है । टीका का नाम भव्यकुमुदचन्द्रिका है । महाराजा सवाई जयसिंहजी के शासनकाल में आमेर में महात्मा मानजी ने प्रतिलिपि की थी ।

११७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०६ । ले० काल सं० १८८१ फागुण सुदी १ । वे० सं० ७७५ ।
क भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण किशनगढ़ वाले ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की ।

११७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० ७७४ । क भण्डार ।

११७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

११७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५७ । ले० काल × । वे० सं० ११८ । घ भण्डार ।

विशेष—४ मे ४० तक के पत्र क्रिन्नी प्राचीन प्रति के हैं बाकी पत्र दुबारा लिखाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है ।

११७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १५६ । ले० काल सं० १८६१ भादवा बुदी ५ । वे० सं० ७८ । छ
भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वोपज्ञ टीका सहित है । सांगानेर में नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

११७७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १६२८ फागुण सुदी १० । वे० सं० १४६ । ज
भण्डार ।

विशेष—प्रति टब्बा टीका सहित है । रचयिता एवं लेखक दोनों की प्रशस्ति है ।

११७८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४० । ले० काल × । वे० सं० १ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं शुद्ध है ।

११७९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १५६५ फागुण सुदी २ । वे० सं० १८ । अ
भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे पांडे डीडा तेन इदं धर्माभूतनामोपाध्ययनं आचार्य
नेमिचन्द्राय दत्तं । भ० प्रभाचन्द्र देवस्तन् शिष्य सं० धर्मचन्द्राम्नाये ।

११८०. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८ क । अ भण्डार ।

११८१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४१ । ले० काल × । वे० सं० ४४६ । अ भण्डार ।

विशेष—स्वोपज्ञ टीका सहित है ।

११८२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ४५० । अ भण्डार ।

विशेष—मूलमात्र प्रति प्राचीन है ।

११८३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १६६ । ले० काल सं० १५२४ फागुण सुदी १२ । वे० सं० ५०० ।

अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— संवत् १५६४ वर्षे फल्गुन सुदी १२ रविवारसे पुनर्वसुनक्षत्रे श्रीमूलसंघे नन्दिसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्वाचार्यान्वये भ० श्री पचनन्वि तत्पट्टे श्री शुभचन्द्रदेवातत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्र देवातत्पट्टे भ० श्री प्रभाषन्द्रदेवतत्शिष्यमण्डलाचार्य श्री धर्मचन्द्रदेवास्तत्मुख्यशिष्याचार्य श्री नेमिचन्द्रदेवास्तैरियं धर्मामृतनामाशाधरश्रावकाचारटीका भव्यकुमुदचन्द्रिकानाम्नी लिखापितात्मपठनार्थं ज्ञानावरणादिकर्मक्षयार्थं च ।

११८४. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५०६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

११८५. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६५ । अ भण्डार ।

११८६. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २ से ७२ । ले० काल सं० १५६४ भाववा सुदी १ । अपूर्ण । वे०

संख्या २११० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है । लेखक प्रशस्ति पूर्ण है ।

११८७. सातव्यसनस्वाध्याय..... । पत्र सं० १ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल सं० १७८० । पूर्ण । वे० सं० १८७३ ।

विशेष—रूपमञ्जरी भी दी हुई है जिसके आठ पद्य हैं ।

११८८. साधुदिनचर्या..... । पत्र सं० ६ । आ० २३×४३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—आचार

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७४ ।

विशेष—श्रीमत्तपोगणे श्री विजयदानसूरि विजयराज्ये ऋषि रूपा लिखितं ।

११८९. सामायिकपाठ—बहुमुनि । पत्र सं० १६ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—

धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१०१ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीबहुमुनिविरचितं सामायिकपाठ संपूर्ण ।

११९०. सामायिकपाठ..... । पत्र सं० २५ । आ० ८३×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । अ भण्डार ।

११६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

११६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७७६ । क भण्डार ।

११६३. सामायिकपाठ । पत्र सं० ५० । आ० ११३×७^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।
१० काल × । ले० काल सं० १६५६ कार्तिक बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ७७६ । अ भण्डार ।

११६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० ७७७ । अ भण्डार ।

विशेष—उदयचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

११६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०१७ । अ भण्डार ।

११६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० १०११ । अ भण्डार ।

११६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७७८ । क भण्डार ।

११६८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८२० कार्तिक बुदी २ । वे० सं० ६५ । च
भण्डार ।

विशेष—अचार्य विजयकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

११६९. सामायिक पाठ । पत्र सं० २५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—
धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १७३३ । पूर्ण । वे० सं० ८१४ । ड भण्डार ।

१२००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ सुदी ११ । वे० सं० ८१५ । ड
भण्डार ।

१२०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६० । च भण्डार ।

विशेष—पत्रों को चूहों ने खालिया है ।

१२०२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६१ । च भण्डार ।

१२०३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१३ । ड भण्डार ।

१२०४. सामायिकपाठ (लघु) । पत्र सं० १ । आ० १०^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८८ । च भण्डार ।

१२०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ३८६ । च भण्डार ।

१२०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ७१३ क । च भण्डार ।

१२०७. सामायिकपाठभाषा—धुध महाचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० ११×५^३ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०८ । च भण्डार ।

विशेष—जौहरीलाल कृत आलोचना पाठ भी है ।

१२०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६५८ माघ बुदी ३ । वे० सं० १६४१ । ट
भण्डार ।

१२०६. सामायिकपाठभाषा—जयचन्द्र व्यावडा । पत्र सं० ८२ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वे० सं० ७८० । अ भण्डार ।

१२१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६५६ । वे० सं० ७८१ । अ भण्डार ।

१२११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० ७८२ । अ भण्डार ।

१२१२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० ७८३ । अ भण्डार ।

१२१३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६७१ । वे० सं० ८१७ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री केशरलाल गोधा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१२१४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८७४ फागुण मुदी ६ । वे० सं० १८३ । ज भण्डार ।

१२१५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १६११ आसोज मुदी ८ । वे० सं० ५६ । ज भण्डार ।

१२१६. सामायिकपाठभाषा—भ० श्री तिलोकचन्द्र । पत्र सं० ६४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १८६२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१० । च भण्डार ।

१२१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८६१ सावन बुदी १३ । वे० सं० ७१३ ।

च भण्डार ।

१२१८. सामायिकपाठ भाषा..... । पत्र सं० ४५ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ मुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १२८ । झ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महाराजा जयसिंहजी के शासनकाल में जती नैराणमागर तरागच्छ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

१२१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १७४० बैशाख मुदी ७ । वे० सं० ७०६ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा सांवलदास बगद वाले ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत अथवा प्राकृत लृन्दों का अर्थ दिया हुआ है ।

१२२०. सामायिकपाठ भाषा..... । पत्र सं० २ से ३ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१२ । छ भण्डार ।

१२२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ८१६ । छ भण्डार ।

१२२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४८६ । छ भण्डार ।

१२२३. सामायिकपाठभाषा..... । पत्र सं० ६७ । आ० ६×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (हूंदारी) विषय—धर्म । रचनाकाल × । ले० काल सं० १७६३ मंगसिर मुदी ८ । वे० सं० ७११ । च भण्डार ।

१२२५. सारसमुच्चय—कुलभद्र । पत्र सं० १५ । आ० ११×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल सं० १६०७ पौष बुदी ४ । वै० सं० ४५६ । अ भण्डार ।

विशेष—मंडलाचार्य धर्मचन्द्र के शिष्य ब्रह्मभाऊ बोहरा ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

१२२५. सावयधम्म दोहा—मुनि रामसिंह । पत्र सं० = । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—आचार शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । वै० सं० १४१ । पूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति अति प्राचीन है ।

१२२६. सिद्धों का स्वरूप..... । पत्र सं० ३८ । आ० ४×३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ८५४ । ङ भण्डार ।

१२२७. सुदृष्टि तरंगिणीभाषा—टेकचन्द्र । पत्र सं० ४०५ । आ० १५×६ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—धर्म । २० काल सं० १८३८ सावण सुदी ११ । ले० काल सं० १८६१ भाद्रवा सुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० ७५७ ।
अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

१२२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८० । ले० काल × । वै० सं० ६६४ । अ भण्डार ।

१२२९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६११ । ले० काल सं० १६४४ । वै० सं० ८११ । क भण्डार ।

१२३०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६१ । ले० काल सं० १८६३ । वै० सं० ६२ । ग भण्डार ।

विशेष—स्योलाल साह ने प्रतिलिपि की थी ।

१२३१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०५ से १२३ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १२७ । घ भण्डार ।

१२३२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १६६ । ले० काल × । वै० सं० १२८ । छ भण्डार ।

१२३३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५४५ । ले० काल सं० १८६८ आसोज सुदी ६ । वै० सं० ८६८ । छ

भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियों का मिश्रण है ।

१२३४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५०० । ले० काल सं० १६६० कार्तिक सुदी ५ । वै० सं० ८६६ ।

छ भण्डार ।

१२३५. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २०० । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ७२२ । च भण्डार ।

१२३६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४३० । ले० काल सं० १६४६ चैत बुदी ८ । वै० सं० ११ । ज

भण्डार ।

१२३७. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ५३५ । ले० काल सं० १८३६ फागुण बुदी ४ । वै० सं० ८६ । झ

भण्डार ।

१२३८. सुदृष्टितरंगिणीभाषा..... । पत्र सं० ५१ से ५७ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×७ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ८६७ । ङ भण्डार ।

१२३६. सोनगरपञ्जीसी—भागीरथ । पत्र सं० ८ । आ० ५३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल सं० १८६१ ज्येष्ठ सुदी १४ । ले० काल × । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

१२४०. सोलहकारणभावनावर्णन—पं० सदासुख । पत्र सं० ४६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२६ । च भण्डार ।

१२४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० १८८ । छ भण्डार ।

१२४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १२२७ सावण बुदी ११ । वे० सं० १८८ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में गणेशीलाल पांड्या ने कागी के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

१२४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ से ६६ । ले० काल सं० १६५८ माह मुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० १६० । छ भण्डार ।

विशेष—ग्राम्भ के ३० पत्र नहीं हैं । मुन्दरनाल पांड्या ने चाटसू में प्रतिलिपि की थी ।

१२४४. सोलहकारणभावना एवं दशलक्षण धर्म वर्णन—पं० सदासुख । पत्र सं० ११४ । साइज ११.३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६४१ मंगसिर मुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ६४ । ग भण्डार ।

१२४५. स्थापनानिर्णय..... । पत्र सं० ६ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०० । छ भण्डार ।

विशेष—विद्वज्जनबोधक के प्रथम कांड का अष्टम उल्लास है । हिन्दी टीका सहित है ।

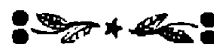
१२४६. स्वाध्यायपाठ..... । पत्र सं० २० । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३ । ज भण्डार ।

१२४७. स्वाध्यायपाठभाषा..... । पत्र सं० ७ । आ० ११.२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४२ । क भण्डार ।

१२४८. सिद्धान्तधर्मोपदेशमाला..... । पत्र सं० १२ । आ० १६×३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२१ । ख भण्डार ।

१२४९. हुण्डावसर्पिणीकालदोष—माणकचन्द्र । पत्र सं० ६ । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वे० सं० ८५५ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुर्लचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।



विषय--अध्यात्म एवं योगशास्त्र

१२५०. अध्यात्मतरंगिणी—सोमदेव । पत्र सं० १० । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २० । क भण्डार ।

१२५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६३७ भादवा बुदी ६ । वे० सं० ४ । क भण्डार ।
विशेष—ऊपर नीचे तथा पत्र के दोनों ओर संस्कृत में टीका लिखी हुई है ।

१२५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६३८ आषाढ बुदी १० । वे० सं० ८२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । विवुध फतेलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१२५३. अध्यात्मपत्र—जयचन्द्र व्यावड़ा । पत्र सं० ७ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) ।
२० काल १४वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७ । क भण्डार ।

१२५४. अध्यात्मबत्तीसी—बनारसीदास । पत्र सं० २ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।
विषय—अध्यात्म । २० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६६ । अ भण्डार ।

१२५५. अध्यात्म बारहखड़ी—कवि सुरत । पत्र सं० १५ । आ० ५३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल १७वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । ड भण्डार ।

१२५६. अष्टपाहुड़—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० १० से २७ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत ।
विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०२३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । १ से ६ तथा २४-२५वां पत्र नहीं है ।

१२५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० ७ । क भण्डार ।

१२५८. अष्टपाहुड़भाषा—जयचन्द्र व्यावड़ा । पत्र सं० ४३० । आ० १२×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १२६७ भादवा बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३ । क भण्डार ।

विशेष—मूल ग्रन्थकार आचार्य कुन्दकुन्द हैं ।

१२५९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ से २४६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४ । क भण्डार ।

१२६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२६ । ले० काल × । वे० सं० १५ । क भण्डार ।

१२६१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६७ । ले० काल × । वे० सं० १६ । क भण्डार ।

१२६२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३३४ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० १ । क भण्डार ।

१२६३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५१ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० २ । क भण्डार ।

१२६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६५ । ले० काल × । वे० सं० ३ । अ भण्डार ।

१२६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १६३ । ले० काल सं० १६३६ आमोज बुदी १५ । वे० सं० ३८ । अ भण्डार ।

विशेष—८१ पत्र प्राचीन प्रति हैं । ८८ में १२३ पत्र फिर लिखाये गये हैं तथा १२४ में १६३ तक के पत्र किसी अन्य प्रति के हैं ।

१२६६. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २४३ । ले० काल सं० १६५१ आषाढ़ बुदी १४ । वे० सं० ३९ । अ भण्डार ।

१२६७. प्रति सं० १० । पत्र सं० १६७ । ले० काल × । वे० सं० ५० = । अ भण्डार ।

१२६८. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४५ । ले० काल सं० १८८० सावन बुदी १ । वे० सं० ३८ । अ भण्डार ।

१२६९. आत्मध्यान—बनारसीदास । पत्र सं० १ । आ० ८६×४४ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—आत्मचित्तन । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२७६ । अ भण्डार ।

१२७०. आत्मप्रबोध—कुमारकवि । पत्र सं० १३ । आ० १०१×४६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५८ । अ भण्डार ।

१२७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३८० (क) अ भण्डार ।

१२७२. आत्मसंबोधनकाव्य..... । पत्र सं० २७ । आ० १०×४६ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५४ । अ भण्डार ।

१२७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५२ । अ भण्डार ।

१२७४. आत्मसंबोधनकाव्य—ज्ञानभूषण । पत्र सं० २ में २६ । आ० १०६×४६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८७ । अ भण्डार ।

१२७५. आत्मावलोकन—दीपचन्द्र कामलीवाल । पत्र सं० ६६ । आ० ११६×५६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १७७४ फागुन बुदी । वे० सं० २१८ । अ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावन में दयाराम लच्छीराम ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

१२७६. आत्मानुशासन—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ४२ । आ० १०×५५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० २२६२ । पूर्ण । जीर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—..... वर्षे शके.....

श्रीनमिनाथचैप्यालय । श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द्रदेवा तत् पितृमंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रास्त-
दाम्नाये । लिखितं ज्योति (पी) श्री गैया तत्पुत्र महंम लिखितं ।

१२७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १५६४ आषाढ़ सुदी ८ । वै० सं० २६६ । अ
भण्डार ।

१२७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८६० सावण सुदी ४ । वै० सं० ३१५ । अ
भण्डार ।

१२७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वै० सं० १२६८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एवं प्राचीन है ।

१२८०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २७० । अ भण्डार ।

१२८१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वै० सं० ७६२ । अ भण्डार ।

१२८२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वै० सं० ७६३ । अ भण्डार ।

१२८३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० २०८६ । अ भण्डार ।

१२८४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १६४० । वै० सं० ४७ । क भण्डार ।

१२८५. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८८८ । वै० सं० ४६ । क भण्डार ।

१२८६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वै० सं० १५ । क भण्डार ।

१२८७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १८७२ चैत सुदी ८ । वै० सं० ५३ । उ
भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । पहिले संस्कृत का हिन्दी अर्थ तथा फिर उसका भावार्थ भी दिया हुआ है ।

१२८८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १७३० भाद्रवा सुदी १२ । वै० सं० ५४ । उ
भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल बाकलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१२८९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६७० फागुन सुदी २ । वै० सं० २६ ।
च भण्डार ।

विशेष—रुहितगपुर निवासी चौधरी सोहल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१२९०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६६५ मंगसिर सुदी ५ । वै० सं० २२० । च
भण्डार ।

विशेष—मंडलाचार्य धर्मचन्द्र के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी ।

१२९१. आत्मानुशासनटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८८२ फागुन सुदी १० । पूर्ण । वै० सं० २७ । च भण्डार ।

१२९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १६०१ । वै० सं० ४८ । क भण्डार ।

१२९३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १६८५ मंगसिर सुदी १४ । वै० सं० ६३ । छ
भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती नगर में प्रतिलिपि हुई ।

१२६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १२३२ वैशाख बुदी ६ । वै० सं० ५० । अ
भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई ।

१२६५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १३१६ आषाढ सुदी १ । वै० सं० ७१ ।

विशेष—साहू तिहुरा अग्रवाल गर्भ गोत्रीय ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी ।

१२६६. आत्मानुशासनभाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० ८७ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी
(गद्य) त्रिपय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८६० । पूर्ण । वै० सं० ३७१ । अ भण्डार ।

१२६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८६ । ले० काल सं० १९०८ । वै० सं० ३९६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है ।

१२६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४८ । ले० काल × । वै० सं० ३९८ । अ भण्डार ।

१२६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १९६३ । वै० सं० ४३४ । अ भण्डार ।

१३००. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २३६ । ले० काल सं० १९३० । वै० सं० ५० । क भण्डार ।

विशेष—प्रभाचन्दाचार्य कृत संस्कृत टीका भी है ।

१३०१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३०५ । ले० काल सं० १९४० । वै० सं० ५१ । क भण्डार ।

१३०२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११८ । ले० काल सं० १८९९ कार्तिक सुदी ५ । वै० सं० ५१ । अ
भण्डार ।

१३०३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ५५ । क भण्डार ।

१३०४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८९ से १०२ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ५६ । क भण्डार ।

१३०५. प्रति सं० १० । पत्र सं० १८ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ५७ । क भण्डार ।

१३०६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १५१ । ले० काल सं० १९३३ ज्येष्ठ बुदी ८ । वै० सं० ५८ । क
भण्डार ।

विशेष—प्रति संशोधित है ।

१३०७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ९७ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ५९ । क भण्डार ।

१३०८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ६१ से १६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६० । क भण्डार ।

१३०९. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ७१ से १८९ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ५१३ । अ भण्डार ।

१३१०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ९९ से १४३ । ले० काल सं० १९२४ कार्तिक सुदी ३ । अपूर्ण ।
वै० सं० ५१४ । अ भण्डार ।

१३११. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ८० । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ५१५ । अ भण्डार ।

१३१२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ९५ । ले० काल सं० १८५४ आषाढ बुदी ५ । वै० सं० २२२ । अ
भण्डार ।

विशेष—रायचन्द साहवाढ ने स्वठाठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१३१३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१२४ । ट भण्डार ।

विशेष—१४ से आगे पत्र नहीं हैं ।

१३१४. आध्यात्मिकगाथा—भ० लक्ष्मीचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।

त्रिपय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२४ । अ भण्डार ।

१३१५. कार्तिकेयानुप्रेक्षा—स्वामी कार्तिकेय । पत्र सं० २४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत ।

त्रिपय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १६०४ । पूर्ण । वे० सं० २६१ । अ भण्डार ।

१३१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ६२८ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं । १८६ गाथायें हैं ।

१३१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० सं० ६१४ । अ भण्डार ।

विशेष—२८३ गाथायें हैं ।

१३१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० ८४४ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

१३१९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १८८८ । वे० सं० ८४५ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द हैं ।

१३२०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३१ । ख भण्डार ।

१३२१. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११४ । ख भण्डार ।

१३२२. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १६४३ सावण सुदी ४ । वे० सं० ११६ । ख

भण्डार ।

१३२३. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २८ से ७५ । ले० काल सं० १८८६ । अपूर्ण । वे० सं० ११७ । ख

भण्डार ।

१३२४. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५० । ले० काल सं० १८२५ पौष बुदी १० । वे० सं० ११९ । ख

भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी है । मुनि रूपचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१३२५. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ४३७ । च भण्डार ।

१३२६. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३८ । च भण्डार ।

१३२७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८६६ सावण सुदी ६ । वे० सं० ४३९ । च

भण्डार ।

१३२८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६२० सावण सुदी ८ । वे० सं० ४४० । च

भण्डार ।

१३२६. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६५६ । वे० सं० ४४२ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१३३०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८८१ भादवा बुदी १० । वे० सं० ८० । छ

भण्डार ।

१३३१. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० १०७ । ज भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है ।

१३३२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । झ भण्डार ।

१३३३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ५२५ । झ भण्डार ।

१३३४. प्रति सं० १९ । पत्र सं० १०० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६१ । ट भण्डार ।

विशेष—११ से ७४ तथा १०० से आगे के पत्र नहीं हैं ।

१३३५. प्रति सं० २० । पत्र सं० ३८ से ६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१३३६. कार्तिकेयानुप्रेक्षाटीका..... पत्र सं० ५४ । आ० १०३ × ८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३२ । अ भण्डार ।

१३३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ से ११० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११८ । इ भण्डार ।

१३३८. कार्तिकेयानुप्रेक्षाटीका—शुभचन्द्र । पत्र सं० २१० । आ० ११३ × ५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १६०० भाव बुदी १० । ले० काल सं० १८५४ । पूर्ण । वे० सं० ८४३ । क भण्डार ।

१३३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० ११५ । अपूर्ण । इ भण्डार ।

१३४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४४१ । च भण्डार ।

१४४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ से १७२ । ले० काल सं० १८३२ । अपूर्ण । वे० सं० ४४३ । च

भण्डार ।

१३४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१७ । ले० काल सं० १८२२ आनोज मुदी १२ । वे० सं० ७६ । छ

भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में माधोसिंह के शासनकाल में चन्द्रप्रभु चैत्यालय में पं० चोखचन्द्र के शिष्य रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१३४३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २४८ । ले० काल सं० १८६६ आषाढ सुदी ८ । वे० सं० ५०५ । ब

भण्डार ।

१३४४. कार्तिकेयानुप्रेक्षाभाषा—जयचन्द्र छाबड़ा । पत्र सं० २३७ । आ० ११ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १८६३ सावण बुदी ३ । ले० काल सं० १०२६ । पूर्ण । वे० सं० ८४६ । क भण्डार ।

१३४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८१ । ले० काल × । वे० सं० २४६ । ख भण्डार ।

१३४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७६ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ६५ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१३४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२० । ङ भण्डार ।

१३४८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० १२१ । ङ भण्डार ।

१३४९. कुशलाणुबंधिअजभुयणं..... । पत्र सं० ८ । आ० १०×४ इअ । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १६८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

इति कुशलाणुबंधिअजभुयणं समत्तं । इति श्री चतुशरण टवार्थ ।

इमके अतिरिक्त राजमुन्दर तथा विजयदान सूरि विरचित ऋषभदेव स्तुतियां और हैं ।

१३५०. चक्रवर्तिकीबारहभावना..... । पत्र सं० ४ । आ० १०^३×५ इअ । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४० । च भण्डार ।

१३५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५४१ । च भण्डार ।

१३५२. चतुर्विधध्यान..... । पत्र सं० २ । आ० १०×४^३ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—योग ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५१ । ऋ भण्डार ।

१३५३. चिद्विलास—दीपचन्द कासलीवाल । पत्र सं० ४३ । आ० १२×६ इअ । भाषा—हिन्दी

(गद्य) विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १७७९ । पूर्ण । वे० सं० २१ । घ भण्डार ।

१३५४. जोगीरासो—जिनदास । पत्र सं० २ । आ० १०^३×४^३ इअ । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६१ । च भण्डार ।

१३५५. ज्ञानदर्पण—साह दीपचन्द । पत्र सं० ४० । आ० १२^३×४^३ इअ । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० २२९ । क भण्डार ।

१३५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८६४ सावण सुदी ११ । वे० सं० ३० । घ

भण्डार ।

विशेष—महात्मा उम्भेद ने प्रतिलिपि की थी । प्रति दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर में बिराजमान की गई ।

१३५७. ज्ञानबावनी—बनारसीदास । पत्र सं० १० । आ० ११×५^३ इअ । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३१ । ङ भण्डार ।

१३५८. ज्ञानसार—मुनि पद्मसिंह । पत्र सं० १२ । आ० १०^३×५^३ इअ । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १०=६ सावण सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८ । ङ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल वाली गाथा निम्न प्रकार है—

सिरि विक्कमस्सन्दावे दशसयच्छासी जुंयमि वहमाणेह
सावणसिय एवमीए अंवयणपरीम्मकयं मेयं ॥

१३५६. ज्ञानार्णव—शुभचन्द्राचार्य । पत्र सं० १०५ । आ० १२३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
त्रिपय—योग । २० काल × । ले० काल सं० १६७६ चैत्र बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २७४ । अ भण्डार ।

विशेष—बैराट नगर में श्री चतुरदास ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी ।

१३६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १६५६ भाद्रवा सुदी १३ । वे० सं० ४२ । अ
भण्डार ।

१३६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०७ । ले० काल सं० १६४२ पौष सुदी ६ । वे० सं० २२० । क
भण्डार ।

१३६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१ । क भण्डार ।

१३६३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०८ । ले० काल × । वे० सं० २२२ । क भण्डार ।

१३६४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६४ । ले० काल सं० १८३५ आषाढ सुदी ३ । वे० सं० २३४ । क
भण्डार ।

विशेष—अन्तिम अधिकार की टीका नहीं है ।

१३६५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० से ८२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ६ पत्र नहीं हैं ।

१३६६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३१ । ले० काल × । वे० सं० ३२ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१३६७. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १७६ से २०१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२३ । ङ भण्डार ।

१३६८. प्रति सं० १० । पत्र सं० २६८ । ले० काल × । वे० सं० २२४ । अपूर्ण । ङ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है । हिन्दी टीका सहित है ।

१३६९. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १०६ । ले० काल × । वे० सं० २२५ । ङ भण्डार ।

१३७०. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२५ । ङ भण्डार ।

१३७१. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्राणायाम अधिकार तक है ।

१३७२. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० २२७ । ङ भण्डार ।

१३७३. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १४० । ले० काल सं० १६४८ आसोज बुदी ८ । वे० सं० १२४ ।

ङ भण्डार ।

विशेष—लक्ष्मीचन्द्र वैद्य ने प्रतिलिपि की थी ।

१३७४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १३५ । ले० काल × । वे० सं० ६५ । छ मण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा संस्कृत में संकेत भी दिये हैं ।

१३७५. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८८८ माघ सुदी ५ । वे० सं० २८२ । छ मण्डार ।

विशेष—बारह भावना मात्र है ।

१३७६. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १५८१ फागुण सुदी १ । वे० सं० २५ । ज मण्डार ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८१ वर्षे फागुण सुदी १ बुधवार दिने । अथ श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्द-कुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनन्दिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे जितेन्द्रिय भट्टारकश्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे सकलविद्यानिधानयमस्वाध्यायध्यानतत्परसकलमुनिजनमध्यलब्धप्रतिष्ठाभट्टारकश्रीप्रभाचन्द्रदेवा । आर्वे गण स्थानत् । कूरमवंशे महाराजाधिराजपृथ्वीराजराज्ये खण्डेलवालान्वये समस्तगोठि पंचायत शास्त्रं ज्ञानार्णव लिखापितं त्रैपनक्रिया-वर्तनित्तं बाह्य धनाद्योगु घटापितं कर्मक्षयनिमित्तं ।

१३७७. प्रति सं० १९ । पत्र सं० ११५ । ले० काल × । वे० सं० ६० । झ मण्डार ।

१३७८. प्रति सं० २० । पत्र सं० १०४ । ले० काल × । वे० सं० १०० । ब मण्डार ।

१३७९. प्रति सं० २१ । पत्र सं० ३ से ७३ । ले० काल सं० १५०१ माघ बुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० १५३ । ब मण्डार ।

विशेष—ब्रह्मजिनदास ने श्री अमरकीर्ति के लिए प्रतिलिपि की थी ।

१३८०. प्रति सं० २२ । पत्र सं० १३४ । ले० काल सं० १७८८ । वे० सं० ३७० । ब मण्डार ।

१३८१. प्रति सं० २३ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १९४१ । वे० सं० १९६२ । ट मण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

१३८२. प्रति सं० २४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १९०१ । अपूर्ण । वे० सं० १९६३ । ट मण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत गद्य टीका सहित है ।

१३८३. ज्ञानार्णवगद्यटीका—श्रुतसागर । पत्र सं० १५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१९ । अ मण्डार ।

१३८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २२५ । क मण्डार ।

१३८५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८२३ माघ सुदी १० । वे० सं० २२६ । क मण्डार ।

१३८६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३१ । घ मण्डार ।

१३८७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७४६ । जीर्ण । वे० सं० २२८ । कु भण्डार ।
विशेष—मौजमाबाद में आचार्य कनककीर्ति के शिष्य पं० मदाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१३८८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २ से १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२९ । कु भण्डार ।

१३८९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १७८५ भादवा । वे० सं० २३० । कु भण्डार ।
विशेष—पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१३९०. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० २२१ । व्य भण्डार ।

१३९१. ज्ञानार्णवटीका—पं० नय विलास । पत्र सं० २७९ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२७ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पृष्ठीका निम्न प्रकार है ।

इति शुभचन्द्राचार्यविरचितयोगप्रदीपाधिकारे पं० नयविलासेन साह पाशा तत्पुत्र साह टोडर तत्कुलकमल-
दिवाकरसाहृषिदासस्य श्रवणार्थं पं० जिनदासो धर्मनाकारापिता मोक्षप्रकरणं समाप्तं ।

१३९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१६ । ले० काल × । वे० सं० २२८ । क भण्डार ।

१३९३. ज्ञानार्णवटीकाभाषा—लब्धिविमलगणि । पत्र सं० १५८ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—
हिन्दी (पद्य) । विषय—योग । २० काल सं० १७२८ आसोज सुदी १० । ले० काल सं० १७३० वैशाख सुदी ३ । पूर्ण ।
वे० सं० १९४ । छ भण्डार ।

१३९४. ज्ञानार्णवभाषा—जयचन्द्र छावड़ा । पत्र सं० ६९३ । आ० १३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी
(गद्य) विषय—योग । २० काल सं० १८६६ माघ सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२३ । क भण्डार ।

१३९५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२० । ले० काल × । वे० सं० २२४ । क भण्डार ।

१३९६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२१ । ले० काल सं० १८८३ सावण सुदी ७ । वे० सं० ३४ । न
भण्डार ।

विशेष—शाह जिहानाबाद में संतूलाल की प्रेरणा से भाषा रचना की गई । कालूरामजी साह ने सोनपाल
भांवसा से प्रतिलिपि कराके चौघरियों के मन्दिर में चढ़ाया ।

१३९७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४०८ । ले० काल × । वे० सं० ५६५ । च भण्डार ।

१३९८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०३ से २१९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६६ । च भण्डार ।

१३९९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३६१ । ले० काल सं० १९११ आसोज सुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० ५६६ ।
क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २९० पत्र नहीं हैं ।

१४००. तत्त्वबोध..... पत्र सं० ३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २०
काल × । ले० काल सं० १८८१ । पूर्ण । वे० सं० ३१० । ज भण्डार ।

१४०१. त्रयोविंशतिका.....। पत्र सं० १३। आ० १०३×४३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—अध्यात्म।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४०। च भण्डार।

१४०२. दर्शनपाहुडभाषा.....। पत्र सं० २६। आ० १०३×८६ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)। विषय—
अध्यात्म। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८३। छ भण्डार।

विशेष—अष्टपाहुड का एक भाग है।

१४०३. द्वादशभाषना दृष्टान्त.....। पत्र सं० १। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा—गुजराती। विषय—
अध्यात्म। २० काल ×। ले० काल सं० १७०७ बैशाख बुदी १। वे० सं० २२१७। अ भण्डार।

विशेष—जालोर में श्री हंसकुशल ने प्रतापकुशल के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

१४०४. द्वादशभावनाटीका.....। पत्र सं० ६। आ० ११×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—अध्यात्म।
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६५५। ट भण्डार।

विशेष—कुन्दकुन्दाचार्य कृत मूल गाथायें भी दी हैं।

१४०५. द्वादशानुप्रेक्षा.....। पत्र सं० २०। आ० १०३×४ इञ्च। भाषा—प्राकृत। विषय—अध्यात्म।
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६८५। ट भण्डार।

१४०६. द्वादशानुप्रेक्षा—सकलकीर्ति। पत्र सं० ४। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—
अध्यात्म। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८४। अ भण्डार।

१४०७. द्वादशानुप्रेक्षा.....। पत्र सं० १। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—अध्यात्म।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८४। अ भण्डार।

१४०८. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १६१। झ भण्डार।

१४०९. द्वादशानुप्रेक्षा—कषिञ्जत्त। पत्र सं० ८३। आ० १२३×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी (पद्य)।
विषय—अध्यात्म। २० काल सं० १६०७ भाद्रवा बुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६। क भण्डार।

१४१०. द्वादशानुप्रेक्षा—साह आलू। पत्र सं० ४। आ० ६३×४३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—
अध्यात्म। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६०४। ट भण्डार।

१४११. द्वादशानुप्रेक्षा.....। पत्र सं० १३। आ० १०×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—अध्यात्म।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२८। छ भण्डार।

१४१२. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ६३। झ भण्डार।

१४१३. पञ्चतत्त्वधारणा.....। पत्र सं० ७। आ० ६३×४३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—योग।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२३२। अ भण्डार।

१४१४. पन्द्रहतिथी। पत्र सं० ४। मा० १०३×५३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—अध्यात्म।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४३१। छ भण्डार।

विशेष—भूधरदास कृत एकीभावस्तोत्र भाषा भी है।

१४१५. परमात्मपुराण—दीपचन्द। पत्र सं० २४। मा० १२×३ इञ्च। भाषा—हिन्दी (गद्य)।
विषय—अध्यात्म। २० काल ×। ले० काल सं० १८६४ सावन सुदी ११। पूर्ण। घ भण्डार।

विशेष—महात्मा उमेद ने प्रतिलिपि की थी।

१४१६. प्रति सं० २। पत्र सं० २ से २२। ले० काल सं० १८४३ आसोज बुदी २। अपूर्ण। वे० सं०
६२६। च भण्डार।

१४१७. परमात्मप्रकाश—योगीन्द्रदेव। पत्र सं० १३ से १४४। मा० १०×५३ इञ्च। भाषा—
अपभ्रंश। विषय—अध्यात्म। २० काल १०वीं शताब्दी। ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी २। अपूर्ण। वे० सं०
२०८३। अ भण्डार।

विशेष—सुशालचन्द चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी।

१४१८. प्रति सं० २। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १६३५। वे० सं० ४४५। क भण्डार।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है।

१४१९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७६। ले० काल सं० १६०४ श्रावण बुदी १३। वे० सं० ५७। घ
भण्डार। संस्कृत टीका सहित है।

विशेष—ग्रन्थ सं० ४००० श्लोक। अन्तिम ६ पृष्ठों में बहुत बारीक लिपि है।

१४२०. प्रति सं० ४। पत्र सं० १५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३४। छ भण्डार।

१४२१. प्रति सं० ५। पत्र सं० २ से १५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३५। छ भण्डार।

१४२२. प्रति सं० ६। पत्र सं० २५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६। च भण्डार

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं।

१४२३. प्रति सं० ७। पत्र सं० १६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१०। च भण्डार।

१४२४. प्रति सं० ८। पत्र सं० २४। ले० काल सं० १८३० बैसाख बुदी ३। वे० सं० ८२। अ
भण्डार।

विशेष—जयपुर में शुभचन्द्रजी के शिष्य चोखचन्द तथा उनके शिष्य पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की।
संस्कृत में पर्यायवाची शब्द भी दिये हुए हैं।

१४२५. परमात्मप्रकाशटीका—अमृतचन्द्राचार्य। पत्र सं० ६६ से २४५। मा० १०३×४ इञ्च।
भाषा—संस्कृत। विषय—अध्यात्म। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४३३। छ भण्डार।

१४२६. प्रति सं० २। पत्र सं० १३६। ले० काल ×। वे० सं० ४५३। अ भण्डार।

१४२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १७९७ पौष सुदी ५ । वे० सं० ४५४ । अ
भण्डार ।

विशेष—मायाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४२८. परमात्मप्रकाशटीका—ब्रह्मदेव । पत्र सं० १६४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७९ । अ भण्डार ।

१४२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ मे १४९ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है ४४ चित्र हैं ।

१४३०. परमात्मप्रकाशटीका । पत्र सं० १९३ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १९५८ द्वि० श्रावण सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४४७ । क भण्डार ।

१४३१. परमात्मप्रकाशटीका । पत्र सं० ६७ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८९० कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २०७ । च भण्डार ।

१४३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ मे १०१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८ । च भण्डार ।

१४३३. परमात्मप्रकाशटीका । पत्र सं० १७० । आ० ११½×५¾ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १६९६ मंगसिर सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४४६ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है । विजयराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१४३४. परमात्मप्रकाशभाषा—दौलतराम । पत्र सं० ४४४ । आ० ११×९ । भाषा—हिन्दी । विषय—
अध्यात्म । २० काल १८वीं शताब्दी । ले० काल सं० १९३८ । पूर्ण । वे० सं० ४४९ । क भण्डार ।

विशेष—मूल तथा ब्रह्मदेव कृत संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१४३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३० से २४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३६ । क भण्डार ।

१४३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४७ । ले० काल सं० १९५० । वे० सं० ४३७ । क भण्डार ।

१४३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० से १९६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६३८ । च भण्डार ।

१४३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२४ । ले० काल × । वे० सं० १९२ । अ भण्डार ।

१४३९. परमात्मप्रकाशबालाबोधिनीटीका—खानचन्द । पत्र सं० २४१ । आ० १२½×५ इञ्च ।
भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १९३६ । पूर्ण । वे० सं० ४४८ । क भण्डार ।

विशेष—यह टीका मुल्तान में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में लिखी गई थी इसका उल्लेख स्वयं टीकाकार ने
किया है ।

१४४०. परमात्मप्रकाशभाषा—नथमल । पत्र सं० २१ । आ० ११½×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।
विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १९१९ चैत्र बुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४० । क भण्डार ।

१४४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १९४८ । वे० सं० ४४१ । क भण्डार ।

१४४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ४४२ । क भण्डार ।

१४४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ से १५ । ले० काल सं० १६३७ । वे० सं० ४४३ । क भण्डार ।

१४४४. परमात्मप्रकाशभाषा—सूरजभान आसवाल । पत्र सं० १५४ । आ० १२३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १८४३ आषाढ़ बुदी ७ । ले० काल सं० १६५२ मंगसिर बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४४४८ । क भण्डार ।

१४४५. परमात्मप्रकाशभाषा..... । पत्र सं० ६५ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११६० । अ भण्डार ।

१४४६. परमात्मप्रकाशभाषा..... । पत्र सं० ५६ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२७ । च भण्डार ।

१४४७. परमात्मप्रकाशभाषा..... । पत्र सं० ६३ से १०८ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३२ । ड भण्डार ।

१४४८. प्रवचनसार—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० ४७ । आ० १२×४३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल प्रथम शताब्दी । ले० काल सं० १६४० माघ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ५०८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१४४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ५१० ।

१४५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८६६ भाद्रवा बुदी ५ । वे० सं० २३८ । च भण्डार ।

१४५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१४५२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १८६७ वैशाख बुदी ६ । वे० सं० २४० । च भण्डार ।

विशेष—परागदास मोहा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

१४५३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० १४८ । ज भण्डार ।

१४५४. प्रवचनसारटीका—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६७ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल १०वीं शताब्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है ।

१४५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११८ । ले० काल × । वे० सं० ८५२ । अ भण्डार ।

१४ ६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ६० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८५ । अ भण्डार ।

१४५७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ८१ । अ भण्डार ।

१४५८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०८ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० ५०७ । क भण्डार ।

विशेष—महात्मा देवकर्ण ने जयनगर में प्रतिलिपि की थी ।

१४५६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३६ । ले० काल सं० १६३८ । वे० सं० ५०६ । क भण्डार ।

१४६०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८७ । ले० काल × । वे० सं० २६५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१४६१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १७४७ फागुण बुदी ११ । वे० सं० ५११ । ड भण्डार ।

१४६२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १६२ । ले० काल सं० १६४० भाद्रवा बुदी ३ । वे० सं० ६१ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६३. प्रवचनसारटीका । पत्र सं० ४१ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१० । ड भण्डार ।

विशेष—प्राकृत में मूल संस्कृत में छाया तथा हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

१४६४. प्रवचनसारटीका । पत्र सं० १२१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८५७ आषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ५०६ । क भण्डार ।

१४६५. प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति । पत्र सं० ५१ ये १३१ । आ० १२×५^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १७६५ । अपूर्ण । वे० सं० ७८३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ५० पत्र नहीं हैं । महाराजा जयसिंह के शासनकाल में नेवटा में महात्मा हरिकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६६. प्रवचनसारभाषा—पांडे हेमराज । पत्र सं० ८३ से ३०५ । आ० १२×५^३ इञ्च । भाषा—
हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १७०६ माघ सुदी ५ । ले० काल सं० १७२५ । अपूर्ण । वे० सं०
४३२ । अ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में ओसवाल गूजरमल ने प्रतिलिपि की थी ।

१४६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६७ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० ५१३ । क भण्डार ।

१४६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७३ । ले० काल × । वे० सं० ५१२ । क भण्डार ।

१४६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६२७ फागुण बुदी ११ । वे० सं० ६३ । घ
भण्डार ।

विशेष—पं० परमानन्द ने दिल्ली में प्रतिलिपि की थी ।

१४७०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७६ । ले० काल सं० १७४३ पौष सुदी २ । वे० सं० ५१३ । ड
भण्डार ।

१४७१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २४१ । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० ६४१ । च भण्डार ।

१४७२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८४ । ले० काल सं० १८८३ कार्तिक बुदी २ । वे० सं० १९३ । छ
भण्डार ।

विशेष—लवाण निवासी अमरचन्द के पुत्र महात्मा गणेश ने प्रतिलिपि की थी ।

१४७३. प्रवचनसारभाषा—जोधराज गोदीका । पत्र सं० ३८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी
(गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १७२६ । ले० काल सं० १७३० आषाढ सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ६४४ ।
च भण्डार ।

१४७४. प्रवचनसारभाषा—वृन्दावनदास । पत्र सं० २१७ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १९३३ ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ५११ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ के अन्त में वृन्दावनदास का परिचय दिया है ।

१४७५. प्रवचनसारभाषा..... । पत्र सं० ८३ । आ० ११×६½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१२ । ड भण्डार ।

१४७६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४२ । च भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

१४७७. प्रवचनसारभाषा..... । पत्र सं० १२ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९२२ । ट भण्डार ।

१४७८. प्रवचनसारभाषा..... । पत्र सं० १४५ से १८५ । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी
(गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८९७ । अपूर्ण । वे० सं० ६४५ । च भण्डार ।

१४७९. प्रवचनसारभाषा..... । पत्र सं० २३२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १९२६ । वे० सं० ६४३ । च भण्डार ।

१४८०. प्राणायामशास्त्र..... । पत्र सं० ६ । आ० ९½×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योगशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५६ । अ भण्डार ।

१४८१. बारह भावना—रङ्गू । पत्र सं० ५ । आ० ८½×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४१ । छ भण्डार ।

विशेष—लिपिकार ने रङ्गू कृत बारह भावना होना लिखा है ।

प्रारम्भ—ध्रुववस्तु निश्चल सदा अध्रुभाव परजाय ।

स्फंदरूप जो देखिये पुद्गल तर्णो विभाव ॥

अन्तिम—अकथ कहांगी ज्ञान की कहन मुनन की नाहि ।

आयनही में पाइये जब देखे घटमांही ॥

इति श्री रङ्गू कृत बारह भावना संपूर्ण ।

१४८२. बारहभावना। पत्र सं० १५ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५२६ । ड भण्डार ।

१४८३. प्रति स० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ६८ । झ भण्डार ।

१४८४. बारहभावना—भूधरदास । पत्र सं० १ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन ।
२० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२४७ । ब्य भण्डार ।

विशेष—पार्श्वपुराण से उद्धृत है ।

१४८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० २५२ । ख भण्डार ।

विशेष—इसका नाम चक्रवर्त्ति की बारह भावना है ।

१४८६. बारहभावना—नवलकवि । पत्र सं० २ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चिन्तन ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३० । ड भण्डार ।

१४८७. बोधप्राभृत—आचार्य कुंदकुंद । पत्र सं० ७ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३५ ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१४८८. भववैराग्यशतक। पत्र सं० १५ । आ० १०×६ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल सं० १८२४ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४५५ । ब्य भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१४८९. भावनाद्वात्रिंशिका। पत्र सं० २६ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५७ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह और है । यतिभावनाष्टक, पद्मनन्दिपंचविंशतिका और तत्त्वार्थसूत्र ।
प्रति स्वर्णाक्षरों में है ।

१४९०. भावनाद्वात्रिंशिकाटीका। पत्र सं० ४६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६८ । ड भण्डार ।

१४९१. भावपाहुड—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० ९ । आ० १४×५३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—
अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३० । ज भण्डार ।

विशेष—प्राकृत गाथाओं पर संस्कृत श्लोक भी हैं ।

१४९२. मृत्युमहोत्सव। पत्र सं० १ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४१ । अ भण्डार ।

१४९३. मृत्युमहोत्सवभाषा—सदासुख । पत्र सं० २२ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
अध्यात्म । २० काल सं० १६१८ आषाढ सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८० । घ भण्डार ।

१४९४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ६०४ । ड भण्डार ।

१४६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १८४ । छ मण्डार ।

१४६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १८४ । छ मण्डार ।

१४६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १६५ । झ मण्डार ।

१४६८. योगविंदुप्रकरण—आ० हरिभद्रसूरि । पत्र सं० १८ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । अ मण्डार ।

१४६९. योगभक्ति । पत्र सं० ६ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—योग । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१५ । छ मण्डार ।

१५००. योगशास्त्र—हेमचन्द्रसूरि । पत्र सं० २५ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६३ । अ मण्डार ।

१५०१. योगशास्त्र..... । पत्र सं० ६४ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । २० काल × । ले० काल सं० १७०५ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ८२६ । अ मण्डार ।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है ।

१५०२. योगसार—योगीन्द्रदेव । पत्र सं० १२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—अवधभाषा । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८०४ । अपूर्ण । वे० सं० ८२ । अ मण्डार ।

विशेष—मुखराम छाबड़ा ने प्रतिलिपि की थी ।

१५०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १६३४ । वे० सं० ६०६ । क मण्डार ।

विशेष—संस्कृत छाया सहित है ।

१५०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ६०७ । क मण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१५०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८१३ । वे० सं० ६१६ । छ मण्डार ।

१५०६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ३१० । छ मण्डार ।

१५०७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८८२ चैत्र सुदी ४ । वे० सं० २८२ । च मण्डार ।

१५०८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८०४ आसोज बुदी ३ । वे० सं० ३३६ । अ मण्डार ।

१५०९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१६ । अ मण्डार ।

१५१०. योगसारभाषा—नन्दराम । पत्र सं० ५७ । आ० १२३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १६०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६११ । क मण्डार ।

विशेष—आगरे में ताजगञ्ज में भाषा टीका लिखी गई थी ।

१५११. योगसारभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ३३ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (मद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १६३२ सावन सुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०६ । क मण्डार ।

१५१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० ६१० । क भण्डार ।

१५१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० ६१७ । क भण्डार ।

१५१४. योगसारभाषा—पं० बुधजन । पत्र सं० १० । आ० ११×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) ।

विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १८६५ सावण सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०८ । क भण्डार ।

१५१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७४१ । च भण्डार ।

१५१६. योगसारभाषा..... । पत्र सं० ६ । आ० २१×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१८ । क भण्डार ।

१५१७. योगसारसंग्रह..... । पत्र सं० १८ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । २० काल × । ले० काल सं० १७५० कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ७१ । ज भण्डार ।

१५१८. रूपस्थध्यानवर्णन..... । पत्र सं० २ । आ० १०×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५६ । क भण्डार ।

'धर्मनाथंस्तुवे धर्ममयं सद्धर्मसिद्धये ।

धीमतां धर्मदातारं धर्मचक्रप्रवर्त्तकं ॥

१५१९. लिंगपाहुड—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० ११ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वे० सं० १०३ । क भण्डार ।

विशेष—शील पाहुड तथा गुराबली भी है ।

१५२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६ । क भण्डार ।

१५२१. वैराग्यशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० ७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । च भण्डार ।

१५२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८८५ सावण बुदी ६ । वे० सं० ३३७ । च भण्डार ।

विशेष—बीच में कुछ पत्र कटे हुये हैं ।

१५२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । क भण्डार ।

१५२४. षटपाहुड (प्राभृत)—आचार्य कुन्दकुन्द । पत्र सं० २ से २४ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७ । क भण्डार ।

१५२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १८५४ मंगसिर सुदी १५ । वे० सं० १८८ । क भण्डार ।

१५२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १८१७ माघ बुदी ६ । वे० सं० ७१४ । क भण्डार ।

विशेष—नरायणा (जयपुर) में पं० रूपचन्द्रजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१५२७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८१७ कार्तिक बुदी ७ । वे० सं० १६५ । ख

भण्डार ।

विशेष—संस्कृत पद्यों में भी अर्थ दिया है ।

१५२८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २८० । ख भण्डार ।

१५२९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० १६७ । ख भण्डार ।

१५३०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३१ से ५५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३७ । छ भण्डार ।

१५३१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३८ । छ भण्डार ।

१५३२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २७ से ६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३९ । छ भण्डार ।

१५३३. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५४ । ले० काल × । वे० सं० ७४० । छ भण्डार ।

१५३४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ३५७ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१५३५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १५१६ चैत्र बुदी १३ । वे० सं० ३८० । व्य

भण्डार ।

१५३६. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० १८४६ । ट भण्डार ।

१५३७. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १७१५ । वे० सं० १८४७ । ट भण्डार ।

विशेष—नयनपुर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में ब्र० सुखदेव के पठनार्थ मनोहरदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१५३८. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १ से ८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८५ । ट भण्डार ।

विशेष—निम्न प्राभृत है— दर्शन, सूत्र, चारित्र । चारित्र प्राभृत की ४५ गाथा में आगे नहीं है । प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

१५३९. षट्पाहुडटीका..... । पत्र सं० ५१ । आ० १२×६ डब्ब । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६ । अ भण्डार ।

१५४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ७१३ । क भण्डार ।

१५४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८८० फागुण सुदी ८ । वे० सं० १६६ । ख

भण्डार ।

विशेष—पं० स्वरूपचन्द के पठनार्थ भावनगर में प्रतिलिपि हुई ।

१५४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी १० । वे० सं० २५८ । व्य

भण्डार ।

१५४३. षटपाहुडटीका—श्रुतसागर । पत्र सं० २६५ । आ० १०१/५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१२ । क भण्डार ।

१५४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६६ । ले० काल सं० १८६३ माह बुदी ६ । वे० सं० ७४१ । क भण्डार ।

१५४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५२ । ले० काल सं० १७६५ माह बुदी १० । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

विशेष—नरसिंह अग्रवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

१५४६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १७३६ द्वि० चैत्र सुदी १५ । वे० सं० ६ । अ विशेष—श्रीलालचन्द के पठनार्थ आमेर नगर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१५४७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १७६७ श्रावण सुदी ७ । वे० सं० ६८ । अ भण्डार ।

विशेष—विजयराम तोतूका की धर्मपत्नी विजय शुभदे ने पं० गोरधनदास के लिए ग्रन्थ की प्रतिलिपि करायी थी ।

१५४८. संबोधनरबावनी—द्यानतराय । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । च भण्डार ।

१५४९. संबोधनपंचासिका—गौतमस्वामी । पत्र सं० ४ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८४० बैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । च भण्डार ।

विशेष—बाणपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५५०. समयसार—कुन्दकुन्दाचार्य । पत्र सं० २३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १५६४ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वृत्त सं० २६३ सर्वे भवन्ति । वे० सं० १८१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत् १५६४ वर्षे फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे १२ द्वादशीतिथौ रवौवासरे पुनर्वसुनक्षत्रे श्री मूलसंघे नंदिसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे भ० श्री शुभचन्द्र-देवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्यमंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवास्तत्मुख्यशिष्याचार्य श्रीनेमिचन्द्रदेवास्तैरिमानि नाटकसमयसारवृत्तानि लिखापितानि स्वपठनार्थं ।

१५५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १८६ । अ भण्डार ।

१५५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० २७३ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायान्तर दिया हुआ है । दीवान नवनिधिराम के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी ।

१५५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४२ । वे० सं० ७३४ । क भण्डार ।

१५५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० ७३५ । क भण्डार ।

विशेष—गाथाओं पर ही संस्कृत में अर्थ है ।

१५५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७० । ले० काल × । वे० सं० १०८ । घ भण्डार ।

१५५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८७७ वैशाख बुदी ५ । वे० सं० ३६६ । च

भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१५५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६७ । च भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१५५८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५२ । ले० काल × । वे० सं० ३६७ क । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

१५५९. प्रति सं० १० । पत्र सं० ३ से १३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६८ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ८५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६८ क । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६१. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३७० । च भण्डार ।

१५६२. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० ३७१ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१५६३. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १५६३ पौष बुदी ६ । वे० सं० २१४० । ट

भण्डार ।

१५६४. समयसारकलशा—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० १२२ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १७४३ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १७३ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १७४३ वर्षे आसोज मासे शुक्रपक्षे द्वितिया २ तिथौ गुरुवासरे श्रीमत्कामानगरे श्रीश्वेताम्बरशास्त्रामां श्रीमद्विजयगच्छे भट्टारक श्री १०८ श्री कल्याणसागरसूरिजी तत् शिष्य ऋषिराज श्री जयवंतजी तत् शिष्य ऋषि लक्ष्मणेन पठनाय लिपिचक्रे शुभं भवतु ।

१५६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८४ । ले० काल सं० १६६७ आषाढ सुदी ७ । वे० सं० १३३ । अ

भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज जयसिंहजी के शासनकाल में आमेर में प्रतिलिपि हुई थी । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—
संवत् १६६७ वर्षे अषाढ बदि सप्तम्यां शुक्रवासरे महाराजाधिराज श्री जैसिंहजी प्रतापे प्रभावतीमन्ये लिखाइतं संघी श्री मोहनदासजी पठनार्थ । लिखितं जोशी आलिराज ।

१५६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । अ भण्डार ।

१५६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० सं० २१५ । अ भण्डार ।

१५६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १६४३ । वे० सं० ७३६ । क भण्डार ।

विशेष—सरल संस्कृत में टीका दी है तथा नीचे श्लोकों की टीका है ।

१५६९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२४ । ले० काल × । वे० सं० ७३७ । क भण्डार ।

१५७०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८६७ भाद्रवा सुदी ११ । वे० सं० ७३८ । क

भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मः देवकरण ने प्रतिलिपि की थी ।

१५७१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ७३९ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है ।

१५७२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ७४४ । अ भण्डार ।

विशेष—कलशों पर भी संस्कृत में टिप्पण दिया है ।

१५७३. प्रति सं० १० । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ११० । घ भण्डार ।

१५७४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७१ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है परन्तु पत्र ५६ से संस्कृत टीका नहीं है केवल श्लोक ही हैं ।

१५७५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० २ से ४७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७२ । च भण्डार ।

१५७६. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७१६ कार्तिक सुदी २ । वे० सं० ६१ । छ

भण्डार ।

विशेष—उज्जैन में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५७७. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ८७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

१५७८. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १६१४ पौष बुदी ८ । वे० सं० २०५ । ज

भण्डार ।

विशेष—बीच के ६ पत्र नवीन लिखे हुये हैं ।

१५७९. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० १६१४ । ट भण्डार ।

१५८०. प्रति सं० १७ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० १६६२ । ट भण्डार ।

विशेष—ब्र० नेतसीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१५८१. समयसारटीका (आत्मख्याति)—अमृतचन्द्राचार्य । पत्र सं० १३५ । आ० १०३ × ४३ इञ्च

भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८३३ माह बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २ । अ

भण्डार ।

१५८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १७०३ । वे० सं० १०४ । अ भण्डार ।
विशेष—प्रशस्ति-संवत् १७०३ मार्गसिर कृष्णषण्ठ्यां तिथी बुद्धवारं लिखितेयम् ।

१५८३ प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ३ । अ भण्डार ।

१५८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० से ४६ । ले० काल × । वे० सं० २००३ । अ भण्डार ।

१५८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७०३ बैशाख बुदी १० । वे० सं० २२६ । अ
भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति :-सं० १७०३ वर्षे बैशाख कृष्णादशम्यां तिथी लिखितम् ।

१५८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३१६ । ले० काल सं० १६३८ । वे० सं० ७४० । क भण्डार ।

१५८७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० ७४१ । क भण्डार ।

१५८८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १७०६ । वे० सं० ७४२ । क भण्डार ।

विशेष—भगवंत दुबे ने सिरोज ग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

१५८९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ७४३ । क भण्डार ।

१५९०. प्रति सं० १० । पत्र सं० १६५ । ले० काल × । वे० सं० ७४५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१५९१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १७६ । ले० काल सं० १६४८ बैशाख सुदी ५ । वे० सं० १०६ । घ
भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—अकबर बादशाह के शासनकाल में मालपुरा में लेखक सूरि शैताम्बर मुनि जैसा ने प्रतिलिपि की थी । नीचे निम्नलिखित पंक्तियां और लिखी हैं—

‘पांढे खेतु सेठ तत्र पुत्र पांढे पारसु पोथी देहुरे ।

घाली सं० १६७३ तत्र पुत्रु बीसाखानन्द कवहर ।

बीच में कुछ पत्र लिखवाये हुये हैं ।

१५९२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १६१८ माघ सुदी १ । वे० सं० ७५ । ज
भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—संगही पन्नालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । ११२ से १७० तक नीले पत्र हैं ।

१५९३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १७३० मंगसिर सुदी १५ । वे० सं० १०६ ।
झ भण्डार ।

झ भण्डार ।

१५९४. समयसार वृत्ति..... । पत्र सं० ४ । आ० ८३×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०७ । घ भण्डार ।

१५९५. समयसारटीका..... । पत्र सं० ८१ । आ० १०^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६६ । झ भण्डार ।

१५६६. समयसारनाटक—बनारसीदास । पत्र सं० ६७ । आ० ६६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १६६३ आसोज सुदी १३ । ले० काल सं० १८३८ । पूर्ण । वे० सं० ४०६ । अ
भण्डार ।

१५६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७२ । ले० काल सं० १८६७ फागुण सुदी ६ । वे० सं० ४०६ । अ
भण्डार ।

विशेष—आगरे में प्रतिलिपि हुई थी ।

१५६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०६६ । अ भण्डार ।

१५६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८४ । अ भण्डार ।

१६००. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ से ११५ । ले० काल सं० १७८६ फागुण सुदी ४ । वे० सं० ११२८
अ भण्डार ।

१६०१ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८४ । ले० काल सं० १६३० ज्येष्ठ बुदी १५ । वे० सं० ७४६ । क
भण्डार ।

विशेष—पद्यों के बीच में सदासुख कासलीवाल कृत हिन्दी गद्य टीका भी दी हुई है । टीका रचना सं०
१६१४ कार्तिक सुदी ७ है ।

१६०२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १६५६ । वे० सं० ७४७ । क भण्डार ।

१६०३. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४ से ५६ । ले० काल × । वे० सं० २०८ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नहीं हैं ।

१६०४. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १८८७ माघ सुदी ८ । वे० सं० ८४ । ग भण्डार ।

१६०५. प्रति सं० १० । पत्र सं० ३६६ । ले० काल सं० १६२० बैशाख सुदी १ । वे० सं० ८५ । ग
भण्डार ।

विशेष—प्रति गुटके के रूप में है । लिपि बहुत सुन्दर है । अक्षर मोटे हैं तथा एक पत्र में ५ लाइन और
प्रति लाइन में १८ अक्षर हैं । पद्यों के नीचे हिन्दी अर्थ भी है । विस्तृत सूचीपत्र २१ पत्रों में है । यह ग्रन्थ तनसुख
सोनी का है ।

१६०६. प्रति सं० ११ । पत्र सं० २८ से १११ । ले० काल सं० १७१४ । अपूर्ण । वे० सं० ७६७ । ङ
भण्डार ।

विशेष—रामगोपाल कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी ।

१६०७. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १२२ । ले० काल सं० १६५१ चैत्र सुदी २ । वे० सं० ७६८ । ङ
भण्डार ।

विशेष—म्होरीलाल ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१६०८. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६४३ मंगसिर बुदी १३ । वे० सं० ७६९ ।
ङ भण्डार ।

विशेष—लक्ष्मीनारायण ब्राह्मण ने जयनगर में प्रतिलिपि की थी ।

१६०६. प्रति सं० १४ । पत्र सं० १६० । ले० काल सं० १६७७ प्रथम सावण सुदी १३ । वे० सं०

७७० । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी गद्य में भी टीका है ।

१६१०. प्रति सं० १५ । पत्र सं० १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७७१ । छ भण्डार ।

१६११. प्रति सं० १६ । पत्र सं० २ से २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५७ । छ भण्डार ।

१६१२. प्रति सं० १७ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १७६३ आषाढ सुदी १५ । वे० सं० ७७२ ।

छ भण्डार ।

१६१३. प्रति सं० १८ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८३४ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं० ६६२ । च

भण्डार ।

विशेष—पांडे नानगराम ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि कराई

१६१४. प्रति सं० १६ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६५ । च भण्डार ।

१६१५. प्रति सं० २० । पत्र सं० ४१ से १३२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६५ (क) । च

भण्डार ।

१६१६. प्रति सं० २१ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ६६५ (ख) । च भण्डार ।

१६१७. प्रति सं० २२ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ६६५ (ग) । च भण्डार ।

१६१८. प्रति सं० २३ । पत्र सं० ४० से ५० । ले० काल सं० १७०४ ज्येष्ठ सुदी २ । अपूर्ण । वे०

सं० ६२ (अ) । छ भण्डार ।

१६१९. प्रति सं० २४ । पत्र सं० १८३ । ले० काल सं० १७८८ आषाढ बुदी २ । वे० सं० ३ । ज

भण्डार ।

विशेष—भिण्ड निवासी किसी कायस्थ ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२०. प्रति सं० २५ । पत्र सं० ४ से ८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५२६ । ट भण्डार ।

१६२१. प्रति सं० २६ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७०८ । ट भण्डार ।

१६२२. प्रति सं० २७ । पत्र सं० २३७ । ले० काल सं० १७४६ । वे० सं० १६०६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति राजमल्लकृत गद्य टीका सहित है ।

१६२३. प्रति सं० २८ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० १८६० । ट भण्डार ।

१६२४. समयसारभाषा—जयचन्द्र छाबड़ा । पत्र सं० ५१३ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—अध्यात्म । २० काल सं० १८६४ कार्तिक बुदी १० । ले० काल सं० १६४६ । पूर्ण । वे० सं० ७४८ ।

क भण्डार ।

१६२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६६ । ले० काल × । वे० सं० ७४६ । क भण्डार ।

१६२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१६ । ले० काल × । वे० सं० ७५० । क भण्डार ।

१६२७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३२५ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ७५२ । क भण्डार ।

विशेष—सदामुखजी के पुत्र श्योचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१७ । ले० काल सं० १८७७ आषाढ़ बुदी १५ । वे० सं० १११ । घ

भण्डार ।

विशेष—बेनीराम ने लखनऊ में नवाब गजुद्दीह बहादुर के राज्य में प्रतिलिपि की ।

१६२९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३७५ । ले० काल सं० १९५२ । वे० सं० ७७३ । ङ भण्डार ।

१६३०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०१ से ३१२ । ले० काल × । वे० सं० ६९३ । च भण्डार ।

१६३१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३०५ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । ज भण्डार ।

१६३२. समयसारकलशाटीका । पत्र सं० २०० से ३३२ । आ० ११८×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १७१५ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । छ भण्डार ।

विशेष—बंध मोक्ष सर्व विशुद्ध ज्ञान और स्याद्वाद चूलिका ये चार अधिकार पूर्ण हैं । शेष अधिकार नहीं हैं । पहिले कलशा दिये हैं फिर उनके नीचे हिन्दी में अर्थ है । समयसार टीका श्लोक सं० ५४६५ हैं ।

१६३३. समयसारकलशाभाषा । पत्र सं० ६२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) ।

विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६९१ । च भण्डार ।

१६३४. समयसारवचनिका । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ६९४ । च भण्डार ।

१६३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ६९४ (क) । च भण्डार ।

१६३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । वे० सं० ३९६ । च भण्डार ।

१६३७. समाधितन्त्र—पूज्यपाद । पत्र सं० ५१ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५६ । क भण्डार ।

१६३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० ७५८ । क भण्डार ।

१६३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १९३० बैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७५९ ।

क भण्डार ।

१६४०. समाधितन्त्र । पत्र सं० १६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योगशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । व्य भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया है ।

१६४१. समाधितन्त्रभाषा । पत्र सं० १३८ से १९२ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—हिन्दी

(गद्य) । विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । बीच के पत्र भी नहीं हैं ।

१६४२. समाधितन्त्रभाषा—माणकचन्द्र । पत्र सं० २६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी

विषय—योगशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२२ । अ भण्डार ।

विशेष—मूल ग्रन्थ पूज्यपाद का है ।

१६४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १६४२ । वै० सं० ७५५ । क भण्डार ।

१६४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वै० सं० ७५७ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ ऋषभदास निगोत्या द्वारा शुद्ध किया गया है ।

१६४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वै० सं० ७६ । क भण्डार ।

१६४६. समाधितन्त्रभाषा—नाथूराम दोसी । पत्र सं० ४१५ । आ० १२३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—योग । २० काल सं० १६२३ चैत्र सुदी १२ । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ण । वै० सं० ७६१ । क भण्डार ।

१६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१० । ले० काल × । वै० सं० ७६२ । क भण्डार ।

१६४८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६८ । ले० काल सं० १६५३ द्वि० ज्येष्ठ बुदी १० । वै० सं० ७८० ।

क भण्डार ।

१६४९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७५ । ले० काल × । वै० सं० ६९७ । च भण्डार ।

१६५०. समाधितन्त्रभाषा—पर्वतधर्मार्थी । पत्र सं० १८७ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा—गुजराती

लिपि हिन्दी । विषय—योग । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ११३ । घ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र दुबारा लिखे गये हैं । सारंगपुर निवासी पं० उधरण ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४८ । ले० काल सं० १७४१ कार्तिक सुदी ६ । वै० सं० ११४ । घ

भण्डार ।

१६५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ७८१ । ङ भण्डार ।

१६५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २०१ । ले० काल × । वै० सं० ७८२ । ङ भण्डार ।

१६५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७४ । ले० काल सं० १७७१ । वै० सं० ६९८ । च भण्डार ।

विशेष—समीरपुर में पं० नानिगराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३२ । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १४२ । छ भण्डार ।

१६५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १७३४ पौष सुदी ११ । वै० सं० ४४ । ज

भण्डार ।

विशेष—पाण्डे ऊधोलाल काला ने केसरलाल जोशी से बहिन नाथी के पठनार्थ सीलोर में प्रतिलिपि करवायी थी । प्रति गुटका साइज है ।

१६५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २३८ । ले० काल सं० १७८६ आषाढ सुदी १३ । वै० सं० ५९ । झ

भण्डार ।

१६५८. समाधिमरण..... । पत्र सं० ४ । आ० ७३×६३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १३२६ ।

१६५९. समाधिमरणभाषा—द्यानतराय । पत्र सं० ३ । आ० ८३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—

अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४४२ । अ भण्डार ।

१६६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वै० सं० ७७९ । अ भण्डार ।

१६६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वै० सं० ७८३ । अ भण्डार ।

१६६२. समाधिमरणभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १०१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३३ । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द का सामान्य परिचय दिया हुआ है । टीका बाबा दुलीचन्द की प्रेरणा से की गई थी ।

१६६३. समाधिमरणभाषा—सूरचंद । पत्र सं० ७ । आ० ७ $\frac{1}{2}$ ×५ $\frac{1}{2}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

१६६४. समाधिमरणभाषा..... । पत्र सं० १३ । आ० १३ $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८४ । छ भण्डार ।

१६६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० १७३७ । ट भण्डार ।

१६६६. समाधिमरणस्वरूपभाषा..... । पत्र सं० २५ । आ० १० $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १८७८ मंगसिर बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४३१ । अ भण्डार ।

१६६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८८३ मंगसिर बुदी ११ । वे० सं० ८६ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने यह ग्रन्थ लिखवाकर चौधरियों के मन्दिर में चढाया ।

१६६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १८२७ । वे० सं० ६६६ । च भण्डार ।

१६६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६३४ भादवा सुदी १ । वे० सं० ७०० । च भण्डार ।

१६७०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८८४ भादवा बुदी ८ । वे० सं० २३६ । छ भण्डार ।

१६७१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८५३ पौष बुदी ६ । वे० सं० १७५ । ज भण्डार ।

विशेष—हरवंश लुहाड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

१६७२. समाधिशतक—पूज्यपाद । पत्र सं० १६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६४ । अ भण्डार ।

१६७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ७६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१६७४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६२४ बैशाख बुदी ६ । वे० सं० ७७ । ज भण्डार ।

विशेष—संगही पन्नालाल ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१६७५. समाधिशतकटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५२ । आ० १२ $\frac{1}{2}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । २० काल × । ले० काल सं० १६३५ श्रावण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ७६३ । क भण्डार ।

१६७६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ७६५ । क भण्डार ।

१६७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६५८ फागुण बुदी १३ । वे० सं० ३७३ । च विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६७८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३७४ । च भण्डार ।

१६७९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ७८५ । छ भण्डार ।

१६८०. समाधिशतकटीका..... पत्र सं० १५ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३५ । अ भण्डार ।

१६८१. संबोधपंचासिका—गौतमस्वामी । पत्र सं० १६ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८६ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी है ।

१६८२. संबोधपंचासिका—रङ्गधू । पत्र सं० ५ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । र० काल × । ले० काल सं० १७१६ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २२६ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० बिहारीदासजी ने इसकी प्रतिलिपि करवायी थी । प्रशस्ति—

संवत् १७१६ वर्षे मिते पौष वदि ७ सुभ दिने महाराजाधिराज श्री जैसिंहजी विजयराज्ये साह श्री हंसराज तत्पुत्र साह श्री गेगराज तत्पुत्र त्रयः प्रथम पुत्र साह राइमलजी । द्वितीय पुत्र साह श्री वलिकर्ण तृतीय पुत्र साह देवसी । जाति साबडा साह श्री रायमलजी का पुत्र पवित्र साह श्री विहारीदासजी लिखायते ।

दोहडा—पूरव श्रावक कौ कहे, गुण इकवीस निवास ।

सो परतखि पेखिये, अंगि बिहारीदास ॥

लिखतं महात्मा झूगरसी पंडित पदमसीजी का चेला खरतर गच्छे वासी मौजे मोहाराणात् मुकाम दिल्ली मध्ये ।

१६८३. संबोधशतक—द्यानतराय । पत्र सं० ३४ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८९ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम २० पत्रों में चरचा शतक भी है । प्रति दोनों ओर से जली हुई है ।

१६८४. संबोधसत्तरी..... पत्र सं० २ से ७ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—अध्यात्म । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८८ । अ भण्डार ।

१६८५. स्वरोदय..... पत्र सं० १६ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । र० काल × । ले० काल सं० १८१३ मंगसिर सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २४१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है । देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य उदयराम ने टीका लिखी थी ।

१६८६. स्वानुभवदर्पण—नाथूराम । पत्र सं० २१ । आ० १३×८३ इञ्च । भाषा हिन्दी (पद्य) । विषय—अध्यात्म । र० काल सं० १६५६ चैत्र सुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७ । छ भण्डार ।

१६८७. हठयोगदीपिका..... पत्र सं० २१ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—योग । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४४४ । च भण्डार ।

विषय-न्याय एवं दर्शन

१६८८. अध्यात्मकमलमार्गाण्ड—कवि राजमल्ल । पत्र सं० २ से १२ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैन दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९७५ । अ भण्डार ।

१६८९. अष्टशती—अकलंकदेव । पत्र सं० १७ । आ० १२×५^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैन दर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १७९४ मंगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० २२२ । अ भण्डार ।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है । पं० सुखराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६९०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १८७५ फागुन सुदी ३ । वे० सं० १५९ । ज भण्डार ।

१६९१. अष्टसहस्री—आचार्य विद्यानन्दि । पत्र सं० १९७ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैनदर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १७९१ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २४४ । अ भण्डार ।

विशेष—देवागम स्तोत्र टीका है । लिपि सुन्दर है । अन्तिम पत्र पीछे लिखा गया है । पं० चोखचन्द ने अपने पठनार्थ प्रतिलिपि कराई । प्रशस्ति—

श्री भूरामल संघ मंडनमणिः, श्री कुन्दकुन्दान्वये श्रीदेशीगणगच्छपुस्तकत्रिधा, श्री देवसंघाग्रणी संवत्सरे चंद्र रंध्र मुनीदुमिते (१७९१) मार्गशीर्षमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां तिथौ चोखचंद्रेण विदुषा शुभं पुस्तकमष्टसहस्र्यासप्तप्रमाणेन स्वकीयपठनार्थमायत्तोकृतं ।

पुस्तकमष्टसहस्र्या वै चोखचंद्रेण धीमता ।

ग्रहीतं शुद्धभावेन स्वकर्मक्षयहेतवे ॥१॥

१६९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४० । छ भण्डार ।

१६९३. आप्तपरीक्षा—विद्यानन्दि । पत्र सं० २५७ । आ० १२×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैन न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १९३६ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५८ । क भण्डार ।

विशेष—लिपिकार पन्नालाल चौधरी । भोगने से पत्र चिपक गये हैं ।

१६९४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ५९ । क भण्डार ।

विशेष—कारिका मात्र है ।

१६९५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३३ । अपूर्ण । च भण्डार ।

१६६६. आप्तमीमांसा—समन्तभद्राचार्य । पत्र सं० ८४ । आ० १२^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—जैन न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १६३५ आषाढ़ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६० । क भण्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ का दूसरा नाम 'देवागमस्तोत्र सटीक अष्टशती' दिया हुआ है ।

१६६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ६१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

१६६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० ६३ । क भण्डार ।

१६६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

१७००. आप्तमीमांसासालंकृति—विद्यानन्दि । पत्र सं० २२६ । आ० १६×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ भाद्रवा सुदी १५ । वे० सं० १४ ।

विशेष—इसका नाम अष्टशती भाष्य तथा अष्टसहस्री भी है । मालपुरा ग्राम में महाराजाधिराज राजसिंह जी के शासनकाल में चतुर्भुज ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवायी थी । प्रति काफी बड़ी साइज की है ।

१७०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२५ । ले० काल × । वे० सं० ८६६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति बड़ी साइज की तथा सुन्दर लिखी हुई है । प्रति प्रदर्शन योग्य है ।

१७०२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७२ । आ० १२×५^३ इञ्च । ले० काल सं० १७८४ आश्विन सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ७३ । क भण्डार ।

१७०३. आप्तमीमांसाभाषा—जयचन्द्र छात्राड़ । पत्र सं० ६२ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—न्याय । २० काल सं० १८६६ । ले० काल १८६० । पूर्ण । वे० सं० ३६५ । अ भण्डार ।

१७०४. आलापपद्धति—देवसेन । पत्र सं० १० । आ० १०^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५० । अ भण्डार ।

विशेष—१ पृष्ठ से ४ पृष्ठ तक प्राभृतमार ४ से ६ तक सप्तभंग ग्रन्थ और हैं ।

प्राभृतसार—मोह तिमिर मार्तण्ड रियजनन्दिपंच शाक्तिकदेवनेदं कथितं ।

१७०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० २०१० फागुण बुदी ४ । वे० सं० २२७० । अ भण्डार ।

विशेष—आरम्भ में प्राभृतसार तथा सप्तभंगी है । जयपुर में नाथूलाल बज ने प्रतिलिपि की थी ।

१७०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ७६ । क भण्डार ।

१७०७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६ । च भण्डार ।

१७०८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ३ । च भण्डार ।

१७०९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ४ । अ भण्डार ।

विशेष—मूलसूत्र के आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

१७१०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ से १५ । ले० काल सं० १७८६ । अपूर्ण । वे० सं० ५१५ । त्र भण्डार ।

१७११. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १० ले० काल × । वे० सं० १८२१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१७१२. ईश्वरवाद पत्र सं० ३ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० २ । व्य भण्डार ।

विशेष—किसी न्याय के ग्रन्थ से उद्धृत है ।

१७१३. गभंषडारचक्र—देवनांदि । पत्र सं० ३ । आ० ११×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२७ । झ भण्डार ।

१७१४. ज्ञानदीपक..... पत्र सं० २४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१ । ख भण्डार ।

विशेष—स्वाध्याय करने योग्य ग्रन्थ हैं ।

१७१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २३ । झ भण्डार ।

१७१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ से ६४ । ले० काल सं० १८५६ चैत बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० १५६२ । ट भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इसो ज्ञान दीपक श्रुत पढो सुणो चितधार ।

सब विद्या को मूल ये या विन सकल असार ॥

इति ज्ञानदीपक नामा न्यायश्रुत संपूर्ण ।

१७१७. ज्ञानदीपकवृत्ति पत्र सं० ८ । आ० ६^३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

नमामि पूर्णाचिद्रूपं नित्योदितमनावृतं ।

सर्वाकाराभाधिभा शक्त्या लिंगितमीश्वरं ॥१॥

ज्ञानदीपकमादाय वृत्ति कृत्वासदासरैः ।

स्वरस्नेहन संयोज्यं ज्वालयेदुत्तराधरैः ॥२॥

१७१८. तर्कप्रकरण पत्र सं० ४० । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५८ । अ भण्डार ।

१७१९. तर्कदीपिका पत्र सं० १५ । आ० १४×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १८३२ माह मुदा १३ । वे० सं० २२४ । ज भण्डार ।

१७२०. तर्कप्रमाण। पत्र सं० ८ से ५० । आ० ६१×४४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण एवं जीर्ण । वे० सं० १६४५ । अ भण्डार ।

१७२१. तर्कभाषा—केशव मिश्र । पत्र सं० ४४ । आ० १०×४४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
न्याय । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ७१ । ख भण्डार ।

१७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से २६ । ले० काल सं० १७४६ भाद्रवा बुदी १० । वे० सं० २७३ ।
ङ भण्डार ।

१७२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । आ० १०×४४ इञ्च । ले० काल सं० १६६६ ज्येष्ठ बुदी २ । वे०
सं० २२५ । ज भण्डार ।

१७२४. तर्कभाषाप्रकाशिका—बालचन्द्र । पत्र सं० ३५ । आ० १०×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५११ । ख भण्डार ।

१७२५. तर्करहस्यदीपिका—गुणरत्नसूरि । पत्र सं० १३५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२६४ । अ भण्डार ।

विशेष—यह हरिभद्र के षड्दर्शन समुच्चय की टीका है ।

१७२६. तर्कसंग्रह—अन्नभट्ट । पत्र सं० ७ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०२ । अ भण्डार ।

१७२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८२४ भाद्रवा बुदी ५ । वे० सं० ४७ । ज
भण्डार ।

विशेष—रावल मूलराज के शासन में लच्छीराम ने जैसलपुर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१७२८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८१२ माह सुदी ११ । वे० सं० ४८ । ज
भण्डार ।

विशेष—पोथी मारणकचन्द लुहाड्या की है । 'लेखक विजराम पौष बुदी १३ संवत् १८१३' यह भी लिखा
हुआ है ।

१७२९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १७६३ चैत्र सुदी १५ । वे० सं० १७६५ । ट
भण्डार ।

विशेष—आमेर के नेमिनाथ चैत्यालय में भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य (छात्र) दोदराज ने स्वपठनार्थ
प्रतिलिपि की थी ।

१७३०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८४१ मंगसिर बुदी ४ । वे० सं० १७६८ । ङ
भण्डार ।

विशेष—चेला प्रतापसागर पठनार्थ ।

१७३१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८३६ । वे० सं० १७६६ । ट भण्डार ।

विशेष—सवाई माधोपुर में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने अपने हाथ से प्रतिलिपि की ।

नोट—उक्त ६ प्रतियों के अतिरिक्त तर्कसंग्रह की अ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ११३, १८३६, २०४६) ऊ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७४) च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३६) ज भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ४६, ४६, ३४०) ट भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १७६६, १८३२) और हैं ।

१७३२. तर्कसंग्रहटीका..... पत्र सं० ८ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४२ । अ भण्डार ।

१७३३. तार्किकशिरोमणि—रघुनाथ । पत्र सं० ८ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८० । अ भण्डार ।

१७३४. दर्शनसार—देवसेन । पत्र सं० ५ । आ० १०^१/_२×४^३/_४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—दर्शन ।
२० काल सं० ६६० माघ सुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना धारानगर में श्री पार्श्वनाथ चैत्यालय में हुई थी ।

१७३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८७१ माघ सुदी ५ । वे० सं० ११६ । छ
भण्डार ।

विशेष—पं० बल्लराम के शिष्य हरवंश ने नेमिनाथ चैत्यालय (गोधों के मन्दिर) जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१७३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २८२ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टब्बा टीका सहित है ।

१७३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ३ । अ भण्डार ।

१७३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १८५० भाद्रपद बुदी ८ । वे० सं० ५ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में पं० सुखरामजी के शिष्य केसरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

१७३९. दर्शनसारभाषा—नथमल । पत्र सं० ८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
दर्शन । २० काल सं० १६२० प्र० श्रावण बुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६५ । क भण्डार ।

१७४०. दर्शनसारभाषा—पं० शिवजीलाल । पत्र सं० २८१ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी
(गद्य) । विषय—दर्शन । २० काल सं० १६२३ माघ सुदी १० । ले० काल सं० १६३६ । पूर्ण । वे० सं० २६४ । क
भण्डार ।

१७४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२० । ले० काल × । वे० सं० २८६ । ऊ भण्डार ।

१७४२. दर्शनसारभाषा..... पत्र सं० ७२ । आ० ११^३/_४×५^३/_४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—दर्शन ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८० । ख भण्डार ।

१७४३. द्विजवचनचपेटा । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २०
काल × । ले० काल × । वे० सं० ३८२ । अ भण्डार ।

१७४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १७६८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

१७४५. नयचक्र—देवसेन । पत्र सं० ४५ । आ० १०३×७ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय—सात नयों का वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १६४३ पौष सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ३३५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम मुखबोधार्थ माला पद्धति भी है । उक्त प्रति के अतिरिक्त क भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ३५३, ३५४, ३५६) च छ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १७७ व १०१) और हैं ।

१७४६. नयचक्रभाषा—हेमराज । पत्र सं० ५१ । आ० १२ $\frac{१}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—सात नयों का वर्णन । २० काल सं० १७२६ फागुण सुदी १० । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ण । वे० सं० ३५७ । क भण्डार ।

१७४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १७२६ । वे० सं० ३५८ । क भण्डार ।

विशेष—७७ पत्र से तत्त्वार्थ सूत्र टीका के अनुसार नय वर्णन हैं ।

नोट—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त ङ, छ, ज, झ भण्डारों में एक एक प्रति (वे० सं० ३४५, १८७, ६२३, ८१) क्रमशः और हैं ।

१७४८. नयचक्रभाषा ... । पत्र सं० १०६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । २० काल × । ले० काल सं० १६४८ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३५९ । क भण्डार ।

१७४९. नयचक्रभावप्रकाशिनीटीका—निहालचन्द अग्रवाल । पत्र सं० १३७ । आ० १२×७ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—न्याय । २० काल सं० १८६७ । ले० काल सं० १६४४ । पूर्ण । वे० सं० ३६० । क भण्डार ।

विशेष—यह टीका कानपुर कैंट में की गई थी ।

१७५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०४ । ले० काल × । वे० सं० ३६१ । क भण्डार ।

१७५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २२४ । ले० काल सं० १६३८ फागुण सुदी ६ । वे० सं० ३६२ । क भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गयी थी ।

१७५२. न्यायकुमुदचन्द्रोदय—भट्ट अकलंकदेव । पत्र सं० १५ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ १ से ६ तक न्यायकुमुदचन्द्रोदय ५ परिच्छेद तथा शेष पृष्ठों में भट्टाकलंकशाशाकानुस्मृति प्रवचन प्रवेश है ।

१७५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६४ पौष सुदी ७ । वे० सं० २७० । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई राम ने प्रतिलिपि की थी ।

१७५४. न्यायकुमुदचन्द्रिका—प्रभाचन्द्रदेव । पत्र सं० ५८८ । आ० १४^३/_५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १९३७ । पूर्ण । वे० सं० ३९६ । क भण्डार ।

विशेष—भट्टाकलंक कृत न्यायकुमुदचन्द्रोदय की टीका है ।

१७५५. न्यायदीपिका—धर्मभूषणयति । पत्र सं० ३ से ८ । आ० १०^१/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२०७ । अ भण्डार ।

नोट—उक्त प्रति के अतिरिक्त क भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३६७, ३९८) घ एवं च भण्डार में एक २ प्रति
(वे० सं० ३४७, १८०) च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १८०, १८१) तथा ज भण्डार में एक प्रति
(वे० सं० ५२) और है ।

१७५६. न्यायदीपिकाभाषा—सदासुख कासलीवाल । पत्र सं० ७१ । आ० १४×७^३/_४ इञ्च । भाषा—
हिन्दी । विषय—दर्शन । २० काल सं० १९३० । ले० काल सं० १९३८ बैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । ड
भण्डार ।

१७५७. न्यायदीपिकाभाषा—संधी पन्नालाल । पत्र सं० १९० । आ० १२^३/_७ इञ्च । भाषा—
हिन्दी । विषय—न्याय । २० काल सं० १९३५ । ले० काल सं० १९४१ । पूर्ण । वे० सं० ३९९ । क भण्डार ।

१७५८. न्यायमाला—परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री भारती तीर्थमुनि । पत्र सं० ८६ से १२७ ।
आ० १०^३/_५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १९०० सावण बुदी ५ । अपूर्ण ।
वे० सं० २०९३ । अ भण्डार ।

१७५९. न्यायशास्त्र । पत्र सं० २ से ५२ । आ० १०^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९७६ । अ भण्डार ।

१७६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९४६ । अ भण्डार ।

विशेष—किसी न्याय ग्रन्थ से उद्धृत है ।

१७६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५ । ज भण्डार ।

१७६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६८ । ट भण्डार ।

१७६३. न्यायसार—माधवदेव (लक्ष्मणदेव का पुत्र) पत्र सं० २८ से ८७ । आ० १०^३/_४ इंच
इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल सं० १७४९ । अपूर्ण । वे० सं० १३४३ । अ भण्डार ।

१७६४. न्यायसार । पत्र सं० २४ । आ० १०×४^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१९ । अ भण्डार ।

विशेष—आगम परिच्छेद तर्कपूर्ण है ।

१७६५. न्यायसिद्धान्तमञ्जरी—जानकीनाथ । पत्र सं० १४ से ४६ । आ० ९^३/_३ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १७७४ । अपूर्ण । वे० सं० १५७८ । अ भण्डार ।

१७६६. न्यायसिद्धांतमञ्जरी—भट्टाचार्य चूडामणि । पत्र सं० २८ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३ । ज भण्डार ।

विशेष—सटीक प्राचीन प्रति है ।

१७६७. न्यायसूत्र..... । पत्र सं० ४ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०२९ । अ भण्डार ।

विशेष—हेम व्याकरण में से न्याय सम्बन्धी सूत्रों का संग्रह किया गया है । आशानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१७६८. पट्टरीति—विष्णुभट्ट । पत्र सं० २ से ६ । आ० १० इञ्च×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका— इति साधर्म्य वैधर्म्य संग्रहोऽयं कियानपि विष्णुभट्टः पट्टरीत्या बालधुत्पत्तये कृतः । प्रति प्राचीन है ।

१७६९. पत्रपरीक्षा—विद्यानंदि । पत्र सं० १५ । आ० १२ इञ्च×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७८९ । अ भण्डार ।

१७७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३९ । ले० काल सं० १६७७ आसोज बुदी ९ । वे० सं० १६४६ । ट भण्डार ।

विशेष—शेरपुरा में श्री जिन चैत्यालय में लिखमीचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

१७७१. पत्रपरीक्षा—पात्र केशरी । पत्र सं० ३७ । आ० १२ इञ्च×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १९३४ आसोज सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ४५७ । क भण्डार ।

१७७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ४५८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१७७३. परीक्षामुख—माणिक्यनंदि । पत्र सं० ५ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३९ । क भण्डार ।

१७७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८६६ भादवा सुदी १ । वे० सं० २१३ । च भण्डार ।

१७७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ९७ से १२६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१४ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

१७७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २८१ । छ भण्डार ।

१७७७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १९०८ । वे० सं० १४५ । ज भण्डार ।

लेखन काल अष्टे व्योम क्षिति निधि भूमि ते भाद्रमासगे)

१७७८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १७३८ । ट भण्डार ।

१७५६. परीक्षामुखभाषा—जयचन्द छात्रड़ा । पत्र सं० ३०६ । आ० १२×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—न्याय । २० काल सं० १८६३ आषाढ सुदी ४ । ले० काल सं० १६४० । पूर्ण । वे० सं० ४५१ । क भण्डार ।

१७५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० ४५० । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर प्रक्षरों में है । एक पत्र पर हाशिया पर सुन्दर बेलें हैं । अन्य पत्रों पर हाशिया में केवल रेखायें ही दी हुई हैं । लिपिकार ने ग्रन्थ अथुरा छोड़ दिया प्रतीत होता है ।

१७५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १६३० मंगसिर सुदी २ । वे० सं० ५६ । च भण्डार ।

१७५९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२० । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । ले० काल सं० १८७८ श्रावण बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ५०५ । क भण्डार ।

१७६०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१८ । ले० काल × । वे० सं० ६३६ । च भण्डार ।

१७६१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १६५ । ले० काल सं० १६१६ कार्तिक बुदी १४ । वे० सं० ६४० । च भण्डार ।

१७६२. पूर्वमीमांसार्थप्रकरण-संग्रह—लोगान्तिभास्कर । पत्र सं० ६ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६ । ज भण्डार ।

१७६३. प्रमाणनयतत्त्वालोकालंकारटीका—रत्नप्रभसूरि । पत्र सं० २८८ । आ० १२×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'रत्नाकरावतारिका' है । मूलकर्ता वादिदेव सूरि हैं ।

१७६४. प्रमाणनिर्णय..... । पत्र सं० ६४ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६७ । क भण्डार ।

१७६५. प्रमाणपरीक्षा—आ० विद्यानंदि । पत्र सं० ६६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १६३४ आसोज सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ४६८ । क भण्डार ।

१७६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १७६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । इति प्रमाण परीक्षा समाप्ता । मितिराषाढमासस्यपक्षेश्यामलके तिथौ तृतीयायां प्रमाणाय परीक्षा निखिता खलु ॥१॥

१७६७. प्रमाणपरीक्षाभाषा—भागचन्द । पत्र सं० २०२ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—न्याय । २० काल सं० १६१३ । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । क भण्डार ।

१७६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१६ । ले० काल × । वे० सं० ५०० । क भण्डार ।

१७६९. प्रमाणप्रमेयकलिका—नरेन्द्रसेन । पत्र सं० ६७ । आ० १२×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ण । वे० सं० ५०१ । क भण्डार ।

१७६३. प्रमाणमीमांसा—विद्यानन्दि । पत्र सं० ४० । आ० ११३×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

१७६४. प्रमाणमीमांसा..... । पत्र सं० ६२ । आ० ११३×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय ।
२० काल × । ले० काल सं० १६५७ श्रावण सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ५०२ । क भण्डार ।

१७६५. प्रमेयकमलमार्त्तण्ड—आचार्य प्रभाचन्द्र । पत्र सं० २७६ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७८ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ १३४ तथा २७६ से आगे नहीं है ।

१७६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३८ । ले० काल सं० १६४२ ज्येष्ठ बुदी ५ । वे० सं० ५०३ । क
भण्डार ।

१७६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५०४ । क भण्डार ।

१७६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११८ । ले० काल × । वे० सं० १६१७ । ट भण्डार ।

विशेष—५ पत्रों तक संस्कृत टीका भी है । सर्वज्ञ सिद्धि ने सदेहवादियों के खण्डन तक है ।

१७६९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ से ३४ । आ० १०×४३ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं०
२१४७ । ट भण्डार ।

१८००. प्रमेयरत्नमाला—अनन्तवीर्य । पत्र सं० १५६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १६३४ भाद्रवा सुदी ७ । वे० सं० ४५२ । क भण्डार ।

विशेष—परीक्षामुख की टीका है ।

१८०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० २३७ । ख भण्डार ।

१८०२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १७६७ माघ बुदी १० । वे० सं० १०१ । छ
भण्डार ।

विशेष—तक्षकपुर में रत्नऋषि ने प्रतिलिपि की थी ।

१८०३. बालबोधिनी—शंकर भगति । पत्र सं० १३ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६२ । अ भण्डार ।

१८०४. भावदीपिका—कृष्ण शर्मा । पत्र सं० ११ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६५ । ट भण्डार ।

विशेष—सिद्धांतमञ्जरी की व्याख्या दी हुई है ।

१८०५. महाविद्याधिदम्बन..... । पत्र सं० १२ से १६ । आ० १०^१/_२×४^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १५५३ फागुण सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० १६८६ । अ भण्डार ।

विशेष—मंत्र १५५३ वर्षे फागुण सुदी ११ सोमे अष्टौ श्रीपत्तनमध्ये एतत् पत्राणि लिखितानि
सम्पूर्णानि ।

१८०६. युक्त्यनुशासन—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं० ६ । आ० १२३×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०४ । क भण्डार ।

१८०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । ६०५ । क भण्डार ।

१८०८. युक्त्यनुशासनटीका—विद्यानन्दि । पत्र सं० १८८ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १६३४ पौष सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६०१ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलोचन्द ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१८०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वे० सं० ६०२ । क भण्डार ।

१८१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४२ । ले० काल सं० १६४७ । वे० सं० ६०३ । क भण्डार ।

१८११. वीतरागस्तोत्र—आ० हेमचन्द्र । पत्र सं० ७ । आ० ११३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १५१२ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २५२ । अ भण्डार ।

विशेष—चित्रकूट दुर्ग में प्रतिलिपि की गई थी । संवत् १५१२ वर्षे आसोज सुदी १२ दिने श्री चित्रकूट
दुर्गोलिखतः ।

१८१२. वीरद्वान्त्रिंशतिका—हेमचन्द्रसूरि । पत्र सं० ३३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७७ । अ भण्डार ।

विशेष—३३ से आगे पत्र नहीं हैं ।

१८१३. षड्दर्शनवार्त्ता । पत्र सं० २८ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१ । ट भण्डार ।

१८१४. षड्दर्शनविचार..... । पत्र सं० १० । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
दर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १७२४ माह बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ७४२ । क भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में जोधराज गोदीका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । श्लोकों का हिन्दी अर्थ भी दिया
हुआ है ।

१८१५. षड्दर्शनसमुच्चय—हरिभद्रसूरि । पत्र सं० ७ । आ० १२३×५ इञ्च । विषय—दर्शन । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०९ । क भण्डार ।

१८१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६८ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन शुद्ध एवं संस्कृत टीका सहित है ।

१८१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७४३ । क भण्डार ।

१८१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १५७० भाद्रपदा सुदी २ । वे० सं० ३६६ । अ
भण्डार ।

१८१९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १८६४ । ट भण्डार ।

१८२०. षड्दर्शनसमुच्चयवृत्ति—गणरतनसूरि । पत्र सं० १८५ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १६४७ द्वि० भाद्रपदा सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ७११ । क भण्डार ।

१८२१. षड्दर्शनसमुच्चयटीका.....। पत्र सं० ६० । आ० १२३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१० । क भण्डार ।

१८२२. संचिप्रवेदान्तशास्त्रप्रक्रिया । पत्र सं० ४६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १७२७ । वे० सं० ३६७ । व्य भण्डार ।

१८२३. सप्तनयावबोध—मुनि नेत्रसिंह । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन (सप्त नयों का वर्णन है) । २० काल × । ले० काल सं० १७४५ । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । अ भण्डार ।

प्रारम्भ—

विनय-मुनि-नयल्याः सर्वभावा भुविस्था ।

जिनमतकृतिगम्या नेतरेषां सुरम्याः ॥

उपकृतगुहादासेव्यमाना सदा मे ।

विदधतु मुकुतांते ग्रन्थ अरभ्यमाणे ॥१॥

माददैवं प्रणम्यादौ सप्तनयावबोधकं

सं श्रुत्वा येन मार्गेण गच्छन्ति सुधियो जनाः ॥१॥

इसके पश्चात् टीका प्रारम्भ होती है । नीयते प्राप्यते अर्थोऽनेनेति नयः एतान् प्रापणे इति वचनात्.....।

अन्तिम—

तत्पुण्यं मुनि-धर्मकर्मनिधनं मोक्षं फलं निर्मलं ।

लब्धं येन जनेन निश्चयनयात् श्री नेत्रसिंधोदितः ॥

स्याद्वादमार्गाभ्रयिणो जनाः ये श्रोष्यन्ति शास्त्रं मुनयावबोधं ।

मोच्यन्ति चैकांतमतं मुदोषं मोक्षं गमिष्यन्ति सुखेन भव्याः ॥

इति श्री सप्तनयावबोधं शास्त्रं मुनिनेत्रसिंहेन विरचितं शुभं चयं ॥

१८२४. सप्तपदार्थी.....। पत्र सं० ३६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्ञान मतानुसार सात पदार्थों का वर्णन है । ले० काल × । २० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८ । व्य भण्डार ।

१८२५. सप्तपदार्थी—शिवादित्य । पत्र सं० × । आ० १०^३/_४×४^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—दशैषिक न्याय के अनुसार सप्त पदार्थों का वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६३ । ट भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१८२६. सन्मतितर्क—मूलकर्त्ता सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सं० ४८ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०३ । अ भण्डार ।

१८२७. सारसंग्रह—वरदराज । पत्र सं० २ से ७३ । आ० १०^३/_४×४^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—दर्शन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८२१ । क भण्डार ।

१७२८. सिद्धान्तमुक्तावलिटीका—महादेवभट्ट । पत्र सं० ६८ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—न्याय । २० काल × । ले० काल सं० १७५६ । वे० सं० ११७२ । अ भण्डार ।

विशेष—जैनेतर ग्रन्थ है ।

१८२६. स्याद्वादचूलिका.....। पत्र सं० १५ । आ० ११३×५ इंच । भाषा-हिन्दी (गद्य) । विषय-दर्शन । २० काल × । ले० काल सं० १६३० कार्तिक बुदी ५ । वे० सं० २१६ । अ भण्डार ।

विशेष—सागवाड़ा नगर में ब्रह्म तेजपाल के पठनार्थ लिखा गया था । समयसार के कुछ पाठों का अंश है ।

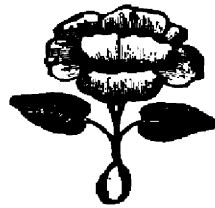
१८३०. स्याद्वादमञ्जरी —मल्लिषेणसूरि । पत्र सं० ४ । आ० १२३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-दर्शन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३४ । अ भण्डार ।

१८३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ से १०६ । ले० काल सं० १५२१ माघ सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ३६६ । अ भण्डार ।

१८३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । आ० १२×५३ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६१ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल कारिकामात्र है ।

१८३३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६० । अ भण्डार ।



विषय- पुराण साहित्य

१८३४. अजितपुराण—पंडिताचार्य अरुणमणि । पत्र सं० २७३ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल सं० १७१६ । ले० काल सं० १७८६ ज्येष्ठ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २१८ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १७८६ वर्षे मिते ज्येष्ठ सुदी ६ । जहानाबादमध्ये लिखापितं आचार्य हर्षकीर्तिजी मयाराम स्वपठनार्थं ।

१८३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७ । छ भण्डार ।

विशेष—१६वें पर्व के ६४वें श्लोक तक है ।

१८३६. अजितनाथपुराण—विजयसिंह । पत्र सं० १२६ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पुराण । २० काल सं० १५०५ कार्तिक सुदी १५ । ले० काल सं० १५८० चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २२८ । अ भण्डार ।

विशेष—सं० १५८० में इब्राहीम लोदी के शासनकाल में सिकन्दराबाद में प्रतिलिपि हुई थी ।

१८३७. अनन्तनाथपुराण—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ८ । आ० १०^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १८८५ भाद्रपदा सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ७४ । अ भण्डार ।

विशेष—उत्तरपुराण से लिया गया है ।

१८३८. आगामीत्रैसठशलाकापुरुषवर्णन..... पत्र सं० ८ से २१ । आ० १२^३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८ । अ भण्डार ।

विशेष—एकसौ उनहत्तर पुण्य पुरुषों का भी वर्णन है ।

१८३९. आदिपुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० ५२७ । आ० १०^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वे० सं० ६२ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में पं० खुशालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

१८४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५०६ । ले० काल सं० १६६४ । वे० सं० १५४ । अ भण्डार ।

१८४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०४२ । अ भण्डार ।

१८४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४८१ । ले० काल सं० १६५० । वे० सं० ५६ । क भण्डार ।

१८४३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३७ । ले० काल × वे० सं० ५७ । क भण्डार ।

विशेष—देहली में सन्तलाजी की कोठी पर प्रतिलिपि हुई थी ।

१८४४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४७१ । ले० काल सं० १९१४ बैशाख सुदी १० । वे० सं० ६ । घ भण्डार ।

विशेष—हाथरस नगर में टीकाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१८४५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४६१ । ले० काल सं० १८९४ चैत्र सुदी ५ । वे० सं० २५० । ज भण्डार ।

विशेष—मेठ चम्पाराम ने ब्राह्मण श्यामलाल गौड़ से अपने पुत्र पीत्रादि के पठनार्थ प्रतिलिपि करायी । प्रशस्ति काफी बड़ा है । भरतखण्ड का नक्शा भी है जिस पर सं० १७८४ जेठ सुदी १० लिखा है । कहीं कहीं कठिन शब्दों का संस्कृत में अर्थ भी दिया है ।

१८४६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१६ । ले० काल × । जीर्ण । वे० सं० १४६ । ब भण्डार ।

१८४७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १२६ । ले० काल सं० १६०४ मंगसिर बुदी ९ । वे० सं० २५२ । ब भण्डार ।

१८४८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ४१० । ले० काल सं० १८०४ पौष बुदी ४ । वे० सं० ४५१ । ब भण्डार ।

विशेष—नेणसागर ने प्रतिलिपि की थी

१८४९. प्रति सं० १० । पत्र सं० २०६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८८ । ट भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०४२) क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५५) छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६) च भण्डार में ३ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३०, ३१, ३२) ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६८६) और है ।

१८५०. आदिपुराण टिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० २७ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८०१ । अ भण्डार ।

१८५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८७० । अ भण्डार ।

१८५२. आदिपुराणटिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ५२ से ६२ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९ । च भण्डार ।

विशेष—पुष्पदन्त कृत आदिपुराण का टिप्पण है ।

१८५३. आदिपुराण—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ३२५ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १६३० भाद्रवा सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ५३ । क भण्डार ।

१८५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २९६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २ । छ भण्डार ।

विशेष—बीच में कई पत्र नहीं हैं । प्रक्ति प्राचीन है । साहू व्यहराज ने पंचमी व्रतोत्थापनार्थ कर्मक्षय निमित्त यह ग्रन्थ लिखाकर महात्मा खेमचन्द को भेंट किया ।

१८५५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५४ । क भण्डार ।

१८५६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६५ । ले० काल सं० १७१६ । वे० सं० २६३ । व्य भण्डार ।

विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

१८५७. आदिपुराण—पं० दौलतराम । पत्र सं० ४०० । आ० १५×६६ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।

विषय—पुराण । २० काल सं० १८२४ । ले० काल सं० १८८३ माघ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ५ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि कराई थी ।

१८५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४६ । ले० काल × । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के तीन पत्र नवीन लिखे गये हैं ।

१८५९ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५०६ । ले० काल सं० १८२४ आसोज बुदी ११ । वे० सं० १५२ ।

छ भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त ग भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६) ङ भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ६७, ६८, ६९, ७०) च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५१८, ५१९) छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५५) तथा ऋ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ८६, १४६) और हैं । ये सभी प्रतियां अपूर्ण हैं ।

१८६०. उत्तरपुराण—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ४२६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३० । अ भण्डार ।

१८६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३८३ । ले० काल सं० १६०६ आसोज सुदी १३ । वे० सं० ८ । घ भण्डार ।

विशेष—बीच में २ पृष्ठ नये लिखाकर रखे गये हैं । काष्ठासंधी माथुरान्वयी भट्टारक श्री उद्धरसेन की बड़ी प्रशस्ति दी हुई है । जहांगीर बादशाह के शासनकाल में चौहाणाराज्यान्तर्गत अलाउपुर (अलवर) के तिजारा नामक ग्राम में श्री आदिनाथ चैत्यालय में श्री गोरा ने प्रतिलिपि की थी ।

१८६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४० । ले० काल सं० १६३५ माह सुदी ५ । वे० सं० ५६० । ङ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संकेतार्थ दिया है ।

१८६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३०६ । ले० काल सं० १८२७ । वे० सं० १ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुरमें महाराजा पृथ्वीसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई । मा० हेमराज ने संतोषराम के शिष्य ब्रह्मतराम को भेंट किया । कठिन शब्दों के संस्कृत में अर्थ भी दिये हैं ।

१८६४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५३ । ले० काल सं० १८८८ सावण सुदी १३ । वे० सं० ६ । छ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में नोनदराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

१८६५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८४ । ले० काल सं० १६६७ चैत्र बुदी ९ । वे० सं० ८३ । व्य भण्डार ।

विशेष—भट्टारक जयकीर्ति के शिष्य ब्रह्मकल्याणभागर ने प्रतिलिपि की थी ।

१८६६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३६६ । ले० काल सं० १७०६ फागुण सुदी १० । वै० सं० ३२४ ।

अ भण्डार ।

विशेष—पांडे गार्डन ने प्रतिलिपि की थी । कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

१८६७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३७२ । ले० काल सं० १७१८ भाद्रवा सुदी १२ । वै० सं० २७२ ।

अ भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त अ, क और छ भण्डार में एक-एक प्रति (वै० सं० ६२४, ६७३, ७७) और हैं । सभी प्रतियां अपूर्ण हैं ।

१८६८. उत्तरपुराणटिप्पण—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ५७ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल सं० १०८० । ले० काल सं० १५७५ भाद्रवा सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० ५४ । अ भण्डार ।

विशेष—पुण्यदन्त कृत उत्तरपुराण का टिप्पण है । लेखक प्रशस्ति—

श्री विक्रमादित्य संवत्सरे वर्षाशामशीत्यधिक सहस्रे महापुराणविषमनदविवरणसागरसेनमैट्टांतात् परि-
ज्ञाय मूलटिप्पणकांचावलोक्य कृतमिदं समुच्चयटिप्पणं । अज्ञपातभीतेन श्रीमद् बलात्कारगणश्रीसंघाचार्य सत्कवि
शिष्येण श्रीचन्द्रमुनिना निज दौर्दंडाभिभूतरिपुराज्यविजयिनः श्रीभोजदेवस्य ॥ १०२ ॥

इति उत्तरपुराणटिप्पणकं प्रभाचन्द्राचार्यविरचितंसमाप्तं ॥ अथ संवत्सरेस्मिन् श्री नृपविक्रमादित्यगताब्द
संवत् १५७५ वर्षे भाद्रवा सुदी ५ बुधदिने कुरुजांगलदेशे सुलितान सिकंदर पुत्र सुलितानप्राहिमुराज्यप्रवर्तमाने श्री काष्ठा-
संघे मायुरान्वये पुष्करगणे भट्टारक श्रीगुणभद्रसूरिदेवाः तदाम्नाये जैसवालु चौ० जगन्ती पुत्रु चौ० टोडरमल्लु इदं
उत्तरपुराण टीका लिखावितं । शुभं भवतु । मागल्यं दधति लेखक पाठकयोः ।

१८६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वै० सं० १४५ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री जयसिंहदेवराज्ये श्रीमद्वारानिवासिना परापरभेष्टिप्रणामोपाजितामलपुण्यनिराकृताखिलमल
कलंकेन श्रीमत् प्रभाचन्द्र पंडितेन महापुराण टिप्पणकं सतत्र्यधिक सहस्रत्रय प्रमाणं कृतमिति ।

१८७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल × । वै० सं० १८७६ । अ भण्डार ।

१८७१. उत्तरपुराणभाषा—खुशालचन्द्र । पत्र सं० ३१० । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—पुराण । २० काल सं० १७८६ मंगसिर सुदी १० । ले० काल सं० १६२८ मंगसिर सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं०
७४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति में खुशालचन्द्र का ५३ पद्यों में विस्तृत परिचय दिया हुआ है । बस्तावरलाल ने जयपुर
में प्रतिलिपि की थी ।

१८७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२० । ले० काल सं० १८८३ वैशाख सुदी ३ । वै० सं० ७ । अ

भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१८७३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४१५। ले० काल सं० १८६६ मंगसिर सुदी १। वे० सं० ६। घ
भण्डार।

१८७४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३७४। ले० काल सं० १८५८ कार्तिक बुदी १३। वे० सं० १८। छ
भण्डार।

१८७५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४०४। ले० काल सं० १८६७। वे० सं० १३७। झ भण्डार।

विशेष—च भण्डार में तीन अपूर्ण प्रतियाँ (वे० सं० ५२२, ५२३, ५२४) और हैं।

१८७६. उत्तरपुराणभाषा—संधी पन्नालाल। पत्र सं० ७६३। आ० १२×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी
गद्य। विषय—पुराण। २० काल सं० १६३० आषाढ़ सुबी ३। ले० काल सं० १६४५ मंगसिर बुदी १३। पूर्ण। वे०
सं० ७५। क भण्डार।

१८७७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५३५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८०। ङ भण्डार।

विशेष—५३४वाँ पत्र नहीं है। कितने ही पत्र नवीन लिखे हुये हैं।

१८७८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६६। ले० काल ×। वे० सं० ८१। ङ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के १६७ पत्र नीले रंग के हैं। यह संशोधित प्रति है। ङ भण्डार में एक प्रति (वे०
सं० ७६) च भण्डार में दो प्रतियाँ (वे० सं० ५२१, ५२५) तथा छ भण्डार में एक प्रति और है।

१८७९. चन्द्रप्रभपुराण—हीरालाल। पत्र सं० ३१२ आ० १३×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—
पुराण। २० काल सं० १६१३ भाद्रवा बुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६। क भण्डार।

१८८०. जिनेन्द्रपुराण—भट्टारक जिनेन्द्रभूषण। पत्र सं० ६६०। आ० १६×९ इञ्च। भाषा—
संस्कृत। विषय—पुराण। २० काल ×। ले० काल सं० १८४२ फागुण बुदी ७। वे० सं० ९४। ज भण्डार।

विशेष—जिनेन्द्रभूषण के प्रशिष्य ब्रह्महर्षसागर के भाई थे। १६५ अधिकार हैं। पुराण के विभिन्न
विषय हैं।

१८८१. त्रिषष्टिसृति—महापंडित आशाधर। पत्र सं० २४। आ० १२×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत।
विषय—पुराण। २० काल सं० १२६२। ले० काल सं० १८१५ शक सं० १६८०। पूर्ण। वे० सं० २३१। अ
भण्डार।

विशेष—चलकच्छपुर में श्री नेमिजिनचैत्यालय में ग्रन्थ की रचना की गई थी। लेखक प्रशस्ति विस्तृत
है।

१८८२. त्रिषष्टिशलाकापुरुषवर्णन... पत्र सं० ३७। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत।
विषय—पुराण। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६५। ट भण्डार।

विशेष—३७ से आगे पत्र नहीं हैं।

१८८३. नेमिनाथपुराण—भागचन्द। पत्र सं० १६६। आ० १२३×८ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य।
विषय—पुराण। २० काल सं० १६०७ सावन बुदी ५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ९। ङ भण्डार।

१८८४. नेमिनाथपुराण—ब्र० जिनदास । पत्र सं० २६२ । आ० १४×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । छ भण्डार ।

१८८५. नेमिपुराण (हरिवंशपुराण)—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र सं० १६० । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १६४७ ज्येष्ठ सुदी ११ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० १४६ । अ
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १६४७ वर्षे ज्येष्ठ सुदी ११ बुधवासरे श्री मूलसंघे नंदात्मनाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुन्दकुन्दा-
चार्यान्वये भट्टारके श्रीपचनन्दि देवात्तट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्तट्टे भ० श्रीजितचन्द्रदेवा तत्तट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा
द्वितीय शिष्य मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवा तत्शिष्य मंडलाचार्य श्रीभुवनकीर्तिदेवा तत्शिष्य मंडलाचार्य श्रीधर्मकीर्तिदेवा
द्वितीयशिष्य मंडलाचार्य श्रीविशालकीर्तिदेवा तत्शिष्य मंडलाचार्य श्रीलक्ष्मीचन्द्रदेवा तत्तट्टे मंडलाचार्य श्रीसहसकीर्तिदेवा
तत्तट्टे मंडलाचार्य श्री श्री श्री नेमचन्द्र तदाम्नाये अग्रवालान्वये मुगिलगोत्रे साह जीणा तस्य भार्या ठाकुरही तयो पुत्राः
पंच । प्रथम पुत्र सा. खेता तस्य भार्या छानाही । सा. जीणा द्वितीय पुत्र सा. जेता तस्य भार्या बाधाही तयो पुत्राः त्रय
प्रथम पुत्र सा. देइदास तस्य भार्या साताही तयोः पुत्रात्रयः प्रथमपुत्र चि० सिरवंत द्वितीयपुत्र चि० मांगा तृतीयपुत्र चि०
चतुरा । द्वितीयपुत्र साह पूना तस्य भार्यागुजरही तृतीयपुत्र सा. चीमा तस्य भार्या मानु । सा जीणा तस्य तृतीयपुत्र सा.
मातु तस्य भार्या नान्यगही तयो पुत्री द्वौ प्रथम पुत्र सा. गोविदा तस्य भार्या पदर्थही तयो पुत्र चि० धर्मदास द्वि० पुत्र
त्रि० मोहनदास । सा. जीणातस्य अतुर्थपुत्र सा. मल्लू तस्य भार्या नीकाही तयोपुत्राः त्रय प्रथमपुत्र सा. उत्ता तस्य भार्या
धनराजही तयोपुत्र चि० दूरगदास द्वितीयपुत्र सा. महीदास तस्यभार्या उदाही तृतीयपुत्र सा. टेमा तस्य भार्या मोरवणही ।
सा. जीणा तस्य पंचमपुत्र सा. साधू तस्यभार्या होलाही तयोपुत्र चि० सम्रलदास तस्यभार्या पूराही एतेषां मध्ये सा.
मल्लूतेनेदं शास्त्रं हरिवंशपुराणख्यं ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्तं मंडलाचार्य श्री श्री श्री लक्ष्मीचन्द्रतस्यशिष्या अजिका शक्ति
श्री योग्य घटादितं ज्ञानावरणीकर्मक्षयनिमित्तं ।

१८८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल सं० १६६३ आसोज सुदी ३ । वे० सं० ३८७ । क
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला पत्र बिलकुल फटा हुआ है ।

१८८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५७ । ले० काल सं० १६४६ माघ बुदी १ । वे० सं० १८६ । अ
भण्डार ।

विशेष—यह प्रति अम्बावती (अमेर) में महाराजा मानसिंह के शासनकाल में नेमिनाथ चैत्यालय में
लिखी गई थी । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

१८८८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८८ । ले० काल सं० १८३४ पौष बुदी १२ । वे० सं० ३१ । अ
भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३८) अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं०
५२) तथा अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१३) और हैं ।

१८८६. पद्मपुराण—रविषेणाचार्य । पत्र सं० ८७६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण २० काल × । ले० काल सं० १७०८ चैत्र सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ६३ । अ भण्डार ।

विशेष—टोडा ग्राम निवासी साह खोंवसी ने प्रतिलिपि कराकर पं० श्री हर्ष कल्याण का भेंट किया ।

१८६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६५ । ले० काल सं० १८८२ आसोज बुदी ६ । वे० सं० ५२ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवाई थी ।

१८६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४४५ । ले० काल सं० १८८५ भाद्रवा बुदी १२ । वे० सं० ४२२ । क भण्डार ।

१८६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७६८ । ले० काल सं० १८३२ सावण सुदी १० । वे० सं० १८२ । ज भण्डार ।

विशेष—चौधरियों के चैत्यालय में पं० गोरधनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

१८६३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८१ । ले० काल सं० १७१२ आसोज सुदी × । वे० सं० १८३ । अ भण्डार ।

विशेष—अग्रवाल जातीय किसी श्रावक ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके प्रतिरिक्त क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४२६) तथा ड भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ४२३, ४२५) और हैं ।

१८६४. पद्मपुराण (रामपुराण)—भट्टारक सोमसेन । पत्र सं० ५२० । आ० ६६×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल शक सं० १६५६ श्रावण सुदी १३ । ले० काल सं० १८६८ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २४ । अ भण्डार ।

१८६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५३ । ले० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ बुदी ३३ । वे० सं० ४२५ । क भण्डार ।

विशेष—योगी महेन्द्रकीर्ति के प्रसाद से यह रचना की गई ऐसा स्वयं लेखक ने लिखा है । लेखक प्रशस्ति कटी हुई है ।

१८६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०० । ले० काल सं० १८३६ वैशाख सुदी ११ । वे० सं० ८ । ड भण्डार ।

विशेष—आचार्य रत्नकीर्ति के शिष्य नेमिनाथ ने सांगानेर में प्रतिलिपि की थी ।

१८६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५७ । ले० काल सं० १७६४ आसोज बुदी १३ । वे० सं० ३१२ । ङ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में गोष्ठी के मन्दिर में प्रतिलिपि हुई ।

१८६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५७ । ले० काल सं० १७६४ आसोज बुदी १३ । वे० सं० ३१२ ।
च भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में गोधों के मन्दिर में महराम ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त छ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४२५, ४२६) च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०४) तथा छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६) और हैं ।

१८६९. पद्मपुराण—भ० धर्मकीर्त्ति । पत्र सं० २०७ । आ० १३×६६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
पुराण । २० काल सं० १८३५ कार्तिक सुदी १३ । वे० सं० ३ । छ भण्डार ।

विशेष—जीवनराम ने रामगढ़ नगर में प्रतिलिपि की थी ।

१९००. पद्मपुराण (उत्तरखण्ड)..... । पत्र सं० १७६ । आ० ६×४६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२३ । ट भण्डार ।

विशेष—वैष्णव पद्यपुराण है । बीचके कुछ पत्र चूहोंने काट दिये हैं । अन्त में श्रीकृष्ण का वर्णन भी है ।

१९०१. पद्मपुराणभाषा—पं० दौलतराम । पत्र सं० ४६६ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
२० काल सं० १८२३ माघ सुदी ६ । ले० काल सं० १९१८ । पूर्ण । वे० सं० २२०४ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल में पं० शिवदीनजी के समय में मोतीलाल गोदीका के पुत्र श्री
अमरचन्द ने हीरालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराकर पाटौदी के मन्दिर में चढ़ाया ।

१९०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४१ । ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी ६ । वे० सं० ५४ । ग
भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह ने सवाईराम गोधा से प्रतिलिपि करवायी थी ।

१९०३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५१ । ले० काल सं० १८९७ । वे० सं० ४२७ । छ भण्डार ।

विशेष—इन प्रतियों के अतिरिक्त अ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ४१०, २२०३) क और ग भण्डार
में एक एक प्रति (वे० सं० ४२४, ५३) घ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५५, ५६) च और ज भण्डार में दो
नथा एक प्रति (वे० सं० ६२३, ६२४, व २५२) तथा झ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १६, ८८) और हैं ।

१९०४. पद्मपुराणभाषा—खुशालचन्द । पत्र सं० २०६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—पुराण । २० काल सं० १७८३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८७ । अ भण्डार ।

१९०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०६ से २६७ । ले० काल सं० १८४५ सावण बुदी ५५ । वे० सं०
७८२ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में हुई थी ।

इसी भण्डार में (वे० सं० ३४१) पर एक अपूर्ण प्रति और है ।

१६०६. पाण्डवपुराण—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं० १७३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल सं० १६०८ । ले० काल सं० १७२१ फागुण बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६२ । अ भण्डार ।
विशेष—ग्रन्थ की रचना श्री शाकवाटपुर में हुई थी । पत्र १३५ तथा १३७ वाद में सं० १८८६ में पुनः
लिखे गये हैं ।

१६०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३०० । ले० काल सं० १८२६ । वे० सं० ४६५ । क भण्डार ।
विशेष—ग्रन्थ ब्रह्मश्रीपाल की प्रेरणा से लिखा गया था । महाचन्द्र ने इसका संशोधन किया ।
१६०८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १८१३ चैत्र बुदी १० । वे० सं० ४४५ । क
भण्डार ।

विशेष—एक प्रति ट भण्डार में (वे० सं० २०६०) और है ।

१६०९. पाण्डवपुराण—भ० श्रीभूषण । पत्र सं० २४६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल सं० १६५० । ले० काल सं० १८०० मंगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २३७ । अ भण्डार ।
विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । पत्र बडकणे हैं ।

१६१०. पाण्डवपुराण—यशःकीर्त्ति । पत्र सं० ३४० । आ० १०^३/_४ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ९६ । अ भण्डार ।

१६११. पाण्डवपुराणभाषा—बुलाकीदास । पत्र सं० १४६ । आ० १३×६ इंच । भाषा—हिन्दी
पद्य । विषय—पुराण । २० काल सं० १७५४ । ले० काल सं० १८१२ । पूर्ण । वे० सं० ४६२ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ५ पत्रों में बाईस परीषह वर्णन भाषा में है ।

अ भण्डार में इसकी एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १११८) और है ।

१६१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५२ । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० ५५ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

१६१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २०० । ले० काल × । वे० सं० ४४६ । क भण्डार ।

१६१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४६ । ले० काल × । वे० सं० ४४७ । क भण्डार ।

१६१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५७ । ले० काल सं० १८६० मंगसिर बुदी १० । वे० सं० ६२६ ।
च भण्डार ।

१६१६. पाण्डवपुराण—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० २२२ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी
गद्य । विषय—पुराण । २० काल सं० १६२३ वैशाख बुदी २ । ले० काल सं० १६३७ पाष बुदी १२ । पूर्ण । वे०
सं० ४६३ । क भण्डार ।

१६१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२० । ले० काल सं० १६४६ कार्तिक सुदी १५ । वे० सं० ४६४ ।
क भण्डार ।

विशेष—रामरत्न पाराशर ने प्रतिलिपि की थी ।

क भण्डार में इसकी एक प्रति (वे० सं० ४४८) और है ।

१६१८. पुराणसार—श्रीचन्द्रमुनि । पत्र सं० १०० । आ० १०^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल सं० १०७७ । ले० काल सं० १६०६ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २३६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रामेर (आम्रगढ़) के राजा भारामल के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १५४३ फाल्गुण बुदी १० । वे० सं० ४७१ । छ भण्डार ।

१६२०. पुराणसारसंग्रह—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० १५६ । आ० १२×५^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १८५६ मंगसिर बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । क भण्डार ।

१६२१. बालपद्मपुराण—पं० पन्नालाल बाकलीवाल । पत्र सं० २०३ । आ० ८×५^३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १६०६ चैत्र सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ११३८ । अ भण्डार ।

विशेष—लिपि बहुत सुन्दर है । कलकत्ते में रामप्रधीन (रामादीन) ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२२. भागवत द्वादशम् स्कंध टीका..... । पत्र सं० ३१ । आ० १४×७^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७८ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्रों के बीच में मूल तथा ऊपर नीचे टीका दी हुई है ।

१६२३. भागवतमहापुराण (सप्तमस्कंध)..... । पत्र सं० ६७ । आ० १४^३×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०८८ । ट भण्डार ।

१६२४. प्रति सं० २ (षष्ठम स्कंध)..... । पत्र सं० ६२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२६ । ट भण्डार ।

विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं ।

१६२५. प्रति सं० ३ । (पञ्चम स्कंध)..... । पत्र सं० ८३ । ले० काल सं० १८३० चैत्र सुदी १२ । वे० सं० २०६० । ट भण्डार ।

विशेष—चौबे सरूपराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६२६. प्रति सं० ४ (अष्टम स्कंध)..... । पत्र सं० ११ से ४७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६१ । ट भण्डार ।

१६२७. प्रति सं० ५ (तृतीय स्कंध)..... । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६२ । ट भण्डार ।

विशेष—६७ में आगे पत्र नहीं हैं ।

वे० सं० २८८ से २०६२ तक ये सभी स्कंध श्रीधर स्वामी कृत संस्कृत टीका सहित हैं ।

१६२८. भागवतपुराण..... । पत्र सं० १४ में ६३ । आ० १०^३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१०६ । ट भण्डार ।

विशेष—६०वां पत्र नहीं है ।

१६२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २११३ । ट भण्डार ।

विशेष—द्वितीय स्कंध के तृतीय अध्याय तक की टीका पूर्ण है ।

१६३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० से १०५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७२ । ट भण्डार ।

विशेष—तृतीय स्कंध है ।

१६३१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम स्कंध के द्वितीय अध्याय तक है ।

१६३२. मल्लिनाथपुराण—सकलकीर्ति । पत्र सं० ४२ । आ० १२×५ डब्ब । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल १८८८ । वे० सं० २०८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८३६) और है ।

१६३३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १७२० माह सुदी १४ । वे० सं० ५७१ । क

भण्डार ।

१६३४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १६६३ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं० ५७२ ।

विशेष—उदयचन्द लुहाड़िया ने प्रतिलिपि करके दीवाण अमरचन्दजी के मन्दिर में रखी ।

१६३५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८१० फागुण सुदी ३ । वे० सं० १३६ । ख

भण्डार ।

१६३६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८८१ सावण सुदी ८ । वे० सं० १३६ । ख

भण्डार ।

१६३७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८६१ सावण सुदी ८ । वे० सं० ५८७ । ड

भण्डार ।

विशेष—जयपुर में शिवलाल गोधा ने प्रतिलिपि करवाई थी ।

१६३८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० १२ । छ भण्डार ।

१६३९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३२ । ले० काल सं० १७८६ चैत्र सुदी ३ । वे० सं० २१० । भ

भण्डार ।

१६४०. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ४० । ले० काल सं० १८६१ भाद्रपदा बुदी ४ । वे० सं० १५२ । ज

भण्डार ।

विशेष—शिवलाल साहू ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि करवाई थी ।

१६४१. मल्लिनाथपुराणभाषा—सेवाराम पाटनी । पत्र सं० ३६ । आ० १२×७ डब्बे । भाषा—

हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८८ । अ भण्डार ।

१६४२. महापुराण (संक्षिप्त) पत्र सं० १७ । आ० ११×४ डब्बे । भाषा—संस्कृत । विषय—

पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८६ । छ भण्डार ।

१६४३. महापुराण—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० ७०४ । आ० १४×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७ ।

विशेष—ललितकीर्ति कृत टीका सहित है ।

अ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७८) और है ।

१६४४. महापुराण—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ५१४ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०१ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के कुछ पत्र जीर्ण होगये हैं ।

१६४५. मार्कण्डेयपुराण..... । पत्र सं० ३२ । आ० ६×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १८२६ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २७३ । छ भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार में इसकी दो प्रतियां (वे० सं० २३३, २४६,) और हैं ।

१६४६. मुनिसुव्रतपुराण—ब्रह्मचारी कृष्णदास । पत्र सं० १०४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल सं० १६८१ कार्तिक सुदी १३ । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० ५७८ । क भण्डार ।

१६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२७ । ले० काल × । वे० सं० ७ । छ भण्डार ।

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

१६४८. मुनिसुव्रतपुराण—इन्द्रजीत । पत्र सं० ३२ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । २० काल सं० १८४५ पौष बुदी २ । ले० काल सं० १८४७ आषाढ बुदी १२ । वे० सं० ४७५ । अ भण्डार ।

विशेष—रतनलाल ने बटेरपुर में प्रतिलिपि की थी ।

१६४९. लिंगपुराण । पत्र सं० १३ । आ० ६×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—जैनेतर पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४७ । अ भण्डार ।

१६५०. वर्द्धमानपुराण—सकलकीर्ति । पत्र सं० १५१ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १८७७ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६० । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मा शंभुराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३० । ले० काल १८७१ । वे० सं० ६४६ । क भण्डार ।

१६५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १८६८ सावन सुदी ३ । वे० सं० ३२८ । अ भण्डार ।

१६५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११३ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ४ । छ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में पं० नोनदराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१६५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४३ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० ५ । छ भण्डार ।

१६५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १७८५ कार्तिक बुदी ४ । वे० सं० १५ । अ
भण्डार ।

१६५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० ४६३ । अ भण्डार ।

विशेष—आ० शुभचन्द्रजी, चोखचन्द्रजी, रायचन्द्रजी की पुस्तक है । ऐसा लिखा है ।

१६५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १८३६ । वे० सं० १८६१ । ट भण्डार ।

विशेष—सवाई माधोपुर में भ० सुरेन्द्रकीर्ति ने आदिनाथ चैत्यालय में लिखवायी थी ।

१६५८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १६६८ भाद्रवा सुदी १२ । वे० सं० १८६३ ।

ट भण्डार ।

विशेष—बागड महादेश के सागपत्तन नगर में भ० सकलचन्द्र के उपदेश से हुंबडजातीय वजियारणा गोत्र
वाले साहू भाका भार्या बाई नायके ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इस ग्रन्थ की घ और च भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ८६, ३२६) अ भण्डार में २ प्रतियां
(वे० सं० ३२, ४६) और हैं ।

१६५९. वर्द्धमानपुराण—पं० केशरीसिंह । पत्र सं० ११८ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—पुराण । २० काल सं० १८७३ फागुण सुदी १२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४७ ।

विशेष—बालचन्द्रजी छाबड़ा दीवान जयपुर के पौत्र ज्ञानचन्द्र के आग्रह पर इस पुराण की भाषा रचना
की गई ।

च भण्डार में तीन अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ६७४, ६७५, ६७६) छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं०
१५६) और हैं ।

१६६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १७७३ । वे० सं० ६७० । ड भण्डार ।

१६६१. वासुपूज्यपुराण..... । पत्र सं० ९ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पुराण ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८ । छ भण्डार ।

१६६२. त्रिमलनाथपुराण—ब्रह्मकृष्णदास । पत्र सं० ७५ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल सं० १६७४ । ले० काल सं० १८३१ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३१ । अ भण्डार ।

१६६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १८६७ चैत्र बुदी ८ । वे० सं० ६६ । घ
भण्डार ।

१६६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०७ । ले० काल सं० १६६६ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० १८ । छ
भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थकार का नाम ब० कृष्णजिष्णु भी दिया है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संबत् १६६६ वर्षे ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे श्री धमलासा महानगरे श्री आदिनाथ चैत्यालये श्रीमत् काष्ठसंघे
नंदीतटगच्छे विद्यागणे भट्टारके श्री रामसेनान्वये एतदनुक्रमेण भ० श्री रत्नभूषण तत्पट्टे भ० श्री जयकीर्ति ब० श्री

मंगलाग्रज स्वयंविराचार्य श्री केशवमेन तत् शिष्योऽध्याय श्री दिश्वकीर्त्ति तत्पुरु भा० ब्र० श्री दीपजी ब्रह्म श्री राजसागर युक्ते लिखितं स्वज्ञानावर्ग कर्मक्षयार्थं । भ० श्री ५ दिश्वमेन तत् शिष्य मंडलाचार्य श्री ५ जयकीर्त्ति पं० दीपचन्द पं० मयाचंद युक्तै आत्म पठनार्थं ।

१६६५. शान्तिनाथपुराण—महाकवि अशग । पत्र सं० १४३ । प्रा० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल शक संवत् ६१० । ले० काल सं० १५५३ भादवा बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत् १५५३ वर्षे भादवा वदि बारीस रवौ अद्य ह श्री गंधारमध्ये लिखितं पुस्तकं लेखक राठकयो चिरंजीयात् । श्री मूलसंधे श्री कुंदकुन्दाचार्यान्वये सरस्वती गच्छे बलात्कारगरो भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक जिनचन्द्रदेवाच्छिष्य मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्त्तिदेवास्तच्छिष्य ब्र० लाला पठनार्थ हंबड न्यातीय श्रे० हापा भार्या संपूरित श्रुत श्रेष्ठि धना सं० धावर सं० सोमा श्रेष्ठि धना तस्य पुत्र वीरसाल भा० वनादे नयो पुत्रः विद्याधर द्वितीयः पुत्र धर्मधर एतैः सर्वैः शान्तिपुराणं लखाप्य पात्राय दत्तं ।

ज्ञानवान ज्ञानदानेन निर्भयोऽभयदानतः ।

भद्रदानात् सुखी नित्यं निर्वाधी भेषजाद्भवेत् ॥१॥

१६६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४४ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० ६८७ । क भण्डार ।

विशेष—इस ग्रन्थ की ड, अ और ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ७०४, १६, १६३५) और हैं ।

१६६७. शान्तिनाथपुराण—सुशालचन्द । पत्र सं० ५१ । प्रा० १२३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—उत्तरपुराण में से है ।

ट भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १८६१) और हैं ।

१६६८. हरिवंशपुराण—अिनसेनाचार्य । पत्र सं० ३१४ । प्रा० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल शक सं० ७०५ । ले० काल सं० १८३० माघ सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० २१६ । अ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियों का सम्मिश्रण है । जयपुर नगर में पं० इंगरसी के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी ।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ८६८) और है ।

१६६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२४ । ले० काल सं० १८३६ । वे० सं० ८५२ । क भण्डार ।

१६७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८७ । ले० काल सं० १८६० ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० सं० १३२ । च भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—गोवाचल नगर में ब्रह्मगंभीरसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

१६७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४२ से ५१७ । ले० काल सं० १६२५ कार्तिक मुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ४४७ । च भण्डार ।

विशेष—श्री पुराणमल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४४६) और है ।

१६७२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७४ से ३१३, ३४१ से ३४३ । ले० काल सं० १६६३ कार्तिक बुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ७६ । छ भण्डार ।

१६७३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २४३ । ले० काल सं० १६५३ चैत्र बुदी २ । वे० सं० २६० । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजाधिराज मानसिंह के शासनकाल में सांगानेर में आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

उक्त प्रतियों के अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४४६) छ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ७६ में) और हैं ।

१६७४. हरिवंशपुराण—ब्रह्मजिनदास । पत्र सं० १२८ । आ० १११×५ डच्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १८८० । पूर्ण । वे० सं० २१३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ जोधराज पाटोदी के बनाये हुये मन्दिर में प्रतिलिपि करवाकर विराजमान किया गया । प्राचीन अपूर्ण प्रति को पीछे पूर्ण किया गया ।

१६७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५७ । ले० काल सं० १६६१ आसोज बुदी ६ । वे० सं० १३१ । घ भण्डार ।

विशेष—देवपल्ली शुभस्थाने पार्श्वनाथ चैत्यालये काष्ठासंधे नदीतटगच्छे विद्यागणे राममेतान्वये..... आचार्य कल्याणकोत्तिना प्रतिलिपि कृत ।

१६७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४६ । ले० काल सं० १८०४ । वे० सं० १३३ । घ भण्डार ।

विशेष—देहली में प्रतिलिपि की गई थी । लिपिकार ने महम्मदशाह का शासनकाल होना लिखा है ।

१६७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६७ । ले० काल सं० १७३० । वे० सं० ४४८ । च भण्डार ।

१६७८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५२ । ले० काल सं० १७८३ कार्तिक मुदी ५ । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—साह मल्लूकचन्दजी के पठनार्थ बौली ग्राम में प्रतिलिपि हुई थी । ब्र० जिनदास भ० सकलकीर्ति के शिष्य थे ।

१६७९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६८ । ले० काल सं० १५३७ पौष बुदी ३ । वे० सं० ३३३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—सं० १५३७ वर्षे पौष बुदी २ सोमे श्री मूलसंधे बलाकारगणे सरस्वतीगच्छे श्री

कुन्दकुन्दाचार्यान्वये भ० सकलकीर्तिदेवा भ० भुवनकीर्तिदेवाः भ० श्री ज्ञानभूषणेन शिष्यमुनि जयनन्दि पठनार्थं । हूंबड जातीय.....।

१६८०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१३ । ले० काल सं० १६३७ माह बुदी १३ । वे० सं० ४६१ । ब्र
भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति विस्तृत है ।

उक्त प्रतियों के अतिरिक्त क, छ एवं ब्र भण्डारों में एक एक प्रति (वे० सं० ८५१, ६०६, ६७)
और हैं ।

१६८१. हरिवंशपुराण—श्री भूषण । पत्र सं० ३४५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४६१ । ब्र भण्डार ।

१६८२. हरिवंशपुराण—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० २७१ । आ० ११^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १६५७ चैत्र मुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ८५० । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

१६८३. हरिवंशपुराण—धवल । पत्र सं० ५०२ से ५२३ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६६ । ब्र भण्डार ।

१६८४. हरिवंशपुराण—यशःकीर्ति । पत्र सं० १६६ । आ० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल म० १५७३ । फागुण मुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६८ ।

विशेष—तिजारा ग्राम में प्रतिलिपि की गई थी ।

अथ संवत्सरेऽतस्मिन् राज्ये संवत् १५७३ वर्षे फाल्गुणि शुदि ६ रविवासरे श्री तिजारा स्थाने । प्रलाव-
लखां राज्ये श्री काष्ठ। अपूर्ण ।

१६८५. हरिवंशपुराण—महाकवि स्वयंभू । पत्र सं० २० । आ० ६×४^३ । भाषा—अपभ्रंश । विषय—
पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४५० । च भण्डार ।

१६८६. हरिवंशपुराणभाषा—दौलतराम । पत्र सं० १०० से २०० । आ० १०×८ इञ्च । भाषा—
हिन्दी गद्य । विषय—पुराण । २० काल म० १८२६ चैत्र मुदी १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८ । ग
भण्डार ।

१६८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६६ । ले० काल म० १६२६ भाद्रवा मुदी ७ । वे० सं० ६०६ (क)
छ भण्डार ।

१६८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२५ । ले० काल सं० १६०८ । वे० सं० ७२८ । च भण्डार ।

१६८९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७०६ । ले० काल सं० १६०३ आसोज मुदी ७ । वे० सं० २३७ । छ
भण्डार ।

विशेष—उक्त प्रतियों के अतिरिक्त छ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० १३४, १५१) छ, तथा म
भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ६०६, १४४) और हैं ।

१६६०. हरिवंशपुराणभाषा—खुशालचन्द्र । पत्र सं० २०७ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पुराण । २० काल सं० १७८० बैशाख सुदी ३ । ले० काल सं० १८६० पूर्ण । वे० सं० ३७२ । अ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का सम्मिश्रण है ।

१६६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १८०५ पौष बुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० १५४ । अ भण्डार ।

विशेष—१ से १७२ तक पत्र नहीं है । जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

१६६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३४ । ले० काल × । वे० सं० ४६६ । अ भण्डार ।

विशेष—आरम्भ के ४ पत्रों में मनोहरदास कृत नरक दुख वर्णन है पर अपूर्ण है ।

१६६३. हरिवंशपुराणभाषा..... । पत्र सं० १५० । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०७ । अ भण्डार ।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति । (वे० सं० ६०८) और है ।

१६६४. हरिवंशपुराणभाषा..... । पत्र सं० ३८१ । आ० ८३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य (राजस्थानी) । विषय—पुराण । २० काल × । ले० काल सं० १६७१ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १०२२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम तथा अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

आदिभाग—अथ कथा सम्बन्ध लीखीयइ छई । तेरां कालेरां तेरां समएरां समएरां भगवंत महावीरे रायगेहे समोसरीये तेहीज काल, तेही ज समउ, ते भगवंत श्री बीर वर्द्धमान राजग्रही नगरी आवी समोसरया । ते किसान छइ वीतराग चउतीस अतिसइ करी सहित, पइंतीस वचन वाणी करी सोभित, चउदइसह साध, छतीस सहस परवरया । अनेक भविक जीव प्रतिबोधता श्रीराजग्रही नगरी आवी समोसरया । तिवारइं वनमाली आवी राजा श्री सेरिणक कनइ । वधांमणी दिधी । सामी आज श्री वर्द्धमान आवी समोसरया छइ । सेरिणक ते बात सांभली नइं बधामणी आपी । राजा आपण महाहर्षवंत थकउ । वांदवांनी सामग्री करावण लागउ । ते कि सामां गलीसां.....कीधउ । पछि आनंद भेरि उछली जय जयकार वद थउ । भवीक लोक सघलाइं आनंद परिथया । धन धन कहतां लोक सघलाइं वांदिवा चाल्या । पछइ राजा श्रेणक सिचाणक हस्ती सिरागारी उपरि छइठउ । माथइं सेत छत्र धराप्यउ । उभइ पास चामर ढालइ छइ । वंदी जण कइ वार करइ छइ । मंगिण जण वडिद बोलइ छइ । पांच शब्द वाजित्र वाजते । चतुरंगिनी सेना सजकरी । राय रांणा मंडलीक मुकब्बधनी सामंत अउरासिया..... ।

एक अन्य उदाहरण— पत्र १६८

तिणी अजोध्या नउ हेमरथ राजा राज पालै छइं । तेह राजा नइ धारणी राणी छइ । तेह नउ भाव धर्म उरारि घणउ छइं । तेहनी कुषि तें कुंमर पराइ उनौ । तेह नउ नाम बुधुकीत जाणिवउ । ते पुणु कुमर जाले सिस ममान छइं । इम करता ते कुंमर जोबन भरिया । तिवारइं पिताइं तेह नइं राज भार थाप्यउ । तिवारइं तेग जाना मुख भोगवता काल अतिक्रमइं छइं । वली जिरा नउ धर्म घणु करइं छइं ।

पत्र संख्या ३७१

नागश्री जे नरक गई थी । तेह नी कथा सांभलउं । तिणी नरक माहि थी । ते जीवनीकलियउं । पछइ मरी रोइ सर्प थयउ । सयंभू रमणि द्वीपा माहि । पछइ ते तिहां पाप करिवा लागउ । पछई बली तिहां थको मरण पाम्यो । बीजे नरक गई तिहा तिन सागर आयु भोगवी । छेदन भेदन तारन दुख भोगवी । वली तिहां थकी ते निकलियउ । ते जीव पछइ चंपा नगरी माहि चांडाल उइ घरि पुत्री अपनी तेहा निचकुल अवतार पाम्यउं । पछइ ते एक बार बन माहि तिहां उबर बीणीवा लागी ।

अन्तिम पाठ—पत्र संख्या ३८०-८१

श्री नेमनाथ तिन त्रिभरण तारणहार तिणी सागी विहार क्रम कीयउं । पछइ देस विदेस नगर पाटणना भवीक लोक प्रबोधीया । वलीत्रिणी सामी समकित ज्ञान चारित्र तप संपनीयउ दान दीयउ । पछइ गिरनार प्राव्या । तिहा समोसर्या । पछइ घणा लोक संबोध्या । पछइ सहस बरस आउषउ भोगवीनइ दस धनुष प्रमाण देह जाणवी । ईणी परइ घणा दीन गया । पछइ एक मासउ गरयउ । पछइ जगनाथ जोग धरो नइ । समो सरण त्याग कीयउं । तिवारइ ते घातिया कर्म षय करो चउदमइ गुणठारणइ रह्या । तिहा थका मोष सिद्धि थया । तिहा आठ गुण सहित त्राणवा । वली पांच सइ छत्रीस साध साथइ मूकति गया । तिणी सामी अचल ठाम लाधउ । तेहना सुखनीउपमा दीधी न जाई । ईसा सूखनासवी भागी थया । हिंइ रोक था सुगमार्थ लिखी छइ । जे कई विरुद्ध बात लिखाणी होई ते मोष तिरती कीज्यो । वली सामनी साखि । जे कई मइ आपणी बुध थकी । हरवंस कथा माहि अघ कोउ छइ लीखीयउ होइ । ते मिछामि दुकड था ज्यो ।

संबत् १६७१ वर्षे आसोज मासे कृष्णपक्षे अष्टमी तिथी । लिखितं मुनि कान्हजी पाडलीपुर मध्ये ।
त्रिज.....शिष्यणी आर्या सहजा पठनार्थ ।



काव्य एवं चरित्र

१६६५. अकलङ्कचरित्र—नाथूराम । पत्र सं० १२ । आ० १२×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
जैनाचार्य अकलङ्क की जीवन कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७६ । अ भण्डार ।

१६६६. अकलङ्कचरित्र..... । पत्र सं० १२ । आ० १२½×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २ । उ भण्डार ।

१६६७. अमरुशतक..... । पत्र सं० ६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६ । ज भण्डार ।

१६६८. उद्धवसंदेशाख्यप्रबन्ध..... । पत्र सं० ८ । आ० ११½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १७७६ । पूर्ण । वे० सं० ३१६ । ज भण्डार ।

१६६९. ऋषभनाथचरित्र—भ० सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ११९ । आ० १२×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—प्रथम तीर्थङ्कर आदिनाथ का जीवन चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६१ पौष बुदी ११ ; पूर्ण । वे०
सं० २०४० । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम आदिपुराण तथा वृषभनाथ पुराण भी है ।

प्रशस्ति— १५६१ वर्षे पौष बुदी ११ रवी । श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुन्दकुन्दाचार्या-
न्वये भ० श्री ६ प्रभाचन्द्रदेवाः भ० श्री ६ पद्मनंदिदेवाः भ० श्री ६ सकलकीर्त्तिदेवाः भ० श्री ६ भुवनकीर्त्तिदेवाः भ०
श्री ६ प्रभाचन्द्रदेवाः भ० श्री ६ विजयकीर्त्तिदेवाः भ० श्री ६ शुभचन्द्रदेवाः भ० श्री ६ सुमतिकीर्त्तिदेवाः स्थविराचार्य
श्री ६ चंदकीर्त्तिदेवास्तत्शिष्य श्री ५ श्रीवंत ते शिष्य ब्रह्म श्री नाकरस्येदं पुस्तकं पठनार्थं ।

२०००. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०६ । ले० काल सं० १८८० । वे० सं० १५० । अ भण्डार ।

इस भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३५) और है ।

२००१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १९० । ले० काल शक सं० १६९७ । वे० सं० ५२ । क भण्डार ।

एक प्रति वे० सं० ६६६ की और है ।

२००२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १९४ । ले० काल सं० १७१७ फागुण बुदी १० । वे० सं० ६४ । उ
भण्डार ।

२००३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८२ । ले० काल सं० १७८३ ज्येष्ठ बुदी ६ । वे० सं० ६५ । उ
भण्डार ।

२००४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७१ । ले० काल सं० १८५५ प्र० धावण सुदी ८ । वे० सं० ३० ।
छ भण्डार ।

विशेष—चिमनराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२००५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८१ । ले० काल सं० १७७४ ; वे० सं० २८७ । अ भण्डार ।
इसके अतिरिक्त ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७६) तथा ट भण्डार में एक प्रति (वे० सं०
२१८३) और हैं ।

२००६. ऋतुसंहार—कालिदास । पत्र सं० १३ । आ० १०×३३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य ।
२० काल × । ले० काल सं० १६२४ आसोज सुदी १० । वे० सं० ४७१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत् १६२४ वर्षे अश्वनि सुदि १० दिने श्री मलधारगच्छे भट्टारक श्री श्री श्री मानदेव
मूरि तत्शिष्यभावदेवेन लिखिता स्वहेतवे ।

२००७. करकण्डुचरित्र—मुनि कनकामर । पत्र सं० ६१ । आ० १०×५ इंच । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६५ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १०२ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नहीं है ।

२००८. करकण्डुचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ८४ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १६११ । ले० काल सं० १६५६ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २७७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—संवत् १६५६ वर्षे मांगसिर सुदि ६ भौमे सोमंत्रा (सोजत) ग्रामे नेमनाथ चैत्यालये
श्रीमत्काष्ठामंघे भ० श्री विश्वसेन तत्पुत्रे भ० श्री विद्याभूषण तत्शिष्ये भट्टारक श्री श्रीभूषण विजिरामेस्तत्शिष्ये त्र०
नेमराज स्वहस्तेन लिखितं ।

आचार्यावराचार्य श्री श्री चन्द्रकीर्तिजी तत्शिष्य आचार्य श्री हर्षकीर्तिजी की पुस्तक ।

२००९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० २८४ । अ भण्डार ।

२०१०. कविप्रिया—केशवदेव । पत्र सं० २१ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—काव्य
(शृङ्गार) । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११३ । छ भण्डार ।

२०११. कादम्बरीटीका..... । पत्र सं० १५१ से १८३ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७७ । अ भण्डार ।

२०१२. काव्यप्रकाशसटीक । पत्र सं० ८३ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७८ । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार का नाम नहीं दिया है ।

२०१३. किरातार्जुनीय—महाकवि भारवि । पत्र सं० ४६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०२ । अ भण्डार ।

२०१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ से ६३ । ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० ३५ । ख भण्डार ।
विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२०१५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १५३० भादवा बुदी ८ । वे० सं० १२२ । ड
भण्डार ।

२०१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८४२ भादवा बुदी । वे० सं० १२३ । ड
भण्डार ।

विशेष—सांकेतिक टीका भी है ।

२०१७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८१७ । वे० सं० १२४ । ड भण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर में माधोसिंहजी के राज्य में पं० गुमानीराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२०१८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८६ । ले० काल X । वे० सं० ६६ । ख भण्डार ।

२०१९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १२० । ले० काल X । वे० सं० ६४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति मल्लिनाथ कृत संस्कृत टीका सहित है ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६३८) ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३५) च
भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७०) तथा छ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ६४, २५१, २५२) और हैं ।

२०२०. कुमारसंभव—महाकवि कालिदास । पत्र सं० ४१ । आ० १२X५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । १० काल X । ले० काल सं० १७८३ मंगसिर सुदी २ । पूर्णा । वे० सं० ६३६ । अ भण्डार ।

विशेष—पृष्ठ चिपक जाने से अक्षर खराब होगये हैं ।

२०२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १७५७ । वे० सं० १८४५ । जीर्ण । अ भण्डार ।

२०२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल X । वे० सं० १२५ । ड भण्डार । अष्टम सर्ग पंक्ति ।

इनके अतिरिक्त अ एवं क भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ११८०, ११३) च भण्डार में दो
प्रतियां (वे० सं० ७१, ७२) ख भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १३८, ३१०) तथा ट भण्डार में तीन प्रतियां
(वे० सं० २०५२, ३२३, २१०४) और हैं ।

२०२३. कुमारसंभवटीका—कनकसागर । पत्र सं० २२ । आ० १०X४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । १० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० २०३८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

२०२४. चित्र-चूड़ामणि—वादीभसिंह । पत्र सं० ४२ । आ० ११X४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । १० काल सं० १६८७ सावण बुदी ६ । पूर्णा । वे० सं० १३३ । ड भण्डार ।

विशेष—इसका नाम जोबंधर चरित्र भी है ।

२०२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८६१ भादवा बुदी ६ । वे० सं० ७३ । च
भण्डार ।

विशेष—बीवान अमरचन्दजी ने मातूलाल वैद्य के पास प्रतिलिपि की थी ।

च भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७४) और है ।

२०२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १६०५ माघ सुदी ५ । वे० सं० ३३२ । अ भण्डार ।

२०२७. खण्डप्रशस्तिकाव्य..... । पत्र सं० ३ । आ० ८३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १८७१ प्रथम भाद्रपदा बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३१४ । अ भण्डार ।

विशेष—सवाईराम गोधा ने जयपुर में अंबावती बाजार के आदिनाथ चैत्यालय (मन्दिर पाटोदी) में प्रतिलिपि की थी ।

ग्रन्थ में कुल २१२ श्लोक हैं जिनमें रघुकुलमणि श्री रामचन्द्रजी की स्तुति की गई है । वैसे प्रारम्भ में रघुकुल की प्रशंसा फिर दशरथ राम व सीता आदि का वर्णन तथा रावण के मारने में राम के पराक्रम का वर्णन है ।

अन्तिम पृष्ठिका—इति श्री खंडप्रशस्ति काव्यानि संपूर्णा ।

२०२८. गजसिंहकुमारचरित्र—विनयचन्द्र सूरि । पत्र सं० २३ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५ । ड भण्डार ।

विशेष—२१ व २२वां पत्र नहीं है ।

२०२९. गीतगोविन्द—जयदेव । पत्र सं० २ । आ० ११३×७३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२२ । क भण्डार ।

विशेष—भालरावाटन में गौड़ ब्राह्मण पंडा भैरवलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२०३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८४४ । वे० सं० १८२६ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसो भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० १७४६) और है ।

२०३१. गौतमस्वामीचरित्र—मंडलाचार्य श्री धर्मचन्द्र । पत्र सं० ५३ । आ० ९३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल सं० १७२६ ज्येष्ठ सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१ । अ भण्डार ।

२०३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८३९ कार्तिक सुदी १२ । वे० सं० १३२ । क भण्डार ।

२०३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८९४ । वे० सं० ५२ । छ भण्डार ।

२०३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १९०९ कार्तिक सुदी १२ । वे० सं० २१ । झ भण्डार ।

२०३५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० १९०९ । ज भण्डार ।

२०३६. गौतमस्वामीचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १०८ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १९४० मंगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३३ । क भण्डार ।

विशेष—मूलग्रन्थकर्ता आचार्य धर्मचन्द्र हैं । रचना संवत् १४२६ दिया है जो ठीक प्रतीत नहीं होता ।

२०३७. घटकर्परकाव्य—घटकर्पर । पत्र सं० ४ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × १ $\frac{१}{२}$ ले० काल सं० १८१४ । पूर्ण । वे० सं० २३० । अ भण्डार ।

विशेष—चम्पापुर में आदिनाथ चैत्यालय में ग्रन्थ लिखा गया था ।

अ और ब भण्डार में इसकी एक एक प्रति (वे० सं० १५४८, ७५) और है ।

२०३८. चन्दनाचरित्र—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ३६ । आ० १०×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल सं० १६२५ । ले० काल सं० १८३३ भादवा बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १८३ । अ भण्डार ।

२०३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८२५ माह बुदी ३ । वे० सं० १७२ । क भण्डार ।

१०४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८६३ द्वि० श्रावण । वे० सं० १६७ । ख भण्डार ।

२०४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४० । ले० काल सं० १८३७ माह बुदी ७ । वे० सं० ५४ । छ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में पं० सवाईराम गोधा के मन्दिर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२०४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८६१ भादवा सुदी ८ । वे० सं० ५८ । झ भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७) और है ।

२०४३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८३२ मंगसिर बुदी १ । वे० सं० ५० । ज भण्डार ।

२०४४. चन्द्रप्रभचरित्र—वीरनदि । पत्र सं० १३० । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × १ ले० काल सं० १५८६ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२०४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८६ । ले० काल सं० १६४१ मंगसिर बुदी १० । वे० सं० १७४ । क भण्डार ।

२०४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १५२४ भादवा बुदी १० । वे० सं० १६ । घ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्री मत्खेडल वंशे विवुष मुनि जनानंदकंदे प्रसिद्धे रूपानामैति साधुः सनलकलिमलक्षालनेक प्रवीण मध-
स्थस्तस्यपुत्रे जिनवर वचनाराधको दानत्यास्तेनेवं चारुकाव्यं निजकरलिखितं चन्द्रनाथस्य सार्थं । सं० १५२४ वर्षे भादवा
वदी ७ ग्रन्थ लिखितं कर्मक्षयानिमित्तं ।

२०४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७ से ७४ । ले० काल सं० १७८५ । अपूर्ण । वे० सं० २१७७ । ट
भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५८५ वर्षे फागुण बुदी ७ रविवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्यन्वये भट्टारक
श्री पयनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री त्रिभुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री सहसकीर्ति
देवा तत्पिप्य व० संजयति इदं शास्त्रं ज्ञानावरणी कर्मक्षया निमित्तं लिखायित्वा ठीकुरदारस्थानो.....साधु लिखितं ।

इन प्रतियों के प्रतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४६) च भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं०
६०, ८८) ज भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० १०३, १०४, १०५) अ एवं ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं०
१६४, २१६०) और हैं ।

२०४८. चन्द्रप्रभकाव्यपंजिका—टीकाकार गुणानन्दि । पत्र सं० ८६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११ । अ भण्डार ।

विशेष—मूलकर्ता आचार्य वीरनंदि । संस्कृत में संक्षिप्त टीका दी हुई है । १८ सर्गों में है ।

२०४९. चंद्रप्रभचरित्रपञ्जिका । पत्र सं० २१ । आ० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६४ आसोज सुदी १३ । वे० सं० ३२५ । ज भण्डार ।

२०५०. चन्द्रप्रभचरित्र—यशःकीर्ति । पत्र सं० १०६ । आ० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—प्राठवें तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ का जीवन चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६४१ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वे०
सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—अथ संवत् १६४१ वर्षे पोह श्रुदि एकादशी बुधवासरे काष्ठासंघे सा..... (अपूर्ण)

२०५१. चन्द्रप्रभचरित्र—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं० ६५ । आ० ११×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १८०४ कार्तिक बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १ । अ भण्डार ।

विशेष—बमवा नगरे चन्द्रप्रभ चैत्यालय में आचार्यवर श्री मेरुकीर्ति के शिष्य पं० परशुरामजी के शिष्य
नंदराम ने स्वयंठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२०५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८३० कार्तिक सुदी १० । वे० सं० ७३ । क
भण्डार ।

२०५३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १८६५ जेठ सुदी ८ । वे० सं० १६६ । क
भण्डार ।

इस प्रति के प्रतिरिक्त खूँ एवं ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ४८, २१६६) और हैं ।

२०५४. चन्द्रप्रभचरित्र—कवि दामोदर (शिष्य धर्मचन्द्र) । पत्र सं० १४६ । आ० १०^३×४^३ इञ्च ।
भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल सं० १७२७ भाद्रवा सुदी ६ । ले० काल सं० १८८१ सावण बुदी ६ । पूर्ण ।
वे० सं० १६ । अ भण्डार ।

विशेष—आदिभाग—

ॐ नमः । श्री परमात्मने नमः । श्री सरस्वत्यै नमः ।

श्रियं चंद्रप्रभो नित्यांबद्रं दश्वन्द्र लाञ्छनः ।

अथ कुमुदचंद्रो वरुचंद्रप्रभो जिनः क्रियात् ॥१॥

कुशासनवचो चूडजगतारणहेतवे ।

तेन स्ववाक्यसूरोऽस्नैर्द्धमपोतः प्रकाशितः ॥२॥

युगादी येन तीर्थेशाधर्मतीर्थः प्रवर्तितः ।

तमहं वृषभं वंदे वृषदं वृषनायकं ॥३॥

चक्री तीर्थकरः कामो मुक्तिप्रियो महावली ।

शान्तिनाथः सदा शान्तिं करोतु नः प्रशान्तिं कृत् ॥४॥

अन्तिम भाग—

भूमृन्नेत्राचल (१७२१) शशधरांक प्रमे वर्षेऽतीते

नवमिदिवसेमासि भाद्रे सुयोगे ।

रम्ये ग्रामे विरचितमिदं श्रीमहाराष्ट्रनाम्नि

नाभेयश्चप्रवरभवने भूरि शोभानिवासे ॥८५॥

रम्यं चतुः सहस्राणि पंचदशयुतानि वै

अनुष्टुपैः समाख्यातं श्लोकैरिदं प्रमाणातः ॥८६॥

इति श्री मंडलसूरिश्रीभूषण तत्पट्टगच्छेश श्रीधर्मचंद्रशिष्य कवि दामोदरविरचिते श्रीचन्द्रप्रभ चरिते निर्वाण गमन वर्णनं नाम सप्तविंशति नामः सर्ग ॥२७॥

इति श्री चन्द्रप्रभचरितं समाप्तं । संवत् १८४१ श्रावण द्वितीय कृष्णपक्षे नवम्यां तिथौ सोमवासरे सवाई जयनगरे जोधराज पाटोदी कृत मंदिरे लिखतं पं० चोखचंद्रस्य शिष्य सुणारामजी तस्य शिष्य कल्याणदासस्य तत् शिष्य स्युशालचंद्रेण स्वहस्तेन पूर्णकृतं ॥

२०५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १९२ । ले० काल सं० १८६२ पौष बुदी १४ । वै० सं० १७५ । क भण्डार ।

२०५६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८३४ अषाढ सुदी २ । वै० सं० २५५ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० चोखचन्द्रजी शिष्य पं० रामचन्द्र ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

२०५७. चन्द्रप्रभचरित्रभाषा—जयचन्द्र छाबड़ा । पत्र सं० ६९ । मा० १२ १/२ × ६ । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल १९वीं शताब्दी । ले० काल सं० १९४२ ज्येष्ठ सुदी १४ । वै० सं० १६५ । क भण्डार ।

विशेष—केवल दूसरे सर्ग में आये हुये न्याय प्रकरण के श्लोकों की भाषा है ।

इसी भण्डार में तीन प्रतियां (वै० सं० १६६, १६७, १६८) और हैं ।

२०५८. चारुदत्तचरित्र—कल्याणकीर्ति । पत्र सं० १९ । आ० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—मेठ चारुदत्त का चरित्र वर्णन । २० काल सं० १९९२ । ले० काल सं० १७३३ कार्तिक बुदी ६ । अपूर्ण । वे०
नं० ८७४ । अ भण्डार ।

विशेष—१९ से आगे के पत्र नहीं हैं । अन्तिम पत्र मौजूद है । बहादुरपुर ग्राम में पं० अमीचन्द ने प्रति-
लिपि की थी ।

मादिभाग— ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री सारदाई नमः ॥

मादिजिनआदिस्तवु अंति श्री महावीर ।
श्री गौतम गणधर नमुं वलि भारति गुणगंभीर ॥१॥
श्री मूलसंनमहिमा धरणी सरस्वतिगच्छ शृंगार ।
श्री सकलकीर्ति गुरु अनुक्रमि तंमुश्रीपद्ममंदि भवतार ॥२॥
तस गुरु भ्राता शुभमति श्री देवकीर्ति मुनिराय ।
चारुदत्त श्रेष्ठीतणो प्रबंध रज्जु नमी पाय ॥३॥

अन्तिम—.....भट्टारक सुखकार ॥

सुखकर सोभामि अलि विचक्षण वदि वारण केशरी ।
भट्टारक श्री पद्ममंदिचरणकंज सेवि हरि ॥१०॥
एसहु रे गछ नायक प्रणामि करि
देवकीरति रे मुनि निज गुरु मन्व धरी ।
धरिचित्त चरणे नमि कल्याणकीरति इम अणी ।
चारुदत्तकुमर प्रबंध रचना रविमि आदर धरि ॥११॥
रायदेश मध्य रे भिलोड डंवसि
निज रचनायि रे हरिपुर निहसि
रुसि अमर कुमारनितिहां धनपति वित्त विलसए ।
प्रासाद प्रतिमा जिन प्रति करि सुकृत संचए ॥१२॥
सुकृत संचि रे व्रत बहु प्राचरि
दान महोद्वरे जिन पूजा करि
करि उद्व गाल ग्रंथच चन्द्र जिन प्रासादए ।
धावन सिखर सोहाम्यण ध्वज कनक कलश विलासए ॥१३॥
मंडप मध्य समवसरण सोह
श्री जिन बिबरे मनोहर मन मोहि ।

मोहि जिनमन अति उन्नत मानस्तंभविशालए ।
 तिहां विजयभद्र विक्षात सुन्दर जिनसासन रक्षपालए ॥१४॥
 तहां चोमासि रे रचनां करि
 सोलबांगु पिरे आसो अनुसरि ।
 अनुसरि आसो शुक्ल पंचमी श्रीगुरु चरणरुदय धरि ।
 कल्याणकीरति कहि सज्जन भणो आदर करि ॥१५॥

दोहा—आदर ब्रह्म संघ जीतरिण विनय सहित मुखकार ।
 ते देखि चारुदत्त नो प्रबंध रच्यो मनोहार ॥१॥
 भणिण सुणिण आदर करि याचक निदिय दान ।
 इंद्रो तणो पद ते लहि अमर दीपि बहुमान ॥२॥
 इति श्री चारुदत्त प्रबंध समाप्तः ॥

विशेष—संवत् १७३३ वर्षे कार्तिक वदि ६ गुरुवारे लिखितं बहादुरपुरग्रामे श्री चिंतामनी चैत्यालये भट्टारक श्री ५ घर्मभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्री ५ देविद्रकीर्ति तत्शिष्य पंडित अमीचंद स्वहस्तेन लिखितं ।

॥ श्री रस्तु ॥

२०५६. चारुदत्तचरित्र—भारामल्ल । पत्र सं० ५० । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल सं० १८१३ सावन बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७८ । अ भण्डार ।

२०६०. चारुदत्तचरित्र—उदयलाल । पत्र सं० १६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० १६२६ माघ सुदी १ । ले० काल × । वे० सं० १७१ । छ भण्डार ।

२०६१. जम्बूस्वामीचरित्र—ब्र० जिनदास । पत्र सं० १०७ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६३३ । पूर्ण । वे० सं० १७१ । अ भण्डार ।

२०६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १७५६ फागुण बुदी ५ । वे० सं० २५५ । अ भण्डार ।

२०६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११४ । ले० काल सं० १८२५ भाद्रपद सुदी १२ । वे० सं० १८४ । क भण्डार ।

ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५५) श्रीर है ।

२०६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ११२ । ले० काल × । वे० सं० २६ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । प्रथम २ तथा अन्तिम पत्र नये लिखे हुये हैं ।

२०६५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५५ । ले० काल × । वे० सं० १६६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रथम तथा अन्तिम पत्र नये लिखे हुये हैं ।

२०६६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १८६४ पौष बुदी १४ । वे० सं० २०० । क
भण्डार ।

२ ६७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८७ । ले० काल सं० १८६३ चैत्र बुदी ४ । वे० सं० १०१ । च
भण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२०६८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८२५ । वे० सं० ३५ । छ भण्डार ।

२०६९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२३ । ले० काल × । वे० सं० ११२ । अ भण्डार ।

२०७०. जम्बूस्वामीचरित्र—पं० राजमंल्ल । पत्र सं० १२९ । आ० १२३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १६३२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५ । क भण्डार ।

विशेष—१३ सर्गों में विभक्त है तथा इसकी रचना 'टोडर' नाम के साधु के लिए की गई थी ।

२०७१. जम्बूस्वामीचरित्र—विजयकीर्ति । पत्र सं० २० । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १८२७ फागुन बुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४० । ज भण्डार ।

२०७२. जम्बूस्वामीचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १८३ । आ० १४३×५३ इञ्च ।
भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० १९३४ फागुण सुदी १४ । ले० काल सं० १९३६ । वे० सं० ४२७ ।
अ भण्डार ।

२०७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६६ । ले० काल × । वे० सं० १८६ । क भण्डार ।

२०७४. जम्बूस्वामीचरित्र—नाथूराम । पत्र सं० २८ । आ० १२३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १६९ । छ भण्डार ।

२०७५. जिनचरित्र..... । पत्र सं० ६ से २० । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११०५ । अ भण्डार ।

२०७६. जिनदत्तचरित्र—गुणभद्राचार्य । पत्र सं० ६५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५९५ ज्येष्ठ बुदी-१ । पूर्ण । वे० सं० १४७ । अ भण्डार ।

२०७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल सं० १८१६ माघ सुदी ५ । वे० सं० १८९ । क
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

२०७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८९३ फागुण बुदी १ । वे० सं० २०३ । ड
भण्डार ।

२०७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १९०४ मासोज सुदी ३ । वे० सं० १०३ । च
भण्डार ।

१७०]

२०८०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८०७ मंगसिर सुदी १३ । वे० सं० १०४ । अ

भण्डार ।

विशेष—यह प्रति पं० चोखचन्द एवं रामचंद की थी ऐसा उल्लेख है ।

छ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७१) और है ।

२०८१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १६०४ कार्तिक बुदी १२ । वे० सं० ३६ । अ

भण्डार ।

विशेष—गोपीराम बसवा वाले ने फागो में प्रतिलिपि की थी ।

२०८२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १७८३ मंगसिर बुदी ८ । वे० सं० २४३ । अ

भण्डार ।

विशेष—भिलाय में पं० गोखन ने प्रतिलिपि की थी ।

२०८३. जिनदत्तचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ७६ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी

गद्य । विषय—चरित्र । १० काल सं० १६३६ माघ सुदी ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६० । क भण्डार ।

२०८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० १६१ । क भण्डार ।

२०८५. जीवंधरचरित्र—भट्टारक शुभचन्द्र । पत्र सं० १२१ । आ० ११×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । १० काल सं० १५६६ । ले० काल सं० १८४० फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २२ । अ

भण्डार ।

इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ८७३, ८६६) और हैं ।

२०८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७२ । ले० काल सं० १८३१ भाद्रपद बुदी १३ । वे० सं० २०६ । क

भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति फटी हुई है ।

२०८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८६८ फागुण बुदी ८ । वे० सं० ४१ । अ

भण्डार ।

विशेष—सवाई जयनगर में महाराजा जगतसिंह के शासनकाल में नेमिनाथ जिन चैत्यालय (गोधों का मन्दिर) में बखतराम कृष्णराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२०८८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०४ । ले० काल सं० १८८० ज्येष्ठ बुदी ५ । वे० सं० ४२ । अ

भण्डार ।

२०८९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १८३३ वैशाख सुदी २ । वे० सं० २७ । अ

भण्डार ।

२०९०. जीवंधरचरित्र—नथमल विसाला । पत्र सं० ११४ । आ० १२^३×६^३ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—चरित्र । १० काल सं० १८४० । ले० काल सं० १८५६ । पूर्ण । वे० सं० ४१७ । अ भण्डार ।

२०६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० ५५६ । च भण्डार ।

२०६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ मे १५१ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १७४३ । ट भण्डार ।

२०६३. जीवंधरचरित्र—पन्नलाल चौधरी । पत्र सं० १७० । आ० १३X५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० १६३५ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २०७ । क भण्डार ।

२०६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३५ । ले० काल X । वे० सं० २१४ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम ३५ पत्र चूहों द्वारा खाये हुये हैं ।

२०६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३२ । ले० काल X । वे० सं० १६२ । छ भण्डार ।

२०६६. जीवंधरचरित्र..... । पत्र सं० ४१ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ X $\frac{६}{६}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०२६ । अ भण्डार ।

२०६७. रोमिणाहचरित्र—कविरत्न अबुध के पुत्र लक्ष्मणदेव । पत्र सं० ४४ । आ० ११X $\frac{४}{३}$ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल सं० १५३६ शक १४०१ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

२०६८. रोमिणाहचरित्र—दामोदर । पत्र सं० ४३ । आ० १२X५ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—काव्य । २० काल सं० १२८७ । ले० काल सं० १५८२ भादवा सुदी ११ । वे० सं० १२५ । ब भण्डार ।

विशेष—चंदेरी में आचार्य जिनचन्द्र के शिष्य के निमित्त लिखा गया ।

२०६९. त्रेसठशलाकापुरुषचरित्र..... । पत्र सं० ३६ से ६१ । आ० १० $\frac{३}{४}$ X $\frac{४}{३}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—चरित्र । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०६० । अ भण्डार ।

२०७०. दुर्घटकाव्य..... । पत्र सं० ४ । आ० १२X $\frac{५}{३}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल X । ले० काल X । वे० सं० १८५१ । ट भण्डार ।

२०७१. द्वाश्रयकाव्य—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । आ० १०X $\frac{४}{३}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १८३२ । ट भण्डार । (दो सर्ग हैं)

२०७२. द्विसंधानकाव्य—धनञ्जय । पत्र सं० ६२ । आ० १० $\frac{३}{४}$ X $\frac{५}{३}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८५३ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के पत्र टूट गये हैं । ६२ से आगे के पत्र नहीं हैं । इसका नाम राघव पाण्डवीय काव्य भी है ।

२०७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३३१ । क भण्डार ।

२०७४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १५७७ भादवा बुदी ११ । वे० सं० १५८ । क भण्डार ।

विशेष—गौर गोत्र वाले श्री खेऊ के पुत्र पदारथ ने प्रतिलिपि की थी ।

३००५. द्विसंधानकाव्यटीका—विनयचन्द्र । पत्र सं० २२ । आ० १२३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (पंचम सर्ग तक) वे० सं० ३३० । क भण्डार ।

३००६. द्विसंधानकाव्यटीका—नेमिचन्द्र । पत्र सं० ३६१ । विषय—काव्य । भाषा—संस्कृत । २०
काल × । ले० काल सं० १६५२ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३२६ । क भण्डार ।

विशेष—इसका नाम पद कौमुदी भी है ।

३००७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५८ । ले० काल सं० १८७५ माघ सुदी ८ । वे० सं० १५७ । क
भण्डार ।

३००८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १५०६ कार्तिक सुदी २ । वे० सं० ११३ । अ
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है । गोपाचल (ग्वालियर) में महाराजा झगरेंद्र के शासनकाल में प्रतिलिपि
की गई थी ।

३००९. द्विसंधानकाव्यटीका..... । पत्र सं० २६४ । आ० १०३×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२८ । क भण्डार ।

३०१०. धन्यकुमारचरित्र—आ० गुणभद्र । पत्र सं० ५३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३३ । क भण्डार ।

३०११. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ४५ । ले० काल सं० १५६७ आसोज सुदी १० । अपूर्ण । वे०
सं० ३२५ । क भण्डार ।

विशेष—दूध गांव के निवासी खण्डेलवाल जातीय ने प्रतिलिपि की थी । उस समय दूध (जयपुर) पर
षडसीराय का राज्य लिखा है ।

३०१२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १६५२ द्वि० ज्येष्ठ बुदी ११ । वे० सं० ४३ । अ
भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति दी हुई है । आमेर में आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई । लेखक प्रशस्ति
अपूर्ण है ।

३०१३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६०४ । वे० सं० १२८ । अ भण्डार ।

३०१४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० सं० ३६१ । अ भण्डार ।

३०१५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६०३ भाद्रवा सुदी ३ । वे० सं० ४५८ । अ
भण्डार ।

विशेष—आदिका सीवायी ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि करके मुनि श्री कमलकीर्ति को भेंट दिया था ।

३०१६. धन्यकुमारचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० १०७ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६३ । अ भण्डार ।

विशेष—चतुर्थ अधिकार तक है

३०१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८५० आषाढ बुदी १३ । वे० सं० २५७ । अ
भण्डार ।

विशेष—२६ से ३६ तक के पत्र बाद में लिखकर प्रति को पूर्ण किया गया है ।

३०१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८२५ माघ सुदी १ । वे० सं० ३१४ । अ
भण्डार ।

३०१९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १७८० श्रावण सुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं०
११०४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वां पत्र नहीं है । क० मेघसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८१३ भाद्रवा बुदी ८ । वे० सं० ४४ । अ
भण्डार ।

विशेष—देवगिरि (दीसा) में पं० बस्तावर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई । कठिन शब्दों के हिन्दी में अर्थ
दिये हैं । कुल ७ अधिकार हैं ।

३०२१. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० १७ । अ भण्डार ।

३०२२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १६९१ वैशाख सुदी ७ । वे० सं० २१८७ । ट
भण्डार ।

विशेष—संवत् १६९१ वर्ष वैशाख सुदी ७ पुष्यनक्षत्रे वृधिन्याम जोगे गुरुवासरे नंचाम्नाये बलात्कारगणे
सरस्वती गच्छे..... ।

३०२३. धन्यकुमारचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० २४ । अ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३२ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३०२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १६०१ पौष बुदी ३ । वे० सं० ३२७ । अ
भण्डार ।

विशेष—फोजुलाल टांग्या ने प्रतिलिपि की थी ।

३०२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७९० श्रावण सुदी ५ । वे० सं० ८६ । अ
भण्डार ।

विशेष—भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति ने अपने शिष्य मनोहर के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

३०२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १९ । ले० काल सं० १८१६ फाल्गुण बुदी ७ । वे० सं० ८७ । अ
भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३०२७. धन्यकुमारचरित्र—सुरासालाद । पत्र सं० ३० । अ० १४×४७ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७४ । अ भण्डार ।

१७४]

३०२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल X । वे० सं० ४१२ । अ भण्डार ।
 ३०२९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल X । वे० सं० ३३४ । क भण्डार ।
 ३०३०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६ । ले० काल X । वे० सं० ३२६ । छ भण्डार ।
 ३०३१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १६६४ कार्तिक बुदी ६ । वे० सं० ५६३ । अ

भण्डार ।

३०३२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १८५२ । वे० सं० २४ । झ भण्डार ।
 ३०३३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६६ । ले० काल X । वे० सं० ४६५ । ब्भ भण्डार ।

विशेष—संतोषराम छाबड़ा मौजमाबाद वाले ने प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ प्रशस्ति काफी विस्तृत है ।
 इनके अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६४) तथा छ और झ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १६८ व १२) और हैं ।

३०३४. धन्यकुमारचरित्र..... पत्र सं० १८ । आ० १०X४३ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।
 २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३२३ । छ भण्डार ।

३०३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३२४ । छ भण्डार ।

३०३६. धर्मशर्माभ्युदय—महाकवि हरिचन्द्र । पत्र सं० १५३ । आ० १०३X५३ इच्छ । भाषा—
 संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६१ । अ भण्डार ।

३०३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८७ । ले० काल सं० १६३८ कार्तिक मुदी ८ । वे० सं० ३४८ । क
 भण्डार ।

विशेष—नीचे संस्कृत में संकेत दिये हुए हैं ।

३०३८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८५ । ले० काल X । वे० सं० २०३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ तथा क भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १४८१, ३४६) और है ।

३०३९. धर्मशर्माभ्युदयटीका—यशःकीर्ति । पत्र सं० ४ से ६६ । आ० १२X५ इच्छ । भाषा—
 संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ८५६ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'संदेह भ्वांत दीपिका' है ।

३०४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३०४ । ले० काल सं० १६५१ आषाढ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३४७ ।
 क भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३४६) की और है ।

३०४१. नलौदयकाव्य—माणिक्यसूरि । पत्र सं० ३२ से ११७ । आ० १०X४३ इच्छ । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—काव्य । २० काल । ले० काल सं० १४४५ प्र० फागुन बुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० ३४२ । अ भण्डार ।

पत्र सं० १ से ३१ ५५, ५६ तथा ६२ से ७२ नहीं हैं । दो पत्र बीच के और हैं जिन पर पत्र सं० नहीं है ।

विशेष—इसका नाम 'नलायन महाकाव्य' तथा 'कुबेर पुराण' भी है । इसकी रचना सं० १४६४ के
 पूर्व हुई थी । जिन रत्नकोष में ग्रन्थकार का नाम माणिक्यसूरि तथा माणिक्यदेव दोनों दिया हुआ है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १४४५ वर्षे प्रथम फागुन वदि ८ शुक्ले लिखितमिदं श्रीमदणहिलपत्तने ।

३०४२. नलोदयकाव्य—कालिदास । पत्र सं० ६ । आ० १२×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १८३६ । पूर्ण । वे० सं० ११४३ । अ भण्डार ।

३०४३. नवरत्नकाव्य..... । पत्र सं० २ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६२ । अ भण्डार ।

विशेष—विक्रमादित्य के नवरत्नों का परिचय दिया हुआ है ।

३०४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० ११४६ । अ भण्डार ।

३०४५. नागकुमारचरित्र—मल्लिषेण सूरि । पत्र सं० २२ । आ० १०^३/_४×६^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६४ भादवा सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २३४ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

संवत् १५६४ वर्षे भादवा सुदी १५ सोमदिने श्री मूलसंथे नद्याम्नाये बलशक्तारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यन्वये भ० श्री पद्मनंदिदेवा त० भ० श्री शुभचन्द्रदेवा त० भ० श्री जिनचन्द्रदेवा त० भ० श्री प्रभावचन्द्रदेवा तदाम्नाये षण्डेलवालान्वये साह जिणदास तद्भार्या जमणदे त० साह सांगा द्वि० सहसा सुर चुंडा सा० सांगा भार्या सूरहदे द्वि० शृंगारदे तृ० सुरताणदे त० सा० आसा, धरणपाल आसा भार्या हंकारदे, धरणपाल भार्या धारदे । द्वि० सुहाणदे । सहसा भार्या स्वरूपदे त० सा० पासा द्वि० महिपाल । पासा भार्या सुगुणदे द्वि० पाटमदे त० काल्हा महिपाल महिमादे । चुंडा भार्या चांदणदे तस्यपुत्र सा० दासा तद्भार्या दाडिमदे तस्यपुत्र नरसिंह एतेषां मध्ये आसा भार्या ग्रहंकारदे इदंशास्त्र लि० मंडलाचार्य श्री धर्मचंद्राय ।

३०४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८२६ शोष सुदी ५ । वे० सं० ३६५ । अ भण्डार ।

३०४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८०६ श्रैत्र बुदी ५ । वे० सं० ५० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ६ पत्र नवीन लिखे हुए हैं । १० से १६। तत्र ३२वां पत्र किसी प्राचीन प्रति के हैं । मन्त में निम्न प्रकार लिखा है । पांडे रामचन्द्र के साथे पधराई पोथी । संवत् १५०६ श्रैत्र वदी ५ सनिवासरे दिल्ली ।

३०४८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १५८० । वे० सं० ३५३ । अ भण्डार ।

३०४९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६४१ माघ बुदी ७ । वे० सं० ४६६ । अ भण्डार ।

विशेष—तक्षकगढ में कल्याणराज के समय में भा० भोपालि ने प्रतिलिपि कराई थी ।

३०५०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १८०७ । अ भण्डार ।

३०५१. नागकुमारचरित्र—पं० धर्मधर । पत्र सं० ५५ । आ० १०३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल सं० १५११ श्रावण सुदी १५ । ले० काल सं० १६१६ बैशाख सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २३० । अ भण्डार ।

३०५२. नागकुमारचरित्र..... । पत्र सं० २२ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ भाद्रपद बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ८६ । ज भण्डार ।

३०५३. नागकुमारचरितटीका—टीकाकार प्रभाचन्द्र । पत्र सं० २ से २० । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

श्री जयसिंघदेवराज्ये श्रीमद्द्वारानिवासिनो परापरमेष्ठिप्रमाणोपार्जितमलपुण्यनिराकृताखिलकलकेन श्रीमत्प्रभा-
चन्द्रपंडितेन श्री मत्स्यमयी टिप्पणकं कृतमिति ।

३०५४. नागकुमारचरित्र—उदयलाल । पत्र सं० ३६ । आ० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५४ । ड भण्डार ।

३०५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ३५५ । ड भण्डार ।

३०५६. नागकुमारचरित्रभाषा..... । पत्र सं० ४५ । आ० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७७ । अ भण्डार ।

३०५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १७३ । छ भण्डार ।

३०५८. नेमिजी का चरित्रआणन्द । पत्र सं० २ से ५ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २० काल सं० १८०४ फागुण सुदी ५ । ले० काल सं० १८५१ । अपूर्ण । वे० सं० २२५७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम भाग—

नेम तस तास सघर मध्ये रे रह्या ज रुड भावो ।

चरत पाल्ये सात सारे सहस बरसना आव ॥

सहस वरसना आवज पूरा जिणवर करुडी धीरुडी ।

आठ कर्म कीघा चकचूरा पांच सछ तास सघात पूरा जी ।

मंदत १८ चिडोत्तर फागुण मास मंझारो ।

मुद पंचमी सनीसर रे कीधो चरित उदारो ॥

कीधो चरत उदार आणंदा इम जाणी छाडो ग्रहफंदा ।

धन २ समुद गिरानंदा ऋष जेम लह नेम जिणंदा ॥५२॥

इति श्री नेमजी को चरित्र समाप्त ।

सं० १८५१ केसाले श्री श्री भोजरत्न जी लिखत कल्याणजी राजगढ मध्ये ।
आगे नेमिजी के नव भव दिये हुये हैं ।

२१५६. नेमिनाथ के दशभव.....। पत्र सं० ७। आ० ६×४^१ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—चौरव।
२० काल ×। ले० काल सं० १६१८। वे० सं० ३५४। क भण्डार।

२१६०. नेमिदूतकाव्य—महाकवि विक्रम। पत्र सं० २२। आ० १३×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत।
विषय—काव्य। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६१। क भण्डार।

विशेष—कालिदास कृत मेघदूत के श्लोकों के अन्तिम चरण की समस्यापूर्ति है।

२१६१. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० ३७३। ब्य भण्डार।

२१६२. नेमिनाथचरित्र—हेमचन्द्राचार्य। पत्र सं० २ से ७८। आ० १२×४^१ इञ्च। भाषा—संस्कृत।
विषय—काव्य। २० काल ×। ले० काल सं० १५८१ पौष सुदी १। अपूर्ण। वे० सं० २१३२। ट भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है।

२१६३. नेमिनिर्वाण—महाकवि वाग्भट्ट। पत्र सं० १००। आ० १३×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत।
विषय—नेमिनाथ का जीवन वर्णन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६०। क भण्डार।

२१६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ५५। ले० काल सं० १८२३। वे० सं० ३८८। क भण्डार।

विशेष—एक अपूर्ण प्रति क भण्डार में (वे० सं० ३८६) और है।

२१६५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३८२। ड भण्डार।

२१६६. नेमिनिर्वाणपंजिका.....। पत्र सं० ६२। आ० ११^१×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
काव्य। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६। ब्य भण्डार।

विशेष—६२ से आगे पत्र नहीं हैं।

प्रारम्भ—षट्वा नेमिद्वरं चित्ते लब्ध्वानंत चतुष्टयं।

कुर्वेहं नेमिनिर्वाणमहाकाव्यस्य पंजिका ॥

२१६७. नैषधचरित्र—हर्षकवि। पत्र सं० २ से ३०। आ० १०^३×४^१ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
काव्य। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६१। छ भण्डार।

विशेष—पंचम सर्ग तक है। प्रति सटीक एवं प्राचीन है।

२१६८. पद्मचरित्रसार.....। पत्र सं० ५। आ० १०×४^१ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—चरित्र। २०
काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४७। छ भण्डार।

विशेष—पद्मपुराण का संक्षिप्त भाग है।

२१६९. पर्युषणकल्प.....। पत्र सं० १००। आ० ११^३×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—चरित्र।
२० काल ×। ले० काल सं० १६६६। अपूर्ण। वे० सं० १०५। ख भण्डार।

विशेष—६३ वा तथा ६५ से ६६ तक पत्र नहीं हैं। श्रुतस्कंध का षवा अध्याय है।

प्रशस्ति—सं० १६६६ वर्षे मूलताणामध्ये मुधावक सोतृ तन् वधू हरमी तन् मुता मुलवर्णा मेतूषु धडाण्हे
वन्नेन एषा प्रति पं० श्री राजकीर्तिगणिनां विहरेऽपिता स्वपुन्याय।

२१७०. परिशिष्टपूर्व.....। पत्र सं० ५८ से ८० । आ० १०^३×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६७३ । अपूर्ण । वे० सं० १९९० । अ भण्डार ।

विशेष—६१ व ६२वां पत्र नहीं है । बीरमपुर नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२१७१. पवनदूतकाव्य—वादिचन्द्रसूरि । पत्र सं० १३ । आ० १२×५^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १९५५ । पूर्ण । वे० सं० ४२५ । क भण्डार ।

विशेष—सं० १९५५ में राव के प्रसाद से भाई दुलीचन्द के अवलोकनार्थ ललितपुर नगर में प्रतिलिपि हुई ।

२१७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ४५६ । क भण्डार ।

२१७३. पाण्डवचरित्र—लालवर्द्धन । पत्र सं० ९७ । आ० १०^३×४^३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० १७६८ । ले० काल सं० १८१७ । पूर्ण । वे० सं० १९२३ । ट भण्डार ।

२१७४. पार्श्वनाथचरित्र—वादिराजसूरि । पत्र सं० ९६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पार्श्वनाथ का जीवन चरित्र । २० काल शक सं० ९४७ । ले० काल सं० १५७७ फागुण बुदी ९ । पूर्ण । अत्यन्त जीर्ण । वे० सं० २२५८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र फटे हुये तथा गले हुये हैं । ग्रन्थ का दूसरा नाम पार्श्वपुराण भी है ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

मंथन् १५७७ वर्षे फाल्गुन बुदी ९ श्रो मूलसंधे बलात्कारगगे सरस्वतीगच्छे नंदाम्नाये भट्टारक श्री पद्मनंदि तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकभ्रांप्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये साधु गोत्रे साह काधिल तस्य भार्या कांबलदे तयोः पुत्रः चतुर्विधदान कल्पवृक्षः साह वद्धा तस्य भार्या पदमा तयोः पुत्र पंचाङ्ग तस्य भार्या बातागदे तयोपुत्रः साह दूलह एते नित्यं प्रणमन्ति ।

२१७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०७ । ख भण्डार ।

विशेष—२२ से आगे पत्र नहीं हैं ।

२१७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०५ । ले० काल सं० १५९५ फाल्गुण सुदी २ । वे० सं० २१८ । ख भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति बाला पत्र नहीं है ।

२१७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८७१ चैत्र सुदी १४ । वे० सं० २१९ । ख भण्डार ।

२१७८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १६८५ आषाढ । वे० सं० १६ । ख भण्डार ।

२१७९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १७८५ । वे० सं० १०५ । अ भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती में आदिनाथ चैत्यालय में गोद्वंन ने प्रतिलिपि की थी ।

२१८०. पार्श्वनाथचरित्र—भट्टारक सकलक्रीति । पत्र सं० १२० । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन । २० काल १५वीं शताब्दी । ले० काल सं० १८८८ प्रथम वैशाख सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १३ । अ भण्डार ।

२१८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११० । ले० काल सं० १८२३ कार्तिक बुदी १० । वे० सं० ४६६ । क भण्डार ।

२१८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६१ । ले० काल सं० १७६१ । वे० सं० ७० । घ भण्डार ।

२१८३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७५ से १३६ । ले० काल सं० १८०२ फागुण बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ४५६ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—

संवत् १८०२ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे एकादशी बुधे लिखितं श्रीउदयपुरनगरमध्येमुध्वावक-पुण्यप्रभावक-श्रीदेवगुरुभक्तिकारक श्रीसम्यक्त्वमूलद्वादशव्रतधारक सा० श्री दौलतरामजी पठनार्थ ।

२१८४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५२ से २२६ । ले० काल सं० १८५४ मंगसिर सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २१६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति दीवान संगही ज्ञानचन्द की थी ।

२१८५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १७८५ प्र० वैशाख सुदी ८ । वे० सं० २१७ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति खेमकर्मा ने स्वपठनार्थ दुर्गादास से लिखवायी थी ।

२१८६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १८५२ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० १५ । छ भण्डार ।

विशेष—पं० श्यौजीराम ने अपने शिष्य नोनदराम के पठनार्थ गंगाविष्णु से प्रतिलिपि कराई ।

२१८७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १२३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२१८८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६१ से १४४ । ले० काल सं० १७८७ । अपूर्ण । वे० सं० १६४५ । ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १०१३, ११७४, २३६) क तथा घ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ४६६, ७०) तथा ङ भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ४५६, ४५६, ४५७, ४५८) व्य तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० २०४, २१८४) और हैं ।

२१८९. पार्श्वनाथचरित्र—रङ्गू । पत्र सं० ८ से ७६ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—अनुसूचित । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१२७ । ट भण्डार ।

२१९०. पार्श्वनाथपुराण—भूधरदास । पत्र सं० ६२ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पार्श्वनाथ का जीवन वर्णन । २० काल सं० १७८६ आषाढ सुदी ५ । ले० काल सं० १८३३ । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । अ भण्डार ।

१८०]

२१६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० ४४७ । अ भण्डार ।

विशेष—तीन प्रतियां और हैं ।

२१६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८६० माह बुदी ६ । वे० सं० ५७ । ग

भण्डार ।

२१६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० ४५० । ङ भण्डार ।

२१६४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १८६५ । वे० सं० ४५१ । ङ भण्डार ।

२१६५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १८८१ पौष सुदी १४ । वे० सं० ४५३ । ङ

भण्डार ।

२१६६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४६ से १३० । ले० काल सं० १६२१ सावन बुदी ६ । वे० सं० १७५ ।

छ भण्डार ।

२१६७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०० । ले० काल सं० १८२० । वे० सं० १०४ । झ भण्डार ।

२१६८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १३० । ले० काल सं० १८५२ फागुण बुदी १४ । वे० सं० १० । ञ

भण्डार ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी । सं० १८५२ में लूणकरण गोधा ने प्रतिलिपि की ।

२१६९. प्रति सं० १० । पत्र सं० ४६ से १५४ । ले० काल सं० १६०७ । अपूर्ण । वे० सं० १८४ ।

ञ भण्डार ।

२२००. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८६६ आषाढ बुदी १२ । वे० सं० ५८ । ञ

भण्डार ।

विशेष—फतेहलाल संघी दीवान ने सोनियों के मन्दिर में सं० १६४० भाद्रपद सुदी ४ को चढाया ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ४५५, ४०८, ४४७) ग तथा घ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ५६, ७१) ङ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ४४६, ४५२, ४५४) च भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४) छ भण्डार में एक तथा झ भण्डार में २ (वे० सं० १५६, १, २) तथा ट भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १६१६, २०७४) और हैं ।

२२०१. प्रद्युम्नचरित्र—पं० महासेनाचार्य । पत्र सं० ५८ । आ० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३६ । च भण्डार ।

२२०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०१ । ले० काल × । वे० सं० ३४५ । ञ भण्डार ।

२२०३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११८ । ले० काल सं० १५६५ ज्येष्ठ बुदी ४ । वे० सं० ३४६ । ञ

भण्डार ।

विशेष—संवत् १५६५ वर्षे ज्येष्ठ बुदी चतुर्थीदिने गुरुवासरे सिद्धयोगे मूलनक्षत्रे श्रीमूलसंवे नंद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचंद्र

शैवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभावन्ददेवास्तच्छिष्य मंडलाचार्य श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदान्नाये रामसरनगरे श्रीचंद्रप्रभचैत्यालये खंडेल-
वालान्वये कांटरावालगोत्रे सा० वीरमस्तद्रभार्या हरषखू । तत्पुत्र सा० वेला तद्भार्या वील्हा तत्पुत्रौ द्वौ प्रथम साह दाम्नां
द्वितीय साह पूना । सा० दामा तद्भार्या गोगी तयोः पुत्रः सा० वोदिय तद्भार्या हीरो । सा० पूना तद्भार्या कोइल तयोः
पुत्रः सा० खरहथ एतेषां मध्ये जिनभूजापुरदरेण सा० चेलाख्येन इदं श्री प्रद्युम्न शास्त्रलिखाप्य ज्ञानावरणीकर्म क्षयार्थं
निमित्तं सत्पात्रायमं श्री धर्म चन्द्राय प्रदत्त

२२०४. प्रद्युम्नचरित्र—आचार्य सोमकीर्त्ति । पत्र सं० १९५ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १५३० । ले० काल सं० १७२१ । पूर्ण । वे० सं० १५५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचना संवत् 'क' प्रति में से है । संवत् १७२१ वर्षे आसौज बदि ७ शुभ दिने लिखितं आबर
(आमेर) मध्ये लिखायि आचार्य श्री महोचंद्रकीर्त्तिजी । लिखितं जोसि श्रीधर ॥

२२०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५५ । ले० काल सं० १८८५ मंगसिर सुदी ५ । वे० सं० ११३ । ख
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

भट्टारक रत्नभूषण की आम्नाय में कासलीवाल गोत्रीय गोवटीपुरी निवासी श्री राजलालजी ने कर्मोदय से
ऐलिचपुर आकर हीरालालजी से प्रतिलिपि कराई ।

२२०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६१ । ग भण्डार ।

२२०७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२४ । ले० काल सं० १८०२ । वे० सं० ६१ । घ भण्डार ।

विशेष—हांसी (भांसी) वाले भैया श्री डमल्ल अग्रवाल आंकक ने ज्ञानावरणी कर्म क्षयार्थं प्रतिलिपि
करवाई थी । पं० जयरामदास के शिष्य रामचन्द्र को समर्पण की गई ।

२२०८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११६ से १६५ । ले० काल सं० १८६६ सावन सुदी १२ । वे० सं०
५०७ । ङ भण्डार ।

विशेष—लिखितं पंडित संगहीजी का मन्दिर का महाराजा श्री सवाई जगतसिंहजी राजमध्ये लिखी पंडित
गोर्दनदामेन मातमार्थं ।

२२०९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २२१ । ले० काल सं० १८३३ श्रावण बुदी ३ । वे० सं० १९ । छ
भण्डार ।

विशेष—पंडित सवाईराम ने सांगानेर में प्रतिलिपि की थी । ये आ० रत्नकीर्त्तिजी के शिष्य थे ।

२२१०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २०२ । ले० काल सं० १८१६ मार्गशीर्ष सुदी १० । वे० सं० २१ ।
ज भण्डार ।

विशेष—बखतराम ने स्वपठनार्थं प्रतिलिपि की थी ।

१८२]

२२११. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २७४ । ले० काल सं० १८०४ भादवा बुदी ६ । वे० सं० ३७४ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रगरचन्द्रजी चांदवाड़ ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इसके प्रतिरिक्त अ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ४१६, ६४८, २०८६ तथा छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५०८) और है ।

२२१२. प्रद्युम्नचरित्र । पत्र सं० ५० । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३५ । च भण्डार ।

२२१३. प्रद्युम्नचरित्र—सिंहकवि । पत्र सं० ४ से ८६ । आ० १०^३×४^३ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २००४ । अ भण्डार ।

२२१४. प्रद्युम्नचरित्रभाषा—मन्नालाल । पत्र सं० ५०१ । आ० १३×५ इंच । भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चरित्र । १० काल सं० १६१६ ज्येष्ठ बुदी ५ । ले० काल सं० १६३७ बैशाख बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४६४ । क भण्डार ।

२२१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२२ । ले० काल सं० १६३३ मंगसिर सुदी २ । वे० सं० ५०६ । ख भण्डार ।

२२१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७० । ले० काल × । वे० सं० ६३८ । च भण्डार ।

विशेष—रचयिता का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२२१७. प्रद्युम्नचरित्रभाषा..... । पत्र सं० २७१ । आ० ११^३×७^३ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० सं० ४२० । अ भण्डार ।

२२१८. प्रीतिकरचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० २१ । आ० १२×५^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल सं० १८२७ मंगसिर बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १२६ । अ भण्डार ।

२२१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ५३० । क भण्डार ।

२२२०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६ । ख भण्डार ।

विशेष—२२ से ३१ पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है । दो तीन तरह की लिपि है ।

२२२१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८१० बैशाख । वे० सं० १२१ । ख भण्डार ।

२२२२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६७६ प्र० श्रावण सुदी १० । वे० सं० १२२ । ख भण्डार ।

ख भण्डार ।

२२२३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८३१ श्रावण सुदी ७ । वे० सं० ६१ । अ भण्डार ।

अ भण्डार ।

विशेष—पं० बोलचन्द के शिष्य पं० रामचन्द्रजी ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इसकी दो प्रतियां ख भण्डार में (वे० सं० १२०, २८६) और हैं ।

२२२४. प्रीतिकरचरित्र—जोधराज गोदीका । पत्र सं० १० । आ० ११×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।
विषय-चरित्र । २० काल सं० १७२१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८२ । अ भण्डार ।

२२२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १५६ । छ भण्डार ।

२२२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३६ । छ भण्डार ।

२२२७. भद्रबाहुचरित्र—रत्ननन्दि । पत्र सं० २२ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १८२७ । पूर्ण । वे० सं० १२८ । अ भण्डार ।

२२२८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । वे० सं० ५५१ । क भण्डार ।

२२२९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १६७४ पौष सुदी ८ । वे० सं० १३० । ल
भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र किसी दूसरी प्रति का है ।

२२३०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १७८६ बैशाख बुदी ६ । वे० सं० ५५८ । च
भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण (कृष्णगढ) किशनगढ वालों ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२२३१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० ३७ । छ भण्डार ।

विशेष—बखतराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२२३२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १७६३ आसोज सुदी १० । वे० सं० ५१७ । ब
भण्डार ।

विशेष—क्षेमकीर्ति ने बीली ग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

२२३३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३ से १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१३३ । ट भण्डार ।

२२३४. भद्रबाहुचरित्र—नवलकवि । पत्र सं० ४८ । आ० १२३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-
चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६४८ । पूर्ण । वे० सं० ५५६ । छ भण्डार ।

२२३५. भद्रबाहुचरित्र—चंपाराम । पत्र सं० ३८ । आ० १२३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-
चरित्र । २० काल सं० श्रावण सुदी १५ । ले० काल × । वे० सं० १६५ । छ भण्डार ।

२२३६. भद्रबाहुचरित्र । पत्र सं० २७ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८५ । अ भण्डार ।

२२३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २८ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-चरित्र । २० काल × ।
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५ । छ भण्डार ।

२२३८. भरतेशवैभव । पत्र सं० ५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-चरित्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

१८४]

२२३६. भविष्यदत्तचरित्र—पं० श्रीधर । पत्र सं० १०८ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०२ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र फटा हुआ है । संस्कृत में संक्षिप्त टिप्पण भी दिया हुआ है ।

२२४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १६१४ माघ बुदी ८ । वे० सं० ५५३ । क
भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि तक्षकगढ में हुई थी । लेखक प्रशस्ति वाला अन्तिम पत्र नहीं है ।

२२४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १७२४ बैशाख बुदी ६ । वे० सं० १३१ । ख
भण्डार ।

विशेष—मेडता निवासी साह श्री ईसर सोगारी के वंश में से सा० राडचन्द्र की भार्या रङ्गादे ने प्रति-
लिपि करवाकर मंडलाचार्य श्रीभूषण के शिष्य हरचन्द्र को कर्मक्षयार्थ निमित्त दिया ।

२२४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७० । ले० काल सं० १६६२ जेठ सुदी ७ । वे० सं० ७५ । घ
भण्डार ।

विशेष—अजमेर गढ मध्ये लिखितं अर्जुनपुत्र जोधी सूरदास ।

दूमरी ओर निम्न प्रशस्ति है ।

हरसोर मध्ये राजा श्री सावलदास राज्ये खण्डेलवालान्वय साह देव भार्या देवलदे ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि
करवायी थी ।

२२४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८३७ आसोज सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ५६५ । ङ
भण्डार ।

विशेष—लेखक पं० गोवर्द्धनदास ।

२२४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० २६३ । च भण्डार ।

२२४५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । वे० सं० ५१ । अपूर्ण । छ भण्डार ।

विशेष—कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ दिये गये हैं तथा अन्त के २५ पत्र नहीं लिखे गये हैं ।

२२४६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १६७७ आषाढ सुदी २ । वे० सं० ७७ । ज
भण्डार ।

विशेष—साधु लक्ष्मण के लिए रचना की गई थी ।

२२४७. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १६६७ आसोज सुदी ६ । वे० सं० १६४४ । ट
भण्डार ।

विशेष—ग्रामेर में महाराजा मानसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी । प्रशस्ति का अन्तिम पत्र
नहीं है ।

२२४८. भविष्यदत्तचरित्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १०० । आ० ११३×७३ इञ्च ।
भाषा—हिन्दी (गद्य) । विषय—चरित्र । २० काल सं० १९३७ । ले० काल सं० १९५० । पूर्ण । वे० सं० ५५४ । क
भण्डार ।

२२५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११५ । ले० काल X । वे० सं० ५५५ । क भण्डार ।

२२५७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३८ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० ५५६ । क भण्डार ।

२२५९. भोज प्रबन्ध—पंडितप्रवर बल्लाल । पत्र सं० २६ । प्रा० १२३ X ५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कान्य । १० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५७७ । ड भण्डार ।

२२५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १७११ मासोज बुदी ६ । वे० सं० ४९ । अपूर्ण ।
क भण्डार ।

२२५३. भौमचरित्र—भ० रत्नचन्द्र । पत्र सं० ४३ । प्रा० १० X ५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । १० काल X । ले० काल सं० १८४६ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । क भण्डार ।

२२५४. मंगलकलशमहामुनिचतुष्पदी—रंगविनयगणि । पत्र सं० २ से २४ । प्रा० १० X ४ इंच ।
भाषा—हिन्दी (राजस्थानी) विषय—चरित्र । १० काल सं० १७१४ भावण सुदी ११ । ले० काल सं० १७१७ । अपूर्ण ।
वे० सं० ८४४ । क भण्डार ।

विशेष—चौतोड़ी ग्राम में श्री रंगविनयगणि के शिष्य दयामिह मुनि के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

राग धन्यासिरी—

एह बा मुनिवर निसदिन प्राईमह, मन मुधि ध्यान लगाइ ।
पुण्य पुरुषराणा गुण घुणतां कृतां प्रातक दूरि पुलाइ ॥१॥ ए० ॥
शांतिचरित्र थकी ए चउपई कीधी निज मति सारि ।
मंगलकलसमुनि सतरंगा कहा गुण आतम हितकारि ॥२॥ ए० ॥
गच्छ करतर युग बर गुण आसलउ श्री जिनराज सुरिद ।
तसु पट्टधारी सूरि शिरोमणी श्री जिनरंग मुणिद ॥४॥ ए० ॥
तासु सीस मंगल मुनि रायनउ चरित कहेउ स सनेह ।
रंगविनय वाचक मनरंग सु जिन पूजा फल एह ॥५॥ ए० ॥
नगर प्रभयपुर प्रति रलिआमणउ जहां जिन गृहचउसाल ।
मोहन मूरति वीर जिणंदनी सेबक जेन सु रसाल ॥६॥ ए० ॥
जिन अनइबलि सोवत धरणी जूणा देवल ठाम ।
जिहां देवी हरि सिद्ध गेह गहइ पूरइ बंछित काम ॥७॥ ए० ॥
भिरमल नीर भरयउं सीहई थणु ऊंभ महैवैर नाम ।
आप विधाता जगि प्रवतरी कीधउ की मीनि काम ॥८॥ ए० ॥
जिहो किरण आवक सगुण शिरोमणी धरम भरम नउ जाण ।
श्री नारायणदास सराहियइ मानइ जिगवर माण ॥९॥ ए० ॥

आसु तरणइ आग्रह ए चउपई कीधी मन उल्लास ।
 अधिकउ उछउ जे इहां भाखियउ मिछा दुक्कड़ तास ॥१०॥ ए० ॥
 शासण नायक वीर प्रसाद थी चउरी चडीय प्रमाण ।
 भणिस्यइं सुणिस्यइं जे नर भावसु धारयइं तासु कल्याण ॥११॥ ए० ॥
 ए संबंध सरस रस गुण भरयउ भाष्य मति अनुसारि ।
 धरमी जण गुण गावण मन रली रगविनय सुखकार ॥१२॥ ए० ॥
 एह वा मुनिवर निसि दिन गाईयइ सर्व गाथा दूहा ॥ ५३२ ॥

इति श्री मंगलकलसमहामुनिचउपही संपूत्तिमगमत् लिखिता श्री संवत् १७१७ वर्षे श्री आसोज सुदी विजय दसमी वासरे, श्री चातोडा महाग्रामे राजि श्री परतापसिंहजी विजयरज्ये वाचनाचार्य श्री रंगविनयगणि शिष्य पण्डित दयामेरु मुनि आत्मश्रेयसे शुभं भवतु । कल्याणमस्तु लेखक पाठकयोः ॥

२२५५. महीपालचरित्र—चारित्रभूषण । पत्र सं० ४१ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—चरित्र । २० काल सं० १७३१ श्रावण सुदी १२ (छ) । ले० काल सं० १८१८ फागुण सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १६५ । अ भण्डार ।

विशेष—जौहरीलाल गोदीका ने प्रतिलिपि करवाई ।

२२५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल × । वे० सं० ५६१ । ड भण्डार ।

२२५७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १६२८ फाल्गुण सुदी १२ । वे० सं० २७१ । च भण्डार ।

विशेष—रीहराम वैद्य ने प्रतिलिपि की थी ।

२२५८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । वे० सं० ४६ । छ भण्डार ।

२२५९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० १७० । छ भण्डार ।

२२६०. महीपालचरित्र—भ० रत्ननन्दि । पत्र सं० ३४ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १८३६ भाद्रवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५७४ । क भण्डार ।

२२६१. महीपालचरित्रभाषा—नथमल । पत्र सं० ६२ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
 विषय—चरित्र । २० काल सं० १६१८ । ले० काल सं० १६३६ श्रावण सुदी ३ । वे० सं० ५७५ । क भण्डार ।

विशेष—मूलकर्ता चारित्र भूषण ।

२२६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १६३५ । वे० सं० ५६२ । ड भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १५ नये पत्र लिखे हुये हैं ।

कवि परिचय—नथमल मदामुख कायलीवाल के शिष्य थे । इनके पितामह का नाम दुलीचन्द तथा पिता का नाम शिवचन्द था ।

२२६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १६२६ श्रावण सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ ।
चभण्डार ।

२२६४. मेघदूत—कालिदास । पत्र सं० २१ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०१ । छ भण्डार ।

२२६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × ; वे० सं० १६१ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है । पत्र जीर्ण है ।

२२६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

२२६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८५४ वैशाख सुदी २ । वे० सं० २००५ । ट
भण्डार ।

२२६८. मेघदूतटीका—परमहंस परिव्राजकाचार्य । पत्र सं० ४८ । आ० १०३×४ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल सं० १५७१ भाद्रपद सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । व्य भण्डार ।

२२६९. यशस्तिलक चम्पू—सोमदेव सूरि । पत्र सं० २५४ । आ० १२३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत
गद्य पद्य । विषय—राजा यशोधर का जीवन वर्णन । २० काल शक सं० ८८१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं०
८५१ । अ भण्डार ।

विशेष—कई प्रतियों का मिश्रण है तथा बीच के कुछ पत्र नहीं हैं ।

२२७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १६१७ । वे० सं० १८२ । अ भण्डार ।

२२७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १५४० फागुण सुदी १४ । वे० सं० ३५६ । अ
भण्डार ।

विशेष—करमी गोधा ने प्रतिलिपि करवाई थी । जिनबास करमी के पुत्र थे ।

२२७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ५६१ । क भण्डार ।

२२७३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४५६ । ले० काल सं० १७५२ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं० ३५१ । व्य
भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है । प्रति प्राचीन है । कहीं कहीं कठिन शब्दों के अर्थ दिये हुये हैं ।

अंबावती में नेमिनाथ चैत्यालय में भ० जगत्कीर्ति के शिष्य पं० दोदराज के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२२७४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०२ से ११२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०८ । ट
भण्डार ।

२२७५. यशस्तिलकचम्पू टीका—श्रुतसागर । पत्र सं० ४०० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १३७ । अ भण्डार ।

विशेष—मूलकर्ता सोमदेव सूरि ।

२२७६. यशस्वित्तिकचम्पूटीका । पत्र सं० ६४६ । आ० १२३×७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वे० सं० ५८८ । क भण्डार ।

२२७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१० । ले० काल × । वे० सं० ५८६ । क भण्डार ।

२२७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८१ । ले० काल × वे० सं० ५६० । क भण्डार ।

२२७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४०६ से ४५६ । ले० काल सं० १६४८ । अपूर्ण । वे० सं० ५८७ ।

क भण्डार ।

२२८०. यशोधरचरित्र—महाकवि पुष्पदन्त । पत्र सं० ८२ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १४०७ आसोज सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २५ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत्सरेस्मिन् १४०७ वर्षे अश्वनिमासे शुक्लपक्षे १० बुधवासरे तस्मिन् चन्द्रपुरीदुर्गेहोलीपुरविराज-
माने महाराजाधिराजसमस्तराजावलीसेव्यमाण खिलजीवंश उद्योत्तक सुरित्राणमहमूदसाहिराज्ये तद्विजयराज्ये श्रीकाष्ठा-
संघे माथुरान्त्ये पुष्करगणे भट्टारक श्री देवसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री विमलसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीधर्मसेन देवा-
स्तत्पट्टे भट्टारक श्री भावसेन देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सहस्रकीर्ति देवास्तत्पट्टे श्रीगुणकीर्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री
यशस्वीर्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक मलयकीर्ति देवास्तच्छिष्य महात्मा श्री हरिषेण देवाम्तस्याम्नाये अग्रोतकान्वये मीतलगोत्रे
साधुश्रीकरमसी तद्भ्रायसुनक्षा तयोः पुत्रास्त्रयः जेष्ठः सा मरणपाल द्वितीयः सा. पूना तृतीयः सा. भाभरण । साधु मरणपाल
भार्ये द्वे चाऊ भूराही । सा. भाभरण पुत्र जगमल मोमा एतेषामध्ये इदंपुस्तकं ज्ञानावरणीकर्म भयार्थं वाइ वधो इदं
यशोधरचरित्रं लिखाप्य महात्मा हरिषेणदेवा, दर्त पठनार्थं । लिखितं प० विजयसिंहन ।

२२८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४५ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ५६८ । क भण्डार ।

विशेष—कहाँ कहीं संस्कृत में टीका भी दी हुई है ।

२२८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० से ६८ । ले० काल सं० १६३० । भाषा—अपूर्ण । वे० सं० २८८ ।

च भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि आभरे में राजा भारमल के शासनकाल में जेमीश्वर चेत्यालय में की गई थी । प्रशस्ति
अपूर्ण है ।

२२८३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८६७ आसोज सुदी २ । वे० सं० २८६ । च
भण्डार ।

२२८४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १६७२ मंगसिर सुदी १० । वे० सं० २८७ । च
भण्डार ।

२२८५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० २६६ । क भण्डार ।

२२८६. यशोधरचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ७५१ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—राजा यशोधर का जीवन वर्णन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ । अ भण्डार ।

२२८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल X । वे० सं० ५६६ । क भण्डार ।

२२८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ३७ । ले० काल सं० १७६५ कार्तिक सुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० २८४ । च भण्डार ।

२२८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६२ आसोज सुदी ६ । वे० सं० २८५ । च भण्डार ।

विशेष—पं० नोनिधराम ने स्वपठनार्थ प्रतिनिधि की थी ।

२२९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १८५५ आसोज सुदी ११ । वे० सं० २२ । छ भण्डार ।

२२९१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८६५ फागुण सुदी १२ । वे० सं० २३ । च भण्डार ।

२२९२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल X । वे० सं० २४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२२९२. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १७७५ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० २५ । छ भण्डार ।

विशेष—प्राचीन-संवत्सर १७७५ वर्षे मिवी चैत्र बुदी ६ मंगलवार । भट्टारक-शिरोरत्न भट्टारक श्री श्री १०८ । श्री देवेन्द्रकीर्तिजी तस्म्य आत्माविभायि प्राचार्य श्री क्षेमकीर्ति । पं० चोखचन्द ने बसई ग्राम में प्रतिलिपि की थी-
धन्त में यह प्रौर लिखा है—

संवत् १३५२ येली भौंसे प्रतिष्ठा कराई लाडला में तदिस्यो ल्हीडमाजरा उपजो ।

२२९४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २ से ३८ । ले० काल सं० १७८० आषाढ बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २६ । ज भण्डार ।

२२९५. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५५ । ले० काल X । वे० सं० ११४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । ३७ चित्र हैं, मुगलकालीन प्रभाव है । पं० गोवर्द्धनजी के शिष्य पं० टोडरमल के लिए प्रतिलिपि करवाई थी । प्रति दर्शनीय है ।

२२९६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १७६२ जेष्ठ सुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० ५६३ । छ भण्डार ।

विशेष—प्राचार्य शुभचन्द्र ने टोंक में प्रतिलिपि की थी ।

छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६०४) क भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ५६६, ५६७) प्रौर हैं ।

२२९७. यशोधरचरित्र—कायस्थ पद्मनाभ । पत्र सं० ७० । भा० ११X४३ इत्त । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । १० काल X । ले० काल सं० १८३२ पौष बुदी १२ । वे० सं० ५६२ । क भण्डार ।

२२६८. प्रति सं० २ । प्रति सं० ६८ । ले० काल सं० १५६५ सावन सुदी १३ । वे० सं० १५२ । ख भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ पौमसिरी से आचार्य भुवनकीर्ति की शिष्या आयिका मुक्तिश्री के लिए दयासुन्दर से लिखवाया तथा वैशाख सुदी १० सं० १७८५ को मंडलाचार्य श्री अनन्तकीर्तिजी के लिए नाथूरामजी ने समर्पित किया ।

२२६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ । ले० काल × । वे० सं० ८४ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति नवीन है ।

२३००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १६६७ । वे० सं० ६०६ । ङ भण्डार ।

विशेष—मानसिंह महाराजा के शासनकाल में ग्रामेर में प्रतिलिपि हुई ।

२३०१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १८३३ पौष सुदी १३ । वे० सं० २१ । छ भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में पं० वखतराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

२३०२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० भाद्रवा बुदी १० । वे० सं० ६६ । झ भण्डार ।

विशेष—टोडरमलजी के पठनार्थ पांडे गोरधनदास ने प्रतिलिपि कराई थी । महामुनि गुरुकीर्ति के उपदेश से ग्रन्थकार ने ग्रन्थ की रचना की थी ।

२३०३. यशोधरचरित्र—वादिराजसूरि । पत्र सं० २ से १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १८३६ । अपूर्ण । वे० सं० ८७२ । अ भण्डार ।

२३०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल १८२४ । वे० सं० ५६५ । क भण्डार ।

२३०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल सं० १५१८ । अपूर्ण । वे० सं० ८३ । घ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२३०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० २१३८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नवीन लिखा गया है ।

२३०७. यशोधरचरित्र—पूरणदेव । पत्र सं० ३ से २० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २८१ । च भण्डार ।

२३०८. यशोधरचरित्र—वासवसेन । पत्र सं० ७१ । आ० १२×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । २० काल सं० १५६५ माघ सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—

संवत् १५६५ वर्षे माघमासे कृष्णपक्षे द्वादशीदिवसे बृहस्पतिवासरे मूलनक्षत्रे राव श्रीमालदे राज्यप्रवर्त-
माने रावत श्री खेतसी प्रातापे सांखौण नाम नगरे श्रीशान्तिनाथ जिणचैत्यालये श्रीमूलसंघबलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे

नंदाम्नाये श्रीकुंदकुंदाचार्यन्वये भट्टारक श्रीपद्मनंदि त्रेवाम्स्तवट्टे भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तवट्टे भ० श्री जिणचन्द्रदेवास्त-
त्वट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये दोगीगोत्रे सा. तिहुणा तद्भार्या तोली तयोपुत्रास्त्रयः प्रथम सा.
ईसर द्वितीय टोहा तृतीय सा. ऊल्हा ईसरभार्या अजसिणी तयोः पुत्राः चत्वारः प्र० सा० लोहट द्वितीय सा. भूणा तृतीय
सा ऊधर चतुर्थ सा. देवा सा. लोहट भार्या ललितादे तयोः पुत्राः पंच प्रथम धर्मदास द्वितीय सा. धीरा तृतीय सूणा
चतुर्थ हांला पंचम रात्र. सा. भूणा भार्या भृगभिरि तयोपुत्र नगराज साह ऊधर भार्या उधसिरी तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम
नाला द्वितीय खरहथ—सा० देवा भार्या सोसिरि तयो पुत्र धनिउ त्रि० धर्मदास भार्या धर्मश्री चिरंजो धीरा भार्या रमायी
सा. टोहा भार्ये द्वे बृहद्गीला लघ्वी मुहागदे तत्पुत्रदान पुण्य गीलवान सा. नाल्हा तद्भार्या नयणश्री सा० ऊल्हा भार्या
बाली तयोः पुत्र सा. डालू तद्भार्या डलसिरि एतेषामध्ये चतुर्विधदान वितरणाशक्तेनत्रिपंचाशतश्रावकसत्क्रया प्रति-
पालण सावधानेन जिणपूजापुरंदरेण सद्युरूपदेश निर्वाहकेन संघपति साह श्री टोहानामधेयेन इदं शास्त्रं लिखाप्य उत्तम-
पात्राय घटारितं ज्ञानावर्णा कर्मक्षय निमित्तं ।

२३०६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ से ५४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७३ । अ भण्डार ।

२३१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६६० बैशाख बुदी १३ । वे० सं० ५६३ । क
भण्डार ।

विशेष—मिश्र केशव ने प्रतिलिपि की थी ।

२३११. यशोधरचरित्र... । पत्र सं० १७ से ४५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६१ । अ भण्डार ।

२३१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ६१३ । क भण्डार ।

२३१३. यशोधरचरित्र—गारवदास । पत्र सं० ४३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १५८१ भाद्रवा सुदी १२ । ले० काल सं० १६३० मंगसिर सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं०
५६६ ।

विशेष—कवि कफोतपुर का रहने वाला था ऐसा लिखा है ।

२३१४. यशोधरचरित्रभाषा—खुशालचंद । पत्र सं० ३७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १७८१ कार्तिक सुदी ६ । ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे० सं०
१०४६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—

मिती आसोज मासे शुक्लपक्षे तिथि पडिवा वार सनिवासरे सं० १७६६ छिनवा । श्रे० कुशलोजी तत्
विष्येन लिपिकृतं पं० खुस्यालचंद श्री घृतघिलोजी के देहरे पूर्ण कर्तव्यं ।

दिवालो जिनराज को देखस दिवालो जाय ।

निमि दिवालो बलाइये कर्म दिवाली थाय ॥

धी रस्तु । कल्याणमस्तु । महाराष्ट्रपुर मध्ये परिपूर्णा ।

२३१५. यशोधरचरित्र—पन्नालाल । पत्र सं० ११२ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १६३२ सावन बुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०० । क भण्डार ।

विशेष—पुष्पदंत कृत यशोधर चरित्र का हिन्दी अनुवाद है ।

२३१६. प्रति सं० ० । पत्र सं० ७४ । ले० काल × । वे० सं० ६१२ । ड भण्डार ।

२३१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८२ । ले० काल × । वे० सं० १६४ । छ भण्डार ।

२३१८. यशोधरचरित्र..... पत्र सं० २ से ६३ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६११ । ड भण्डार ।

२३१९. यशोधरचरित्र—श्रुतसागर । पत्र सं० ६१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६४ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । क भण्डार ।

२३२०. यशोधरचरित्र—भट्टारक ज्ञानकीर्ति । पत्र सं० ६३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १६५६ । ले० काल सं० १६६० आशुज बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २६५ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १६६० वर्षे आसोजमासे कृष्णपक्षे नवम्यांतिथी सोमवासरे आदिनाथचैत्यालये मोजमावाद
वास्तव्ये राजाधिराज महाराजाश्रीमामसिधराज्यप्रवर्तते श्रीमूलसंधेबलात्कारगणे नद्याम्नायेसरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्या-
न्वये तस्तत्पट्टे भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवात्पट्टे भट्टार श्री शुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे श्रीचन्द्र-
कीर्ति देवास्तदाम्नाये खंडेलवालये पान्वांज्यागोत्रे साह हीरां तस्य भार्या हरषमदे । तयो पुत्रात्त्वार । प्रथम पुत्र साह
नानू तस्यभार्या नौलादे पुत्र त्रयः प्रथमपुत्र साह नादु तस्य भार्या नायकदे तयोपुत्रा द्वौ प्रथम पुत्र चिरंजीव गीरधर ।
द्वितीयपुत्र साह बोहिथ तस्य भार्या बहुरंगदे तस्य पुत्रा त्रयः प्रथमपुत्र चिरंजी स्थिरपाल द्वितीय पुत्र जेसा । तृतीयपुत्र
देहु । तृतीय पूरण तस्यभार्या कपूरदे । साह हीरा । द्वितीयपुत्र चोहथ तस्यभार्या चादणदे । तस्यपुत्रा द्वौ प्रथमपुत्र साह
गुजर तस्यभार्या गारवदे । द्वितीयपुत्र चिरंजी छाजू । हीरा तृतीयपुत्र साह पचाइण । हीरा चतुर्थपुत्र साह नराइण तस्य
भार्या नैणादे तस्यपुत्र साह डुरंगा एतेषांमध्ये बोहिथ तेनेदंशास्त्र यशोधरचरित्रकर्मक्षयनिमित्तं भट्टारक श्रीचन्द्रकीर्तितर्ताशय्य
आर्य सालचंद योग्य घटापितं ।

२३२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १५७७ । वे० सं० ६०६ । ड भण्डार ।

विशेष—ब्रह्म मतिसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

२३२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६५१ मंगसिर बुदी २ । वे० सं० ६१० । ड
भण्डार ।

विशेष—साह छीतरमल के पठनार्थ जोशी जगन्नाथ ने मजिमाबाद में प्रतिलिपि की थी ।

ड भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६०७, ६०८) और हैं ।

२३२३. यशोधरचरित्रटिप्पण—प्रभाचंद । पत्र सं० १२ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५८५ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । अ भण्डार ।

विशेष—पुष्पदंत कृत यशोधर चरित्र का संस्कृत टिप्पण है। बादशाह बाबर के शासनकाल में प्रतिलिपि की गई थी।

२३२४. रघुवंशमहाकाव्य—महाकवि कालिदास। पत्र सं० १४४। मा० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६५४। अ भण्डार।

विशेष—पत्र सं० ८२ से १०५ तक नहीं है। पंचम सर्ग तक कठिन शब्दों के अर्थ संस्कृत में दिये हुये हैं।

२३२५. प्रति सं० २। पत्र सं० ७०। ले० काल सं० १८२४ काती बुदी ३। वे० सं० ६४३। अ भण्डार।

विशेष—कडी ग्राम में पांड्या देवराज के पठनार्थ जैतसी ने प्रतिलिपि की थी।

२३२६. प्रति सं० ३। पत्र सं० १२६। ले० काल सं० १८४४। वे० सं० २०६६। अ भण्डार।

२३२७. प्रति सं० ४। पत्र सं० १११। ले० काल सं० १६८० भाद्रवा सुदी ८। वे० सं० १५४। ख भण्डार।

२३२८. प्रति सं० ५। पत्र सं० १३२। ले० काल सं० १७८६ मंगसर सुदी ११। वे० सं० १५५। ख भण्डार।

विशेष—हाशिये पर चारों ओर शब्दार्थ दिये हुए हैं। प्रति भारोठ में पं० अनन्तकीर्ति के शिष्य उदयराज ने स्वपठनार्थ लिखी थी।

२३२९. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६६ से १३४। ले० काल सं० १६६६ कार्तिक बुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० २४२। ख भण्डार।

२३३०. प्रति सं० ७। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १८२८ पौष बुदी ४। वे० सं० २४४। ख भण्डार।

२३३१. प्रति सं० ८। पत्र सं० ६ से १७३। ले० काल सं० १७७३ मंगसर सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० १६६५। ट भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है तथा टीकाकार उदयहरण हैं।

इनके प्रतिरिक्त अ भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० १०२८, १२६४, १२६५, १८७४, २०६५) ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४५ [क])। इ भण्डार में ७ प्रतियां (वे० सं० ६१६, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५)। च भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० २८६, २६०)। छ और ट भण्डार में एक एक प्रतियां (वे० सं० २६३, १६६६) और हैं।

२३३२. रघुवंशटीका—मल्लिनाथसूरि। पत्र सं० २३२। मा० १२×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—काव्य। २० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० २१२। ज भण्डार।

२३३३. प्रति सं० २। पत्र सं० १८ से १४१। ले० काल सं० १८२४। वे० सं० ३६८। अ भण्डार।

२३३४. रघुवंशटीका—पं० सुमति विजयगणि । पत्र सं० ६० से १७६ आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६२७ ।

विशेष—टीकाकाल—

निर्विग्रहंरस शक्ति संवत्सरे फाल्गुनसितेकादश्यां तिथौ संपूर्णा श्रीरस्तु मंगल सदा कर्तुः टीकायाः । विक्रम-पुर में टीका की गयी थी ।

२३३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ से १४७ । ले० काल सं० १८४० चैत्र सुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ६२८ । ङ्ग भण्डार ।

विशेष—गुमानीराम के शिष्य पं० शम्भूराम ने ज्ञानीराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

विशेष—ङ्ग भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६२९) और है ।

२३३६. रघुवंशटीका—समयसुन्दर । पत्र सं० ६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल सं० १६६२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८७५ । अ भण्डार ।

विशेष—समयसुन्दर कृत रघुवंश की टीका द्वयार्थक है । एक अर्थ तो वही है जो काव्य का है तथा दूसरा अर्थ जैनदृष्टिकोण से है ।

२३३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से ३७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७२ । ट भण्डार ।

२३३८. रघुवंशटीका—गुणविनयगणि । पत्र सं० १३७ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ८९ । व्य भण्डार ।

विशेष—खरतरगच्छीय वाचनाचार्य प्रमोदमाणिक्यगणि के शिष्य संख्यवनुख्य श्रीमत् जयसोमगणि के शिष्य गुणविनयगणि ने प्रतिलिपि की थी ।

२३३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८९५ । वे० सं० ६२६ । ङ्ग भण्डार ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १३५०, १०८१) और हैं । केवल व्य भण्डार की प्रति ही गुणविनयगणि की टीका है ।

२३४०. रामकृष्णकाव्य—दैवल्ल पं० सूर्य । पत्र सं० ३० । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ९०५ । अ भण्डार ।

२३४१. रामचन्द्रिका—केशवदास । पत्र सं० १७६ । आ० ६×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ श्रावण बुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ६५५ । ङ्ग भण्डार ।

२३४२. वरांगचरित्र—भ० वर्द्धमानदेव । पत्र सं० ४६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—राजा वरांग का जीवन चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६४ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ३२१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रवास्ति—

सं० १५६४ वर्षे शाके १४५९ कार्तिकमासे शुक्लपक्षे दशमीदिवसे शनैश्चरवात्सरे घनिष्ठानक्षत्रे गंडयोगे आवां नाम महानगरे रात्र श्री सूर्यशेण राज्यप्रवर्तमाने कवर श्री पूरणमल्लप्रतापे श्री शान्तिनाथ जिनचैत्यालये श्रीमूल-

मंघे बलान्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिग्वंन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवारतच्छिष्य भ० श्रीधर्मचन्द्रदेवास्तदाम्नायेखण्डेलवालान्वये शावडागोत्रे संघाधि-
रति साह श्री रणमल्ल तद्भार्या रैणादे तयो पुत्रास्त्रयः प्रथम सं. श्री खीवा तद्भार्ये द्वे प्रथमा सं० खेमलादे द्वितीयो
मुहागदे तद्पुत्रास्त्रयः प्रथम चि० सधारण द्वि० श्रीकरण तृतीय धर्मदास । द्वितीय सं० वैणा तद्भार्ये द्वे प्रथमा विमलादे
द्वि० नीलादे । तृतीय सं. इंगरसौ तद्भार्या दाड्योदे एतेसां मध्ये सं. विमलादे इदं शास्त्रं लिखाप्य उत्तमपात्राय दत्तं
जानावर्णी कर्मक्षय निमित्तम् ।

२३४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८६३ भाद्रवा बुदी १४ । वे० सं० ६६६ । क
भण्डार ।

२३४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७४ । ले० काल सं० १८६४ मंगसिर सुदी ८ । वे० सं० ३३० । ख
भण्डार ।

२३४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १८३६ फागुण सुदी १ । वे० सं० ४६ । छ
भण्डार ।

विशेष—जयपुर के नेमिनाथ चैत्यालय में संतोषराम के शिष्य वस्तराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १८४७ बैशाख सुदी १ । वे० सं० ४७ । छ
भण्डार ।

विशेष—सांगावती (सांगानेर) में गोधों के चैत्यालय में पं० सवाईराम के शिष्य नीनिधराम ने प्रति-
लिपि की थी ।

२३४७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८३१ आषाढ सुदी ३ । वे० सं० ४६ । ब
भण्डार ।

विशेष—जयपुर में चंद्रप्रभ चैत्यालय में पं० रामचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

२३४८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३० से ५६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०५७ । ट भण्डार ।

विशेष—द्वे सर्ग से १३वें सर्ग तक है ।

२३४९. वरांगचरित्र—भर्तृहरि । पत्र सं० ३ से १० । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १७१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं ।

२३५०. वर्द्धमानकाव्य—मुनि श्री पद्मनंदि । पत्र सं० ५० । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
'वपय-काव्य । २० काल X । ले० काल सं० १५१८ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । ब भण्डार ।

इति श्री वर्द्धमान कथावतारे जिनरात्रिप्रतमहात्म्यप्रदर्शके मुनि श्री पद्मनंदि विरचिते मुखनामां दिने श्री
वर्द्धमाननिर्वाणगमन नाम द्वितीय परिच्छेदः

२३५१. वर्द्धमानकथा—जयमित्रहल । पत्र सं० ७३ । आ० ६३×५३ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १६६५ बैशाख सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १५३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति—

सं० १६५५ वरवे बैशाख सुदी ३ शुक्रवारे मृगसीरनखिन्ने मूलसंघे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये तत्पट्टे भट्टारक श्री गुणभद्र तत्पट्टे भट्टारक श्रीमल्लिभूषण तत्पट्टे भट्टारक श्रीप्रभाचंद तत्पट्टे भट्टारक श्रीवंदकीर्तिः विरचित श्री नेमदत्त आचार्य अंवावतोगढ महादुर्गातः श्रीनेमिनाथ चैत्यालये कुछाहावंस महाराजाधिराज महाराजा श्री मानस्यंधराज्ये अजमेरागोत्रे सा. धीरा तद्गार्याधारादे तत्पुत्र चत्वार प्रथम पुत्र.....। (अपूर्ण)

२३५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल × । वे० सं० १६५३ । ट भण्डार ।

२३५३. वर्द्धमानचरित्र.....। पत्र सं० १६८ से २१२ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८६ । अ भण्डार ।

२३५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७४ । अ भण्डार ।

२३५५. वर्द्धमानचरित्र—केशरीसिंह । पत्र सं० १८५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० १८६१ ले० काल सं० १८६४ सावन बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ६४८ । क भण्डार ।

विशेष—सदामुखजी गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

२३५६. विक्रमचरित्र—वाचनाचार्य अमयसोम । पत्र सं० ४ से ५ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—विक्रमादित्य का जीवन । २० काल सं० १७२४ । ले० काल सं० १७८१ श्रावण बुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० १३६ । अ भण्डार ।

विशेष—उदयपुर नगर में शिष्य रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

२३५७. विदग्धमुखमंडन—बौद्धाचार्य धर्मदास । पत्र सं० २० । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल सं० १८५१ । पूर्ण । वे० सं० ६२७ । अ भण्डार ।

२३५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १०३३ । अ भण्डार ।

२३५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० ६५७ । क भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

२३६०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १७२४ । वे० सं० ६५८ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी है ।

२३६१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ११३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

प्रथम व अन्तिम पत्र पर गोल मोहर है जिस पर लिखा है 'श्री जिन सेवक साह वादिराज जाति सोगार्यु'

२३६२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १९१५ चैत्र सुदी ७ । वे० सं० ११५ । छ
भण्डार ।

विशेष—गोधों के मन्दिर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२३६३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८८१ पौष बुदी ३ । वे० सं० २७८ । ज
भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टिप्पण सहित है ।

२३६४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १७५६ मंगसिर बुदी ८ । वे० सं० ३०१ । ज
भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२३६५. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १७४३ कार्तिक बुदी २ । वे० सं० ५०७ । अ
भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । टीकाकार जिनकुशलसूरि के शिष्य क्षेमचन्द्र गरिण हैं ।

इनके अतिरिक्त छ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ११३, १४६) अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं०
१०७) और है ।

२३६६. विदग्धमुखमंडनटीका—बिनयराज । पत्र सं० ३३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । टीकाकाल सं० १५३५ । ले० काल सं० १६८३ आसोज सुदी १० । वे० सं० ११३ । छ भण्डार ।

२३६७. विशारकाव्य—कालिदास । पत्र सं० २ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
काव्य । १० काल × । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० १८५३ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति के समय में लिखी गई थी ।

२३६८. शंभुप्रद्युम्नप्रबंध—समयसुन्दरगणि । पत्र सं० २ से २१ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—
हिन्दी । विषय—श्रीकृष्ण, शंभुकुमार एवं प्रद्युम्न का जीवन । १० काल × । ले० काल सं० १६५६ । अपूर्ण । वे०
सं० ७०१ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १६५६ वर्षे विजयदशम्यां श्रीस्तंभतीर्थे श्रीबृहत्स्वरतरणन्दाधीश्वर श्री दिल्लीपति पातिसाह जलालद्दीन
मकबरसाहिप्रदत्तयुगप्रधानपदधारक श्री ६ जिनचन्द्रसूरि मूरश्वराणां (सूरेश्वराणां) साहित्यमक्षस्वहस्तस्थापिता
पाचार्यश्रीजिनसिंहसूरिमुद्रिकराणां (मूरश्वराणां) शिष्य मुख्य पंडित सकलचन्द्रगणि तच्छिष्य वा० समयसुन्दरगणिना
श्रीब्रह्मलमेव वाच्ये नानाविध शास्त्रविचाररसिक नै० सिधरीज मयभ्यर्थनयां कृतः श्री शंभुप्रद्युम्नप्रबंधे प्रथमः खंडः ।

२३६६. शान्तिनाथचरित्र—अजितप्रभसूरि । पत्र सं० १६६ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०२४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६६ से आगे के पत्र नहीं हैं ।

२३७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ से १०५ । ले० काल सं० १७१४ पीष बुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० १६२० । ट भण्डार ।

२३७१. शान्तिनाथचरित्र—भट्टारक सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १६५ । आ० १३×५३ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १७८६ चैत्र सूदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । अ भण्डार ।

२३७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२८ । ले० काल × । वे० सं० ७०२ । ङ भण्डार ।

विशेष—तीन प्रकार की लिपियां हैं ।

२३७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २२१ । ले० काल सं० १८६३ माह बुदी ६ । वे० सं० ७०३ । ङ
भण्डार ।

विशेष—लिखितं गुरजीरामलाल सवाई जयनगरमध्ये वासी नेवटा का हाल संघही मालावता कै मन्दिर
लिखी । लिखाप्यतं चंपारामजी छावडा सवाई जयपुर मध्ये ।

२३७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८७ । ले० काल सं० १८६४ फागुण बुदी १२ । वे० सं० ३४१ । च
भण्डार ।

विशेष—यह प्रति श्योजीरामजी दीवान के मन्दिर की है ।

२३७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५६ । ले० काल सं० १७६६ कार्तिक सुदी ११ । वे० सं० १४ । छ
भण्डार ।

विशेष—सं० १८०३ जेठ बुदी ६ के दिन उदयराम ने इस प्रति का संशोधन किया था ।

२३७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १७ से १२७ । ले० काल सं० १८८८ वैशाख सुदी २ । अपूर्ण । वे०
सं० ४६४ । ब भण्डार ।

विशेष—महात्मा पन्नालाल ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त छ, ब तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १३, ४८६, १६२६) और हैं ।

२३७७. शालिभद्रचौपई—मतिसागर । पत्र सं० । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
चरित्र । २० काल सं० १६७८ आसौज बुदी ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१५४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र आधा फटा हुआ है ।

२३७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ३६२ । ब भण्डार ।

२३७९. शालिभद्र चौपई..... । पत्र सं० ५ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३० ।

विशेष—रचना में ६० पद्य हैं तथा अशुद्ध लिखी हुई है ; अन्तिम पाठ नहीं है ।

प्रारम्भ—

श्री सासण नायक सुमरिये वर्द्धमान जिनचंद ।

अलीइ विघन दुरोहरं आपै प्रमानंद ॥१॥

२३८०. शिशुपालवध—महाकवि माघ । पत्र सं० ४६ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६३ । अ भण्डार ।

२३८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० लक्ष्मीचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

२३८२. शिशुपालवध टीका—मल्लिनाथसूरि । पत्र सं० १४४ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३२ । अ भण्डार ।

विशेष—६ सर्ग हैं । प्रत्येक सर्ग की पत्र संख्या अलग अलग है ।

२३८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २७६ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथम सर्ग तक है ।

२३८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ३३७ । अ भण्डार ।

२३८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ से १४४ । ले० काल सं० १७६६ । अपूर्ण । वे० सं० १४५ । अ
भण्डार ।

२३८६. श्रवणभूषण—नरहरिभट्ट । पत्र सं० २५ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४२ । अ भण्डार ।

विशेष—विदग्धमुखमंडन की व्याख्या है ।

प्रारम्भ—ओं नमो पार्वनाथाय ।

हेरवंकव किमंव किम् तव कारता तस्य चांद्रीकला

कृत्यं किं शरजन्मनोक्त मन पारंतारु रं स्यादिति तातः ।

कुप्पति गृह्यतामिति विहायाहर्तुमन्यां कला—

माकाशे जयति प्रसारित कर स्तंत्रेमयामणी ॥१॥

यः साहित्यसुधेदुर्नरहरि रत्नलालनंदनः ।

कुरुते सैशवण भूषणव्यां विदग्धमुखमंडणव्याख्या ॥२॥

प्रकाराः संतु वहवो विदग्धमुखमंडने ।

तथापि मत्कृतं भावि मुख्यं भुवण—भूषणं ॥३॥

अन्तिम पृष्ठिका—इति श्री नरहरिभट्टविरचिते श्रवणभूषणे चतुर्थः परिच्छेदः संपूर्णः ।

२३८७. श्रीपालचरित्र—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० ६८ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल सं० १५८५ । ले० काल सं० १६४३ । पूर्ण । वे० सं० २१० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है । प्रशस्ति—

संवत् १६४३ वर्षे आषाढ सुदी ५ शनिवासरे श्रीमूलसंघे नंद्याम्नाये बलात्कारगरो सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपद्मनंदिदेवातत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवातत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० प्रभाचन्द्रदेवा मंडलाचार्य श्री रत्नकीर्तिदेवा तत्शिष्य मं० भुवनकीर्तिदेवा तत्शिष्य मं० धर्मकीर्तिदेवा द्वितीय शिष्यमंडलाचार्य विशालकीर्तिदेवा तत्शिष्य मंडलाचार्य लक्ष्मीचंददेवा तदन्वये मं० सहस्रकीर्तिदेवा तदन्वये मंडलाचार्य नेमचंद तदाम्नाये खंडलवालान्वये रैवासा वास्तव्ये दगडा गोत्रे सा० लीला त।

२३८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १८४६ । वे० सं० ६९९ । क भण्डार ।

२३८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८४५ ज्येष्ठ सुदी ३ । वे० सं० १९२ । ख भण्डार ।

विशेष—मालवदेश के पूर्यासा नगर में आदिनाथ चैत्यालय में ग्रन्थ रचना की गई थी । विजयराम ने तक्षकपुर (टोडारायसिंह) में अपने पुत्र चि० टेकचन्द्र के स्वाध्यायार्थ इसकी तीन दिन में प्रतिलिपि की थी ।

यह प्रति पं० सुखलाल की है । हरिदुर्ग में यह ग्रन्थ मिला ऐसा उल्लेख है ।

२३९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३९ । ले० काल सं० १८९५ आसोज सुदी ४ । वे० सं० १९३ । ख भण्डार ।

विशेष—केकड़ी में प्रतिलिपि हुई थी ।

२३९१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४२ से ७९ । ले० काल सं० १७६१ सावन सुदी ४ । वे० सं० । क भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती में राय बुधसिंह के शासनकाल में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२३९२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८३१ फागुण बुदी १२ । वे० सं० ३८ । ख भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में श्वेताम्बर पंडित मुक्तिविजय ने प्रतिलिपि की थी ।

२३९३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १८२७ चैत्र सुदी १४ । वे० सं० ३२७ । ज भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में पं० ऋषभदास ने कर्मधार्य प्रतिलिपि की थी ।

२३९४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १८२६ माह सुदी ८ । वे० सं० ९ । ब भण्डार ।

विशेष—पं० रामचन्द्रजी के शिष्य सेवकराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२३९५. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १६४४ भाद्रवा सुदी ५ । वे० सं० २१३६ । ट भण्डार ।

विशेष—इनके प्रतिरिक्त अ्य भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २३३, २५६) ऊ, छ तथा न्य भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ७२१, ३६ तथा ८५) और हैं ।

२३६६. श्रीपालचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ५६ । आ० ११×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल शक सं० १६५३ । पूर्ण । वे० सं० १०१५ । अ्य भण्डार ।

विशेष—ब्रह्मचारी माणकचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

२३६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२८ । ले० काल सं० १७६५ फागुन बुदी १२ । वे० सं० ४० । छ भण्डार ।

विशेष—तारणपुर में मंडलाचार्य रत्नकीर्ति के प्रशिष्य विष्णुरूप ने प्रतिलिपि की थी ।

२३६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । वे० सं० १६२ । अ्य भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ चिरंजीलाल मोढ्या ने सं० १९६३ की भादवा बुदी ८ को बहाया था ।

२३६९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २९ (६० से ८८) ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९७ । अ्य भण्डार ।

विशेष—पं० हरलाल ने वाम में प्रतिलिपि की थी ।

२४००. श्रीपालचरित्र..... । पत्र सं० १२ से ३४ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९९३ । अ्य भण्डार ।

२४०१. श्रीपालचरित्र..... । पत्र सं० १७ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९९६ । अ्य भण्डार ।

२४०२. श्रीपालचरित्र—परिमल्ल । पत्र सं० १४४ । आ० ११×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी (पर्व) । विषय—चरित्र । १० काल सं० १६५१ । आषाढ बुदी ८ । ले० काल सं० १९३३ । पूर्ण । वे० सं० ४०७ । अ्य भण्डार ।

२४०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १८९८ । वे० सं० ४२१ । अ्य भण्डार ।

२४०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५२ से १४४ । ले० काल सं० १८५९ । वे० सं० ४०४ । अपूर्ण । अ्य भण्डार ।

विशेष—महात्मा ज्ञानीराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । दीवान शिवचन्दजी ने ग्रन्थ लिखवाया था ।

२४०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९६ । ले० काल सं० १८८९ पौष बुदी १० । वे० सं० ७९ । अ्य भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ आगरे में आलमगंज में लिखा था ।

२४०६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १८६७ वैशाख सुदी ३ । वे० सं० ७१७ । अ्य भण्डार ।

विशेष—महात्मा कालूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२०२]

२४०७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८५७ आसोज बुदी ७ । वे० सं० ७१६ । ङ

भण्डार ।

विशेष—अभयराम गोधा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२४०८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १०२ । ले० काल सं० १८६२ माघ बुदी २ । वे० सं० ६८३ । च

भण्डार ।

२४०९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १७६० पौष सुदी २ । वे० सं० १७४ । छ

भण्डार ।

विशेष—गुटका साइज है । हिणौड में प्रतिलिपि हुई थी । अन्तिम ५ पत्रों में कर्मप्रकृति वर्णन है जिसका लेखनकाल सं० १७६३ आसोज बुदी १३ है । सांगानेर में गुरुजी मद्दूराम ने कान्हजीदास के पठनार्थ लिखा था ।

२४१०. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १८८२ सावन बुदी ५ । वे० सं० २२८ । ञ

भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १०७७, ४१८) घ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०४) ङ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ७१५, ७१८, ७२०) छ, झ और ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० २२५, २२६ और १६१३) और हैं ।

२४११. श्रीपालचरित्र..... । पत्र सं० २५ । आ० ११३ × ८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ । पूर्ण । वे० सं० १०३ । घ भण्डार ।

• विशेष—अमीचन्दजी सीगाणी तबेला वालोंकी बहूने लिखवाकर विजैरामजी पांड्या के मन्दिर में विराजमान किया ।

२४१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० ७०० । ङ भण्डार ।

२४१३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १६२६ पौष सुदी ८ । वे० सं० ८० । ग भण्डार ।

२४१४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६१ । ले० काल सं० १६३० फागुण सुदी ६ । वे० सं० ८२ । ग भण्डार ।

२४१५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १६३४ फागुन बुदी ११ । वे० सं० २५६ । ज भण्डार ।

विशेष—अभ्रालाल पापडीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४१६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ६७४ । अ भण्डार ।

२४१७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ४४० । अ भण्डार ।

२४१८. श्रीपालचरित्र.....। पत्र सं० २४। मा० ११३×८ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-चरित्र।
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६७५।

विशेष—२४ से आगे पत्र नहीं हैं। दो प्रतियों का मिश्रण है।

२४१९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३९। ले० काल ×। वे० सं० ८१। ग भण्डार।

विशेष—कालूराम साह ने प्रतिलिपि की थी।

२४२०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८४। च भण्डार।

२४२१. श्रेणिकचरित्र.....। पत्र सं० २७ से ४८। मा० १०×४३ इञ्च। भाषा-प्राकृत। विषय-
चरित्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७३२। छ भण्डार।

२४२२. श्रेणिकचरित्र—भ० सकलकीर्ति। पत्र सं० ४९। मा० ११×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत।
विषय-चरित्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३५६। च भण्डार।

२४२३. प्रति सं० २। पत्र सं० १०७। ले० काल सं० १८३७ कार्तिक सुदी। अपूर्ण। वे० सं० २७।
छ भण्डार।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है।

२४२४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७०। ले० काल ×। वे० सं० २८। छ भण्डार।

विशेष—दो प्रतियों को मिलाकर ग्रन्थ पूरा किया गया है।

२४२५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८१। ले० काल सं० १८१८। वे० सं० २९। छ भण्डार।

२४२६. श्रेणिकचरित्र—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ८४। मा० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
चरित्र। २० काल ×। ले० काल सं० १८०१ ज्येष्ठ बुदी ७। पूर्ण। वे० सं० २४६। च भण्डार।

विशेष—टोंक में प्रतिलिपि हुई थी। इसका दूसरा नाम भविष्यत् पद्यनाभपुराण भी है।

२४२७. प्रति सं० २। पत्र सं० ११९। ले० काल सं० १७०८ चैत्र बुदी १४। वे० सं० १९४। छ
भण्डार।

२४२८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४८। ले० काल सं० १९२९। वे० सं० १०५। घ भण्डार।

२४२९. प्रति सं० ४। पत्र सं० १३१। ले० काल सं० १८०१। वे० सं० ७३५। छ भण्डार।

विशेष—महात्मा फकीरदास ने लखणौती में प्रतिलिपि की थी।

२४३०. प्रति सं० ५। पत्र सं० १४६। ले० काल सं० १८६४ माघाढ सुदी १०। वे० सं० ३५२। च
भण्डार।

२४३१. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७५। ले० काल सं० १८६१ श्रावण बुदी १। वे० सं० ३५३। च
भण्डार।

विशेष—जयपुर में उदयचंद लुहाड़िया ने प्रतिलिपि की थी ।

२४३२. श्रेणिकचरित्र—भट्टारक विजयकीर्ति । पत्र सं० १२६ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—चरित्र । १० काल सं० १८२० फागुण बुदी ७ । ले० काल सं० १६०३ पौष सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ४३७ ।

अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थकार परिचय—

विजयकीर्ति भट्टारक जान, इह भाषा कीधी परमाण ।
संवत अठारास वीस, फागुण बुदी सातै सु जगीस ॥
बुधवार इह पूरण भई, स्वाति नक्षत्र वृद्ध जोग सुथई ।
गोत पाटणो है मुनिराय, विजयकीर्ति भट्टारक थाय ॥
तसु पटवारी श्री मुनिजानि, बडजात्यातसु गोत पिछारिण ।
त्रिलोकेन्द्रकीर्तिरिषिराज, नितप्रति साध्य आतम काज ॥
विजयमुनि शिषि दुतिय सुजाण श्री बैराड देश तसु आण ।
धर्मचन्द्र भट्टारक नाम, ठोल्या गोत बरष्यो अभिराम ।
मलयखेड सिघासण मही, कारंजय पट सोभा लही ॥

२४३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १८८३ ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० सं० ८३ । ग

भण्डार ।

विशेष—महाराजा श्री जयसिंहजी के शासनकाल में जयपुर में सवाईराम मोषा ने प्राङ्गिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी । मोहनराम चौधरी पांड्या ने ग्रन्थ मिस्रवाकर चौबरीयों के चैत्यालय में बढ़ाया ।

२४३४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० १६३ । छ भण्डार ।

२४३५. श्रेणिकचरित्रभाषा..... । पत्र सं० ५५ । आ० ११×५½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३३ । छ भण्डार ।

२४३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ से ६५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७३४ । छ भण्डार ।

२४३७. संभवजिण्णाहचरिउ (संभवनाथ चरित्र) तेजपाल । पत्र सं० ६२ । आ० १०×५ इंच ।
भाषा—अपभ्रंश । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । वे० सं० ३६५ । च भण्डार ।

२४३८. सागरदत्तचरित्र—हीरकशि । पत्र सं० १८ से २० । आ० १०×४½ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—चरित्र । १० काल सं० १७२४ आसोज सुदी १० । ले० काल सं० १७२७ कार्तिक बुदी १ । अपूर्ण । वे० सं०
९३५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १७ पत्र नहीं हैं ।

ढाल पचतालीसमो गुरुवानी—

संवत् वेद युग जाणीय मुनि शशि वर्ष उदार ॥ सुगुण नर सांभलो ॥
 मेदपाठ माहे लिख्यो विजइ दशमि दिन सार ॥ ५ ॥ सुगुण०
 गढ जालोरइ युग तस्युं लिखीउए अधिकार ।
 भ्रमृत सिधि योगइ सही त्रयोदसी दिनसार ॥ ६ ॥ सु०
 भाद्रव मास महिमा धरणी पूरण करयो विचार ।
 भविक नर सांभलो पचतालीस ढाले सही गाथा सातसईसार ॥ ७ ॥ सु०
 लूंकइ गच्छ लायक यती वीर सीह जे माल ।
 गुरुं भांभरण श्रुत केवली धिवर गुणे चोसाल ॥ ८ ॥ सु०
 समरधधिवर महा मुनी सुंदर रूप उदार ।
 तत शिष भाव धरी भणइ सुगुरु तणइ आधार ॥ ९ ॥ सु०
 उछौ अधिक्यो कह्यो कवि चानुरीय किलोल ।
 मिथ्या दुःकृत ते होज्यो जिन साखइ चउसाल ॥ १० ॥ सु०
 सजन जन नर नारि जे संभली लहइ उल्हास ।
 नरनारी धर्मातिमा पंडित म करो को हास ॥ ११ ॥ सु०
 दुरजन नइ न सुहाबई नहीं आवइ कहे दाय ।
 माखी चंदन नादरइ अमुचितिहां चलि जाय ॥ १२ ॥ सु०
 प्यारों लागइ संतनइ पामर चित संतोष ।
 ढाल भली २ संभली चिते श्री ढाल रोष ॥ १२ ॥ सु०
 श्री गच्छ नायक तेजसी जब लग प्रतपो भाण ।
 हीर मुनि आसीस छइ हो ज्यो कोडि कल्याण ॥ १४ ॥ सु०
 सरस ढाल सरसी कथा सरसो सह अधिकार ।
 होर मुनि गुरु नाम थी आणंद हरष उदार ॥ १५ ॥ सु०

इति श्री ढाल सागरदत्त चरित्र संपूर्ण । सर्व गाथा ७१७ संवत् १७२७ वर्षे कार्तिक बुदी १ दिने सोम-
 चासरे लिखतं श्री धन्यजी ऋषि श्री केशवजी तत् शिष्य प्रवर पंडित पूज्य ऋषि श्री ५ मामाजातदेवासी लिपिकृतं
 मुनिसावलं आत्मार्थे । जोधपुरमध्ये । शुभं भवतु ।

२४३६. मिरिपालचरित्र—पं० नरसेन । पत्र सं० ४७ । प्रा० ६१×४२ इंच । भाषा—मपभंश ।
 विषय—राजा श्रीपाल का जीवन वर्णन । २० काल × । ले० काल सं० १६१५ कार्तिक मुदी ६ । पूर्ण । वै० सं०
 ४१० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र जीर्ण है । तक्षकगढ नगर के आदिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

२४४०. सीताचरित्र—कवि रामचन्द्र (बालक) । पत्र सं० १०० । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—चरित्र । २० काल सं० १७१३ मंगसिर सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०० ।

विशेष—रामचन्द्र कवि बालक के नाम से विख्यात थे ।

२४४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८० । ले० काल × । वे० सं० ६१ । ग भण्डार ।

२४४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६६ । ले० काल सं० १८८४ कार्तिक बुदी ६ । वे० सं० ७१६ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति सजित है ।

२४४३. सुकुमालचरित्र—श्रीधर । पत्र सं० ६५ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—अपभ्रंश । विषय—सुकुमाल मुनि का जीवन वर्णन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २८८ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४४४. सुकुमालचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ४४ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६७० कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ६४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६७० शाके १५२७ प्रवर्तमाने महामांगल्यप्रदकार्तिकमासे शुक्लपक्षे अष्टम्यां तिथौ सोमवासरे नागपुरमध्ये श्रीचंद्रप्रभैत्यालये श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचंद्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचंद्रदेवा तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचंद्रदेवा मंडलाचार्य श्रीभुवनकीर्तिदेवा तत्पट्टे मं० श्रीधर्मकीर्तिदेवा तत्पट्टे मं० श्रीसहस्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीनेमचंद्रदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीयशकीर्तिः तदाम्नाये खण्डेलवालान्वये भौसागोत्रे सा. सोनू तस्यभार्या सोनश्री तयो पुत्र सा. फलहू तस्यभार्या फूलमदे तयो पुत्रा षट् । प्रथम पुत्र सा० नरसिंह तस्यभार्या नरसिंघदे । द्वितीयपुत्र सा. वरसिंह तस्यभार्या बहुरंगदे तयोः पुत्र सा. ठाकुर तस्यभार्या ठाकुरदे । तृतीयपुत्र सा. खेता तस्यभार्या खेतलदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र सा. रणमल तस्यभार्या रयणादे तयोः पुत्रौ द्वौ प्र० चि० कवरा द्वितीय पुत्र चि० धनेड । द्वितीय पुत्र सा. पट्टा तस्यभार्या पाटमदे तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथम पुत्र चि० नाथू द्वि० पुत्र चि० उदर्यासिंघ । चतुर्थ पुत्र सा. रूपा तस्यभार्या रूपलदे । पंचमपुत्र सा. तेजा तस्यभार्या तेजलदे । तयोः पुत्रौ द्वौ प्रथमपुत्र चि० वल्लू द्वितीयपुत्र सुलतान । षष्ठमपुत्र सा. भीवा तस्यभार्या द्वे प्रथमा भावलदे द्वितीय भीवलदे । तयो पुत्रा-श्रवतारः प्रथम पुत्र सा. नानिग तस्यभार्या द्वे प्रथमा नानिगदे द्वितीया नीलादे तयोः पुत्र चि० उदर्यासिंघ । सा. भीवा । द्वितीय पुत्र सा. हेमा तस्यभार्या हेमलदे । तृतीयपुत्र चि० भूठा चतुर्थ पुत्र चि० पूरण । एतेषांमध्ये सा. भीवा तस्यभार्या साध्वी भीवलदे तयेदं शास्त्रं सुकुमालचरित्राख्यं जानावरणो कर्मक्षयनिमित्तं लिखाप्य सत्पान्नाय प्रदत्तं ।

२४४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १७८५ । वे० सं० १२५ । अ भण्डार ।

२४४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४२ । ले० काल सं० १८६४ ज्येष्ठ बुदी १४ । वे० सं० ४१२ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा राधाकृष्ण ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२४४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० ३२ । छ भण्डार ।

विशेष—कहीं कहीं संस्कृत में कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं ।

२४४८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १८४६ ज्येष्ठ बुदी ५ । वे० सं० ३४ । छ भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२४४९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४४ । ले० काल सं० १८२६ पौष बुदी ३३ । वे० सं० ८६ । अ

भण्डार ।

विशेष—पं० रामचन्द्रजी के शिष्य सेवकराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इनके प्रतिरिक्त अ, ङ, छ, झ तथा अ भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ८६५, ३३, २, ३३४)

श्रीर है ।

२४५०. सुकुमालचरित्रभाषा—पं० नाथूलाल दोसी । पत्र सं० १४३ । आ० १२३×४३ इञ्च ।

भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र । १० काल सं० १९१८ सावन सुदी ७ । ले० काल सं० १९३७ चैत्र सुदी १४ ।

पूर्णा । वे० सं० ८०७ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में हिन्दी पद्य में है इसके बाद वचनिका में हैं ।

२४५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १९९० । वे० सं० ८६१ । ङ भण्डार ।

२४५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल × । वे० सं० ८६४ । ङ भण्डार ।

२४५३. सुकुमालचरित्र—हरचंद्र गंगवाल । पत्र सं० १५३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—चरित्र । १० काल सं० १९१८ । ले० काल सं० १९२९ कार्तिक सुदी १५ । पूर्णा । वे० सं० ७२० । च

भण्डार ।

२४५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७४ । ले० काल सं० १९३० । वे० सं० ७२१ । अ भण्डार ।

२४५५. सुकुमालचरित्र..... । पत्र सं० ३६ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—चरित्र । १०

काल × । ले० काल सं० १९३३ । पूर्णा । वे० सं० ८६२ । ङ भण्डार ।

विशेष—फतेहलाल भावसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । प्रथम २१ पत्रों में तत्त्वार्थसूत्र है ।

२४५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० से ७९ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ८६० । ङ भण्डार ।

२४५७. सुखनिघान—कवि जगन्नाथ । पत्र सं० ५१ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । १० काल सं० १७०० आसोज सुदी १० । ले० काल सं० १७१४ । पूर्णा । वे० सं० १९९ । अ

भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १७१४ फाल्गुन सुदी १० मोजाबाद (मोजमाबाद) मध्ये श्री आदीश्वर चैत्यालये लिखितं पं०
दामोदरेण ।

२४५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८३० कार्तिक सुदी १३ । वे० सं० २३६ । अ
भण्डार ।

२४५९. सुदर्शनचरित्र—भ० सकलकीर्ति । पत्र सं० ६० । आ० ११×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।
विषय-चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १७१५ । अपूर्ण । वे० सं० ८ । अ भण्डार ।

विशेष—५६ से ५८ तक पत्र नहीं हैं ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १७७५ वर्षे मात्र शुक्लैकादश्यांसोमे पुष्करजातीयेन मिश्रजयरामेणोदं सुदर्शनचरित्रं लेखक पाठकयोः
शुभं भूयात् ।

२४६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४१५ । च भण्डार ।

२४६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ से ४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४१६ । च भण्डार ।

२४६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५० । ले० काल × । वे० सं० ४९ । छ भण्डार ।

२४६३. सुदर्शनचरित्र—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र सं० ६९ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-
चरित्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२ । अ भण्डार ।

२४६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० ४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति अपूर्ण है । पत्र ५६ से ५८ तक नवीन लिखे हुए हैं ।

२४६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५८ । ले० काल सं० १६५२ फागुण बुदी ११ । वे० सं० २२९ । ख
भण्डार ।

विशेष—साह मनोरथ ने मुकुन्ददास से प्रतिलिपि कराई थी ।

नीचे- सं० १६२८ में अषाढ बुदी ९ को पं० तुलसीदास के पठनार्थ ली गई ।

२४६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८३० चैत्र बुदी ६ । वे० सं० ६२ । अ
भण्डार ।

विशेष—रामचन्द्र ने अपने शिष्य सेबकराम के पठनार्थ लिखाई ।

२४६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६७ । ले० काल × । वे० सं० ३३५ । अ भण्डार ।

२४६८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७१ । ले० काल सं० १६६० फागुन सुदी २ । वे० सं० २१६८ । ट
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

२४६६. सुदर्शनचरित्र—मुमुक्षु विद्यानंदि । पत्र सं० २७ से ३६ । आ० १२^१/_२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८६३ । छ भण्डार ।

२४७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१८ । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० ४१३ । च भण्डार ।

२४७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४१४ । च भण्डार ।

२४७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६६५ भाद्रवा बुदी ११ । वे० सं० ४८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

अथ संवत्सरेति श्रीपनृति (श्री नृपति) विक्रमादित्यराज्ये गताब्द संवत् १६६५ वर्षे भादौ बुदि ११ गुरु-
वासरे कृष्णरात्रे अर्धलागुरुदुर्ग शुभस्थाने अश्वरतिगजरतिनरपतिराजत्रय मुद्राधिपतिश्रीमन्साहिंसलेमराज्यप्रवर्तमाने श्रीमत्
काष्ठामंधे माथुरगच्छे पुष्करगणे लोहाचार्यान्वये भट्टारक श्रीमलयकीर्तिदेवास्तत्पट्टे श्रीगुणभद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री
भानुकीर्तिदेवा तत्पट्टे भट्टारक श्री कुमारश्रेणिस्तदाम्नाये इक्ष्वाकवंशे जैसवालान्वये ठाकुराणिगोत्रे पालं व मुभस्थाने
जिनचैत्यानये आचार्यगुणकीर्तिना पठनार्थं लिखितं ।

२४७३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १८६३ बैशाख बुदी ४ । वे० सं० ३ । झ भण्डार ।

विशेष—चित्रकूटगढ़ में राजाधिराज राणा श्री उदयसिंहजी के शासनकाल में पार्श्वनाथ चैत्यालय में भ०
जिनचन्द्रदेव प्रभाचन्द्रदेव आदि शिष्यों ने प्रतिलिपि की । प्रशस्ति अपूर्ण है ।

२४७४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० २१३६ । ट भण्डार ।

२४७५. सुदर्शनचरित्र..... । पत्र सं० ४ से ५६ । आ० ११^१/_२×५^१/_२ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
चरित्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६८ । अ भण्डार ।

२४७६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ से ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८५ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० १, २, ६ तथा ४० से आगे के पत्र नहीं हैं ।

२४७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५६ । छ भण्डार ।

२४७८. सुदर्शनचरित्र..... । पत्र सं० ५४ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—चरित्र ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६० । छ भण्डार ।

२४७९. सुभौमचरित्र—भ० रतनचन्द्र । पत्र सं० ३७ । आ० ८^३/_४×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—सुभौम चक्रवर्ति का जीवन चरित्र । १० काल सं० १६८३ भाद्रवा बुदी ५ । ले० काल सं० १८५० । पूर्ण ।
वे० सं० ५५ । छ भण्डार ।

विशेष—त्रिवुध नेजपाल की सहायता में हेमराज पाटनी के लिये ग्रन्थ रचा गया । पं० सवाईराम के शिष्य
नोनदराम के पठनार्थ गंगात्रिपुगु ने प्रतिलिपि की थी । हेमराज व भ० रतनचन्द्र का पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२१०]

२४८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १८४० वैशाख सुदी १ । वे० सं० १५१ । व

भण्डार ।

विशेष—हेमराज पाटनी के लिये टोजराज की सहायता से ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२४८१. हनुमच्चरित्र—अ० अजित । पत्र सं० १२४ । आ० १०६×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—चरित्र । २० काल × । ले० काल सं० १६८२ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ३० । अ भण्डार ।

विशेष—भृगुकच्छपुरी में श्री नेमिजिनालय में ग्रन्थ रचना हुई ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६८२ वर्षे वैशाखमासे बाहुलपक्षे एकादश्यांतिथौ काव्यत्रारे । लिखापितं पंडित श्री शावल इदं शास्त्रं लिखितं जोधा लेखक ग्राम वैरागरमध्ये । ग्रन्थाग्रन्थ २००० ।

२४८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १६४४ चैत्र बुदी ५ । वे० सं० १४६ । अ

भण्डार ।

२४८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ९३ । ले० काल सं० १८२६ । वे० सं० ८४८ । क भण्डार ।

२४८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९२ । ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी ११ । वे० सं० ८४९ । क

भण्डार ।

२४८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८०७ ज्येष्ठ सुदी ४ । वे० सं० २४३ । ख

भण्डार ।

विशेष—तुलसीदास मोतीराम गंगवाल ने पंडित उदयराम के पठनार्थ कालाबेहरा (कृष्णाद्रह) में प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १८८२ । वे० सं० ९६ । ग भण्डार ।

२४८७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ११२ । ले० काल सं० १५८४ । वे० सं० १३० । घ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति नहीं है ।

२४८८. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४४५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४८९. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८९ । ले० काल × । वे० सं० ५० । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२४९०. प्रति सं० १० । पत्र सं० ९७ । ले० काल सं० १६३३ कार्तिक सुदी ११ । वे० सं० १०८ क ।

व भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति काफी विस्तृत है ।

भट्टारक पद्मनंदि की आम्नाय में संबेलवाल ज्ञातीय साह गोत्रोत्पन्न साधु श्री वोहीध के बंश में होने वाली बाई सहलालदे ने सोलहकारण व्रतोद्यापन में प्रतिलिपि कराकर चढ़ाई ।

२४६१. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १६२६ मंगसिर सुदी ४ । वे० सं० ३४७ ।
ब्र भण्डार ।

विशेष—ब्र० डालू लोहशल्या सेठी गोत्र वाले ने प्रतिलिपि कराई ।

२४६२. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १६७४ । वे० सं० ५१२ । ब्र भण्डार ।

२४६३. प्रति सं० १३ । पत्र सं० २ से १०५ । ले० काल सं० १६८८ माघ सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० २१४१ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १, ७३, व १०३ नहीं हैं लेखक प्रशस्ति बडी है ।

इनके अतिरिक्त भ्रू और ब्र भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १७७ तथा ४७३) और है ।

२४६४. हनुमच्चरित्र—ब्रह्म रायमल्ल । पत्र सं० ३६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
चरित्र । २० काल सं० १६१६ बैशाख बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०१ । अ भण्डार ।

२४६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८२४ । वे० सं० २४२ । ख भण्डार ।

२४६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८८३ सावण बुदी ६ । वे० सं० ६७ । ग
भण्डार ।

विशेष—साह कालुराम ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२४६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १८८३ आसोज सुदी १० । वे० सं० ६०२ । ङ
भण्डार ।

विशेष—सं० १६५६ मंगसिर बुदी १ शनिवार को सुवालालजी बंकी बालों के घड़ों पर संघीजी के
मन्दिर में यह ग्रन्थ भेंट किया गया ।

२४६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १७६१ कार्तिक सुदी ११ । वे० सं० ६०३ । च
भण्डार ।

विशेष—वनपुर ग्राम में घासीराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२४६९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० १६६ । छ भण्डार ।

२५००. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४१ । झ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है ।

२५०१. हारावलि—महामहोपाध्याय पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० १३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—काव्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८५३ । क भण्डार ।

२५०२. होलीरेणुकाचरित्र—पं० जिनदास । पत्र सं० ५६ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चरित्र । २० काल सं० १६०८ । ले० काल सं० १६०८ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल के समय की ही प्राचीन प्रति है अतः महत्वपूर्ण है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

स्वस्ति श्रीमते शान्तिनाथाय । संवत् १६०८ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे दशमीतिथी शुक्रवासरे हस्तनक्षत्रे श्रीरणास्तंभदुर्गस्य शाखानगरे शेरपुरनाम्नि श्रीशान्तिनाथजिनचैत्यालये श्री आलमसाह साहिआलम श्रीसल्लेमसाहराज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे नंद्याम्नाये सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भ० श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे श्रीप्रभाचन्द्रदेवास्तच्छिष्य मं० श्रीधर्मचंद्रदेवास्तदाम्नायेखंडेलवालान्वये सेठीगोत्रे सा० सोलू तद्भार्या फूला तत्पुत्रास्त्रयः प्र. सा. पचायण द्वि. सा. डीडा तृतीय सा. करमा । सा. पचायण भार्या वील्हा तत्पुत्र सा. दामोदर तद्भार्ये द्वे । प्र. खेमी द्वि० नौलादे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा. नेमा द्वितीय सा. वोथू तृतीय सा० तेजा । सा. नेमा भार्या चतुरा । सा. वोथू भार्या सवीरा सा. डीडा भार्या गौरां तत्पुत्र सा. हेमा तद्भार्ये द्वे प्रथम थीरणि द्वितीय सुहागदे तत्पुत्रास्त्रयः प्रथम सा. भीखु द्वितीय सा. चतुरा तृतीय सा. भोबालु । सा. करमा भार्या टरमी तत्पुत्रौ द्वौ प्र. सा. धर्मदास द्वि० सा. जसवंत । सा. धर्मदास भार्या सिगारदे जसवंत भार्या जसमादे तत्पुत्र चिरंजीवी ईसरदास एतेषामध्ये जिनपूजापुरंदरेण उत्तमगुणगणालंकृतगात्रेण सा. कर्मानामध्ये येनेदंशास्त्रलिखाप्य आचार्य श्री ललितकीर्तये घटापितं दशलक्षरात्रतोद्यपनार्थं ।

२५०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ३६ । अ भण्डार ।

२५०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १७२६ मात्र मुदी ७ । वे० सं० ४५१ । च भण्डार ।

विशेष—यह प्रति पं० रायमल्ल के द्वारा वृन्दावती (बून्दी) में स्वपठनार्थं चन्द्रप्रभु चैत्यालय में लिखी गई थी । कवि जिनदास रणथंभौरगढ के समीप नवलक्षपुर का रहने वाला था । उसने शेरपुर के शान्तिनाथ चैत्यालय में सं० १६०८ में उक्त ग्रन्थ की रचना की थी ।

२५०५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ से ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१७१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।



कथा-साहित्य

२५०६. अकलंकदेवकथा.....। पत्र सं० ४। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा।
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०५६। ट भण्डार।

२५०७. अक्षयनिधिमुष्टिकाविधानत्रतकथा.....। पत्र सं० ६। आ० २२×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत।
विषय-कथा। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८३४। ट भण्डार।

२५०८. अठारहनाते की कथा—ऋषि लालचन्द्र। पत्र सं० ४२। आ० १०×५ इञ्च। भाषा-
हिन्दी। विषय-कथा। २० काल सं० १८०५ माह सुदी ५। ले० काल सं० १८८३ कार्तिक बुदी ८। वे० सं० ६६८।
अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम भाग—

संबत अठारह पचडोतर १८०५ जी हो माह सुदी पाँचा गुरुवार।

भगवत मुहुरत मुभ जोग में जी हो कथण कह्यो सुवीचार ॥ धन धन० ॥४६६॥

श्री चीतोड तलहटी राजियो, जी हो ऋषि जीनेश्वर स्याम।

श्री सीध दोलती दो घणो जी हो सीध की पूरी जे हाम ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७०॥

तलहटी श्री सीगराज तो, जी हो बहुलो छय परीवार।

बेटा बेटा पोतरा जी हो अनधन अधीक अपार ॥ माहा मुनि० धन० ॥४७१॥

श्री कोठारी काम का धणी, जी हो छाजड सो नगरा सेठ।

था रावत मुरारण रांखरु दीपता जी हो ओर बाण्या हेठ ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७२॥

श्री पुन्य मग छगीडवो महा जी हं श्री विजयराज बांखाण।

पाट घणार अंतर जी हो गुण सागर गुण खरण ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७३॥

सोभागी सीर मेहरा जी हं साग मुरी कल्याण।

परवारा पूरो सही जी हो सकल वातां मु बीयाण ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७४॥

श्री बीजयेगर्त्रे गीडवांघणी जी हं श्री भीम सागर मुरी पाट।

श्री तीलक मुरंद वीर जीवज्यो जी हो सहमगुणां का थाटै ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७५॥

साध सकल में सोभतो जी हो ऋषि लालचन्द्र मुनीस।

अठारा नता चौधी कथी जी हो ढाल भणी इगतीस ॥ माहा मुनी० धन० ॥४७६॥

ईती श्री धर्मउपदेस अठारा नाता चरीत्र संपूर्ण समाप्ता ॥

लिखतु चेली सुवकुवर जी आरज्या जी श्री १०८ श्री श्री श्री भागाजी तत् सखणी जी श्री श्री डमरुजा श्री रामकुवर जी । श्री सेवकुवर जी श्री चंदनराजी श्री दुल्हडी भणतां गुणतां संपूर्ण ।

संवत् १८८३ वर्षे साके वर्षे मिती आसोज (काती) वदी ८ में दिन वार सोमरे । ग्राम संग्रामगडमध्ये संपूर्ण, चोमासो तीजो कीधो ठाणा ६॥ की धो छो जदी लखीइ छ जी । श्री श्री १०८ श्री श्री मासत्या जी क प्रसाद लखेइ छ सेवुली ॥ श्री श्री मासत्या जी वाचवाने अरथ । आरभा जी वाचवान अरथ ठाणा ॥ ६ ॥

२५०६. अनन्तचतुर्दशी कथा—ब्रह्म ज्ञानसागर । पत्र सं० १२ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२३ । अ भण्डार ।

२५१०. अनन्तचतुर्दशीकथा—मुनीन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३ । च भण्डार ।

२५११. अनन्तचतुर्दशीकथा..... । पत्र सं० ३ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५ । ऋ भण्डार ।

२५१२. अनन्तव्रतविधानकथा—मदनकीर्त्ति । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५८ । ट भण्डार ।

२५१३. अनन्तव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ७ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत पद्यों के हिन्दी अर्थ भी दिये हुये हैं ।

इनके अतिरिक्त ग भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २) ङ भण्डार में ४ प्रनियां (वे० सं० ८, ९, १०, ११) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) और हैं ।

२५१४. अनन्तव्रतकथा—भ० पद्मनन्दि । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १७८२ सावन बुदी १ । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

२५१५. अनन्तव्रतकथा..... । पत्र सं० ४ । आ० ७ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७ । ङ भण्डार ।

२५१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८० । ट भण्डार ।

२५१७. अनन्तव्रतकथा..... । पत्र सं० १० । आ० ६×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा (जैनतर) २० काल × । ले० काल सं० १८३८ भाद्रवा सुदी ७ । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

२५१८. अनन्तव्रतकथा—सुशालचन्द । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८३७ आसोज बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६६६ । अ भण्डार ।

२५१६. अंजनचोरकथा.....। पत्र सं० ६। आ० ८३×४३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६१४। ट भण्डार।

२५२०. अषाढएकादशीमहात्म्य.....। पत्र सं० २। आ० १२×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११४६। अ भण्डार।

विशेष—यह जैनेतर ग्रन्थ है।

२५२१. अष्टांगसम्यग्दर्शनकथा—सकलकीर्ति। पत्र सं० २ से ३६। आ० ७३×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६२१। ट भण्डार।

विशेष—कुछ बीच के पत्र नहीं हैं। आठों अङ्गों की अलग २ कथायें हैं।

२५२२. अष्टांगोपाख्यान—पं० मेधावी। पत्र सं० २८। आ० १२३×५३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३१८। अ भण्डार।

२५२३. अष्टाह्निककथा—भ० शुभचंद्र। पत्र सं० ८। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३००। अ भण्डार।

विशेष—अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ४८५, १०७०, १०७२) ग भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३) ङ भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ४१, ४२, ४३, ४४) च भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० १५, १६, १७, १८, १९, २०) तथा छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) और हैं।

२५२४. अष्टाह्निककथा—नथमल। पत्र सं० १८। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—कथा। २० काल सं० १६२२ फायुण सुदी ५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४२५। अ भण्डार।

विशेष—पत्रों के चारों ओर बेल बनी हुई है।

इसके अतिरिक्त क भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० २७, २८, २९, ७६३) ग भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ४) ङ भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ४५, ४६, ४७, ४८) च भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ५०६, ५१०, ५११, ५१२) तथा छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७६) और हैं।

इसका दूसरा नाम सिद्धचक्र व्रतकथा भी है।

२५२५. अष्टाह्निककौमुदी.....। पत्र सं० ५। आ० १०×४३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७११। ट भण्डार।

२५२६. अष्टाह्निकाव्रतकथा.....। पत्र सं० ४३। आ० ६×६३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ७२। छ भण्डार।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४५) की और है।

२५२७. अष्टाहिकाव्रतकथासंग्रह—गुणचन्द्रसूरि । पत्र सं० १४ । आ० ६३×६३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२ । छ भण्डार ।

२५२८. अशोकरोहिणीकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ६ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वे० सं० ३५ । छ भण्डार ।

२५२९. अशोकरोहिणीव्रतकथा..... । पत्र सं० १८ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६ । छ भण्डार ।

२५३०. अशोकरोहिणीव्रतकथा..... । पत्र सं० १० । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । २० काल सं० १७८४ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० २८१ । झ भण्डार ।

२५३१. आकाशपंचमीव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ६ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६०० श्रावण सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ५१ । छ भण्डार ।

२५३२. आकाशपंचमीकथा..... । पत्र सं० ६ से २१ । आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५० । छ भण्डार ।

२५३३. आराधनाकथाकोष..... । पत्र सं० ११८ से ३१७ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७३ । अ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७) तथा ट भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २१७४) और हैं तथा दोनों ही अपूर्ण हैं ।

२५३४. आराधनाकथाकोश..... । पत्र सं० १४४ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २८६ । अ भण्डार ।

विशेष—८४वीं कथा तक पूर्ण है । ग्रन्थकर्ता का निम्न परिचय दिया है ।

श्री मूलसंधे वरभारतीये गच्छे बलात्कारगरोति रम्ये ।

श्रीकुंदकुंदाख्यमुनींद्रवंशे जातं प्रभाचन्द्रमहायतीन्द्रः ॥५॥

देवेंद्रचंद्रार्कसम्मर्चितेन तेन प्रभाचन्द्रमुनीश्वरेण ।

अनुग्रहार्थं रचित सुवाक्यैः आराधनासारकथाप्रबन्धः ॥६॥

तेन क्रमेणैव मया स्वशक्त्या श्लोकैः प्रसिद्धैश्चनिगद्यते सः ।

मार्गेन किं भानुकरप्रकाशे स्वलीलया गच्छति सर्वलोकः ॥७॥

प्रत्येक कथा के अन्त में परिचय दिया गया है ।

२५३५. आराधनासारप्रबंध—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० १५६ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६५ । ट भण्डार ।

विशेष—५६ से आगे तथा बीच में भी कई पत्र नहीं हैं ।

२५३६. आरामशोभाकथा.....। पत्र सं० ६। आ० १०×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा।
१० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८३६। अ भण्डार।

विशेष—जिन पूजाफल कथायें हैं।

प्रारम्भ—

प्रन्वदा श्री महावीरस्वामी राजगृहेपुरे
समवासरदुद्याने भूयो गुण शिलाभिधे ॥१॥
सद्धर्ममूलसम्यक्त्वं नैर्मल्यकरणे सदा।
यतध्वमिति तीर्थेशा वक्तिदेवादिपर्वदि ॥२॥
देवपूजादिश्रीराज्यसंपदं सुरसंपदं।
निर्वाणकमलांघापि लभते नियतं जनः ॥३॥

मन्त्रिम पाठ—

यावद्देवी सुते राज्यं नाम्ना मलयसुंदरे।
क्षिपामि सफलं तावत्करिष्यामि निजं जनु ॥७५॥
सूरि नत्वा गृहे गत्वा राज्यं क्षिप्त्वा निजांगजे।
आरामशोभयायुक्ते राजाश्रितमुपाददे ॥७६॥
अधीत सर्वसिद्धातं संविग्नगुणसंयुतं।
एवं संस्थापयामास मुनिराजो निजे पदे ॥७७॥
गीतार्थायै तथारामशोभायै गुणभूमये।
प्रवर्त्तिनीपदं प्रादात् गुरुस्तद्गुणरंजितः ॥७८॥
संबोध्य भविकान् सूरिः कृत्वा तैरनशनं तथा।
विपद्यद्वावपि स्वर्गसंपदं प्रापतुर्वरं ॥७९॥
ततश्च्युत्वा क्रमादेतौ नरता सुदता वरान्।
भयान् कतिपयान् प्राप्य शास्वतीं सिद्धिमेप्यत ॥८०॥
एवं भोस्तीर्थकृद्भक्तेः फलमाकर्षं मुंदरं।
कार्यस्तत्करणेपन्नो युष्माभिः प्रमदात्सदा ॥८१॥

॥ इति जिनपूजा विषये आरामशोभाकथा संपूर्ण ॥

संस्कृत पत्र संख्या २८१ है।

२५३७. उपांगललितव्रतकथा.....। पत्र सं० १४। आ० ८३×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
कथा (त्रैनेतर) १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१२३। अ भण्डार।

२५३८. ऋणसंबंधकथा—अभयचन्द्रगणि । पत्र सं० ४ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—प्राकृत ।

विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६६२ ज्येष्ठ बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ८४० । अ भण्डार ।

विशेष—आरांंदरायगुरुणा सीसेण अभयचंद्रगणिराय माहणचन्द्रपुत्राणं कहाकियं ग्यारवनरसए ॥१२॥

इति रिणु संबंधे छ ॥१॥

श्री श्री पं० श्री श्री आरांंदविजय मुनिभिल्लेखि । श्री किहरोरमध्ये संवत् १६६२ वर्षे जेठ वदि १ दिने ।

२५३९. औषधदानकथा—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० ६ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८१ । ट भण्डार ।

विशेष—२ से ५ तक पत्र नहीं हैं ।

२५४०. कठियारकानडरीचौपई—मानसागर । पत्र सं० १४ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल सं० १७४७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००३ । अ भण्डार ।

विशेष—आदि भाग ।

श्री गुरुभ्योनमः ढाल जंबूद्वीप मभार एहनी प्रथम—

मुनिवर आर्यसुहस्तिकिण इक अवसरइ नयइ उजेणी आवियारे ।

चरण करण व्रतधार गुणभणि आगर बहु परिवारे परिवस्याए ॥१॥

वन वाड़ी विश्राम लेइ तिहां रह्या दोइ मुनि नगर पठाविया ए ।

थानक मांगण काज मुनिवर मान्हठा भद्रानइं घरि आविया ए ॥२॥

सेठानी कहे ताम शिष्य तुम्हे केहनास्यै काज आव्या इहां ए ।

आर्यसुहस्तिना सीस अम्हे छां आविका उद्याने गुरु छै तिहाए ॥३॥

अन्तिम—

सतरै सैताले समै म. तिहां कीधौ चौमास ॥ मं० ॥

सदगुरु भा परसाद थी म. पूगी मन की आस ॥ म० ॥

मानसागर सुख संपदा म. जति सागरगणि सीस ॥ मं० ॥

साधुतरण गुणगावतां म. पूगी मनह जगीस ॥

दिग पट कया कोस थी म. रचोयो ए अधिकार ।

अद्धि को उछो भाषीयो मं. भिछा डुकड़ कार ॥

नवमी ढाल सोहामजी मं० गौडी राग सुरंग ।

मानसागर कहै सांभलो दिन दिन वधतो रंग ॥ १० ॥

इति श्री सील विषय कठियार कानडरी चौपई संपूर्ण ।

२५४१. कथाकोश—हरिषेणाचार्य । पत्र सं० ४६१ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल सं० ६८६ । ले० काल सं० १५६७ पौष सुदी १४ । वे० सं० ८४ । च भण्डार ।

विशेष—संघी पदार्थ ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

२५४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१८ । आ० १०×५ $\frac{१}{२}$ इंच । ले० काल १८३३ भाद्रवा बुदी ५५ । वे० सं० ६७१ । क भण्डार ।

२५४३. कथाकोश—धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३६ से १०६ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १७६७ अषाढ बुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० १६६७ । अ भण्डार ।

विशेष—१ से ३८, ५३ से ७० एवं ८७ से ८६ तक के पत्र नहीं हैं ।

लेखक प्रशस्ति—

संबत् १७६७ का आसाढमासे कृष्णपक्षे नवम्यां शनिवारे अजमेरालये नगरे पातिस्थाहाजी अहमदस्याहजी महाराजाधिराज राजराजेश्वरमहाराजा श्री उभैसिहजी राज्यप्रवर्तमाने श्रीमूलसंघेसरस्वतीगच्छे वलात्कारगणे नंद्याम्नाये कुंदकुंदाचार्यान्वये मंडलाचार्य श्रीरत्नकीर्त्तिजी तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीविद्यानंदिजी तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीश्रीमहेन्द्रकीर्त्तिजी तत्पट्टे मंडलाचार्यजी श्री श्री श्री १०८ श्री अनंतकीर्त्तिजी तदाम्नाये ब्रह्मचारीजी किसनदासजी तत् शिष्य पंडित मनसाराभेण व्रतकथाकोशाख्यं शास्त्रलिखापितं धर्मोपदेशदानार्थं ज्ञानावरणीकर्मक्षयार्थं मंगलभूयान्चतुर्विधसंधानां ।

२५४४. कथाकोश (आराधनाकथाकोश)—ब्र० नेमिदत्त । पत्र सं० ४६ से १६२ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८०२ कार्तिक बुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० २२६६ । अ भण्डार ।

२५४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २०३ । ले० काल सं० १६७५ सावन बुदी ११ । वे० सं० ६८ । क भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है ।

इनके अतिरिक्त क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) च भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३४) छ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६४, ६५) और हैं ।

२५४६. कथाकोश..... । पत्र सं० २५ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५६ । च भण्डार ।

विशेष— च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५७, ५८) ट भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २११७ २११८) और हैं ।

२५४७. कथाकोश..... । पत्र सं० २ से ६८ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । क भण्डार ।

२५४८. कथारत्नसागर—नारचन्द्र । पत्र. सं० ५ । आ० १०^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२५४ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के १७ से २१ पत्र हैं ।

२५४९. कथासंग्रह—ब्रह्मज्ञानसागर । पत्र सं० २५ । आ० १२×६^३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८५४ बैशाख बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३६८ । अ भण्डार ।

नाम कथा	पत्र	पृथ संख्या
[१] त्रैलोक्य तीज कथा	१ से ३	५२
[२] निसल्याष्टमी कथा	४ से ७	६४
[३] जिन रात्रिघ्नत कथा	७ से १२	६६
[४] अष्टाह्निका व्रत कथा	१२ से १५	५२
[५] रक्षबंधन कथा	१५ से १९	७६
[६] रोहिणी व्रत कथा	१९ से २३	६५
[७] आदित्यवार कथा	२३ से २५	३७

विशेष—१८५४ का बैशाखमासे कृष्णपक्षे तिथी २ गुरुवासरे । लिख्यंत महात्मा स्यंभुराम सवाई जयपुर मध्ये । लिखायंत चिरंजीव साहजी हरचंदजी जाति भौसा पठनार्थ ।

२५५०. कथासंग्रह..... । पत्र सं० ३ से ९ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—प्राकृत हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२६३ । अपूर्ण । अ भण्डार ।

२५५१. कथासंग्रह..... । पत्र सं० ९४ । आ० १२×७^३ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९९ । क भण्डार ।

विशेष—व्रत कथायें भी हैं । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १००) और है ।

२५५२. कथासंग्रह..... । पत्र सं० ७८ । आ० १०^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४४ । अ भण्डार ।

२५५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७६ । ले० काल सं० १५७८ । वे० सं० २३ । ख भण्डार ।

विशेष—३४ कथाओं का संग्रह है ।

२५५४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न कथायें ही हैं ।

१. षोडशकारणकथा—पद्मप्रभदेव ।

२. रत्नत्रयविधानकथा—रत्नकोसि ।

कृ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७) और है ।

२५५५. कथवन्नाचौपई—जिनचंद्रमूरि । पत्र सं० १५ । आ० ११०^३×४३^३ इंच । भाषा—हिन्दी (रात्रम्यानी) । विषय—कथा । २० काल सं० १७२१ । ले० काल सं० १७६६ । पूर्ण । वे० सं० २४ । ख भण्डार ।

विशेष—चयनविजय ने कृष्णगढ़ में प्रतिलिपि की थी ।

२५५६. कर्मविपाक..... । पत्र सं० १८ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८१६ मंगसिर बुदी १४ । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थिमा पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति श्री सूर्यारणसंवादरूपकर्मविपाक संपूर्ण ।

२५५७. कवलचन्द्रायणत्रतकथा..... । पत्र सं० ४ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०५ । अ भण्डार ।

विशेष—कृ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) तथा अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४४२) और है ।

२५५८. कृष्णरुक्मिणीमंगल—पदमभगत । पत्र सं० ७३ । आ० ११^३×५^३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८६० । वे० सं० ११६० । पूर्ण । अ भण्डार ।

विशेष—श्री गणेशाय नमः । श्री गुरुभ्यो नमः । अथ रुक्मिणी मंगल लिखते ।

यादि कीयो हरि पदमयोजी, दीयो विवाण खिनाय ।
कीरतकरि श्रीकृष्ण की जी, लीयो हजुरी बुलाय ॥
पावा लाग्यो पदमयोजी, जहां बड़ा रुक्मिणी जादुराय ।
कृपा करी हरी भगत पै जी, पीतामर पहराय ॥
आग्यादि हरि भगत नै जी, पुरी दुवारिका माहि ।
रुक्मिणी मंगल सुणै जी, ते अमरापुरि जाहि ॥
नरनारियो मंगल सुणै जी, हरिचरण चितलाय ।
वै नारी इंद्र की अपछरा जी, वै नर बैकुंठ जाय ॥
व्याह बेल भागीरथि जी गीता सहसर नाव ।
गावतो अमरापुरी जी पाव(व)न होय सव गांव ॥
बोलै राणी रुक्मिणी जी, मुणज्यो भगति सुजाण ।
या किया रति केशो तणो जी, येसडीर करोजी बखारण ॥
बो मंगल परपट करो जी, सन को सवद विचारि ।
बीडा दीयो हरी भगत नै जी, कथीयो कृष्ण मुरारि ॥

गुरु गोविंद नै बिनवा जी, व अभिनासी जी देव ।
 तन मन तो आगै धरा जी, कराजी गुरां की जी सेव ॥
 गुरु गोविंद बताइया जी, हरी थापै ब्रह्मंड ।
 गुरु गोविंद कै सरनै आये, होजो कुल की लाज सब पेला ।
 कृष्ण कृपा तै काम हमारो, भगता पदम यो तेली ॥

पत्र ४० — राग सिंधु ।

ससिपाल राजा बोलियो जी सुणि जे राज कवार ।
 जो जादु जुध आयसी, तो भीत बजाऊ सार ॥
 ये कै सार धार करु वैरखा, बाण वहै अपार ।
 गोला नालि अनेक छूटै सारग्यां री मार ॥
 डाहलतरिण फौजै भली पर आप सुणिज्यां राज्य कै बार ॥
 भूप वतलाइयाइ जी..... ।

अन्तिम—

माता करौ नै प्रभुजी रो आरितो भोमि दान दत होय ।
 श्रवण सत गुर साभलो, दोष न लागै कोय ॥
 श्रीकृष्ण कौ व्याहलौ, मुणै सकल चितलाय ।
 हरि पुरवै सब कामना, भगति मुकति फलदाय ॥
 द्वारामति आनन्द हुवा, मुनिजन देत असीस ।
 जन पिय सामलिया, सीगासणि जगदीस ॥

रुकमणि जी मंगल संपूर्ण ॥

संवत् १८७० का साके १७३५ का भाद्रपदमासे शुक्लपक्षे पंचम्यां चित्राभौमनक्षत्रे द्वितीयचरणे तुलालग्नैर्ध
 समाप्तोर्थं ॥ शुभं ॥

२५५६. कौमुदीकथा—आचार्य धर्मकीर्त्ति । पत्र सं० ३ से ३४ । आ० ११×४ इञ्च । भाषा—
 संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६६३ । अपूर्ण । वे० सं० १३२ । छ भण्डार ।

विशेष—ब्रह्म इंगरसी ने लिखा । बीच के १६ से १८ तक के भी पत्र नहीं हैं ।

२५६०. ख्याल गोपीचंदका..... । पत्र सं० १६ । आ० ६×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
 कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । छ भण्डार ।

विशेष—अंत में और भी रागिनियों के पद दिये हुये हैं ।

२५६१. चतुर्दशीविधानकथा..... । पत्र सं० ११ । आ० ८×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८७ । च भण्डार ।

२५६२. चंद्रकुंवर की वार्ता—प्रतापसिंह । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १८४१ भादवा । पूर्ण । वे० सं० १७१ । ज भण्डार ।
विशेष—६६ पद्य हैं । पंडित मन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

अन्तिम—

प्रतापसिंह घर मन बसी, कविजन सदा सुहाइ ।

जुग जुग जीवों चंदकुवर, बात कही कविराय ॥ ६६ ॥

२५६३. चन्दनमलयागिरीकथा—भद्रसेन । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।
विशेष—प्रति प्राचीन है । आदि अंत भाग निम्न प्रकार है ।

प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री विक्रमपुरे, प्रणमीं श्री जगदीस ।

तन मन जीवन मुख करण, पूरत जगत जगीस ॥१॥

वरदाइक श्रुत देवता, मति विस्तारण मात ।

प्रणमीं मन धरि मोद सौं, हरे विघन संघात ॥२॥

मम उपकारी परमगुरु, गुण अक्षर दातार ।

बंदे ताके चरण जुग, भद्रसेन मुनि सार ॥३॥

कहां चन्दन कहां मलयगिरि, कहां सायर कहां नीर ।

कहिये ताकी वारता, सुरगो सबे वर वीर ॥४॥

अन्तिम—

कुमर पिता पाइन छुबे, भीर लिये पुर संग ।

आंसुन की धारा छुटी, मानो न्हावण गंग ॥ १८६॥

दुख जु मन में सुख भयो, मागी विरह विजोग ।

आनन्द सौं च्यारीं मिले, भयो अपूरव जोग ॥ १८७॥

गाथा—

कच्छवि चंदन राया, कच्छव मलयागिरिविते ।

कच्छ जोहि पुष्यवल होई, दिवता संजोगो हवइ एव ॥१८८॥

कुल १८८ पद्य हैं । ६ कलिका हैं ।

२५६४. चन्दनमलयागिरिकथा—चत्तर । पत्र सं० १० । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । १० काल सं० १७०१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७२ । अ भण्डार ।

अन्तिम ढाल—ढाल एहवी साधनुमु ।

कठिन माहावरत राख ही व्रत राखीहि सोइ चतर सुजाण ॥

धनुकरमइ मुख पामीयाजी, पाम्यो अमर विमाण ॥ १ ॥ गुणवंता साधनमृ ॥

गुण दान सील तप भावना, व्या रे धरम प्रधान ॥
 सुधइ चित्त जे पालइ जी पासी मुख कल्याण ॥ २ ॥ गुण० ॥
 सतियाना गुण गावता जो जावह पातिग दूर ॥
 भली भावना भावइ जी जाइ उपसरग दूर ॥ ३ ॥ गुण० ॥
 संमत सत्रासइ इकोत्तरइ जी कीधो प्रथम अभास ॥
 जे नर नारी सांभलो जी तस मन होइ उलास ॥ ४ ॥ गुण० ॥
 राखी नगर सो पावणो जी वसइ तहां सरावक लोक ॥
 देव गुरा नारा गाया जी लाजइ सप्रला लोक ॥ ५ ॥ गुण० ॥
 गुजराति गच्छ जाणीयइ जी श्री पूज्य जी जसराज ॥
 आचारइ करो सोभतो जी सं.....वीरज रूपराज ॥ ६ ॥ गुण० ॥
 तस गछ माहि सोभता जी सोभा थिवर सुजाण ॥
 मोहला जी ना जस घणा जी सीव्या बुद्धि निधान ॥ ७ ॥ गुण० ॥
 वीर वचन कहइ वीरज हो तस पाटे धरमदास ॥
 भाऊ थिवर वरवाणीयइ जी पंडित गुणहि निवास ॥ ८ ॥ गुण० ॥
 तस सेवक इम वीनवइ जी चतर कहइ चितलाय ॥
 गुणभरता गुणता भावसूजी तस मन वंछित थाय ॥ ९ ॥ गुण० ॥

॥ इति श्रीचंदनमलयागिरिचरित्रसमाप्तं ॥

२५६५. चन्दनषष्टिकथा—अ० श्रुतसागर । पत्र सं० ४ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—कथा । १० कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७० । क भण्डार ।

विशेष—इ भण्डार में एक प्रति वे० सं० १६६ की और है ।

२५६६. चन्दनषष्टिकथा..... । पत्र सं० २४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
 १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८ । घ भण्डार ।

विशेष—अन्य कथायें भी हैं ।

२५६७. चन्दनषष्टिप्रतकथाभाषा—खुशालचंद काला । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ इंच । विषय—
 कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६१ । क भण्डार ।

२५६८. चंद्रहंसकी कथा—टीकम । पत्र सं० ७० । आ० १५×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।
 १० काल सं० १७०८ । ले० काल सं० १७३३ । पूर्ण । वे० सं० २० । घ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त सिन्दूरप्रकरण एकीभाव स्तोत्र आदि और हैं ।

२५६६. चारमित्रों की कथा—अजयराज । पत्र सं० ५ । आ० १०^३×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल सं० १७२१ ज्येष्ठ सुदी १३ । ले० काल सं० १७३३ । पूर्ण । वे० सं० ५५३ । च भण्डार ।

२५७०. चित्रसेनकथा..... । पत्र सं० १८ । आ० १२×५^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल सं० १८२१ पौष बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० २२ । व्य भण्डार ।

विशेष—श्लोक संख्या ४६५ ।

२५७१. चौआराधनाउद्योतककथा—जोधराज । पत्र सं० ६२ । आ० १२^३×७^३ इंच । भाषा—
हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६४६ मंगसिर सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० २२ । घ भण्डार ।

विशेष—सं० १८०१ की प्रति से लिखी गई है । जमनालाल साह ने प्रतिलिपि की थी ।

सं० १८०१ चाकसू" इतना और लिखा है । मूल्य—५) ≡) ॥) इस तरह कुल ५।≡ लिखा है ।

२५७२. जयकुमारमुलोचनाकथा..... । पत्र सं० १६ । आ० ७×८^३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६ । छ भण्डार ।

२५७३. जिनगुणसंपत्तिकथा..... । पत्र सं० ४ । आ० १०^३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल सं० १७८५ चैत्र बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ३११ । अ भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में (वे० सं० १८८) की एक प्रति और है जिसकी जयपुर में मांगीलाल बज ने
प्रतिलिपि की थी ।

२५७४. जीवजीतसंहार—जैतराम । पत्र सं० ५ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसमें कवि ने मोह और चेतन के संग्राम का कथा के रूप में वर्णन किया है ।

२५७५. ज्येष्ठजिनवरकथा..... । पत्र सं० ४ । आ० १३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८३ । व्य भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में (वे० सं० ४८४) की एक प्रति और है ।

२५७६. ज्येष्ठजिनवरकथा—जसकीर्ति । पत्र सं० ११ से १४ । आ० १२×५^३ इंच । भाषा—
हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १७३७ आसोज बुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० २०८० । अ
भण्डार ।

विशेष—जसकीर्ति देवेंद्रकीर्ति के शिष्य थे ।

२५७७. ढोलामारुवणी चौपई—कुशललाभगणि । पत्र सं० २८ । आ० ८×४ इंच । भाषा—
हिन्दी (रातस्थानी) । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३८ । छ भण्डार ।

२५७८. ढोलामारुणीकीबात... । पत्र सं० २ से ७७ । आ० ६×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६०० आषाढ सुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० १५६१ । ट भण्डार ।

विशेष—१, ४, ५ तथा ६ठा पत्र नहीं है ।

हिन्दी गद्य तथा दोहे हैं । कुल ६८८ दोहे हैं जिनमें ढोलामारु की बात तथा राजा नल की विपत्ति आदि का वर्णन है । अन्तिम भाग इस प्रकार है—

मारुजी पीहरनै कागद लिखि प्रोहित नै सोख दोनी । ई भाति नरवल को राज करै छै । मारुजी की कूँख कंवर लिछमण स्यंघ जी हुवा । मालवण की कूँख कंवर वीरभाण जी हुवा । दोग कंवर ढोला जी क हुवा । ढोला जी की मारुजी को श्री महादेव जी की किरपा सु अमर जोड़ी हुई । लिछमण स्यंघ जी कंवर सुं श्रीलाद कुछाहा की चाली । ढोला सुं राजा रामस्यंघ जी ताई पीढी एक सौदस हुई । राजाधिराज महाराजा श्री सवाई ईसरीसिहजी तौड़ी पीढी एक सौ चार हुई ॥

इति श्री ढोलामारुजी वा राजा नल का विषा की वारता संपूरण । मितेी साढ सुदी ८ बुधवार सं० १६०० का लिछमणराम चांदवाड की पोथी सु उतार लिखितं.....रामगंज में.....

पत्र ७७ पर कुछ शृंगार रस के कवित्त तथा दोहे हैं । बुधराम तथा रामचरण के कवित्त एवं गिरधर की कुंडलियां भी हैं ।

२५७९. ढोलामारुणी की बात..... । पत्र सं० १ । आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६० । ट भण्डार ।

विशेष—५२ पद्य तक गद्य तथा पद्य मिश्रित हैं । बीच बीच में दोहे भी दिये गये हैं ।

२५८०. एमोकारमंत्रकथा..... । पत्र सं० ४२ से ७१ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३७ । ङ भण्डार ।

विशेष—एमोकार मन्त्र के प्रभाव की कथायें हैं ।

२५८१. त्रिकालचौबीसीकथा (रोटीजकथा)—पं० अभ्रदेव । पत्र सं० २ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० २६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३०८) की और है ।

२५८२. त्रिकालचौबीसी (रोटीज) कथा—गुणनन्दि । पत्र सं० २ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० ४८२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३३७) स्व भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २५४)
इ भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० ६६२, ६६३, ६६४) और हैं ।

२५८३. त्रिलोकसारकथा.....। पत्र सं० १२ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।
१० काल सं० १६२७ । ले० काल सं० १८५० ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३८७ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

सं० १८५० शके १७१५ मिति ज्येष्ठ शुक्ला ७ रविदिने लिखायितं पं० जी श्री भागचन्दजी साल कोटै
पधारया ब्रह्मचारीजी शिवसागरजी चेलान लेबा । दक्षण्याकैर उं भाई कै राडि हुई सूबादार तकूजी भाग्यो राजा जी की
फने हुई । लिखितं गुरुजी मेघराज नगरमध्ये ।

२५८४. दत्तात्रय.....। पत्र सं० ३६ । आ० १३३×६३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १०
१० काल × । ले० काल सं० १६१५ । पूर्ण । वे० सं० ३४१ । ज भण्डार ।

२५८५. दर्शनकथा—भारामल्ल । पत्र सं० २३ । आ० १२×७३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४१४) क भण्डार में १ प्रति (वे० सं०
२६३) अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३६) च भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ५८६) तथा ज भण्डार में ३ प्रतियां
(वे० सं० २६५, २६६, २६७) और हैं ।

२५८६. दर्शनकथाकोश.....। पत्र सं० २२ से ६० । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८ । छ भण्डार ।

२५८७. दशमूर्खोंकी कथा.....। पत्र सं० ३६ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।
१० काल × । ले० काल सं० १७४६ । पूर्ण । वे० सं० २६० । इ भण्डार ।

२५८८. दशलक्षकथा—लोकसेन । पत्र सं० १२ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल सं० १८६० । पूर्ण । वे० सं० ३५० । अ भण्डार ।

विशेष—घ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ३७, ३८) और हैं ।

२५८९. दशलक्षकथा.....। पत्र सं० ५ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१३ । अ भण्डार ।

विशेष—इ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३०२) की और है ।

२५९०. दशलक्षव्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०७ । अ भण्डार ।

२५६१. दानकथा—भारामल्ल । पत्र सं० १८ । आ० ११^३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६७९) क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३०४) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३०४) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १८०) तथा ज भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २६८) और है ।

२५६२. दानशीलतपभावनाका चोढाल्या—समयसुन्दरगणि । पत्र सं० ३ । आ० १०×४^३ इंच ।
भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१७६) की और है । जिस पर केवल दान शील तप
भावना ही दिया है ।

२५६३. देवराजबच्छराज चौपई—सोमदेवसूरि । पत्र सं० २३ । आ० ११×५^३ इञ्च । भाषा—
हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०७ । छ भण्डार ।

२५६४. देवलोकनकथा..... । पत्र सं० २ से ५ । आ० १२×५^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल सं० १८५३ कार्तिक सुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० १९६१ । अ भण्डार ।

२५६५. द्वादशव्रतकथा—पं० अभ्रदेव । पत्र सं० ७ । आ० ९×५^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२५ । क भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ७३ एक ही वेष्टन) और हैं ।

२५६६. द्वादशव्रतकथासंग्रह—ब्रह्मचन्द्रसागर । पत्र सं० २२ । आ० १२×६^३ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
१० काल × । ले० काल सं० १८५४ बैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न कथायें और हैं ।

मौन एकादशीकथा— ब्र० ज्ञानसागर भाषा— हिन्दी ।

श्रुतस्कंधव्रतकथा— " " "

कोकिलापंचमीकथा— ब्र० हर्षा " हिन्दी १० काल सं० १७३६

जिनगुणसंपत्तिकथा— ब्र० ज्ञानसागर भाषा— हिन्दी ।

रात्रिभोजनकथा— — " "

२५६७. द्वादशव्रतकथा..... । पत्र सं० ७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०० । अ भण्डार ।

विशेष—पं० अभ्रदेव की रचना के आधार पर इसकी रचना की गई है ।

अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १७२, ४३६ तथा ४४०) और हैं ।

२५६८. धनदत्त सेठ की कथा.....। पत्र सं० १४ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×७ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १० काल सं० १७२५ । ले० काल × । वे० सं० ६८३ । अ भण्डार ।

२५६९. धन्नाकथानक.....। पत्र सं० ६ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७ । घ भण्डार ।

२६००. धन्नासालिभद्रचौपई.....। पत्र सं० २४ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । मुगलकालीन कला के ३८ सुन्दर चित्र हैं । २४ में आगे के पत्र नहीं हैं । प्रति अधिक प्राचीन नहीं है ।

२६०१. धर्मबुद्धिचौपई—लालचन्द । पत्र सं० ३७ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । विषय—कथा । भाषा—हिन्दी पद्य । १० काव सं० १७३६ । ले० काल सं० १८३० भादवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ६० । ख भण्डार ।

विशेष—खरतरगच्छपति जिनचन्द्रसूरि के शिष्य विजैराजगणि ने यह ढाल कही है । (पूर्ण परिचय दिया हुआ है ।

२६०२. धर्मबुद्धिपापबुद्धिकथा.....। पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल सं० १८५५ । पूर्ण । वे० सं० ६१ । ख भण्डार ।

२६०३. धर्मबुद्धिमन्त्रीकथा—बुन्दावन । पत्र सं० २४ । आ० ११×५ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । १० काल सं० १८०७ । ले० काल सं० १६२७ सावण बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । क भण्डार ।

नंदीश्वरकथा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ८ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६२ ।

विशेष—सांगानेर में ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) सं० १७८२ की लिखी हुई और है ।

२६०५. नंदीश्वरविधानकथा—हरिषेण । पत्र सं० १३ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६५ । क भण्डार ।

२६०६. नंदीश्वरविधानकथा.....। पत्र सं० ३ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७३ । ट भण्डार ।

२६०७. नागमंता.....। पत्र सं० १० । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी (राजस्थानी) । विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६३ । अ भण्डार ।

विशेष—आदि अंत भाग निम्न प्रकार है ।

श्री नागमंता लिख्यते—

नगर हीरापुर पाटण भणीयइ, माहि हर केशरदेव ।
 नमणि करइ वर नांम लेई नइ, करइ तुम्हारी सेव ॥१॥
 करइ तुम्हारी सेवनइ, वसिगराइ तेडावीया ।
 काल कंकोडनइ तित्यगित्तंयर, अवर वेग बोलावीया ॥२॥
 नाद वेद आणंद अधिका, करइ तुम्हारी सेव ।
 नगर हीरापुर पाटण भणीयइ, माहि हर केशरदेव ॥३॥
 राउ देहरासर बइठउ, आणे निरमल नीर ।
 डंक गयउ भागीरथी, समुद्रइ पइलइ तीर ॥४॥
 नीर लेई डंक मोकल्पउ लागी अति घणवार ।
 आपं सवारथ पडीउ लोभइ, समुद्रइ पइलेपार ॥५॥
 सहस्र अठ्यासी जिहां देवता, जाई तिणवनि पइठउ ।
 गंगा तणउ प्रवाह जु आयउ, राउ देहरा सरवइ छउ ॥६॥
 राम मोकल्या छे वाडीये, आणे सुर ही जाइ ।
 आणे सुरही पातरी, आणे सुरही भाइ ॥७॥
 आणे सुरही भाइ नइ, आणे सुगंधी पातरी ।
 आकतुल छीनइ पाषची, करि कण बीर सुरातडी ॥८॥
 जाइ बेउल करणउ, केनडो राइ मच कुंद जु सारी ।
 पुष्क करंडक भरीनइ, आथो राइमो कल्याछइ बाडी ॥९॥

३ तम—

एक कामिणि अवर बाली, विछोही भरतार ।
 उंक तणइ शिर बरसही, ताल्हण अमी संचारि ॥
 ताल्हण अमीय संचारि, मुझ प्रिय मरइ अषूटइ ।
 बाजि लहरि विष घंघालिउ, ताल्ह धवल नइ ऊठइ
 रुदन करइ मुख धाह हउं मु सनेहा टाली ।
 विछोही भरतार एक कामिणि अरु बाली ॥३॥
 डाकसुंडा कल बाजही, बहु कांसी भमकार ।

चंद्र रोहिणी जिम मिलिउं, तिम धरु मिली भरतार नइ ॥

तित्य गिरांणउ तूठउ बोलइ, अमीयविष गयउ छंडी ।

डंक तरणइ शिर वूठउ, उठिउ नाह हुई मन संती ॥

मूंध मंगलक छाजइ,..... ।

बहु कांसी भुमकार डाक छंडा कल वाजइ ॥

इति श्री नागमंता संपूर्णम् । ग्रन्थाग्रन्थ ३००७

पोथी आ० मेरुकीति जी की ॥ कथा के रूप में है । प्रति अशुद्ध लिखी हुई है ।

२६०८. नागश्रीकथा—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र सं० १६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८२३ चैत्र सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३६७) तथा ज भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १०८) की
घोर है ।

ज भण्डार वाली प्रति की गरूढमलजी गोधा ने मालपुरा में प्रतिलिपि की थी ।

२६०९. नागश्रीकथा—किशनसिंह । पत्र सं० २ ७५ । आ० ७३×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
कथा । २० काल सं० १७७३ सावण सुदी ६ । ले० काल सं० १७८५ पौष बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । ज
भण्डार ।

विशेष—जोबनेर में सोनपाल ने प्रतिलिपि की थी । ३६ पत्र से आगे भद्रबाहु चरित्र हिन्दी में है किन्तु
अपूर्ण है ।

२६१०. निःशल्याष्टमीकथा..... । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० २११७ । अ भण्डार ।

२६११. निशिभोजनकथा—ब्रह्मनेमिदत्त । पत्र सं० ४० से ५५ । आ० ८३×६ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८७ । अ भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६८) की घोर है जिसकी कि सं० १८०१ में महाराजा ईश्वर
सिंहजी के शासनकाल में जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२६१२. निशिभोजनकथा..... । पत्र सं० २१ । आ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । क भण्डार ।

२६१३. नेमिव्याहलो..... । पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२५५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

नरसरीपुरी राजियाहु समदविजय राय धारो ।
तस नंदन श्री नेमजी हुं सावल वरण सरीरो ॥
धन धन अदे छी ज्यो तेव राजसदरसण करता ।
दालदरनासै जीनमो सो सोरजी हुं हुतो ॥
समदवजजी रो नंद अतेरो ले आवण जी ।
हुतो सावली हुं श्री रो नमे कल्याण सु पावणो जी ॥

प्रति अशुद्ध एवं जीर्ण है ।

२६१४. नेमिराजलब्याहलो—गोपीकृष्ण । पत्र सं० ६ । आ० १०×४^१/_२ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल सं० १८६३ प्र० सावण बुदी ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२५० । अ. भण्डार ।

प्रारम्भ—

श्री जिण चरण कमल नमो नमो अणगार ।
नेमनाथ र ढाल तणे व्याहव थहुं सुखदाय ॥
द्वारामती नगरी भली सोरठ देस मभार ।
इन्द्रपुरी सी ऊपमा सुंदर बहु विस्तार ॥
चौडा नो जोजण तिहां लांबा वारा जाण ।
साठि कोठि घर मांहि रे वाहर थहत्तर प्रमाण ॥२॥

अन्तिम—

राजल नेम तणो व्याहलो जी गावसी जो नरनारी ।
भण गुण सुणसी भलो जी पावसी सुख अपार ॥

कलश—

प्रथम सावण चोथ सुकली वार मंगलवार ए ।
संवत् अठारा वरस तरेसठि मांग जुल मुभार ए ।
श्री नेम राजल कसन गोपी तास चरत वखानइ ।
सुतार सीखा ताहि ताहि भाखी कही कथा प्रमाण ए ॥

इति श्री नेम राजल विवाहलो संपूर्ण ।

इससे आगे नव भव की ढाल बी है वह अपूर्ण है ।

२६१५. पंचास्थान—विष्णु शर्मा । पत्र सं० १ । आ० १२^३/_४×५^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २००६ । अ. भण्डार ।

विशेष—केवल ६३वां पत्र है । ऊ. भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ४०१) अपूर्ण और है ।

२६१६. परमरामकथा..... पत्र सं० ६ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१७ । अ भण्डार ।

२६१७. पल्लविधानकथा—खुशालचन्द्र । पत्र सं० २१ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी पद्य ।
विषय-कथा । २० काल सं० १७८७ फागुन बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २० । भ्र भण्डार ।

२६१८. पल्लविधानत्रयोपाख्यानकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ११७ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा-
संस्कृत । विषय-कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५४ । क भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) तथा ज भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ८३) जिसका
ले० काल सं० १६१७ शाके है और है ।

२६१९. पात्रदानकथा—ब्रह्म नेमिदत्त । पत्र सं० ५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७८ । अ भण्डार ।

विशेष—आमेर में पं० मनोहरलालजी पाटनी ने लिखी थी ।

२६२०. पुण्याश्रवकथाकोश—मुमुक्षु रामचन्द्र । पत्र सं० २०० । आ० ११×४ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६८ । क भण्डार ।

विशेष—डू भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४६७) तथा छू भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६६, ७०)
और हैं किन्तु तीनों ही अपूर्ण हैं ।

२६२१. पुण्याश्रवकथाकोश—दौलतराम । पत्र सं० २४८ । आ० ११३×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी
पद्य । विषय-कथा । २० काल सं० १७७७ भाद्रवा सुदी ५ । ले० काल सं० १७८८ मंगसिर बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं०
३७० । अ भण्डार ।

विशेष—अहमदाबाद में श्री अभयमेन ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ४३३,
४०६, ८६५, ८६६, ८६७) तथा डू भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६८, ४६९) तथा
चू भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६३५) छू भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७७) जू भण्डार में १ प्रति (वे० सं०
१३) भ्र भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २६८) तथा ट भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६४६) और है ।

२६२२. पुण्याश्रवकथाकोश..... पत्र सं० ९४ । आ० १६×७३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा ।
२० काल × । ले० काल सं० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ५८ । ग भण्डार ।

विशेष—कालूराम साह ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि खुशालचन्द्र के पुत्र सोनपाल से कराकर चौधरियों के मंदिर
में चढ़ाई ।

इसके अनतिरिक्त डू भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४६२) तथा जू भण्डार में एक प्रति (वे० सं०
२६०) [अपूर्ण] और हैं ।

२६२३. पुण्याश्रवकथाकोश—टेकचन्द । पत्र सं० ३४१ । आ० ११३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—कथा । २० काल सं० १६२८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६७ । क भण्डार ।

२६२४. पुण्याश्रवकथाकोश की सूची..... । पत्र सं० ४ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । झ भण्डार ।

२६२५. पुष्पांजलीव्रतकथा—श्रुतकीर्ति । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६) और है ।

२६२६. पुष्पांजलीव्रतकथा—जिनदास । पत्र सं० ३१ । आ० १०^१/_४×८^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६७७ फागुण बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ४७४ । क भण्डार ।

विशेष—यह प्रति बागड़ देश स्थित घाटसल नगर में श्री वासुपूज्य चैत्यालय में ब्रह्म ठाकरसी के शिष्य
गणदास ने लिखी थी ।

२६२७. पुष्पांजलीव्रतविधानकथा..... । पत्र सं० ६ से १० । आ० १०×४^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१ । च भण्डार ।

२६२८. पुष्पांजलीव्रतकथा—खुशालचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १२×५^३/_४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६४२ कार्तिक बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३०० । ख भण्डार ।

विशेष—ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) की और है जिसे महात्मा जोशी पन्नालाल ने जयपुर
में प्रतिलिपि की थी ।

२६२९. बैतालपञ्चीसी..... । पत्र सं० ५५ । आ० ८^३/_४×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५० । च भण्डार ।

२६३०. भक्तामरस्तोत्रकथा—नथमल । पत्र सं० ८६ । आ० १०^३/_४×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
कथा । २० काल सं० १८२६ । ले० काल सं० १८५६ फाल्गुण बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २५५ । ड भण्डार ।

विशेष—च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७३१) और है ।

२६३१. भक्तामरस्तोत्रकथा—विनोदीलाल । पत्र सं० १५७ । आ० १२^३/_४×७^३/_४ इञ्च । भाषा—हिन्दी
पद्य । विषय—कथा । २० काल सं० १७४७ सावन सुदी २ । ले० काल सं० १६४६ । अपूर्ण । वे० सं० २२०१ । अ
भण्डार ।

विशेष—बीच का केवल एक पत्र कम है ।

इसके अतिरिक्त ड भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५५३, ५५४) छ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं०
१=१, २२८) तथा झ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १२६) की और हैं

२६३२. भक्तामरम्नोत्रकथा—पद्मलाल चौधरी । पत्र सं० १२८ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल सं० १६३१ फागुण सुदी ४ । ले० काल सं० १६३८ । पूर्ण । वे० सं० ५४० । क भण्डार ।

२६३३. भोजप्रबन्ध..... । पत्र सं० १२ से २५ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२५६ । अ भण्डार ।

विशेष—इ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७६) की ओर है ।

२६३४. मधुकैटभबध (महिषासुरबध)..... । पत्र सं० २३ । आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३५३ । अ भण्डार ।

२६३५. मधुमालतीकथा—चतुर्भुजदास । पत्र सं० ४८ । आ० ६×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६२८ फागुण बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ५८० । इ भण्डार ।

विशेष—पद्य सं० ६२८ । सरदारमल गोधा ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । अन्त के ५ पत्रों में स्तुति दी हुई है । इसी भण्डार में १ प्रति [अपूर्ण] (वे० सं० ५८१) तथा १ प्रति (वे० सं० ५८२) की [पूर्ण] ओर है ।

२६३६. मृगापुत्रचउडाला..... । पत्र सं० १ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३७ । अ भण्डार ।

विशेष—मृगारानी के पुत्र का चौडाला है ।

२६३७. माधवानलकथा—आनन्द । पत्र सं० २ से १० । आ० ११×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०६ । ट भण्डार ।

२६३८. मानतुंगमानवतिचौपई—मोहनविजय । पत्र सं० २६ । आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८५१ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५३ । छ भण्डार ।

विशेष—आदि अन्तभाग निम्न प्रकार है—

आदि—

ऋषभ त्रिगुणं पदांबुजे, मधुकर करी लीन ।
 आगम गुण मोडमवर, अति आरद थी लीन ॥१॥
 यान पान सम जिनकर, तारण भवनिधि नीय ।
 आप तर्या तारै अवर, तेहने प्रणरति होड ॥२॥
 भात्रे प्रणमुं भारती, वरदाना मुत्रिजान ।
 बावन अच्यर की भरयो, अच्य खत्रानो जान ॥३॥

शुक्र करया केई शनि थका, एह बीजे हनी सांकि ।

किम मूंकाइं तेहना, पद नीको विषे भक्ति ॥४॥

ग्रन्थम— पूर्ण काय मुनीचंद्र सुव वर्ष, बुद्धि मास शुचि पक्षे है । (आगे पत्र फटा हुआ है) ४७ ढाल हैं ।

२६३६. मुक्तावलित्रतकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८७३ पौष बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—यति दयाचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

२६५०. मुक्तावलित्रतकथा—सोमप्रभ । पत्र सं० ११ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८५५ सावन सुदी २ । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में नेमिनाथ चैत्यालय में कानूलाल के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२६४१. मुक्तावलिबिधानकथा..... । पत्र सं० ६ से ११ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—अपभ्रंश ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १५४१ फाल्गुन सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० १६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १५४१ वर्षे फाल्गुन सुदी ५ श्रीमूलसंधे बलात्कारगणो सरस्वतीगच्छे श्रीकुंदाकुंदाचार्यान्वये
भट्टारिक श्रीपद्मनंदिदेवा तत्पट्टे भट्टारिक श्रीशुभचंद्रदेवा तत्सिष्य मुनि जिनचन्द्रदेवा खंडेलवालान्वये भावसागोत्रे संघवी
खेता भार्या होली तत्पुत्राः संघवी चाहड, आसल, कालू, जालप, लखमण तेषां मध्ये संघवी कालू भार्या कौलसिरी तत्पुत्रा
हेमराज रिषभदास तैने री साह हेमराज भार्या हिमसिरी एतं रिद्रं रोहिणीमुक्तावलीकथानकं लिखापतं ।

२६४२. मेघमालात्रतोद्यापनकथा..... । पत्र सं० ११ । आ० १२×६३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१ । घ भण्डार ।

विशेष—च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७६) और है ।

२६४३. मेघमालात्रतकथा..... । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । अ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४) की और है ।

२६४४. मेघमालात्रतकथा—खुशालचंद्र । पत्र सं० ५ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८१ । क भण्डार ।

२६४५. मौनित्रतकथा—गुणभद्र । पत्र सं० ५ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४१ । व्य भण्डार ।

२६४६. मौनव्रतकथा.....। पत्र सं० १२। मा० ११३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८२। घ भण्डार।

२६४७. यमपालमातंगकीकथा.....। पत्र सं० २६। मा० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
कथा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५१। ख भण्डार।

विशेष—इस कथा से पूर्व पत्र १ से ६ तक पद्मरथ राजा दृष्टान्त कथा तथा पत्र १० से १६ तक पंच
नमस्कार कथा दी हुई है। कहीं २ हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है। कथायें कथाकोश में से ली गई हैं।

२६४८. रत्नाबंधनकथा—नाथूराम। पत्र सं० १२। मा० १२३×८ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य।
विषय-कथा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६१। अ भण्डार।

२६४९. रत्नाबंधनकथा.....। पत्र सं० १। मा० १०३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा।
२० काल ×। ले० काल म १८३५ सावन मुदी २। वे० सं० ७३। इ भण्डार।

२६५०. रत्नत्रयगुणकथा—पं० शिवजीलाल। पत्र सं० १०। मा० ११३×५ इंच। भाषा-संस्कृत।
विषय-कथा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७२। अ भण्डार।

विशेष—ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५७) और है।

२६५१. रत्नत्रयविधानकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० ४। मा० ११३×६ इंच। भाषा-संस्कृत।
विषय-कथा। २० काल ×। ले० काल सं० १६०४ श्रावण बुदी १४। पूर्ण। वे० सं० ६५२। इ भण्डार।

विशेष—इ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७३) और है।

२६५२. रत्नावलिब्रतकथा—जोशी रामदास। पत्र सं० ४। मा० ११×४ इंच। भाषा-संस्कृत।
विषय-कथा। २० काल ×। ले० काल सं० १६६६। पूर्ण। वे० सं० ६३४। क भण्डार।

२६५३. रविब्रतकथा—श्रुतसागर। पत्र सं० १८। मा० ६३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६। ज भण्डार।

२६५४. रविब्रतकथा—देवेन्द्रकीर्ति। पत्र सं० १८। मा० ६×३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-
कथा। २० काल सं० १७८५ ज्येष्ठ मुदी ६। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४०। इ भण्डार।

२६५५. रविब्रतकथा—भाऊकवि। पत्र सं० १०। मा० ६३×६ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-
कथा। २० काल ×। ले० काल सं० १७६५। पूर्ण। वे० सं० ६६०। अ भण्डार।

विशेष—इ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४), ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४१), क भण्डार
में एक प्रति (वे० सं० ११३) तथा ट भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७५०) और है।

२६५६. राठौडरतनमहेशदशोत्तरी पत्र सं० ३ से ८ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—हिन्दी

[राजस्थानी] विषय—कथा । १० काल सं० १५१३ वैशाख शुक्ला ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७७ । अ
भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

दाहा—

सावित्रीउमया श्रीया आगै साम्ही आई ।

मुंदर सोचनै, इंदिर लइ बघाइ ॥१॥

हूया धवलि मंगल हरष वधीया नेह नवल ।

सूर रतन सतीयां सरीस, मिलीया जाइ महल्ल ॥२॥

औ मुरनर फुरउधरे, वैकुंठ कीधावास ।

राजा रयणायरतणी, जुग अविचल जस वास ॥३॥

पल वैशाखह तिथि नवमी पनरौतरै वरस्स ।

वार शुक्ल डोयाविहद, हीवू तुरक वहस्स ॥४॥

जोडि भगै खिडीयो जगै, रासो रतन रसाल ।

सूरा पूरा संभलउ, भउ मोटा भूपाल ॥५॥

दिली राउ वाका उजेणी रासा का च्यार तुगर हिसी कपि बात कैसी ॥ इति श्री राठौडरतन महेश
दासोत्तसरी वचनिका संपूर्ण ।

२६५७. रात्रिभोजनकथा—भारामल्ल । पत्र सं० ८ । आ० ११३×८ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—कथा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१५ । अ भण्डार ।

२६५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ६०६ । च भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम निशिभोजन कथा भी है ।

२६५९. रात्रिभोजनकथा—किशनसिंह । पत्र सं० २४ । आ० १३×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—कथा । १० काल सं० १७७३ श्रावण सुदी ६ । ले० काल सं० १६२८ भाद्रवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६३५ ।
क भण्डार ।

विशेष—ग भण्डार में १ प्रति और है जिसका ले० काल सं० १८८३ है । कालूराम साह ने प्रतिलिपि
कराई थी ।

२६६०. रात्रिभोजनकथा..... पत्र सं० ४ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६६ । ख भण्डार ।

विशेष—ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६१) और है ।

२६६१. रात्रिभोजनचौपई.....। पत्र सं० २ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३१ । अ भण्डार ।

२६६२. रूपसेनचरित्र.....। पत्र सं० १७ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६० । छ भण्डार ।

२६६३. रैदव्रतकथा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१२ । अ भण्डार ।

२६६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १८३५ ज्येष्ठ सुदी ९ । वे० सं० ७४ । छ
भण्डार ।

विशेष—लशकर (जयपुर) के मन्दिर में केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८५७) तथा छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं०
६६१) की ओर है ।

२६६५. रैदव्रतकथा.....। पत्र सं० ४ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३६ । क भण्डार ।

विशेष—अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३६५) की है जिसका ले० काल सं० १७८५ आसोज सुदी
४ है ।

२६६६. रोहिणीव्रतकथा—आचार्य भानुकीर्ति । पत्र सं० १ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८८८ जेष्ठ सुदी ९ । वे० सं० ९०८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६७) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४) तथा ज
भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७२) ओर है ।

२६६७. रोहिणीव्रतकथा.....। पत्र सं० २ । आ० ११×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६९२ । अ भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६६७) तथा क भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६५) जिसका
ले० काल सं० १९१७ वैशाख सुदी ३ ओर है ।

२६६८. लघ्विविधानकथा—पं० अन्नदेव । पत्र सं० ९ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६०७ भाद्रवा सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ३१७ । च भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति का संक्षिप्त निम्न प्रकार है—

संवत् १६०७ वर्षे भाद्रवा सुदी १४ सोमवासरे श्री आदिनाथचैत्यालये तक्षकगढमहादुर्गे महाराज

श्रीरामचंद्रराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलसंधे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये.....मंडलाचार्य धर्मचन्द्राम्नाये
खण्डेलवालान्वये अजमेरागोत्रे सा. पद्या तद्भार्या केलमदे..... सा. कालू इदं कथा..... मंडलाचार्य धर्मचन्द्राय
दत्तं ।

२६६६. रोहिणीविधानकथा.....। पत्र सं० ८ । आ० १०×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-कथा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । अ भण्डार ।

२६७०. लोकप्रत्याख्यानधर्मिलकथा.....। पत्र सं० ७ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
कथा । ले० काल × । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५० । अ भण्डार ।

विशेष—श्लोक सं० २४३ हैं । प्रति प्राचीन है ।

२६७१. वारिषेणमुनिकथा—जोधराजगोदीका । पत्र सं० ५ । आ० ६×५ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-कथा । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ । पूर्ण । वे० सं० ६७४ । उ भण्डार ।

विशेष—चूहामल विलाला ने प्रतिलिपि की गयी थी ।

२६७२. विक्रमचौबीलीचौपई—अभयचन्दसूरि । पत्र सं० १३ । आ० ६×४३ इंच । भाषा-
हिन्दी । विषय-कथा । २० काल सं० १७२४ आषाढ बुदी १० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६२१ । ट
भण्डार ।

विशेष—मतिमुन्दर के लिए ग्रन्थ की रचना की थी ।

२६७३. विष्णुकुमारमुनिकथा—श्रुतसागर । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१० । अ भण्डार ।

२६७४. विष्णुकुमारमुनिकथा.....। पत्र सं० ५ । आ० १०×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७५ । ख भण्डार ।

२६७५. वैदरभीविवाह—पेमराज । पत्र सं० ६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२५४ । अ भण्डार ।

विशेष—आदि अन्तभाग निम्न प्रकार है—

दोहा—

जिण धरम माही दीपता करो धरम सुरंग ।

सो राधा राजा राणेड ढाल भवहु रंग ॥१॥

रंग चिणरत्य न भावसी किंवता करो विचार ।

पढता सवि मुख संपजे हुरस भान हानइ भाव ॥

मुख मामणे हो रंग महल नें निस भार पोढी सेजजी ।

दोध अनता उफण्या जाणेनदार विछोराछ मेहजी ॥

अन्तिम—

कवनाथ मुजाण छै वैदरभी वेस्वार ।
 सुख अनंता भोगिया बेंले हुवा अणगार ॥
 दान देई चारित लीयी होवा तो जय जयकार ।
 पेमराज गुरु इम भणी, मुक्त गया तत्काल ॥
 भणी गुणी जे सांभली वैदरभी तरणी विवाह ।
 भएण तास वे सुख संपजे पहुत्या मुक्त मभार ।
 इति वैदरभी विवाह संपूर्ण ॥

गन्य जीर्ण है । इसमें काफी ढालें लिखी हुई हैं ।

२६७६. व्रतकथाकोश—श्रुतसागर । पत्र सं० ७६ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
 कथा । २० काल × । ले० काल × । प्रपूर्णा । वे० सं० ८७८ । अ भण्डार ।

२६७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १६४७ कार्तिक सुदी ३ । वे० सं० ६७ । छ
 भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६४७ वर्षे कार्तिक सुदि ३ बुधवारे इदं पुस्तकं लिखायतं श्रीमदकाष्ठासंघे नंदीतरगच्छे
 विद्यागणे भट्टारक श्रीराममेनान्वये तदनुक्रमे भट्टारक श्रीसोमकीर्ति तत्पुत्रे भ० यशःकीर्ति तत्पुत्रे भ० श्रीउदयसेन तत्प-
 ट्टाधारणश्रीर भ० श्रीत्रिभुवनकीर्ति तत्शिष्य ब्रह्मचारि श्री नरवत इदं पुस्तिका लिखापितं खंडेलवालजातीय कासलीवाल
 गोत्रे माह केशव भार्या लाडी तत्पुत्र ६ बृहद पुत्र जीनो भार्या जमनादे । द्वि० पुत्र खेमसी तस्य भार्या खे-लदे तृ० पुत्र
 इमर तस्य भार्या अहंकारदे, चतुर्थ पुत्र नानू तस्य भार्या नायकदे, पंचम पुत्र साह वाला तस्य भार्या बालमदे, षष्ठ पुत्र
 लाला तस्य भार्या ललतादे, तेषांमध्ये साह वालेन इदं पुस्तकं कथाकोशनामधेयं ब्रह्म श्री नर्वदावै ज्ञानावर्णिकर्मक्षयार्थं
 लिखाप्य प्रदत्तं । लेखक लपमन श्वेतांबर ।

संवत् १७४१ वर्षे माहा सुदि ५ सोमवासरे भट्टारक श्री ५ विश्वसेन तस्य शिष्य मंडलाचार्य श्री ३ जय-
 कीर्ति पं० दीपचंद पं० मयाचंद युक्तै ।

२६७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७३ मे १२६ । ले० काल १५८६ कार्तिक सुदी २ । प्रपूर्णा । वे० सं०
 ७४ । छ भण्डार ।

२६७९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८० । ले० काल सं० १७६५ फागुण बुदी ६ । वे० सं० ६३ । छ
 भण्डार ।

इनके अतिरिक्त क भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६७५, ६७६) ड भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६८८)
 तथा ट भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २० ७३, २१००) और हैं ।

२६८०. व्रतकथाकोश—पं० दामोदर । पत्र सं० ६ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
 कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ६७३ । क भण्डार ।

२६८१. व्रतकथाकोश—सकलकीर्त्ति । पत्र सं० १६४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८७६ । अ भण्डार ।

विशेष—छ् भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७२) की और है जिसका ले० काल सं० १८६६ सावन बुदी ५ है । श्वेताम्बर पृथ्वीराज ने उदयपुर में जिसकी प्रतिलिपि की थी ।

२६८२. व्रतकथाकोश—देवेन्द्रकीर्त्ति । पत्र सं० ८६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८७७ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के अनेक पत्र नहीं हैं । कुछ कथायें पं० दामोदर की भी हैं । क भण्डार में १ अपूर्ण प्रति (वे० सं० ६७४) और है ।

२६८३. व्रतकथाकोश..... । पत्र सं० ३ से १०० । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत अपभ्रंश । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६०६ फागुण बुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ८७६ । अ भण्डार ।

विशेष—बीच के २२ मे २५ तथा ६५ से ६६ तक के भी पत्र नहीं हैं । निम्न कथाओं का संग्रह है—

१. पुष्पांजलिविधान कथा । संस्कृत पत्र ३ से ५

२. श्रवणद्वादशीकथा—चन्द्रभूषण के शिष्य पं० अभ्रदेव ” ” ५ मे ८

अन्तिम—चंद्रभूषणशिष्येण कथयं पापहारिणी ।

संस्कृता पंडिताश्रेण कृता प्राकृत सूत्रतः ॥

३. रत्नत्रयविधानकथा—पं० रत्नकीर्त्ति	संस्कृत गद्य पत्र	८ से ११
४. षोडशकारणकथा—पं० अभ्रदेव	” पद्य ”	११ से १४
५. जिनरात्रिविधानकथा..... ।	” ”	१४ से २६
	२६३ पद्य है ।		
६. मेघमालाव्रतकथा..... ।	” गद्य ”	२६ से ३१
७. दशलक्षणिककथा—लोकसेन ।	” ” ”	३१ से ३५
८. सुगंधदशमीव्रतकथा..... ।	” ” ”	३५ से ४०
९. त्रिकालचउवीसीकथा—अभ्रदेव ।	” पद्य ”	४० से ४३
१०. रत्नत्रयविधि—आशाधर	” गद्य ”	४३ से ५१

प्रारम्भ— श्रीवर्द्धमानमानस्य गौतमादीश्चसद्गुरुन् ।

रत्नत्रयविधिं वक्ष्ये यथाम्नायविशुद्धये ॥१॥

अन्तिम प्रशस्ति— साधो मंडितवागबंधमुगरीः सज्जैनचूडामणोः ।

मालाख्यस्यमुतः प्रतीतमहिमा श्रीनागदेवोऽभवत् ॥१॥

यः शुक्लादिपदेषु मालवपतेः नान्नातियुक्तं शिवं ।
 श्रीमल्लक्षणायास्वमाश्रितवसः का प्रापयन्नः श्रियं ॥२॥
 श्रीमत्केशवसेनार्यवर्यवाक्यादुपेयुषा ।
 पाक्षिकश्रावकीभावं तेन मालवमंडले ॥
 मल्लक्षणापुरे तिष्ठन् गृहस्थाचार्यकुंजरः ।
 पंडिताशाधरो भक्त्या विज्ञप्तः सम्यगेकदा ॥३॥
 प्रायेण राजकार्येष्वरुद्धमर्माश्रितस्य मे ।
 भाद्रं किञ्चिदनुष्ठेयं व्रतमादिश्यतामिति ॥४॥
 ततस्तेन समीक्षो वै परमागमविस्तरं ।
 उपविष्टसतामिष्टस्तस्यायं विचिसत्तमः ॥५॥
 तेनार्यश्च यथाशक्तिर्भवभीतैरनुष्ठितः ।
 ग्रंथो बुधाशाधारेण सद्धर्मार्थमथो कृतः ॥६॥
 विक्रमार्कव्यशीत्यग्रद्वादशाब्दशतात्यये ।
 दशम्यापश्चिमे कृष्णे प्रथतां कथा ॥७॥
 पत्नी श्रीनागदेवस्य नंदाद्धर्मैण नायिका ।
 वासीद्वत्नत्रयविधिं चरतां पुरस्मरी ॥८॥

इत्याशाधरविरचिता रत्नत्रयविधिः समाप्तः ॥

११.	पुरंदरविधानकथा.....।	संस्कृत पद्य	५१ से ५४
१२.	रत्नाविधानकथा.....।	गद्य	५४ से ५६
१३.	दशलक्षणाजयमाल—रङ्गभू ।	अपभ्रंश	५६ से ५८
१४.	पल्यविधानकथा.....।	संस्कृत पद्य	५८ से ६३
१५.	अनथमोत्रतकथा—पं० हरिचंद्र ।	अपभ्रंश	६३ से ६६

अगरवाल बरवंसि उप्पण्णइं हरियंदेण ।

भत्तिए जिण्णुयण्णणंवि पयडिउ पट्टडियाळ्ळंदेण ॥१६॥

१६.	चंदनपण्ठीकथा—	”	”	६६ से ७१
१७.	मुग्धावलोकनकथा	—	संस्कृत	७१ से ७५
१८.	रोहिणीचरित्र—	देवनांदि	अपभ्रंश	७६ से ८१
१९.	रोहिणीविधानकथा—	”	”	८१ से ८५

२०. अक्षयनिधिविधानकथा —	संस्कृत	८५ से ८८	
२१. मुकुटसप्तमीकथा—पं० अभ्रदेव	”	८८ से ८९	
२२. मौनव्रतविधान—रत्नकीर्ति	संस्कृत गद्य	९० से ९४	
२३. रुक्मणिविधानकथा—क्षत्रसेन	संस्कृत पद्य	१००	[अपूर्ण]

संवत् १६०६ वर्षे फाल्गुण वदि १ सोमवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्या-
न्वये.....।

२६८४. व्रतकथाकोश.....। पत्र सं० १५२। आ० १२×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-कथा। २०
काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६२। छ भण्डार।

२६८५. व्रतकथाकोश—खुशालचंद। पत्र सं० ८६। आ० १२½×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-
कथा। २० काल सं० १७८७ फागुन बुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६७। अ भण्डार।

विशेष—१८ कथायें हैं।

इसके अतिरिक्त छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६१) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६८६) तथा
छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १७८) और हैं।

२६८६. व्रतकथाकोश.....। पत्र सं० ५०। आ० १०×५½ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। २०
काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८३५। ट भण्डार।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है—

नाम	कर्ता	विशेष
ज्येष्ठजिनवरव्रतकथा—	खुशालचंद	२० काल सं० १७८२
आदित्यवारकथा—	भाऊ कवि	×
लघुरविव्रतकथा—	ब्र० ज्ञानसागर	—
सप्तपरमस्थानव्रतकथा—	खुशालचन्द	—
मुकुटसप्तमीकथा—	”	२० काल सं० १७८३
अक्षयनिधिव्रतकथा—	”	—
षोडशकारणव्रतकथा—	”	—
मेघमालाव्रतकथा—	”	—
चन्दनषष्ठीव्रतकथा—	”	—
लब्धिविधानकथा—	”	—
जिनपूजापुरंदरकथा—	”	—
दश-क्षणकथा—	”	—

नाम	कर्ता	विशेष
पुष्पांजलिब्रतकथा—	सुशालचन्द्र	—
आकाशपंचमीकथा—	”	२० काल सं० १७८५
मुक्तावलीब्रतकथा—	”	—

पृष्ठ ३६ से ५० तक दीमक लगी हुई है ।

२६८७. ब्रतकथासंग्रह.....। पत्र सं० ६ से ६० । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३६ । ट भण्डार ।

विशेष—६० से आगे भी पत्र नहीं हैं ।

२६८८. ब्रतकथासंग्रह.....। पत्र सं० १२३ । आ० १२×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत अपभ्रंश । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल सं० १५१६ सावण बुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ११० । व्य भण्डार ।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है ।

नाम	कर्ता	भाषा	विशेष
सुगन्धदशमीब्रतकथा.....।		अपभ्रंश	—
अनन्तब्रतकथा.....।		”	—
रोहिणीब्रतकथा—	×	”	—
निर्दोषसप्तमीकथा—	×	”	—
दुधारसविधानकथा—मुनिविनयचंद्र ।		”	—
सुखसंपत्तिविधानकथा—विमलकीर्ति ।		”	—
निर्मरपञ्चमीविधानकथा—विनयचंद्र ।		”	—
पुष्पांजलिविधानकथा—पं० हरिश्चन्द्र ।		”	—
श्रवणद्वादशीकथा—पं० अभ्रदेव ।		”	—
षोडशकारणविधानकथा—	”	”	—
श्रुतस्कंधविधानकथा—	”	”	—
रुक्मिणीविधानकथा—	छत्रसेन ।	”	—

प्रारम्भ— जिनं प्रणम्य नेमीशं संसारार्णवतारकं ।

रुक्मिणिचरितं वक्ष्ये भव्यानां बोधकारणं ॥

अन्तिम पुष्पिका— इति छत्रसेन विरचिता नरदेव कारापिता रुक्मिणि विधानकथा समाप्तं ।

पल्यविधानकथा—	×	—	संस्कृत	—
दशलक्षणविधानकथा—	लोकसेन	—	”	—
चन्दनषष्ठीविधानकथा—	×	—	अपभ्रंश	—
जिनरात्रिविधानकथा—	×	—	”	—
जिनपूजापुरंदरविधानकथा—	अमरकीर्ति	—	”	—
त्रिचतुर्विंशतिविधान—	×	—	संस्कृत	—
जिनमुखावलोकनकथा—	×	—	”	—
शीलविधानकथा—	×	—	”	—
अक्षयविधानकथा—	×	—	”	—
सुखसंपत्तिविधानकथा—	×	—	”	—

लेखक प्रशस्ति—संवत् १५१६ वर्षे श्रावण बुदी १५ श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे भ० श्रीपद्म-
नंदिदेवा तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा । भट्टारक श्रीपद्मनंदि शिष्य मुनि मदनकीर्ति शिष्य ब्र०
नरसिंह निमित्तं । खंडेलवालान्वये दोसीगोत्रे संघो राजा भार्या देउ सुपुत्र छीछा भार्या गरगोपुत्र कातु पदमा धर्मा आत्मः
कर्मक्षयार्थं इदं शास्त्रं लिखाप्य ज्ञान पात्रादत्तं ।

२६८६. व्रतकथासंग्रह.....। पत्र सं० ८८ । आ० १२×७३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न कथाओं का संग्रह है ।

द्वादशव्रतकथा—	पं० अभ्रदेव ।	संस्कृत	—
कवलचन्द्रायणव्रतकथा—		”	—
चन्दनषष्ठीव्रतकथा—	खुशालचन्द्र ।	हिन्दी	—
नंदीश्वरव्रतकथा—		संस्कृत	—
जिनगुणसंपत्तिकथा—		”	—
होली की कथा—	छीतर ठोलिया	हिन्दी	—
रैदव्रतकथा—	ब्र० जिनदास	”	—
रत्नावलिव्रतकथा—	गुणनंदि	”	—

२६६०. व्रतकथासंग्रह—ब्र० महतिसागर । पत्र सं० २७ । आ० १०×४३ । भाषा—हिन्दी । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७७ । क भण्डार ।

२६६१. व्रतकथासंग्रह.....। पत्र सं० ४ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७२ । क भण्डार ।

विशेष—रविव्रत कथा, अष्टाङ्गिकाव्रतकथा, षोडशकारणव्रतकथा, दशलक्षणाव्रतकथा इनका संग्रह है षोडशकारणव्रतकथा गुजराती में है ।

२६६२. व्रतकथासंग्रह.....। पत्र सं० २२ से १०४ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७८ । क भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २१ पत्र नहीं हैं ।

२६६३. षोडशकारणविधानकथा—पं० अन्नदेव । पत्र सं० २६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६६० भादवा सुदी ५ । वे० सं० ७२२ । क भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त आकाश पंचमी, रविमणीकथा एवं अनंतव्रतकथा के कर्ता का नाम पं० मदनकीर्ति है । ट भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०२६) और है ।

२६६४. शिवरात्रिव्यापनविधिकथा—शंकरभट्ट । पत्र सं० २२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा (जैनतर) । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४७२ । अ भण्डार ।

विशेष—३२ में आगे पत्र नहीं हैं । स्कंधपुराण में से है ।

२६६५. शीलकथा—भारामल्ल । पत्र सं० २० । आ० १२×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६६६, १११६) क भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६२) घ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १००), ङ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७०८), छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८०), ज भण्डार में एक प्रति (ले० सं० १६६७) और है ।

२६६६. शीलोपदेशमाला—मेरुसुन्दरगणि । पत्र सं० १३१ । आ० ६×४ इंच । भाषा—गुजराती लिपि हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६७ । छ भण्डार ।

विशेष—४३वीं कथा (धनश्री तक प्रति पूर्ण है) ।

२६६७. शुकसप्तति। पत्र सं० ६४ । आ० ६½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२६६८. भावणद्वारादशीउपाख्यान.....। पत्र सं० ३ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा (जैनतर) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८० । अ भण्डार ।

२६६६. श्रावणद्वादशीकथा.....। पत्र सं० ६८ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत गद्य । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७११ । छ भण्डार ।

२७००. श्रीपालकथा.....। पत्र सं० २७ । आ० ११×७^३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २०
काल × । ले० काल सं० १६२६ बैशाख बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ७१३ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७१४) और है ।

२७०१. श्रेणिकचौपई—डूंगा बैद । पत्र सं० १४ । आ० ६^३×४^३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
कथा । २० काल सं० १८२६ । पूर्ण । वे० सं० ७६४ । अ भण्डार ।

विशेष—कवि मालपुरा के रहने वाले थे ।

अथ श्रेणिक चौपई लिखते—

आदिनाथ बंदौ जगदीस । जाहि चरित थे होई जगोस ॥
दूजा बंदौ गुर निरगंथ । भूला भव्य दीखावण पंथ ॥१॥
तीजा साधु सबै का पाइ । चौथा सरस्वती करौ सहाय ।
जहि सेया थे सब बुधि होय । करौ चौपई मन सुधि जोई ॥२॥
माता हमनै करौ सहाई । अख्यर हीण सवारो आई ।
श्रेणिक चरित बात मै लही । जैसी जाणी चौपई कही ॥३॥
राणी सही चलना जाणि । धर्म जैन सेवै मनि आणि ।
राजा धर्म चलावै बोध । जैन धर्म को काटे खोध ॥४॥

पत्र ७ पर—दोहा—

जो भूठी मुख थे कहै, अणदोस्या दे दोस ।
जे नर जासी नरक में, मत कोइ आणौ रोस ॥१५१॥

चौपई—

कहे जती इक साह सुजाण । वामण एक पढ्यो अति आणि ।
जइ कौ पुत्र नहीं को आय । तवै न्यौल इक पाल्यो जाय ॥५२॥
वेटो करि राख्यो निरताइ । दुवैउ पाव एक पै आइ ।
वांभणी सही जाँइयो पूत । पली थावै जाणि अउत ॥५३॥
एक दिवस वांभण विचारि । पाणी नैवा चाली नारि ।
पालण वालक मेलहौ तहां । न्यौल वचन ए भाखै जहां ॥५४॥

अन्तिम—

भेद भलो जाणो इक सार । जे सुणिसी ते उतरै पार ।
 हीन पद अक्षर जो होय । जको सवारो गुणियर लोय ॥२८६॥
 मै म्हारी बुधि सारू कही । गुणियर लोग सवारो सही ।
 जे ता तरणो कहै निरताय । मुणता संगला पातिग जाइ ॥२९०॥
 लिखिवा चाल्यो मुख नित लहौ, जे साधा का गुण यौ कहौ ।
 यामे भोलो कोइ नही, झूगै वैद चौपड कही ॥२९१॥
 वास भलो मालपुरो जाणि । टौक मही सो कियो बखाण ।
 जठे बसै माहाजन लोग । पान फूल का कीजै भोग ॥२९२॥
 पौरिण छतीसौं लीला करै । दुख ये पेट न कोइ भरै ।
 राइस्यंघ जी राजा बखाणि । चौर चवाहन राखै आणि ॥२९३॥
 जीव दया को अधिक सुभाव । सबै भलाई साथै डाव ।
 पतिसाहा बंदि दीन्ही छोडि । बुरी कही भवि सुणै बहोडि ॥२९४॥
 धनि हिदवाणो राज बखाणि । जह मै सीसोद्यो सो जाणि ।
 जीव दया को सदा वीचार । रंति तरणौ राखै आधार ॥२९५॥
 कीरति कही कहा लागि जाणि । जीव दया सहु पालै आणि ।
 इह विधि सगला करै जगिस । राजा जीज्यौ सो अरु बीस ॥२९६॥
 एता वरस मै भोलो नही । बेटा पोता फल ज्यो सही ।
 दुखिया का दुख टालै आय । परमेस्वर जी करै सहाय ॥२९७॥
 इ पुन्य तरणो कोइ नही पार । वैदि खलास करै ते सार ।
 वाकी बुरी कहै नर कोइ । जन्म आपणौ चालै खोइ ॥२९८॥
 संबत् सोलह सै प्रमाण । उपर सहो इतासौ जाण ।
 निन्याणवै कहा निरदोष । जीव सर्वे पावै पोष ॥२९९॥
 भाद्रव सुदी तेरस सनिवार । कडा तीन सै षट अधिकाय ।
 इ मुणता मुख पासो देह । आप समाही करै सनेह ॥३००॥

इति श्री श्रेणिक चौपड संपूरण मीती कार्तिक सुदि १३ सनीसरवार कर्क सं० १८२६ काडी ग्रामे लीखतं
 बखनमागर व्रांबे जहनै निम्सकार नमोस्तं वांच ज्या जी ।

२७०२. सप्रपरमस्थानकथा—आचार्य चन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ११ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—
 संस्कृत । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६८६ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ३५० । ज
 भण्डार ।

२७०३. सप्तव्यसनकथा—आचार्य सोमकीर्ति । पत्र सं० ४१ । आ० १०३×४४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २० काल सं० १५२६ माघ सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२७०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १७७२ श्रावण बुदी १३ । वे० सं० १००२ । अ भण्डार ।

प्रशस्ति— सं० १७७२ वर्षे श्रावणमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां तिथौ अर्कवासरे विजैरामेण लिपिचक्र अकव्वरपुर समीपेषु केरवाग्रामे ।

२७०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८६४ भाद्रवा मुदी ६ । वे० सं० ३६३ । च भण्डार

विशेष—नेवटा निवासी महात्मा हीरा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । दीवाण संगही अमरचंदजी खिन्दूका ने प्रतिलिपि दीवाण स्योजीराम के मंदिर के लिए करवाई ।

२७०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १७७६ माघ सुदी १ । वे० सं० ६६ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० नरसिंह ने श्रावक गोविन्ददास के पठनार्थ हिण्डौन में प्रतिलिपि की थी ।

२७०७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १६४७ आसोज सुदी ६ । वे० सं० १११ । अ भण्डार ।

२७०८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १७५६ कार्तिक बुदी ६ । वे० सं० १३६ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० कपूरचंद के वाचनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी ।

इनके अतिरिक्त छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७५) और हैं ।

२७०९. सप्तव्यसनकथा—भारामल्ल । पत्र सं० ८६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल सं० १८१४ आश्विन सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ६८८ । च भण्डार ।

विशेष—पत्र क्षिपके हुये हैं । अंत में कवि का परिचय भी दिया हुआ है ।

२७१०. सप्तव्यसनकथाभाषा—। पत्र सं० १०६ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—वधा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६३ । अ भण्डार ।

विशेष—सोमकीर्ति कृत सप्तव्यसनकथा का हिन्दी अनुवाद है ।

च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६८६) और है ।

२७११. सम्मेशिखरमहात्म्य—लालचन्द । पत्र सं० २६ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल सं० १८४२ । ले० काल सं० १८८७ आषाढ बुदी । वे० सं० ८८ । ग भण्डार ।

विशेष—लालचन्द भट्टारक जगतकीर्ति के शिष्य थे । रेवाड़ी (पञ्जाब) के रहने वाले थे और वही लेखक ने इसे पूर्ण किया ।

२७१२. सम्यक्त्वकौमुदीकथा—गुणाकरसूरि । पत्र सं० ४८ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । २० काल सं० १५०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । च भण्डार ।

२७१३. सम्यक्त्वकौमुदीकथा—खेता । पत्र सं० ७६ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८३३ माघ सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १३६ । अ भण्डार ।

विशेष—ऋ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६१) तथा अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०)
और है ।

२७१४. सम्यक्त्वकौमुदीकथा..... । पत्र सं० १३ से ३३ । आ० १२×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६२५ माघ सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० १६१० । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १६२५ वर्षे शाके १४६० प्रवर्तमाने दक्षिणायने मार्गशीर्ष शुक्लपक्षे षष्ठ्यां शनौ
.....श्रीकुंभलमेरुदुर्गे रा० श्री उदयसिंहराज्ये श्री खरतरगच्छे श्री गुणलाल नहोपाध्याये स्ववाचनार्थं लिखापिता
सौवाच्यमाना चिरं नंदनात् ।

२७१५. सम्यक्त्वकौमुदीकथा..... । पत्र सं० ८६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६०० चैत सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४१ । अ भण्डार ।

विशेष—संवत् १६०० में खेटक स्थान में शाह आलम के राज्य में प्रतिलिपि हुई । ब्र० धर्मदास अग्रवाल
गोयल गोत्रीय मडलाणापुर निवासी के बंश में उत्पन्न होने वाले साधु श्रीदास के पुत्र आदि ने प्रतिलिपि कराई । लेखक
प्रशस्ति ७ पृष्ठ लम्बी है ।

२७१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ से ६० । ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं०
६४ । अ भण्डार ।

श्री हूंगर ने इस ग्रंथ को ब्र० रायमल को भेंट किया था ।

अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपतिविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६२८ वर्षे पोषमासे कृष्णपक्षपंचमीदिने भट्टारक
श्रीभानुकीर्तितदाम्नाये अग्रवालान्वये मित्तलगोत्रे साह दासू तस्य भार्या भोली तयोपुत्र सा. गोपी सा. दीपा । सा. गोपी
तस्य भार्या त्रीबो तयो पुत्र सा. भावन साह उवा सा. भावन भार्या बूरदा शही तस्य पुत्र तिपरदाश । साह उवा तस्य
भार्या मेघनही तस्यपुत्र हूंगरसो सास्त्र सम्यक्त कौमदी ग्रंथ ब्रह्मचार रायमल्लदद्यात् पठनार्थं ज्ञानावर्णां कर्मक्षयहेतु ।
शुभं भवतु । लिखितं जीवन्मज गोपालदाश । श्रीचन्द्रप्रभु चैत्यालये अहिपुरमध्ये ।

२७१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १७१६ पौष बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ७६६ ।
ङ भण्डार ।

२७१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १८३१ माघ सुदी ५ । वे० सं० ७५४ । क
भण्डार ।

विशेष—भाभूराम साह ने जयपुर नगर में प्रतिलिपि की थी ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २०६६, ८६४) घ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११२), ङ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८००), छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८७), झ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६१), ञ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०), तथा ट भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २१२६, २१३०) [दोनों अपूर्ण] और हैं ।

२७१९. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—विनोदीलाल । पत्र सं० १६० । आ० ११×५ इंच । भाषा—
हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल सं० १७४६ । ले० काल सं० १८६० सावन बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ८७ । ग
भण्डार ।

२७२०. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—जगतराय । पत्र सं० १५१ । आ० ११×५ इंच । भाषा—
हिन्दी पद्य । विषय—कथा । २० काल सं० १७७२ माघ सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५३ । क
भण्डार ।

२७२१. सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा—जोधराज गोदीका । पत्र सं० ४७ । आ० १०½×७½ इंच ।
भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल सं० १७२४ फागुण बुदी १३ । ले० काल सं० १८२५ आसोज बुदी ७ । पूर्ण ।
वे० सं० ४३५ । अ भण्डार ।

विशेष—नैनसागर ने श्री गुलाबखंदजी गोदीका के वाचनार्थ सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । सं०
१८६८ में पोथी की निछरावलि दिवाई पं० खुश्यालजी, पं० ईसरदासजी गोदीका सूं हस्ते महात्मा फत्ताह्वै आई ६०
१) दिया ।

२७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८६३ माघ बुदी २ । वे० सं० २११ । ख
भण्डार ।

२७२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० ७६८ । ङ भण्डार ।

२७२४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० ७०३ । च भण्डार ।

२७२५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १८३५ चैत्र बुदी १३ । वे० सं० १० । झ
भण्डार ।

इनके अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७०४) ट भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५४३)
और हैं ।

२७२६. सम्यक्त्वकौमुदीभाषा.....। पत्र सं० १७४ । आ० १०३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०२ । च भण्डार ।

२७२७. संयोगपंचमीकथा—धर्मचन्द्र । पत्र सं० ३ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८४० । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । अ भण्डार ।

विशेष—इ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८०१) और है ।

२७२८. शालिभद्रधन्वानीचौपई—जिनसिंहसूरि । पत्र सं० ४६ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल सं० १६७८ आसोज बुदी ६ । ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं०
८४२ । इ भण्डार ।

विशेष—किशनगढ में प्रतिलिपि की गई थी ।

२७२९. सिद्धचक्रकथा.....। पत्र सं० २ से ११ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४३ । इ भण्डार ।

२७३०. सिंहासनबत्तीसी.....। पत्र सं० ११ से ६१ । आ० ७×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६७ । ट भण्डार ।

विशेष—५वें अध्याय से १२वें अध्याय तक है ।

२७३१. सिंहासनद्वारिशिका—क्षेमकरमुनि । पत्र सं० २७ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—राजा विक्रमादित्य की कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२७ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

श्रीविक्रमादित्यनरेक्ष्वरस्य चरित्रमेतत् कविभिर्निबद्धं ।

पुरा महाराष्ट्रपरिभ्रूभाषा मयं महाश्चर्यकरंनराणां ॥

क्षेमकरेण मुनिना वरपद्यगद्यबंधेनमुक्तिकृतसंस्कृतबधुरेण ।

विश्वोपकार विलसत् गुणकीर्तिनायचक्रे चिरादमरपंडितहर्षहेतु ॥

२७३२. सिंहासनद्वारिशिका.....। पत्र सं० ६३ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।
२० काल × । ले० काल सं० १७६८ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ४११ । च भण्डार ।

विशेष—लिपि विकृत है ।

२७३३. सुकुमालमुनिकथा.....। पत्र सं० २७ । आ० ११३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—
कथा । २० काल × । ले० काल सं० १८७१ माह बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १०५२ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में सदासुखजी गोधा के पुत्र सवाईराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

२७३४. सुगन्धदशमीकथा..... । पत्र सं० ६ । आ० ११३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०६ । क भण्डार ।

विशेष—उक्त कथा के अतिरिक्त एक और कथा है जो अपूर्ण है ।

२७३५. सुगन्धदशमीव्रतकथा—हेमराज । पत्र सं० ५ । आ० ८३×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल सं० १६८५ श्रावण सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६६५ । अ भण्डार ।

विशेष—भिण्ड नगर में रामसहाय ने प्रतिलिपि की थी ।

प्रारम्भ—अथ सुगन्धदशमी व्रतकथा लिख्यते—

चौपई—
वर्द्धमान बंदौ सुखदाई, गुर गौतम बंदौ चितलाय ।
सुगन्धदशमीव्रत सुनि कथा, वर्द्धमान परकाशी यथा ॥१॥
पूर्वदेस राजग्रह गांव, श्रेनिक राज करै अभिराम ।
नाम चेलना गृहपटरानी, चंद्ररोहिणी रूप समान ।
नृप सिंहासन बैठो कदा, वनमाली फल त्यायो तदा ॥२॥

अन्तिम—
सहर गहे लोउ तिम वास, जैनधर्म को करैप्रकास ॥
सब श्रावक व्रत संयम धरै, दान पूजा सो पातिक हरै ।
हेमराज कवियन यों कही, विस्वभूषन परकासी सही ।
सो नर स्वर्ग अमरपति होय, मन वच काय सुनै जो कोय ॥३॥

इति कथा संपूरणम्

दोहा—
श्रावण शुक्ला पंचमी, चंद्रवार शुभ जान ।
श्रीजिन भुवन सहावनौ, तिहां लिखा घरि ध्यान ॥
संवत् विक्रम भूप को, इक नव आठ सुजान ।
ताके ऊपर पांच लखि, लीजै चतुर सुजान ॥
देश भदावर के विषै, भिंड नगर शुभ ठाम ।
ताही मैं हम रहत हैं, रामसाय है नाम ॥

२७३६. सुदयवच्छसावलिगाकी चौपई—मुनि केशव । पत्र सं० २७ । आ० ९×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल सं० १६६७ । ले० काल सं० १८३७ । वे० सं० १६४१ । ट भण्डार ।

विशेष—कटक में लिखा गया ।

२७३७. सुदर्शनसेठकीढाल (कथा)..... । पत्र सं० ६ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६१ । अ भण्डार ।

२७३८. सोमशर्मावारिषेणकथा.....। पत्र सं० ७। आ० १०×३३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२३। अ भण्डार।

२७३९. सौभाग्यपंचमीकथा—सुन्दरविजयगणि। पत्र सं० ९। आ० १०×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। १० काल सं० १६९६। ले० काल सं० १८११। पूर्ण। वे० सं० २९९। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी में अर्थ भी दिया हुआ है।

२७४०. हरिवंशवर्णन.....। पत्र सं० २०। आ० १०^१/_२×४^३/_४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८३६। अ भण्डार।

२७४१. होलिकाकथा.....। पत्र सं० २। आ० १०^३/_४×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कथा। १० काल ×। ले० काल सं० १९२१। पूर्ण। वे० सं० २९३। अ भण्डार।

२७४२. होलिकाचौपई—डूंगरकवि। पत्र सं० ४। आ० ६×४ इंच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—कथा। १० काल सं० १६२९ चैत्र बुदी २। ले० काल सं० १७१८। अपूर्ण। वे० सं० १५७। अ भण्डार।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र है वह भी एक ओर से फटा हुआ है। अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

सोलहसइ गुणतीसइ सार चैत्रहि वदि दुतिया बुधिवार।

नयर सिकंदरावाद.....गुणकरि आगाध, वाचक मंडण श्री खेमा साध ॥८४॥

तामु सीस डूंगर मति रली, भण्यु चरित्र गुण सांभली।

जे नर नारी मुणस्यइ सदा तिह घरि बहुली हुई संपदा ॥८५॥

इति श्री होलिका चउपई। मुनि हरचंद लिखितं। संवत् १७१८ वर्षे.....आगरामध्ये लिपिकृतं ॥ रचना में कुल ८५ पद्य हैं। चौथे पत्र में केवल ८ पद्य हैं वे भी पूरे नहीं हैं।

२७४३. होलीकीकथा—छीतर ठोलिया। पत्र सं० २। आ० ११^३/_४×५^३/_४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—कथा। १० काल सं० १६६० फागुण सुदी १५। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४५८। अ भण्डार।

२७४४. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १७५०। वे० सं० ८५६। क भण्डार।

विशेष—लेखक मौजमाबाद [जयपुर] का निवासी था इसी गांव में उसने ग्रंथ रचना की थी।

२७४५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १८८३। वे० सं० ९९। ग भण्डार।

विशेष—कानूराम साह ने ग्रंथ लिखवाकर चौधरियों के मन्दिर में चढाया।

२७४६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १८३० फागुण बुदी १२। वे० सं० १६४२। ट भण्डार।

विशेष—पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी।

२७४७. होलीकथा—लिनमुन्दरसूरि । पत्र सं० १४ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
कथा × । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में इसके अतिरिक्त ३ प्रतियां वे० सं० ७४ में ही और हैं ।

२७४८. होलीपर्वकथा..... । पत्र सं० ३ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कथा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४६ । अ भण्डार ।

२७४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८०४ मात्र सुदी ३ । वे० सं० २८२ । ख
भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त छ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६१०, ६११) और हैं ।



व्याकरण-साहित्य

२७५०. अनिटकारिका.....। पत्र सं० १ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३५ । अ भण्डार ।

२७५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० २१४६ । ट भण्डार ।

२७५२. अनिटकारिकावचुरि.....। पत्र सं० ३ । आ० ११३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५० । अ भण्डार ।

२७५३. अव्ययप्रकरण.....। पत्र सं० ६ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०१८ । अ भण्डार ।

२७५४. अव्ययार्थ.....। पत्र सं० ८ । आ० ८×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १०

काल × । ले० काल सं० १८४८ । पूर्ण । वे० सं० १२२ । अ भण्डार ।

२७५५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति दीमक ने खा रखी है ।

२७५६. उणादिसूत्रसंग्रह—संग्रहकर्ता—उज्ज्वलदत्त । पत्र सं० ३८ । आ० १०×५ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०२७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति टीका सहित है ।

२७५७. उपाधिव्याकरण.....। पत्र सं० ७ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७२ । अ भण्डार ।

२७५८. कातन्त्रविभ्रमसूत्रावचुरि—चारित्रसिंह । पत्र सं० १३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल सं० १६६६ कार्तिक सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २४७ । अ भण्डार ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न प्रकार है—

नत्वा जिनेंद्रं स्वगुरुं च भक्त्या तत्सत्प्रसादात्समुत्पिडिशक्त्या ।

सत्संप्रदायादवचुरिमेतां लिखामि सारस्वतसूत्रयुक्त्या ॥१॥

प्रायः प्रयोगादुर्ज्ञेयाः किलकांतत्र विभ्रमो ।

येषु मो मुह्यते श्रेष्ठः शाब्दिकोऽपि यथा जडः ॥२॥

कातंत्रसूत्रविसरः खलु साप्रतं ।

यन्नाति प्रसिद्ध इह चाति खरोगरीयान् ॥

स्वस्येतरस्ये च सुबोधविवर्द्धनार्थो ।

ऽस्त्वित्थं ममात्र सफलो लिखन प्रयासः ॥

अन्तिम पाठ—

बाराणाश्रिषडिदुमिते संवति धवलवक्कपुरवरे समहे ।

श्रीखरतरगणपुष्करसुदित्रापुष्टप्रकाराणां ॥१॥

श्रीजिनमाणिक्याभिधसूरीणां सकलसार्धभौमानां ।

पट्टे करे विजयिषु श्रीमज्जिनचंद्रसूरिराजेषु ॥२॥

गीति

वाचकमतिभद्रगणोः शिष्यस्तदुपास्त्यवाप्तपरमार्थः ।

चारित्रसिंहसाधुर्व्यदधदवचूरिणिमिह सुगमां ॥३॥

यल्लिखितं मतिमाद्यादनृतं प्रश्नोत्तरेत्र किञ्चिदपि ।

तत्सम्पक् प्राज्ञवरैः शोध्यं स्वपरोपकाय ॥४॥

इति कातंत्रविभ्रमावचूरिः संपूर्णा लिखनतः ।

आचार्य श्रीरत्नभूषणस्तच्छिष्य पंडित केशवः तेनेयं लिपि कृता आत्मपठनार्थं । शुभं भवतु । संवत् १६६६ वर्षे कार्तिक सुदी ५ तिथौ ।

२७५६. कातंत्रटीका.....। पत्र सं० ३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० १६०१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२७६०. कातंत्ररूपमालाटीका—दौर्गसिंह । पत्र सं० ३६४ । आ० १२३×४३ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ । पूर्णा । वे० सं० १११ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम कलाप व्याकरण भी है ।

२७६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ११२ । क भण्डार ।

२७६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७७ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ६७ । च भण्डार ।

२७६३ कातंत्ररूपमालावृत्ति.....। पत्र सं० १४ से ८६ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १५२४ कार्तिक सुदी ५ । अपूर्णा । वे० सं० २१४४ । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५२४ वर्षे कार्तिक सुदी ५ दिने श्री टोंकपत्तने सुरत्राणश्रीलावदीनराज्यप्रवर्तमाने श्री मूलमंथे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकृंदकृंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपचनंदिदेवास्तत्पट्टे भट्टारक श्रीशुभचंद्रदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीजिनचंद्रदेवास्तत्पिप्ये ब्रह्मतीक्ष्ण निमित्तं । खंडेलवालान्वये पाटणीगोत्रे सं० धन्ना भार्या धनश्री पुत्र सं. दिवराजा, दोदा, मूलाप्रभृतयः एतेषामध्ये सा. दोदा इदं पुस्तकं ज्ञानावरणीवर्म्मक्षयनिमित्तं लिखाप्य ज्ञानपात्राय दत्तं ।

२७६४. कातन्त्रव्याकरण—शिववर्मा । पत्र सं० ३५ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६ । च भण्डार ।

२७६५. कारकप्रक्रिया..... । पत्र सं० ३ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५५ । अ भण्डार ।

२७६६. कारकविवेचन..... । पत्र सं० ८ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०७ । ज भण्डार ।

२७६७. कारकसमासप्रकरण..... । पत्र सं० ५ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३३ । अ भण्डार ।

२७६८. कृदन्तपाठ..... । पत्र सं० ६ । आ० ६३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६६ । अ भण्डार ।

विशेष—तृतीय पत्र नहीं है । सारस्वत प्रक्रिया में से है ।

२७६९. गणपाठ—वादिराज जगन्नाथ । पत्र सं० ३४ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७८० । ट भण्डार ।

२७७०. चंद्रोन्मीलन..... । पत्र सं० ३० । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८३५ फागुन बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६१ । ज भण्डार ।

विशेष—मेवाराम ब्राह्मण ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२७७१. जैनेन्द्रव्याकरण—देवनन्दि । पत्र सं० १२६ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १७१० फागुण सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३१ ।

विशेष—ग्रंथ का नाम पंचाध्यायी भी है । देवनन्दि का दूसरा नाम पूज्यपाद भी है । पंचवस्तु तक । मोलपुर नगर में श्री भगवान जोशी ने पं० श्री हर्ष तथा श्रीकल्याण के लिये प्रतिलिपि की थी ।

संवत् १७२० अमोज सुदी १० को पुनः श्रीकल्याण व हर्ष को साह श्री लूणा बघेरवाल द्वारा भेंट की गयी थी ।

२७७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १९६३ फागुन सुदी ६ । वे० सं० २१२ । क भण्डार ।

२७७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६४ से २१४ । ले० काल सं० १९६४ माह बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २१३ । क भण्डार ।

२७७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १९६६ कार्तिक सुदी ३ । वे० सं० २१० । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संक्षिप्त संकेतार्थ दिये हुये हैं । पन्नालाल भौसा ने प्रतिलिपि की थी ।

२७७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १९०८ । वे० सं० ३२८ । ज भण्डार ।

२७७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२५ । ले० काल सं० १९८० वशाख सुदी १४ । वे० सं० २०० । व्य भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त च भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२१) व्य भण्डार में २ प्रतिया (वे० सं० ३२३, २८८) और हैं । (वे० सं० ३२३) वाले ग्रन्थ में सोमदेवसूरि कृत शब्दार्णव चन्द्रिका नाम की टीका भी है ।

२७७७ जैनेन्द्रमहावृत्ति—अभयनंदि । पत्र सं० १०४ से २३२ । आ० १२३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०४२ । अ भण्डार ।

२७७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६० । ले० काल सं० १९४६ भाद्रवा बुदी १० । वे० सं० २११ । क भण्डार ।

विशेष—पन्नालाल चौधरी ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

२७७९. तद्धितप्रक्रिया । पत्र सं० १६ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७० । अ भण्डार ।

२७८०. धातुपाठ—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० १३ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १७९७ श्रावण सुदी ५ । वे० सं० २६२ । छ भण्डार ।

२७८१. धातुपाठ..... । पत्र सं० ५१ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६० । अ भण्डार ।

विशेष—धातुओं के पाठ हैं ।

२७८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १५६४ फागुण सुदी १२ । वे० सं० ६२ । ख भण्डार ।

विशेष—आचार्य नेमिचन्द्र ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३०३) तथा ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६०) और हैं ।

२७८३. धातुरूपावलि.....। पत्र सं० २२ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६ । व्य भण्डार ।

विशेष—शब्द एवं धातुओं के रूप हैं ।

२७८४. धातुप्रत्यय.....। पत्र सं० ३ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२८ । ट भण्डार ।

विशेष—हेमशब्दानुशासन की शब्द साधनिका दी है ।

२७८५. पंचसंधि.....। पत्र सं० २ से ७ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
१० काल × । ले० काल सं० १७३२ । अपूर्ण । वे० सं० १२६२ । अ भण्डार ।

२७८६. पांचिकरणवार्त्तिक—सुरेश्वराचार्य । पत्र सं० २ से ४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४४ । ट भण्डार ।

२७८७. परिभाषासूत्र.....। पत्र सं० ५ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
१० काल × । ले० काल सं० १५३० । पूर्ण । वे० सं० १६५४ । ट भण्डार ।

विशेष—अंतिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति परिभाषा सूत्र सम्पूर्णा ॥

प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

सं० १५३० वर्षे श्रीखरतरगन्धेश्रीजयसागरमहोपाध्यायशिष्यश्रीरत्नचन्द्रोपाध्यायशिष्यभक्तिलाभगणिताना
लिखिता वाचिता च ।

२७८८. परिभाषेन्दुशेखर—नागोजीभट्ट । पत्र सं० ६७ । आ० ६×३३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८ । ज भण्डार ।

२७८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५९ । ले० काल × । वे० सं० १०० । ज भण्डार ।

२७९०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११२ । ले० काल × । वे० सं० १०२ । ज भण्डार ।

विशेष—दो लिपिकर्त्ताओं ने प्रतिलिपि की थी । प्रति सटीक है । टीका का नाम भैरवी टीका है ।

२७९१. प्रक्रियाकौमुदी.....। पत्र सं० १४३ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५० । अ भण्डार ।

विशेष—१४३ से आगे पत्र नहीं हैं ।

२७९२. पाणिनीयव्याकरण—पाणिनि । पत्र सं० ३९ । आ० ८३×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९०२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है तथा पत्र के एक ओर ही लिखा गया है ।

२७६३. प्राकृतरूपमाला—श्रीरामभट्ट सुत बरदराज । पत्र सं० ४७ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १७२४ आषाढ बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५२२ । छ भण्डार ।

विशेष—आचार्य कनककीर्ति ने द्रव्यपुर (मालपुरा) में प्रतिलिपि की थी ।

२७६४. प्राकृतरूपमाला..... । पत्र सं० ३१ रे ४६ । भाषा—प्राकृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २४६ । च भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं ।

२७६५. प्राकृतव्याकरण—चंडकवि । पत्र सं० ६ । आ० ११३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्राकृत प्रकाश भी है । संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, पैंशाचिकी, मागधी तथा सौरसेनी आदि भाषाओं पर प्रकाश डाला गया है ।

२७६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० ५२३ । क भण्डार ।

२७६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८२३ । वे० सं० ५२४ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५२२) और है ।

२७६८ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४० । ले० काल सं० १८४४ मंगसिर सुदी १५ । वे० सं० १०८ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर के गोधों के मन्दिर नेमिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

२७६९. प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका—सौभाग्यगणि । पत्र सं० २२४ । आ० १२३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८६६ आसोज सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ५२७ । क भण्डार ।

२८००. भाष्यप्रदीप—कैटयट । पत्र सं० ३१ । आ० १२३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१ । ज भण्डार ।

२८०१. रूपमाला..... । पत्र सं० ४ से ५० । आ० ८३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३०६ । च भण्डार ।

विशेष—धातुओं के रूप दिये हैं ।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३०७, ३०८) और हैं ।

२८०२. लघुन्यासवृत्ति..... । पत्र सं० १२७ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७७६ ट भण्डार ।

२८०३. लघुरूपसर्गवृत्ति.....। पत्र सं० ४। आ० १०३×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६४८। ट भण्डार।

२८०४. लघुशब्देन्दुशेखर.....। पत्र सं० २१५। आ० ११३×५ ३/४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—
व्याकरण। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २११। ज भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के १० पत्र सटीक हैं।

२८०५. लघुमारस्वत—अनुभूति स्वरूपाचार्य। पत्र सं० २३। आ० ११×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत।
विषय—व्याकरण। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६२६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ३११, ३१२, ३१३, ३१४) और हैं।

२८०६. प्रति सं० २।.....। पत्र सं० २०। आ० ११ ३/४×५ ३/४ इञ्च। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं०
३११। च भण्डार।

२८०७. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४। ले० काल सं० १८६२ भाद्रपद शुक्ला ८। वे० सं० ३१३। च
भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ३१३, ३१४) और हैं।

२८०८. लघुसिद्धान्तकौमुदी—वरदराज। पत्र सं० १०४। आ० १०×४ ३/४ इञ्च। भाषा—संस्कृत।
विषय—व्याकरण। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६७। ख भण्डार।

२८०९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १७८९ ज्येष्ठ बुदी ५। वे० सं० १७३। ज
भण्डार।

विशेष—आठ अध्याय तक है।

च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३१५, ३१६) और हैं।

२८१०. लघुसिद्धान्तकौस्तुभ.....। पत्र सं० ५१। आ० १२×५ ३/४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—
व्याकरण। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०१२। ट भण्डार।

विशेष—पाणिनी व्याकरण की टीका है।

२८११. वैश्याकरणभूषण—कौहनभट्ट। पत्र सं० ३३। आ० १०×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—
व्याकरण। २० काल ×। ले० काल सं० १७७४ कार्तिक सुदी २। पूर्ण। वे० सं० ६८३। छ भण्डार।

२८१२. प्रति सं० २। पत्र सं० १०४। ले० काल सं० १६०५ कार्तिक बुदी २। वे० सं० २८१। छ
भण्डार।

२८१३. वैश्याकरणभूषण.....। पत्र सं० ७। आ० १० ३/४×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—
व्याकरण। २० काल ×। ले० काल सं० १८६६ पौष सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ६८२। छ भण्डार।

२८१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी ४ । वे० सं० ३३५ । च भण्डार ।

विशेष—माणिक्यचन्द्र के पठनार्थ ग्रन्थ की प्रतिलिपि हुई थी ।

२८१५. व्याकरण..... । पत्र सं० ४६ । आ० १०^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

२८१६. व्याकरणटीका..... । पत्र सं० ७ । आ० १०×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३८ । छ भण्डार ।

२८१७. व्याकरणभाषाटीका..... । पत्र सं० १८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।
विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६८ । छ भण्डार ।

२८१८. शब्दशोभा—कवि नीलकंठ । पत्र सं० ४३ । आ० १०^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । १० काल सं० १६६३ । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ७०० । छ भण्डार ।

विशेष—महात्मा लालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

२८१९. शब्दरूपावली..... । पत्र सं० ८६ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

२८२०. शब्दरूपिणी—आचार्य वररुचि । पत्र सं० २७ । आ० १०^३×३^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१२ । अ भण्डार ।

२८२१. शब्दानुशासन—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ३१ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४८८ । अ भण्डार ।

२८२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । आ० १०^३×४^३ इञ्च । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं०
१६८६ । अ भण्डार ।

विशेष—क भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० ६८१, ६८२, ६८३, ६८३, (क) ६८४, ५२६) तथा अ
भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६८६) और हैं ।

२८२३. शब्दानुशासनवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ७९ । आ० १२×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६३ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्राकृत व्याकरण भी है ।

२८२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी ३ । वे० सं० ५२५ । क
भण्डार ।

विशेष—आमेर निवासी पिरागदास महाम्ना वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

२८२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी १ । वे० सं० २४३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३३६) और है ।

२८२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १५२७ चैत्र बुदी ८ । वे० सं० १६५० । ट भण्डार ।

प्रशस्ति—संवत् १५२७ वर्षे चैत्र वदि ८ भौमे गोवाचलदुर्गे महाराजाधिराजश्रीकीर्तिसिंहदेवराज-प्रवर्त्तमानसमये श्री कालिदास पुत्र श्री हरि ब्रह्म.....।

२८२७. शाकटायन व्याकरण—शाकटायन । २ मे २० । आ० १५×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४० । च भण्डार ।

२८२८. शिशुबोध—काशीनाथ । पत्र सं० ६ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १७३६ माघ सुदी २ । वे० सं० २८७ । छ भण्डार ।

प्रारम्भ—भूदेवदेवगोपालं, नत्वागोपालमीश्वरं ।

क्रियते काशीनाथेन, शिशुबोधविशेषतः ॥

२८२९. संज्ञाप्रक्रिया.....। पत्र सं० ४ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । छ भण्डार ।

२८३०. सम्बन्धविवक्षा.....। पत्र सं० २४ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० २२७ । ज भण्डार ।

२८३१. संस्कृतमञ्जरी.....। पत्र सं० ४ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० ११६७ । अ भण्डार ।

२८३२. सारस्वतीधातुपाठ.....। पत्र सं० ५ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुये हैं ।

२८३३. सारस्वतपंचसंधि.....। पत्र सं० १३ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८५५ माघ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

२८३४. सारस्वतप्रक्रिया—अनुभूतिस्वरूपाचार्य । पत्र सं० १२१ मे १४५ । आ० ८३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १८४६ । अपूर्ण । वे० सं० १३६५ । अ भण्डार ।

२८३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १७८१ । वे० सं० ६०१ । अ भण्डार ।

२८३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८१ । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० ६२१ । अ भण्डार ।

२८३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६३ । ले० काल सं० १८३१ । वे० सं० ६५१ । अ भण्डार ।

विशेष—चोखचंद के शिष्य कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२८३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६० से १२४ । ले० काल सं० १८३८ । अपूर्ण । वे० सं० ६८५ । अ भण्डार ।

बगई (बस्ती) नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

२८३९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १७५९ । वे० सं० १२४९ । अ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रसागरगण ने प्रतिलिपि की थी ।

२८४०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १७०१ । वे० सं० ६७० । अ भण्डार ।

२८४१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३२ से ७२ । ले० काल सं० १८५२ । अपूर्ण । वे० सं० ६३७ । अ भण्डार ।

२८४२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १०५५ । अ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रकीर्ति कृत संस्कृत टीका सहित है ।

२८४३. प्रति सं० १० । पत्र सं० १६४ । ले० काल सं० १८२१ । वे० सं० ७९० । क भण्डार ।

विशेष—चिमनराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२८४४. प्रति सं० ११ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १८२७ । वे० सं० ७९१ । क भण्डार ।

२८४५. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८४६ माघ सुदी १४ । वे० सं० २६८ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० जगरूपदास ने दुलोचन्द के पठनार्थ नगर हरिदुर्ग में प्रतिलिपि की थी । केवल विसर्ग संधि तक है ।

२८४६. प्रति सं० १३ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८६४ श्रावण सुदी ५ । वे० सं० २६९ । ख भण्डार ।

२८४७. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७०० । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष—दुर्गाराम शर्मा के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

२८४८. प्रति सं० १५ । पत्र सं० ९७ । ले० काल सं० १९१७ । वे० सं० ४८ । झ भण्डार ।

विशेष—गणेशलाल पांड्या के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । दो प्रतियों का सम्मिश्रण है ।

२८४९. प्रति सं० १६ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८७६ । वे० सं० १२५ । झ भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार में १७ प्रतिमां (वे० सं० ६०७, ६५२, ८०९, ९०३, १००९,

१०३४, १३१३, ६५३, १२८६, १२७२, १२३२, १६५०, १२५०, १८८०, १२६१, १२६८, १२८४, १३०१, १३०२) ख भण्डार में ७ प्रतियां (वे सं० २१५, २१५ [अ], २१६, २१७, २१८, २१९, २६८) घ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ११६, १२०, १२१) ङ भण्डार में १५ प्रतियां (वे० सं० ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३१, से ८३८, ८३९) च भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ३६६, ४००, ४०१, ४०२, ४०३) छ भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० १३६, १३७, १४०, २४७, २५४, ६७) झ भण्डार में ३ प्रतियां (वे सं० १२१, १४०, २२२) ञ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० २०) तथा ट भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० १६८८, १६९०, २१००, २०७२, २१०५) गौर हैं ।

उक्त प्रतियों में बहुत सी अपूर्ण प्रतियां भी हैं ।

२८५०. सारस्वतप्रक्रियाटीका—महीभट्टी । पत्र सं० ६७ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० ८२४ । ङ भण्डार ।

विशेष—महात्मा लालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

२८५१. संज्ञाप्रक्रिया..... । पत्र सं० ६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०० । ञ भण्डार ।

२८५२. सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति—जिनप्रभसूरि । पत्र सं० ३ । आ० ११×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । १० काल । ले० काल सं० १७२४ ज्येष्ठ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० । ज भण्डार ।

विशेष—संवत् १४६४ की प्रति से प्रतिलिपि की गई थी ।

२८५३. सिद्धान्तकौमुदी—भट्टोजी दीक्षित । पत्र सं० ८ । आ० ११×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४ । ज भण्डार ।

२८५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४० । ले० काल × । वे० सं० ६६ । ज भण्डार ।

विशेष—पूराद्ध है ।

२८५५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७६ । ले० काल × । वे० सं० १०१ । ज भण्डार ।

विशेष—उत्तराद्ध पूर्ण है ।

इसके प्रतिरिक्त ज भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६५, ६६) तथा ट भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं०

१६३८, १६६६) गौर हैं ।

२८५६. सिद्धान्तकौमुदी..... । पत्र सं० ४३ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

व्याकरण । १० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४७ । ङ भण्डार ।

विशेष—अतिरिक्त ड, च तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ८४८, ४०७, २७२) और है ।

२८५७. सिद्धान्तकौमुदीटीका ... पत्र सं० ६५ । आ० ११३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय—
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५ । ज भण्डार ।

विशेष—पत्रों के कुछ अंश पानी से गल गये हैं ।

२८५८. सिद्धान्तचन्द्रिका—रामचंद्राश्रम । पत्र सं० ४४ । आ० १३×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५१ । अ भण्डार ।

२८५९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १८४७ । वे० सं० १६५२ । अ भण्डार ।

विशेष—कृष्णागढ में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

२८६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८४७ । वे० सं० १६५३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १० प्रतियां (वे० सं० १६३१, १६५४, १६५५, १६५६, १६५७, १६५८, ६०८, ६१७, ६१८, २०२३) और है ।

२८६१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६४ । आ० ११३×५ इंच । ले० काल सं० १७८४ अषाढ बुदी १४ ।
वे० सं० ७८२ । क भण्डार ।

२८६२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५७ । ले० काल सं० १६०२ । वे० सं० २२३ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २२२ तथा ४०८) और है ।

२८६३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १७५२ चैत्र बुदी ६ वे० सं० ६० । छ भण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन में एक प्रति और है ।

२८६४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८६४ श्रावण बुदी ६ । वे० सं० ३५२ । ज
भण्डार ।

विशेष—प्रथम वृत्ति तक है । संस्कृत में कहीं शब्दार्थ भी हैं । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३५३)
और है ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० १२८५, १६५४, १६५५, १६५६, १६५७, ६०८, ६१७, ६१८) ख भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २२२, ४०८) छ तथा ज भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० ६०, ३५३) और है । अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ११७७, १२६६, १२६७) अपूर्ण । च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४०६, ४१०) छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६) तथा ज भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ३४५, ३४८, ३४९) और हैं ।

ये सभी प्रतियां अपूर्ण हैं ।

२८६५. सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका—लोकेशकर । पत्र सं० ६७ । प्रा० ११३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०१ । क भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम तत्त्वदीपिका है ।

२८६६ प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ मे ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

२८६७. सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति—सदानन्दगणि । पत्र सं० १७३ । प्रा० ११×४३ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ८६ । छ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम सुबोधिनीवृत्ति भी है ।

२८६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७८ । ले० काल सं० १८५६ ज्येष्ठ बुदी ७ । वे० सं० ३५१ । ज
भण्डार ।

विशेष—पं० महाचन्द्र ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

२८६९. सारस्वतदीपिका—चन्द्रकीर्त्तिसूरि । पत्र सं० १६० । प्रा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—व्याकरण । २० काल सं० १६५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६५ । अ भण्डार ।

२८७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ मे ११६ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० २६४ । छ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रकीर्त्ति के शिष्य हर्षकीर्त्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७२ । ले० काल सं० १८२८ । वे० सं० २८३ । छ भण्डार ।

विशेष—मुनि चन्द्रभाग खेतसी ने प्रतिलिपि की थी । पत्र जीर्ण हैं ।

२८७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १६६१ । वे० सं० १६४३ । ट भण्डार ।

विशेष—इनके प्रतिरिक्त अ च और ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १०५५, ३६८ तथा २०६४)
और है ।

२८७३. सारस्वतदशाध्यायी..... । पत्र सं० १० । प्रा० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । २० काल × । ले० काल सं० १७६८ वैशाख बुदी ११ । वे० सं० १३७ । छ भण्डार ।

विशेष -- प्रति संस्कृत टीका सहित है । कृष्णदास ने प्रतिलिपि की थी ।

२८७४. सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका..... । पत्र सं० १६ । प्रा० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
व्याकरण । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४६ । छ भण्डार ।

२८७५. सिद्धान्तविन्दु—श्रीमधुसूदन सरस्वती । पत्र सं० २८ । आ० १०^३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल सं० १७४२ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८१७ । अ भण्डार ।

विशेष—इति श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीविश्वेश्वर सरस्वती भगवत्पाद शिष्य श्रीमधुसूदन सरस्वती विरचितः सिद्धान्तविन्दुस्समाप्तः ॥ संवत् १७४२ वर्षे आश्विनमासे कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां बुधवासरे बगलनाम्निनगरे मिश्र श्री श्यामलस्य पुत्रेण भगवन्नाम्ना सिद्धान्तविन्दुरलेखि । शुभमस्तु ॥

२८७६. सिद्धान्तमंजूषिका—नागेशभट्ट । पत्र सं० ६३ । आ० १२^३×५^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३४ । ज भण्डार ।

२८७७. सिद्धान्तमुक्तावली—पंचानन भट्टाचार्य । पत्र सं० ७० । आ० १२×५^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल सं० १८३३ भाद्रवा बुदी ३ । वे० सं० ३०८ । ज भण्डार ।

२८७८. सिद्धान्तमुक्तावली । पत्र सं० ७० । आ० १२×५^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल सं० १७०५ चैत सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २८६ । ज भण्डार ।

२८७९. हेमनीवृहद्बृत्ति । पत्र सं० ५४ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४९ । झ भण्डार ।

२८८०. हेमव्याकरणवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० २४ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४४ । ट भण्डार ।

२८८१. हेमीव्याकरण—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ८३ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—व्याकरण । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५८ ।

विशेष—बीच में अधिकांश पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन है ।



कोश

२८८२. अनेकार्थध्वनिमंजरी—महीक्षपण कवि । पत्र सं० ११ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १४ । छ भण्डार ।

२८८३. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी..... । पत्र सं० १४ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९१५ । ट भण्डार ।

विशेष—तृतीय अधिकार तक पूर्ण है ।

२८८४. अनेकार्थमञ्जरी—नन्ददास । पत्र सं० २१ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१८ । झ भण्डार ।

२८८५. अनेकार्थशत—भट्टारक हर्षकीर्त्ति । पत्र सं० २३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १६६७ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १५ । छ भण्डार ।

२८८६. अनेकार्थसंग्रह—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ४ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १६६६ अषाढ बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३८ । क भण्डार ।

२८८७. अनेकार्थसंग्रह..... । पत्र सं० ४१ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४ । च भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम महीपकोश भी है ।

२८८८. अभिधानकोष—पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० ३४ । आ० ११३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७१ । अ भण्डार ।

२८८९. अभिधानचिंतामणिनाममाला—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०५ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल प्रथमकाण्ड है ।

२८९०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३५ । ले० काल सं० १७३० अषाढ सुदी १० । वे० सं० ३६ । क भण्डार ।

विशेष—स्वोपज्ञ संस्कृत टीका सहित है । महाराणा राजसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई थी ।

२८६१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १८०२ ज्येष्ठ सुदी १०। वे० सं० ३७। क
भण्डार।

विशेष—स्वोपज्ञवृत्ति है।

२८६२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७ से १३४। ले० काल सं० १७८० आसोज सुदी ११। अपूर्ण। वे०
सं० ५। च भण्डार।

२८६३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ११२। ले० काल सं० १६२६ आषाढ बुदी २। वे० सं० ८५। ज
भण्डार।

२८६४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ५८। ले० काल सं० १८१३ बैशाख सुदी १३। वे० सं० १११। ज
भण्डार।

विशेष—पं० भीमराज ने प्रतिलिपि की थी।

२८६५. अभिधानरत्नाकर—धर्मचन्द्रगणि। पत्र सं० २६। आ० १०×४^३ इंच। भाषा—संस्कृत।
विषय—कोश। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८२७। अ भण्डार।

२८६६. अभिधानसार—पं० शिवजीलाल। पत्र सं० २३। आ० १२×५^३ इंच। भाषा—संस्कृत।
विषय—कोश। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८। ग्व भण्डार।

विशेष—देवकाण्ड तक है।

२८६७. अमरकोश—अमरसिंह। पत्र सं० २६। आ० १२×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—कोश।
२० काल ×। ले० काल सं० १८०० ज्येष्ठ सुदी १४। पूर्ण। वे० सं० २०७५। अ भण्डार।

विशेष—इसका नाम लिंगानुशासन भी है।

२८६८. प्रति सं० २। पत्र सं० ३८। ले० काल सं० १८३५। वे० सं० १६११। अ भण्डार।

२८६९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५४। ले० काल सं० १८११। वे० सं० ६२२। अ भण्डार।

२६००. प्रति सं० ४। पत्र सं० १८ से ६१। ले० काल सं० १८८२ आसोज सुदी १। अपूर्ण। वे०
सं० ६२१। अ भण्डार।

२६०१. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १८६४। वे० सं० २४। क भण्डार।

२६०२. प्रति सं० ६। पत्र सं० १३ से ६१। ले० काल सं० १८२४। वे० सं० १२। अपूर्ण। ख
भण्डार।

२६०३. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६८ आसोज सुदी ६ । वे० सं० २४ । क
भण्डार ।

विशेष—प्रथमकाण्ड तक है । अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

२६०४. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १८८३ आसोज सुदी ३ । वे० सं० २७ । क
भण्डार ।

विशेष—जयपुर में दीवाण अमरचन्दजी के मन्दिर में मालीराम साह ने प्रतिलिपि की थी ।

२६०५. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १८१८ कार्तिक बुदी ८ । वे० सं० १३६ । क
भण्डार ।

विशेष—ऋषि हेमराज के पठनार्थ ऋषि भारमल्ल ने जयदुर्ग में प्रतिलिपि की थी । सं० १८२२ आषाढ
सुदी २ में ३) क देकर पं० रेवतीसिंह के शिष्य रूपचन्द ने श्वेताम्बर जती से ली ।

२६०६. प्रति सं० १० । पत्र सं० ६१ से १३१ । ले० काल सं० १८३० आषाढ बुदी ११ । अपूर्ण ।
वे० सं० २६५ । छ भण्डार ।

विशेष—मोनीराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६०७. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १८८१ बैशाख सुदी १५ । वे० सं० ३४४ । ज
भण्डार ।

विशेष—कहीं २ टीका भी दो हुई है ।

२६०८. प्रति सं० १२ । पत्र सं० १८६ । ले० काल सं० १७६६ मंगसिर सुदी ५ । वे० सं० ७ । क
भण्डार ।

विशेष—इनके प्रतिगिक्त अ भण्डार में २१ प्रतियां (वे० सं० ६३८, ८०४, ७६१, ६२३, ११६६,
११६२, ८०६, ६१७, १२८६, १२८७, १२८८, १२६०, १६५६, १६६०, १३४२, १८३६, १५५८, १५५६, १५६०,
१८५१, २१०५) क भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० २१, २२, २३, २५, २६) ख भण्डार में ५ प्रतियां (वे०
सं० ६, १०, ११, २६६, २६६) ग भण्डार में ११ प्रतियां (वे० सं० १६, १७, १८, १६, २०, २१, २२, २३,
२४, २५, २६) च भण्डार में ७ प्रतियां (वे० सं० ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४) छ भण्डार में ४ प्रतियां
(वे० सं० १३६, १३६, १४१, २४ [क]) ज भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ५६, ३५०, ३५२, ६२) झ भण्डार
१ प्रति (वे० सं० ६५), तथा ट भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १८००, १८८५, २१०१ तथा २०७६)
घोर हैं ।

२६०६. अमरकोषटीका—भानुजीदीक्षित । पत्र सं० ११४ आ० १०×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । च भण्डार ।

विशेष—बघेल वंशोद्भव श्री महीधर श्री कीर्तिसिंहदेव की आज्ञा से टीका लिखी गई ।

२६१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७ । च भण्डार ।

२६११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० १८८६ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथमखण्ड तक है ।

२६१२. एकाक्षरकोश—क्षपरणक । पत्र सं० ४ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

२६१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८८६ कार्तिक सुदी ५ । वे० सं० ५१ । च

भण्डार ।

२६१४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १६०३ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० १५५ । ज

भण्डार ।

विशेष—पं० सदासुखजी ने अपने शिष्य के प्रतिबोधार्थ प्रतिलिपि की थी ।

२६१५. एकाक्षरीकोश—वररुचि । पत्र सं० २ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७१ । अ भण्डार ।

२६१६. एकाक्षरीकोश..... । पत्र सं० १० । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३०० । अ भण्डार ।

२६१७. एकाक्षरनाममाला..... । पत्र सं० ४ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश ।

२० काल × । ले० काल सं० १६०३ चैत्र बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ११५ । ज भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में महाराजा रामसिंह के शासनकाल में भ० देवेन्द्रकीर्ति के समय में पं० सदासुखजी के शिष्य फतेलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२६१८. त्रिकाण्डशेषसूची (अमरकोश)—अमरसिंह । पत्र सं० ३४ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच ।

भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४१ । च भण्डार ।

विशेष—अमरकोश के काण्डों में आने वाले शब्दों की श्लोक संख्या दी हुई है । प्रत्येक श्लोक का प्रारम्भिक अंश भी दिया हुआ है ।

इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १४२, १४३, १४५) और हैं ।

२६१६. त्रिकाण्डशेषाभिधान—श्री पुरुषोत्तमदेव । पत्र सं० ४३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५० । छ भण्डार ।

२६२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४२ । ले० काल × । वे० सं० १४४ । च भण्डार ।

२६२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १६०३ आसोज बुदी ६ । वे० सं० १८६ ।

विशेष—जयपुर के महाराजा रामसिंह के शासनकाल में पं० सदानुखजी के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि
की थी ।

२६२२. नाममाला—धनंजय । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४७ । अ भण्डार ।

२६२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८३७ फागुण सुदी १ । वे० सं० २८२ । अ
भण्डार ।

विशेष—पाटोदी के मन्दिर में खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके प्रतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १४, १०७३, १०८६) और हैं ।

२६२४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १३०६ कार्तिक बुदी ८ । वे० सं० ६३ । ख
भण्डार ।

विशेष—छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३२२) और है ।

२६२५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४३ ज्येष्ठ सुदी ११ । वे० सं० २४६ । छ
भण्डार ।

विशेष—पं० भारामल्ल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसके प्रतिरिक्त इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६६) तथा ज भण्डार में (वे० सं० २७६) की
एक प्रति और है ।

२६२६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० १८५ । अ भण्डार ।

२६२७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८०१ फागुण सुदी ६ । वे० सं० ५२२ । ब
भण्डार ।

२६२८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १७ से ३६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०८ । ट भण्डार ।

विशेष—इसके प्रतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १०७३, १४, १०८६) छ, छ तथा ज
भण्डार में १-१ प्रति (वे० सं० ३२२, २६६, २७६) और हैं ।

२६२६. नाममाला.....। पत्र सं० १२ । आ० १०×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२८ । ट भण्डार ।

२६३०. नाममाला—बनारसीदास । पत्र सं० १४ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४ । ख भण्डार ।

२६३१ बीजक(कोश).....। पत्र सं० २३ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००४ । अ भण्डार ।

विशेष—विमलहंसगणि ने प्रतिलिपि की थी ।

२६३२. मानमञ्जरी—नंददास । पत्र सं० २२ । आ० ८×६ इंच । भाषा—हिन्दी विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १८५३ फागुण सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ५६३ । ङ भण्डार ।

विशेष—चन्द्रभान बज ने प्रतिलिपि की थी ।

२६३३. मेदिनीकोश . . . । पत्र सं० ६४ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८२ । क भण्डार ।

२६३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० २७८ । च भण्डार ।

२६३५. रूपमञ्जरीनाममाला—गोपालदास सुत रूपचन्द । पत्र सं० ८ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल सं० १६४४ । ले० काल सं० १७८० चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १८७६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में नाममाला की तरह श्लोक हैं ।

२६३६. लघुनाममाला—हर्षकीर्तिसूरि । पत्र सं० २३ । आ० ६×६३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १८२८ ज्येष्ठ बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ११२ । ज भण्डार ।

विशेष—सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी ।

२६३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ४६८ । व्य भण्डार ।

२६३८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ से १६, ३७ से ४५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५८४ । ट भण्डार ।

२६३९. लिंगानुशासन.....। पत्र सं० ५ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—५ से आगे पत्र नहीं हैं ।

२६४०. लिंगानुशासन—हेमचन्द्र । पत्र सं० १० । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । ज भण्डार ।

विशेष—कहीं २ शब्दार्थ तथा टीका भी संस्कृत में दी हुई हैं ।

२६४१. विश्वप्रकाश—वैद्यराज महेश्वर । पत्र सं० १०१ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । क भण्डार ।

२६४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ३३२ । क भण्डार ।

२६४३. विश्वलोचन—धरसेन । पत्र सं० १८ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
कोश । २० काल × । ले० काल सं० १५६६ । पूर्ण । वे० सं० २७५ । च भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम मुक्तावली भी है ।

२६४४. विश्वलोचनकोशकीशब्दानुक्रमणिका..... । पत्र सं० २६ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८७ । अ भण्डार ।

२६४५. शतक..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । ङ भण्डार ।

२६४६. शब्दप्रभेद व धातुप्रभेद—सकल वैद्य चूडामणि श्री महेश्वर । पत्र सं० १६ । आ०
१०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७७ । ख भण्डार ।

२६४७. शब्दरत्न..... । पत्र सं० १६६ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—कोश । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४६ । ज भण्डार ।

२६४८. शारदीयनाममाला..... । पत्र सं० २४ से ४७ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८३ । अ भण्डार ।

२६४९. शिलोञ्जकोश—कवि सारस्वत । पत्र सं० १७ । आ० १०३×४५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कोश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । (तृतीयखंड तक) वे० सं० ३४३ । च भण्डार ।

विशेष—रचना अमरकोश के आधार पर की गई है जैसा कि कवि के निम्न पद्यों से प्रकट है ।

कवेरमहसिहस्य कृतिरेषाति निर्मला ।

श्रीचन्द्रतारकं भूयान्नामर्लिगानुशासनम् ।

पद्मानिबोधयत्यर्कः शास्त्राणि कुश्ले कविः

तत्सौरभनभस्वंतः संतस्तन्वन्तितद्गुणाः ॥

लूनेष्वमरसिहेन, नामलिङ्गेषु शालिषु ।

एष वाङ्मयवप्रेषु शिलोच्छ क्रियते मया ॥

२६५०. सवाथसाधनी—भट्टवररुचि । पत्र सं० २ से २४ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—कोश । २० काल × । ले० काल सं० १५६७ मंगसिर बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० २१२ । स्व भण्डार ।

विशेष—हिसार पिरोज्यकोट में रुद्रपल्लीयगच्छ के देवसुंदर के पट्ट में श्रीजिनदेवसूरि ने प्रतिलिपि की थी ।



ज्योतिष एवं निमित्तज्ञान

२६५१. अरिहंत केवली पाशा.....। पत्र सं० १४ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-ज्योतिष । २० काल सं० १७०७ सावन सुदी ५ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ रचना सहजानन्दपुर में हुई थी ।

२६५२. अरिष्ट कर्ता.....। पत्र सं० ३ । आ० ११×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष

० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५६ । ख भण्डार ।

विशेष—६० श्लोक हैं ।

२६५३. अरिष्टाध्याय.....। पत्र सं० ११ । आ० ८×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल सं० १८६६ वैशाख सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १३ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० जीवणराम ने शिष्य पन्नलाल के लिये प्रतिलिपि की । ६ पत्र से आगे भारतीस्तोत्र दिया हुआ है ।

२६५४. अबजद केवली.....। पत्र सं० १० । आ० ८×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६ । व्य भण्डार ।

२६५५. उच्चग्रह फल.....। पत्र सं० १ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । ख भण्डार ।

२६५६. करण कौतूहल.....। पत्र सं० ११ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५ । ज भण्डार ।

२६५७. करलक्षणा.....। पत्र सं० ११ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं । मारिण्वयचन्द्र ने वृन्दावन में प्रतिलिपि की ।

२६५८. कर्पूरचक्र—। पत्र सं० १ । आ० १४ $\frac{३}{४}$ ×११ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल सं० १८६३ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २१६४ । अ भण्डार ।

विशेष—चक्र भवन्ती नगरी से प्रारम्भ होता है, इसके चारों ओर देश चक्र है तथा उनका फल है । पं० भुशाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १८४० । वे० सं० २१६६ अ भण्डार ।

विशेष—मिश्र धरणीधर ने नागपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६६०. कर्मराशि फल (कर्म विपाक).....। पत्र सं० ३१ । आ० ८३×४ इंच । भाषा—संस्कृत
विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण × । वे० सं० १६५१ । अ भण्डार ।

२६६१. कर्म विपाक फल.....। पत्र सं० ३ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३ । अ भण्डार ।

विशेष—राशियों के अनुसार कर्मों का फल दिया हुआ है ।

२६६२. कालज्ञान—। पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१८ । अ भण्डार ।

२६६३. कालज्ञान.....। पत्र सं० २ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११८६ । अ भण्डार ।

२६६४. कौतुक लीलावती.....। पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८६२ । वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० २६१ । ख भण्डार ।

२६६५. क्षेत्र व्यवहार.....। पत्र सं० २० । आ० ८×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६७ । ट भण्डार ।

२६६६. गर्गमनोरमा.....। पत्र सं० ७ । आ० ७×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वे० सं० २१२ । क भण्डार ।

२६६७. गर्गसंहिता—गर्गऋषि । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष
२० काल × । ले० काल सं० १८८६ । अपूर्ण । वे० सं० ११६७ । अ भण्डार ।

२६६८. ग्रह दशा वर्णन.....। पत्र सं० १८ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० १७२७ । ट भण्डार ।

विशेष—ग्रहों की दशा तथा उपदशाओं के अन्तर एवं फल दिये हुए हैं ।

२६६९. ग्रह फल.....। पत्र सं० ६ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०२२ । ट भण्डार ।

२६७०. ग्रहलाघव—गणेश दैवज्ञ । पत्र सं० ४ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४४ । ख भण्डार ।

२६७८. चन्द्रनाडीसूर्यनाडीकवच.....। पत्र सं० ५-२३। आ० १०×४^३ इंच। भाषा-संस्कृत।
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० १६८। ङ्ग भण्डार।

विशेष—इसके आगे पंचव्रत प्रमाण लक्षण भी हैं।

२६७९. चमत्कारचिंतामणि.....। पत्र सं० २-६। आ० १०×४^३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० ×। १८१८ फागुण बुधो ५। पूर्णा। वे० सं० ६३२। अ भण्डार।

२६८०. चमत्कारचिन्तामणि.....। पत्र सं० २६। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्णा। वे० सं० १७३०। ट भण्डार।

२६८१. छायापुरुषलक्षण.....। पत्र सं० २। आ० ११×४^३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
सानुदिक शास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्णा। वे० सं० १४४। ङ्ग भण्डार।

विशेष—नौनिधराम ने प्रतिलिपि की थी।

२६८२. जन्मपत्रीमहविचार.....। पत्र सं० १। आ० १२×५^३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्णा। वे० सं० २२१३। अ भण्डार।

२६८३. जन्मपत्रीविचार.....। पत्र सं० ३। आ० १२×५^३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्णा। वे० सं० ६१०। अ भण्डार।

२६८४. जन्मप्रदीप—रोमकाचार्य। पत्र सं० २-२०। आ० १२×५^३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० १८३१। अपूर्णा। वे० सं० १०४८। अ भण्डार।

विशेष—शंकरभट्ट ने प्रतिलिपि की थी।

२६८५. जन्मफल.....। पत्र सं० १। आ० ११^३×५^३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्णा। वे० सं० २०२४। अ भण्डार।

२६८६. जातककर्मपद्धति.....श्रीपति। पत्र सं० १४। आ० ११×४^३ इंच। भाषा-संस्कृत।
विषय-ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० १६३८ वैशाख मुदी १। पूर्णा। वे० सं० ६००। अ भण्डार।

२६८७. जातकपद्धति—केशव। पत्र सं० १०। आ० ११×५^३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्णा। वे० सं० २१७। अ भण्डार।

२६८८. जातकपद्धति.....। पत्र सं० २६। आ० ८×६^३। भाषा-संस्कृत। २० काल ×। ले०
काल ×। अपूर्णा। वे० सं० १७४६। ट भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी टीका सहित है।

२६८६. जातकाभरण—द्वैवहृद्दिराज । पत्र सं० ४३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १७३६ भाद्रपद सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८६७ । अ भण्डार ।

विशेष—नागपुर में पं० मुखकुशलगरि ने प्रतिलिपि की थी ।

२६६७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०० । ले० काल सं० १८४० कार्तिक सुदी ६ । वे० सं० १५७ ।

ज भण्डार ।

विशेष—भट्ट गंगाधर ने नागपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२६६१. जातकालंकार..... । पत्र सं० १ से ११ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४५ । ट भण्डार ।

२६६२. ज्योतिषरत्नमाला..... । पत्र सं० ६ से २४ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८३ । अ भण्डार ।

२६६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० १५४ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

२६६४. ज्योतिषमणिमाला.....केशव । पत्र सं० ५ से २७ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२०५ । अ भण्डार ।

२६६५. ज्योतिषफलग्रंथ..... । पत्र सं० ६ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४ । ज भण्डार ।

२६६६. ज्योतिषसारभाषा—कृपाराम । पत्र सं० ३ से १३ । आ० ६३×६ इंच । भाषा—हिन्दी

(पद्य) । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८४१ कार्तिक बुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० १५१३ ।

भण्डार ।

विशेष—फतेराम वैद्य ने नोनिधराम बज की पुस्तक से लिखा ।

आदि भाग—(पत्र ३ पर)

ग्रथ केंदरिया त्रिकोण घर को भेद—

केंदरियो चोथो भवन सपतम दसमो जान ।

पंचम अरु नोमों भवन येह त्रिकोण बखान ॥६॥

तीजो षसटम ग्यारमो अर दसमो वर सेखि ।

इन को उपचै कहत है सबै ग्रंथ में देखि ॥७॥

ग्रन्थि—

वरष लग्यो जा अंस में सोई दिन चित धारि ।

वा दिन उतनी घडी जु पल बीते लगन विचारि ॥४०॥

लगन लिखे ते गिरह जो जा घर बैठो आय ।

ता घर के फल मुफल को कीजे मित बनाय ॥४१॥

इति श्री कवि कृपाराम कृत भाषा ज्योतिषसार संपूर्ण ।

२६६७. ज्योतिषसारलघुचन्द्रिका—काशीनाथ । पत्र सं० ६३ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८६३ पौष सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ६३ । ख भण्डार ।

२६६८. ज्योतिषसारसूत्रटिप्पण—नारचन्द्र । पत्र सं० १६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८२ । ख भण्डार ।

विशेष—मूलग्रन्थकर्ता सागरचन्द्र हैं ।

२६६९. ज्योतिषशास्त्र..... । पत्र सं० ११ । आ० ५×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०१ । छ भण्डार ।

३०००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० सं० ५२१ । ख भण्डार ।

३००१. ज्योतिषशास्त्र..... । पत्र सं० ५ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८४ । ट भण्डार ।

३००२. ज्योतिषशास्त्र..... । पत्र सं० ५८ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० १११५ । अ भण्डार ।

विशेष—ज्योतिष विषय का संग्रह ग्रन्थ है ।

प्रारम्भ में कुछ व्यक्तियों के जन्म टिप्पण दिये गये हैं इनकी संख्या २२ है । इनमें मुख्यरूप से निम्न नाम
तथा उनके जन्म समय उल्लेखनीय हैं—

महाराजा बिशनसिंह के पुत्र महाराजा जयसिंह	जन्म सं० १७४५ मंगसिर
महाराजा बिशनसिंह के द्वितीय पुत्र विजयसिंह	जन्म सं० १७४७ चैत्र सुदी ६
महाराजा सवाई जयसिंह की राणी गौडि के पुत्र	सं० १७६६
रामचन्द्र (जन्म नाम भांभूराम)	सं० १७१५ फागुण सुदी २
दोलतरामजी (जन्म नाम बेगराज)	सं० १७४६ आषाढ बुदी १४

३००३. ताजिकसमुच्चय.....। पत्र सं० १५। आ० ११×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० १८५६। पूर्ण। वे० सं० २५५। ख भण्डार

विशेष—बडा नरायने में श्री पार्ष्वनाथ चैत्यालय में जीवणराम ने प्रतिलिपि की थी।

३००४ तात्कालिकचन्द्रशुभाशुभफल.....। पत्र सं० ३। आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

३००५ त्रिपुरबंधमुहूर्त.....। पत्र सं० १। आ० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११८८। अ भण्डार।

३००६. त्रैलोक्यप्रकाश.....। पत्र सं० १६। आ० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६१२। अ भण्डार।

विशेष—१ से ६ तक दूसरी प्रति के पत्र हैं। २ से १४ तक वाली प्रति प्राचीन है। दो प्रतियों का सम्मिश्रण है।

३००७. वशीठनमुहूर्त.....। पत्र सं० ३। आ० ७ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७२५। अ भण्डार।

३००८. नक्षत्रविचार.....। पत्र सं० ११। आ० ८×५ $\frac{१}{२}$ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० १८६८। पूर्ण। वे० सं० २७९। भू भण्डार।

विशेष—छोंक आदि विचार भी विये दिये हैं।

निम्नलिखित रचनायें और हैं—

सजनप्रकाश दोहा—

कवि ठाकुर हिन्दी [१० कवित्त]

मित्रविषय के दोहे—

हिन्दी [४४ दोहों हैं]

रक्तगुञ्जाकल्प—

हिन्दी [ले० काल सं० १९६७]

विशेष—लाल चिरमी का सेवन बताया गया है जिसके साथ लेने से क्या असर होता है इसका वर्णन ३६ दोहों में किया गया है।

३००९. नक्षत्रवैद्यपीडाज्ञान.....। पत्र सं० ९। आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८९४। अ भण्डार।

३०१०. नक्षत्रसत्र.....। पत्र सं० ३ से २४। आ० ९×३ $\frac{१}{२}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० १८०१ मंगसिर सुदी ८। अपूर्ण। वे० सं० १७३६। अ भण्डार

३०११. नरपतिजयचर्या—नरपति । पत्र सं० १४८ । आ० १२३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल सं० १५२३ चैत्र सुदी १५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४९ । अ भण्डार ।

विशेष—४ से १२ तक पत्र नहीं हैं ।

३०१२. नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र—नारचन्द्र । पत्र सं० २६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८१० मंगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १७२ । अ भण्डार ।

३०१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० ३४५ । अ भण्डार ।

३०१४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८६५ फागुण सुदी ३ । वे० सं० ६५ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रत्येक पंक्ति के नीचे अर्थ लिखा हुआ है ।

३०१५. निमित्तज्ञान (भद्रबाहु संहिता)—भद्रबाहु । पत्र सं० ७७ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७ । अ भण्डार ।

३०१६. निषेकाध्यायवृत्ति । पत्र सं० १८ । आ० ८×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४८ । ट भण्डार ।

विशेष—१८ से आगे पत्र नहीं हैं ।

३०१७. नीलकंठताजिक—नीलकंठ । पत्र सं० १४ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०५८ । अ भण्डार ।

३०१८. पञ्चागप्रबोध..... । पत्र सं० १० । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७३५ । ट भण्डार ।

३०१९. पंचांग—चण्डू । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न वर्षों के पंचांग हैं ।

संवत् १८२६, ५२, ५४, ५५, ५६, ५८, ६१, ६२, ६५, ७१, ७२, ७३, ७४, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८३, ८७, ९८ ।

३०२०. पंचांग..... । पत्र सं० १३ । आ० ७३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १९२७ । पूर्ण । वे० सं० २४७ । ख भण्डार ।

३०२१. पंचांगसाधन—गणेश (केशवपुत्र) । पत्र सं० ५२ । आ० ९×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८८२ । वे० सं० १७३१ । ट भण्डार ।

३०२२. पल्यविचार.....। पत्र सं० ६। आ० ६३×४३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—शकुन शास्त्र।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६५। अ भण्डार।

३०२३. पल्यविचार.....। पत्र सं० २। आ० ६३×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—शकुनशास्त्र।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३६२। अ भण्डार।

३०२४. पाराशरी.....। पत्र सं० ३। आ० १३×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। २०
काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३३२। अ भण्डार।

३०२५. पाराशरीसज्जनरंजनीटीका.....। पत्र सं० २३। आ० १२×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत।
विषय—ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० १८३६ आसोज सुदी २। पूर्ण वे० सं० ६३३। अ भण्डार।

३०२६. पाशाकेवली—गर्गमुनि। पत्र सं० ७। आ० १०३×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—निमित्त
शास्त्र। २० काल ×। ले० काल सं० १८७१। पूर्ण। वे० सं० ६२५। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का नाम शकुनावली भी है।

३०२७. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १७३८। जीर्ण। वे० सं० ६७६। अ भण्डार।

विशेष—ऋषि मनोहर ने प्रतिलिपि की थी। श्रीचन्द्रसूरि रचित नेमिनाथ स्तवन भी दिया हुआ है।

३०२८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० ६२३। अ भण्डार।

३०२९. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८१७ पौष सुदी १। वे० सं० ११८। छ
भण्डार।

विशेष—निवासपुरी (सांगानेर) में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में तवाईराम के शिष्य नौनगराम ने प्रतिलिपि
की थी।

३०३०. प्रति सं० ५। पत्र सं० ११। ले० काल ×। वे० सं० ११८। छ भण्डार।

३०३१. प्रति सं० ६। पत्र सं० ११। ले० काल सं० १८६६ बैशाख बुदा १२। वे० सं० ११४। छ
भण्डार।

विशेष—दयाचन्द गर्ग ने प्रतिलिपि की थी।

३०३२. पाशाकेवली—ज्ञानभास्कर। पत्र सं० ५। आ० ६×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—
निमित्त शास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२०। अ भण्डार।

३०३३. पाशाकेवली.....। पत्र सं० ११। आ० ६×४ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—निमित्तशास्त्र।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६४६। अ भण्डार।

३०३४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १७७५ फागुण बुदी १०। वे० सं० २०१६। अ
भण्डार।

विशेष—पांडे दयाराम सोनी ने आमेर में मल्लिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १०७१, १०८८, ७६८) ख भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १०८) छ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ११६, ११४, ११४) ट भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १८२४) और हैं ।

३०३५. पाशाकेवली.....। पत्र सं० ५ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी विषय—निमित्तशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वे० सं० ३६५ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० रतनचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३०३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २५७ । ज भण्डार ।

३०३७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ११६ । व्य भण्डार ।

३०३८. पाशाकेवली.....। पत्र सं० १ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—निमित्त शास्त्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५६ । अ भण्डार ।

३०३९. पाशाकेवली.....। पत्र सं० १३ । आ० ८३×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—निमित्त शास्त्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १८५० । अपूर्ण । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

विशेष—विद्यालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । प्रथम पत्र नहीं हैं ।

३०४०. पुरश्चरणविधि.....। पत्र सं० ४ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३४ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । पत्र भोग गये हैं जिससे कई जगह पढा नहीं जा सकता ।

३०४१. प्रश्नचूडामणि.....। पत्र सं० १३ । आ० ६×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६६ । अ भण्डार ।

३०४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८०८ आसोज मुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

विशेष—तीसरा पत्र नहीं है विजैराम अजमेरा चाटसू वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३०४३. प्रश्नविद्या.....। पत्र सं० २ से ५ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३३ । छ भण्डार ।

३०४४. प्रश्नविनोद। पत्र सं० १६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।
२० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८४ । छ भण्डार ।

३०४५. प्रश्नमनोरमा—गर्ग । पत्र सं० ३ । आ० १३×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।
२० काल × । ले० काल सं० १६२८ भाद्रवा मुदी ७ । वे० सं० १७४१ । ट भण्डार ।

३०४६. प्रश्नमाला..... पत्र सं० १० । आ० ६×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६५ । अ भण्डार ।

३०४७. प्रश्नसुगनावलिरमल..... पत्र सं० ४ । आ० ६३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६ । अ भण्डार ।

३०४८. प्रश्नावलि..... पत्र सं० ७ । आ० ६×३३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८१७ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं हैं ।

३०४९. प्रश्नसार..... पत्र सं० १६ । आ० १२३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६२६ फागुण बुदी १४ । वे० सं० ३३६ । ज भण्डार ।

३०५०. प्रश्नसार—हयग्रीव । पत्र सं० १२ । आ० ११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० ३३३ । ज भण्डार ।

विशेष—पत्रों पर कोष्ठक बने हैं जिन पर अक्षर लिखे हुये हैं उनके अनुसार शुभाशुभ फल निकलता है

३०५१. प्रश्नोत्तरमाणिक्यमाला—संग्रहकर्ता ब्र० ज्ञानसागर । पत्र सं० २७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८६० । पूर्ण । वे० सं० २६१ । ख भण्डार ।

३०५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८६१ चैत्र बुदी १० । अपूर्ण । वे० सं० ११० ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है ।

इति प्रश्नोत्तर माणिक्यमाला महाग्रन्थे भट्टारक श्री चरणारविद मधुकरोपमा ब्र० ज्ञानसागर संग्रहीते श्री जिनमाश्रित प्रथमोधिकारः ॥ प्रथम पत्र नहीं है ।

३०५३. प्रश्नोत्तरमाला..... पत्र सं० २ से २२ । आ० ७३×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८६४ । अपूर्ण । वे० सं० २०६८ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री बलदेव बालाहेडी वाले ने बाबा बालमुकुन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३०५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १८१७ आसोज सुदी ५ । वे० सं० ११४ । ख भण्डार ।

३०५५. भवानीवाक्य..... पत्र सं० ५ । आ० ६×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२८२ । अ भण्डार ।

विशेष—सं० १६०५ से १६६६ तक के प्रतिवर्ष का भविष्य फल दिया हुआ है ।

३०५६. भडली.....। पत्र सं० ११ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । २० काल × । वे० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४० । छ भण्डार ।

विशेष—मेघ गर्जना, बरमना तथा बिजली आदि चमकने से वर्ष फल देखने सम्बन्धी विचार दिये हुये हैं ।

३०५७. भाव्रती—पद्मनाभ । पत्र सं० ६ । आ० ११×३३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६४ । च भण्डार ।

३०५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २६५ । च भण्डार ।

३०५९. भुवनदीपिका.....। पत्र सं० २२ । आ० ७३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १९१५ । पूर्ण । वे० सं० २४१ । ज भण्डार ।

३०६०. भुवनदीपक—पद्मप्रभसूरि । पत्र सं० ५८ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८९५ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३०६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८५६ फागुण सुदी १० । वे० सं० ६१२ । अ भण्डार ।

विशेष—खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० २६६ । च भण्डार ।

विशेष—पत्र १७ में आगे कोई अन्य ग्रन्थ है जो अपूर्ण है ।

३०६३. भृगुसंहिता.....। पत्र सं० २० । आ० ११×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है ।

३०६४. मुहूर्त्तचिन्तामणि.....। पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८८६ । अपूर्ण । वे० सं० १४७ । ख भण्डार ।

३०६५. मुहूर्त्तमुक्तावली.....। पत्र सं० ६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८१६ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १३६४ । अ भण्डार ।

३०६६. मुहूर्त्तमुक्तावली—परमहंस परिव्राजकाचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ६३×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०१२ । अ भण्डार ।

विशेष—सब कार्यों के मुहूर्त्त का विवरण है ।

३०६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८७१ वैशाख बुदी १ । वे० सं० १४८ । ख भण्डार ।

३०६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १७८२ मार्गशीर्ष बुदी ३ । ज भण्डार ।

विशेष—सथाणा नगर में मुनि चोखचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६९. मुहूर्त्तमुक्तावलि.....। पत्र सं० १५ से २६ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—हिन्दी, संस्कृत ।

विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४९ । ख भण्डार ।

३०७०. मुहूर्त्तमुक्तावली.....। पत्र सं० ९ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल सं० १८१९ कार्तिक बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १३९४ । अ भण्डार ।

३०७१. मुहूर्त्तदीपक—महादेव । पत्र सं० ८ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल सं० १७९७ वैशाख बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६१४ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० डूंगरसी के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी ।

३०७२. मुहूर्त्तसंग्रह.....। पत्र सं० २२ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५० । ख भण्डार ।

३०७३. मेघमाला.....। पत्र सं० २ से १८ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८६६ । अ भण्डार ।

विशेष—वर्षा आने के लक्षणों एवं कारणों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है । श्लोक सं० ३४९ हैं ।

३०७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ६१५ । अ भण्डार ।

३०७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४७ । ट भण्डार ।

३०७६. योगफल.....। पत्र सं० १९ । आ० ६३×३३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २८३ । च भण्डार ।

३०७७. रत्नदीपक—गणपति । पत्र सं० २३ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष ।

२० काल × । ले० काल सं० १८२८ । पूर्ण । वे० सं० १६० । ख भण्डार ।

३०७८. रत्नदीपक.....। पत्र सं० ५ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २०

काल × । ले० काल सं० १८१० । पूर्ण । वे० सं० ६११ । अ भण्डार ।

विशेष—जन्मपत्री विचार भी है ।

३०७९. रमलशास्त्र—पं० चितामणि । पत्र सं० १५ । आ० ८×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५४ । छ भण्डार ।

३०८०. रमलशास्त्र.....। पत्र सं० १६ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—निमित्त शास्त्र

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३२ । अ भण्डार ।

३०८१. रमलज्ञान..... पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-निमित्तशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

विशेष—आदिनाथ चैत्यालय में आचार्य रतनकीर्ति के प्रशिष्य सवाईराम के शिष्य नौनदराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३०८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ४४ । ले० काल सं० १८७८ आषाढ बुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० १५६४ । ट भण्डार ।

३०८३. राजादिफल..... पत्र सं० ४ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८२१ । पूर्ण । वे० सं० १६२ । ख भण्डार ।

३०८४. राहुफल..... पत्र सं० ८ । आ० ६३×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८०३ ज्येष्ठ सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ६६६ । च भण्डार ।

३०८५. रुद्रज्ञान..... पत्र सं० १ । आ० ६३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-शकुन शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १७५७ चैत्र । पूर्ण । वे० सं० २११६ । झ भण्डार ।

विशेष—देवराग्राम में लालसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

३०८६. लग्नचन्द्रिकाभाषा..... पत्र सं० ८ । आ० ८×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४८ । भू भण्डार ।

३०८७. लग्नशास्त्र—वर्द्धमानसूरि । पत्र सं० ३ । आ० १०×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६ । ज भण्डार ।

३०८८. लघुजातक—भट्टोत्पल । पत्र सं० १७ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १६३ । व्य भण्डार ।

३०८९. वर्षबोध..... पत्र सं० ५० । आ० १०३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८६३ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पत्र नहीं है । वर्षफल निकालने की विधि दी हुई है ।

३०९०. विवाहशोधन..... पत्र सं० २ । आ० ११×१ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६२ । अ भण्डार ।

३०९१. वृहज्जातक—भट्टोत्पल । पत्र सं० ४ । आ० १०३×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८०२ । ट भण्डार ।

विशेष—भट्टारक महेंद्रकीर्ति के शिष्य भारद्वाज ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६२. षट्पंचासिका—वराहमिहिर । पत्र सं० ६ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ । पूर्ण । वे० सं० ७३६ । छ भण्डार ।

३०६३. षट्पंचासिकावृत्ति—भट्टोत्पल । पत्र सं० २२ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १७८८ । अपूर्ण । वे० सं० ६४४ । अ भण्डार

विशेष—हेमराज मिश्र ने तथा साह पुरणमञ्ज ने प्रतिलिपि की थी । इसमें १, २, ८, ११ पत्र नहीं हैं ।

३०६४. शकुनविचार..... । पत्र सं० ५ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—शकुन शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । छ भण्डार ।

३०६५. शकुनावली..... । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५८ । अ भण्डार ।

विशेष—५२ अक्षरों का यंत्र दिया हुआ है ।

३०६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० १०२० । अ भण्डार ।

विशेष—पं० सदासुखराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६७. शकुनावली—गर्ग । पत्र सं० २ से ५ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम पाशाकेवली भी है ।

३०६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ११६ । अ भण्डार

विशेष—अमरचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३०६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८१३ मंगसिर सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० २७६ । अ भण्डार

३१००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ से ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६८ । ट भण्डार ।

३१०१. शकुनावली—अबजद । पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—शकुन शास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६२ सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २५८ । ज भण्डार

३१०२. शकुनावली । पत्र सं० १३ । आ० ८३×४ इंच । भाषा—पुरानी हिन्दी । विषय—शकुन शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११४ । छ भण्डार

३१०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १७८१ सावन बुदी १४ । वे० सं० ११४ । छ भण्डार ।

विशेष—रामचन्द्र ने उदयपुर में राणा संग्रामसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की थी । २० कमलाकार चक्र हैं जिनमें २० नाम दिये हुये हैं । पत्र ५ से आगे प्रश्नों का फल दिया हुआ है ।

३१०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३४० । ऋ भण्डार

३१०५. शकुनावली । पत्र सं० ५ मे ८ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८६० । अपूर्ण । वे० सं० १२५८ । अ भण्डार ।

३१०६. शकुनावली । पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—शकुनशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८०८ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १६६६ । अ भण्डार ।

विशेष—पातिशाह के नाम पर रमलशास्त्र है ।

३१०७. शनिश्चरदृष्टिविचार । पत्र सं० १ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४६ । अ भण्डार

विशेष—द्वादश राशिचक्र में से शनिश्चर दृष्टि विचार है ।

३१०८. शीघ्रबोध—काशीनाथ । पत्र सं० ११ से ३७ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६४३ । अ भण्डार ।

३१०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८३० । वे० सं० १८६ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० माणिकचन्द्र ने छोढीग्राम में प्रतिलिपि की थी ।

३११०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३८ । ले० काल सं० १८४८ आसोज सुदी ६ । वे० सं० १३८ । छ भण्डार ।

विशेष—संपतिराम खिन्दूका ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३१११. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७१ । ले० काल सं० १८६८ आषाढ बुदी १४ । वे० सं० २५५ । छ भण्डार ।

विशेष—आ० रत्नकीर्ति के शिष्य पं० सवाईराम ने प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ६०४, १०५६, १५५१, २२००) ख भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १८७) छ, ऋ तथा ट भण्डार में एक एक प्रति (वे० सं० १३८, १६२ तथा २११६) ग्रीर हैं ।

३११२. शुभाशुभयोग । पत्र सं० ७ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल सं० १८७५ पौष सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १८८ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० हीरालाल ने जांबनेर में प्रतिलिपि की थी ।

३११३. संक्रांतिफल । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०१ । ख भण्डार ।

३११४. संक्रांतिफल.....। पत्र सं० १६। आ० ६३×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।
२० काल ×। ले० काल सं० १६०१ भाद्रवा बुदी ११। वे० सं० २१३। ज भण्डार
३११५. संक्रांतिवर्णन.....। पत्र सं० २। आ० ६×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६४६। अ भण्डार
३११६. समरसार—रामवाजपेय। पत्र सं० १८। आ० १३×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल सं० १७१३। पूर्ण। वे० सं० १७३२। ट भण्डार
विशेष—योगिनीपुर (दिल्ली) में प्रतिलिपि हुई। स्वर शास्त्र से लिया हुआ है।
३११७. संवत्सरी विचार.....। पत्र सं० ८। आ० ६×६३ इंच। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—
ज्योतिष। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८६। झ भण्डार
विशेष—सं० १६५० से सं० २००० तक का वर्षफल है।
३११८. सामुद्रिकलक्षण.....। पत्र सं० १८। आ० ६×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—निमित्त
शास्त्र। स्त्री पुरुषों के अंगों के शुभाशुभ लक्षण आदि दिये हैं। २० काल ×। ले० काल सं० १५६४ पौष सुदी १२।
पूर्णा। वे० सं० २८१। व भण्डार
३११९. सामुद्रिकविचार.....। पत्र सं० १४। आ० ८३×४३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—निमित्त।
शास्त्र। २० काल ×। ले० काल सं० १७६१ पौष बुदी ४। पूर्णा। वे० सं० ६८। ज भण्डार।
३१२०. सामुद्रिकशास्त्र—श्रीनिधिसमुद्र। पत्र सं० ११। आ० १२×४३ इंच। भाषा—संस्कृत।
विषय—निमित्त। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्णा। वे० सं० ११६। छ भण्डार।
विशेष—ग्रंथ में हिन्दी में १३ शृङ्गार रस के दोहे हैं तथा स्त्री पुरुषों के अंगों के लक्षण दिये हैं।
३१२१. सामुद्रिकशास्त्र.....। पत्र सं० ६। आ० १४×४ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—निमित्त।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्णा। वे० सं० ७८४। अ भण्डार।
विशेष—पृष्ठ ८ तक संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं।
३१२२. सामुद्रिकशास्त्र.....। पत्र सं० ४१। आ० ८३×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—निमित्त।
२० काल ×। ले० काल सं० १८२७ ज्येष्ठ सुदी १०। अपूर्णा। वे० सं० ११०६। अ भण्डार।
विशेष—स्वामी चेतनदास ने गुमानोराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। २, ३, ४ पत्र नहीं हैं।
३१२३. प्रति सं० २। पत्र सं० २३। ले० काल सं० १७६० फागुण बुदी ११। अपूर्णा। वे० सं०
१४५। छ भण्डार।
विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं।

३१२४. सामुद्रिकशास्त्र। पत्र सं० ८। आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—निमित्त।
१० काल ×। ले० काल सं० १८८०। पूर्ण। वे० सं० ८६२। अ भण्डार।
३१२५. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११४७। अ भण्डार।
३१२६. सामुद्रिकशास्त्र। पत्र सं० १४। आ० ८×६ इंच। भाषा—हिन्दी पद्य। विषय—निमित्त।
१० काल ×। ले० काल सं० १६०८ आसोज बुदी ८। पूर्ण। वे० सं० २७७। क भण्डार।
३१२७. सारणी.....। पत्र सं० ४ से १३४। आ० १२×४ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—प्रपञ्च। विषय—
ज्योतिष। १० काल ×। ले० काल सं० १७१६ भाद्रवा बुदी ८। अपूर्ण। वे० सं० ३६३। च भण्डार।
विशेष—इसी भण्डार में ४ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३६४, ३६५, ३६६, ३६७) और हैं।
३१२८. सारावली.....। पत्र सं० १। आ० ११×३ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। १०
काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०२५। अ भण्डार।
३१२९. सूर्यगमनविधि.....। पत्र सं० ५। आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष।
१० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५६। अ भण्डार।
विशेष—जैन ग्रन्थानुसार सूर्यचन्द्रगमन विधि दी हुई है। केवल गणित भाग दिया है।
३१३०. सोमउत्पत्ति.....। पत्र सं० २। आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—ज्योतिष। १०
काल ×। ले० काल सं० १८०३। पूर्ण। वे० सं० १३८६। अ भण्डार।
३१३१. स्थानविचार.....। पत्र सं० १। आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—निमित्तशास्त्र।
१० काल ×। ले० काल सं० १८१०। पूर्ण। वे० सं० ६०६। अ भण्डार।
३१३२. स्वप्नाध्याय.....। पत्र सं० ४। आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—निमित्त
शास्त्र। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४७। अ भण्डार।
३१३३. स्वप्नावली—देवनन्दि। पत्र सं० ३। आ० १२×७ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—निमित्त
शास्त्र। १० काल ×। ले० काल सं० १६५८ भाद्रवा मुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ८३६। क भण्डार।
३१३४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ८३७। क भण्डार।
३१३५. स्वप्नावलि.....। पत्र सं० २। आ० १०×७ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—निमित्तशास्त्र।
१० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८३५। क भण्डार।
३१३६. होराज्ञान.....। पत्र सं० १३। आ० १०×५ इंच। भाषा—संस्कृत। १० काल ×। ले०
काल /। अपूर्ण। वे० सं० २०४५। अ भण्डार।

विषय-आयुर्वेद

३१३७. अजीर्णरसमञ्जरी। पत्र सं० ५। आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल सं० १७८८। पूर्ण। वे० सं० १०५१। अ भण्डार।
३१३८. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १३६। छ भण्डार।
विशेष—प्रति प्राचीन है।
३१३९. अजीर्णमञ्जरी—काशीराज। पत्र सं० ५। आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-
आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८६। ख भण्डार।
३१४०. अमृतसागर.....। पत्र सं० ४०। आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद।
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३४०। अ भण्डार।
३१४१. अमृतसागर—महाराजा सवाई प्रतापसिंह। पत्र सं० ११७ से १६४। आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$
इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २९। छ भण्डार।
विशेष—संस्कृत ग्रन्थ के आधार पर है।
३१४२. प्रति सं० २। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३२। छ भण्डार।
विशेष—संस्कृत मूल भी दिया है।
छ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३०, ३१) अपूर्ण और हैं।
३१४३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४ से १५०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०३६। ट भण्डार।
३१४४. अर्थप्रकाश—लंकानाथ। पत्र सं० ४७। आ० १० $\frac{१}{२}$ ×८ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल सं० १९८४ सावण बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० ८८। व भण्डार।
विशेष—आयुर्वेद विषयक ग्रन्थ है। प्रत्येक विषय को शतक में विभक्त किया गया है।
३१४५. आत्रेयवैद्यक—आत्रेयऋषि। पत्र सं० ४२। आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल सं० १८०७ भादवा बुदी १४। वे० सं० २३०। छ भण्डार।
३१४६. आयुर्वेदिक नुस्खों का संग्रह। पत्र सं० १९। आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच। भाषा-हिन्दी।
विषय-आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३०। छ भण्डार।
३१४७. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल ×। वे० सं० ६३। ज भण्डार।

३१४८. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३३ से ६२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१८१। ट भण्डार।
विशेष—६२ से आगे के भी पत्र नहीं हैं।

३१४९. आयुर्वेदिक नुस्खे.....। पत्र सं० ४ से २०। आ० ८×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६५। कृ भण्डार।

विशेष—आयुर्वेद सम्बन्धी कई नुस्खे दिये हैं।

३१५०. प्रति सं० २। पत्र सं० ४१। ले० काल ×। वे० सं० २५६। ख भण्डार।

विशेष—एक पत्र में एक ही नुस्खा है।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० २६०, २६६, २६६) और हैं।

३१५१. आयुर्वेदिकग्रंथ.....। पत्र सं० १६। आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद।
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०७६। ट भण्डार।

३१५२. प्रति सं० २। पत्र सं० १८ से ३०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६६। ट भण्डार।

३१५३. आयुर्वेदमहोदधि—सुखदेव। पत्र सं० २४। आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५५। ब्र भण्डार।

३१५४. कक्षपुट—सिद्धनागार्जुन। पत्र सं० ४२। आ० १४×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
आयुर्वेद एवं मन्त्रशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३। घ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ का कुछ भाग फटा हुआ है।

३१५५. कल्पस्थान (कल्पव्याख्या).....। पत्र सं० २१। आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच। भाषा—संस्कृत।
विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल सं० १७०२। पूर्ण। वे० सं० १८६७। ट भण्डार।

विशेष—मुश्रुतसंहिता का एक भाग है। अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति मुश्रुतीयायां संहितायां कल्पस्थानं समाप्तं ॥

३१५६. कालज्ञान.....। पत्र सं० ३ से १६। आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—
आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०७८। अ भण्डार।

३१५७. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ३२। ख भण्डार।

विशेष—केवल अष्टम समुद्देश है।

३१५८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १८४१ मंगसिर सुदी ७। वे० सं० ३३। ख
भण्डार।

विशेष—भिरुद् ग्राम में खेमचन्द के लिए प्रतिलिपि की गई थी। कुछ पत्रों की टीका भी दी हुई है।

३१५६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ११८ । छ भण्डार ।

३१६०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १६७४ । ट भण्डार ।

३१६१. चिकित्सांजनम्—उपाध्यायविद्यापति । पत्र सं० २० । आ० ६×८ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १६१५ । पूर्ण । वे० सं० ३५२ । अ भण्डार ।

३१६२. चिकित्सासार..... । पत्र सं० ११ । आ० १३×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८० । छ भण्डार ।

३१६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५-३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७६ । ट भण्डार ।

३१६४. चूर्णाधिकार..... । पत्र सं० १२ । आ० १३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१६ । ट भण्डार ।

३१६५. ज्वरलक्षण..... । पत्र सं० ४ । आ० ११×४ इंच । भाषा हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६२ । ट भण्डार ।

३१६६. ज्वरचिकित्सा..... । पत्र सं० ५ । आ० १०^३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३७ । अ भण्डार ।

३१६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ से ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६४ । ट भण्डार ।

३१६८. ज्वरतिमिरभास्कर—चामुंडराय । पत्र सं० ६४ । आ० १०×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १८०६ माह सुदी १३ । वे० सं० १३०७ । अ भण्डार ।

विशेष—माधोपुर में किशनलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३१६९. त्रिशती—शाङ्गधर । पत्र सं० ३२ । आ० १०^३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६३१ । अ भण्डार ।

३१७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १६१६ । वे० सं० २५३ । अ भण्डार ।

विशेष—पद्य सं० ३३३ है ।

३१७१. नहनसीपाराविधि..... । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३०६ । अ भण्डार ।

३१७२. नाडीपरीक्षा..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

३१७३. निघंटु.....। पत्र सं० २ से ८८। पत्र सं० ११×५। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०७७। अ भण्डार।

३१७४. प्रति सं० २। पत्र सं० २१ से ८६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०८४। अ भण्डार।

३१७५. पंचप्ररूपणा.....। पत्र सं० ११। आ० १०×४^३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल सं० १५५७। अपूर्ण। वे० सं० २०८०। ट भण्डार।

विशेष—केवल ११वां पत्र ही है। ग्रन्थ में कुल १५८ श्लोक हैं।

प्रशस्ति—सं० १५५७ वर्षे ज्येष्ठ बुदी ८। देवगिरिनगरे राजा सूर्यमल्ल प्रवर्तमाने ब्र० श्राद्ध लिखितं कर्म-क्षयनिमित्तं। ब्र० जालप जोशु पठनार्थं दत्तं।

३१७६. पथ्यापथ्यविचार.....। पत्र सं० ३ से ४४। आ० १२×५^३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९७६। ट भण्डार।

विशेष—श्लोकों के ऊपर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है। विषरोग पथ्यापथ्य अधिकार बक है। १९ से भागे के पत्रों में दीमक लग गई है।

३१७७. पाराविधि.....। पत्र सं० १। आ० ९^३×४^३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २९६। ख भण्डार।

३१७८. भावप्रकाश—मानमिश्र। पत्र सं० २७५। आ० १०^३×४^३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल सं० १८९१ बेशाख सुदी ९। पूर्ण। वे० सं० ७३। ज भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है।

इति श्रीमानमिश्रलटकनतनयश्रीमानमिश्रभावविरचितो भावप्रकाशः संपूर्ण।

प्रशस्ति—संवत् १८८१ मिति बेशाख शुक्ला ९ शुक्ले लिखितमृषिणा फतेचन्द्रेण सवाई जयनगरमध्ये।

३१७९. भावप्रकाश। पत्र सं० १९। आ० १०^३×४^३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०२२। अ भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री जगु पंडित तनयदाम पंडितकृते त्रिसतिकायां रसायन वा जारण समाप्त।

३१८०. भावसंग्रह। पत्र सं० १०। आ० १०^३×६^३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०५६। ट भण्डार।

३१८१. मदनविनोद—मदनपाल । पत्र सं० १५ से ६२ । आ० ८३×३३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १७६५ ज्येष्ठ सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० १७६८ । जीर्ण । अ
भण्डार ।

विक्षेप—पत्र १५ पर निम्न पुष्पिका है—

इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे अपादिवर्गः ।

पत्र १८ पर— यो राज्ञां मुखतिलकः कटारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण निर्मितेन ग्रन्थेऽस्मिन् मदनविनोदे वटादि पंचमवर्गः ।

लेखक प्रशस्ति—

ज्येष्ठ शुक्ला १२ गुरौ तद्दिने लि.....शामजी विश्वकेन परोपकारार्थं । संवत् १७६५ विश्वेश्वर सन्निधौ....
मदनपालविरचिते मदनविनोदे निघंटे प्रशस्ति वर्गश्चतुर्दशः ॥

३१८२. मंत्र व औषधि का नुरस्त्रा..... । पत्र सं० १ । आ० १०×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६८ । ख भण्डार ।

विक्षेप—तिल्ली काटने का मन्त्र भी है ।

३१८३. माधननिदान—माधव । पत्र सं० १२४ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६५ । अ भण्डार ।

३१८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २००१ । ट भण्डार ।

विक्षेप—पं० ज्ञानमेरु कृत हिन्दी टीका सहित है ।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री पं० ज्ञानमेरु विनिर्मितो बालबोधसमाप्तोद्धरणार्थो मधुकोष परमार्थः ।

पं० घनलाल ऋषभचन्द्र रामचन्द्र की पुस्तक है ।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ८०८, १३४५, १३४७) ख भण्डार में दो प्रतियां
(वे० सं० १४३, १६५) तथा ज्ञ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४) और है ।

३१८५. मानविनोद—मानसिंह । पत्र सं० ६७ । आ० ११३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४४ । ख भण्डार ।

प्रति हिन्दी टीका सहित है । ६७ वें आगे पत्र नहीं हैं ।

३१८६. मुष्टिज्ञान—ज्योतिषाचार्य देवचन्द्र । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—आयुर्वेद ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६१ । अ भण्डार ।

३१८७. योगचिन्तामणि—मनूसिंह । पत्र सं० १२ से ४८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१०२ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र १ से ११ तथा ४८ से आगे नहीं हैं ।

द्वितीय अधिकार की पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री वा. रत्नराजगणि अंतेवासि मनूसिंहकृते योगचिन्तामणि बालान्नबोधे चूर्णाधिकारो द्वितीयः ।

३१८८. योगचिन्तामणि..... । पत्र सं० ४ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८०३ । ट भण्डार ।

३१८९. योगचिन्तामणि..... । पत्र सं० १२ से १०५ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १८५४ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० २०८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । जयनगर में फतेहचन्द के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

३१९०. योगचिन्तामणि..... । पत्र सं० २०० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३४६ । अ भण्डार ।

विशेष—दो प्रतियों का मिश्रण है ।

३१९१. योगचिन्तामणिबीजक..... । पत्र सं० ५ । आ० ९½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५६ । अ भण्डार ।

३१९२. योगचिन्तामणि—उपाध्याय हर्षकीर्त्ति । पत्र सं० १५८ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०४ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में संक्षिप्त अर्थ दिया हुआ है ।

३१९३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२८ । ले० काल × । वे० सं० २२०६ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३१९४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४१ । ले० काल सं० १७८१ । वे० सं० १६७८ । अ भण्डार ।

३१९५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५६ । ले० काल सं० १८३४ आपाठ बुदी २ । वे० सं० ८८ । अ
भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । मांगानेर में गोधां के चैव्यालय में पं० ईश्वरदास के चेले की पुस्तक
में प्रतिलिपि की थी ।

३१९६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १७७९ वैशाख मुदी २ । वे० सं० ६६ । अ
भण्डार ।

विशेष—मालपुरा में जीवराज वैद्य ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३१६७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १७६६ ज्येष्ठ बुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० ६६ ।

ज भण्डार ।

विशेष—प्रति सटीक है । प्रथम दो पत्र नहीं हैं ।

३१६८. योगशत—वररुचि । पत्र सं० २२ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।
२० काल × । ले० काल सं० १६१० श्रावण सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २००२ । ट भण्डार ।

विशेष—आयुर्वेद का संग्रह ग्रंथ है तथा उसकी टीका है । चंपावती (चाटसू) में पं० शिवचन्द्र ने ग्यास
बुत्रीलाल से लिखवाया था ।

३१६९. योगशतटीका..... । पत्र सं० २१ । आ० ११½×३½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७६ । अ भण्डार ।

३२००. योगशतक..... । पत्र सं० ७ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।
२० काल × । ले० काल सं० १६०६ । पूर्ण । वे० सं० ७२ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० विनय समुद्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । प्रति टीका सहित है ।

३२०१. योगशतक..... । पत्र सं० ७८ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५३ । ख भण्डार ।

३२०२. रसमञ्जरी—शालिनाथ । पत्र सं० २२ । आ० १०×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८५६ । ट भण्डार ।

३२०३. रसमञ्जरी—शाङ्गधर । पत्र सं० २६ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १६४१ सावन बुदी ५५ । पूर्ण । वे० सं० १६१ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नलाल जोबनेर निवासी ने जयपुर में चिन्तामणिजी के मन्दिर में शिष्य जयचन्द्र के पठ-
नार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३२०४. रसप्रकरण..... । पत्र सं० ४ । आ० १०½×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३५ । जीर्ण । ट भण्डार ।

३२०५. रसप्रकरण..... । पत्र सं० १२ । आ० ६×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३६६ । अ भण्डार ।

३२०६. रामविनोद—रामचन्द्र । पत्र सं० २१९ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—आयुर्वेद । २० काल सं० १६२० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३४४ । अ भण्डार ।

विशेष—शाङ्गधर कृत वैद्यकसार ग्रन्थ का हिन्दी पद्यानुवाद है ।

३२०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६२ । ले० काल सं० १८५१ बैशाख सुदी ११ । वे० सं० १६३ । ख भण्डार ।

विशेष—जीवणनालजी के पठनार्थ भैमलाना ग्राम में प्रतिनिधि हुई थी ।

३२०८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८३ । ले० काल × । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

३२०९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८२ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियाँ अपूर्ण (वे० सं० १६९९, २०१८, २०६२) और हैं ।

३२१०. रासायनिकशास्त्र । पत्र सं० ५२ । आ० ५३×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । च भण्डार ।

३२११. लक्ष्मणोत्सव—अमरसिंहात्मज श्री लक्ष्मण । पत्र सं० २ से ८६ । आ० ११३×५ इञ्च ।
भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८४ । अ भण्डार ।

३२१२. लङ्घनपथ्यनिर्णय..... । पत्र सं० १२ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १८२२ पौष सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । ख भण्डार ।

विशेष—प० जीवमलालजी पत्रालालजी के पठनार्थ लिखा गया था ।

३२१३. विपहरनधिधि—संतोष कवि । पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
आयुर्वेद । २० काल सं० १७४१ । ले० काल सं० १८६६ माघ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।

सिस रिप वेद अर खंडले जेष्ठ मुकल हृदाम ।

चंद्रापुरी संवत् गिनी चंद्रापुरी मुकाम ॥२७॥

संवत् यह संतोष कृत तादिन कविता कीन ।

सशि मनि गिर विव विजय तादिन हम लिख लीन ॥२८॥

३२१४. वैद्यकसार..... । पत्र सं० ५ से ५४ । आ० ९×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३४ । च भण्डार ।

३२१५. वैद्यजीवन—लोलिम्बराज । पत्र सं० २१ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५७ । अ भण्डार ।

विशेष—५वाँ विलाम तक है ।

३२१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ से ३२ । ले० काल सं० १८३८ । वे० सं० १५७१ । अ
भण्डार ।

३२१७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३१। ले० काल सं० १८७२ कायुण । वे० सं० १७६। ख
भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १८०, १८१) और है।

३२१८. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६१। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८१। ड भण्डार।

३२१९. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५३। ले० काल ×। वे० सं० २३०। छ भण्डार।

३२२०. वैद्यजीवनग्रन्थ.....। पत्र सं० ३ से १८। आ० १०×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३३३। च भण्डार।

विशेष—अन्तिम पत्र भी नहीं है।

३२२१. वैद्यजीवनटीका—रुद्रभट्ट। पत्र सं० २५। आ० १०×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ११६६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० २०१६, २०१७) और हैं।

३२२२. वैद्यमनोत्सव—नयनसुख। पत्र सं० ३२। आ० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत हिन्दी।
विषय—आयुर्वेद। २० काल सं० १६४६ आषाढ सुदी २। ले० काल सं० १८५३ ज्येष्ठ सुदी १। पूर्ण। वे० सं०
१८७६। अ भण्डार।

३२२३. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८०६। वे० सं० २०७६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६५) और है।

३२२४. प्रति सं० ३। पत्र सं० २ से ११। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६८०। ड भण्डार।

३२२५. प्रति सं० ४। पत्र सं० १८। ले० काल सं० १८६३। वे० सं० १५७। छ भण्डार।

३२२६. प्रति सं० ५। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १८६६ सावण बुदी १४। वे० सं० २००४। ट

भण्डार।

विशेष—पाटण में मुनिसुव्रत चैत्यालय में भट्टारक सुखेन्द्रकीर्ति के शिष्य पं० चम्पाराम ने स्वयं प्रतिलिपि
की थी।

३२२७. वैद्यबल्लभ.....। पत्र सं० १६। आ० १०×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद।
२० काल ×। ले० काल सं० १६०१। पूर्ण। वे० सं० १८७१।

विशेष—सेवाराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

३२२८. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० २६७। ख भण्डार।

३२२६. वैद्यकसारोद्धार—संग्रहकर्ता श्री हर्षकीर्तिसूरि । पत्र सं० १६७ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १७४६ आसोज बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १८२ । ख भण्डार ।

विशेष—भानुमती नगर में श्रीगजकुशलगरि के शिष्य गरिमुन्दरकुशल ने प्रतिलिपि की थी । प्रति हिन्दी अनुवाद सहित है ।

३२३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १७७३ माघ । वे० सं० १४६ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति का जीर्णोद्धार हुआ है ।

३२३१. वैद्यामृत—माणिक्य भट्ट । पत्र सं० २० । आ० ६×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० सं० ३५४ । ख भण्डार ।

विशेष—माणिक्यभट्ट अहमदाबाद के रहने वाले थे ।

३२३२. वैद्यविनोद..... । पत्र सं० १८३ । आ० १०.३×८.३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३०६ । ख भण्डार ।

३२३३. वैद्यविनोद—भट्टशंकर । पत्र सं० २०७ । आ० ८.३×४.३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७२ । ख भण्डार ।

विशेष—पत्र १४० तक हिन्दी संकेत भी दिये हुये हैं ।

३२३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३१ । ख भण्डार ।

३२३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११२ । ले० काल सं० १८७७ । वे० सं० १७३३ । ट भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

मंत्रन् १७५६ वैजाल मुदी ५ । वार चंद्रवासरे वर्षे शाके १६२३ पातिसाहजी नौगंजीवजी महाराजाजी श्री जयमिहिराज्य हाकिम फौजदार खानअब्दुल्लाखांजी के नायबरूपलखां स्याहीजी श्री स्याहभालमजी की तरफ मियां साहबजी अब्दुलफतेजी का राज्य श्रीमस्तु कल्याणक । सं० १८७७ शाके १७४२ प्रवर्तमाने कार्तिक १२ गुरुवारलिखितं मिश्रनालजी कस्य पुत्र रामनारायणो पठनार्थ ।

३२३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ मे ४८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०७० । ट भण्डार ।

३२३७. शाङ्गधरसंहिता—शाङ्गधर । पत्र सं० ५८ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८५ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ८०३, ११४२, १५७७) और है ।

३२३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७० । ले० काल × । वे० सं० १८५ । खं भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २७०, २७१) और हैं ।

३२३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४-४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०८२ । ट भण्डार ।

३२४०. शाङ्गधरसंहिताटीका—नाडमल्ल । पत्र सं० ४१३ । आ० ११×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १८१२ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० १३१५ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम शाङ्गधरदीपिका है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

वास्तधान्वयप्रकाश वैद्य श्रीभावसिंहात्मजेनाडमल्लेन विरचितायाम् शाङ्गधरदीपिकामुत्तरखण्डे मेवप्रसावन कर्मविधि द्वात्रिंशोरध्यायः । प्रति सुन्दर है ।

३२४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल × । वे० सं० ७० । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथमखण्ड तक है जिसके ७ अध्याय हैं ।

३२४२. शालिहोत्र (अश्वचिकित्सा)—नकुल पंडित । पत्र सं० ९ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० १२३६ । अ भण्डार ।

विशेष—कालाडहरा में महात्मा कुशलसिंह के आत्मज हरिकृष्ण ने प्रतिलिपि की थी ।

३२४३. शालिहोत्र (अश्वचिकित्सा)..... । पत्र सं० १८ । आ० ७^३×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १७१८ आषाढ सुदी ९ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० १२८३ । अ भण्डार ।

३२४४. सन्तानविधि..... । पत्र सं० ३० । आ० ११×४^३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०७ । ट भण्डार ।

विशेष—सन्तान उत्पन्न होने के सम्बन्ध में कई नुस्खे हैं ।

३२४५. सन्निपातनिदान..... । पत्र सं० ८ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

३२४६. सन्निपातनिदानचिकित्सा—वाहडदास । पत्र सं० १४ । आ० १२×५^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—आयुर्वेद । २० काल × । ले० काल सं० १८३९ पौष सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० २३० । छ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

३२४७. सत्रिपातकलिका.....। पत्र सं० ५। आ० ११३×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल सं० १८७३। पूर्ण। वे० सं० २८३। अ भण्डार।

विशेष—यौवनपुर में पं० जीवणदास ने प्रतिलिपि की थी।

३२४८. सप्तविधि.....। पत्र सं० ७। आ० ८३×४३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—आयुर्वेद। २०
काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १४१७। अ भण्डार।

३२४९. सर्धञ्जरसमुच्चयदर्पण.....। पत्र सं० ४२। आ० ९×३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल सं० १८८१। पूर्ण। वे० सं० २२६। अ भण्डार।

३२५०. सारसंग्रह.....। पत्र सं० २७ से २५७। आ० १२×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
आयुर्वेद। २० काल ×। ले० काल सं० १७४७ कार्तिक। अपूर्ण। वे० सं० ११५९। अ भण्डार।

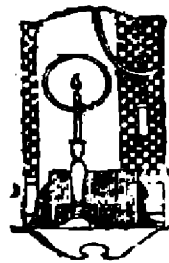
विशेष—हरिगोविंद ने प्रतिलिपि की थी।

३२५१. सालोत्तररास.....। पत्र सं० ७३। आ० ९×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—आयुर्वेद।
२० काल ×। ले० काल सं० १८४३ आसोज बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ७१४। अ भण्डार।

३२५२. सिद्धियोग.....। पत्र सं० ७ से ४३। आ० १०×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—आयुर्वेद।
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३५७। अ भण्डार।

३२५३. हरडैकल्प.....। पत्र सं० ४। आ० ५३×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—आयुर्वेद। २०
काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८१९। अ भण्डार।

विशेष—मालवांगडी प्रयोग भी है। (अपूर्ण)



विषय-छंद एवं अलङ्कार

३२५४. अमरचंद्रिका.....। पत्र सं० ७५। आ० ११×४ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-छंद अलङ्कार। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १३। ज भण्डार।

विशेष—चतुर्थ अधिकार तक है।

३२५५. अलंकाररत्नाकर—दलिपतराय बंशीधर। पत्र सं० ५१। आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-अलङ्कार। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३४। छ भण्डार।

३२५६. अलङ्कारवृत्ति—जिनवर्द्धन सूरि। पत्र सं० २७। आ० १२×८ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-रस अलङ्कार। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३४। क भण्डार।

३२५७. अलङ्कारटीका.....। पत्र सं० १४। आ० ११×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-अलङ्कार। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६८१। ट भण्डार।

३२५८. अलङ्कारशास्त्र.....। पत्र सं० ७ से ११२। आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-अलङ्कार। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २००१। अ भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण शीर्ण है। बीच के पत्र भी नहीं हैं।

३२५९. कविकर्पटी.....। पत्र सं० ६। आ० १२×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-रस अलङ्कार। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८५०। ट भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३२६०. कुवलयानन्द.....। पत्र सं० २०। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-अलङ्कार। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७८१। ट भण्डार।

३२६१. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० १७८२। ट भण्डार।

३२६२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०२५। ट भण्डार।

३२६३. कुवलयानन्द—अप्यय दीक्षित। पत्र सं० ६०। आ० १२×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-अलङ्कार। २० काल ×। ले० काल सं० १७४३। पूर्ण। वे० सं० ६५३। अ भण्डार।

विशेष—सं० १८०३ माह बुदी ५ को नैणसागर ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

३२६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में महात्मा पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८० । ले० काल सं० १६०४ वैशाख सुदी १० । वे० सं० ३१४ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० सदासुख के शिष्य फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १८०६ । वे० सं० ३०६ । ज भण्डार ।

३२६७. कुबलयानन्दकारिका..... । पत्र सं० ६ । मा० १०×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अलङ्कार । १० काल × । ले० काल सं० १८१६ आषाढ सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २८६ । छ भण्डार ।

विशेष—पं० कृष्णदास ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी । १७२ कारिकायें हैं ।

३२६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ३०६ । ज भण्डार ।

विशेष—हरदास भट्ट की किताब है रामनारायण मिश्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३२६९. चन्द्रायलोक..... । पत्र सं० ११ । मा० ११×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अलङ्कार । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२४ । अ भण्डार ।

३२७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । मा० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अलङ्कारशास्त्र । १० काल × । ले० काल सं० १६०६ कार्तिक सुदी ६ । वे० सं० ६१ । च भण्डार ।

विशेष—रूपचन्द साह ने प्रतिलिपि की थी ।

३२७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६२ । च भण्डार ।

३२७२. छंदानुशासनवृत्ति—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ८ । मा० १२×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पृष्ठिका निम्न प्रकार है—

अथाचार्य श्रीहेमचन्द्रविरचिते व्यावर्गनामानाम् अष्टमांशध्याय समाप्तः । समाप्तोऽयं ग्रन्थः । श्री..... भुवनकीर्ति शिष्य प्रमुख श्री ज्ञानभूषण योग्यस्य ग्रन्थः लिख्यते । मु० विनयमेरुणा ।

३२७३. छंदोशासनक—हर्षकीर्ति (चंद्रकीर्ति के शिष्य) । पत्र सं० ७ । मा० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत द्विती । विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८१ । अ भण्डार ।

३२७४. छंदकोश—रत्नशेखर सूरि । पत्र सं० ३१ । मा० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५ । छ भण्डार ।

३२७५. छंदकोश.....। पत्र सं० २ से २५ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७ । च भण्डार ।

३२७६. नंदिताढ्यछंद.....। पत्र सं० ७ । आ० ६×४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ४५७ । अ भण्डार ।

३२७७. पिंगलछंदशास्त्र—माखनकवि । पत्र सं० ४६ । आ० १३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—छंदशास्त्र । २० काल सं० १८६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४४ । अ भण्डार ।

विशेष—४६ में आगे पत्र नहीं हैं ।

आदिभाग— श्री गणेशायनमः अथ पिंगल । सबैया ।

मंगल श्री गुरुदेव गणेश कृपाल गुपाल गिरा सरसानी ।
वंदन के पद पंकज पावन माखन छंद विलास बखानी ॥
कोविद वृंद वृंदनि कौ कल्पद्रुम का मधु का काम निधानी ।
सारद ईंदु मयूष निसीतल सुन्दर संस सुधारस बानी ॥१॥

दोहा— पिंगल सागर छंदमणि वरण वरण बहुरङ्ग ।
रस उपमा उपमैय तैं सुंदर अरथ तरंत ॥२॥
तातैं रच्यो विचारि के नर बानी नरहेत ।
उदाहरण बहु रमन के वरण सुमति समेत । ३॥
विमल चरण भूषन कलित, बानी ललित रसाल ।
मदा सुकवि गोपाल की, श्री गोपाल कृपाल ॥४॥
तिन सुत माखन नाम है, उक्ति युक्ति त हीन ।
एक समै गोपाल कवि, सामन हरियह दीन ॥५॥
पिंगल नाम विचारि मन, नारी बानीहि प्रकास ।
यथा सुमति सौ कीजिये, माखन छंद विलास ॥६॥

दोहरागीत— यह मुकवि श्री गोपाल को मुभ भई सासन है जबै ।
पद जुगल वंदन सुनिये उर सुमति बाढी है तवै ।
अति निम्न पिंगल सिंधु में मनमीन हूँ करि संचिरयो ।
मधि काढि छंद विलास माखन कविन सौ बिनती करयो ॥

दोहा—

हे कवि जन सरवज्र हो मति दोषन कछु देह ।
भूल्यो भ्रम तै ही वहां जहां सोधि किन लेहु ॥८॥
संवत वमु रस लोक पर नखतह सा तिधि मास ।
सित वाण भ्रुति दिन रच्यो माखन छंद विलास ॥९॥

पिगल छंद में दोहा, चौबोला, छप्पय, भ्रमर दोहा, सोरठा प्रादि कितने ही प्रकार के छंदों का प्रयोग किया गया है । जिस छंद का लक्षण लिखा गया है उसको उसी छंद में वर्णन किया गया है । अन्तिम पत्र भी नहीं है ।

३२७८. पिगलशास्त्र—नागराज । पत्र सं० १० । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२७ । अ भण्डार ।

३२७९ पिगलशास्त्र..... । पत्र सं० ३ से २० । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५९ । अ भण्डार ।

३२८० . पिगलशास्त्र..... । पत्र सं० ४ । आ० १०^३×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९६२ । अ भण्डार ।

३२८१. पिगलछंदशास्त्र (छन्द रत्नावली)—हरिरामदास । पत्र सं० ७ । आ० १३×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—छन्द शास्त्र । १० काल सं० १७९५ । ले० काल सं० १८२९ । पूर्ण । वे० सं० १८६९ । अ भण्डार ।

विशेष— संवतशर नव मुनि शशीनभ नवमी गुरु मानि ।
डिडवाना दृढ कूप तहि ग्रन्थ जन्म-थल ज्यानि ॥

इति श्री हरिरामदास निरञ्जनी कृत छंद रत्नावली संपूर्ण ।

३२८२ पिगलप्रदीप—भट्ट लक्ष्मीनाथ । पत्र सं० ९८ । आ० ९×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—रस अलङ्कार । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१३ । अ भण्डार ।

३२८३. प्राकृतछंदकोष—रत्नशेखर । पत्र सं० ५ । आ० १३×५^३ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११९ । अ भण्डार ।

३२८४ प्राकृतछंदकोष—अल्हू । पत्र सं० १३ । आ० ८×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल सं० १९३..... पीप बुदो ९ । पूर्ण । वे० सं० ५२१ । अ भण्डार ।

३२८५. प्राकृतछंदकोश..... । पत्र सं० ३ । आ० १०×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—छंदशास्त्र । १० काल × । ले० काल सं० १७९२ प्रावण मुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १८६२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण एवं फटी हुई है ।

३२८६. प्राकृतपिंगलशास्त्र.....। पत्र सं० २। आ० ११×४३ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—छंदशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४८। अ भण्डार।

३२८७. भाषाभूषण—जसवंतसिंह राठौड़। पत्र सं० १६। आ० ६×६ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—अलङ्कार। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। जीर्ण। वे० सं० ५७१। छ भण्डार।

३२८८. रघुनाथ विलास—रघुनाथ। पत्र सं० ३१। आ० १०×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—रसालङ्कार। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६६५। च भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम रसतरङ्गिणी भी है।

३२८९. रत्नमंजूषा.....। पत्र सं० ९। आ० ११½×५½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—छंदशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६१६। अ भण्डार।

३२९०. रत्नमंजूषिका.....। पत्र सं० २७। आ० १०½×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—छंदशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४४। व्य भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति रत्नमंजूषिकायां छंदो विदित्यांभाव्यतोऽष्टमोऽध्यायः।

मङ्गलाचरण—ॐ पंचपरमेष्ठिभ्यो नमो नमः।

३२९१. वाग्भट्टालङ्कार—वाग्भट्ट। पत्र सं० १९। आ० १०½×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—अलङ्कार। २० काल ×। ले० काल सं० १६४९ कार्तिक सुदी ३। पूर्ण। वे० सं० ६५। अ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति— सं० १६४९ वर्षे कार्तिकमासे शुक्लपक्षे तृतीया तिथौ शुक्रवासरे लिखतं पांडे लूणा माहरोठमध्ये स्वान्ययोः पठनार्थं।

३२९२. प्रति सं० २। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १६६४ फागुण सुदी ७। वे० सं० ६५३। क भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है। कठिन शब्दों के अर्थ भी दिये हुए हैं।

३२९३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १६५६ ज्येष्ठ बुदी ६। वे० सं० १७२। ख भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है जो कि चारों ओर हासिये पर लिखी हुई है।

इसके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६), छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७२), छ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३८), ज भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ९०, १४३), झ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१७), व्य भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४९) और है।

३२६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७०० कार्तिक बुदी ३ । वे० सं० ४५ । अ
भण्डार ।

विशेष—ऋषि हंसा ने सादड़ी में प्रतिलिपि कराई थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४६) और है ।

३२६५. वाग्भट्टालङ्कारटीका—वादिराज । पत्र सं० ४० । आ० ६३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—अलङ्कार । २० काल सं० १७२६ कार्तिक बुदी ५ (दीपावली) । ले० काल सं० १८११ श्रावण सुदी ६ । पूर्ण
वे० सं० १५२ । अ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम कविचन्द्रिका है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत्सरे निषिद्गश्वशशांकयुक्ते (१७२६) दीपोत्सवारूपदिवंगं सगुरौ सचित्रे ।

लग्नेऽलि नाम्नि च समीपगिरः प्रसादात् सद्वादिराजरचिताकविचन्द्रकेयं ॥

श्रीराजसिंहनृपतिजयसिंह एव श्रीटोडाक्षकाख्यनगरी अषहित्य तुल्या ।

श्रीवादिराजविवुधोऽपर वाग्भटोयं श्रीसूत्रवृत्तिरिह नंदतु चाकर्कचन्द्रः ॥

श्रीमद्भूमिपुत्रात्मजस्य बलिनः श्रीराजसिंहस्य मे मेवायामवकाशमाप्य विहिता टीका शिशूनां हिता ।

होनाधिकवचोयदत्र लिखितं तद्बुधैः क्षम्यतां गार्हस्थ्यवनिनाथ मेवनाधियासकः स्वष्टतामाभूयात् ॥

इति श्री वाग्भट्टालङ्कारटीकायां श्रीमराजश्रेष्ठिमुत्वादिराजविरचितायां कविचन्द्रिकायां पंचमः परिच्छेदः
समाप्तः । सं० १८११ श्रावण सुदी ६ गुरवासरे लिखितं महात्मोरूपनगरका हेमराज सवाई जयपुरमध्ये । सुभं भूयात् ॥

३२६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १८११ श्रावण सुदी ६ । वे० सं० २५६ । अ
भण्डार ।

३२६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १६६० । वे० सं० ६५४ । क भण्डार ।

३२६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७३१ । वे० सं० ६५५ । क भण्डार ।

विशेष—तक्षकगढ में महाराजा मानसिंह के शासनकाल में खण्डेलवालान्वये सौगाणी गौत्र वाले
पद्मराज गयामुद्दीन ने सम्मानित साह महिगामात्र पोमा मृत वादिराज की भार्या लौहडी ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि
करवायी थी ।

३२६९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ६५६ । क भण्डार ।

३३००. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५३ । ले० काल × । वे० सं० ६७३ । क भण्डार ।

३३०१. वाग्भट्टालङ्कार टीका..... पत्र सं० १३ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
अलङ्कार । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण (पंचम परिच्छेद तक) वे० सं० २० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३३०२. वृत्तरत्नाकर—भट्ट केदार । पत्र सं० ११ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५२ । अ भण्डार ।

३३०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६८४ । वे० सं० ६८४ । छ भण्डार ।

विशेष—इनके अतिरिक्त अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६५०) ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७५) च भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० १७७, ३०६) और हैं ।

३३०४. वृत्तरत्नाकर—कालिदास । पत्र सं० ६ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ । ख भण्डार ।

३३०५. वृत्तरत्नाकर..... । पत्र सं० ७ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८५ । ज भण्डार ।

३३०६. वृत्तरत्नाकरटीका—सुल्हण कवि । पत्र सं० ४० । आ० ११×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६८ । क भण्डार ।

विशेष—सुकवि हृदय नामक टीका है ।

३३०७. वृत्तरत्नाकरछंदटीका—समयसुन्दरगण । पत्र सं० १ । आ० १०^१/_२×५^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२१६ । अ भण्डार ।

३३०८. श्रुतबोध—कालिदास । पत्र सं० ६ । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रष्टगण विचार तक है ।

३३०९. प्रति सं० ० । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८४६ फायुग मुदी ६ । वे० सं० ६२० । अ भण्डार ।

विशेष—पं० डालूराम के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

३३१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ६२६ । अ भण्डार ।

विशेष—जीवराज कृत टिप्पण सहित है ।

३३११. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८६५ श्रावण मुदी ६ । वे० सं० ७२५ । छ भण्डार ।

३३१२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८०४ ज्येष्ठ मुदी ५ । वे० सं० ७२७ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० रामचंद्र ने झिलती नगर में प्रतिलिपि की थी ।

३३१३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७८१ चैत्र सुदी १ । वे० सं० १७८ । व्य
भण्डार ।

विशेष—पं० मुखानन्द के शिष्य नैनमुख ने प्रतिलिपि की थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३३१४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १८११ । ट भण्डार ।

विशेष—ग्राचार्य विमलकीर्ति ने प्रतिलिपि कराई थी ।

इसके मतिरिक्त अ भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ६४८, ६०७, ११६१) क, ङ, च और ज भण्डार
में एक एक प्रति (वे० सं० ७०४, ७२६, ३४८, २८७) व्य भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १५६, १८७)
और हैं ।

३३१५. श्रुतबोध—वररुचि । पत्र सं० ४ । आ० ११३×५ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० २८३ । छ भण्डार ।

३३१६. श्रुतबोधटीका—मनोहरश्याम । पत्र सं० ८ । आ० ११३×५ इअ । भाषा—संस्कृत ।
विषय—छंदशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६४७ । क भण्डार ।

३३१७. श्रुतबोधटीका..... । पत्र सं० ३ । आ० ११३×५ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—छंदशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १८२८ मंगसर बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६४५ । अ भण्डार ।

३३१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ७०३ । क भण्डार ।

३३१९. श्रुतबोधवृत्ति—दर्षकीर्ति । पत्र सं० ७ । आ० १०३×४ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—
दशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १७१६ कार्तिक सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १६१ । ख भण्डार ।

विशेष—श्री ५ मुन्दरदास के प्रसाद से मुनिमुख ने प्रतिलिपि की थी ।

३३२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १६ । ले० काल सं० १६०१ माघ सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं०
२३३ । छ भण्डार ।



विषय-संगीत एवं नाटक



३३२१. अकलङ्कनाटक—श्री मकखनलाल । पत्र सं० २३ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १ । क भण्डार ।

३३२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६६३ कार्तिक सुदी ६ । वे० सं० १७२ । क
भण्डार ।

३३२३. अभिज्ञान शाकुन्तल—कालिदास । पत्र सं० ७ । आ० १०^१/_४×४^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११७० । अ भण्डार ।

३३२४. कर्पूरमञ्जरी—राजशेखर । पत्र सं० १२ । आ० १२^१/_४×४^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
नाटक । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८१३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । मुनि ज्ञानकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ के दोनों ओर ८ पत्र तक संस्कृत
में व्याख्या दी हुई है ।

३३२५. ज्ञानसूर्योदयनाटक—वादिचन्द्रसूरि । पत्र सं० ६३ । आ० १०^३/_४×४^३/_४ इञ्च । भाषा—
संस्कृत । विषय—नाटक । २० काल सं० १६४८ माघ सुदी ८ । ले० काल सं० १६६८ । पूर्ण । वे० सं० १८ । अ
भण्डार ।

विशेष—अमेर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३३२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६५ । ले० काल सं० १८८७ माह सुदी ५ । वे० सं० २३१ । क
भण्डार ।

३३२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८६४ आसोज बुदी ६ । वे० सं० २३२ । क
भण्डार ।

विशेष—कृष्णागढ़ निवासी महात्मा राधाकृष्ण ने जयनगर में प्रतिलिपि की थी तथा इसे संधी अमरचन्द्र
दीवान के मन्दिर में विराजमान की ।

३६२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६३५ सावण बुदी ५ । वे० सं० २३० । क
भण्डार ।

३३२९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १७६० । वे० सं० १३४ । क भण्डार ।

विशेष—भट्टारक जगत्कीर्ति के शिष्य श्री ज्ञानकीर्ति ने प्रतिलिपि करके पं० दोदराज को भेंट स्वरूप दी
थी । इसके अतिरिक्त इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १४७, ३३७) और है ।

३३३०. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—पारसदास निगोत्या । पत्र सं० ४१ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल सं० १९१७ बैशाख बुदी ६ । ले० काल सं० १९१७ पीष ११ । पूर्ण । वे० सं० २१९ । छ भण्डार ।

३३३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १९३६ । वे० सं० ५६३ । च भण्डार ।

३३३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४८ से ११५ । ले० काल सं० १९३६ । अपूर्ण । वे० सं० ३४४ । छ भण्डार ।

३३३३. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भागचन्द । पत्र सं० ४१ । आ० १३×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल सं० १९३४ । पूर्ण । वे० सं० ५६२ । च भण्डार ।

३३३४. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—भगवतीदास । पत्र सं० ४० । आ० ११½×७½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल सं० १८७७ भाद्रवा बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २२० । छ भण्डार ।

३३३५. ज्ञानसूर्योदयनाटक भाषा—बस्तावरलाल । पत्र सं० ८७ । आ० ११×५½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल सं० १८५४ ज्येष्ठ सुदी २ । ले० काल सं० १९२८ बैशाख बुदी ८ । वे० सं० ५६४ । पूर्ण । च भण्डार ।

विशेष—जौहरीलाल खिन्दूका ने प्रतिलिपि की थी ।

३३३६. धर्मदशावतारनाटक..... । पत्र सं० ६६ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । २० काल सं० १९३३ । ले० काल × । वे० सं० ११० । ज भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलालजी की प्रेरणा से जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी । इसका दूसरा नाम धर्मप्रदीप भी है ।

३३३७. नलदमयंती नाटक..... । पत्र सं० ३ से २४ । आ० ११×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९६८ । ट भण्डार ।

३३३८. प्रबोधचन्द्रिका—वैजल भूपति । पत्र सं० २६ । आ० ६×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल सं० १९०७ भाद्रवा बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ८१४ । अ भण्डार ।

३३३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० २१९ । छ भण्डार ।

३३४०. भविष्यदत्त तिलकासुन्दरी नाटक—न्यामतसिंह । पत्र सं० ४४ । आ० १३×८½ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । छ भण्डार ।

३३४१. मदनपराजय—जिनदेवसूरि । पत्र सं० ३६ । आ० १०½×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८८५ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० २ से ७, २७, २८ नहीं हैं तथा ३६ से आगे के पत्र भी नहीं हैं ।

३३४२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८२६ । वे० सं० ५६७ । क भण्डार ।

३३४३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । वे० सं० ५७८ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के २५ पत्र नवीन लिखे गये हैं ।

३३४४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४९ । ले० काल × । वे० सं० १०० । छ भण्डार ।

३३४५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १९१६ । वे० सं० ६४ । झ भण्डार ।

३३४६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८३६ माह सुदी ६ । वे० सं० ४८ । ब्य

भण्डार ।

विशेष—सवाई जयनगर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में पं० चोखचन्द के सेवक पं० रामचन्द ने सवाईराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३३४७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४० । ले० काल × । वे० सं० २०१ ।

विशेष—अग्रवाल ज्ञातीय मित्तल गोत्र वाले मे प्रतिलिपि कराई थी ।

३३४८. मदनपराजय.....। पत्र सं० ३ से २५ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—नाटक । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९९५ । अ भण्डार ।

३३४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १९९५ । अ भण्डार ।

३३५०. मदनपराजय—पं० स्वरूपचन्द । पत्र सं० ९२ । आ० ११३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नाटक । २० काल सं० १९१८ मंगसिर सुदी ७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७९ । छ भण्डार ।

३३५१. रागमाला.....। पत्र सं० ६ । आ० ८३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सङ्गीत । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३७९ । अ भण्डार ।

३३५२. राग रागनियों के नाम.....। पत्र सं० ८ । आ० ८३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सङ्गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०७ । झ भण्डार ।



विषय-लोक-विज्ञान

३३५३. अदाईद्वीप वर्णन.....। पत्र सं० १० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-लोक विज्ञान-जम्बूद्वीप, धातकीखण्ड, पुष्करार्द्ध द्वीप का वर्णन है । १० काल × । ले० काल सं० १८१५ । पूर्ण । वे० सं० ३ । ख भण्डार ।

३३५४. ग्रहोंकी ऊंचाई एवं आयुवर्णन.....। पत्र सं० १ । आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-नक्षत्रों का वर्णन है । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११० । अ भण्डार ।

३३५५. चंद्रप्रज्ञप्ति.....। पत्र सं० ६२ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-चन्द्रमा सम्बन्धी वर्णन है । १० काल × । ले० काल सं० १६६४ भाद्रवा बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १६७३ ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका-

इति श्री चन्द्रपणक्तसी (चन्द्रप्रज्ञप्ति) संपूर्णा । लिखतं परिष करमचंद्र ।

३३५६. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति—नेमिचन्द्रचार्य । पत्र सं० ६० । आ० १२×६ इञ्च । भाषा-प्राकृत । विषय-जम्बूद्वीप सम्बन्धी वर्णन । १० काल × । ले० काल सं० १८६६ फाल्गुन सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १०० । च भण्डार ।

विशेष—मधुपुरी नगरी में प्रतिलिपि की गयी थी ।

३३५७. तीनलोककथन। पत्र सं० ६६ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोक विज्ञान-तीनलोक वर्णन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५० । झ भण्डार ।

३३५८. तीनलोकवर्णन.....। पत्र सं० १५४ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-लोक विज्ञान-तीन लोक का वर्णन है । १० काल × । ले० काल सं० १८६१ सावण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १० । ज भण्डार ।

विशेष—गोपाल ध्यास उप्रियावास वाले ने प्रतिलिपि की थी । प्रारम्भ में नेमिनाथ के दश भव का वर्णन है । प्रारम्भ में लिखा है— दूँडार देश में सवाई जयपुर नगर स्थित आचार्य शिरोमणि श्री यशोदानन्द स्वामी के शिष्य पं० मद्रामुख के शिष्य श्री पं० फतेहलाल की यह पुस्तक है । भाद्रवा सुदी १० सं० १६११ ।

३३५९. तीनलोकचार्ट.....। पत्र सं० १ । आ० ५×६ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-लोकविज्ञान । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३५ । छ भण्डार ।

विशेष—त्रिलोकसार के आधार पर बनाया गया है। तीनलोक की जानकारी के लिए बड़ा उपयोगी है।

३३६०. त्रिलोकचित्र.....। आ० २०×३० इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—लोकविज्ञान। २० काल ×। ले० काल सं० १५७५। पूर्ण। वे० सं० ५३६। व्य भण्डार।

विशेष—कपड़े पर तीनलोक का चित्र है।

३३६१. त्रिलोकदीपक—वामदेव। पत्र सं० ७२। आ० १६×७५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—लोकविज्ञान। २० काल ×। ले० काल सं० १८५२ आषाढ सुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ५। ज भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ सचित्र है। जम्बूद्वीप तथा विदेह क्षेत्र का चित्र सुन्दर है तथा उस पर वेल बूटे भी हैं।

३३६२. त्रिलोकसार—नेमिचन्द्राचार्य। पत्र सं० ८१। आ० १३×५ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—लोकविज्ञान। २० काल ×। ले० काल सं० १८१६ मंगसिर बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ४६। अ भण्डार।

विशेष—पहिले पत्र पर ६ चित्र हैं। पहिले नेमिनाथ की मूर्ति का चित्र है जिसके बाईं ओर बलभद्र तथा दाईं ओर श्रीकृष्ण हाथ जोड़े खड़े हैं। तीसरा चित्र नेमिचन्द्राचार्य का है वे लकड़ी के सिंहासन पर बैठे हैं सामने लकड़ी के स्टैंड पर ग्रन्थ है आगे पिच्छी और कमण्डलु हैं। उनके आगे दो चित्र और हैं जिसमें एक चामुण्डराय का तथा दूसरा और किसी श्रोता का चित्र है। दोनों हाथ जोड़े गोडी गले बैठे हैं। चित्र बहुत सुन्दर हैं। इसके अतिरिक्त और भी लोक-विज्ञान सम्बन्धी चित्र हैं।

३३६३. प्रति सं० २। पत्र सं० ४५। ले० काल सं० १८६६ प्र० वैशाख सुदी ११। वे० सं० २८८। क भण्डार।

३३६४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६२। ले० काल सं० १८२६ श्रावण बुदी ५। वे० सं० २८३। क भण्डार।

३३६५. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७२। ले० काल ×। वे० सं० २८६। क भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है।

३३६६. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६८। ले० काल ×। वे० सं० २९०। क भण्डार।

विशेष—प्रति सचित्र है। कई पृष्ठों पर हाशिया में सुन्दर चित्राम हैं।

३३६७. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १७३३ माह सुदी ५। वे० सं० २८३। क भण्डार।

विशेष—महाराजा रामसिंह के शासनकाल में वसवा में रामचन्द्र काला ने प्रतिलिपि करवायी थी।

३३६८. प्रति सं० ७। पत्र सं० ६६। ले० काल सं० १५५३। वे० सं० १९४४। ट भण्डार।

विशेष—कालज्ञान एवं ऋषिमंडल पूजा भी है।

इनके अतिरिक्त अ भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २६२, २६३,) च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १४७, १४८) तथा ज भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४) और है।

३३६६. त्रिलोकसारदर्पणकथा—खड्गसेन । पत्र सं० ३२ से २२८ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—लोक विज्ञान । र० काल सं० १७१३ चैत सुदी ५ । ले० काल सं० १७५३ ज्येष्ठ सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ३६० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है । प्रारम्भ के ३१ पत्र नहीं हैं ।

३३७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३६ । ले० काल सं० १७३६ द्वि० चैत्र बुदी ४ । वे० सं० १८२ । क भण्डार ।

विशेष—साह लोहट ने आत्म पठनार्थ प्रतिलिपि करवायी थी ।

३३७१. त्रिलोकसारभाषा—पं० टोडरमल । पत्र सं० २८६ । आ० १४×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—लोक विज्ञान । र० काल सं० १८४१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । अ भण्डार ।

३३७२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३७३ । अ भण्डार ।

३३७३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१८ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० ४३ । ग भण्डार ।

विशेष—जैतराम साह के पुत्र कालूराम साह ने सोनपाल भौसा से प्रतिलिपि कराकर चौधरियों के मन्दिर में चढ़ाया ।

३३७४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२५ । ले० काल × । वे० सं० ३६ । घ भण्डार ।

३३७५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३६४ । ले० काल सं० १६६६ । वे० सं० २८४ । ङ भण्डार ।

विशेष—सेठ जवाहरलाल सुगनचन्द सोनी अजमेर वालों ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

३३७६. त्रिलोकसारभाषा..... । पत्र सं० ४५२ । आ० १२३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल सं० १६४७ । पूर्ण । वे० सं० २६२ । क भण्डार ।

३३७७. त्रिलोकसारभाषा..... । पत्र सं० १०८ । आ० ११३×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६१ । क भण्डार ।

विशेष—भवनलोक वर्णन तक पूर्ण है ।

३३७८. त्रिलोकसारभाषा..... । पत्र सं० १५० । आ० १२×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८३ । च भण्डार ।

३३७९. त्रिलोकसारभाषा (वचनिका)..... । पत्र सं० ३१० । आ० १०३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल सं० १८६५ । वे० सं० ८५ । क भण्डार ।

३३८०. त्रिलोकसारवृत्ति—माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव । पत्र सं० २४० । आ० १३×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल सं० १९४५ । पूर्ण । वे० सं० २८२ । क भण्डार ।

३३८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४२ । ले० काल × । वे० सं० ९६ । छ भण्डार ।

३३८२. त्रिलोकसारवृत्ति..... । पत्र सं० १० । आ० १०×११ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८ । ज भण्डार ।

३३८३. त्रिलोकसारवृत्ति..... । पत्र सं० ३७ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७ । ज भण्डार ।

३३८४. त्रिलोकसारवृत्ति..... । पत्र सं० २५ । आ० १०×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३३ । ट भण्डार ।

३३८५. त्रिलोकसारवृत्ति..... । पत्र सं० ९३ । आ० १३×९ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९७ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रत प्राचीन है ।

३३८६. त्रिलोकमारसंहृष्टि—नेमिचन्द्राचार्य । पत्र सं० ६३ । आ० १३ $\frac{३}{४}$ ×८ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८४ । क भण्डार ।

३३८७. त्रिलोकस्वरूपव्याख्या—उदयलाल गंगवालाल । पत्र सं० ५० । आ० १३×७ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—लोक विज्ञान । २० काल सं० १९४४ । ले० काल सं० १९०४ । पूर्ण । वे० सं० ६ । ज भण्डार ।

विशेष—मुं० धन्नालाल भौरीलाल एवं चिमनलालजी की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना हुई थी ।

३३८८. त्रिलोकवर्णन..... । पत्र सं० ३६ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोकविज्ञान । २० काल × । ले० काल सं० १२१० कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७७ । ख भण्डार ।

विशेष—गाथायें नहीं हैं केवल वर्णनमात्र है । लोक के चित्र भी हैं । जम्बूद्वीप वर्णन तक पूर्ण है भगवानदास के पठनार्थ जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३३८९. त्रिलोकवर्णन..... । पत्र सं० १५ से ३७ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—लोक विज्ञान । २० काल × । ले० काल × अपूर्ण । वे० सं० ७६ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है । १ से १४, १८, २१ २३ से २६, २८ से ३४ तक पत्र नहीं है । पत्र सं० १५ ३६, तथा ३७ पर चित्र नहीं हैं । इसके अतिरिक्त तीन पत्र सचित्र और हैं जिनमें से एक में वरक का, दूसरे में चंद्र, सूर्यचक्र कुण्डलद्वीप और तीसरे में भौरा, मछली, कनखजूरा के चित्र हैं । चित्र सुन्दर एवं दर्शनीय हैं ।

३३६०. त्रिलोकवर्णन..... । एक ही लम्बे पत्र पर । ले० काल × । वे० सं० ७५ । ख भण्डार ।

विशेष—सिद्धशिला से स्वर्ग के विमल पटल तक ६३ पटलों का सचित्र वर्णन है । चित्र १४ फुट ८ इंच लम्बे तथा ४३ इंच चौड़े पत्र पर दिये हैं । कहीं कहीं पीछे कपड़ा भी चिपका हुआ है । मध्यलोक का चित्र १×१ फुट है । चित्र सभी बिन्दुओं में बने हैं । नरक वर्णन नहीं है ।

३३६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५२७ । व्य भण्डार ।

३३६२. त्रिलोकवर्णन..... । पत्र सं० ५ । आ० १७×११ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६ । ज भण्डार ।

३३६३. त्रैलोक्यसारटीका—सहस्रकीर्त्ति । पत्र सं० ७६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८६ । क भण्डार ।

३३६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल × । वे० सं० २८७ । क भण्डार ।

३३६५. भूगोलनिर्माण..... । पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल सं० १५७१ । पूर्ण । वे० सं० ८६८ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० हर्षागम गणि वाचनार्थ लिखितं कोरटा नगरे सं० १५७१ वर्षे । जैनेतर भूगोल है जिसमें सतयुग, द्वापर एवं त्रेता में होने वाले अवतारों का तथा जम्बूद्वीप का वर्णन है ।

३३६६. संघपण्टपत्र..... । पत्र सं० ६ से ४१ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०३ । ख भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टक्का टीका दी हुई है । १ से ५, १४, १५ । २० से २२, २६ । २८ से ३०, ३२, ३५, ३६ तथा ४१ में आगे पत्र नहीं हैं ।

३३६७. सिद्धांत त्रिलोकदीपक—वामदेव । पत्र सं० ६४ । आ० १३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लोक विज्ञान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३११ । व्य भण्डार ।



विषय- सुभाषित एवं नीतिशास्त्र



३३६८. अक्लमन्दवार्त्ता.....। पल सं० २० । आ० १२×८ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११ । क भण्डार ।

३३६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० १२ । क भण्डार ।

३४००. उपदेशछत्तीसी—जिनहर्ष । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १८३६ । पूर्ण । वे० सं० ४२८ । अ भण्डार ।

विशेष—

प्रारम्भ—श्री सर्वज्ञेभ्यो नमः । अथ श्री जिनहर्षेण वीर चितायाम्पदेश छत्तीसी कामहमेव लक्ष्यते स्यात् ।

जिनस्तुति—

सकल रूप यामे प्रभुता अनूप भूप,

घूष छाया माहे है न जगदीश जुं ।

पुण्य हि न पाप हे नसित हे न ताप हे,

जाप के प्रताप कटे करम अतिसयुं ॥

ज्ञान कौ अंगज पुंज सूख्य वृक्ष के निकुंज,

अतिसय चौतिस फुति वचन ये तिसयु ।

अैसे जिनराज जिनहर्ष प्रणमि उपदेश,

की छतिसी कहौ सवइ एसतीसयु ॥१॥

अथिरत्व कथन—

अरे जिउ काचिनीउ ताहु परी अमार तीते,

तो अतीगति करी जौ रसी उठानि है ।

तु तो नहीं चेतता हे जाणे हे रहेगी वृद्ध,

मेरी २ कर रह्यौ उर्यामि रति मानी हे ॥

ज्ञान की नीजीर खोल देख न कवहे,

तेरी मोह दारू मे भयो वकारौ अज्ञानी हे ।

कहे जीनहर्ष ढरु तन लगैगी वार,

कागद की गुढी कौलू रहे जी हा पारणी ॥२॥

अन्तिम— धर्म परीक्षा कथन सवैया—

धरम धरम कहै मरम न कोउ लहे,
 भरम में भूलि रहै कुल रूढ कीजीये ।
 कुल रूढ छोरि कै भरम फंद तोरि कै,
 सुमति गति फोरि कै सुजान दृष्टि दीजीये ॥
 दया रूप सोइ धर्म धर्म तैं कटै है मर्म,
 भेद जिन धरम पीयूष रस पीजीये ।
 करि कै परीक्ष्या जिनहरष धरम कीजीये,
 कसि कै कसोटी जैसे कंचण क लीजीये ॥३५॥

अथ ग्रंथ समाप्त कथन सवैया इकतीसा

भई उपदेस की छतीसी परिपूर्णा चतुर नर
 है जे याको मध्य रस पीजीये ।
 भेरी है अल्पमति तो भी में कीए कवित,
 कविताह सी ही जिन ग्रन्थ मान लीजीये ॥
 सरस है है वखारण जोऊ भवसर जाण,
 दोइ तीन याक भैया सवैया कहीजीयो ।
 कहै जिनहरष संवत्त गुण सिसि भक्ष कीनी,
 जु सुण कै सावास मौकु दीजीयो ॥३६॥
 इति श्री उपदेश छतीसी संपूर्ण ।

संवत् १८३६

गवडि पुछेरे गवडि आ, कवण भले री देश ।
 संपत हुए तो घर भलो, नहीतर भलो विदेश ॥
 मूरबलि तो सूहांमणी, कर मोहि गंग प्रवाह ।
 मांडल तणे प्रगणे पांणी अथग अथाह ॥२॥

३४०१. उपदेश शतक—द्यानतराय । पत्र सं० १४ । आ० १२३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
 सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२६ । च भण्डार ।

३४०२. कपूर्वप्रकरण..... । पत्र सं० २४ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६३ ।

विशेष—१७६ पद्य हैं। अन्तिम पद्य निम्न प्रकार है—

श्री वज्रसेनस्य गुरोस्त्रिपष्टि

सार प्रबंधस्फुट सदगुणस्य ।

शिष्येण चक्रे हरिणोय मिष्टा

सूतावली नेमिचरित्र कर्ता ॥१७६॥

इति कर्पूरभिध सुभाषित कोशः समाप्ताः ॥

३४०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १६४७ ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० सं० १०३ । क
भण्डार ।

३४०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १७७६ श्रावण ४ । वे० सं० २७६ । ज
भण्डार ।

विशेष—भूधरदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३४०५. कामन्दकीय नीतिसार भाषा..... । पत्र सं० २ से १७ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी
गद्य । विषय—नीति । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २८० । झ भण्डार ।

३४०६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ से ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६०८ । अ भण्डार ।

३४०७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ से ६८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८ । अ भण्डार ।

३४०८. चाणक्यनीति—चाणक्य । पत्र सं० ११ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
नीतिशास्त्र । १० काल × । ले० काल सं० १८६६ मंगसिर बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ८११ । अ भण्डार ।

इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ६३०, ६६१, ११००, १६५४, १६४५) और हैं ।

३४०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८४६ पौष सुदी ६ । वे० सं० ७० । ग
भण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७१) और है ।

३४१०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७५ । छ भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३७, ६५७) और हैं ।

३४११. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ से १३ । ले० काल सं० १८८५ मंगसिर बुदी ५५ । अपूर्ण । वे०
सं० ६३ । च भण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ६४) और है ।

३४१२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८७४ ज्येष्ठ बुदी ११ । वे० सं० २४६ । झ
भण्डार ।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १३८, २४८, २५०) और हैं ।

३४१३. चाणक्यनीतिसार—मूलकर्त्ता—चाणक्य । संग्रहकर्त्ता—मथुरेश भट्टाचार्य । पत्र सं० ७ ।
मा० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नीतिशास्त्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१० ।
अ भण्डार ।

३४१४. चाणक्यनीतिभाषा..... । पत्र सं० २० । मा० १०×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नीति
शास्त्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१६ । ट भण्डार ।

विशेष—६ अध्याय तक पूर्ण है । ७वें अध्याय के २ पद्य हैं । दोहा और कुण्डलियों का अधिक प्रयोग
हुआ है ।

३४१५. छंदशतक—वृन्दाचनदास । पत्र सं० २६ । मा० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
सुभाषित । १० काल सं० १८६८ माघ सुदी २ । ले० काल सं० १६४० मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १७८ । क
भण्डार ।

३४१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६३७ फागुण सुदी ६ । वे० सं० १८१ । क
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १७६, १८०) और हैं ।

३४१७. जैनशतक—भूधरदास । पत्र सं० १७ । मा० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित ।
१० काल सं० १७८१ पीप सुदी १२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००५ । अ भण्डार ।

३४१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १६७७ फागुण सुदी ५ । वे० सं० २१८ । क
भण्डार ।

३४१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० २१७ । ङ भण्डार ।

विशेष—प्रति नीले कागजों पर है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१६) और है ।

३४२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० ५६० । च भण्डार ।

३४२१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० १५८ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २८४) और है जिसमें कर्म छत्तीसी पाठ भी है ।

३४२२. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १८८१ । वे० सं० १६४० । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६५१) और है ।

३४२३. ढालगण..... । पत्र सं० ८ । मा० १२×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । १०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३५ । फ भण्डार ।

३४२४. तत्त्वधर्मामृत.....। पत्र सं० ३३। आ० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित।
२० काल ×। ले० काल सं० १६३६ ज्येष्ठ मुदी १०। पूर्ण। वे० सं० ४६। अ भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

संवत् १६३६ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे दशम्यांतिथौ बुधवासरे चित्रानक्षत्रे परिग्रयोगे अत्रा दिवसे। आदीश्वर
चैत्यालये। चंपावतिनामनगरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यान्वये भट्टा० पद्मनन्दिदेवास्तत्पट्टे
भ० श्री शुभचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री जिनचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्रदेवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री धर्म (चं) द्र
देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री ललितकीर्ति देवास्तत्पट्टे मंडलाचार्य श्री चन्दकीर्ति देवास्तदात्मनाये खंडेलवालान्वये भसावड्या
गोत्र साह हरजाज भार्या पुत्र द्विय प्रथम समतु द्वितिक पुत्र मेघराज। साह समतु भार्या समतादे तत्र पुत्र लक्ष्मी-
दास। साह मेघराज तस्य भार्या द्विय प्रथम भार्या लाडमदेइ द्वितिक.....। अपूर्ण।

३४२५. प्रति सं० २। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २१४५। ट भण्डार।

विशेष—३० से आगे पत्र नहीं हैं।

प्रारम्भ—

शुद्धात्मरूपमापन्नं प्रणिपत्यं गुरो गुप्तं।

तत्त्वधर्मामृतं नाम वक्ष्ये संक्षेपतः ॥

धर्मं श्रुते पापमुपैति नाशं धर्मं श्रुते पुण्यमुपैति वृद्धिः।

स्वर्गापवर्गं प्रवरोरु सौख्यं, धर्मं श्रुते रेव न चात्यतोस्ति ॥२॥

३४२६. दशबोल.....। पत्र सं० २। आ० १०×६३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—सुभाषित। २०
काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १९४७। ट भण्डार।

३४२७. दृष्टान्तशतक.....। पत्र सं० १७। आ० ९३×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—सुभाषित।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८५९। अ भण्डार।

विशेष—हिन्दी अर्थ दिया है। पत्र १५ से आगे ६३ फुटकर श्लोकों का संग्रह और है।

३४२८. दानतविलास—दानतराय। पत्र सं० २ से १३। आ० ९×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—
सुभाषित। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३४४। ड भण्डार।

३४२९. धर्मविलास—दानतराय। पत्र सं० २३४। आ० ११३×७३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—
सुभाषित। २० काल ×। ले० काल सं० १९५८ फागुण बुदी १। पूर्ण। वे० सं० ३४२। क भण्डार।

३४३०. प्रति सं० २। पत्र सं० १३६। ले० काल सं० १८८१ आसोज बुदी २। वे० सं० ४५। ग
भण्डार।

विशेष—जैतरामजी साह के पुत्र शिवलालजी ने नेमिनाथ चैत्यालय (चौधरियों का मन्दिर) के लिए
बिम्मनलाल तेरापंथी से दौसा में प्रतिलिपि करवायी थी।

३४३१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६१ । ले० काल सं० १६१६ । वे० सं० ३३६ । डू भण्डार ।

विशेष—तीन प्रकार की लिपि है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३४०) और है ।

३४३२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६४ । ले० काल × । वे० सं० ५१ । ऋ भण्डार ।

३४३३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० १५६३ । ट भण्डार ।

३४३४. नवरत्न (कवित्त)..... । पत्र सं० २ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३८८ । अ भण्डार ।

३४३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १७८ । च भण्डार ।

३४३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १६३४ । वे० सं० १७६ । च भण्डार ।

विशेष—पंचरत्न और है । श्री विरधीचंद पाटोदी ने प्रतिलिपि की थी ।

३४३७. नीतिसार..... । पत्र सं० ६ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नीतिशास्त्र ।

२० काल × । ले० काल × । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

३४३८. नीतिसार—इन्द्रनन्द । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नीति

शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८६ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ से भद्रबाहु कृत क्रियासार दिया हुआ है । अन्तिम ६वें पत्र पर दर्शनसार है किन्तु अपूर्ण है ।

३४३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६३७ । भादवा बुदी ४ । वे० सं० ३८६ । क

भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३८६, ४००) और हैं ।

३४४०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ में ८ । ले० काल सं० १८२२ । भादवा बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं०

३८१ । डू भण्डार ।

३४४१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३२६ । ज भण्डार ।

३४४२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७८४ । वे० सं० १७६ । व्य भण्डार ।

विशेष—मलायनगर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में गौर्द्धनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३४४३. नीतिशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० ६ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७६ । डू भण्डार ।

३४४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १४२ । व्य भण्डार ।

३४४५. नीतिवाक्यामृत—सोमदेव सूरि । पत्र सं० ५५ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—नीतिशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८४ । क भण्डार ।

३४४६. नीतिविनोद..... । पत्र सं० ४ । आ० ६×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—नीतिशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १६१८ । वे० सं० ३३५ । झ भण्डार ।

विशेष—मन्नालाल पांड्या ने संग्रह करवाया था ।

३४४७. नीलसूक्त । पत्र सं० ११ । आ० ६^३/_४×४^२/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२८ । ज भण्डार ।

३४४८. नौशेरवां बादशाह की दस ताज । पत्र सं० ५ । आ० ४^३/_४×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
उपदेश । २० काल × । ले० काल सं० १६४६ बैंगाल सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ४० । झ भण्डार ।

विशेष—गणेशलाल पांड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

३४४९. पञ्चतन्त्र—पं० विष्णु शर्मा । पत्र सं० ६४ । आ० १२×५^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
नीति । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१८ । अ भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६३७) और है ।

३४५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० १०१ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३४५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ से १६८ । ले० काल सं० १८३२ चैत्र सुदी २ । अपूर्ण । वे० सं०
१६४ । च भण्डार ।

विशेष—पूर्णचन्द्र सूरि द्वारा संशोधित, पुरोहित भागीरथ पल्लीवाल ब्राह्मण ने सवाई जयनगर (जयपुर)
में पृथ्वीसिंहजी के शासनकाल में प्रतिलिपि की थी । इस प्रति का जीर्णोद्धार सं० १८५५ फागुण बुदी ३ में हुआ था ।

३४५२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८७ । ले० काल सं० १८८७ पौष बुदी ४ । वे० सं० ६११ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति हिन्दी अर्थ सहित है । प्रारम्भ में संगही दीवान अमरचंदजी के आग्रह से नयनसुख व्यास के
शिष्य माणिक्यचन्द्र ने पञ्चतन्त्र की हिन्दी टीका लिखी ।

३४५३. पञ्चतन्त्रभाषा..... । पत्र सं० २२ से १४३ । आ० ६×७^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य ।
विषय—नीति । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७८ । ट भण्डार ।

विशेष—विष्णु शर्मा के संस्कृत पञ्चतन्त्र का हिन्दी अनुवाद है ।

३४५४. पांचबोल..... । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—गुजराती । विषय—उपदेश । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६६ । ट भण्डार ।

३४५४. पैसठबोल । पत्र सं० १ आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—उपदेश । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७६ । अ भण्डार ।

विशेष—अथ बोल ६५

[१] अरथ लोभी [२] निरदई मनख होसी [३] विसवासघाती मंत्री [४] पुत्र सुत्रा अरना लोभा [५] नीचा पेया भाई बंधव [६] असंतोष प्रजा [७] विद्यावंत दलद्वी [८] पाखण्डी शास्त्र बांच [९] जती क्रोधी होइ [१०] प्रजाहीण नगग्रही [११] वेद रोमी हांसी [१२] हीण जाति कला होसी [१३] सुधारक छल छद्म होसी [१४] सुषट कायर होमी [१५] खिसा काया कलेस घणु करसी दुष्ट बलवंत सुत्र सो [१६] जोबनवंतजरा [१७] अकाल मृत्यु होसी [१८] पुदा जीव घणा [१९] अंगहीण मनुख होसी [२०] अल्प मेघ [२१] उरल सात बोली ही ? [२२] वचन चूक मनुष होसी [२३] विसवासघाती छत्री होसी [२४] संया [२५] [२६] [२७] [२८] [२९] अणकंधा न कीधी कहमी [३०] आपको कीधी दोष पैला का लगावसी [३१] असुद्ध साथ भएसी [३२] कुटल दया पालसी [३३] भेप धारांबेरागी होसी [३४] अहंकार द्वेष मुख घणा [३५] मुरजादा लोप गऊ काह्यण [३६] माता पिता गुरुदेव मान नहीं [३७] दुरजन सु सनेह होसी [३८] सजन उपरा विरोध होसी [३९] पैला की निचा घणी करसी [४०] कुलवंता नार लहोमी [४१] वेशां भगतण लज्या करसी [४२] अफल वर्षा होसी [४३] बाण्या की जात कुटिल होसी [४४] कवारी चपल होसी [४५] उत्तम घरकी स्त्री नीच सु होसी [४६] नीच घरका रूपवंत होमी [४७] मुंहमाया मेघ नहीं होसी [४८] धरतां में मेह थोड़ो होसी [४९] मनख्यां में नेह थोड़ो होसी [५०] बिना देखां चुगली करसी [५१] जानो सरणों लेसी तामूं ही द्वेष करी खोटी करसी [५२] गज हीण बाजा हांसामी [५३] क्याइ कहां हान क लेसी [५४] अवंबसा राजा हो [५५] रोग सोग घणा होसी [५६] रतबा प्रात होसी [५७] नीच जात अद्वान होसी [५८] राजजोग घणा होसी [५९] अस्त्री कलेस गराघण [६०] अस्त्री मील हीण घणी होसी [६१] मीलवंती विरली होसी [६२] विष विकार घनो रगत होसी [६३] संसार चलावाता ते दुखां जाण जांसी ।

॥ इति श्री पचावस बोल संपूर्ण ॥

३४५६. प्रयोधमार—यशःकोत्ति । पत्र सं० २३ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७५ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में मूल अपभ्रंश का उल्था है ।

३४५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० ४६५ । क भण्डार ।

३४५८. प्रश्नोत्तर रत्नमाला—तुलसीदास । पत्र सं० २ । आ० ६३×३३ इंच । भाषा—गुजराती ।

विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७० । ट भण्डार ।

३४५९. प्रश्नोत्तररत्नमालिका—अमोघवर्ष । पत्र सं० २ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७ । अ भण्डार ।

३४६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १६७१ मंगसिर सुदी ५ । वे० सं० ५१६ । क

भण्डार ।

३४६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० १०१ । छ भण्डार ।

३४६२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १७६२ । ट भण्डार ।

३४६३. प्रस्तावित श्लोक..... । पत्र सं० ३६ । आ० ११×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१४ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है । विभिन्न ग्रन्थों में से उत्तम पद्यों का संग्रह है ।

३४६४. बारहखड़ी.....सूरत । पत्र सं० ७ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५६ । झ भण्डार ।

३४६५. बारहखड़ी । पत्र सं० २० । आ० ५×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५६ । झ भण्डार ।

३४६६. बारहखड़ी—पार्श्वदास । पत्र सं० ५ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित ।

२० काल सं० १८६६ पौष बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४० ।

३४६७. बुधजनविलास—बुधजन । पत्र सं० ६४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

संग्रह । २० काल सं० १८६१ कार्तिक सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८७ । झ भण्डार ।

३४६८. बुधजन सतसई—बुधजन । पत्र सं० ४४ । आ० ८×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

सुभाषित । २० काल सं० १८७६ ज्येष्ठ बुदी ८ । ले० काल सं० १६८० माघ बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ४४४ । अ

भण्डार ।

विशेष—७०० दोहों का संग्रह है ।

३४६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ७६४ । अ भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६५४, ६८४) और हैं ।

३४७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५३४ । छ भण्डार ।

३४७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ७२६ । च भण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७४६) और है ।

३४७२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १६५४ आषाढ सुदी १० । वे० सं० १६४० । ट

भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६३२) और है ।

३४७३. बुधजन सतसई—बुधजन । पत्र सं० ३०३ । ले० काल × । वे० सं० ५३५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ५३६) और है । हिन्दी अर्थ सहित है ।

३४७४. ब्रह्मविलास—भैया भगवतीदास । पत्र सं० २१३ । आ० १३×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—मुभापित । २० काल सं० १७५५ बैशाख सुदी ३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । क भण्डार ।

विशेष—कवि की ६७ रचनाओं का संग्रह है ।

३४७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३२ । ले० काल × । वे० सं० ५३६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सुन्दर है । चौकोर लाइनें सुनहरी रंग की हैं । प्रति गुटके के रूप में है तथा प्रदर्शनी में रखने योग्य है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५३८) और है ।

३४७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२० । ले० काल × । वे० सं० ५३८ । क भण्डार ।

३४७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३७ । ले० काल सं० १८५७ । वे० सं० १२७ । ख भण्डार ।

विशेष—माधोराजपुरा में महात्मा जयदेव जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी । मित्ती माह सुदी ६ सं० १८८६ में गोबिन्दराम साहबडा (छाबड़ा) की मार्फत पचार के मन्दिर के वास्ते दिलाया । कुछ पत्र चूहे काट गये हैं ।

३४७८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १८८३ चैत्र सुदी ६ । वे० सं० ६५१ । च

भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ हुकमचन्दजी बज ने दीवान अमरचन्दजी के मन्दिर में चढाया था ।

३४७९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २०३ । ले० काल × । वे० सं० ७३ । ब भण्डार ।

३४८०. ब्रह्मचर्याष्टक..... पत्र सं० ५६ । आ० ६^१/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मुभापित ।

२० काल × । ले० काल सं० १७८८ । पूर्ण । वे० सं० १२६ । ख भण्डार ।

३४८१. भर्तृहरिशतक—भर्तृहरि । पत्र सं० २० । आ० ८^३/_५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

मुभापित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम शतकत्रय अथवा त्रिशतक भी है ।

इसी भण्डार में ८ प्रतियां (वे० सं० ६५५, ३८१, ६२८, ६४६, ७६३, १०७४, ११३६, ११७३)
और हैं ।

३४८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ से १६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ५६१ । ङ भण्डार ।
इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५६२, ५६३) अपूर्ण और हैं ।

३४८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० २६३ । च भण्डार ।

३४८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १८७५ चैत सुदी ७ । वे० सं० १३८ । छ
भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २८८) और है ।

३४८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५२ । ले० काल सं० १६२८ । वे० सं० २८४ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । सुखचन्द ने चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

३४८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४५ । ले० काल X । वे० सं० १६२ । व्य भण्डार ।

३४८७. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ८ से २६ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ११७५ । ट भण्डार ।

३४८८. भावशतक—श्री नागराज । पत्र सं० १४ । आ० ६X४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
सुभाषित । २० काल X । ले० काल सं० १८३८ सावन बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ५७० । ङ भण्डार ।

३४८९. मनमोदनपंचशतीभाषा—छत्रपति जैसवाल । पत्र सं० ८६ । आ० ११X५३ इञ्च । भाषा—
हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । २० काल सं० १६१६ । ले० काल सं० १६१६ । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । क
भण्डार ।

विशेष—सभी सामान्य विषयों पर छंदों का संग्रह है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६६) और है ।

३४९०. मान बावनी—मानकवि । पत्र सं० २ । आ० ६३X३३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
सुभाषित । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ५१६ । व्य भण्डार ।

३४९१. मित्रविलास—घासी । पत्र सं० ३४ । आ० ११X५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
सुभाषित । २० काल सं० १७६६ फागुण सुदी ४ । ले० काल सं० १६५२ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५७६ । क
भण्डार ।

विशेष—लेखक ने यह ग्रन्थ अपने मित्र भारामल तथा पिता वहालसिंह की सहायता से लिखा था ।

३४९२. रत्नकोष..... । पत्र सं० ८ । आ० १०X४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २०
काल X । ले० काल सं० १७२२ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १०३८ । अ भण्डार ।

विशेष—विश्वमेन के शिष्य बलभद्र ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०२१) तथा व्य भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३४५ क) और है ।

३४६३. रत्नकोष.....। पत्र सं० १४ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२४ । क भण्डार ।

विशेष—१०० प्रकार की विविध बातों का विवरण है जैसे ४ पुरुषार्थ, ६३ राजवंश, ७ अंगराज्य, राजाओं के गुण, ४ प्रकार की राज विद्या, ६३ राज्यपाल, ६३ प्रकार के राजविनोद तथा ७२ प्रकार की कला आदि ।

३४६४. राजनीतिशास्त्रभाषा—जसुराम । पत्र सं० १८ । आ० ५^१/_३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—राजनीति । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८ । झ भण्डार ।

विशेष—श्री गणेशायनमः अथ राजनीत जसुराम कृत लीखतं ।

दाहा— अछर अगम अपार गति कितहु पार न पाय ।
सो मोकु दीजे सकती जे जे जे जगराय ॥

छापय— वरनी उज्ज्वल वरन सरन जग असरन सरनी ।
कर करुनां करन तरन सब तारन तरनी ॥
शिर पर धरनी छत्र भरन सुख संपत्त भरनी ।
भरनी अमृत भरन हरन दुख दारिद हरनी ॥
धरनी त्रिमुल खपर धरन भव भय हरनी ।
सकल भय जग बंध आदि वरनी जमु जे जग धरनी ॥ मात जे० ।

दाहा— जे जग धरनी मात जे दीजे बुधि अपार ।
करी प्रनाम प्रसन्न कर राजनीत वीसतार ॥३॥

प्रन्तिम— लोक सीरकार राजी और सब राजी रहै ।
आकरी के कीये विन लालच न चाइये ॥
किन हुं की मली बुरी कहिये न काहु प्रागै ।
सटका दे लछन कछु न आप साई है ॥
राय के उजीर नमु राख राख लेत रंग ।
येक टेक हुं की बात उमरनीवाहिये ॥
रीझ खीझ सिरकुं चढाय लीजे जमुराम ।
येक परापत कु येने गुन चाहीये ॥४॥

३४६५. राजनीति शास्त्र—देवीदास । पत्र सं० १७ । आ० ८३×६ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—राजनीति । २० काल × । ले० काल सं० १६७३ । पूर्ण । वे० सं० ३४३ । झ भण्डार ।

३४६६. लघुचाणिक्य राजनीति—चाणिक्य । पत्र सं० ६ । आ० १२×५^३/_४ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—राजनीति । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । ज भण्डार ।

३४६७. वृन्दसतसई—कवि वृन्द । पत्र सं० ४ । आ० १३^३/_४×६^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—
सुभाषित । २० काल सं० १७६१ । ले० काल सं० १८३४ । पूर्ण । वे० सं० ७७६ । अ भण्डार ।

३४६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० वात्र × । वे० सं० ६८५ । ड भण्डार ।

३४६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १८६७ । वे० सं० १६६ । छ भण्डार ।

३५००. बृहद् चाणिक्यनीतिशास्त्र भाषा—मिश्ररामराय । पत्र सं० ३८ । आ० ८३×६ इंच ।
भाषा—हिन्दी । विषय—नीतिशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५१ । च भण्डार ।

विशेष—माणिक्यचंद ने प्रतिलिपि की थी ।

३५०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५५२ । च भण्डार ।

३५०२. षष्टिशतक टिप्पण—भक्तिलाल । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १५७२ । पूर्ण । वे० सं० ३५८ । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका—

इति षष्टिशतकं समाप्तं । श्री भक्तिलाभोपाध्याय शिष्य पं० चारू चन्द्रोपालिखि ।

इसमें कुल १६१ गाथाएँ हैं । अंत की गाथा में ग्रन्थकर्ता का नाम दिया है । १६०वीं गाथा की संस्कृत
टीका निम्न प्रकार है—

एवं सुगमा । श्री नेमिचन्द्र भांडारिक पूर्व गुरु विरहे धर्मस्य ज्ञातानाभूत । श्री जिनवल्लभसूरि गुरानभुत्वा
तस्कुते पिड विशुद्धयादि परिचयेन धर्मतत्त्वज्ञो ततस्तेन सर्वधर्म मूल सम्यक्त्व शुद्धि दृढताहेतुभूता ॥ १६० ॥ संख्या गाथा
विरचयां चक्रे इति सम्बन्ध ।

व्याख्यान्वय पूर्वाऽवचूणि रेषानुभक्तिलाभकृता ।

सूचार्थ ज्ञान फला विज्ञेया पठि शतकस्य ॥१॥

प्रशस्ति— सं० १५७२ वर्षे श्री विक्रमनगरे श्री जय सागरोगाध्याय शिष्य श्री रत्नचन्द्रोपाध्याय शिष्य श्री भक्तिलाभो
पाध्याय कृता स्वशिष्या वा. चारित्रसार पं० चारू चंद्रादिभिर्वाच्यमाना चिरं नंदतात् । श्री कल्याणं भवतु श्री भ्रमण
संधस्य ।

३५०३. शुभसीख..... । पत्र सं० २ । आ० ८^३/_४×४ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सुभाषित ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

३५०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १४६ । छ भण्डार ।

विशेष—१३६ सोखों का वर्णन है ।

३५०५ सज्जनचित्तवल्लभ—मल्लिषेण । पत्र सं० ३ । आ० ११३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
मुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्ण । वे० सं० १०५७ । अ भण्डार ।

३५०६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० ७३१ । क भण्डार ।

३५०७ प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६५४ पीष बुदो ३ । वे० सं० ७२८ । क
भण्डार ।

३५०८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २६३ । छ भण्डार ।

३५०९ प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १७४६ आसोज मुदी ६ । वे० सं० ३०४ । छ
भण्डार ।

विशेष—भट्टारक जगत्कीर्ति के शिष्य दोदराज ने प्रतिलिपि की थी ।

३५१०. सज्जनचित्तवल्लभ—शुभचन्द्र । पत्र सं० ४ । आ० ११×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
मुभाषित । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६ । ज भण्डार ।

३५११. सज्जनचित्तवल्लभ । पत्र सं० ४ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
मुभाषित । र० काल × । ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । ख भण्डार ।

३५१२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १५३ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३५१३. सज्जनचित्तवल्लभ—हर्गूलाल । पत्र सं० ६६ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
मुभाषित । र० काल सं० १६०६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२७ । क भण्डार ।

विशेष—हर्गूलाल खतीली के रहने वाले थे । इनके पिता का नाम प्रीतमदास था । बाद में सहारनपुर
चले गये थे वहाँ मित्रों की प्रेरणा से ग्रन्थ रचना की थी ।

इसी भण्डार में दो प्रतियाँ (वे० सं० ७२६, ७३०) और हैं ।

३५१४. सज्जनचित्तवल्लभ—मिहरचंद्र । पत्र सं० ३१ । आ० ११×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
मुभाषित । र० काल सं० १६२१ कार्तिक मुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२६ । क भण्डार ।

३५१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० ७२५ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी पद्य में भी अनुवाद दिया है ।

३५१६. सद्भाषितावलि—सकलकीर्ति । पत्र सं० ३४ । आ० १०^३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८५७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १८६८) और है ।

३५१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १८१० मंगसिर सुदी ७ । वे० सं० ४७२ । अ

भण्डार ।

विशेष—घासीराम पति ने मन्दिर में यह ग्रन्थ बँटाया था ।

३५१८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० १६४६ । ट भण्डार ।

३५१९. सद्भाषितावलीभाषा—पद्मालाल चौधरी । पत्र सं० १३६ । आ० ११×८ इंच । भाषा—

हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १६४६ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ७३२ । क भण्डार ।

विशेष—पृष्ठों पर पत्रों की सूची लिखी हुई है ।

३५२०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० ७३३ । क भण्डार ।

३५२१. सद्भाषितावलीभाषा..... । पत्र सं० २५ । आ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—सुभाषित । ३० काल सं० १९६१ सावन सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ५६ । अ भण्डार ।

३५२२. सन्देशसमुच्चय—धर्मकलशसूरि । पत्र सं० १८ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७१ । अ भण्डार ।

३५२३. सभासार नाटक—रघुराम । पत्र सं० १५ से ४३ । आ० ५^३×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १८८१ । अपूर्ण । वे० सं० २०७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ में पञ्चमेह एवं तन्दीस्वरदीप पूजा है ।

३५२४. सभातरंग..... । पत्र सं० ३८ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १८७४ ज्येष्ठ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १०० । अ भण्डार ।

विशेष—गोधों के नेमिनाथ चैत्यालय सांगानेर में हरिवंशदास के शिष्य कृष्णचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३५२५. सभाशृङ्गार..... । पत्र सं० ४६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—

सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १७३१ कार्तिक सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० १८७७ ।

विशेष—प्रारम्भ—

सकलगणि गजेंद्र श्री श्री श्री साधु विजयगण्णिकुम्भोत्तमः । अथा सभाशृङ्गार ग्रन्थ लिख्यते । श्री ऋषभ

देवाय नमः । श्री रस्तु ॥

नाभि नन्दनु सकलमहीमंडनु पंचशत धनुष मानु तो... तीर्ण सुवर्ण समानु हर गवल श्यामल कुंतलाबली
विभूषित स्कंधु केवलज्ञान लक्ष्मी सनाथु भ्रथ लोकाह्लिमुत्ति[क्ति]मार्गनी देखाउई। साध संसार शंभकूप (शंभकूप)
प्राणिवर्ग पटना इइ हाथ । युगला धर्म धर्म निवार वा समर्थ । भगवंत श्री प्रादिनाथ श्री संवतर्णी मन्तेरव पुरो ॥१॥
बानराग वांगी नंसार सप्रुत्तारिणी । महामोह विध्वंसनी । दिनकरभुकारिणी । क्रोधगिर्व्यावानजोपस्त्रामिनीमुक्तिमार्ग
प्रकाशनी । सर्व जन चित्त सम्प्रोहकारिणी । प्रागमोदगारिणी बीतराग वांगी ॥२॥

विशेष अतीसय निधान सकलगुणप्रधान मोहांधकारविच्छेदन भानु त्रिभुवन संकलसंदेह छेदक । अद्येय अभेच
प्राणिवर्ग हृदय भेदक अनंतानंत विज्ञान इसिउं प्रपनु केवलज्ञान ॥३॥

अन्तिम पाठ—

प्रथमश्री गुणा— १. कुलीना २. शीलवती ३. विवेकी ४. दानसीला ५. कीर्तवती ६. विज्ञानवती ७.
गुणग्राहणी ८. उपकारिणी ९. कृतज्ञा १०. धर्मवती ११. सोत्साहा १२. संभवमंत्रा १३. क्लेशसही १४. अनुपत्तापीनी
१५. सूपात्र मर्भार १६. जितेन्द्रिया १७. संभूषा १८. अल्पाहारा १९. अल्डोला २०. अल्पनिद्रा २१. मितभाषिणी
२२. चित्तज्ञा २३. जीतरोषा २४. अलोभा २५. विनयवती २६. सरूपा २७. सीभाग्यवती २८. सूचिवेषा २९.
शुभाश्रया ३०. प्रसन्नमुखी ३१. सुप्रमाणशरीर ३२. मूलषणवती ३३. स्नेहवती । इतियोदगुणा ।

इति सभाशृङ्गार संपूर्ण ॥

ग्रन्थाग्रन्थ संख्या १००० संवत् १७३१ वर्षेमास कालिक सुदी १४ वार सोमवारे लिखत रूपविजयेन ॥

स्त्री पुरुषों के विभिन्न लक्षण, कलाओं के लक्षण एवं सुभाषित के रूप में विभिन्न बातें दी हुई हैं ।

३५२६. सभाशृङ्गार..... । पत्र सं० २६ । प्रा० १०X४५ इअ । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।

२० काल X । वै० काल म० १७३२ । पूर्ण । वै० सं० ७९४ । अ-भण्डार ।

३५२७. संबोधसत्तागु—वीरचंद्र । पत्र सं० ११ । प्रा० १०X४ इअ । भाषा—हिन्दी । विषय—

सुभाषित । २० काल X । वै० काल X । पूर्ण । वै० सं० १७५६ । अ-भण्डार ।

प्रारम्भ—

परम पुरुष पद मन धरी, समरी सार नोकार ।
परमारथ परि पत्रणभ्यु, संबोधसत्तागु बीसार ॥१॥
प्रादि अनादि ते प्रात्मा, अडेवड्यु ऐहप्रनिवार ।
धर्म विहृणो जीवणी, वाबडु पंड्यो ये संसार ॥२॥

अन्तिम—

सूरी श्री विद्यानंदी जयो श्रीमल्लिभूषण मुनिचंद्र ।
तसपरि मांहि मानिलो, गुरु श्री लक्ष्मीचंद्र ॥ ६६ ॥

तेह कुले कमल दीवसपती जयन्ती जती वीरचंद ।

सुरता भणता ए भावना पीमीये परमानन्द ॥६७॥

इति श्री वीरचंद विरचिते संकोधसत्ताणुदुआ संपूर्ण ।

३५२८. सिन्दूरप्रकरण—सोमप्रभाचार्य । पत्र सं० ६ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २१७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । क्षेमसागर के शिष्य कीर्त्तिसागर ने खखा में प्रतिलिपि की थी ।

३५२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ से २७ । ले० काल सं० १६०३ । अपूर्ण । वे० सं० २००६ । ट भण्डार ।

विशेष—हर्षकीर्त्ति सूरि कृत संस्कृत व्याख्या सहित है ।

अन्तिम— इति सिन्दूर प्रकरणख्यस्य व्याख्याणां हर्षकीर्त्तिभिः सूरिभिर्विहितान्त ।

३५३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ से ३४ । ले० काल सं० १८७० । श्रावण सुदी १२ । अपूर्ण । वे० सं० २०१६ । ट भण्डार ।

विशेष—हर्षकीर्त्ति सूरि कृत संस्कृत व्याख्या सहित है ।

३५३१. सिन्दूरप्रकरणभाषा—बनारसीदास । पत्र सं० २६ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ । भाषा हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल सं० १६६१ । ले० काल सं० १८५२ । पूर्ण । वे० सं० ८५६ ।

विशेष—सदामुख भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।

३५३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ७१८ । च भण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७१७) और है ।

३५३३. सिन्दूरप्रकरणभाषा—सुन्दरदास । पत्र सं० २०७ । आ० १२×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल सं० १६२६ । ले० काल सं० १६३६ । पूर्ण । वे० सं० ७६७ । क भण्डार ।

३५३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ३० । ले० काल सं० १६३७ सावन बुदी ६ । वे० सं० ८२३ । क भण्डार ।

विशेष—भाषाकार बधावर के रहने वाले थे । बाद में ये मालवदेश के इंबावतिपुर में रहने लगे थे ।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ७६८, ८२४, ८५७) और हैं ।

३५३५. सुगुरुशतक—जिनदास गोधा । पत्र सं० ४ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । २० काल सं० १८५२ चैत्र बुदी ८ । ले० काल सं० १६३७ कार्तिक सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ८१० । क भण्डार ।

३५३६. सुभाषितमुक्तावली । पत्र सं० २६ । आ० ६×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
सुभाषित । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२६७ । अ भण्डार ।

३५३७ सुभाषितरत्नमन्दोह—आ० अमितिगति । पत्र सं० ५४ । आ० १०×३^३ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—सुभाषित । १० काल सं० १०५० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६) और है ।

३५३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८२६ भाद्रवा सुदी १ । वे० सं० ८२१ । क
भण्डार ।

विशेष—संग्रामपुर में महाचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

३५३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ से ४६ । ले० काल सं० १८६२ आसोज बुदी १४ । अपूर्ण । वे०
सं० ८७६ । क भण्डार ।

३५४०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १९१० कार्तिक बुदी १३ । वे० सं० ४२० । च
भण्डार ।

विशेष—हाथीराम खिन्दूका के पुत्र मोतीलाल ने स्वपठनार्थ पांड्या नाथूलाल से पार्श्वनाथ मंदिर में
प्रतिलिपि करवाई थी ।

३५४१. सुभाषितरत्नमन्दोहभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १८८ । आ० १२^३×७ इञ्च ।
भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—सुभाषित । १० काल सं० १९३३ । ले० काल × । वे० सं० ८१८ । क भण्डार ।

विशेष—पहले भोलीलाल ने १८ अधिकार की रचना की फिर पन्नालाल ने भाषा की ।

इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ८१६, ८२०, ८१६, ८१६) और हैं ।

३५४२. सुभाषितार्णव—शुभचन्द्र । पत्र सं० ३८ । आ० १२×५^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
सुभाषित । १० काल × । ले० काल सं० १७८७ माह सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र फटा हुआ है । क्षेमकीर्ति के शिष्य मोहन ने प्रतिलिपि की थी ।

अ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १९७६) और है ।

३५४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० २३१ । ख भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २३०, २६८) और हैं ।

३५४४. सुभाषितसंग्रह । पत्र सं० ३१ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।
१० काल × । ले० काल सं० १८४३ वैशाख बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २१०२ । अ भण्डार ।

विशेष—नैणवा नगर में भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति के शिष्य विद्वान रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में १ प्रति पूर्ण (वे० सं० २२५६) तथा २ प्रतियां अपूर्ण (वे० सं० १६६६, १६८०) और हैं ।

३५४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० सं० ८८२ । ड भण्डार ।

३५४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल X । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।

३५४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६३ । ब्य भण्डार ।

३५४८. सुभाषितसंग्रह..... । पत्र सं० ४ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत प्राकृत । विषय—सुभाषित । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ८६२ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में टव्वा टीका दी हुई है । यति कर्मचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

३५४९. सुभाषितसंग्रह । पत्र सं० ११ । आ० ७×५ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २११४ । अ भण्डार ।

३५५०. सुभाषितावली—सकलकीर्त्ति । पत्र सं० ५२ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल X । ले० काल सं० १७४८ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १८५ । अ भण्डार ।

विशेष—लिखितमिदं चौबे रूपसी खीवसी आत्मज ज्ञाति सनाबद वराहटा मध्ये । लिखितं पहाड्या मयाचंद । सं० १७४८ वर्षे मार्गशीर्ष शुक्ला ६ रविवासरे ।

३५५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८०२ पौष सुदी १ । वे० सं० २२४ । अ भण्डार ।

विशेष—मालपुरा ग्राम में पं० नोनिध ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३५५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १६०२ पौष सुदी १ । वे० सं० २२७ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६०२ समये पौष बुदा २ शुक्लवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंभकुंवाचार्यान्वये भट्टारक श्री पद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्रदेवाः तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवाः तदात्म्याये मंडलाचार्य श्री सिंहनंदिदेवाः तत्पट्टे मंडलाचार्य श्रीधर्मकीर्त्तिदेवाः तत्शिष्यणी पंचारणुव्रतधारिणी वीईख्योसिरि तत्शिष्यनि बाई उदईसिरि पठनार्थ अग्रोतकान्वये मित्तलगोत्रे साधु श्रीधाने भार्या रयवा तयो पुत्राः त्रयाः प्रथमपुत्र साधु श्री रडमल भार्या पदारथ । द्वितीय पुत्र चाडमल भार्या अजैसिरि तयोः पुत्र परात । तृतीयपुत्र तपवपु क्रियाप्रतिपालकान् ऐकादश प्रतिमा धारकान् जिनशासन समुद्धरणधीरान् साधु श्री कोडना भार्या साध्वी परिमल तयो इदं ग्रन्थं लिखापितं कर्मक्षय निमित्तं । लिखितंकायस्थगौडान्वयश्रीकेशव तत्पुत्र गनेस ॥

३५५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६४७ माघ सुदी । वे० सं० २३५ । अ
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

भट्टारक श्रीसकलकीर्तिविरचिते सुभाषितरत्नावलीग्रन्थसमाप्तः । श्रीमच्छ्रीपद्मसागरसूरिविजयराज्ये संवत्
१६४७ वर्षे माघमासे शुक्लपक्षे गुरुवासरे लीपीकृतं श्रीसुनि शुभमस्तु । लेखक पाठकयो ।

संवत्सरे पृथ्वीमुनीयतीन्द्रमिते (१७७७) माघशितदशम्यां मालपुरेमध्ये श्रीआदिनाथचैत्यालये शुद्धी-
कृतोऽयं सुभाषितरत्नावलीग्रन्थ पांडेध्रीतुलसीदासस्य शिष्येण त्रिलोकचंद्रेण ।

अ भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० २८१, ७८७, ७८८, १८६४) और है ।

३५५४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ८१३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ८१४) और है ।

३५५५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १८४६ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० २३३ । ख भण्डार

विशेष—पं० मारणकचन्द की प्रेरणा से पं० स्वरूपचन्द ने पं० कपूरचन्द से जवनपुर (जोबनेर) में
प्रतिलिपि कराई ।

३५५६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १६०१ चैत्र सुदी १३ । वे० सं० ८७४ । क
भण्डार ।

विशेष—श्री पाल्हा बाकलीवाल ने ग्रन्थ की प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ८७३, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८) और हैं ।

३५५७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १७६५ आसोज सुदी ८ । वे० सं० २६५ । ख
भण्डार ।

भण्डार ।

३५५८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १६०४ माघ बुदी ४ । वे० सं० ११४ । ज
भण्डार ।

भण्डार ।

३५५९. प्रति सं० १० । पत्र सं० ३ से ३० । ले० काल सं० १६३५ वैशाख सुदी १५ । अपूर्ण । वे०
सं० २१३४ । ट भण्डार ।

भण्डार ।

विशेष—प्रथम २ पत्र नहीं हैं । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

३५६०. सुभाषितावली..... । पत्र सं० २१ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १८१८ । पूर्ण । वे० सं० ४१७ । च भण्डार ।

विशेष—यह ग्रन्थ दीवान संगही जानचन्दजी का है ।

च भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४१८, ४१९) अ भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ६३५, १२०१) तथा ट भण्डार १ (वे० सं० १०८१) अपूर्ण प्रति और है ।

३५६१. सुभाषितावलीभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० १०९ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८१२ । क भण्डार ।

३५६२. सुभाषितावलीभाषा—दूलीचन्द । पत्र सं० १३१ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित । २० काल सं० १६३१ ज्येष्ठ सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८० । ङ भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८८१) और है ।

३५६३. सुभाषितावलीभाषा—..... । पत्र सं० ४५ । आ० ११×४ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल सं० १८६३ प्र० आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ११ । झ भण्डार । विशेष—५०५ दोहे हैं ।

३५६४. सूक्तिमुक्तावली—सोमप्रभाचार्य । पत्र सं० १७ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम सुभाषितावली भी है ।

३५६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १६८४ । वे० सं० ११७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६८४ वर्षे श्रोकान्ठासंधे नदीतटगच्छे विद्यागणे भ० श्रीरामसेनान्वये तत्पट्टे भ० श्री विश्वभूषण तत्पट्टे भ० श्री यवाःकीर्ति ब्रह्म श्रीमेषराज तत्शिष्यब्रह्म श्री करमसी स्वयमेव हस्तेन लिखितं पठनार्थं ।

अ भण्डार में ११ प्रतियां (वे० सं० १६५, ३३४, ३४८, ६३०, ७६१, ३७६, २०१०, २०४७, १३४८, २०३३, ११६३) और है ।

३५६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६३४ सावन सुदी ८ । वे० सं० ८२२ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८२४) और है ।

३५६७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७७१ आसोज सुदी २ । वे० सं० २३४ । ख विशेष—ब्रह्मचारी खेतसी पठनार्थ मालपुरा में प्रतिलिपि हुई थी ।

३५६८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० २२६ । ख भण्डार ।

विशेष—दीवान आरतराम खिदका के पुत्र कुंवर बखतराम के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी । अक्षर मोटे एवं सुन्दर हैं ।

इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० २३२, २६८) और हैं ।

३५६६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २ मे २२ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२६ । घ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

इसी भण्डार में ३ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ८८३, ८८४, ८८५) और हैं ।

३५७०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १६०१ प्र० श्रावण बुदी ५५ । वे० सं० ४२१ ।

च भण्डार ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४२२, ४२३) और हैं ।

३५७१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १७४६ भाद्रवा बुदी ६ । वे० सं० १०३ । छ

भण्डार ।

विशेष—रैनवाल में ऋषभनाथ चैत्यालय में आचार्य ज्ञानकीर्ति के शिष्य सेवल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में (वे० सं० १०३) में ही ४ प्रतियां और हैं ।

३५७२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८६२ पौष सुदी २ । वे० सं० १८३ । ज

भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३९) और है ।

३५७३. प्रति सं० १० । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७६७ आसोज सुदी ८ । वे० सं० ८० । ञ

भण्डार ।

विशेष—आचार्य क्षेमकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १६५, २८६, ३७७) तथा ट भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० १६६४, १६३१) और हैं ।

३५७४. सूक्तावली..... । पत्र सं० ९ । मा० १०X४^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—सुभाषित ।

२० काल X । ले० काल सं० १८६४ । पूर्ण । वे० सं० ३४७ । अ भण्डार ।

३५७५. स्फुटश्लोकसंग्रह..... । पत्र सं० १० मे २० । मा० ९X४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

सुभाषित । २० काल X । ले० काल सं० १८८३ । अपूर्ण । वे० सं० २५७ । ब भण्डार ।

३५७६. स्वरोदय—रनजीतदास (चरनदास) । पत्र सं० २ । मा० १३^३/_४X६^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

सुभाषित । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ८१५ । अ भण्डार ।

३५७७. हिनोपदेश—विद्युशर्मा । पत्र सं० ३६ । मा० १२^३/_४X५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

नीति । २० काल X । ले० काल सं० १८७३ सावन सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ८५४ । क भण्डार ।

विशेष—माणिक्यचन्द्र ने कुमार जानचंद्र के ठठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

३४६]

[सुभाषित एवं नीतिशास्त्र]

३५७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २४६ । व्य भण्डार ।

३५७९. हितोपदेशभाषा... पत्र सं० २६ । आ० ८×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—सुभाषित ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१११ । अ भण्डार ।

३५८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल × । वे० सं० १८६२ । ट भण्डार ।



विषय-मन्त्र-शास्त्र



३५८१. इन्द्रजाल.....। पत्र सं० २ से ४२। आ० ८३×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-तन्त्र। २० काल ×। ले० काल सं० १७७८ त्रैमास्य मुदी ६। अपूर्ण। वे० सं० २०१०। ट भण्डार।

विशेष—पत्र १६ पर पुष्पिका—

इति श्री राजाधिराज गोख साव वंश केसरीसिंह समाहितेन मनि मंडन मिश्र विरचिते पुरंदरमाया नाम ग्रन्थ वृद्धित स्वामिका का माया।

पत्र ४२ पर—इति इन्द्रजाल ममाप्तं।

कई नुसखे तथा वशीकरण आदि भी हैं। कई कौतूहल की सी बातें हैं। मंत्र संस्कृत में है अजमेर में प्रतिलिपि हुई थी।

३५८२. कर्मदहनत्रयमन्त्र.....। पत्र सं० १०। आ० १०३×४३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मंत्र शास्त्र। २० काल ×। ले० काल सं० १६३४ भाद्रवा मुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १०४। छ भण्डार।

३५८३. क्षेत्रपालस्तोत्र.....। पत्र सं० ४। आ० ८३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। २० काल ×। ले० काल सं० १६०६ मंगिर मुदी ७। पूर्ण। वे० सं० ११३७। अ भण्डार।

विशेष—मरम्बनी तथा चीमठ योगिनीस्तोत्र भी दिया हुआ है।

३५८४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ३८। ख भण्डार।

३५८५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६६६। वे० सं० २८२। झ भण्डार।

विशेष—चक्रेश्वरी स्तोत्र भी है।

३५८६. घंटाकर्णकल्प.....। पत्र सं० ५। आ० १२३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र। २० काल ×। ले० काल सं० १६२२। अपूर्ण। वे० सं० ४५। ख भण्डार।

विशेष—प्रथम पत्र पर पुरुषाकार खड्गासन चित्र है। ५ यंत्र तथा एक घंटा चित्र भी है। जिसमें तीन घण्टे दिये हुये हैं।

३५८७. घंटाकर्णमन्त्र.....। पत्र सं० ५। आ० १२३×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्र। २० काल ×। ले० काल सं० १६२५। पूर्ण। वे० सं० ३०३। ख भण्डार।

३५८८. घंटाकर्णवृद्धिकल्प..... पत्र सं० ९ । आ० १०३×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १९१३ बैशाख मुदी ९ । पूर्ण । वे० सं० १५ । घ भण्डार ।

३५८९. चतुर्विंशतियज्ञविधान..... पत्र सं० ३ । आ० ११२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६६ । अ भण्डार ।

३५९०. चिन्तामणिस्तोत्र..... पत्र सं० २ । आ० ८३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८७ । झ भण्डार ।

विशेष—चक्रेश्वरी स्तोत्र भी दिया हुआ है ।

३५९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २४५ । ब्य भण्डार ।

३५९२. चिन्तामणियन्त्र..... पत्र सं० ३ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-यन्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २९७ । ख भण्डार ।

३५९३. चौसठयोगिनीस्तोत्र..... पत्र सं० १ । आ० ११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ११८७, ११९६, २०६४) और हैं ।

३५९४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ३९७ । ब्य भण्डार ।

३५९५. जैनगायत्रीमन्त्रविधान..... पत्र सं० २ । आ० ११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । ख भण्डार ।

३५९६. एमोकारकल्प..... पत्र सं० ४ । आ० ८३×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १९४९ । पूर्ण । वे० सं० २८८ । झ भण्डार ।

३५९७. एमोकारकल्प..... पत्र सं० ६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १९०८ । पूर्ण । वे० सं० ३५५ । अ भण्डार ।

३५९८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २७४ । ख भण्डार ।

३५९९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १९९५ । वे० सं० २३२ । ङ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में मन्त्रसाधन की विधि एवं फल दिया हुआ है ।

३६००. एमोकारपैतीसी..... पत्र सं० ४ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-प्राकृत व पुरानी हिन्दी । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३५ । ङ भण्डार ।

३६०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १२५ । च भण्डार ।

३६०२. नमस्कारमन्त्र कल्पविधिसहित—सिंहनन्दि । पत्र सं० ४५ । मा० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६२१ । पूर्ण । वे० सं० १६० । अ भण्डार ।

३६०३. नवकारकल्प । पत्र सं० ६ । मा० ६×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रक्षरों की स्याही मिट जाने से पढ़ने में नहीं आता है ।

३६०४. पंचदश (१५) यन्त्र की विधि । पत्र सं० २ । मा० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६७६ फागुण बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० २४ । ज भण्डार ।

३६०५. पद्मावतीकल्प । पत्र सं० २ से १० । मा० ८×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १६८२ । अपूर्ण । वे० सं० १३३६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रगस्ति—संघत् १६८२ आमादेर्गलपुरे श्री मूलसंघसूरि देवेन्द्रकीर्तिस्तंदंतेवासिभिराचार्य श्री हर्षकीर्तिभिरिदमलेखि । त्रिरं नंदतु पुस्तकम् ।

३६०६. बाजकोश । पत्र सं० ६ । मा० १२×५ । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३५ । अ भण्डार ।

विशेष—संग्रह ग्रन्थ है । दूसरा नाम मातृका निर्घट भी है ।

३६०७. भुवनेश्वरीस्तोत्र (सिद्ध महामन्त्र)—पृथ्वीधराचार्य । पत्र सं० ६ । मा० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । च भण्डार ।

३६०८. भूवल । पत्र सं० ८ । मा० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६८ । च भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का नाम प्रथम पद्य में 'अयातः संप्रवश्यामि भूवलानि समामतः' आये हुये भूवल के आधार पर ही लिखा गया है ।

३६०९. भैरवपद्मावतीकल्प—मल्लिषेण सूरि । पत्र सं० २४ । मा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५० । अ भण्डार ।

विशेष—३७ यंत्र एवं विधि सहित है ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३२२, १२७६) और हैं ।

३६१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४६ । ले० काल सं० १७६३ बेशाव गुदी १३ । वे० सं० ५६५ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति सचित्र है ।

इसी भण्डार में १ अपूर्ण सचित्र प्रति (वे० सं० ५६३) और है ।

३६११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ५७५ । ड भण्डार ।

३६१२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २८ । ले० काल सं० १८६८ चैत बुदी । वे० सं० २६६ । च

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति संस्कृत टीका सहित (वे० सं० २७०) और है ।

३६१३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० १६३६ । ट भण्डार ।

विशेष—बीजाक्षरों में ३६ यंत्रों के चित्र हैं । यत्रविधि तथा मंत्रों सहित है । संस्कृत टीका भी है ।

पत्र ७ पर बीजाक्षरों में दोनों ओर दो त्रिकोण यन्त्र तथा विधि दी हुई है । एक त्रिकोण में आभूषण पहिने खड़े हुये नग्न स्त्री का चित्र है जिसमें जगह २ अक्षर लिखे हैं । दूसरी ओर भी ऐसा ही नग्न चित्र है । यन्त्रविधि है । ३ से ६ व ६ से ४६ तक पत्र नहीं हैं । १-२ पत्र पर यंत्र मंत्र सूची दी है ।

३६१४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४७ से ५७ । ले० काल सं० १८१७ ज्येष्ठ सुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं०

१६३७ । ट भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में पं० चोखचन्द के शिष्य मुखराम ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति अपूर्ण (वे० सं० १६३६) और है ।

३६१५. भैरवपद्मावतीकल्प । पत्र सं० ४० । आ० ६×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७४ । ड भण्डार ।

३६१६. मन्त्रशास्त्र..... । पत्र सं० ८ । आ० ८×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३१ । व्य भण्डार ।

विशेष—निम्न मंत्रों का संग्रह है ।

१. चौकी नाहरसिंह की २. कामरा विधि ३. यंत्र ४. हनुमान मंत्र ५. टिड्डी का मन्त्र ६. पलीता भूत व चुडेल का ७. यंत्र देवदत्त का ८. हनुमान का यन्त्र ९. सर्पाकार यन्त्र तथा मन्त्र १०. सर्वकाम सिद्धि यन्त्र (चारों कोनों पर और 'ङ्गजेब' का नाम दिया हुआ है) ११. भूत डाकिनी का यन्त्र ।

३६१७. मन्त्रशास्त्र..... । पत्र सं० १७ से २७ । आ० ६३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-मन्त्र शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८४ । ड भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ५८५, ५८६) और हैं ।

३६१८. मन्त्रमहोद्धि—पं० महीधर । पत्र सं० १२० । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १८३८ माघ मुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ६१६ । अ भण्डार ।

३६१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ५८३ । ड भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थपूर्णा नाम का मन्त्र है ।

३६२० मन्त्रसंग्रह । पत्र सं० फुटकर । आ० । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्त्र । २० काल
× । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६८ । क भण्डार ।

विशेष—करीब ११५ यन्त्रों के चित्र हैं । प्रतिष्ठा आदि विधानों में काम आने वाले चित्र हैं ।

३६२१. महाविद्या (मन्त्रों का संग्रह) । पत्र सं० २० । आ० ११३×५ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७९ । घ भण्डार ।

विशेष—रचना जैन कवि कृत है ।

३६२२. यज्ञिणीकल्प । पत्र सं० १ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—मन्त्र
शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०५ । ड भण्डार ।

३६२३ यंत्र मंत्रविधिफल । पत्र सं० १५ । आ० ६३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—मन्त्र
शास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६६ । ट भण्डार ।

विशेष—६२ यंत्र मन्त्र सहित दिये हुये हैं । कुछ यन्त्रों के खाली चित्र दिये हुये हैं । मन्त्र बीजाक्षरों
में हैं ।

३६२४. वर्द्धमानविद्याकल्प—सिंहतिलक । पत्र सं० ६ से २६ । आ० १० इंच । भाषा—संस्कृत
हिन्दी । विषय—मन्त्रशास्त्र । २० काल × । ले० काल सं० १४९५ । अपूर्ण । वे० सं० १९९७ । ट भण्डार ।

विशेष—१, ५, ७, १०, १५, १६, १९ से २१ पत्र नहीं हैं । प्रति प्राचीन एवं जोड़ी है ।

द्वे पृष्ठ पर— श्री विबुधचन्द्रगणभृच्छिष्यः श्रीसिंहतिलकसूरि रिमासाह्लाददेवतोन्बलविशदमनालिखत
वान्कल्पं ॥९६॥ इति श्रीसिंहतिलकसूरिकृते वर्द्धमानविद्याकल्पः ॥

हिन्दी गद्य उदाहरण— पत्र ८ पंक्ति ५—

जाइ पुण्य सहस्र १२ जागः । गूगल गउ बीस सहस्र ॥१२॥ होम कीजइ विद्यालाभ हुई ।

पत्र ८ पंक्ति ९— ओ कुरु कुरु कामाख्यादेवी कामइ आबीज २ । जग मन मोहनी सूती बइठी उठी
जगमग हाथ जोडिकरि माम्ही आवइ । माहरी भक्ति गुरु की शक्ति बायदेवी कामाख्या माहरी शक्ति आकषि ।

पृष्ठ २४— अन्तिम पुष्पिका— इति वर्द्धमानविद्याकल्पस्तृतीयाधिकारः ॥ अन्त्याग्रन्थ १७५ अक्षर १६
सं० १४९५ वर्षे मगरकूरशालायां अग्निहोत्रपाठकरपर्याय श्री गन्तमहानगरे जेविवि ।

पत्र २५— गुटिकाओं के चमत्कार हैं। दो स्तोत्र हैं। पत्र २६ पर नालिकेर कल्प दिया है।

३६२५. विजययन्त्रविधान.....। पत्र सं० ७। आ० १०३×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—मन्त्रशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८००। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५६८, ५६९) तथा च भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३३१) और है।

३६२६. विद्यानुशासन.....। पत्र सं० ३७०। आ० ११×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। २० काल ×। ले० काल सं० १६०६ प्र० भादवा बुदी २। पूर्ण। वे० सं० ६५६। क भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ सम्बन्धित यन्त्र भी है। यह ग्रन्थ छोटीलालजी ठोलिया के पठनार्थ पं० मोतीलालजी के द्वारा हीरालाल कासलीवाल से प्रतिलिपि कराई। पारिश्रमिक २४।-) लगा।

३६२७. प्रति सं० २। पत्र सं० २८५। ले० काल सं० १६३३ मंगसिर बुदी ५। वे० सं० ६५। घ भण्डार।

विशेष—गङ्गाबक्स ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

३६२८. यंत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ७। आ० १३३×६३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—मन्त्रशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५४५। अ भण्डार।

विशेष—लगभग ३५ यन्त्रों का संग्रह है।

३६२९. षट्कर्मकथन.....। पत्र सं० ३। आ० १०३×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—मन्त्रशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१०३। ट भण्डार।

विशेष—मन्त्रशास्त्र का ग्रन्थ है।

३६३०. सरस्वतीकल्प.....। पत्र सं० २। आ० ११३×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—मन्त्रशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७७०। क भण्डार।



विषय-कामशास्त्र

३६३१. कौकशास्त्र.....। पत्र सं० ६। आ० १०३×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-कोक। २० काल ×। ले० काल सं० १८०३। पूर्ण। वे० सं० १६५६। ट भण्डार।

विशेष—निम्न विषयों का वर्णन है।

द्रावणविधि, स्तम्भनविधि, बाजीकरण, स्थूलीकरण, गर्भाधान, गर्भस्तम्भन, सुखप्रसव, पुष्पाधिनिवारण, योनिसंस्कारविधि आदि।

३६३२. कौकसार.....। पत्र सं० ७। आ० ६×६३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कामशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२६। ङ भण्डार।

३६३३. कौकसार—आनन्द। पत्र सं० ५। आ० १३३×६३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कामशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८१६। अ भण्डार।

३६३४. प्रति सं० २। पत्र सं० १७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३६। ख भण्डार।

३६३५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० सं० २६४। ऋ भण्डार।

३६३६. प्रति सं० ४। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १७३६ प्र० चैत्र सुदी ५। वे० सं० १५५२। ट भण्डार।

विशेष—प्रति जीर्ण है। जट्ट व्यास ने नरायण में प्रतिलिपि की थी।

३६३७. कामसूत्र—कविहाल। पत्र सं० ३२। आ० १०३×४३ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-कामशास्त्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५। ख भण्डार।

विशेष—इसमें कामसूत्र की गाथाएँ दी हुई हैं। इसका दूसरा नाम सत्तसत्रसमत्त भी है।



विषय- शिल्प-शास्त्र



३६३८. बिम्बनिर्माणविधि.....। पत्र सं० ६। आ० ११३×७३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-शिल्पशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३३। क भण्डार।

३६३९. बिम्बनिर्माणविधि.....। पत्र सं० ६। आ० ११×७३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-शिल्पशास्त्र। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३४। क भण्डार।

३६४०. बिम्बनिर्माणविधि.....। पत्र सं० ३६। आ० ८३×६३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-शिल्पकला [प्रतिष्ठा] र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४७। च भण्डार।

विशेष-कापी साइज है। पं० कस्तूरचन्दजी साह द्वारा लिखित हिन्दी अर्थ सहित है। प्रारम्भ में ३ पत्र की भूमिका है। पत्र १ से २५ तक प्रतिष्ठा पाठ के श्लोकों का हिन्दी अनुवाद किया गया है। श्लोक ६१ हैं। पत्र २६ से ३६ तक बिम्ब निर्माणविधि भाषा दी गई है। इसी के साथ ३ प्रतिमायों के चित्र भी दिये गये हैं। (वे० सं० २४९) च भण्डार। कलशारोपण विधि भी है। (वे० सं० २४८) च भण्डार।

३६४१. वास्तुविन्यास.....। पत्र सं० ३। आ० ६३×४३ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-शिल्पकला। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४५। छ भण्डार।



विषय- लक्षणा एवं समीक्षा

३६५२. आगमपरीक्षा.....। पत्र सं० ३। प्रा० ७×३३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-समीक्षा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६४५। ट भण्डार।

३६४३. छंदशिरोमणि—शोभनाथ। पत्र सं० ३१। प्रा० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी गद्य। विषय-लक्षण। २० काल सं० १८२५ ज्येष्ठ सुदी। ले० काल सं० १८२६ फागुण सुदी १०। पूर्ण। वे० सं० १६३६। ट भण्डार।

३६४४. छंदकीय कवित्त—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं० ६। प्रा० १२×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-लक्षण ग्रन्थ। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८१४। ट भण्डार।
अन्तिम पुष्पिका— इति श्री छंदकीयकवित्त्वे कामधेन्वाल्ये भट्टारकश्रीसुरेन्द्रकीर्तिविरचिते समवृतप्रकरण समाप्ते। प्रारम्भ में कमलबंध कवित्त में चित्र दिये हैं।

३६५५. धर्मपरीक्षाभाषा—दशरथ निगोत्या। पत्र सं० १६१। प्रा० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी गद्य। विषय-समीक्षा। २० काल सं० १७१८। ले० काल सं० १७५७। पूर्ण। वे० सं० ३६१। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में मूल के साथ हिन्दी गद्य टोका है। टोकाकार का परिचय—

साहु श्री हेमराज मुत मान हमीरदे जाणि ।
कुल निगोत श्रावक धर्म दशरथ सज वखाणि ॥
संवत सतरासे सही अष्टादश अधिकाय ।
फागुण तम एकादशी पूरण भई मुभाय ॥
धर्म परीक्षा वचनिका मुंदरदास महाय ।
साधर्मो जन समभि ने दशरथ कृति चितलाय ॥

टोका— विषया के वसि पड्या क्रिया जीव पाप ।

करे छे सही न जाई ती ये दुर्मा होट मरे ॥

बैलक प्रगति— संवत् १७५७ वर्षे पोष शुक्ला १२ भृगोवारे दिवसा नगर्षा (दीसा) मिन चैथालये नि० भट्टारक-श्रीसुरेन्द्रकीर्ति तन्निष्पन्न पं० (गिरधर) कटा हुआ ।

३६४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४०५ । ले० काल सं० १७१६ मंगसिर सुदी ६ । वे० सं० ३३० । ड

भण्डार ।

विशेष—इति श्री अमितिगतिकृता धर्मपरीक्षा मूल तिहकी बालबोधनामटीका तत्र धर्मार्थी दशरथेन कृताः

समाप्ताः ।

३६४७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३५ । ले० काल सं० १८६६ भाद्रवा सुदी ११ । वे० सं० ३३१ । ड

भण्डार ।

३६४८. धर्मपरीक्षा—अमितिगति । पत्र सं० ८५ । आ० १२×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-समीक्षा । २० काल सं० १०७० । ले० काल सं० १८८४ । पूर्ण । वे० सं० २१२ । अ भण्डार ।

३६४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १८८६ वैश्व सुदी १५ । वे० सं० ३३२ । अ

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ७८४, ६४५) और हैं ।

३६५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३१ । ले० काल सं० १६३६ भाद्रवा सुदी ७ । वे० सं० ३३५ । क

भण्डार ।

३६५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६४ । ले० काल सं० १७८७ माघ बुदी १० । वे० सं० ३२६ । ड

भण्डार ।

३६५२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० १७१ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

३६५३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १३३ । ले० काल सं० १६५३ वैशाख सुदी २ । वे० सं० ५६ । छ

भण्डार ।

विशेष—अलाउद्दीन के शासनकाल में लिखा गया है । लेखक प्रशस्ति अपूर्ण है ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६०, ६१) और हैं ।

३६५४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० ११५ । व्य भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३४४, ४७४) और हैं ।

३६५५. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ७८ । ले० काल सं० १५६३ भाद्रवा बुदी १३ । वे० सं० २१५७ ।

ट भण्डार ।

विशेष—रामपुर में श्री चन्द्रप्रभ चैत्यालय में जमू से लिखवाकर ब्र० श्री धर्मदास को दिया । अन्तिम पत्र फटा हुआ है ।

३६५६. धर्मपरीक्षाभाषा—मनोहरदास सोनी । पत्र सं० १०२ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—
हिन्दी पद्य । विषय—समीक्षा । २० काल १७०० । ले० काल सं० १८०१ फागुण सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ७७३ ।
अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १ प्रति अपूर्ण (वे० सं० ११६६) और है ।

३६५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १११ । ले० काल सं० १६५४ । वे० सं० ३३६ । क भण्डार ।

३६५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११४ । ले० काल सं० १८२६ आषाढ बुदी ६ । वे० सं० ५६५ । च

भण्डार ।

विशेष—हंमराज ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । पत्र चिपके हुये हैं ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ५६६) और है ।

३६५९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६३ । ले० काल सं० १८३० । वे० सं० ३४५ । झ भण्डार ।

विशेष—केशरीसिंह ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १३६) और है ।

३६६०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १०३ । ले० काल सं० १८२५ । वे० सं० ५२ । ब्भ भण्डार ।

विशेष—वन्तराम गोधा ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में १ प्रति (वे० सं० ३१४) और है ।

३६६१. धर्मपरीक्षाभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ३८६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—
हिन्दी गद्य । विषय—समीक्षा । २० काल सं० १६३२ । ले० काल सं० १६४२ । पूर्ण । वे० सं० ३३८ । क भण्डार ।

३६६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२२ । ले० काल सं० १६३८ । वे० सं० ३३७ । क भण्डार ।

३६६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५० । ले० काल सं० १६३६ । वे० सं० ३३४ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३३३, ३३५) और हैं ।

३६६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६२ । ले० काल × । वे० सं० १७०७ । ट भण्डार ।

३६६५. धर्मपरीक्षारास—ब्र० जिनदास । पत्र सं० १८ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—समीक्षा । २० काल × । ले० काल सं० १६०२ फागुण सुदी ११ । अपूर्ण । वे० सं० ६७३ । अ भण्डार ।

विशेष—१६ व १७वां पत्र नहीं है । अन्तिम १८वें पृष्ठ पर जीरावलि स्तोत्र है ।

आदिभाग—

धर्म जिरोसर २ नमूं ते सार,
तीर्थकर जे पनरमु वांछित फल बहू दान दातार,
सारदा स्वामिणि वली तवुं बुधिसार,

मुक्त देउमाता श्रीगणेश्वर स्वामी नमस्तस्मै श्री सकलकीर्ति भवतार,
मुनि भवनकीर्ति पाय प्रणमनि कहिसूं रासहूं सार ॥१॥

ब्रह्मा—

धरम परीक्षा कलं निरुमली भवीयण सुगु तहसि सार ।
ब्रह्म जिणदास कहि निरमलु जिम जांगु विचार ॥२॥
कनक रतन माणिक आदि परीक्षा करी लीजिसार ।
तिम धरम परीषीइ सत्य लीजि भवतार ॥३॥

अन्तिम प्रशस्ति—

ब्रह्मा—

श्री सकलकीरतिगुरुप्रणामीनि मुनिभवनकीरतिभवतार ।
ब्रह्म जिणदास भणिरू अदु रासकीउ सविचार ॥६०॥
धरमपरीक्षारासनिरमलु धरमतणुं निधान ।
पढि गुणि जे सांभलि तेहनि उमजि मति ज्ञान ॥६१॥

इति धर्मपरीक्षा रास समाप्तः

संवत् १६०२ वर्षे फागुण सुदी ११ दिने सूरतस्थाने श्री शीतलनाथ चैत्यालये आचार्य श्री विनयकीर्तिः
द्विदि मेघराजकेन लिखितं स्वयमिदं ।

३६६६. धर्मपरीक्षाभाषा.....। पत्र सं० ६ से ५० । आ० ११×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
समीक्षा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३२ । ऊ भण्डार ।

३६६७. मूर्खके लक्षण.....। पत्र सं० २ । आ० ११×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७६ । ऊ भण्डार ।

३६६८. रत्नपरीक्षा—रामकवि । पत्र सं० १७ । आ० ११×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—लक्षण
ग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११८ । ऊ भण्डार ।

विशेष—इन्द्रपुरी में प्रतिलिपि हुई थी ।

प्रारम्भ—

गुरु गणपति सरस्वति शमरि यातै वध है बुद्धि ।
सरसबुद्धि छंदह रचो रतन परीक्षा सुधि ॥१॥
रतन दीपिका ग्रन्थ में रतन परिछ्या जान ।
सगुरु देव परताप तै भाषा वरनो आनि ॥२॥

अन्तिम—

रत्न परीछ्या रंगसु कीन्ही राम कविद ।
इन्द्रपुरी में आनि कै लिखी जु भामासांद ॥६१॥

३६६६. रसमञ्जरीटीका—टीकाकार गोपालभट्ट । पत्र सं० १२ । आ० ११×२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५३ । ट भण्डार ।

विशेष—१२ में आगे पत्र नहीं है ।

३६७०. रसमञ्जरी—भानुदत्तमिश्र । पत्र सं० १७ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल सं० १८२७ पौष सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ६४१ । अ भण्डार ।

३६७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १६३५ आसोज सुदी १३ । वे० सं० २३६ । ज भण्डार ।

३६७२. वक्ताश्रोतालक्षण..... । पत्र सं० ६ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४२ । क भण्डार ।

३६७३ प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ६४३ । क भण्डार ।

३६७४. वक्ताश्रोतालक्षण..... । पत्र सं० ४ । आ० १२×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४४ । क भण्डार ।

३६७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६४५ । क भण्डार ।

३६७६. शृङ्गारतिलक—रुद्रभट्ट । पत्र सं० २४ । आ० १२½×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६३६ । अ भण्डार ।

३६७७. शृङ्गारतिलक—कालिदास । पत्र सं० २ । आ० १३×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल सं० १८३७ । पूर्ण । वे० सं० ११४१ । अ भण्डार ।

इति श्री कालिदास कृतौ शृङ्गारतिलक संपूर्णम्

प्रशस्ति— सर्वानुसारे समत्रिकवस्वेंदु मिते असाढसुदी १३ त्रयोदश्यां पंडितजी श्री हीरानन्दजी तच्छिष्य पंडितजी श्री चोअचन्द्रजी तच्छिष्य पंडित विनयवताजिनदामेस निवीकृतं । भूरामलजी या आका ॥

३६७८. स्त्रीलक्षण..... । पत्र सं० ४ । आ० ११½×५½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—लक्षणग्रन्थ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११८१ । अ भण्डार ।



विषय- फागु रासा एवं वेलि साहित्य

३६७६. अञ्जनारास—शांतिकुशल । पत्र सं० १२ से २७ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—कथा । २० काल सं० १६६७ माह मुदी २ । ले० काल सं० १६७६ । अपूर्ण । वे० सं० २ । ख भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

रास रच्यु सती अञ्जना मइ जूनी चउपई जोई रे ।
अधिकुं उछउं जे कह्यं मुझ मिथ्या दोकड होई रे ॥
संबत् सोलइ सतइ सठि माहा शुदि नी बीज बखारणु रे ।
सोवन गिरिरास मांभीउ जइ सोलइ पुरु जाणु रे ॥
तप गछ नायक गुण निलउ विजय सेन सूरी सरगाजइ रे ।
आचारिज महिमा धरणी विज देव सूरी पद छाजइ रे ॥
तात पचाइरिण दीपलु जस महिमा कीरति भरिउस ।
मात प्रेमलदे उरि धरया देव कइ पाटणे अवतरिउ रे ॥
विनयकुशल पंडित वरु परगारी गुणदरिउ रे ।
चरण कमल सेवा लही शांतिकुशल इम रास करिउ रे ॥
अविचलकीरति अञ्जना जा रवि सस हीडइ आकाश रे ।
पढै गुणौइ जे सांभलइ रहि लखिमी तस घर पासइ रे ॥

३६८०. आदीश्वरफाग—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ४० । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
फागु (भगवान आदिनाथ का वर्णन है) । २० काल × । ले० काल सं० १५६२ बेशाख मुदी १० । पूर्ण । वे० सं०
७१ । ख भण्डार ।

विशेष—श्री मूलसंघे भट्टारिक श्री ज्ञानभूषण क्षुल्लिका बाई कल्याणमती कर्मक्षयार्थ लिखितं ।

३६८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ से ५ । ले० काल × । वे० सं० ७२ । ख भण्डार ।

३६८२. कर्मप्रकृतिविधानरास—बनारसीदास । पत्र सं० १८ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—रासा । २० काल सं० १७०० । ले० काल सं० १७८४ । पूर्ण । वे० सं० १६२७ । ट भण्डार ।

३६=३. चन्दनबालारास..... पत्र सं० २। आ० ६३×४३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—सती चन्दनबाला की कथा है। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६५। अ भण्डार।

३६=४. चन्द्रलेहारास—मतिकुशल। पत्र सं० २६। आ० १०×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—रामा (चन्द्रलेखा की कथा है) २० काल सं० १७२८ आसोज बुदी १०। ले० काल सं० १८२६ आसोज सुदी। पूर्ण। वे० सं० २१७१। अ भण्डार।

विशेष—अकबराबाद में प्रतिलिपि की गयी थी। दशा जोर्ण कीर्ण तथा लिपि विकृत एवं अशुद्ध है। प्रारम्भिक २ पत्र पत्र फटा हुआ होने के कारण नहीं लिखे गये हैं।

सामाङ्क मुझा करो, त्रिकरण सुद्ध तिकाल।

सत्रु मित्र समतागणि, तिमतुटै जग जाल ॥३॥

मह्दंवि भरथादि मुनि, करी समाङ्क सार।

केवल कमला तिरा वरी, पाम्यो भवनो पार ॥४॥

सामाङ्क मन सुद्ध करी, पामी द्वांम पकत्त।

तिथ ऊपरिन्दु सांभलो, चंद्रलेहा चरित्र ॥५॥

वचन कला तेह वनिछै, सरसंध रसाल।

तीरो जाणु सक्त पड़सौ, सोभलतां खुस्याल ॥६॥

प्रतिम—

संबत् सिद्धि कर मुनिससी जी वद आसू दसम विचार।

श्री पभीयाख मैं प्रेम सुं, एह रच्यौ अधिकार ॥१२॥

खरतर गणपति मुखकहंजी, श्री जिन सूरिद।

वडवतो जिम साखा खमनीजी, जो घू रजनीस दिरांद ॥१३॥

मुगुण श्री मुगुणकीरति गणोजो, वाचक पदवी धरंत।

अंतयवामी चिर गयो जी, मतिवल्लभ महंत ॥१४॥

प्रथमत मुसी अति प्रेम स्युंजी, मतिकुसल कहै एम।

सामाङ्क मन सुद्ध करो जी, जीब बए भइं लेहा जेम ॥१५॥

रतनवल्लभ गुरु सानिधम, ए कीयो प्रथम अभ्यास।

छसय चौबीस गाहा अछै जी, उगुणतीस ढाल उल्हास ॥१६॥

भगो गुणो मुणो भावस्युं जी, गरुआतण गुण जेह।

मन मुध जिनिधर्म तैं करै जी, श्री भुवन पति हुवै तेह ॥१७॥

सर्व गाथा ६२४। इति चन्द्रलेहारास संपूर्ण ॥

३६८५. जलगालणरास—ज्ञानभूषण । पत्र सं० २ । आ० १०^३×४^३ इंच । भाषा—हिन्दी गुजराती ।

विषय—रासा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६७ । ट भण्डार ।

विशेष—जल छानने की विधि का वर्णन रास के रूप में किया गया है ।

३६८६. धन्नाशालिभद्ररास—जिनराजसूरि । पत्र सं० २६ । आ० ७^३×४^३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—रासा । २० काल सं० १६७२ आसोज बुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६४८ । अ भण्डार ।

विशेष—मुनि इन्द्रविजयगणि ने गिरपोर नगर में प्रतिलिपि की थी ।

३६८७. धर्मरासा..... । पत्र सं० २ से २० । आ० ११×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—धर्म । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० १६४८ । ट भण्डार ।

विशेष—पहिला, छठा तथा २० से आगे के पत्र नहीं हैं ।

३६८८. नवकाररास..... । पत्र सं० २ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—रामांकार मन्त्र महात्म्य वर्णन है । २० काल × । ले० काल सं० १८३१ फागुण सुदी १२ । पूर्ण । वै० सं० ११०२ । अ भण्डार ।

३६८९. नेमिनाथरास—विजयदेवसूरि । पत्र सं० ४ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—रासा (भगवान नेमिनाथ का वर्णन है) । २० काल × । ले० काल सं० १८२६ पौष सुदी ५ । पूर्ण । वै० सं० १०२६ । अ भण्डार ।

विशेष—जयपुर में साहिबराम ने प्रतिलिपि की थी ।

३६९०. नेमिनाथरास—ऋषि रामचन्द्र । पत्र सं० ३ । आ० ९^३×४^३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—रासा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २१४० । अ भण्डार ।

विशेष—आदिभाग—

दूहा— अरिहंत सिध ने आपरीया उपजाया अणवार ।

पांचेपद तेहुंनमूँ, अठोत्तर सो वार ॥१॥

मोखगामी दोनु हुवा, राजमती रह नेम ।

चित्रेकतर लीया मणौ, साभल जे घर प्रेम ॥२॥

ढाल जिणोपुर मुनिराया..... ।

सुखकारी सोरठ देसे राज कीसन रेस मन मोहौलाल ।

दीपती नगरी दुवारकाए ॥१॥

समुद विजे तिहांभूप सेवा देजी राणी रुरेरु ।

महाराणी मानी जतीए ॥२॥

जागण जन(म)मौया अरिहन्त देव इह चोसट सारे ।

ज्यारी नेव में बाल ब्रह्मचारी बावा समोए ॥३॥

ग्रन्थि—

सिल ऊरर वंन ढालियो दीठो दोय मुत्रा में निचोडरे ।

तिण अनुमार माफक है, रिषि रामचंजी कीनी जोड रे ॥१३॥

इति लिखतु श्री श्री उमाजीरी तन् सीपणी छोटाजीरी चेलीह सतु लीखतु पाली मदे । पाली में प्रतिलिपि हुई थी ।

३६६१. नेमोश्वरफाग—ब्रह्मरायमल्ल । पत्र सं० ८ मे ७० । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—फागु । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८३ । छ भण्डार ।

३६६२. पंचेन्द्रियरास..... । पत्र सं० ३ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—रासा (पाँचों

इन्द्रियों के विषय का वर्णन है) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३५६ । अ भण्डार ।

३६६३. पत्यविधानरास—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ५ । आ० ८३×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—रासा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४३ । छ भण्डार ।

विशेष—पत्यविधानव्रत का वर्णन है ।

३३६४. बंकचूलरास—जयकीर्ति । पत्र सं० ४ मे १७ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

रासा (कथा) । २० काल सं० १६८५ । ले० काल सं० १६६३ फागुग बुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० २०६२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३ पत्र नहीं हैं । ग्रन्थ प्रशस्ति—

कथा सुणी बंकचूलनी श्रेणिक धरी उल्लास ।

वीरनि वांदी भावसुं पुहुत राजग्रह वास ॥१॥

संवत सोल पब्यासीइं गूर्जर देस मभार ।

कल्पवल्लीपुर सोभती इन्द्रपुरी अवतार ॥२॥

नरमिषपुरा वाणिक वसि दया धर्म सुखकंद ।

चैत्यालि श्री वृषभवि प्रावि भवीयण वृंद ॥३॥

काष्ठासंध विद्यागणे श्री सोमकीर्ति मही सोम ।

विजयसेन विजयाकर यणकीर्ति यशस्तोम ॥४॥

उदयमेन महीमोदय त्रिभुवनकीर्ति विख्यात ।

रत्नभूषण गद्यपती हवा भुवनरयण जेहंजात ॥५॥

तस पट्टि मुरीवरभलु जयकीर्त्ति जयकार ।
 जे भवियण भवि सांभली ते पामी भवपार ॥६॥
 रूपकुमर रलीया मगु बंकचूल बीजु नाम ।
 तेह रास रच्यु ह्वडु जयकीर्त्ति मुखधाम ॥७॥
 नीम भाव निर्मल हुई गुरुवचने निर्द्वार ।
 सांभलतां संपद् मलिं ये भणि नरतिनार ॥८॥
 याद्रुसायर नन्न महीचंद सूर जिनभास ।
 जयकीर्त्ति कहिता रहु बंकचूलनु रास ॥९॥

इति बंकचूलरासं समाप्तः ।

संवत् १६६३ वर्षे फागुण बुदी १३ पिपलाइ ग्रामे लक्षतं भट्टारक श्री जयकीर्त्ति उपाध्याय श्री बीरचंद
 ब्रह्म श्री जसवंत वाइ कपूरा या श्री रास ब्रह्म श्री जसवंत लक्षतं ।

३६६५. भविष्यदत्तरास—ब्रह्मरायमल्ल । पत्र सं० ३६ । आ० १२×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
 रासा-भविष्यदत्त की कथा है । २० काल सं० १६३३ कार्तिक सुदी १४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं ६८६ । अ
 भण्डार ।

३६६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १७८४ । वे० सं० १६३० । ट भण्डार ।
 विशेष—आमेर में श्री मल्लिनाथ चैत्यालय में श्री भट्टारक देवेन्द्रकीर्त्ति के शिष्य दयाराम सोनी ने प्रतिलिपि
 की थी ।

३६६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० ५६६ । ङ भण्डार ।
 विशेष—पं० छाजूराम ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इनके अतिरिक्त ख भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १३२) छ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १६१) तथा
 ऋ भण्डार में १ प्रति (वे० सं० १३५) और है ।

३६६८. रुक्मिणीविवाहवेलि (कृष्णरुक्मिणीवेलि)—पृथ्वीराज राठौड । पत्र सं० ५१ से
 १२१ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—वेलि । २० काल सं० १६३८ । ले० काल सं० १७१६ चैत्र बुदी ५ ।
 अपूर्ण । वे० सं० १६४ । ख भण्डार ।

विशेष—देवगिरी में महात्मा जगन्नाथ ने प्रतिलिपि की थी । ६३० पद्य हैं । हिन्दी गद्य में टीका भी दी
 हुई है । ११२ पृष्ठ से आगे अन्य पाठ हैं ।

३६६६. शीलरासा—विजयदेव सूरि । पत्र सं० ४ से ७ । अा० १०६×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।
त्रियय—रामा । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ कागुण सुदी १३ । वे० सं० १६६६ । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

मंत्र १६३७ वर्षे कागुण सुदी १३ गुरुवारे श्रीखरतरगच्छे आचार्य श्री राजरत्नसूरि शिष्य पं० नंदिरंग
लिखितं । उसवंसेसंघ वालेचा. गोत्रे सा हीरा पुत्री रत्न सु आनिका नाली पठनार्थ लिखितं दारुमध्ये ।

अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

श्रीपूज्यपामचंद तगुइ सुपसाय.

सीस धरी निज निरमल भाइ ।

नयर जालउरहि जागतु,

नेमि नमउ नित बेकर जोडि ॥

बानती एह जि वीनवउ,

इक खिएण ग्रम्ह मन वीन विछोडि ।

सील संघातइ जी प्रीतडी,

उत्तराध्ययन बाबीसमु जोइ ॥

बली अने राय थकी अरथ आज्ञा विना जे कहसु होइ ।

विफल हो यो मुझ पातक सोइ, जिम जिन भाष्यउ ते सही ॥

दुरित नइ दुक्ख महरइ दूरि, बेगि मनोरथ माहरा पूरि ।

आणमुसंयम आगियो, इम वीनवइ श्री विजयदेव सूरि ॥

॥ इति माल रासउ समाप्तः ॥

३७००. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ म ७ । ले० काल सं० १७०५ आसोज सुदी १४ । वे० सं० २०६१ ।

अ भण्डार ।

विशेष—आधेर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३७०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २५७ । अ भण्डार ।

३७०२. श्रीपालराम—जिनहर्षगणि । पत्र सं० १० । अा० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विशेष—

रामा (श्रीगाल रामा की कथा ह) । २० काल सं० १७४२ चैत्र बुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३० ।

अ भण्डार ।

विशेष—आदि एवं अन्त भाग निम्न प्रकार है—

श्रीजिनाय नमः ॥ ढाल सिघनी ॥

चउवीसे प्रणमुं जिणराय, जास पसायइ नवनिधि पाय ।
 सुयदेवा घरि रिदय मभारि, कहिस्युं नवपदनउ अधिकार ॥
 मंत्र जंत्र छइ अवर अनेक, पिणि नवकार समउ नही एक ।
 सिद्धचक्र नवपद सुपसायइ, सुख पाम्यां श्रीपाल नररायइ ॥
 आंबिल तप नव पद संजोग, गलित सरीर थयो नीरोग ।
 तास चरित्र कहुं हित आणी, सुणिज्यो नरनारी मुभ वारणी ॥

अन्तिम—

श्रीपाल चरित्र निहालनइ, सिद्धचक्र नवपद धारि ।
 ध्याईयइ तउ सुख पाईयई, जगमा जस विस्तार ॥८५॥
 श्री गच्छस्वरतर पति प्रगट श्री जिनचन्द्र सरोस ।
 गणि शांति हरष वाचक तरणो, कहइ जिनहरष सुसीस ॥८६॥
 सतरै बयालीसै समै, बदि चैत्र तेरसि जाण ।
 ए रास पाटण मां रच्यो, सुणता सदा कल्याण ॥८७॥

इति श्रीपाल रास संपूर्ण । पद्य सं० २८७ है ।

३७०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १७७२ भादवा बुदी १३ । वे० सं० ७२२ । ऋ भण्डार ।

३७०४. षट्शेष्यावेलि—साह लोहट । पत्र सं० २२ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
 सिद्धांत । २० काल सं० १७३० आसोज सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८० । ऋ भण्डार ।

३७०५. सुकुमालस्वामीरास—ब्रह्म जिनदास । पत्र सं० ३४ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—
 हिन्दी गुजराती । विषय—रासा (सुकुमाल मुनि का वर्णन) । ले० काल सं० १६३५ । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । अ
 भण्डार ।

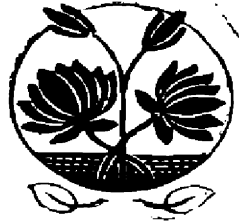
३७०६. सुदर्शनरास—ब्रह्म रायमल्ल । पत्र सं० १३ । आ० १२×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
 रासा (मेठ सुदर्शन का वर्णन है) । २० काल सं० १६२९ । ले० काल सं० १७५६ । पूर्ण । वे० सं० १०४६ । अ
 भण्डार ।

विशेष—साह लालचन्द कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

३७०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १७९२ सावण सुदी १० । वे० सं० १०६ । पूर्ण
 ऋ भण्डार ।

३७०८. सुभौमचक्रवर्तिरास—ब्रह्मजिनदास । पत्र सं० १३ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय—कथा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६२ । अ भण्डार ।

३७०९. हमीररासो—महेश कवि । पत्र सं० ८८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—रासो
(ऐतिहासिक) । २० काल × । ले० काल सं० १८८३ आसोज सुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० ९०४ । अ भण्डार ।



विषय- गणित-शास्त्र

३७१८. गणितनाममाला—हरदत्त । पत्र सं० १४ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
गणितशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४० । ख भण्डार ।

३७१९. गणितशास्त्र..... । पत्र सं० ६१ । आ० ६×३३ इंच । भाषा- संस्कृत । विषय-गणित । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६ । च भण्डार ।

३७२०. गणितसार—हेमराज । पत्र सं० ५ । आ० १२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-गणित ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२२१ । अ भण्डार ।

विशेष—हाशिये पर मुन्दर बेलबूटे हैं । पत्र जीर्ण हैं तथा बीच में एक पत्र नहीं है ।

३७२३. पट्टी पहाड़ों की पुस्तक । पत्र सं० ४७ । आ० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय—
गणित । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के पत्रों में खेतों की डोरी आदि डालकर नापने की विधि दी है । पुनः पत्र १ से ३ तक
'सीधो वर्ण समाप्तायः । आदि की पांचों मंथियों (पाटियों) का वर्णन है । पत्र ४ से १० तक चाणिक्य नीति के
श्लोक हैं । पत्र १० से ३१ तक पहाड़े हैं । किसी २ जगह पहाड़ों पर मुभाषित पद्य हैं । ३१ से ३६ तक तोल नाप के
गुरु दिये हुये हैं । निम्न पाठ और हैं ।

१. हरिनाममाला—शङ्कराचार्य । संस्कृत पत्र ३७ तक ।

२. गोकुलगांवकी लीला— हिन्दी पत्र ४५ तक ।

विशेष—कृष्ण ऊधव का वर्णन है ।

३. समश्लोकीगीता— पत्र ४६ तक ।

४. स्नेहलीला— पत्र ४७ (अपूर्ण)

३७२४. राजूप्रमाण..... । पत्र सं० २ । आ० ८३×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय गणितशास्त्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४२७ । अ भण्डार ।

३७२५. लीलावतीभाषा—मोहनमिश्र । पत्र सं० ८ । आ० ११×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय—
गणितशास्त्र । २० काल सं० १७१४ । ले० काल सं० १८३८ फागुण बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ६४० । अ भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति पूर्ण है

३७१६. लीलावतीभाषा—व्यास मथुरादास । पत्र सं० ३ । आ० ६×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—गणितशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४१ । क भण्डार ।
३७१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५५ । ले० काल × । वे० सं० १४४ । ब भण्डार ।
३७१८. लीलावतीभाषा..... । पत्र सं० १३ । आ० १३×८ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—गणित ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७१ । च भण्डार ।
३७१९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६४२ । ट भण्डार ।
३७२०. लीलावती—भास्कराचार्य । पत्र सं० १७६ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—गणित । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६७ । अ भण्डार ।
विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित सुन्दर एवं नवीन है ।
३७२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८६२ भादवा बुदी २ । वे० सं० १७० । ख
भण्डार ।
विशेष—महाराजा जगतसिंह के शासनकाल में माराकचन्द के पुत्र मनोरथराम सेठी ने हिण्डीन में प्रति-
लिपि की थी ।
३७२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५४ । ले० काल × । वे० सं० ३२९ । च भण्डार ।
विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ३२४ से ३२७ तक) और हैं ।
३७२३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १७९५ । वे० सं० २१६ । झ भण्डार ।
विशेष—इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० २२०, २२१) और हैं ।
३७२४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६९३ । ट भण्डार ।



विषय- इतिहास



३७२५. आचार्यों का ब्यौरा.....। पत्र सं० ६। आ० १२३×५३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल सं० १७१६। पूर्ण। वे० सं० २६७। ख भण्डार।

विशेष—सुखानन्द सौगरी ने प्रतिलिपि की थी। इसी वेष्टन में १ प्रति ग्रीर है।

३७२६. खंडेलवालोत्पत्तिवर्णन.....। पत्र सं० ८। आ० ७×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५। झ भण्डार।

विशेष—८४ गोत्रों के नाम भी दिये हुये हैं।

३७२७. गुर्वावलीवर्णन.....। पत्र सं० ५। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५३०। ब्य भण्डार।

३७२८. चौरासीज्ञातिखंड.....। पत्र सं० १। आ० १०×५३ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६०३। ट भण्डार।

३७२९. चौरासीजाति की जयमाल—विनोदीलाल। पत्र सं० २। आ० ११×५ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल सं० १८७३ पौष बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २४१। छ भण्डार।

३७३०. छठा आरा का विस्तार.....। पत्र सं० २। आ० १०३×४ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१८६। अ भण्डार।

३७३१. जयपुर का प्राचीन ऐतिहासिक वर्णन.....। पत्र सं० १२७। आ० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६८६। ट भण्डार।

विशेष—रामगढ सवाईमाधोपुर आदि बसाने का पूर्ण विवरण है।

३७३२. जैनवट्टी मूडवट्टी की यात्रा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं० ४। आ० १०३×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३००। ख भण्डार।

३७३३. तीर्थङ्करपरिचय.....। पत्र सं० ४। आ० १२×५३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६४०। अ भण्डार।

३७३४. तीर्थङ्करों का अन्तराल.....। पत्र सं० १। आ० ११×४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-इतिहास। र० काल ×। ले० काल सं० १७२४ आसोज सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० २१४२। अ भण्डार।

३७३५. दादूपद्यावली। पत्र सं० १ । आ० १०×३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास ।
२० काव × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १३६४ । अ भण्डार ।

दादूजी दयाल राट गरोब मसकीन ठाट ।
जुगलबाई निराट निराणै बिराज ही ॥
बखर्नास कर पाक जसौ चावी प्राग टाक ।
बडो हू गोपाल ताक गुह्यारे राजही ॥
सांगानेर रजबसु देवल दयाल दास ।
घडसी कडाला बसें धरम कीया जही ॥
ईड वैहू जनदास तेजानन्द जोधपुर ।
मोहन सु भजनीक आसोपनि वाज ही ॥
पूलर में माधोदास विदाध में हरिसिंह ।
चतरदास सिध्यावट कीयो तनकाज ही ॥
त्रिहाणी पिरागदास डोडवाने हे प्रसिद्ध ।
मुन्दरदास जू सरसू फतेहपुर छाजही ॥
बाबो बनवारी हरदास दोऊ रतीय में ।
साधु एक मांडोडी में नोके नित्य छाजही ॥
मुंदर प्रहलाद दास घाटडैसु छीड़ मांहि ।
पूरब चतरभुज रामपुर छाजही ॥ १ ॥
निराणदास माडाल्यो सडांग मांहि ।
इकलौद रणतभंवर डाढ चरणदास जानियो ॥
हाडोली गेगाइ जामे माखूजी मगन भये ।
जगोजी भडौच मध्य प्रचाधारी मानियो ॥
लालदाम नायक सां पीरान पटणदास ।
फोफली मेबाड मांहि टोलोजी प्रमानियो ॥
साधु परमानंद इदोखली में रहे जाय ।
जेमल चुहाण भलो खालड हरगानियो ॥
जेमल जोगो कुछाहो वनमाली चोकन्योस ।
सांभर भजन सां बितान तानियो ॥

मोहन दफतरीसु मारोठ चिताई भल्लै ।
 रुघनाथ मेडतैसु भावकर आनियौ ॥
 कालैडहरै चत्रदास टीकोदाम नांगल में ।
 भोटवाडै भांभूमांभू लघु गोपाल धानियौ ॥
 आंबावती जगनाथ राहोरी जनगोपाल ।
 बाराहदरी संतदास चावळ्यलु भानियौ ॥
 आंधी में गरीवदास भानगढ माधव कै ।
 मोहन मेवाड़ा जोग साधन सीं रहे है ॥
 टहटडै में नागर निजाम हू भजन कियो ।
 दास जग जीवन चौसा हर लहे हैं ॥
 मोहन दरियायीसो सम नागरचाल मध्य ।
 बोकडास संत जूहि गोलगिर भये हैं ॥
 चैनराम कांणीता में गोदेर कपलमुनि ।
 स्यामदास भालाणीसू चोड कै में ठये हैं ॥
 सौंख्या लाखा नरहर अलूदै भजन कर ।
 महाजन खंडेलवाल दादू गुर गहे हैं ॥
 पूरणदास ताराचन्द म्हाजन सुम्हेर वाली ।
 आंधी में भजन कर काम क्रोध दहे हैं ॥
 रामदास राणीबाई क्रांजल्या प्रगट भई ।
 म्हाजन डिगाइचसू जाति बोल सहे हैं ॥
 बावन ही थांभा अरु बावन ही म्हंत ग्राम ।
 दादूपंथी चत्रदास मुने जैसे कहे हैं ॥ ३ ॥

सोरठ—

जै नमो गुर दादू परमात्म आदू सब संतन के हितकारी ।
 मैं आयो सरनि तुम्हारी ॥ टेक ॥
 जै निरालंब निरवाना हम संत तै जाना ।
 संतनि को सरना दीजै, अब मोहि अपनू कर लीजै ॥१॥
 सबके अंतरयामी, अब करो कृपा मोरे स्वामी
 अवगति अबनासी देवा, दे चरन कवल की सेवा ॥२॥
 जै दादू दीन दयाला काढो जग जंजाला ।
 सतचित आनंद में बासा, गावै वखतावरदासा ॥३॥

राग रामगरी—

अंमे पीव क्यूं पाइये, मन चंचल भाई ।
 आंख मोच मूनी भया मंछी गढ कार्द ॥टेक॥
 छाया तिलक बनाय करि नांचै अरु गावै ।
 आपण तो समझे नहीं, अौरां समझावै ॥१॥
 भगति करै राखंड की, करणी का काचा ।
 कहै कबीर हरि क्यूं मिलै, हिरदै नही साषा ॥२॥
 ॥ इति ॥

३७३६. देहली के बादशाहों का व्यौरा.....। पत्र सं० १६ । आ० ५३×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
 विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६ । म् भण्डार ।

३७३७. पञ्चाधिकार.....। पत्र सं० ५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास ।
 २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६४७ । ट भण्डार ।

विशेष—जिनसेन कृत धवल टीका तक का प्रारम्भ से आचार्यों का ऐतिहासिक वर्णन है ।

३७३८. पट्टावली.....। पत्र सं० १२ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०
 काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३० । म् भण्डार ।

विशेष—दिगम्बर पट्टावलि का नाम दिया हुआ है । १८७६ के संबत् को पट्टावलि है । अन्त में खंडेलवाल
 वंगोत्पत्ति भी दी हुई है ।

३७३९. पट्टावलि.....। पत्र सं० ४ । आ० १० इंच × ५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०
 काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३३ । छ भण्डार ।

विशेष—सं० ८४० तक होने वाले भट्टारकों का नामोल्लेख है ।

३७४०. पट्टावलि.....। पत्र सं० २ । आ० ११ इंच × ५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २०
 काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रथम बीरासी जातियों के नाम हैं । पीछे संबत् १७६६ में नागौर के गच्छ से अजमेर का गच्छ
 निकला उसके भट्टारकों के नाम दिये हुये हैं । सं० १५७२ में नागौर से अजमेर का गच्छ निकला । उसके सं० १८५२
 तक होने वाले भट्टारकों के नाम दिये हुये हैं ।

३७४१. प्रतिष्ठाकुंभपत्रिका.....। पत्र सं० १ । आ० २५×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
 इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

विशेष—सं० १६२७ फागुन मास का कुंकुमत्रिपलोन की प्रतिष्ठा का है। पत्र कार्तिक वृद्धी १३ का लिखा है। इसके साथ सं० १६३६ की कुंकुमत्रिका छद्मी हुई शिखर सम्भेद की और है।

३७४२. प्रतिष्ठानामावलि.....। पत्र सं० २०। आ० ६×७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४३। छ भण्डार।

३७४३. प्रति सं० २। पत्र सं० १८। ले० काल ×। वे० सं० १४३। छ भण्डार।

३७४४. बलात्कारगणगुर्यावलि.....। पत्र सं० ३। आ० ११३×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०६। अ भण्डार।

३७४८. भट्टारक पट्टावलि। पत्र सं० १। आ० ११×५३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८३७। अ भण्डार।

विशेष—सं० १७७० तक की भट्टारक पट्टावलि दी हुई है।

३७४९. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वे० सं० ११८। ज भण्डार।

विशेष—संवत् १८८० तक होने वाले भट्टारकों के नाम दिये हैं।

३७५०. यात्रावर्णन.....। पत्र सं० २ से २६। आ० ६×५३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६१४। छ भण्डार।

३७५१. रथयात्राप्रभाव—अमोलकचंद्र। पत्र सं० ३। आ० १०३×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३०८। अ भण्डार।

विशेष—जयपुर की रथयात्रा का वर्णन है।

११३ पद्य हैं—अन्तिम—

एकोनविंशतिशतेदश सहावर्षे मासस्यपञ्चमी दिनेमित फाल्गुनस्य श्रीमञ्जिनेन्द्र वर सूर्यरथस्ययात्रा मेलायकं जयपुर प्रकटे वभूव ॥११२॥

रथयात्राप्रभावोऽयं कथितो दृष्टपूर्वकः

नाम्ना मौलिक्यचन्द्रेण साहाय्ये या संभुवा ॥११३॥

॥ इति रथयात्रा प्रभाव समाप्ता ॥ शुभं भूयात् ॥

३७५२. राजप्रशस्ति.....। पत्र सं० ५। आ० ६×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—इतिहास। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८६५। अ भण्डार।

विशेष—दो प्रशस्ति (अपूर्ण) हैं अजिका श्रावक वनिता के विशेषण दिये हुए हैं।

३७५३. विज्ञप्तिपत्र—हंसराज । पत्र सं० १ । आ० ८×९ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास ।
१० काल × । ले० काल सं० १८०७ फागुन सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ५३ । अ भण्डार ।

विशेष—भोरान निवामी हंसराज ने जयपुर के जैन पंचों के नाम अपना विज्ञप्तिपत्र व प्रतिज्ञा-पत्र लिखा है । प्रारम्भ—

स्वस्ति श्री सवाई जयपुर का सकल पंच साधर्मो बडी पंचायत तथा छोटी पंचायत का तथा दीवानजी साहिब का मन्दिर मम्बन्धी पंचायत का पत्र आदि ममस्त साधर्मो भाइयन को भोपाल का वासी हंसराज को या विज्ञप्ति है सो नीका अवधारन कीज्यो । इसमें जयपुर के जैनों का अच्छा वर्णन है । अमरचन्द्रजी दीवान का भी नामोल्लेख है । इसमें प्रतिज्ञा पत्र (आखडी पत्र) भी है जिसमें हंसराज के त्यागभय जीवन पर प्रकाश पडता है । यह एक जन्म-पत्र की तरह गोल सिमटा हुआ लम्बा पत्र है । सं० १८०० फागुन सुदी १३ गुरुवार को प्रतिज्ञा ली गई उसी का पत्र है ।

३७५४. शिलालेखसंग्रह..... । पत्र सं० ८ । आ० ११×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास ।
१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६६१ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न लेखों का संग्रह है ।

१. चालुक्य वंशोत्पन्न पुनकेजी का शिलालेख ।
२. भद्रवाहु प्रशस्ति
३. मल्लिपेण प्रशस्ति

३७५५. श्रावक उत्पत्तिवर्णन..... । पत्र सं० १ । आ० ११×२८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
इतिहास । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६०८ । ट भण्डार ।

विशेष—चौरासा गौत्र, वंश तथा कुलदेवियों का वर्णन है ।

३७५६. श्रावकों की चौरासी जातियां । पत्र सं० १ । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । १०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३१ । अ भण्डार ।

३७५७. श्रावकों की ७२ जातियां । पत्र सं० २ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।
विषय—इतिहास । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०२६ । अ भण्डार ।

विशेष—जातियों के नाम निम्न प्रकार हैं ।

१. गोलाराडे २. गोलमिषाडे ३. गोलापूर्व ४. लंबेनु ५. जैसवाल ६. खंडेलवाल ७. वधेलवाल ८.
अगरवाल, ९. सहनवाल, १०. अमरवापोरवाड, ११. वाम्बापोरवाड, १२. दुमरवापोरवाड, १३. जांगडापोरवाड,
१४. परवार, १५. बरहीया, १६. भैमरपोरवाड, १७. मोरठीपोरवाड, १८. पद्यावतीपोरभा, १९. खंध, २०. घुसर

२१. वाहरसेन, २२. गहोड़, २३. शरणपग क्षत्री २४. सदाण, २५. अजोध्यापुरी, २६. गोरवाड, २७. विद्वलस्वा, २८. कठनेरा, २९. नाम, ३०. गुजरपल्लीवाल, ३१. घीकडा, ३२. गागरवाडा, ३३. बोरवाड, ३४. खडेरवाल, ३५. हर मुला, ३६. नेगडा, ३७. सहरीया, ३८. मेवाडा, ३९. खराडा, ४०. चीतोडा, ४१. नरसंगपुरा, ४२. नागदा, ४३. बाव, ४४. हूमड, ४५. रायकवाडा, ४६. बदनीरा, ४७. दमगुश्रावक, ४८. पंचमश्रावक, ४९. हलधरश्रावक, ५०. सादरश्रावक, ५१. हूमर, ५२. लत्रर, ५३. बवल, ५४. बलगारो, ५५. कर्मश्रावक, ५६. वरिकर्मश्रावक ५७. वेसर ५८. सुदेवज, ५९. बलशीमुल, ६०. कोमडी, ६१. गंगरका, ६२. गुनपुर, ६३. तुलाश्रावक, ६४. कचंगश्रावक, ६५. हेवगाश्रावक, ६६. भोगाश्रावक ६७. सोमनश्रावक, ६८. दाउदाश्रावक, ६९. नंगवलीश्रावक, ७०. पणीसंगा, ७१. वगोरिया, ७२. काकलीवाल,

नोट—हूमड जाति को दो बार गिनाने से १ संख्या बढ गई है ।

३७५८. श्रुतस्कंध—ब्र० हेमचन्द्र । पत्र सं० ७ । आ० ११^१×४^३ इंच ; भाषा—प्राकृत ; विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१ । अ भण्डार ।

३७५९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ७२९ । अ भण्डार ।

३७६०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० २१६१ । ट भण्डार ।

विशेष—पत्र ७ से आगे श्रुतावतार श्रीधर कृत भी है, पर पत्रों पर छक्षर मिट गये हैं ।

३७६१. श्रुतावतार—पं० श्रीधर । पत्र सं० ५ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६ । अ भण्डार ।

३७६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८९१ पोष मुदी १ । वे० सं० २०१ । अ भण्डार ।

विशेष—चम्पालाल टोंग्या ने प्रतिलिपि की थी ।

३७६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ७०२ । छ भण्डार ।

३७६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५१ । च भण्डार ।

३७६५. संघपञ्चीसी—द्यानतराय । पत्र सं० ६ । आ० ८×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल सं० १८८८ । पूर्ण । वे० सं० २१३ । ज भण्डार ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड भाषा भैया भगवतीदास कृत भी है ।

३७६६. संवत्सरवर्णन..... । पत्र सं० १ से ३७ । आ० १०^३×४^३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—इतिहास । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६५ । छ भण्डार ।

२७६७. स्थूलभद्र का चौमासा वर्णन..... पत्र सं० २ । मा० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-इतिहास । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११८ । अ भण्डार ।

ईडर आवा आवली रे ए देसी

सावण मास मुहावणो रे लाल जो पीउ होवे पास ।
अरज कळं घरे आवजो रे लाल हूं छूं ताहरी दास ।
अतुर नर आवो हम चर छा रे मुगण नर तू छ प्राण आधार ॥१॥
भादवड़े पीउ बेगलो रे लाल हूं कीम कळं सणगारे ।
अरज कळं घर आवजो रे लाल मोरा छंछत सार ॥२॥
आसोजा मासनी चांदणी रे लाल फुलतणी बीछाइ सेज ।
रंग रा मत कीजिय रे लाल आणी होयड़े तेज ॥३॥
कातीक महीने कामीनि रे लाल जो पीउ होवे पास ।
संदेसा समय भण रे लाल अलगायो केम ॥४॥
नजर निहालो बाल हो रे लाल आवो मींगसर मास ।
लोक कहावत कहा करो जी पीउड़ा परम निवास ॥५॥
पोस बालम बेगलो रे लाल अरवडो मुज दोस ।
परीत पनोतर पालीये रे लाल आणी मन मे रोस ॥६॥
सीयाले अती घणी दोहलो रे लाल ते माहे बल माह ।
पोताने घर आवज्यो रे लाल ढीलन कीजे नाह ॥७॥
लाल गुलाल अबीरमुं रे लाल खेलण लागा लोग ।
तुज विण मुज नेइहा एकली रे लाल फाणुण जाये फोक ॥८॥
मुदर पान मुहामणो रे लाल कुल तरणो मही मास ।
चीतारया घरे आवज्यो रे लाल तो करमु गेह गाट ॥९॥
बीसारयो न बीसरे रे लाला जे तुम बोल्या बोल ।
बेसाखे तुम नेम छुं रे लाल ती बजउ ढोल ॥१०॥
केहता दीमे कामो रे लाल काइ करावो वेठ ।
ढीठ वणो हवे काहा करो लाल आच्छी लागो जेठ ॥११॥

असाढी धरमुमच्छोरे लाल बीच बीच जबुके बीजली रे लाल ।
 तुज बीना मुज नैहारै लाल धरम आवे खीज ॥१२॥
 रे रे सखी उतावली रे लाल सजी सोला सणगार ।
 वेर बली पंथी सुदरहरे लाल ये छोडी नार ॥१३॥
 चार घडी नी अब छकी रे लाल आयो मास अरसाढ ।
 कामण गालो कंत जी रे लाल सखी न आव्यो आज ॥१४॥
 ते उठी उलट धरी रे लाल बालम जोवे आस ।
 थूलभद्र गुरु आदेस थी रे लाल ऐह बळ्यो चोमास ॥१५॥

३७६८. हमीर चौपई.....। पत्र सं० १३ से ३७ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
 इतिहास । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५१६ । ट भण्डार ।

विशेष—रचना में नामोल्लेख कहीं नहीं है । हमीर व अलाउद्दीन के युद्ध का रोचक वर्णन दिया हुआ है ।



विषय- स्तोत्र साहित्य



३७६६. अकलंकाष्टक.....। पत्र सं० ५। मा० ११३×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।
१० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५०। ज्ज भण्डार।
३७७०. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० सं० २५। ज्ज भण्डार।
३७७१. अकलंकाष्टकभाषा—सदामुख कासलीवाल। पत्र सं० २२। मा० ११३×५ इंच। भाषा-
हिन्दी। विषय-स्तोत्र। १० काल सं० १६१५ श्रावण सुदी २। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५। क्क भण्डार।
विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६) भी हैं।
३७७२. प्रति सं० २। पत्र सं० २८। ले० काल ×। वे० सं० ३। ज्ज भण्डार।
३७७३. प्रति सं० ३। पत्र सं० १०। ले० काल सं० १६१५ श्रावण सुदी २। वे० सं० १८७। ज्ज
भण्डार।
३७७४. अजितशांतिस्तवन.....। पत्र सं० ७। मा० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।
१० काल ×। ले० काल सं० १६६१ आसोज सुदी १। पूर्ण। वे० सं० ३५७। ज्ज भण्डार।
विशेष—प्रारम्भ में भक्तामर स्तोत्र भी है।
३७७५. अजितशांतिस्तवन—नन्दिषेण। पत्र सं० १५। मा० ८३×४ इंच। भाषा-प्राकृत।
विषय-स्तवन। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८४२। ज्ज भण्डार।
३७७६. अनाधीश्वरिस्वाध्याय.....। पत्र सं० १। मा० ६३×४ इंच। भाषा-हिन्दी गुजराती।
विषय-स्तवन। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६०८। ट भण्डार।
३७७७. अनादिनिधनस्तोत्र। पत्र सं० २। मा० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।
१० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३६१। ज्ज भण्डार।
३७७८. अरहन्तस्तवन.....। पत्र सं० ६ से २४। मा० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
स्तवन। १० काल ×। ले० काल सं० १६५२ कार्तिक सुदी १०। अपूर्ण। वे० सं० १६८४। ज्ज भण्डार।
३७७९. अवंतिपार्वजिनस्तवन—हर्षसूरि। पत्र सं० २। मा० १०×४ इंच। भाषा-हिन्दी।
विषय-स्तवन। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३५६। ज्ज भण्डार।
विशेष—७८ पद्य हैं।

३७८०. आत्मनिंदास्तवन—रत्नाकर । पत्र सं० २ । आ० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७ । छ भण्डार ।

विशेष—२५ श्लोक हैं । ग्रन्थ आरम्भ करने से पूर्व पं० विजयहंस गरिण को नमस्कार किया गया है । पं०
जय विजयगरिण ने प्रतिलिपि की थी ।

३७८१. आराधना..... । पत्र सं० २ । आ० ८×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल
× । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६ । क भण्डार ।

३७८२. इष्टोपदेश—पूज्यपाद । पत्र सं० ५ । आ० ११३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संक्षिप्त टीका भी हुई है ।

३७८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ७१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२) और है ।

३७८४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७ । घ भण्डार ।

विशेष—देवीदास की हिन्दी टब्बा टीका सहित है ।

३७८५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० ६० । छ भण्डार ।

विशेष—संघी पन्नालाल डूनीवाले कृत हिन्दी ग्रंथ सहित है । सं० १६३५ में भाषा की थी ।

३७८६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६७३ पौष बुदी ७ । वे० सं० ४०८ । अ
भण्डार ।

विशेष—वेणीदास ने जगरू में प्रतिलिपि की थी ।

३७८७. इष्टोपदेशटीका—आशाधर । पत्र सं० ३६ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७० । क भण्डार ।

३७८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० ६१ । छ भण्डार ।

३७८९. इष्टोपदेशभाषा । पत्र सं० २५ । आ० १२×७३ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६२ । छ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ को लिखाने व कागज में ४(=)॥ व्यय हुये हैं ।

३७९०. उपदेशसञ्ज्ञाय—ऋषि रामचन्द्र । पत्र सं० १ । आ० १०×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६० । अ भण्डार ।

३७६१. उपदेशसञ्जाय—रंगविजय । पत्र सं० ४ । आ० १०×४^१ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८३ । अ भण्डार ।

विशेष—रंगविजय श्री रत्नहर्ष के शिष्य थे ।

३७६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१६१ । अ भण्डार ।

विशेष—३रा पत्र नहीं है ।

३७६३. उपदेशसञ्जाय—देवादिल । पत्र सं० १ । आ० १०×४^१ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६२ । अ भण्डार ।

३७६४. उपसर्गहरस्तोत्र—पूर्णचन्द्राचार्य । पत्र सं० १४ । आ० ३^३×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत
प्राकृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १५५३ आसोज सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४१ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री बृहद्गच्छीय भट्टारक गुणदेवसूरि के शिष्य गुणनिघाम ने इसकी प्रतिलिपि की थी । प्रति
हत है । निम्नलिखित स्तोत्र है ।

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा	पत्र	विशेष
१. अजितशांतिस्तवन—	×	प्राकृत संस्कृत	१ से ६	३६ गाथा
विशेष—				ग्राचार्य गोविन्दकृत संस्कृत वृत्ति सहित है ।
२. भयहरस्तोत्र—	×	संस्कृत	६ से १०	

विशेष—स्तोत्र अक्षरार्थ मन्त्र गर्भित सहित है । इस स्तोत्र की प्रतिलिपि सं० १५५३ आसोज सुदी १२
को मेदपाट देश में राणा रायमल्ल के शासनकाल में कोठारिया नगर में श्री गुणदेवसूरि के उपदेश से उनके शिष्य ने
की थी ।

३. भयहरस्तोत्र—

×	”	११ से १४
---	---	----------

विशेष—इसमें पादर्वयक्ष मन्त्र गर्भित अष्टादश प्रकार के यन्त्र की कल्पना मानतुंगाचार्य कृत दी हुई है ।

३७६५. ऋषभदेवस्तुति—जिनसेन । पत्र सं० ७ । आ० १०^३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४६ । अ भण्डार ।

३७६६. ऋषभदेवस्तुति—पद्मनन्दि । पत्र सं० ११ । आ० १२×६^३ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४६ । अ भण्डार ।

विशेष—दोनों पृष्ठ में दर्शनस्तोत्र दिया हुआ है । दोनों ही स्तोत्रों के संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये
हुये हैं ।

३७६७. ऋषभस्तुति.....। पत्र सं० ५ । आ० १०^१/_२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५१ । अ भण्डार ।

३७६८. ऋषिमंडलस्तोत्र—गौतमस्वामी । पत्र सं० ३ । आ० ६^१/_२×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४ । अ भण्डार ।

३७६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८५६ । वे० सं० १३२७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ३३८, १४२६, १६००) और हैं ।

३८००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ६१ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ तथा मन्त्र साधन विधि भी दी हुई है ।

३८०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २१ ।

विशेष—कृष्णलाल के पठनार्थ प्रति लिखी गई थी । ख भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६१) और है ।

३८०२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६०) और है ।

३८०३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १७६८ । वे० सं० १४ । व्य भण्डार ।

३८०४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७६ से १०१ । ले० काल × । वे० सं० १८३६ । ट भण्डार ।

३८०५. ऋषिमंडलस्तोत्र.....। पत्र सं० ५ । आ० ६^१/_२×४^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०४ । भू भण्डार ।

३८०६. एकाक्षरीस्तोत्र—(तकाराक्षर).....। पत्र सं० १ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ ज्येष्ठ मुदी । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । प्रदर्शन योग्य है ।

३८०७. एकीभावस्तोत्र—वादिराज । पत्र सं० ११ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८८३ माघ कृष्णा ६ । पूर्ण । वे० सं० २५४ । अ भण्डार ।

विशेष—अमोलकचन्द्र ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३८) और है ।

३८०८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ११ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ । ख भण्डार ।

३८०९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ६३ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६४) और है ।

३८१०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ५३ । च भण्डार ।

विशेष—महाचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की गयी थी । प्रति संस्कृत टीका तहित है ।

इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ५२) और है ।

३८११. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० १२ । व्य भण्डार ।

३८१२. एकीभावस्तोत्रभाषा—भूधरदास । पत्र सं० ३ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०३६ । अ भण्डार ।

विशेष—बारह भावना तथा शांतिनाथ स्तोत्र और हैं ।

३८१३. एकीभावस्तोत्रभाषा—पद्मालाल । पत्र सं० २२ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।

विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३ । क भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६४) और है ।

३८१४. एकीभावस्तोत्रभाषा..... । पत्र सं० १० । आ० ७×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल सं० १६१८ । पूर्ण । वे० सं० ३५३ । झ भण्डार ।

३८१५. ओंकारवचनिका..... । पत्र सं० ३ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५ । क भण्डार ।

३८१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १६३६ आसोज बुदी ५ । वे० सं० ६६ । क

भण्डार ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७) और है ।

३८१७. कल्पसूत्रमहिमा..... । पत्र सं० ४ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—महात्म्य ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

३८१८. कल्याणक—समन्तभद्र । पत्र सं० ५ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—

स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६ । छ भण्डार ।

विशेष—

परणविवि चउवीसत्रि तिस्थयर,

गुरणार विसहर धुव चलणा ।

पुणु भणमि पंच कल्याण दिण,

भवियहु णिगुणह इक्कमणा ॥

अन्तिम—

करि कल्लारणपुञ्ज जिणसाहही,

अणु दिणु चित्त अविचलं ।

कहिय समुच्च एण ते कविणा.

लिज्जइ इमणुव भव फलं ॥

इति श्री समन्तभद्र कृतं कल्याणक समाप्ता ॥

३८१६. कल्याणमन्दिरस्तोत्र—कुमुदचन्द्राचार्य । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय—पार्श्वनाथ स्तवन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ३८४, १२३६, १२६२) और हैं ।

३८८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० २६ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां और हैं (वे० सं० ३०, २६४, २८१) ।

३८२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८१७ माघ सुदी १ । वे० सं० ६२ । च

भण्डार

३८२२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६४६ माह सुदी १५ । अपूर्ण । वे० सं० २५६ ।

छ भण्डार ।

विशेष—५वां पत्र नहीं है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३४) और है ।

३८२३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७१४ माह बुदी ३ । वे० सं० ७ । झ भण्डार ।

विशेष—साह जोधराज गोदीकाने आनंदराम मे सांगानेर में प्रतिलिपि करवायी थी । यह पुस्तक जोधराज गोदीका की है ।

३८२४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७६६ । वे० सं० ७० । ब्य भण्डार ।

विशेष—प्रति हर्षकीर्त्ति कृत संस्कृत टीका सहित है । हर्षकीर्त्ति नागपुरीय तपागच्छ प्रधान चन्द्रकीर्त्ति के शिष्य थे ।

३८२५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १७४६ । वे० सं० १६९८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति कल्याणमञ्जरी नाम विनयसागर कृत संस्कृत टीका सहित है । अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

इति सकृत्कुमनकुमदखंडचंडचंडरश्मिश्रीकुमुदचन्द्रसूरिविरचित श्रीकल्याणमन्दिरस्तोत्रस्य कल्याणमञ्जरी टीका संपूर्ण । दयाराम ऋषि ने स्वात्मज्ञान हेतु प्रतिलिपि की थी ।

३८२६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८६६ । वे० सं० २०६५ । ट भण्डार ।

विशेष—झोटेलाल ठोलिया मारोठ वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

३८२७. कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका—पं० आशाधर । पत्र सं० ४ । प्रा० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३१ । अ भण्डार ।

३८२८. कल्याणमंदिरस्तोत्रवृत्ति—देवतिलक । पत्र सं० १५ । प्रा० ९ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १० । अ भण्डार ।

विशेष—टीकाकार परिचय—

धौतकेशगणाब्धिचन्द्रसदृशा विदग्जनाह्लादयन्,

प्रवीण्याधनसारपाठकवरा राजन्ति भास्वांतरं ।

तच्छिष्यः कुमुदापिदेवतिलकः सद्बुद्धिवृद्धिप्रदां,

श्रेयोमन्दिरमंस्तवस्य मुदितो नृत्ति बंधादद्भुतं ॥१॥

कल्याणमंदिरमंस्तोत्रवृत्तिः सौभाग्यमञ्जरी ।

वाच्यमानाज्जनैर्नंदाच्चन्द्रावर्कं मुदा ॥२॥

इति श्रेयोमंदिरस्तोत्रस्य वृत्तिसमाप्ता ॥

३८२९. कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका ... । पत्र सं० ४ से ११ । प्रा० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११० । क भण्डार ।

३८३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से १२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २३३ । क भण्डार ।

विशेष—रूपचन्द्र चौधरी कनेमुं मुन्दरदास अजमेरी मोल लीनी । ऐसा अन्तिम पत्र पर लिखा है ।

३८३१. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—पञ्जालाल । पत्र सं० ४७ । प्रा० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । १० काल सं० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०७ । क भण्डार ।

३८३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० १०८ । क भण्डार ।

३८३३. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—ऋषि रामचन्द्र । पत्र सं० ५ । प्रा० १०×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७१ । ट भण्डार ।

३८३४. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा—बनारसीदास । पत्र सं० ८ । प्रा० ६×३ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४० । अ भण्डार ।

३८३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १११ । क भण्डार ।

३८३६. केशलज्ञानीसम्भाष—विनयचन्द्र । पत्र सं० २ । प्रा० १०×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८८ । अ भण्डार ।

३८३७. क्षेत्रपालनामावली.....। पत्र सं० ३। आ० १०×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४४। ख भण्डार।

३८३८. गीतप्रबन्ध.....। पत्र सं० २। आ० १०½×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २०
काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२४। क भण्डार।

विशेष—हिन्दी में वसन्तराग में एक भजन है।

३८३९. गीत वीतराग—पंडिताचार्य अभिनवचारूकीर्ति। पत्र सं० २६। आ० १०½×५ इंच।
भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १८८९ ज्येष्ठ बुदी ५५। पूर्ण। वे० सं० २०२। अ
भण्डार।

विशेष—जयपुर नगर में श्री चुन्नीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

गीत वीतराग संस्कृत भाषा की रचना है जिसमें २४ प्रबंधों में भिन्न भिन्न राग रागिनियों में भगवान
आदिनाथ का पौराणिक आख्यान वर्णित है। ग्रन्थकार की पंडिताचार्य उपाधि से ऐसा प्रकट होता है कि वे अपने समय
के विशिष्ट विद्वान् थे। ग्रन्थ का निर्माण कब हुआ यह रचना से ज्ञात नहीं होता किन्तु वह समय निश्चय ही संवत्
१८८९ से पूर्व है क्योंकि ज्येष्ठ बुदी अमावस्या सं० १८८९ को जयपुरस्थ लस्कर के मन्दिर के पास रहने वाले श्री
चुन्नीलालजी साह ने इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि को है प्रति मुंदर अक्षरों में लिखी हुई है तथा शुद्ध है। ग्रन्थकार ने ग्रंथ
को निम्न रागों तथा तालों में संस्कृत गीतों में शूंथा है—

राग रागनी— मालव, गुर्जरनी, वसंत, रामकली, काल्हरा कर्णटक, देशामिराग, देशत्रैराडी, गुणकरी, मालवगौड,
गुर्जराग, भैरवी, विराडी, विभास, कानरो।

ताल— रूपक, एकताल, प्रतिमण्ड, परिमण्ड, तित्तालो, अठताल।

गीतों में स्थायी, अन्तरा, संचारी तथा आभोग ये चारों ही चरण हैं इस सबसे ज्ञात होता है कि ग्रन्थकार
संस्कृत भाषा के विद्वान होने के साथ ही साथ अच्छे संगीतज्ञ भी थे।

३८४०. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२। ले० काल सं० १९३४ ज्येष्ठ सुदी ८। वे० सं० १२५। क
भण्डार।

विशेष—संघपति अमरचन्द्र के सेवक माणिक्यचन्द्र ने सुरंगपत्तन की यात्रा के अवसर पर आनन्ददास के
वचनानुसार सं० १८८४ वाली प्रति से प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२६) और है।

३८४१. प्रति सं० ३। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० सं० ४२। ख भण्डार।

३८४२. गुणस्तवन.....। पत्र सं० १५। आ० १२×६ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तवन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८५८। ट भण्डार।

३८४३. गुरुमहत्त्वात्मनाम.....। पत्र सं० ११। आ० १०×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १७४६ बैशाख वृदी ६। पूर्ण। वे० सं० २६८। ख भण्डार।

३८४४. गोम्मटसारस्तोत्र.....। पत्र सं० १। आ० ७×५ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७३। व्य भण्डार।

३८४५. घग्घरनिसाणी—जिनहर्ष। पत्र सं० २। आ० १०×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०१। छ भण्डार।

विशेष—पार्श्वनाथ की स्तुति है।

आदि—

मुख मंपति मुर नायक परतपि पास जिरांदा है।

जाकी छवि कांति अनोपम उरमा दीपत जात दिरांदा है।

अन्तिम—

मिद्धा दावा सातहार हासा दे मेवक विलवंदा है।

घग्घर नीमाणी पास वखाणी गुणी जिनहरष कहंदा है।

इति श्री घग्घर निसाणी संपूर्ण ॥

३८४६. चक्रेश्वरीस्तोत्र.....। पत्र सं० १। आ० १०½×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २६१। ख भण्डार।

३८४७. चतुर्विंशतिजिनस्तुति—जिनलाभसूरि। पत्र सं० ६। आ० ८×५½ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तवन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २८५। ख भण्डार।

३८४८. चतुर्विंशतितीर्थङ्कर जयमाल.....। पत्र सं० १। आ० १०½×५ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४८। अ भण्डार।

३८४९. चतुर्विंशतिस्तवन.....। पत्र सं० ५। आ० १०×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२६। व्य भण्डार।

विशेष—प्रथम ४ पत्रों में वमुथारा स्तोत्र है। पं० विजयगणि ने पट्टनमध्ये स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी।

३८५०. चतुर्विंशतिस्तवन.....। पत्र सं० ४। आ० ६½×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५७। छ भण्डार।

विशेष—१२वें तीर्थङ्कर तक की स्तुति है। प्रत्येक तीर्थङ्कर के स्तवन में ४ पद्य हैं।

प्रथम पद्य निम्न प्रकार है—

भव्यांभोजविबोधनैकतरणे विस्तारिकर्मावली
रम्भासामजनभिनंदनमहानष्टा पदाभासुरैः ।
भक्त्या वंदितपादपद्मविदुषां संपादयाभोजिभतां ।
रंभासाम जनभिनंदनमहानष्टा पदाभासुरैः ॥१॥

३८५१. चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तोत्र—कमलविजयगणि । पत्र सं० १५ । आ० १२३×५ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३८५२. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति—माघनन्दि । पत्र सं० ३ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तवन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१८ । व्य भण्डार ।

३८५३. चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तुति..... । पत्र सं० । आ० १०३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२६१ । व्य भण्डार ।

३८५४. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति..... । पत्र सं० ३ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । वे० सं० २३७ । व्य भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

३८५५. चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८२ । ट भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र कट्टर बीसपन्थी आम्नाय का है । सभी देवी देवताओं का वर्णन स्तोत्र में है ।

३८५६. चतुष्पदीस्तोत्र..... । पत्र सं० ११ । आ० ८३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५७५ । अ भण्डार ।

३८५७. चामुण्डस्तोत्र—पृथ्वीधराचार्य । पत्र सं० २ । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३८१ । अ प्रण्डार ।

३८५८. चिन्तामणिपार्श्वनाथ जयमालस्तवन..... । पत्र सं० ४ । आ० ८×३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तवन । १० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३४ । अ भण्डार ।

३८५९. चिन्तामणिपार्श्वनाथ स्तोत्रमंत्रसहित..... । पत्र सं० १० । आ० ११×५ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६० । अ भण्डार ।

३८६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८३० आसोज सुदी २ । वे० सं० १८१ । छ
भण्डार ।

३८६१. चित्रबंधस्तोत्र । पत्र सं० ३ । आ० १२×३३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र चिपके हुये हैं ।

३८६२. चैत्यचंद्रना । पत्र सं० ३ । आ० १२×३३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१०३ । अ भण्डार ।

३८६३. चौबीसस्तवन । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २०
काल × । ले० काल सं० १६७७ फागुन बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २१२२ । अ भण्डार ।

विशेष—बह्शीराम ने भरतपुर में रणधीरसिंह के राज्य में प्रतिलिपि की थी ।

३८६४. छंदसंग्रह । पत्र सं० ६ । आ० ११३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५२ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न छंद हैं—

नाम छंद	नाम कर्त्ता	पत्र	विशेष
महावीर छंद	शुभचन्द	१ पर	×
विजयकीर्ति छंद	”	२ ”	×
गुरु छंद	”	३ ”	×
पार्व छंद	ब० लेखराज	३ ”	×
गुरु नामावलि छंद	×	४ ”	×
प्रारती संग्रह	ब० जिनदास	४ ”	×
चन्द्रकीर्ति छंद	—	४ ”	×
कृपण छंद	चन्द्रकीर्ति	५ ”	×
नेमिनाथ छंद	शुभचन्द्र	६ ”	×

३८६५. जगन्नाथाष्टक—शङ्कराचार्य । पत्र सं० २ । आ० ७×३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

(जेनेतर साहित्य) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३३ । छ भण्डार ।

३८६६. जिनवरस्तोत्र.....। पत्र सं० ३। आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र।

२० काल ×। ले० काल सं० १८८६। पूर्ण। वे० सं० १०२। च भण्डार।

विशेष—भोगीलाल ने प्रतिलिपि की थी।

३८६७. जिनगुणमाला.....। पत्र सं० १९। आ० ८×६ इञ्च। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४१। झ भण्डार।

३७६८. जिनचैत्यवन्दना.....। पत्र सं० २। आ० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तवन। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०३५। अ भण्डार।

३८६९. जिनदर्शनाष्टक.....। पत्र सं० १। आ० १०×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०२६। ट भण्डार।

३८७०. जिनपंजरस्तोत्र.....। पत्र सं० २। आ० ९ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१५४। ट भण्डार।

३८७१. जिनपंजरस्तोत्र—कमलप्रभाचार्य। पत्र सं० ३। आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इञ्च। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६। ख भण्डार।

विशेष—पं० मन्नालाल के पठनार्थ प्रतिलिपि की गई थी।

३८७२. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। वे० सं० ३०। ग भण्डार।

३८७३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० २०५। ङ भण्डार।

३८७४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० २६५। झ भण्डार।

३८७५. जिनवरदर्शन—पद्मनंदि। पत्र सं० २। आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १८९४। पूर्ण। वे० सं० २०८। ङ भण्डार।

३८७६. जिनबाणीस्तवन—जगतराम। पत्र सं० २। आ० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७३३। च भण्डार।

३८७७. जिनशतकटीका—शंभुसाधु। पत्र सं० २६। आ० १० $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १९१। क भण्डार।

विशेष—अन्तिम— इति शंभु साधुविरचित जिनशतक पंजिकायां वाग्दर्शन नाम चतुर्थपरिच्छेद समाप्त।

३८७८. प्रति सं० २। पत्र सं० ३४। ले० काल ×। वे० सं० ४६८। व्य भण्डार।

३८७६. जिनशतकटीका—नरसिंहभट्ट । पत्र सं० ३३ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १५६४ चैत्र सुदी १४ । वे० सं० २६ । ख भण्डार ।

विशेष—ठाकर ब्रह्मदाम ने प्रतिलिपि की थी ।

३८८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६५६ पौष बुदी १० । वे० सं० २०० । क
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० २०१, २०२, २०३, २०४) और हैं ।

३८८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५३ । ले० काल सं० १६१५ भाद्रवा बुदी १३ । वे० सं० १०० । ख
भण्डार ।

३८८२. जिनशतकालङ्कार—समंतभट्ट । पत्र सं० १४ । आ० १३×७३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३० । ज भण्डार ।

३८८३. जिनस्तवनद्वात्रिंशिका..... । पत्र सं० ६ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६६ । ट भण्डार ।

विशेष—गुजराती भाषा सहित है ।

३८८४. जिनस्तुति—शोभनमुनि । पत्र सं० ६ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १८७ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

३८८५. जिनसहस्रनामस्तोत्र—आशाधर । पत्र सं० १७ । आ० ६×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ५२१, ११२६, १०७६) और हैं ।

३८८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ५७ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७) और है ।

३८८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८३३ कार्तिक बुदी ४ । वे० सं० ११४ । च
भण्डार ।

विशेष—पत्र ६ से आगे हिन्दी में तीर्थङ्करों की स्तुति और है ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ११६, ११७) और हैं ।

३८८८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३३) और है ।

३८८६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६३ आमोज बुदी ४ । वे० सं० २८ । ज भण्डार ।

विशेष—इसके प्रतिरिक्त लघु सामयिक, लघु स्वयंभूस्तोत्र, लघुसहस्रनाम एवं चैत्यबंदना भी है । अंकुरा-रोपण मंडल का चित्र भी है ।

३८८७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १६५३ । वे० सं० ४७ । ज भण्डार ।

विशेष—संवत् सोल १६५३ त्रेयनावर्ष श्रीमूलसंधे भ० श्री विद्यानन्दि तत्पट्टे भ० श्री मल्लिभूषणतत्पट्टे भ० श्री लक्ष्मीचंद तत्पट्टे भ० श्रीवीरचंद तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्री प्रभाचन्द्र तत्पट्टे भ० वादिचंद्र तेषामध्ये श्री प्रभाचन्द्र चेली बाइ तेजमती उपदेशनार्थ बाइ अजीतमती नारायणाग्रामे इदं सहस्रनाम स्तोत्रं निजकर्म धयार्थं लिखितं ।

इसी भण्डार से एक प्रति (वे० सं० १८६) और है ।

३८६१. जिनसहस्रनामस्तोत्र—जिनसेनाचार्य । पत्र सं० २८ । आ० १२×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ५३२, ५४३, १०६४, १०६८) और हैं ।

३८६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ३१ । ग भण्डार ।

३८६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६२ । ले० काल × । वे० सं० ११७ क । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ११६, ११८) और हैं ।

३८६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६०३ आमोज मुदी १३ । वे० सं० १६५ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२५) और है ।

३८६५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० सं० २६६ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६७) और है ।

३८६६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० ३२० । ब्य भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१६) और है ।

३८६७. जिनसहस्रनामस्तोत्र—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सं० ४ । आ० १२३×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८ । घ भण्डार ।

३८६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १७२६ आषाढ बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ८ । झ भण्डार ।

विशेष—पहले गद्य हैं तथा अन्त में ५२ श्लोक दिये हैं ।

अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इत श्रीसिद्धसेनद्विवाकरमहाकवीश्वरविरचितं श्रीसहस्रनामस्तोत्रसंपूर्णं । दुर्गे-जन्मीन्द्र से जोधराज गोदोका ने ग्रन्थपाठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

३६६६. जिनसहस्रनामस्तोत्र । पत्र सं० २६ । आ० ११३×१५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८११ । क भण्डार ।

३६००. जिनसहस्रनामस्तोत्र । पत्र सं० ४ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६ । घ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त निम्नपाठ और है— घंटाकरण मंत्र, जिनपंजीरस्तोत्र पत्रों के बीचों किनारों पर मुन्दर बेलबूटे हैं । प्रति दर्शनीय है ।

३६०१. जिनसहस्रनामटीका । पत्र सं० १२१ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३ । क भण्डार ।

विशेष—यह पुस्तक ईश्वरदास ठोलिया की थी ।

३६०२. जिनसहस्रनामटीका—श्रुतसागर । पत्र सं० १८० । आ० १२×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १६५८ आषाढ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १६२ । क भण्डार ।

३६०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ से १६४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८१० । क भण्डार ।

३६०४. जिनसहस्रनामटीका—अमरकीर्ति । पत्र सं० ८१ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८८४ पौष सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १६१ । अ भण्डार ।

३६०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १७२५ । वे० सं० २६ । घ भण्डार ।

विशेष—बंध गोपालपुरा में प्रतिलिपि हुई थी ।

३६०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । क भण्डार ।

३६०७. जिनसहस्रनामटीका । पत्र सं० ७ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८२२ श्रावण । पूर्ण । वे० सं० ३०६ । अ भण्डार ।

३६०८. जिनसहस्रनामस्तोत्रभाषा—नाथूराम । पत्र सं० १६ । आ० ७×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६५६ । ले० काल सं० १६८४ चैत्र सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० २१० । क भण्डार ।

३६०९. जिनोपकारस्मरण । पत्र सं० १३ । आ० १२½×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७ । क भण्डार ।

३६१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २१२ । ङ भण्डार ।

३६११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ७ प्रतियां (वे० सं० १०७ से ११३ तक) और हैं ।

३६१२. एमोकारादिपाठ..... । पत्र सं० ३०४ । आ० १२×७^३ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८८२ ज्येष्ठ सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २३३ । ङ भण्डार ।

विशेष—११८८ बार एमोकार मन्त्र लिखा हुआ है । अन्त में द्यान्तराय कृत समाधि मरण पाठ तथा २१८ बार श्रीमद्वृषभादि वर्द्धमानांतेभ्योनमः । यह पाठ लिखा हुआ है ।

३६१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २३४ । ङ भण्डार ।

३६१४. एमोकारस्तवन..... । पत्र सं० १ । आ० ६^३×४^३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६३ । अ भण्डार ।

३६१५. तकाराक्षरीस्तोत्र..... । पत्र सं० २ । आ० १२^३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०३ । अ भण्डार ।

विशेष—स्तोत्र की संस्कृत में व्याख्या भी दी हुई है । ताता ताती ततेतां ततति ततता ताति तातांता तता इत्यादि ।

३६१६. तीसचौबीसीस्तवन । पत्र सं० ११ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १७५८ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २७६ । ङ भण्डार ।

३६१७. दलालीनी सज्जाय..... । पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २१३७ । अ भण्डार ।

३६१८. देवतास्तुति—पद्मनंदि । पत्र सं० ३ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६७ । ट भण्डार ।

३६१९. देवागमस्तोत्र—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं० ४ । आ० १२×५^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १७६५ माघ सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०८) और है ।

३६२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८६६ बैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १६६ । च भण्डार ।

विशेष—अभयचंद साह ने सवाई जयपुर में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १६४, १६५) और हैं ।

३६२१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १८७१ ज्येष्ठ सुदी १३। वे० सं० १३४। झ
भण्डार।

३६२२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १६२३ बैशाख बुदी ३। वे० सं० ७६। ज
भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७७) और है।

३६२३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १७२५ फागुन बुदी १०। वे० सं० ६। झ
भण्डार।

विशेष—गंडे दीनाजी ने सांगानेर में प्रतिलिपि की थी। साह जोधराज गोदीका के नाम पर स्याही पोत
दी गई है।

३६२४. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७। ले० काल X। वे० सं० १८१। झ भण्डार।

३६२५. देवागमस्तोत्रटीका—आचार्य वसुनंदि। पत्र सं० २५। प्रा० १३X५ इंच। भाषा—
संस्कृत। विषय—स्तोत्र (दर्शन)। २० काल X। ले० काल सं० १५५६ भाद्रवा सुदी १२। पूर्ण। वे० सं० १२३।
झ भण्डार।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १५५६ भाद्रपद सुदी २ श्री मूलसंधे नंदाग्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्रीकुंबकुंदाचार्यान्वये
भट्टारक श्री पद्मनंदि देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शुभचन्द्र देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचंद्रदेवास्तत्शिष्य मुनि श्रीरत्नकीर्ति-
देवास्तत्शिष्य मुनि हेमचंद्र देवास्तदाग्नाये श्रीपथावास्तव्ये खण्डेलवालान्वये बीजुबामोचे सा. मदन भार्या हरिसिणी पुत्र
सा. परिसराम भार्या भषी एतैसास्त्रमिदं लेखयित्वा ज्ञानपात्राय मुनि हेमचन्द्राय भक्त्याविधिना प्रदत्तं।

३६२६. प्रति सं० २। पत्र सं० २५। ले० काल सं० १६४४ भाद्रवा बुदी १२। वे० सं० १६०। ज
भण्डार।

विशेष—कुछ पत्र पानी में थोड़े गल गये हैं। यह पुस्तक पं० फतेहलालजी की है ऐसा लिखा हुआ है।

३६२७. देवागमस्तोत्रभाषा—जयचंद्र झाषड़ा। पत्र सं० १३४। प्रा० १२X७ इंच। भाषा—
हिन्दी। विषय—न्याय। २० काल सं० १८६६ चैत्र बुदी १४। ले० काल सं० १६३८ माह सुदी १०। पूर्ण। वे० सं०
३०६। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१०) और है।

३६२८. प्रति सं० २। पत्र सं० ५ मे ८। ले० काल सं० १८६८। वे० सं० ३०६। झ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०८) और है।

३६२६. देवागमस्तोत्रभाषा। पत्र सं० ४। आ० ११×७३ इंच। भाषा-हिन्दी पद्य। विषय-स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। (द्वितीय परिच्छेद तक) वे० सं० ३०७। क भण्डार।

विशेष—न्याय प्रकरण दिया हुआ है।

३६३०. देवाप्रभस्तोत्रवृत्ति—विजयसेनसूरि के शिष्य अणुभा। पत्र सं० ६। आ० ११×८ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १८६४ ज्येष्ठ सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० १६६। क भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

३६३१. धर्मचन्द्रप्रबन्ध—धर्मचन्द्र। पत्र सं० १। आ० ११×४३ इंच। भाषा-प्राकृत। विषय-स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०७२। अ भण्डार।

विशेष—पूरी प्रति निम्न प्रकार है—

वीतरागायनमः। साटा छंद—

सव्वगो सददं तिम्राल दिसऊ सव्वत्थ वत्थुगंदी।
विस्सचक्खुरो स आ अविस्सऊ जो ईस भाऊ समी।
सम्मदंसरणणसञ्चरिअदोईसो मुणीणां गमो पत्ताणां
त चउट्टु सविमलो सिद्धो बसं कुज्जओ ॥१॥

विज्जुमाला छंद—

देवाणां सेवा काओणां बाणीए अंबाडाऊणां।
गुरुणां दो साराहीत्ताणां विज्जुमाला सोहीआणां ॥२॥

भुजंगप्रयात छंद—

वरं मूलसंधे बलात्कारणो सरस्सत्तिगच्छे पभंदोपयणो।
वरो तस्स सिस्सो धम्मंदु जीओ बुहो चारुचारित्त भूअंगजीओ ॥३॥

आर्याछंद—

सअल कलापव्वीणो लीणो परमागमस्स सत्थम्मि।
अवि अजण उट्टारो धम्मअदो जओ मुणिदो ॥४॥

कामावतारछंद—

मिच्छाक अकलेण आईसरेण आइट्टिसुष्णण पव्वज्जभिगण ॥१॥
सिस्साण माणेण सत्थाण दाणेण धम्मोपएसेण बूहाणरजेण ॥२॥
मिच्छ.....तप्पस्ससूरेण दूममत केडेण सुअव्वपूरेण ॥३॥
अव्वारण अव्वेण लोआण लोएण भाणणि मूहेण कम्मह हूएण ॥४॥
जिसोइ मादेण कामाअप्रारेण इंदीकदूरेण मोक्खवक्करतेण ॥५॥

जत्ताचंदेजराण भव्वाज्जरोभाए भत्ताजईभाए कत्तासुहभए ॥६॥

धम्मदुकंदेए सद्धम्मचंदेए एम्मोत्थुकारेए भत्तिव्वभारेए ॥

त्पुउ अरिट्ठे ए रोमीवि तित्थेए दासेए बूहेए संकुज्जभत्तेए ॥८॥

द्वात्रिंशत्यत्र कमलबंधः ॥

भार्याछंद—

कोहो लोहोचत्तो भत्तो अजईए सासणे लीणो ।

मा अमोहवि स्त्रीणो मारत्थी कंकणो छेसी ॥६॥

भुजंगप्रयात्तछंद—

सुचित्तो वितित्तो विभामो जईसो सुसीलो सुलीलो सुसोहो विईसो ।

सुधम्मो सुरम्मो सुकम्मो सुसीसो विरामो विमामो विचिट्ठो विमोसो ॥१०॥

भार्याछंद—

सम्मद्दसणणाणं सञ्चारित्तं तहे बसु णाणो ।

चरइ चरावइ धम्मो चंदो अविपुष्ण विक्खामो ॥११॥

भौतिकदामछंद—

तिलंग हिमाचल मालव अंग वरव्वर केरल कण्णड वंग ।

तिलात्त कलिग कुरंगडहाल करण्डम गुज्जर डंड तमाल ॥१२॥

मुपोट अवंति किरात अकीर मुत्तुक्क तुरुक्क बराड सुवीर ।

मस्त्यल दक्खण पूरवदेस मुणागवच्चाल मुकुंभ लसेस ॥१३॥

चऊड गऊड मुकंकणलाट, सुबेट सुभोट सुदव्विड राट ।

सुदेस विदेसहं आचइ राम, विवैक विचक्खण पूजइ पाअ ॥१४॥

मुचक्कल पीणपमोहरि णारि, रणज्भण णोउर पाइ विधारि ।

सुविव्वम अंति अहाउ विभाउ, मुगावइ गीउ मणोहरसाउ ॥१५॥

सुउज्जल मुत्ति अहीर पवाल, सुपूरउ णिम्मल रंगिहि बाल ।

चउक्क विउणारि धम्मविचंद बधाम्मउ अक्खहि वारु सुभंद ॥१६॥

भार्याछंद—

जइ जणदिसिवर सहिमो, सम्मदिट्ठि साव आइ परि आरिउ ।

जिणधम्मभवणत्वंभो विस अंख अंकरो जमो जअइ ॥१०॥

स्रग्विणीछंद—

जत्त पत्तिट्टु बिबाइ उद्धारकं सिस्स सत्थाण दाणाभरो माणकं ।
धम्मणी राणधारा ए भव्वाणकं चारुसस्स एउ द्वारणिण्णादकं ॥१८॥
छद्दा अग्गली भावणाभावए, दस्सधम्मा वरा सम्पदा पालए ।
चारु चारित्तहिं भूसिओ विग्गहो, धम्मचंदो जओ जित्त इदिग्गहो ॥१९॥

पद्यछंद—

सुरणर खगचरखचर चारु चन्चि अकम जिणवर ।
चरण कमलहि अघरण सरण गोयम जइ जइवर ।
पोसि अवित्तर धम्म सोसि अक्कमपबलतर ।
उद्धारी कयसमि वग्गभव्व चातक जलधर ।
वम्मह सप्प दप्प हरणवर समत्थ तारण तरण ।
जय धम्मधुरंधर धम्मचंद सयलसंध मंगलकरण ॥२०॥

इति धर्मचन्द्रप्रबंध समाप्तः ॥

३६३२. नित्यपाठसंग्रह.....। पत्र सं० ७ । आ० ८३×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अमूर्ण । वे० सं० ८२० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

बडा दर्शन—	संस्कृत	—
छोटा दर्शन—	हिन्दी	बुधजन
भूतकाल चौबीसी—	”	×
पंचमंगलपाठ—	”	रूपचंद (२ मंगल है)
अभिषेक विधि—	संस्कृत	×

३६३३. निर्वाणकाण्डगाथा.....। पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तवन ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५९५ । अ भण्डार ।

विशेष—महावीर निर्वाण कल्याणक पूजा भी है ।

३६३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३७२ । अ भण्डार ।

३६३५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८८४ । वे० सं० १८७ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८८) और है ।

३६३६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २ । ले० काल X । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार ३ प्रतियां (वे० सं० १३६, २५६, २५६/२) और हैं ।

३६३७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० सं० ४०३ । व्य भण्डार ।

३६३८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० सं० १८६३ । ट भण्डार ।

३६३९. निर्वाणकाण्डटीका..... । पत्र सं० २४ । मा० १०X५ इंच । भाषा—प्राकृत संस्कृत । विषय—
स्तवन । १० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६६ । ख भण्डार ।

३६४०. निर्वाणकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ३ । मा० ६X६ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—स्तवन । १० काल सं० १७४१ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३७५ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३७३, ३७४) और हैं ।

३६४१. निर्वाणभक्ति..... । पत्र सं० २४ । मा० ११X७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १०
काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३८२ । क भण्डार ।

३६४२. निर्वाणभक्ति..... । पत्र सं० ६ । मा० ६३X५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । १०
काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २०७५ । ट भण्डार ।

विशेष—१६ पद्य तक है ।

३६४३. निर्वाणसप्तशतीस्तोत्र..... । पत्र सं० ६ । मा० ८X४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तवन । १० काल X । ले० काल सं० १६२३ आसोज बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० । ज भण्डार ।

३६४४. निर्वाणस्तोत्र । पत्र सं० ३ से ५ । मा० १०X४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
१० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २१७५ । ट भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका दो हुई है ।

३६४५. नेमिनरेन्द्रस्तोत्र—जगन्नाथ । पत्र सं० ८ । मा० ६३X५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । १० काल X । ले० काल सं० १७०४ भाद्रपद बुद. २ । पूर्ण । वे० सं० २३२ । व्य भण्डार ।

विशेष—पं० दामोदर ने शेरपुर में प्रतिलिपि की थी ।

३६४६. नेमिनाथस्तोत्र—पं० शाली । पत्र सं० १ । मा० ११X५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । १० काल X । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । वे० सं० ३४० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । द्वयक्षरी स्तोत्र है । प्रदर्शन योग्य है ।

३६४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल X । वे० सं० १८३० । ट भण्डार ।

३६४८. नेमिस्तवन—ऋषि शिव । पत्र सं० २ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० १२०८ । अ भण्डार ।

विशेष—बीस तोर्थङ्कर स्तवन भी है ।

३६४९. नेमिस्तवन—जितसांगरगणी । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१५ । अ भण्डार ।

विशेष—दूसरा नेमिस्तवन और है ।

३६५०. पञ्चकल्याणकपाठ—हरचंद्र । पत्र सं० १ । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३८ । छ भण्डार ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न है—

प्रारम्भ—

कल्याण नायक नमौ, कल्याण कुरुह कुलकंद ।

कल्याण दुर कल्याण कर, बुधि कुल कमल दिनंद ॥१॥

मंगल नायक वंदिकै, मंगल पंच प्रकार ।

वर मंगल मुझ दीजिये, मंगल वरनन सार ॥२॥

अन्तिम—धत्त छंद—

यह मंगल माला सब जनविधि है,

सिख साला गल में धरनी ।

बाला अध तरुन सब जग कौ,

सुख समूह की है भरनी ॥

मन वच तन अधान करै गुन,

तिनके चहुंगति दुख हरनी ॥

ताते भविजन पढि कढि जगते,

पंचम गति वामा वरनी ॥११६॥

दीहा—

व्योम अंगुल न नापिये, गनिये मघवा धार ।

उडगन मित भू पैडन्यौ, त्यो गुन वरने सार ॥११७॥

तीनि तीनि वसु चंद्र, संवतसर के अंक ।

जेष्ठ शुक्ल सप्तम दिवस, पूरन पढौ निसंक ॥११८॥

॥ इति पंचकल्याणक संपूर्ण ॥

३६५१. पञ्चनमस्कारस्तोत्र—आचार्य विश्वानंदि । पत्र सं० ४ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा-
संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ फागुण । पूर्ण । वे० सं० ३५ । अ भण्डार ।

३६५२. पञ्चमंगलपाठ—रूपचंद्र । पत्र सं० ६ । आ० १२३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८४४ कार्तिक सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ५०२ ।

विशेष—ग्रन्थ में तीस चौबीसी के नाम भी दिये हुये हैं । पं० खुसालचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ६५७, ७७१, ६६०) और हैं ।

३६५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६३७ । वे० सं० ४१४ । क भण्डार ।

३६५४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ३६४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति और है ।

३६५५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८८६ आसोज सुदी १५ । वे० सं० ६१८ । च
भण्डार ।

विशेष—पत्र ४ चौथा नहीं है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३६) और है ।

३६५६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३६) और है ।

३६५७. पंचस्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० ५३ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१८ । अ भण्डार ।

विशेष—पांचों ही स्तोत्र टीका सहित हैं ।

स्तोत्र	टीकाकार	भाषा
१. एकीभाव	नागचन्द्र सूरि	संस्कृत
२. कल्याणमन्दिर	हर्षकीर्ति	"
३. विषापहार	नागचन्द्रसूरि	"
४. भूपालचतुर्विंशति	आशाधर	"
५. सिद्धिप्रियस्तोत्र	—	"

३६५८. पंचस्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० २४ । आ० ९×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४०० । अ भण्डार ।

३६५९. पंचस्तोत्रटीका..... । पत्र सं० ५० । आ० १२×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २००३ । ट भण्डार ।

विशेष—भक्तामर, विषापहार, एकीभाव, कल्याणमंदिर, भूपालचतुर्विंशति इन पांच स्तोत्रों की टीका है।

३६६०. पद्मावत्यष्टकवृत्ति—पार्श्वदेव । पत्र सं० १५ । आ० ११×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६७ । पूर्ण । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम—अस्यायां पार्श्वदेवविरचितायां पद्मावत्यष्टकवृत्तौ यत् किमप्यबंधयति तत्सर्वं सर्वाभिः श्रंतव्यं देवनाभिरपि । वर्षाणां द्वादशभिः शतैर्गतेस्तुत्तरैरियं वृत्ति वैशाखे सूर्यदिने समाप्ता शुक्लपंचम्यां अस्याक्षरगणनातः पंचगतानि जातानिद्राविंशदक्षराणि वासदनुष्यद्यं दसा.प्रायः ।

इति पद्मावत्यष्टकवृत्तिसमाप्ता ।

३६६१. पद्मावतीस्तोत्र..... । पत्र सं० १५ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२ । ज भण्डार ।

विशेष—पद्मावती पूजा तथा शान्तिनाथस्तोत्र, एकीभावस्तोत्र और विषापहारस्तोत्र भी हैं ।

३६६२. पद्मावती की ढाल..... । पत्र सं० २ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८० । अ भण्डार ।

३६६३. पद्मावतीदण्डक..... । पत्र सं० १ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५१ । अ भण्डार ।

३६६४. पद्मावतीसहस्रनाम..... । पत्र सं० १२ । आ० १०×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १६०२ । पूर्ण । वे० सं० ६६५ । अ भण्डार ।

विशेष—शान्तिनाथाष्टक एवं पद्मावती कवच (मंत्र) भी दिये हुये हैं ।

३६६५. पद्मावतीस्तोत्र..... । पत्र सं० ६ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १०३२, १८६८) और हैं ।

३६६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६३३ । वे० सं० २६४ । ख भण्डार ।

३६६७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । च भण्डार ।

३६६८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ४२६ । छ भण्डार ।

३६६९. परमज्योतिस्तोत्र—बनारसीदास । पत्र सं० १ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२११ । अ भण्डार ।

३६७०. परमात्मराजस्तवचन—पद्मनंदि । पत्र सं० २ । आ० ६×५ $\frac{३}{४}$ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३ । झ भण्डार ।

३६७१. परमात्मराजस्तोत्र—५० सकलक्रीत्ति । पत्र सं० ३ । पा० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—स्तोत्र । १० काल × । ने० काल × । पूर्ण । वै० मं० ६६५ । अ भण्डार ।

अथ परमान्मराज स्तोत्र लिख्यते

यन्नामसंस्तवफलात् महता महत्यप्यष्टौ, विशुद्धय इहाशु भवन्ति पूर्णाः ।
सर्वार्यसिद्धजनकाः स्वचिदेकमूर्ति, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥१॥
यद्ग्रहानवज्जहननान्महतां प्रयाति, कर्माद्रयोति विषमाः शतचूर्णतां च ।
मंतातिगावरगुणाः प्रकटाभवेयुर्भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥२॥
यन्पावबोधकलनात्त्रिजगत्प्रदीपं, श्रीकेबलोदयमनंतमुखाब्धिमाशु ।
संतः श्रयन्ति परमं भुवनार्च्यं वंद्यं, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥३॥
यद्दर्शनेनमुनयो मलयोगलीना, ध्याने निजात्मन इह त्रिजगत्पदार्थान् ।
पश्यन्ति केवलदृशा स्वकराश्रितान्वा, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥४॥
यद्भ्रावनादिकरणाद्भुवनाशनाच्च, प्रगश्यन्ति कर्मरिपवोभवकोटि जाताः ।
अम्यन्तरेऽत्रविबिधाः सकलार्द्धयः स्युर्भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥५॥
सन्नाममात्रजपनात् स्मरणाच्च यस्य, दुःकर्मदुर्मलचयाद्विमला भवन्ति
दशा जिनेन्द्रगणभृत्पदं लभन्ते, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥६॥
यं स्वान्तरेतु विमलं विमलाविवृद्धय, शुक्लेन तत्त्वमसमं परमार्थरूपं ।
अहंपदं त्रिजगतां शरणां श्रयन्ते, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥७॥
यद्ग्रहानशुक्लपविनाखिलकर्मशैलान्, हत्वा समाप्यशिवदाः स्तववन्दनार्त्ताः ।
सिद्धासदष्टगुणभूषणभाजनाः स्युर्भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥८॥
यस्याप्तये मुग्गिनो विधिनाश्रन्ति, ह्याचारयन्ति यमिनो वरपञ्चभेदान् ।
प्राचारसारजनितान् परमार्थबुद्ध्या, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥९॥
यं ज्ञानुमात्मसुविदो यत्तपाठकाश्च, सर्वांगपूर्वजलधेर्लघु यांति पारं ।
अन्यान्नयन्तिशिवदं परतत्त्वबीजं, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥१०॥
ये साधयन्ति वरयोगवलेन नित्यमध्यात्ममार्गनिरतावनपर्वतादौ ।
श्रीमाधवः शिवगतेः करमं तिरम्भं, भक्त्यास्तुवेतमनिशं परमात्मराजं ॥११॥
रागदोषमलिनोऽपि निर्मलो, देहवानपि च देह वञ्जितः ।
कर्मवानपि कुकर्मदूरगो, निश्चयेन भुवि यः स नन्दतु ॥१२॥

जन्ममृत्युकलितो भवांतक एक रूप इह थाप्यनेकधा ।
 व्यक्त एव यमिनां न रागिणां, यश्चिदात्मक इहास्तुनिर्मलः ॥१३॥
 यत्नत्वं ध्यानगम्यं परपदकर तीर्थनाथादिसेव्यं ।
 कर्मघ्नं ज्ञानदेहं भवभयमथन ज्येष्ठमानंदमूलं ॥
 अंतातीतं गुणाप्तं रहितत्रिधिगणं सिद्धसादृश्यरूपं ।
 तद्देवात्मात्मतत्त्वं शिवमुखगतये स्तौभि युक्त्याभजेहं ॥१४॥
 पठति नित्यं परमात्मराजमहास्तवं ये विबुधाः किल मे ।
 तेषां चिदात्माविरतो गद्वरो ध्यानी गुणी स्यात्परमात्करूपः ॥१५॥
 इत्थं यो वारवारं गुणगणारचनैर्वदितः संस्तुतोऽस्मिन्
 सारे ग्रन्थे चिदात्मा समगुणजलधिः सोस्तुभे व्यक्तरूपः ।
 ज्येष्ठः स्वध्यानदाताखिलविधिवपुषां हानये चित्तशुद्धये
 मन्मत्यैवो धकर्ता प्रकटनिजगुणो धैर्यशाली च शुद्धः ॥१६॥

इति श्री सकलकीर्तिभट्टारकविरचितं परमात्मराजस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

३६७२. परमानंदपंचविंशति..... । पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३ । अ भण्डार ।

३६६३. परमानंदस्तोत्र..... । पत्र सं० ३ । आ० ७^१/_२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३० । अ भण्डार ।

३६७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० २६८ । अ भण्डार ।

३६७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० २१२ । च भण्डार ।

विशेष—फूलचन्द्र विन्दायका ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २११) और है ।

३६७६. परमानंदस्तोत्र..... । पत्र सं० ३ । आ० ११^१/_२×७^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल सं० १६६७ फागुण बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ४३८ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ भी दिया हुआ है ।

३६७७. परमार्थस्तोत्र..... । पत्र सं० ४ । आ० ११^३/_४×५^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०४ । ख भण्डार ।

विशेष—सूर्य की स्तुति की गयी है । प्रथम पत्र में वृद्ध लिखने में रह गया है ।

३६७८. पाठसंग्रह पत्र सं० ३६ । आ० ४३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६२८ । अ भण्डार ।

निम्न पाठ हैं — जैन गायत्री उर्फ वज्ररत्नर, शान्तिस्तोत्र, एकीभावस्तोत्र, रामोकारकल्प, न्हाव ए

३६७९. पाठसंग्रह । पत्र सं० १० । आ० १२×७^३/_४ इञ्च । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०६८ । अ भण्डार ।

३६८०. पाठसंग्रह—संग्रहकर्त्ता-जैतराम बाफना । पत्र सं० ७० । आ० ११^३/_४×७^३/_४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६१ । क भण्डार ।

३६८१. पात्रकेशरीस्तोत्र । पत्र सं० १७ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३४ । छ भण्डार ।

विशेष—५० श्लोक है । प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

३६८२. पार्थिवेश्वरचिन्तामणि । पत्र सं० ७ । आ० ८^३/_४×४^३/_४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६० भादवा सुदी ८ । वे० सं० २३४ । ज भण्डार ।

विशेष—वृन्दावन ने प्रतिलिपि को थी ।

३६८३. पार्थिवेश्वर । पत्र सं० ३ । आ० ७^३/_४×४^३/_४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-वैदिक माहित्य । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १५४४ । पूर्ण । अ भण्डार ।

३६८४. पार्श्वनाथ पद्मावतीस्तोत्र । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

३६८५. पार्श्वनाथ लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्र सं० १ । आ० ६×४^३/_४ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २९४ । ख भण्डार ।

३६८६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६२ । क भण्डार ।

३६८७. पार्श्वनाथ एवं वर्द्धमानस्तवन । पत्र सं० १ । आ० १०×४^३/_४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । छ भण्डार ।

३६८८. पार्श्वनाथस्तोत्र । पत्र सं० ३ । आ० १०^३/_४×१^३/_४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४३ । अ भण्डार ।

विशेष—लघु सामायिक भी है ।

३६८६. पार्श्वनाथस्तोत्र.....। पत्र सं० १२ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५३ । अ भण्डार ।

विशेष—मन्त्र सहित स्तोत्र हैं । अक्षर सुन्दर एवं मोटे हैं ।

३६६८. पार्श्वनाथस्तोत्र.....। पत्र सं० १ । आ० १२^३×७^३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । अ भण्डार ।

३६६९. पार्श्वनाथस्तोत्र। पत्र सं० १ । आ० १०^३×१ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । अ भण्डार ।

३६६२. पार्श्वनाथस्तोत्रटीका.....। पत्र सं० २ । आ० ११×५^३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४२ । अ भण्डार ।

३६६३. पार्श्वनाथस्तोत्रटीका.....। पत्र सं० २ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८७ । अ भण्डार ।

३६६४. पार्श्वनाथस्तोत्रभाषा—द्यानतराय । पत्र सं० १ । आ० १०×५^३ इंच । भाषा हिन्दी ।

विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५५ । अ भण्डार ।

३६६५. पार्श्वनाथाष्टक.....। पत्र सं० ४ । आ० १२×५ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति मन्त्र सहित है ।

३६६६. पार्श्वमहिम्नस्तोत्र—महामुनि राजसिंह । पत्र सं० ४ । आ० ११^३×६ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १६८७ । पूर्ण । वे० सं० ७७० । अ भण्डार ।

३६६७. प्रश्नोत्तरस्तोत्र.....। पत्र सं० ७ । आ० ८×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६ । अ भण्डार ।

३६६८. प्रातःस्मरणमंत्र.....। पत्र सं० १ । आ० ८^३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८६ । अ भण्डार ।

३६६९. भक्तामरपञ्जिका.....। पत्र सं० ८ । आ० १३×४ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल सं० १७८१ । पूर्ण । वे० सं० ३२८ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री हीरानन्द ने द्रव्यपुर में प्रतिलिपि की थी ।

४०००. भक्तामरस्तोत्र—मानतुंगाचार्य । पत्र सं० ८ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२०३ । अ भण्डार ।

४००१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १७२० । वे० सं० २६ । अ भण्डार ।

४००२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १७५५ । वे० सं० १०१५ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी अर्थ सहित है ।

४००३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० २२०१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति ताडपत्रीय है । आ० ५×२ इंच है । इसके अतिरिक्त २ पत्र पुट्टों की जगह है । २×१३ इंच चौड़े पत्र पर रामोकार मन्त्र भी है । प्रति प्रदर्शन योग्य है ।

४००४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १७५५ । वे० सं० १०१५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० ४४१, ६५६, ६७३, ८६०, ६२०, ६५६, ११३५, ११८६, १३६६) और है

४००५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८६७ पीष बुदी ८ । वे० सं० २५१ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हैं । मूल प्रति मथुरादास ने निमखपुर में लिखी तथा उदैराम ने टिप्पण किया । इसी भण्डार में तीन प्रतियां (वे० सं० १२८, २८८, १८५६) और हैं ।

४००६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ७४ । अ भण्डार ।

४००७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६ में ११ । ले० काल सं० १८७८ ज्येष्ठ बुदी ७ । अपूर्ण । वे० सं० ५४६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में १२ प्रतियां (वे० सं० ५३६ से ५४५ तथा ५४७ से ५५०, ५५२) और हैं ।

४००८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ७३८ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । इसी भण्डार में ७ प्रतियां (वे० सं० २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, ७३८, ७३९) और है ।

४००९. प्रति सं० १० । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८२२ चैत्र बुदी ६ । वे० सं० १३४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० १३४ (४) १३६, २२६) और है ।

४०१०. प्रति सं० ११ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १७० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार एक प्रति (वे० सं० २१५) और है ।

४०११. प्रति सं० १२ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० १७५ । ज भण्डार ।

४०१२. प्रति सं० १३ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८७७ पौष सुदी १ । वे० सं० २६३ । व्य
विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० २६६, ३३६, ५२५) और हैं ।

४०१३. प्रति सं० १४ । पत्र सं० ३ मे ३६ । ले० काल सं० १६३२ । अपूर्ण । वे० सं० २०१३ । ट

भण्डार ।

विशेष—इस प्रति में ५२ श्लोक हैं । पत्र १, २, ४, ६, ७, ९, १६ यह पत्र नहीं हैं । प्रति हिन्दी व्याख्या सहित है । इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १६३४, १७०४, १९६६, २०१४) और हैं ।

४०१४. भक्तामरस्तोत्रवृत्ति—ब्र० रायमल । पत्र सं० ३० । आ० ११३×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६६६ । ले० काल सं० १७६१ । पूर्ण । वे० सं० १०७६ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की टीका ग्रीवापुर में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में की गयी । प्रति कथा सहित है ।

४०१५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १७२४ आसोज बुदी ९ । वे० सं० २८७ । अ

भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४३) और है ।

४०१६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४० । ले० काल सं० १६११ । वे० सं० ५४४ । क भण्डार ।

४०१७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४६ । ले० काल × । वे० सं० ६५ । ग भण्डार ।

विशेष—फतेचन्द गंगवाल ने मन्नालाल कासलीवाल ने प्रतिलिपि कराई ।

४०१८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १७५४ पौष बुदी ८ । वे० सं० ५५७ । ड

भण्डार ।

४०१९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ४७ । ले० काल सं० १८३२ पौष सुदी २ । वे० सं० ६६ । छ

भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में पं० सवाईराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में ईसरदास की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी ।

४०२०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८७३ चैत्र बुदी ११ । वे० सं० १५ । ज

भण्डार ।

विशेष—हरिनारायण ब्राह्मण ने पं० कालूराम के पठनार्थ प्रादिनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

४०२१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ४८ । ले० काल सं० १६८८ फागुन बुदी ८ । वे० सं० २८ । व्य

भण्डार ।

विशेष—प्रगल्भ— संवत् १६८८ वर्षे फागुण बुदी ८ शुक्रवार नक्षत्र अनुराष व्यतिपात नाम जोगे महाराजाधिराज श्री महाराजाराव छत्रसालजी बूंदीराज्ये इदंपुस्तकं लिखाइतं । साह श्री स्योपा तत्पुत्र सहलाल तत् पुत्र साह श्री भगाराव भाई मनराज गोत्रे पटवोड जानी बघेरवान इदं पुस्तकं पुनिरुच्य दीयते । लिखतं जोसी नराइण ।

४०२८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १७६१ फागुण । वे० सं० ३०३ । अ भण्डार ।

४०२९. भक्तामरस्तोत्रटीका—हर्षकीर्त्तिसूरि । पत्र सं० १० । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ । अ भण्डार ।

४०२४ प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६४० । वे० सं० १६२५ । ट भण्डार ।

विशेष—इस टीका का नाम भक्तामर प्रदीपिका दिया हुआ है ।

४०२५. भक्तामरस्तोत्रटीका..... । पत्र सं० १२ । आ० १०×४½ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६१ । ट भण्डार ।

४०२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १८४४ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र चिरके हुये हैं ।

४०२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८७२ पौष बुदी १ । वे० सं० २१०६ । अ

भण्डार ।

विशेष—मन्नालाल ने शीतलनाथ के चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६८) भी है ।

४०२८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० ५६६ । क भण्डार ।

४०२९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १४६ ।

विशेष—३६वें काव्य तक है ।

४०३०. भक्तामरस्तोत्रटीका..... । पत्र सं० ११ । आ० १२½×८ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १६१८ चैत्र मुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १६१२ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम मांटे है । संस्कृत तथा हिन्दी में टीका दी हुई है । मंगरी मन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

अ भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०८२) भी है ।

४०३१. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र महित..... । पत्र सं० २७ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८४६ वैशाख बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० २८५ । अ भण्डार ।

विशेष—श्री नयनसागर ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । अन्तिम २ पृष्ठ पर उपसर्ग हर स्तोत्र दिया हुआ है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५१) और है ।

४०३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८१३ बैशाख सुदी ७ । वे० सं० १२६ । ख भण्डार ।

विशेष—गोविंदगढ़ में पुरुषोत्तमसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

४०३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० ६७ । ज्य भण्डार ।

विशेष—मन्त्रों के चित्र भी हैं ।

४०३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १८२१ बैशाख सुदी ११ । वे० सं० ८१ । ज्य भण्डार ।

विशेष—पं० सदाशिव के शिष्य गुलाब ने प्रतिलिपि की थी ।

४०३५. भक्तामरस्तोत्रभाषा—जयचन्द छाबड़ा । पत्र सं० ६४ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १८७० कार्तिक सुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ५४१ ।

विशेष—क भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५४२, ५४३) और हैं ।

४०३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १६६० । वे० सं० ५५६ । क भण्डार ।

४०३७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५५ । ले० काल सं० १६३० । वे० सं० ६५४ । च भण्डार ।

४०३८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १६०४ बैशाख सुदी ११ । वे० सं० १७६ । ज्य भण्डार ।

४०३९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २७३ । भू भण्डार ।

४०४०. भक्तामरस्तोत्रभाषा—हेमराज । पत्र सं० ८ । आ० ८३×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११२५ । अ भण्डार ।

४०४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८८४ माघ सुदी २ । वे० सं० ६४ । ग भण्डार ।

विशेष—दीवान अमरचन्द के मन्दिर में प्रतिलिपि की गयी थी ।

४०४२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ से १० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५५१ । ङ भण्डार ।

४०४३. भक्तामरस्तोत्रभाषा—गंगाराम । पत्र सं० २ से २७ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६७ । अपूर्ण । वे० सं० २००७ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है। पहिले मूल फिर गंगाराम कृत सबैया, हेमचन्द्र कृत पत्र, कहीं २ भाषा तथा इसमें प्रागे ऋद्धि मन्त्र महित है।

ग्रन्त में लिखा है— साहजी ज्ञानजी रामजी उनके २ पुत्र सोलालजी, लघु भ्राता चैनमुखजी ने ऋद्धि भागचन्द्रजी जतां को यह पुस्तक पुष्पार्थ दिया सं० १८७२ का साल में ककोड में रहे हैं।

४०४४. भक्तामरस्तोत्रभाषा..... । पत्र सं० ६ से १० । आ० १०×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १७८७ । अपूर्ण । वे० सं० १२६४ । अ भण्डार ।

४०४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८२८ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं० २३६ । अ भण्डार ।

विशेष—भूधरदास के पुत्र के लिये संभूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४०४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ६५३ । अ भण्डार ।

४०४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० १५७ । अ भण्डार ।

विशेष—अयपुर में पत्र.लाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४०४८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८०१ चैत्र बुदी १३ । वे० सं० २६० । अ भण्डार ।

४०४९. भक्तामरस्तोत्रभाषा । पत्र सं० ३ । आ० १०^३×७^३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५२ । अ भण्डार ।

४०५०. भूपालचतुर्विंशतिकास्तोत्र—भूपाल कवि । पत्र सं० ८ । आ० ६^३×४^३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८४३ । पूर्ण । वे० सं० ४१ । अ भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टब्बा टीका सहित है । अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३२३) और है ।

४०५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० २६८ । अ भण्डार ।

४०५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५७२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७३) है ।

४०५३. भूपालचतुर्विंशतिटीका—आशाधर । पत्र सं० १४ । आ० ६^३×४^३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १७७८ भादवा बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ६ । अ भण्डार ।

विशेष—श्रीं विनयचन्द्र के पठनार्थ पं० आशाधर ने टीका लिखी थी । पं० हीराचन्द्र के शिष्य सोलचन्द्र के पठनार्थ मौजमाबाद में प्रतिलिपि कराई गई ।

प्रशस्ति निम्न प्रकार है— संवत्सरे वसुमुनिसप्तन्दु (१७७८) मिते भाद्रपद कृष्णा द्वादशी तिथौ मौजमाबादनगरे श्रीमूलसंघे नद्याभनाये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकोत्तम श्री श्री १०८ देवेन्द्रकीर्तिजी कस्य शासनकारी बुधजी श्रीहीरानन्दजीकस्य शिष्येन विनयवता चोखचन्द्रेण स्वपठनार्थं लिखितेयं भूपाल चतुर्विंशतिका टीका विनयचन्द्रस्यार्थमित्याशाधरविरचिताभूपालचतुर्विंशते जिनेन्द्रस्तुतेष्टीका परिसमाप्ता ।

अ भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४०) और है ।

४०५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १५३२ मंगसिर सुदी १० । वे० सं० २३१ । अ भण्डार ।

विशेष— प्रशस्ति—सं० १५३२ वर्षे मार्ग सुदी १० गुरुवासरे श्रीघाटमपुरशुभस्थाने श्रीचन्द्रप्रभुचैत्यालय लिख्यते श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये.....।

४०५५. भूपालचतुर्विंशतिकास्तोत्रटीका—विनयचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२० ।

विशेष—श्री विनयचन्द्र नरेन्द्र द्वारा भूपाल चतुर्विंशति स्तोत्र रचा गया था ऐमा टीका की पुष्पिका में लिखा हुआ है । इसका उल्लेख २७वें पद्य में निम्न प्रकार है ।

यः विनयचन्द्रनामायतीवरो जनि समभूत । ललितचंद्रात् । उपशमइवोपक्षेपतेयमुपशमः साक्षान्मूर्तिमान् सः कथंभूतः सच्चकोरचन्द्रः संतः पंडिताः एव चकोराः तेषां प्रमोदवे द्वितीयश्चन्द्रः यस्यशुचि चरितं चरिदनोः शुचि च तच्चरितं च तच्चरण गीलं शुचि चरित चरिण्युः तस्य वाचो वाध्यः जगल्लोकाधिःवन्ति कथंभूतावावः अमृतगर्भा अमृतगर्भे यामां तास्तथोक्ताः शास्त्रसंदर्भगर्भाः शास्त्रसायां संवर्धः विस्ताराः शास्त्रसंदर्भास्तेगर्भे यासां तास्तासां ॥२७॥ इति विनयचन्द्रनरेन्द्र विरचितं भूपाल स्तोत्र समाप्तं ।

प्रारम्भ में टीकाकार का मंगलाचरण नहीं है । मूल स्तोत्र की टीका प्रारम्भ करदी गई है ।

४०५६. भूपालचौबीसीभाषा—पत्रालाल चौधरी । पत्र सं० २४ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६३० चैत्र सुदी ४ । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वे० सं० ५६१ । अ भण्डार ।

इसो भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६२) और है ।

४०५७. मृत्युमहोत्सव..... । पत्र सं० १ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३ । अ भण्डार ।

४०५८. महर्षिस्तवन..... । पत्र सं० ३१ से ७४ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८८ । अ भण्डार ।

४०५६. महर्षिस्तवन्.....। पत्र सं० २। आ० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०६३। अ भण्डार।

विशेष—ग्रन्थ में पूजा भी दी हुई है।

४०६०. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल सं० १८३१ चैत्र बुदी १४। वे० सं० ६११। अ भण्डार।

विशेष—संस्कृत में टीका भी दी हुई है।

४०६१. महामहिम्नस्तोत्र.....। पत्र सं० ४। आ० ८×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १६०६ फागुन बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ३११। ज भण्डार।

४०६२. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० ३१५। ज भण्डार।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है।

४०६३. महामहर्षिस्तवन्टीका.....। पत्र सं० २। आ० ११३×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४८। ज भण्डार।

४०६४. महालक्ष्मीस्तोत्र.....। पत्र सं० १०। आ० ८३×६३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६५। ख भण्डार।

४०६५. महालक्ष्मीस्तोत्र.....। पत्र सं० ६ मे ६। आ० ६×३३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—वैदिक साहित्य स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७८२।

४०६६. महावीराष्टक—भानुचन्द्र। पत्र सं० ४। आ० ११३×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७३। क भण्डार।

विशेष—इसी प्रति में त्रिनोदशोपकारस्मर स्तोत्र एवं आदिनाथ स्तोत्र भी हैं।

४०६७. महिम्नस्तोत्र.....। पत्र सं० ७। आ० ६×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६। क भण्डार।

४०६८. यमकाष्टकस्तोत्र—भ० अमरकीर्ति। पत्र सं० १। आ० १२×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १८२२ पीप बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० ५८६। क भण्डार।

४०६९. युगादिदेवमहिम्नस्तोत्र.....। पत्र सं० २ मे १४। आ० ११×७ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६४। ट भण्डार।

विशेष—प्रथम तीन पत्रों में पार्श्वनाथ स्तोत्र रघुनाथदास कृत अपूर्ण हैं। इसमें आगे महिम्नस्तोत्र है।

४०७०. राधिकानाममाला..... पत्र सं० १ । आ० १०३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७६६ । ट भण्डार ।
४०७१. रामचन्द्रस्तवन..... पत्र सं० ११ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३ । छ भण्डार ।
विशेष—अष्टम— श्रीसनत्कुमारसंहितायां नारदीक्तं श्रीरामचन्द्रस्तवराज संपूरणम् ॥ १०० पद्य है ।
४०७२. रामवतीसी—जगनकवि । पत्र सं० ६ । आ० ६३×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल सं० १७३५ प्रथम चैत्र बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० १५१० । ट भण्डार ।
विशेष—कवि पौहकरना (पुष्करना) जाति के थे । नरायणा में जट्ट व्यास ने प्रतिलिपि की थी ।
४०७३. रामस्तवन..... पत्र सं० ११ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २११२ । ट भण्डार ।
विशेष—११ से आगे पत्र नहीं हैं । पत्र नीचे की ओर से फटे हुए हैं ।
४०७४. रामस्तोत्र..... पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल सं० १७२५ फागुण सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ६५८ । छ भण्डार ।
विशेष—जोधराज गोदीका ने प्रतिलिपि करवायी थी ।
४०७५. लघुशान्तिस्तोत्र । पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१४६ । अ भण्डार ।
४०७६. लक्ष्मीस्तोत्र—पद्मप्रभदेव । पत्र सं० २ । आ० १३×९ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३ । अ भण्डार ।
विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०३६) और है ।
४०७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १४८ । छ भण्डार ।
विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४४) और है ।
४०७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १८२८ । ट भण्डार ।
विशेष—प्रति संस्कृत व्याख्या सहित है ।
४०७९. लक्ष्मीस्तोत्र..... पत्र सं० ४ । आ० ६×३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४२१ । अ भण्डार ।
विशेष—ट भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० २०६७) और है ।

४०८०. लघुस्तोत्र ... । पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । वे० सं० ३६६ । अ भण्डार ।

४०८१. वज्रपंजरस्तोत्र । पत्र सं० १ । आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६६८ । छ भण्डार ।

४०८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १६१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र में होम का मन्त्र है ।

४०८३. बद्धमानद्वात्रिंशिका—सिद्धसेन दिवाकर । पत्र सं० १२ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८६७ । ट भण्डार ।

४०८४. बद्धमानस्तोत्र—आचार्य गुणभद्र । पत्र सं० १२ । आ० ४ $\frac{१}{२}$ ×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल सं० १६३३ भासोज सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० १४ । अ भण्डार ।

विशेष—गुणभद्राचार्य कृत उन्नरपुराण की राजा भोगिक की स्तुति है तथा ३३ श्लोक है । संग्रहकर्ता श्री फतेहलाल शर्मा हैं ।

४०८५. बद्धमानस्तोत्र..... । पत्र सं० ५ । आ० ७ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ३ में आगे निर्वाणकाण्ड गाथा भी है ।

४०८६. वसुधारापाठ..... । पत्र सं० १६ । आ० ८×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६० । छ भण्डार ।

४०८७. वसुधारास्तोत्र..... । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ । ख भण्डार ।

४०८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७१ । छ भण्डार ।

४०८९. विद्यमानबीसतीर्थकरस्तवन—मुनि द्वीप । पत्र सं० १ । आ० ११×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६३३ ।

४०९०. त्रिपापहारस्तोत्र—धनंजय । पत्र सं० ४ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×६ । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल सं० १८१२ फागुण बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ६६६ ।

विशेष—संस्कृत टीका भी दी हुई है । इसकी प्रतिलिपि पं० मोहनदासजी ने अपने शिष्य शुभानीरामजी के पदनाथ श्रेमकरणजी की पुस्तक में बसई (बम्बई) नगर में ज्ञानिनाथ चैत्यालय में की थी ।

४०६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६७६ । क भण्डार ।

४०६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १५२ । ज भण्डार ।

विशेष—सिद्धिप्रियस्तोत्र भी है ।

४०६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १६११ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४०६४. विषापहारस्तोत्रटीका—नागचन्द्रसूरि । पत्र सं० १४ । आ० १०×४^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५ । अ भण्डार ।

४०६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ से १६ । ले० काल सं० १७७८ भादवा बुदी ६ । वे० सं० ८८६ ।

अ भण्डार ।

विशेष—मौजमाबाद नगर में पं० चोखचन्द ने इसकी प्रतिलिपि की थी ।

४०६६. विषापहारस्तोत्रभाषा—पन्नालाल । पत्र सं० ३१ । आ० १२^३/_४×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६३० फागुण सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६४ । क भण्डार ।

विशेष—सी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६५) और है ।

४०६७. विषापहारस्तोत्रभाषा—अचलकीर्त्ति । पत्र सं० ६ । आ० ६^३/_४×५^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८५ । ट भण्डार ।

४०६८. बीतरागस्तोत्र—हेमचन्द्राचार्य । पत्र सं० ९ । आ० ६^३/_४×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २५७ । छ भण्डार ।

४०६९. बीरछत्तीसी..... । पत्र सं० २ । आ० १०×४^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५० । अ भण्डार ।

४१००. बीरस्तवन..... । पत्र सं० १ । आ० ६^३/_४×४^३/_४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८७६ । पूर्ण । वे० सं० १२४८ । अ भण्डार ।

४१०१. वैराग्यगीत—महमत । पत्र सं० १ । आ० ८×३^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२६ । अ भण्डार ।

विशेष—'भूल्यो भमरा रे काई भमै' ११ अंतरे हैं ।

४१०२. षट्पाठ—बुधजन । पत्र सं० १ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १८५० । पूर्ण । वे० सं० ५३५ । अ भण्डार ।

४१०३. षट्पाठ.....। पत्र सं० ६ । आ० ४×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × ।
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७ । अ भण्डार ।

४१०४. शान्तिघोषणास्तुति.....। पत्र सं० २ । आ० १०×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल ... । ले० काल सं० १५६६ । पूर्ण । वे० सं० ८३४ । अ भण्डार ।

४१०५. शान्तिनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द्र । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—स्तवन । २० काल सं० १८५६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३५ । अ भण्डार ।

विशेष—शान्तिनाथ का एक स्तवन और है ।

४१०६. शान्तिनाथस्तवन। पत्र सं० १ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।
२० काल > । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५६ । ट भण्डार ।

विशेष—शान्तिनाथ तीर्थङ्कर के पूर्वभव की कथा भी है ।

अन्तिमपद्य—

कुन्दकुन्दाचार्य विनती, शान्तिनाथ गुण हिय में धरे ।

रोग सोग संताप दूरे जाय, दर्शन दीठा नवनिधि ठाया ॥

इति शान्तिनाथस्तोत्रं संपूर्ण ।

४१०७. शान्तिनाथस्तोत्र—मुनिभद्र । पत्र सं० १ । आ० ६ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०७० । अ भण्डार ।

विशेष—अथ शान्तिनाथस्तोत्र लिख्यते—

काव्य—

नाना विचित्रं भवदुःखराशि, नामा प्रकारं मोहाग्निपाशं ।

पापानि दोषानि हरन्ति देवा, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥१॥

संसारमध्ये मिथ्यात्वचिन्ता, मिथ्यात्वमध्ये कर्माणिबंध ।

ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥२॥

कामं च क्रोधं मायाविलाभं, चतुःकषायं इह जीव बंधं ।

ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥३॥

नोद्वाक्यहीने कठिनस्यचिन्ते, परजीवनिदा मनसा च वाचा ।

ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥४॥

चारित्रहीने नरजन्ममध्ये, सम्यक्स्वरत्नं परिपालनीयं ।

ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥५॥

जातस्य तरणं युक्तस्य वचनं, हो शान्तिजीवं बहुजन्मदुःखं ।
 ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥६॥
 परद्रव्यचोरी परदारसेवा, शकादिकक्षा अजनुत्यबंधं ।
 ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥७॥
 पुत्राणि मित्राणि कलित्रदंदं, इहदंदमध्ये बहुजीवबंधा ।
 ते बंध छेदन्ति देवाधिदेवं, इह जन्मशरणं तव शान्तिनाथं ॥८॥

जयति पठति नित्यं श्री शान्तिनाथादिशांति

स्तवनमधुरवाणी पापतापोपहारी ।

कृतमुनिभद्रं सर्वकार्येषु नित्यं

..... ॥६॥

इतिश्रीशान्तिनाथस्तांत्र संपूर्ण । शुभम् ॥

४१०८. शान्तिनाथस्तोत्र.....। पत्र सं० २ । आ० ६×४^३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७१६ । अ भण्डार ।

४१०९. शान्तिपाठ.....। पत्र सं० ३ । आ० ११×५^३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०
 काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

४११०. शान्तिविधान.....। पत्र सं० ७ । आ० ११^३×४^३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र ।
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०३१ । अ भण्डार ।

४१११. श्रीपतिस्तोत्र—चैनमुखजी । पत्र सं० ६ । आ० ८×६^३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र ।
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७१२ । छ भण्डार ।

४११२. श्रीस्तोत्र.....। पत्र सं० २ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । २०
 काल × । ले० काल सं० १६०४ चैत बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १८०४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४११३. सप्तनयविचारस्तवन.....। पत्र सं० ८ । आ० १२×५^३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
 स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३५ ।

विशेष—३७ पद्य हैं ।

४११४. समवशरणस्तोत्र.....। पत्र सं० ८। आ० १२×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र।
२० काल ×। ले० काल सं० १७६८ फागुन सुदी १५। पूर्ण। वे० सं० २६६। छ् भण्डार।

विशेष—हिन्दी टिप्पा टीका सहित है।

प्रारम्भ—

वृषभाद्यानभिवंच्यान् वंदित्वा वीरपश्चिमजिनेन्द्रान्।

भक्त्या नतोत्तमांगः स्तोष्ये तन्ममवशरणणि ॥२॥

४११५. समवशरणस्तोत्र—विष्णुसेन मुनि। पत्र सं० २ से ६। आ० ११^१/_२×५ इंच। भाषा—
संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६७। अ भण्डार।

४११६. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ७७८। अ भण्डार।

४११७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १७८५ माघ बुदी ५। वे० सं० ३०५। अ
भण्डार।

विशेष—पं० देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य पं० मनोहर ने प्रतिलिपि की थी।

४११८. संभवजिनस्तोत्र—मुनि गुणनंदि। पत्र सं० २। आ० ८^१/_२×४^३/_२ इंच। भाषा—संस्कृत।
विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७६०। छ् भण्डार।

४११९. समुदायस्तोत्र.....। पत्र सं० ५३। आ० १३×८^३/_२ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र।
२० काल ×। ले० काल सं० १८८७। पूर्ण। वे० सं० ११५। घ भण्डार।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है।

४१२०. समवशरणस्तोत्र—विश्वसेन। पत्र सं० ११। आ० १०^३/_२×४^३/_२ इंच। भाषा—संस्कृत।
विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १३४। छ् भण्डार।

विशेष—संस्कृत श्लोकों पर हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है।

४१२१. सर्वतोभद्रमंत्र.....। पत्र सं० २। आ० ६×३^३/_२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २०
काल ×। ले० काल सं० १८६७ ग्रामोज सुदी ७। पूर्ण। वे० सं० १४२२। अ भण्डार।

४१२२. सरस्वतीस्तवन—लघुकवि। पत्र सं० ३ से ५। आ० ११^३/_२×५^३/_२ इंच। भाषा—संस्कृत।
विषय—स्तवन। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १२५७। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ के २ पत्र नहीं हैं।

नमपुस्तिका— इति भारत्याललघुकवि कृत लघुस्तवन सम्पूर्णातामागतम्।

४१२३. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ११५५। अ भण्डार।

४१२४. सरस्वतीस्तोत्र—वृहस्पति । पत्र सं० १ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र (जैनेतर) । २० काल × । ले० काल सं० १८५१ । पूर्ण । वे० सं० १५५० । अ भण्डार ।

४१२५. सरस्वतीस्तोत्र—श्रुतसागर । पत्र सं० २६ । आ० १०३×४१ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७७४ । ट भण्डार ।

विशेष—बीच के पत्र नहीं हैं ।

४१२६. सरस्वतीस्तोत्र..... । पत्र सं० ३ । आ० ८×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०६ । ड भण्डार ।

४१२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ४३६ । व्य भण्डार ।

विशेष—रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी । भारतीस्तोत्र भी नाम है ।

४१२८. सरस्वतीस्तोत्रमाला (शारदा-स्तवन)..... । पत्र सं० २ । आ० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२६ । व्य भण्डार ।

४१२९. सहस्रनाम (लघु)—आचार्य समन्तभद्र । पत्र सं० ४ । आ० ११३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १७१४ आश्विन बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ६ । झ भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त भद्रबाहु विरचित ज्ञानांकुश पाठ भी है । ४३ श्लोक हैं । आनन्दराम ने स्वयं जोधराज गोदीका के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । 'पोथी जोधराज गोदीका की पढिबा की छै' पत्र ४ मु० सांगानेर ।

४१३०. सारचतुर्विंशति । पत्र सं० ११२ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६० पौष सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २८८ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथम ६५ पृष्ठों में सकलकीर्ति कृत श्रावकाचार है ।

४१३१. सायंसन्ध्यापाठ..... । पत्र सं० ७ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८२४ । पूर्ण । वे० सं० २७८ । ख भण्डार ।

४१३२. सिद्धबन्धना..... । पत्र सं० ८ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८८६ फाल्गुन सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ६० । ग भण्डार ।

विशेष—श्रीमाणिक्यचंद्र ने प्रतिलिपि की थी ।

४१३३. सिद्धस्तवन..... । पत्र सं० ८ । आ० ८३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५२ । ट भण्डार ।

४१३४. सिद्धिप्रियस्तोत्र—देवनांदि । पत्र सं० ८ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १८८६ भाद्रपद बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २००८ । अ भण्डार ।

४१३५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ८०६ । क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी टीका भी दी हुई है ।

४१३६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

विशेष—हासिये में कठिन शब्दों के अर्थ दिये हैं । प्रति सुन्दर तथा प्राचीन है । अक्षर काफी मोटे हैं ।

मुनि विद्यालकीर्ति ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २६३, २६८) और हैं ।

४१३७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ८५३ । ङ भण्डार ।

४१३८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६२ आसोज बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ४०६ ।

च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । जयपुर में अभयचन्द साह ने प्रतिलिपि की थी ।

४१३९. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १०२ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३८, १०३) और है ।

४१४०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६८ । वे० सं० १०६ । ज भण्डार ।

४१४१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १६८ । झ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । अमरसी ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २४७)
पार है ।

४१४२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १८२५ । ट भण्डार ।

४१४३. सिद्धिप्रियस्तोत्रटीका..... । पत्र सं० ५ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १७५६ आसोज बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३६ । अ भण्डार ।

विशेष—त्रिनोकदास ने अपने हाथ में स्वपठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

४१४४. सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—पन्नालाल चौधरी । पत्र सं० ३६ । आ० १२३×५ इञ्च । भाषा—
हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल सं० १६३० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०५ । क भण्डार ।

४१४५. सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा—नथमल । पत्र सं० ८ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४७ । क भण्डार ।

४१४६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ८५१ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८५२) और है ।

४१४७. सिद्धिप्रियस्तोत्र..... । पत्र सं० १३ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०४ । ऋ भण्डार ।

४१४८. सुगुरुस्तोत्र..... । पत्र सं० १ । आ० १०३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५८ । अ भण्डार ।

४१४९. वसुधारास्तोत्र..... । पत्र सं० १० । आ० ९३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४९ । ज भण्डार ।

विशेष—अन्त में लिखा है— अथ घंटाकर्णकल्प लिख्यते ।

४१५०. सौंदर्यलहरीस्तोत्र—भट्टारक जगद्भूषण । पत्र सं० १० । आ० १२×५३ इंच । भाषा—

संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८४४ । पूर्ण । वे० सं० १८२७ । ट भण्डार ।

विशेष—वृन्दावती कर्वट में पार्वनाथ चैत्यालय में भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति आमेर वालों ने सर्वसुख के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

४१५१. सौंदर्यलहरीस्तोत्र..... । पत्र सं० ७४ । आ० ९३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८३७ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० २७४ । ज भण्डार ।

४१५२. स्तुति..... । पत्र सं० १ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तवन । २० काल × ।

ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६७ । अ भण्डार ।

विशेष—भगवान महावीर की स्तुति है । प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

प्रारम्भ—

त्राता त्राता महात्राता भर्ता भर्ता जगत्प्रभु

वीरो वीरो महावीरोस्त्वं देवासि नमोस्तुति ॥१॥

४१५३. स्तुतिसंग्रह..... । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२४० । अ भण्डार ।

४१५४. स्तुतिसंग्रह..... । पत्र सं० २ से १७ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१०६ । ट भण्डार ।

विशेष—पञ्चपरमेष्ठीस्तवन, बीसतीर्थङ्करस्तवन आदि हैं ।

४१५५. स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० ६ । मा० ११३×५ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५३ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र है ।

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा
१. शान्तिकरस्तोत्र	मुन्दरसूर्य	प्राकृत
२. भयहरस्तोत्र	×	"
३. लघुशान्तिस्तोत्र	×	संस्कृत
४. बृहद्शान्तिस्तोत्र	×	"
५. अजितशान्तिस्तोत्र	×	"

२रा पत्र नहीं है । सभी श्वेताम्बर स्तोत्र हैं ।

४१५६. स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० १० । मा० १२×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३०४ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

१. पद्मावतीस्तोत्र —	×
२. कलिकुण्डपूजा तथा स्तोत्र —	×
३. चिन्तामणि पार्वनाथपूजा एवं स्तोत्र —	लक्ष्मीसेन
४. पार्वनाथपूजा —	×
५. लक्ष्मीस्तोत्र —	पद्मप्रभदेव

४१५७. स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० २३ । मा० ८ $\frac{१}{२}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३८५ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है— १. एकीभाव, २. विषापहार, ३. स्वयंभूस्तोत्र ।

४१५८. स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० ४६ । मा० ८ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
१० काल × । ले० काल सं० १७७६ कार्तिक सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १३१२ । अ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियों का मिश्रण है । निम्न संग्रह हैं—

१. निर्वाणश्लोकभाषा—	×	हिन्दी
२. श्रीपालस्तुति	×	संस्कृत
३. पद्मावतीस्तवन मंत्र सहित	×	"

४. एकीभावस्तोत्र, ५. ज्वालामालिनी, ६. जिनपञ्जरस्तोत्र, ७. लक्ष्मीस्तोत्र,
८. पार्श्वनाथस्तोत्र

९. वीतरागस्तोत्र—

पद्यनदि

संस्कृत

१०. वद्धमानस्तोत्र

×

”

अपूर्ण

११. चौमठयोगिनीस्तोत्र, १२. शनिस्तोत्र, १३. शारदाष्टक, १४. त्रिकालचौबीसीनाम

१५. पद, १६. विनती (ब्रह्मजिनदास), १७. माता के सोलहस्वप्न, १८. परमानन्दस्तवन ।

मुखानन्द के शिष्य नैनमुख ने प्रतिलिपि की थी ।

४१५६. स्तोत्रसंग्रह पत्र सं० २६ । आ० ८×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं ।

१. जिनदर्शनस्तुति, २. ऋषिमंडलस्तोत्र (गौतम गणधर), ३. लघुशांतिकमन्त्र,
४. उपसर्गहरस्तोत्र, ५. निरञ्जनस्तोत्र ।

४१६०. स्तोत्रपाठसंग्रह पत्र सं० २२१ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । विषय—

स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २४० । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० १७, १८, १९ नहीं हैं । नित्य नैमित्तिक स्तोत्र पाठों का संग्रह है ।

४१६१. स्तोत्रसंग्रह पत्र सं० २७६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६७ । अ भण्डार ।

विशेष—२४८, २४९वां पत्र नहीं है । साधारण पूजापाठ तथा स्तुति संग्रह है ।

४१६२. स्तोत्रसंग्रह पत्र सं० १५३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०६७ । अ भण्डार ।

४१६३. स्तोत्रसंग्रह पत्र सं० १८ । आ० ७×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५३ । अ भण्डार ।

४१६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ३५४ । अ भण्डार ।

४१६५. स्तोत्रसंग्रह पत्र सं० ११ । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह हैं—

भगवतीस्तोत्र, परमानन्दस्तोत्र, पार्श्वनाथस्तोत्र, घण्टाकारामन्त्र आदि स्तोत्रों का संग्रह है।

४१६६. स्तोत्रसंग्रह। पत्र सं० ८२। आ० ११३×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८३२। क भण्डार।

विशेष—अन्तिम स्तोत्र अपूर्ण है। कुछ स्तोत्रों की संस्कृत टीका भी साथ में दी गई है।

४१६७ प्रति सं० २। पत्र सं० २५७। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८३३। क भण्डार।

४१६८. स्तोत्रपाठसंग्रह। पत्र सं० ५७। आ० १३×६ इंच। भाषा-संस्कृत, हिन्दी। विषय-स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८३१। क भण्डार।

विशेष—पाठों का संग्रह है।

४१६९. स्तोत्रसंग्रह। पत्र सं० ८१। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत, प्राकृत। विषय-स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८२६। क भण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह है।

नामस्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
प्रतिक्रमण	×	प्राकृत, संस्कृत
सामायिक पाठ	×	संस्कृत
श्रुतभक्ति	×	प्राकृत
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत
सिद्धभक्ति तथा अन्य भक्ति संग्रह	—	प्राकृत
स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	संस्कृत
देवागमस्तोत्र	”	संस्कृत
जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	”
भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	”
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	”
एकीभावस्तोत्र	वादिराज	”
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	”
त्रिषाभहारस्तोत्र	धनञ्जय	”
भूपालचतुर्विंशतिका	भूपालकवि	”
महिम्नस्तवन	जयकीर्ति	”
समवशरणा स्तोत्र	विष्णुसेन	”

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
महर्षि तवन	×	संस्कृत
ज्ञानांकुशस्तोत्र	×	"
चित्रबंधस्तोत्र	×	"
लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभ देव	"
नेमिनाथ एकाक्षरीस्तोत्र	पं० शालि	"
लघु सामायिक	×	"
चतुर्विंशतिस्तवन	×	"
यमकाष्टक	भ० अमर कीर्त्ति	"
यमकब्ध	×	"
पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"
वर्द्धमानस्तोत्र	×	"
जिनोपकारस्मरणस्तोत्र	×	"
मह.वीराष्टक	भागवन्द	"
लघुसामायिक	×	"

४१७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२८ । ले० क.ल × । वे० सं० ८२८ । क भण्डार ।

विशेष—अधिकांश उक्त पाठों का ही संग्रह है ।

४१८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११८ । ले० काल × । वे० सं० ८२६ । क भण्डार ।

विशेष—उक्त पाठों के अतिरिक्त निम्नपाठ और हैं ।

वीरनाथस्तवन	×	संस्कृत
श्रीपार्ष्वजिनेश्वरस्तोत्र	×	"

४१७२ स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० ११७ । आ० १२३×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८२७ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
प्रतिक्रमण	×	संस्कृत
सामायिक	×	"
भक्तिपाठसंग्रह	×	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	संस्कृत
स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	"

४१७३. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० १० । प्रा० ११३×७३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३० । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

नेमिनाथस्तोत्र सटीक	×	संस्कृत
द्वचक्षरस्तवन	×	"
स्वयंभूस्तोत्र	×	"
चन्द्रप्रसभतोत्र	×	"

४१७४. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० ८ । प्रा० १२३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३६ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र है ।

कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत
विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	"

४१७५. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० २२ । प्रा० १२३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३८ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न स्तोत्र है ।

एकी भाव	बादिराज	संस्कृत
सरस्वतीस्तोत्र मन्त्र सहित	×	"
ऋषिमण्डलस्तोत्र	×	"
भक्ताभरस्तोत्र ऋद्धिमंत्र सहित	×	"
हनुमानस्तोत्र	×	"
ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	"
चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	"

४१७६. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० १४। आ० ७×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १८४४ माह सुदी ६। पूर्ण। वे० सं० २३७। ख भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

ज्वालामालिनी, मुनीश्वरों की जयमाल, ऋषिमंडलस्तोत्र एवं नमस्कारस्तोत्र।

४१७७. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० २४। आ० ६×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २३६। ख भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

पद्मावतीस्तोत्र	×	संस्कृत	१ से १० पत्र
चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	”	११ से २० पत्र
स्वर्णाकर्षणविधान	महीधर	”	२४

४१७८. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ८१। आ० ७^२×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६६। छ भण्डार।

४१७९. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० २७। आ० १०^३×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६८। छ भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं।

भक्तामर, एकीभाव, विषापहार, एवं भूपालचतुर्विंशतिका।

४१८०. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ३ से ५६। आ० ६×६ इंच। भाषा—हिन्दी, संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८६७। छ भण्डार।

४१८१. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० २३ से १४१। आ० ८×५ इंच। भाषा—संस्कृत, हिन्दी। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८६६। छ भण्डार।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा	
पंचमंगल	रूपचंद	हिन्दी	अपूर्ण
कलशविधि	×	संस्कृत	
देवसिद्धपूजा	×	”	
शान्तिपाठ	×	”	
जिनेन्द्रभक्तिस्तोत्र	×	हिन्दी	

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
कन्यागुमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी
जैनशतक	भूधरदास	"
निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"
तेरहकाठिया	बनारसीदास	"
चैन्यब्रंदना	×	"
भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	"
पंचकल्याणपूजा	×	"

४१८२. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ५१। प्रा० ११×७३ इंच। भाषा—संस्कृत-हिन्दी। विषय—
मंत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६५। छ अण्डार।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है।

निर्वाणकाण्डभाषा	भैया भगवतीदास	हिन्दी	अपूर्ण
सामायिकपाठ	पं० महाचन्द्र	"	पूर्ण
सामायिकपाठ	×	"	अपूर्ण
पंचपरमेष्ठीगुण	×	"	पूर्ण
लघुसामायिक	×	संस्कृत	"
बारहभावना	नवलकवि	हिन्दी	"
द्रव्यसंग्रहभाषा	×	"	अपूर्ण
निर्वाणकाण्डभाषा	×	प्राकृत	पूर्ण
चतुर्विंशतिस्तोत्रभाषा	भूधरदास	हिन्दी	"
चौबीसदंडक	दीलतराम	"	"
परमानन्दस्तोत्र	×	"	अपूर्ण
भक्तामरस्तोत्र	मानतुंग	संस्कृत	पूर्ण
कन्यागुमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	"
स्वयंभूस्तोत्रभाषा	द्यानतराम	"	"
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	"	अपूर्ण
ग्रान्थोचनापाठ	×	"	"
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत	"

नाम स्तोत्र	कर्ता	भाषा	
विषापहारस्तोत्रभाषा	×	हिन्दी	सूक्त
संबोधपंचासिका	×	"	"

४१२३. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ५१। आ० १०^१/_२ × ७ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। जीर्ण। वे० सं० ८६४। डू भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्रों का संग्रह है।

नवग्रहस्तोत्र, योगिनीस्तोत्र, पद्मावतीस्तोत्र, तीर्थङ्करस्तोत्र, सामायिकपाठ आदि हैं।

४१२४. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० २५। आ० १०^१/_२ × ४^१/_२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६३। डू भण्डार।

विशेष—भक्तामर आदि स्तोत्रों का संग्रह है।

४१२५. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० २६। आ० ८^१/_२ × ६ इंच। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—स्तवन। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८६२। डू भण्डार।

४१२६. स्तोत्र—आचार्य जसवंत। पत्र सं० १। आ० ६^१/_२ × ५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६१। डू भण्डार।

४१२७. स्तोत्रपूजासंग्रह.....। पत्र सं० ६। आ० ११ × ५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८६०। डू भण्डार।

४१२८. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० १३। आ० १२ × ८ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८८६। डू भण्डार।

४१२९. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ७ से ४७। आ० ६ × ४^१/_२ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८८८। डू भण्डार।

४१३०. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ६ से १६। आ० ११^१/_२ × ५^३/_४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४२६। च भण्डार।

विशेष—निम्न स्तोत्र हैं।

एकीभावस्तोत्र	वादिराज	संस्कृत
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	"

प्रति प्राचीन है। संस्कृत टीका सहित हैं।

४१६१. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० २ मे ४८ । आ० ८×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
 २० काल । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३० । च भण्डार ।

४१६२. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० १४ । आ० ८३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । १०
 काल । ले० काल सं० १८५७ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४३१ । च भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

१. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत
२. कल्याणमन्दिर	कुमुदचन्दाचार्य	"
३. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	"

४१६३. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० ७ मे १७ । आ० ११×८३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
 २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३२ । च भण्डार ।

४१६४. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० २४ । आ० १२×७३ इंच । भाषा—हिन्दी, प्राकृत, संस्कृत ।
 विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६३ । ट भण्डार ।

४१६५. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० ५ मे ३५ । आ० ६×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
 २० काल । ले० काल सं० १८७५ । अपूर्ण । वे० सं० १८७२ । ट भण्डार ।

४१६६. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० १५ मे ३४ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।
 २० काल / । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४३३ । च भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है ।

मामायिक बडा	×	संस्कृत	अपूर्ण
मामायिक लघु	×	"	पूर्ण
महमनाम लघु	×	"	"
महमनाम बडा	×	"	"
श्रुतिमंडलस्तोत्र	×	"	"
निर्वाणकाण्डगाथा	✓	"	"
नवकारमन्त्र	×	"	"
वृद्धनवकार	×	अपभ्रंश	"
श्रीतरंगस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत	"
जिनपंजरस्तोत्र	✓	"	"

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा	
पद्मावतीचक्रेश्वरीस्तोत्र	×	"	"
वज्रपंजरस्तोत्र	×	"	"
हनुमानस्तोत्र	×	हिन्दी	"
बडादर्शन	×	संस्कृत	"
आराधना	×	प्रकृत	"

४१६७. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० ४ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । छ् भण्डार ।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र है ।

एकीभाव, भूपालचौबीसी, विषापहार, नेमिगीत मूधरकृत हिन्दी में है ।

४१६८. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० ७ । आ० ४३×३३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३४ । छ् भण्डार ।

निम्नलिखित स्तोत्र है ।

नाम स्तोत्र	कर्त्ता	भाषा
पार्वनाथस्तोत्र	×	संस्कृत
तीर्थावलीस्तोत्र	×	"

विशेष—ज्योतिषी देवों में स्थित जिनचंत्यो की स्तुति है ।

चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	संस्कृत	
जिनपञ्जरस्तोत्र	कमलप्रभ	"	अपूर्ण

श्री रुद्रपत्नीयवरेण गच्छः देवप्रभाषार्यपदाब्जहंसः ।

वादीन्द्रचूडामणिरेष जैतो जियादसौ कमलप्रभाख्यः ॥

४१६९. स्तोत्रसंग्रह..... पत्र सं० १४ । आ० ४३×३३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १३४ । छ् भण्डार ।

लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत
नेमिस्तोत्र	×	"
पद्मावतीस्तोत्र	×	"

४२००. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० १३। आ० १३×७३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८१। ज भण्डार।

विशेष—निम्नलिखित स्तोत्र हैं।

एकीभाव, सिद्धिप्रिय, कल्याणमन्दिर, भक्तामर तथा परमानन्दस्तोत्र।

४२०१. स्तोत्रपूजासंग्रह.....। पत्र सं० १५२। आ० ६३×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४१। ज भण्डार।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है। प्रति गुटका साइज एवं सुन्दर है।

४२०२. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ३२। आ० ४३×६३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल सं० १६०२। पूर्ण। वे० सं० २६४। म भण्डार।

विशेष—पद्मावती, ज्वालामालिनी, जिनपञ्जर आदि स्तोत्रों का संग्रह है।

४२०३. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० ११ से २२७। आ० ६३×५ इंच। भाषा—संस्कृत, प्राकृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २७१। म भण्डार।

विशेष—गुटका के रूप में है तथा प्राचीन है।

४२०४. स्तोत्रसंग्रह.....। पत्र सं० १४। आ० ६×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७७। व भण्डार।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर स्तोत्र आदि हैं।

४२०५. स्तोत्रत्रय.....। पत्र सं० २१। आ० १०×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५२४। व भण्डार।

विशेष—कल्याणमन्दिर, भक्तामर एवं एकीभाव स्तोत्र हैं।

४२०६. स्वयंभूरस्तोत्र—समन्तभद्राचार्य। पत्र सं० ५१। आ० १२३×५३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८४०। क भण्डार।

विशेष—प्रति हिन्दी टक्का टीका सहित है। इसका दूसरा नाम जिनचतुर्विंशति स्तोत्र भी है।

४२०७. प्रति सं० २। पत्र सं० १६। ले० काल सं० १७५६ ज्येष्ठ बुदी १३। वे० सं० ४३५। क भण्डार।

विशेष—कामराज ने प्रतिलिपि की थी।

इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ४३४, ४३६) और हैं।

४२०८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । वे० सं० २६ । ज भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है ।

४२०९. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५४ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संकेतार्थ दिये गये हैं ।

४२१०. स्वयंभूस्तोत्रटीका—प्रभाचन्द्राचार्य । पत्र सं० ४३ । आ० ११×६ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ मंगसिर मुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ८४१ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम क्रियाकलाप टीका भी दिया हुआ है ।

इसी भण्डार में दो प्रतियां (वे० सं० ८३२, ८३९) और हैं ।

४२११. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११६ । ले० काल सं० १९१५ पौष बुदी १३ । वे० सं० ८४ । ज भण्डार ।

विशेष—तनुमुखलाल पांड्या चौधरी चाटसू के मार्फत श्रीलाल पाटनी से प्रतिलिपि कराई ।

४२१२. स्वयंभूस्तोत्रटीका..... । पत्र सं० ३२ । आ० १०×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८८४ । अ भण्डार ।



पद भजन गीत आदि



४२१३. अनाथानोचोदात्या—खेम । पत्र सं २ । प्रा० १०×४ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२१ । अ भण्डार ।

विशेष—राजा श्रेणिक ने भगवान महावीर स्वामी से अपने आपको अनाथ कहा था उसी पर चार ठालों से प्रार्थना की गयी है ।

४२१४. अनाथोमुनि सज्जाय..... । पत्र सं० ५ । प्रा० १०×४ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—

गीत । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१७३ । अ भण्डार ।

४२१५. अहंनकचौडालियागीत—विमल विनय (विनयरंग)..... । पत्र सं० ३ । प्रा० १०×४ इच्छ । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । १० काल × । ले० काल १६८१ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ८४१ । अ

भण्डार ।

विशेष—आदि अन्त भाग निम्न है—

पारम्भ—

वर्द्धमान चउवीसमउ जिनवंदी जगदीस ।

अरहंनक मुनिवर चरीष भणि सुधरीय जगीस ॥१॥

चौपई—

मु जगीसचरी मनमाहे, कहिसि संबंध उछाहे ।

अरहंनकि जिमघत लोघउ, जिम ते तारी वसि कौघउ ॥२॥

निज मात...णइ उपवेसइ, बलिघत आदरीय विसेसइ ।

पहुतउ ते देव विमानि, सुणिज्यो भविणण तिम कानि ॥३॥

दोहा—

नगरा नगरी जाणीवइ, अलकापुरि अवतार ।

वसइ तिर्हा विवहारीयउ सुदत नाम सुविचार ॥४॥

चौपई—

सुविचार सुभद्रा घरणी..... ।

समु नंदन रूप निधान, अरहंनक नाम प्रधान ॥५॥

अन्तिम—

आर सरण बित चोतवइ जी, परिहरि आरि कषाय ।

दोष तजइ घत उचरइ जी, सत्य रहित निरमाय ॥६॥

असनपाल खादम बली जी सादिम सेवे निहार ।
 इण भाव ए सवि परिहरी जी, मन समरइ नवकार ॥५६॥
 सिला संधारउ आदरया जी, सूर किरण तनि ताप ।
 सहइ परीसह साहसी जी, छेइइ भवना पाप ॥५७॥
 समतारस माहि भीलतउ जी, मनेधरतउ सुभ ध्यान ।
 काल करी तिरणी पामीयउ जी, सुंदर देव विमान ॥५८॥
 सुरग तणा सुख भोगवी जी, परमाणंद उलास ।
 तिहां थी चवि बलि पामेस्यइ जी, अनुक्रमि सिवपुर वास ॥५९॥
 अरहंनक जिमते धरइ जी, अंत समय सुभभाण ।
 जनम सफल करि ते सहो जी, पामइ परम कल्याण ॥६०॥
 श्री खरतर गच्छ दीपता जी, श्री जिनचंद मुरिणद ।
 जयवंता जग जाणीयइ जी, दरसण परमाणंद ॥६१॥
 श्री गुण सैखर गुण निलउ जी, वाचक श्री नयरंग ।
 तामु सीस भावइ भणइ जी, विमलविनय मतिरंग ॥६२॥
 ए संबंध सुहायउ जी, जे गावइ नर नारि ।
 ते पामइ सुख संपदा जी, दिन दिन जय जयकार ॥६३॥

इति अरहंनक चउढालियागीतम् समाप्तम् ॥

संवत् १६८१ वर्षे आसु सुदी १४ दिने बुधवारे पंडित श्री हर्षसिंहगणेशिष्यहर्षकीर्तिगणेशिष्येण पद्यरंगमुनिना लेखि । श्री गुस्वस्वन्नगरे ।

४२१६. आदिजिनवरस्तुति—कमलकीर्ति । पत्र सं० ५ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—गुजराती ।
 विषय—गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७४ । ट भण्डार ।

विशेष—दो गीत हैं दोनों ही के कर्ता कमलकीर्ति हैं ।

४२१७. आदिनाथगीत—मुनिहेमसिद्ध । पत्र सं० १ । आ० ९३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
 गीत । २० काल सं० १६३६ । ले० काल × । वे० सं० २३३ । छ भण्डार ।

विशेष—भाषा पर गुजराती का प्रभाव है ।

४२१८. आदिनाथ सब्भाय..... । पत्र सं० १ । आ० ९३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत ।
 २० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० २१६८ । अ भण्डार ।

४२१६. आदीश्वरविजृम्भित्ति..... । पत्र सं० १ । प्रा० ६३×४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत ।
२० काल सं० १५६२ । ले० काल सं० १७४१ वैशाख सुदी ३ । अपूर्णा । वे० सं० १५७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पद्य नहीं हैं । कुल ४५ पद्य रचना में हैं ।

ग्रन्थम पद्य—

पनरवासठि जिननूर अविचल पद पायो ।

वीनतडी कुलट पूर्णोदां ग्रामुमम वदि दशम दिहाडे मनि वैरागे इम भणोया ॥४५॥

४२२०. कृष्णबालविलास—श्री किशनलाल । पत्र सं० १५ । प्रा० ८×५३ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।
विषय-पद । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १२८ । छ भण्डार ।

४२२१. गुरुस्तवन—भूधरदास । पत्र सं० ३ । प्रा० ८३×६३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १४५ । छ भण्डार ।

४२२२. चतुर्विंशति तीर्थङ्करस्तवन—हेमविमलसूरि शिष्य आणंद । पत्र सं० २ । प्रा० ८३×४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । २० काल सं० १५६२ । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १८८३ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४२२३. चम्पाशतक—चम्पाबाई । पत्र सं० २४ । प्रा० १२×८३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पद ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २२३ । छ भण्डार ।

विशेष—एक प्रति और है । चम्पाबाई ने ६६ वर्ष की उम्र में हम्णावस्था में रचना की थी जिसके प्रभाव ग राग दूर होगया था । यह प्यारेलाल अर्जीगढ (उ० प्र०) की छोटी बहिन थी ।

४२२४. चेलना सज्जाय—समयसुन्दर । पत्र सं० १ । प्रा० ६३×४३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । २० काल × । ले० काल सं० १८६२ माह सुदी ४ । पूर्णा । वे० सं० २१७५ । अ भण्डार ।

४२२५. चैत्यपरिपाटी..... । पत्र सं० १ । प्रा० ११३×४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १२५५ । अ भण्डार ।

४२२६. चैत्यबंदना..... । पत्र सं० ३ । प्रा० ६×८३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० २६५ । अ भण्डार ।

४२२७. चौबीसी जिनस्तुति—खेमचंद । पत्र सं० ६ । प्रा० १०×४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-गीत । २० काल × । ले० काल × । ले० काल सं० १७६४ चैत्र बुदी १ । पूर्णा । वे० सं० १८४ । छ भण्डार ।

४२२८. चौबीसतीर्थङ्करतीर्थपरिचय..... । पत्र सं० १ । प्रा० १०×४३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० २१२० । अ भण्डार ।

४२२६. चौबीसतीर्थङ्करस्तुति—ब्रह्मदेव । पत्र सं० १७ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४१ । अ भण्डार ।
विशेष—रतनचन्द पांड्या ने प्रतिलिपि की थी ।
४२३०. चौबीसीस्तुति..... । पत्र सं० १५ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २०
काल सं० १६०० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३६ । छ भण्डार ।
४२३१. चौबीसतीर्थङ्करवर्णन..... । पत्र सं० ११ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५८३ । ट भण्डार ।
४२३२. चौबीसतीर्थङ्करस्तवन—लूणकरण कासलीवाल । पत्र सं० ८ । आ० ६×४ इंच । भाषा—
हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५७ । च भण्डार ।
४२३३. जखड़ी—रामकृष्ण । पत्र सं० ५ । आ० १०३×६३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८ । छ भण्डार ।
४२३४. जम्बूकुमार सञ्भाय..... । पत्र सं० १ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३६ । अ भण्डार ।
४२३५. जयपुर के मंदिरों की बंदना—स्वरूपचंद । पत्र सं० १० । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—
हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल सं० १६१० । ले० काल सं० १६४७ । पूर्ण । वे० सं० २७८ । झ भण्डार ।
४२३६. जिणभक्ति—हर्षकीर्त्ति । पत्र सं० १ । आ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४३ । अ भण्डार ।
४२३७. जिनपच्चीसी व अन्य संग्रह..... । पत्र सं० ४ । आ० ८३×६ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०४ । छ भण्डार ।
४२३८. ज्ञानपञ्चमीस्तवन—समयसुन्दर । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १७८५ श्रावण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १८८५ । अ भण्डार ।
४२३९. झखड़ी श्रीमन्दिरजीकी..... । पत्र सं० ४ । आ० ७ इंच × ४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३१ । छ भण्डार ।
४२४०. भ्राम्करियानुचोढाल्या..... । पत्र सं० २ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—गीत ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२५६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

सीता ता मनि संकर ढाल—

रमती चरणी सोल नमावी, प्रणमी सतगुरु पाया रे ।

भांकरिया ऋषि ना गुण नाता, उलटं आज सवाया रे ॥

भवियण बंधो मुनि भांकरिया, संसार समुद्र जे तरियो रे ।

सबल साह्या परिसा मन सुधे, सील रखण करि आरियो रे ॥२॥

पइठतपुर मकरधुज राजा, मदनसेन तस राणी रे ।

तस सुत मदन भरम बाबुडो, किरत जास कहाणी रे ॥

मोजी ढाल अपूर्ण है । भांकरिया मुनि का वर्णन है ।

४२४१. एमोकारपञ्चीसी—ऋषि ठाकुरसी । पत्र सं० १ । प्रा० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तोत्र । १० काल सं० १८२८ आगढ सुदी १ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१७८ । अ भण्डार ।

४२४२. तमाखू की जयमाल—आणंदमुनि । पत्र सं० १ । प्रा० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—गीत । १० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१७० । अ भण्डार ।

४२४३. दर्शनपाठ—बुधजन । पत्र सं० ७ । प्रा० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।

१० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २८८ । अ भण्डार ।

४२४४. दर्शनपाठस्तुति— । पत्र सं० ८ । प्रा० ८×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । १०

१० काल X । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १६२७ । अ भण्डार ।

४२४५. देवकी की ढाल—लूणकरण कासलीवाल । पत्र सं० ४ । प्रा० १०×४ इंच । भाषा—

हिन्दी । विषय—गीत । १० काल X । ले० काल सं० १८८५ बैशाख बुदी १४ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २२४६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ दोहा—

रठ नेमा नामे हुवा लखण सरन संजोग ।

पाठ सहस लखण धरो गोमकार गछ जोग ॥१॥

सहत अठारा साध जी अजाया चालीस हजार ।

पोठार मुनिवर विचरज्या रो नार ॥२॥

.....

बसुदेव राजा ठाकरा देवाकीण अंगजात ॥३॥

नन्दन छ देव का तरण सा राखा के उणहार ।

बाणी मुण भी नेम का नावउ संजसार ॥४॥

साधणों मुध आदरो देम मछतनी नाम ।
बेलेरयावण स्वामी जी करावो जीव जीव ॥५॥

म१ व१ भाग—

देव छी तरणाइ नंदण बांदवारे उभी श्री नेम जिणोसवार ।
नयणा साधा न देख नर कारवालागा इम अरदीमार ॥
साध्या साम्हो देवकी देखी नर उभा रहा छ नजर नीहान रे ।
कसतो...टाछ काच वास्ताणीर छुटी छे हुद तरणीए धार रे ॥२॥
तनमन बाग सोहाबडो उलस्यो र फल में फुली छे जेहना कापरे ।
बलाया माहा तो माव रही रे देख तां लोचन तीरपत न थापरे ॥३॥
दीवकी तो साधान छ दिणा करी र पाछा आइ छ माहीलो माहारे ।
सोच फिकर देवकीरे ज्योर मोहतणी ए बातरे ॥४॥
सासो तो भाज्यो श्री नेमजीरे एतो छहु थारा बालरे ।
आख्या मांहो आसुं पडैरे जाणो मो त्यारे टुटा मालरे ॥५॥

इन्तिम—

मरजी तांच छोडो सगला नगर मझारो,
मुहमांगा दीजे घणारे मणि मारणक भंडार ।
मणि मारणक बहु दीधा देवकी मनरा इछा काइ न राखी ॥
दणकरण ए ढाल ज भाषा तीज चोथ इसही ए साखी ए ॥६॥
इति श्री देवकी की ढाल स० ॥०॥ स्वमजी ॥

दसवत चूनीलाल छावडा चैतराम ठाकरका बेटा छोटाका छे वांच पढे ज्यांसू जथा जोग बांचडयो ; मित्त
दशाख बुदी १४ सं० १८८५ ।

देवकी की ढाल— रतनचन्दकृत और है । प्रति गल गई है । कई अंश नष्ट हांगये है । पढने में नहीं
प्राता है ।

अन्तिम—

गुण गायी जी मारवाड मझार कर जोडि रतनचंद भरी ॥१०॥

४२४६. द्वीपायनढाल—गुणसागरसूरि । पत्र सं० १ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी गुज-
राती । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६४ । क भण्डार ।

४२४७. नेमिनाथ के नवमङ्गल—विनोदीलाल । पत्र सं० १ । आ० १६३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।
विषय स्तुति । २० काल सं० १७७४ । ले० काल सं० १८५२ मंगसिर सुदी २ । वे० सं० ५४ । क भण्डार ।

विशेष—चौमू में प्रतिलिपि हुई थी । जन्मपत्री की तरह गोल सिमटा हुआ है ।

४२४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल X । वे० सं० २१४३ । ट भण्डार ।

विशेष—लिहया मंगल फौजी दौलतरामजी की मुकाम पुन्या के मध्ये तोपखाना ।

१० पत्र में आगे नेमिराजुलपच्चीसी विनोदीलाल कृत भी है ।

४२४९. नागश्री सज्जाय—विनयचंद्र । पत्र सं० १ । आ० १०X४^१ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तवन । २० काल X । ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० २२४८ । अ भण्डार ।

विशेष—केवल ३२ पत्र है ।

अन्तिम—

आपण बांधो आप भोगवै कोण गुरु कुण चेला ।

संजम लेइ गई स्वर्ग पांचमें अजुही नादो न वेरारे ॥१५॥ भा०॥

महा विदेह मुकते जासी मोटी गर्भ वसेरा रे ।

विनयचंद्र जिनधर्म अराधो सब दुख जान परेरारे ॥१६॥

इति नागश्री सज्जाय कुचामणो लिखिते ।

४२५०. निर्वाणकाण्डभाषा—भैया भगवतीदास । पत्र सं० ८ । आ० ८X४ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—स्तुति । २० काल सं० १७४१ । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० ३७ । अ भण्डार ।

४२५१. नेमिगीत—पासचन्द्र । पत्र सं० १ । आ० १२^३X४^१ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।
२० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० १८४७ । अ भण्डार ।

४२५२. नेमिराजमतीकी घोड़ी..... । पत्र सं० १ । आ० ९X४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।
२० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० २१७७ । अ भण्डार ।

४२५३. नेमिराजमती गीत—झीतरमल । पत्र सं० १ । आ० ९^१X४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
गीत । २० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० २१३५ । अ भण्डार ।

४२५४. नेमिराजमतीगीत—हीरानन्द । पत्र सं० १ । आ० ८^३X४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
गीत । २० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० २१७४ । अ भण्डार ।

सूरतर ना पीर दोहिलोरे, पाम्यो नर भवसार ।

आलइ जन्म महारिड भोरै, कांइ करचारे मन मांहि विचार ॥१॥

मति राचो रे रमणी ने रंग क सेवोरे जीण वाणी ।

तुम रमझ्यो रे संजम न संगक चेतो रे चित प्राणी ॥२॥

अरिहंत देव अराधाइच्योजी, रे गुर गरुचा श्री साध ।

धर्म केवलानो भाखीउ, ए समकित वे रतन जिम लाढ ॥३॥

पहिलो समकित सेवीय रे, जे छे धर्मनो मूल ।
 संजम सकित बाहिरो, जिण भाख्यो रे तुस खंडण तुलिक ॥४॥
 तहत करीन सरदहो रे, जै भाखो जलनाथ ।
 पांचेइ आखव परिहरो, जिम मिलीइ रे सित्रपुरनो साथक ॥५॥
 जीव सहूजी जीवेवा वांछिरे, मरण न वांछे कोइ ।
 अपस राखा लैखवा, तस थावर रे हण जो मत कोइ ॥६॥
 चोरी लीजे पर तणी रे, तिए ती लागै पाप ।
 धन कंचण किम चोरीय, जिण बांधइ रे भव भवना संताप क ॥७॥
 अजस अकीरत ए भव रे, पेरे भव दुख अनेक ।
 कुड कहता पामीइ, काइ अणी रे मन माहि विवेक ॥८॥
 महिला संग घुइ हर, नव लख सम जुत ।
 कुण सुख कारण ए तला, किम काजे रे हिस्या मतिवत ॥९॥
 पुत्र कलत्र घर हाट भरि, ममता काजे फोक ।
 जु परिगह डाग माहि छै ते छाडरै गया बहूला लोक ॥१०॥
 मात पिता बंधव सुतरे, पुत्र कलत्र परवार ।
 सवार्थया सहू को सगा, कोइ पर भव रे नहीं राखणहार ॥११॥
 अंजुल जल नीपरै रे, खिण रे तुटइ आउ ।
 जाइ ते बेला नही रे वाहुडि जरा घालरे यौवन ने धाड ॥१२॥
 व्याधि जरा जब लग नहीं रे, तब लम धर्म संभाल ।
 धारा हर घण बरसते, कोइ समरथि रे बाधेगोपाल क ॥१३॥
 अलप दीवस को पाहुणा रे, सद्द कोइण संसार ।
 एक दिन उठी जाइवउ, कवण जाणइ रे किए हो अवतारक ॥१४॥
 क्रोध मान माया तजो रे, लोभ मेधरड्यो लीगारे ।
 समतारस भवपुरीय वली दौहिलो रे नर अवतारक ॥१५॥
 आरंभ छाडा अन्तमा रे पीउ संजम रसपुरि ।
 सिद्ध बधू से सहू को बरो, इम बोलै सखज देवसुरक ॥१७॥

बाल वृमचारही जिण वाइससमा ॥

समदविजइजी रा नंद हो, बैरागी माहरो मन लागो हो नेम जिखंद सू

जादव कुल केरा चंद हो ॥ बाल० ॥१॥

देव घणा छइ ही पुभ जीदोवता (देवता)

तेतो न चढइ चेत हो, कैइक रे चेत म्हामत हो ॥ बाल० ॥२॥

कैइक दोस करइ नर नारनइ मांमइ तेलसिदूर हर हो ।

चाके इक बन बासै बासै बास, कक बनबासो करइ ।

(कळट) कसट सहइ भरपुर हो ॥३॥

तु नर मोह्यो रे नर माया तणो, तु जग दीनदयाल हो ।

नोजोवनवतो ए सुंदरी तजीउ राजुल नार हो ॥४॥

राजल के नारिणो उढरी पहुतीउ मुकति मभार ।

हीरानंद संवेग साहिबा, जी बी नव म्हारी बीनतेडा प्रवधारि हो ॥५॥

॥ इति नेमि गीत ॥

४२५५. नेमिराजुलसज्जाब.....। पत्र सं० १ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

१० काल सं० १८५१ चैत्र। ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८४ । अ भण्डार ।

४२५६. पञ्चपरमेष्ठीस्तवन—जिनवल्लभ सूरि । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—स्तवन । १० काल × । ले० काल सं० १८३६ । पूर्ण । वे० सं० ३८८ । अ भण्डार ।

४२५७. पद—शुषि शिवलाल । पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पूरा पद निम्न है—

या जग म का तेरा अंधे ॥या०॥

जैसे पंछी वीरछ वसेरा, बीछरै होय सवेरा ॥१॥

कोडी २ कर धन जोड्या, ले धरती में गाडा ।

अंत समै चलरु की बेला, ज्यां गाडा राहो छाडारे ॥२॥

अंचा २ महल बणाये, जीव कह इहा रेणा ।

चल गया हंस पडी रही काया, लेय कलेवर दणा ॥३॥

मात पिता सु पतनी रे भारी, तीण धन जोवन खाया ।

उड गया हंस काया का मंडण, काढां प्रेत पराया ॥४॥

करी कमाइ इण भो आया, उलटी पूञ्जी खोइ ।
 मेरी २ करकें जनम गमाया, चलता संक न होइ ॥५॥
 पाप की पोट घणी सिर लीनी, हे मूरख भोरा ।
 हलकी पोट करी तु चाहै, तो होय कुटुम्बसुं न्यारा ॥६॥
 मात पिता सुत साजन मेरा, मेरा धन परिवारो ।
 मेरा २ पडा पुकारै चलता, नहीं कछु लारो ॥७॥
 जो तेरा तेरे संग न चलता, भेद न जाका पाया ।
 मोह बस पदारथ वीराणी, हीरा जनम गमाया ॥८॥
 आंख्या देखत केते खल गए जगमें, आखरु आपुही चलण ।
 औसर बीता बहु पछतावे, माखी जु हाथ मसलणा ॥९॥
 आज करु धरम काल करु, याही व नीयत धारे ।
 काल अचांगे घाटी पकडो, जब क्या कारज सारे ॥१०॥
 ए जोगवाइ पाइ दुहेली, फेर न बारु वारो ।
 हीमत होय तो डील न कीजै, कूद पडो निरधारो ॥११॥
 सीह मुखे जीम मीरगलो आयो, फेर नइ छूटण हारो ।
 इण दीसदंते मरण मुखे जीव, पाप करी निरधारो ॥१२॥
 सुगर सुदेव धरम कु सेवो, लेवो जीन का सरना ।
 तीष सोवलाल कहे भो प्राणी, आतम कारज करणा ॥१३॥

॥इति॥

४२५८. पदसंग्रह..... पत्र सं० ५६ । आ० १२×५ इच्छ । भाषा-हिन्दी । विषय-भजन । २०
 काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२७ । छ भण्डार ।

४२५९. पदसंग्रह..... पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १२७३ । अ भण्डार ।

विशेष—त्रिभुवन साहब सांवला..... ।

इसी भण्डार में २ पदसंग्रह (वे० सं० १११७, २१३०) और हैं ।

४२६०. पदसंग्रह..... पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ४०५ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ११ पदसंग्रह (वे० सं० ४०४, ४०६ से ४१५) तक और हैं ।

४२६१. पदसंग्रह..... पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ६२५ । च भण्डार ।

४२६२. पदसंग्रह.....। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० ३३। ऋ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २७ पदसंग्रह (वे० सं० ३४, ३५, १४८, २३७, ३०६, ३१०, २६६, ३००, ३०१ मे ६ तक, ३११ मे ३२४) और हैं।

नोट—वे० सं० ३१८वें में जयपुर की राजवंशावलि भी है।

४२६३. पदसंग्रह.....। पत्र सं० १४। ले० काल ×। वे० सं० १७५६। ट भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ पदसंग्रह (वे० सं० १७५२, १७५३, १७५८) और हैं।

नोट—द्यानतराय, हीराचन्द, भूधरदास, दौलतराम आदि कवियों के पद हैं।

४२६४. पदसंग्रह.....। पत्र सं० ३। आ० १०×४३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पद। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १४७। छ भण्डार।

विशेष—केवल ४ पद हैं—

१. मोहि तारी सामि भव सिधु तै।
२. राजुल कहै तुमें वेग सिधावे।
३. मिढचक्र वंदो रे जयकारी।
४. चरम जियोसर जिहो साहिबा
चरम धरम उपगार बाल्हेसर ॥

४२६५. पदसंग्रह.....। पत्र सं० १२ से २५। आ० १२×७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पद। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २००८। ट भण्डार।

विशेष—भागचन्द, नयनमुख, द्यानत, जगताराम, जादूराम, जोधा, बुधजन, साहिबराम, जगराम, लाल बखतराम, झूंझूराम, खेमराज, नवल, भूधर, चैनविजय, जीवणदास, विश्वभूषण, मनोहर आदि कवियों के पद हैं।

४२६६. पदसंग्रह—उत्तमचन्द। पत्र सं० १८। आ० ६×६ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पद। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५२८। ट भण्डार।

विशेष—उत्तम के छोटे २ पदोका संग्रह है। पदों के प्रारम्भ में रागरागवियों के नाम भी दिये हैं।

४२६७. पदसंग्रह—ज० कपूरचन्द। पत्र सं० १। आ० ११३×५३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—स्तोत्र। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०४३। अ भण्डार।

४२६८. पद—केशरगुलाब। पत्र सं० १। आ० ७×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—गीत। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२४१। अ भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ—

श्रीधर नन्दन नयनानन्दन सांचादेव हमारो जी ।

दिलजानी जिनवर प्यारा वो

दिल दे बीच बसत है निसदिन, कबहू न होवत न्यारा वो ॥

४२६६. पदसंग्रह—चैनसुख । पत्र सं० २ । आ० २४×३३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७५७ । ट भण्डार ।

४२७०. पदसंग्रह—जयचन्द छावड़ा । पत्र सं० ५२ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल सं० १८७४ आषाढ सुदी १० । ले० काल सं० १८७४ आषाढ सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४३७ । क भण्डार ।

विशेष—अन्तिम २ पत्रों में विषय सूची दे रखी है । लगभग २०० पदों का संग्रह है ।

४२७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८७४ । वे० सं० ४३८ । क भण्डार ।

४२७२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ से ४० । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६६० । ट भण्डार ।

४२७३. पदसंग्रह—देवान्नह्य । पत्र सं० ४४ । आ० ६×६३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद भजन । २० काल × । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । वे० सं० १७५१ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति गुटकाकार है । विभिन्न राग रागिनियों में पद दिये हुये हैं । प्रथम पत्र पर लिखा है— श्री देवसागरजी सं० १८६३ का बैशाख सुदी १२ । मुकाम बसवै नैराचंद ।

४२७४. पदसंग्रह—दौलतराम । पत्र सं० २० । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४२६ । क भण्डार ।

४२७५. पदसंग्रह—बुधजन । पत्र सं० २६ से ६२ । आ० ११३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद भजन । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६७ । अ भण्डार ।

४२७६. पदसंग्रह—भागचन्द । पत्र सं० २५ । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व भजन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३१ । क भण्डार ।

४२७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ४३२ । क भण्डार ।

विशेष—थोड़े पदों का संग्रह है ।

४२७८. पद—मलूकचंद । पत्र सं० १ । आ० ६×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ—

पंच सखी मिल मोहियो जीवा,

काहा पावैगो तु धाम हो जीवा ।

समझो स्युंत राज ॥

४२७६. पदसंग्रह—मंगलचंद्र । पत्र सं० १० । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व भजन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३४ । क भण्डार ।

४२८०. पदसंग्रह—माणिकचंद्र । पत्र सं० ५४ । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व भजन । १० काल × । ले० काल सं० १९५५ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४३० । क भण्डार ।

४२८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० ४३८ । क भण्डार ।

४२८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७५४ । ट भण्डार ।

४२८३. पदसंग्रह—सेवक । पत्र सं० १ । आ० ८३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५० । ट भण्डार ।

विशेष—केवल २ पद हैं ।

४२८४. पदसंग्रह—हीराचन्द्र । पत्र सं० १० । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद व भजन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३३ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४३५, ४३६) भी हैं ।

४२८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६१ । ले० काल × । वे० सं० ४१६ । क भण्डार ।

४२८६. पद व स्तोत्रसंग्रह..... । पत्र सं० ८८ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३६ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न रचनाओं का संग्रह है ।

नाम	कर्ता	भाषा	पत्र
पञ्चमङ्गल	रूपचन्द्र	हिन्दी	८
मुगुरुशतक	जिनदास	"	१०
जिनयशमङ्गल	मेत्रगराम	"	४
जिनगुणबन्दीसी	"	"	—
गुरुओं की स्तुति	भूभरदास	"	—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
एकीभावस्तोत्र	भूदरदास	हिन्दी	१४
वज्रनाभि चक्रवर्ति की भावना	"	"	—
पदसंग्रह	मारिकणन्द	"	४
तेरहपंथपञ्चीसी	"	"	११
हुंदावसर्पिणीकालदोष	"	"	"
चौबीस दंडक	दौलतराम	"	१२
दशबोलपञ्चीसी	छानतराय	"	१७

४२८७. पार्वजिनगीत—छाजू (समयसुन्दर के शिष्य) । पत्र सं० १ । आ० १०×५ इञ्च ।
भाषा—हिन्दी । विषय—गीत । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५८ । अ भण्डार ।

४२८८. पार्वनाथ की निशानी—जिनहर्ष । पत्र सं० ३ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४७ । अ भण्डार ।

विशेष—२२ पत्र से—

प्रारम्भ—

सुख संपति दायक सुरनर नायक परतिख पास जिगांदा है ।
जाकी छवि कांति अनोपम ओपम दिपति जाण दिगांदा है ॥

अन्तिम—

तिहां सिधादावास तिहां रे वासा दे सेवक विलवंदा है ।
घघर निसाणी पास वखाणी गुण जिनहर्ष गावंदा है ॥

प्रारम्भ के पत्र पर क्रोध, मान, माया, लोभ की सज्भाय दी हैं ।

४२८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १८२२ । वे० सं० २१३३ । अ भण्डार ।

४२९०. पार्वनाथचौपई—पं० लाखो । पत्र सं० १७ । आ० १२½×५½ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—स्तवन । २० काल सं० १७३४ कार्तिक मुदी । ले० काल सं० १७९३ ज्येष्ठ बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १९१८ ।
ट भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ प्रशस्ति—

संवत् सतरासे चौतीस, कार्तिक शुक्ल पक्ष शुभ दीस ।
नौरंग तप दिल्ली सुलितान, सवै नृपति वहे विरि आण ॥२६६॥
नागर चाल देश सुभ ठाम, नगर वणहटो उत्तम धाम ।
सब श्रावक पूजा जिनधर्म, करै भक्ति पावै बहु शर्म ॥२६७॥

कर्मक्षय कारण शुभहेत, पार्वनाथ चौपई सचेत ।
पंडित लाखो लाख सभाव, सेवो धर्म लखो मुभयान ॥२६८॥

प्राचार्य श्री महेन्द्रकीर्ति पार्वनाथ चौपई संपूर्ण ।

भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति के शिष्य पांडे दयाराम सोनीने भट्टारक महेन्द्रकीर्ति के शासन में दिल्ली के जयसिंहपुरा के देऊर में प्रतिलिपि की थी ।

४२६१. पार्वनाथ जीरोद्धन्दमत्तरी.....। पत्र सं० २ । आ० ६×४ इंच । भाषा-हिन्दी पद्य ।
विषय-स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १७८१ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० १८६५ । अ भण्डार ।

४२६२. पार्वनाथस्तवन.....। पत्र सं० १ । आ० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन में एक पार्वनाथ स्तवन और है ।

४२६३. पार्वनाथस्तोत्र.....। पत्र सं० २ । आ० ८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तोत्र ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । अ भण्डार ।

४२६४. बन्दनाजखड़ी—विहारीदास । पत्र सं० ४ । आ० ८×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
स्तवन । २० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६१३ । च भण्डार ।

४२६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६२ । व्य भण्डार ।

४२६६. बन्दनाजखड़ी—बुधजन । पत्र सं० ४ । आ० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६७ । ज भण्डार ।

४२६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ५२४ । क भण्डार ।

४२६८. बारहखड़ी एवं पद.....। पत्र सं० २२ । आ० ५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्फुट ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५ । झ भण्डार ।

४२६९. बाहुबली सञ्जय—विमलकीर्ति । पत्र सं० १ । आ० ६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२४५ ।

विशेष—श्याममुन्दर कृत पाटनपुर सञ्जय और है ।

४३००. भक्तिपाठ—पद्मलाल चौधरो । पत्र सं० १७६ । आ० १२×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
भुक्ति । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४५ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न भक्तियां हैं ।

स्वाध्यायपाठ, सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, चारित्र्यभक्ति, ग्राचार्यभक्ति, योगभक्ति, वीरभक्ति, निर्वाणभक्ति और नंदीश्वरभक्ति ।

४३०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०८ । ले० काल × । वे० सं० ५४७ । क भण्डार ।

४३०२. भक्तिपाठ.....। पत्र सं० ६० । आ० ११३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४६ । क भण्डार ।

४३०३. भजनसंग्रह—नयन कवि । पत्र सं० ४१ । आ० ६×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पद । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २४० । छ भण्डार ।

४३०४. मरुदेवी की सञ्ज्ञाय—ऋषि लालचन्द । पत्र सं० १ । आ० ८३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल सं० १८०० कार्तिक बुदी ४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८७ । अ भण्डार ।

४३०५. महावीरजी का चौढाल्या—ऋषि लालचन्द । पत्र सं० ४ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८७ । अ भण्डार ।

४३०६. मुनिसुव्रतविनती—देवान्नह्य । पत्र सं० १ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६७ । अ भण्डार ।

४३०७. राजारानी सञ्ज्ञाय। पत्र सं० १ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६६ । अ भण्डार ।

४३०८. रांडपुरास्तवन। पत्र सं० १ । आ० ६×५३ इंच । भाषा हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६३ । अ भण्डार ।

विशेष—रांडपुरा ग्राम में रचित आदिनाथ की स्तुति है ।

४३०९. विजयकुमार सञ्ज्ञाय—ऋषि लालचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल सं० १८६१ । ले० काल सं० १८७२ । पूर्ण । वे० सं० २१६१ । अ भण्डार ।

विशेष—कोटा के रामपुरा में ग्रन्थ रचना हुई । पत्र ४ से आगे स्थूलभद्र सञ्ज्ञाय हिन्दी में और है । जिस का २० काल सं० १८६४ कार्तिक सुदी १५ है ।

४३१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० २१८६ । अ भण्डार ।

४३११. विनतीसंग्रह.....। पत्र सं० २ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन । २० काल × । ले० काल सं० १८५१ । पूर्ण । वे० सं० २०१३ । अ भण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भूराम ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

४३१२. विनतीसंग्रह—ब्रह्मदेव । पत्र सं० ३८ । मा० ७३×१ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—स्तवन ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३१ । अ भण्डार ।

विशेष—मामू बहू का भगड़ा भी है ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६६३, १०४३) और हैं ।

४३१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल × । वे० सं० १७३ । अ भण्डार ।

४३१४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ६७८ । अ भण्डार ।

४३१५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८४८ । वे० सं० १६३२ । अ भण्डार ।

४३१६. वीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति... पत्र सं० ६ । मा० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
स्तवन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६७ । अ भण्डार ।

४३१७. शीतलनाथस्तवन—ऋषि लालचन्द्र । पत्र सं० १ । मा० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—स्तवन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१३४ । अ भण्डार ।

विशेष—मन्त्रिम—

पूज्य श्री श्री दोलतराय जी बहुगुण भगवाणी ।

रिषलाल जी करि जोडि बीनवै कर सिर चरखारणी ॥

सहर माधोपुर गंवत् पंचावन कातीग सुदी जाणी ।

श्री सीतल जिन गुण गाया प्रति उलास आणी ॥ सीतल० ॥१२॥

॥ इति सीतलनाथ स्तवन संपूर्ण ॥

४३१८. श्रेयांसस्तवन—विजयमानसूरि । पत्र सं० १ । मा० ११३×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—स्तवन । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८४१ । अ भण्डार ।

४३१९. सतियोंकी सज्जाय—ऋषि खजमल जी । पत्र सं० २ । मा० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी
गुजराती । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २२४५ । अ भण्डार ।

विशेष—मन्त्रिम भाग निम्न है—

इतीदक सतियारां गुण कछा ये मुण सांभलो ।

उत्तम पराणी खजमल जी कहइ.....॥३४॥

चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तवन भी दिया है ।

४३२०. सज्जाय (चौदह बोल)—ऋषि रायचन्द्र । पत्र सं० १ । मा० १०×४ इंच । भाषा—
हिन्दी । विषय—स्तोत्र । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८१ । अ भण्डार ।

४३२१. सर्वार्थसिद्धिसञ्ज्ञाय..... पत्र सं० १ । आ० १०×४^३/_४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४७ । छ भण्डार ।

विशेष—पर्युषण स्तुति भी है ।

४३२२. सरस्वतीअष्टक..... पत्र सं० ३ । आ० ६×७^३/_४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । झ भण्डार ।

४३२३. साधुवंदना—माणिकचन्द । पत्र सं० १ । आ० १०^३/_४×४^३/_४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-

स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५४ । ट भण्डार ।

विशेष—श्वेताम्बर ग्राम्नाय की साधुवंदना है । कुल २७ पद्य हैं ।

४३२४. साधुवंदना—पुण्यसागर । पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-पुरानी हिन्दी । विषय-

स्तवन । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८३८ । अ भण्डार ।

४३२५. सारचौबीसीभाषा—पारसदास निगोत्या । पत्र सं० ४७० । आ० १२^३/_४×७ इंच । भाषा-

हिन्दी । विषय—स्तुति । २० काल सं० १९१८ कार्तिक सुदी २ । ले० काल सं० १९३९ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं०

७८५ । क भण्डार ।

४३२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५०५ । ले० काल सं० १९४८ बैशाख सुदी २ । वे० सं० ७८६ । क

भण्डार ।

४३२७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५७१ । ले० काल × । वे० सं० ८१९ । छ भण्डार ।

४३२८. सीताढाल..... पत्र सं० १ । आ० ९^३/_४×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन । २०

काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१६७ । अ भण्डार ।

विशेष—फतेहमल कुत चेतन ढाल भी है ।

४३२९. सोलहसतीसञ्ज्ञाय..... पत्र सं० १ । आ० १०×४^३/_४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१८ । अ भण्डार ।

४३३०. स्थूलभद्रसञ्ज्ञाय..... पत्र सं० १ । आ० १०×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-स्तवन ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१८२ । अ भण्डार ।



पूजा प्रतिष्ठा एवं विधान साहित्य

४३३१. अंकुरोपणविधि—इन्द्रनंदि । पत्र सं० १५ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
प्रतिष्ठादि का विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७० । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र १४-१५ पर यंत्र है ।

४३३२. अंकुरोपणविधि—पं० आशाधर । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—
प्रतिष्ठादि का विधान । २० काल १३वीं अताब्दि । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२१७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ में से लिया गया है ।

४३३३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है । २रा पत्र नहीं है । संस्कृत में कठिन शब्दों का अर्थ दिया हुआ है ।

४३३४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ३१६ । ज भण्डार ।

४३३५. अंकुरोपणविधि । पत्र सं० २ में २७ । आ० ११½×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
प्रतिष्ठादि का विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नहीं है ।

४३३६. अकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल । पत्र सं० २६ । आ० १२×७½ इंच । भाषा—
प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल । पूर्ण । वे० सं० १ । च भण्डार ।

४३३७. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—जिनदास । पत्र सं० २६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७६४ । पूर्ण । वे० सं० १८५६ । ट भण्डार ।

४३३८. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—लालजीत । पत्र सं० २१४ । आ० १४×८ इंच । भाषा—
हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १८७० । ले० काल सं० १८७२ । पूर्ण । वे० सं० ५०१ । च भण्डार ।

विशेष—गोपाचलदुर्ग (ग्वालियर) में प्रतिलिपि हुई थी ।

४३३९. अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा—चैनसुख । पत्र सं० ४८ । आ० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल सं० १६३० फाल्गुन मुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०५ । अ भण्डार ।

४३४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७४ । ले० काल × । वे० सं० ४१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६) भी है ।

४३४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६३३ । वे० सं० ५०३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५०२) और है ।

४३४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६ । ले० काल × । वे० सं० २०८ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में दो प्रतियाँ (वे० सं० २०८ में ही) और हैं ।

४३४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ४८ । ले० काल × । वे० सं० १६६ । झ भण्डार ।

विशेष—आषाढ सुदी ५ सं० १६६७ को यह ग्रन्थ रघुनाथ चांदवाड़ ने चढाया ।

४३४४. अकृत्रिमचैत्यालयपूजा—मनरङ्गलाल । पत्र सं० ३० । आ० ११×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल सं० १६३० माघ सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०४ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थकार परिचय—

नाम 'मनरंग' धर्मरुचि सी मो प्रति राखी प्रीति ।

चोईसी महाराज को पाठ रच्यो जिन रीति ॥

प्रेरकता अतितास की रच्यो पाठ सुभनीत ।

ग्राम नग्न एकोहमा नाम भगवती सत ॥

रचना संवत् संबंधीपद्य—

विशुति इक शत शतक पै त्रिशतसंमत जानि ।

माघ शुक्ल त्रयोदशी पूर्ण पाठ महान ॥

४३४५. अक्षयनिधिपूजा..... । पत्र सं० ३ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० ४० । क भण्डार ।

४३४६. अक्षयनिधिपूजा..... । पत्र सं० १ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०

काल × । ले० काल < । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । अ भण्डार ।

विशेष—नयमाल हिन्दी में है ।

४३४७. अक्षयनिधिपूजा—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ५ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७८३ सावन सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ४ । क भण्डार ।

विशेष—श्री देव श्वेताम्बर जैन ने प्रतिलिपि की थी ।

४३४८. अक्षयनिधिविधान..... । पत्र सं० ४ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६४३ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति जीर्ण है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६७२) और है ।

४३४६. अढाई (साख्खे द्वय) द्वीपपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ६१ । आ० ११×५३ इञ्च ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० का० × । अपूर्ण । वे० सं० ५५० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०४४) और है ।

४३५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५१ । ले० काल सं० १८२४ ज्येष्ठ बुदी १२ । वे० सं० ७८७ । क
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७८८) और है ।

४३५१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १८६२ माघ बुदी ३ । वे० सं० ८४० । ड
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ५, ४१) और हैं ।

४३५२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६० । ले० काल सं० १८८४ भाद्रवा सुदी १ । वे० सं० १३१ । ङ
भण्डार ।

४३५३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १८६० । वे० सं० ४२ । ज भण्डार ।

४३५४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८३ । ले० काल × । वे० सं० १२६ । झ भण्डार ।

विशेष—विजयराम पांड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४३५५. अढाईद्वीपपूजा—बिन्धुभूषण । पत्र सं० ११३ । आ० १०३×७३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६०२ वैशाख सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० २ । च भण्डार ।

४३५६. अढाईद्वीपपूजा..... पत्र सं० १२३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
१० काल × । ले० काल सं० १८६२ पौष सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ५०५ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रंथावती निवासी पिरागदास बाकलीवाल महाराज ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५३४) और है ।

४३५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२१ । ले० काल सं० १८८० । वे० सं० २१४ । ख भण्डार ।

विशेष—महात्मा जोशी जीवरण ने जोधनेर में प्रतिलिपि की थी ।

४३५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६७ । ले० काल सं० १८७० कार्तिक सुदी ४ । वे० सं० १२३ । घ
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति [वे० सं० १२२] और है ।

४३५९. अढाईद्वीपपूजा—डालूराम । पत्र सं० १६३ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य ।
विषय—पूजा । १० काल सं० चैत सुदी ६ । ले० काल सं० १६३६ वैशाख सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ८ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रामरत्न दीवान के कहने से डालूराम अग्रवाल ने माधोराजपुरा में पूजा रचना की ।

४३६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६८ । ले० काल सं० १६५७ । वे० सं० ५०६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां [वे० सं० ५०४, ५०५] और हैं ।

४३६१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४४ । ले० काल × । वे० सं० २०१ । छ भण्डार ।

४३६२. अनन्तचतुर्दशीपूजा—शांतिदास । पत्र सं० १६ । आ० ८३×७ इंच । भाषा संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४ । ख भण्डार ।

विशेष—व्रतोद्यापन विधि सहित है । यह पुस्तक गणेशजी गंगवाल ने वेगस्यों के मन्दिर में चढाई थी ।

४३६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३८६ । व्य भण्डार ।

विशेष—पूजा विधि एवं जयमाल हिन्दी गद्य में है ।

इसी भण्डार में एक प्रति सं० १८२० की [वे० सं० ३६०] और है ।

४३६४. अनन्तचतुर्दशीव्रतपूजा..... । पत्र सं० १३ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८८ । अ भण्डार ।

विशेष—आदिनाथ से अनन्तनाथ तक पूजा है ।

४३६५. अनन्तचतुर्दशीपूजा—श्री भूषण । पत्र सं० १८ । आ० १०३×७ इंच । भाषा—हिन्द ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४ । ज भण्डार ।

४३६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १८२७ । वे० सं० ४२१ । व्य भण्डार ।

विशेष—सवाई जयपुर में पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।

४३६७. अनन्तचतुर्दशीपूजा..... । पत्र सं० २० । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत, हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५ । ख भण्डार ।

४३६८. अनन्तजिनपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १ । आ० १०३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० २०४२ । ट भण्डार ।

४३६९. अनन्तनाथपूजा—श्री भूषण । पत्र सं० २ । आ० ७×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५५ । अ भण्डार ।

४३७०. अनन्तनाथपूजा । पत्र सं० १ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८२१ । अ भण्डार ।

४३७१. अनन्तनाथपूजा—सेवग । पत्र सं० ३ । आ० ८३×६३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र नीचे से फटा हुआ है ।

४३७२. अनन्तनाथपूजा। पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६४ । अ भण्डार ।

४३७३. अनन्तव्रतपूजा। पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५२०, ६६५) और हैं ।

४३७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । अ भण्डार ।

४३७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल × । वे० सं० २३० । अ भण्डार ।

४३७६. अनन्तव्रतपूजा। पत्र सं० २ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३५२ । अ भण्डार ।

विशेष—जैनेतर पूजा ग्रन्थ है ।

४३७७. अनन्तव्रतपूजा—भ० विजयकीर्ति । पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २४१ । अ भण्डार ।

४३७८. अनन्तव्रतपूजा—साह सेवाराम । पत्र सं० ३ । आ० ८×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । अ भण्डार ।

४३७९. अनन्तव्रतपूजाविधि। पत्र सं० १८ । आ० १०३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८५८ भाद्रवा सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १ । अ भण्डार ।

४३८०. अनन्तपूजाव्रतमहात्म्य। पत्र सं० ६ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८४१ । पूर्ण । वे० सं० १३६३ । अ भण्डार ।

४३८१. अनन्तव्रतोद्यापनपूजा—आ० गुणचन्द्र । पत्र सं० १८ । आ० १२×५ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १६३० । ले० काल सं० १८४५ आसोज सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४६७ । अ
भण्डार ।

विशेष—अन्तिम पाठ निम्न प्रकार है—

इत्याचार्याश्रीगुणचन्द्रविरचिता श्रीअनन्तनाथव्रतपूजा परिपूर्णा समाप्ता ॥

संवत् १८४५ का— अश्विनीमासे शुक्लपक्षे तिथी च चौथि लिखितं पिराणदास मोहा का जाति बाकलीवाल
प्रतापमहाराज्ये मुरेन्द्रकोत्ति भट्टारक विराजमाने मति पं० कल्याणदासतत्सेवक आज्ञाकारी पंडित खुसालचन्द्रेण इदं
अनन्तव्रतोद्यापननिष्ठापितं ॥१॥

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५३६) और है ।

४३८२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६२८ आसोज बुदी १५ । वे० सं० ७ । ख

भण्डार ।

४३८३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० १२ । छ भण्डार ।

४३८४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

४३८५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २१ । ले० काल सं० १८६४ । वे० सं० २०७ । व्य भण्डार ।

४३८६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० ४३२ । व्य भण्डार ।

विशेष—२ चित्र मण्डल के हैं । श्री शाकमडगपुर चूहड़वंश के हर्ष नामक दुर्गा वणिक ने ग्रन्थ रचना कराई थी ।

४३८७. अभिषेकपाठ..... । पत्र सं० ४ । आ० १२×५^३ ड'च । भाषा—संस्कृत । विषय—भगवान के अभिषेक के समय का पाठ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६१ । अ भण्डार ।

४३८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ५७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५२ । छ भण्डार ।

विशेष—विधि विधान सहित है ।

४३८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७३२ । च भण्डार ।

४३९०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १६२२ । ट भण्डार ।

४३९१. अभिषेकविधि—लक्ष्मीसेन । पत्र सं० १५ । आ० ११×५^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—भगवान के अभिषेक के समय का पाठ एवं विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१) और है जिसे भ्राजूराम साह ने जीवनराम सेठी के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी । चिंतामणि पार्वनाथ स्तोत्र सोमसेन कृत भी है ।

४३९२. अभिषेकविधि..... । पत्र सं० ८ । आ० ११×४^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय भगवान के अभिषेक की विधि एवं पाठ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७८ । अ भण्डार ।

४३९३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ११६ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७०) और है ।

४३९४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २११४ । ट भण्डार ।

४३९५. अभिषेकविधि । पत्र सं० १ । आ० ८^३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—भगवान के अभिषेक की विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३२ । अ भण्डार ।

४३६६. अष्टिष्ठाध्याय... पत्र सं० ६ । आ० ११×३ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—सल्लेखना विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६७ । अ भण्डार ।

विशेष—२०३ कुल गाथायें हैं— ग्रन्थका नाम रिद्धाद है । जिसका संस्कृत रूपान्तर अष्टिष्ठाध्याय है । आदि मन्त की गाथायें निम्न प्रकार हैं—

परामंत सुरानुरमउ लिरयणवरकिरणकंतविद्धुरियं ।
वीरजिणपायकुपलं एमिऊण मणेमि रिद्धादं ॥१॥
संसारम्मि भमंतो जीवो वहुभेष भिण्ण जेरिणु ।
पुरकेण कहवि पावइ सुहमणु भतं ए संदेहो ॥२॥

मन्त—

पुणु विज्जवेज्जहरणुणं वारउ एव वीस सामिथ्यं ।
सुधीव मुमंतरेणं रइय भणिमं मुणि ठीरे वरि देहि ॥२०१॥
सूई भूमीलें फलए समरे हाहि विराम परिहाणो ।
कहिजइ भूमीए समंवरे हातयं वच्छा ॥२०२॥
अट्टाट्टारह छियो जे लद्धीह लच्छरेहाउं ।
पढमोहिरे अकं गविजए याहि एणं तच्छ ॥२०३॥

इति अष्टिष्ठाध्यायशास्त्रं समाप्तम् । ब्रह्मवस्ता लेखितं ॥श्री॥ छ ॥

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २४१) और है ।

४३६७. अष्टाह्निकाजयमाला... पत्र सं० ४ । आ० ६३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अष्टा-
ह्निका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०३१ ।

विशेष—जयमाला प्राकृत में है ।

४३६८. अष्टाह्निकाजयमाला... पत्र सं० ४ । आ० १३×४ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—अष्टा-
ह्निका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३१) और है ।

४३६९. अष्टाह्निकापूजा... पत्र सं० ४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—अष्टाह्निका
पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६०) और है ।

४४००. अष्टाह्निकापूजा... पत्र सं० ३१ । आ० १०३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
अष्टाह्निका पर्व की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १५३३ । पूर्ण । वे० सं० ३३ । क भण्डार ।

विशेष—संवत् १५३३ में इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि कराई जाकर भट्टारक श्री रत्नकीर्ति की भेंट की गई थी । जयमाला आकृत में है ।

४४०१. अष्टाह्निकापूजाकथा—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय अष्टाह्निका पर्व की पूजा तथा कथा । २० काल सं० १८५१ । ले० काल सं० १८६८ प्राषाढ सुदी १० । वे० सं० ५६६ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० खुशालचन्द ने जोधराज पाटोदी के बनवाये हुए मन्दिर में अपने हाथ से प्रतिलिपि की थी ।

भट्टारकोऽभुञ्जगदादिकीर्ति श्रीमूलसधे वरशारदायाः ।

गच्छेहि तत्पट्टसुराजिराजि देवेन्द्रकीर्ति समभूततश्च ॥१३७॥

तत्पट्टपूर्वाचलभानुकक्षः श्रीकुंदकुंदान्वयलब्धमुख्यः ।

महेन्द्रकीर्तिः प्रबभूवपट्टे क्षेमेन्द्रकीर्तिः गुरुरस्थमेऽभूत ॥१३८॥

योऽभूत्क्षेमेन्द्रकीर्तिः भुवि सगुणभरश्चारुचारित्रघारी ।

श्रीमद्भट्टारकैर्द्रो विलसदवगमो भव्यसंघे प्रवचः ।

तस्य श्रीकारशिष्यागमजलधिपट्टः श्रीसुरेन्द्रकीर्ति ।

रेनां पुण्यांचकार प्रलघुमतिविदां बोधतापार्जशब्दैः ॥१३९॥

मिति अषाढमासे शुक्लपक्षेदशम्यां तिथौ संवत् १८७८ का सवाई जयपुर के श्रीऋषभदेवचैत्यालये निवास पं० कल्याणदासस्य शिष्य खुशालचन्द्रेण स्वहस्तेन लिपीकृतं जोधराज पाटोदी कृत चैत्यालये ॥ शुभं भूयात् ॥

इसके अतिरिक्त यह भी लिखा है—

मिति माहसुदी ३ सं० १८८८ मुनिराज दाय आया । बडा वृषभसेनजा लघु बाहुबलि मालपुरासुं प्रकाशमें आया । सांगानेर सुं भट्टारकजी की नसियां में दिन घड़ी च्यार चढ्यां जयपुर में दिन सवा पहर पाछै मंदिरां दर्शन संगही का पाटोदी उगहर (वगैरह) मंदिर १० कीया पाछै मोहनवाड़ी नंदलालजी की कीर्तिस्तंभ की नसियां संगही विरधोचंदजी आपकी हवेली में रात्रि १ रह्या भोजनकरि साहीवाड रात्रिवास कीयो संभेदगिरि यात्रापधारया पराकृत बोले श्री ऋषभदेवजी सहाय ।

इसी भण्डार में एक प्रति सं० १८८८ की (वे० सं० ५४२) और है ।

४४०२. अष्टाह्निकापूजा—द्यान्तराय । पत्र सं० ३ । आ० ८×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०३ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्रों का कुछ भाग जल गया है ।

४४०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६३१ । वे० सं० ३२ । क मण्डार ।

४४०४. अष्टाह्निकापूजा..... । पत्र सं० ४४ । प्रा० ११×५३ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अष्टाह्निका पर्व की पूजा । २० काल सं० १८७६ कार्तिक बुध ६ । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वे० सं० १० । क मण्डार ।

४४०५. अष्टाह्निकाव्रतोद्यापनपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ३ । प्रा० ११×४ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-अष्टाह्निका व्रत विधान एवं पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२३ । च मण्डार ।

४४०६. अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन..... । पत्र सं० २२ । प्रा० ११×५३ इच्च । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-अष्टाह्निका व्रत एवं पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८६ । क मण्डार ।

४४०७. आचार्य शान्तिसागरपूजा—भगवानदास । पत्र सं० ४ । प्रा० ११३×६३ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल सं० १६८४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२२ । छ मण्डार ।

४४०८. आठकोडिमुनिपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं० ४ । प्रा० १२×६ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । छ मण्डार ।

४४०९. आदित्यव्रतपूजा—केशवसेन । पत्र सं० ८ । प्रा० १२×५३ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-रविव्रतपूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०० । अ मण्डार ।

४४१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १७८३ भाद्रपद सुदी ६ । वे० सं० ६२ । क मण्डार ।

४४११. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६०५ आसोज सुदी २ । वे० सं० १८० । क मण्डार ।

४४१२. आदित्यव्रतपूजा..... । पत्र सं० ३५ से ४७ । प्रा० १३×५ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-रविव्रत पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७६१ । अपूर्ण । वे० सं० २०६८ । ट मण्डार ।

४४१३. आदित्यवारपूजा..... । पत्र सं० १४ । प्रा० १०×४३ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-रवि व्रतपूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५२० । च मण्डार ।

४४१४. आदित्यवारव्रतपूजा..... । पत्र सं० ६ । प्रा० ११×५ इच्च । भाषा-संस्कृत । विषय-रवि व्रतपूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ मण्डार ।

४४१५. आदिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ४ । प्रा० १०३×५ इच्च । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४८ । अ मण्डार ।

४४१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ५१६ । च मण्डार ।

विशेष—इमी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५१७) और है ।

४४१७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ९। ले० काल ×। वे० सं० २३२। ज भण्डार।

विशेष—प्रारम्भ में तीन चौबीसी के नाम तथा लघु दर्शन पाठ भी हैं।

४४१८. आदिनाथपूजा.....। पत्र सं० ४। आ० १२३×५३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा।

१० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१४५। अ भण्डार।

४४१९. आदिनाथपूजाष्टक.....। पत्र सं० १। आ० १०३×७३ इञ्च। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा।

१० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० १२२३। अ भण्डार।

विशेष—नेमिनाथ पूजाष्टक भी है।

४४२०. आदीश्वरपूजाष्टक.....। पत्र सं० २। आ० १०३×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—आदि-

नाथ तीर्थङ्कर की पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२२९। अ भण्डार।

विशेष—महावीर पूजाष्टक भी है जो संस्कृत में है।

४४२१. आराधनाविधान.....। पत्र सं० १७। आ० १०×४३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—

विषय-विधान। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४१५। ब्य भण्डार।

विशेष—त्रिकाल चौबीसी, षोडशकारण आदि विधान दिये हुये हैं।

४४२२. इन्द्रध्वजपूजा—भ० विश्वभूषण। पत्र सं० ९८। आ० १२×५३ इंच। भाषा—संस्कृत।

विषय—पूजा। १० काल ×। ले० काल सं० १८५९ वैशाख बुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ४९१। अ भण्डार।

विशेष—'विशालकीर्त्यात्मज भ० विश्वभूषण विरचितायां' ऐसा लिखा है।

४४२३. प्रति सं० २। पत्र सं० ९२। ले० काल सं० १८५० द्वि० वैशाख सुदी ३। वे० सं० ४८७।

अ भण्डार।

विशेष—कुछ पत्र चिपके हुये हैं। ग्रन्थ की प्रतिलिपि जयपुर में महाराजा प्रतापसिंह के शासनकाल में हुई थी।

४४२४. प्रति सं० ३। पत्र सं० ९९। ले० काल ×। वे० सं० ८८। ऊ भण्डार।

४४२५. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०६। ले० काल ×। वे० सं० १३०। छ भण्डार।

विशेष—ब्य भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३५, ४३०) और हैं।

४४२६. इन्द्रध्वजमंडलपूजा.....। पत्र सं० ९७। आ० ११३×५३ इञ्च। भाषा—संस्कृत। विषय—

मेलों एवं उत्सवों आदि के विधान में की जाने वाली पूजा। १० काल ×। ले० काल सं० १९३६ फागुण सुदी ५।

पूर्ण। वे० सं० १९। ख भण्डार।

विशेष—पं० पन्नालाल जोबनेर वाले ने श्योजीलालजी के मन्दिर में प्रतिलिपि की। मण्डल की सूची भी दी हुई है।

४४२७. उपवासग्रहणविधि..... । पत्र सं० १ । प्रा० १०×५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—उपवास विधि । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० १२२५ । पूर्ण । अ भण्डार ।

४४२८. ऋषिमंडलपूजा—आचार्य गुणनन्दि । पत्र सं० ११ से ३० । प्रा० १०½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विभिन्न प्रकार के मुनियों की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६१५ वैशाख बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं० ६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र १ से १० तक ग्रन्थ पूजायें हैं । प्रशस्ति निम्न प्रकार है ।

संवत् १६१५ वर्षे वैशाख बदि ५ गुरुवासरे श्री मूलसंधे नद्याम्नाये बलात्कारगणे सरस्वतीगण्डे पुणनन्दि-मुनीन्द्रेण रचिताभक्तिभावतः । शतमाधिकाशीतिश्लोकानां ग्रन्थ संख्यख्या ॥ग्रन्थाग्रन्थ ३८०॥

इसी भण्डार भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७२) और है ।

४४२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १३६ । छ भण्डार ।

विशेष—अष्टाह्निका जयमाल एवं निर्वाणकाण्ड और है । ग्रन्थ के दोनों ओर सुन्दर बेल बूटे हैं । श्री आदिनाथ व महावीर स्वामी के चित्र उनके वर्णानुसार हैं ।

४४३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १३७ । घ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ के दोनों ओर स्वर्ण के बेल बूटे हैं । प्रति दर्शनीय है ।

४४३१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७७५ । वे० सं० १३७ (क) घ भण्डार ।

विशेष—प्रति स्वर्णाक्षरों में है प्रति सुन्दर एवं दर्शनीय है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३८) और है ।

४४३२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० ६५ । ङ भण्डार ।

४४३३ प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ७६ । ऋ भण्डार ।

४४३४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २१० । ब भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४३३) और है जो कि मूलसंध के आचार्य नेमिचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

४४३५. ऋषिमंडलपूजा—मुनि ज्ञानभूषण । पत्र सं० १७ । प्रा० १०½×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

४४३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । छ भण्डार ।

४४३७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २५६ ।

विशेष—प्रथम पत्र पर सकलीकरण विधान दिया हुआ है।

४४३८. ऋषिमंडलपूजा.....। पत्र सं० १८ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल १७६८ चैत्र बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ४८ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा मानजी ने आमेर में प्रतिलिपि की थी ।

४४३९. ऋषिमंडलपूजा.....। पत्र सं० ८ । आ० ९३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल सं० १८०० कार्तिक बुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ४९ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति मंत्र एवं जाप्य सहित है ।

४४४०. ऋषिमंडलपूजा—दौलत आसेरी । पत्र सं० ९ । आ० ९३×६३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १९३७ । पूर्ण । वे० सं० २९० । क भण्डार ।

४४४१. कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा.....। पत्र सं० ७ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा एवं विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५ । च भण्डार ।

विशेष—काजीबारस का व्रत भाखापुरी १२ को किया जाता है ।

४४४२. कंजिकाव्रतोद्यापन.....। पत्र सं० ६ । आ० ११३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४ । च भण्डार ।

विशेष—जयमाल अपभ्रंश में है ।

४४४३. कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा.....। पत्र सं० १२ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विषय—पूजा एवं विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७ । क भण्डार ।

विशेष—पूजा संस्कृत में है तथा विधि हिन्दी में है ।

४४४४. कर्मचूरव्रतोद्यापन.....। पत्र सं० ८ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल सं० १९०४ भाद्रवा सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५९ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६०) और है ।

४४४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल

× । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०४ । क भण्डार ।

४४४६. कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा—लक्ष्मीसेन । पत्र सं० १० । आ० १०×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४४४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ४१३ । च भण्डार ।

४४४८. कर्मदहनपूजा—भ० शुभचंद्र । पत्र सं० ३० । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कर्मों के नष्ट करने के लिए पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७६४ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं०
१६ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३०) और है ।

४४४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६७२ आसोज । वे० सं० २१३ । व्य भण्डार ।

४४५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६३५ मंगसिर बुदी १० । वे० सं० २२५ । व्य
भण्डार ।

विशेष—आ० नेमिचन्द्र के पठनार्थ लिखा गया था ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६७) और है ।

४४५१. कर्मदहनपूजा..... । पत्र सं० ११ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कर्मों के
नष्ट करने की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८३६ मंगसिर बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ५२५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार एक प्रति (वे० सं० ५१३) और है जिसका ले० काल सं० १८२४ भाद्रवा सुदी
१३ है ।

४४५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८८८ माघ शुक्ला ८ । वे० सं० १० । घ
भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति विस्तृत है ।

४४५३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७०८ भाद्रवा सुदी २ । वे० सं० १०१ । क
भण्डार ।

विशेष—माइदास ने प्रतिलिपि कर्वायी थी ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १००, १०१) और हैं ।

४४५४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे० सं० ६३ । च भण्डार ।

४४५५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३० । ले० काल × । वे० सं० १२५ । छ भण्डार ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड भाषा भी दिया हुआ है । इसी भण्डार में और इसी वेष्टन में १ प्रति और है ।

४४५६. कर्मदहनपूजा—टेकचन्द्र । पत्र सं० २२ । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—कर्मों
को नष्ट करने के लिये पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । अ भण्डार ।

४४५७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ११ । घ भण्डार ।

४४५८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८६८ फागुण बुदी ३ । वे० सं० ५३२ । च
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५३१, ५३३) और है ।

४४५६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८९१ । वे० सं० १०३ । छ भण्डार ।

४४६०. प्रति सं० ५ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १९५८ । वे० सं० २२१ । छ भण्डार ।

विशेष—अजमेर वालों के चौबारे जयपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३९) और है ।

४४६१. कलशविधान—मोहन । पत्र सं० ६ । आ० ११×५^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कलश एवं अभिषेक आदि की विधि । र० का० सं० १९१७ । ले० काल सं० १९२२ । पूर्ण । वे० सं० २७ । ख भण्डार ।

विशेष—भैरवसिंह के शासनकाल में शिवकर (सीकर) नगर में मटंब नामक जिन मन्दिर के स्थापित करने के लिए यह विधान रचा गया ।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

लिखित पं० पन्नालाल अजमेर नगर में भट्टारकजी महाराज श्री १०८ श्री रत्नभूषणजी के पाठ भट्टारकजी महाराज श्री १०८ श्री ललितकीर्त्तिजी महाराज पाठ विराज्या बैशाख सुदी ३ नै त्यांकी दिक्षा में आया जोबनेरसुं पं० हीरालालजी पन्नालाल जयचंद उतरचा दोलतरामजी लोढा ओसवाल की होली में पंडितराज नोगावां का उतरचा एक जायगां ११ ताई रह्या ।

४४६२. कलशविधान..... । पत्र सं० ६ । आ० १०^३×५^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—कलश एवं अभिषेक आदि की विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७९ । अ भण्डार ।

४४६३. कलशविधि—विश्वभूषण । पत्र सं० १० । आ० ९^३×४^३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—विधि । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४४८ । अ भण्डार ।

४४६४. कलशारोपणविधि—आशाधर । पत्र सं० ५ । आ० १२×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्दर के शिखर पर कलश चढ़ाने का विधि विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०७ । छ भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ का अंग है ।

४४६५. कलशारोपणविधि..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्दिर के शिखर पर कलश चढ़ाने का विधान । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२२) और है ।

४४६६. कलशाभिषेक—आशाधर । पत्र सं० ६ । आ० १० $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
प्रभिषेक विधि । २० काल × । ले० काल सं० १८३८ भाद्रवा बुदी १० । पूर्ण । वै० सं० १०६ । ङ भण्डार ।

विशेष—पं० रामभूराम ने विमलनाथ स्वामी के चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी ।

४४६७. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा—भ० प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ३४ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२६ चैत्र सुदी १३ । पूर्ण । वै० सं० ५८१ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १६२६ वर्षे चैत्र सुदी १३ बुधे श्रीमूलसंघे नंद्याम्माये बलात्कारणो सरस्वतीगन्धे श्रीकुंदकुंदाचार्या-
न्वये भ० पद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीगुणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीजिणचन्द्रदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्रदेवा तच्छिष्य
श्रीमंडलाचार्यधर्मचंद्रदेवा तच्छिष्य मंडलाचार्यश्रीललितकीर्तिदेवा तदाम्नाये खंडेलवालान्वये मंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्र तत्-
शिष्यगिरि बाई नाना इदं शास्त्रं लिखापि मुनि हेमचन्द्रायदत्तं ।

४४६८. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा..... । पत्र सं० ७ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ४१६ । अ भण्डार ।

४४६९. कलिकुण्डपूजा..... । पत्र सं० ३ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ११८३ । अ भण्डार ।

४४७०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० १०८ । ङ भण्डार ।

४४७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वै० सं० २५६ । ज भण्डार । और भी पूजायें हैं ।

४४७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वै० सं० २२४ । झ भण्डार ।

४४७३. कुण्डलगिरिपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—कुण्डलगिरि क्षेत्र की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५०३ । अ भण्डार ।

विशेष—रुचिकरगिरि, मानुषोत्तरगिरि तथा पुष्कराढ की पूजायें और हैं ।

४४७४. क्षेत्रपालपूजा—श्री विश्वसेन । पत्र सं० २ मे २८ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८७४ भाद्रवा बुदी ६ । अपूर्ण । वै० सं० १३३ । (क) ङ भण्डार ।

४४७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १६३० ज्येष्ठ सुदी ४ । वै० सं० १२४ । छ
भण्डार ।

विशेष—गणेशनाथ पांड्या चौधरी घाटमू वान के लिए पं० मनमुखजी ने गोधों के मन्दिर में प्रतिलिपि
की थी ।

४४७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६१६ बैशाख बुदी १३ । वै० सं० ११८ । ज
भण्डार ।

४४७७. क्षेत्रपालपूजा..... पत्र सं० ६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—जैन
मान्यतानुसार भैरव की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६० फागुण बुदी ७ । पूर्ण । वै० सं० ७६ । अ
भण्डार ।

विशेष—कंवरजी श्री चंपालालजी टोंग्या खंडेलवाल ने पं० श्यामलाल ब्राह्मण से प्रतिलिपि करवाई थी ।

४४७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १८६१ चैत्र सुदी ६ । वै० सं० ४८६ । अ
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० ८२२, १२२८) और हैं ।

४४७९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वै० सं० १२४ । छ भण्डार ।

विशेष—२ प्रतियां और हैं ।

४४८०. कंजिकाव्रतोद्यापनपूजा—मुनि ललितकीर्ति । पत्र सं० ५ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५११ । अ भण्डार ।

४४८१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० ११० । क भण्डार ।

४४८२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६२८ । वै० सं० ३०२ । ख भण्डार ।

४४८३. कंजिकाव्रतोद्यापन..... पत्र सं० १७ से २१ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वै० सं० ६८ । छ भण्डार ।

४४८४. गजपथामंडलपूजा—भ० क्षेमेन्द्रकीर्ति (नागौर पट्ट) । पत्र सं० ८ । आ० १२×५३
इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६४० । पूर्ण । वै० सं० ३६ । ख भण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रशस्ति—

मूलसंधे बलात्कारे गच्छे सारस्वते भवत् ।

कुन्दकुन्दान्वये जातः श्रुतसागरपारगः ॥१६॥

नागौरिपट्टेऽपि अनंतकीर्तिः तत्पट्टधारी शुभ हर्षकीर्तिः ।

तत्पट्टविद्यादिसुभूषणाख्यः तत्पट्टहेमादिसुकीर्तिमाख्यः ॥२०॥

हेमकीर्तिमुनेः पट्टे क्षेमेन्द्रादियथाः प्रभुः ।

तस्याज्ञया विरचितं गजपंथसुपूजनं ॥२१॥

विदुषा शिवजिद्रक्तः नामधेयेन मोहनः ।

प्रेम्णा यात्राप्रसिद्धचर्यं चैकाह्निरचितं चिरं ॥२२॥

जीयादिदं पूजनं च विश्वभूषणवधुवं ।

तस्यानुसारतो ज्ञेयं न च बुद्धिकृतं त्विदं ॥२३॥

इति नागौरपट्टविराजमान श्रीभट्टारकक्षेमेन्द्रकौत्तिविरचितं गजपंथमंडलपूजनविधानं समाप्तम् ॥

४४८५. गणधरचरणारविन्दपूजा.....। पत्र सं० ३ । आ० १०^१/_२×४^१/_२ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन एवं संस्कृत टीका सहित है ।

४४८६. गणधरजयमाला.....। पत्र सं० १ । आ० ८×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१०० । अ भण्डार ।

४४८७. गणधरबलयपूजा.....। पत्र सं० ७ । आ० १०^१/_२×४^३/_२ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १४२ । क भण्डार ।

४४८८. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से ७ । ले० काल × । वे० सं० १३४ । क भण्डार ।

४४८९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ११९, १२२) और हैं ।

४४९०. गणधरबलयपूजा.....। पत्र सं० २२ । आ० ११×४ इंच । भाषा-विषय-पूजा । २० काल
× । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२१ । अ भण्डार ।

४४९१. गिरिनारक्षेत्रपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र सं० ११ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । २० काल सं० १७५६ । ले० काल सं० १९०४ माघ बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ९१२ । अ भण्डार ।

४४९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० ११९ । छ भण्डार ।

विशेष—एक प्रति और है ।

४४९३. गिरिनारक्षेत्रपूजा.....। पत्र सं० ४ । आ० ८×६^३/_२ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २०
काल × । ले० काल सं० १९६० । पूर्ण । वे० सं० १४० । क भण्डार ।

४४९४. चतुर्दशीव्रतपूजा.....। पत्र सं० १३ । आ० ११^१/_२×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५३ । क भण्डार ।

४४९५. चतुर्विंशतिजयमाला—यति माघनंदि । पत्र सं० २ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६८ । अ भण्डार ।

४४६६. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा.....। पत्र सं० ५१। आ० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० १३८। ज भण्डार।

विशेष—केवल अन्तिम पत्र नहीं है।

४४६७. प्रति सं० २। पत्र सं० ४६। ले० काल सं० १६०२ वैशाख बुदी १०। वै० सं० १३६। ज भण्डार।

४४६८. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा.....। पत्र सं० ४६। आ० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १। झ भण्डार।

विशेष—दलजी बज मुशरफ ने चढाई थी।

४४६९. प्रति सं० २। पत्र सं० ४१। ले० काल सं० १६०६। वै० सं० ३३१। झ भण्डार।

४५००. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा.....। पत्र सं० ४४। आ० १०३×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ५६७। अ भण्डार।

विशेष—कहीं २ जयमाला हिन्दी में भी है।

४५०१. प्रति सं० २। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६०१। वै० सं० १५६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वै० सं० १५५) और है।

४५०२. प्रति सं० ३। पत्र सं० २८। ले० काल ×। वै० सं० ८६। च भण्डार।

४५०३. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—सेवाराम साह। पत्र सं० ४३। आ० १२×७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। र० काल सं० १८२४ मंगसिर बुदी ६। ले० काल सं० १८५४ आसोज सुदी १५। पूर्ण। वै० सं० ७१५। अ भण्डार।

विशेष—भाभूराम ने प्रतिलिपि की थी। कवि ने अपने पिता वखतराम के बनाये हुए मिथ्यात्वखंडन और बुद्धिविलास का उल्लेख किया है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ७१४) और है।

४५०४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६०। ले० काल सं० १६०२ आषाढ सुदी ८। वै० सं० ७१४। अ भण्डार।

४५०५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५२। ले० काल सं० १६४० फागुण बुदी १३। वै० सं० ४६। ख भण्डार।

४५०६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६। ले० काल सं० १८८३। वै० सं० २३। ग भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० २१, २२) और हैं।

४५०७. चतुर्विंशतिपूजा.....। पत्र सं० २०। मा० १२×५३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा।
२० काल। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० १२०। छ मण्डार।

४५०८. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—वृन्दावन। पत्र सं० ६६। मा० ११×५३ इंच। भाषा—हिन्दी।
विषय—पूजा। २० काल सं० १८१६ कार्तिक बुदी ३। ले० काल सं० १६१५ आषाढ बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ७१६।
अ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिष्ठा (वे० सं० ७२०, ६२७) और हैं।

४५०९. प्रति सं० २। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० १४५। क मण्डार।

४५१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६५। ले० काल ×। वे० सं० ४७। ख मण्डार।

४५११. प्रति सं० ४। पत्र सं० ४६। ले० काल सं० १६५६ कार्तिक सुदी १०। वे० सं० २६। ग
मण्डार।

४५१२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ५५। ले० काल ×। अपूर्णा। वे० सं० २५। घ मण्डार।

विशेष—बीच के कुछ पत्र नहीं हैं।

४५१३. प्रति सं० ६। पत्र सं० ७०। ले० काल सं० १६२७ सावन सुदी ३। वे० सं० १६०। ङ
मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में ४ प्रतिष्ठा (वे० सं० १६१, १६२, १६३, १६४) और हैं।

४५१४. प्रति सं० ७। पत्र सं० १०५। ले० काल ×। वे० सं० ५४४। च मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में ३ प्रतिष्ठा (वे० सं० ५४२, ५४३, ५४५) और हैं।

४५१५. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४७। ले० काल ×। वे० सं० २०२। छ मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में ४ प्रतिष्ठा (वे० सं० २०४ में ३ प्रतिष्ठा, २०५) और हैं।

४५१६. प्रति सं० ९। पत्र सं० ६७। ले० काल सं० १६४२ चैत्र सुदी १५। वे० सं० २६१। ज
मण्डार।

४५१७. प्रति सं० १०। पत्र सं० ८१। ले० काल ×। वे० सं० १८६। झ मण्डार।

विशेष—सर्वमुखजी गोधा ने सं० १६०० भाद्रवा सुदी ५ को चढ़ाया था।

इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० १४५) और है।

४५१८. प्रति सं० ११। पत्र सं० ११५। ले० काल सं० १६४६ सावण सुदी २। वे० सं० ४४५। ब
मण्डार।

४५१९. प्रति सं० १२। पत्र सं० १४७। ले० काल सं० १६३७। वे० सं० १७०६। ट मण्डार।

विशेष—छोटेलाल भांबसा ने स्वपठनार्थ धीलान में प्रतिलिपि कराई थी।

४५२०. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ६० । आ० ११×५३ इंच । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—पूजा । २० काल सं० १८५४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५४६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २१५८, २०८५) और हैं ।

४५२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५० । ले० काल सं० १८७१ आसोज सुदी ६ । वे० सं० २४ । ग भण्डार ।

विशेष—सदामुख कासलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २५) और है ।

४५२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५१ । ले० काल सं० १६६६ । वे० सं० १७ । घ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १६, २४) और हैं ।

४५२३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५७ । ले० काल × । वे० सं० १५७ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० १५८, १५६, ७८७) और हैं ।

४५२४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० ५४६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ५४६, ५४७, ५४८) और हैं ।

४५२५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८६१ । वे० सं० २१६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० २१७, २१८, २२०/३) और हैं ।

४५२६. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० २०७ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०८) और है ।

४५२७. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०१ । ले० काल सं० १८६१ श्रावण बुदी ४ । वे० सं० १८ । झ भण्डार ।

विशेष—जैतराम रावका ने प्रतिलिपि कराई एवं नाथूराम रावका ने विजैराम पांड्या के मन्दिर में चढाई थी । इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५८, १८१) और हैं ।

४५२८. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ७३ । ले० काल सं० १८५२ आषाढ सुदी १५ । वे० सं० ६४ । ब भण्डार ।

विशेष—महात्मा जयदेव ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ३१५, ३२१) और हैं ।

४५२९. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—नेमीचन्द्र पाटनी । पत्र सं० ६० । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी ! विषय—पूजा । २० काल सं० १८८० भाद्रवा सुदी १० । ले० काल सं० १६१८ आसोज बुदी १२ । वे० सं० १४४ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्त में कवि का संक्षिप्त परिचय दिया हुआ है तथा बतलाया गया है कि कवि दीवान अमरचंद जी के मन्दिर में कुछ समय तक ठहरकर नागपुर चले गये तथा वहां से अमरावती गये ।

४५३०. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—मनरंगलाल । पत्र सं० ५१ । प्रा० ११×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२१ । अ भण्डार ।

४५३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० १४३ । क भण्डार ।

विशेष—पूजा के ग्रन्त में कवि का परिचय भी है ।

४५३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६० । ले० काल × । वे० सं० २०३ । छ भण्डार ।

४५३३. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—चस्तावरलाल । पत्र सं० ५४ । प्रा० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १८५४ मंगसिर बुदी ६ । ले० काल सं० १६०१ कार्तिक सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० ५५० । च भण्डार ।

विशेष—तनमुखराय ने प्रतिलिपि की थी ।

४५३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ मे ६६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २०५ । छ भण्डार ।

४५३५. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा—सुगनचन्द । पत्र सं० ६७ । प्रा० ११ $\frac{३}{४}$ ×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२६ चैत्र बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५५५ । च भण्डार ।

४५३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८४ । ले० काल सं० १६२८ वैशाख सुदी ५ । वे० सं० ५५६ । च भण्डार ।

४५३७. चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा..... । पत्र सं० ७७ । प्रा० ११×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६१६ चैत्र सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ६२६ । अ भण्डार ।

४५३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५४ । छ भण्डार ।

४५३९. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० १० । प्रा० ६×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८ । अ भण्डार ।

४५४०. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—चोखचन्द । पत्र सं० ८ । प्रा० १०×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१६ । अ भण्डार ।

विशेष—‘चतुर्थ पूजा की जयमाल’ यह नाम दिया हुआ है । जयमाल हिन्दी में है ।

४५४१. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा—भ० देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । प्रा० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—चन्द्रप्रभ की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७१ । क भण्डार ।

४५४२. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा.....। पत्र सं० २१। आ० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभ की पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८०५। ट भण्डार।

विशेष—निम्न पूजायें श्रीर हैं— पञ्चमी व्रतोद्यापन, नवग्रहपूजाविधान।

४५४३. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा.....। पत्र सं० ३। आ० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१६२। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१६३) श्रीर है।

४५४४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २०६३। ट भण्डार।

४५४५. चन्दनषष्ठीव्रतपूजा.....। पत्र सं० ६। आ० ११^३×५^३ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—चन्द्रप्रभ तीर्थङ्कर पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ६५७। अ भण्डार।

विशेष—३रा पत्र नहीं है।

४५४६. चन्द्रप्रभजिनपूजा—रामचन्द्र। पत्र सं० ७। आ० १०^३×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १८७६ आसोज बुदी ५। पूर्ण। वे० सं० ४२७। अ भण्डार।

विशेष—सदासुख बाकलीवाल महुआ वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४५४७. चन्द्रप्रभजिनपूजा—देवेन्द्रकीर्ति। पत्र सं० ५। आ० ११×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १७६२। पूर्ण। वे० सं० ५७६। अ भण्डार।

४५४८. प्रति सं० २। पत्र सं० ५। ले० काल सं० १८६३। वे० सं० ४३०। अ भण्डार।

विशेष—आमेरमें सं० १८७२ में रामचन्द्र की लिखी हुई प्रति से प्रतिलिपि की गई थी।

४५४९. चमत्कारअतिशयक्षेत्रपूजा.....। पत्र सं० ५। आ० ७×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १६२७ बैशाख बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० ६०२। अ भण्डार।

४५५०. चारित्रशुद्धिविधान—श्री भूषण। पत्र सं० १७०। आ० १२^३×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें। २० काल ×। ले० काल सं० १८८८ पौष सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ४४५। अ भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम बारहसौ चौतीसाव्रत पूजा विधान भी है।

४५५१. प्रति सं० २। पत्र सं० ८६। ले० काल ×। वे० सं० १५२। क भण्डार।

विशेष—लेखक प्रशस्ति कटी हुई है।

४५५२. चारित्रशुद्धिविधान—सुमतिब्रह्म । पत्र सं० ८४ । मा० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ बैशाख सुदी १५ ।
पूर्णा । वे० सं० १२३ । ख भण्डार ।

४५५३. चारित्रशुद्धिविधान—शुभचन्द्र । पत्र सं० ६६ । मा० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
मुनि दीक्षा के समय होने वाले विधान एवं पूजायें । २० काल × । ले० काल सं० १७१४ फाल्गुण सुदी ४ । पूर्णा ।
वे० सं० २०४ । ज भण्डार ।

विशेष—लेखक प्रशस्ति—

संवत् १७१४ वर्षे फागुणमासे शुक्लपक्षे चतुर्थ तिथौ शुक्रवासरे । षडसोलास्थाने मुंडलदेशे श्रीधर्मनाथ
चैद्यालये श्रीमूलसधे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्री ५ रत्नचन्द्राः तस्पट्टे भ० हर्षचन्द्राः
नदाम्नाये ब्रह्म श्री ठाकरसी तक्षिष्य ब्रह्म श्री गणदास तक्षिष्य ब्रह्म श्री महीदासेन स्वज्ञानावर्णी कर्म क्षयार्थ उच्चापन
बारसे चोदीनुं स्वहस्तेन लिखितं ।

४५५४. चिन्तामणिपूजा (वृहद्)—विद्याभूषण सूरि । पत्र सं० ११ । मा० ६३×४३ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ५५१ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र ३, ८, १० नहीं हैं ।

४५५५. चिन्तामणिपार्ष्वनाथपूजा (वृहद्)—शुभचन्द्र । पत्र सं० १० । मा० ११३×५ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ५७४ । अ भण्डार ।

४५५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १६६१ पौष बुदी ११ । वे० सं० ४१७ । अ
भण्डार ।

४५५७. चिन्तामणिपार्ष्वनाथपूजा । पत्र सं० ३ । मा० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ११८४ । अ भण्डार ।

४५५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० २८ । ग भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें ग्रीर हैं । चिन्तामणिस्तोत्र, कलिकुण्डस्तोत्र, कलिकुण्डपूजा एवं पद्मावतीपूजा ।

४५५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ६६ । च भण्डार ।

४५६०. चिन्तामणिपार्ष्वनाथपूजा । पत्र सं० ११ । मा० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ५८३ । च भण्डार ।

४५६१. चिन्तामणिपार्वनाथपूजा.....। पत्र सं० ५। आ० ११३×५३ इंच। भाषा—संस्कृत।

विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२१४। अ भण्डार।

विशेष—यज्ञविधि एवं स्तोत्र भी दिया है।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १८४०) और है।

४५६२. चौदहपूजा.....। पत्र सं० १६। आ० १०×७ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २०

काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६६। ज भण्डार।

विशेष—ऋषभनाथ से लेकर अनंतनाथ तक पूजायें हैं।

४५६३. चौसठऋद्धिपूजा—स्वरूपचन्द्र। पत्र सं० ३५। आ० ११३×५ इंच। भाषा—हिन्दी।

विषय—६४ प्रकार की ऋद्धि धारण करने वाले मुनियोंकी पूजा। २० काल सं० १६१० सावन सुदी ७। ले० काल सं०

१६५१। पूर्ण। वे० सं० ६६४। अ भण्डार।

विशेष—इसका दूसरा नाम बृहद्गुर्वाकलि पूजा भी है।

इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ७१६, ७१७, ७१८, ७३७) और हैं।

४५६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६१०। वे० सं० ६७०। क भण्डार।

४५६५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३२। ले० काल सं० १६५२। वे० सं० २६। ग भण्डार।

४५६६. प्रति सं० ४। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १६२६ फागुण सुदी १२। वे० सं० ७६। घ

भण्डार।

४५६७. प्रति सं० ५। पत्र सं० २५। ले० काल ×। वे० सं० १६३। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६४) और है।

४५६८. प्रति सं० ६। पत्र सं० ८। ले० काल ×। वे० सं० ७३४। च भण्डार।

४५६९. प्रति सं० ७। पत्र सं० ४८। ले० काल सं० १६२२। वे० सं० २१६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १४३, २१६/३) और हैं।

४५७०. प्रति सं० ८। पत्र सं० ४५। ले० काल ×। वे० सं० २०६। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० २६२/२ २६५) और हैं।

४५७१. प्रति सं० ९। पत्र सं० ४६। ले० काल ×। वे० सं० ५३४। व भण्डार।

४५७२. प्रति सं० १०। पत्र सं० ४३। ले० काल ×। वे० सं० १६१३। ट भण्डार।

४५७३. छोतिनिवारणविधि.....। पत्र सं० ३। आ० ११×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—

(विधान)। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८७८। अ भण्डार।

४५७४. जम्बूद्वीपपूजा—पांडे जिनदास पत्र सं० १६। मा० १० $\frac{१}{२}$ ×६ इंच। भाषा-संस्कृत।
विषय-पूजा। २० काल १७वीं शताब्दी। ले० काल सं० १८२२ मंगसिर बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० १८३। छ
भण्डार।

विशेष—प्रति प्रकृत्रिम जिनालय तथा भूत, भविष्यत्, वर्तमान जिनपूजा सहित है। पं० चोखचन्द ने
माहचन्द मे प्रतिलिपि करवाई थी।

४५७५. प्रति सं० २। पत्र सं० २८। ले० काल सं० १८८४ ज्येष्ठ सुदी १४। वे० सं० ६८। च
भण्डार।

विशेष—भवानीचन्द भांवासा भिनाय वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४५७६. जम्बूस्वामीपूजा ...। पत्र सं० १०। मा० ८×५ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-प्रन्तिम
केवली जम्बूस्वामी की पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १६४८। पूर्ण। वे० सं० ६०। अ भण्डार।

४५७७. जयमाल—रायचन्द। पत्र सं० १। मा० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। २०
काल सं० १८५५ फागुण सुदी १। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २१३२। अ भण्डार।

विशेष—भोजराज जी ने किशनगढ में प्रतिलिपि की थी।

४५७८. जलहरतेलाविधान ...। पत्र सं० ४। मा० ११ $\frac{३}{४}$ ×७ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-
विधान। २० काल ×। ले० काल ×। वे० सं० ३२३। ज भण्डार।

विशेष—जलहर तेले (व्रत) की विधि है। इसका दूसरा नाम भरतेला व्रत भी है।

४५७९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल सं० १६२८। वे० सं० ३०२। ख भण्डार।

४५८०. जलयात्रापूजाविधान.....। पत्र सं० २। मा० ११×६ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६३। ज भण्डार।

विशेष—भगवान के अभिषेक के लिए जल लाने का विधान।

४५८१. जलयात्राविधान—महा पं० आशाधर। पत्र सं० ४। मा० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच। भाषा-संस्कृत।
विषय-जन्माभिषेक के लिए जल लाने का विधान। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १०६६। अ
भण्डार।

४५८२. जलयात्रा (तीर्थोदकादनविधान)। पत्र सं० २। मा० ११×५ $\frac{३}{४}$ इंच। भाषा-
संस्कृत। विषय-विधान। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

विशेष—जलयात्रा के यन्त्र भी दिये हैं।

४५८३. जिनगुणसंपत्तिपूजा—भ० रत्नचन्द्र। पत्र सं० ६। मा० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच। भाषा-संस्कृत।
विषय-पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०२। छ भण्डार।

४५८४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६८३ । वे० सं० १७१ । अ भण्डार ।

विशेष—श्रीपति जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।

४५८५. जिनगुणसंपत्तिपूजा..... । पत्र सं० ११ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१६७ । अ भण्डार ।

विशेष—५वां पत्र नहीं है ।

४५८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६२१ । वे० सं० २६३ । ख भण्डार ।

४५८७. जिनगुणसंपत्तिपूजा..... । पत्र सं० ५ । आ० ७ $\frac{1}{2}$ ×६ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत प्राकृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१५ । अ भण्डार ।

४५८८. जिनपुरन्दरव्रतपूजा..... । पत्र सं० १४ । आ० १२×५ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०६ । छ भण्डार ।

४५८९. जिनपूजाकृतप्रातिकथा । पत्र सं० ५ । आ० १० $\frac{1}{2}$ ×४ $\frac{1}{2}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८३ । अ भण्डार ।

विशेष—पूजा के साथ २ कथा भी है ।

४५९०. जिनयज्ञकल्प (प्रतिष्ठासार)—महा पं० आशाधर । पत्र सं० १०२ । आ० १० $\frac{1}{2}$ ×४
इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मूर्ति, वेदी प्रतिष्ठादि विधानों की विधि । २० काल सं० १२८५ आसोज बुदी ८ । ले०
काल सं० १४६५ माघ बुदी ८ (शक सं० १३६०) पूर्ण । वे० सं० २८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

संवत् १४६५ शके १३६० वर्षे माघ वदि ८ गुरुवासरे..... (अपूर्ण)

४५९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७७ । ले० काल सं० १६३३ । वे० सं० ४५६ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रशस्ति— संवत् १६३३ वर्षे.....

४५९२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८८५ भाद्रवा बुदी १३ । वे० सं० २७ । घ
भण्डार ।

विशेष—मथुरा में औरङ्गजेब के शासनकाल में प्रतिलिपि हुई ।

लेखक प्रशस्ति—

श्रीमूलसंघेषु सरस्वतीयो गच्छे बलात्कारणे प्रसिद्धे ।

सिंहासनो श्रीमलयस्य खेटे सुदक्षिणाशा विषये विलीने ।

श्रीकुंदकुंदाखिलयोगनाथ पट्टानुगानेकमुनीन्द्रवर्गाः ।
 दुर्वादिबाहुन्मथनेकसज्ज विद्यामुनंदीश्वरसूरिमुख्यः ॥
 तदन्वये योऽपरकीर्तिनाम्ना भट्टारको वादिगजेभशत्रुः ।
 ज्ञानमुशिष्यशुभचन्द्रसूरि श्रीमालके नर्मदयोपगायां ॥
 पुर्या शुभायां पट्टपशत्रुवत्यां सुवर्णाकारणाप्रत नीचकार ॥

४५६३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२४ । ले० काल सं० १६५६ भादवा सुदी १२ । वे० सं० २२३ ।
 ऋ भण्डार ।

विशेष—बंगाल में छकबरां नगर में राजा सवाई मानसिंह के शासनकाल में प्राचार्य कुन्दकुन्द के बला-
 स्कारमण सरस्वतीगच्छ में भट्टारक पचनंदि के शिष्य भ० शुभचन्द्र भ० जिनचन्द्र भ० चन्द्रकीर्ति की आम्नाय में खंडेल-
 वाल बंशोत्पन्न पाटनीगोत्र वाले साह श्री पट्टिराज . बलू, फरना, कपूरा, नाथू आदि में से कपूरा ने षोडशकारण व्रतोच्चा-
 पन में पं० श्री जयवंत को यह प्रति भेंट की थी ।

४५६४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११६ । ले० काल × । वे० सं० ४२ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

नद्यात् खंडिल्लवंशोत्थः केल्हणोन्यासवित्तरः ।

लेखितोयेन पाठार्थमस्य प्रणमं पुस्तकं ॥२०॥

४५६५. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ६६ । ले० काल सं० १६६२ भादवा सुदी २ । वे० सं० ४२५ । अ
 भण्डार ।

विशेष—संवत् १६६२ वर्षे भाद्रपद वदि २ भीमे अछेह राजपुरनगरवास्तव्यं प्राच्याक्षरनागरजाती
 पंचोली त्यागराभाट्टमुत नरसिहेन निखितं ।

ऋ भण्डार में एक प्रपूर्ण प्रति (वे० सं० २०७) अ भण्डार में २ प्रपूर्ण प्रतियां (वे० सं० १२०,
 १०५) तथा ऋ भण्डार में एक प्रपूर्ण प्रति (वे० सं० २०७) और है ।

४५६६. जिनयज्ञविधान..... । पत्र सं० १ । प्रा० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान ।
 २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७८३ । ट भण्डार ।

४५६७. जिनरूपन (अभिषेक पाठ)..... । पत्र सं० १४ । प्रा० ६३×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
 विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८११ बैशाख मुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० १७७८ । ट भण्डार ।

४५६८. जिनसंहिता..... । पत्र सं० ४६ । प्रा० १३×८३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा प्रति-
 ष्ठा एवं आचार सम्बन्धी विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७ । छ भण्डार ।

४५६६. जिनसंहिता—भद्रबाहु । पत्र सं० १३० । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६ । क भण्डार ।

४६००. जिनसंहिता—भ० एकसंधि । पत्र सं० ८४ । आ० १३×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १६७ । क भण्डार ।

विशेष— ५७, ५८, ८१, ८२ तथा ८३ पत्र खाली हैं ।

४६०१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८५ । ले० काल सं० १८५३ । वे० सं० १६८ । क भण्डार ।

४६०२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १११ । ले० काल × । वे० सं० ५६ । ख भण्डार ।

४६०३. जिनसंहिता—..... । पत्र सं० १०६ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा प्रतिष्ठादि एवं आचार सम्बन्धी विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८५६ भाद्रवा बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १६५ । क भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ का दूसरा नाम पूजासार भी है । यह एक संग्रह ग्रन्थ है जिसका विषय वीरसेन, जिनसेन पूज्यपाद तथा गुणभद्रादि आचार्यों के ग्रन्थों से संग्रह किया गया है । ६६ पृष्ठों के अतिरिक्त १० पत्रों में ग्रन्थ से सम्बन्धित ४३ मन्त्र दे रखे हैं ।

४६०४. जिनसहस्रनामपूजा—धर्मभूषण । पत्र सं० १२६ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६०६ वैशाख बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ४३८ । अ भण्डार ।

विशेष—लिच्छमणलाल से पं० सुखलालजी के पठनार्थ हीरालालजी रैणवाल तथा पचेवर वालों ने किला खण्डार में प्रतिलिपि करवाई थी ।

अन्तिम प्रशस्ति— या पुस्तक लिखाई किला खण्डारि के कोटडिराज्ये श्रीमानसिंहजी तत् कंबर फतेसिंहजी बुलाया रैणवाल लूँ बैदगी निमित्त श्रीसहस्रनाम को मंडलजी मंडायो उत्सव करायो । श्री ऋषभदेवजी का मन्दिर में माल लियो दरोगा चत्रभुजजी वासी बगरू कः गोत पाटणी रु० १५) साहजी गणेशलालजी साह ज्याकी सहाय सूँ हवो ।

४६०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८७ । ले० काल × । वे० सं० १६४ । क भण्डार ।

४६०६. जिनसहस्रनामपूजा—स्वरूपचन्दविलाला । पत्र सं० ६५ । आ० ११×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १६१६ आसोज सुदी २ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८७१३ । क भण्डार ।

४६०७. जिनसहस्रनामपूजा—चैनसुख लुहाडिया । पत्र सं० २६ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६३६ माह सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ७७२ । क भण्डार ।

४६०८. जिनसहस्रनामपूजा..... पत्र सं० १८ । आ० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२४ । अ भण्डार ।

४६०९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ७२४ । च भण्डार ।

४६१०. त्रिनाभिषे निर्याय पत्र सं० १० । आ० १२×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—प्रतिषेक
विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । छ भण्डार ।

विशेष—विद्वज्जनबोधक के प्रथमकाण्ड में सातवें उल्लास की हिन्दी भाषा है ।

४६११. जैनप्रतिष्ठापाठ पत्र सं० २ से ३५ । आ० ११३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११९ । च भण्डार ।

४६१२. जैनविवाहपद्धति..... पत्र सं० ३४ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विवाह
विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २१५ । क भण्डार ।

विशेष—आचार्य जिनसेन स्वामी के मतानुसार संग्रह किया गया है । प्रति हिन्दी टीका सहित है ।

४६१३ प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल × । वे० सं० १७ । ज भण्डार ।

४६१४. ज्ञानपंचविंशतिकात्रनोद्यापन—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १६ । आ० १०३×५ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १८४७ चैत्र बुदी ९ । ले० काल सं० १८९३ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण ।
वे० सं० १२२ । च भण्डार ।

विशेष—जयपुर में चन्द्रप्रभु चैत्यालय में रचना की गई थी । सोनजी पांड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

४६१५. ज्येष्ठजिनवरपूजा पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२३) भी है ।

४६१६. ज्येष्ठजिनवरपूजा..... पत्र सं० १२ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१९ । क भण्डार ।

४६१७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १९२१ । वे० सं० २९३ । ख भण्डार ।

४६१८. ज्येष्ठजिनवरत्रयपूजा..... पत्र सं० १ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८९० आषाढ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २२१२ । अ भण्डार ।

विशेष—विद्वान् खुशाल ने जोधराज के बनवाये हुए पाटोदी के मन्दिर में प्रतिलिपि की । खरडो सुरेन्द्र-
कीर्ति की रच्यो ।

४६१६. णमोकारपैतीसपूजा—अक्षयराम । पत्र सं० ३ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—णमोकार मन्त्र पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । अ भण्डार ।

विशेष—महाराजा जयसिंह के शासनकाल में ग्रन्थ रचना की गई थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७८) और है ।

४६२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १७६५ प्र० आसोज बुदी १ । वे० सं० ३६४ । अ
भण्डार ।

४६२१. णमोकारपैतीसीप्रतविधान—आ० श्री कनककीर्ति । पत्र सं० ५ । आ० १२×५ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा एवं विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८२५ । पूर्ण । वे० सं० २३६ । क
भण्डार ।

विशेष—डूंगरसी कासलोवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४६२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७४ । अ भण्डार ।

४६२३. तत्त्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा—दयाचन्द्र । पत्र सं० १ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति वे० सं० २६१ । और है ।

४६२४. तत्त्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा..... । पत्र सं० २ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६२ । क भण्डार ।

विशेष—केवल १०वें अध्याय की पूजा है ।

४६२५. तीनचौबीसीपूजा..... । पत्र सं० ३८ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—भूत,
भविष्यत् तथा वर्तमान काल के चौबीसों तीर्थङ्करों की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७४ ।
क भण्डार ।

४६२६. तीनचौबीसीसमुच्चयपूजा..... । पत्र सं० ५ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८०६ । ट भण्डार ।

४६२७. तीनचौबीसीपूजा—नेमीचन्द्र पाटनी । पत्र सं० ६७ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—
हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १८६४ कार्तिक बुदी १४ । ले० काल सं० १६२८ भाद्रपद सुदी ७ । पूर्ण । वे०
सं० २७५ । क भण्डार ।

४६२८. तीनचौबीसीपूजा..... । पत्र सं० ५७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल सं० १८८२ । ले० काल सं० १८८२ । पूर्ण । वे० सं० २७३ । क भण्डार ।

४६२६. तीसचौबीसीसमुच्चयपूजा..... पत्र सं० २० । मा० ११३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२५ । छ भण्डार ।

४६२७. तीनलोकपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० ४१० । मा० १२×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
पूजा । २० काल सं० १८२८ । ले० काल सं० १६७३ । पूर्ण । वे० सं० २७७ । छ भण्डार ।
विशेष—ग्रन्थ लिखाने में ३७।।।-) लगे थे ।

इसी भण्डार में २ प्रतिष्ठा (वे० सं० ५७६, ५७७) भी हैं ।

४६३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५० । ले० काल × । वे० सं० २४१ । छ भण्डार ।

४६३२. तीनलोकपूजा—नेमीचन्द । पत्र सं० ८५१ । मा० १३×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६६३ ज्येष्ठ सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २२०३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसका नाम त्रिलोकसार पूजा एवं त्रिलोकपूजा भी है ।

४६३३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०८८ । ले० काल × । वे० सं० २७० । क भण्डार ।

४६३४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६८७ । ले० काल सं० १६६३ ज्येष्ठ सुदी ५ । वे० सं० २२६ । छ
भण्डार ।

विशेष—दो वेष्टनों में है ।

४६३५. तीसचौबीसीनाम..... पत्र सं० ६ । मा० १०×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५७८ । च भण्डार ।

४६३६. तीसचौबीसीपूजा—वृन्दावन । पत्र सं० ११६ । मा० १०३×७३ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८० । च भण्डार ।

विशेष—प्रतिलिपि बनारस में गङ्गातट पर हुई थी ।

४६३७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२२ । ले० काल सं० १६०१ आषाढ सुदी २ । वे० सं० ५७ । म
भण्डार ।

४६३८. तीसचौबीसीसमुच्चयपूजा..... पत्र सं० ६ । मा० ८×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
पूजा । २० काल सं० १८०८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७८ । छ भण्डार ।

विशेष—मडाईद्वीप अन्तर्गत ५ भरत ५ ऐरावत १० क्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी पूजा है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५७६) भी है ।

४६३९. तेरहद्वीपपूजा—शुभचन्द्र । पत्र सं० १५४ । मा० १०३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२१ सावन सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ७३ । ख भण्डार ।

४६४०. तेरहद्वीपपूजा—भ० विश्वभूषण । पत्र सं० १०२ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत ।
विषय—जैन मान्यतानुसार १३ द्वीपों की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८८७ भाद्रवा सुदी २ । वे० सं० १२७ ।
क भण्डार ।

विशेष—विजैरामजी पांड्या ने बलदेव ब्रह्मण से लिखवाई थी ।

४६४१. तेरहद्वीपपूजा..... । पत्र सं० २४ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—जैन
मान्यतानुसार १३ द्वीपों की पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८९१ । पूर्ण । वे० सं० ४३ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ५०) और है ।

४६४२. तेरहद्वीपपूजा..... । पत्र सं० २०८ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १९२४ । पूर्ण । वे० सं० ५३५ । अ भण्डार ।

४६४३. तेरहद्वीपपूजा—लालजीत । पत्र सं० २३२ । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल सं० १८७७ कार्तिक सुदी १२ । ले० काल सं० १९९२ भाद्रवा सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० २७७ । क
भण्डार ।

विशेष—गोविन्दराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४६४४. तेरहद्वीपपूजा..... । पत्र सं० १७६ । आ० ११×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५८१ । च भण्डार ।

४६४५. तेरहद्वीपपूजा..... । पत्र सं० २६४ । आ० ११×७ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १६४६ कार्तिक सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३४३ । ज भण्डार ।

४६४६. तेरहद्वीपपूजाविधान..... । पत्र सं० ८६ । आ० ११×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०६१ । अ भण्डार ।

४६४७. त्रिकालचौबीसीपूजा—त्रिभुवनचन्द्र । पत्र सं० १३ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—तीनों काल में होने वाले तीर्थङ्करों की पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७५ । अ
भण्डार ।

विशेष—शिवलाल ने नेवटा में प्रतिलिपि की थी ।

४६४८. त्रिकालचौबीसीपूजा..... । पत्र सं० ६ । आ० १०×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० का । × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७८ । क भण्डार ।

४६४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १७०४ पौष बुदी ६ । वे० सं० २७६ । क
भण्डार ।

विशेष—बसवा में आचार्य पूर्णचन्द्र ने अपने चार शिष्यों के साथ में प्रतिलिपि की थी ।

४६५०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६६१ भादवा सुदी ३ । वे० सं० २२२ । छ
भण्डार ।

विशेष—श्रीमती चतुरमती अजिका की पुस्तक है ।

४६५१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १७४७ फाल्गुन बुदी १३ । वे० सं० ४११ । अ
भण्डार ।

विशेष—विद्याविनोद ने प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७५) प्रौर है ।

४६५२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २१६२ । ट भण्डार ।

४६५३. त्रिकालपूजा..... । पत्र सं० १६ । आ० ११×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३० । अ भण्डार ।

विशेष—भूत, भविष्यत्, वर्त्तमान के त्रेसठ शलाका पुरुषों की पूजा है ।

४६५४. त्रिलोकक्षेत्रपूजा..... । पत्र सं० ५१ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल सं० १८४२ । ले० काल सं० १८८६ चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ५८२ । च भण्डार ।

४६५५. त्रिलोकस्थजिनालयपूजा..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×७ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२८ । ज भण्डार ।

४६५६. त्रिलोकसारपूजा—अभयनन्दि । पत्र सं० ३६ । आ० १३ $\frac{३}{४}$ ×७ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० ५४४ । अ भण्डार ।

विशेष—१६वें पत्र से नवीन पत्र जोड़े गये हैं ।

४६५७. त्रिलोकसारपूजा..... । पत्र सं० २६० । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १६३० भादवा सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ४८६ । अ भण्डार ।

४६५८. त्रेपनक्रियापूजा..... । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वे० सं० ५१६ । अ भण्डार ।

४६५९. त्रेपनक्रियाव्रतपूजा..... । पत्र सं० ५ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल सं० १६०४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २८७ । क भण्डार ।

विशेष—माचार्य पूर्णचन्द्र ने सांगानेर में प्रतिलिपि की थी ।

४६६०. त्रैलोक्यसारपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं० १७२ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८२६ भादवा बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० १३२ । छ भण्डार ।

४६६१. त्रैलोक्यसारमहापूजा.....। पत्र सं० १४५ । आ० १०×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १९१९ । पूर्ण । वै० सं० ७९ । ख भण्डार ।

४६६२. दशलक्षजयमाल—पं० रङ्गू । आ० १०×५ इंच । भाषा-अप्रभंश । विषय-धर्म के दश भेदों की पूजा । र० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २६८ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायान्तर दिया हुआ है ।

४६६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७९५ । वै० सं० ३०१ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में सामान्य टीका दी हुई है । इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ३०२) और है ।

४६६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वै० सं० २९७ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं । इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० २९६) और है ।

४६६५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८०१ । वै० सं० ८३ । ख भण्डार ।

विशेष—जोशी खुशालीराम ने टोंक में प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० ८२, ८३/१) और है ।

४६६६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वै० सं० २९४ । क भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में संकेत दिये हुये हैं । इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वै० सं० २९२) और है ।

४६६७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वै० सं० १२९ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० १५०) और है ।

४६६८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १७८२ फागुण सुदी १२ । वै० सं० १२९ । ख भण्डार ।

४६६९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १८९८ । वै० सं० ७३ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० १९८, २०२) और है ।

४६७०. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १७४६ । वै० सं० १७० । अ भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है । इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० २६८, २८५) और है ।

४६७१. प्रति सं० १० । पत्र सं० १० । ले० काल × । वै० सं० १७८६ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वै० सं० १७८७, १७८८, १७९४) और है ।

४६७२. दशलक्षजयमाल—पं० भाव शर्मा । पत्र सं० ८ । आ० १२×५ इंच । भाषा-प्राकृत ।

विषय-पूजा । र० काल × । ले० काल सं० १८११ भाद्रवा सुदी ११ । अपूर्ण । वै० सं० २९८ । अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टीका दी हुई है । इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ४८१) और है ।

४६७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १७३४ पोष सुदी १२ । वे० सं० ३०२ । क
भण्डार ।

विशेष—अमरावती जिले में समरपुर नामक नगर में आचार्य पूर्णचन्द्र के शिष्य गिरधर के पुत्र लक्ष्मण ने
शब्दों के पढ़ने के लिए प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०१) और है ।

४६७४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६१२ । वे० सं० १८१ । ख भण्डार ।

विशेष—जयपुर के जोबनेर के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

४६७५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १८६२ भाद्रवा सुदी ८ । वे० सं० १५१ । च
भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुए हैं ।

४६७६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ११ । ले० काल X । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

४६७७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ५ । ले० काल X । वे० सं० २०५ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४८१) और है ।

४६७८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १८ । ले० काल X । वे० सं० १७८४ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १७८६, १७६०, १७६२, १७६४) और हैं ।

४६७९. दशलक्षजयमाला पत्र सं० ८ । प्रा० १०X५ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा ।
१० काल X । ले० काल सं० १७८४ फागुण सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० २६३ । ठ भण्डार ।

४६८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल X । वे० सं० २०६ । ड भण्डार ।

४६८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल X । वे० सं० ७२६ । ञ भण्डार ।

४६८२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २६० । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २६७, २६८) और हैं ।

४६८३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८६६ भाद्रवा सुदी ३ । वे० सं० १५३ । च
भण्डार ।

विशेष—महात्मा चौथमल नेवटा वाले ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १५२, १५४) और हैं ।

४६८४. दशलक्षजयमाला पत्र सं० ५ । प्रा० ११^३/_४X५^३/_४ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत ।
विषय—पूजा । १० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २११५ । ञ भण्डार ।

४६८५. दशलक्षणजयमाल..... पत्र सं० ६ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १७३६ आसोज बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ८४ । ख भण्डार ।

विशेष—नागौर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४६८६. दशलक्षणजयमाल..... पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४५ । च भण्डार ।

४६८७. दशलक्षणपूजा—अभ्रदेव । पत्र सं० ६ । आ० १३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०८२ । अ भण्डार ।

४६८८. दशलक्षणपूजा—अभयनन्दि । पत्र सं० १५ । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ । ङ भण्डार ।

४६८९. दशलक्षणपूजा..... पत्र सं० २ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२०४) और है ।

४६९०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १७४७ फागुण बुदी ४ । वे० सं० ३०३ । ञ
भण्डार ।

विशेष—सांगानेर में विद्याविनोद ने पं० गिरधर के वाचनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २६८) और है ।

४६९१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १७८५ । ट भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७९१) और है ।

४६९२. दशलक्षणपूजा..... पत्र सं० ३७ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । वे० सं० १५५ । च भण्डार ।

विशेष—प्रति संस्कृत टीका सहित है ।

४६९३. दशलक्षणपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० १० । आ० ८३×६३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२५ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० ७ तक रत्नत्रयपूजा दी हुई है ।

४६९४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी २ । वे० सं० ३०० । क
भण्डार ।

४६९५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३०० । ज भण्डार ।

४६६६. दशलक्ष्णपूजा.....। पत्र सं० ३५ । आ० १२३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १६५४ । पूर्ण । वे० सं० ५८८ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५८६) भी है ।

४६६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६३७ । वे० सं० ३१७ । च भण्डार ।

४६६८. दशलक्ष्णपूजा.....। पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२० । ट भण्डार ।

विशेष—स्थापना छानतराय कृत पूजा की है प्रष्टक तथा जयमाला किसी अन्य कवि की है ।

४६६९. दशलक्ष्णमंडलपूजा.....। पत्र सं० ६३ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल सं० १८८० चैत्र सुदी १३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । क भण्डार ।

४७००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल × । वे० सं० ३०१ । क भण्डार ।

४७०१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १६३७ भाद्रवा बुदी १० । वे० सं० ३०० । क
भण्डार ।

४७०२. दशलक्ष्णव्रतपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं० २२ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६६ भाद्रवा सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७६६ । अ भण्डार ।

४७०३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८२६ । वे० सं० ४६८ । अ भण्डार ।

४७०४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८७६ आसोज सुदी ५ । वे० सं० १४६ । च
भण्डार ।

विशेष—मदामुख बाकलीवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

४७०५. दशलक्ष्णव्रतोद्यापन—जिनचंद्र सूरि । पत्र सं० १६ - २५ । आ० १०३×५ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २६१ । क भण्डार ।

४७०६. दशलक्ष्णव्रतोद्यापन—मल्लिभूषण । पत्र सं० १४ । आ० १२३×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

४७०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ७५ । अ भण्डार ।

४७०८. दशलक्ष्णव्रतोद्यापन.....। पत्र सं० ४३ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ७० । अ भण्डार ।

विशेष—मण्डलविधि भी दी हुई है ।

४७०६. दशलक्षविधानपूजा.....। पत्र सं० ३०। आ० १२३×८ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०७। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ इसी वेष्टन में और हैं।

४७१०. देवपूजा—इन्द्रनन्दि योगीन्द्र। पत्र सं० ५। आ० १०^१/_२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६०। च भण्डार।

४७११. देवपूजा.....। पत्र सं० ११। आ० ६^३/_४×४^३/_४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १८५३। अ भण्डार।

४७१२. प्रति सं० २। पत्र सं० ४ से १२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ४६। घ भण्डार।

४७१३. प्रति सं० ३। पत्र सं० ५। ले० काल ×। वे० सं० ३०५। ङ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०६) और है।

४७१४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० १६१। च भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० १६२, १६३) और है।

४७१५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८८३ पौष बुदी ८। वे० सं० १३३। ज भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० १६६, १७८) और हैं।

४७१६. प्रति सं० ६। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६५० आषाढ बुदी १२। वे० सं० २१४२। ट भण्डार।

विशेष—छीतरमल ब्राह्मण ने प्रतिलिपि की थी।

४७१७. देवपूजाटीका.....। पत्र सं० ८। आ० १२×५^३/_४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १८८६। पूर्ण। वे० सं० ११६। छ भण्डार।

४७१८. देवपूजाभाषा—जयचन्द्र छाबड़ा। पत्र सं० १७। आ० १२×५^३/_४ इंच। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १८४३ कार्तिक सुदी ८। पूर्ण। वे० सं० ५१६। अ भण्डार।

४७१९. देवसिद्धपूजा.....। पत्र सं० १५। आ० १२×५^३/_४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५६। च भण्डार।

विशेष—इसी वेष्टन में एक प्रति और है।

४७२०. द्वादशव्रतपूजा—पंच अश्रुदेव। पत्र सं० ७। आ० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५८४। अ भण्डार।

४७२१. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० १६ । मा० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल सं० १७७२ माघ सुदी १ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३३ । अ भण्डार ।

४७२२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ३२० । क भण्डार ।

४७२३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४७२४. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—पद्मनन्दि । पत्र सं० ६ । मा० ७३×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६३ । अ भण्डार ।

४७२५. द्वादशव्रतोद्यापनपूजा—भ० जगतकीर्ति । पत्र सं० ६ । मा० १०३×६ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १५६ । च भण्डार ।

४७२६. द्वादशव्रतोद्यापन..... पत्र सं० ५ । मा० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १८०४ । पूर्ण । वे० सं० १३५ । ज भण्डार ।

विशेष—मोर्धनदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४७२७. द्वादशांगपूजा—डालूराम । पत्र सं० १६ । मा० ११×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल सं० १८७६ ज्येष्ठ सुदी ६ । ले० काल सं० १६३० प्राषाढ बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ३२४ । क
भण्डार ।

विशेष—पन्नलाल चौधरी ने प्रतिलिपि की थी ।

४७२८. द्वादशांगपूजा..... पत्र सं० ८ । मा० ११३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १८८६ माघ सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ५६२ ।

विशेष—इसी त्रेष्टन में २ प्रतिपां और हैं ।

४७२९. द्वादशांगपूजा पत्र सं० ६ । मा० १२×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३२६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३२७) और है ।

४७३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४४४ । अ भण्डार ।

४७३१. धर्मचक्रपूजा—यशोनन्दि । पत्र सं० १६ । मा० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१८ । अ भण्डार ।

४७३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६४२ फागुण सुदी १० । वे० सं० ८६ । छ
भण्डार ।

विशेष—पन्नलाल जोबनेर वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

४७३३. धर्मचक्रपूजा—साधु रणमल्ल । पत्र सं० ८ । आ० ११×५^३ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८८१ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ५२८ । अ भण्डार ।

विशेष—पं० खुशालचन्द ने जोधराज पाटोदी के मन्दिर में प्रतिलिपि की थी ।

४७३४. धर्मचक्रपूजा..... । पत्र सं० १० । आ० १२×५^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०६ । अ भण्डार ।

४७३५. ध्वजारोपण..... । पत्र सं० ११ । आ० ११×५^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजाविधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

४७३६. ध्वजारोपणमंत्र..... । पत्र सं० ४ । आ० ११^३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२३ । अ भण्डार ।

४७३७. ध्वजारोपणविधि—पं० आशाधर । पत्र सं० २७ । आ० १०×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—मन्दिर में ध्वजा लगाने का विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । च भण्डार ।

४७३८. ध्वजारोपणविधि..... । पत्र सं० १३ । आ० १०^३×५^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विषय—मन्दिर में ध्वजा लगाने का विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४३४, ४८८) और हैं ।

४७३९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १९१६ । वे० सं० ३१८ । ज भण्डार ।

४७४०. ध्वजारोहणविधि..... । पत्र सं० ८ । आ० १०^३×७^३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १९२७ । पूर्ण । वे० सं० २७३ । ख भण्डार ।

४७४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ - ४ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८२२ । ट भण्डार ।

४७४२. नन्दीश्वरजयमाल..... । पत्र सं० २ । आ० ९^३×४ इञ्च । भाषा—मपत्रंश । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७६ । ट भण्डार ।

४७४३. नन्दीश्वरजयमाल..... । पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८७० । ट भण्डार ।

४७४४. नन्दीश्वरद्वीपपूजा—रत्ननन्दि । पत्र सं० १० । आ० ११^३×५^३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १९० । च भण्डार ।

विशेष—प्रति प्राचीन है ।

४७४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८६१ आषाढ बुदी ३ । वे० सं० १११ । च भण्डार ।

विशेष—पत्र चूहों ने खा रखे हैं ।

४७४६. नन्दीश्वरद्वीपपूजा..... । पत्र सं० ४ । आ० ८×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६०० । अ भण्डार ।

विशेष—जयमाल प्राकृत में है । इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ७६७) और है ।

४७४७. नन्दीश्वरद्वीपपूजा—मङ्गल । पत्र सं० ३१ । आ० १२×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८०७ पौष बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ५६६ । च भण्डार ।

४७४८. नन्दीश्वरपंक्तिपूजा..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १७४६ भाद्रवा बुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ५२६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५५७) और है ।

४७४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ३६३ । क भण्डार ।

४७५०. नन्दीश्वरपंक्तिपूजा..... । पत्र सं० ३ । आ० १० इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८८३ । अ भण्डार ।

४७५१. नन्दीश्वरपूजा..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०० । ब भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ४०६, २१२, २७४ ले० काल सं० १८२४) और हैं ।

४७५२. नन्दीश्वरपूजा..... । पत्र सं० ४ । आ० ८ इंच । भाषा प्राकृत । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११५२ । अ भण्डार ।

४७५३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३४८ । क भण्डार ।

४७५४. नन्दीश्वरपूजा..... । पत्र सं० ४ । आ० ६×७ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि की थी । संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं ।

४७५५. नन्दीश्वरपूजा..... । पत्र सं० ३१ । आ० ६ इंच । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । ज भण्डार ।

४७५६. नन्दीश्वरपूजा..... । पत्र सं० ३० । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल सं० १६६१ । पूर्ण । वे० सं० ३४६ । क भण्डार ।

४७५७. नन्दीश्वरभक्तिभाषा—पन्नालाल । पत्र सं० २६ । आ० ११ $\frac{१}{२}$ ×७ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल सं० १६२१ । ले० काल सं० १६४६ । पूर्ण । वे० सं० ३६४ । क भण्डार ।

४७५८. नन्दीश्वरविधान—जिनेश्वरदास । पत्र सं० १११ । आ० १३×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल सं० १६६० । ले० काल सं० १६६२ । पूर्ण । वे० सं० ३५० । क भण्डार ।

विशेष—लिखाई एवं कागज में केवल १५) रु० खर्च हुये थे ।

४७५९. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा—नन्दिषेण । पत्र सं० २० । आ० १२ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६२ । च भण्डार ।

४७६०. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा—अनन्तकीर्ति । पत्र सं० १३ । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८५७ आशढ बुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० २०१७ । ट भण्डार ।

विशेष—दूसरा पत्र नहीं है । तक्षकपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

४७६१. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा..... । पत्र सं० ५ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४७६२. नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा..... । पत्र सं० ३० । आ० ८×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८८६ भादवा सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ३५१ । क भण्डार ।

विशेष—स्योजीराम भावसा ने प्रतिलिपि की थी ।

४७६३. नन्दीश्वरपूजाविधान—टेकचन्द । पत्र सं० ४६ । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×६ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८८५ सावन सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १७८ । झ भण्डार ।

विशेष—फतेहलाल पापड़ीवाल ने जयपुर वाले रामलाल पहाड़िया से प्रतिलिपि कराई थी ।

४७६४. नन्दूसप्तमीव्रतोद्यापनपूजा..... । पत्र सं० १० । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६४७ । पूर्ण । वे० सं० ५६२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३०३) और है ।

४७६५. नवग्रहपूजाविधान—भद्रबाहु । पत्र सं० ८ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२ । ज भण्डार ।

४७६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० २३ । ज भण्डार ।

विशेष—प्रथम पत्र पर नवग्रहका चित्र है तथा किस ग्रह की शांति के लिए किस तीर्थङ्कर की पूजा करनी
चाहिए, यह लिखा है ।

४७६७. नवग्रहपूजा.....। पत्र सं० ७ । आ० ११३×६३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतिष्ठा (वे० सं० ४७५, ४६०, ५७३, १२७१, २११२) भी हैं ।

४७६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १६२८ ज्येष्ठ बुदी ३ । वे० सं० १२७ । ज्ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिष्ठा (वे० सं० १२७) भी हैं ।

४७६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६८८ कार्तिक बुदी ७ । वे० सं० २०३ । ज्ञ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतिष्ठा (वे० सं० १८५, १६३, २८०) भी हैं ।

४७७०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० २०१५ । ट भण्डार ।

४७७१. नवग्रहपूजा.....। पत्र सं० २६ । आ० ६×६३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १११६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७१३) भी है ।

४७७२. प्रति सं० ० । पत्र सं० १७ । ले० काल × । वे० सं० २२१ । ज्ञ भण्डार ।

४७७३. नित्यकृत्यवर्णन.....। पत्र सं० १० । आ० १०३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—नित्य करने योग्य पूजा पाठ हैं । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११६६ । अ भण्डार ।

विशेष—३१ पृष्ठ नहीं है ।

४७७४. नित्यक्रिया.....। पत्र सं० ६८ । आ० ८३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—नित्य करने योग्य पूजा पाठ । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६६ । क भण्डार ।

विशेष—प्रति संक्षिप्त हिन्दी अर्थ सहित है । ५४. ६७, तथा ६८ से आगे के पत्र नहीं हैं ।

४७७५. नित्यनियमपूजा.....। पत्र सं० २६ । आ० ६×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३७५ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतिष्ठा (वे० सं० ३७०, ३७१) भी हैं ।

४७७६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ३६७ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिष्ठा (वे० सं० ३६० से ३६३) भी हैं ।

४७७७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८६३ । वे० सं० ५२६ । अ भण्डार ।

४७७८. नित्यनियमपूजा.....। पत्र सं० १५। आ० १०×७ इंच। भाषा—संस्कृत हिन्दी। विषय—पूजा। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७१२। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ७०८, १११४) और हैं।

४७७९. प्रति सं० २। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १६४० कार्तिक बुदी १२। वे० सं० ३६८। ड भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३६९) और है।

४७८०. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १६५४। वे० सं० २२२। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० १२१/२, २२२/२) और हैं।

४७८१. नित्यनियमपूजा—पं० सदासुख कासलीवाल। पत्र सं० ४६। आ० ६३×६३ इंच। भाषा—हिन्दी गद्य। विषय—पूजा। र० काल सं० १६२१ माघ सुदी २। ले० काल सं० १६२३। पूर्ण। वे० सं० ४०१। अ भण्डार।

४७८२. प्रति सं० २। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १६२८ सावन सुदी १०। वे० सं० ३७७। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३७६) और है।

४७८३. प्रति सं० ३। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १६२१ माघ सुदी २। वे० सं० ३७१। ड भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३७०) और है।

४७८४. प्रति सं० ४। पत्र सं० ३५। ले० काल सं० १६५५ ज्येष्ठ सुदी ७। वे० सं० २१४। छ भण्डार।

विशेष—पत्र फटे हुये एवं जोर्ण है।

४७८५. प्रति सं० ५। पत्र सं० ४४। ले० काल ×। वे० सं० १३०। झ भण्डार।

विशेष—इसका पुट्टा बहुत सुन्दर एवं प्रदर्शनी में रखने योग्य है।

४७८६. प्रति सं० ६। पत्र सं० ४२। ले० काल सं० १६३३। वे० सं० १८६६। ट भण्डार।

४७८७. नित्यनियमपूजाभाषा.....। पत्र सं० १६। आ० ८३×७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १६६५ भाद्रवा सुदी ११। पूर्ण। वे० सं० ७०७। अ भण्डार।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाड ने प्रतिलिपि की थी।

४७८८. प्रति सं० २। पत्र सं० २८। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ४७। ग भण्डार।

विशेष—जयपुर में शुकवार की सहेली (संगीत सहेली) सं० १६५६ में स्थापित हुई थी। उसकी स्थापना के समय का बनाया हुआ भजन है।

४७८६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६६६ भाद्रवा बुदी १३ । वे० सं० ४८ । ग भण्डार ।

४७८७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १६६७ । वे० सं० २६२ । ऋ भण्डार ।

४७८८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १६५६ । वे० सं० १२१ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० मोतीलालजी सेठी ने यति यशोदानन्दजी के मन्दिर में चढाई ।

४७८९. नित्यनैमित्तिकपूजापाठसंग्रह..... पत्र सं० ५८ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१ । छ भण्डार ।

४७९०. नित्यपूजासंग्रह..... पत्र सं० ८ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत, अपभ्रंश । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७७ । ट भण्डार ।

४७९१. नित्यपूजासंग्रह..... पत्र सं० ५ । आ० ६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८५ । च भण्डार ।

४७९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल सं० १६१६ वैशाख बुदी ११ । वे० सं० ११७ । ज भण्डार ।

४७९३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० १८६८ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रति श्रुतसागरी टीका सहित है । इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १६६५, २०६३) भी हैं ।

४७९४. नित्यपूजासंग्रह..... पत्र सं० २-३० । आ० ७ इंच । भाषा—संस्कृत, प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६५६ चैत्र सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० १८२ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १८३, १८४) भी हैं ।

४७९५. नित्यपूजासंग्रह..... पत्र सं० ३६ । आ० १० इंच । भाषा—संस्कृत, हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६५७ । अपूर्ण । वे० सं० ७११ । अ भण्डार ।

विशेष—पत्र सं० २७, २८ तथा ३५ नहीं हैं कुछ पत्र भोग गये हैं । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३२२) भी है ।

४७९६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ६०२ । च भण्डार ।

४८००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल × । वे० सं० १७४ । ज भण्डार ।

४८०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २-३२ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६२६ । ट भण्डार ।

विशेष—नित्य व नैमित्तिक पाठों का भी संग्रह है ।

४८०२. नित्यपूजा.....। पत्र सं० १५। आ० १२×५^३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ३७८। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वै० सं० ३७२, ३७३, ३७४, ३७६) और हैं।

४८०३ प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल ×। वै० सं० ३६६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० ३६४, ३६५) और हैं।

४८०४. प्रति सं० ३। पत्र सं० १७। ले० काल ×। वै० सं० ६०३। च भण्डार।

४८०५. प्रति सं० ४। पत्र सं० २ से १८। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० १६५८। ट भण्डार।

विशेष—अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमज्जनवचन प्रकाशक..... संग्रहीतविद्वज्जबोधके तृतीयकाण्डे पूजनवर्णानो नाम अष्टोत्तास समाप्त।

४८०६. निर्वाणकल्याणकपूजा.....। पत्र सं० २। आ० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ४२८। अ भण्डार।

४८०७. निर्वाणकाण्डपूजा.....। पत्र सं० ५। आ० ८^६×७ इंच। भाषा—संस्कृत, प्राकृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १६६८ सावण सुदी ४। पूर्ण। वै० सं० ११११। अ भण्डार।

विशेष—इसकी प्रतिलिपि कोकलचन्द्र पंसारी ने ईश्वरलाल चांदवाड़ से कराई थी।

४८०८. निर्वाणक्षेत्रमंडलपूजा—स्वरूपचन्द्र। पत्र सं० १६। आ० १३×७ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल सं० १६१६ कार्तिक बुदी १३। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ४६। ग भण्डार।

४८०९. प्रति सं० २। पत्र सं० ३५। ले० काल सं० १६२७। वै० सं० ३७६। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० ३७७, ३७८) और हैं।

४८१०. प्रति सं० ३। पत्र सं० २८। ले० काल सं० १६३५ शेष सुदी ३। वै० सं० ६०४। च भण्डार।

विशेष—जवाहरलाल पाटनी ने प्रतिलिपि की थी। इन्द्रराज बोहरा ने पुस्तक लिखाकर मेघराज लुहा-दिया के मन्दिर में चढायी। इसी भण्डार में २ प्रतियां (वै० सं० ६०५, ६०७) और हैं।

४८११. प्रति सं० ४। पत्र सं० २६। ले० काल सं० १६४३। वै० सं० २११। छ भण्डार।

विशेष—सुन्दरलाल पांडे चौधरी चाकसू वाले ने प्रतिलिपि की थी।

४८१२. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३५। ले० काल ×। वै० सं० २५५। ज भण्डार।

४८१३. निर्वाणक्षेत्रपूजा.....। पत्र सं० ११। प्रा० ११×७ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा।
२० काल सं० १८७१। ले० काल सं० १६६६। पूर्ण। वै० सं० १३०५। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वै० सं० ७१०, ८२३, ८२४, १०६८, १०६९) प्रौर हैं।

४८१४. प्रति सं० २। पत्र सं० ७। ले० काल सं० १८७१ भादवा बुदी ७। वै० सं० २६६। ज
भण्डार। [गुटका साइज]

४८१५. प्रति सं० ३। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८८४ मंगसिर बुदी २। वै० सं० १८७। म
भण्डार।

४८१६. प्रति सं० ४। पत्र सं० ६। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० ६०६। च भण्डार।

विशेष—दूसरा पत्र नहीं है।

४८१७. निर्वाणपूजा.....। पत्र सं० १। प्रा० १२×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। २०
काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १७१८। अ भण्डार।

४८१८. निर्वाणपूजापाठ—मनरंगलाल। पत्र सं० ३३। प्रा० १०^१/_२×४^३/_४ इंच। भाषा-हिन्दी।
विषय-पूजा। २० काल सं० १८४२ भादवा बुदी २। ले० काल सं० १८८८ चैत्र बुदी ३। वै० सं० ८२। म
भण्डार।

४८१९. नेमिनाथपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं० ५। प्रा० ६×३^३/_४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ५६५। अ भण्डार।

४८२०. नेमिनाथपूजा.....। पत्र सं० १। प्रा० ७×५^३/_४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। २०
काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १३१४। अ भण्डार।

४८२१. नेमिनाथपूजाष्टक—शंभूराम। पत्र सं० १। प्रा० ११^३/_४×५^३/_४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १८४२। अ भण्डार।

४८२२. नेमिनाथपूजाष्टक.....। पत्र सं० १। प्रा० ६^३/_४×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १२२४। अ भण्डार।

४८२३. पञ्चकल्याणकपूजा—सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं० १६। प्रा० ११^३/_४×५ इंच। भाषा-संस्कृत।
विषय-पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ५७६। क भण्डार।

४८२४. प्रति सं० २। पत्र सं० २७। ले० काल सं० १८७६। वै० सं० १०३७। अ भण्डार।

४८२५. पञ्चकल्याणकपूजा—शिवजीलाल। पत्र सं० १२६। प्रा० ८×४ इंच। भाषा-संस्कृत।
विषय-पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ५५६। अ भण्डार।

४८२६. पञ्चकल्याणकपूजा—अरुणमणि । पत्र सं० ३६ । आ० १२×८ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । २० काल सं० १६२३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५० । ख भण्डार ।
४८२७. पञ्चकल्याणकपूजा—गुणकीर्त्ति । पत्र सं० २२ । आ० १२×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल १६११ । पूर्ण । वे० सं० ५४ । अ भण्डार ।
४८२८. पञ्चकल्याणकपूजा—वादीभसिंह । पत्र सं० १८ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८६ । अ भण्डार ।
४८२९. पञ्चकल्याणकपूजा—सुयशकीर्त्ति । पत्र सं० ७-२६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५८५ । अ भण्डार ।
४८३०. पञ्चकल्याणकपूजा—सुधासागर । पत्र सं० १६ । आ० ११×४३ इंच । भाषा-संस्कृत ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४०६ । क भण्डार ।
४८३१. पञ्चकल्याणकपूजा..... । पत्र सं० १६ । आ० १०३×४३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६०८ भाद्रवा सुदी १० । पूर्ण । वे० सं० १००७ । अ भण्डार ।
४८३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८१८ । वे० सं० ३०१ । ख भण्डार ।
४८३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३८४ । क भण्डार ।
विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३८५) और है ।
- ४८३४ प्रति सं० ४ । पत्र सं० २२ । ले० काल सं० १६३६ आसोज सुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० १२५
ज भण्डार ।
विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० १३७, १८०) और हैं ।
४८३५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८६२ । वे० सं० १६३ । च भण्डार ।
४८३६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १८२१ । वे० सं० २३६ । अ भण्डार ।
विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५५) और है ।
४८३७. पञ्चकल्याणकपूजा—छोटेलाल मत्तल । पत्र सं० १६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-पूजा । २० काल सं० १६१० भाद्रवा सुदी १३ । ले० काल सं० १६५२ । पूर्ण । वे० सं० ७३० । अ भण्डार ।
विशेष—छोटेलाल बनारस के रहने वाले थे । इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६७१, ६७२)
और हैं ।
४८३८. पञ्चकल्याणकपूजा—रूपचन्द । पत्र सं० १०४ । आ० १२×५ । भाषा-हिन्दी । विषय-
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६२ । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । अ भण्डार ।

४८३६. पञ्चकल्याणकपूजा—टोकचन्द । पत्र सं० २२ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल सं० १८८७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । अ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में २ प्रतिष्ठा (वे० सं० १०८०, ११२०) और हैं ।

४८४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १९५४ चैत्र सुदी १ । वे० सं० ५० । ग
मण्डार ।

४८४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १९५४ माह बुदी ११ । वे० सं० ६७ । च
मण्डार ।

विशेष—किशनलाल पापड़ीवाल ने प्रतिनिधि की थी । इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७)
और है ।

४८४२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २३ । ले० काल सं० १९६१ ज्येष्ठ सुदी १ । वे० सं० ६१२ । च
मण्डार ।

४८४३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २१५ । छ मण्डार ।

विशेष—इसी वेष्टन में एक प्रति और है ।

४८४४. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० २६८ । ज मण्डार ।

४८४५. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० १२० । क मण्डार ।

४८४६. प्रति सं० ८ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १९२८ । वे० सं० ५३६ । घ मण्डार ।

४८४७. पञ्चकल्याणकपूजा—पन्नालाल । पत्र सं० ७ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल सं० १९२२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८८ । ङ मण्डार ।

विशेष—नीले कागजों पर है ।

४८४८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४१ । ले० काल × वे० सं० २१५ । छ मण्डार ।

विशेष—संघीजी के मन्दिर की पुस्तक है ।

४८४९. पञ्चकल्याणकपूजा—भैरवदास । पत्र सं० ३१ । आ० ११३×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल सं० १९१० भाद्रवा सुदी १३ । ले० काल सं० १९१६ । पूर्ण । वे० सं० ६१५ । च मण्डार ।

४८५०. पञ्चकल्याणकपूजा..... । पत्र सं० २५ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९९ । छ मण्डार ।

४८५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १९३६ । वे० सं० १०० । झ मण्डार ।

४८५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल × । वे० सं० ३८६ । ङ मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३८७) और है ।

४८५३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ६१३ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६१४) और है ।

४८५४. पञ्चकुमारपूजा..... । पत्र सं० ७ । आ० ८३×७ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२ । झ भण्डार ।

४८५५. पञ्चक्षेत्रपालपूजा—गङ्गादास । पत्र सं० १४ । आ० १०×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ९६४ । अ भण्डार ।

४८५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६२१ । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

४८५७. पञ्चगुरुकल्याणपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० २५ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६३५ मंगसिर सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ४२० । ज भण्डार ।

विशेष—आचार्य नेलचन्द्र के शिष्य पांडे हूंगर के पठनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

४८५८. पञ्चपरमेष्ठीउद्यापन..... । पत्र सं० ६१ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १८६२ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१० । क भण्डार ।

४८५९. पञ्चपरमेष्ठीसमुच्चयपूजा..... । पत्र सं० ४ । आ० ८३×६३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६५३ । ट भण्डार ।

४८६०. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० २४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७७ । अ भण्डार ।

४८६१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १९६ । च भण्डार ।

४८६२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २५ । ले० काल × । वे० सं० १४० । च भण्डार ।

४८६३. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—यशोनन्दि । पत्र सं० ३२ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७९१ कार्तिक बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ५३८ । अ भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ की प्रतिलिपि शाहजहानाबाद में जयसिंहपुरा में पं० मनोहरदास के पठनार्थ हुई थी ।

४८६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १८५९ । वे० सं० ४११ । क भण्डार ।

विशेष—चूरु ग्राम में जानकीदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४८६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५४ । ले० काल सं० १८७३ मंगसिर बुदी १ । वे० सं० ६९ । घ भण्डार ।

४८६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४१ । ले० काल सं० १८३१ । वे० सं० १९७ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १९५) और है ।

४८६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३२ । ले० काल X । वे० सं० १६३ । ज भण्डार ।

४८६८. पञ्चपरमेष्ठीपूजा..... । पत्र सं० १५ । मा० १२X५ । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । १७
काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ४१२ । क भण्डार ।

४८६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८६२ । भाषा-बुद्धी ८ । वे० सं० ३६३ । क
भण्डार ।

४८७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल X । वे० सं० १७६७ । ट भण्डार ।

४८७१. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० १५ । मा० १२X५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १२० । छ भण्डार ।

४८७२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा—डालूराम । पत्र सं० ३५ । मा० १०३X५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-
पूजा । २० काल सं० १८६२ मंगसिर बुद्धी ६ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६७० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०८९) और है ।

४८७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४६ । ले० काल सं० १८६२ ज्येष्ठ सुदी ६ । वे० सं० ५१ । ग
भण्डार ।

४८७४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १९८७ । वे० सं० ३८९ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३९०) और है ।

४८७५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४५ । ले० काल X । वे० सं० ६१६ । च भण्डार ।

४८७६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १९२६ । वे० सं० ५१ । ब भण्डार ।

विशेष—धन्नालाल सोनी ने स्वपठनार्थ प्रतिलिपि कराई थी ।

४८७७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १९१३ । वे० सं० १८७९ । ट भण्डार ।

विशेष—ईसरदा में प्रतिलिपि हुई थी ।

४८७८. पञ्चपरमेष्ठीपूजा..... । पत्र सं० ३६ । मा० १३X५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।
२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३९१ । क भण्डार ।

४८७९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३० । ले० काल X । वे० सं० ६१७ । च भण्डार ।

४८८०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल X । वे० सं० ३२१ । ज भण्डार ।

४८८१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २० । ले० काल X । वे० सं० ३१९ । ब भण्डार ।

४८८२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १९८१ । वे० सं० १७१० । ट भण्डार ।

विशेष—द्यानतराय कृत रत्नत्रय पूजा भी है ।

४८८३. पञ्चवालयतिपूजा.....। पत्र सं० ६ । आ० ६×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

४८८४. पञ्चमङ्गलपूजा.....। पत्र सं० २५ । आ० ८×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४ । छ भण्डार ।

४८८५. पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १८२८ भाद्रपद सुदी ६ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४ । अ भण्डार ।

४८८६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ३६७ । छ भण्डार ।

४८८७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८८३ श्रावण सुदी ७ । वे० सं० १६८ । च भण्डार ।

विशेष—महात्मा शम्भुनाथ ने सवाई जयपुर में प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६६) और है ।

४८८८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४८८९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६२ श्रावण बुदी ५ । वे० सं० १७० । ज भण्डार ।

विशेष—जयपुर नगर में श्री विमलनाथ चैत्यालय में गुरु हीरानन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

४८९०. पञ्चमीव्रतपूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ५ । आ० १२×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५१० । अ भण्डार ।

४८९१. पञ्चमीव्रतोद्यापन—श्री हर्षकीर्ति । पत्र सं० ७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८८८ आसोज सुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ३६८ । छ भण्डार ।

विशेष—शम्भूराम ने प्रतिलिपि की थी ।

४८९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६१५ आसोज बुदी ५ । वे० सं० २०० । च भण्डार ।

४८९३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । आ० १०½×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६१२ कार्तिक बुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

४८९४. पञ्चमीव्रतोद्यापनपूजा.....। पत्र सं० १० । आ० ८½×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५३ । छ भण्डार ।

विशेष—गाजी नारायण शर्मा ने प्रतिलिपि की थी ।

४८६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६०५ आसौज सुदी १२ । वे० सं० ६४ । क मण्डार ।

४८६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल X । वे० सं० ३८८ । मण्डार ।

४८६७. पञ्चमेरूपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० ३३ । आ० १२X८ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७३२ । अ मण्डार ।

४८६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १८८३ । वे० सं० ६१६ । च मण्डार ।

४८६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २६ । ले० काल सं० १६७६ । वे० सं० २१३ । छ मण्डार ।

विशेष—अजमेर वालों के चौबारे जयपुर में लिखा गया । कीमत ४ ।।।)

४८७०. पञ्चमेरूपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० ६ । आ० १२X५३ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल X । ले० काल सं० १६६१ कार्तिक सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ५४७ । अ मण्डार ।

४८७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल X । वे० सं० ३६५ । क मण्डार ।

४८७२. पञ्चमेरूपूजा—भूधरदास । पत्र सं० ८ । आ० ८३X४ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १६५६ । अ मण्डार ।

विशेष—अन्त में संस्कृत पूजा भी है जो अपूर्ण है । इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५६८) भी है ।

४८७३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल X । वे० सं० १४६ । छ मण्डार ।

विशेष—बीस विरहमान जयमाल तथा स्नपन विधि भी दी हुई है ।

४८७४. पञ्चमेरूपूजा—डालूराम । पत्र सं० ४४ । आ० ११X५ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल X । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वे० सं० ४१५ । क मण्डार ।

४८७५. पञ्चमेरूपूजा—सुखानन्द । पत्र सं० २२ । आ० ११X५ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३६६ । क मण्डार ।

४८७६. पञ्चमेरूपूजा..... । पत्र सं० २ । आ० ११X५३ इच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०
काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६६६ । अ मण्डार ।

४८७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४८७ । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ४७६) और है ।

४८७८. पञ्चमेरुस्थापनपूजा—भ० रत्नचन्द । पत्र सं० ६ । आ० १०३X५ इच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल सं० १८६३ प्र० सावन सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० २०१ । च मण्डार ।

४८७९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल X । वे० सं० ७४ । च मण्डार ।

४६१०. पद्मावतीपूजा..... पत्र सं० ५ । आ० १०^३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल सं० १८६६ । पूर्ण । वे० सं० ११८५ । अ भण्डार ।

विशेष—पद्मावती स्तोत्र भी है ।

४६११. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १२७ । च भण्डार ।

विशेष—पद्मावतीस्तोत्र, पद्मावतीकवच, पद्मावतीपटल, एवं पद्मावतीसहस्रनाम भी है । अन्त में २ मन्त्र भी दिये हुये हैं । अष्टगंध लिखने की विधि भी दी हुई है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०५) और है ।

४६१२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १ । ले० काल × । अर्पूरा । वे० सं० १८० । ब भण्डार ।

४६१३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।

४६१४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २०० । ज भण्डार ।

४६१५. पद्मावतीमंडलपूजा..... पत्र सं० ३ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७६ । अ भण्डार ।

विशेष—शांतिमंडल पूजा भी है ।

४६१६. पद्मावतिशान्तिक..... पत्र सं० १७ । आ० १०^३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६३ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रति मण्डल सहित है ।

४६१७. पद्मावतीसहस्रनाम व पूजा..... पत्र सं० १४ । आ० १०×७ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३० । ड भण्डार ।

४६१८. पत्यविधानपूजा—ललितकीर्त्ति । पत्र सं० ७ । आ० ११×५^१ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २११ । ब भण्डार ।

विशेष—खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

४६१९. पत्यविधानपूजा—रत्ननन्दि । पत्र सं० १४ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६५ । अ भण्डार ।

विशेष—नरसिंहदास ने प्रतिलिपि की थी ।

४६२०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० २१५ । च भण्डार ।

४६२१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १७६० देशाल बुदी ६ । वे० सं० ३६२ । ब भण्डार ।

विशेष—बांसी नगर (बुंदी प्रान्त) में आचार्य श्री ज्ञानकीर्त्ति के उपदेश से प्रतिलिपि हुई थी ।

४६२२. पत्यविधानपूजा—अनन्तकीर्ति । पत्र सं० ६ । मा० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५३ । क भण्डार ।

४६२३. पत्यविधानपूजा..... । मा० १०×४^१/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × ।
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७५ । अ भण्डार ।

४६२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ मे ५ । ले० काल सं० १८२१ । अपूर्णा । वे० सं० १०५४ । अ
भण्डार ।

विशेष—पं० नैनसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

४६२५. पत्यप्रतोद्यापन—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ६ । मा० १०^१/_२×४^३/_२ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५५५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ५८२, ६०७) प्रौर हैं ।

४६२६. पत्योपमोपवासविधि..... । पत्र सं० ४ । मा० १०×४^३/_२ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा एवं उपवास विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८४ । अ भण्डार ।

४६२७. पार्श्वजिनपूजा—साह लोहट । पत्र सं० २ । मा० १०^३/_४×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५६० । अ भण्डार ।

४६२८. पार्श्वनाथपूजा..... । पत्र सं० ४ । मा० ७×५^३/_२ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११३२ । अ भण्डार ।

४६२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ४६१ । क भण्डार ।

४६३०. पुर्याहवाचन..... । पत्र सं० ५ । मा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तान्ति
विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ५५६, १३६१, १८०३) प्रौर हैं ।

४६३१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

४६३२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६०६ ज्येष्ठ बुकी ६ । वे० सं० २७ । अ
भण्डार ।

विशेष—पं० देवीलालजी ने स्वपठनार्थ किशन से प्रतिलिपि कराई थी ।

४६३३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६६४ चैत्र सुदी १० । वे० सं० २००६ । ट
भण्डार ।

४६३४. पुरंदरव्रतोद्यापन.....। पत्र सं० ६। आ० ११×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा।

१० काल ×। ले० काल सं० १६११ आषाढ सुदी ६। पूर्ण। वै० सं० ७२। घ भण्डार।

४६३५. पुष्पाञ्जलिब्रतपूजा—भ० रतनचन्द्र। पत्र सं० ५। आ० १०३×७३ इंच। भाषा-संस्कृत।

विषय-पूजा। १० काल सं० १६८१। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० २२३। च भण्डार।

विशेष—यह रचना सागवाड़पुर में श्रावकों की प्रेरणा से भट्टारक रतनचन्द्र ने सं० १६८१ में लिखी थी।

४६३६. प्रति सं० २। पत्र सं० १५। ले० काल सं० १६२४ आसोज सुदी १०। वै० सं० ११७। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति इसी वेष्टन में और है।

४६३७. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वै० सं० ३८७। ज्य भण्डार।

४६३८. पुष्पाञ्जलिब्रतपूजा—भ० शुभचन्द्र। पत्र सं० ६। आ० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत।

विषय-पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ५५३। अ भण्डार।

४६३९. पुष्पाञ्जलिब्रतपूजा.....। पत्र सं० ८। आ० १०×४३ इंच। भाषा-संस्कृत प्राकृत। १०

काल ×। ले० काल सं० १८६३ द्वि० श्रावण सुदी ५। पूर्ण। वै० सं० २२२। च भण्डार।

४६४०. पुष्पाञ्जलिब्रतोद्यापन—पं० गंगादास। पत्र सं० ८। आ० ८×५ इंच। भाषा-संस्कृत।

विषय-पूजा। १० काल ×। ले० काल सं० १८६६। पूर्ण। वै० सं० ४८०। अ भण्डार।

विशेष—गंगादास भट्टारक धर्मचन्द्र के शिष्य थे। इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ३३६) और है।

४६४१. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १८८२ आसोज बुदी १४। वै० सं० ७८। झ भण्डार।

४६४२. पूजाक्रिया.....। पत्र सं० २। आ० ११३×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा करने की विधि का विधान। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १२३। छ भण्डार।

४६४३. पूजापाठसंग्रह.....। पत्र सं० २ से ४०। आ० ११×६ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० २०५५। ट भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वै० सं० २०७८) और है।

४६४४. पूजापाठसंग्रह.....। पत्र सं० ३८। आ० ७×५३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। १० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० १३१६। अ भण्डार।

विशेष—पूजा पाठ के ग्रन्थ प्रायः एक से है। अधिकांश ग्रन्थों में वे ही पूजायें मिलती हैं, फिर भी जिनका विशेष रूप में उल्लेख करना आवश्यक है उन्हें यहां दिया जा रहा है।

४६४५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३७ । ले० काल सं० १६३७ । वे० सं० ५६० । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

- | | | | |
|---------------------------|---------|---------|------------------|
| १. पुष्पदन्त जिनपूजा | — | संस्कृत | |
| २. चतुर्विंशतिसमुच्चयपूजा | | ” | |
| ३. चन्द्रप्रभपूजा | | ” | |
| ४. शान्तिनाथपूजा | | ” | |
| ५. मुनिमुन्नतनाथपूजा | | ” | |
| ६. दर्शनस्तोत्र—पद्मनन्दि | प्राकृत | | ले० काल सं० १६३७ |
| ७. ऋषभदेवस्तोत्र | ” | ” | |

४६४६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३० । ले० काल सं० १८६६ द्वि० चैत्र बुदी ५ । वे० सं० ४५३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतिर्था (वे० सं० ७२६, ७३३, १३७०, २०६७) भी हैं ।

४६४७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १२० । ले० काल सं० १८२७ चैत्र सुदी ४ । वे० सं० ४८१ । क भण्डार ।

विशेष—पूजाओं एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

४६४८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८५ । ले० काल X । वे० सं० ४८० । क भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजायें हैं ।

पल्यविधानव्रतोद्यापनपूजा	रत्ननन्दि	संस्कृत
बृहद्दशोडशकारणपूजा	—	”
जेष्ठजिनवरउद्यापनपूजा	—	”
त्रिकालचीबीसीपूजा	—	प्राकृत
चन्दनषष्ठिव्रतपूजा	विजयकीर्ति	संस्कृत
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	”
जम्बूद्वीपपूजा	पं० जिनदास	”
अक्षयनिधिपूजा	—	”
कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा	—	”

४६४६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १ से ११६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४६७ । ङ भण्डार ।

विशेष—मुख्य पूजायें निम्न प्रकार हैं—

जिनसहस्रनाम	—	संस्कृत
षोडशकारणपूजा	श्रुतसागर	”
जिनगुणसंपत्तिपूजा	भ० रत्नचन्द	”
एत्रकारपञ्चविंशतिकापूजा	—	”
सारस्वतमंत्रपूजा	—	”
धर्मचक्रपूजा	—	”
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द	”

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४७६, ४७६) और हैं ।

४६५०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २७ से ५७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२६ । च भण्डार ।

विशेष—सामान्य पूजा एवं पाठों का संग्रह है ।

४६५१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १०४ । ले० काल × । वे० सं० १०४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १३६) और है ।

४६५२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० १२३ । ले० काल सं० १८८४ आसोज सुदी ४ । वे० सं० ४३६ । ज

भण्डार ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है ।

४६५३. पूजापाठसंग्रह..... । पत्र सं० २२ । आ० १२×८ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२८ । झ भण्डार ।

विशेष—भक्तामर, तत्त्वार्थसूत्र आदि पाठों का संग्रह है । सामान्य पूजा पाठोंकी इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ८८२, ९९४, १०००) और हैं ।

४६५४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८६ । ले० काल सं० १६५३ आषाढ सुदी १४ । वे० सं० ४६८ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ६ प्रतियां (वे० सं० ४७४, ४७५, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४९१, ४९२) और हैं ।

४६५५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ से ६१ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६५४ । ट भण्डार ।

४६५६. पूजापाठसंग्रह.....। पत्र सं० ४०। प्रा० १२×८ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा।
१० काल ×। वे० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७३५। अ भण्डार।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है।

प्रादिनाथपूजा	मनहरदेव	हिन्दी
सम्भेदशिखरपूजा	—	”
विद्यमानवीसतीर्थङ्करों की पूजा	—	१० काल सं० १६४३
अनुभव विलास		ले० ,, १६४६
[पदसंग्रह]		हिन्दी

४६५७. प्रति सं० २। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० सं० ७५६। क भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतिष्ठा (वे० सं० ४७७, ४७८, ४६६, ७६१/२) भी हैं।

४६५८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० २४१। छ भण्डार।

विशेष—निम्न पूजा पाठ हैं—

चौबीसदण्डक	—	दौलतराम
बिनती गुरुओं की	—	भूधरदास
बीस तीर्थङ्कर जयमाल	—	—
सोलहकारणपूजा	—	द्यानतराव

४६५९. प्रति सं० ४। पत्र सं० २१। ले० काल सं० १८६० फागुण सुदी २। वे० सं० २२०। ज भण्डार।

४६६०. प्रति सं० ५। पत्र सं० ६ से २२२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २७०। क भण्डार।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठ संग्रह है।

४६६१. पूजापाठसंग्रह—स्वरूपचन्द। पत्र सं० । प्रा० ११×५ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा। १० काल ×। वे० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ७४६। क भण्डार।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

जयपुर नगर मन्वन्धी चैत्यालयों की वंदना	स्वरूपचन्द	हिन्दी
ऋद्धि सिद्धि शतक	”	”
महावीरस्तोत्र	”	”
जिनपञ्जरस्तोत्र	”	”
त्रिलोकसार चौई	”	”
चमत्कारजिनेश्वरपूजा	”	”
सुगंधीदशमीपूजा	”	”

४६६२. पूजाप्रकरण—उमास्वामी । पत्र सं० २ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२ । छ मण्डार ।

विशेष—पूजक आदि के लक्षण दिये हुये हैं । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमदुमास्वामीविरचितं प्रकरणं ॥

४६६३. पूजामहात्म्यविधि..... । पत्र सं० ३ । आ० ११३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२४ । च मण्डार ।

४६६४. पूजावर्णविधि..... । पत्र सं० ६ । आ० ८३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजाविधि । २० काल × । ले० काल सं० १८२३ । पूर्ण । वे० सं० १४८७ । अ मण्डार ।

४६६५. पूजापाठ..... । पत्र सं० १४ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८३६ वैशाख सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १०६ । ख मण्डार ।

विशेष—माणकचन्द ने प्रतिलिपि की थी । अन्तिम पत्र बाद का लिखा हुआ है ।

४६६६. पूजाविधि..... । पत्र सं० १ । आ० १०×४३ इञ्च । भाषा—प्राकृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १७८६ । अ मण्डार ।

४६६७. पूजाविधि..... । पत्र सं० ४ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११७ । व्य मण्डार ।

४६६८. पूजाष्टक—आशानन्द । पत्र सं० १ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२११ । अ मण्डार ।

४६६९. पूजाष्टक—लोहट । पत्र सं० १ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२०६ । अ मण्डार ।

४६७०. पूजाष्टक—अभयचन्द्र । पत्र सं० १ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१० । अ मण्डार ।

४६७१. पूजाष्टक..... । पत्र सं० १ । आ० १०३×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१३ । अ मण्डार ।

४६७२. पूजाष्टक..... । पत्र सं० ११ । आ० ८३×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १८७८ । ट मण्डार ।

४६७३. पूजाष्टक—विश्वभूषण । पत्र सं० १ । प्रा० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१२ । अ भण्डार ।

४६७४. पूजासंग्रह..... । पत्र सं० ३३१ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल सं० १८६३ । पूर्ण । वे० सं० ४६० मे ४७४ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र सं०	वे० सं०
१. कांजीव्रतोद्यापनमंडलपूजा	×	संस्कृत	१०	४७४
२. श्रुतज्ञानव्रतोद्योतनपूजा	×	हिन्दी	२०	४७३
३. रोहिणीव्रतपूजा	मंडलाचार्य केशवसेन	संस्कृत	१२	४७२
४. दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	×	"	२७	४७१
५. लब्धविधानपूजा	×	"	१२	४७०
६. ध्वजारोपणपूजा	×	"	११	४६६
७. रोहिणीव्रतोद्यापन	×	"	१३	४६८
८. अनन्त्रतोद्यापनपूजा	प्रा० युगबन्ध	"	३०	४६७
९. रत्नत्रयव्रतोद्यापन	×	"	१६	४६६
१०. श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	×	"	१२	४६५
११. शत्रुञ्जयगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	"	२०	४६४
१२. गिरिनारक्षेत्रपूजा	×	"	२२	४६३
१३. त्रिलोकसारपूजा	×	"	८	४६२
१४. पार्श्वनाथपूजा (नवग्रहपूजाविधान सहित)		"	१८	४६१
१५. त्रिलोकसारपूजा	×	"	१०	४६०

इसी भण्डार में २ प्रतिष्ठा (वे० सं० ११२६, २२१६) और हैं जिनमें सामान्य पूजाएँ हैं ।

४६७५ प्रति सं० २ । पत्र सं० १४३ । ले० काल सं० १९५८ । वे० सं० ४७५ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
त्रिपञ्चाशत्व्रतोद्यापन	—	संस्कृत

नाम	कर्त्ता	भाषा
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	संस्कृत
पञ्चकल्याणकपूजा	—	"
चौसठ शिवकुमारका कांजी की पूजा	ललितकीर्त्ति	"
गराधरवल्लयपूजा	—	"
सुगंधदशमीकथा	श्रुतसागर	"
चन्दनषष्टिकथा	"	"
षोडशकारणविधानकथा	मदनकीर्त्ति	"
नन्दीश्वरविधानकथा	हरिवेण	"
मेघमालास्रतकथा	श्रुतसागर	"

४६७६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८० । ले० काल सं० १९५६ । वे० सं० ४८३ । क भण्डार ।

विशेष—निम्न प्रकार संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
सुखसंपत्तिव्रतोद्यापनपूजा	×	संस्कृत
नन्दीश्वरपंक्तिपूजा	×	"
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द्र	"
प्रतिमासांतचतुर्दशी व्रतोद्यापनपूजा	×	"

विशेष—ताराचन्द्र [जयसिंह के मन्त्री] ने प्रतिलिपि की थी ।

लघुकल्याण	×	संस्कृत
सकलीकरणविधान	×	"

इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४७७, ४७८) और हैं जिनमें सामान्य पूजायें हैं ।

४६७७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९ । ले० काल × । वे० सं० १११ । ख भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है— सिद्धचक्रपूजा, कलिकुण्डमन्त्रपूजा, आनन्द स्तवन एवं गराधरवल्लय जयमाल । प्रति प्राचीन तथा मन्त्र विधि सहित है ।

४६७८. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० ४९४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४९०, ४९४) और हैं ।

४६७६. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल X । वे० सं० २२५ । च भण्डार ।

विशेष—मानुषोत्तर पूजा एवं इष्वाकार पूजा का संग्रह है ।

४६८०. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ५५ से ७३ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १२३ । छ भण्डार ।

४६८१. प्रति सं० ८ । पत्र सं० ३८ से ३१५ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २५३ । झ भण्डार ।

४६८२. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ४५ । ले० काल सं० १८०० प्राषाढ सुदी १ । वे० सं० ६६ । ब

भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा	पत्र
धर्मचक्रपूजा	यशोनन्दि	संस्कृत	१-१६
नन्दीश्वरपूजा	—	"	१६-२४
सकलीकरणाविधि	—	"	२४-२५
नघुस्वयंभूपाठ	समन्तभद्र	"	२५-२६
ग्रनन्तवनपूजा	श्रीभूषण	"	२६-३३
भक्तामरस्तोत्रपूजा	केशवमेन	"	३३-३६

प्राचार्य विश्वकीर्ति की सहायता से रचना की गई थी ।

पञ्चमोन्नतपूजा केशवमेन " ३६-४५

इसी भण्डार में २ प्रतिष्ठा (वे० सं० ४६६, ४७०) भी हैं जिनमें नैमित्तिक पूजायें हैं ।

४६८३. प्रति सं० १० । पत्र सं० ८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १८३८ । ट भण्डार ।

४६८४. पूजासंग्रह..... पत्र सं० ३४ । आ० १०३×५ इञ्च । संस्कृत, प्राकृत । विषय—पूजा । १० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २२१५ । अ भण्डार ।

विशेष—देवपूजा, अकृत्रिमत्रैत्यालयपूजा, सिद्धपूजा, गुर्वाविलीपूजा, बीसतीर्थङ्करपूजा, क्षेत्रपालपूजा, षोडश कारणापूजा, धारव्रतनिधिपूजा, सरस्वतीपूजा (जानभूषण) एवं शान्तिपाठ आदि हैं ।

४६८५. पूजासंग्रह..... पत्र सं० २ से ४५ । आ० ७१×५३ इञ्च । भाषा—प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी । विषय—पूजा । १० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २२७ । ब भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २२८) भी है ।

४६८६. पूजासंग्रह..... पत्र सं० ४६७ । आ० १२×५ इञ्च । भाषा—संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी । विषय—संग्रह । १० काल X । ले० काल सं० १८२६ । पूर्ण । वे० सं० ५४० । ब भण्डार ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—

नाम	कर्त्ता	भाषा	२० काल	ले० काल	पत्र
१. भक्तामरपूजा	—	संस्कृत			
२. सिद्धकूटपूजा	विश्वभूषण	”		सं० १८८६	ज्येष्ठ मुदी ११
३. बीसतीर्थ डूरपूजा	—	”		×	अपूर्णा
४. नित्यनियमपूजा	—	संस्कृत हिन्दी			
५. अनन्तपूजा	—	संस्कृत			
६. षण्णवतिक्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	”	×	सं० १८८६	पूर्णा
७. ज्येष्ठजिनवरपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	”			
८. नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्ति	अपभ्रंश			
९. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	गङ्गादास	संस्कृत	[मंडल चित्र सहित]		
१०. रत्नत्रयपूजा	—	”			
११. प्रतिमासान्त चतुर्दशीपूजा	अक्षयराम	”	२० काल १८००	ले० काल १८२७	
१२. रत्नत्रयजयमाल	ऋषभदास बुधदास	”		” ” १८२६	
१३. बारहव्रतों का व्योरा	—	हिन्दी			
१४. पंचमेरूपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	संस्कृत		ले० काल १८२०	
१५. पञ्चकल्याणकपूजा	सुधासागर	”			
१६. पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	गङ्गादास	”		ले० काल १८६२	
१७. पंचाधिकार	—	”			
१८. पुरन्दरपूजा	—	”			
१९. अष्टाह्निकाव्रतपूजा	—	”			
२०. परमसप्तस्थानकपूजा	सुधासागर	”			
२१. पत्यविधानपूजा	रत्ननन्दि	”			
२२. रोहिणीव्रतपूजा मंडल चित्र सहित	केशवसेन	”			
२३. जिनश्रृणुसंपत्तिपूजा	—	”			
२४. सौख्यवाक्यव्रततोद्यापन	अक्षयराम	”			

२५. कर्मचूरवतोद्यापन	लक्ष्मीसेन	संस्कृत	
२६. मोलहकारण व्रतोद्यापन	केशवसेन	"	
२७. द्विपंचकल्याणकपूजा	—	"	मे० काल सं० १८३१
२८. गन्धकुटीपूजा	—	"	
२९. कर्मदहनपूजा	—	"	वे० काल सं० १८२८
३०. कर्मदहनपूजा	—	"	
३१. दशलक्षणपूजा	—	"	
३२. षोडशकारणजयमाल	रङ्गू	अपभ्रंश	अमूर्त
३३. दशलक्षणजयमाल	भावशर्मा	प्राकृत	
३४. त्रिकालचीबीसीपूजा	—	संस्कृत	वे० काल १८५०
३५. लब्धिविधानपूजा	अभ्रदेव	"	
३६. अंकुरारोपणविधि	प्राधाधर	"	
३७. एमोकारपैतीसी	कनककीर्ति	"	
३८. मोनव्रतोद्यापन	—	"	
३९. शांतिवक्रपूजा	—	"	
४०. सप्तपरमस्थानकपूजा	—	"	
४१. मुक्तसंपत्तिपूजा	—	"	
४२. क्षेत्रपालपूजा	—	"	
४३. षोडशकारणपूजा	सुमतिसागर	"	मे० काल १८३०
४४. चन्दनषष्ठीव्रतकथा	श्रुतसागर	"	
४५. एमोकारपैतीसीपूजा	अक्षयराम	"	मे० काल १८२७
४६. पञ्चमीउद्यापन	—	संस्कृत हिन्दी	
४७. त्रिपञ्चाशतक्रिया	—	"	
४८. कञ्जिकावतोद्यापन	—	"	
४९. मेघमालावतोद्यापन	—	"	
५०. पञ्चमीव्रतपूजा	—	"	मे० काल १८२७

५१. नवग्रहपूजा	—	संस्कृत हिन्दी	
५२. रत्नत्रयपूजा	—	"	ले० काल १८१७
५३. दशालक्षणजयमाल	रङ्गु	अपभ्रंश	

टक्का टीका सहित है।

४६८७. पूजासंग्रह" "। पत्र सं० १११। आ० ११३×५३ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। विषय-पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ११०। ख भण्डार।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

अनन्तव्रतपूजा	×	हिन्दी	२० काल सं० १८६८
सम्मोदशिखरपूजा	×	"	
निर्वाणक्षेत्रपूजा	×	"	२० काल सं० १८१७
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	×	"	२० काल सं० १८६७
गिरनारक्षेत्रपूजा	×	"	
वास्तुपूजाविधि	×	संस्कृत	
नांदांगलपूजा	×	"	
शुद्धिविधान	देवैन्द्रकीर्ति	"	

४६८८. प्रति सं० २। पत्र सं० ४०। ले० काल ×। वे० सं० १४५। छ भण्डार।

४६८९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८५। ले० काल ×। वे० सं० ३६। झ भण्डार।

विशेष—निम्न संग्रह हैं—

पञ्चकल्याणकमंगल	रूपचन्द्र	हिन्दी	पत्र १-३
पञ्चकल्याणकपूजा	×	संस्कृत	" ४-१२
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	टेकचन्द्र	हिन्दी	" १३-२६
पञ्चपरमेष्ठीपूजाविधि	यशोनन्दि	संस्कृत	" २७-४६
कर्मदहनपूजा	टेकचन्द्र	हिन्दी	" १-११
नन्दीश्वरव्रतविधान	"	"	" १२-२६

४६९०. प्रति सं० ४। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८६०। ट भण्डार।

४६६१. पूजा एवं कथा संग्रह—खुशालचन्द्र । पत्र सं० ५० । मा० ८×४^१/_२ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८७३ पीष बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ५६१ । अ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं तथा कथाओं का संग्रह है ।

चन्दनषष्ठीपूजा, दशलक्षणपूजा, षोडशकारणपूजा, रत्नत्रयपूजा, मनन्तव्रतपूर्वदशमीव्रतकथा व पूजा । तप
लक्षणकथा, मेरुपंक्ति तप की कथा, सुगन्धदशमीव्रतकथा ।

४६६२. पूजासंग्रह—हीराचन्द्र । पत्र सं० ५१ । मा० ६^३/_४×५^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८२ । क भण्डार ।

४६६३. पूजासंग्रह..... । पत्र सं० ६ । मा० ८^३/_४×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७२७ । अ भण्डार ।

विशेष—पंचमेरु पूजा एवं रत्नत्रय पूजा का संग्रह है ।

इसी भण्डार में ४ प्रतिष्ठा (वे० सं० ७३४, ६७९, १३१६, १३७७) भी हैं जिनमें सामान्य पूजायें हैं ।

४६६४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ६० । ग भण्डार ।

४६६५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे० सं० ४७६ । क भण्डार ।

४६६६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० २५ । ले० काल सं० १६५५ मंगसिर बुदी २ । वे० सं० ७३ । घ
भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है—

वेषपूजा, सिद्धपूजा एवं शान्तिपाठ, पंचमेरु, नन्दीश्वर, सोलहकारण एवं दशलक्षण पूजा ध्यानतराय कृष्ण ।
मनन्तव्रतपूजा, रत्नत्रयपूजा, सिद्धपूजा एवं शास्त्रपूजा ।

४६६७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७५ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४८६ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतिष्ठा (वे० सं० ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९३) भी हैं जो सभी
अपूर्ण हैं ।

४६६८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८५ । ले० काल × । वे० सं० ६३७ । च भण्डार ।

४६६९. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ३२ । ले० काल × । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

५०००. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १३४ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । ज भण्डार ।

विशेष—पंचकल्याणकपूजा, पंचपरमेष्ठीपूजा एवं नित्य पूजायें हैं ।

५००१. प्रति सं० ९ । पत्र सं० ३८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६३५ । ट भण्डार ।

५००२. पूजासंग्रह—रामचन्द्र । पत्र सं० २० । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४६५ । छ भण्डार ।

विशेष—आदिनाथ से चन्द्रप्रभ तक की पूजायें हैं ।

५००३. पूजासार..... । पत्र सं० ८६ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा एवं
विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४५४ । अ भण्डार ।

५००४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४७ । ले० काल × । वे० सं० २२६ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २३०) और है ।

५००५. प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा—अज्ञयुराम । पत्र सं० १४ । आ० १०×५३ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६०० भाद्रवा सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ५८७ । अ
भण्डार ।

विशेष—दीवान ताराचन्द्र ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

५००६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८०० भाद्रवा बुदी १० । वे० सं० ४८४ । क
भण्डार ।

५००७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी ५ । वे० सं० ३८५ । अ
भण्डार ।

५००८. प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० १२ । आ० १२३×५ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८०० चैत्र सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ३८६ । अ
भण्डार ।

विशेष—श्री जयसिंह महाराज के दीवान ताराचन्द्र श्रावक ने रचना कराई थी ।

५००९. प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा..... । पत्र सं० १३ । आ० १०×७३ इंच । भाषा—
संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८०० । पूर्ण । वे० सं० ५०० । छ भण्डार ।

५०१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १८७६ आसोज बुदी ६ । वे० सं० २३३ । च
भण्डार ।

विशेष—सदासुख बाकलीवाल मोहा का ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । दीवान अमरचन्द्रजी संगही ने
प्रतिलिपि करवाई थी ।

५०११. प्रतिष्ठादर्श—भ० श्री राजकीर्ति । पत्र सं० २१ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—प्रतिष्ठा (विधान) । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५०१ छ भण्डार ।

५०१२. प्रतिष्ठादीपक—पंडिताचार्य नरेन्द्रसेन । पत्र सं० १४ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ चैत्र बुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० ५०२ । क भण्डार ।

विशेष—भट्टारक राजकीर्ति ने प्रतिलिपि की थी ।

५०१३. प्रतिष्ठापाठ—आ० वसुनन्दि (अपर नाम जयसेन) । पत्र सं० १३६ । आ० ११३×८५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६४६ कार्तिक सुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० ४८५ । क भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम प्रतिष्ठासार भी है ।

५०१४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११७ । ले० काल सं० १६४६ । वे० सं० ४८७ । क भण्डार ।

विशेष—३६ पत्रों पर प्रतिष्ठा सम्बन्धी चित्र दिये हुये हैं ।

५०१५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५५ । ले० काल सं० १६४६ । वे० सं० ४८६ । क भण्डार ।

विशेष—बालावल्हा व्यास ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी । ग्रन्थ में एक प्रतिरिक्त पत्र पर भङ्कस्थापनार्थ मूर्ति का रेखाचित्र दिया हुआ है । उसमें भङ्क लिखे हुये हैं ।

५०१६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १०३ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७१ । ज भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्रीमत्कुंदकुंदाचार्य षट्पदयभूधरदिवामणि श्रीवसुविन्दाचार्येण जयसेनापरनामकेन विरचितः । प्रतिष्ठा-सारः पूर्णमगमतः ।

५०१७. प्रतिष्ठापाठ—आशाधर । पत्र सं० ११६ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल सं० १२८५ आसोज सुदी १५ । ले० काल सं० १८८४ भाद्रवा सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १२ । ज भण्डार ।

५०१८. प्रतिष्ठापाठ..... । पत्र सं० १ । आ० ३३ गज लंबा १० इंच चौड़ा । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल सं० १५१६ ज्येष्ठ बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४० । क भण्डार ।

विशेष—यह पाठ कपड़े पर लिखा हुआ है । कपड़े पर लिखी हुई ऐसी प्राचीन चीजें कम ही मिलती हैं । यह कपड़े की १० इंच चौड़ी पट्टी पर सिमटता हुआ है । लेखक प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

॥६०॥ सद्धिः ॥ अहो नमो वीतरागाय ॥ संवत् १५१६ वर्षे ज्येष्ठ बुदी १३ तेरसि सोमवासरे अश्विनि नक्षत्रे श्रीहृष्टकापये श्रीसर्वज्ञचैत्र्यालये श्रीमूलसंधे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे भट्टारक श्रीरत्नकीर्ति देवाः तत्पट्टे श्रीप्रभाषद्भेदेवाः तत्पट्टे श्रीपद्मनन्दिदेवाः तत्पट्टे श्रीशुभचद्भेदेवाः ॥ तत्पट्टे भट्टारक श्री जिनचद्भेदेवाः ॥

५०१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १८६१ चैत्र बुदी ४ । अपूर्ण । वे० सं० ५०४ ।

क भण्डार ।

विशेष—हिन्दी में प्रथम ६ पद्य में प्रतिष्ठा में काम आने वाली सामग्री का विवरण दिया हुआ है ।

५०२०. प्रतिष्ठापाठभाषा—बाबा दुलीचंद । पत्र सं० २६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४८६ । क भण्डार ।

विशेष—मूलकर्त्ता आचार्य वसुविन्दु हैं । इनका दूसरा नाम जयसेन भी दिया हुआ है । दक्षिण में कुंकुरा नामके देश सहृद्याचल के समीप रत्नगिरि पर लालाह नामक राजाका बनवाया हुआ विशाल चैत्यालय है । उसकी प्रतिष्ठा होने के निमित्त ग्रन्थ रचा गया ऐसा लिखा है ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४६०) और है ।

५०२१. प्रतिष्ठाविधि..... । पत्र सं० १७६ से १६६ । आ० ११×४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५०३ । क भण्डार ।

५०२२. प्रतिष्ठासार—पं० शिवजीलाल । पत्र सं० ६६ । आ० १२×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६५१ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ४६१ । क भण्डार ।

५०२३. प्रतिष्ठासार..... । पत्र सं० ८५ । आ० १२३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि

विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ आषाढ सुदी १० । वे० सं० २८६ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी । पत्रों के नीचे के भाग पानी से गले हुये हैं ।

५०२४. प्रतिष्ठासारसंग्रह—आ० वसुनन्दि । पत्र सं० २१ । आ० १३×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२१ । अ भण्डार ।

५०२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३४ । ले० काल सं० १६६० । वे० सं० ४५६ । अ भण्डार ।

५०२६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २७ । ले० काल सं० १६७७ । वे० सं० ४६२ । क भण्डार ।

५०२७. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ३६ । ले० काल सं० १७३६ वैशाख बुदी १३ । अपूर्ण । वे० सं० ६८ ।

अ भण्डार ।

विशेष—तीसरे परिच्छेद से है ।

५०२८. प्रतिष्ठासारोद्धार..... । पत्र सं० ७६ । आ० १०३×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २३४ । च भण्डार ।

५०२९. प्रतिष्ठासूक्तिसंग्रह..... । पत्र सं० २१ । आ० १३×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६५१ । पूर्ण । वे० सं० ४६३ । क भण्डार ।

५०३०. प्राणप्रतिष्ठा.....। पत्र सं० ३। मा० ६३×६३ इंच। भाषा संस्कृत। विषय—विधान।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ३७। ज भण्डार।

५०३१. शाल्यकालवर्णन.....। पत्र सं० ४ से २३। मा० ६×४ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—
विधि विधान। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० २६७। ल भण्डार।

विशेष—बालक के गर्भमें घाने के प्रथम मास से लेकर दसवें वर्ष तक के हर प्रकार के सांस्कृतिक विधान का वर्णन है।

५०३२. बीसतीर्थङ्करपूजा—थानजी अजमेरा। पत्र सं० ५८। मा० १२३×८ इंच। भाषा—हिन्दी।
विषय—विदेह क्षेत्र के विद्यमान बीस तीर्थङ्करों की पूजा। २० काल सं० १६३४ मासोज सुबी ६। ले० काल ×। पूर्ण
वै० सं० २०६। ल भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में इसी बेट्टन में एक प्रति भी है।

५०३३. बीसतीर्थङ्करपूजा.....। पत्र सं० ५३। मा० १३×७३ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा।
२० काल ×। ले० काल सं० १६४५ पौष सुदी ७। पूर्ण। वै० सं० ३२२। ज भण्डार।

५०३४. प्रति सं० २। पत्र सं० २। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० ७१। ल भण्डार।

५०३५. भक्तामरपूजा—श्री ज्ञानभूषण। पत्र सं० १०। मा० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—
पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ५३६। ल भण्डार।

५०३६. भक्तामरपूजाउद्यापन—श्री भूषण। पत्र सं० १३। मा० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत।
विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वै० सं० २५२। च भण्डार।

विशेष—१०, ११, १२वां पत्र नहीं है।

५०३७. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १८५८ प्र० ज्येष्ठ सुबी ३। वै० सं० १२२। ल
भण्डार।

विशेष—नेमिनाथ चैत्यालय में हरबंशलाल ने प्रतिलिपि की थी।

५०३८. प्रति सं० ३। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १८६३ भावण सुदी ५। वै० सं० १२०। ज
भण्डार।

५०३९. प्रति सं० ४। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १९११ मासोज बुदी १२। वै० सं० ५०।
ल भण्डार।

विशेष—जयमाला हिन्दी में है।

५०४०. भक्तामरप्रतोद्यापनपूजा—विश्वकीर्ति। पत्र सं० ७। मा० १०३×६ इंच। भाषा—संस्कृत।
विषय—पूजा। २० काल सं० १६६६। ले० काल ×। पूर्ण। वै० सं० ५३७। ल भण्डार।

विशेष— निधि निधि रस चंद्रोसंख्य संवत्सरेहि
विशदनभसिमासे सप्तमी मंदवारे ।
नलवरवरदुर्गे चन्द्रनाथस्य चैत्ये
विरचितमिति भक्त्या केशवामंतसेन ॥

५०४१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ५३८ । ङ भण्डार ।

५०४२. भक्तामरस्तोत्रपूजा..... । पत्र सं० ८ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५३७ । अ भण्डार ।

५०४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २५१ । च भण्डार ।

५०४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० ४४४ । ब्य भण्डार ।

५०४५. भाद्रपदपूजासंग्रह—द्यानतराय । पत्र सं० २६ से ३६ । आ० १२३×७३ इंच । भाषा—
हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

५०४६. भाद्रपदपूजासंग्रह..... । पत्र सं० २४ से ३६ । आ० १२३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

५०४७. भावजिनपूजा..... । पत्र सं० १ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २००७ । ट भण्डार ।

५०४८. भावनापञ्चीसीत्रतोद्यापन..... । पत्र सं० ३ । आ० १२३×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०२ । ख भण्डार ।

५०४९. मंडलों के चित्र..... । पत्र सं० १४ । आ० ११×५ इंच । भाषा हिन्दी । विषय—पूजा
सम्बन्धी मण्डलों का चित्र । ले० काल × । वे० सं० १३८ । ख भण्डार ।

विशेष—चित्र सं० ५२ है । निम्नलिखित मण्डलों के चित्र हैं—

१. श्रुतस्कंध	(कोष्ठ २)	७. ऋषिमंडल	(,, ५६)
२. त्रेपनक्रिया	(कोष्ठ ५३)	८. सप्तऋषिमंडल	(,, ७)
३. बृहदसिद्धचक्र	(,, ६६)	९. सोलहकारण	(,, २५६)
४. जिनगुणसंग्रह	(,, १०६)	१०. चौबीसीमहाराज	(,, १२०)
५. सिद्धकूट	(,, १०६)	११. शांतिचक्र	(,, २४)
६. चितामणिपार्वनाथ	(,, ५६)	१२. भक्तामरस्तोत्र	(,, ४८)

१३. बारहमास की चौदस (कोष्ठ १६६)	३२. अंकुरारोपण (कोष्ठ)
१४. पांचमाह की चौदस (" २५)	३३. गणधरवल्लय (" ४८)
१५. अरातका मंडल (" १६६)	३४. नवग्रह (" ६)
१६. मेघमालाव्रत (" १५०)	३५. सुगन्धदशमी (" ६०)
१७. रोहिणीव्रत (कोष्ठ ६१)	३६. सारसुतयंत्रमंडल (" २८)
१८. लब्धिविधान (" ८१)	३७. शास्त्रजी का मंडल (" १२)
१९. रत्नत्रय (" २६)	३८. अक्षयनिधिमंडल (" १५०)
२०. पञ्चकल्याणक (" १२०)	३९. अठारई का मंडल (" ५२)
२१. पञ्चपरमेष्ठी (" १६३)	४०. अंकुरारोपण (" —)
२२. रविवारव्रत (" ८१)	४१. कलिकुंडपाशर्वनाथ (" ८)
२३. मुक्तावली (" ८१)	४२. विमानशुद्धिशांतिक (" १०८)
२४. कर्मदहन (" १४८)	४३. बासठकुमार (" ५२)
२५. कांजीवारस (" ६४)	४४. धर्मचक्र (" १५७)
२६. कर्मचूर (" ६४)	४५. लघुशान्तिक (" —)
२७. ज्येष्ठजिनवर (" ४६)	४६. विमानशुद्धिशांतिक (" ८१)
२८. बारहमाह की पञ्चमी (" ६५)	४७. छिनदे क्षेत्रपाल व चौबीस तीर्थस्वर (" २४)
२९. चारमाह की पञ्चमी (" २५)	४८. श्रुतज्ञान (" १५८)
३०. फलकांदल [पञ्चमेह] (" २५)	४९. दशलक्षण (" १००)
३१. पांचवासों का मंडल (" २५)	

५०५०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १३८ क । छ मण्डार ।

५०५१. मंडपविधि..... । पत्र सं० ४ । प्रा० ६×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान ।

२० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० १२४० । अ मण्डार ।

५०५२. मंडपविधि..... । पत्र सं० १ । प्रा० ११ $\frac{१}{२}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८८ । अ मण्डार ।

५०५३. मध्यलोकपूजा..... । पत्र सं० ५६ । प्रा० ११ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२५ । छ मण्डार ।

५०५४. महावीरनिर्वाणपूजा... .. । पत्र सं० ३ । आ० ११×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८२१ । पूर्ण । वे० सं० ६१० । अ भण्डार ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड गाथा प्राकृत में और है ।

५०५५. महावीरनिर्वाणकल्याणपूजा..... । पत्र सं० १ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२०० । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२१६) और है ।

५०५६. महावीरपूजा—वृन्दावन । पत्र सं० ६ । आ० ८×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२२ । छ भण्डार ।

५०५७. मांगीतुङ्गीगिरिमंडलपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं० १३ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल सं० १७५६ । ले० काल सं० १६४० बैशाख बुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १४२ । ख भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ के १८ पद्यों में विश्वभूषण कृत शतनाम स्तोत्र है ।

अन्तिम प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

श्रीमूलसंघे दिनकृद्धिभाति श्रीकुन्दकुन्दाख्यमुनीन्द्रचन्द्रः ।
महद्बलात्कारगणादिगच्छे लब्धप्रतिष्ठा किलपंचनाम ॥१॥
जातोऽसौ किलधर्मकीर्तिरमल वादीभ साद्रूलवत
साहित्यागमतर्कपाठनपटुचारित्रभारोद्धह ।
तत्पट्टे मुनिशीलभूषणगणि शीलांबरवेष्टितः
तत्पट्टे मुनि ज्ञानभूषणमहान सील्यस्कला केवली
श्रीमज्जगद्भूषणत्रेदभूषणैयायिकाचारविचारदक्षः ।
कवीन्द्रचन्द्रोरिव कालिवासःपट्टे तदीये रभवत्प्रतापी ॥३॥
तत्पट्टे प्रकटो जात विश्वभूषण योगिनः ।
तेनेदं रचितो यज्ञ भव्यात्मासुख हेतवे ॥४॥
षटवह्नि रिषिश्रन्द्रवासरे माघमासके
एकादश्यामगमत्पूर्णांमेवात्मलिकपुरे ॥५॥

५०५८ प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८१६ । वे० सं० १६७६ । ट भण्डार ।

विशेष—मांगी तुंगी की कमलाकार मण्डल रचना भी है । पत्रों का कुछ हिस्सा चूहोंने काट रखा है ।

५०५६. मुकुटसप्तमीव्रतोद्यापन। पत्र सं० २। आ० १२३×६ इंच। भाषा संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १६२८। पूर्ण। वे० सं० ३०२। ख मण्डार।

५०६०. मुक्तावलीव्रतपूजा। पत्र सं० २। आ० १२×५½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २७४। च मण्डार।

५०६१. मुक्तावलीव्रतोद्यापनपूजा। पत्र सं० १६। आ० ११३×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १८६६। पूर्ण। वे० सं० २७६। च मण्डार।

विशेष—महात्मा जोशी पन्नालाल ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी।

५०६२. मुक्तावलीव्रतविधान। पत्र सं० २४। आ० ८३×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा एवं विधान। २० काल ×। ले० काल सं० १६२५। पूर्ण। वे० सं० २४८। ख मण्डार।

५०६३. मुक्तावलीपूजा—वर्णा मुखसागर। पत्र सं० ३। आ० ११×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५६५। छ मण्डार।

५०६४. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ५६६। छ मण्डार।

५०६५. मेघमालाविधि। पत्र सं० ६। आ० १०×४½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—व्रत विधान। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ८६६। अ मण्डार।

५०६६. मेघमालाव्रतोद्यापनपूजा। पत्र सं० ३। आ० १०½×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—व्रत पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १८६२। पूर्ण। वे० सं० ५८०। अ मण्डार।

५०६७. रत्नत्रयउद्यापनपूजा। पत्र सं० २६। आ० ११½×५½ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १६२६। पूर्ण। वे० सं० ११६। ख मण्डार।

विशेष—१ अपूर्ण प्रति और है।

५०६८. प्रति सं० २। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० सं० ६६। ख मण्डार।

५०६९. रत्नत्रयत्रयमाला। पत्र सं० ४। आ० १०½×५ इंच। भाषा—प्राकृत। विषय—पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २६७। अ मण्डार।

विशेष—हिन्दी में अर्थ दिया हुआ है। इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० २७१) और है।

५०७०. प्रति सं० २। पत्र सं० ४। ले० काल सं० १६१२ भादवा सुदी १। पूर्ण। वे० सं० १५८। ख मण्डार।

विशेष—इसी मण्डार में एक प्रति (वे० सं० १५६) और है।

५०७१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ६४३ । छ भण्डार ।

५०७२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८६२ भाद्रवा सुदी १२ । वे० सं० २६७ । च भण्डार ।

५०७३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २०० । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २०१) और है ।

५०७४. रत्नत्रयजयमाला..... पत्र सं० ६ । आ० १०×७ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १८३३ । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । पत्र ५ से अनन्तघ्नतर्कया श्रुतसागर कृत तथा अनन्त नाथ पूजा की हुई है ।

५०७५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १८१६ सावन सुदी १३ । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां इसी वेष्टन में और हैं ।

५०७६. रत्नत्रयजयमाला..... पत्र सं० ६ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १८२७ आषाढ-सुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ६८२ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४१) और है ।

५०७७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ७४४ । च भण्डार ।

५०७८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० २०३ । झ भण्डार ।

५०७९. रत्नत्रयजयमालाभाषा—नथमल । पत्र सं० ५ । आ० १२×७३ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल सं० १६२२ फागुन सुदी ८ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६३ । झ भण्डार ।

५०८०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६३७ । वे० सं० ६३१ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ६२६, ६३०, ६२७, ६२८, ६२५) और है ।

५०८१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ८५ । घ भण्डार ।

५०८२. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६२८ कार्तिक बुदी १० । वे० सं० ६४४ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ६४४, ६४६) और हैं ।

५०८३. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १६० । छ भण्डार ।

५०८४. रत्नत्रयत्रयमाल। पत्र सं० ३ । आ० १३३×४ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । वे० सं० ६३६ । क भण्डार ।

५०८५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ६६७ । च भण्डार ।

५०८६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल सं० १६०७ द्वि० मासोज बुदी १ । वे० सं० १८५ ।
झ भण्डार ।

५०८७. रत्नत्रयपूजा—पं० आशाधर । पत्र सं० ४ । आ० ८३×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १११० । झ भण्डार ।

५०८८. रत्नत्रयपूजा—केशवसेन । पत्र सं० १२ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६६ । च भण्डार ।

५०८९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ४७६ । ब्य भण्डार ।

५०९०. रत्नत्रयपूजा—पद्मनन्दि । पत्र सं० १३ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३०० । च भण्डार ।

५०९१. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल सं० १८६३ मंगसिर बुदी ६ । वे० सं० ३०५ । च
भण्डार ।

५०९२. रत्नत्रयपूजा.....। पत्र सं० १५ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा ।
२० काल × । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० ४७८ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ५ प्रतियां (वे० सं० ५८३, ६६६, १२०५, २१५६) और हैं ।

५०९३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल सं० १६८१ । वे० सं० ३०१ । ख भण्डार ।

५०९४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० ८६ । घ भण्डार ।

५०९५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६१६ । सं० वे० ६४७ । ङ भण्डार ।

विशेष—छोट्टीलाल अजमेरा ने विजयलाल कासलीवाल से प्रतिलिपि करवायी थी ।

५०९६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १८५८ पौष सुदी ३ । वे० सं० ३०१ । च
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ३०२, ३०३, ३०४) और हैं ।

५०९७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ६० । ब्य भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ४८२, ५२६) और हैं ।

५०९८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६७५ । ट भण्डार ।

५०९९. रत्नत्रयपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० २ से ५ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा-हिन्दी ।
विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी ३ । अपूर्ण । वे० सं० ६३३ । क भण्डार ।

५१००. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३०१ । ज भण्डार ।

५१०१. रत्नत्रयपूजा—ऋषभदास । पत्र सं० १७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—हिन्दी (पुरानी)
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८४६ षोष बुदी ४ । पूर्ण । वे० सं० ४६६ । अ भण्डार ।

५१०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । आ० १२½×५½ इंच । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८५ ।
अ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत प्राकृत तथा अपभ्रंश तीनों ही भाषा के शब्द हैं ।

अन्तिम—

सिंहि रिसिकित्ति मुहसीसै,
रिसह दास बुहवास भणीसै ।
इय तेरह पयार चारित्तउ,
संलेवे भानिय उपवित्तउ ॥

५१०३. रत्नत्रयपूजा..... । पत्र सं० ५ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४२ । अ भण्डार ।

५१०४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे० सं० ६२२ । क भण्डार ।

५१०५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३३ । ले० काल सं० १६६४ षोष बुदी २ । वे० सं० ६४६ । ड
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६४८) और है ।

५१०६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० १०६ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६) और है ।

५१०७. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ३५ । ले० काल सं० १६७८ । वे० सं० २१० । छ भण्डार ।

५१०८. प्रति सं० ६ । पत्र सं० २३ । ले० काल × । वे० सं० ३१८ । अ भण्डार ।

५१०९. रत्नत्रयमंडलविधान..... । पत्र सं० ३५ । आ० १०×६ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५७ । अ भण्डार ।

५११०. रत्नत्रयविधानपूजा—पं० रत्नकीर्त्ति । पत्र सं० ८ । आ० १०×४½ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा एवं विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६५१ । ड भण्डार ।

५१११. रत्नत्रयविधान..... । पत्र सं० १२ । आ० १०½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा
एवं विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८८२ फागुन सुदी ३ । वे० सं० १६६ । ज भण्डार ।

५११२. रत्नत्रयविधानपूजा—टेकचन्द । पत्र सं० ३६ । प्रा० १३×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६७७ । पूर्ण । वे० सं० ६६ । ग भण्डार ।

५११३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३३ । ले० काल × । वे० सं० १६७ । म् भण्डार ।

५११४. रत्नत्रयत्रयोद्यापन..... । पत्र सं० ६ । प्रा० ७×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६५० । म् भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६५३) और है ।

५११५. रत्नावलीव्रतविधान—ब्र० कृष्णदास । पत्र सं० ७ । प्रा० १०×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—विधि विधान एवं पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६८५ चैत्र बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ३८३ । म् भण्डार ।

विशेष—प्रारम्भ— श्री वृषभदेवसत्यः श्रीसरस्वत्यै नमः ॥

जय जय नाभि नरेन्द्रसुत सुरगण सेवित पाद ।
तत्त्व सिधु सागर ललित योजन एक निनाद ॥
सारद गुरु चरणे नमी नमु निरञ्जन हंस ।
रत्नावलि तप विधि कहुं तिम वाधि सुख वंश ॥२॥

चुपई—

जंबूद्वीप भरत उदार, वडूंबड़ी धरणीधर सार ।
तेह मध्य एक धार्य सुखंड, पञ्चम्लेक्षधर्माति अखंड ॥
चंद्रपुरी नयरी उद्दाम, स्वर्गलोक सम दीसिधाम ।
उच्चैस्तर जिनबर प्रासाद, भल्लर डोल पटहशत नाद ॥

धन्तिथ—

अनुक्रमि सुतमि देईराज, दिक्षा लेई करि प्रातम काज ।
मुक्ति काम नृप हुजं प्रमाण, ए ब्रह्म पूरमल्लह वाण ॥१८॥

रूहा—

रत्नावलि बिधि प्रादहं, भाधि सूं नरनारि ।
तिम मन बंछित फल लहु, धामु भव विस्तारि ॥१६॥
मनह मनोरथ संपजि होई, नारी वेद विधेद ।
पाप पङ्क सवि कुभाभि, रत्नावलि बहु भेद ।
जे कसिमुरासि सुविधि, त्रिभुवन होइ तस दास ।
हर्ष सुत मकुल कमल रवि, कहि ब्रह्म कृष्ण उल्लास ॥

इति श्री रत्नावली व्रत विधान निरूपण श्री पास अवांतर सम्बन्ध समाप्त ॥

सं० १६८५ वर्षे चैत्र सुदी २ सोमे ब्र० कृष्णदास पूरनमल्लजी तत्त्वाध्य ब्र० वद्धमान लिखितं ॥

५११६. रविब्रतोद्यापनपूजा—देवेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५०१ । अ भण्डार ।

५११७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल सं० १८०८ । वे० सं० १०६० । अ भण्डार ।

५११८. रेवानदीपूजा—विश्वभूषण । पत्र सं० ६ । आ० १२ $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल सं० १७३६ । ले० काल सं० १६४० । पूर्ण । वे० सं० ३०३ । ख भण्डार ।

विशेष—अन्तिम—

सरत्समेषेटत्रितत्वचन्द्रे काशुन्यभासे किल कृष्णपक्षे ।

नवरंगग्रामे परिपूर्णातास्युः भव्या जनानां प्रददातु सिद्धिः ॥

इति श्री रेवानदी पूजा समाप्ता ।

इसका दूसरा नाम आहूड कोटि पूजा भी है ।

५११९. रैदवत—गंगाराम । पत्र सं० ४ । आ० १३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २०
काल × । ले० काल × । वे० सं० ४३६ । व्य भण्डार ।

५१२०. रोहिणीव्रतमंडलविधान—केशवसेन । पत्र सं० १४ । आ० ६ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८७८ । पूर्ण । वे० सं० ७३८ । अ भण्डार ।

विशेष—जयमाला हिन्दी में है । इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० ७३६, १०६४) और हैं ।

५१२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १८६२ पौष बुदी १३ । वे० सं० १३४ । ज
भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियां (वे० सं० २०२, २६२) और हैं ।

५१२२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २० । ले० काल सं० १६७६ । वे० सं० ६१ । व्य भण्डार ।

५१२३. रोहिणीव्रतोद्यापन..... । पत्र सं० ५ । आ० ११×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५५८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७४०) और है ।

५१२४. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० २६२ । ख भण्डार ।

५१२५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ६६६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६६५) और है ।

५१२६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ३२४ । ज भण्डार ।

५१२७. लघुअभिषेकविधान..... । पत्र सं० ३ । आ० १२३×५३ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-भगवान के अभिषेक का पूजा व विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६६६ वैशाख सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० १७७ । ज भण्डार ।

५१२८. लघुकल्याण..... । पत्र सं० ८ । आ० १२×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अभिषेक विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६३७ । क भण्डार ।

५१२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १८२९ । ट भण्डार ।

५१३०. लघुअनन्तव्रतपूजा..... । पत्र सं० ३ । आ० १२×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८३९ आसोज बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० १८५७ । ट भण्डार ।

५१३१. लघुशांतिकपूजाविधान..... । पत्र सं० १५ । आ० १०३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६०६ माघ बुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ७३ । अ भण्डार ।

५१३२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८६० । अपूर्ण । वे० सं० ८८३ । अ भण्डार ।

५१३३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल सं० १६७१ । वे० सं० ६६० । क भण्डार ।

विशेष—राजूलाल भोंसा ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

५१३४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १८८६ । वे० सं० ११९ । क भण्डार ।

५१३५. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १४ । ले० काल × । वे० सं० १४२ । ज भण्डार ।

५१३६. लघुश्रेयविधि—अभयनन्दि । पत्र सं० ९ । आ० १०३×७ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६०६ फागुण सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० १५८ । ज भण्डार ।

विशेष—इसका दूसरा नाम श्रेयोविधान भी है ।

५१३७. लघुस्नपनटीका—पं० भावशर्मा । पत्र सं० २२ । आ० १२×१५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अभिषेक विधि । २० काल सं० १५६० । ले० काल सं० १८१५ कार्तिक बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० २३२ । अ भण्डार ।

५१३८. लघुस्नपन..... । पत्र सं० ५ । आ० ८×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-अभिषेक विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३ । ग भण्डार ।

५१३९. लब्धिविधानपूजा—दुर्धकीर्त्ति । पत्र सं० २ । आ० ११३×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२०९ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६४९) और है ।

५१४०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ६६४ । ङ्ग भण्डार ।

५१४१. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल । वे० सं० ७७ । ङ्ग भण्डार ।

५१४२. लब्धिविधानपूजा..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ४७६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ४६४, २०२०) और हैं ।

५१४३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । वे० सं० १६८ । ख भण्डार ।

५१४४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० ८७ । घ भण्डार ।

५१४५. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६२० । वे० सं० ६६३ । ङ्ग भण्डार ।

५१४६. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ३१८ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ३१६, ३२०) और हैं ।

५१४७. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

५१४८. प्रति सं० ७ । पत्र सं० २ से ८ । ले० काल सं० १६०० भाद्रवा सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं०

३१७ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६७) और है ।

५१४९. प्रति सं० ८ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६१२ । वे० सं० २१४ । ङ्ग भण्डार ।

५१५०. प्रति सं० ६ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८८७ माह सुदी १ । वे० सं० ५३ । व्य

भण्डार ।

विशेष—मंडल का चित्र भी दिया हुआ है ।

५१५१. लब्धिविधानत्रतोद्यापनपूजा..... । पत्र सं० ६ । आ० ११×५ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० भाद्रवा सुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० ७४ । ग भण्डार ।

विशेष—मन्नालाल कासलीवाल ने प्रतिलिपि करके चौधरियों के मन्दिर में चढाई ।

५१५२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १७६ । ङ्ग भण्डार ।

५१५३. लब्धिविधानपूजा—ज्ञानचन्द्र । पत्र सं० २१ । आ० ११×८ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा । १० काल सं० १६५३ । ले० काल सं० १६६२ । पूर्ण । वे० सं० ७४४ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ प्रतियाँ (वे० सं० ७४३, ७४४/१) और हैं ।

५१५४. लब्धिविधानपूजा..... । पत्र सं० ३५ । आ० १२×५ इंच । भाषा हिन्दी । विषय—पूजा ।

१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६७० । च भण्डार ।

५१५०. लब्धिविधानउद्यापनपूजा पत्र सं० ८ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६१७ । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ६६१) और है ।

५१५६. प्रति सं० २ । पत्र सं० २४ । ले० काल सं० १६२६ । वे० सं० २२७ । ज भण्डार ।

५१५७. बाम्नुपूजा पत्र सं० ५ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—ग्रह प्रवेश पूजा एवं विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२४ । अ भण्डार ।

५१५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल सं० १६३१ वैशाल सुदी ८ । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

विशेष—उद्यन्नलाल पांड्या ने प्रतिलिपि की थी ।

५१५९. प्र० सं० ३ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६१६ वैशाल सुदी ८ । वे० सं० २० । ज भण्डार ।

५१६०. विद्यमानवीसतीर्थङ्करपूजा—नरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० २ । आ० १०×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८१० । पूर्ण । वे० सं० ६७२ । अ भण्डार ।

५१६१. विद्यमानवीसतीर्थङ्करपूजा—जौहरीलाल शिलाला । पत्र सं० ४२ । आ० १२×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १६४९ सावन सुदी १४ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७३६ । अ भण्डार ।

५१६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६३ । ले० काल × । वे० सं० ६७५ । छ भण्डार ।

५१६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५६ । ले० काल सं० १६५३ द्वि० ज्येष्ठ बुदी २ । वे० सं० ६७८ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६७९) और है ।

५१६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४३ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में इसी वेष्टन में एक प्रति और है ।

५१६५. विमानशुद्धि—चन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ६ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान एव पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७ । अ भण्डार ।

विशेष—कुछ पृष्ठ पानी में भोग गये हैं ।

५१६६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ११ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—गोधो के मन्दिर में लक्ष्मीचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

५१६७ विमानशुद्धिपूजा..... पत्र सं० १२ । आ० १२३×७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२० । पूर्ण । वे० सं० ७४६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १०६२) और है ।

५१६८ प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल × । वे० सं० १६८ । ज भण्डार ।

विशेष—शान्तिपाठ भी दिया है ।

५१६९. विवाहपद्धति—सोमसेन । पत्र सं० २५ । आ० १२×७ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय जैन विवाह विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६२ । क भण्डार ।

५१७०. विवाहविधि..... पत्र सं० ८ । आ० ९×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-जैन विवाह विधि । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११३६ । अ भण्डार ।

५१७१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० १७४ । ख भण्डार ।

५१७२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १४४ । छ भण्डार ।

५१७३. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १७६८ ज्येष्ठ बुदी १२ । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

५१७४. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० ३४६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २४६) और है ।

५१७५. विष्णुकुमार मुनिपूजा—बाबूलाल । पत्र सं० ८ । आ० ११×७ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४५ । अ भण्डार ।

५१७६. विहार प्रकरण..... पत्र सं० ७ । आ० ८×३३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७७३ । अ भण्डार ।

५१७७. व्रतनिर्णय—मोहन । पत्र सं० ३४ । आ० १३×६ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । २० काल सं० १६३२ । ले० काल सं० १६४३ । पूर्ण । वे० सं० १८३ । ख भण्डार ।

विशेष—अजयदुर्ग में रहने वाले विद्वान् ने इस ग्रन्थ की रचना की थी । अजमेर में प्रतिलिपि हुई ।

५१७८. व्रतनाम..... पत्र सं० १० । आ० १३×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-व्रतों के नाम । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १८३७ । ट भण्डार ।

विशेष—इसके अतिरिक्त २ पत्रों पर ध्वजा, माला तथा छत्र आदि के चित्र हैं । कुल ६ चित्र हैं ।

५१७९. व्रतपूजासंग्रह..... पत्र सं० ३६८ । आ० १२३×५३ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १२८ । छ भण्डार ।

विशेष—निम्न पूजाओं का संग्रह है ।

नाम पूजा	कर्त्ता	भाषा	विशेष
बारहसी चौतीसन्नतपूजा	श्रीभूषण	संस्कृत	से० काल सं० १८००
विशेष—देबगिरि में पार्श्वनाथ चैत्यालय में लिखी गई ।			पौष बुदी ४
जम्बूद्वीपपूजा	जिनदास	"	से० काल १८०० पौष बुदी ६
रत्नत्रयपूजा	—	"	" " " पौष बुदी ६
बीसतीर्थकूरपूजा	—	हिन्दी	
श्रुतपूजा	ज्ञानभूषण	संस्कृत	
गुरुपूजा	जिनदास	"	
सिद्धपूजा	पद्मनन्दि	"	
षोडशकारण	—	"	
दशलक्षणपूजाजयमाल	रङ्गू	अपभ्रंश	
लघुस्वयंभूस्तोत्र	—	संस्कृत	
नन्दीश्वर उद्यापन	—	"	से० काल सं० १८००
समवशरणपूजा	रत्नशेखर	"	
ऋषिमंडलपूजाविधान	गुणनन्दि	"	
तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वाति	"	
तीसचौबीसीपूजा	शुभचन्द	संस्कृत	
धर्मचक्रपूजा	—	"	
जिनगुणसंपत्तिपूजा	केशवसेन	"	२० काल १६६५
रत्नत्रयपूजा जयमाल	ऋषभदास	अपभ्रंश	
नवकार पैंतीसीपूजा	—	संस्कृत	
कर्मदहनपूजा	शुभचन्द	"	
रविवारपूजा	—	"	
पञ्चकन्याएकपूजा	सुधासागर	"	

५१८०. व्रतविधान.....। पत्र सं० ४। आ० ११^३×४^३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-विधि
विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ६७६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ४२४, ६६२, २०३७) और हैं।

५१८१. प्रति सं० २। पत्र सं० ३०। ले० काल ×। वे० सं० ६८०। क भण्डार।

५१८२. प्रति सं० ३। पत्र सं० १६। ले० काल ×। वे० सं० ६७६। क भण्डार।

५१८३. प्रति सं० ४। पत्र सं० १०। ले० काल ×। वे० सं० १७८। छ भण्डार।

विशेष—चौबीस तीर्थङ्करों के पंचकल्याणक की तिथियां भी दी हुई हैं।

५१८४. व्रतविधानरासो—दौलतरामसंघी। पत्र सं० ३२। आ० ११×४^३ इंच। भाषा-हिन्दी।

विषय-विधान। र० काल सं० १७६७ आसोज सुदी १०। ले० काल सं० १८३२ प्र० भादवा बुदी ६। पूर्ण। वे० सं० १९६। छ भण्डार।

५१८५. व्रतविवरण.....। पत्र सं० ४। आ० १०^३×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-व्रत विधि।

र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ८८१। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२४६) और हैं।

५१८६. प्रति सं० २। पत्र सं० ६ से १२। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८२३। ट भण्डार।

५१८७. व्रतविवरण.....। पत्र सं० ११। आ० १०×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-व्रत विधि।

र० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १८३६। ट भण्डार।

५१८८. व्रतसार—आ० शिबकोटि। पत्र सं० ६। आ० ११×४^३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-

व्रत विधान। र० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७६४। ट भण्डार।

५१८९. व्रतोद्यापनसंग्रह.....। पत्र सं० ४५६। आ० ११×४^३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-

व्रतपूजा। र० काल ×। ले० काल सं० १८६७। अपूर्ण। वे० सं० ४५२। अ भण्डार।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

नाम	कर्ता	भाषा
पल्यमंडलविधान	शुभवन्द	संस्कृत
अक्षयदशमीविधान	—	”
मौनिव्रतोद्यापन	—	”
मौनिव्रतोद्यापन	—	”

पंचमेहजयमाला	भूधरदास	हिन्दी
ऋषिमंडलपूजा	धुरानन्दि	संस्कृत
पद्मावतीस्तोत्रपूजा	—	"
पञ्चमेरुपूजा	—	"
धनन्तव्रतपूजा	—	"
मुक्तावलिपूजा	—	"
शास्त्रपूजा	—	"
षोडशकारण व्रतोद्यापन	केशवसेन	"
मेघमालाव्रतोद्यापन	—	"
चतुर्विंशतिव्रतोद्यापन	—	"
दशलक्षणपूजा	—	"
पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा [बृहद]	—	"
पञ्चमीव्रतोद्यापन	कवि हर्षकल्याण	"
रत्न त्रयव्रतोद्यापन [बृहद]	केशवसेन	"
रत्न त्रयव्रतोद्यापन	—	"
धनन्तव्रतोद्यापन	गुरुराचन्द्रसूरि	"
द्वादशमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
पञ्चमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
षष्ठाह्निकाव्रतोद्यापन	—	"
प्रक्षयनिधिपूजा	—	"
सौख्यव्रतोद्यापन	—	"
ज्ञानपञ्चविंशतिव्रतोद्यापन	—	"
एभोकारवैतीसीपूजा	—	"
रत्नावलिव्रतोद्यापन	—	"
जिनगुरासंपत्तिपूजा	—	"
सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन	—	"

त्रेपनक्रियान्नतोद्यापन	—	संस्कृत
आदित्यव्रतोद्यापन	—	"
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	"
कर्मचूरव्रतोद्यापन	—	"
भक्तामरस्तोत्रपूजा	श्री भूषण	"
जिनसहस्रनामस्तवन	आशाधर	"
द्वादशव्रतमंडलोद्यापन	—	"
लब्धिविधानपूजा	—	"

५१६०. प्रति सं० २ । पत्र सं० २३६ । ले० काल X । वे० सं० १८४ । छ भण्डार ।

निम्न पूजाओं का संग्रह है—

नाम	कर्त्ता	भाषा
लब्धिविधानोद्यापन	—	संस्कृत
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	हिन्दी
भक्तामरव्रतोद्यापन	केशवसेन	संस्कृत
दशलक्षणव्रतोद्यापन	सुमतिसागर	"
रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	"
अनन्तव्रतोद्यापन	गुणचंदसूरि	"
पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन	—	"
शुक्लपञ्चमीव्रतपूजा	—	"
पञ्चमासचतुर्दशीपूजा	भ० सुरेन्द्रकीर्ति	"
प्रतिमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	"
कर्मदहनपूजा	—	"
आदित्यवारव्रतोद्यापन	—	"

५१६१. बृहस्पतिविधान..... । पत्र सं० १ । आ० ६X४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान ।

२० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १८८७ । अ भण्डार ।

५१६२ वृहद्गुरावलीशांतिमंडलपूजा (चौसठ ऋद्धिपूजा)—स्वरूपचंद्र । पत्र सं० ५६ । प्रा० ११×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १६१० । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ६७० । क मण्डार ।

५१६३. प्रति सं० २ । पत्र सं० २२ । ले० काल X । वे० सं० ६४ । घ मण्डार ।

५१६४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३६ । ले० काल X । वे० सं० ६८० । च मण्डार ।

५१६५ प्रति सं० ४ । पत्र सं० ८ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ६८९ । छ मण्डार ।

५१६६. षणवतिक्षेत्रपूजा—विश्वसेन । पत्र सं० १७ । प्रा० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७१ । झ मण्डार ।

विशेष—अन्तिम प्रवर्तित निम्न प्रकार है ।

श्रीमञ्जूकाष्ठासंधे यतिपतितिलके रामसेनस्यबंधे ।
गच्छे नंदोत्तटाल्ये यगदितिह मुखे तु छकर्माम्बुनीन्द्र ॥
स्यातोसीविश्वसेनोविमलतरमतिर्मेनयज्ञचकार्षीत् ।
सोममुग्रामवासे भविजनकलिते क्षेत्रपालानां शिवाय ॥

चौबीस तीर्थक्षुरों के चौबीस क्षेत्रपालों की पूजा है ।

५१६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १७ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २६२ । ख मण्डार ।

५१६८ षोडशकारणजयमाल । पत्र सं० १८ । प्रा० ११ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—प्राकृत । विषय—पूजा । २० काल X । ले० काल सं० १८६४ भादवा बुदी १३ । वे० सं० ३२६ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में पर्यायवाची शब्द दिये हुये हैं । इसी मण्डार में ५ प्रतिमां (वे० सं० ६६७, २६६, ३०४, १०६३, २०४४) और हैं ।

५१६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १७६० प्रासोज सुदी १४ । वे० सं० ३०३ । अ मण्डार ।

विशेष—संस्कृत में भी अर्घ्य दिया हुआ है ।

५२००. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल X । वे० सं० ७२० । क मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में १ प्रति (वे० सं० ७२१) और है ।

५२०१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १८ । ले० काल X । वे० सं० १६८ । ख मण्डार ।

५२०२. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १६०२ मंगसिर सुदी १० । वे० सं० ३६० । च मण्डार ।

विशेष—इसी मण्डार में एक अपूर्ण प्रति (वे० सं० ३५६) और है ।

५२०३. प्रति सं० ६ । पत्र सं० १२ । ले० काल × । वे० सं० २०८ । भ्रु भण्डार ।

५२०४. प्रति सं० ७ । पत्र सं० १६ । ले० काल सं० १८०२ मगसिर बुदी ११ । वे० सं० २०८ । व्य भण्डार ।

५२०५. षोडशकारणजयमाल—रइधू । पत्र सं० २१ । आ० ११×५ इंच । भाषा—अपभ्रंश ।

विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४७ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत टीका सहित है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८८६) और है ।

५२०६. षोडशकारणजयमाल..... । पत्र सं० १३ । आ० १३×५ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६ । ख भण्डार ।

५२०७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—संस्कृत में टिप्पण दिया हुआ है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२६) और है ।

५२०८. षोडशकारणउद्यापन..... । पत्र सं० १५ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १७६३ आषाढ बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २४१ । व्य भण्डार ।

विशेष—गोधों के मन्दिर में पं० सदाराम के वाचनार्थ प्रतिलिपि हुई थी ।

५२०९. षोडशकारणजयमाल..... । पत्र सं० १० । आ० ११^१/_२×५ इंच । भाषा—प्राकृत, संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६४२ । अ भण्डार ।

५२१०. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ७१७ । क भण्डार ।

५२११. षोडशकारणजयमाल..... । पत्र सं० ५२ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी गद्य । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६६५ आषाढ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६६६ । अ भण्डार ।

५२१२. षोडशकारणतथा दशलक्षण जयमाल—रइधू । पत्र सं० ३३ । आ० १०×७ इंच । भाषा—अपभ्रंश । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ११६ । छ भण्डार ।

५२१३. षोडशकारणपूजा—केशवसेन । पत्र सं० १३ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल सं० १६६४ माघ बुदी ७ । ले० काल सं० १८२३ आसोज सुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ५१२ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५०८) और है ।

५२१४. प्रति सं० ३ । पत्र सं० २१ । ले० काल × । वे० सं० ३०० । ख भण्डार ।

५२१५. षोडशकारणपूजा..... । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६६८ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ६२५) और है ।

५२१६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १३ । ले० काल X । अपूर्णा । वै० सं० ७५१ । ऋ भण्डार ।

५२१७. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ३ से २२ । ले० काल X । अपूर्णा । वै० सं० ४२४ । अ भण्डार ।

विशेष—आचार्य पूर्णचन्द्र ने मौजम.बाद में प्रतिलिपि की थी । प्रति प्राचीन है ।

५२१८. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १८६३ सावण सुदी ११ । वै० सं० ४२३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० ४२६) और है ।

५२१९. प्रति सं० ५ । पत्र सं० १३ । ले० काल X । वै० सं० ७२ । ऋ भण्डार ।

५२२०. षोडशकारणपूजा (वृहद्) । पत्र सं० २६ । मा० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । १० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वै० सं० ७१८ । ऋ भण्डार ।

५२२१. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ से २२ । ले० काल X । अपूर्णा । वै० सं० ४२६ । अ भण्डार ।

५२२२. षोडशकारण प्रतोद्यापनपूजा—राजकीर्ति । पत्र सं० ३७ । मा० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल X । ले० काल सं० १७६६ आसोज सुदी १० । पूर्णा । वै० सं० ५०७ । अ भण्डार ।

५२२३. षोडशकारणप्रतोद्यापनपूजा—सुमतिसागर । पत्र सं० २१ । मा० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वै० सं० ३१४ । अ भण्डार ।

५२२४. शत्रुञ्जयगिरिपूजा—भट्टारक विश्वभूषण । पत्र सं० ९ । मा० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वै० सं० १०६७ । अ भण्डार ।

५२२५. शरदुत्सवदीपिका (मंडल विधान पूजा)—सिंहनन्दि । पत्र सं० ७ । मा० ६×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । १० काल X । ले० काल X । पूर्णा । वै० सं० ५६४ । अ भण्डार ।

विशेष—मारम्भ— श्रीवीरं शिरसा नस्वा वीरनन्दिमहागुरुं ।
सिंहमंदिरहं वक्ष्ये शरदुत्सवदीपिका ॥१॥
अथात्र भारते क्षेत्रे जंबूद्वीपमनोहरं ।
एष्येक्षेति निष्यता भिक्षितानामतः पुरी ॥२॥

अन्तिमपाठ— एवं महप्रभावं च दृष्ट्वा लज्जनास्तथा जनाः ।
कतुं प्रभावनायं च ततोऽत्रैव प्रवर्तते ॥२३॥
तवाप्रमृषोरभ्येदं प्रसिद्धं जगतीतले ।
दृष्ट्वा दृष्ट्वा गृहीतं च वैष्णवादिकजीवकैः ॥२४॥

जातो नागपुरे मुनिर्वरतरः श्रीमूलसंधोवरः ।

सूर्यः श्रीवरपूज्यपाद अमलः श्रीवीरनंद्याह्वयः ॥

तच्छिष्यो वर सिधनंदिमुनियस्तेनेयमाविष्कृता ।

लोकोद्बोधनहेतवे मुनिवरः कुर्वतु भो सज्जनाः ॥२५॥

इति श्री शरदुत्सवकथा समाप्ताः ॥१॥

इसके पश्चात् पूजा की हुई है ।

५२२६. प्रति सं० २ । पत्र सं० १४ । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० ३०१ । ख भण्डार ।

५२२७. शांतिकविधान (प्रतिष्ठापाठ का एक भाग) । पत्र सं० ३२ । आ० १२३×५३

इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६३२ फागुन सुदी १० । वे० सं० ५३७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा में काम आने वाली सामग्री का वर्णन दिया हुआ है । प्रतिष्ठा के लिये गुटका महत्वपूर्ण है ।

मण्डलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्ति के उपदेश से इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि की गई थी । १४वें पत्र में यन्त्र दिये हुये हैं जिनकी संख्या ६८ है । प्रशस्ति निम्न प्रकार है—

ॐ नमो वीतरागायनमः । परिमेष्टिने नमः । श्री गुरुवे नमः ॥ सं० १६३२ वर्ष फागुण सुदी १० गुरो श्री मूलसंधे भ० श्रीपद्मनंदिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीशुभचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीजिनचन्द्रदेवा तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचंद्रदेवा तत्पट्टे मंडलाचार्यश्रीधर्मचन्द्रदेवा तत् मंडलाचार्य ललितकीर्तिदेवा तच्छिष्यमंडलाचार्य श्रीचन्द्रकीर्ति उपदेशात् ।

इसी भण्डार में २ प्रतिष्ठायां (वे० सं० ५६२, ५५४) और हैं ।

५२२८. शांतिकविधान (बृहद्) । पत्र सं० ७४ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६२६ भाद्रपद बुदी ११ । पूर्ण । वे० सं० १७७ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालालजी ने शिष्य जयचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

५२२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३८ । च भण्डार ।

५२३०. शांतिकविधि—अर्हदेव । पत्र सं० ५१ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—संस्कृत । विषय विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १८६८ माघ बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ६८६ । क भण्डार ।

५२३१. शान्तिविधि । पत्र सं० ५ । आ० १०×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ६८५ । क भण्डार ।

५२३२. शान्तिपाठ (वृहद्).....। पत्र सं० ४० । आ० १०×५ । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । २० काल × । ले० काल सं० १६३७ ज्येष्ठ सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १६५ । ज भण्डार ।

विशेष—पं० फतेहलाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५२३३. शान्तिचक्रपूजा.....। पत्र सं० ४ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७६७ चैत्र सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १३६ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १७६) और है ।

५२३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२२) और है ।

५२३५. शान्तिनाथपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०५ । छ भण्डार ।

५२३६. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ६८२ । च भण्डार ।

५२३७. शान्तिमंडलपूजा.....। पत्र सं० ३८ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । छ भण्डार ।

५२३८. शान्तिपाठ.....। पत्र सं० १ । आ० १० $\frac{३}{४}$ ×५ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा के अन्त में पढ़ा जाने वाला पाठ । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२२७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियाँ (वे० सं० १२३८, १३१८, १३२४) और हैं ।

५२३९. शान्तिरत्नसूची.....। पत्र सं० ३ । आ० ८ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६६४ । ट भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ से उद्धृत है ।

५२४०. शान्तिहोमविधान—आशाधर । पत्र सं० ५ । आ० ११ $\frac{३}{४}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४७ । अ भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठापाठ में से संग्रहीत है ।

५२४१. शास्त्रगुरुजयमाला.....। पत्र सं० २ । आ० ११×५ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० ३४२ । च भण्डार ।

५२४२. शास्त्रजयमाला—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ३ । आ० १३ $\frac{३}{४}$ ×४ इंच । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ६८८ । क भण्डार ।

५२४३. शास्त्रप्रवचन प्रारम्भ करने की विधि..... । पत्र सं० १ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १८८४ । अ भण्डार ।

५२४४. शासनदेवतार्चनविधान..... । पत्र सं० २१ से २५ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७०७ । छ भण्डार ।

• ५२४५. शिखरविलासपूजा..... । पत्र सं० ७३ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ६८६ । क भण्डार ।

५२४६. शीतलनाथपूजा—धर्मभूषण । पत्र सं० ६ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२१ । पूर्ण । वै० सं० २६३ । ख भण्डार ।

५२४७. प्रति सं० २ । पत्र सं० १० । ले० काल सं० १६३१ प्र० आषाढ बुदी १४ । वै० सं० १२५ । छ भण्डार ।

५२४८. शुक्रपञ्चमीव्रतपूजा..... । पत्र सं० ७ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १८.... । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ३४४ । च भण्डार ।

विशेष—रचना सं० निम्न प्रकार है— अर्धे रंध्र यमलं वसु चन्द्र ।

५२४९. शुक्रपञ्चमीव्रतोद्यापनपूजा..... । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ५१७ । अ भण्डार ।

५२५०. श्रुतज्ञानपूजा..... । पत्र सं० ५ । आ० ११×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८६१ आषाढ सुदी १२ । पूर्ण । वै० सं० ७२३ । छ भण्डार ।

५२५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वै० सं० ६८७ । च भण्डार ।

५२५२. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वै० सं० ११७ । छ भण्डार ।

५२५३. श्रुतज्ञानव्रतपूजा..... । पत्र सं० १० । आ० ११×८३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १६६ । ज भण्डार ।

५२५४. श्रुतज्ञानव्रतोद्यापनपूजा..... । पत्र सं० ११ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० ७२४ । छ भण्डार ।

५२५५. श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन..... । पत्र सं० ८ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२२ । पूर्ण । वै० सं० ३०० । ख भण्डार ।

५२५६. श्रुतपूजा..... । पत्र सं० ४ । आ० १०३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० ज्येष्ठ सुदी ३ । पूर्ण । वै० सं० १०७८ । अ भण्डार ।

५२५७. श्रुतस्कंधपूजा—श्रुतसागर । पत्र सं० २ से १३ । मा० ११३×३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७०५ । क भण्डार ।

५२५८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३४९ । ख भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३५०) और है ।

५२५९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १८४ । ज भण्डार ।

५२६०. श्रुतस्कंधपूजा (ह्यानपञ्चविंशतिपूजा)—सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० ५ । मा० १२×३ इंच ।
भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल सं० १८४७ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२२ । अ भण्डार ।

विशेष—इम रचना को श्री सुरेन्द्रकीर्तिजी ने ५३ वर्ष की अवस्था में किया था ।

५२६१. श्रुतस्कंधपूजा..... । पत्र सं० ५ । मा० ८३×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०२ । अ भण्डार ।

५२६२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० २९२ । ख भण्डार ।

५२६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० १८८ । ज भण्डार ।

५२६४. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६ । ले० काल × । वे० सं० ४९० । ख भण्डार ।

५२६५. श्रुतस्कंधपूजाकथा । पत्र सं० २८ । मा० १२३×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा तथा कथा । २० काल × । ले० काल बीर सं० २४३४ । पूर्ण । वे० सं० ७२८ । क भण्डार ।

विशेष—चावली (आगरा) निवासी श्री लालाराम ने लिखा फिर बीर सं० २४५७ को पन्नालालजी
गोधा ने तुकीगञ्ज इन्दौर में लिखवाया । जौहरीलाल फिरोजपुर जि० मुद्दगाबां ।

बनारसीदास कृत सरस्वती स्तोत्र भी है ।

५२६६. सकलीकरणविधि..... । पत्र सं० ३ । मा० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
विधि विधान । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ३ प्रतियां (वे० सं० ८०, ५७१, ९६१) और हैं ।

५२६७. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल × । वे० सं० ७२३ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२४) और है ।

५२६८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४ । ले० काल × । वे० सं० ३९८ । अ भण्डार ।

विशेष—प्राचार्य हर्षकीर्ति के वाचकों के लिए प्रतिनिधि हुई थी ।

५२६६. सकलीकरण.....। पत्र सं० २१। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधि
विधान। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ५७१। अ भण्डार।

५२७०. प्रति सं० २। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ७५७। ड भण्डार।

५२७१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० १२२। छ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११६) और है।

५२७२. प्रति सं० ४। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० १६४। ज भण्डार।

५२७३. प्रति सं० ५। पत्र सं० ३। ले० काल ×। वे० सं० ४२४। व्य भण्डार।

विशेष—हांसिया पर संस्कृत टिप्पण दिया हुआ है। इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४४३)
और है।

५२७४. संधाराविधि.....। पत्र सं० १। आ० १०×४ इंच। भाषा-प्राकृत, संस्कृत। विषय-
विधान। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२१६। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १२५१) और है।

५२७५. सप्तपदी.....। पत्र सं० २ से १६। आ० ७ १/२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-विधान।
२० काल ×। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १६६६। अ भण्डार।

५२७६. सप्तपरमस्थानपूजा.....। पत्र सं० ३। आ० १० १/२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
पूजा। २० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६६। अ भण्डार।

५२७७. प्रति सं० २। पत्र सं० १२। ले० काल ×। वे० सं० ७६२। ड भण्डार।

५२७८. सप्तर्षिपूजा—जिणदास। पत्र सं० ७। आ० ८×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २२२। छ भण्डार।

५२७९. सप्तर्षिपूजा—लक्ष्मीसेन। पत्र सं० ६। आ० ११×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा।
२० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १२७। छ भण्डार।

५२८०. प्रति सं० २। पत्र सं० ८। ले० काल सं० १८२० कार्तिक सुदी २। वे० सं० ४०१। व्य
भण्डार।

५२८१. प्रति सं० ३। पत्र सं० ७। ले० काल ×। वे० सं० २१६०। ट भण्डार।

विशेष—भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति द्वारा रचित चांदनपुर के महावीर की संस्कृत पूजा भी है।

५२८२. सप्तर्षिपूजा—विश्वभूषण। पत्र सं० १६। आ० १० १/२×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-
पूजा। २० काल ×। ले० काल सं० १६१७। पूर्ण। वे० सं० ३०१। ख भण्डार।

५२८३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ९ । ले० काल सं० १६३० ज्येष्ठ मुदी ८ । वे० सं० १२७ । छ
भण्डार ।

५२८४. समर्षिपूजा..... । पत्र सं० १३ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०६१ । अ भण्डार ।

५२८५. समवशरणपूजा—ललितकीर्ति । पत्र सं० ४७ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८७७ मंगसिर बुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० ४५१ । अ भण्डार ।

विशेष—खुम्पालजी ने जयपुर नगर में महात्मा शंभुराम से प्रतिलिपि करवायी थी ।

५२८६. समवशरणपूजा (वृहद्)—रूपचन्द्र । पत्र सं० ६४ । आ० ६३×५ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय पूजा । २० काल सं० १५६२ । ले० काल सं० १८७६ पौष बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० ४५५ । अ भण्डार ।

विशेष—रचनाकाल निम्न प्रकार है— अतीतेदगतन्दभद्रासकृत परिमिते कुप्यणपक्षेच मासे ॥

५२८७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६२ । ले० काल सं० १६३७ चैत्र बुदी १५ । वे० सं० २०६ । ख
भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालालजी जोबनेर वालों ने प्रतिलिपि की थी ।

५२८८. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १५१ । ले० काल सं० १९४० । वे० सं० १३३ । छ भण्डार ।

५२८९. समवशरणपूजा—सोमकीर्ति । पत्र सं० २८ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८०७ वैशाख सुदी १ । वे० सं० ३८४ । अ भण्डार ।

विशेष—मन्त्रिम श्लोक—

ध्याजस्तुत्यार्चा गुणवीतरागः ज्ञानार्कसाभ्राज्यविकासमानः ।

श्रीसोमकीर्तिविकासमानः रत्नेषरत्नाकरचार्ककीर्तिः ॥

जयपुर में सदानन्द सौगाणी के पठनार्थ छाजूराम पाटनी की पुस्तक से प्रतिलिपि की थी ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ४०५) और है ।

५२९०. समवशरणपूजा..... । पत्र सं० ७ । आ० ११×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७७४ । छ भण्डार ।

५२९१. सम्भेदशिखरपूजा—गङ्गादास । पत्र सं० १० । आ० ११३×७ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८८६ माघ मुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० २०११ । अ भण्डार ।

विशेष—गंगादास धर्मचन्द्र भट्टारक के शिष्य थे । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५०६) और है ।

५२९२. प्रति सं० २ । पत्र सं० १२ । ले० काल सं० १६२१ मंगसिर बुदी ११ । वे० सं० २१० । ख
भण्डार ।

५२६३. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १८६३ वैशाख सुदी ३ । वे० सं० ४३६ । अ
भण्डार ।

५२६४. सम्मोदशिखरपूजा—पं० जवाहरलाल । पत्र सं० १२ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७४८ । अ भण्डार ।

५२६५. प्रति सं० २ । पत्र सं० १६ । २० काल सं० १८६१ । ले० काल सं० १६१२ । वे० सं० ११६ ।
अ भण्डार ।

५२६६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १८ । ले० काल सं० १६५२ आसोज बुदी १० । वे० सं० २४० । अ
भण्डार ।

५२६७. सम्मोदशिखरपूजा—रामचन्द्र । पत्र सं० ८ । आ० ११३×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६५५ भावरा सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० ३६३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ११२३) और है ।

५२६८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ७ । ले० काल सं० १६५८ माघ सुदी १४ । वे० सं० ७०१ । अ
भण्डार ।

५२६९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १३ । ले० काल × । वे० सं० ७६३ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७६४) और है ।

५३००. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ७ । ले० काल × । वे० सं० २२२ । अ भण्डार ।

५३०१. सम्मोदशिखरपूजा—भागचन्द । पत्र सं० १० । आ० १३३×४ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल सं० १६२६ । ले० काल सं० १६३० । पूर्ण । वे० सं० ७६७ । अ भण्डार ।

विशेष—पूजा के पश्चात् पद भी दिये हुये हैं ।

५३०२. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० १४७ । अ भण्डार ।

विशेष—सिद्धक्षेत्रों की स्तुति भी है ।

५३०३. सम्मोदशिखरपूजा—भ० सुरेन्द्रकीर्ति । पत्र सं० २१ । आ० ११×५ इंच । भाषा हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६१२ । पूर्ण । वे० सं० ५६१ । अ भण्डार ।

विशेष—१०वें पत्र से आगे पञ्चमेरु पूजा दी हुई है ।

५३०४. सम्मोदशिखरपूजा—... । पत्र सं० ३ । आ० ११×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १२३१ । अ भण्डार ।

५३०५. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । आ० १०×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × ।
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६१ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७६२) और है ।

५३०६. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ८ । ले० काल × । वे० सं० २६१ । ऋ भण्डार ।

५३०७. सर्वतोभद्रपूजा । पत्र सं० ५ । आ० ६×३½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३६३ । अ भण्डार ।

५३०८. सरस्वतीपूजा—पद्मनन्दि । पत्र सं० १ । आ० ६×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३३४ । अ भण्डार ।

५३०९. सरस्वतीपूजा—ज्ञानभूषण । पत्र सं० ६ । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
१० काल × । ले० काल १६३० । पूर्ण । वे० सं० १३६७ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में ४ प्रतियां (वे० सं० ६८६, १३११, ११०८, १०१०) और हैं ।

५३१०. सरस्वतीपूजा । पत्र सं० ३ । आ० ११×५½ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८०३ । ङ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ८०२) और है ।

५३११. सरस्वतीपूजा—संघी पन्नालाल । पत्र सं० १७ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । १० काल सं० १६२१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२१ । झ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में इसी वेष्टन में १ प्रति और है ।

५३१२. सरस्वतीपूजा—नेमीचन्द्र बखशी । पत्र सं० ८ से १७ । आ० ११×५ इंच । भाषा—
हिन्दी । विषय—पूजा । १० काल सं० १६२५ ज्येष्ठ सुदी ५ । ले० काल सं० १६३७ । पूर्ण । वे० सं० ७७१ । क
भण्डार ।

५३१३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल × । वे० सं० ८०४ । ङ भण्डार ।

५३१४. सरस्वतीपूजा—पं० बुधजनजी । पत्र सं० ५ । आ० ६×४½ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । १० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १००६ । अ भण्डार ।

५३१५. सरस्वतीपूजा । पत्र सं० २१ । आ० ११×५ इंच । भाषा हिन्दी । विषय—पूजा ।
१० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०६ । च भण्डार ।

विशेष—महाराजा माधोसिंह के शासनकाल में प्रतिलिपि की गयी थी ।

५३१६. सहस्रकूटजिनालयपूजा । पत्र सं० १११ । आ० ११½×४½ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । १० काल × । ले० काल सं० १६२६ । पूर्ण । वे० सं० २१३ । ख भण्डार ।

विशेष—पं० पन्नालाल ने प्रतिलिपि की थी ।

५३१७. सहस्रगुणितपूजा—भ० धर्मकीर्ति । पत्र सं० ६६ । आ० १२३×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १७६६ आषाढ सुदी २ । पूर्ण । वे० सं० ५३६ । अ भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५५२) और है ।

५३१८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८२ । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० २४६ । ख भण्डार ।

५३१९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १२२ । ले० काल सं० १६६० । वे० सं० ८०६ । छ भण्डार ।

५३२०. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० ६३ । झ भण्डार ।

५३२१. प्रति सं० ५ । पत्र सं० ६४ । ले० काल × । वे० सं० ६६ । च भण्डार ।

विशेष—आचार्य हर्षकीर्ति ने जिहानावाद में प्रतिलिपि कराई थी ।

५३२२. सहस्रगुणितपूजा..... पत्र सं० १३ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ११७ । छ भण्डार ।

५३२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० ८८ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४ । च भण्डार ।

५३२४. सहस्रनामपूजा—धर्मभूषण । पत्र सं० ६६ । आ० १०^३/_४×५^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८३ । च भण्डार ।

५३२५. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३६ से ६६ । ले० काल सं० १८८४ ज्येष्ठ बुदी ५ । अपूर्ण । वे० सं०

३८५ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में २ अपूर्ण प्रतियां (वे० सं० ३८४, ३८६) और हैं ।

५३२६. सहस्रनामपूजा..... पत्र सं० १३६ से १५८ । आ० १२×५^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८२ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ३८७) और है ।

५३२७. सहस्रनामपूजा—चैनसुख । पत्र सं० २२ । आ० १२^३/_४×८^३/_४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २२१ । छ भण्डार ।

५३२८. सहस्रनामपूजा..... पत्र सं० १८ । आ० ११×८ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७०७ । च भण्डार ।

५३२९. सारस्वतयन्त्रपूजा..... पत्र सं० ४ । आ० १०^३/_४×४^३/_४ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५७७ । अ भण्डार ।

५३३०. प्रति सं० २ । पत्र सं० १ । ले० काल × । वे० सं० १२२ । छ भण्डार ।

५३३१. सिद्धक्षेत्रपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० २ । आ० ६३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६१० । ट भण्डार ।

५३३२. सिद्धक्षेत्रपूजा (बृहद् —स्वरूपचन्द्र । पत्र सं० ५३ । आ० ११३×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १६१६ कार्तिक बुदी १३ । ले० काल सं० १६४१ फागुण सुदी ८ । पूर्ण । वे० सं० ८६ । ग भण्डार ।

विशेष—ग्रन्थ में मण्डल विधि भी दी हुई है । रामलालजी बज ने प्रतिलिपि की थी । इसे सुगनचन्द गंगवाल ने चौघरियों के मन्दिरे में चढाया ।

५३३३. सिद्धक्षेत्रपूजा..... । पत्र सं० १३ । आ० १३×८३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६४४ । पूर्ण । वे० सं० २०४ । छ भण्डार ।

५३३४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३१ । ले० काल × । वे० सं० २६४ । ज भण्डार ।

५३३५. सिद्धक्षेत्रमहात्म्यपूजा..... । पत्र सं० १२६ । आ० ११३×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६४० माघ सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० २२० । ख भण्डार ।

विशेष—प्रतिष्ठायज्ञेय पूजा भी है ।

५३३६. सिद्धचक्रपूजा (बृहद्)—भ० भानुकीर्ति । पत्र सं० १४३ । आ० १०३×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६२२ । वे० सं० १७८ । ख भण्डार ।

५३३७. सिद्धचक्रपूजा (बृहद्)—भ० शुभचन्द्र । पत्र सं० ४१ । आ० १२×८ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६७२ । पूर्ण । वे० सं० ७५० । ग भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७५१) और है ।

५३३८. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३५ । ले० काल × । वे० सं० ८४५ । छ भण्डार ।

५३३९. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४४ । ले० काल × । वे० सं० १२६ । छ भण्डार ।

विशेष—सं० १६६६ फागुण सुदी २ को पुष्पचन्द्र प्रजमेरा ने संशोधित की । ऐसा प्रन्तिम पत्र पर लिखा है । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० २१२) और ।

५३४०. सिद्धचक्रपूजा—श्रुतसागर । पत्र सं० ३० मे ६० । आ० १२×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ८४४ । छ भण्डार ।

५३४१. सिद्धचक्रपूजा—प्रभाचन्द्र । पत्र सं० ६ । आ० १२×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७६२ । क भण्डार ।

५३४२. सिद्धचक्रपूजा (वृहद्) पत्र सं० ३४ । आ० १२×५३ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ६८७ । छ भण्डार ।

५३४३. सिद्धचक्रपूजा..... पत्र सं० ३ । आ० ११×५३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ५२६ । अ भण्डार ।

५३४४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल × । वे० सं० ४०५ । च भण्डार ।

५३४५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० १७ । ले० काल सं० १८६० श्रावण बुदी १८ । वे० सं० २१ ।
ज भण्डार ।

५३४६. सिद्धचक्रपूजा (वृहद्)—संतलाल । पत्र सं० १०८ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १६८१ । पूर्णा । वे० सं० ७४६ । अ भण्डार ।

विशेष—ईश्वरलाल चांदवाड़ ने प्रतिलिपि की थी ।

५३४७. सिद्धचक्रपूजा..... पत्र सं० ११३ । आ० १२×७३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—
पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ८४६ । छ भण्डार ।

५३४८. सिद्धपूजा—रत्नभूषण । पत्र सं० २ । आ० १०३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल सं० १७६० । पूर्णा । वे० सं० २०६० । अ भण्डार ।

विशेष—ओरङ्गजेब के शासनकाल में संग्रामपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५३४९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । आ० ८३×६ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा । २० काल × ।
ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० ७६६ । क भण्डार ।

५३५०. सिद्धपूजा—महा पं० आशाधर । पत्र सं० २ । आ० ११३×६ इंच । भाषा—संस्कृत ।
विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल सं० १८२२ । पूर्णा । वे० सं० ७६४ । क भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७६५) और है ।

५३५१. प्रति सं० २ । पत्र सं० ३ । ले० काल सं० १८२३ मंगसिर सुदी ८ । वे० सं० २३३ । छ
भण्डार ।

विशेष—पूजा के प्रारम्भ में स्थापना नहीं है किन्तु प्रारम्भ में ही जल चढाने का मन्त्र है ।

५३५२. सिद्धपूजा..... पत्र सं० ४ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा ।
२० काल × । ले० काल × । पूर्णा । वे० सं० १६३० । ट भण्डार ।

विशेष— इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६२४) और है ।

५३५३. सिद्धपूजा.....। पत्र सं० ४४। आ० ६×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल X। ले० काल सं० १६५६। पूर्ण। वै० सं० ७१५। च भण्डार।

५३५४. सीमंधरस्वामीपूजा.....। पत्र सं० ७। आ० ८×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वै० सं० ८५८। छ भण्डार।

५३५५. सुखसंपत्तिव्रतोद्यापन—सुरेन्द्रकीर्ति। पत्र सं० ७। आ० ८×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल सं० १८६६। ले० काल X। पूर्ण। वै० सं० १०४१। अ भण्डार।

५३५६. सुखसंपत्तिव्रतपूजा—अस्वयराम। पत्र सं० ६। आ० १२×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल सं० १८००। ले० काल X। पूर्ण। वै० सं० ८०८। क भण्डार।

५३५७. सुगन्धदशमीव्रतोद्यापन.....। पत्र सं० १३। आ० ८×६ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वै० सं० १११२। अ भण्डार।

विशेष—इसो भण्डार में ७ प्रतियां (वै० सं० १११३, ११२४, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६) और हैं।

५३५८. प्रति सं० २। पत्र सं० ६। ले० काल सं० १६२८। वै० सं० ३०२। ख भण्डार।

५३५९. प्रति सं० ३। पत्र सं० ८। ले० काल X। वै० सं० ८६६। छ भण्डार।

५३६०. प्रति सं० ४। पत्र सं० १३। ले० काल सं० १६५६ आसोज बुदी ७। वै० सं० २०३४। ट भण्डार।

५३६१. सुपाशर्वनाथपूजा—रामचन्द्र। पत्र सं० ५। आ० १२×५ इंच। भाषा—हिन्दी। विषय—पूजा। २० काल। ले० काल X। पूर्ण। वै० सं० ७२३। च भण्डार।

५३६२. सूतकनिर्णय.....। पत्र सं० २१। आ० ८×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—विधि विधान। २० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वै० सं० ५। झ भण्डार।

विशेष—सूतक के अतिरिक्त जाप्य, इष्ट अनिष्ट विचार, माला करने की विधि आदि भी हैं।

५३६३. प्रति सं० २। पत्र सं० ३२। ले० काल X। वै० सं० २०६। झ भण्डार।

५३६४. सूतकवर्णन.....। पत्र सं० १। आ० १०३×५ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—विधि विधान। २० काल X। ले० काल X। पूर्ण। वै० सं० ५४०। अ भण्डार।

५३६५. प्रति सं० २। पत्र सं० १। ले० काल सं० १८४५। वै० सं० १२१४। अ भण्डार।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वै० सं० २०३२) और है।

५३६६. सोनागिरपूजा—आशा। पत्र सं० ८। आ० ५३×४ इंच। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। २० काल X। ले० काल सं० १६३८ फागुन बुदी ७। पूर्ण। वै० सं० ३५६। छ भण्डार।

विशेष—पं० गंगाधर सोनागिरि वासी ने प्रतिलिपि की थी ।

५३६७. सोनागिरिपूजा।.....। पत्र सं० ८ । आ० ८३×४३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८५ । छ भण्डार ।

५३६८. सोलहकारणपूजा—द्यानतराय । पत्र सं० २ । आ० ८×५३ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२६ । अ भण्डार ।

५३६९. प्रति सं० २ । पत्र सं० २ । ले० काल सं० १९३७ । वे० सं० २५ । क भण्डार ।

५३७०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ६३ । ग भण्डार ।

५३७१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ५ । ले० काल × । वे० सं० ३०२ । ज भण्डार ।

विषय—इसके अतिरिक्त पञ्चमेष्ट भाषा तथा सोलहकारण संस्कृत पूजाओं और हैं ।

इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १६४) और है ।

५३७२. सोलहकारणपूजा।.....। पत्र सं० १४ । आ० ८×५ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७५२ । छ भण्डार ।

५३७३. सोलहकारणमंडलविधान—टेकचन्द । पत्र सं० ४६ । आ० १२×८ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८८७ । छ भण्डार ।

५३७४. प्रति सं० २ । पत्र सं० ६६ । ले० काल × । वे० सं० ७२४ । च भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७२५) और है ।

५३७५. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० २०६ । छ भण्डार ।

५३७६. प्रति सं० ४ । पत्र सं० ४५ । ले० काल × । वे० सं० २६४ । ज भण्डार ।

५३७७. सौख्यत्रतोद्यापनपूजा—अक्षयराम । पत्र सं० १२ । आ० ११×४३ इंच । भाषा—संस्कृत ।

विषय पूजा । २० काल सं० १८२० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५८६ । अ भण्डार ।

५३७८. प्रति सं० २ । पत्र सं० १५ । ले० काल सं० १७६५ चेत्र बुदी ६ । वे० सं० ४२७ । च

भण्डार ।

५३७९. स्नपनविधान। पत्र सं० ८ । आ० १०×४ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—विधान ।

२० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४२२ । व्य भण्डार ।

५३८०. स्नपनविधि (वृहद्)। पत्र सं० २२ । आ० १०×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—

पूजा । २० काल × । ले० काल × । वे० सं० ५७० । अ भण्डार ।

विशेष—अन्तिम २ पृष्ठों में त्रिलोकसार पूजा है जो कि अपूर्ण है ।

गुटका-संग्रह

(शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पाठों की, जयपुर)

५३=१. गुटका सं० १ । पत्र सं० २८४ । प्रा० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह ।

ने० काल सं० १८१८ ज्येष्ठ मुदी ६ । अपूर्णा । दशा-सामान्य ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है—

विषय-मूची	कर्त्ता का नाम	भाषा	विशेष
१. भट्टाभिषेक	×	संस्कृत	पूर्ण
२. रत्नत्रयपूजा	×	"	"
३. पञ्चमेरूपूजा	×	"	"
४. अनन्तचतुर्दशीपूजा	×	"	"
५. षोडशकारगणपूजा	मुमतिमागर	संस्कृत	"
६. दशानक्षराउद्यापनपाठ	×	"	"
७. सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	ब्रह्मजयसागर	"	"
८. मुनिमुव्रतछन्द	भ० प्रभाचन्द्र	संस्कृत हिन्दी	"

मुनिमुव्रत छन्द लिख्यते—

ॐ

१२०-१२४

पुण्यापुष्पनिरूपकं गुणनिधिं शुद्धव्रतं मुव्रतं

स्याद्वावाभूततपिताखिलजनं दुःखाग्निधाराधरं ।

क्रोधारण्यधनेजयं धनकरं प्रध्वस्तकर्मारिणं

वंदे तद्गुणसिद्धये हरिनुनं सोमात्मजं सौख्यदं ॥१॥

जलधिसमगभीरं प्राप्तजन्माब्धितोरः

प्रबलमदनवीरः पंचधामुक्तचीरः

हतविषयविकारः सततत्वप्रचारः

स जयति गुणधारः सुव्रतो विघ्नहारः ॥२॥

मार्ग—

त्रिभुवनजनहितकर्ता भर्ता सुपवित्रमुक्तिवरलक्ष्म्याः ।
 कन्दर्पदर्पहर्ता सुव्रतदेवो जयति गुणधर्ता ॥१॥
 यो वज्रमौलिसंगतमुकुटमहारत्नरक्तनखनिकरं ।
 प्रतिपालितवरधरणां केवलबोधे मंडितसुभगं ॥२॥
 तं मुनिसुव्रतनाथं नत्वा कथयामि तस्य छन्दोहं ।
 श्रुष्वन्तु सकलभक्त्याः जिनधर्मपराः मौनसंयुक्ताः ॥३॥

मडिल्लच्छन्द—

प्रथम कल्याण कहं मनमोहन, मगध सुदेश वसे अति सोहन ।
 राजगेह नयारि वर सुन्दर, सुमित्र भूप तिहां जिसो पुरंदर ॥१॥
 चन्द्रमुखीमृगनयनी बाला, तस राणी सोमा सुविशाला ।
 पछिमरयणी अलिकुलबाला, स्वप्न सोल देखें गुणमाला ॥२॥
 इन्द्रादे से अति सु विषक्षण, छपरन कृमारि सेवे शुभलक्षण ।
 रत्नवृष्टि करें धनद मनोहर, एम छमास गया सुभ सुखकर ॥३॥
 हरिचर्मा भूपति भुवि मंगल, प्राणत स्वर्ग हवो आखण्डल ।
 श्रावणवदि बीजे गुणधारी, जननी गर्भ रह्यो सुखकारी ॥४॥

भुजङ्गप्रपात—

धरंति अनंगे परं गर्भभारं न रेखात्रयं भगमापन्नसारं ।
 तदा आगता इन्द्रचन्द्रानरेन्द्रामुरादाणवाया न युक्ता सुभद्रा ॥१॥
 पुरं त्रिःपरित्याखिलंदेवसंधा गृहं प्राप्त सोमित्र कंते गता या ।
 स्थित गर्भवासे जिनं निक्कलंकं प्रणाम्यादराते गताहिस्वनाकं ॥२॥
 कुमार्यो हि सेवां प्रकुर्वन्ति गाढ कियत्योज्ज्वलद्दीपसुहृत्व्यवादं ।
 वरं पत्रपूर्णं ददानामुचूर्णं प्रकीर्णं सितछत्रकं कुंभं सुपूर्णं ॥३॥
 सुरेंद्रेश्वमार्सैर्भवंसत्पवित्र लसद्दरत्नवृष्टि शुभं पुण्यपात्रं ।
 जिनं गर्भवासा विनिर्मुक्तदेहं परं स्तौमि सौमात्मजं सौख्यगेहं ॥४॥

अडिल्लच्छन्द—

श्रीजिनवर अवतरयो महि त्रिभुवन चिह्न हवां सुगतां महि ।
 घंटा सिंहं संख परहारव, सुरपति सहसा करें जय जयरव ॥१॥
 बैशाख वदी दशमी जिन जायो, सुरनरवृंद वेगें तब आयो ।
 ऐरावण आरूढ पुरंदर, सचीसहित सोहें गुणमंदिर ॥२॥

मौतीरेगुच्छन्द—

तब ऐरावण सजकरी, चढ्यो शतमुख आणंद भरी ।
जस कोटी सताबोस छे भमरी, करे गीत नृत्य बलीदे भमरी ॥३॥
गज काने सोहें सोवर्ण चमरी, घण्टा टङ्कार वदि सहू भरी ।
प्राखण्डलप्रंकुशत्रुसंधरी, उच्छ्रवमंगल गया जिन नयरी ॥
राजगणें मलया इन्द्रसहू, बाजें वाजित्र सुरंग बहु ।
शक्रें कल्पुं जिनवर लावे सही, इन्द्राणी तब धर मभे गई ॥
जिन बासक दीठा निज नयगो, इन्द्राणी बोलें वर वयगो ।
माया मेसि सुतदि एक कीर्यो, जिनवर युगतै जइ इन्द्र दीयो ॥

इसी प्रकार तप, ज्ञान और मोक्ष कल्याण का वर्णन है । सबसे अधिक जन्म कल्याण का वर्णन है जिसका रचना के आधे से अधिक भाग में वर्णन किया गया है इसमें उक्त छन्दों के प्रतिरिक्त लीलावती छन्द, हनुमंतछन्द, दूहा, बंभाण छन्दों का और प्रयोग हुआ है । अन्त का पाठ इस प्रकार है—

कलस—

बोस धनुष जस देह जहें जिन कल्प लाछन ।
त्रोस सहस्र वर वर्ष आयु सजजन मन रञ्जन ॥
हरवंशी गुणबीमल, भक्त दारिद्र विहंडन ।
मनवांछितदातार, नयरवालोडमु मडन ॥
श्री मूलसंघ संघद तिलक, ज्ञानभूषण भट्टाभरण ।
श्रीप्रभाचन्द्र सुरिवर कहें, मुनिमुत्रतमंगलकरण ॥

इति मुनिमुत्रत द्वाद मभूपूर्णोऽय ॥

पत्र १२० पर निम्न प्रशस्ति दी हुई है—

मंत्र १८१८ वगे शाके १६८४ प्रवर्तमाने ज्यष्ठ सुदी ६ सोमवासरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कार-
गणे श्रीकुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीपयनन्दि तत्पट्टे भ० श्रीदेवेन्द्रवर्ति तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानन्दि तत्पट्टे भट्टारक श्री
मस्त्रिभूषण तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्र भ० तत्पट्टे श्रीवीरचन्द्र तत्पट्टे भ० श्री ज्ञानभूषण तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचन्द्र तत्पट्टे
भ० श्रीवादीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमहीचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीमरुचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीजेनचन्द्र तत्पट्टे भ० श्रीविद्यानन्द तच्छिष्य
वशनेममागर पठनार्थ । पुण्यार्थं पुस्तकं लिखायितं श्रीमूर्यपुत्रे श्रीप्रादिनाथ चैत्यालये ।

विषय	कर्त्ता	भाषा	विशेष
९. मातापद्मावतीछन्द	महीचन्द्र भट्टारक	संस्कृत हिन्दी	१२५-२८
१०. पार्श्वनाथपूजा	×	संस्कृत	
११. कर्मदहनपूजा	वादिचन्द्र	”	
१२. अनन्तव्रतरास	ब्रह्मजिनदास	हिन्दी	
१३. अष्टक [पूजा]	नेमिदत्त	संस्कृत	पं० राघव की प्रेरणा मे
१३. अष्टक	×	हिन्दी	भक्ति पूर्वक दी गई
१५. अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ अष्टक	×	संस्कृत	
१६. नित्यपूजा	×	”	

विशेष—पत्र नं० १६८ पर निम्न लेख लिखा हुआ है—

भट्टारक श्री १०८ श्री विद्यानन्दजी सं० १८२१ तां वर्षे साके १६६६ प्रवर्त्तमाने कार्तिकमासे कृष्णपक्षे प्रतिपदादिवसे रात्रि पहर पाछलीइं देवलोक थया छेजी ।

५३८२. गुटका सं० २ । पत्र सं० ६३ । आ० ८३×५३ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-धर्म । २० काल सं० १८२० । ले० काल सं० १८३५ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—इस गुटके में बख्तराम साह कृत मिथ्यात्व खण्डन नाटक है । यह प्रति स्वयं लेखक द्वारा लिखी हुई है । अन्तिम पुष्पिका निम्न प्रकार है—

इति श्री मिथ्यातखण्डन नाटक सम्पूर्णा । लिखतं बखतराम साह । सं० १८३५ ।

५३८३ गुटका सं० ३ । पत्र सं० ७५ । आ० ४×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । विषय-× । ले० काल सं० १९०४ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—फतेहराम गोदीका ने लिखा था ।

१. रसायनविवि	×	हिन्दी	१-३
२. परमज्योति	बनारसीदास	”	५-१२
३. रत्नत्रयपाठविधि	×	संस्कृत	१३-४३
४. अन्तरायवर्णन	×	हिन्दी	४३-४४
५. मंगलाष्टक	×	संस्कृत	४५-४६
६. पूजा	पद्मनन्दि	”	५०-५४

७. क्षेत्रपालस्तोत्र	X	"	५५-५९
८. पूजा व जयमाल	X	"	५९-७५

५३८४. गुटका सं० ४ । पत्र सं० २५ । आ० ३×२ इञ्च । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—इस गुटके में ज्वालामालिनीस्तोत्र, षष्टादशसहस्रशीलभेद, षट्श्लेश्यावर्णन, जैनसंख्यामन्त्र आदि पाठों का संग्रह है ।

५३८५. गुटका सं० ५ । पत्र सं० २३ । आ० ८×६ इंच । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—भर्तृहरिशतक (नीतिशतक) हिन्दी अर्थ सहित है ।

५३८६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २८ । आ० ८×६ । भाषा—हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं शांतिपाठ का संग्रह है ।

५३८७. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ११६ । आ० ९×७ इंच । ले० काल १८५८ आसोज बुदी ४ शनिवार । पूर्ण ।

१. नाटकसमयसार	वनारसीदास	हिन्दी	१-९७
२. पद—होजी म्हारो कंथ			
चतुर दिलजानी हो	विश्वभूषण	"	९७
३. सिन्दूरप्रकरण	वनारसीदास	"	९८-११६

५३८८. गुटका सं० ८ । पत्र सं० २१२ । आ० ९×६ इञ्च । ले० काल सं० १७९८ । दशा—सामान्य ।

विशेष—पं० धनराज ने लिखवाया था ।

५३८९. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ३५ । आ० ९×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—जिनदास, नवल आदि के पदों का संग्रह है ।

५३९०. गुटका सं० १० । पत्र सं० १५३ । आ० ९×५ इञ्च । ले० काल सं० १९५४ श्रावण सुदी १३ । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. पद—जिनबाणीमाता दर्शन की बलिहारी	X	हिन्दी	१
२. बारहभावना	दोलतराम	"	
३. झालोचनापाठ	जीहरीलाल	"	
४. दशलक्षणपूजा	मूधरदास	"	

५. पञ्चमेरु एवं नंदीश्वरपूजा	द्यानतराय	हिन्दी	२-३५
६. तीन चौबीसी के नाम व दर्शनपाठ	×	संस्कृत हिन्दी	
७. परमानन्दस्तोत्र	बनारसीदास	”	१
८. लक्ष्मीस्तोत्र	द्यानतराय	”	६
९. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	”	५-६
१०. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	”	
११. देवशास्त्रगुरुपूजा	×	हिन्दी	
१२. चौबीस तीर्थङ्करों की पूजा	×	”	१५३ तक

५३६१. गुटका सं० ११ । पत्र सं० २२२ । आ० १०१/६ इच्छ । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं०

१७४६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. रामायण महाभारत कथा [४६ प्रश्नों का उत्तर है]	×	हिन्दी गद्य	३-१४
२. कर्मचूरव्रतवेलि	मुनि सकलकीर्ति	”	१५-१८

अथ वेलि लिख्यते—

दोहा—

कर्मचूर व्रत जे कर, जीतवाणी तंतसार ।

नरनारि भव भंजन धरे, उतर चौरासी सु पार ॥

कीधौ कुरौ कुरा अरंभ्यो सकलकीर्ति नाम,

कर्म सेइय कीधो गुणी कोसंबी वसि गाम ॥

नमणी गुरु निरगंध नै, सारद दसगुण पुरै ।

कहो वरत वेलि उदयु करमसेण कर्मचुरै ॥

ज्ञानावर्ण दर्सन सात्ता वेदनी मोह मंदराई ।

अन्है जीतनै चिति होसी, कहालु कर वखण सुहाई ॥

नाम कर्म पांचमौग कुछुगे प्रायु भेदो ।

गोत्र नीष गति पोहो चाहे, अन्तराई भय भेदो ॥

चितामणि सुचित अविलागी, कर्मसेण गुणगाई ॥१॥

दोहा—

एक कर्म को वेदना, भुंजे है सब लोइ ।

नरनारी करि उधरै, चरण गुणसंस्थान संजोई ॥१॥

अन्तिमराठ- कवित्त—

सकलकीर्ति मुनि आप सुनत मिटै संताप चौरासी मरि जाई फिर अजर अमर, पद पाइये ॥

जूनी पोथी भई अक्षर दीसै नहीं फेरु उतारी बंध छंद कवित्त बेली बनाई कुगाईये ॥

चंप नेरी चाटमू केते भट्टारक भये साधा पार अइसठि जेहि कर्मचूर बरत कहो है वगाई ध्याइये ॥

संवत् १७४६ सौमवार ७ करकोवु कर्मचूर ब्रत बैठयो अमर पद चुरी सीर सीधातंम जाइये ॥

नोट—पाठ एक दम अशुद्ध है । लीपि भी विकृत है ।

२. ऋषिमण्डलमन्त्र	×	संस्कृत	ले० काल १७३६ १७-१६
४. चिंतामणि पार्वनाथस्तोत्र	×	”	अपूर्णा २०
५. अंजना को रास	धर्मभूषण	हिन्दी	२१-३४

प्रारम्भ—

पहैली रे अहँत पाय नमैं ।

हरै भव दुख भंजन त्वं भगवंत कर्म कायातना का पसी ।

पाप ना प्रभव असि सौ अंत तो रास भयो इति अंजना

तै तो संयम साधि न गई स्वर लौक तो सती न सरोमणि वंदीये ॥१॥

वसं विधाधर उपनी मप्र्य, नामै तीन वनेधि संपजे ।

भाव करंता हो भवदुख जाय, सती न सरोमणि वंदये ॥२॥

ब्राह्मी नै सुंदरी वंदये, राजा ही रसभ तरौ घर द्वैय ।

बाल परौ तप बन गई काम ना भोगन वंछीय जे हतो ॥ सती न३ ॥

मेघ सेनापति नै धरनारि अंजना सो मदालसा ।

त्यारे न कोनै सीमाल लगात तो॥ सती न४ ॥

पंचसै किसन कुमारिका, ईनि बाल कुवारी लागी रे पावै ।

जाइव जग जानी करि, द्वारिका दहन मुनि तप जाय ।

हरी तनी अंजना वंदीय जिने राग छौडी मन मैं धरघी वैराग तो ॥ सती न५॥

अन्तिमपाठ—

वंस बिद्याधरे उरनि मात, नामे नवनिधि पावसो ।
 भाव करंता हो भव दुख जायतो, साती न सरोमणि वंदीये ॥ ५८ ॥
 इम गावै धर्मभूषण रास, रत्नमाल गुंधो रचि रास ।
 सर्व पंचमिलि मंगल थयो, कहै ता रास ऊपजै रस विलास ॥
 ढाल भवन केरो इम भरो, कंठ विना राग किम होई ।
 बुधि बिना ज्ञान नविसोई, गुरु बिना मारग कीम पानी सी ।
 दीपक बिना मंदर अधकार, देवभक्ति भाव बिना सब द्वार तो ॥५९॥
 रस बिना स्वाद न ऊपजै, तिम तिम मति बधै देव गुरु पसाव ।
 खिमा विन सील करै कुल हाणि, निर्मल भाव राखो सदा ।
 केतन कलक आनि कुल जाय, कुमति विनास निर्मल भावसू ।
 ते समझो सबही नरनारि, अर्हत बिना दुर्लभ सरावक अवतार ।
 जुहि समता भावसूं स्योपुरवास, एह कथी सब मंगल करी॥
 इति श्री अंजनारास सती सुंदरी हनुमंत प्रसादात् संपूरण ॥

स्वस्ति श्री मूलसंधे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीकुंदकुन्दाचार्यान्वये भट्टारक श्रीजगत्कीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीदेवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीमहेन्द्रकीर्ति तस्य भ० श्रीक्षेमेन्द्रकीर्ति तस्योपदेश गुरुकीर्तिना इत्यादि तन्मध्ये पंडित कुस्यालि लिखामि वीराव नगरे सुथाने श्रीसहावीरचैत्यालये अमुक श्रावके सर्व वधेरवाल ज्ञात बुधिति समपात रहा श्रीवृषभनाथ यात्रा निमित्त गवन उपदेश मासोत्तममासे शुभे शुक्लपक्षे आसोज वदी ३ दीतवार संवत् १८२० शालिवाहने १६७६ शुभमस्तु ।

६. न्हवणविधि	×	संस्कृत	ले० काल १८२० आसोज वदी ३
७. छियालीसगुण	×	हिन्दी	
८.	×	”	पृष्ठ ३६वें पर चौबीसवें तीर्थङ्करोंके चित्र
९. चौबीस तीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी	३६-५०

विशेष—पत्र ४०वें पर भी एक चित्र है सं० १८२० में पं० खुशालचन्द ने बैराठ में प्रतिलिपि की थी ।

१०. भविष्यदत्तपञ्चमीकथा	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	४१-८१
-------------------------	--------------	--------	-------

रचनाकाल सं० १६३३ पृष्ठ ५० पर रेखाचित्र ले० काल सं० १८२१ वीराव (बीराज) में खुशालचन्द ने प्रतिलिपि की थी । पत्र ८२ पर तीर्थङ्करों के ३ चित्र हैं ।

११. हनुमंतकथा	ब्रह्म रायमल्ल	हिन्दी	८३-१०६
१२. बीन विरहमानपूजा	हर्षकीर्ति	"	११०
१३. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	१११
१४. मरस्वतीजयमाल	ज्ञानभूषण	संस्कृत	११२
१५. अभिषेकपाठ	×	"	११२
१६. रविन्नतकथा	भाउ	हिन्दी	११२-१२१
१७. चिन्तामणिलम्न	×	संस्कृत	ले० काल १८२१ १२२
१८. प्रद्युम्नकुमारशायी	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	१२३-१५१
			२० काल १६२८ ले० काल १८११
१९. धुनपूजा	×	संस्कृत	१५२
२०. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१५३-१५६
२१. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	१५७-१६६
२२. पूजासंग्रह	×	"	१६७-१७२
२३. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	१८३
२४. पाशाकेवली	×	हिन्दी	१८४-२१७
२५. पञ्चकल्याणकपाठ	रूपचन्द्र	"	२१७-२२२

विशेष—कई जगह पत्रों के दोनों ओर मुन्दर बेलें हैं।

५२६२. गुटका सं० १२। पत्र सं० १०६। आ० १०३×६ इञ्च। भाषा—हिन्दी।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

१. यज्ञ की सामग्री का व्यौरा	×	हिन्दी	१
------------------------------	---	--------	---

विशेष—(अथ जागी की मौजे सिमरिया में प्र० देवाराम ने ताकी सामा आई मंख्या १७६७ माह बुदी तूणिमा पुरानी पोधी में से उत्तारी। पोधी जीरण होगई तत्र उत्तरी। सब चीजों का निरख भी दिया हुआ है।

२. यज्ञमहिमा	×	हिन्दी	२
--------------	---	--------	---

विशेष—मौजे सिमरिया में माह सुदी १५ सं० १७६७ में यज्ञ किया उमका परिचय है। सिमरिया में चौहान वंश के राजा श्रीराव थे। मायाराम दीवान के पुत्र देवाराम थे। यज्ञानार्थ मारेना के पं० टेकचन्द्र थे। यह यज्ञ मात दिन तक चला था।

३. कर्मविपाक

×

संस्कृत

३-११

विशेष—ब्रह्मा नारद संवाद में से लिया गया है । तीन अध्याय हैं ।

४. आदीश्वर वः समवशरण

×

हिन्दी १६६७ कार्तिक सुदी

१२-१४

आदीश्वर को समोशरण—आदिभाग—

गुर गनपति मन ध्याऊं, चित्त चरन सरन ल्याउ ।

मति मांगि लैउ असी, मुनि मांनि लैहि जैसी ॥१॥

आदीश्वर गुण गाऊं, वरु साध सगु (र) पाउं ।

चारित्र जिनेस लीया, भरथ को राखु दीया ॥२॥

तजि राज होइ भिखारी, जिन मौन बरत धारी ।

तव आपनी कमाई, भई उदय अंतराई ॥३॥

मुनि भीख काज जावड, नहि भानु हाथ आवड ।

तेइ कन्या सरूपा, कोई रतन अति अनूपा ॥४॥

अन्तिमभाग—

रिषि सहस गुन गावइ, फल बोधि बीजु पावइ ।

वर जोड़िइ मुख भासइ, प्रभु चरन सरन राखइ ॥७१॥

दोहरा—

समोसरण जिनरायी कौ, गावहि जे नरनारि ।

मनवच्छित फल भोगवई, तिरि पहुचहि भवपार ॥७२॥

सोलसह सइसठि वरप, कार्तिक सुदी बलिराज ।

सालकोट सुम थानवर, जयउ सिध जिनराज ॥७३॥

इति श्री आदीश्वरजी को समोसरण समाप्त ॥

५. द्वितीय समोसरण

ब्रह्मगुलाल

हिन्दी

१४-१६

आदिभाग—

प्रथम सुमिरि जिनराज अनंत, सुख निधान मंगल सिव संत

जिनवाणी सुमिरत सनु बढै, ज्यौ गुनठांन छिपक छिनु चढै ॥१॥

गुरुपद सेवहु ब्रह्म गुलाल, देवसास्त्र गुर मंगल माल ।

इनहि सुमार बरन्यौ सुखसार, समवसरन जैसे बिसतार ॥२॥

दीठ बुधि मन भायो करै, सूरिख पद आन पायो डरै ।

सुनहु भव्य मेरे परवान, समोसरन कौ करौ बखान ॥३॥

मुभ ग्रामन दिढ जोग ध्यान, वर्द्धमान भयो केवल ज्ञान ।
 समोसरण रचना अति बनी, परम धरम महिमा अति तरणी ॥४॥

अन्तिमभाग—
 चलयो नगर फिरि अपने राड, चरण-सरण जिन अति सुख पाइ ।
 समोसरणय पूरण भयो, सुनत पढित पातिग गलि गयो ॥६५॥

दोहरा—
 सोरह सैं अठमठि समै, माघ दसै सित पक्ष ।
 गुनालब्रह्म भनि गीत गति, जसोर्नदि पद सिख ॥६६॥
 नरदेस हथि कंतपुर, राजा वक्रम साहि ।
 गुनालब्रह्म जिन धर्मु जय, उयमा दीजै काहि ॥६७॥

इति समोसरन ब्रह्मगुनाल कृत संपूर्ण ॥

६. नेमिजी को मंगन जगतभूषण के गिण्य हिन्दी १६-१७
 विश्वभूषण रचना सं० १६९८ श्रावण सुदी ८

आदिभाग—
 प्रथम जपो परमेष्ठि तो गुर हीयो धरो ।
 सस्वती करहुं प्रणाम कवित्त जिन उच्चरो ॥
 मोरठि देस प्रसिद्ध द्वारिका अति बनी ।
 रची इन्द्र ने आइ मुरनि मनि बहुकनी ॥
 बहु कनीय मंदिर चैत्य स्त्रीयो, देखि मुरनर हरषीयो ।
 समुद्र विजै वर भूप राजा, सक्र सोभा निरखीयो ॥
 प्रिया जा सिव देवि जानी, हृद अमरो ऊटसा ।
 राति मुंदरि सैन सूती, देखि सुपने षोडशा ॥१॥

अन्तिम भाग—
 रंवन् मौलह सैं अठानूवा जाणीयो ।
 सावन माम प्रसिद्ध अष्टमी मानियो ॥
 गाऊं मिकंदराबाद पार्श्वजिन देहुरे ।
 अ.वग क्रीया मुजान धर्म सौ नेहरे ॥
 अरे धर्म सौ नेहु अति ही देही सबको दान जू ।
 स्यादवाद वानी ताहि मानै करै पंडित मान जू ॥

जगतभूषण भट्टारक जै विश्वभूषण मुनिवर ।

नर नारी मंगलचार गावै पढत पातिग निस्तरै ॥

इति नैमिनाथ जू कौ मंगल समाप्ता ॥

७. पार्श्वनाथचरित्र
आदिभाग रागुनट—

विश्वभूषण

हिन्दी

१७-१६

पारस जिनदेव कौ मुनहु चरित्रु मनु लाई ॥ टेक ॥

मनउ सारदा माइ, भजौ गनधर चितुलाई ।

पारस कथा संबंध, कहौ भाषा मुखदाई ॥

जंबू दखिन भरथ मै, नगर पोदना मांझ ।

राजा श्री अरिविंद जू, भुगतै सुख अवाझ ॥ पारस जिन० ॥

विप्र तहां एकु वसै, पुत्र द्वी राज सुचारा ।

कमठु बडौ विपरीत, विसन सेबै जु अपारा ॥

लघु भैया मरभूति सौ, बसुधरि दई ता नाम ।

रति क्रीडा मेज्या रच्यौ, हो कमठ भाव के धाम ॥ पारस जिन० ॥

कोपु कीयौ मरभूति, कहौ मंत्री सो राच्यौ ।

सीख दई नहीं गह्यो काम रस अंतर साच्यौ ॥

कमठ विषै रस कारनै, अमर भूति बांधौ जाई ।

सो मरि वन हाथी भयौ, हथिनि भई त्रिय आइ ॥ पारस जिन० ॥

अन्तिमपाठ—

अवधि हेत करि बात सही देवनि तव जानी ।

पदमावति धरणेन्द्र छत्र मस्तिग पर तानी ॥

सब उपसर्गु निवारिकै, पार्श्वनाथ जिनंद ।

सकल करम पर जारिकै, भये मुक्ति त्रियचंद ॥ पारस जिन० ॥

मूलसंघ पट्ट विश्वभूषण मुनि राई ।

उत्तर देखि पुराण रचि, या वई सुभाई ॥

वसै महाजन लोग जु, दान चतुर्विधि का देत ।

पार्श्वकथा निहचै सुनौ, हो मोछि प्राप्ति फल लेत ॥

पारस जिनदेव को, मुनहु चरितु मन लाइ ॥२५॥

इति श्री पार्श्वनाथजी कौ चरित्रु संपूर्ण ॥

८. वीरजिगंदगीत	भगीतीदास	हिन्दी	१६-२०
९. सम्यग्ज्ञानी धमाल	"	"	२०-२१
१०. स्थूलभद्रशीलरासो	×	"	२१-२२
११. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	२२-२३
१२. "	द्यानतराय	"	२३
१३. "	×	संस्कृत	२३
१४. पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	"	२४
१५. "	पद्मनन्दि	"	२४
१६. हनुमतकथा	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	२० काल १६१६ २५-७५ ले० काल १८३४ ज्येष्ठ सुदी ३
१७. सीताचरित्र	×	हिन्दी	अपूर्णा ७७-१०६

५३६३. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ३७ । आ० ७३×१० इञ्च । ले० काल सं० १८६२ आसोज बुद्धी.

७ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—निम्न पूजा पाठों का संग्रह है—

१. करुणामन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	पूर्णा
२. लक्ष्मीस्तोत्र (पार्श्वनाथस्तोत्र)	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	"
३. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	"
४. मत्तामरस्तोत्र	आ० मानतुंग	"	"
५. देवपूजा	×	हिन्दी संस्कृत	"
६. सिद्धपूजा	×	"	"
७. दशलक्षणपूजा जयमाल	×	संस्कृत	"
८. षोडशकारणपूजा	×	"	"
९. पार्श्वनाथपूजा	×	हिन्दी	"
१०. शांतिपाठ	×	संस्कृत	"
११. सहस्रनामस्तोत्र	पं० आशाधर	"	"
१२. पञ्चमेरूपूजा	भूधरयति	हिन्दी	"

१३. अष्टाह्निकापूजा	×	संस्कृत	”
१४. अभिषेकविधि	×	”	”
१५. निर्वाणकांडभाषा	भगवतीदास	हिन्दी	”
१६. पञ्चमङ्गल	रूपचन्द	”	”
१७. अनन्तपूजा	×	संस्कृत	”

विशेष—यह पुस्तक सुखलालजी बज के पुत्र मनसुख के पढने के लिए लिखी गई थी ।

५३६४. गुटका नं० १४ । पत्र सं० १३ । आ० ४×४^३ इंच । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । दशा—सामाय ।

विशेष—शारदाष्टक (हिन्दी) तथा ८४ आसादनों के नाम हैं ।

५३६५. गुटका नं० १५ । पत्र सं० ४३ । आ० ५×३^३ इंच । भाषा—हिन्दी । ले० काल १८६० । पूर्ण

विशेष—पाठ अशुद्ध हैं—

१. कहज्योजी नेमजीसूँ जाय म्हेतो थांही संग चालां	×	हिन्दी	१
२. हो मुनिवर कब मिलि है उपगारी	भागचन्द	”	१-२
३. ध्यावांला हो प्रभु भावसोंजी	×	”	२-८
४. प्रभु थांकीजी मूरत मनड़ो मोहियो	ब्रह्मकपूर	”	८-६
५. गरज गरज गहै नवरसै देखौ भाई	×	”	६
६. मान लीज्यो म्हारी अरज रिषभ जिनजी	×	”	१०
७. तुम सी रमा विचारी तजि	×	”	११
८. कहज्योजी नेमिजीसूँ जाय म्हे तो	×	”	१२
९. मुझे तारोजी भाई साइयां	×	”	१३
१०. संबोधपंचासिकाभाषा	बुधजन	”	१३-२०
११. कहज्योजी नेमिजीसूँ जाय म्हेतो थांकी संगचालां	राजचन्द	”	२१-२३
१२. मान लीज्यो म्हारी आज रिषभ जिनजो	×	”	२३
१३. तजिकै गये पीया हमकै तुमसी रमा विचारी	×	”	२३-२४
१४. म्हे ध्यावालां हो प्रभु भावसूँ	×	”	२४
१५. सायु दिगंबर नगन उर पद संवर भूषणधारी	×	”	२५

१६. म्हे निशिदिन घ्यावांला	बुधजन	"	२६
१७. दर्शनपाठ	×	"	२६-२७
१८. कवित्त	×	"	२८-२९
१९. बारहभावना	नवल	"	३३-३५
२०. विनती	×	"	३६-३७
२१. बारहभावना	दलजी	"	३८-३९

५३६६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० २२६ । मा० ५३×५ इच्छ । ले० काल १७५१ कार्तिक सुदी १ ।

पूरा । दशा-सामान्य ।

विशेष—दो गुटकाओं को मिला दिया गया है ।

विषयसूची—

१. वृहदकल्याण	×	हिन्दी	३-१२
२. मुक्तावलिनत की तिथियां	×	"	१२
३. भाड़ा देने का मन्त्र	×	"	१२-१६
४. राजा प्रजाको वशमें करनेका मन्त्र	×	"	१७-१८
५. मुनीश्वरों की जयमाल	ब्रह्म जिनदास	"	२३-२४
६. दश प्रकार के ब्राह्मण	×	संस्कृत	२५-२६
७. सूतकवर्णन (यशस्तिलक से)	सोमदेव	"	३०-३१
८. गृहप्रवेशविचार	×	"	३२
९. भक्तिनामवर्णन	×	हिन्दी संस्कृत	३३-३५
१०. दोषावतारमन्त्र	×	"	३६
११. काले विष्णुके डङ्कु उतारने का मंत्र	×	हिन्दी	३८

नोज—यहां में फिर सख्या प्रारम्भ होती है ।

१२. स्वाध्याय	×	संस्कृत	१-३
१३. तत्त्वार्थसूत्र	ब्रह्मास्वाति	"	१ ३
१४. प्रतिक्रमणपाठ	×	"	१९-३७
१५. भक्तिपाठ (मान)	×	"	३७-७२

१६. वृहत्संबयंभूस्तोत्र	समन्तभद्राचार्य	”	७३-८६
१७. बलत्कारगण गुर्वावलि	×	”	८६-९३
१८. श्रावकप्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	९४-१०७
१९. श्रुतस्कंध	ब्रह्म हेमचन्द्र	प्राकृत	१०७-११८
२०. श्रुतावतार	श्रीधर	संस्कृत गद्य	११८-१२३
२१. आलोचना	×	प्राकृत	१२३-१३२
२२. लघु प्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	१३२-१४६
२३. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	”	१४६-१५५
२४. वंदेतामनी जयमाला	×	संस्कृत	१५५-१५६
२५. आराधनासार	देवसेन	प्राकृत	१५६-१६७
२६. संबोधपंचासिका	×	”	१६८-१७२
२७. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्द	संस्कृत	१७२-१७६
२८. भूसालक्ष्मीबीसी	भूपालकवि	”	१७७-१८०
२९. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	”	१८०-१८४
३०. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	”	१८५-१८६
३१. दशलक्षराजयमाल	पं० रङ्गू	अपभ्रंश	१८६-१९५
३२. कल्याणमदिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	१९६-२०३
३३. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	”	२०३-२०४
३४. मन्त्रादिसंग्रह	×	”	२०५-२२६

प्रशस्ति—संवत् १७५१ वर्षे शाके १६१६ प्रवर्तमाने कार्तिकमासे शुक्लपक्षे प्रतिपदा १ तिथौ मङ्गलवारे
आचार्य श्री चारुकीर्ति पं० गंगाराम पठनार्थ वाचनार्थ ।

५३६७. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ४०७ । आ० ७५५ इञ्च ।

१. अज्ञानसमित्तिस्वरूप	×	प्राकृत	संस्कृत व्याख्या सहित १-३
२. भयहरस्तोत्रमन्त्र	×	संस्कृत	४
३. बंधस्थिति	×	”	मूलाचार से उद्धृत ५-६
४. स्वरविचार	×	”	७

५. मंढृष्टि	×	संस्कृत	६-११
६. मन्त्र	×	"	१४
७. उपवास के दशभेद	×	"	१५
८. फुटकर ज्योतिष पद्य	×	"	१५
९. अढाई का व्यौरा	×	"	१८
१०. फुटकर पाठ	×	"	१८-२०
११. पाठसंग्रह	×	संस्कृत प्राकृत	२१-२४

गोमट्टसार, समयसार, द्रव्यसंग्रह आदि से संगृहीत पाठ हैं ।

१२. प्रश्नोत्तररत्नमाला	अमोघवर्ष	संस्कृत	२४-२५
१३. सज्जनचित्तवल्लभ	मल्लिपेणाचार्य	"	२६-२८
१४. गुणस्थानव्याख्या	×	"	२९-३१

प्रवचनसार तथा टीका आदि से संगृहीत

१५. छातीमुख की ओपधि का नुसखा	×	हिन्दी	३२
१६. जयमाल (मालारोहण)	×	अपभ्रंश	३२-३५
१७. उपवासत्रिधान	×	हिन्दी	३५-३६
१८. पाठसंग्रह	×	प्राकृत	३६-३७
१९. अन्वययोगव्यवच्छेदकट्टात्रिशिका	हेमचन्द्राचार्य	संस्कृत	मन्त्र आदि भी हैं ३८-४०
२०. गर्भ कल्याणक क्रिया में भक्तियां	×	हिन्दी	४१
२१. जिनसहस्रनामस्तोत्र	जिनमेनाचार्य	संस्कृत	४२-४६
२२. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	"	४६-५२
२३. यतिभावनाष्टक	आ० कुंदकुंद	"	५२
२४. भावनाट्टात्रिशिका	आ० अमितगति	"	५३-५४
२५. आराधनामार	देवमेन	प्राकृत	५५-५८
२६. संबोधपंचामिका	×	अपभ्रंश	५९-६०
२७. तत्त्वार्थमूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	६१-६७
२८. प्रतिक्रमण	×	प्राकृत संस्कृत	६७-८८
२९. भक्तिस्तोत्र (प्राचार्यभक्ति तक)	×	संस्कृत	८९-१०७

३०. स्वयंभूस्तोत्र	आ० समन्तभद्र	संस्कृत	१०८-११८
३१. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	११८
३२. दर्शनस्तोत्र	सकलचन्द्र	"	११९
३३. सुप्रभातस्तवन	×	"	११९-१२१
३४. दर्शनस्तोत्र	×	प्राकृत	१२१
३५. बलात्कार गुरावली	×	संस्कृत	१२२-२४
३६. परमानन्दस्तोत्र	पूज्यराद	"	१२४-२५
३७. नाममाला	धनञ्जय	"	१२५-१३७
३८. वीतरागस्तोत्र	पद्मनन्दि	"	१३८
३९. करुणाष्टकस्तोत्र	"	"	१३९
४०. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१३९-१४१
४१. समयसारगाथा	आ० कुन्दकुन्द	"	१४१
४२. अर्हद्भक्तिविधान	×	"	१४१-१४३
४३. स्वस्त्ययनविधान	×	"	१४४-१५६
४४. रत्नत्रयपूजा	×	"	१५६-१६२
४५. जिनस्नपन	×	"	१६२-१६८
४६. कलिकुण्डपूजा	×	"	१६८-१७१
४७. षोडशकारणपूजा	×	"	१७२-१७३
४८. दशलक्षणपूजा	×	"	१७३-१७५
४९. सिद्धस्तुति	×	"	१७५-१७६
५०. सिद्धपूजा	×	"	१७६-१८०
५१. शुभमालिका	श्रीधर	"	१८२-१९२
५२. सारसमुच्चय	कुलभद्र	"	१९२-२०६
५३. जातिदर्शन	×	" ५८ पद्य ७७ जाति	२०७-२०८
५४. फुटकरवर्णन	×	"	२०९
५५. षोडशकारणपूजा	×	"	२१०

५६. ओषधियों के नुसखे	×	हिन्दी	२११
५७. मंग्रहमूक्ति.	×	संस्कृत	२१२
५८. दीक्षापटल	×	"	२१३
५९. पार्वनाथपूजा (मन्त्र सहित)	×	"	२१४
६०. दीक्षा पटल	×	"	२१८
६१. सरस्वतीस्तोत्र	×	"	२२३
६२. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	२२३-१२४
६३. सुभाषितसंग्रह	×	"	२२५-२२८
६४. तत्वसार	देवसेन	प्राकृत	२३१-२३५
६५. योगसार	योगचन्द्र	संस्कृत	२३१-२३५
६६. द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत	२३६-२३७
६७. श्रावकप्रतिक्रमण	×	संस्कृत	२३७-२४५
६८. भावनापद्धति	पद्मनन्दि	"	२४६-२४७
६९. रुद्रत्रयपूजा	"	"	२४८-२५९
७०. कल्याणमाला	पं० आशाधर	"	२५९-२६०
७१. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	२६०-२६३
७२. समयसारवृत्ति	अमृतचन्द्र सूरि	"	२६४-२६५
७३. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	२६६-३०३
७४. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	३०४-२०६
७५. परमेष्ठियों के गुण व प्रतिशय	×	प्राकृत	३०७
७६. स्तोत्र	पद्मनन्दि	संस्कृत	३०८-३०९
७७. प्रमाणप्रमेयकलिका	नरेन्द्रसूरि	"	३१०-३२१
७८. देवागमस्तोत्र	प्रा० समन्तभद्र	"	३२२-३२७
७९. अकलङ्काष्टक	भट्टाकलङ्क	"	३२८-३२९
८०. सुभाषित	×	"	३३०-३३१
८१. जिनगुणस्तवन	×	"	३३१-३३२

८२. क्रियाकलाप	×	”	३३२-३३४
८३. संभवनाथपढ़ड़ी	×	अपभ्रंश	३३४-३३७
८४. स्तोत्र	लक्ष्मीचन्द्रदेव	प्राकृत	३३५-३३६
८५. स्त्रीशृङ्गारवर्णन	×	संस्कृत	३३६-३४१
८६. चतुर्विंशतिस्तोत्र	माघनन्दि	”	३४२-३४३
८७. पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामि	”	३४४
८८. मृत्युमहोत्सव	×	”	३४५
८९. अनन्तगंठीवर्णन (मन्त्र सहित)	×	”	३४६-३४८
९०. आयुर्वेद के नुसखे	×	”	३४९
९१. पाठसंग्रह	×	”	३५०-३५४
९२. आयुर्वेद नुसखा संग्रह एवं मंत्रादि संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी	योगशत वैद्यक से संगृहीत ३५७-३८७
९३. अन्य पाठ	×	”	३८८-४०७

इनके अतिरिक्त निम्नपाठ इस गुटके में और हैं ।

१. कल्याण बडा २. मुनिश्वरोंकी जयमाल (ब्रह्म जिनदास) ३. दशप्रकार विप्र (मत्स्यपुराणेषु कथिते)
४. सूतकविधि (यशस्तिलक चम्पू से) ५. गृहबिबलक्षण ६. दोषावतारमन्त्र

५३६८. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ५५ । आ० ७×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८०४
श्रावण बुदी १२ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. जिनराज महिमास्तोत्र	×	हिन्दी	१-३
२. सतसई	विहारीलाल	”	ले० काल १७७४ फागुण बुदी १ १-४८
३. रसकौतुक रास सभा रञ्जन	गङ्गादास	”	” १८०४ सावण बुदी १२ ४९-५५

दीहा—

अथ रस कौतुक लिख्यते—

गंगाधर सेवहु सदा, गाहक रसिक प्रवीन ।

राज सभा रंजन कहत, मन हुलास रस लीन ॥१॥

दंपति रति नैरोग तन, विधा सुधन सुगेह ।

जो दिन जाय अनंद सौ, जीतव को फल ऐह ॥२॥

सुंदर पिय मन भावती, भाग भरी सकुमारि ।
 सोइ नारि सतेवरी, जाकी कोठि ज्वारि ॥३॥
 हित सौ राज सुता, विलसि तन न निहारि ।
 ज्यां हाथां रे वरह ए, पात्यां मैड कारन भारि ॥४॥
 तरसै हूं परसै नहीं, नौढा रहत उदास ।
 जे सर मूकै भाववै, को सी जन्हालै आस ॥५॥

अन्तिमभाग—

समये रति पोसति नहीं, नाहुरि मिलै बिनु नेह ।
 औसरि चुक्यो मेहरा, काई वरसि करैह ॥६८॥
 मुदरो ले छलस्यो कह्यै, औ हौं फिर ना पैद ।
 काम सरै दुख बीसरै, बेरी हुबो वेद ॥६९॥
 मानवती निस दिन हरै, बोलत खरीबदास ।
 नदी किनारै रुखड़ी, जब तब होइ विनास ॥१००॥
 सिव सुखदायक प्रानपति, जरी प्रान को भोग ।
 नासै देसी रुखड़ी, ना परदेसी लोग ॥१०१॥
 गंता प्रेम समुद्र है, गाहक चतुर मुजान ।
 राज सभा इहै, मन हित प्रीति निदान ॥१०२॥

इति श्री गंगाराम कृत रस कौतुक राजसभा रञ्जन समस्या प्रबंध प्रभाव । श्री मितो सावण वदि १२ बुधवार संवत् १८०४ सवाई जयपुरमध्ये लिखी दीवान ताराचन्दजी को पोथी लिखतं माणिकचन्द बज बांचे जीहेने जिमा माफिक वंच्या ।

५३६६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ३६ । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १९३० प्रापाढ मुर्दा १५ । पूर्ण ।

विशेष—रसालकुंवर की चौपई-नखरू कवि कृत है ।

५४००. गुटका सं० २० । पत्र सं० ६८ । आ० ६×३ इञ्च । ले० काल सं० १९६५ ज्येष्ठ बुदी १२ । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—महीधर विरचित मन्त्र महोदधि है ।

५५ १. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ३१६ । आ० ६×५ इञ्च । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. सामायिकपाठ	×	संस्कृत प्राकृत	१-२४
२. सिद्ध भक्ति ग्रादि संग्रह	×	प्राकृत	२५-७०
३. समन्तभद्रस्तुति	समन्तभद्र	संस्कृत	७२
४. सामायिकपाठ	×	प्राकृत	७३-८१
५. सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	संस्कृत	८२-८६
६. पार्श्वनाथ का स्तोत्र	×	"	८७-१००
७. चतुर्विंशतिजिनाष्टक	शुभचन्द्र	"	१०१-१४६
८. पञ्चस्तोत्र	×	"	१४७-१७०
९. जिनवरस्तोत्र	×	"	१७०-२००
१०. मुनीश्वरों की जयमाला	×	"	२०१-२५०
११. सकलीकरणविधान	×	"	२५१-३००
१२. जिनचौबीसभवान्तररास	विमलेन्द्रकीर्ति	हिन्दी पद्य पद्य सं० ४८	३०१-८

आदिभाग—

जिनवर चुबीसइ जरि भानू पाय नमी कहुं भवहुं विचार ।

भाविइं सुरगत ये संत ॥१॥

यज्ञञ्जय राजा परिण भरीइ, भाग भूमि आई परिण सुरीइ ।

श्रीधर ईशानि देव ॥२॥

सुचिराज सातयइ भवि जाणु, अच्युतेन्द्र सोलम बखाणु ।

वज्रनाभि चन्द्रेश ॥३॥

तप करि सर्वारथ सिद्धि पासी, भव अग्यारम वृषभह स्वासी ।

मुगितई ग्या जगनाह ॥४॥

विमलबाहना राजा धरि जायुं, पंचामुत्तरि अहमिन्द्र सुभाणुं ।

इशं भवजिन परमपद पास्युं ॥५॥

विमल वाहन राजा धरि जायुं, पंचामुत्तरि अहमिन्द्र बखाणुं ।

अजित अमर पद पास्युं ॥६॥

विमल वाहन राजा धरि मुग्गीइ, प्रथमयीवि अहमिद्र सुभणीइ ।

शंभव जिन अबतार ॥७॥

अन्तिमभाग—

आदिनाथ अग्यान भवान्तर, चन्द्रप्रभ भव सात सोहेकर ।

शान्तिनाथ भवपार ॥४५॥

नमिनाथ भवदशा तम्हे जाणुं, पार्श्वनाथ भव दसइ बख्साणुं ।

महावीर भव तेत्रीसइ ॥४६॥

अजितनाथ जिन आदि कही जइ, अठार जिनेश्वर हिइ धरीजई ।

त्रिणि त्रिणि भव सही जाणु ॥४७॥

जिन चुबीस भवांतर सारो, भगता मुगता पुष्य अपारो ।

श्री विमलेन्द्रकीर्ति इम बोलइ ॥४८॥

इति जिन चुबीस भवान्तर रास समाप्ता ॥

१३. मालीरासो	जिनदास	हिन्दी पद्य	१०८-३१०
१४. नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि	×	संस्कृत	३११-१३
१५. पद-जीवारे जिणवर नाम भजे	×	हिन्दी	३१४-१५
१६. पद-जीया प्रभु न सुमरचो रे	×	"	३१६

५४०२. गुटका सं० २२ । पत्र सं० १५४ । आ० ६×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । विषय—भजन । ले०

काल सं० १८५६ । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. नेमि गुण गाऊं वांछित पाऊं	महोचन्द्र मूरि	हिन्दी	१
			बाय नगर में सं० १८८२ में पं० रामचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी ।
२. पार्श्वनाथजी की निशाणी	हर्ष	हिन्दी	१-६
३. रे जीव जिनधर्म	समय सुन्दर	"	६
४. मुख काण सुमरो	×	"	७
५. कर जोर रे जीवा जिनजी	पं० फतेहचन्द्र	"	८
६. चरण शरण अब आइयो	"	"	८
७. कलत फिरचो मनादिडो रे जीवा	"	"	९

८. जादम जान्न वरणाय	फतेहचन्द	हिन्दी	२० काल स० १८४०	६
९. दर्शन दुहेलो जी	"	"		१०
१०. उग्रसेन घर बारहों जी	"	"		११
११. वारीजी जिनंदजी वारी	"	"		१२
१२. जामन मरण का	"	"		१३
१३. तुम जाय मनफो	"	"		१३
१४. अब लूँ नेमि जिनंदा	"	"		१४
१५. राज ऋषभ चरण नित वंदिये	"	"		१५
१६. कर्म भरमायै	"	"		१६
१७. प्रधुजी थांकै सरणै आया	"	"		१७
१८. पार उतारो जिनजी	"	"		१७
१९. थांकी सांवरी मूरति छवि प्यारी	"	"		१८
२०. तुम जाय मनावो	"	"	अपूर्णा	१८
२१. जिन चरणों चितलाओ	"	"		१९
२२. म्हारो मन लाग्योजी	"	"		१९
२३. चञ्चल जीव जरे	नेमीचन्द	"		२०
२४. मो मनरा प्यारा	मुखदेव	"		२१
२५. आठ भवारो बाहलो	खेमचन्द	"		२२
२६. समदविजयजोरो जादुराय	"	"		२३
२७. नाभिजी के नन्दन	मनसाराम	"		२३
२८. त्रिभुवन गुरु स्वामी	भूधरदास	"		२४
२९. नाभिराय मोरां देवी	विजयकीर्ति	"		२६
३०. वारि २ हो वोमांजी	जीवणराम	"		२६
३१. श्री ऋषभेश्वर प्रणमूँ पाय	सदासागर	"		२७
३२. परम महा उत्कृष्ट आदि सुंर	अजैराम	"		२७
३३. वै गुरु मेरे उर वसो	भूधरदास	"		२९
३४. करो निज सुखदाई जिनधर्म	त्रिलोककीर्ति	"		३०

३५. श्रीजिनराय की प्रतिमा बंदी जाय	त्रिलोककौत्ति	हिन्दी	३१
३६. होजी थांकी सांवली सूरत	पं० फतेहचन्द	"	३२
३७. कबही मिलसी हो मुनिवर	×	"	३३
३८. नेमीमुर गुरु सरस्वती	सूरजमल	" २० काल सं० १७८४	३३
३९. श्री जिन तुमसै वीनऊं	अजयराज	"	३५
४०. समदविजयजीरो नंदको	मुनि हीराचन्द	"	३५
४१. शंभुजारो वासी प्यारो	नथदामल	"	३६
४२. मन्दिर आखालां	×	"	३६
४३. ध्यान धरयाजी मुनिवर	जिनदास	"	३७
४४. ज्यारे सोभें राजि	निर्मल	"	३८
४५. केसर हे केसर भीनो म्हारा राज	×	"	३९
४६. समकित धारी सहलड़ीजी	पुरुषोत्तम	"	४०
४७. अदगति मुक्ति नहीं छै रे	रामचन्द्र	"	४१
४८. वधावा	"	"	४२
४९. श्रीमंदरजी मुणज्यो मोरी वीनती	गुणचन्द्र	"	४३
५०. करकसारी वीनती	भगोसाह	"	४४-४५
सूआ नगर में सं० १८२६ में रचना हुई थी ।			
५१. उपदेशबाबनी	×	हिन्दी	४५-६१
५२. जैनबद्री देशकी पत्री	मजलमराय	" सं० १८२१	६२-६६
५३. ८५ प्रकार के मूखों के भेद	×	"	६७-६९
५४. रागमाला	×	" ३६ रागनियों के नाम हैं	७०
५५. प्रात भयो मुमरदेव	जगतरामगोदीका	" राग भैरव	७०
५६. चलि २ हो मवि दर्शन काजै	"	"	७१
५७. देवो जिनराज देव मेव	"	"	७२
५८. महाबीर जिन मुक्ति पधारे	"	"	७२
५९. हमरतो प्रभु मुरति	"	"	७३

६०. श्रीरिष मजी को ध्यान धरो	जगतराम गोदीका	हिन्दी	७३
६१. प्रात प्रथम ही जपो	”	”	७४
६२. जागे श्री नेमिकुमार	”	”	राग रामकली ७४
६३. प्रभु के दर्शन को मैं आयो	”	”	७५
६४. गुरुही भ्रम रोग मिटावे	”	”	७५
६५. भून कंदरी नेमि पड़ावै	”	”	७५
६६. निदा तू जागत क्यों नहिरे	”	”	७६
६७. उतो मेरे प्राणको पियारो	”	”	७६
६८. राखोजी जिनराज सरन	”	”	७६
६९. जिनजी से मेरी लगन लगी	”	”	७६
७०. मुनि ही अरज तेरे पांय परौ	”	”	७७
७१. मेरी कौन गति होसी	”	”	७७
७२. देखोरी नेम कैसी रिद्धि पाई	”	”	७८
७३. आजि बधाई राजा नाभि के	”	”	७८
७४. बीतराग नाम सुमरि	मुनि विजयकीर्त्ति	”	७९
७५. या चेतन सब बुद्धि गई	बनारसीदास	”	७९
७६. इस नगरी में किस बिध रहना	बनारसीदास	”	७९
७७. मैं पाये तुम त्रिभुवन राय	हरीसिंह	”	८०
७८. ऋषभअजित संभव हरणा	भ० विजयकीर्त्ति	”	८०
७९. उठो तेरो मुख देखूँ	ब्रह्मटोडर	”	८०
८०. देखोरी आदीश्वरस्वामी कैसा ध्यान लगाया है	खुशालचंद	..	८१
८१. जै जै जै जै जिनराज	लालचन्द	”	८१
८२. प्रभुजी तिहारो कृपा	हरीसिंह	”	८१
८३. धमकि २ धुम तांगड दि दा ना	रामभगत	”	८२
८४. त्रिषय त्याग शुभ कारज लागो	नवल	”	८२
८५. छवि जिन देखी देवकी	फतेहचन्द	”	८२

८६. देखि प्रभु दरस कौण	फतेहचन्द	हिन्दी	८३
८७. प्रभु नेमका भजन करि	बलतराम	"	८३
८८. आजि उदै बर संपदा	खेमचन्द	"	८४
८९. भज श्री ऋषभ जिनंद	शोभाचन्द	"	८४
९०. मेरे तो योही चाव है	×	"	८४
९१. मुनिसुवत जिनराज को	भानुकीर्ति	"	८४
९२. मारे प्रभु सूं प्रीति लगी	दीपचन्द	"	८४
९३. शीतल गंगादिक जल	बिजयकीर्ति	"	८५
९४. तुम आतम गुण जानि	बनारसीदास	"	८५
९५. सब स्वार्थ के मीत है	×	"	८५
९६. तुम जिन अटके रे मन	श्रीभूषण	"	८५
९७. कहा रे अज्ञानी जीवकू'	×	"	८६
९८. जिन नाम सुमर मन बावरे	बानतराय	"	८६
९९. सहस राम रस पीजये	रामदास	"	८६
१००. सुनि मेरी मनसा मालणों	×	"	८६
१०१. बां साधु संसार में	×	"	८७
१०२. जिनमुद्रा जिन सारसी	×	"	८७
१०३. इणविधि देव अदेव की मुद्रा लखि लीजे	×	"	८७
१०४. विद्यमान जिनसारसी प्रतिमा जिनवरकी	लालचंद	"	८८
१०५. काया बाडी काठकी सीबत सूके आप मुनिपद्यतिलक		"	८८
१०६. ऐमे क्यों प्रभु पाइये	×	"	८९
१०७. ऐमे यों प्रभु पाइये	×	"	८९
१०८. ऐमे यों प्रभु पाइये सुनि पंडित प्राणी	×	"	९०
१०९. मेटी बिथा हमारी	नयनमुख	"	९०
११०. प्रभुजी जो तुम तारक नाम धरायो	हरसचन्द	"	९०
१११. रे मन विषयां भूलियो	भानुकीर्ति	"	९१

११२. सुमरन ही में त्यारै	द्यानतराय	हिन्दी	६१
११३. अब लै जैनधर्म को सरणों	×	"	६१
११४. बैठे वज्रदन्त भूपाल	द्यानतराय	"	६१
११५. इह सुंदर मूरत पार्श्व की	×	"	६२
११६. उठि संवारै कीजिये दरसण	×	"	६२
११७. कौन कुवाण परी रे मना तेरी	×	"	६२
११८. राम भरथ सौं कहे सुभाय	द्यानतराय	"	६३
११९. कहे भरतजी सुणि हो राम	"	"	६३
१२०. मूरति कैसे राजें	जगताराम	"	६३
१२१. देखो सखि कौन है नेम कुमार	विजयकीर्ति	"	६३
१२२. जिनबरजीसूं प्रीति करी री	"	"	६४
१२३. भोर ही आये प्रभु दर्शन को	हरसूचन्द	"	६४
१२४. जिनेसुरदेव आये करण तुम सेव	जगतराम	"	६४
१२५. ज्यों बने त्यों तारि मोकू'	गुलाबकृष्ण	"	६४
१२६. हमारो बारि श्री नेमिकुमार	×	"	६४
१२७. आछे रङ्ग राचे भली भई	×	"	६५
१२८. एरी चलो प्रभुको दर्श करां	जगतराम	"	६५
१२९. नैना मेरे दर्शन है लुभाय	×	"	६५
१३०. लागी साझी प्रीति तू साझे	×	"	६५
१३१. तैं तो मेरी सुधि हूं न लई	×	"	६५
१३२. मानों में तो शिव सिधि लाई	×	"	६६
१३३. जानीये तो जानी तेरे मनकी कहानी	विजयकीर्ति	"	६६
१३४. नयन लगे मेरे नयन लगे	×	"	६६
१३५. मुकुरै महारि करो महाराज	विजयकीर्ति	"	६६
१३६. चेतन चेत निज घट मांहि	"	"	६७
१३७. पिव बिन पल छिन वरस विहात	"	"	६७

१३८. अजित जिन सरण तुम्हारी	मानुकीति	हिन्दी	६७
१३९. तेरी मूरति रूप बनी	रूपचन्द	"	६७
१४०. अधिर नरभव जागिरे	विजयकीति	"	६८
१४१. हम हैं श्रीमहावीर	"	"	६८
१४२. भलैभल आसकली मुझ माज	"	"	६८
१४३. कहां लो दास तेरी पूज करे	"	"	६८
१४४. आज ऋषभ घरि जावे	"	"	६९
१४५. प्रात भयो बलि जाऊं	"	"	६९
१४६. जागो जागोजी जागो	"	"	६९
१४७. प्रात समै उठि जिन नाम लीजै	हर्षचन्द	"	६९
१४८. ऐसे जिनवर मे मेरे मन विललायो	अनन्तकीति	"	१००
१४९. आयो सरण तुम्हारी	×	"	"
१५०. सरण तिहारी आयो प्रभु मैं	अखपराम	"	"
१५१. बीस तीर्थङ्कर प्रात संभारो	विजयकीति	"	१०१
१५२. कहिये दीनदयाल प्रभु तुम	द्यानतराय	"	"
१५३. म्हारे प्रकटे देव निरञ्जन	वनारसीदास	"	"
१५४. हूं सरणगत तोरी रे	×	"	"
१५५. प्रभु मेरे देखत आनन्द भये	जगतराम	"	१०२
१५६. जीवडा तू जागिने प्यारा समकित महलमें	हरीसिंह	"	"
१५७. घोर घटाकरि आयोरी जलधर	जयकीति	"	"
१५८. कौन दिशासूं आयो रे वनचर	×	"	"
१५९. सुमति जिनंद गुणमाला	गुणचन्द	"	१०३
१६०. जिन बादल चढ़ि आयो हो जगमें	"	"	"
१६१. प्रभु हम चरणन सरन करी	ऋषभहरी	"	"
१६२. दिन २ देही हांत पुरानी	जनमल	"	"
१६३. सुगुरु मेरे बरमत जान भरी	हरखचन्द	"	१०४

१६४. क्या सोचत अति भारी रे मन	द्यानतराय	हिन्दी	१०४
१६५. समकित उत्तम भाई जगतमें	"	"	"
१६६. रे मेरे घटज्ञान घनागम छायो	"	"	१०५
१६७. ज्ञान सरोवर सोइ हो भविजन	"	"	"
१६८. हो परमगुरु बरसत ज्ञानभरी	"	"	"
१६९. उत <i>Fit</i> री जिन दर्शन को नेम	देवसेन	"	"
१७०. मेरे अन्न गुरु है प्रभु ते बकसो	हर्षकीर्ति	"	१०६
१७१. बलिहारी खुदा के बन्दे	जानि मोहमद	"	"
१७२. मैं तो तेरी आज महिमा जानी	भूधरदास	"	"
१७३. देखोरी आज नेमीसुर मुनि	×	"	"
१७४. कहारी कहूं कछु कहत न आवै	द्यानतराय	"	१०७
१७५. रे मन करि सदा संतोष	बनारसीदास	"	"
१७६. मेरी र करतां जनम गयो रे	रूपचन्द	"	"
१७७. देह बुढानी रे मै जानी	विजयकीर्ति	"	"
१७८. साधो लं ज्यो नुमति अकेली	बनारसीदास	"	१०८
१७९. तनिक जिया जाग	विजयकीर्ति	"	"
१८०. तन धन जोबन मान जगत में	×	"	"
१८१. देख्यो बन में ठाडो वीर	भूधरदास	"	१०९
१८२. चेतन नेकु न तोहि संभार	बनारसीदास	"	"
१८३. लागि रह्योरे अरे	बखतराम	"	"
१८४. लागि रह्यो जीव परभाव में	×	"	"
१८५. हम लागे आतमराम सो	द्यानतराय	"	११०
१८६. निरन्तर ध्याऊं नेमि जिनंद	विजयकीर्ति	"	"
१८७. कित गयोरे पंथी बोल तो	भूधरदास	"	"
१८८. हम बैठे अानी मौन से	बनारसीदास	"	"
१८९. दुविधा कब जैहैगी	×	"	१११

१६०. जगत में सो देवन का देव	बनारसदास	हिन्दी	१११
१६१. मन लागों श्री नवकारसूँ	गुणचन्द्र	"	"
१६२. चेतन अब खोजिये	"	"	राम सारङ्ग ११२
१६३. आये जिनवर मनके भावतें	राजसिंह	"	"
१६४. करो नाभि कंवरजी को आरती	लालचन्द	"	"
१६५. रो भ्रांको वेद रटत ब्रह्मा रटत	नन्ददास	"	११३
१६६. तैं नरभव पाय कहा कियो	रूपचन्द	"	"
१६७. अखियां जिन दर्शन की प्यासी	×	"	"
१६८. बलि जइये नेमि जिनंदकी	भाऊ	"	"
१६९. सब स्वारथ के विरोग लोग	विजयकीर्ति	"	११४
२००. मुक्तागिरी वंदन जइये री	देवेन्द्रभूषण	"	"

सं० १८२१ में विजयकीर्ति ने मुक्तागिरी की वंदना की थी ।

२०१. उमाहो लाग रह्यो दरशन की	जगतराम	हिन्दी	११४
२०२. नाभि के नंद चरण रज बंदी	बिसनदास	"	"
२०३. लाग्यो आतमराम सों नेह	ज्ञानतराम	"	"
२०४. धनि मेरी आजकी घरी	×	"	११५
२०५. मेरो मन बस कीनो जिनराज	चन्द	"	"
२०६. धनि वो पीव धनि वा प्यारी	ब्रह्मदयाल	"	"
२०७. आत्र में नीक दर्शन पायो	कर्मचन्द	"	"
२०८. देखो भाई माया लागत प्यारी	×	"	११६
२०९. कलिजुग में ऐमे ही दिन जाये	हर्षकीर्ति	"	"
२१०. श्रीनेमि चले राजुल तजिके	×	"	"
२११. नेमि कंवर वर वीद बिराजे	×	"	११७
२१२. तेइ बड़भागी तेइ बड़भागी	सुंदरभूषण	"	"
२१३. अरे मन के के बर समझायो	×	"	"
२१४. कब मिलिहो नेम प्यारे	विहारीदाम	"	"

२१५. नेमिजिनंद वर्नन को	सकलकीर्ति	हिन्दौ	११८
२१६. अब छाड्यो दाव बन्यो है भजले श्रीभगवान	×	"	"
२१७. रे मन जायगो कित ठौर	×	"	"
२१८. निश्चय होणहार सो होय	×	"	"
२१९. समझ तर जीवन थोरो	रूपचन्द	"	"
२२०. लग गई लगन हमारी	जगतराम	"	११९
२२१. अरे तो को कैसे २ कह समझावें	चैन विजय	"	"
२२२. माधुरी जैनवाणी	जगतराम	"	"
२२३. हम आये हैं जिनरज तोरे बन्दन को	द्यानतराय	"	"
२२४. मन अटवयो रं अटवयो	धर्मपाल	"	"
२२५. जैन धर्म नहीं कोना वरन देही पापी	ब्रह्मजिनदास	"	१२०
२२६. इन नैनों दा यही सुभाव	"	"	"
२२७. नैना सफल भयो जिन दरसन पायो	रामदास	"	"
२२८. सब परि करम है परधान	रूपचन्द	"	"
२२९. सब परि बल चेत ज्ञान	हर्षकीर्ति	"	"
२३०. रे मन जायगो कित ठौर	जगतराम	"	१२१
२३१. सुनि मन नेमजी के वैन	द्यानतराय	"	"
२३२. तनक ताहि है री ताहि आपनो दरस	जगतराम	"	"
२३३. चलत प्राण क्यों रोयेरी काय	×	"	"
२३४. बाजत रंग मृदग रमाला	जयकीर्ति	"	"
२३५. अब तुम जागो चेतनराया	गुणचन्द	"	१२२
२३६. कैसा ध्यान घरया है	जगतराम	"	"
२३७. करि रे अ तम हित करि लें	द्यानतराय	"	"
२३८. साहिब खेलत है चौगान	नरपाल	"	"
२३९. देव मोरा हो ऋषभजी	समयमुन्दर	"	१२३
२४०. बंदी चेरी हो पिया मैं	द्यानतराय	"	"

२४१. मैं बंदा तेरा हो स्वामी	द्यानतराय	हिन्दी	१२३
२४२. जै जै हो स्वामी जिनराय	रूपचन्द्र	"	"
२४३. तुम जान विभो फूली बसंत	द्यानतराय	"	१२४
२४४. नैननि ऐसी बानि परि गई	जगतराम	"	"
२४५. लागि लौ नाभिर्नंदन स्वी	भूधरदास	"	"
२४६. हम घातम को पहिचाना है	द्यानतराय	"	"
२४७. कौन सयानरन कीन्हारे जीव	जगतराम	"	"
२४८. निपट ही कठिन हेरी	विजयकीर्ति	"	"
२४९. हों जी प्रभु दीनदयाल मैं बंदा तेरा	अक्षयराम	"	१२५
२५०. जिनवाणी दरयाव मन मेरा	गुणचन्द्र	"	"
२५१. मनहु महागज राज प्रभु	"	"	"
२५२. इन्द्रिय ऊपर अमवार चेतन	"	"	"
२५३. आरमी देखत मोहि आरमी लागी	ममयमुन्दर	"	१२६
२५४. कांके गढ फीज चढी है	×	"	"
२५५. दरवाजे बंदा खोलि खोलि	अमृतचन्द्र	"	"
२५६. चेति रे हित चेति चेति	द्यानतराय	"	"
२५७. चितामणि स्वामी सोचा माहव मेरा	बनारसीदास	"	"
२५८. मुनि माया ठगिनी तैं सब ठिगी खाया	भूधरदास	"	१२७
२५९. चलि परमैं श्री शिखरममेद गिरिरी	×	"	"
२६०. जिन गुण गानो रो	×	"	"
२६१. वीतराग तेरी मोहिनी मूरत	विजयकीर्ति	"	"
२६२. प्रभु मुमरन की या विरियां	"	"	१२८
२६३. किये आराधना तेरी	नवल	"	"
२६४. घड़ो धन आजकी ये ही	नवल	"	"
२६५. मेथ्या अपराध क्या किया	विजयकीर्ति	"	१२९
२६६. तजिके गये दीव हमको तकमीर क्या विचारी, नवल	"	"	"

२६७. मैया री गिरि जानेदे मोहि नेमजीसूँ काम है, श्रीराम	”	१२६
२६८. नेम व्याहनकूँ आया नेम सेहरा बंधाया	विनोदीलाल	१३०
२६९. धन्य तुम धन्य तुम रतित पावन	×	१३१
२७०. चेतन नाड़ी भूलिये	नवल	”
२७१. त्यारौ श्री महावीर मोकूँ दीन जानिके	सवाईराम	”
२७२. मेरो मन बस कोन्हों महावीर (चांदनपुरके)	हर्षकीर्ति	”
२७३. राघो सीता चलहु गेह	द्यानतराय	”
२७४. कहे सीताजी सुनि रामचन्द्र	”	१३२
२७५. नहि छांडा हो जिनराज नाम	हर्षकीर्ति	”
२७६. देवगुरु पहिचान बंदे	×	”
२७७. नेमि जिनंद गिरनेरयां	जीवराम	१३३
२७८. क्य परदेसी को पतिघारो	हर्षकीर्ति	हिन्दी १३३
२७९. चेतन मान लै साढी तियां	द्यानतराय	”
२८०. सांवरी मूरत मेरे मन वसी है माई	नवल	”
२८१. आयो रे बुढापं बैरी	भूधरदास	”
२८२. साहिबां यो जीवनड़ो म्हारो	जिनहर्ष	१३४
२८३. पच महाव्रतधारा	विज्ञानसिंह	”
२८४. तेरी बलिहारी हा जिनराज	×	”
२८५. देख्या दुनिया बिच बे कोई अजब तमाशा,	भूधरदास	१३५
२८६. अटकै नैना नही वहैदा	नवल	”
२८७. चलो जिनवदिये एरी सखी	द्यानतराय	”
२८८. जगतनन्दन जग नायक जादौ-पति	×	”
२८९. आछिन गदिय मानु नेमजी प्यारी अखियां	राजाराम	१३६
२९०. हांजी इक ध्यान संतजी का धरना	हेमराज	”
२९१. भला हो मांडे सांड हो	×	”
२९२. तू ब्रह्म भूलो, तू ब्रह्म भूलो अज्ञानी रे प्राणी	जनारसीदास	”

२६३. होजी हों मुधातम एह निज पद भूलि रह्या	×	हिन्दी		१३६
२६४. मुनि कनक कीर्ति की जकड़ी	मोतीराम	"		१३७
रचना काल सं० १८५३ लेखन काल संवत् १८५६ नागौर में पं० रामचन्द्र ने लिपि की ।				
२६५. छीक विचार	×	हिन्दी	ले० काल १८५७	१३७
२६६. मांवरिया अरज सुनो मुझ दीन की हो	पं० खेमचंद	हिन्दी		१३८
२६७. चांदखेडी में प्रभुजी राजिया	"	"		"
२६८. ज्यों जानत प्रभु जोग धरयो है	चन्द्रभान	"		"
२६९. आदिनाथ की विनती	मुनि कनक कीर्ति	"	र० काल १८५६	१३९-४०
३००. पार्श्वनाथ की आरती	"	"		१४०
३०१. नगरों की बसावत का संवत्वार विवरण	"	"		१४१

संवत् ११११ नागौर मंडारणो आखा तीज रै दिन ।

" ६०९ दिली बसाई अनंगपाल तुंबर वैसाख सुदी १२ भौम ।

" १६१२ अरुवर पातशाह आगरो बसायो ।

" ७३१ राजा भोज उंजणो बसाई ।

" १४७७ अहमदाबाद अहमद पातसाह बसाई ।

" १५१५ राजा जीधे जोधपुर बसायो जेठ सुदी ११ ।

" १५४५ बीकानेर राव बीकै बसाई ।

" १५०० उदयपुर राणो उदयसिंह बसाई ।

" १४४५ राव हमीर न रावत फलोधी बसाई ।

" १०७७ राजा भोज रै बेटे वीर नारायण सेवाणो बसायो ।

" १५६६ रावल वीदे महेवो बसायो ।

" १२१२ भाटी जेसे जैसलमेर बसायो सां (वन) बुदी १२ रवौ ।

" ११०० पत्रार नाहरराव मंडोवर बसायो ।

" १६११ राव मालदे माल कोट करायो ।

" १५१८ राव जोधावत मेड़तो बसायो ।

" १७८३ राजा जैसिंह जैपुर बसायो कछात्रे ।

- संवत् १३०० जालौर सोनडारै बसाई ।
- ” १७१४ औरंगसाह पातसाह औरंगाबाद बसायो ।
- ” १३३७ पातसाह अलावद्दीन लोदी वीरमदे काम आयो ।
- ” ६०२ अणहल गुवाल पाटण बसाई वैसाख सुदी ३ ।
- ” २०२ (१२०२) ? राव अजेपाल पवार अजमेर बसाई ।
- ” ११४८ सिधरावे जैसिंह देही पाटणा मै ।
- ” १४५२ देवडो सिरोही बसाई ।
- ” १६१६ पातसाह अकबर मुलतान लीयो ।
- ” १५६६ रावजी तैतवो नगर बसायो ।
- ” ११८१ फलोधी पारसनाथजी ।
- ” १६२६ पातसाह अकबर अहमदाबाद लोधी ।
- ” १५६६ राव मालदे बीकानेर लोधी मास २ रही राव जैतसी ग्राम आयो ।
- ” १६६६ राव किसनसिंह किशनगढ़ बसायो ।
- ” १६१६ मालपुरो बसायो ।
- ” १४५५ रैणपुरो देहूरो थांपना ।
- ” ६०२ चीतोड चित्रंगद मोड़ीयै बसाई ।
- ” १२४५ विमल मंत्रीस्वर हूवो विमल बसाई ।
- ” १६०६ पातसिंह अकबर चीतोड लोधी जे० सुदी १२ ।
- ” १६३६ पातसाह अकबर राजा उर्दिसिंहजी नुं महाराजा रो खिताब दीयो ।
- ” १६३४ पातसाह अकबर कछोविदा लीधो ।

३०२. श्वेताम्बर मत के चौरासी बोल		हिन्दी	१४३-४६
३०३. जैन मत का संकल्प	×	संस्कृत	अपूर्णा
३०४. शहर मारोठ की पत्री	×	हिन्दी पद्य	१५१

सं० १८५८ असाढ वदी १४

सर्वज्ञजिनं प्रणमामि हितं, सुभयान पलाडा थी लिखितं ।

सुमुनी महीचन्दजि को विदयं, नवनंद हुकम लुणां सदयं ॥१॥

किरण फुल्लि मोहन जीवणयं, अपरंपुर मारोठ थानकयं ।
 सरवोपम लायक थान छजै, गुरु देख सु आगम भक्ति यजै ॥२॥
 तोर्यङ्कर ईस भक्ति धरै, जिन पूज पुरंदर जेम करै ।
 चतुसंध मुभार घुरंधरयं, जिन चैति चैत्यालय कारकयं ॥३॥
 व्रत द्वादस पालस सुद्ध खरा, सतरै पुनि नेम धरै सुयरा ।
 बहु दान चतुर्विध देय सदा, गुरु शास्त्र सुदेव पुजै सुखदा ॥४॥
 धर्म प्रश्न जु धेरिक भूप जिसा, सद्यश्रेयांस दानपति जु तिसा ।
 निज वंस जु व्योम दिवाकरयं, गुण सौख्य कलानिधि बोधमयं ॥५॥
 सु इत्यादिक वीर्यम योगि बहु, लिखियो जु कहां लग वीर्य सहं ।
 दयुडा गोठि जु श्रावग पंच लसै, शुद्धि वृद्धि समृद्धि आनन्द वसै ॥६॥
 तिह योगि लिखै धर्म वृद्धि सदा, लहियो सुख संपति भोग मुदा ।
 ॥७॥
 इह थानक आनन्द देव जपै, उत चाहत खेम जिनेन्द्र कृपै ।
 अपरंच जु कागद आइ इतै, समाचार वाच्या परसनं तितै ॥८॥
 सह वात जु लाय धर्मकरं, धर्म देव गुरु पसि भक्ति भरं ।
 मर्याद सुधारक लायक हो, कल्पद्रुम काम मुदायक हो ॥९॥
 यशवंत विनैवंत दानृ गहो, गुणशील दयाधर्म पालक हो ।
 इत है व्यवहार सदा तुम को, उपरांति तुमै नहि औरन को ॥१०॥
 लिखियो लघु को विधमान यहू, सुख पत्र जु वाहुडतां लिखि हू ।
 वसूँ वाणवसूँ पुनि चन्द्र कियं, वदि मास असाठ चतुर्दशियं ॥११॥
 इह त्रोटक छंद मुचाल मही, लिखवी पतरो हित रीति वही ।
 ॥१२॥
 तुम भेजि हूं येक संकर नै, समाचार कहा मुख तै मुडनै ।
 इनके समाचार इतै मुख तै, करज्यो परवांन सबै मुखतै ॥१३॥
 ॥ इति पत्रिक सहर म्हारोठ को पंचायती नुं ॥

५४०३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० १८२ । आ० ८×५३ इंच । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—विभिन्न रचनाओं में से विविध पाठों का संग्रह है ।

५४०४. गुटका सं० २४ । पत्र सं० ८१ । आ० ७×६ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा ।
पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. चतुर्विंशति तीर्थङ्कराष्टक	चन्द्रकीर्ति	संस्कृत	१-६५
२. जिनचैत्यालय जयमाल	रत्नभूषण	हिन्दी	६६-६६
३. समस्त व्रत की जयमाल	चन्द्रकीर्ति	"	७०-७३
४. आदिनाथाष्टक	×	"	७३-७५
५. मणिरत्नाकर जयमाल	×	"	७५-७७
६. आदीश्वर आरती	×	"	८१

५४०५. गुटका सं० २५ । पत्र सं० १५७ । आ० ६×५ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०
१७५५ आसोज सुदी १३ ।

१. दशलक्षणपूजा	×	संस्कृत	१-५
२. लघुस्वर्यंभू स्तोत्र	×	"	१६-१८
३. शास्त्रपूजा	×	"	१९-२४
४. षोडशकारणपूजा	×	"	२४-२७
५. जिनसहस्रनाम (लघु)	×	"	२७-३२
६. सोलकारणरास	मुनि सकलकीर्ति	हिन्दी	३३-३८
७. देवपूजा	×	संस्कृत	५०-६६
८. सिद्धपूजा	×	"	६७-७३
९. पञ्चमेरुपूजा	×	"	७४-७५
१०. अष्टगंल्लकाभक्ति	×	"	७६-८६
११. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	"	९०-१०५
१२. रत्नत्रयपूजा	पंडिताचार्य नरेन्द्रसेन	"	११६-१३७
१३. क्षमावणीपूजा	ब्रह्मसेन	"	१३८-१४५
१४. सोलहतिथिवर्णन	×	हिन्दी	१४६

१५. बीसविद्यमान नीर्थङ्करपूजा	×	संस्कृत	१५१-५४
१६. शास्त्रजयमाला	×	प्राकृत	१५५-५९

५१०६. गुटका सं० २६ । पत्र सं० १४३ । आ० ५×४ इञ्च । ले० काल सं० १६८८ ज्येष्ठ बुदी २ ।

पूर्णा । दशा-जीर्ण ।

१. विषाणहारस्तोत्र	धनञ्जय	संस्कृत	१-५
२. भूगालस्तोत्र	भूगाल	"	५-६
३. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	६-१३
४. सामयिक पाठ	×	"	१३-३२
५. भक्तिगाथ (सिद्ध भक्ति आदि)	×	"	३३-७०
६. स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्राचार्य	"	७१-८७
७. वन्देत्तान की जयमाला	×	"	८८-८९
८. तत्त्वार्थमूत्र	उमास्वामि	"	८९-१०७
९. श्रावणप्रतिक्रमण	×	"	१०८-२३
१०. गुर्वावलि	×	"	१२४-३३
११. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्राचार्य	"	१३४-१३६
१२. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१३६-१४३

सवन् १६८८ वर्षे ज्येष्ठ बुदी द्वितीया रवौदिने अद्य ह श्री वनीषेन्द्रगे श्रीचन्द्रप्रभचैत्यालये श्रीमूलसंवे सरस्वतीगच्छे ब्रह्माकारगणे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारक श्रीविद्यानन्दि पट्टे भ० श्रीमल्लिभूषणपट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचन्द्रपट्टे भ० श्रीअभयचन्द्रपट्टे भ० श्रीअभयनन्दपट्टे भ० श्रीरत्नकीर्ति तत्पट्टे भ० श्रीकुमुदचन्द्रास्तपट्टे भ० श्रीअभयचन्द्र ब्रह्म श्री अभयसागर महायेनेदं क्रियाकलापपुस्तकं लिखितं श्रीमद्धनीषेन्द्रगच्छः हुंबड़जातीयः लघुशाखायां समुत्पन्नस्य परिलख- रविदासस्य भार्या बाई कीकी तयोः संभवा मुता अताइनाम्ने प्रदत्तं पठनार्थं च ।

५१०७. गुटका सं० २७ । पत्र सं० १५७ । आ० ६×५ इञ्च । ले० काल सं० १८८७ । पूर्णा । दशा- सामान्य ।

विशेष—पं० नेजपाल ने प्रतिलिखि की थी ।

१. शास्त्र पूजा	×	संस्कृत	१-२
२. स्फुट हिन्दी पद्य	×	हिन्दी	३-७

३. मंगल पाठ	×	संस्कृत	८-९
४. नामावली	×	"	९-११
५. तीन चौबीसी नाम	×	हिन्दी	१२-१३
६. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	१३-१४
७. भैरवनामस्तोत्र	×	"	१४-१५
८. पञ्चमेरूपूजा	भूधरदास	हिन्दी	१५-२०
९. अष्टाङ्गिकापूजा	×	संस्कृत	२१-२५
१०. षोडशकारणपूजा	×	"	२५-२७
११. दशलक्षणपूजा	×	"	२७-२९
१२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा	×	"	२९-३०
१३. अनन्तव्रतपूजा	×	हिन्दी	३१-३३
१४. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	३४-४६
१५. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	४७-५३
१६. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	५२-५५
१७. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	५६-६०
१८. पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	६१-७१
१९. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	७२-८७
२०. सम्मेद शिखर निर्वाण काण्ड	×	हिन्दी	८८-९१
२१. ऋषिमण्डलस्तोत्र	×	संस्कृत	९२-९७
२२. तत्त्वार्थसूत्र (१-५ अध्याय)	उमास्वामि	"	९९-१००
२३. भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	हिन्दी	१००-१६
२४. कल्याणमन्दिरस्तोत्र भाषा	बनारसीदास	"	१०७-१११
२५. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	११२-१३
२६. स्वरोदयविचार	×	"	११४-११७
२७. बाईसपरिषह	×	"	१२०-१२५
२८. सामायिकपाठ लघु	×	"	१२५-२६

२९. श्रावक की करणी	हर्षकीर्ति	हिन्दी	१२६-२८
३०. क्षेत्रपालपूजा	×	”	१२८-३२
३१. चितामणीपार्वनाथपूजा स्तोत्र	×	संस्कृत	१३२-३६
३२. कलिकुण्डपार्वनाथ पूजा	×	हिन्दी	१३६-३९
३३. पद्मावतीपूजा	×	संस्कृत	१४०-४२
३४. सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	”	१४३-४६
३५. ज्योतिष चर्चा	×	”	१४७-१५७

५४०८. गुटका सं० २८ । पत्र सं० २० । आ० ८३×७ इञ्च । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—प्रातिष्ठा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है ।

५४०९ गुटका सं० २९ । पत्र सं० २१ । आ० ६३×४ इञ्च । ले० काल सं० १८४६ मंगसिर मुदी १० । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—सामान्य शुद्ध । इसमें संस्कृत का सामायिक पाठ है ।

५४१०. गुटका सं० ३० । पत्र सं० ८ । आ० ७×४ इञ्च । पूर्ण ।

विशेष—इसमें भक्तामर स्तोत्र है ।

५४११. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० १३ । आ० ६३×४ इंच । भाषा-हिन्दी, संस्कृत ।

विशेष—इसमें नित्य नियम पूजा है ।

५४१२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० १०२ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८९६ फागुण बुदी ३ । पूर्ण एवं शुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—इसमें पं० जयचन्दजी कृत सामायिक पाठ (भाषा) है । तनमुख सोनी ने अलवर में साहू दुलीचन्द की कचहरी में प्रतिलिपि की थी । अन्तिम तीन पत्रों में लघु सामायिक पाठ भी है ।

५४१३. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० २४० । आ० ५×६ इञ्च । विषय-भजन संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—जैन कवियों के भजनों का संग्रह है ।

५४१४. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ४१ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १९०८ पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा-सामान्य ।

ग्रादिभाग- दोहा—

सकल जगत सुर असुर नर, परसत गणपति पाय ।
 सो गणपति बुधि दीजिये, जन अपनों चितलाय ॥
 अरु परसों चरनन कमल, युगल राधिका स्याम ।
 धरत ध्यान जिन चरन को, सुर न (र) मुनि आठों जाम ॥
 हरि राधा राधा हरि, जुगल एकता प्राण ।
 जगत आरसी में नमों, दूजो प्रतिबिम्ब जान ॥
 सोभति ओढे मत्त पर, एकहि जुगल किसोर ।
 मनो लस घन मांझ ससि, दामिनी चारुं ओर ॥
 परसे अति जय चित्त कै, चरन राधिका स्याम ।
 नमस्कार कर जोरि कै, भाषत किरपाराम ॥
 साहिजहापुर सहर में, कायथ राजाराम ।
 तुलाराम तिहि बंस में, ता सुत किरपाराम ॥६॥
 लघु जातक को ग्रन्थ यह, सुनो पंडितन पास ।
 ताके सबै श्लोक कैं, दोहा करे प्रकास ॥७॥
 ओ ग्रवहु जे सुनौ, लयो जु अरथ निकारि ।
 ताको बहुविधि हेत सीं, कह्यो ग्रन्थ विस्तार ॥८॥
 संवत् सत्तरह सैं वरस, और बाणवै जानि ।
 कार्तिक सुदी दशमी गुरु, रच्यौ ग्रन्थ पहचानि ॥९॥
 सब ज्योतिष को सार यह, लियो जु अरथ निकारि ।
 नाम धरचो या ग्रन्थ को, तातें ज्योतिष सार ॥१०॥
 ज्योतिष सार जु ग्रन्थ कौं, कल्प ब्रह्म मनु लेखि ।
 ताको नव साखा लसत, जुदो जुदो फल देखि ॥११॥

मन्त्रिम—

अथ वरम फल लिखने—

संवत् महै हीन करि, जनम वर (ष) ली मित ।
 रहै सेप सो गत वरष, आवरदा मै वित्त ॥६०॥
 भये वरष गत अङ्क अरु, लिख घर वाहू ईस ।
 प्रथम येक मन्दर है, ईह वही इकतीस ॥६१॥
 अरतीस पहलै धूरवा, अंक को दिन अपनै मन जानि ।
 दूजै घर फल तांसरो, चौथे अ अखिर ज ठान ॥६२॥
 भये वरष गत अंक को, गुन धरवावो चित्त ।
 गुणाकार के अंक मै, भाग सात हरि मित ॥६३॥
 भाग हरै नै सात कौ, लबध अंक सो जानि ।
 जो मिलै य पल मै बहुरि, फल तै घटी बखानि ॥६४॥
 घटिका मै तै दिवस मै, मिलि जे है जो अंक ।
 तामें भाग जु सप्त को, हरि बे मित न सं ॥६५॥
 भाग रहै जो सेप सो, बचै अंक पहिचानि ।
 तिन मै फल घटीका दसा, जन्म मिलावो आनि ॥६६॥
 जन्मकाल के अत रवि, गितने बीते जानि ।
 उतने वाते अंस रवि, वरस लिख्यो पहिचानि ॥६७॥
 वरस लख्यो जा अंत मै, सोइ देत चित्त धारि ।
 वादिन इतनी घड़ी जु, पल बीते लगुन वीचारि ॥६८॥
 लगन लिखै तै गोरह जो, जा घर बैठो जाइ ।
 ता घर के फल मुफल को, दीजे मित बनाइ ॥६९॥
 इति श्री किरपाराम कृत ज्योतिषसार संपूर्णम्

१. राणाकेयनी

×

हिन्दी

३१-३६

२. शुभसूहन

×

”

३६-४१

५४१५. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० १८ । आ० ६३×५३ इञ्च । भाषा-× । विषय-संग्रह । ले० काल सं० १८८६ भादवा बुदी ५ । पूर्ण । अशुद्ध । दशा-सामान्य ।

विशेष—जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी ।

१. नेमिनाथजी के दश भव	×	हिन्दी पद्य	१-५
२. निर्वाण काण्ड भाषा	भगवतीदास	”	२० काल १७४१, ५-७
३. दर्शन पाठ	×	संस्कृत	८
४. पार्वतीनाथ पूजा	×	हिन्दी	९-१०
५. दर्शन पाठ	×	”	११
६. राजुलपञ्चीसी	लालचन्द विनोदीलाल	”	१२-१८

५४१६. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० १०६ । आ० ८॥×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल १७८२ माह बुदी ८ । पूर्ण । अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष—गुटका जीर्ण है । लिपि विकृत एवं बिलकुल अशुद्ध है ।

१. ढोला मारुणी की बात	×	हिन्दी प्राचीन पद्य सं० ४१५, १-२४
२. बदरीनाथजी के छन्द	×	” २८-३० ले० काल १७८२ माह बुदी ८
३. दान लीला	×	हिन्दी ३०-३१
४. प्रह्लाद चरित्र	×	” ३१-३४
५. मोहम्मद राजा की कथा	×	” ३५-४२ ११५ पद्य । पौराणिक कथा के आधार पर ।
६. भगतवत्सावलि	×	हिन्दी ४२-४४ सं० १७८२ माह बुदी १३ ।
७. भ्रमर गीत	×	” १२१ पद्य, ४४-५३
८. धुलीला	×	” ५३-५५
९. गज मोक्ष कथा	×	” ५५-५६
१०. धुलीला	×	” पद्य सं० २४ ५६-६०

११. बारहसड़ी	×	हिन्दी	६०-६२
१२. विरहमञ्जरी	×	”	६२-६८
१३. हरि बोला चित्रावली	×	” पद्य सं० २६	६८-७०
१४. जगन्नाथ नारायण स्तवन	×	”	७०-७४
१५. रामस्तोत्र कवच	×	संस्कृत	७५-७७
१६. हरिरस	×	हिन्दी	७८-८५

विशेष—गुटका साजहानावाद जयसिंहपुरा में लिखा गया था । लेखक रामजी मीणा था ।

५४१७. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० २४० । आ० ७३×५३ इञ्च ।

१. नमस्कार मंत्र सटीक	×	हिन्दी	३
२. मानबावनी	मानकवि	”	५३ पद्य हैं ४-२८
३. चौबीस तीर्थङ्कर स्तुति	×	”	३२
४. आयुर्वेद के नुसखे	×	”	३५
५. स्तुति	कनककीर्ति	”	३७

लिपि सं० १७६६ ज्येष्ठ सुदी २ रविवार

६. नन्दीश्वरद्वीप पूजा	×	संस्कृत	४१
------------------------	---	---------	----

कुशला सौगारणी ने सं० १७७० में सा० फतेहचन्द गोदीका के ओल्ये से लिखी ।

७. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	६ अध्याय तक ६१
८. नेमोश्वररास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	२० सं० १६१५ १७२
९. जोगीरासो	जिनदास	”	लिपि सं० १७१० १७६
१०. पद	×	”	”
११. आदित्यवार कथा	भाऊ कवि	”	२०४
१२. दानशीलतपभावना	×	”	२०५-२३६
१३. चतुर्विंशति छापम	गुणकीर्ति	”	२० सं० १७७७ असाठ वदी १४

आदि भाग—

आदि अंत जिन देव, मेब मुर नर तुभ करता ।

जय जय ज्ञान पवित्र, नामु लेतहि अघ हरता ॥

सरसुति तनइ पसाइ, ज्ञान भनवाँछित पूरइ ।
 सारद लागौ पाइ, जेमि दुख दालिद्र भरइ ॥
 गुरु निरग्रन्थ प्रणाम्य कर, जिन चउवीसी मन धरउ ।
 गुनकीर्ति इम उच्चरइ, सुभ वसाइ रु देला तरउ ॥१॥
 नाभिराय कुलचन्द, नंद मरुदेवि जानउ ।
 काइ धनुष शत पञ्च, वृषभ लाछन जु बखानउ ॥
 हेम वर्ष कहि कायु, आयु लक्ष्य जु चौरासी ।
 पूरव गनती एह, जन्म अयोध्या वासी ॥
 भरथहि राजु नु सौपि कर, अस्टापद सीधउ तदा ।
 गुनकीर्ति इम उच्चरइ, सुभवित लोक वन्दहु सदा ॥१॥

अन्तिम भाग—

श्रीमूलसंघ विख्यातगच्छ सरसुतिय बखानउ ।
 तिहि महि जिन चउवीस, ऐह सिखा मन जानउ ॥
 पराय छइ प्रसादु, उत्तंग मूलचन्द्र प्रभुजानी ।
 साहिजिहां पतिसाहि, राजु दिलीपति आनी ॥
 सतरहसइव सतोत्तरा, वदि असाढ़ चउदसि करना ।
 गुनकीर्ति इम उच्चरइ, सु सकल संघ जिनवर सरना ॥

॥ इति श्री चतुर्विंशततीर्थकर छपैया सम्पूर्णा ॥

११. सीलरास गुणकीर्ति हिन्दी रचना सं० १७१३ २४०

५४१८. गुटका सं० ३८—पत्रसंख्या—२२६ । —आ० १०×७॥ दशा—जीर्ण ।

विशेष—३४ पृष्ठ तक आयुर्वेद के अच्छे नुसखे हैं ।

१. प्रभावती कल्प × हिन्दी कई रोगों का एक नुसखा है ।
 २. नाड़ी परीक्षा × संस्कृत

करीब ७२ रोगों की चिकित्सा का विस्तृत वर्णन है ।

३. शील सुदर्शन रामो × हिन्दी ३७-४२

४. पृष्ठ संख्या ५२ तक निम्न अवतारों के सामान्य रंगीन चित्र हैं जा प्रदर्शनी के योग्य हैं ।

(१) रामावतार (२) कृष्णावतार (३) परशुरामावतार (४) मच्छावतार (५) कच्छावतार
(६) बराहावतार (७) नृसिंहावतार (८) कल्किावतार (९) बुद्धावतार (१०) हयग्रीवावतार तथा
(११) पार्श्वनाथ चैत्यालय (पार्श्वनाथ की मूर्ति सहित)

५. शकुनावली × संस्कृत ५६

६. पाशाकेवली (दोग परीक्षा) × हिन्दी ६६

जन्म कुण्डली विचार

७. पृष्ठ ६८ पर भगे हुए व्यक्ति के वासिष्ठ आने का पत्र है ।

८. भक्तामरस्तोत्र मानतुंग संस्कृत ७३

९. वैद्यमनोत्सव (भाषा) नयन मुख हिन्दी ७४-८१

१०. राम विनाद (आयुर्वेद) × " ८२-८८

११. सामुद्रिक शास्त्र (भाषा) × " ८९-११२

लिपि कर्ता—मुखराम ब्राह्मण पचौली

१२. शोधप्रबोध काशीनाथ संस्कृत

१३. पूजा संग्रह × " १९४

१४. योगीरायां जिनदास हिन्दी १९७

१५. तत्वार्थमूत्र : उमा स्वामि संस्कृत २०७

१६. कल्याणमंदिर (भाषा) बनारसदास हिन्दी २१०

१७. रविवारत्रन कथा × " २२१

१८. व्रतों का न्योरा × " "

अन्त में ६८ योगिनी आदि के यंत्र हैं ।

५४१६ गुटका सं० ३६—पत्र सं० ६४ । आ० ६५३ इञ्च । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५४२० गुटका सं० ४०—पत्र सं० १०३ । आ० ८॥५६ इञ्च । भाषा—हिन्दी । ले० सं० १८८० पूर्ण । सामान्य शुद्ध ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह तथा पृष्ठ ८० से नरक स्वर्ग एवं पृथ्वी आदि का परिचय दिया हुआ है ।

५४२१ गुटका सं० ४१—पत्र संख्या—२५७ । आ०—८×६॥ इञ्च । लेखन काल—संवत् १८७५ माह बुदी ७ । पूर्ण । दशा उत्तम ।^७

१. समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी रच० सं० १६६३ आसो.सु. १३ १-५१
२. माणिक्यमाला	संग्रह कर्ता	हिन्दी संस्कृत प्राकृत सुभाषित ५२-१११
ग्रंथप्रश्रोत्तरी	ब्रह्म ज्ञानसागर	
३. देवागमस्तोत्र	आचार्य समन्तभद्र	संस्कृत लिपि संवत् १८६६

कृपारामसौगाणी ने करौली राजा के पठनार्थ हाडौती गांव में प्रति लिपि की । पृष्ठ-१११से ११५ ।

४. अनादिनिधनस्तोत्र	×	” लिपि सं० १८६६ ११५-११६
५. परमानंदस्तोत्र	×	संस्कृत ११६-११७
६. सामायिकपाठ	अमितगति	” ११७-११८
७. पंडितमरण	×	” ११९
८. चौबीसतीर्थङ्करभक्ति	×	” ११९-२०

लेखन सं० १९७० बैमाख सुदी ३

९. तेरह काठिया	बनारसीदास	हिन्दी १२०
१०. दर्शनपाठ	×	संस्कृत १२३
११. पंचमंगल	रूपचंद्र	हिन्दी १२३-१२८
१२. कल्याणमंदिर भाषा	बनारसीदास	” १२८-३०
१३. विषापहारस्तोत्र भाषा	अचलकीर्ति	” १२०-३२

रचना काल १७१५ ।

१४. भक्तामर स्तोत्र भाषा	हेमराज	हिन्दी १३२-३५
१५. वज्रनाभि चक्रवर्तिकी भावना	भूधरदास	” १३५-३६

१६. निर्वाण काण्ड भाषा	भगवती दास	"	१३-३७
१७. श्रीपाल स्तुति	×	हिन्दी	१३७-३८
१८. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामी	संस्कृत	१३८-४५
१९. सामायिक बड़ा	×	"	१४५-५२
२०. लघु सामायिक	×	"	१५२-५३
२१. एकीभावस्तोत्र भाषा	जगजीवन	हिन्दी	१५३-५४
२२. बाईस परिषह	भूधरदास	"	१५४-५७
२३. जिनदर्शन	"	"	१५७-५८
२४. संबोधपंचासिका	द्यानतराय	"	१५८-६०
२५. बीसतीर्थकर की जकड़ी	×	"	१६०-६१
२६. नेमिनाथ मंगल	लाल	हिन्दी	१६१-१६७
२० सं० १७४४ सावण सु० ६			
२७. दान बावनी	द्यानतराय	"	१६७-७१
२८. चेतनकर्म चरित्र	भैर्या भगवतीदास	"	१७१-१८३
२० १७३६ जेठ वदी ७			
२९. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	१८४-८९
३०. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंग	"	१८९-९२
३१. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द	संस्कृत	१९२-९४
३२. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१९४-९६
३३. सिद्धप्रियस्तोत्र	देवनन्दि	"	१९६-९८
३४. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१९८-२००
३५. भूपालचीबीसी	भूपाल कवि	"	२००-२०२
३६. देवपूजा	×	"	२०२-२०५
३७. विरहमान पूजा	×	"	२०५-२०६
३८. सिद्धपूजा	×	"	२०६-२०७

३९. सोलहकारणपूजा	×	"	२०७-२०८
४०. दशलक्षरणपूजा	×	"	२०८-२०९
४१. रत्नत्रयपूजा	×	"	२०९-१४
४२. कलिकुण्डलपूजा	×	"	२१४-२२५
४३. चितामणि पार्श्वनाथपूजा	×	"	२२५-२६
४४. शांतिनाथस्तोत्र	×	"	२२६
४५. पार्श्वनाथपूजा	×	"	अपूर्णा २२६-२७
४६. चौबीस तीर्थङ्कर स्तवन	देवनन्दि	"	२२८-३७
४७. नवग्रहगणित पार्श्वनाथ स्तवन	×	"	२३७-४०
४८. कलिकुण्डापार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	२४०-४१
लेखन काल १८६३ माघ सुदी ५			
४९. परमानन्दस्तोत्र	×	"	२४१-४३
५०. लघुजिनसहस्रनाम	×	"	२४३-४६
लेखन काल १८७० वैशाख सुदी ५			
५१. सूक्तिमुक्तावलिस्तोत्र	×	"	२४६-५१
५२. जिनेन्द्रस्तोत्र	×	"	२५२-५४
५३. बहत्तरकला पुरुष	×	हिन्दी गद्य	२५७
५४. चौसठ कला स्त्री	×	"	"

५४२२. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० ३२९ । आ० ७×४ इञ्च । पूर्ण ।

विशेष—इसमें भूधरदासजी का चर्चा समाधान है ।

५४२३. गुटका सं० ४३ —पत्र सं० ५८ । आ० ९३×५३ इञ्च । भाषा—संस्कृत । ले० काल १७८७ कार्तिक शुक्ला १३ । पूर्ण एवं शुद्ध ।

विशेष—व घेरवालान्वये साह श्री जगरूप के पठनाई भट्टारक श्री देवचन्द्र ने प्रतिलिपि की थी । प्रति संस्कृत टीका सहित है । सामायिक पाठ आदि का संग्रह है ।

५४२४. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ८३ । आ० १०×५ इञ्च । भाषा—हिन्दी । पूर्ण । दशा जीर्ण ।

विशेष—चर्चाओं का संग्रह है ।

५५२५ गुटका सं० ५५ । पत्र सं० १४० । आ० ६३×५ इञ्च । पूर्ण ।

१. देवशास्त्रगुरु पूजा	×	संस्कृत	१-७
२. कमलाष्टक	×	"	६-१०
३. गुरुस्तुति	×	"	१०-११
४. मित्रपूजा	×	"	१२-१५
५. कलिकुण्डस्तवन पूजा	×	"	१६-१६
६. षोडशकारणपूजा	×	"	१६-२२
७. दशलक्षगुरुपूजा	×	"	२२-३२
८. नन्दीश्वरपूजा	×	"	३२-३६
९. पंचमेरूपूजा	भट्टारक महीचन्द्र	"	३६-४३
१०. अनन्तचतुर्दशीपूजा	" मेरुचन्द्र	"	४५-५७
११. ऋषिमंडलपूजा	गौतमस्वामी	"	५७-६५
१२. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	६६-७४
१३. महाभिषेक पाठ	×	"	७४-८६
१४. रत्नत्रयपूजाविधान	×	"	८७-१२१
१५. ज्येष्ठजिनवरपूजा	×	हिन्दी	१२२-२५
१६. क्षेत्रपाल की आरती	×	"	१२६-२७
१७. गणधरबलयमंत्र	×	संस्कृत	१२८
१८. आदित्यमारकथा	त्रादीचन्द्र	हिन्दी	१२९-३१
१९. श्रेत	विद्याभूषण	"	१३१-३३
२०. लघु सामायिक	×	संस्कृत	१३४
२१. त्र्यंबकमंत्र	भ० महीचन्द्र	"	१३४-१४०

५५२६. गुटका सं० ५६—पत्र सं० ४६ ; आ० ७३×५३ इञ्च । भाषा—हिन्दी । पूर्ण एवं प्रशुद्ध ।

दिनेप—वसंतराज कृत शकुन नाम्न है ।

५४२७. गुटका सं० ४७ । पत्र सं० ३४० । आ० ८×४ इञ्च पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. सूर्यके दस नाम	×	संस्कृत	१
२. बन्दो मोक्ष स्तोत्र	×	"	१-२
३. निर्वाणविधि	×	"	२-३
४. मार्कण्डेयपुराण	×	"	४-५६
५. कालीसहस्रनाम	×	"	५८-१३२
६. नृसिंहपूजा	×	"	१३३-३५
७. देवीसूक्त	×	"	१३६-६५
८. मंत्र-संहिता	×	संस्कृत	१६६-२३३
९. ज्वालामालिनी स्तोत्र	×	"	२३३-३६
१०. हरगौरी सवाद	×	"	२३६-७३
११. नारायण कवच एवं अष्टक	×	"	२७३-७६
१२. चामुण्डोपनिषद्	×	"	२७६-२८१
१३. पीठ पूजा	×	"	२८२-८७
१४. योगिनी कवच	×	"	२८८-३१०
१५. आनंदलहरी स्तोत्र	शंकराचार्य	"	३११-२४

५४२८ गुटका सं० ४८ । पत्र सं०—२२२ । आ०—६।।×५।। इञ्च पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. जिनयज्ञकल्प	पं० आशाधर	संस्कृत	१-१४१
२. प्रशस्ति	ब्रह्म दामोदर	"	१४१-४५

दोहा—

ॐ नमः सरस्वत्यै । अथ प्रशस्ति ।

श्रीमंतं सन्मतिदेवं, निःकर्माणम् जगद्गुरुम् ।

भक्त्या प्रणम्य वक्ष्येऽहं प्रशस्ति तां गुणोत्तमं ॥ १ ॥

स्याद्वादिनी ब्राह्मी ब्रह्मतत्व-प्रकाशिनी ।

सत्गिराराधितां चापि वरंदा सत्वशंकरी ॥ २ ॥

गणिनो गौतमादींश्च संसारार्णवतारकान् ।

जन-प्रणीत-सच्छास्त्रकैरवामलचंद्रकान् ॥ ३ ॥

मूलमंघे वलात्कारगणे सारस्वते सति ।
गच्छे विश्वपदष्ठाने वंद्ये वृंदारकादितिः ॥ ४ ॥
नंदिसंघोभवत्तत्र नंदितामरनायकः ।
कुंदकुंदार्यसंज्ञोऽसौ वृत्तरत्नाकरो महान् ॥ ५ ॥
तत्पट्टक्रमतो जातः सर्वसिद्धान्तपारगः ।
हमीर-भूपसेव्योयं धर्मचंद्रो यतीश्वरः ॥ ६ ॥
तत्पट्टे विश्वतत्वज्ञो नानाग्रंथविशारदः ।
रत्नत्रयकृताभ्यामो रत्नकीर्तिरभूत्मुनिः ॥ ७ ॥
शकस्वामिसभामध्ये प्राप्तमानशतोत्सवः ।
प्रभाचंद्रो जगद्वंद्यो परवादिभयंकरः ॥ ८ ॥
कवित्वे वापि वक्तृत्वे मेधावी शान्तमुद्रकः ।
पद्मनंदी जिताक्षोभूत्तत्पट्टे यतिनायकः ॥ ९ ॥
तच्छिष्यो जनिभव्यौघपूजितां ह्यविशुद्धधीः ।
श्रुतचंद्रो महासाधुः साधुलोककृतार्थकः ॥ १० ॥
प्रामाणिकः प्रमाणोऽभूदरगमाध्यात्मविश्वधीः ।
लक्षणे लक्षणार्थज्ञो भूपालवृंदसेवितः ॥ ११ ॥
अर्हत्प्रणीततत्त्वार्थजादः पति निशापतिः ।
हतपंचेशुरभ्तारिजिनचंद्रो विचक्षणः ॥ १२ ॥
जम्बूद्रुमांकिते जम्बूद्वीपे द्वीपप्रधानको ।
तत्रास्ति भारतं क्षेत्रं सर्वभोगफलप्रदं ॥ १३ ॥
मध्यदेशो भवत्तत्र सर्वदेशोत्तमोत्तमः ।
धनधान्यसमाकीर्णग्रामे देवहृतिसमैः ॥ १४ ॥
नानावृक्षकुलैर्भाति सर्वसत्वसुखंकरः ।
मनोगतमहाभोगः दाता दातृसमन्वितः ॥ १५ ॥
तोडाख्योभूत्महादुर्गो दुर्गमुख्यः श्रियापरः ।
तच्छाखानगरं योषि विश्वभूतिविधाययत् ॥ १६ ॥

स्वच्छपानीयसंपूरणैः वापिकूपादिभिर्महत् ।
 श्रीमद्वनहटानामहट्टव्यापारभूषितं ॥ १७ ॥
 अर्हत्त्वैत्यालये रेजे जगदानंदकारकैः ।
 विश्वित्रमठमंदोहे वरिणज्जनसुमंदिरो ॥ १८ ॥
 अजन्याधिपतिस्त्रय प्रजापालो लसद्गुणः ।
 कान्त्याचंद्रो विभात्येष तेजसापद्मबांधवः ॥ १९ ॥
 शिष्यस्य पालको जातो दुष्टनिग्रहकारकः ।
 पंचांगमंत्रविचूरो विद्याशास्त्रविशारदः ॥ २० ॥
 शौर्योदार्यगुणोपेतो राजनीतिविदांवरः ।
 रामसिंहो विभुर्धोमान् भूत्यवेन्द्रो महायशोः ॥ २१ ॥
 आसीद्वारिणिकवरस्तत्र जैनधर्मपरायणः ।
 पात्रदानादरः श्रेष्ठो हरिचन्द्रोद्युगाग्रणीः ॥ २२ ॥
 श्रावकाचारसंपन्ना दत्ताहारादिदानकाः ।
 शीलभूमिरभूत्तस्य गूजरिप्रियवादिनी ॥ २३ ॥
 पुत्रस्तयोरभूत्साधुव्यक्ताहंत्सुभक्तिकः ।
 परोपकरणाभ्वांतो जिनार्चनक्रियोद्यतः ॥ २४ ॥
 श्रीवकाचारतत्त्वज्ञो बुकारुण्यवारिधिः ।
 देल्हा साधु व्रताचारी राजवत्प्रतिष्ठकः ॥ २५ ॥
 तस्य भार्या महासाध्वी शीलनीरतरंगिणी ।
 प्रियवदा हितावाराचाली सौजन्यधारिणी ॥ २६ ॥
 तयोः क्रमेण संजातौ पुत्रौ लावण्यसन्दुरौ ।
 अगण्यपुण्यसंस्थानी रामलक्ष्मणकाविद ॥ २७ ॥
 विनयज्ञोत्मवानन्दकारिणौ व्रतधारिणी ।
 अर्हतीर्थमहायात्रासंपत्कर्कप्रविधायिनौ ॥ २८ ॥
 रामसिंहमहाभूपप्रधानपुरुषो शुभौ ।
 समुद्धृतजिनागारौ धर्मानाधूमहोत्तमी ॥ २९ ॥

तथ्यादरोभवद्धीरो नायकं खचन्द्रमाः ।
 लोकप्रशस्यसत्कीर्ति धर्मसिंहो हि धर्मभृत् ॥ ३० ॥
 तत्कामिनी महच्छीलधारिणी शिवकारिणी ।
 चन्द्रस्य वसती ज्योत्स्ना पापभवान्तापहारिणी ॥ ३१ ॥
 कुण्डयविशुद्धासीत् संघभक्तिमुखरणा ।
 धर्मानन्दितचेतस्का धर्मश्रीर्भर्तृ भाक्तिकाः ॥ ३२ ॥
 पुत्रावाप्नान्तयोः स्वीयरूपनिजितमन्मथौ ।
 लक्षणाक्षूणसद्गात्रौ योषिन्मानसवल्लभौ ॥ ३३ ॥
 अर्हद्देवमुसिद्धान्तपुरुभक्तिसमुद्यतौ ।
 विद्वज्जनप्रियौ सौम्यौ मोल्हाद्वयपदार्थकौ ॥ ३४ ॥
 तुधारविष्णोरसमानकीर्तिः कुटुम्बनिर्वाहकरो यशस्वी ।
 प्रतापवान्धर्मधरो हि धीमान् खण्डेलवालान्वयकंजभानुः ॥ ३५ ॥
 भूपेन्द्रकार्याधिकरो दयाढ्यो पूढ्यो पूर्णेन्दुसंकासमुखोवस्त्रिः ।
 श्रेष्ठी विवेकाहितमानसोऽसौ सुधीर्नन्दतुभूतलेऽस्मिन् ॥ ३६ ॥
 हस्तद्वये यस्य जिनार्चनं वैजैनं वरावाग्मुखर्षकजे च ।
 हृद्यक्षरं बार्हत्स्यं वा करोतु राज्यं पुरुषोत्तमोयं ॥ ३७ ॥
 तत्प्राणवल्लभाजाता जैनव्रतविधात्रिनी ।
 मती मतल्लिका श्रेष्ठी दानोत्कण्ठा यशस्विनी ॥ ३८ ॥
 चतुर्विधस्य संघस्य भक्त्युल्लासि मनोरथा ।
 नैनश्रोः सुधावात्कव्योकोशांभोजसन्मुखी ॥ ३९ ॥
 हर्षमदे सहर्षात् द्वितीया तस्य वल्लभा ।
 दानमानान्सवानन्दवद्विताशेषचतसः ॥ ४० ॥
 श्रीरामसिंहं नृपेण मान्यश्चतुर्विधश्रीवरसंघभक्तः ।
 प्रद्योतिनाशेषपुराणलोको नायू विवेकी चिरमेवजीयान् ॥ ४१ ॥
 माहारशास्त्रीपधजांवरक्षा दानेषु सर्वार्थकरेषु साधुः ।
 कल्पद्रुमोयाचककामधेनुर्नाथुनुमाधुर्जयतात्वरिष्यां ॥ ४२ ॥

सर्वेषु शास्त्रेषु परंप्रशस्यं श्रीशास्त्रदानंहतशाव्यभावं ।
 स्वर्गापवर्गकविभूतिपात्रं समस्तशास्त्रार्थविधानदक्षं ॥४३॥
 दानेषु सारं शुचिशास्त्रदानं यथा त्रिलोक्यां जिनपुंगवोऽयं ।
 धृदीति धृत्वा परमंगलार्थं व्यलीलिखान्साधूत्तमां प्रतिष्ठां ॥४४॥
 लेखत्वा शुभाधानं प्रतिष्ठासारमुत्तमं ।
 ब्रह्मदामोदरायापि दत्तवान् ज्ञानहेतवे ॥४५॥
 अग्न्याभ्रवाणसूपान्के राज्येतीतेति सुन्दरे ।
 विक्रमादित्यभूपस्य भूमिपालशिरोमणेः ॥४६॥
 ज्यष्टे मासे सिते पक्षे सोमवारे हि सौम्यके ।
 प्रतिष्ठासार एवासी समाप्तिमगमत्परां ॥४७॥
 अर्हत्क्रमांभोजनक्षावरांगी सद्भूषणाकुक्कुटसर्पगाव ।
 पद्मावतो शासनदेवता सा नाथु सुसाधुं चिरमेव पातात् ॥४८॥
 व्युधोतिताः परं येन प्रमाणपुरुषापरो ।
 श्रीमत्संडिल्लवंशोत्थ नाथु साधुः सनन्दतु ॥४९॥

॥ इति प्रशस्त्यावली ॥

३. कर्णपिशाचिनीमंत्र	×	संस्कृत	१४५
४. गडाराशांतिकविधि	×	"	१४६
५. नवग्रहस्थापनाविधि	×	"	"
६. पूजाकी सामग्री की सूची	×	हिन्दी	१५२-५५
७. समाधिमरण	×	संस्कृत	१६०-६४
८. कलशविधि	×	"	१७३-८५
९. भैरवाष्टक	×	"	१९६
१०. भक्तामरस्तोत्र मंत्रसहित	×	"	१९८-२१४
११. षमोकारपंचासिका पूजा	×	"	२१८

५४२६ गुटका सं० ४६—पत्र सं०—५८ । आ०—५×४ इञ्च । लेखन काल सं०—१८२४ पूर्ण ।
दशा-सामान्य ।

१. मंयोगवनीमी	मानकवि	हिन्दी	१-२५
२. फुटकर रचनाएं	×	"	२६-५८

५४३० गुटका सं० ५० । पत्र सं० ७४ । प्रा० ८×५ इञ्च । ने० काल १८६४ मंगसरसुदी १५ । पूर्ण ।

विशेष—गंगाराम बैद्य ने सिरोंज में ब्रह्मजी संतसागर के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।

१. राजुल पञ्चीसी	बिनोदोलाल नालचंद	हिन्दी	१-५
२. चेतनचरित्र	भैयाभगवतीदास	"	६-२६
३. नेमीश्वरराजुलविवाद	ब्रह्मज्ञानसागर	"	२७-३१

नेमीश्वर राजुल को भगड़ो लिख्यते ।

आदि भाग—राजुल उवाच—

भोग अनोपम छोड़ी करी तुम योग लियो सो कहा मन ठाएणों ।
 सेज विचित्र तु लाई अनोपम सुंदर नारि को संग न जानू ॥
 सूक तनु सुख छोड़ि प्रतक्ष काहा दुख देखत हो अनजानू ।
 राजुल पूछत नेमि कुंवर कूं योग विचार काहा मन आनू ॥ १ ॥

नेमीश्वर उवाच

मुन रि मति मुठ न जान जानत हों भव भोग तन जोर घटें हैं ।
 पाप बडे खटकर्म धके परमारथ को सब पेट फटे हैं ॥
 इंद्रिय को सुख किचित्काल ही आखिर दुख ही दुख रटे हैं ।
 नेमि कुंवर कहे मुनि राजुल योग बिना नहि कर्म कटे हैं ॥ २ ॥

मध्य भाग—राजुलोवाच—

करि निरधार तजि बरवार भये व्रतधार लोक गोसाई ।
 धूप अनूप घनाघन धार तुवाट सहो कुंवाई के तोई ॥
 भूल पियास अनेक परिसह पावन हो कळु मिद्धन आई ।
 राजुल नार कहे सुविचार जु नेमि कुंवार मुनु मन आई ॥ १७ ॥

नेमीश्वरोवाच

काहे को वहुत करो तुम स्थापनप येक मुनो उपदेस हमारी ।
 भोगहि भोग किये भव इवत काज न येक मरे जु तुम्हारी ॥

मानव जन्म बड़ी जगमान के काज विना मनु कूप में डारो ।
नेमी कहे सुन राजुल तू सब मोह तजि ने काज सवारो ॥ १८ ॥

अन्तिम भाग—राजुलोवाच—

श्रावक धर्म क्रिया सुभ त्रेपन साघ कि संगत वेग सुनाइ ।
भोग तजि मन सुध करि जिन नेम तणी जव संगत पाइ ॥
भेद अनेक करी हड़ता जिन माण की सब वात सुनाई ।
लोच करी मन भाव धरी करी राजुल नार भई तव बाई ॥ ३१ ॥

कलश—

आदि रचन्हा विवेक सकल युक्ती समभायो ।
नेमिनाथ हृद शित्त कवहु राजुल कु समाभायो ॥
राजमति प्रबोध के सुध भाव संयम लीयो ।
ब्रह्म ज्ञानसागर कहे वाद नेमि राजुल कीयो ॥ ३२ ॥

॥ इति नेमीश्वर राजुल विवाद संपूर्णम् ॥

४. अष्टाङ्गिकाग्रत कथा	विनयकीर्ति	हिन्दी	३२-३३
५. पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	३५
६. शांतिनाथस्तोत्र	मुनिगुणभद्र	"	"
७. वर्धमानस्तोत्र	×	"	३६
८. चिंतामणिपार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	३७
९. निर्वाणकाण्ड भाषा	भगवतीदास	हिन्दी	३८
१०. भावनास्तोत्र	द्यानतराय	"	३९
११. गुरुविनती	भूषरदास	"	४०
१२. ज्ञानपञ्चीसी	बनारसीदास	"	४१-४२
१३. प्रभाती अजरूपभंवर अरु	×	"	४२
१४. मो गरीब कूँ साहव तारोजी	गुलाबकिशन	"	"
१५. अब तेरो मुख देखूँ	टोडर	"	४४
१६. प्रात हुवो गुमर देव	भूषरदास	"	४३

१७. ऋषभजिनन्दजुहार केशरियो	भानुकीर्ति	हिन्दी	४५
१८. कर्ह अराधना नेरी	नवल	"	"
१९. भूल भ्रमारा केई भमै	×	"	४६
२०. श्रीपालदर्शन	×	"	४७
२१. भक्तामर भाषा	×	"	४८-५२
२२. सांवरिया तेरे बार बार बारि जाऊं	जगतराम	"	५२
२३. तेरे दरवार स्वामी इन्द्र दो खड़े हैं	×	"	५३
२४. जिनजी थांकी मूरत मनड़ी मोह्यो	ब्रह्मकपूर	"	"
२५. पार्श्वनाथ नीत्र	द्यानतराय	"	५५
२६. त्रिभुवन गुरु स्वामी	जिनदास	"	२० सं० १७५५, ५४
२७. ग्रहो जगत्गुरु देव	भूधरदास	"	५६
२८. चिंतामणि स्वामी सांचा साहब मेरा	बनारसीदास	"	५६-५७
२९. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुशुद्र	"	५७-६०
३०. कलियुग की विनती	ब्रह्मदेव	"	६१-६३
३१. शीलव्रत के भेद	×	"	६३-६४
३२. पदसंग्रह	गंगाराम वैद्य	"	६५-६८

५४५१. गुटका सं० ५१। पत्र सं० १०६। आ० ८५६ इंच। विषय-संग्रह। ले० काल १७६६
फागण सुदी ४ मंगलवार। पूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—सवाई जयपुर में लिपि की गई थी।

१. भावनासारसंग्रह	चामुण्डराय	संस्कृत	१-६०
२. भक्तामरस्तोत्र हिन्दी टीका सहित	×	"	सं० १८०० ६१-१०६

५४५२. गुटका सं० ५१ क। पत्र सं० १४२। आ० ८५६ इंच। ले० काल १७६३ माघ सुदी २।
पूर्णा। दशा-सामान्य।

विशेष—किशनसिंह कृत क्रियाकौशल भाषा है।

५४५३. गुटका सं० ५२। पत्र सं० १६४+६८+६६। आ० ८५७ इंच।

विशेष—तीन अपूर्ण गुटकों का मिश्रण है ।

१. पठिकर्मभरणसूत्र	×	प्राकृत
२. पञ्चव्याण	×	"
३. बन्दे तू सूत्र	×	"
४. थंभरणपार्श्वनास्तवन (वृहत्)	मुनिअभयदेव	पुरानी हिन्दी
५. अजितशांतिस्तवन	×	"
६. "	×	"
७. भयहरस्तोत्र	×	"
८. सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	जिनदत्तसूरि	"
९. गुरुपारतंत्र एवं सप्तस्मरण	"	"
१०. भक्तामरस्तोत्र	आचार्यमानतुंग	संस्कृत
११. कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुतुबचन्द्र	"
१२. शांतिस्तवन	देवसूरि	"
१३. सप्तर्षिजिनस्तवन	×	प्राकृत
लिपि संवत् १७५० आसोज सुदी ४ को सौभाग्य हर्ष ने प्रतिलिपि की थी ।		
१४. जीवविचार	श्रीमानदेवसूरि	प्राकृत
१५. नवतस्त्रविचार	×	"
१६. अजितशांतिस्तवन	मेरूनन्दन	पुरानी हिन्दी
१७. सीमंधरस्वामोस्तवन	×	"
१८. शीतलनाथस्तवन	समयमुन्दर गणि	राजस्थानी
१९. थंभरणपार्श्वनाथस्तवन लघु	×	"
२०. "	×	"
२१. आदिनाथस्तवन	समयमुन्दर	"
२२. चतुर्विंशति जिनस्तवन	जयसागर	हिन्दी
२३. चौबीसजिन मात पिता नामस्तवन	आनन्दसूरि	" रचना० सं० १५६२
२४. फलवधो पार्श्वनाथस्तवन	समयमुन्दरगणि	राजस्थानी

२५. पार्व्वनाथस्तवन	समयसुन्दरपरिषद्	राजस्थानी
२६. " "	" "	" "
२७. गौड़ीपार्व्वनाथस्तवन	" "	" "
२८. " "	जोधराज	" "
२९. चिंतामणिपार्व्वनाथस्तवन	लालचंद	" "
३०. वीर्यमालास्तवन	तेजराज	हिन्दी
३१. " "	समयसुन्दर	" "
३२. वीसविरहमानजकड़ी	" "	" "
३३. नेमिराजमतीरास	रत्नमुक्ति	" "
३४. गीतमस्वामीरास	X	" "
३५. बुद्धिरास	शानिमद्र द्वारा संकलित	" "
३६. शीलरास	विजयदेवसूरि	" "
		जोधराज ने खीवसी की भार्या के पठनार्थ लिखा ।
३७. साघुर्वंदना	भानंद सूरि	" "
३८. दानतपशीलसंवाद	समयसुन्दर	राजस्थानी
३९. भाषावसूतिचौडालिया	कनकसोम	हिन्दी
		२० काल १६३८ । लिपि काल सं० १७५० कार्तिक बुदी ५ ।
४०. भद्रकुमार बमाल	" "	" "
		रचना संबत् १६४४ । अमरसर में रचना हुई थी ।
४१. मेघकुमार चौडालिया	" "	हिन्दी
४२. क्षमाछत्तीसी	समयसुन्दर	" "
		लिपि संबत् १७५० कार्तिक सुदी १३ । अवरंगजाद ।
४३. कर्षवत्तीसी	राजसमुद्र	हिन्दी
४४. बारहभावना	जक्सोमगरिष	" "
४५. पद्मावतीरानीधाराधना	समयसुन्दर	" "
४६. वात्रुञ्जयरास	" "	" "

४७. नेमिजिनस्तवन	जोधराज मुनि	हिन्दी	
४८. मक्षीपार्वनाथस्तवन	”	”	
४९. पञ्चकल्याणकस्तुति	×	प्राकृत	
५०. पंचमीस्तुति	×	संस्कृत	
५१. संगीतबन्धपार्वर्जिनस्तुति	×	हिन्दी	
५२. जिनस्तुति	×	”	लिपि सं० १७५०
५३. नवकारमहिमास्तवः	जिनवल्लभसूरि	”	
५४. नवकारसज्जाय	पद्मराजगण	”	
५५. ”	शुभाप्रभसूरि	”	
५६. गौतमस्वधिसज्जाय	समयसुन्दर	”	
५७. ”	×	”	
५८. जिनदत्तसूरिगीत	सुन्दरगण	”	
५९. जिनकुशलसूरि चौर्ध्व	जयसागर उपाध्याय	”	र० संवत् १४८१
६०. जिनकुशलसूरिस्तवन	×	”	
६१. नेमिराजुलबारहमासा	आनन्दसूरि	”	र० सं० १६८९
६२. नेमिराजुल गीत	भुवनकोति	”	
६३. ”	जिनहर्षसूरि	”	
६४. ”	×	”	
६५. शूलभद्र गीत	×	”	
६६. नेमिराजर्षि सज्जाय	समयसुन्दर	”	
६७. सज्जाय	”	”	
६८. अरहनासज्जाय	”	”	
६९. मेघकुमारसज्जाय	”	”	
७०. अनाधीमुनिसज्जाय	”	”	
७१. सीताजीरी सज्जाय	×	हिन्दी	

७२. चेलना री सज्जाय	×	हिन्दी
७३. जीवकाया ”	भुवनकोति	”
७४. ” ”	राजसमुद्र	”
७५. आतमशिक्षा ”	”	”
७६. ” ”	पद्मकुमार	”
७७. ” ”	सालम	”
७८. ” ”	प्रसन्नचन्द्र	”
७९. स्वार्थबीसी	मुनिभ्रीसार	”
८०. शत्रुंजयभास	राजसमुद्र	”
८१. सोलह सतियों के नाम	”	”
८२. बलदेव महामुनि सज्जाय	समयसुन्दर	”
८३. श्रेणिकराजासज्जाय	”	हिन्दी
८४. बाहुबलि ”	”	”
८५. शालिमद्र महामुनि ”	×	”
८६. बंभणवाड़ी स्तवन	कमलकलश	”
८७. शत्रुञ्जयस्तवन	राजसमुद्र	”
८८. राणपुर का स्तवन	समयसुन्दर	”
८९. गौतमपृच्छा	”	”
९०. नेमिराजमति का चौमामिया	×	”
९१. स्पूलिभद्र सज्जाय	×	”
९२. कर्मद्वत्तीसी	समयसुन्दर	”
९३. पुण्यद्वत्तीसी	”	”
९४. गौड़ीपार्वनायस्तवन	”	”
९५. पञ्चयतिस्तवन	समयसुन्दर	”
९६. नन्दबैरामहामुनिसज्जाय	×	”
९७. शीलवत्तीसी	×	”

६८. मोनएकादशी स्तवम

समयसुन्दर

हिन्दी

रचना सं० १६८१ । जैसलमेर में रची गई । लिपि सं० १७५१ ।

५४३४. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० २६६ । आ० ८३×४३ इञ्च । लेखनकाल १७७५ । पूर्ण ।

दशा—सामान्य ।

१. राजाचन्द्रगुप्त की चौपई	ब्रह्मरायनल्ल	हिन्दी
२. निर्वाणकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	"
षट्—		
३. प्रभुजी जो तुम तारक नाम धरायो	हर्षचन्द्र	"
४. आज नाभि के द्वार भीर	हरिसिंह	"
५. तुम सेवामें जाय सो ही सफल घरी	दलाराम	"
६. चरन कमल उठि प्रात देख मैं	"	"
७. सोही सन्त शिरोमनि जिनवर गुन गावे	"	"
८. मंगल आरती कीजै भोर	"	"
९. आरती कीजै श्री नेमकंवरकी	"	"
१०. बंदों दिगम्बर गुरु चरन जग तरन तारन जान	भूधरदास	"
११. त्रिभुवन स्वामीजी करुणा निधि नामीजी	"	"
१२. बाजा बजिया गहरा जहां जन्म्या हो ऋषभ कुमार	"	"
१३. नेम कंवरजी ये सजि आया	साईदास	"
१४. भट्टारक महेन्द्रकीर्तिजी की जकड़ी	महेन्द्रकीर्ति	"
१५. अहो जगतगुरु जगपति परमानंद निधान	भूधरदास	"
१६. देख्या दुनिया के बीच बे कोई अजब तमाशा	"	"
१७. विनती—बंदों श्री अरहंतदेव सारद नित्य सुमरण हिरदै घरू	"	"

राजमती बौनवै नेमजी भ्रजी तुम क्यों चढ़ा गिरनारि (विनती)	विश्वभूषण	हिन्दी
१९. नेमोश्वररास	ब्रह्म रायमल्ल	" २० काल सं० १६१५ लिपिकार दयाराम सोनी
२०. चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्नों का फल	×	"
२१. निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत
२२. चौबीस तीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी
२३. पांच परवीन्नत की कथा	वेणोदास	" सेसन संवत् १७७५
२४. पद	बनारसीदास	"
२५. मुनिश्वरों की जयमाला	×	"
२६. श्रारती	दानतराय	"
२७. नेमिश्वर का गीत	नेमिचन्द्र	"
२८. विनति-(बंदहू श्री जिनराय मनवच काब करोजी)	कनककीर्ति	"
२९. जिन भक्ति पद	हर्षकीर्ति	"
३०. प्राणी रो गीत (प्राणीड़ा रेतू काई सोवै रैन चित्त)	×	"
३१. जकड़ी (रिषभ जिनेश्वर बंदस्यौ)	देवेन्द्रकीर्ति	"
३२. जीव संबोधन गीत (होजीव नव मास रह्यो गर्भ बासा)	×	"
३३. लुहरि (नेमि नगीना नाथ थां परि वारी म्हारालाल)	×	"
३४. मोरड़ो (म्हारो रे मन मोरड़ा तूतो उठि गिरनारि जाइ रे)	×	"
३५. बटोइ (तू तोजिन भजि बिलम न लाय बटोई मारग भूलौ रे)	×	हिन्दी
३६. पंचम गति की बेलि	हर्षकीर्ति	" २० सं० १६८३

६२२]

३७. करम हिण्डोलणा	×	हिन्दी
३८. पद-(ज्ञान सरोवर मांही भूलै रे हंसा)	सुरेन्द्रकीर्ति	"
३९. पद-(चौकीसों तीर्थकर करो भक्ति बंदन)	नेमिचंद	"
४०. करमां की गति न्यारी हो	ब्रह्मनाथू	"
४१. आरती (करीं नाभि कंवरजी की आरती)	लालचंद	"
४२. आरती	द्यानतराय	"
४३. पद-(जीवड़ा पूजो श्री पारस जिनेन्द्र रे)	"	"
४४. गीत (डोरी ये लगाबो हो नेमजी का नाम स्यो)	पांडे नाथूराम	"
४५. लुहरि-(यो संसार अनादि को सोही बाग बण्यो री लो)	नेमिचन्द	"
४६. लुहरि-(नेमि कुंवर व्याहन चढयो राजुल करै इ सिंगार)	"	"
४७. जोगोरासो	पांडे जिनदास	"
४८. कलियुग की कथा	केशव	" ४४ पद्य । ले० सं० १७७६
४९. राजुलपच्चीसी	लालचन्द विनोदीलाल	" "
५०. अष्टान्हिका व्रत कथा	"	हिन्दी
५१. मुनिश्वरों की जयमाल	ब्रह्मजिनदास	"
५२. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"
५३. तीर्थङ्कर जकड़ी	हर्षकीर्ति	"
५४. जगत में सो देवन को देव	बनारसीदास	"
५५. हम बैठे अपने मौन से	"	"
५६. कहा अज्ञानी जीवको गुरु ज्ञान बतावे	"	"

५७. रंग बनाने की विधि	×	हिन्दी
५८. स्फुट बोहे	"	"
५९. गुणवेलि (चन्दन वाला गीत)	"	"
६०. श्रीपालस्तवन	"	"
६१. तीन मियां की जकड़ी	धनराज	"
६२. सुखघड़ी	"	"
६३. कक्का वीनती (बारहखड़ी)	"	"
६४. अठारह नाते कीकथा	लोहट	"
६५. अठारह नाता का ब्यौरा	×	"
६६. आदित्यवार कथा	×	"
६७. धर्मरासो	×	"
६८. पद-देखो भाई आजि रिषभ घरि मात्रे	×	"
६९. क्षेत्रपालगीत	शुभचन्द्र	"
७०. गुरुओं की स्तुति	—	संस्कृत
७१. सुभाषित पद्य	×	हिन्दी
७२. पार्वनाथपूजा	×	"
७३. पद-उठो तेरो मुख देखूं नाभिजी के नन्द टोडर		"
७४. जगत में सो देवन को देव	बनारसीदास	"
७५. दुविधा कब जइ या मन की	×	"
७६. इह चेतन की सब मुधि गई	बनारसीदास	"
७७. नेमीसुरजी की जनम हृयो	×	"
७८. चौबीस तीर्थङ्करों के चिह्न	×	"
७९. दोहासंग्रह	नानिगनास	"
८०. धार्मिक चर्चा	×	"
८१. दूरि गयो जग चेती	घनश्याम	"
८२. देखो माइ आज रिषभ घरि मात्रे	×	"

८३. चरकमल को ध्यान मेरे	×	हिन्दी
८४. जिनजी थांकीजी मूरत मनडो मोहियो	×	”
८५. नारी मुक्ति पंथ बट पारी नारी	”	”
८६. समझि नर जीवन थोरो	रूपचन्द	”
८७. नेमजी ये काई हठ मारयो महाराज	हर्षकीर्ति	”
८८. देखरी कहूं नेमि कुमार	”	”
८९. प्रभु तेरी मूरत रूप बनी	रूपचन्द	”
९०. चितामणी स्वामी सांछा साहब मेरा	”	”
९१. सुखघड़ी कब आवेगी	हर्षकीर्ति	”
९२. चेतन तू बिहूँ काल अकेला	”	”
९३. पंच मंगल	रूपचन्द	”
९४. प्रभुजी थांका दरसण सूं सुख पावां	ब्रह्म कपूरचन्द	”
९५. लघु मंगल	रूपचन्द	”
९६. सम्मेद शिखर चली रैं जीवड़ा	×	”
९७. हम आये हैं जिनराज तुम्हारे बन्दन को	द्यानतराय	”
९८. ज्ञानपञ्चोत्ती	बनारसीदास	”
९९. तू भ्रम झूलि न रे प्राणी सज्जानी	×	”
१००. हुजिये दयाल प्रभु हुजिये दयाल	×	”
१०१. मेरा मन की बात कासु कहिये	सबलसिंह	”
१०२. मूरत तेरी सुन्दर सोहो	×	”
१०३. प्यारे हो लाल प्रभु का दरस की बलिहारी	×	”
१०४. प्रभुजी त्यारियां प्रभु आप जाणिले त्यारियां	×	”
१०५. ज्यों जाणौ ज्यौ त्यारोजी दयानिधि	खुशालचन्द	”
१०६. मोहि लगता श्री जिन प्यारा	हठमलदास	”
१०७. सुमरन ही में त्यारे प्रभुजी तुम		”
सुमरन ही में त्यारे	द्यानतराय	”

१०८. शार्वनाथ के दर्शन

वृन्दावन

हिन्दी

२० सं० १७६८

१०९. प्रभुजी में तुम चरणशरण गह्यो

बालचन्द

”

५४३५. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ८८ । आ० ८५३ इञ्ज । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—इस गुटके में पृष्ठ ६४ तक पण्डिताचार्य धर्मदेव विरचित महाशांतिक पूजा विधान है । ६५ से ८१ तक अन्य प्रतिष्ठा सन्बन्धी पूजाएं एवं विधान हैं । पत्र ८२ पर अपभ्रंश में चौबीस तीर्थङ्कर स्तुति है । पत्र ८५ पर राजस्थानी भाषा में 'रे मन रमि रहू चरणजिनन्द' नामक एक बड़ा ही सुन्दर पद है जो नीचे उद्धृत किया जाता है ।

रे मन रमिरहु चरण जिनन्द । रे मन रमिरहु चरणजिनन्द ॥ढाल॥

जह पठावहि तिहुवरा इदं ॥ रे मन० ॥

यहु संसार असार मुणे घरागु करु जिय धम्मु दयालं ।

परगय तच्छु मुणहि परमेठिहि सुमरीह अप्पु गुणालं ॥ रे मन० ॥ १ ॥

जीउ अजीउ दुविहु पुणु आसव बन्धु मुणहि चउभेयं ।

संवरु निजरु मोखु वियाराहि पुण्णपाप सुबिणेयं ॥ रे मन० ॥ १ ॥

जीउ दुभेउ मुक्त संसारी मुक्त सिद्ध सुवियारो ।

वसु गुणवत्ति कलङ्क विवजिद भासिये वेवलणारो ॥ रे मन० ॥ ३ ॥

जे असादि भमहि जिय संबुल लख जोरिण चउरासी ।

थावर वियलिदिय सयलिदिय, ते पुण्णल सहवासी ॥ रे मन० ॥ ४ ॥

पंच अजीव पढयमु तहि पुण्णसु, धम्मु अधम्मु आगासं ।

कालु अकाउ पंच कायासी, ऐच्छह दव्व पयास ॥ रे मन० ॥ ५ ॥

आसउ दुविहु दव्वभावहं, पुणु पंच पयार जितुत्तं ।

मिच्छा विरय पमाय कसायहं जोगह जीव प्रमुत्तं ॥ रे मन० ॥ ६ ॥

चारि पयार बन्धु पयडिय हिदि तह अणुभाव पयूत्तं ।

जोगा पयडि पयूसठिदायणु भाव कसाय विसेसं ॥ रे मन० ॥ ७ ॥

मुह परिणामे होइ मुहासउ, अमुहि अमुह वियारो ।

मुह परिणामु करहु हो भवियहु, जिम मुहु होय निवारो ॥ रे मन० ॥ ८ ॥

संवर करहि जीव जग सुन्दर आसव दार निरोहं ।

अरुह सिध समु ग्रापु वियाणहु, सोहं सोहं सोहं ॥ रे मन० ॥ ९ ॥

गिजर जरह विणासहु कारणु, जिय जिणवयण संभाले ।

बारह विह तव दसविह संजमु, पंच महावय पाले ॥ रे मन० ॥ १० ॥

भडविहि कम्मविमुक्कु परमपउ, परमपयकुत्थि वासो ।

गिणचसु मुक्कुत्थि रञ्जनु तहिपुरि, ईच्छिगु ईच्छइ वासो ॥ रे मन० ॥ ११ ॥

जाणि असरण ऋहु क्या करणा, पंडितु मनह विचारइ ।

जिणवर सासणु तवु पयासणु, सो हिय बुइ थिर धारइ ॥ रे मन० ॥ १२ ॥

५४३६ गुटका सं० ५५ । पत्र सं० २४० । आ० ६×६३ इञ्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल

१० १६८८ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

५४३७. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० १५० । आ० ६३×४३ इञ्च । पूर्ण एवं जीर्ण । अधिकांश पाठ

अशुद्ध है । लिपि विकृत है ।

विशेष—इसमें निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. कर्मनोकर्म वर्णन	×	प्राकृत	३-५
२. ग्याह अग एवं चौदह पूर्वो का विवरण	×	हिन्दी	६-१२
३. श्वेताम्बरों के ८४ वाद	×	"	१२-१३
४. संहनन नाम	×	"	१३
५. नघोत्पत्ति कथन	×	"	१४

ॐ नमः श्री पार्वनाथ काले बुद्धकीर्तिना एकान्त मिथ्यात्वबौद्ध स्थापितं ॥ १ ॥

संवत् १३६ वर्षे भद्रबाहुशिष्येण जिनचन्द्रेण संशयमिथ्यात्वं श्वेतपटमत्तं स्थापितं ॥ २ ॥

श्री शीतलतीर्थङ्करकाले क्षीरकदम्बाचार्यपुत्रेण पर्वतेन विपरीतमत्तं मिथ्यात्वं स्थापितं ॥ ३ ॥

सर्वतीर्थङ्कराणां काले विनयमिथ्यात्वं ॥ ४ ॥

श्रीपार्वनाथगणेश शिष्येण मस्करिपूर्णाज्ञानमिथ्यात्वं श्री महावीर काले स्थापितं ॥ ५ ॥

संवत् ५२६ वर्षे श्री पूज्यपादशिष्येण प्राभुतकवेदिना वज्रमदिना पङ्कचरणकभक्षकेण द्राविडसंघः स्थापितः ।

संवत् २०५ वर्षे श्वेतपटात् श्रीकलशात् आयलाक संघोत्पत्तिजीता । ७ ॥

चतुः संघोत्पत्ति कथ्यते । श्रीभद्रब्राह्मणशिष्येण श्रीमूलसंघमंडितेन ब्रह्मद्वलियुतिगुप्ताचार्यविशाखाचार्येति नामत्रय चारकेण श्रीगुप्ताचार्येण नन्दिसंघः, मिहसंघः, सेनसंघः, देवसंघः इति चत्वारः संघाः स्थापिताः । तेभ्यो यथाक्रमं बलात्कारगणादयो गणाः सरस्वतादयो मद्याश्च जातानि तेषां प्राब्रज्यादिषु कर्मसु कोपि भेदोस्ति ॥ ८ ॥

संवत् २५३ वर्षे विनयमेनस्य शिष्येण सन्यासभंगयुक्तेन कुमारसेनेन दारुसंघ स्थापितं ॥ ९ ॥

संवत् ६५३ वर्षे सम्यक्तत्प्रकृत्यदयेन रामसेनेन निःपिच्छत्वं स्थापितं ॥ १० ॥

संवत् १८०० वर्षे अतीते वीरचन्द्रमुनेः सकाशात् भिल्लसंघोत्पत्ति भविष्यति ॥

एभ्योनान्येषामुत्पत्ति पंचमकालावसाने सर्वेषामेषां ॥

गृहस्थानां शिष्याणां विनाशो भविष्यत्येकं जिनमतं कियत्कालं स्थाप्यतीतिज्ञेयमिति दर्शनसारे उक्तं ॥

६. गुरुरस्थान चर्चा	×	प्राकृत	१५-२०
७. जिनान्तर	वीरचंद्र	हिन्दी	२१-२३
८. सामुद्रिक शास्त्र भाषा	×	"	२४-२७
९. स्वर्गनरक वर्णन	×	"	३२-३७
१०. यति आहार का ४६ दीप	×	"	३७
११. लोक वर्णन	×	"	३८-५३
१२. चउवीस ठाणा चर्चा	×	"	५४-८६
१३. ग्रन्थस्फुट पाठ संग्रह	×	"	९०-१५०

५४३८ गुटका सं० १७—पत्र सं० ४-१२१ । मा० ६×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

१. त्रिकालदेवचंदना	×	संस्कृत	५-१२
२. सिद्धभक्ति	×	"	१२-१४
३. नंदीश्वरादिभक्ति	×	प्राकृत	१४-१६
४. चौतीस प्रतिशय भक्ति	×	संस्कृत	१६-१९
५. श्रुतज्ञान भक्ति	×	"	१९-२१
६. दर्शन भक्ति	×	"	२१-२२
७. ज्ञान भक्ति	×	"	२२
८. चरित्र भक्ति	×	संस्कृत	२२-२४
९. ग्रनागार भक्ति	×	"	२४-२६

१०. योग भक्ति	×	॥	२६-२८
११. निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत	२८-३०
१२. बृहत्स्वयंभू स्तोत्र	समन्तभद्राचार्य	संस्कृत	३०-४१
१३. गुरावली (लघु आचार्य भक्ति)	×	॥	४१-४४
१४. चतुर्विंशति तीर्थकर स्तुति	×	॥	४४-४६
१५. स्तोत्र संग्रह	×	॥	४६-५०
१६. भावना बतीसी	×	॥	५१-५२
१७. श्रारारामसार	देवसेन	प्राकृत	५३-६०
१८. संबोधपचासिका	×	॥	६१-६८
१९. द्रव्यसंग्रह	नेमिचंद्र	॥	६८-७१
२०. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	७१-७५
२१. ढाढसी गाथा	×	॥	७५-८३
२२. परमानंद स्तोत्र	×	॥	८३-८४
२३. अणस्तमिति संधि	हरिश्चन्द्र	प्राकृत	८५-८९
२४. चूनडीरास	विनयचन्द्र	॥	९०-९४
२५. समाधिमरण	×	अप्रभ्रंश	९४-९९
२६. निर्भरपंचमी विधान	यतिविनयचन्द्र	॥	९९-१०५
२७. सुप्पयदोहा	×	॥	१०५-११०
२८. द्वादशानुप्रेक्षा	×	॥	११०-११२
२९. ॥	जल्हरण	॥	११२-११४
३०. योगि चर्चा	महात्मा ज्ञानचंद्र	॥	११४-११९

५४३६. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० १३-५१ । आ० ६×६ । अपूर्ण ।

विशेष—गुटका प्राचीन है ।

१. जिनरात्रिविधानकथा । नरसेन । अप्रभ्रंश । अपूर्ण । १३-२०

अन्तिम भाग—

कतिय किण्ह चउद्दसि रत्तिहि, गउ सम्मइ जिणु पंचम छत्तिहि ।

इय सम्बन्धु कहिउ सयलामलो, जिनरत्ति हि फलु भवियह मंगलो ।

अवरुवि जोरारत्ति करेसइ, सो मरद्वयरुउ लहेसइ ।
 सारउ मुउ महियलि भुंजेसइ, रइ समाण कुल उत्तिरमेसइ ॥
 पुणु सोहम्म सग्गो जाएसइ, सहु कीलेसइ गिरु सुकुमालिहि ।
 मणुवमुखु भुंजिवि जाएसइ, सिवपुरि वामु सोवि पावेसइ ।
 इय जिणरत्ति विहाणु पयोसिउ, जहजिणसासणि गणहरि भासिउ ।
 जे हीणाहिउ काइमि वुत्तउ, तं बुहारण मठु खमहु गिरुत्तउ ।
 एहु मत्थु जो लिहइ लिहावइ, पढइ पढावइ कहइ कहावइ ।
 जो नर नारि एहमणि भावइ, पुण्णइ अहिउ पुण्ण फलु पावइ ।

धत्ता—

सिरि एरसेणह सामिउ, सिवपुरि गामिउ, बड्ढमाण तित्थंकरु ।
 जइ मागिउ देइ करण करेइ देउ सुबोहि लाहु परमेसरु ॥ २७ ॥
 इय सिरि बड्ढमाणकहापूराणे सिधादिभवभावावण्णणे जिणाराइविहाणफलसंपत्ती ॥
 सिरि एरसेण विरइए सुभवावण्णणाणिमित्ते पढम परिच्छेह सम्मतो ।

॥ इति जिणारात्रि विधान कथा समाप्ता ॥

२. रोहिणिविधान

मुणिपुणभद्र

अपभ्रंश

२१-२५

प्रारम्भिक भाग—

वासवनुमपायहो हरिपविसायहो निज्जिय कायहो पयजुलु ।
 सिवमग्गसहायहो केवलकायहो रिसहहो पणविबि कयकमलु
 परमेट्ठि पच पणविबि महंत, भवजलहि पोय विहडिय कयंत ।
 सारभ सारस ससि जोह्ल जेम, गिम्मल वणिज्ज केणकेम ।
 जिहि गोयमए विणिब वरस्स, सेणिय रायस्स जसोहरस्स ।
 तिह रोहिणी वय कह कहमि भव्व, जह सत्तिणि वारिय पावणख ।
 इय जंबूदीव हो भरइ खेत्ति, कुंरु जंगल ए सिवि गए जगोत्ति ।
 हथिणाउरु पुरजण पवररिद्धु जणु वसइ जित्थु सह सय समिद्धु ।
 तहि वीयसोउ गयसोउ भूउ, बिज्जु पहरइ रइ हियम भूउ ।
 तहां रांडणु कुनएण्डण प्रसोउ, जंमिल्लवि गउ अइ पूरि सोउ ।

बह अंग विसइ जरा कुरुह विसए चंपाउरि पयउ गुणाइ विसए ।
 मट्टइ रागिणी उगाइवंतु, सिरिमइ पियलंकिउ रिउ कयन्तु ।
 सुय अट्ट तासु अरि जराय तासु, रोहिणी कण्णाणं कामपासु ।
 कत्तिय अट्टाहिव सोपवास, गयपुर वहि जिण वसु पुज्जवास ।
 जिणु अंचिवि मुणि वंदिवि असेस, सिरि वासुपुज्ज पयलविसेस !
 मह मज्झिण सण्णाहो शिवह देइ गोहिणी जातराया अंकलइ ।
 अवलोइवि सुव जुव्वण समेय, परिणयण चित्त हयमणि अमेय ।
 गियमंति मंतु गिभिह्वि अभेउ, गिय बुद्धि वियारिवि विहियसेउ ।

धत्ता—

ता पुरवउ वहिरि कि परिउ साहि, रिवद्ध मंच चउ पासहि ।
 कणायमयसु खंचिय रयण करंचिय, मडिय मंडव पासहि ॥ १ ॥

अन्तिम भाग—

निसुणइ जिणवणि सावहणु वियलइणं करनलु आवमानु ।
 वग्धा घायतो जह सरणुणत्थि, मय सावहो जीवहो सहणसत्थि ।
 अणु हवइ सुहासुह एककुजीउ, ताणु भिणु लेइ मरणाउ भीउ ।
 संसार सहुकक्खु पुरकर समुदु, अंगुजि धाउ विहलु कुमुदु ।
 असवइ कम्म जो एहि विच्च, तहो विलयं संवरु होइ कच्च ।
 समं भावि सहियइ कम्मग्राउ, परिभमिउ लोहु जीविउ सपाउ ।
 दुल्लहु जिण धम्मु समुत्ति मग्गु, एवि संगहियउ कम्मेण लग्गउ ।
 इउ सुणिवि सरिवि जिण सिक्ख दिक्ख, हुउ गणहरु राउ असोउ भिक्ख ।
 संगहिय उपाध्यायउ अममलणाणु, केवलु गउ मोक्खहु सुह विहाणु ।
 रहि तणुउ चरिवि पवणसग्गि अच्चु, एच्छि दिवि थी लिणु भग्गो ।
 धीयउ विसग्गि संपत्त अज्ज, वउधरो दिक्खिय सुवहु सज्ज ।
 हुव केवमोक्ख गयहणि विकम्म, अणु हवहि शिरंतर मुत्ति सम्म ।
 चउधरिय लक्खणासी धरि सुलच्छि, सां पणसिरि नाम इन्दी बलच्छि ।
 रोहवउ विहिउ ताइएउ, रोहिणि कहविरइय तासु हेउ ।

धत्ता—

सिरि गुणभद्रमुणीसरेण विहिय क्हा बुधी भरेण ।

सिरि मनयकित्ति पयल जुयलणाविवि, सावयलओ यह मरुणुळविवि ।

रांदउ सिरि जिणसंख, रांदउ तहभूमि बालुणि विग्धं ।

रांदउ लख्खणु लख्खं, दितुं सया कप्पतरु वजइ भिक्खं ।

॥ इति श्री रोहिणी विधानं समाप्तं ॥

३. जिनरात्रिविधान कथा	×	अपभ्रंश	२९-२९
४. दशलक्षणकथा	मुनि गुणभद्र	”	३०-३३
५. चंदनपष्ठीकथा	आचार्य छत्रसेन	संस्कृत	३३-३६

नरदेव के उपदेश से आचार्य छत्रसेन ने कथा की रचना की थी ।

आरम्भ—

जिनं प्रणम्य चंद्राभ कर्मोवध्वान्तभास्करं ।

विधान चंदनपष्ठीयं भव्यानां कथमिहां ॥ १ ॥

द्वीपे जम्बूद्रुमं केम्बिनु क्षेत्रे भरतनामनि ।

काशी देशोस्ति विख्यातो वज्जितो बहुधावुर्धः ॥ २ ॥

अन्तिम—

आचार्यछत्रसेनेन नरदेवोपदेशतः ।

कृत्वा चंदनपष्ठीयं कृत्वा मोक्षफलप्रदा ॥ ७७ ॥

यो भव्यः कुर्वते विधानममलं स्वर्गापवर्गप्रदा ।

योन्य कार्यते करोति भविनं व्याख्याय संबोधनं ॥

भूत्वासी नरदेवयोर्वरमुखं सच्छत्रमेनावता ।

यास्यंतो जिननायकेन महते प्राप्तेति जैनं श्रीयां ॥ ७८ ॥

॥ इति चंदनपष्ठी समाप्तं ॥

६. मुक्तावली कथा	×	संस्कृत	३६-३८
------------------	---	---------	-------

आरम्भ—

यादि देवं प्रणम्योक्तं मुक्तात्मानं विमुक्तिदं ।

प्रथ संक्षेपतो वक्ष्ये कथा मुक्तावलीविधिः ॥ १ ॥

७. सुगंधदशमी कथा

रामकीर्ति के शिष्य

अपभ्रंश

३८-४१

विमल कीर्ति

आदि भाग

परावेषिणु सम्मद् जिरोसरहो जा पुव्वसूरि आगम भणिया ।
 शिमुण्णिज्जहु भवियहु इक्कमना, कहकहमि सुगंधदसमी हितशणिया ॥
 दसमिहि सुअंध विहाणुकरेविराणु तइय कप्प उप्पण्ण मरेविराणु ।
 चउदह आहरयेहि पसाहिय सागी सुहइ भुंजइ अविरोहिय ॥
 पुहवी मण्डणु पुरु सुरु दुल्लहु, राउ पयाढ दयाजण वल्लहु ।
 मानस सुंदरि गत्ति उप्पणी मयणावलि नांमि संपुष्णी ॥
 दिण्णि दिण्णि कुमरि वियावहु भत्ती भव्वलोय माणस मोहंती ।
 सामवण्ण मण्णवि सुरहि तणु जिणवरु सामिउ पज्जइ अणु दिणु ॥
 दाणु अउविह दिंति ण त्यक्कइ तह व छल्ल का वण्ण ण सकइ ।
 धम्मवंत पेखि णारणहि षोमाइयइ धम्म असगहि ।
 रायं सापरिणाविय जामहि, पुत्त कलत्तहि वदियतामहि ॥
 रामकिति गुरुविराणु करेवियु विणु विमल कीर्त्ति महिपलि पडेविणु ।
 पछइ पुणु तव परणु करेविणु सइ अणुक्रमेण सोमक्खुलहेसइ ॥

धत्ता

जो करइ करावइ एहविहि वक्खाणिय विभवियह दावेइ ।
 सो जिणणाह भासियहु सणु मोक्खु फव पावइ ॥ ८ ॥

इति सुगंधदशमीकथा समाप्ता

८. पुष्पाञ्जलि कथा

X

अपभ्रंश

४१-४२

आरम्भ

जज जय अरुह जिरोसर हयवम्मीसर मुत्तिसिरीवरगणधरण ।
 अयसय गणभासुर सहयमहीसर जुति गिराधर समकरण ॥ ६ ॥
 बलवत्तरिगणि रयणाकिति मुणि सिस्स वृहिवं दिज्जइ ।
 भावकिति जुउ अनंतकित्तिथुरु पुष्फुंजलि विहि किज्जइ ॥ ११ ॥

अन्तिम धत्ता

पुष्पाञ्जलि कथा समाप्ता

६. अनंतविधान कथा	×	अपभ्रंश	४६-५१
५४४० गुटका सं० ५६—पत्र संख्या—१८३ । भा०-७॥×६ । दत्ता-सामान्यजीर्ण ।			
१. नित्यवंदना सामायिक	×	संस्कृत प्राकृत	१-१२
२. नैमित्तिकप्रयोग	×	संस्कृत	१५
३. श्रुतभक्ति	×	"	१५
४. चारित्र्यभक्ति	×	"	१६
५. आचार्यभक्ति	×	"	२१
६. निर्वाणभक्ति	×	"	२३
७. योगभक्ति	×	"	"
८. नंदोश्वरभक्ति	×	"	२६
९. स्वयंभूस्तोत्र	आचार्य समन्तभद्र	"	४३
१०. गुर्वावलि	×	"	४५
११. स्वाध्यायपाठ	×	प्राकृत संस्कृत	५७
१२. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	६७
१३. मुप्रभाताष्टक	यतिनेमिचंद्र	"	पद्य सं० ८
१४. मुप्रभातिकस्तुति	भुवनभूषण	"	" २५
१५. स्वप्नावलि	मुनि देवनंदि	"	" २१
१६. सिद्धिप्रिय स्तोत्र	"	"	" २५
१७. भूपालस्तवन	भूपाल कवि	"	" २५
१८. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	" २६
१९. विषाणहार स्तोत्र	धनञ्जय	"	" ४०
२०. पार्वनाथस्तवन	देवचंद्र सूरि	"	" ४४
२१. कल्याण मंदिर स्तोत्र	कुमुदचन्द्रसूरि	संस्कृत	
२२. भावना बत्तीसी	×	"	
२३. कल्याणष्टक	पद्मनंदी	"	
२४. वीतराग गाथा	×	प्राकृत	

२५. मंगलाष्टक

×

संस्कृत

२६. भावना चौतीसो

भ० पद्मनांदि

”

६२-६५

आरम्भ

शुद्धप्रकाशमहिमास्तसमस्तमोहं, निद्रातिरेकमसमावगमस्वभाषं ।

ग्रानंदकंदमुदयास्तदशानभिज्ञं स्वायंभुवं भवतु धाम सतां शिवाय ॥ १ ॥

श्रीगौतमप्रभृतयोषि विभ्रोर्महिम्नः प्रायः क्षमानयनयः स्तवनं विधातुं ।

ग्रथं विचार्य जहतस्तद्मुन्नलोके सौख्याप्तये जिन भविष्यति मे किमन्यत् ॥ २ ॥

अन्तिम

श्रीमत्प्रभेन्दुप्रभुवाक्यरश्मि विकाशितः कुमदः प्रमोदात् ।

श्रीभावनापद्धतिःमात्मशुद्धयै श्रीपद्मनांदी स्वयं चकार ॥ ३४ ॥

इति श्री भट्टारक पद्मनांदिदेव विरचितं चतुस्त्रिंशद् भावना समाप्तमिति ।

२७. भवतामरस्तोत्र

आचार्य मानतुंग

संस्कृत

२८. वीतरागस्तोत्र

भ० पद्मनांदि

”

६६

आरम्भ

स्वात्मावबोधविशदं परमं पवित्रं ज्ञानैकमूर्तिमरावद्यगुरौकपात्रं ।

आस्वादिताक्षयमुखाब्जलसत्परागं, पश्यन्ति पुण्यसहिता भुवि वीतरागं ॥ १ ॥

उधत्तपस्तपराशोजितपापपंकं चैतन्यविन्दमचलं विमलं विशांकं ।

देवैन्द्रवृन्दसहितं करुणालतागं पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ २ ॥

जाग्रद्विशुद्धिमहिमावधिमस्तशोकं धर्मोपदेशविधिवेधितभव्यलोकं ।

आचारबन्धुरमतिं जनतासुरागं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ३ ॥

कदर्पं सर्पं मदनासनवैनतेयं, या पाप हरिजगदुत्तमनामधेयं ।

संसारसिधु परिमथन मदरागं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ४ ॥

एण्वाणकमुकमलारसिकं विदंभं, वद्विष्णु सद्भ्रतचर्यामृतपूर्णकुंभं ।

बलाद्धिमोहतहृल्लण्डनचण्डनगं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ५ ॥

आणंदकंद सररीकृतधर्मपंथं, ध्याग्निदग्धनिखिलोद्धतकर्मकथं ।

व्यस्ताजवाजि गणघात विधाय जोगं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ६ ॥

स्वच्छोच्छलब्धरिणिविण्जितमेघन.दं, स्याद्वाद्वादितमयाकृतसद्विषादं ।

निःसीमसंजममुधारसतत्तडागं पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ७ ॥

सम्यक्प्रमाणकुमुदाकरपूर्णाचन्द्रं मांगल्यकारणमनंतयुगं वितन्द्रं ।

इष्टप्रदाणविधिपोषितभूमिभागं, पश्यन्ति पुण्य सहिता भुवि वीतरागं ॥ ८ ॥

श्रीपद्मनन्दिरचितं किलवीतरागस्तोत्रं,

पवित्रमणवद्यमनादिनादौ ।

यः कोमलेन वक्षसा विनयाविधीते,

स्वर्गापवर्गकमलातमलं वृणीतं ॥ ९ ॥

॥ इति भट्टारक श्रीपद्मनन्दिविरचिते वीतरागस्तोत्रं समाप्तेति ॥

२९. प्राराधनासार	देवसेन	अपभ्रंश	२० सं० १०८६
३०. हनुमतानुप्रेषा	महाकवि स्वयंभू	” स्वयंभू रामयण का एक अंश	११९
३१. कालावलीपद्धती	×	”	११९
३२. ज्ञानपिण्ड की विनति पद्धटिका	×	”	१३१
३३. ज्ञानाकुश	×	संस्कृत	१३२
३४. इष्टोपदेश	पूज्यपाद	”	१३६
३५. सूक्तिमुक्तावलि	आचार्य सोमदेव	”	१४६
३६. श्रावकाचार	महापंडित प्राशाधर	” ७ वें अध्याय से आगे अपूर्ण	१८३

५४४१. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ५६ । प्रा० ८×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. रत्नत्रयपूजा	×	प्राकृत	२२-२७
२. पंचमेरु की पूजा	×	”	२७-३१
३. लघुसामायिक	×	संस्कृत	३२-३३
४. भारती	×	”	३४-३५
५. निर्वाणकाण्ड	×	प्राकृत	३६-३७

५४४२. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ५६ । प्रा० ८ $\frac{1}{2}$ ×६ इञ्च । अपूर्ण ।

विशेष—देवा ग्रहकृत हिन्दी पद संग्रह है ।

५४४३. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२८ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८२८
अपूर्ण ।

विशेष—प्रति जीर्णशीर्ण अवस्था में है । मधुमालती की कथा है ।

५४४४. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १२५ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य

१. तीर्थोदकविधान	×	संस्कृत	१-११
२. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	१२-२२
३. देवशास्त्रशुरुपूजा	"	"	२२-३६
४. जिनयज्ञकल्प	"	"	३७-१२५

५४४५. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ४० । आ० ७×७ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

५४४६ गुटका सं० ६५—पत्र संख्या-८६-४११ । आ०-८×६।। । लेखनकाल—१६६१ । अपूर्ण ।
दशा-जीर्ण ।

१. सहस्रनाम	पं० आशाधर	संस्कृत	अपूर्ण । ८६-८७
२. रत्नत्रयपूजा	पद्मनादि	अपभ्रंश	" ८७-९३
३. नंदीश्वरपंक्तिपूजा	"	संस्कृत	" ९३-९७
४. बड़ीसिद्धपूजा (कर्मदहन पूजा)	सोमदत्त	"	९८-१०६
५. सारस्वतयंत्र पूजा	×	"	१०७
६. बृहत्कलिकुण्डपूजा	×	"	१०७-१११
७. गंगाधरवल्लभपूजा	×	"	१११-११५
८. नंदीश्वरजयमाल	×	प्राकृत	११६
९. बृहत्षोडशकारणपूजा	×	संस्कृत	११६-१२८
१०. ऋषिमंडलपूजा	ज्ञान भूषण	"	१२८-३६
११. मातिचक्रपूजा	×	"	१३७-३८
१२. पञ्चमेरूपूजा (पुष्पाञ्जलि)	×	अपभ्रंश	१३९-४१
१३. पराकरहा जयमाल	×	"	१४२
१४. बारह अनुप्रेक्षा	×	"	१४३-४७

१५. मुनीश्वरों की जयमाल	×	अपभ्रंश	१४७
१६. रामोकार पाण्डी जयमाल	×	"	१४९
१७. चौबीस जिनंद जयमाल	×	"	१५०-१५२
१८. दशलक्षण जयमाल	रङ्घू	"	१५३-१५५
१९. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत	१५५-१५७
२०. कल्याणमंदिरस्तोत्र	कुमुदचंद्र	"	१५७-१५८
२१. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"	१५८-१६०
२२. अकलंकाष्टक	स्वामी अकलंक	"	१६०
२३. भूपालचतुर्विंशति	भूपाल	"	१६१-६२
२४. स्वयंभूस्तोत्र (इष्टोपदेश	पूज्यपाद	"	१६२-६४
२५. लक्ष्मीमहास्तोत्र	पद्मनिदि	"	१६४
२६. लघुसहस्रनाम	×	"	१६५
२७. सामायिकपाठ	×	प्राकृत संस्कृत ले० सं०	१६७५, १६५-७०
२८. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनंदि	संस्कृत	१७१
२९. भावनाद्वात्रिंशिका	×	"	१७१-७२
३०. विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	"	१७२-७४
३१. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१७४-७८
३२. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्र	अपभ्रंश	१७९-८८
		ले० सं०	१६६१ वैशाख सुदी ५ ।
३३. सुप्पयदोहा	×	×	१८८-९०
३४. परमानंदस्तोत्र	×	संस्कृत	१९१
३५. यतिभावनाष्टक	×	"	"
३६. कर्मणष्टक	पद्मनिदि	"	१९२
३७. तत्त्वसार	देवसेन	प्राकृत	१९४
३८. दुर्लभानुप्रेक्षा	×	"	"
३९. वैराग्यगीत (उदरगीत)	छीहल	हिन्दी	१९५
४०. मुनिमुन्यतनाष्टस्तुति	×	अपभ्रंश	अपूर्णा १९५

६३८]

[गुटका-संग्रह

४१. सिद्धचक्रपूजा	×	संस्कृत	१६६-६७
४२. जिनशासनभक्ति	×	प्राकृत अपूर्ण	१६६-२००
४३. धर्मदुहेला जैनी का (त्रेपनक्रिया)	×	हिन्दी	२०२-३७

विशेष—लिपि संवत् १६६६ । आ० शुभचन्द्र ने गुटके की प्रतिलिपि करायी तथा श्री माधवसिंहजी के शासनकाल में गढ़कोटा ग्राममें हरजी जोशी ने प्रतिलिपि की ।

४४. नेमिजिह्वद व्याहलो	खेतसी	हिन्दी	२३७-४२
४५. गणधरबलययंत्रमण्डल (कीठे)	×	"	२४२
४६. कर्मदहन का मण्डल	×	"	२४३
४७. दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	सुमतिसागर	हिन्दी	२४३-६४
४८. पंचमीव्रतोद्यापनपूजा	केशवसेन	"	२६४-७४
४९. रोहिणीव्रत पूजा	×	"	२७५
५०. त्रेपनक्रियोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	२७५-८६
५१. जिनगुणउद्यापन	×	हिन्दी अपूर्ण	२८६-६४
५२. पंचेन्द्रियवैलि	छोहल	हिन्दी अपूर्ण	३०७
५३. नेमीसुर कवित्त (नेमीसुर राजमत्तीवैलि)	कवि ठक्कुरसो (कविदेल्ह का पुत्र)	"	३०७-०६
५४. विज्जुचर की जयमाल	×	"	३०६-६१
५५. हणवंतकुमार जयमाल	×	अपभ्रंश	३११-१४
५६. निर्वाणकाण्डगाथा	×	प्राकृत	३१४
५७. कृपणचन्द्र	ठक्कुरसी	हिन्दी	३१४-१७
५८. मानलघुबावनी	मनासाह	"	३१८-२१
५९. मान की डडी बावनी	"	"	३२२-२८
६०. नेमीश्वर को रास	भाउकवि	"	३२६-३३
६१. "	ब्रह्मरायमल्ल	"	२० सं० १६१५, ३३३-४१
६२. नेमिनाथरास	रत्नकीर्ति	"	३४१-३४३
६३. श्रीमालरासो	ब्रह्मरायमल्ल	"	२. सं. १६३० ३४३-५५

६४. मुदर्शनरासो

ब्रह्म रायमल्ल

हिन्दी र सं. १६२६ ३५६-६६

संवत् १६६१ में महाराजाधिराज माधोसिंहजी के शासन काल में मालपुरा में श्रीलाला भांबसा ने अक्षय

पठनार्थ लिखवाया ।

६५. जोगीरासा	जिनदास	हिन्दी	३६७-६८
६६. सोलहकारणरास	श० सकलकीर्ति	"	३६८-६९
६७. प्रद्युम्नकुमाररास	ब्रह्मरायमल्ल	"	३६९-८३

रचना संवत् १६२८ । गढ हरलीर में रचना की गई थी ।

६८. सकलीकरणविधि	×	संस्कृत	३८३-९५
६९. बीसविरहमाणपूजा	×	"	३९५-९७
७०. पंकल्याणकपूजा	×	"	अपूर्णा ३९८-४११

५४४७. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ३७ । आ० ७×५ इंच । अपूर्णा । दशा-सामान्य ।

१. भक्तामरस्तोत्र मंत्र सहित	मानसुंगाचार्य	संस्कृत	१-२६
२. पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	२६-२७

५४४८. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ७० । आ० ८३×६ इंच । अपूर्णा । दशा-जीर्ण ।

१. नवकारमंत्र आदि	×	प्राकृत	१
२. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	८-२१

हिन्दी अर्ध सहित । अपूर्णा

३. जम्बूस्वामी चरित्र	×	हिन्दी	अपूर्णा
४. चन्द्रहंसकथा	टीकमचन्द	"	र. सं. १७०८ । अपूर्णा
५. श्रीपालजी की स्तुति	"	"	पूर्णा
६. स्तुति	"	"	अपूर्णा

५४४९. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ८८-११२ । भाषा-हिन्दी । अपूर्णा । ले० काल सं० १७८० चैत्र
वर्ष १३ ।

विशेष—प्रारम्भ में वैश्व मनोत्सव एवं बाद में आयुर्वेदिक नुसखे हैं ।

५४५०. गुटका सं० ६९ । पत्र सं० ११८ । आ० ९×६ इंच । हिन्दी । पूर्णा ।

विशेष—बनारसीदास त समयसार नाटक है ।

५४५१. गुटका सं० ७० । पत्र सं० १४ । आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-सिद्धान्त
अपूर्ण एवं अशुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष—इस गुटके में उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र की (हिन्दी) टीका दी हुई है । टीका सुन्दर एवं विस्तृत
है तथा पाण्डे रूपचन्दनी कृत है ।

५४५२ गुटका सं० ७१ । पत्र सं० ३५-२२२ । आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×६ इंच । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. स्वरोदय	×	हिन्दी	३५-४१
२. सूर्यकवच	×	संस्कृत	४२
३. राजनीतिशास्त्र	चरणक्य	"	४३-५७
४. देवसिद्धपूजा	×	"	५८-६३
५. दशलक्षणपूजा	×	"	६४-६५
६. रत्नत्रयपूजा	×	"	६५-७३
७. सोलहकारणपूजा	×	"	७३-७५
८. पार्व्वनाथपूजा	×	"	७५-७६
९. कलिकुण्डपूजा	×	"	७६-७८
१०. क्षेत्रपालपूजा	×	"	७८-८२
११. न्हवनविधि	×	"	८२-८५
१२. लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	८५
१३. तत्त्वार्थसूत्र तीन अध्याय तक	उमास्वामि	"	८५-८७
१४. शांतिपाठ	×	"	८८
१५. रामविनोद भाषा	रामविनोद	हिन्दी	८९-२२२

५४५३. गुटका सं० ७२ । पत्र सं० २०४ । आ० ९ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$ इंच । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. नाटक समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	१-१११
			रचना संवत् १६९३ लिपि सं० १७७९ ।
२. बनारसीविलास	"	हिन्दी	अपूर्ण
३. स्त्रीमुक्तिखण्डन	×	"	अपूर्ण पत्र सं० ३९-७०

५४५४. गुटका सं० ७३ । पत्र सं० १५२ । आ० ७×६ इंच । अपूर्ण । दशा-जीर्ण शीर्ष ।

१. रागु आसावरी
रूपचन्द
अपभ्रंश
१
प्रारम्भ—

विसउणामेण कुरुजंगले तहि यह वाउ जीउ राजे ।

धराकरणायर पूरियउ करायप्पहु धराउ जीउ राजे ॥ १ ॥

विशेष— गीत अपूर्ण है तथा अस्पष्ट है ।

२. पद्धड़ी (कौमुदीमध्यात्)
सहरणपाल
अपभ्रंश
२-७
प्रारम्भ—

हाहउं धम्मभुउ हिडिउ संसारि असारइ ।

कोइपए सुणउ, गुणदिठ्ठु संख बिणु वारइ ॥ छ ॥

अन्तिम घत्ता—

पुणुमंति कहइ सिवाय सुणि, साहरणमेयहु किज्जइ ।

परिहरि विणेहु सिरि सतियत संघि सुमइं साहिज्जइ ॥ ६ ॥

॥ इति सहरणपालकृते कौमुदीमध्यात् पद्धड़ी छन्द लिखितं ॥

३. कल्याणकविधि
मुनि विनयचन्द
अपभ्रंश
७-१३
प्रारम्भ—

सिद्धि सुहंकरसिद्धियहु

पणविधि तिजइ पयासण केवलसिद्धिहि कारणधुणामिहउं ।

सयलवि जिण कल्लाण निहयमल सिद्धि सुहंकरसिद्धियहु ॥ १ ॥

अन्तिम—

एयभत्तु एककु जि कल्लाणउ विहिरिणव्वियडि अहवइ गणणउ ।

अहवासाय लहखवणविहि, विणयचंदि सुणि कहिउ समत्थह ॥

सिद्धि सुहंकर सिद्धियहु ॥ २५ ॥

॥ इति विनयचन्द कृतं कल्याणकविधिः समाप्ता ॥

४. चूनड़ी (विणयं वंदिवि पंच गुरु)
मति विनयचन्द
अपभ्रंश
१३-१७

५. अणुथमिति संधि	हरिश्चन्द्र अग्रवाल	अपभ्रंश	१७-२४
६. सम्माधि	×	"	२४-२७
७. मणुवसंधि	×	"	२७-३१
८. एरणपिंड	×	"	३१-४५
विशेष—२० कडवक है ।			
९. श्रावकाचार दोहा	रामसेन	"	४५-५९
१०. दशलाक्षणीकरास	×	"	५९-६०
११. श्रुतपञ्चमीकथा	स्वयंभू	"	६१-६७
(हरिवंश मध्यात् विदुर वैराग्य कथानके)			
१२. पद्धड़ी	यशःकीर्ति	"	६७-७०
(यशःकीर्ति विरचित चंद्रप्रभचरित्रमध्यात्)			
१३. रिदुलोमिचरित (१७-१८ संधि)	स्वयंभू	" (धवलाश्रित)	७७-८६
१४. वीरचरित्र (अनुप्रेक्षा भाग)	रङ्ग	"	८६-८९
१५. चतुर्गति की पद्धड़ी	×	"	८९-९१
१६. सम्यक्त्वकौमुदी (भाग १)	सहरापाल	"	९१-९४
१७. भावना उरतीली	×	"	९४-९९
१८. गौतमपृच्छा	×	प्राकृत	१००-०२
१९. आदिपुराण (कुछ भाग)	पृष्ठपदन्त	अपभ्रंश	१०२-३१
२०. यशोधरचरित्र (कुछ भाग)	"	"	१३२-४६

५४५५ गुटका सं० ७४ । पत्र सं० २३ से १२३ । आ० ६५९ इञ्च । अपूर्ण ।

१. फुटकर पद्य	×	हिन्दी	२३-३१
२. पञ्चमङ्गल	रूपचन्द्र	"	३२-४३
३. कहराष्टक	×	"	४४
४. पार्श्वनाथजयमाल	लोहट	"	४५
५. विनती	भूधरदास	"	४७
६. ते गुरु मेरे उर बसो	"	" ले० काल सं० १७६६	४९

७. जकड़ी	द्यानतराय	हिन्दी	५१
८. मगन रहो रे तू प्रभु के भजन में	वृन्दावन	"	५२
९. हम आये हैं जिनराज तोरे वंदन को	द्यानतराय	"	ले० काल सं० १७९६ "
१०. राजुलपच्चीसी	विनोदीनाल लालचन्द	"	५३-६०

विशेष—ले० काल सं० १७९६ । दयाचन्द लुहाड़िया ने प्रतिलिपि की थी । पं० फकीरचन्द कासलीवाल ने प्रतिलिपि करवायी थी ।

११. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी	६१-६३
१२. श्रीपालजी की स्तुति	"	"	६३-६४
१३. मनां रे प्रभु चरणा ल बुलाय	हरीसिंह	"	६४
१४. हमारी करुणा ल्यो जिनराज	पद्मनन्दि	"	६४
१५. पानीका पतासा जैसा तनका तमाशा है [कवित्त] केशवदास		"	६६-६८
१६. कवित्त	जयकिशन सुंदरदास आदि	"	६९-७२
१७. गुणवेलि	×	हिन्दी	७५
१८. पद—पारा देश में हो लाल गढ़ बड़ो गिरनार	×	"	७७
१९. कक्का	गुलाबचन्द	"	७८-८२
२०. पंचबधावा	×	हिन्दी	८४
२१. मोक्षपेडी	×	"	८६
२२. भजन संग्रह	×	"	९२
२३. दानकीवीनती	जत्तीदास	संस्कृत	९३

२० काल सं० १७९० ले० काल सं० १८००

२४. शकुनावली	×	हिन्दी	लिपिकाल १७९७ ९९-१०५
२५. फुटकर पद एवं कवित्त	×	"	१२३

निहालचन्द अजमेरा ने प्रतिलिपि की संवत् १८१४ ।

५४५६ गुटका सं० ७४—पत्र संख्या—११६ । आ०—४३×४३ इंच । ले० काल सं० १८४८ । दशा

सामान्य । अपूर्ण ।

१. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	हिन्दी
२. कल्याणमंदिरभाषा	बनारसीदास	"

३. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	
४. श्रीपालजी की स्तुति	×	हिन्दी	
५. साधुवन्दना	बनारसीदास	"	
६. बीसतीर्थङ्करों की जकडी	हर्षकीर्ति	"	
७. बारहभावना	×	"	
८. दर्शनाष्टक	×	हिन्दी	सब दर्शनों का वर्णन है ।
९. पद-चरण केवल को ध्यान	हरीसिंह	"	"
१०. भक्तामरस्तोत्रभाषा	×	"	"

५४५७ गुटका सं० ७६ । पत्र संख्या—१८० । आ०—५॥×४॥ लेखन सं० १७८३ । जीर्ण ।

१. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	
२. नित्यपूजा व भाद्रपद पूजा	×	"	
३. नंदीश्वरपूजा	×	"	
पंडित नगराज ने हिरण्योदा में प्रतिलिपि की ।			
४. श्रीसीमंघरजी की जकड़ी	×	हिन्दी	प्रतिलिपि गुढ़ा में की गई ।
५. सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनांदि	संस्कृत	
६. एकीभावस्तोत्र	बादिराज	"	
७. जिनजपिजिन जपि जीवरा	×	हिन्दी	
८. चितामणिजी की जयमाल	मनरथ	"	जोवनेरमें नगराजने प्रतिलिपि की थी ।
९. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	संस्कृत	
१०. भक्तामरस्तोत्र	आचार्यमानतुंग	"	

५४५६ गुटका सं० ७७ । पत्र सं० १२५ । आ० ६×४ इंच । भाषा-संस्कृत । ले० सं० काल १८१६

माह सुदी १२ ।

१. देवसिद्धपूजा	×	संस्कृत	१-३५
२. नंदीश्वरपूजा	×	"	३३-४४
३. सोलहकारण पूजा	×	"	४४-५०
४. दशलक्षणपूजा	×	"	५०-५५

५. रत्नत्रयपूजा	×	हिन्दी	५६-६१
६. पार्वनाथपूजा	×	"	६२-६७
७. शांतिपाठ	×	"	६७-६९
८ तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	७०-११४

५४५६. गुटका सं० ७८ । पत्र संख्या १६० । आ० ६×४ इंच । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

विशेष—दो गुटकों का सम्मिश्रण है ।

१. ऋषिमण्डल स्तवन	×	संस्कृत	२०-२७
२. चतुर्विंशति तीर्थङ्कर पूजा	×	"	२८-३१
३. चिंतामणिस्तोत्र	×	"	३६
४. लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	३७-३८
५. पार्वनाथस्तवन	×	हिन्दी	३९-४०
६. कर्मदहन पूजा	भ० शुभचन्द्र	संस्कृत	१-४३
७. चिंतामणि पार्वनाथ स्तवन	×	"	४३-४८
८. पार्वनाथस्तोत्र	×	"	४८-५३
९. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	५४-६१
१०. चिंतामणि पार्वनाथ पूजा	भ० शुभचन्द्र	"	६१-८६
११. गरुडरवलय पूजा	×	"	८६-११४
१२. अष्टाह्निका कथा	यशःकीर्ति	"	१०४-११२
१३. अनन्तव्रत कथा	ललितकीर्ति	"	११२-११८
१४. सुगन्धदशमी कथा	"	"	११८-१२७
१५. षोडशकारण कथा	"	"	१२७-१३६
१६. रत्नत्रय कथा	"	"	१३६-१४१
१७. जिनचरित्र कथा	"	"	१४१-१४७
१८. आकाशपंचमी कथा	"	"	१४७-१५३
१९. रोहिणीव्रत कथा	"	"	अपूर्ण १५४-१५७

६५६]

[गुटका-संग्रह

२०. ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	संस्कृत	१५८-१६१
२१. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	१६२-६३
२२. शांत्क होम विधि	×	"	१७४-७६
२३. चौन्नीसी विनती	भ० रत्नचन्द्र	हिन्दी	१८६-८६

५४६०. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० ३३ । आ० ७×४३ इंच । अपूर्ण ।

१. राजनोतिशास्त्र	चाणक्य	संस्कृत	१-२८
२. एकोश्लोक रामायण	×	"	२६
३. एकोश्लोक भागवत	×	"	"
४. गणेशद्वादशनाम	×	"	३०-३१
५. नवग्रहस्तोत्र	वेदव्यास	"	३२-३३

५४६१. गुटका सं० ८० । पत्र सं० १८-४४ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत तथा हिन्दी ।

अपूर्ण ।

विशेष—पञ्चमंगल, बाईस परिषद्, देवापूजा एवं तत्त्वार्थसूत्र का संग्रह है ।

५४६२ गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २-२६ । आ० ५६×४ इंच । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण । दशा—

सामान्य ।

विशेष—नित्य पूजा एवं पाठों का संग्रह है ।

५४६३ गुटका सं० ८३ । पत्र सं० ३० । आ० ६×४ इंच । भाषा संस्कृत । ले० काल सं० १८८३ ।

विशेष—पद्मावती स्तोत्र एवं जिनसहस्रनाम (पं० आशाधर) का संग्रह है ।

५४६४ गुटका सं० ८४ । पत्र सं० १८-५१ । आ० ७×४३ इंच ।

१. स्वस्थयमनविधि	×	संस्कृत	१८-२०
२. सिद्धपूजा	×	"	२१-२३
३. षोडशकारणपूजा	×	"	२४-२५
४. दशलक्षणपूजा	×	"	२६-२७
५. रत्नत्रयपूजा	×	"	२८-३७
६. गुरुपूजाष्टक	×	"	३८-३९

७. चितामणिपूजा	×	संस्कृत	३६-४१
८. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	४२-५१

५४६५. गुटका सं० ८५ । पत्र सं० २२ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—संस्कृत । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—पत्र ३-४ नहीं हैं । जिनसेनाचार्य कृत जिन सहस्रनाम स्तोत्र है ।

५४६६. गुटका सं० ८६ । पत्र सं० ५ से २५ । आ० ६×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—१८ से ८७ सर्वियों का संग्रह है किन्तु किस ग्रंथ के हैं यह अज्ञात है ।

५४६७. गुटका सं० ८७ । पत्र सं० ३३ । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. जैनरक्षास्तोत्र	×	संस्कृत	१-३
२. जिनपिजरस्तोत्र	×	"	४-५
३. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	६
४. चक्रेश्वरीस्तोत्र	×	"	७
५. पद्मावतीस्तोत्र	×	"	७-१५
६. ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	"	१५-१८
७. ऋषि मंडलस्तोत्र	गौतम गणधर	"	१८-२४
८. सरस्वतीस्तुति	प्राशाधर	"	२४-२६
९. शीतलाष्टक	×	"	२७-३२
१०. क्षेत्रपालस्तोत्र	×	"	३२-३३

५४६८. गुटका सं० ८८ । पत्र सं० २१ । आ० ७×५ इञ्च । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—गर्गाचार्य विरचित पाशा केवली है ।

५४६९. गुटका सं० ८९ । पत्र सं० ११४ । आ० ६×५ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—प्रारंभ में पूजाओं का संग्रह है तथा अन्त में अचलकीर्ति कृत मंत्र नवकाररास है ।

५४७० गुटका सं० ९० । पत्र सं० ५० से १२० । आ० ८×४ इंच । भाषा—संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—भक्ति पाठ तथा चतुर्विंशति तीर्थङ्कर स्तुति (आचार्य समन्तभद्रकृत) है ।

५४७१ गुटका सं० ९१ । पत्र सं० ७ से २२ । आ० ६×६ इंच । भाषा—स्तोत्र । अपूर्ण । दशा—

१. संबोध पंचासिकाभाषा	द्यानतराय	हिन्दी	७-८
२. भक्तामरभाषा	हेमराज	"	९-१४
३. कल्याण मंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"	१५-२२

५४७२. गुटका सं० ६२। पत्र सं० १३०-२०३। आ० ८×८ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल १८३३। अपूर्ण। दशा नामान्य।

१. भविष्यदत्तरास	रायमल्ल	हिन्दी	१३०-८५
२. जिनपञ्जरस्तोत्र	×	संस्कृत	१८५ ८७
३. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"	१८८
४. स्तवन (अरिहन्त संत का)	×	हिन्दी	१८९-९३
५. चेतनचरित्र	×	"	१९३-२०३

५४७३. गुटका सं० ६३। पत्र सं० २५-१०८। आ० ५×३ इंच। अपूर्ण।

विशेष—प्रारम्भ के २४ पत्र नहीं हैं।

१. पार्श्वनाथपूजा	×	हिन्दी	२५
२. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	५४
३. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	६२
४. सासू बहू का भगडा	ब्रह्मदेव	हिन्दी	६५
५. पिया चले गिरवर कूं	×	"	६७
६. नाभि नरेन्द्र के नंदन कूं जग बंदन	×	"	६८
७. सीताजी की विनती	×	"	७१
८. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	७२-९४
९. पद- अरज करां छा जिनराजजी राग सारंग	×	हिन्दी	अपूर्णा ९६
१०. " की परि करोजी गुमान ये कै दिनका महमान, बुधजन		"	९७
११. " लगनि मोरी लगी ऐसी	×	"	९९
१२. " शुभ गति पावन याही चित धारोजी	नवल	"	९९
१३. " जाऊंगी संगि नेम कंवार	×	"	१००
१४. " दुक नजर महर की करना	भूधरदास	"	१०२

१५. खेलत है होरी मिलि साजन की टोरी (राग काफी)	हरिश्चन्द्र	हिन्दी	१०२
१६. देखो करमा सूं फुन्द रही भजरी	किशनदास	"	१०३
१७. सखी नेमीजीसूं मोहे मिलावोरी (रागहोरी)	द्यानतराय	"	"
१८. दुरमति दूरि खड़ी रहो री	देवीदास	"	१०५
१९. अरज सुनो म्हारी अन्तरजामी	खेमचन्द	"	१०६
२०. जिनजी की छवि मुन्दर या मेरे मन भाई	×	"	अपूर्णा १०८

५४७४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ३-४७ । आ० ५×५ इंच । ले० काल सं० १८२१ । अपूर्णा ।

विशेष—पत्र संख्या २६ तक केशवदास कृत वैद्य मनोत्सव है । आयुर्वेद के नुसखे हैं । तेजरी, इकांतरा आदि के मंत्र हैं । सं० १८२१ में श्री हरलाल ने पावटा में प्रतिलिपि की थी ।

५४७५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० १८७ । आ० ४×३ इञ्च । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. आदिपुराण	जिनसेनार्य	संस्कृत	१-११८
२. चर्चासमाधान	भूधरदास	हिन्दी	११९-१३७
३. सूर्यस्तोत्र	×	संस्कृत	१३८
४. सामायिकपाठ	×	"	१३८-१४४
५. मुनीश्वरों की जयमाल	×	"	१४५-१४६
६. शांतिनाथस्तोत्र	×	"	१४७-१४८
७. जिनपंजरस्तोत्र	कमलमलसूरि	"	१४९-१५१
८. भैरवाष्टक	×	"	१५१-१५६
९. अकलंकाष्टक	अकलंक	"	१५६-१५९
१०. पूजापाठ	×	"	१६०-१६७

५४७६. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० १९० । आ० ३×३ इञ्च । ले० काल सं० १८५७ फागुण सुदी ८ ।

पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. विषापहार स्तोत्र	धनञ्जय	संस्कृत	१-५
२. ज्वालामालिनीस्तोत्र	×	"	

३. चितामणिपार्श्वनाथस्तोत्र	×	संस्कृत	
४. लक्ष्मीस्तोत्र	×	"	
५. चैत्यवन्दना	×	"	
६. ज्ञानपञ्चोसी	बनारसीदास	हिन्दी	२०-२४
७. श्रीपालस्तुति	×	"	२५-२८
८. विषापहारस्तोत्रभाषा	अचलकीर्ति	"	२९-३१
९. चौबीसतीर्थङ्करस्तवन	×	"	३३-३७
१०. पंचमंगल	रूपचंद	"	३८-४७
११. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	४८-५९
१२. पद-मेरी रे लगावो जिनजी का नावसू	×	हिन्दी	६०
१३. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	"	६१-७०
१४. नेमीश्वर की स्तुति	भूधरदास	हिन्दी	७१-७२
१५. जकड़ी	रूपचंद	"	७३-७५
१६. "	भूधरदास	"	७६-८३
१७. पद- लीयो जाय तो लीजे रे मानी जिनजी को नाम सब भलो	×	"	८४-८५
१८. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	८५-८९
१९. षण्टाकर्णमंत्र	×	"	९०-९६
२०. तीर्थङ्करादि परिचय	×	"	९७-१६२
२१. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	१६३-६५
२२. पारसनाथजी की नियामी	×	हिन्दी	१६६-७७
२३. स्तुति	कनककीर्ति	"	१८०-८२
२४. पद-(बड़्ठू श्रीजिनराय मनवच काय करानी)	×	"	

५४७७. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ७५ । आ० ३×५½ इञ्च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दवा सामान्य ।

विशेष-गुटकाजौरी शीर्ष हो चुका है । अक्षर मिट चुके हैं ।

२. भक्ताभरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	"
३. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	"
४. कल्याणमंदिरस्तोत्र	कुमुदचंद्र	"
५. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	"
६. वर्धमानस्तोत्र	×	"
७. स्तोत्र संग्रह	×	"

३६-७२

५४७८. गुटका सं० ६८ पत्र सं० १३-११५ । प्रा० २३×२३ इञ्च । भाषा-हस्तलिखित । अपूर्ण ।

दशा सामान्य ।

विशेष-नित्य पूजा एवं षोडशकारणादि भाद्रपद पूजाओं का संग्रह है ।

५४७९. गुटका सं० ६९ । पत्र सं० ४-१०५ । प्रा० ४×३ इञ्च ।

१. कक्काबतीसी	×	हिन्दी	४-१३
२. त्रिकालचीवीसी	×	"	१४-१७
३. भक्तिपाठ	कनककीर्ति	"	१७-२०
४. तीसचीवीसी	×	"	२१-२३
५. पहेलियां	भारु	"	२४-६३
६. तीनचीवीसीरास	×	"	३४-६६
७. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	"	६७-७३
८. श्रीपाल बीनती	×	"	७४-७८
९. भजन	×	"	७९-८०
१०. नवकार बड़ी बीनती	ब्रह्मदेव	"	सं० १८४१ ८१-८२
११. राजुल पच्चीसी	विनोबीलाल	"	८३-१०१
१२. नेमीश्वर का व्याहला	लालचन्द्र	"	अपूर्णा १०१-१०५

५४८०. गुटका सं० १०० । पत्र सं० २-८० । प्रा० १०×६ इञ्च । अपूर्ण । दशा सामान्य ।

१. जिनपच्चीसी	नवलराम	हिन्दी	२
२. आदिनाथपूजा	रामचंद्र	"	२-३
३. सिद्धपूजा	×	संस्कृत	४-५

४. एकीभावस्तोत्र	बादिराज	संस्कृत	५-६
३. जिनपूजाविधान (देवपूजा)	×	हिन्दी	७-१५
६. छद्मदाला	द्यानतराय	"	१६-१८
७. भक्तामरस्तोत्र	मानतु गाचार्य	संस्कृत	१३-१५
क. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१५-२१
६. सोलहकारणपूजा	×	"	२२-२४
१०. क्वालक्षणापूजा	×	"	२५-३२
११. रत्नत्रयपूजा	×	"	३३-३६
१२. पञ्चपरमेष्ठीपूजा	×	हिन्दी	३७
१३. नंदीश्वरद्वीपपूजा	×	संस्कृत	३७-३९
१४. शास्त्रपूजा	×	"	४०
१५. सरस्वतीपूजा	×	हिन्दी	४१
१६. तीर्थङ्करपरिचय	×	"	४२
१७. नरक-स्वर्ग के यंत्र पृथ्वी आदि का वर्णन	✱	"	४३-५०
१८. जैनशतक	भूधरदास	"	५१-५९
१९. एकीभावस्तोत्रभाषा	"	"	६०-६१
२०. द्वादशानुप्रेक्षा	×	"	६१-६३
२१. दर्शनस्तुति	×	"	६३-६४
२२. साधुवंदना	बनारसीदास	"	६४-६५
२३. पंचमङ्गल	रूपचन्द	हिन्दी	६५-६९
२४. जोगीरासो	जिनदास	"	६९-७०
२५. चर्चामें	×	"	७०-८०

५४८१. गुटका सं० १०१ । पत्र सं० २-२१ । आ० ८३×८३ इंच । भाषा-प्राकृत । विषय-चर्चा । अपूर्ण । दशा-सामान्य । चौबीस ठाणा का पाठ है ।

५४८२. गुटका सं० १०२ । पत्र सं० २-२३ । आ० ५×४ इंच । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । दशा-सामान्य । निम्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

१. भूल क्यों गया जी म्हानें	×	हिन्दी	२
२. जिन छवि पर जाऊं मैं वारी	राम	"	२
३. अंखिया लगी तैड़े	×	"	२
४. दृगति सुख पायो जिनवर देखि	×	"	२
५. लगन मोहे लगी देखन की	बुधजन	"	३
६. जिनजी का ध्यान में मन लगि रह्यो	×	"	३
७. प्रभु मिल्या दीवानो विछोवा कैसे किया सइयां	×	"	४
८. नहीं ऐसो जनम बारम्बार	नवलराम	"	४
९. आनन्द मङ्गल आज हमारे	×	"	४
१०. जिनराज भजो सोहो जीत्यो	नवलराम	"	५
११. सुभ पंथ लगे ज्यो होय भला	"	"	५
१२. छांडदे मनकी हो कुटिलता	"	"	५
१३. सबन में दया है धर्म को मूल	"	"	६
१४. दुख काहू नहीं दीजे रे भाई	×	"	६
१५. मारण लाग्यो	नवलराम	"	६
१६. जिन चरणां चित लगाय मन	"	"	७
१७. हे मां जा मिलिये भी नेमकवार	"	"	७
१८. म्हारो लाग्यो प्रभु सूं नेह	"	"	८
१९. थां ही संग नेह लग्यो है	"	"	९
२०. थां पर वारी हो जिनराय	"	"	९
२१. मो मन थां ही संग लाग्यो	"	"	९
२२. धनि घड़ी ये भई देखे प्रभु नेना	"	"	९
२३. वीर री पीर मोरी कासों कहिये	"	"	१०
२४. जिनराय घ्यावो भवि भाव से	"	"	१०
२५. समी जाय जादो पति को समझावो	"	"	११
२६. प्रभुजी म्हारी बिनती अवधारो हो राज	"	"	११

२७. ईं विध खेलिये हो चतुर नर	नवलराम	हिन्दी	१२
२८. प्रभु गुन गावो भविक जन	"	"	१२
२९. यो मन म्हारो जिनजी सूं लाग्यो	"	"	१३
३०. प्रभु चूक तकसीर मेरी माफ करो के	"	"	१३
३१. दरसन करत अघ सब नसे	"	"	१३
३२. रे मन लोभिया रे	"	"	१४
३३. भरत नृप वैरागे चित भीनो	"	"	१५
३४. देव दीन को दयाल जानि चरण शरण आयो	"	"	"
३५. गावो हे श्री जिन विकल्प छारि	"	"	"
३६. प्रभुजी म्हारो अरज सुनो चितलाय	"	"	१६
३७. ये शिक्षा चित लाई	"	"	१६-१७
३८. मैं पूजा फल बात सुनौ	"	"	१८
३९. जिन सुमरन की बार	"	"	"
४०. सामायिक स्तुति वंदन करि के	"	"	१९
४१. जिनन्दजी की रख रख नैन लाय	संतदास	"	"
४२. चेतो क्यों न ज्ञानी जिया	"	"	२०
४३. एक अरज सुनो साहब मोरी	द्यानतराय	"	"
४४. मो से अपना कर द्यार रिखभ दीन तेरा	बुधजन	"	२०
४५. अपना रंग में रंग द्योजी साहब	×	"	"
४६. मेरा मन मधुकर अटक्यो	×	"	२१
४७. भैया तुम चोरी त्यागोजी	पारसदास	"	"
४८. घड़ी २ पल २ छिन २	दौलतराम	"	"
४९. घट घट नटवर	×	"	२२
५०. मारग अनो जोय सुजानी डोरे	×	"	"
५१. मुनि जीया रे चिरकाल रे सोयो	×	"	"
५२. जग डसिया रे भाई	मूधरदास	"	"

५३. आई सोही सुगुरु बखानि रे	नवलराम	हिन्दी	२३
५४. हो मन जिनजी न क्यों नहीं रटे	"	"	"
५५. की परि इतनी मगरूरी करी	"	"	अपूर्णा

५४८३. गुटका सं० १०३ । पत्र सं० ३-२० । आ० ६×५ इञ्च । अपूर्णा । दशा-जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५४८४. गुटका सं० १०४ । पत्र सं० ३०-१४४ । आ० ६×५ इञ्च । ने० काल स० १७२८ कार्तिक

मुदी १५ । अपूर्णा । दशा-जीर्ण ।

१. रत्नत्रयपूजा	×	प्राकृत	३०-३२
२. नन्दीश्वरद्वीप पूजा	×	"	३३-४७
३. स्नपनविधि	×	संस्कृत	४८-६०
४. क्षेत्रपालपूजा	×	"	६०-६४
५. क्षेत्रपालाष्टक	×	"	६४-६५
६. वन्देतान की जयमाला	×	"	६५-६९
७. पार्ष्वनाथ पूजा	×	"	७०
८. पार्ष्वनाथ जयमाल	×	"	७०-७३
९. पूजा धमाल	×	संस्कृत	७४
१०. चितामणि की जयमाल	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	७५
११. कलिकुण्डस्तवन	×	प्राकृत	७६-७८
१२. विद्यमान बीस तीर्थङ्कर पूजा	नरेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	८२
१३. पद्मावतीपूजा	"	"	८५
१४. रत्नावली व्रतों की तिथियों के नाम	"	हिन्दी	८५-८७
१५. ढाल मंगल की	"	"	८८-८९
१६. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	८९-१०२
१७. जिनयज्ञादिविधान	×	"	१०२-१२१
१८. व्रतों की तिथियों का व्यौरा	×	हिन्दी	१२१-१३६

५४८५. गुटका सं० १०५ । पत्र सं० ११७ । आ० ६×६ इंच ।

१. षट्ऋतुवर्णन बारह मासा	जनराज	हिन्दी	अपूर्णा	२४-४३
२. कवित्त संग्रह	×	"		४३-६१
निम्न कवियों के नायक नायिका संबंधी कवित्त हैं ।				
३. उपदेश पञ्चोसो	×	हिन्दी	अपूर्णा	६२-६३
४. कवित्त	मुखलाल	"		६६-६७

५५८६. गुटका सं० १०६ । पत्र सं० २४ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र है ।

५५८७. गुटका सं० १०७ । पत्र सं० २०-६४ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७४८

वैशाख सुदी १४ । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. कृष्णरुक्मिणीबेलि हिन्दी गद्य टीका सहित	पृथ्वीराज	हिन्दी		२०-५४
लेखन काल सं० १७४८ वैशाख सुदी १४ । २० काल सं० १६३७ । अपूर्ण ।				

अन्तिम पाठ—

रमतां जगदीश्वरतणौ रहसी रस मिथ्यावचन न ता सम है ।

सरसति रुक्मिणी तणि सहचरि कहि या मुपैतियज कहै ॥ १० ॥

टीका—रहसि एकान्तइं रुक्मिणी साथइ श्रीकृष्णजो तइ रमता क्रीडातां जे रस ते दृष्टि दीवा सरीख कह्यो । पर ते वचन माहीं कूडउ नेमतं मानउ साच मानिज्यौ । रुक्मिणी सरस्वतीनी सहचरी । सरस्वती तणइ गुप्त-बात कही मुभनइं आपणउं जाणी ॥ जाणी सर्वबात कही तेहना मुख थकी सुणी तिमही ज कही ॥ १० ॥

रूप लक्षण गुण तणास रुक्मिणी जहिना समरथोक कुरा ।

जाणिया जिका सातिसामै जंपिया गोविंद रणि तणां गुण ॥ ११ ॥

टीका—रुक्मिणी नउ रूप लक्षण गुण कहेवा भणि समर्थ कुरा समर्थ तर छइ अपितु को नहि परमइ । माहरि मतिइ अनुसार जिसा ज्याप्या तिस्या ग्रन्थ मांहि सूंथ्या कह्या तणि कारण हू ताहरउ बालक छूं मौ परि कृपा करिज्यौ ॥ ११ ॥

वसु शिव नयन रस शशि वत्थर विजयदसमि रवि रिष वरणोत ।

किसन रुक्मिणी बेलि कल्पतरु कीधी कमघ ज कल्याण उत ॥ १२ ॥

टीका—अचल पर्वत सत्त्व रज्जु तम गुण ३ अग ६ शशिकन्द्रमा १ संवत् १६३७ वर अचल गुण रवि ससि संचि तात वीयउ जस ॥ करि श्री भरतार श्रवणो दिन रात कंठ करि श्रीफल भगति अपार विषइ श्री लक्ष्मी नउ भत्तरि रुक्मिणी कृष्णनउ श्री रुक्मिणी जस करी भावना कीधी ए बेली अहो भगतो श्रवणो सांभलिउ रात दिन गलइ करउ श्री लक्ष्मी रूप फल पामइ ।

वेद बीज जल वयण मुकवि जउ मंडीस घर ।
 पत्र दूहा गुण पुहपवास भोगी लिखमी वर ॥
 पसरी दीप प्रदीप अधिक गहरी या डवर ।
 मनसुजेरांति अंब फल पांमिइ अंबर ॥
 बिसतार कोध जुबि जुगी विमल धणी किसन कहणहार धन ।
 अमृत बेलि पीयल अतइ रोपी कलियाण तनुज ॥ ३१३ ॥

अर्थ—मूल वेद पाठ तीको बीज जल पाणी तिको कवियण तिये वयणे करि जडमाडीस दृढ़ परिणइ ॥
 दूहा ते पत्र दूहा गुण ते फूल सुगन्ध वास भोगी भ्रमर श्रीकृष्णजी बेलिइं मांकहइ करो विस्तरी जगत्र नइ विषे दीप प्रदीप ।
 व दीवा थी अधिक अत्यन्त विस्तरी जिके मन सुधी एह नउ की जाणइ तीको इसा फल पांमइ । अंबर कहितां स्वर्ग
 नां सुख पांमे । विस्तार करी जगत्र नइ विषइ विमल कहीता निर्मल श्रीकिसनजी बेलि मा धणी नइ कहण हार धन्य
 तिको पिएण अमृत रूपणो बेलि पृथ्वी नइ लिखइ अविचल पृथ्वी नई ब.विराज श्री कल्याण तम बेटा पृथ्वीराजइ कहा ।

इति पृथ्वीराज कृत कृष्ण रुकमणी बेलि संपूर्ण । मुणिए जग विमल वाचणार्थ । संवत् १७४८ वर्ष बैशाख
 मासे कीर्ण पक्षे तिथि १४ अगुवासरे लिखतं उणियरा नग्रे ॥ श्री ॥ रस्तु ॥ इति मंगलं ॥

२. कोकमंजरी	×	हिन्दी	५४
३. बिरहमंजरी	नंददास	"	५५-६१
४. बावनी	हेमराज	" ४६ पद्य हैं	६१-६७
५. नेमिराजमति बारहमासा	×	"	६७
६. पृच्छाबलि	×	"	६९-८७
७. नाटक समयसार	बनारसीदास	"	८८-११४

५४८८. गुटका सं० १०७ क । पत्र सं० २३५ । आ० ५४४ इञ्ज । विषय-पूजा एवं स्तोत्र ।

१. देवपूजाष्टक	×	संस्कृत	१-४
२. सरस्वती स्तुति	ज्ञानभूषण	"	४-६
३. श्रुताष्टक	×	"	६-७
४. गुरुस्तवन	शांतिदास	"	८
५. गुर्वाष्टक	बादिराज	"	९

६. सरस्वती जयमाल	ब्रह्मजिनदास	हिन्दी	१०-१२
७. गुरुजयमाला	"	"	१३-१५
८. लघुस्नानविधि	×	संस्कृत	१६-२३
९. सिद्धचक्रपूजा	×	"	२४-३०
१०. कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	यज्ञोविजय	"	३१-३५
११. षोडशकारणपूजा	×	"	३५-३९
१२. दशलक्षणापूजा	×	"	३९-४२
१३. नन्दीश्वरपूजा	×	"	४३-४५
१४. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"	४६-५९
१५. अर्हद्भक्तिविधान	×	"	५९-६२
१६. सम्यक्दर्शनपूजा	×	"	६२-६४
१७. सरस्वतीस्तुति	आशाधर	संस्कृत	६४-६६
५८. ज्ञानपूजा	×	"	६७-७१
१६. महर्षिस्तवन	×	"	७१-७३
२०. स्वस्त्ययनविधान	×	"	७३-७९
२१. चारित्र्यपूजा	×	"	७९-८१
२२. रत्नत्रयजयमाल तथा विधि	×	प्राकृत संस्कृत	८१-९१
२३. बृहद्स्नान विधि	×	संस्कृत	९१-११९
२४. ऋषिमण्डल स्तवनपूजा	×	"	११९-२९
२५. अष्टाङ्गिकापूजा	×	"	१२९-५१
२६. विरदात्रली	×	"	१५२-६०
२७. दर्शनस्तुति	×	"	१६१-६२
२८. आराधना प्रतिबोधसार	निमलेन्द्रकीर्ति	हिन्दी	१६३-६९

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

श्री जिगावरवाण रावेवि गुरु निर्ग्रन्थ प्रणामेवी ।

कहं आराधना सुविचार संक्षेपे सारो धीर ॥ १ ॥

हो धारक वयण अवधारि, हवि चाल्यो तुम भवपारि ।
हो मुभट कहूं तुम भेड, धरी समकित पालन एहु ॥ २ ॥
हवि जिनवरदेव आराहि, तूं सिध समरि मन माहि ।
मुगि जीव दया धुरि धर्म, हवि छांडि अनुए कर्म ॥ ३ ॥
मिथ्यात कु नका टालो, गणगुरु वचनि पालो ।
हवि भान धरे मन धीर, ल्यो संजम दोहोलो वीर ॥ ४ ॥
उपप्रावित करि व्रत मुधि, मन वचन काय निरोधि ।
तू क्रोध मान माया छांडि, आपुण सूं सिलि मांडि ॥ ५ ॥
हवि क्षमो क्षमावां सार, जिम पामो सुख भण्डार ।
तूं मंत्र समरे नवकार, धोए तन करे भवनार ॥ ६ ॥
हवि सवे परिसह जिवि, अभंतर ध्यानै दीवि ।
वैराग्य धरै मन माहि, मन मांकड़ गाढु साहि ॥ ७ ॥
मुगि देह भोग सार, भवलधो वयण मां हार ।
हवि भोजन पांणि छांडि, मन लेई भुगति मांडि ॥ ८ ॥
हवि लुणक्षण पुटि आयु, मनासि छांडो काय ।
इंद्रिय बस करि धीर, कुटंब मांह मेल्हे वीर ॥ ९ ॥
हवि मन गन गांठु बांधे, तू मरण समाधि साधि ।
जे साधो मरण सुनेह, जेया स्वर्ग मुगतिय भरोय ॥ १० ॥

×

×

×

×

अन्तिम भाग

हवि हईड जाणि विचार, धगु कहिइ किहि मु अपार ।
तिआ अणनण दोख्या जाण, सन्यास छांडो प्राण ॥ ५३ ॥
सन्यास तरां फल जोइ, स्वर्ग मुद्धि फलि मुखु होइ ।
वनि आवक काल तूं पामाई, लही तिवाण मुगती गामोइ ॥ ५४ ॥
बे भगि मुगिन नरनारी, ते जाइ भववि पारि ।
श्री विमनेन्द्रकीर्ति कर्णो विचार, आराधना प्रतिबोधसार ॥ ५५ ॥

इति श्री आराधना प्रतिबोध नमाप्त

	देवेन्द्रकीर्ति	संस्कृत		१७०-१८०
३०. अनन्तपूजा	ब्रह्मशांतिदास	हिन्दी		१८०-१९९
३१. गणधरवल्लयपूजा	शुभचन्द्र	संस्कृत		१९९-२११
३२. पञ्चकल्याणकोद्यापन पूजा	भ. ज्ञानभूषण	,,	अपूर्णा	२११-३५

५४८६. गुटका सं० १०८ । पत्र नं० १२० । आ० ५×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । वशा-जीर्ण ।

१. जिनसहस्रनामभाषा	बनारसीदास	हिन्दी		१-२१
२. लघुसहस्रनाम	×	संस्कृत		२२-२७
३. स्तवन	×	अपभ्रंश	अपूर्णा	२८
४. पद	मनराम	हिन्दी		२९

ले० काल १७३५ आसोज बुदी ६

चेतन इह घर नाही तेरो ।

घटपटादि नैनन गोचर जो, नाटक पुद्गल केरो ॥ टेक ॥

तात मात कामनि सुत बंधु, करम बंध को घेरो ।

करि है गौन आनगति कौं जब, कोई नहीं आवत नेरो ॥ १ ॥

भ्रमत भ्रमत संसार गहन बन, कीयौ आनि वसेरो ।

मिथ्या मोह उदै तैं समझो, इह सदन है मेरो ॥ २ ॥

सदगुरु वचन जोइ घट दीपक, मिटै अनादि अंधेरो ।

असंख्यात परदेस ग्यान मय, ज्यौ जानऊ निज बेरो ॥ ३ ॥

नाना विकल्प त्यागि आपकौ, आप आप महि हेरो ।

जौ मनराम अचेतन परसौ, सहजै होइ निवेरो ।

५. पद-मो पिय चिदानंद परवीन	मनराम	हिन्दी		३०
६. चेतन समझि देखि घरमांहि	,,	,,	अपूर्णा	३१
७. कै परमेश्वरी की अरचा विधि	,,	,,		३२
८. जयति आदिनाथ जिनदेव ध्यान गाऊं	×	,,		३३
९. सम्यक्त्व पराविधि सिरिपास हो	,,	,,		३४-३५

१०. पंचमगति वेलि	हर्षकीर्ति	हिन्दी	सं० १६८३ श्रावण अपूर्ण
११. पंच सधावा	×	"	"
१२. मेघकुमारगीत	पूनों	हिन्दी	४०-४१
१३. भक्तामरस्तोत्र	हेमराज	"	४६
१४. पद-ग्रब मोहे कछून उपाय	रूपचंद	"	४७
१५. पंचपरमेष्ठीस्तवन	×	प्राकृत	४७-४९
१६. शांतिपाठ	×	संस्कृत	५०-५२
१७. स्तवन	आशाधर	"	५२
१८. बारह भावना	कविभ्रातु	हिन्दी	
१९. पंचमंगल	रूपचंद	"	
२०. जकड़ी	"	"	
२१. "	"	"	
२२. "	"	"	
२३. "	दरिगह	"	

मुनि मुनि जियरा रे तू त्रिभुवन का राउ रे ।

तू तजि परंपरवारै चेतसि सहज सुभाव रे ॥

चेतसि सहज सुभाव रे जियरा परस्यो मिलि क्या राच रहे ।

अप्पा पर जाण्या पर अप्पाणा चउगइ दुख्य अणाइ सहे ॥

अवसो गुण कीजै कर्म हं छोच्चै सुगाहु न एक उपाव रे ।

दंसरा एाण चरणमय रे जिउ तू त्रिभुवन का राउ रे ॥ १ ॥

करमनि वसि पडिया रे प्रणया मूढ विभाव रे ।

मिथ्या मद नडिया रे मोह्या मोहि अणाइ रे ॥

मोह्या मोह अणाइ रे जिय रे मिथ्यामद नित मांछि रह्या ।

पड पडिहार खडग मदिरावत जानावरणी आदि कह्या ॥

हडि चित्त कुलाल भडयारीण अष्टाउदीग्रे चतार्ई रे ।

रे जीवड़े करमनि वसि पडिया प्रणया मूढ विभाव रे ॥ २ ॥

तू मति सोवहि न चीता रे वैरिन मै काहा वास रे ।
 भवभव दुखदाय करै तिनका करै विसास रे ॥
 तिनका करहि विसास रे जिवढे तू मूढ़ा नहि निमषु डरे ।
 जम्मण मरण जरा दुखदायक तिनस्यो तू नित नेह करे ॥
 आपे ग्याता आपे द्रिष्टा कहि समझाऊँ कास रे ।
 रे जीउ तू मति सोवहि न चीता वैरिन में काहावास रे ॥
 ते जगमाहि जागे रे रहे अन्तरल्यवलाइ रे ।
 केवल विगत भयारे, प्रगटी जोति सुभाइ रे ॥
 प्रगटी जोति सुभाइ रे जीवढे मिथ्या रैणि विहाणी ।
 स्वपरभेद कारण जिन्ह मिलिया ते जग हूबा वाणी ॥
 सुगुरु सुधर्म पंच परमेष्ठी तिनकै लागौ पाय रे ।
 कहै दरिगह जिन त्रिभुवन सेवै रहे अंतर ल्यवलाइ रे ॥ ४ ॥

२४. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	ले० काल १७३५ आसोज बुदी ६
२५. निर्वाणकाण्ड गाथा	×	प्राकृत	
२६. पूजा संग्रह	×	हिन्दी	

५४६०. गुटका सं० १०६ । पत्र सं० १५२ । आ० ६×४ इञ्च । ले० काल १८३६ सावण सुदी ६ ।
 अपूर्ण । दशा—जीर्णशीर्ण ।

विशेष—लिपि विकृत एवं अशुद्ध है ।

१. शनिश्चरदेव की कथा	×	हिन्दी	११४
२. कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	”	१५-२४
३. नेमिनाथ का बारहमासा	×	”	अपूर्ण २५-२६
४. जकड़ी	नेमिचन्द्र	”	२७
५. सवेया (सुख होत शरीरको दालिद भागि जाइ) ×		”	२८
६. कवित्त (श्री जिनराज के ध्यान को उच्छाह मोहे लागे		”	२९
७. निर्वाणकाण्डभाषा	भगवतीदास	”	३०-३३

८. स्तुति (आगम प्रभु को जब भयो)	×	हिन्दी	३४-३६
९. बारहमासा	×	"	३७-३९
१०. पद ब भजन	×	"	४०-४७
११. पार्श्वनाथपूजा	हर्षकीर्ति	"	४८-४९
१२. ग्राम नीबू का भगड़ा	×	"	५०-५१
१३. पद-कांड समुद्र विजयमुत्त सार	×	"	५२-५७
१४. गुरुओं की स्तुति	भूधरदाम	"	५८-५९
१५. दर्शनपाठ	×	संस्कृत	६०-६३
१६. विनती (त्रिभुवन गुरु स्वामीजी)	भूधरदास	हिन्दी	६४-६६
१७. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	संस्कृत	६७-६८
१८. पद-मेरा मन बस कीना जिनराज	×	हिन्दी	७०
१९. मेरा मन बस कीनो महावीरा	हर्षकीर्ति	"	७१
२०. पद-(नैना सफल भयो प्रभु दरमण पाय)	रामदास	"	७२
२१. चलो जिनन्द बंदस्या	×	"	७२-७३
२२. पद-प्रभुजी तुम में चरण शरण गह्यो	×	"	७४
२३. आमेर के राजाओं के नाम	×	"	७५
२४. " "	×	"	७६
२५. विनती-बोल रे भूलो रे भाई	नेमिचन्द्र	"	७८-७९
२६. पद-चेतन मानि ले बात	×	"	७९
२७. मेरा मन बस कीनो जिनराज	×	"	८०
२८. विनती-बंदू श्री अरहन्तदेव	हरिसिंह	"	८१-८२
२९. पद-सेवक हूं महाराज तुम्हारे	दुलीचन्द्र	"	८२-८४
३०. मन धरी वे होत उछावा	×	"	८४-८६
३१. धरम का ढोल बजाये सूरणी	×	"	८७
३२. अब मोहि तारोजी जगद्गुरु	मनसाराम	"	८८
३३. लागो दौर लागो दौर प्रभुजी का ध्यानमें मन । पूरणदेव		"	८८
३४. आसरा जिनराज तेरा	×	"	८८

३५. जु जाणे ज्यों तारोजी	×	हिन्दी	८६
३६. तुम्हारे दर्श देखत ही	जोधराज	"	९०
३७. मुनि २ २ जीब मेरा	मनसाराम	"	९०-९१
३८. भरमत २ संसार चतुर्गति दुख सहा	×	"	९१-९३
३९. श्रीनेमकुवार हमको क्यों न उतारो पार	×	"	९५
४०. आरती	×	"	९६-९७
४१. पद—विनती कराछां प्रभु मानो जी	किशानगुलाब	"	९८
४२. ये जी प्रभु तुम ही उतारोगे पार	"	"	९९
४३. प्रभुजी मोह्या छै तन मन भाण	×	"	९९
४४. वंदू श्रीजिनराज	कनककीर्ति	"	१००-१०१
४५. बाजा बजय्या प्यारा २	×	"	१०२
४६. सफल घडी हो प्रभुजी	खुशालचन्द	"	१०३
४७. पद	देवसिंह	"	१०४-१०५
४८. चरखा चलता नांही रे	भूधरदास	"	१०६
४९. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत	१०७-१०८
५०. चौबीस तीर्थकर स्तुति	"	हिन्दी	११६-२१
५१. भेषकुमारवार्ता	"	"	१२१-२४
५२. जनिश्चर की कथा	"	"	१२५-४१
५३. कर्मयुद्ध की विनती	"	"	१४२-४३
५४. पद—अरज करूं छूं बीतरांग	"	"	१४६-४७
५५. स्फुट पाठ	"	"	१४८-५३

५४६१. गुटका सं० ११० । पत्र सं० १४३ । आ० ६×४ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत ।

१. नित्यपूजा	×	संस्कृत	१-२९
२. मोक्षशास्त्र	उमास्वामि	"	२९-४९
३. भक्तामरस्तोत्र	आ० मानतुंग	"	५०-५८
४. पंचमंगल	रूपचन्द	"	५८-६८

५. कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	हिन्दी	६८-७५
६. पूजासंग्रह	×	"	७५-१०२
७. विनतीसंग्रह	देवावह्य	"	१०२-१४३

५४६२. गुटका सं० १११ । पत्र सं० २८ । आ० ६३×४३ इंच । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । दशा-सामान्य

१. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	१-६
२. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"	११
३. चरचा	×	प्राकृतहिन्दी	११-२६

विशेष—“पुस्तक भक्तामरजी की पं० लिखमीचन्द रैनबाल हाला की छै । मिति चैत सुदी ६ संवत् १९५४ का में मिनो मार्कत राज श्री राओडजी कां सूं पंचासू ।” यह पुस्तक के ऊपर उल्लेख है ।

५४६३. गुटका सं० ११२ । पत्र सं० १५ । आ० ६×६ इंच । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५४६४. गुटका सं० ११३ । पत्र सं० १६-२२ । आ० ६३×५ इंच । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

अथ डोकरी अर राजा भोज की वार्ता लिख्यते । पत्र सं० १८-२० ।

डोकरी ने राजा भोज कहाँ डोकरी हे राम राम । बीरा राम राम । डोकरी यो मारग कहाँ जाय छै । बीरा ईं मारग परथी आई अर परथी गई ॥ १ ॥ डोकरी मेहे बटाऊ हे बटाऊ । ना बीरा ये बटाऊ नाहीं । बटाऊ तो संसार मांही दाय अर ही छै ॥ एक तो चांद अर एक सूरज ॥ २ ॥ डोकरी मेहे राजा हे राजा ॥ ना बीरा ये तो राजा नाही । राजा तो संसार में दाय अर ही । एक तो अन्न अर एक पाणी ॥ ३ ॥ डोकरी मेहे चोर हे चोर । ना बीरा ये चोर ना । चोर तो संसार में दाय अर ही छै । एक नेत्र चोर अर एक मन चोर छै ॥ ४ ॥ डोकरी मेहे तो हलवा हे हलवा । ना बीरा ये तो हलवा नाहीं ॥ हलवा तो संसार में दाय अर ही छै । कोई पराये घर बसत मागिबा जाह उका घर में छै पण नट जाय सो हलवा ॥ ५ ॥ डोकरी नू माहा के माता हे माता । ना बीरा माता तो दाय अर ही छै । एक तो उदर मांही सूं काड़े सो माता । दूसरी धाय माता ॥ ६ ॥ डोकरी मेहे तें हारघा हे हरघा । ना बीरा ये क्या ने हारघा । हारघो तो संसार में तान अर ही छै । एक तो मारग चालतो हारघो । दूसरो बेटी जाई सो हारघो तामरो जेकी भोडी अस्त्री होइ सो हारघो ॥ ७ ॥ डोकरी मेहे बापडा हे बापडा । ना बीरा ये बापडा नाही । बापडा तो च्यारा अर छै । एक तो गऊ को जायो बापडो । दूसरो छ्त्राली कां जायो बापडो । तीसरो जै की माता जनमता ही मर गई सो बापडो । चौथा बापण वाण्या की त्रेटी विधवा हो जाय नो बापडो ॥ ८ ॥ डोकरी आपा मिला हे

मिला । बीरा मिलवा बाला तो संसार में च्यारि ओर ही छै । जैको बाप विरधा होसी सो बां मिलसी । अर जे को बेटो परदेश सूं आयो होसी सो बां मिलसी । दूसरो सांवण भादवा को मेह बरस सी सो समन्दर सूं । तीसरो भाणेज को भात पैराबा जासी सो वो मिलसी । चौथा स्त्री पुरुष मिलसी । डोकरी जाण्या हे जाण्या । भरिया कहे न उजलेउ भलसी आधा । पुरुषा आई पारषा बोलार लाषा ॥ १० ॥

॥ इति डोकरी राजा भोज की वार्ता सम्पूर्ण ॥

५४६५. गुटका सं० ११४ । पत्र सं० ६-७२ । आ० ६२×५३ इञ्च ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा संग्रह है ।

५४६६. गुटका सं० ११५ । पत्र सं० १६८ । आ० ६×५ इंच । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण । दशा—सामान्य

विशेष—पूजा संग्रह, जिनयज्ञकल्प (आशाधर) एवं स्वयंभूस्तोत्र का संग्रह है ।

५४६७. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० १६६ । आ० ६×५ इंच । भाषा—संस्कृत । पूर्ण । दशा—जीर्ण ।

विशेष—गुटके में निम्न पाठ उल्लेखनीय हैं ।

४. भुवनकीर्ति गीत

बूचराज

हिन्दी

१२-१४

आजि बद्धाउ सुराहु सहेली यह मनु विषसइ जि महलीए ।

गोहि अनन्त नित कोटिहि सारिहि सुहु गुरु सुहु गुरु वेदहि सुकरि रलीए ॥

करि रली बन्दह सखी सुहु गुरु लवधि गोइम सम सरै ।

जसु देखि दरसगु टलहि भवदुख होइ नित नवनिधि धरे ॥

कर्पूर चन्दन अगार केसरि आरिण भावन भाव ए ।

श्रीभुवनकीर्ति चरण प्रणमोहं सखी आज बद्धाव हो ॥ १ ॥

तेरह विधि चारित प्रिपालइ दिनकर दिनकर जिम तपि सोहइ ए ।

सर्वाज्ञि भासिउ धर्म सुरावाँ वारी हो वारी भवु मन मोहइ ए ।

मोहन्ति वारी सदा भवि सुनु ग्रन्थ आगम भारुए ।

षट् द्रव्य अरु पञ्चास्तिकाया सप्ततत्त्व पयासए ॥

वावीस परिग्रह सहइ अंगिहं गरुव मति नित गुणनिधो ।

श्रीभुवनकीर्ति चरण पणमि सु चारिलु तनु तेरह विधे ॥ २ ॥

मूल गुणाहं अठाइसइ धारइए मोहए मोहु महाभदु ताडियो ए ।

रतिपति तिरु वंति ह महिइउ पुरगु कोवडुए कोत्रडुकरि तिहि रालीयो ए ॥

रालियो जिमि कं बँऽ करिहि वनउ करि इम बोलइ ।
 गुरु सियाल मेरह जिउअ जंगमु पवण भइ किम डोलए ।
 जो पंच विषय विरतु चित्तिहि कियउ खिउ कम्मह तरु ।
 श्री भुवनकीति चरण प्रणमइ धरइ अठाइस मूलगुणा ॥ ३ ॥
 दस लाक्षणा धर्म निजु धारि कुं संजमु संजमु भसणु बनिए ।
 सत्रु मित्रु जो सम किरि देखई गुरनिरगंघु महा मुनीए ॥
 निरगंघु गुरु मद अट्ट परिहरि सबय जिप प्रतिपालए ।
 मिथ्यात तम निर्द्वर्ण दिन म जैणधर्म उजालए ॥
 तेरअन्नतहं अखल चित्रहं कियउ सकयो जम ।
 श्री भुवनकीति चरण परणमउ धरइ दशलक्षणा धर्मु ॥ ४ ॥
 सुर तरु संघ कलिउ चितामणि दुहिए दुहि ।
 महो धरि धरि ए पंच सबद वाजहि उछरंगि हिए ॥
 गावहि ए कामणि मधुर सरे अति मधुर सरि गावति कामणि ।
 जिणहं मन्दिर अबही अष्ट प्रकार हि करहि पूजा कुसममाल चढ़ावहि ॥
 बूचराज भणि श्री रत्नकीति पाटिउ दयोसह गुरो ।
 श्री भुवनकीति आसीरबादहि संघु कलियो सुरतरो ॥

॥ इति आचार्य श्री भुवनकीति गीत ॥

५. नाडी परीक्षा	×	संस्कृत	१५-१८
६. आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१९-१०६
७. पार्वनाथस्तवन	समयराज	”	१०७

सुन्दर सोहरण गुरा निलउ, जग जीवण जिण चन्दोजी ।
 मन मोहन महिमा निलउ, सदा २ चिरनंदो जी ॥ १ ॥
 जेसलमेरु जुहारिए पाम्यउ परमानन्दोजी ।
 पास जिलेमु र जग धणी फलियो सुरतरु कन्दोजी ॥ २ ॥ जे० ॥
 मणि मारिक मोती जड्यउ कचणरूप रसालो जी ।
 सिस्वर सेहर सोहतउ पूनिम ससिदन आलोजी ॥ ३ ॥ जे० ॥

निरमल तिलक सोहमणु जिन मुख कमल रिसालोजी ।
 कानों कुण्डल दीपतां भिक मिग भाक कमालोजी ॥ ४ ॥ जे० ॥
 कंठ मनोहर कंठिलउ उरि वारि नव सिर हारोजी ।
 बहिर खवहि भला करता भब भन कारोजी ॥ ५ ॥ जे० ॥
 मरकत मणि तनु दीपती मोहन सूरति सारोजी ।
 सुख सोहग संपद मिलइ जिणवर नाम अपारोजी ॥ ६ ॥ जे० ॥
 इन परि पासु जिणोसरुं भेटयउ कुल सिणगारोजी ।
 जिणचन्द्र सूरि पसाउ लइ समयराज सुखकारोजी ॥ ७ ॥ जे० ॥

॥ इति श्री पार्श्वनाथस्तवन समाप्तोऽयं ॥

५४६८. गुटका सं० ११७ । पत्र सं० ३५० । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । अपूर्णा ।

दशा सामान्य ।

विशेष— विविध पाठों का संग्रह है । चर्चाएं पूजाएं एवं प्रतिष्ठादि विषयों से संबंधित पाठ हैं ।

५४६९. गुटका सं० ११८ । पत्र सं० १२९ । आ० ६×४ इंच ।

१. शिक्षा चतुष्क	नवलराम	हिन्दी	५
२. श्री जिनवर पद वन्दि कै जी	बखतराम	”	५-७
३. अरहंत चरनचित लाऊं	रामकिशन	”	६-१०
४. चेतन हो तेरे परम निधान	जिनदास	”	११-१२
५. चैत्यव्रंदना	सकलचन्द्र	संस्कृत	१२-१३
६. करुणाष्टक	पद्मनंदि	”	२१
७. पद—आजि दिवसि धनि लेखे लेखवा	रामचन्द्र	हिन्दी	३७
८. पद—प्रातभयो सुमरि देव	जगराम	”	५३
९. पद—सुफलघड़ीजी प्रभु	खुशालचन्द्र	”	७५
१०. निर्वाणभूमि मंगल	विश्वभूषण	”	८६-९०

संवत् १७२९ में भुसावर में पं० केसरीसिंह ने लिखा ।

११. पञ्चमगतिवेलि

हर्षकीर्ति	हिन्दी	११५-१८
------------	--------	--------

रचना सं० १६८३ प्रति लिपि सं० १८३०

५५००. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० २५१ । आ० ६३×६ इञ्च । ले० काल सं० १८३० असाढ़ बुदी
८ । अपूर्ण । दशा—सामान्य ।

विशेष—पुराने घाट जयपुर में ऋषभ देव चैत्यालय में रतना पुजारी ने स्व पठनार्थ प्रतिलिपि की थी ।
इसमें कवि बालक कृत सीता चरित्र हैं जिसमें २५२ पद्य हैं । इस गुटके का प्रथम तथा मध्य के अन्य कई पत्र नहीं हैं ।

५५०१. गुटका सं० १२० । पत्र सं० १३३ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय संग्रह ।
पूर्ण । दशा—सामान्य ।

१. रविव्रतकथा

जयकीर्ति

हिन्दी २-३ ले० काल सं० १७६३ पौष सु० ८

प्रारम्भ—

सकल जिनेश्वर मन धरी सरसति चित ध्याऊं ।

सद्गुरु चरण कमल नमि रविव्रत गुण गाऊं ॥ १ ॥

व.गारसी पुरी सोभती मतिसागर तह साह ।

सात पुत्र सुहाभरणा दीठे टाले दाह ॥ २ ॥

मुनिवादि सेठे लीयो रविनोव्रत सार ।

सांभालि कहुँ बहासा कीया व्रत नंचो अपार ॥ ३ ॥

नेह थी धन कण सहूगयो दुरजीयो थयो सेठ ।

सात पुत्र चाल्या परदेश अजोध्या पुरसेठ ॥ ४ ॥

अन्तिम—

जे नरनारी भाव सहित रविनों व्रत कर सी ।

त्रिभुवन ना फल ने लही शिव रमनी वरसी ॥ २० ॥

नदी तट गच्छ विद्यागणी सूरी राधरत्न सुभूषण ।

जयकीर्ति कही पाय नमी काष्ठासंघ गति दूषण ॥ २१ ॥

इति रविव्रत कथा संपूर्ण । इन्दोर मध्ये लिपि कृतं ।

ले० काल सं० १७६३ पौष सुदी ८ पं० दयाराम ने लिपी की थी ।

२. धर्मसार चौपई

पं० शिरोमणि

हिन्दी

३-७३

२० काल १७३२ । ले० काल १७६४ अद्वन्तिका पुरी में श्रीदयाराम ने प्रतिलिपि की ।

३. विवापहार स्तोत्रभाषा	अचलकीर्ति	हिन्दी	८५-८८
४. दससूत्र अष्टक	×	संस्कृत	८९-९०
दयाराम ने सूरत में प्रतिलिपि की थी । सं० १७६४ । पूजा है ।			
५. त्रिषष्ठिशालाकाछन्द	श्रीपाल	संस्कृत	९१-९३
६. पद—थेईं थेईं थेईं नृत्यति अमरी	कुमुदचन्द्र	हिन्दी	९७
७. पद—प्रात समै सुमरो जिनदेव	श्रीपाल	”	९७
८. पार्श्वेविनती	ब्रह्मनाथू	”	९८-९९
९. कवित्त	ब्रह्मगुलाल	”	१२५

गिरनार की यात्रा के समय सूरत में लिपि किया गया ।

५५०२. गुटका सं० १२१ । पत्र सं० ३३ । आ० ६३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

५५०३. गुटका सं० १२२ । पत्र सं० १३० । आ० ५३×४३ इञ्च । भाषा—हिन्दी संस्कृत ।

विशेष—तीन चौबीसी नाम, दर्शनस्तोत्र (संस्कृत) कल्याणमंदिरस्तोत्र भाषा (बनारसीदास) भक्तामर स्तोत्र (मानतुंगाचार्य) लक्ष्मीस्तोत्र (संस्कृत) निर्वाणकाण्ड, पंचमगल, देवपूजा, सिद्धपूजा, सोलहकारण पूजा, पच्चीसो (नवल), पार्श्वनाथस्तोत्र, सूरत की बारहखडी, बाईस परीषह, जैनशतक (भूधरदास) सामायिक टीका (हिन्दी) आदि पाठों का संग्रह है ।

५५०४. गुटका सं० १२३ । पत्र सं० २६ । आ० ६×६ इञ्च भाषा—संस्कृत हिन्दी । दशा—जीर्णार्ण ।

१. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धि मंत्र सहित	×	संस्कृत	२-१८
२. पत्यविधि	×	”	१८-२२
३. जैनपच्चीसी	नवलराम	हिन्दी	२२-२६

५५०५. गुटका सं० १२४ । पत्र सं० ६६ । आ० ७×६ इञ्च ।

विशेष—पूजाओं एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५५०६. गुटका सं० १२५ । पत्र सं० ५६ । आ० १२×४ इञ्च । पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा—सामान्य ।

१. कर्म प्रकृति चर्चा	×	हिन्दी	
२. चौबीसठाणा चर्चा	×	”	

३. चतुर्दशमार्गणा चर्चा	×	हिन्दी
४. द्वीप समुद्रों के नाम	×	"
५. देशों (भारत) के नाम	×	हिन्दी

१. अंगदेश । २. बंगदेश । ३. कलिगदेश । ४. तिलंगदेश । ५. राष्ट्रदेश । ६. लाट्टदेश ।
 ७. कर्णाटदेश । ८. मेदपाटदेश । ९. वैराटदेश । १०. गौरुदेश । ११. चीरुदेश । १२. द्राविरुदेश । १३. महाराष्ट्र-
 देश । १४. सौराष्ट्रदेश । १५. काममोरदेश । १६. कीरदेश । १७. महाकीरदेश । १८. मगधदेश । १९. सूरसेनुदेश ।
 २०. कावेरदेश । २१. कम्बोजदेश । २२. कमलदेश । २३. उत्करदेश । २४. करहाटदेश । २५. कुरुदेश ।
 २६. क्लण्णदेश । २७. कच्छदेश । २८. कौसिकदेश । २९. सकदेश । ३०. भयानकदेश । ३१. कौसिकदेश । ३२.
 ३३. काहलदेश । ३४. कापूनदेश । ३५. कच्छदेश । ३६. महाकच्छदेश । ३७. भोटदेश । ३८. महाभोटदेश ।
 ३९. कीटिकदेश । ४०. केकिदेश । ४१. कोल्लगिरिदेश । ४२. कामरुदेश । ४३. कुण्कुणदेश । ४४. कुंतलदेश ।
 ४५. कलकूटदेश । ४६. करकंटदेश । ४७. केरलदेश । ४८. खशदेश । ४९. खर्परदेश । ५०. खेटदेश । ५१. विह्वर-
 देश । ५२. वेदिदेश । ५३. जालंधरदेश । ५४. टंकर टक्क । ५५. मोडियाणदेश । ५६. नहालदेश । ५७. तुङ्गदेश ।
 ५८. लाभकदेश । ५९. कौमलदेश । ६०. दशारांदेश । ६१. दण्डकदेश । ६२. देशसभदेश । ६३. नेपालदेश । ६४. नर्तक-
 देश । ६५. पञ्चालदेश । ६६. पल्लवदेश । ६७. पूंडदेश । ६८. पाण्ड्यदेश । ६९. प्रत्यग्रदेश । ७०. प्रंबुददेश । ७१. वसु-
 देश । ७२. गंभीरदेश । ७३. महिष्मकदेश । ७४. महोदयदेश । ७५. मुरण्डदेश । ७६. मुरलदेश । ७७. मरुस्थलदेश ।
 ७८. मुद्गरदेश । ७९. मंगनदेश । ८०. मल्लवर्तदेश । ८१. पवनदेश । ८२. आरामदेश । ८३. राढ़कदेश । ८४.
 ब्रह्मोत्तरदेश । ८५. ब्रह्मावर्तदेश । ८६. ब्रह्मणदेश । ८७. वाहकदेश । विदेहदेश । ८९. वनवासदेश । ९०. वनायुक्-
 देश । ९१. वाल्हाकदेश । ९२. वल्लवदेश । ९३. अवन्तिदेश । ९४. वन्दिदेश । ९५. सिंहलदेश । ९६. सुह्यदेश ।
 ९७. सूपरदेश । ९८. सुह्यदेश । ९९. अस्मकदेश । १००. हूणदेश । १०१. हूर्मकदेश । १०२. हूर्मजदेश ।
 १०३. हंसदेश । १०४. हूहकदेश । १०५. हेरकदेश । १०६. बीणदेश । १०७. महाबीणदेश । १०८. भट्टीयदेश ।
 १०९. गोप्यदेश । ११०. गांडाकदेश । १११. गुजरातदेश । ११२. पारसकुलदेश । ११३. शवालखदेश ।
 ११४. कोलवदेश । ११५. शार्कभरिदेश । ११६. कनउजदेश । ११७. आदनदेश । ११८. उचीविसदेश । ११९. नीला-
 वरदेश । १२०. गंगापारदेश । १२१. संजाणदेश । १२२. कनकगिरिदेश । १२३. नवसारिदेश । १२४. भांगिरिदेश ।

६. क्रियावाहियों के ३६३ भेद × हिन्दी

❧नोट— यह नाम गुटके में खाली छोड़ा हुआ है ।

७. स्फुट कवित्त एवं पद्य संग्रह	×	हिन्दी संस्कृत
८. द्वादशानुप्रेक्षा	×	संस्कृत
९. सूक्तावलि	×	,, ले० काल १८३६ भावण शुक्ला १०
१०. स्फुट पद्य एवं मंत्र आदि	×	हिन्दी

५५०७. गुटका सं० १२६। पत्र सं० ४५। आ० १०१×४३ इञ्च। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-चर्चा विशेष—चर्चाओं का संग्रह है।

५५०८. गुटका सं० १२७। पत्र सं० ३३। आ० ७×५ इञ्च।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

५५०९. गुटका सं० १२७ क। पत्र सं० ५५। आ० ७३×६ इञ्च।

१. शीघ्रबोध × संस्कृत १-१६

२. लघुवाचणी × " १७-३९

विशेष—वैष्णवधर्म। ले० काल सं० १८०७

३. ज्योतिर्व्यटलमाला श्रीपति संस्कृत ४०-५१

४. सारणी × हिन्दी ५१-५५

ग्रहों को देखकर वर्षा होने का योग

५५१०. गुटका सं० १२८। पत्र सं० ३-६०। आ० ७३×६ इञ्च। भाषा-संस्कृत।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

५५११. गुटका सं० १२९। पत्र सं० ८-२४। आ० ७×५ इंच। भाषा-संस्कृत।

विशेष—क्षेत्रपालस्तोत्र, लक्ष्मीस्तोत्र (सं०) एवं पञ्चमङ्गलपाठ हैं।

५५१२. गुटका सं० १३०। पत्र सं० ६८। आ० ६×४ इंच। ले० काल १७५२ आषाढ़ बुदी १०।

१. चतुर्दशतीर्थङ्करपूजा × संस्कृत १-५४

२. चौबीसदण्डक दौलतराम हिन्दी ५५-६७

३. पीठप्रक्षालन × संस्कृत ६८

५५१३. गुटका सं० १३१। पत्र सं० १४। आ० ७×५ इञ्च। भाषा-संस्कृत हिन्दी।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह।

५५१४. गुटका सं० १३२। पत्र सं० १४-४१। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी।

१. पञ्चासिका	त्रिभुवनचन्द	हिन्दी	ले० काल १८२६	१५-२२
२. स्तुति	×	”	”	२३-२३
३. दोहाशातक	रूपचन्द	”	”	२५-३८
४. स्फुटदोहे	×	”	”	३४-४१

५५१५. गुटका सं० १३३। पत्र सं० १२१। मा० ५३×४ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी।

विशेष—छहढाला (आनतराय), पंचमङ्गल (रूपचन्द), पूजामें एवं तत्त्वार्थसूत्र, भक्तामरस्तोत्र आदि का संग्रह है।

५५१६. गुटका सं० १३४। पत्र सं० ४१। मा० ५३×४ इंच। भाषा-संस्कृत।

विशेष—शांतिनाथस्तोत्र, स्कन्दपुराण, भगवद्गीता के कुछ स्थल। ले० काल सं० १८६१ माघ सुदी ११।

५५१७. गुटका सं० १३५। पत्र सं० १३-१३४। मा० ३३×४ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—पंचमङ्गल, तत्त्वार्थसूत्र, आदि सामान्य पाठों का संग्रह है।

५५१८. गुटका सं० १३६। पत्र सं० ४-१०८। मा० ८३×२ इंच। भाषा-संस्कृत।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र, अष्टक आदि हैं।

५५१९. गुटका सं० १३७। पत्र सं० १६। मा० ६×४३। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण।

१. मोरपिच्छधारी (कृष्ण) के कवित्त धर्मदास, कपोत, विचित्र देव हिन्दी ३ कवित्त हैं।

२. वाजिदजी के मढिल्ल वाजिद ”

वाजिद के कवित्तों के ९ ग्रंथ हैं। जिनमें ६० पद्य हैं। इनमें से विरह के ग्रंथ के ३ छन्द नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं।

वाजीद विपति वेहद कहो कहां तुभ सों। सर कमान की प्रीत करी पीव मुझ सीं।

पहले अपनी ओर तीर को तान ही, परि हां पीछे दारत दूरि जगत सब जानई ॥२॥

बिन बालम वेहाल रहौ क्यों जीव रे। जरद हरद सी भई बिना तोहि पीवरे।

रुधिर मांस के सास है क चाप है। परि हां जब जीव लागा पीव और क्यों देखना ॥२५॥

कहिये मुनिये राम और न बित रे। हरि ठाकुर को ध्यान स धरिये नित रे।

जीव विलम्ब्यां पीव दुहाई राम की। परि हां मुख संपति वाजिद कहो क्यों काम की ॥२६॥

५५२०. गुटका सं० १३६। पत्र सं० ६। मा० ७×४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। पूर्ण।

एव शुद्ध। दशा-सामान्य।

विशेष—मुक्तावली व्रतकथा भाषा।

५५२१. गुटका सं० १४० । पत्र सं० ८ । आ० ६ $\frac{३}{४}$ ×४ $\frac{३}{४}$ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । ले० काल सं० १९३५ आषाढ सुदी १५ । पूर्ण एवं शुद्ध दशा—सामान्य ।

विशेष—सोनागिरि पूजा है ।

५५२२. गुटका सं० १४१ । पत्र सं० ३७ । आ० ३×३ इञ्च । भाषा संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

विशेष—विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र है ।

५५२३ गुटका सं० १४२ । पत्र सं० २० । आ० ५×४ इंच । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १९१८ आषाढ बुदी १४ ।

विशेष—गुटके में निम्न २ पाठ उल्लेखनीय हैं ।

१. छहडाला	द्यानतराय	हिन्दी	१-६
२. छहडाला	किशन	"	१०-१२

५५२४. गुटका सं० १४३ । पत्र सं० १७४ । आ० ५ $\frac{१}{४}$ ×४ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल १८९७ । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५२५. गुटका सं० १४४ । पत्र सं० ६१ । आ० ८×६ इंच । भाषा—संस्कृत हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५२६. गुटका सं० १४५ । पत्र सं० ११ । आ० ६×५ इंच । भाषा—संस्कृत । विषय—पक्षीशास्त्र । ले० काल १८७४ ज्येष्ठ सुदी १४ ।

प्रारम्भ के पद्य—

नमस्कृत्यमहादेवं गुरुं शास्त्रत्रिवारदं ।

अविष्यदर्थबोधाय वक्षते पंचवक्षिणः ॥१॥

अनेन शास्त्रसारेण लोके कालत्रयं मति ।

फलाफलं नियुज्यन्ते सर्वकार्येषु निश्चितं ॥२॥

५५२७. गुटका सं० १४६ । पत्र सं० २५ । आ० ७×५ इंच । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण । दशा—सामान्य

विशेष—आदिनाथ पूजा (सेवकराम) भजन एवं नेमिनाथ की भावना (सेवकराम) का संग्रह है ।

पट्टी पहाड़े भी लिखे गये हैं । अधिकांश पत्र खाली हैं ।

५५२८. गुटका सं० १३७। पत्र सं० ३-५७। मा० ६×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-ज्योतिष। दशा-जीर्ण शीर्ष।

विशेष—शीघ्रबोध है।

५५२९. गुटका सं० १५८। पत्र सं० ५५। मा० ७×५ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र संग्रह है।

५५३०. गुटका सं० १४९। पत्र सं० ८६। मा० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १८४९ कार्तिक सुदी ९। पूर्ण। दशा-जीर्ण।

१. बिहारीसतसई	बिहारीलाल	हिन्दी	१-३५
२. वृन्द सतसई	वृन्दकवि	"	३६-८०
		७०८ पद्य हैं। ले० काल सं० १८४९ चैत सुदी १०।	
३. कावेल	देवीदास	हिन्दी	३६-८०

५५३१. गुटका सं० १५०। पत्र सं० १३५। मा० ६३×४ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८४५। दशा-जीर्ण शीर्ष।

विशेष—लिपि विकृत है। कक्का बत्तीसी, राग चीतरा का दूहा, फूल भीतरणी का दूहा, जादि पाठ है। अधिकांश पत्र खाली है।

५५३२. गुटका सं० १५१। पत्र सं० १८। मा० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—पदों तथा विनतियों का संग्रह है तथा जैन पञ्चीसी (नवलराम) चारह भावना (दीक्षतराज) निर्वाणकाण्ड है।

५५३३. गुटका सं० १५२। पत्र सं० १०७। मा० १२×५ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। दशा-जीर्ण शीर्ष।

विशेष—विभिन्न ग्रन्थों में से छोटे २ पाठों का संग्रह है। पत्र १०७ पर भट्टारक पट्टावलि उल्लेखनीय है।

५५३४. गुटका सं० १५३। पत्र सं० ६०। मा० ८×५ इंच। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-संग्रह अपूर्ण। दशा-सामान्य।

विशेष—मत्स्यस्तोत्र, तत्त्वार्थ सूत्र, पूजाएं एवं पञ्चमंगल पाठ है।

५५३५. गुटका सं० १५४। पत्र सं० ८९। मा० ६×४ इंच। ले० काल १८७९।

१. सागवत	×	संस्कृत	१-८
२. मंत्र प्रादि संग्रह	×	"	९-१२

३. चतुश्लोकी गीता	×	”	२३-२४
४. भागवत महिमा	×	हिन्दी	२५-५१
		तीर्थों के नाम एवं देवाधिदेव स्तोत्र है।	
५. महाभारत विष्णु सहस्रनाम	×	संस्कृत	५२-८६

५५३६. गुटका सं० १५५। पत्र सं० ६८। ६×६ इंच। भाषा-संस्कृत। पूर्ण।

१. योगेन्द्र पूजा	×	संस्कृत	१-३
२. पार्व्वनाथ जयमाल	×	”	४-१३
३. सिद्धपूजा	×	”	१-२
४. पार्व्वनाथाष्टक	×	”	३-६
५. षोडशकारणपूजा	आचार्य केशव	”	१-३४
६. सोलहकारण जयमाल	×	अपभ्रंश	३६-५०
७. दशलक्षण जयमाल	×	”	५१-६३
८. द्वादशव्रतपूजा जयमाल	×	संस्कृत	६४-८०
९. एमोकार पैंतीसी	×	”	८१-८५

५५३७. गुटका सं० १५६। पत्र सं० १७। आ० ५×३ इंच। ले० कात्र १७७६ ज्येष्ठ सुदी २। भाषा-हिन्दी। पत्र सं० ७६।

विशेष—यादव वंशावलि वर्णन है।

५५३८. गुटका सं० १५७। पत्र सं० ३२। आ० ६×५ इंच। ले० काल १८३२।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, अक्षर बावनी, (द्यानतराय) एवं पंचमंगल के पाठ हैं। पं० सवाईराम ने नेमिनाथ चैत्यालय में सं० १८३२ में प्रति लिपि की।

५५३९. गुटका सं० १५७ (क) पत्र सं० १४१। आ० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विभिन्न कवियों के पद्यों का संग्रह है।

५५४०. गुटका सं० १५८। पत्र सं० ६८। आ० ६×६ इंच। भाषा-हिन्दी। ले० काल १८१०। दशा-जीर्ण।

विशेष—सामान्य चर्चाओं पर पाठ हैं।

५५४१. गुटका सं० १५९। पत्र सं० ३५०। आ० ७×४। ले० काल-५। दशा-जीर्ण। विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है।

५५४२. गुटका सं० १६० । पत्र सं० ६५ । आ० ७×६ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । पूर्ण ।
विशेष-सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५५४३ गुटका सं० १६१ । पत्र सं० २६ । आ० ५×५ इञ्च । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल १७३७
पूर्ण । सामान्य पाठ है ।

५५४४. गुटका सं० १६२ । पत्र सं० ११ । आ० ६×७ इञ्च । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण । पूजाओं
का संग्रह है ।

५५४५. गुटका सं० १६३ । पत्र सं० २१ । आ० ५×४ इञ्च । भाषा-संस्कृत ।
विशेष-भक्तामर स्तोत्र एवं दर्शन पाठ आदि हैं ।

५५४६. गुटका सं० १६४ । पत्र सं० १०० । आ० ४×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १६३४ पूर्ण ।
विशेष-पद्मपुराण में से गीता महात्म्य लिया हुआ है । प्रारम्भ के ७ पत्रों में संस्कृत में भगवत गीता
माला दी हुई है ।

५५४७. गुटका सं० १६५ । पत्र सं० ३० । आ० ६३×५३ इञ्च । विषय-प्रायुर्वेद । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।
विशेष-प्रायुर्वेद के नुसखे हैं ।

५५४८ गुटका सं० १६६ । पत्र सं० ६८ । आ० ४×२३ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. प्रायुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	१-४०
२. कर्मप्रकृतिविधान	बनारसीदास	”	४१-६८

५५४९. गुटका सं० १६७ । पत्र सं० १४८-२४७ । आ० २×२ इञ्च । अपूर्ण ।

५५५०. गुटका सं० १६८ । पत्र सं० ४० । आ० ६×६ इञ्च । पूर्ण ।

५५५१. गुटका सं० १६९ । पत्र सं० २२ । आ० ६×६ इञ्च । भाषा-हिन्दी । ले० काल १७८०
श्रावण सुदी २ । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

१. धर्मरासी	×	हिन्दी	१-१८
-------------	---	--------	------

अथ धर्म रासो लिख्यते —

पहली बंदों जिरावर राइ, तिहि बंधा दुख दालिद्र जाइ ।

रोग कनेस न संचरै, पाप करम सब जाइ पुलाई ॥

निदबे मुक्ति पद संचरै, ताको जिन धर्म होई सहाई ॥ १ ॥

धर्म दुहेली जैन को, छह दरसन जे द्वी परधान ।
 भ्रात्रग जन सुणिएजे दे मन, भव्यतीव चित संभलो ॥
 पढा त्रित्त सुख होई निधान, धर्म दुहेली जैन को ॥ २ ॥
 दूजा बर्दी सारद माई, भूलो आखर आणो हाइ ॥
 कुमति कलेस न उरजे, महा मुमति वंदो अधिकाइ ॥
 जिएधर्म रासो वर्राउ, तिहि पढत मन होइ उछाह ॥
 धर्म दुहेली जैन को ॥ ४ ॥

ग्रन्थि—

ऊभी जीमण जोवै सही, आगम बात जिणेनुर कहो ।
 कर पात्रा आहार लै, ये अट्टाईस मूलगुण जाणिए ॥
 धन जती जे पालहीं, ते अनुक्रम पहंचे निरवारिए ।
 धर्म दुहेली जैन को ॥१५२॥

मूढ देव गुरुशास्त्र बखारिए, नङ्ग षट् अनायतन जाणिए ।
 माठ दोष शङ्का आदि दै, माठ नद सो तजे पचोस ॥
 ते निश्चै सम्यक्त फले, ऐसी विधि भासै जगदोश ।
 धर्म दुहेली जैन को ॥१५३॥

इति श्री धर्मरासो समाप्ता ॥१॥ सं० १७६० सावण सुदी २ सांगानायर मध्ये ।

५५५२. गुटका सं० १७० । पत्र सं० ५ । आ० ६×६ इंच । भाषा संस्कृत । विषय-पूजा ।

विशेष—सिद्धपूजा है ।

५५५३. गुटका सं० १७१ । पत्र सं० ६ । आ० ६×७ इंच । भाषा—हिन्दी । विषय-पूजा ।

विशेष—सम्मोदशिखर पूजा है ।

५५५४ गुटका सं० १७२ । पत्र सं० १५-६० । आ० ३×३ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले०

काल सं० १७६८ । सावण सुदी १० ।

विशेष—पूजा, पद एवं विनतियों का संग्रह है ।

५५५५. गुटका सं० १७३ । पत्र सं० १८५ । आ० ६×४ इंच । अपूर्ण । ढगा-जैरा ।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे, मन्त्र, तन्त्रादि सामग्री है । कोई उल्लेखनीय रचना नहीं है ।

४५५६. गुटका सं० १७२। पत्र सं० ४-६३। मा० ६×४३ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-भृङ्गार रस। ले० काल सं० १७४७ जेठ बुदी १।

विशेष—इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया का संग्रह है।

४५५७. गुटका सं० १०५। पत्र सं० २४। मा० ६×४ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा।

विशेष—पूजा संग्रह है।

४५५८. गुटका सं० १७६। पत्र सं० ८। मा० ५×३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-स्तोत्र। ले० काल सं० १८०२। पूर्ण।

विशेष—पद्मावतीस्तोत्र (ज्वालामालिनी) है।

४५५९. गुटका सं० १७७। पत्र सं० २१। मा० ५'×३' इंच। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—पद एवं त्रिनती संग्रह है।

४५६०. गुटका सं० १७८। पत्र सं० १७। मा० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—प्रारम्भ में बादशाह जहांगीर के तख्त पर बैठने का समय लिखा है। सं० १६८४ मंगसिर सुदी १२। तारातम्बोल की जो यात्रा की गई थी वह उसीके आदेश के अनुसार भरतीकी खबर मगाने के लिए की गई थी।

४५६१. गुटका सं० १७९। पत्र सं० १४। मा० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी। विषय-पद संग्रह। अपूर्ण।

विशेष—हिन्दी पद संग्रह है।

४५६२. गुटका सं० १८०। पत्र सं० २१। मा० ६×४ इंच। भाषा-हिन्दी।

विशेष—निर्दोषसप्तमीकथा (ब्रह्मरायमल्ल), प्रादित्यवारकथा के पाठ का मुख्यतः संग्रह है।

४५६३. गुटका सं० १८१। पत्र सं० २१-४६।

१. चन्द्रवरदाई की वार्ता	×	हिन्दी	२३-२६
			पद्य सं० ११९। ले० काल सं० १७१६
२. सुगुरुसीख	×	हिन्दी	२८-३०
३. कक्काबत्तीसी	ब्रह्मगुलान	"	२० काल सं० १७९५ ३०-३४
४. अन्यराठ	×	"	३४-४९

विशेष—अधिकांश पत्र खाली हैं।

४५६४. गुटका सं० १८२। पत्र सं० १६। मा० ६×३ इंच। भाषा-संस्कृत। विषय-पूजा। अपूर्ण।

विशेष—नित्य नियम पूजा हैं।

५५६५. गुटका सं० १८३। पत्र सं० २०। आ० १०×६ इंच। भाषा-संस्कृत हिन्दी। अपूर्ण।
दशा-जै.रां शीरां।

विशेष—प्रथम ५ पत्रों पर पृच्छायें हैं। तथा पत्र १०-२० तक शकुनशास्त्र है। हिन्दी गद्य में है।

५५६६. गुटका सं० १८४। पत्र सं० २४। आ० ६३×६ इंच। भाषा-हिन्दी। अपूर्ण।

विशेष—वृन्द विनोद सतसई के प्रथम पद्य से २५० पद्य तक है।

५५६७. गुटका सं० १८५। पत्र सं० ७-८८। आ० १०×५.३ इंच। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं०
१८२३ बंशाख सुदी ८।

विशेष—बीकानेर में प्रतिलिपि की गई थी।

१. समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी	७-७६
२. अनाथीसाध चौढालिया	विमल विनयगणि	”	७३ पद्य हैं ७६-७८
३. ग्रन्थयन गीत	×	हिन्दी	७८-८३
दस अध्याय में अलग अलग गीत हैं। अन्त में चूलिका गीत है।			
४. स्फुट पद	×	हिन्दी	८४-८८

५५६८. गुटका सं० १८६। पत्र सं० ५२। आ० ६×५ इंच भाषा-हिन्दी। विषय पद संग्रह।

विशेष—१४२ पदों का संग्रह है मुख्यतः धातनराय के पद हैं।

५५६९. गुटका सं० १८७। पत्र सं० ७७। पूर्ण।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१. चौरासी गीत	×	हिन्दी	१-२
२. कछवाहा बंश के राजाओं के नाम	×	”	२-४
३. देहली राजाओं की बंशावली	×	”	५-१६
४. देहली के बादशाहों के परगनों के नाम	×	”	१७-१८
५. सीख सत्तरी	×	”	१९-२०
६. ३६ कारखानों के नाम	×	”	२१
७. चौबीस ठाणा चर्चा	×	”	२२-४५

५५७०. गुटका सं० १८८। पत्र सं० ११-७३। आ० ६×४.३ इंच। भाषा-हिन्दी संस्कृत।

विशेष—गुटके में भक्तामरस्तोत्र क्लारामन्दिरस्तोत्र है।

१. पार्श्वनाथस्तवन एवं अन्य स्तवन यतिसागर के शिष्य जगरू हिन्दो २० सं० १८००

प्रागे पत्र जुड़े हुए हैं एवं विकृत लिपि में लिखे हुये हैं ।

५५७१. गुटका सं० १८६ । पत्र सं० ६-७८ । आ० ५३×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-इतिहास ।

विशेष—मकबर बादशाह एवं बीरबल आदि की वार्ताएँ हैं । बीच बीच के एवं आदि अन्त भाग नहीं हैं ।

५५७२. गुटका सं० १६० । पत्र सं० १७ । आ० ४×३ इञ्च । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—रूपवन्द कृत पञ्चमंगल पाठ है ।

५५७३. गुटका सं० १६१ । पत्र सं० २८ । आ० ८३×६ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—मुन्दरदास कृत सबैये एवं अन्य पद्य है । अपूर्ण है ।

५५७४. गुटका सं० १६२ । पत्र सं० ४५ । आ० ८३×६ इंच । भाषा-प्राकृत संस्कृत । ले० काल १८०० ।

१. कवित्त	×	हिन्दी	१-४
२. भयहरस्तोत्र	×	प्राकृत	५-६
		हिन्दी गद्य टीका सहित है ।	
३. शांतिकरस्तोत्र	विद्यासिद्धि	”	७-९
४. नमिऊणस्तोत्र	×	”	९-१२
५. अजितशांतिस्तवन	नन्दिषेण	”	१३-२२
६. भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	२३-३०
७. कल्याणमंदिरस्तोत्र	×	संस्कृत ३१-३९ हिन्दी गद्य टीकासहित है ।	
८. शांतिपाठ	×	प्राकृत ४०-४५	”

५५७५. गुटका सं० १६३ । पत्र सं० १७-३२ । आ० ८३×५३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । ले० काल १८६७ ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एवं भक्तामरस्तोत्र है ।

५५७६. गुटका सं० १६४ । पत्र सं० १३ । आ० ९×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कामशास्त्र ।

अपूर्णा । दशा-नामान्य । कोकसार है ।

५५७७. गुटका सं० १६५ । पत्र सं० ७ । आ० ९×६ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—भट्टारक महीचन्द्रकृत त्रिलोकस्तोत्र है । ४९ पद्य हैं ।

५४७८. गुटका सं० १६६ । पत्र सं० २२ । आ० ६×६ इंच । भाषा- हिन्दी ।

विशेष - नाटकसमयसार है ।

५४७९. गुटका सं० १६७ । पत्र सं० ३० । आ० ८×६ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८६४ भावण बुदी १४ । बुधजन के पदों का संग्रह है ।

५४८०. गुटका सं० १६८ । पत्र सं० ३६ । आ० ८½×५½ इंच । अपूर्ण । पूजा पाठ संग्रह है ।

५४८१. गुटका सं० १६९ । पत्र सं० २-५६ । आ० ८×५ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी अपूर्ण ।

दशा-जीर्ण ।

विशेष-पूजा पाठ संग्रह है ।

५४८२. गुटका सं० २०० । पत्र सं० ३४ । आ० ६½×८ इंच । पूर्ण । दशा-सामान्य ।

- | | | | |
|--|-----------|----------------|--------|
| १. जिनदत्त चौगई | रत्नकवि | प्राचीन हिन्दी | |
| रचना संवत् १३५४ भादवा सुदी ५ । ले० काल संवत् १७५२ । पालव निवासी महानन्द ने प्रतिलिपि की थी । | | | |
| २. आदीशंकर रेवता | सहस्रकोटि | प्राचीन हिन्दी | अपूर्ण |
| २० काल सं० १६६७ । रचना स्थान-सालकोट । ले० काल-सं० १७४३ मंगसिर दुदी ७ । महानंद ने प्रतिलिपि की थी । १२ पद्य से ४५ वे तक ६१ तक के पद्य हैं । | | | |

- | | | | |
|--|--------------------------|--------------------|-----------|
| ३. पंचवधात्रो | × | राजस्थानी शेरगढ की | ” |
| ४. कवित्त | बृंदावनदास | हिन्दी | |
| ५. पद-रेमन रेमन जिनविन कः नु न त्रिचार | लक्ष्मीसागर | ” | रागमल्हार |
| ६. तूही तू ही मेरे साहिब | ” | ” | रागकाफी |
| ७. तूती तूही २ तूती बोल | ” | ” | × |
| ८. कवित्त | ब्रह्म गुलाल एवं बृंदावन | ” | पत्र १६ |

ले० काल सं० १७५० फागण बुदी १४ । फकीरचन्द जैसवाल ने प्रतिलिपि की थी । कैलास का वासी गोत तैला ।

- | | | | |
|-----------------------|--------------|--------|-------|
| ९. जेष्ठ पूर्णिमा कथा | × | हिन्दी | पूर्ण |
| १०. कवित्त | ब्रह्म गुलाल | ” | |
| ११. ” | × | ” | |

१२. समुय विजय सुत सांवरे रंग भीने हो × " ले० काल १७७२ मोतीहटका देहरा खिजी में प्रतिलिपि की थी ।
१३. पञ्चकल्याणकपूजा अष्टक × संस्कृत ले० काल सं० १७५२ ज्येष्ठकृ० १० ।
१४. पट्टरस कथा × संस्कृत ले० काल सं० १७५२ ।

५५८३. गुटका सं० २०१ । पत्र सं० ३६ । मा० ६×६ इंच । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । पूर्ण ।

विशेष—मादित्यवारकथा (भाऊ) खुशालचंद कृत शनिश्चरदेव कथा एव लालचन्द कृत राजुल पञ्चमीसे के पाठ प्रौर हैं ।

५५८४. गुटका सं० २०२ । पत्र सं० २८ । मा० ६×५½ इंच । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १७५० ।

विशेष पूजा पाठ संग्रह के अतिरिक्त शिवचन्द मुनि कृत हिण्डोलना, ब्रह्मचन्द कृत दशारास पाठ भी है ।

५५८५. गुटका सं० २०३ । पत्र सं० २०-३६, १८५ से २०३ । मा० ६×५½ इंच । भाषा संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण । दशा-सामान्य । मुख्यतः निम्न पाठ है ।

१. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	२०-२६
२. ऋषिमण्डलस्तवन	×	"	३०-३६
३. जलयात्राविधि	ब्रह्मजिनदास	"	१६२-१६६
४. गुरुओं को जयमाल	"	हिन्दी	१६६-१६७
५. रामोकार छन्द	ब्रह्मलाल सागर	"	१६७-२२०

५५८६. गुटका सं० २०४ । पत्र सं० १४० । मा० ६×४ इंच । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७६१ चैत्र सुदी ६ । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—उज्जैन में प्रतिलिपि हुई थी । मुख्यतः समयसार नाटक (बनारसीदास) पार्श्वनाथस्तवन (ब्रह्मनाथ) का संग्रह है ।

५५८७. गुटका सं० २०५ । नित्य नियम पूजा संग्रह । पत्र सं० ६७ । मा० ८½×११ । पूर्ण एवं शुद्ध । दशा- सामान्य ।

५५८८. गुटका सं० २०६ । पत्र सं० ४७ । मा० ८½×७ । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । दशा- सामान्य । पत्र सं० २ नहीं है ।

१. सुंदर भृंगार	महाकविराय	हिन्दी	पत्र सं० ८३१
-----------------	-----------	--------	--------------

महाराजा पृथ्वीसिंहजी के शासनकाल में आमेर निवासी मालीराम काला ने जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

२. श्यामवत्तीसी

नन्ददास

”

बीकानेर निवासी महात्मा फकीरा ने प्रतिलिपि की। मालीराम कालाने सं० १८३२ में प्रतिलिपि कराई थी।

अन्तिम भाग—

दोहा—कृष्ण ध्यान चरासु अठ अवनहि सुत प्रवांन ।

कहत स्याम कलमल कछु रहत न रंच समान ॥ ३६ ॥

छन्द मत्तगयन्द—

स्यो सननादिक नारदस्मेद ब्रह्म सेस महेस जु पार न पायो ।

सो सुख व्यास विरंचि बलानत निगम कुं सोचि अगम बतायो ॥

सैभ भाभ नहि भाग जसोमति नन्दलला वृज आनि कहायो ।

सो कवि या कवि कहाव्य करी जु कल्यान जु स्यांम भलै गुनगायौ ॥३७॥

इति श्री नन्ददास कृत श्याम वत्तीसी संपूर्ण ॥ लिखतं महात्मा फकीरा वासी बीकानेर का । लिखावतु मालीराम काला संवत् १८३२ मित्ती भादवा सुदी १४ ।

५५८६. गुटका सं० २०७ । पत्र सं० २०० । आ० ७×५ इंच । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १६८६ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ, पद एवं भजनों का संग्रह है ।

५५६०. गुटका सं० २०८ । पत्र सं० १७ । आ० ६३ ६ ३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—चाणक्य नीतिसार तथा नाथूराम कृत जातकसार है ।

५५६१. गुटका सं० २०९ । पत्र सं० १६-२४ । आ० ६×५ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—सूरदास, परमानन्द आदि कवियों के पदों का संग्रह है । विषय—कृष्ण भक्ति है ।

५५६२. गुटका सं० २१० । पत्र सं० २८ । आ० ६३×५३ इंच । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—चतुर्दश गुरुस्थान चर्चा है ।

५५६३. गुटका सं० २११ । पत्र सं० ४६-८७ । आ० ६×६ इंच । भाषा—हिन्दी । ले० काल १८१० ।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत श्रीपालरास का संग्रह है ।

५५६४. गुटका सं० २१२ । पत्र सं० ६-१३० । आ० ६×६ इंच ।

विशेष—स्तोत्र, पूजा एवं पद संग्रह है ।

५५६५. गुटका सं० २१३। पत्र सं० ११७। आ० ६×५ इंच। भाषा—हिन्दी। ले० काल १८४७।

विशेष—बीच के २० पत्र नहीं है। सम्बोधनचासिका (ध्यानतराम) वृजलाल की बारह भावना, वैराग्य पञ्चीनी (भगवतःदास) आलोचनाराठ, पद्मावतीस्तोत्र (समयमुन्दर) राजुल पञ्चीसी (विनोदीलाल) आदित्य-वार कथा (भाऊ) भक्तामरस्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है।

५५६६. गुटका सं० २१४। पत्र सं० ८४। आ० ६×६ इंच।

विशेष—मुन्दर शृंगार का संग्रह है।

५५६७. गुटका सं० २१५। पत्र सं० १३२। आ० ६×६ इंच। भाषा—हिन्दी।

१. कलियुग की विनती	देवात्रह्य	हिन्दी	५-७
२. सीताजी की विनती	×	"	७-८
३. हंस की ढाल तथा विनती ढाल	×	"	९-१२
४. जिनवरजी की विनती	देवापाण्डे	"	१२
५. होली कथा	छोतरठाँलिया	"	२० सं० १६६० : ३-१८
६. विनतियां, जानपञ्चीसी, बारह भावना			
राजुल पञ्चीसी आदि	×	"	१९-४०
७. पांच परबी कथा	ब्रह्मवेणु (भ. जयकीर्ति के शिष्य)	"	७६ पद्य हैं ४१-४०
८. चतुर्विंशति विनती	चन्द्रकवि	"	४५-६७
९. वधावा एवं विनती	×	"	६७-६९
१०. नव मंगल	विनोदीलाल	"	६९-७७
११. कक्का बतीसी	×	"	७७-८१
१२. बड़ा कक्का	गुलाबराय	"	८०-८१
१३. विनतियां	×	"	८१-१३२

५५६८. गुटका सं० २१६। पत्र सं० १६४। आ० ११×९ इंच। भाषा—हिन्दी संस्कृत।

विशेष—गुटके के उल्लेखनीय पाठ निम्न प्रकार है।

१. जिनवरव्रत जयमाला	ब्रह्मलाल	हिन्दी	१-२
			भट्टारक पट्टावली दी गई है।
२. आराधना प्रतिबोधमार	सबलकीर्ति	हिन्दी	१३-१५

३. मुक्तावलि गीत	सकलकीर्ति	हिन्दी	१५
४. चौबीस गणधरस्तवन	गुणकीर्ति	"	२०
५. अष्टाह्निकागीत	भ० शुभचन्द्र	"	२१
६. मिच्छा दुक्कड	ब्रह्मजिनदास	"	२२
७. क्षेत्रपालपूजा	मणिभद्र	संस्कृत	३७-३८
८. जिनसप्तहनाम	आशाधर	"	१०६-११६
९. भट्टारक विजयकीर्ति अष्टक	×	"	१५०

५५६६. गुटका सं० २१७ । पत्र सं० १७१ । आ० ८३×६३ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है ।

५६००. गुटका सं० २१८ । पत्र सं० १६६ । आ० ६×५३ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—१४ पूजाओं का संग्रह है ।

५६०१. गुटका सं० २१९ । पत्र सं० १८४ । आ० ६×८ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—खड्गसेन कृत त्रिलोकदर्पणकथा है । ले० काल १७५३ ज्येष्ठ बुदी ७ बुधवार ।

५६०२. गुटका सं० २२० । पत्र सं० ८० । आ० ७३×५ इंच । भाषा-अपभ्रंश संस्कृत ।

१. त्रिंशत्तजिणचऊबीसी महारासिंह अपभ्रंश १-७०

२. नाममाला धनञ्जय संस्कृत ७०-८०

विशेष—गुटके के अधिकांश पत्र जीर्ण तथा फटे हुए हैं एवं गुटका अपूर्ण है ।

५६०३. गुटका सं० २२१ । पत्र सं० ५१-१६० । आ० ८३×६ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—जोधराज गोदीका की सम्यक्त्व कौमुदी (अपूर्ण), प्रीत्यंकरचरित्र, एवं नयचक्र की हिन्दी

गद्य टीका अपूर्ण है ।

५६०४. गुटका सं० २२२ । पत्र सं० ११६ । आ० ५×६ इंच । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६०५. गुटका सं० २२३ । पत्र सं० ५२ । आ० ७×४ इंच । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—यन्त्र, पृच्छाएं एवं उनके उत्तर दिखे हुए हैं ।

५६०६. गुटका सं० २२४ । पत्र सं० १४० । आ० ७×५३ इंच । भाषा-संस्कृत प्राकृत । दशा-

जांती शीर्षा एवं अपूर्ण ।

विशेष—गुरावली (अपूर्ण), भक्तिपाठ, स्वयंभूस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र एवं सामायिक पाठ आदि हैं ।

५६०८. गुटका सं० २०५ । पत्र सं० ११-१७७ । प्रा० १०×४३ ईश्वरी भाषा-हिन्दी ।

१. बिहारी सतसई सटीक—टीकाकार हरिचरणदास । टीकाकाल सं० १८३४ । पत्र सं० ११ से १३१ । ले० काल सं० १८५२ माघ कृष्णा ७ रविवार ।

विशेष—पुस्तक में ७१४ पद्य हैं एवं ८ पद्य टीकाकार के परिचय के हैं ।

अन्तिम भाग— पुरुषोत्तमदास के दोहे हैं—

जद्यपि है सोभा सहज मुक्त न तऊ सुदेश ।

पाये ठौर कुठौर के लरमें होत विशेष ॥७१॥

इस पर ७१५ संख्या है । वे सातसौ से अधिक जो दोहे हैं वे दिये गये हैं । टीका सभी की दी हुई है । केवल ७१४ की जो कि पुरुषोत्तमदास का है, टीका नहीं है । ७१४ दोहों के आगे निम्न प्रशस्ति दी है ।

दोहा—

सालग्रामी सरजु जह मिली गंगसो प्राय ।

अन्तराल में वेस सो हरि कवि को सरसाय ॥१॥

लिखे दूहा भूषण बहुत अनवर के अनुसार ।

कहुं श्रीरे कहुं श्रीर हू निकलेगे लङ्कार ॥२॥

सेवी जुगल कसोर के प्राननाथ जी नांव ।

सप्तसती तिनसों पढी बसि सिंगार बट ठांव ॥३॥

जमुना तट शृङ्गार बट तुलसी विपिन सुदेस ।

सेवत संत महंत जहि देखत हरत कलेस ॥४॥

पुरोहित भोमन्द के मुनि सडित्य महान ।

हम हैं ताके गौत में मोहन मो जजमान ॥५॥

मोहन महा उदार तजि और जाचिये काहि ।

सम्पत्ति मुदामा को दई इन्द्र लही नहीं जाहि ॥६॥

गहि अंक सुमनु तात तैं विधि को बस लखाय ।

राधा नाम कहै मुनै आनन कान बदाय ॥७॥

संबन् अठारहसौ विते ता परि तीसह चारि ।

जन्माठै पूरो कियो कृष्ण चरन मन धारि ॥८॥

इति हरचरणदास कृता विहारी रचित समग्रतो टीका हरिप्रकाशाख्या सम्पूर्णा । संवत् १८२२ माघ कृष्ण
७ रविवासरे शुभमस्तु ।

२. कविवल्लभ—ग्रन्थकार हरिचरणदास । पत्र सं० १३१-१७७ । भाषा-हिन्दी पद्य,
विशेष— ३६७ तक पद्य हैं । आगे के पत्र नहीं है ।

प्रारम्भ—

मोहन चरन पयो न में, है तुलसी को वास ।
ताहि सुमरि हरि भक्त सब, करत विघ्न को नास ॥१॥

कवित्त—

आनन्द को कन्द वृषभान जाको मुखचन्द,
लीला ही ते मोहन के मानस को चोर है ।
दूजौ तैसो रचिबै को चाहत विरंचि निति,
ससि को बनावै अजो मन कौन मोरै है ।
फेरत है सान आसमान पै चढाय फेरि,
पानि पै चढाय त्रे कौ वारिधि में दोरै हैं ।
राधिका के आनन के जोट न विलोके विधि,
दूक दूक तोरै पुनि दूक दूक जोरै है ॥

अथ दोष लक्षण दोहा—

रस आनन्द सरूप कौं दूषै ते हैं दोष ।
आत्मा कौं ज्यो अंधता और बधिरता रोष ॥३॥

अन्तिम भाग—

दोहा—

साका सतरह सौ पुजी संवत् पैतीस जान ।
अठारह सौ जेठ बुदि ने ससि रवि दिन प्रात ॥२८४॥

इति श्री हरिचरणजी विरचित कविवल्लभो ग्रन्थ सम्पूर्णा । स० १८२२ माघ कृष्णा १४ रविवासरे ।

५६८६. गुटका सं० २२६ । पत्र सं० १०० । आ० ६३×६ इंच । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८२५

जेठ बुदा १५ । पूर्णा ।

१. सप्तभंगीवाणी	भगवतीदास	हिन्दी	१
२. समयसारनाटक	बनारसीदास	"	१-१००

५६९०. गुटका सं० २२७ । पत्र सं० २६ । आ० ६×५१ । भाषा-हिन्दी । विषय-आयुर्वेद । ले०

काल सं० १८४७ अषाढ बुदी ६ ।

विशेष—रससागर नाम का प्रायुर्वेदिक ग्रंथ है। हिन्दी पद्य में है। पोथी लिखी पंडित हूंगरसी की मो देवि लिखी—द्वि० प्रसाद बुदो ६ वार सोमवार सं० १८४७ लिखी सवाईराम गोषा ।

५६११. गुटका सं० २२८ । पत्र सं० ४६ से ६२ । आ० ६×७ इ० । भाषा—प्राकृत हिन्दी । ले० कालः १६५४ । द्रव्य संग्रह की भाषा टीका है ।

५६१२. गुटका सं० २२९ । पत्र सं० १८ । आ० ६×७ इ० । भाषा हिन्दी ।

१. पंचपाल पेंतीसो	×	हिन्दी	१-६
२. अंकपनाचार्यपूजा	×	"	७-१२
३. त्रिपाणुकुमारपूजा	×	"	१३-१८-

५६१३. गुटका सं० २३० । पत्र सं० ४२ । आ० ७×६ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत ।

विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है ।

५६१४. गुटका सं० २३१ । पत्र सं० २५-४७ । आ० ६×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—प्रायुर्वेदः ।

विशेष—नयनसुखदास कृत वैद्यमनोत्सव है ।

५६१५. गुटका सं० २३२ । पत्र सं० १४-१५७ । आ० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—भैया भगवतीदास कृत अनित्य पञ्चीसी, बारह भावना, शत प्रष्टोत्तरी, जैनशातक, (भूषणवास) दान बावनो (दानतराय) चेतनकर्मचरित्र (भगवतीदास) कर्मखतीसी, ज्ञानपञ्चीसी, भक्तामरस्तोत्र, कल्याण मंदिर भाषा, दानवर्णन, परिषह वर्णन का संग्रह है ।

५६१६. गुटका सं० २३३ । पत्र संख्या ४२ । आ० १०×४ इ० भाषा—हिन्दी संस्कृत ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६१७. गुटका सं० २३४ । पत्र सं० २०३ । आ० १०×७ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । पूजा पाठ, बनारसी विलास, चौबीस ठाणा चर्चा एवं समयसार नाटक है ।

५६१८. गुटका सं० २३५ । पत्र सं० १६८ । आ० १०×६ इ० । भाषा—हिन्दी ।

१. तत्त्वार्थमूत्र (हिन्दी टीका सहित) हिन्दी संस्कृत ३-९०

६३ पत्र तक दीमक ने खा रखा है ।

२. चौबीसठाणाचर्चा × हिन्दी ६१-१६८

५६१९. गुटका सं० २३६ । पत्र सं० १४० । आ० ६×७ इ० । भाषा हिन्दी ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र आदि सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६२०. गुटका सं० २३८ । पत्र सं० २५० । आ० ६×६३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं०

१७४८ आसोज बुदी १३ ।

१. कुण्डलिया	अगरदास एवं अन्य कविगण	हिन्दी	लिपिकार विजयराम	१-३३
२. पद	मुकुन्ददास	"		३३-३४
			ले० काल १७७५ भाद्रपद सुदी ५	
३. त्रिलोकदर्पणकथा	खड्गसेन	हिन्दी		३४-२५०

५६२१. गुटका सं० २३६ । पत्र सं० १६८ । आ० १३३×६ इञ्च । भाषा—हिन्दी ।

१. आयुर्वेदिक गुसखे	×	हिन्दी		१-१४
२. कथाकोष	×	"		१४-८४
३. त्रिलोक वर्णन	×	"		८४-१६८

५६२२. गुटका सं० २४० । पत्र सं० ४८ । आ० १२३×८ इञ्च । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र ।

विशेष—पहिले भक्तामर स्तोत्र टीका सहित तथा बाद में यन्त्र मंत्र सहित दिया हुआ है ।

५६२३. गुटका सं० २४१ । पत्र सं० ५-१७७ । आ० ४×३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल १८५७

वैशाख बुदी अमावस्या ।

विशेष—लिखितं महात्मा शंभूराम । ज्ञानदीपक नामक न्याय का ग्रन्थ है ।

५६२४. गुटका सं० २४२ । पत्र सं० १-२००, ४०० ५६५, ६०५ से ७६४ । आ० ४×३ इ० ।

भाषा—हिन्दी गद्य ।

विशेष—भावदीपक नामक ग्रन्थ है ।

५६२५. गुटका सं० २४३ । पत्र सं० २४० । आ० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६२६. गुटका सं० २४४ । पत्र सं० २२ । आ० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत ।

१. त्रैलोक्य मोहन कवच	रायमल	संस्कृत	ले० काल १७६१	४
२. दक्षणाभूतिस्तोत्र	शंकराचार्य	"		५-७
३. दशश्लोकीशंभूस्तोत्र	×	"		७-८
४. हरिहरनामावलिस्तोत्र	×	"		८-१०
५. द्वादशराशि फल	×	"		१०-१२

६. बृहस्वति विचार	X	॥ ने० काल १७६२	१२-१४
७. अन्यस्तोत्र	X	"	१५-२२

५६२७. गुटका सं० २४५ । पत्र सं० २-४६ । प्रा० ७५५ इ० ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है ।

५६२८. गुटका सं० २४६ । पत्र सं० ११३ । प्रा० ६५४ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—नन्दराम कृत मानमञ्जरी है । प्रति नवीन है ।

५६२९. गुटका सं० २४७ । पत्र सं० ६-७७ । प्रा० ७५४ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—पूजागण्ड संग्रह है ।

५६३०. गुटका सं० २४८ । पत्र सं० १२ । प्रा० ८३५७ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—तीर्थङ्करों के पंचकल्याण आदि का वर्णन है ।

५६३१. गुटका सं० २४९ । पत्र सं० ८ । प्रा० ८३५७ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—पद संग्रह है ।

५६३२. गुटका सं० २५० । पत्र सं० १५ । प्रा० ८३५७ इ० । भाषा—संस्कृत ।

विशेष—बृहत्स्वयंभूस्तोत्र है ।

५६३३. गुटका सं० २५१ । पत्र सं० २० । प्रा० ७५५ इ० । भाषा—संस्कृत ।

विशेष—समन्तभद्र कृत रत्नकरण्ड श्रावकाचार है ।

५६३४. गुटका सं० २५२ । पत्र सं० ३ । प्रा० ८३५६ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल १९३६ ।

विशेष—मकलकुण्टक स्तोत्र है ।

५६३५. गुटका सं० २५३ । पत्र सं० ८ । प्रा० ६५४ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल सं० १९३३ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र है ।

५६३६. गुटका सं० २५४ । पत्र सं० १० । प्रा० ८५५ इ० । भाषा—हिन्दी ।

विशेष—बिम्ब निर्वाण विधि है ।

५६३७. गुटका सं० २५५ । पत्र सं० १९ । प्रा० ७५६ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी ।

विशेष—बुधजन कृत इष्ट छत्तीसी पंचमगल एवं पूजा आदि है ।

५६३८. गुटका सं० २५६ । पत्र सं० ९ । प्रा० ८३५७ इ० । भाषा—हिन्दी । प्रमूर्ण ।

विशेष—वर्षाचन्द्र कृत रामचन्द्र चरित्र है ।

५६३६. गुटका सं० २५७ । पत्र सं० ८ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी । दशा-जीर्णशीर्षा ।

विशेष—सन्तराम कृत कवित्त संग्रह है ।

५६४०. गुटका सं० २५८ । पत्र सं० ९ । आ० ५×४ इ० । भाषा-संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—ऋषिमण्डलस्तोत्र है ।

५६४१. गुटका सं० २५९ । पत्र सं० ९ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८३० ।

विशेष—हिन्दी पद एवं नाय कृत लहुरी है ।

५६४२. गुटका सं० २६० । पत्र सं० ४ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—नवल कृत दोहा स्तुति एवं दर्शन गाठ है ।

५६४३. गुटका सं० २६१ । पत्र सं० ६ । आ० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । २० काल १८६१ ।

विशेष—सोनागिरि पञ्चीसी है ।

५६४४. गुटका सं० २६२ । पत्र सं० १० । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—ज्ञानोपदेश के पद्य हैं ।

५६४५. गुटका सं० २६३ । पत्र सं० १६ । आ० ६३×४ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—शंकराचार्य विरचित अयराधसूदनस्तोत्र है ।

५६४६. गुटका सं० २६४ । पत्र सं० ९ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—सप्तश्लोकी गीता है ।

५६४७. गुटका सं० २६५ । पत्र सं० ४ । आ० ५३×४ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—वराहपुराण में से सूर्यस्तोत्र है ।

५६४८. गुटका सं० २६६ । पत्र सं० १० । आ० ६×४ इ० । भाषा संस्कृत । ले० काल १८८७ पौष

सुदी ६ ।

विशेष—पत्र १-७ तक महागरापति कवच हे ।

५६४९. गुटका सं० २६७ । पत्र सं० ७ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी ।

विशेष—भूधरदास कृत एकीभाव स्तोत्र भाषा है ।

५६५०. गुटका सं० २६८ । पत्र सं० ३५ । आ० ५३×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल १८८५

पौष सुदी २ ।

विशेष—महात्मा संतराम ने प्रतिलिपि की थी । पद्मावती पूजा, चतुषष्ठी स्तोत्र एवं जिनसहस्रनाम (आशाधर) है ।

५६५१. गुटका सं० २६६ । पत्र सं० २७ । आ० ७३×५३ इ० । भाषा—संस्कृत । पूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

५६५२. गुटका सं० २७० । पत्र सं० ८ । आ० ६३×४ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल सं० १६३२ । पूर्ण ।

विशेष—तीन चौबीसी व दर्शन पाठ है ।

५६५३. गुटका सं० २७१ । पत्र सं० ३१ । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—संग्रह । पूर्ण ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, ऋद्धिमूलमन्त्र सहित, जिनपञ्जरस्तोत्र है ।

५६५४. गुटका सं० २७२ । पत्र सं० ६ । आ० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—संग्रह । पूर्ण ।

विशेष—अनन्तव्रतपूजा है ।

५६५५. गुटका सं० २७३ । पत्र सं० ४ । आ० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा ।

विशेष—स्वरूपचन्द्र कृत चमत्कारजी की पूजा है । चमत्कार क्षेत्र संवत् १८८६ में भाषवा सुदी २ को प्रकट हुआ था । सवाई माधोपुर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५६५६. गुटका सं० २७४ । पत्र सं० १६ । आ० १०×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । पूर्ण ।

विशेष—इसमें रामचन्द्र कृत शिखर विलास है । पत्र ८ से आगे खाली पड़ा है ।

५६५७. गुटका सं० २७५ । पत्र सं० ६३ । आ० ५३×५ इ० । पूर्ण ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है तीन चौबीसी नाम, जिनपञ्चीसी (नवल), दर्शनपाठ, नित्यपूजा भक्तामरस्तोत्र, पञ्चमङ्गल, कल्याणमन्दिर, नित्यपाठ, संबोधपञ्चासिका (ध्यानतरण्य) ।

५६५८. गुटका सं० २७६ । पत्र सं० १० । आ० ६३×६ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल सं० १८४३ । अपूर्ण ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, बड़ा कवका (हिन्दी) आदि पाठ हैं ।

५६५९. गुटका सं० २७७ । पत्र सं० २-२३ । आ० ५३×४ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद ।

अपूर्ण ।

विशेष—हरखचन्द्र के पदों का संग्रह है ।

५६६०. गुटका सं० २७८ । पत्र सं० १-८० । आ० ६×४ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—बीच के कई पत्र नहीं हैं । योगीन्द्रदेव कृत परमात्मप्रकाश है ।

५६६१. गुटका सं० २७९ । पत्र सं० ६-३४ । आ० ६×४ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा संग्रह है ।

५६६२. गुटका सं० २८० । पत्र सं० २-४१ । आ० ५३×४ इ० । भाषा—हिन्दी गद्य । अपूर्ण ।

विशेष—कषायों का वर्णन है ।

५६६३. गुटका सं० २८१ । पत्र सं० ६२ । आ० ६×६ इ० । भाषा—X । पूर्ण ।

विशेष—बारहखड़ी, पूजासंग्रह, दशलक्षण, सोलहकारण, पञ्चमेरूपूजा, रत्नत्रयपूजा, तत्त्वार्थसूत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

५६६४. गुटका सं० २८२ । पत्र सं० १६-८४ । आ० ६३×४३ इ० ।

विशेष—निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है—जैनपञ्चीसी, पद (भूधरदास) भक्तामरभाषा, परमज्योतिभाषा विषापहारभाषा (अचलकीर्ति), निर्वाणकाण्ड, एकीभाव, अकृत्रिमचेत्यालय जयमाल (भगवतीदास), सहस्रनाम, साधुवंदना, विनती (भूधरदास), नित्यपूजा ।

५६६५. गुटका सं० २८३ । पत्र सं० ३३ । आ० ७३×५ इ० । भाषा—हिन्दी पद्य । विषय—अध्यात्म । अपूर्ण ।

विशेष—३३ से आगे के पत्र खाली हैं । बनारसीदास कृत समयसार है ।

५६६६. गुटका सं० २८४ । पत्र सं० २-३५ । आ० ८×६३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । अपूर्ण ।

विशेष—चर्चाशतक (ज्ञानतराम), श्रुतबोध (कालिदास) ये दो रचनायें हैं ।

५६६७. गुटका सं० २८५ । पत्र सं० ३-४६ । आ० ८×६३ इ० । भाषा—संस्कृत प्राकृत । अपूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा, स्वाध्यायपाठ, चौबीसठाणाचर्चा ये रचनायें हैं ।

५६६८. गुटका सं० २८६ । पत्र सं० ३१ । आ० ८×६ इ० । पूर्ण ।

विशेष—द्रव्यसंग्रह संस्कृत एवं हिन्दी टीका सहित ।

५६६९. गुटका सं० २८७ । पत्र सं० ३२ । आ० ७३×५३ इ० । भाषा—संस्कृत । पूर्ण ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र, नित्यपूजा है ।

५६७०. गुटका सं० २८८ । पत्र सं० २-४२ । आ० ६×४ इ० । विषय—संग्रह । अपूर्ण ।

विशेष—ग्रह फल आदि दिया हुआ है ।

५६७१. गुटका सं० २८९ । पत्र सं० २० । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—शृङ्गार । पूर्ण ।

विशेष—रसिकराय कृत स्नेहलीला में से उद्धव गोपी संवाद दिया है ।

प्रारम्भ—

एक समय ब्रजवास की सुरति भई हरिराइ ।

निग जन अपनो जानि के ऊधो लियो बुलाइ ॥

श्रीकिरसन वचन ऐस कहे ऊधव तुम मुनि ले ।
नन्द जसोदा प्रादि दे ब्रज जाइ मुख दे ॥ २ ॥
ब्रज वासी बल्लभ सदा मेरे जीउनि प्रान ।
ताने नीमष न बीसरू' मीहे नन्दराय की भ्रान ॥

अन्तिम—

यह लीला ब्रजवास की गोपी किरसन सनेह ।
जन मोहन जो गाव ही ते नर पाउ देह ॥ १२२ ॥
जो गाव सीष मुर गमन तुम वचन सहेत ।
रसिक राय पूरन कीया मन वांछित फल देत ॥ १२३ ॥

नोट—आगे नाग लीला का पाठ भी दिया हुआ है ।

५६७२. गुटका सं० २६० । पत्र सं० ५२ । भा० ६×५ इ० । अपूर्ण ।

विशेष—मुख्य निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. सोलहकारणकथा	रत्नपाल	संस्कृत	८-१३
२. दशलक्षणीकथा	मुनि ललितकीर्ति	"	१३-१७
३. रत्नत्रयव्रतकथा	"	"	१७-१८
४. पुष्यराजलिखितकथा	"	"	१८-२३
५. प्रलयदशमीकथा	"	"	२३-२६
६. अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	"	"	२७
७. वैद्यमनोत्सव	नयनमुख	हिन्दी पद्य	पूर्णा ३१-५२

विशेष—लाखेरी ग्राम में दीवान श्री बुधसिंहजी के राज्य में मुनि मेघविश्वसे के प्रतिलिपि की थी ।

गुटका काफी जीर्ण है । पत्र चूहों के खाये हुए है । लेखनकाल स्पष्ट नहीं है ।

५६७३. गुटका सं० २६१ । पत्र सं० ११७ । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—संग्रह ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । संस्कृत में समयसार कल्पाद्रुमपूजा भी है ।

५६७४. गुटका सं० २६२ । पत्र सं० ४८ ।

१. ज्योतिषशास्त्र	×	संस्कृत	१६-३६
२. फुटकर दोहे	×	हिन्दी	३१ शोहा है ३६-३७

ले० काल सं० १७६३ संत हरिवंशदास ने लवाण में प्रतिलिपि की थी ।

५६७५ गुटका सं० २६३ । संग्रह कर्ता पाण्डे टोडरमलजी । पत्र सं० ७६ । आ० ५×६ इञ्च । ले० काल सं० १७३३ । अपूर्ण । दशा-जीर्ण ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे एवं मंत्रों का संग्रह है ।

५६७६. गुटका सं० २६४ । पत्र सं० ७७ । आ० ६×४ इञ्च । ले० काल १७८८ पौष सुदी ६ । पूर्ण । सामान्य शुद्ध । दशा-जीर्ण ।

विशेष—पं० गोवर्धन ने प्रतिलिपि की थी । पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है ।

५६७७. गुटका सं० २६५ । पत्र सं० ३१-६२ । आ० ४×५ इञ्च । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल शक सं० १६२५ सावन बुदी ५ ।

विशेष—पुण्याहवाचन एवं भक्तामरस्तोत्र भाषा है ।

५६७८. गुटका सं० २६६ । पत्र सं० ३-४१ । आ० ३×३ इञ्च । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । अपूर्ण । दशा-सामान्य ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र एवं तत्त्वार्थ सूत्र है ।

५६७९. गुटका सं० २६७ । पत्र सं० २५ । आ० ६×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे हैं ।

५६८०. गुटका सं० २६८ । पत्र सं० ६२ । आ० ६३×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ के ३१ पत्र खाली हैं । ३१ से आगे फिर पत्र १ २ से प्रारम्भ है । पत्र १० तक शृङ्गार के कवित्त हैं ।

१. बारह मासा—पत्र १०-२१ तक । चूहर कवि का है । १२ पद हैं । वर्णन सुन्दर है । कविता में पत्र लिखकर बताया गया है । १७ पद्य है ।

२. बारह मासा—गोविन्द का—पत्र २९-३१ तक ।

५६८१. गुटका सं० २६९ । पत्र सं० ४१ । आ० ७×४ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-शृङ्गार ।

विशेष—कोकसार है ।

५६८२. गुटका सं० ३०० । पत्र सं० १२ । आ० ६×५ इञ्च । भाषा-हिन्दी । विषय-मन्त्रशास्त्र ।

विशेष—मन्त्रशास्त्र, आयुर्वेद के नुसखे । पत्र ७ से आगे खाली है ।

५६८३. गुटका सं० ३०१ । पत्र सं० १८ । आ० ४३×३३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-संग्रह ।
न० काल १६१८ । पूर्ण ।

विशेष—लावणी मांगीतुंगी की- हर्षकीर्ति ने सं० १६०० ज्येष्ठ सुदी ५ को यात्रा को थी ।

५६८४. गुटका सं० ३०२ । पत्र सं० ४२ । आ० ४×३३ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-संग्रह । पूर्ण ।
विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६८५. गुटका सं० ३०३ । पत्र सं० १०५ । आ० ४३×४३ इ० । पूर्ण ।

विशेष—३० मन्त्र दिये हुये हैं । कई हिन्दी तथा उर्दू में लिखे हैं । आगे मन्त्र तथा मन्त्रविधि दी हुई है । उनका फल दिया हुआ है । जन्मात्रो सं० १८१७ की जगताराम के पीत्र मारणकचन्द के पुत्र की आयुर्वेद के नुसखे दिये हुये हैं ।

५६८६. गुटका सं० ३०३ क । पत्र सं० १५ । आ० ८×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । पूर्ण ।

विशेष—प्रारम्भ में विश्वामित्र विरचित रामकवच है । पत्र ३ से तुलसीदास कृत कवित्तबंध रामचरित्र है । इसमें छप्पय छन्दों का प्रयोग हुआ है । १-२० पद्य तक संख्या ठीक हैं । इसमें आगे ३५६ संख्या से प्रारम्भ कर ३८२ तक संख्या चली है । इसके आगे २ पत्र खाली हैं ।

५६८७. गुटका सं० ३०४ । पत्र सं० १६ । आ० ७३×५ इ० । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—४ से ६ तक पत्र नहीं है । अजयराज, रामदास, बनारसीदास, जगताराम एवं विजयकीर्ति के पदों का संग्रह है ।

५६८८. गुटका सं० ३०५ । पत्र सं० १० । आ० ७×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । पूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजा है ।

५६८९. गुटका सं० ३०६ । पत्र सं० ६ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा पाठ ।

पूर्ण । विशेष—शांतिपाठ है ।

५६९०. गुटका सं० ३०७ । पत्र सं० १४ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण ।

विशेष—नन्ददास की नाममञ्जरी है ।

५६९१. गुटका सं० ३०८ । पत्र सं० १० । आ० ५×४३ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-स्तोत्र । पूर्ण

विशेष—भक्तामरकृद्धिमन्त्र सहित है ।

क भण्डार [शास्त्रभण्डार बाबा दुलीचन्द जयपुर]

५६६२. गुटका सं० १ । पत्र सं० २७१ । आ० ६३×७३ इञ्च । वे० सं० ८५७ । पूर्ण ।

१. भाषाभूषण	धीरजसिंह राठीड	हिन्दी	१-८
२. अठोत्तरा सनाथ विधि	×	”	ले० काल सं० १७५६ १३

औरंगजेब के समय में पं० अभयसुन्दर ने ब्रह्मपुरी में प्रतिलिपि की थी ।

३. जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी	१४
४. समयसार नाटक	बनारसीदास	”	११७

बादशाह शाहजहां के शासन काल में सं० १७०८ में लाहौर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५. बनारसी विलास	×	”	१२६
-----------------	---	---	-----

विशेष—बादशाह शाहजहां के शासनकाल सं० १७११ में जिहानाबाद में प्रतिलिपि हुई थी ।

५६६३. गुटका सं० २ । पत्र सं० २२५ । आ० ८×५३ इञ्च । अपूर्ण । वे० सं० ८५८ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजा पाठ संग्रह है ।

५६६४. गुटका सं० ३ । पत्र सं० २४ । आ० १०३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । पूर्ण । वे० सं० ८५९ ।

१. शांतिकनाम	×	हिन्दी	१
२. महाभिषेक सामग्री	×	”	१-८
३. प्रतिष्ठा में काम आने वाले ६६ यंत्रों के चित्र	×	”	६-२४

५६६५. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ६३ । आ० ५३×८३ इ० । पूर्ण । वे० सं० ८६० ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५६६६. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ५६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । अपूर्ण । वे० सं०

८६१ ।

विशेष—सुभाषित पाठों का संग्रह है ।

५६६७. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ३३४ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं०

८६२ ।

विशेष—विभिन्न स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७६८. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ४१६ । आ० ६३×५ इ० । ले० काल सं० १८०५ अषाढ सुदी ५

पूर्ण । वे० सं० ८६३ ।

१. पूजा पाठ संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी
२. प्रतिष्ठा पाठ	×	"
३. चौबीस तीर्थङ्कर पूजा	रामचन्द्र	हिन्दी ले० काल १८७५ भाद्रवा सुदी १०

५६६६. गुटका सं० ८ । पत्र सं० ३१७ । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७६२ आसोज सुदी १४ । पूर्ण । वे० सं० ८६४ ।

विशेष—पूजा एवं प्रतिष्ठा सम्बन्धी पाठों का संग्रह है । पृष्ठ २०७ पत्र भक्तामरस्तोत्र की पूजा विशेषतः उल्लेखनीय है ।

५७००. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १४ । आ० ४×४ इ० । भाषा—हिन्दी । पूर्ण । वे० सं० ८६५ ।

विशेष—जगताराम, गुमानीराम, हरीसिंह, जोधराज, लाल, रामचन्द्र आदि कवियों के भजन एवं पदों का संग्रह है ।

ख भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर जोबनेर जयपुर]

५७०१. गुटका सं० १ । पत्र सं० २१२ । आ० ६×४ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. होडाचक्र	×	संस्कृत	अपूर्ण	८
२. नाममाला	धनञ्जय	"	"	६-३२
३. श्रुतपूजा	×	"		३३-३९
४. पञ्चकल्याणकपूजा	×	"	ले० काल १७८३	३९-६५
५. मुक्तावलीपूजा	×	"		६५-६९
६. द्वादशव्रतोद्यापन	×	"		६९-८९
७. त्रिकालचतुर्दशीपूजा	×	"	ले० काल सं० १७८३	८९-१०२
८. नवकारपैतीसी	×	"		
९. आदित्यवारकथा	×	"		
१०. प्रोषधोपवास व्रतोद्यापन	×	"		१०३-२१२
११. नन्दीश्वरपूजा	×	"		
१२. पञ्चकल्याणकपाठ	×	"		
१३. पञ्चमेवपूजा	×	"		

५७०२. गुटका सं० २ । पत्र सं० १६६ । आ० ६×६३ इ० । ले० काल × । दशा-जीर्ण जीर्ण ।

१. त्रिलोकवर्णन	×	संस्कृत हिन्दी	१-१०
२. कालचक्रवर्णन	×	हिन्दी	११-१४
३. विचारगाथा	×	प्राकृत	१५-१६
४. चौबीसतीर्थङ्कर परिचय	×	हिन्दी	१६-३१
५. चउबीसठाणाचर्चा	×	"	३२-७८
६. आश्रव त्रिभङ्गी	×	प्राकृत	७९-११२
७. भावसंग्रह (भावत्रिभङ्गी)	×	"	११३-१३३
८. त्रेपनक्रिया श्रावकाचार टिप्पण	×	संस्कृत	१३४-१५४
९. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	"	१५४-१६८

५७०३. गुटका सं० ३ । पत्र सं० २१५ । आ० ६×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजापाठ तथा मन्त्रसंग्रह है । इसके अतिरिक्त निम्नपाठ संग्रह है ।

१. शत्रुञ्जयतीर्थरास	समयमुन्दर	हिन्दी	३३
२. बारहभावना	जितचन्द्रसूरि	"	२० काल १६१६ ३३-४०
३. दशवैकालिकगीत	जैतसिंह	"	४१-४६
४. शालिभद्र चौपई	जितसिंहसूरि	"	२० काल १६०८ ४६-६४
५. चतुर्विंशति जिनराजस्तुति	"	"	६४-१०६
६. बीसतीर्थङ्करजिनस्तुति	"	"	१०६-११७
७. महावीरस्तवन	जितचन्द्र	"	११७-११६
८. आदीश्वरस्तवन	"	"	१२०
९. पार्श्वजिनस्तवन	"	"	१२०-१२१
१०. विनती, पाठ व स्तुति	"	"	१२२-१४१

५७०४. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ७१ । आ० ५३×३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १६०४ । पूर्ण ।

विशेष—नित्यपाठ व पूजाओं का संग्रह है । लस्कर में प्रतिलिपि हुई थी ।

५७०५. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ४८ । आ० ५×४ इ० । ले० काल सं० १६०१ । पूर्ण ।

विशेष—कर्मप्रकृति वर्णन (हिन्दी), कल्याणमन्दिरस्तोत्र, सिद्धिप्रियस्तोत्र (संस्कृत) एवं विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है ।

५७०६ गुटका सं० ६ । पत्र सं० ८० । आ० ८^१/_२×६^१/_२ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गुटके में निम्न मुख्य पाठों का संग्रह है ।

१. चौरासीबोल	कौरपाल	हिन्दी	अपूर्ण	४-१६
२. भ्रादिपुराणविनती	गङ्गादास	"		१७-४३

विशेष—सूरत में नरसीपुरा (नरसिधपुरा) जाति वाले वरिष्क पर्वत के पुत्र गङ्गादास ने विनती रचना की थी ।

३. पद—जिण जपि जिण जपि जिवड़ा	हर्षकीर्ति	हिन्दी		४४-४५
४. अष्टकपूजा	विश्वभूषण	"	पूर्ण	५१
५. समकितविराजोधर्म	ब्र० जिनदास	"	"	५८

५७०७. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ५० । आ० ५^३/_४×४^३/_४ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—४८ यन्त्रों का मन्त्र सहित संग्रह है । अन्त में कुछ आयुर्वेदिक नुसखे भी दिये हैं ।

५७०८. गुटका सं० ८ । पत्र सं० × । आ० ५×२^३/_४ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—स्फुट कवित्त, उपवासों का व्योरा, सुभाषित (हिन्दी व संस्कृत) स्वर्ग नरक आदि का वर्णन है ।

५७०९. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ५१ । आ० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—संग्रह । ले० काल सं० १७८३ । पूर्ण ।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे, पाशा केवली, नाम माला आदि हैं ।

५७१०. गुटका सं० १० । पत्र सं० ८५ । आ० ६×३^३/_४ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पद संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—लिपि स्पष्ट नहीं है तथा प्रशुद्ध भी है ।

५७११. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १२-६२ । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी पाठों का संग्रह है ।

५७१२. गुटका सं० १२ । पत्र सं० २२३ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत-हिन्दी । ले० काल सं० १६०५ वैशाख बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७१३. गुटका सं० १३ । पत्र सं० १६३ । आ० ५×५ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह है ।

५७१४. गुटका सं० १४ । पत्र सं० ४२ । आ० ८३×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. त्रिलोकवर्णन	×	हिन्दी	पूर्ण	१-१८
२. खंडेला की चरचा	×	"	"	१६-२६
३. त्रैसठ शलाका पुरुषवर्णन	×	"	"	२६-४२

५७१५. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ७६ । आ० ६×५ इ० । ले० काल० × । पूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७१६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १२० । आ० ६×५ इ० । ले० काल सं० १७६३ वैशाख बुदी ३ । पूर्ण ।

१. समयसारनाटक	बनारसीदास	हिन्दी		१०-१०६
२. पार्श्वनाथजीकी निसारणी	×	"		११०-११४
३. शान्तिनाथस्तवन	गुरसागर	"		११५-११६
४. गुरुदेवकीविनती	×	"		११७-१२०

५७१७ गुटका सं० १७ । पत्र सं० ११५ । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है ।

५७१८. गुटका सं० १८ । पत्र सं० १६४ । आ० ५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है ।

५७१९. गुटका सं० १९ । पत्र सं० २१३ । आ० ५×३ इ० । ले० काल × पूर्ण ।

विशेष—नित्य पाठ व मंत्र आदि का संग्रह है तथा आयुर्वेद के नुसखे भी दिये हुये हैं ।

५७२०. गुटका सं० २० । पत्र सं० १३२ । आ० ७×६ इ० । ले० काल सं० १८२२ । अपूर्ण ।

विशेष—नित्यपूजापाठ, पार्श्वनाथ स्तोत्र (पद्मप्रभदेव) जिनस्तुति (रूपचन्द, हिन्दी) पद (शुभ चन्द्र एवं कनककीर्ति) खंडेलवालों की उत्पत्ति तथा सामुद्रिक शास्त्र आदि पाठों का संग्रह है ।

५७२१. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ५-६२ । आ० ५३×५३ इ० । ले० काल X । अपूर्ण । जीर्ण ।
विशेष—समयसार गाथा, सामायिकपाठ वृत्ति सहित, तत्त्वार्थसूत्र एवं भक्तामरस्तोत्र के पाठ हैं ।

५७२२. गुटका सं० २२ । पत्र सं० २१६ । आ० ६×६ इ० । ले० काल सं० १८६७ क्षेत्र सुदी १४ ।

पूर्ण ।

विशेष—५० मंत्रों एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७२३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ६७-२०६ । आ० ६×५ इ० । ले० काल X । अपूर्ण ।

१. पद- (वह पानी मुलतान गये)	X	हिन्दी	पूर्ण	६७
२. (पद-कौन खतामेरीमै न जानी तजि के चले गिरनारि)	X	"	"	"
३. पद-(प्रभू तेरे दरसन की बलिहारी)	X	"	"	"
४. आदित्यवारकथा	X	"	"	६६-१२५
५. पद-(चलो पिय पूजन श्री वीर जिनंद)	X	"	"	१७८-१७९
६. जोगीरासो	जिनदास	"	"	१६०-१६२
७. पञ्चेन्द्रिय बेलि	ठक्कुरसी	"	"	१६२-१६५
८. जैनविद्वीदेश की पत्रिका	मजलसराय	"	"	१६५-१६७

ग भण्डार [शास्त्रभण्डार दि० जैन मन्दिर चौधरियों का जयपुर]

५७२४. गुटका सं० १ । आ० ८×५ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १०० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. पद- सांवरिया पारसनाथ मोहे तो चाकर राखो	खुशालचन्द्र	हिन्दी
२. ,, मुझे है चाव दरसन का दिखा दोगे तो क्या होगा	X	"
३. दर्शनपाठ	X	संस्कृत
४. तीन चौबीसीनाम	X	हिन्दी
५. कल्याणमन्दिरभाषा	बनारसीदास	"
६. भक्तामरस्तोत्र	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत
७. सष्टमीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"

८. देवपूजा	×	हिन्दी संस्कृत
९. अकृत्रिम जिन चैत्यालय जयमाल	×	हिन्दी
१०. सिद्ध पूजा	×	संस्कृत
११. सोलहकारणपूजा	×	"
१२. दशलक्षणपूजा	×	"
१३. शान्तिपाठ	×	"
१४. पार्श्वनाथपूजा	×	४
१५. पंचमेरूपूजा	भूधरदास	हिन्दी
१६. नन्दीश्वरपूजा	×	संस्कृत
१७. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	अपूर्णा "
१८. रत्नत्रयपूजा	×	"
१९. अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल	×	हिन्दी
२०. निर्वाणकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	"
२१. गुरुओं की विनती	×	"
२२. जिनपच्चीसी	नवलराम	"
२३. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	पूर्णा संस्कृत
२४. पञ्चकल्याणमंगल	रूपचन्द	हिन्दी
२५. पद— जिन देख्या विन रह्यो न जाय	किशनसिंह	"
२६. " कीजौ हो भैयन सो प्यार	द्यानतराय	"
२७. " प्रभू यह अरज सुगो मेरी	नन्द कवि	"
२८. " भयो सुख चरन देखत ही	"	"
२९. " प्रभू मेरी सुनो विनती	"	"
३०. " परयो संसार की धारा जिनको वार नहीं पारा	"	"
३१. " कला दीदार प्रभू तेरा भया कर्मन समुर हेरा	"	"
३२. स्तुति	बुधजन	"
३३. नेमिनाथ के दश भव	×	"
३४. पद— जैन मत परखो रे भाई	×	"

५७२५. गुटका सं० २ । पत्र सं० ८३-४०३ । आ० ४३×३ इ० । अपूर्ण । वे० सं० १०१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. कल्याणमन्दिर भाषा	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण ८३-६३
२. देवसिद्धपूजा	×	"	६३-११५
३. सोलहकारणपूजा	×	अपभ्रंश	११५-१२२
४. दशलक्षणपूजा	×	अपभ्रंश संस्कृत	१२३-१२६
५. रत्नत्रयपूजा	×	संस्कृत	१२८-१६७
६. नन्दीश्वरपूजा	×	प्राकृत	१६८-१८१
७. शान्तिपाठ	×	संस्कृत	१८१-१८६
८. पञ्चमंगल	रूपचन्द्र	हिन्दी	१८७-२१२
९. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	अपूर्ण २१३-२२४
१०. सहस्रनामस्तोत्र	जिनसेनाचार्य	"	२२५-२६८
११. भक्तामरस्तोत्र मंत्र एवं हिन्दी पद्यार्थ सहित	मानतुङ्गाचार्य	संस्कृत हिन्दी	२६९-४०३

५७२६. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ८६ । आ० १०×६ इ० । विषय-संग्रह । ले० काल सं० १८७६

श्रावण सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० १०५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. चौबीसतीर्थकरपूजा	द्यानतराय	हिन्दी
२. अष्टाङ्गिकापूजा	"	"
३. षोडशकारणपूजा	"	"
४. दशलक्षणपूजा	"	"
५. रत्नत्रयपूजा	"	"
६. पंचमेरुपूजा	"	"
७. सिद्धशैवसूत्राट्ट	"	"
८. दर्शनराशि	×	"
९. पद - अरज हमारे मुन	×	"

१०. भक्तामरस्तोत्रोत्पत्तिकथा	×	”
११. भक्तामरस्तोत्राष्टमंत्रसहित	×	संस्कृत हिन्दी

नथमल कृत हिन्दी अर्थ सहित ।

५७२७. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ५५ । आ० ८×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १९५४ । पूर्ण । वे० सं० १०३ ।

विशेष—जैन कवियों के हिन्दी पदों का संग्रह है । इनमें दौलतराम, दानतराय, जोधराज, नवल, बुधजन भैरवा भागवतीदास के नाम उल्लेखनीय हैं ।

घ भण्डार [दि० जैन नया मन्दिर वैराठियों का जयपुर]

५७२८. गुटका सं० १ । पत्र सं० ३०० । आ० ६३×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे. सं० १४० ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है:—

१. भक्तामरस्तोत्र	मानगुंगाचार्य	संस्कृत	१-६
२. घन्टाकरणमन्त्र	×	”	६
३. बनारसीविलास	बनारसीदास	हिन्दी	७-१६६
४. कवित्त	”	”	१६७
५. परमार्थदोहा	रूपचन्द	”	१६८-१७४
६. नाममालाभाषा	बनारसीदास	”	१७५-१९०
७. अनेकार्थनाममाला	नन्दकवि	”	१९०-१९७
८. जिनपिगलछंदकोश	×	”	१९७-२०६
९. जिनसतसई	×	”	अपूर्णा २०७-२११
१०. सिगलभाषा	रूपदीप	”	२११-२२१
११. देवपूजा	×	”	२२२-२६२
१२. जैनशतक	भूधरदास	”	२६२-२८३
१३. भक्तामरभाषा (पद्य)	×	”	२८४-३००

विशेष—श्री टेकमचन्द ने प्रतिलिपि की थी ।

५७२६. गुटका सं० २ । पत्र सं० २३३ । आ० ६×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १४१
विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	प्रपञ्च श	१-१०६
विशेष—संस्कृत गद्य में टीका दी हुई है ।			
२. धर्माधर्मस्वरूप	×	हिन्दी	११०-१७०
३. ढाढसीगाथा	ढाढसीमुनि	प्राकृत	१७१-१६२
४. पंचलब्धिविचार	×	"	१६३-१६४
५. अठावीस मूलगुणरास	ब्र० जिनदास	हिन्दी	१६४-१६६
६. दानकथा	"	"	१६७-२१५
७. बारह अनुप्रेक्षा	×	"	२१५-२१७
८. हंसतिलकरास	ब्र० अजित	हिन्दी	२१७-२१३
९. चिद्रूपभास	×	"	२२०-२१७
१०. आदिनाथकल्याणकथा	ब्रह्म ज्ञानसागर	"	२२८-२३३

५७३०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६८ । आ० ५३×४ इ० । ले० काल सं० १६२१ पूर्ण । वै० सं० १४२

१. जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	संस्कृत	१-३५
२. आदित्यवार कथा भाषा टीका सहित	मू० क० सकलकीर्ति	हिन्दी	३६-६०
	भाषाकार—सुरेन्द्रकीर्ति	२० काल १७४१	
३. पञ्चपरमेष्ठिगुणस्तवन	×	"	६१-६८

५७३१. गुटका सं० ४ । पत्र सं० ७० । आ० ७३×६ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १७४३

१. तत्त्वार्थसूत्र	उमास्वामि	संस्कृत	५-२५
२. भक्तामरभाषा	हेमराज	हिन्दी	२६-३२
३. जिनस्तवन	दौलतराम	"	३२-३३
४. छहढाला	"	"	३४-५६
५. भक्तामरस्तोत्र	माननुंगाचार्य	संस्कृत	६०-६७
६. रविवारकथा	चेत्रेन्द्रभूषण	हिन्दी	६८-७०

५७३२. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ३६ । आ० ८३×७३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण ।
वे० सं० १४४ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५७३३. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ६-३६ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।
वे० सं० १४७ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५७३४. गुटका सं० ७ । पत्र सं० २-३३ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा ।
ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १४८ ।

५७३५. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १७-४८ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X ।
अपूर्ण । वे० सं० १४९ ।

विशेष—बनारसीविलास तथा कुछ पदों का संग्रह है ।

५७३६. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ३२ । आ० ६×४३ इ० । ले० काल० सं० १८०१ फागुण ।
पूर्ण । वे० सं० १४५ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५७३७. गुटका सं० १० । पत्र सं० ४० । आ० ६×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ संग्रह ।
ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १५० ।

५७३८. गुटका सं० ११ । पत्र सं० २५ । आ० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ संग्रह
ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १५१ ।

५७३९. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ३४-८६ । आ० ८३×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा
पाठ संग्रह । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १४६ ।

विशेष—स्फुट पाठों का संग्रह है ।

५७४०. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ४८ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा पाठ संग्रह ।
ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १५२ ।

ॐ भगडार [शास्त्रभगडार दि० जैन मन्दिर संधीजी]

५७४१. गुटका सं० १ । पत्र सं० १०७ । आ० ८३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X ।
अपूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७४२. गुटका सं० २। पत्र सं० ८६। आ० ६×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८७६ वैशाख शुक्ला १०। अपूर्ण।

विशेष—चि० राममुखजी डूंगरसोजी के पुत्र के पठनार्थ पुजारी राधाकृष्ण ने मंडा नगर में प्रतिलिपि की थी। पूजाओं का संग्रह है।

५७४३. गुटका सं० ३। पत्र सं० ६६। आ० ६½×६ इ०। भाषा-प्राकृत संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण।

विशेष—भक्तिपाठ, संबोधपञ्चासिका तथा मुभाषितावली आदि उल्लेखनीय पाठ हैं।

५७४४. गुटका सं० ४। पत्र सं० ४-६६। आ० ७×८ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १८६८। अपूर्ण।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है।

५७४५. गुटका सं० ५। पत्र सं० २८। आ० ८×६½ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल सं० १९०७। पूर्ण।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है।

५७४६. गुटका सं० ६। पत्र सं० २७६। आ० ६×४½ इ०। ले० काल सं० १६६.... माह बुदी ११। अपूर्ण।

विशेष—भट्टारक चन्द्रकीर्ति के शिष्य आचार्य लालचन्द्र के पठनार्थ प्रतिलिपि की थी। पूजा स्तोत्रों के अतिरिक्त निम्न पाठ उल्लेखनीय है :—

१. आराधनासार	देवसेन	प्राकृत
२. संबोधपञ्चासिका	×	"
३. भुतस्कन्ध	हेमचन्द्र	संस्कृत

५७४७. गुटका सं० ७। पत्र सं० १०४। आ० ६½×४½ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।
विशेष—आदित्यवार कथा के साथ अन्य कथायें भी हैं।

५७४८. गुटका सं० ८। पत्र सं० ३४। आ० ४½×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण।
विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है।

५७४९. गुटका सं० ९। पत्र सं० ७८। आ० ७½×४ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पूजा एवं स्तोत्र संग्रह। ले० काल ×। पूर्ण। जीर्ण।

५७५०. गुटका सं० १० । पत्र सं० १० । आ० ७३×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—आनन्दघन एवं सुन्दरदास के पदों का संग्रह है ।

५७५१. गुटका सं० ११ । पत्र सं० २० । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

विशेष—भूधरदास आदि कवियों की स्तुतियों का संग्रह है ।

५७५२. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ५० । आ० ६×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—पञ्चमङ्गल रूपचन्द कृत, वधावा एव विनतियों का संग्रह है ।

५७५३. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ६० । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

१. धर्मविलास	द्यानतराय	हिन्दी
२. जैनशतक	भूधरदास	”

५७५४. गुटका सं० १४ । पत्र सं० १५ से १३४ । आ० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्ण ।

विशेष—चर्चा संग्रह है ।

५७५५. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ४० । आ० ७३×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५७५६. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ११४ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

विशेष—पूजापाठ एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७५७. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—गङ्गा, विहारी आदि कवियों के पद्यों का संग्रह है ।

५७५८. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ५२ । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

जीर्ण ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एवं पूजायें हैं ।

५७५९. गुटका सं० १९ । पत्र सं० १७३ । आ० ६×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

१. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण
२. जम्बस्वामी चौपई	ब्र० रायमल्ल	”	पूर्ण
३. धर्मपरीक्षाभाषा	×	”	अपूर्ण
४. समाधिमरणभाषा	×	”	”

५७६०. गुटका सं० २० । पत्र सं० ५३ । मा० ८ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{३}{४}$ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण ।

विशेष—शुभानोरामजी ने प्रतिलिपि की थी ।

१. वसंतराजशकुनावली × संस्कृत हिन्दी २० काल सं० १८२५
सावन सुदी ५ ।

२. नाममाला धनञ्जय संस्कृत ×

५७६१. गुटका सं० २१ । पत्र सं० ८-७४ । मा० ८×५ $\frac{३}{४}$ इ० । ले० काल सं० १८२० अषाढ सुदी
६ । अपूर्ण ।

१. डोलामाहरी की वार्ता × हिन्दी

२. शनिश्चरकथा × "

३. चन्द्रकुम्भर की वार्ता × "

५७६२. गुटका सं० २२ । पत्र सं० १२७ । मा० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एवं पूजाओं का संग्रह है ।

५७६३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ३६ । मा० ६ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७६४. गुटका सं० २४ । पत्र सं० १२८ । मा० ७×५ $\frac{३}{४}$ इ० । ले० काल सं० १७७४ । अपूर्ण । जीर्ण

१. यशोचरकथा सुशालचन्द्र काला हिन्दी २० काल १७७५

२. पद व स्तुति × " "

विशेष—सुशालचन्द्रजी ने स्वयं प्रतिलिपि की थी ।

५७६५. गुटका सं० २५ । पत्र सं० ७७ । मा० ६×४ $\frac{३}{४}$ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५७६६. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ३६ । मा० ६ $\frac{३}{४}$ ×५ $\frac{३}{४}$ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण

१. पद्मावतीसहस्रनाम × संस्कृत

२. द्रव्यसंग्रह × प्राकृत

५७६७. गुटका सं० २७ । पत्र सं० ३३८ । मा० ८×६ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. पूजासंग्रह × संस्कृत

२. प्रद्युम्नरास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी
३. सुदर्शनरास	"	"
४. श्रीपालरास	"	"
५. आदित्यवारकथा	"	"

५७६८. गुटका सं० २८ । पत्र सं० २७६ । आ० ७×४ $\frac{१}{२}$ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—गुटके में निम्न पाठ उल्लेखनीय है ।

१. नाममाला	धनंजय	संस्कृत
२. अकलंकाष्टक	अकलंकदेव	"
३. त्रिलोकतिलकस्तोत्र	भट्टारक महीचन्द्र	"
४. जिनसहस्रनाम	आशाधर	"
५. योगीरासो	जिनदास	हिन्दी

५७६९. गुटका सं० २९ । पत्र सं० २५० । आ० ७×४ $\frac{१}{२}$ इ० । ले० काल सं० १८७४ वैशाख कृष्णा

६ । पूर्ण ।

१. नित्यनियमपूजासंग्रह	×	हिन्दी	
२. चौबीस तीर्थकर पूजा	रामचन्द्र	"	
३. कर्मदहनपूजा	टेकचन्द्र	"	
४. पंचपरमेष्ठिपूजा	×	"	२० काल सं० १८६२ ले० का० सं० १८७९

स्योजीराम भावसां ने प्रतिलिपि की थी ।

५. पंचकल्याणकपूजा	×	हिन्दी
६. द्रव्यसंग्रह भाषा	द्यानतराय	"

५७७०. गुटका सं० ३० । पत्र सं० १०० । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. पूजापाठसंग्रह	×	संस्कृत
२. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी
३. लघुचारणक्यराजनीति	चारणक्य	"
४. वृद्ध " "	"	"

५ नाममाला

धनञ्जय

संस्कृत

५७७१. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ६०-११० । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५७७२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ६२ । आ० ५^१/_२×५^३/_२ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. ब्रह्मकावत्तोसी	×	हिन्दी
२. पूजापाठ	×	संस्कृत हिन्दी
३. विक्रमादित्य राजा की कथा	×	"
४. शनिश्चरदेव की कथा	×	"

५७७३. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ८४ । आ० ६×४^३/_२ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. पाशाकेवली (प्रबजद)	×	हिन्दी
२. जानोग्देशवत्तोसी	हरिदास	"
३. स्यामवत्तोसी	×	"
४. पाशाकेवली	×	"

५७७४. गुटका सं० ३४ । आ० ५×५ इ० । पत्र सं० ८४ । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजा व स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७७५. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० ६६ । आ० ६×४^३/_२ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १६४० ।

पूर्ण ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है । बचूलाल छाबडा ने प्रतिलिपि की थी ।

५७७६ गुटका सं० ३६ । पत्र सं० १५ से ७६ । आ० ७×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं एवं पद संग्रह है ।

५७७७. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० ७३ । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

१. जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी
२. संबोधपंचासिका	द्यानतराय	"
३. पद-संग्रह	"	"

५७७८. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० २६० । आ० ५३×३३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजाओं तथा स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७७९. गुटका सं० ३९ । पत्र सं० ११८ । आ० ८३×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८६१ । पूर्ण ।

विशेष—नानू गोधा ने गाजी के थाना में प्रतिलिपि की थी ।

१. गुलालपञ्चीसी	ब्रह्मगुलाल	हिन्दी	
२. चंद्रहंसकथा	हर्षकवि	"	र का सं० १७०८ ले. का. सं. १८११
३. मोहविवेकयुद्ध	बनारसीदास	"	
४. आत्मसंबोधन	द्यानतराय	"	
५. पूजासंग्रह	×	"	
६. भक्तामरस्तोत्र (मंत्र सहित)	×	संस्कृत	ले० का० सं० १८११
७. आदित्यवार कथा	×	हिन्दी	ले० का० सं० १८६१

५७८०. गुटका सं० ४० । पत्र सं० ८२ । आ० ५३×४ इ० । ले० काल × । पूर्ण ।

१. नखशिखवर्णन

×

हिन्दी

२. आयुर्वेदिकनुसखे

×

"

५७८१. गुटका सं० ४१ । पत्र सं० २०० । आ० ७३×४३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले०

काल × । पूर्ण ।

विशेष—ज्योतिष संबंधी साहित्य है ।

५७८२. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० १५८ । आ० ८×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—मनोहरलाल कृत ज्ञानचिंतामणि है ।

५७८३. गुटका सं० ४३ । पत्र सं० ८० । आ० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा व पत्र । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—शनिश्चर एवं आदित्यवार कथायें तथा पदों का संग्रह है ।

५७८४. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ६० । आ० ६×५ इ० । ले० काल सं० १९५६ फागुन बुदी १४ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रसंग्रह है ।

५७८५. गुटका सं० ४५ । पत्र सं० ६० । मा० ८५५३ इ० । ले० काल X । पूर्ण ।

१. नित्यपूजा	X	हिन्दी संस्कृत
२. पञ्चमङ्गल	रूपचन्द्र	"
३. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत

५७८६. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० २४५ । मा० ४X३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल X ।

अपूर्ण ।

विशेष—पूजाओं तथा स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७८७ गुटका सं० ४७ । पत्र सं० १७१ । मा० ६X४ इ० । ले० काल सं० १८३१ भादवा बुदा ७ । पूर्ण ।

१. भर्तृहरिशतक	भर्तृहरि	संस्कृत
२. वैद्यजीवन	लोलिम्भराज	"
३. सप्तशती	गोवर्द्धनाचार्य	ले० काल सं० १७३१ "

विशेष—जयपुर में गुमानसागर ने प्रतिलिपि की थी ।

५७८८. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १७२ । मा० ६X४ इ० । ले० काल X । पूर्ण ।

१. बारहसडी	सूरत	हिन्दी
२. कक्काबत्तीसी	X	"
३. बारहसडी	रामचन्द्र	"
४. पद ब विन्ती	X	"

विशेष—अधिकतर त्रिभुवनचन्द्र के पद हैं ।

५७८९. गुटका सं० ४९ । पत्र सं० २८ । मा० ८३X६ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १९५१ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है ।

५७९०. गुटका सं० ५० । पत्र सं० १५५ । मा० १०३X७ इ० । ले० काल X । पूर्ण ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१. शांतिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	संस्कृत
२. स्वयम्भूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	"

३. एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	हिन्दी
४. सन्नोधपञ्चासिकाभाषा	द्यानतराय	"
५. निर्वाणकाण्डगाथा	×	प्राकृत
६. जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी
७. सिद्धपूजा	आशाधर	संस्कृत
८. लघुवामायिक भाषा	महाबन्द्र	"
९. सरस्वतीपूजा	मुनिवदनन्दि	"

५७६१ गुटका सं० ३१ । पत्र सं० १४ । आ० ६३×४३ इ० । ले० काल सं० १९१७ चैत्र सुदी १०

अपूर्णा ।

विशेष—चिमनलाल भांवसा ने प्रतिलिपि की थी ।

१. विषामहारस्तोत्रभाषा	×	हिन्दी
२. रथयात्रावर्णन	×	"
३. सांवल्लाजी के मन्दिर की रथयात्रा का वर्णन	×	"

विशेष—यह रथयात्रा सं० १९२० फागुण बुदी ८ मंगलवार को हुई थी ।

५७६२. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० १३२ आ० ६×५३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०

१८१८ । अपूर्णा ।

विशेष—पूजा स्तोत्र व पद संग्रह है ।

५७६३. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० ७० । आ० १०×७ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्ण ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५७६४. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ५० । आ० ८×५३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १७४४

आसोज सुदी १० । अपूर्णा । जीर्ण शीर्ण ।

विशेष—नेमिनाथ रासो (ब्रह्मरायमल्ल) एवं अन्य सामान्य पाठ हैं ।

५७६५. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० ७-१२८ । आ० ६×५३ इ० । ले० काल × । अपूर्णा ।

विशेष—गुटके में मुख्यतः समयसार नाटक (बनारसीदास) तथा धर्मपरीक्षा भाषा (मनोहरलाल)

कृत है ।

५७६६. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ७६ । आ० ६×४ ३/४ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १८१५ वैशाख बुदी ८ । पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—कंवर वल्लराम के पठनार्थ पं० आशाराम ने प्रतिलिपि की थी ।

१. नीतिशास्त्र	चाणक्य	संस्कृत
२. नवरत्नकवित्त	×	हिन्दी
३. कवित्त	×	”

५७६७. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० २१७ । आ० ६ ३/४×५ ३/४ इ० । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५७६८. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० ११२ । आ० ६ ३/४×६ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५७६९. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० ६० । आ० ५×४ इ० । भाषा—प्राकृत-संस्कृत । ले० काल × ।

पूर्ण ।

विशेष—लघु प्रतिक्रमण तथा पूजाओं का संग्रह है ।

५८००. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ३४४ । आ० ६×६ ३/४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत श्रीपालरास एवं हनुमतरास तथा अन्य पाठ भी हैं ।

५८०१. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ७२ । आ० ६×४ ३/४ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्ण । जीर्ण ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है । पुट्टों के दोनों ओर गणेशजी एवं हनुमानजी के कलापूर्ण चित्र हैं ।

५८०२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२१ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०३. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० ७-४९ । आ० ६ ३/४×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

५८०४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० २० । आ० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

५८०५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ९० । आ० ३ ३/४×३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पदों का संग्रह है ।

५८०६. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ८ । आ० ८×४ ३/४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

विशेष—प्रवचनसार भाषा है ।

च भण्डार [दि० जैन मन्दिर छोटे दीवानजी जयपुर]

५८०७. गुटका सं० १ । पत्र सं० १६२ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १७५२ पौष । पूर्ण । वे० सं० ७४७ ।

विशेष—प्रारम्भ में आयुर्वेद के नुसखे है तथा फिर सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

५८०८. गुटका सं० २ । संग्रहकर्ता पं० फतेहचन्द नागौर । पत्र सं० २४८ । आ० ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७४८ ।

विशेष—ताराचन्दजी के पुत्र सेवारामजी पाटणो के पठनार्थ लिखा गया था—

१. नित्यनियम के दोहे	X	हिन्दी	ले० काल सं० १८५७
२. पूजन व नित्य पाठ संग्रह	X	” संस्कृत	ले० काल सं० १८५६
३. शुभशील	X	हिन्दी	१०८ शिक्षायें हैं ।
४. ज्ञानपदवी	मनोहरदास	”	
५. चैत्यवन्दना	X	संस्कृत	
६. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	X	हिन्दी	
७. आदित्यवार की कथा	X	”	
८. नवकार मंत्र चर्चा	X	”	
९. कर्म प्रकृति का व्यौरा	X	”	
१०. लघुसामायिक	X	”	
११. पाशाकेवलौ	X	”	ले० काल० सं० १८६६
१२. जैन बन्दीदेश की पत्री	X	”	”

५८०९. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ५७ । आ० ६×४३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७४९ ।

५८१०. गुटका सं० ४ । पत्र सं० २०६ । आ० ५×५३ इ० । भाषा हिन्दी । विषय-पद भजन । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७५० ।

५८११. गुटका सं० ५ । पत्र सं० १२५ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७५१ ।

विशेष- सामान्य पूजा पाठ संग्रह है :

५८१२. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १५१ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७५२ ।

विशेष-प्रारम्भ में आयुर्वेदिक नुसखे भी हैं ।

५८१३. गुटका सं० ७ । आ० ६×६३ इ० भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजापाठ । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७५३ ।

५८१४. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १३७ । आ० ७३×५३ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७५४ ।

५८१५. गुटका सं० ९ । पत्र सं० ७२ । आ० ७३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल X । पूर्ण वे० सं० ७५५ ।

५८१६. गुटका सं० १० । पत्र सं० ३५७ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७५६ ।

५८१७. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १२८ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल X । पूर्ण वे० सं० ७५७ ।

५८१८. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १४६-७१२ । आ० ६×४ इ० । भाषा संस्कृत हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७५८ ।

विशेष-निम्नपाठों का संग्रह है—

१. दर्शनपञ्चमी	X	हिन्दी
२. पञ्चास्तिकायभाषा	X	"
३. मोक्षपेड़ी	बनारसीदास	"
४. पंचमेहजयमाल	X	"
५. साधुवन्दना	बनारसीदास	"
६. जखड़ी	भूधरदास	"
७. गुरुमञ्जरी	X	"
८. लघुमंगल	रूपचन्द्र	"
९. लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	"

१०. अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	भैया भगवतीदास	”	२० सं० १७४५
११. बाईस परिषह	भूधरदास	”	
१२. निर्वाणकाण्ड भाषा	भैया भगवतीदास	”	२० सं० १७३६
१३. बारह भावना	”	”	
१४. एकीभावस्तोत्र	भूधरदास	”	
१५. मंगल	विनोदीलाल	”	२० सं० १७४४
१६. पञ्चमंगल	रूपचन्द्र	”	
१७. भक्ताभरस्तोत्र भाषा	नथमल	”	
१८. स्वर्गमुख वर्णन	×	”	
१९. कुदेवस्वरूप वर्णन	×	”	
२०. समयसारनाटक भाषा	बनारसीदास	”	ले० सं० १८६१
२१. दशलक्षणपूजा	×	”	
२२. एकीभावस्तोत्र	वादिराज	संस्कृत	
२३. स्वयंभूस्तोत्र	समंतभद्राचार्य	”	
२४. जिनसहस्रनाम	आशाधर	”	
२५. देवागमस्तोत्र	समंतभद्राचार्य	”	
२६. चतुर्विंशतितीर्थङ्कर स्तुति	चन्द्र	हिन्दी	
२७. चौबीसठाणा	नेमिचन्द्राचार्य	प्राकृत	
२८. कर्मप्रकृति भाषा	×	हिन्दी	

५८१६. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ५३ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल-
पूर्ण । वे० सं० ७५६ ।

विशेष—पूजा पाठ के अतिरिक्त लघु चाणक्य राजनीति भी है ।

५८२०. गुटका सं० १४ । पत्र सं० × । आ० १०×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण
वे० सं० ७६० ।

विशेष—पञ्चास्तिकाय भाषा टीका सहित है ।

५८२१. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ३-१८४ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-
पूजा पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ७६१ ।

५८२२. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १२७ । आ० ६३×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७६२ ।

५८२३. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ७-२३० । आ० ८३×७३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७६३ आसोज बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० ७६३ ।

विशेष—यह गुटका बसवा निवासी पं० दौलतरामजी ने स्वयं के पढ़ने के लिए पारमराम ब्राह्मण से लिखवाया था ।

१. नाटकसमयसार	- बनारसीदास	हिन्दी	अपूर्ण १-८१
२. बनारसीविलास	"	"	८२-१०३
४. तीर्थक्षुरों के ६२ स्थान	X	"	१६४-२२०
४. खंडेलवालों की उत्पत्ति और उनके ८४ गोत्र	X	"	२२५-२३०

५८२४ गुटका सं० १८ । पत्र सं० ५-३१५ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७६४ ।

५८२५. गुटका सं० १९ । पत्र सं० ४७ । आ० ८३×६३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तोत्र ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ७६५ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्रों का संग्रह है ।

५८२६. गुटका सं० २० । पत्र सं० १६५ । आ० ८×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७६६ ।

५८२७. गुटका सं० २१ । पत्र सं० १२८ । आ० ६×३३ इ० । भाषा-X । विषय-पूजा पाठ । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७६७ ।

विशेष—गुटका पानी में भीगा हुआ है ।

५८२८. गुटका सं० २२ । पत्र सं० ४६ । आ० ७×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ७६८ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

छ भण्डार [दि० जैन मन्दिर गोधों का जयपुर]

५८२६. गुटका सं० १। पत्र सं० १७०। आ० ५×५ इ०। भाषा हिन्दी संस्कृत। ले० काल X।
अपूर्णा। वे० सं० २३२।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है। बीच के अधिकांश पत्र गले एवं फटे हुए हैं। मुख्य पाठों का संग्रह

निम्न प्रकार है।

१. नेमीश्वररास	मुनिरतनकीर्ति	हिन्दी	६५ पद्य है।
२. नेमीश्वर की बेलि	ठनकुरसी	”	८८-९५
३. पंचेन्द्रियबेलि	”	”	९६-१०१
४. चौबीसतीर्थकररास	X	”	१०१-१०३
५. विवेकजकडी	जिनदास	”	१२९-१३३
६. मेघकुमारगीत	पूनो	”	१४८-१५१
७. टंडाणागीत	कविबूचा	”	१५१-१५३
८. वारहमनुप्रेक्षा	अवधू	”	१५३-१६०
			ले० काल सं० १६६२ जेष्ठ बुदी १२
९. शान्तिनाथस्तोत्र	गुणभद्रस्वामी	संस्कृत	१६०-१६३
१०. नेमीश्वर का हिंडोलना	मुनिरतनकीर्ति	हिन्दी	१६३-१६४

५८३० गुटका सं० २। पत्र सं० २२। आ० ६×६ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—संग्रह। ले०
काल X। पूर्ण। वे० सं० २३२।

१. नेमिनाथमंगल	लालचन्द	हिन्दी	२० काल १७४४ १-११
२. राजुलपच्चीसी	X	”	१२-२२

५८३१. गुटका सं० ३। पत्र सं० ४-५४। आ० ८×६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X। अपूर्णा।
वे० सं० २३३।

१. प्रद्युम्नरास	कृष्णराय	हिन्दी	४-२७
२. आदिनाथविनती	कनककीर्ति	”	३२
३. बीस तीर्थकरों की जयमाल	हर्षकीर्ति	”	३२-२६

४. चन्द्रगुप्त के सोहलस्वप्न

×

हिन्दी

५२-५४

इनके अतिरिक्त विनती संग्रह है किन्तु पूर्णतः अशुद्ध है।

५८३२. गुटका सं० ४। पत्र सं० ७४। प्रा० ६३×६६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×।

अपूर्ण। वे० सं० २३४।

विशेष-प्रायुर्वेदिक नुसखों का संग्रह है।

५८३३. गुटका सं० ५। पत्र सं० ३०-७५। प्रा० ७×६६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं०

१७६१ माह सुदी ५। अपूर्ण। वे० सं० २३४।

१. मादित्यवार कथा

भाऊ

हिन्दी

अपूर्ण

३०-३२

२. सप्तव्यसनकवित्त

×

”

३. पार्श्वनाथस्तुति

बनारसीदास

”

४. अठारहनाते का चौडाला

लोहट

”

५८३४. गुटका सं० ६। पत्र सं० २-४२। प्रा० ६३×६६ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। ले०

काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २३४।

विशेष-शनिश्चरजी की कथा है।

५८३५. गुटका सं० ७। पत्र सं० १२-६५। प्रा० १०^३×५^३ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे०

सं० २३५।

१. बाणक्यनीति

बाणक्य

संस्कृत

अपूर्ण

१३

२. साक्षी

कबीर

हिन्दी

१३-१६

३. ऋद्धिमन्त्र

×

संस्कृत

१९-२१

४. प्रतिष्ठाविधान की सामग्री एवं व्रतों का चित्र सहित वर्णन

हिन्दी

६५

५८३६. गुटका सं० ८। पत्र सं० २-५६। प्रा० ६×५ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २९७।

१. बलभद्रगीत

×

हिन्दी

अपूर्ण

२-६

२. जोगीरासा

पांढे जिनवास

”

७-११

३. कक्काबत्तीसी

×

”

११-१४

४. ”

मनराम

”

१४-१८

५. पद-साधो छोडो कुमति अकेली

विनोदीलाल

”

१८

६. ” रे जीव जगत मुरनों जान

छीहन

”

२०

७. " भरत मूय घरही में बरागो	कनककीर्ति	"	२०-२१
८. लुहरी- हो मुन जीव अरज हमारी या	सभाचन्द	"	२१-२२
९. परमारथ लुहरी	×	"	२२-२३
१०. पद- भवि जीववदि से चन्द्रस्वामी	रूपचन्द	"	२७
११. " जीव सिव देशड ले पधारो	सुन्दर	"	२८
१२. " जीव मेरे जिणवर नाम भजो	×	"	२९
१३. " योषी या तु आवणो इण देश	×	"	२९
१४. " अरहंत गुण गायो भावो मन भावो	अजयराज	"	२९-३१
१५. " गिर देखत दालिद्र भाज्या	×	"	३१
१६. परमानन्दस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	संस्कृत	३२-३५
१७. पद- घट पटादि नैननि गोचर जो नाटिक पुद्गल कैरो	मनराम	हिन्दी	३६
१८. " जिय तै नरभव योही खीयो	मनराम	"	३२
१९. " अंखियां आज पवित्र भई	"	"	
२०. " वनी बन्यो है आजि हेली नेमीसुर जिन देखीयो	जगताराम	"	४०
२१. " नमो नमो जै श्री अरिहंत	"	"	४१
२२. " माधुरी जिनबानी सुन हे माधुरी	"	"	४२-४४
२३. सिव देवी माता को आठवों	मुनि शुभचन्द्र	"	४४-४६
२४. पद-	"	"	४६-४८
२५. "	"	"	४८-४९
२६. " हलदी चहौडी तेल चहोख्यो छपन कुमारि का	"	"	४९-५१
२७. " जे जदि साहण ल्यायो नीली घोडीया	"	"	५१-५३
२८. अन्य पद	"	"	५३-५९

५८३८. गुटका सं० १० । पत्र सं० ४ । आ० ८३×६ इ० । विषय-संग्रह । ले० काल X । वे० सं० २६६ ।

१. जिनपञ्चीसी	नवल	हिन्दी	१-२
२. संबोधनचासिका	द्यानतराय	"	२-४

५८३९. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १०-६० । आ० ५३×४३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल X । वे० सं० ३०० ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५८४०. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ११५ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा स्तोत्र । ले० काल X । वे० सं० ३०१ ।

५८४१. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १३० । आ० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय—पूजा स्तोत्र । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३०२ ।

५८४२. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ६-१७ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय—पूजा स्तोत्र । ले० सं० X । अपूर्ण । वे० सं० ३०३ ।

५८४३. गुटका सं० १४ । पत्र सं० २०१ । आ० ११×५ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३०४ ।
विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है ।

५८४४. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ७७ । आ० १०×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय—कथा । ले० काल सं० १६०३ सावन मुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० ३०५ ।

विशेष—इलनाक मह सनोन पुस्तक को हिन्दी भाषा में लिखा गया है । मूल पुस्तक फारसी भाषा में है । छोटी २ कहानियां हैं ।

५८४५. गुटका सं० १६ । पत्र सं० १२६ । आ० ६×४ इ० । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३०६ ।
विशेष—रामचन्द्र (कवि बालक) कृत सीता चरित्र है ।

५८४६. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ३-२६ । आ० ४×२ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ४०७ ।

१. देवपूजा	संस्कृत	अपूर्ण
२. धूम्रमद्रजी का रासो	हिन्दी	१०-२१
३. नेमिनाथ राजुल का बारहमासा	"	२१-६६

५८४७. गुटका सं० १८। पत्र सं० १६०। आ० ८३×६ इ०। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं ३०८
विशेष—पत्र सं० १ ले ३८ तक सामान्य पाठों का संग्रह है।

१. सुन्दर शृङ्गार	कविराजसुन्दर	हिन्दी	३७४ पद्य है	३६-८०
२. विहारीसतसई टीका सहित	×	”	अपूर्ण	८१-८५
			७४ पद्यों की ही टीका है।	
३. बखत विलास	×	”		९६-१०३
४. बृहत्खंडाकर्णकल्प	कवि भोगीलाल	”		१०४-६६०

विशेष—प्रारम्भ के ८ पत्र नहीं हैं आगे के पत्र भी नहीं हैं।

इति श्री कछवाहा कुलभवननरुकासी राउराजा बस्तावरसिंह आनन्द कृते कवि भोगीलाल विरचिते बखत विलास विभाव वर्णनो नाम तृतीय विलासः।

पत्र ८-५६ नायक नायिका वर्णन।

इति श्री कछवाहा कुलभूषननरुकासी, राउराजा वस्तावर सिंह आनन्द कृते भोगीलाल कवि विरचिते बखतविलासनायकवर्णन नामाष्टको विलासः।

५८४८. गुटका सं० १९। पत्र सं० ५४। आ० ८५×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।
वे० सं० ३०९।

विशेष—खुशालचन्द कृत धन्यकुमार चरित है पत्र जीर्ण है किन्तु नवीन है।

५८४९. गुटका सं० २०। पत्र सं० २१। आ० ९५×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।
वे० सं० ३१०।

१. ऋषिमंडलपूजा	सदासुख	हिन्दी		१-१०
२. अकम्पनाचार्यादि मुनियों की पूजा	×	”		१६
३. प्रतिष्ठानामावलि	×	”		२१

५८५०. गुटका सं० २० (क)। पत्र सं० १०२। आ० ९५×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×।
पूर्ण। वे० सं० ३११।

५८५१. गुटका सं० २१। पत्र सं० २८। आ० ८३×६ इ०। ले० काल सं० १९३७ आवरण बुदी
९। पूर्ण। वे० सं० ३१३।

विशेष—मंडलाचार्य केशवसेन कृष्णसेन विरचित रोहिणी व्रत पूजा है।

५८५२. गुटका सं० २२ । पत्र सं० १६ । आ० ११×३ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३१४ ।

वज्रदन्तचक्रवर्ति का वारहमासा	X	हिन्दी	६
२. सीताजी का वारहमासा	X	"	६-१२
३. मुनिराज का वारहमासा	X	"	१३-१६

५८५३. गुटका सं० २३ । पत्र सं० २३ । आ० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी गद्य । विषय-कथा ।

ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३१५ ।

विशेष—गुटके में अष्टाह्निकाप्रतकथा दी हुई है ।

५८५४. गुटका सं० २४ । पत्र सं० १५ । आ० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी विषय-पूजा । ले० काल

सं० १६८३ पौष बुदी १ । पूर्ण । वे० सं० ३१६ ।

विशेष—गुटके में ऋषिमंडलपूजा, अनन्तप्रतपूजा, चौबीसतीर्थकर पूजादि पाठों का संग्रह है ।

५८५५. गुटका सं० २५ । पत्र सं० ३५ । आ० ८५×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा । ले० काल

X । पूर्ण । वे० सं० ३१७ ।

विशेष—अनन्तप्रतपूजा तथा भुतज्ञानपूजा है ।

५८५६. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ५६ । आ० ७५×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल

सं० १६२१ माघ बुदी १२ । पूर्ण । वे० सं० ३१८ ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चौबीस तीर्थकर पूजा है ।

५८५७. गुटका सं० २७ । पत्र सं० ५३ । आ० ६×५ इ० । ले० काल सं० १६५४ । पूर्ण । वे०

सं० ३१९ ।

विशेष—गुटके में निम्न रचनायें उल्लेखनीय हैं ।

१. धर्मचाह	X	हिन्दी	२
२. वंदनाजखंडी	विहारीदास	"	३-४
३. सम्प्रेदशिखरपूजा	गंगादास	संस्कृत	५-२०

५८५८ गुटका सं० २८ । पत्र सं० १६ । आ० ८५×६ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३२० ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र उमास्वामि कृत है ।

५८५९. गुटका सं० २९ । पत्र सं० १७६ । आ० ६×६ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३२१ ।

विशेष—विहारीदास कृत सतसई है । दोहा सं० ७०७ है । हिन्दी गद्य पद्य दोनों में ही अर्थ है टीका-

काल सं० १७८५ । टीकाकार कवि कृष्णदास हैं । आदि अन्तभाग निम्न है:—

प्रारम्भः—

अथ विहारो सतसई टीका कवित्त बंध लिख्यतेः—

मेरी भव बाधा हरी, राधा नागरी सोइ ।

जातन की भाई परै, स्याम हरित दुति होइ ॥

टीका—यह मंगलाचरन है तहां श्री राधा जू की स्तुति ग्रंथ कर्ता कवि करतु है । तहां राधा प्रीर डटे यांते जा तन की भाई परै स्याम हरित दुति होइ या पद तें श्री वृषभान सुता की प्रतीति हुई —
कवित्त—

जाकीप्रभा अवलोकत ही तिहु लोक की सुन्दरता गहि वारि ।
कृष्ण कहे सरसी रहे नैननि कौ नामु यहा सुद मंगल कारो ॥
जातन की भलकै भलकै हरित दुति स्याम की होत निहारी ।
श्री वृषभान कुंमारि कृपा कै सुराधा हरी भव बाधा हमारो ॥ १ ॥

अन्तिम पाठ—

माथुर विप्रु ककोर कुल लह्यौ कृष्ण कवि नाउ ।
सेवकु हौं सब कविनु कौ बसतु मधुपुरी गांउ ॥ २४ ॥
राजा मल्ल कवि कृष्ण पर ढरघौ कृपा के ढार ।
भांति भांति विपदा हरी दीनी दरवि अगार ॥ २५ ॥
एक दिना कवि सौ नुपति कही कही कों जात ।
दोहा दोहा प्रति करौ कवित्त बुद्धि अवदात ॥ २६ ॥
पहले हूं मेरे यह हिय मैं हुंतौ विचारु ।
करौ नाइका भेद कौ ग्रंथ बुद्धि अनुसार ॥ २७ ॥
जे कोनै पूरव कवितु सरस ग्रंथ सुखदाइ ।
तिनहि छांडि मेरे कवित्त को पढि है मनुलाइ ॥ २८ ॥
जानिय हैं अपनै हियें कियो न ग्रंथ प्रकास ।
नुप कौ आइस पाइकै हिय में भये हुलास ॥ २९ ॥
करे सात सै दोहरा सु कवि विहारीदास ।
सब कोऊं तिनको पढै गुनै सुने सविलाल ॥ ३० ॥
बडौ भरोसों जानि मै गह्यौ आसरो आइ ।
यातैं इन दोहानु संग दीनै कवित्त लगाइ ॥ ३१ ॥

उक्ति जुक्ति दोहानु की अक्षर जोरि नवीन ।
करे सातसौ कवित में सीखै सकल प्रवीन ॥ ३२ ॥
मै अंत ही दीव्यो करां कवि कुल सरल सुभाइ ।
भूल चूक कछु होइ सो लीजौ समझि बनाइ ॥ ३३ ॥
सत्रह सतसे आगरे असी वरस रविवार ।
कातिक बदि चोयि भये कवित सकल रससार ॥ ३४ ॥
इति श्री विहारोसतसई के दोहा टीका सहित संपूर्ण ।

सतसे ग्रंथ लिख्यो श्री राणा श्री राजा साहिबजी श्रीराजामल्लजी कीं । लेखक खेमराज श्री वास्तव वासी
मौजे अंजनगोई के प्रगने पछोर के । मिति माह सुदी ७ बुद्धवार संवत् १७९० मुकाम प्रवेश जयपुर ।

५८६०. गुटका सं० ३० । पत्र सं० १६८ । आ० ८×६ इ० । ले० काल X । अपूर्ण वे० सं० ३५२ ।

१. तत्त्वार्थसूत्रभाषा	कनककीर्ति	हिन्दी ग०	अपूर्ण
२. शालिभद्रचोपई	जिनसिंह सूरि के शिष्य मत्तिसागर	” ५० २० काल १६७८	”

ले० काल सं० १७४३ भादवा सुदी ४ । अजमेर प्रतिलिपि हुई थी ।

स्फुट पाठ

X

”

५८६१. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ६० । आ० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा । ले०
काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३२३ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

५८६२. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० १७४ । आ० ८×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय पूजा पाठ । ले०
काल X । पूर्ण । वे० सं० ३२४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । तथा ८८ हिन्दी पद नैन (सुखनयनालय) के हैं ।

५८६३. गुटका सं० ३३ । पत्र सं० ७५ । आ० ६×६ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण ।
वे० सं० ३२५ ।

विशेष—रामचन्द्र कृत चतुर्विंशतिजिनपूजा है ।

५८६४. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×६ इ० । विषय—पूजा । ले० काल सं० १८६१
श्रावण सुदी ११ । वे० सं० ३२६ ।

विशेष—चीवीस तीर्थकर पूजा (रामचन्द्र) एवं स्तोत्र संग्रह है । हिण्डीन के जती रामचन्द्र ने प्रतिलिपि
की थी ।

५८६५. गुटका सं० ३५ । पत्र सं० १७ । आ० ६×७ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सं० ३२७ ।

विशेष—पावागरि सोनागिर पूजा है ।

५८६६. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० ७ । आ० ८×५ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय पूजा पाठ एवं

ज्योतिषपाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३२८ ।

१. बृहत्सोडशकारण पूजा

×

संस्कृत

२. चाणक्यनीति शास्त्र

चाणक्य

”

३. शालिहोत्र

×

संस्कृत

अपूर्ण

५८६७. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० ३० । आ० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० ३२९ ।

५८६८. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० २४ । आ० ५×४ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सं० ३३० ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है । इसी में प्रकाशित पुस्तकें भी बन्धी हुई हैं ।

५८६९. गुटका सं० ३९ । पत्र सं० ४४ । आ० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सं० ३३१ ।

विशेष—देवसिद्धपूजा आदि दी हुई हैं ।

५८७०. गुटका सं० ४० । पत्र सं० ८० । आ० ४×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय आयुर्वेद । ले०

काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३२ ।

विशेष—आयुर्वेद के नुसखे दिये हुये हैं पदार्थों के गुणों का वर्णन भी है ।

५८७१. गुटका सं० ४१ । पत्र सं० ७१ । आ० ७×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।

पूर्ण । वे० सं० ३३३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८७२. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० ८६ । आ० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं०

१८४६ । अपूर्ण । वे० सं० ३३४ ।

विशेष—विदेह क्षेत्र के बीस तीर्थंकरों की पूजा एवं अढाई द्वीप पूजा का संग्रह है । दोनों ही अपूर्ण हैं ।

जौहरी काला ने प्रतिलिपि की थी ।

५८७३. गुटका सं० ४३ । पत्र सं० २८ । प्रा० ८३×७ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३५ ।

५८७४. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ५८ । प्रा० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३६ ।

विशेष—हिन्दी पद एवं पूजा संग्रह है ।

५८७५. गुटका सं० ४५ । पत्र सं० १०८ । प्रा० ८३×३३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३७ ।

विशेष—देवपूजा, सिद्धपूजा, तत्त्वार्थसूत्र, कल्याणमन्दिरस्तोत्र, स्वयंभूस्तोत्र, दशलक्षण, सोलहकारण आदि का संग्रह है ।

५८७६. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० ५५ । प्रा० ८×५ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—पूजा पाठ ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३३८ ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र, हवनविधि, सिद्धपूजा, पार्व्वपूजा, सोलहकारण दशलक्षण पूजाएं हैं ।

५८७७. गुटका सं० ४७ । पत्र सं० ६६ । प्रा० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—कथा । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३३९ ।

१. जेष्ठजिनवरकथा	खुशालचन्द	हिन्दी	१-६
			२० काल सं० १७८२ जेठ सुबि ६
२. मादित्यव्रतकथा	"	हिन्दी	६१-६६
३. सप्तपरमस्थान	"	"	१६-२६
४. मुकुटसप्तमीव्रतकथा	"	"	२६-३०
५. दशलक्षणव्रतकथा	"	"	३०-३४
६. पुण्याञ्जलिव्रतकथा	"	"	३४-४०
७. रक्षाविधानकथा	"	संस्कृत	४१-४५
८. उमेश्वरस्तोत्र	"	"	४६-६६

५८७८. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १२८ । प्रा० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—आध्यात्म । २० काल सं० १६६३ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३४० ।

विशेष—बनारसीदास वृत्त समयसार नाटक है ।

५८७६. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० ४६ । आ० ५×५ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४१ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१. जैनशतक	भूधरदास	हिन्दी	१-१३
२. ऋषिमण्डलस्तोत्र	गौतमस्वामी	संस्कृत	१४-२०
३. कवकावत्तीसी	नन्दराम	” ले० काल १८८८	३४-४२

५८८०. गुटका सं० ५० । पत्र सं० २५४ । आ० ५×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—पूजा पाठ ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४२

५८८१. गुटका सं० ५१ । पत्र सं० १६३ । आ० ७३×४२ इ० । भाषा—हिन्द संस्कृत । ले० काल सं० १८८२ । पूर्ण । वे० सं० ३४३ ।

विशेष—गुटके के निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय हैं ।

१. नवग्रहगणितपार्श्वस्तोत्र	×	प्र.कृत	१-२
२. जीवविचार	आ० नेमिचन्द्र	”	३-८
३. नवतत्त्वप्रकरण	×	”	९-१४
४. चौबीसदण्डकविचार	×	हिन्दी	१५-६८
५. तेईस बोल विवरण	×	”	६९-९५

विशेष—

दाता की कसौटी दुरभिछ परे जान जाइ ।

सूर की कसौटी दोई मनी छुरे रन में ॥

मित्र की कसौटी मामलो प्रगट होय ।

हीरा की कसौटी है जौहरी के धन में ॥

कुल की कसौटी मादर सनमान जानि ।

सोने की कसौटी सराफन के जतन में ॥

कहे जिननाम जैसी वस्तु तैसी कीमति सों ।

साधु की कसौटी है दुष्टन के बीच में ॥

२. इव्यसंग्रहभाषा	हेमराज	"	११७-१४१
	२० काल सं० १७३१ माघ सुदी १० । ले० काल सं० १८७६ फाल्गुन सुदी ६ ।		
३. गोविदाष्टक	शङ्कराचार्य	हिन्दी	१४४-१४५
४. पार्श्वनाथस्तोत्र	×	" ले० काल १८८१.	१४६-१४७
५. कृपणपञ्चीसी	विनोदीलाल	" " " १८८२	१४७-१५४
६. तेरापन्थ बीसपन्थ भेद—	×	"	१५५-१६३

५८८२. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० ३५ । आ० ७३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८६ कार्तिक सुदी १३ । वे० सं० ३४४ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है । प० सदासुखजी ने प्रतिलिपि की थी ।

५८८३. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० ८० । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४५ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५८८४. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ४४ । आ० ६३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । अपूर्ण । वे० सं० ३४६

विशेष—भूधरदास कृत चर्चा समाधान तथा चन्द्रसागर पूजा एवं शान्तिपाठ है ।

५८८५. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० २० । आ० ६३×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा पाठ ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४७ ।

५८८६ गुटका सं० ५६ । पत्र सं० ६८ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४८ ।

५८८७. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० १७ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३४९ ।

विशेष—रत्नत्रय व्रतविधि एवं कथा दी हुई हैं ।

५८८८. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० १०४ । आ० ७×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८८९. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० १२९ । आ० ६३×५ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-प्रायुर्वेद । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५१ ।

विशेष—हृन्निनिश्चय नामक ग्रंथ है ।

५८६०. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ११३ । आ० ४×३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५२ ।

विशेष—पूजः स्तोत्र एवं बनारसी विलास के कुछ पद एवं पाठ हैं ।

५८६१. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० २२३ । आ० ४×३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५३ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५८६२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० २०८ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५४ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्र एवं पूजा पाठों का संग्रह हैः—

५८६३ गुटका सं० ६२ । पत्र सं० २६३ । आ० ६½×६ इ० । भाषा-हिन्दी ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३५५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. हनुमतरास	ब्रह्मरायमल्ल	हिन्दी	२४-६७
		ले० काल सं० १८६० फागुण बुदी ७ ।	
२. शालिभद्रसज्जाय	×	हिन्दी	६८-६९
३. जलालगाहाणी की वार्ता	×	”	१०१-१४७
		ले० काल १८५६ माह बुदी ३	

विशेष—कोठ्यारी प्रसादसिंह पठनार्थ लिखी हलसूरिमध्ये ।

४. तंत्रसार	×	”	पद्य सं० ४८ १४८-१५२
५. चन्द्रकुंवर की वार्ता	×	”	१५२-१६४
६. घग्घरनिसांगी	जिनहर्ष	”	१६५-१६६
७. सुदयवच्छसालिगा री वार्ता	×	”	अपूर्ण १७०-२६३

५८६४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ६७ । आ० ६½×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । पूर्ण । ले० काल × । वे० सं० ३५६ ।

विशेष—नवमङ्गल विनोदीलाल कृत एवं पद स्तुति एवं पूजा संग्रह है ।

५८६५ गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ६३ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५७ ।

विशेष—सिद्धचक्रपूजा एवं पद्मावती स्तोत्र है ।

५८६६. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ४५ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—पूजा । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५८ ।

५८६७. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ४६ । आ० ५३×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५९ ।

विशेष—भक्तारस्तोत्र, पंचमंगल, देवपूजा आदि का संग्रह है ।

५८६८. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ६४ । आ० ४×३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—स्तोत्र संग्रह । ले० काल × । वे० सं० ३६० ।

५८६९. गुटका सं० ६९ । पत्र सं० १५१ । आ० ७ ४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६१ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. सत्तरभेदपूजा	साधुकीर्ति	हिन्दी	१-१४
२. महावीरस्तवनपूजा	समयमुन्दर	"	१४-१६
३. धर्मरक्षा नावा	विशालकांति	" ले० काल १८६४	३०-१५१

विशेष—नागपुर में पं० चतुर्भुज ने प्रतिलिपि की थी ।

५८७०. गुटका सं० ७० । पत्र सं० ५६ । आ० ५३×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८०२ । पूर्ण । वे० सं० ३६२ ।

१. महादण्डक	×	हिन्दी	३-५३
			ले० काल सं० १८०२ पीप बुदी १३ ।

विशेष—उदयविमल ने प्रतिलिपि की थी । शिवपुरी में प्रतिलिपि का गई थी ।

२. बाल	×	"	५४-५६
--------	---	---	-------

५८७१. गुटका सं० ७१ । पत्र सं० १२३ । आ० ६×४ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—स्तोत्रसंग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३६३ ।

५६०२. गुटका सं० ७२ । पत्र सं० १५७ । आ० ४×३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।
पूर्ण । वे० सं० ३६४ ।

विशेष—पूजा पाठ व स्तोत्र आदि का संग्रह है ।

५६०३. गुटका सं० ७३ । पत्र सं० ६६ । आ० ४×३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।
पूर्ण । वे० सं० ३६५ ।

१. पूजा पाठ संग्रह	×	संस्कृत हिन्दी	१-४४
२. आयुर्वेदिक नुसखे	×	हिन्दी	४५-६६

५६०४. गुटका सं० ७४ । पत्र सं० ५० । आ० ५^३×५^३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण
वे० सं० ३६६ ।

विशेष—प्रारम्भ में पूजा पाठ तथा नुसखे दिये हुये हैं तथा अन्त के १७ पत्रों में संवत् १०३३ से भारत
के राजाओं का परिचय दिया हुआ है ।

५६०५. गुटका सं० ७५ । पत्र सं० ६० । आ० ५^३×५^३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० ३६७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६०६. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० १८-१३७ । आ० ७×३^३ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले०
काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६८ ।

विशेष—प्रारम्भ में कुछ मंत्र हैं तथा फिर आयुर्वेदिक नुसखे दिये हुये हैं ।

५६०७. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० २७ । आ० ६^३×४^३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण
वे० सं० ३६९ ।

१. ज्ञानविन्तामणि	मनोहरदास	हिन्दी	१२६ पद्य हैं	१-१६
२. वज्रनाभिचक्रवर्ती की भावना	भूधरदास	"		१६-२३
३. सम्पेदगिरिपूजा	×	"	अपूर्ण	२२-२७

५६०८. गुटका सं० ७८ । पत्र सं० १२० । आ० ६×३^३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण
वे० सं० ३७१ ।

विशेष—नाममाला तथा लब्धिसार आदि में से पाठ है ।

५६०६. गुटका सं० ७६। पत्र सं० ३०। आ० ६३×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १=१ पूर्ण। वे० सं० ३७१।

विशेष—ब्रह्मरायमल्ल कृत प्रद्युम्नरास है।

५६१०. गुटका सं० ८०। पत्र सं० ५४-१३६। आ० ६३×६ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० ३७२।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है।

१. श्रुतस्कन्ध	हेमचन्द्र	प्राकृत	अपूर्ण	५४-७६
२. मूलसंघ की पट्टावलि	×	संस्कृत		८०-८३
३. गर्भपडारचक्र	देवनन्दि	"		८४-९०
४. स्तोत्रत्रय	×	संस्कृत		९०-१०५

एकीभाव, भक्तामर एवं भूपालचतुर्विंशति स्तोत्र हैं।

५. वीतरागस्तोत्र	भ० पद्मनन्दि	"	१० पद्य हैं	१०५-१०६
६. पार्श्वनावस्तवन	राजसेन [वीरसेन के शिष्य]	"	६ "	१०६-१०७
७. परमात्मराजस्तोत्र	पद्मनन्दि	"	१४ "	१०७-१०९
८. सामायिक पाठ	अमितिगति	"		११०-११३
९. तत्त्वसार	देवसेन	प्राकृत		११३-११६
१०. आराधनासार	"	"		१२४-१३४
११. समयसारगाथा	आ० कुन्दकुन्द	"		१३४-१३८

५६११. गुटका सं० ८१। पत्र सं० २-५६। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १७३०। भादवा मुदी १३। अपूर्ण। वे० सं० ३७४।

विशेष—कामशास्त्र एवं नायिका वर्णन है।

५६१२. गुटका सं० ८२। पत्र सं० ६३×६ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० ३७४।

विशेष—पूजा तथा कथाओं का संग्रह है। अन्त में १०६ से ११३ तक १८ वीं शताब्दी का (१७०१ से १७५६ तक) वर्षा अकाल युद्ध आदि का योग दिया हुआ है।

५६१३. गुटका सं० ८३। पत्र सं० ८६। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। जीर्ण। पूर्ण। वे० सं० ३७५।

१. कृष्णरास	×	हिन्दी	पद्य सं० ७६ है	१-१६
महापुराण के दशम स्कन्ध में से लिया गया है।				
२. कालीनागदमन कथा	×	”		१६-२६
३. कृष्णप्रेमाष्टक	×	”		२६-२८

५६१४. गुटका सं० ८४। पत्र सं० १५२-२४१। आ० ६१×५ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×।

अपूर्णा। वे० सं० ३७६।

विशेष—वैद्यकसार एवं वैद्यवल्लभ ग्रन्थों का संग्रह है।

५६१५. गुटका सं० ८५। पत्र सं० ३०२। आ० ८×५ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्णा।

वे० सं० ३७७।

विशेष—दो गुटकों का एक गुटका कर दिया है। निम्न पाठ मुख्यतः उल्लेखनीय है।

१. चिन्तामणिजयमाल	ठक्कुरसी	हिन्दी	११ पद्य हैं	२०-२२
२. बेलि	छीहल	”		२२-२५
३. टंडारागीत	बूचा	”		२५-२८
४. चेतनगीत	मुनि सिंहनन्दि	”		२८-३०
५. जिनलाह	ब्रह्मरायमल्ल	”		३०-३१
६. नेमीश्वरचोमासा	सिंहनन्दि	”		३२-३३
७. पंथीगीत	छीहल	”		४१-४२
८. नेमीश्वर के १० भव	ब्रह्मधर्मरुचि	”		४३-४७
९. गीत	कवि पल्ह	”		४७-४८
१०. सीमंधरस्तवन	ठक्कुरसी	”		४९-५०
११. आदिनाथस्तवन	कवि पल्ह	”		४९-५०
१२. स्तोत्र	भ० जिनचन्द्र देव	”		५०-५१
१३. पुरन्दर चौपई	ब्र० मालदेव	”		५२-८७

ले० काल सं० १६०७ फागुण बुदो ६।

१४. भेषकुमार गीत	पूनो	”		१२-१५
१५. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	ब्रह्मरायमल्ल	”		२६-२६

१६. वनिभद्र गीत	अभयचन्द	"	३०-३६
१७. भविष्यदत्त कथा	ब्रह्मरायमल्ल	"	४०-८५
१८. निर्दोषनसमीञ्जत कथा	"	"	ले० काल १६४३ मासोज १३ ।
१९. हनुमन्तरास	"	"	अपूर्णा

५६१६. गुटका सं० ८६ । पत्र सं० १८८ । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-पूजा एवं स्तोत्र । ले० काल सं० १८४२ भाद्रपद शुद्ध १ । पूर्णा । वे० सं० ३७८ ।

५६१७. गुटका सं० ८७ । पत्र सं० ३०० । आ० ५३×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० ३७९ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्रों के अतिरिक्त रूखन्द, बनारसदास तथा विनोदीलाल आदि कवियों कृत हिन्दी पाठ हैं ।

५६१८. गुटका सं० ८८ । पत्र सं० ५८ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० ३८० ।

विशेष—भगतराम कृत हिन्दी पदों का संग्रह है ।

५६१९. गुटका सं० ८९ । पत्र सं० २-२६६ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । अपूर्णा । वे० सं० ३८१ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. पद्मनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामि	संस्कृत	१८-२०
२. बारह अनुप्रेक्षा	X	प्राकृत	४७ गाथायें हैं । २१-२५
३. भावनाचतुर्विंशति	पद्मनन्दि	संस्कृत	
४. अन्य स्फुट पाठ एवं पूजायें	X	संस्कृत हिन्दी	

५६२०. गुटका सं० ९० । पत्र सं० ३-६१ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-शब्द संग्रह । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० ३८२ ।

विशेष—ननवराम के पदों का संग्रह है ।

५६२१. गुटका सं० ९१ । पत्र सं० १४-४६ । आ० ८३×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । पूर्णा । वे० सं० ३८३ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पाठों का संग्रह है ।

५६२२. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० २६ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८४ ।

विशेष—सम्मोदगिरि पूजा है ।

५६२३. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १२३ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३८५ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. चेतनचरित	भैया भगवतीदास	हिन्दी	१-१०
२. जिनसहस्रनाम	आशाधर	संस्कृत	११-१५
३. लघुतत्त्वार्थसूत्र	×	”	३३-३४
४. चौरासी जाति की जयमाल	×	हिन्दी	३६-४०
५. सोलहकारणकथा	ब्रह्मज्ञानसागर	हिन्दी	७१-७४
६. रत्नत्रयकथा	”	”	७४-७६
७. आदित्यवारकथा	भाऊकवि	”	७६-८६
८. दोहाशतक	रूपचन्द	”	९४-९६
९. त्रेपनक्रिया	ब्रह्मगुलाल	”	९७-८९
१०. अष्टाहिनका कथा	ब्रह्मज्ञानसागर	”	१००-१०४
११. अन्यपाठ	◆ ×	”	१०५-१२३

५६२४. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ७-७६ । आ० ५×३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८६ ।

विशेष—देवाब्रह्म के पदों का संग्रह है ।

५६२५. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ३-६६ । आ० ६×५ इ० । भाषा हिन्दी ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३८७ ।

१. भविष्यदत्तकथा	ब्रह्मरायमल	हिन्दी	अपूर्ण	३-७०
			ले० काल सं० १७६० कार्तिक	सुदी १२
२. हनुमतकथा	”	”		७१-९६

५६२६. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-मंत्र शास्त्र । ले० काल सं० १८६५ । पूर्ण । वे० सं० ३८८ ।

१. भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमंत्रयंत्रसहित	मानतुंगाचार्य	संस्कृत	१-४३
२. पद्मावतीकवच	×	"	४३-५२
३. पद्मावतीसहस्रनाम	×	"	५२-६३
४. पद्मावतीस्तोत्र बीजमंत्र एवं साधन विधि	×	"	६३-६६
५. पद्मावतीपटल	×	"	६६-६७
६. पद्मावतीदंडक	×	"	६७-६९

५६२७. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० ६-११३ आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण वे० सं० ३८६ ।

१. स्फुटवार्ता	×	हिन्दी	अपूर्ण	६-२२
२. हरिचन्द्रशतक	×	"		२३-६६
३. श्रीवृचरित	×	"		६७-६३
४. मल्हारचरित	×	"	अपूर्ण	६३-११३

५६२८. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ५३ । आ० ५×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६० ।

विशेष—स्तोत्र एवं तत्त्वार्थसूत्र आदि सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६२९. गुटका सं० ६९ । पत्र सं० ६-१२६ । आ० ८^१×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६१ ।

५६३०. गुटका सं० १०० । पत्र सं० ८८ । आ० ८×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३६२ ।

१. आदित्यवारकथा	×	हिन्दी	१४-३४
२. पक्की स्याही बनाने की विधि	×	"	३५
३. संकट चौपई कथा	×	"	३८-४३
४. कक्का बत्तीसी	×	"	४५-४७
५. निरंजन शतक	×	"	५१-८४

विशेष—लिपि विकृत है पठने में नहीं आती ।

५६३१. गुटका सं० १०१ । पत्र सं० २३ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्णा । सं० ३६३ ।

विशेष—कवि सुन्दर कृत नायिका लक्षणा दिया हुआ है । ४२ से १५० पद्य तक है ।

५६३२. गुटका सं० १०२ । पत्र सं० ७८-१०१ । आ० ८×७ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह ।
ले० काल × । अपूर्णा । वे० सं० ३६४ ।

१. चतुर्दशी कथा

डालूराम

हिन्दी २० काल १७६५ प्र. जेठ सुदी १०

ले० काल सं० १७६५ जेठ सुदी १४ । अपूर्णा ।

विशेष—२६ पद्य से २३० पद्य तक हैं ।

मध्य भाग—

माता एँसो हठ मति करी, संजम विना जीव न निसतरै ।
कांकी माता काको बाप, आतमराम अकेलो आप ॥ १७६ ॥
आप देखि पर देखिये, दुख सुख दोउ भेद ।
आतम एक विशारिये, भरमन कहू न छेद ॥ १७७ ॥
मंगलाचार कंवर को कीयो, दिख्या लेण कंवर जब गयो ।
सुवामो आगे जौड्या हाथ, दीख्य दोह मुनीसुर नाथ ॥ १७८ ॥

अन्तिमपाठ—

बुधि सारु कथा कही, राजघाठी मुलतान ।
करम कटक में देहरीं बंठो पचै सु जाण ॥ २२८ ॥
सतरासै पचावने प्रथम जेठ सुदि जानि ।
सोमवार दसमी मानी पूरण कथा वखानि ॥ २२९ ॥
खंडेलवाल बौहरा गोत, आंवावती में बास ।
डालु कहै मति मी हंसौ, हूं सबन को दास ॥ २३० ॥
महाराजा बीसनसिंहजी आया, साह्या आल की लार ।
जो या कथा पढै सुगै, सो पुरिष में सार ॥ १३१ ॥

चौदश की कथा संपूर्ण । मिति प्रथम जेठ सुदी १४ संवत् १७६५

२. चौदशकीजयमाल

×

हिन्दी

६३-६४

३. तारातंबोलकी कथा

×

,, ले० काल सं० १७६३ ६४-६६

४. नवरत्न कवित्त	बनारसीदास	”	६७-६९
५. ज्ञानरत्नीसी	”	”	६८-१००
६. पद	×	”	मपूर्णा १००-१०१

५६३३. गुटका सं० १०३ । पत्र सं० १०-५५ । आ० ८३×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।

मपूर्णा । वे० सं० ३६५ ।

विशेष—महाराजकुमार इन्द्रजीत विरचित रसिकप्रिया है ।

५६३४. गुटका सं० १०४ । पत्र सं० ७ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्णा ।

वे० सं० ३६७ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

ज भण्डार [दि० जैन मन्दिर यति यशोदानन्दजी जयपुर]

५६३५. गुटका सं० १ । पत्र सं० १४० । आ० ७३×५३ इ० । लिपि काल × ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. देहली के बादशाहों की नामावलि एवं परिचय	×	हिन्दी	१-१६
		ले० काल सं० १८५२ जेठ बुदी ५ ।	
२. कवित्तसंग्रह	×	”	२०-४४
३. शनिश्चर की कथा	×	” गद्य	४५-६७
४. कवित्त एवं दोहा संग्रह	×	”	६८-६४
५. द्वादशमाला	कवि राजसुन्दर	”	६५-६६
		ले० काल १८५३ पीब बुदी ५ ।	

विशेष—रणथम्भोर में लक्ष्मणदास पाटनी ने प्रतिलिपि की थी ।

५६३६. गुटका सं० २ । पत्र सं० १०६ । आ० ५×४३ इ० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६३७. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ३-१५३ । आ० ६×५३ इ० ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. गीत-धर्मकीर्ति	×	हिन्दी	३-४
(त्रिगुणवर भ्याइयडावे, मनि बित्या फलु पाया)			
२. गीत-(त्रिगुणवर हो स्वामी चरण मनाय, सरमति स्वाभिरिण वीनऊ हो)			

१. पुष्पाञ्जलिजयमाल	×	अपभ्रंश	७-२४
२. लघुकल्याणपाठ	×	हिन्दी	२४-२६
३. तत्वसार	देवसेन	प्राकृत	४६-६०
४. आराधनासार	”	”	८३-१००
५. द्वादशानुप्रेक्षा	लक्ष्मीसेन	”	१००-१११
६. पार्वतीनाथस्तोत्र	पद्मनन्दि	संस्कृत	१११-११२
७. द्रव्यसंग्रह	आ० नेमिचन्द्र	प्राकृत	१४६-१५१

५६३८. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १८६ । आ० ६×८ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८४२

आषाढ सुदी १५ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. पार्वतपुराण	भूधरदास	हिन्दी	१-१०२
२. एकसोयुनहत्तरजीव वर्णन	×	”	१८४२ १०४
३. हनुमन्त चौपाई	ब० रायमल	”	१८२२ आषाढ सुदी ३ ”

५६३९. गुटका सं० ५ । पत्र सं० १४० । आ० ७३×४ इ० । भाषा-संस्कृत ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

५६४०. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २१३ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६४१. गुटका सं० ७ । पत्र सं० २२० । आ० ६×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पं० देवीचन्द्रकृत हितोपदेश (संस्कृत) का हिन्दी भाषामें अर्थ दिया हुआ है । भाषा गद्य और पद्य दोनों में है । देवीचन्द्र ने अपना कोई परिचय नहीं लिखा है । जयपुर में प्रतिलिपि की गई थी । भाषा साधारण है —

अब तेरी सेवा में रहि हों । जैसे कहि गंगादत्त कुवा महि ते नीकरो ।

दोहा—छुटो काल के गाल में अब कही काल न आय ।

ओ नर अरहट मालती नयो जनम तन पाय ॥

वात्ता—सांप की दाढ़ में तै छूटौ अरु कही नयो जनम पायो । कूवै में तै बाहरि आय यो कही वहां सांप कितनेक बेर तो वाट देखी । न आयौ जब आतुर भयौ । तब यो कही में कहा कीयो । जदपि कुवा के मेंडक सब खायो पे जब लग गंगादत्त को न खायो तब लग रञ्ज कह्यु खायो नहीं ।

५६४२. गुटका सं० = । पत्र सं० १६६-४३० । आ० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।

अपूर्ण ।

विशेष—बुलाकीदास कृत पांडवपुराण भाषा है ।

५६४३. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १०१ । आ० ७½×६½ इ० । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र एवं सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६४४. गुटका सं० १० । पत्र सं० ११८ । आ० ८½×६ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । विषय-संग्रह ।

ले० काल सं० १८६० माह बुदी ५ । पूर्ण ।

१. सुन्दरविलास

सुन्दरदास

हिन्दी

१ से ११६

विशेष—ब्राह्मण चतुर्भुज खंडेलवाल ने प्रतिलिपि की थी ।

२. बारहखडी

दत्तलाल

”

विशेष—६ पद्य हैं ।

५६४५. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४२ । आ० ८½×६ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल सं०

१९०८ चैत बुदी ६ । पूर्ण ।

विशेष—वृंदसतसई है जिसमें ७०१ दोहे हैं । दसकत चौमनलाल कालख हाला का ।

५६४६. गुटका सं० १२ । पत्र सं० २० । आ० ८×६½ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९६०

आसोज बुदी ६ । पूर्ण ।

विशेष—पंचमेरु तथा रत्नत्रय एवं पार्श्वनाथस्तुति है ।

५६४७. गुटका सं० १३ । पत्र सं० १५५ । आ० ८×६½ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०

१७६० ज्येष्ठ सुदी १ । अपूर्ण ।

निम्नलिखित पाठ हैं—

कल्याणमंदिर भाषा, श्रीपालस्तुति, अठारा नाते का चौढाल्या, भक्तामरस्तोत्र, सिद्धपूजा, पार्श्वनाथ स्तुति [पद्मप्रभदेव कृत] पंचपरमेष्ठी गुणामाल, शान्तिनाथस्तोत्र आदित्यवार कथा [भाउकृत] नवकार रासो, जोगी रासो, भ्रमरगीत, पूजाष्टक, चिन्तामणि पार्श्वनाथ पूजा, नेमि रासो, गुरुस्तुति आदि ।

बीच के १०० से १३२ पत्र नहीं हैं । पीछे काटे गये मालूम होते हैं ।

ॠ भण्डार [शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर विजयराम पाड्या जयपुर]

५६४८. गुटका सं० १ । पत्र सं० २० । आ० ५३×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल सं० १६५८ । पूर्ण । वे० सं० २७ ।

विशेष—आलोचनापाठ, सामायिकपाठ, छहदाला (दौलतराम), कर्मप्रकृतिविधान (बनारसीदास), अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल आदि पाठों का संग्रह है ।

५६४९. गुटका सं० २ । पत्र सं० २२ । आ० ५३×४ इ० । भाषा-हिन्दी पद्य । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २९ ।

विशेष—वीररस के कवित्तों का संग्रह है ।

५६५०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ६० । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । जीर्ण जीर्ण । वे० सं० ३० ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६५१. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १०१ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ३१ ।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. जिनसहस्रनामस्तोत्र	बनारसीदास	हिन्दी	१-११
२. लहुरी नेमीश्वरकी	विश्वभूषण	"	१६-२१
३. पद- आतम रूप सुहावना	द्यानतराय	"	२२
४. विनती	×	"	२३-२४
विशेष—रूपचन्द ने आगरे में स्वपठनार्थ लिखी थी ।			
५. सुखवड़ी	हर्षकीर्ति	"	२४-२५
६. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	"	२५-४७
७. अद्यात्मदोहा	रूपचन्द	"	४७-५५
८. साधुवंदना	बनारसीदास	"	५५-५८
९. मोक्षपैडी	"	"	५८-६१
१०. कर्मप्रकृतिविधान	"	"	७६-९१

११. विनती एवं पदसंग्रह

×

हिन्दी

६१-१०१

५६५२. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ६-२६ । आ० ४×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ३२ ।

विशेष—नेमिराजुलपच्चीसी (विनोदीलाल), बारहमासा, ननद भोजाई का भगडा आदि पाठों का संग्रह है ।

५६५३. गुटका सं० ६ । पत्र सं० १६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४१ ।

विशेष—निम्न पाठ हैं—पद, चौरासी न्यात की जयमाल, चौरासी जाति वर्णन ।

५६५४. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ७ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १६४३ वेशाख सुदी १ । अपूर्ण । वे० सं० ४२ ।

विशेष—विषापहारस्तोत्र भाषा एवं निर्वाणकाण्ड भाषा है ।

५६५५. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १८४ । आ० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ४३ ।

१. उपदेशशतक	द्यानतराय	हिन्दी	१-३५
२. छहढाला (अक्षरबान्नी)	”	”	३५-३६
३. धर्मपच्चीसी	”	”	३६-४२
४. तत्त्वसारभाषा	”	”	४२-४६
५. सहस्रनामपूजा	धर्मचन्द्र	संस्कृत	४६-१७५
६. जिनसहस्रनामस्तवन	जिनसेनाचार्य	”	१-१२

ले० काल सं० १७६८ फागुन सुदी १०

५६५६. गुटका सं० ९ । पत्र सं० १३ । आ० ६ इ० × ४ इ० । भाषा-प्राकृत हिन्दी । ले० काल सं० १६१८ । पूर्ण । वे० सं० ४४ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६५७. गुटका सं० १० । पत्र सं० १०५ । आ० ८×७ इ० । ले० काल × ।

१. परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	१-१६
२. तत्त्वसार	देवसेन	प्राकृत	२०-२४

३. बारहअक्षरी	×	संस्कृत	२४-२७
४. समाधिरास	×	पुरानी हिन्दी	२७-२९
विशेष—पं० डालूराम ने अपने पढने के लिए लिखा था ।			
५. द्वादशानुप्रेक्षा	×	पुरानी हिन्दी	२९-३१
६. योगोरासो	योगीन्द्रदेव	अपभ्रंश	३२-३३
७. श्रावकाचार दोहा	रामसिंह	,,	५३-६३
८. षट्पाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	प्राकृत	८४-१०४
९. षट्लेश्या वर्णन	×	संस्कृत	१०४-१०५

५९५८. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ३५ । (खुले हुये शास्त्राकार) आ० ७३×५ इ० । भाषा-हिन्दी
ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ८४ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है ।

५९५९. गुटका सं० १२ । पत्र सं० ५० । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।
वे० सं० १०० ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

५९६०. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ४० । आ० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।
वे० सं० १०१ ।

१. चन्दकथा	लक्ष्मणा	हिन्दी	१-२१
------------	----------	--------	------

विशेष—६७ पद्य से २९२ पद्य तक आभासेरी के राजा चन्द की कथा है ।

२. फुटकर कवित्त	अगरदास	,,	२२-४०
-----------------	--------	----	-------

विशेष—चन्दन मलियागिरि कथा है ।

५९६१. गुटका सं० १४ । पत्र सं० ३६६ । आ० ७×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०
१६५३ । पूर्ण । वे० सं० १०२ ।

१. चौरासी जाति भेद	×	हिन्दी	१-१९
२. नेमिनाथ फायु	पुष्परत्न	,,	२०-२५

विशेष—अन्तिम पाठ :—

समुद्र विजय तन गुण निलउ सेव करइ जसु सुर नर वृन्द ।

पुष्परत्न मुनिवर भणइ श्रीसंघ सुद्रनान नेमि जिरण्ड ॥ ६४ ॥

कुल ६४ पद्य हैं ।

॥ इति श्री नेमिनाथ फायु समाप्त ॥

३. प्रद्युम्नरास	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी		२६-५०
४. मुदर्शनरास	"	"		५१-८०
५. श्रीपालरास	"	"		११६
			ले० काल सं० १६५३ जेठ बुदी २	
६. शीलरास	"	"		१३३
७. भेषकुमारगीत	पूनो	"		१३५
८. पद- चेतन हो परम निधान	जिनदास	"		२३६
९. " चेतन चिर भूलिउ भमिउ देखउ चित्त न विचारि ।	रूपचन्द	"		२३८
१०. " चेतन तारक हो चतुर सयाने वे निर्मल दिष्टि अछत तुम भरम भुलाने ।	"	"		"
११. " बादि अनादि गवायो जीव विधिवस बहु दुख पायो चेतन ।	"	"		
१२. "	दास	"		२४०
१३. " चेतन तेरो दानो वानो चेतन तेरी जाति ।	रूपचन्द	"		
१४. " जीव मिय्यात उदै चिरु भ्रम आयी । वा रत्नत्रय परम धरम न भायी ॥	"	"		
१५. " सुनि सुनि जिपरा रे, तू त्रिभुवन का राउ रे दरिगह		"		
१६. " हा हा भूता मेरा पद मना जिनवर धरम न वेये ।	"	"		
१७. " जै जै जिन देवन के देवा, सुर नर सकल करे तुम सेवा ।	रूपचन्द	"		२४७
१८. अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	×	प्राकृत		२५१
१९. अक्षरगुणमाला	मनराम	हिन्दी	ले० काल १७३५	२५५
२०. चन्द्रगुप्त के १६ स्वप्न	×	"	ले० काल १७३५	२५७
२१. जकडी	दयालदास	"		२३२

२२. पद- कायु बोले रँ भव दुख बोलणी न आवैं ।	हर्षकीर्ति	”	२३२
२३. रघिन्नत कथा	भानुकीर्ति	”	२० काल १६८७ ३३६

(आठ सात सोलह के अंक वर्ण रचै सु कथा विमल)

२४. पद - जो बनीया का जोरा माही श्री जिरा कोप न ध्यावै रँ ।	शिवमुन्दर	”	३४१
२५. शीलबत्तीसी	अकूमल	”	३४८
२६. टंडाणा गोत	वृचराज	”	३६२
२७. भ्रमर गीत	मनसिंघ	”	१६ पद हैं ३६५

(बाडी फूली अति भली सुन भ्रमरा रे)

५६६२. गुटका सं० १५ । पत्र सं० २७५ । आ० ५×४३ इ० । ले० कुल सं० १७२७ । पूर्ण । वे० सं० १०३ ।

१. नाटक समयसार	बनारसीदास	हिन्दी	१६३
			२० काल सं० १६६३ । ले० काल सं० १७६३
२. मेघकुमार गोत	धुनो	”	१६३-१६६
३. तेरहकाठिया	बनारसीदास	”	१८८
४. विवेकजकडी	जिनदास	”	२०६
५. गुणाक्षरमाला	मनराम	”	
६. मुनीश्वरों की जयमाल	जिनदास	”	
७. वावनी	बनारसीदास	”	२४३
८. नगर स्थापना का स्वरूप	×	”	२५४
९. पंचमगति को वेलि	हर्षकीर्ति	”	२६६

५६६३. गुटका सं० १६ । पत्र सं० २१२ । आ० ६×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । वे० सं० १०८ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६६४. गुटका सं० १७ । पत्र सं० १४२ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १०८ ।

१. भविष्यदत्त चौपई	द्र० रायमल्ल	हिन्दी	११६
२. चीबोंस तीर्थङ्कर परिचय	×	"	१४२

५६६५. गुटका सं० १७ । पत्र सं० ८७ । प्रा० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-चर्चा । ले० काल
× । पूर्ण । वे० सं० ११० ।

विशेष—गुणस्थान चर्चा है ।

५६६६. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ९८ । प्रा० ७×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८७४ ।
पूर्ण । वे० सं० १११ ।

१. लग्नचन्द्रिका भाषा	स्योजीराम सीगानी	हिन्दी	१-४३
-----------------------	------------------	--------	------

प्रारम्भ—आदि मंत्र कूं सुमरिइं, जगतारण जगदीश ।

जगत अथिर लखि तिन तज्यो, जिने नमाउ सीस ॥ १ ॥

दूजा पूजूं सारदा, तीजा गुरु के पाय ।

लग्न चन्द्रिका ग्रन्थ की, भाषा कहूं बणाय ॥ २ ॥

गुरन मोहि आग्या दई, मसतक धरि के बांह ।

लग्न चन्द्रिका ग्रंथ की, भाषा कहूं बणाय ॥ ३ ॥

मेरे श्री गुरुदेव का, आंदावती निवास ।

नाम श्रीजैचन्द्रजी, पंडित बुध के वास ॥ ४ ॥

लालचन्द पंडित तरो, नाती चेला नेह ।

फतेचंद के सिष तिनै, मौकूं हुकम करेह ॥ ५ ॥

कवि सोगाणी गोत्र है, जेन मती पहचानि ।

कंवरपाल को नंद ते, स्योजीराम वखाणि ॥ ६ ॥

ठारामै के साल परि, वरष सात चालीस ।

माघ मुकल की पंचमी, वार गुरनकोईस ॥ ७ ॥

अन्तिम— लग्न चन्द्रिका ग्रंथ की, भाषा कही जु सार ।

जे यासीखे ते नरा ज्योतिस को ले पार ॥ ५२३ ॥

२. वृन्दसतसई	वृन्दकवि	हिन्दी	५० ले० काल वैशाख बुदी १० १८७४
--------------	----------	--------	-------------------------------

विशेष—७०६ पद्य हैं ।

३. राजनीति कवित्त देवीदास " × १२२ पद्य हैं ।

५६६७. गुटका सं० १६ । पत्र सं० ३० । आ० ८×६ इ० । भाषा- हिन्दी । विषय-पद । ले० काल × ।

पूर्ण । वे० सं० ११२ ।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है । गुटका अशुद्ध लिखा गया है ।

५६६८. गुटका सं० २० । पत्र सं० २०१ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-संग्रह ।

ले० काल० सं० १७८३ । पूर्ण । वे० सं० ११४ ।

विशेष—आदिनाथ की वीनती, श्रीपालस्तुति, मुनिश्वरों की जयमाल, बडा कक्का, भक्तामर स्तोत्र आदि हैं ।

५६६९. गुटका सं० २१ । पत्र सं० २७६ । आ० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले०

काल × । पूर्ण वे० सं० ११५ । ब्रह्मरायमल्ल कृत भविष्यदत्तरास नेमिरास तथा हनुमत चौपई है ।

५६७०. गुटका सं० २२ । पत्र सं० २६-५३ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजा । ले०

वाग × । अपूर्ण । वे० सं० ११ ।

५६७१. गुटका सं० २३ । पत्र सं० ८१ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय पूजा पाठ ।

ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३१ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है ।

५६७२. गुटका सं० २४ । पत्र सं० २०१ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत विषय-पूजा

पाठ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १३२ ।

विशेष—जिनसहस्रनाम (आशाधर) षट्भक्ति पाठ एवं पूजाओं का संग्रह है ।

५६७३. गुटका सं० २५ । पत्र सं० ६-८ । आ० ६×५ इ० । भाषा-प्राकृत संस्कृत । विषय-पूजा

पाठ । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १३३ ।

५६७४. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ८५ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पूजापाठ । ले०

काल × । पूर्ण । वे० सं० १३४ ।

५६७५. गुटका सं० २७ । पत्र सं० १०१ । आ० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सं० १५२ ।

विशेष—बनारसीविलास के कुछ पाठ, रूपचन्द की जकडो, द्रव्य संग्रह एवं पूजायें है ।

५६७६. गुटका सं० २८ । पत्र सं० १३३ । आ० ६×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८०२ ।

पूर्ण । वे० सं० १५३ ।

विशेष—समयसार नाटक, भक्तामरस्तोत्र भाषा-एवं सामान्य कथायें हैं।

५६७७. गुटका सं० २६। पत्र सं० ११६। आ० ६×६ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। विषय-संग्रह
ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५४।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र तथा अन्य साधारण पाठों का संग्रह है।

५६७८. गुटका सं० ३०। पत्र सं० २०। आ० ६×४ इ०। भाषा-संस्कृत प्राकृत। विषय-स्तोत्र।
ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५५।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र एवं निर्वाणकाण्ड गाथा हैं।

५६७९. गुटका सं० ३१। पत्र सं० ४०। आ० ६×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-कथा। ले०
काल ×। पूर्ण। वे० सं० १६२।

विशेष—रविव्रत कथा है।

५६८०. गुटका सं० ३२। पत्र सं० ४४। आ० ४२×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-संग्रह। ले०
काल ×। पूर्ण। वे० सं० १७७६।

विशेष—बीच २ में से पत्र खाली हैं १. बुलाबीदास खत्री की बरात जो सं० १६८४ मित्ती मंगसिर सुखी के
को आगरे से अहमदाबाद गई, का विवरण दिया हुआ है। इसके प्रतिरिक्त पद, गणेशछंद, लहरियाजी की पूजा आदि हैं।

५६८१. गुटका सं० ३३। पत्र सं० ३२। आ० ६३×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।
वे० सं० १६३।

१. राजुलपञ्चीसी	विनोदीलाल लालचंद	हिन्दी
२. नेमिनाथ का बारहमासा	”	”
३. राजुलमंगल	×	×

प्रारम्भ—

तुम नीकस भवन सुछाडे, जब कमरी भई वरागी ।

प्रभुजी हमने भी ले चालो साथ, तुम बिन नहीं रहै दिन रात ।

प्रन्तिम—

आपा दोनु ही मुकती मिलाना, तहां फेर न होय प्रावागवना ।

राजुल अटल मुघडी नीहाइ, तिहां राणी नहीं छै कोई,

सोये राजुल मंगल गाबत, मन वंछित फल पावत ॥१८॥

इति श्री राजुल मंगल संपूर्ण ।

५६८२. गुटका सं० ३४ । पत्र सं० १६० । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २३३ ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र एवं टीकम की चतुर्दशी कथा हैं ।

५६८३ गुटका सं० ३५ । पत्र सं० ४० । आ० ५×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २३४ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ हैं ।

५६८४. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० २४ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १७७६ फागुण बुदी ६ । पूर्ण । वै० सं० २३५ ।

विशेष—भक्तामर स्तोत्र एवं कल्याण मंदिर संस्कृत और भाषा है ।

५६८५. गुटका सं० ३७ । पत्र सं० २१३ । आ० ५×७ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—पूजा, स्तोत्र, जैन शतक तथा पदों का संग्रह है ।

५६८६. गुटका सं० ३८ । पत्र सं० ५६ । आ० ७×४ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २४२ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

५६८७. गुटका सं० ३९ । पत्र सं० ५० । आ० ७×४ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २४३ ।

१. श्रावकप्रतिक्रमण	×	प्राकृत	१-१४
२. जयतिहुवणस्तोत्र	अभवदेवसूरि	”	१५-१६
३. अजितशान्तिजनस्तोत्र	×	”	२०-२५
४. श्रीवंतजयस्तोत्र	×	..	२६-३२

अन्य स्तोत्र एवं गौतमरासा आदि पाठ हैं ।

५६८८. गुटका सं० ४० । पत्र सं० २५ । आ० ५×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २४४ ।

विशेष—सामायिक पाठ है ।

५६८९ गुटका सं० ४१ । पत्र सं० ५० । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० २४६ ।

विशेष—हिन्दी पाठ संग्रह है ।

५६६०. गुटका सं० ४२। पत्र सं० २०। आ० ५×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४७।

विशेष—सामायिक पाठ, कल्याणमन्दिरस्तोत्र एव जिन रचवीसी हैं।

५६६१. गुटका सं० ४३। पत्र सं० ४८। आ० ५×४ इ०। भाषा हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४८।

५६६२. गुटका सं० ४४। पत्र सं० २५। आ० ६×४ इ०। भाषा—संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २४९।

विशेष—ज्योतिष सम्बन्धी सामग्री है।

५६६३. गुटका सं० ४५। पत्र सं० १८। आ० ८×५ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—गुणित। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २५०।

५६६४. गुटका सं० ४६। पत्र सं० १७७। आ० ७×५ इ०। ले० काल सं० १७५४। पूर्ण। वे० सं० २५१।

१. भक्तामरस्तोत्र भाषा	अखयराज	हिन्दी गद्य	१-३४
२. इष्टोपदेश भाषा	×	"	३४-५२
३. सम्बोधपंचासिका	×	प्राकृत संस्कृत	५३-७१
४. सिन्दूरप्रकरण	बनारसीदास	हिन्दी	७२-९२
५. चरचा	×	"	९२-१०३
६. योगसार दोहा	योगीन्द्रदेव	"	१०४-१११
७. द्रव्यसंग्रह गाथा भाषा सहित	×	प्राकृत हिन्दी	११२-१३३
८. अनित्यपंचासिका	त्रिभुवनचन्द	"	१३४-१४७
९. जकडी	रूपचन्द	"	१४८-१५४
१०. "	दरिगह	"	१५५-५६
११. "	रूपचन्द	"	१५७-१६३
१२. पद	"	"	१६४-१६९
१३. आत्मसंबोध जयमाल आदि	×	"	१७०-१७७

५६६५. गुटका सं० ४७। पत्र सं० १६। आ० ५×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २५४।

५६६६. गुटका सं० ४८ । पत्र सं० १०० । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७०५ पूर्ण । वे० सं० २५५ ।

विशेष—आदित्यनारकथा (भाऊ) विरहमंजरी (नन्ददास) एवं आयुर्वेदिक नुसखे हैं ।

५६६७. गुटका सं० ४९ । पत्र सं० ४-११६ । आ० ५×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६६८. गुटका सं० ५० । पत्र सं० १८ । आ० ५×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५८ ।

विशेष—पदों एवं सामान्य पाठों का संग्रह है ।

५६६९. गुटका सं० ५१ । पत्र सं० ४७ । आ० ८×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २५९ ।

विशेष—प्रतिष्ठा पाठ के पाठों का संग्रह है ।

६०००. गुटका सं० ५२ । पत्र सं० ६८ । आ० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० सं० १७२५ भादवा बुदी २ । पूर्ण । वे० सं० २६० ।

विशेष—समयसार नाटक तथा बनारसीविलास के पाठ हैं ।

६००१. गुटका सं० ५३ । पत्र सं० २२८ । आ० ९×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७५२ । पूर्ण । वे० सं० २६१ ।

१. समयसार नाटक	बनारसीदास	हिन्दी	१-११
----------------	-----------	--------	------

विशेष—विहारीदास के पुत्र नैनसी के पठनार्थ सदाराम ने लिखा था ।

२. सीताचरित्र	रामचन्द्र (बालक)	हिन्दी	१-१३७
---------------	--------------------	--------	-------

३. पद	कवि संतीदास	”	
-------	-------------	---	--

४. ज्ञानस्वरोदय	चरणदास	”	
-----------------	--------	---	--

५. पट्पंचासिका	×	”	
----------------	---	---	--

६००२. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० ५८ । आ० ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८२७ जेठ बुदी १३ । पूर्ण । वे० सं० २६२ ।

१. स्वरोदय	हिन्दी	१-२७
------------	--------	------

विशेष—उमा महेश संवाद में से है ।

२. पंचाध्यायी

”

२८-५८

विशेष—कोटपुतली वास्तव्य श्रीवन्तलाल फकीरचन्द के पठनार्थ लिखी गई थी।

६००३. गुटका सं० ५५। पत्र सं० ७-१२६। प्रा० ५३×३३ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल
×। पूर्ण। वे० सं० २७२।

१. अनन्त के छप्पय	भ० धर्मचन्द	हिन्दी	१४-२०
२. पद	विनोदीलाल	”	
३. पद	जगतराम	”	
(नेमि रंगीलो छवीलो हटोलो चटकीले मुगति बधु संग मिलो)			
४. सरस्वती चूर्ण का नुसखा	×	”	
५. पद— प्रात उठी ले गीतम नाम जिम मन वांछित सीभे काम।	कुमुदचन्द	हिन्दी	
५. जीव बेलडी	देवीदास	”	
(सतगुर कहत सुनो रे भाई यो संसार असारा)		”	२१ पद्य हैं।
७. नारीरासो	×	”	३१ पद्य हैं।
८. चेतावनी गीत	नाथू	”	
९. जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	भ० जिराचन्द्र	संस्कृत	
१०. महाबीरस्तोत्र	भ० अमरकीर्ति	”	
११. नेमिनाथ स्तोत्र	बं० शालि	”	
१२. पद्मावतीस्तोत्र	×	”	
१३. पट्मत चरचा	×	”	
१४. आराधनासार	जिनदास	हिन्दी	५९ पद्य हैं।
१५. विनती	”	”	२० पद्य हैं।
१६. राजुल की सज्भाय	”	”	३७ पद्य हैं।
१७. भूलना	गंगादास	”	१२ पद्य हैं।
१८. ज्ञानपैडी	मनोहरदास	”	
१९. श्रावकाक्रिया	×	”	

विशेष—विभिन्न कवित्त एवं वीतराग स्तोत्र आदि हैं ।

६००४. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० १२० । आ० ४३×४३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल × पूर्ण । वे० सं० २७३ ।

विशेष—सामान्य षाठों का संग्रह है ।

६००५. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० ३-८८ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १८४३ चैत बुदी १४ । अपूर्ण । वे० सं० २७४ ।

विशेष—भक्तारस्तोत्र, स्तुति, कल्याणमन्दिर भाषा, शांतिपाठ, तीन चौबीसी के नाम, एवं देवा पूजा आदि है

६००६. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० ५६ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २७६ ।

१. तीसचौबीसी

×

हिन्दी

२. तीसचौबीसी चौपई

श्याम

”

२० काल १७४६ चैत सुदी ५

ले० काल सं० १७४६ कार्तिक बुदी ५

अन्तिल—नाम चौपई ग्रन्थ यह, जोरि करी कवि श्याम ।

जिसराज सुत ठोलिया, जोवनपुर तस धाम ॥२१६॥

सतरासै उनचास में, पूरन ग्रन्थ सुभाय ।

चैत्र उजाली पंचमी, विजै स्कन्ध नृपराज ॥२१७॥

एक वार जे सरदहै, अथवा करिसि पाठ ।

नरक नीच गति कै विषै, गाढे जढे कपाट ॥२१८॥

॥ इति श्री तीस चौदसो जी की चौपई ॥

६००७. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० ५२ । आ० ६×४३ इ० । भाषा—संस्कृत प्राकृत । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २६३ ।

विशेष—तीनचौबीसी के नाम, भक्तामर स्तोत्र, पंचरत्न परीक्षा की गाथा, उपदेश रत्नमाला की गाथा आदि है ।

६००८. गुटका सं० ६० । पत्र सं० ३४ । आ० ६×८ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १९४३, पूर्ण । वे० सं० २६३ ।

१. समन्तभद्रकथा

जोधराज

हिन्दी

२० काल १७२२ वैशाख बुदी ७

२. श्रावकों की उत्पत्ति तथा ८४ गोत्र	X	हिन्दी
३. सामुद्रिक पाठ	X	"

अन्तिम—सगुन छलन सुमत सुभ सब जनकूँ सुख देत ।

भाषा सामुद्रिक रच्यो, सजन जनों के हेत ॥

६०८६. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ११-५८ । आ० ८३×६६ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं० १९१६ । अपूर्ण । वे० सं० २९६ ।

विशेष—विरहमान तीर्थङ्कर जकडी (हिन्दी) दशलक्षण, रत्नत्रय पूजा (संस्कृत) पंचमेरु पूजा (भूधरदास) नन्दीश्वर पूजा जयमाल (संस्कृत) अनन्तजिन पूजा (हिन्दी) चमत्कार पूजा (स्वरूपचन्द) (१९१६), पंचकुमार पूजा आदि हैं ।

६०१०. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १६ । आ० ८३×६६ इ० । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २९७ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

६०११. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १६ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । विषय—संग्रह । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३०८ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह एवं ज्ञानस्वरोदय है ।

६०१२. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ३९ । आ० ६×७ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३२५ ।

विशेष—(१) कवित्त पद्याकर तथा अन्य कवियों के (२) चौदह विद्या तथा कारखाने जात के नाम (३) आमेर के राजाओं का वंशावली, (४) मनाहरपुरा की पीढियों का वर्णन, (५) खंडेला की वंशावली, (६) खंडेलावालों के गोत्र, (७) कारखानों के नाम, (८) आमेर राजाओं का राज्यकाल का विवरण, (९) दिल्ली के बादशाहों पर कवित्त आदि हैं ।

६०१३. गुटका सं० ६५ । पत्र सं० ४२ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० ३२६ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०१४. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० १३-३२ । आ० ७×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० ३२७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

७६०]

६०१५. गुटका सं० ६७। पत्र सं० ५२। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३२८।

विशेष—कवित्त एवं आयुर्वेद के नुसखों का संग्रह है।

६०१६. गुटका सं० ६८। पत्र सं० २६। आ० ६२×४३ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—संग्रह। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३३०।

विशेष—पदों एवं कविताओं का संग्रह है।

६०१७. गुटका सं० ६९। पत्र सं० ८४। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३३२।

विशेष—विभिन्न कवियों के पदों का संग्रह है।

६०१८. गुटका सं० ७०। पत्र सं० ४०। आ० ६३×५ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३३३।

विशेष—पदों एवं पूजाओं का संग्रह है।

६०१९. गुटका सं० ७१। पत्र सं० ९८। आ० ४३×३३ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—कामशास्त्र। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३३४।

६०२०. गुटका सं० ७२। स्फुट पत्र। वे० सं० ३३६।

विशेष—कर्मों की १४८ प्रकृतियां, इष्टछत्तीसी एवं जोधराज पञ्चीसी का संग्रह है।

६०२१. गुटका सं० ७३। पत्र सं० २८। आ० ८३×५ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३३७।

विशेष—ब्रह्मविलास, चौबीसदण्डक, मार्गणाविधान, अकलङ्काष्टक तथा सम्यक्त्वपञ्चीसी का संग्रह है।

६०२२. गुटका सं० ७४। पत्र सं० ३६। आ० ८३×५ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—संग्रह। ले० काल X। पूर्ण। वे० सं० ३३८।

विशेष—विनतियां, पद एवं अन्य पाठों का संग्रह है। पाठों की संख्या १९ है।

६०२३. गुटका सं० ७५। पत्र सं० १४। आ० ५×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल सं० १९५९। पूर्ण। वे० सं० ३३९।

विशेष—नरक दुःख वर्णन एवं नेमिनाथ के १२ भवों का वर्णन है।

६०२४. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २५ । आ० ८३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।
वे० सं० ३४२ ।

विशेष—प्रायुर्वेदिक एवं यूनानी नुसखों का संग्रह है ।

६०२५. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० १४ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले०
काल × । वे० सं० ३४१ ।

विशेष—जोगीरासा, पद एवं विनतियों का संग्रह है ।

६०२६. गुटका सं० ७८ । पत्र सं० १६० । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।
पूर्ण । वे० सं० ३५१ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है । पृष्ठ ६४-१४६ तक दीशधर कृत द्रव्यसंग्रह की बालावबोध टीका
है । टीका हिन्दी गद्य में है ।

६०२७. गुटका सं० ७९ । पत्र सं० ८६ । आ० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद-संग्रह । ले०
काल × । पूर्ण । वे० सं० ३५२ ।

ज भण्डार [शास्त्र भण्डार दि० जैन मन्दिर पार्श्वनाथ, जयपुर]

६०२८. गुटका सं० १ । पत्र सं० २५८ । आ० ६×५ इ० । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । लक्ष्मीसेन का चितामणिस्तवन तथा देवेन्द्रकीर्ति कृत प्रतिमासान्त
चतुर्दशी पूजा है ।

६०२९. गुटका सं० २ । पत्र सं० ५४ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं०
१८४३ । पूर्ण ।

विशेष—जीवराम कृत पद, भक्तामर स्तोत्र एवं सामान्य पाठ संग्रह है ।

६०३०. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ५३ । आ० ६×५ । भाषा संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

जिनयज्ञ विधान, अभिषेक पाठ, गणधर बलय पूजा, ऋषि मंडल पूजा, तथा कर्मदहन पूजा के पाठ हैं ।

६०३१. गुटका सं० ४ । पत्र सं० १२४ । आ० ८×७ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल सं०
१६२६ । पूर्ण ।

विशेष—नित्य पूजा पाठ के अतिरिक्त निम्न पाठों का संग्रह है—

२. मूढता जनांकुश इत्यादि	×	”
३. त्रेपनक्रिया	×	”
४. समयसार	आ० कुन्दकुन्द	प्राकृत
५. आदित्यवारकथा	भाऊ	हिन्दी
६. पोसहरास	ज्ञानभूषण	”
७. धर्मतरुगीत	जिनदास	”
८. चहुगतिचौपई	×	”
९. संसारअटवी	×	”
१०. चेतनगीत	जिनदास	”

सं० १६२६ में अंबावती में प्रतिलिपि हुई थी ।

६०३२. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ७५ । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल सं० १६८२ । पूर्ण ।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है ।

सं० १६८२ में नागौर में बाई ने दिक्षा ली उसका प्रतिज्ञा पत्र भी है ।

६०३३. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २२ । आ० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । ले० काल × वे० सं० ६ ।

१. नेमीश्वर का बारहमासा	खेतसिंह	हिन्दी	८
२. आदीश्वर के दशभव	गुराचंद	”	
३. क्षीरहीर	×	”	

६०३४. गुटका सं० ७ । पत्र सं० १७७ । आ० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—नित्यनैमित्तक पाठ, सुभाषित (भूधरदास) तथा नाटक समयसार (बनारसीदास) हैं ।

६०३५. गुटका सं० ८ । पत्र सं० १४६ । आ० ६×५ इ० । भाषा—संस्कृत, अपभ्रंश ।

ले० काल × । पूर्ण ।

१. चिन्तामणिपार्ष्वनाथ जयमाल	सोम	अपभ्रंश
२. ऋषिमंडलपूजा	मुनि गुरानंदि	संस्कृत

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह भी है ।

६०३६. गुटका सं० ६ । पत्र सं० २० । आ० ६×४ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह, लोक का वर्णन, प्रकृतिम चैत्यालय वर्णन, स्वर्गनरक दुख वर्णन, चारों गतियों की आयु आदि का वर्णन, इष्ट छत्तीसी, पञ्चमङ्गल, आलोचना पाठ आदि हैं ।

६०३७. गुटका सं० १० । पत्र सं० ३८ । आ० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

विशेष—सामायिक पाठ, दर्शन, कल्याणमंदिर स्तोत्र एवं सहस्रनाम स्तोत्र है ।

६०३८. गुटका सं० ११ । पत्र सं० १६६ । आ० ४×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

१. भक्तामर स्तोत्र टव्वाटीका	×	संस्कृत हिन्दी ले० काल सं० १७२७ चैतसुदी ५
२. पद— हर्षकीर्ति	×	”
(जिण जिण जप जीवडा तीन भवन में सारोजी)		
३. पंचगुरु श्री जयमाल	ब्र० रायमल्ल	” ले० काल सं० १७२६
४. कवित्त	×	”
५. हितोपदेश टीका	×	”
६. पद—तै नर भव पाय कहा कियो	रूपचन्द	हिन्दी
७. जकड़ी	×	”
८. पद—मोहिनी वहकायो सब जग मोहनी	मनोहर	”

६०३९. गुटका सं० १२ । पत्र सं० १३८ । आ० १०×८ इ० । भाषा हिन्दी संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण । निम्न पाठ है—

क्षेत्रपाल पूजा (संस्कृत) क्षेत्रपाल जयमाल (हिन्दी) नित्यपूजा, जयमाल (संस्कृत हिन्दी) सिद्धपूजा (सं०) षोडशकारण, दशलक्षण, रत्नत्रयपूजा, कलिकुण्डपूजा और जयमाल (प्राकृत) नंदीश्वरपत्तिपूजा अनन्तचतु-दशोपूजा, अक्षयनिधिपूजा तथा पार्वनास्तोत्र, आयुर्वेद ग्रंथ (संस्कृत ले० काल सं० १६८१) तथा कई तरह की रेखाओं के चित्र भी है, राशिफल आदि भी दिये हुये हैं ।

६०४०. गुटका सं० १३ । पत्र सं० २८३ । आ० ७×५ इ० । ले० काल सं० १७३८ । पूर्ण ।

गुटके में मुख्यतः निम्न पाठ है—

१. जिनस्तुति	मुमतिकीर्ति	हिन्दी
२. गुरास्थानकगीत	ब्र० श्री वर्दान	”

अन्तिम-भरति श्री वर्द्धन ब्रह्म एह वाजी भवियरा सुख करइ

- | | | |
|--|---|-----------------------|
| ३. सम्यक्त्व जयमाल | × | अपभ्रंश |
| ४. परमार्थगीत | रूपचन्द | हिन्दी |
| ५. पद- ग्रहो मेरे जीय तू कत भरमायो, तू
चेतन यह जड परम है यामै कहा लुभायो । मनराम | | ” |
| ६. मेघकुमारगीत | पूनी | ” |
| ७. मनोरथमाला
अचला तिहि तरणा गुण गाइस्यो, | अचलकीर्ति | ” |
| ८. सहेलीगीत
सहेल्यो हे यो संसार असार मो चित्त में या अपनी जी सहेल्यो है
ज्यो रांचै सो गवार तन धन जोबन थिर नहीं । | सुन्दर | हिन्दी |
| ९. पद-
जा दिन हँस चलै घर छोडि, कोई न साथ खड़ा है गोडि ॥
जरा जरा कै मुख ऐसी वारणी, बडो वेग मिलो अन पारणी ॥
अरा विडह्वै उनगै सरीर, खोसि खोसि ले तनक चीर ।
चारि जरा जङ्गल ले जाहि, घर मैं घडी रहण दे नाहि ।
जबता बूड विडा में वास, यो मन मेरा भया उदास ।
काया माया भूडी जानि, मोहन होऊ भजन परमाणि ॥६॥ | मोहन | हिन्दी |
| १०. पद-
नहि छोडी हो जिनराज नाम, मोहि और मिथ्यात सै क्या बनै काम । | हर्षकीर्ति | हिन्दी |
| ११. ”
सेव तौ जिन साहिब की कीजै नरभव लाहो लीजै | मनोहर | हिन्दी |
| १२. पद-
१३. ”
१४. मोहविवेकयुद्ध
१५. द्वादशानुप्रेक्षा | जिणदास
स्यामदास
बनारसीदास
सूरज | हिन्दी
”
”
” |

गुटका-संग्रह]

१६. द्वादशानुप्रेक्षा	×	”
१७. विनती	रूपचन्द	”

जे जे जिन देवनि के देवा, सुर नर सकल करे तुम सेवा ।

१८. पंचेन्द्रियवेलि	ठक्कुरसी	हिन्दी	२० काल सं० १५=५
१९. पञ्चगतिवेलि	हर्षकीर्ति	”	” ” १८९३
२०. परमार्थ हिंदोलना	रूपचन्द	”	
२१. पंथीगीत	झीहल	”	
२२. मुक्तिपीहरगीत	×	”	
२३. पद-ग्रन्थ मोहि ग्रीर कछु न मुहाय	रूपचन्द	”	
२४. पदसंग्रह	बनारसीदास	”	

६०४१. गुटका सं० १४ । पत्र सं० १०९-२३७ । आ० १०×७ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल
अपूर्ण ।

विशेष—स्तोत्र, पूजा एवं उसकी विधि दी हुई है ।

६०४२. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ४३ । आ० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद संग्रह ।
काल × । पूर्ण ।

६०४३. गुटका सं० १५ । पत्र सं० ५२ । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-साधारण
पाठ संग्रह । ले० काल × । पूर्ण ।

६०४४. गुटका सं० १७ । पत्र सं० १६६ । आ० १३×३ इ० । ले० काल सं० १६१३ ज्येष्ठ पूर्णिमा
पूर्ण ।

१. छियालीस ठाणा न० रायमल्ल संस्कृत १९

विशेष—चौबीस तीर्थक्षुरों के नाम, नगर नाम, कुल, वंश, पंचकल्याणकों की तिथि आदि विवरण

२. चौबीस ठाणा चर्चा × ” १८

३. जीवसमाप्त × प्राकृत ले० काल सं० १६१३ ज्येष्ठ ५९

विशेष—न० रायमल्ल ने देहली में प्रतिलिपि की थी ।

४. सुप्पय दोहा × हिन्दी २०

५. परमात्म प्रकाश भाषा प्रभुदास ” १२

६. रत्नकरण्डभावकाचार समंतभद्र संस्कृत १४

६०४५. गुटका सं० १८ । पत्र सं० १५० । आ० ७×२३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण
विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

ट भगडार [आमेर शास्त्र भगडार जयपुर]

६०४६. गुटका सं० १ । पत्र सं० ३७ । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वै० सं० १५०१ ।

१. मनोहरमंजरी	मनोहर मिश्र	हिन्दी	१-२६
प्रारम्भ—	अथ मनोहर मंजरी, अथ नव जौवना लक्षणं । याके योवनु अंकुरयो, अंग अंग छवि ओर । सुनि सुषान नव यौवना, कहत भेद द्वे ठोर ॥		
अन्तिमः—	लहलहाति अति रसमसी, बहु सुवासु भपाठ (?) निरखि मनोहर मंजरी, रसिक भृङ्ग मंडरात ॥ सुनि सुजनि अभिमान तजि मन विचारि गुन दोष । कहा विरहु कित प्रेम रसु, तहीं होत दुख मोख ॥ चंद अत द्वे दीप के, अंक बीच आकास । करी मनोहर मंजरी, मकर चावनी म्यास ॥ माथुर का हो मधुपुरी, बसत महोली पोरि । करी मनोहर मंजरी, अनूप रस सोरि ॥		

इति श्री सकललोककृतमणिमरीचिमंजरीनिकेनोराजितपद्मद्वन्द्वनावनविहारकारिलयाकटाङ्गछटोपासक मनोहर मिश्र विरचिता मनोहरमंजरी समाप्ता ।

कुल ७४ पद्य हैं । सं० ७२ तक ही दिये हुये हैं । नायिका भेद वर्णन है ।

२. फुटकर दोहा	×	हिन्दी	३०-३६
---------------	---	--------	-------

विशेष— ७० दोहे हैं ।

३. आयुर्वेदिक नुसखे	×	”	३७
---------------------	---	---	----

६०४७. गुटका सं० २ । पत्र सं० २-५५ । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १७६४ । अपूर्ण । वै० सं० १५०२ ।

१. नाममंजरी	नंददास	हिन्दी	पद्य सं० २६१	२-२८
२. अनेकार्थमंजरी	”	”		२८-४०

स्वामी खेमदास ने प्रतिलिपि की थी ।

३. कवित्त	X	”	४१-४३
४. भोजरासो	उदयभानु	”	४३-४८

प्रारम्भ—

श्री गणेशाय नमः । दोहरा ।
 कुंजर कर कुंजर करन कुंजर आनंद देव ।
 सिधि समपन सत्त सूव सुरनर कीजिय सेव ॥ १ ॥
 जगत जननि जग उच्चरन जगत ईस अरधंग ।
 मोन विचित्र विराजकर हंसासन सरवंग ॥ २ ॥
 सूर शिरोमणि सूर सुत सूर टरें नहि भान ।
 जहां तहां सवन मुम जिये तहां भूपति भोज वखान ॥ ३ ॥

अन्तिम—इति श्री भोजजी को रासो उदैभानजी को कियो । लिखतं स्वामी खेमदास मित्ती फागुण बुदी ११ संवत् १७६५ । इसमें कुल १४ पद्य हैं जिनमें भोजराज का वैभव व यश वर्णन किया गया है ।

५. कवित्त	टोडर	हिन्दी	कवित्त हैं	४६-४
-----------	------	--------	------------	------

विशेष—ये महाराज टोडरमल के नाम से प्रसिद्ध थे और अकबर के भूमिकर विभाग के मंत्री थे ।

६०४८. गुटका सं० ३ । पत्र सं० ११८ । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १७२६ । अपूर्ण । वे० सं० १५०३ ।

१. मायाब्रह्म का विचार	X	हिन्दी गद्य	अपूर्णा
------------------------	---	-------------	---------

विशेष—प्रारम्भ के कई पत्र फटे हुये हैं गद्य का नमूना इस प्रकार है ।

“माया काहे तै कहिये ब्रंभस्यो सबल है तातै माया कहिये । अकास काहे तैं कहिये पिंड ब्रह्मांड का प्रादि प्राकार है तातै आकास कहीये । मुनी (शून्य) काहे तै कहीये,—जड है तातै मुनी कहिये । सकती काहे तैं कहिये सकल संसार को जीति रही है तातै सकती कहिये ।”

अन्तिम—एता माया ब्रह्म का विचार परम हंस का ग्यान ब्रंभ जगीस संपूर्ण समाप्ता । श्रीशंकाचारीज बोरच्यते । मित्ती प्रसाद सुदी १० सं० १७२६ का मुकाम गुहाटी उर कोस दोइ देईदान चारण की पोथीस्यै उतारी पोथी सा.....म ठोल्या साह नेवसी का बेटाकर महाराज श्री रुघनाथस्यंघजी ।

२ गोरक्षपदावली	गोरखनाथ	हिन्दी	अपूर्णा
----------------	---------	--------	---------

विशेष—करीब ६ पद्य हैं ।

म्हारा रँ बैरागी जोगी जोगणिए संग न छाडै जी ।
मान सरोवर मनस भुलती आवै गगन मड मंड मारैजी ॥

३. सतसई बिहारीलाल हिन्दी अपूर्ण ३-६५
ले० काल सं० १७२५ माघ सुदी २ ।

विशेष—प्रारम्भ के १२ दोहे नहीं हैं । कुल ७१० दोहे हैं ।

४. वैद्यमनोत्सव नयनसुख ” अपूर्ण ६७-११८
६०४६. गुटका सं० ४ । पत्र सं० २५ । भाषा—संस्कृत । विषय—नीति । ले० काल सं० १८३९ पौष
सुदी ७ । पूर्ण । वे० सं० १५०४ ।

विशेष—चाणक्य नीति का वर्णन है । श्रीचन्दजी गंगवाल के पठनार्थ जयपुर में प्रतिलिपि की थी ।

६०५०. गुटका सं० ५ । पत्र सं० ४० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८३१ । अपूर्ण । वे० सं०
१५०५ ।

विशेष—विभिन्न कवियों के शृङ्गार के अनूठे कवित्त है ।

६०५१. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ८९ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । २० काल सं० १६८८ ।
ले० काल सं० १७९८ कार्तिक सुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १५०६ ।

विशेष—सुन्दरदास कृत सुन्दरशृङ्गार है । श्रेयदास गोधा मालपुरा वाले ने प्रतिलिपि की थी ।

६०५२. गुटका सं० ७ । पत्र सं० ४५ । आ० ६×७ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८३१
वैशाख बुदी ८ । अपूर्ण । वे० सं० १५०७ ।

१. कवित्त अजर (अग्रदास) हिन्दी अपूर्ण १-१०

विशेष—कुल ६३ पद्य हैं पर प्रारम्भ के ७ पद्य नहीं हैं । इनका छन्द कुण्डलिया सा लगता है एक छन्द

निम्न प्रकार है—

आंधो बांटै जेवरी पाछै बछरा खाय ।
पाछै बछरा खाय कहत गुरु सीख न मानै ।
ग्यान पुरान मसान छिनक में धरम भुलानै ॥
करो विप्रलो रीत मृतग धन लेत न लाजै ।
नीच न समझै मीच परत विषया कै काजै ।
अगर जीव आदि तै यह बंध्योस करै उपाय ।
आंधो बांटै जेवरी पाछै बछरा खाय ॥१०॥

३. द्वादशानुप्रेक्षा

लोहट

हिन्दी

१७-२१

ले० काल सं० १८३१ वैशाख बुदी ८ ।

विशेष—१२ सवैये १२ कवित्त छप्पय तथा अन्त में १ दोहा इस प्रकार कुल २५ छंद हैं ।

अन्तिम—

अनुप्रेक्षा द्वादश सुनत, गयो तिमिर अज्ञान ।

अष्ट करम तसकर दुरे, उगयो अनुभे भान ॥ २५ ॥

इति द्वादशानुप्रेक्षा संपूर्ण । मिति बैशाख बुदी ८ संवत् १८३१ दसकत देव करण का ।

४. कर्मपञ्चीसी

भारमल

हिन्दी

२१-२४

विशेष—कुल २२ पद्य हैं ।

अन्तिमपद्य—

करम प्रा तोर पंच महावरत धरूँ जपूँ चौबीस जिगांदा ।

अरहंत ध्यान लैव चहूँ साह लोयण वंदा ॥

प्रकृति पन्पासी जाणि कै करम पचीसी जान ।

सूदर भारमल.....स्यौपुर धान ॥ कर्म अति० ॥ २२ ॥

॥ इति कर्म पञ्चीसी संपूर्ण ॥

५. पद—(बांसुरी दीजिये ब्रज नारि)

सूरदास

”

२६

६. पद—हम तो ब्रज को बसिवो ही तज्यो

”

”

२७-२८

ब्रज में बसि वैरिणि तू बांसुरी

७. श्याम वत्तीसी

श्याम

”

३७-४०

विशेष—कुल ३५ पद्य हैं जिनमें ३४ सवैये तथा १ दोहा है:—

अन्तिम—

कृष्ण ध्यान चतु अष्ट में श्रवनन सुनत प्रनाम ।

कहत स्याम कलमल कहू रहत न रञ्जक नाम ॥

८. पद—बिन माली जो लगावै बाग

मनराम

हिन्दी

४०

९. दोहा—कबीर श्रीगुन एक ही गुण है

कबीर

”

”

लाख करोरि

१०. फुटकर कवित्त

x

”

४१

११. जम्बूद्वीप सम्बन्धी पंच भेद का वर्णन

x

”

अपूर्णा

४१-४५

६०५३. गुटका सं० ८ । पत्र सं० ८६ । आ० ६×८ इ० । ले० काल सं० १७७६ श्रावण बुधी ६ । पूर्ण । वे० सं० १५०८ ।

१. कृष्णस्वमणि वेलि पृथ्वीराज राठौर राजस्थानी डिंगल १-८५
र० काल० सं० १६३७ ।

विशेष—ग्रंथ हिन्दी गद्य टीका सहित है । पहिले हिन्दी पद्य हैं फिर गद्य टीका दी गई है ।

२. विष्णु पंजर रक्षा	×	संस्कृत	८६
३. भजन (गढ बंका कैसे लीजे रे भाई)	×	हिन्दी	८७-८८
४. पद—(बैठे नव निकुंज कुटीर)	चतुर्भुज	”	८६
५. ” (धुनिमुनि मुरली बन बाजै)	हरीदास	”	”
६. ” (सुन्दर सांबरो आवै चल्यो सखी)	नंददास	”	”
७. ” (बालगोपाल छैगन मेरे)	परमानन्द	”	”
८. ” (बन ते आवत गावत गौरी)	×	”	”

६०५४. गुटका सं० ६ । पत्र सं० ८५ । आ० ६×७ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।
वे० सं० १५०६ ।

विशेष—केवल कृष्णस्वमणी वेलि पृथ्वीराज राठौर कृत है । प्रति हिन्दी टीका सहित है । टीकाकार अज्ञात है । गुटका सं० ८ में आई हुई टीका से भिन्न है । टीका काल नहीं दिया है ।

६०५५. गुटका सं० १० । पत्र सं० १७०-२०२ । आ० ६×७ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे सं० १५११ ।

१. कवित्त राजस्थानी डिंगल १७१-७३

विशेष—शृङ्गार रस के सुन्दर कवित्त हैं । विरहिनी का वर्णन है । इसमें एक कवित्त छीहल का भी है ।

२. श्रीस्वमणिकृष्णजी को रासो तिपरदास राजस्थानी पद्य १७३-१८५

विशेष—इति श्री स्वमणी कृष्णजी को रासो तिपरदास कृत संपूर्ण ॥ संवत् १७३६ वर्षे प्रथम चैत्र मासे शुभ शुक्ल पक्षे तिथौ दशम्या बुधवासरे श्री मुकुन्दपुर मध्ये लिखापितं साह सजन कोष्ठ साह लूणाजी तत्पुत्र सजन साह श्रेष्ठ छाजूजी वाचनाय । लिखतं व्यास जदूना नाम्ना ।

३ कवित्त × हिन्दी १८६-२०२

विशेष—भूधरदास, सुखराम, विहारो तथा केशवदास के कवित्तों का संग्रह है । ४७ कवित्त हैं ।

६०५६. गुटका सं० ११ । पत्र सं० ४६ । आ० १०×८ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० १५१४ ।

१. रसिकप्रिया	केशवदेव	हिन्दी	अपूर्ण	१-४८
			ले० काल सं० १७६१ जेष्ठ सुदी १४	
२. कवित्त	×	"		४६

६०५७. गुटका सं० १२ । पत्र सं० २-२६ । आ० ५×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण

विशेष—निम्न पाठ उल्लेखनीय है ।

१. स्नेहलीला	जनमोहन	हिन्दी		६-१५
--------------	--------	--------	--	------

अन्तिम—या लीला ब्रज वास की गोपी कृष्ण सनेह ।

जनमोहन जो गाव ही सो पावै नर देह ॥११६॥

जो गावै सीखै सुनै भाव भक्ति करि हेत ।

रसिकराय पूरण कृपा मन वांछित फल देत ॥१२०॥

॥ इति स्नेहलीला संपूर्ण ॥

विशेष—ग्रन्थ में कृष्ण ऊधव एवं ऊधव गोपी संवाद है ।

६०५८. गुटका सं० १३ । पत्र सं० ७६ । आ० ८×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० × ।

पूर्ण । वे० सं० १५२२ ।

१. रागमाला	श्याम मिश्र	हिन्दी		१-१२
------------	-------------	--------	--	------

२० काल सं० १६०२ फागुण बुदी १० । ले० काल सं० १७४६ सावन सुदी १५ ।

विशेष—ग्रन्थ के आदि में कासिमख़ां का वर्णन है । ग्रंथ का दूसरा नाम कासिम रसिक विलास भी है ।

अन्तिम—संवत् सौरह सै वरण ऊपर बीते दोष ।

फागुन वदी सनो दसी सुनो गुनी जन लोय ॥

पोथी रची लहौर स्याम आगरे नगर के ।

राजघाट है ठौर पुत्र चतुर्भुज मिश्र के ॥

इति रागमाला ग्रन्थ स्याम मिश्र कृत संपूर्ण । संवत् १७४६ वर्षे सावण सुदी १५ सोववार पोथी तेरगढ प्रगने हिडोण का में साहू गोरधनदास अग्रवाल की पोथी ये लिखी लिखत मीजीराम ।

२. द्वादशमासा (बारहमासा)	महाकविराइसुन्दर	हिन्दी		
--------------------------	-----------------	--------	--	--

विशेष—कुल २४ कवित्त है। प्रत्येक मास का विरहिनी वर्णन किया गया है। प्रत्येक कवित्त में सुन्दर शब्द हैं। सम्भव है रचना सुन्दर कवि की है।

३. नखशिखवर्णन केशवदास हिन्दी १४-२८

ले० काल सं० १७४६ माह बुदी १४।

विशेष—शेरगढ में प्रतिलिपि हुई थी।

४. कवित्त— गिरधर, मोहन सेवग आदि के हिन्दी

६०५६. गुटका सं० १४। पत्र सं० ३६। आ० ५×५ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।

वे० सं० १५२३।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६०. गुटका सं० १५। पत्र सं० १६८। आ० ८×६ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—पद एवं पूजा।

ले० काल सं० १८३३ आसोज बुदी १३। पूर्ण। वे० सं० १५२४।

१. पदसंग्रह हिन्दी १-५८

विशेष—जिनदास, हरीसिंह, बनारसीदास एवं रामदास के पद हैं। राग रागिनियों के नाम भी दिये हुये हैं

२. चौबीसतीर्थङ्करपूजा रामचन्द्र हिन्दी ५८-१६८

६०६१. गुटका सं० १६। पत्र सं० १७१। आ० ७×६ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल सं० १६४७। अपूर्ण। वे० सं० १५२५।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है।

१. विरदावली × सस्कृत

विशेष—पूरी भट्टारक पट्टावली दी हुई है।

२. ज्ञानबावनी मतिशेखर हिन्दी ६८-१०२

विशेष—रचना प्राचीन है। ५३ पद्यों में कवि ने अक्षरों की बावनी लिखी है। मतिशेखर की लिखी हुई धना चउपई है जिसका रचनाकाल सं० १५७४ है।

३. त्रिभुवन की विनती गङ्गादास

विशेष—इसमें १०१ पद्य हैं जिसमें ६३ शलाका पुरुषों का वर्णन है। भाषा गुजराती लिपि हिन्दी है।

६०६२. गुटका सं० १७। पत्र सं० ३२-७०। आ० ५×६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल सं० १८४७। अपूर्ण। वे० सं० १५२६।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६३. गुटका सं० १८ । पत्र सं० ७० । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं० १८६४
ज्येष्ठ बुदी ५५ । पूर्ण । वे० सं० १५२७ ।

१. चतुर्दशीकथा टोकम हिन्दी १० काल सं० १७१२
विशेष—३५७ पद्य हैं ।

२. कलियुग की कथा द्वारकादास ”
विशेष—पन्नेवर में प्रतिलिपि हुई थी ।

३. फुटकर कवित्त, रागों के नाम, रागमाला के दोहे तथा विनोदीलाल कृत चौबीसी स्तुति है ।

४. कपडा माला का दूहा सुन्दर राजस्थानो
विशेष—इसमें ३१ पद्यों में कवि ने नायिका को अलग २ कपड़े पहिना कर विरह जाग्रत किया तथा फिर
पिय मिलन कराया है । कविता सुन्दर है ।

६०६४. गुटका सं० १९ । पत्र सं० ५७-३०५ । आ० ६ $\frac{१}{२}$ ×६ $\frac{१}{२}$ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—
संग्रह । ले० काल सं० १६९० द्वि० वैशाख मुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० १५३० ।

१. भविष्यदत्तचौपई ब्र० रायनल्ल हिन्दी अपूर्ण ५७-१०६

२. श्रीपालचरित्र परिमल्ल ” १०७-२८३

विशेष—कवि का पूर्ण परिचय प्रशस्ति में है । अकबर के शासन काल में रचना की गई थी ।

३. धर्मरास (श्रावकाचाररास) × ” २८३-२९८

६०६५. गुटका सं० २० । पत्र सं० ७३ । आ० ६×६ $\frac{१}{२}$ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०
१८३९ चैत्र बुदी ३ । पूर्ण । वे० सं० १५३१ ।

विशेष—स्तोत्र पूजा एवं पाठों का संग्रह है । बनारसीदास के कवित्त भी हैं । उसका एक उदाहरण
निम्न है:—

कपडा की रोस जाणै हैवर की होस जाणै ।

न्याय भी नवेरि जाणै राज रोस माणिवी ॥

राग ती छत्तीस जाणै लषिण बत्तीस जाणै ।

चूँप चतुराई जाणै महल में माणिवी ॥

बात जाणै संवाद जाणै खूवी खसबोई जाणै ।

सगपग साधि जाणै अर्थ को जाणिवी ।

कहत बनारसीदास एक जिन नांव विना ।

.... वृद्धो सव जाणिवी ॥

६०६६. गुटका सं० २१ । पत्र सं० १९४ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय संग्रह ।

ले० काल सं० १८६७ । अपूर्ण । वे० सं० १५३२ ।

विशेष—सामान्य स्तोत्र पाठ संग्रह है ।

६०६७. गुटका सं० २२ । पत्र सं० ४८ आ० १०×७ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—संग्रह ।

ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १५३३ ।

विशेष—स्तोत्र एवं पदों का संग्रह है ।

६०६८. गुटका सं० २३ । पत्र सं० १५-६२ । आ० ५×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं०

१८०८ । अपूर्ण । वे० सं० १५३४ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है:—भक्तामर भाषा, परमज्योति भाषा, आदिनाथ की वीनती, ब्रह्म जिनदास एवं कनककीर्ति के पद, निर्वाणकाण्ड गाथा, त्रिभुवन की वीनती तथा मेघकुमारचौपई ।

६०६९. गुटका सं० २४ । पत्र सं० २० । आ० ६×४ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल १८८० ।

अपूर्ण । वे० सं० १५३५ ।

विशेष—जैन नगर में प्रतिलिपि हुई थी ।

६०७०. गुटका सं० २५ । पत्र सं० २४ । आ० ५×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण ।

वे० सं० १५३६ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है:—विषापहार भाषा (अचलकीर्ति) भूगलचौवीसी भाषा, भक्तामर भाषा (हेमराज)

६०७१. गुटका सं० २६ । पत्र सं० ६० । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल सं०

१८७३ । अपूर्ण । वे० सं० १५३७ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०७२. गुटका सं० २७ । पत्र सं० १५-१२० । भाषा—संस्कृत । ले० काल १८९५ । अपूर्ण । वे०

सं० १५३८ ।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है ।

६०७३ गुटका सं० २८ । पत्र सं० १५० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७५३ । अपूर्ण ।

वे० सं० १५३९ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है । सं० १७५३ अषाढ़ सुदी ३ सु० मौ० नन्दपुर गंगाजी का तट । दुर्गादास चांदवाई की पुस्तक से मनरूप ने प्रतिलिपि की थी ।

६०७४. गुटका सं० २६ । पत्र सं० १६ । प्रा० ५×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । विषय-पूजा पाठ ।
ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० १५४० ,

विशेष—नित्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६०७५. गुटका सं० ३० । पत्र सं० १५५ । प्रा० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण ।
वे० सं० १५४१ ।

१. भविष्यदत्त चौपाई	ब्र० रायमल्ल	हिन्दी	१-७६
			२० सं० १६३३ कार्तिक सुदी १४ ।

विशेष—फतेराम बज ने जयपुर में सं० १८१२ अषाढ बुदी १० को प्रतिलिपि की थी ।

२. वीरजिणन्द की संघावली	पूनी	हिन्दी	७७-७६
			विशेष—मेघकुमार गीत है ।

३. अठारह नाते की कथा	लोहट	"	८०-८३
----------------------	------	---	-------

४. रविवार कथा	खुशालचन्द	"	२० काल सं० १७७५
---------------	-----------	---	-----------------

विशेष—लिखतं फतेराम ईसरदास बज बासी सांगानेर का ।

५. ज्ञानपञ्चीसी	बनारसीदास	"	
-----------------	-----------	---	--

६. चौबीसतीर्थकरों की बंदना	नेमीचन्द	"	६७
----------------------------	----------	---	----

७. फुटकर सेवया	X	"	११३
----------------	---	---	-----

८. पट्लेश्या वेलि	हर्षकीर्ति	"	२० काल सं० १६८३ ११६
-------------------	------------	---	---------------------

९. जिन स्तुति	जोधराज गोदीका	"	११८
---------------	---------------	---	-----

१०. प्रोत्यंकर चौपाई	मु० नेमीचन्द	"	११६-१३४
----------------------	--------------	---	---------

२० काल सं० १७७१ वैशाख सुदी ११

६०७६. गुटका सं० ३१ । पत्र सं० ४-२६५ । प्रा० ८३×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले०
काल X । अपूर्ण । वे० सं० १५४२ ।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है ।

६०७७. गुटका सं० ३२ । पत्र सं० ११६ । प्रा० ६×४३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X
पूर्ण वे० सं० १५४४ ।

विशेष—नित्य एवं भाद्रपद पूजा संग्रह है ।

६०७८. गुटका सं० ३३। पत्र सं० ३२४। आ० ५×४ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल सं० १७५६
 वैशाख सुदी ३। अपूर्ण। वे० सं० १५४५।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०७९. गुटका सं० ३५। पत्र सं० १३८। आ० ६×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण।
 वे० सं० १५४६।

विशेष—मुख्यतः नाटक समयसार की प्रति है।

६०८०. गुटका सं० ३६। पत्र सं० २४। आ० ५×५ इ०। भाषा-हिन्दी। विशेष-पद संग्रह। ले०
 काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५४७।

६०८१. गुटका सं० ३७। पत्र सं० १७०। आ० ६×४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×।
 पूर्ण। वे० सं० १५४६।

विशेष-नित्यपूजा पाठ संग्रह है।

६०८२. गुटका सं० ३८। पत्र सं० ६४। आ० ५×४ इ०। भाषा-हिन्दी संस्कृत। ले० काल १८४२
 पूर्ण। वे० सं० १५४८।

विशेष—मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है।

१. पदसंग्रह	मनराम एवं भूधरदास	हिन्दी
२. स्तुति	हरीसिंह	"
३. पार्वनाथ की गुणमाला	लोहट	"
४. पद- (दर्शन दीज्योजी नेमकुमार	मेलीराम	"
५. आरती	शुभचन्द	"

विशेष—अन्तिम-आरती करता आरति भाजै, शुभचन्द जान मगन मैं साजै ॥८।

६. पद- (मैं तो थारी आज महिमा जानी) मेली

"

७. शारदाष्टक बनारसीदास

"

ले० काल १८१०

विशेष—जयपुर में कानीदास के मकान में लालाराम ने प्रतिलिपि की थी।

८. पद- मोह नींद में छकि रहे हो लाल हरीसिंह

हिन्दी

९. " उठि तेरो मुख देखूं नाभि जू के नंदा टोडर

"

१०. चतुर्विंशतिस्तुति विनोदीलाल

"

११. विनती अजैराज

"

६०८३. गुटका सं० ३६ । पत्र सं० २-१५६ । आ० ५५५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । पूर्ण ।

वे० सं० १५५० । मुख्यतः निम्न पाठों का संग्रह है:—

श्र. आरती संग्रह	द्यानतराय	हिन्दी	(५ आरतियां है)
२. आरती-किह विधि आरती करी प्रभु तेरी	मानसिंह	"	
३. आरती-इहविधि आरती करों प्रभु तेरी	दीपचन्द	"	
४. आरती-करो आरती आतम देवा	विहारीदास	"	३
५. पद संग्रह	द्यानतराय	"	१७
६. पद-संसार अधिर भाई	मानसिंह	"	४०
७. पूजाष्टक	विनोदीलाल	"	५३
८. पद-संग्रह	भूधरदास	"	६७
९. पद-जाग पियारी अब क्या सोवै	कवीर	"	७७
१०. पद-क्या सोवै उठि जाग रे प्रभाती मन	समयसुन्दर	"	७७
११. सिद्धपूजाष्टक	दौलतराम	"	८०
१२. आरती सिद्धों की	दुशालचन्द	"	८१
१३. गुरुमष्टक	द्यानतराय	"	८३
१४. साधु की आरती	हेमराज	"	८५
१५. वारीणी अष्टक व जयमाल	द्यानतराय	"	"
१६. पार्श्वनाथाष्टक	मुनि सकलकीर्ति	"	"

अन्तिम—अष्ट विधि पूजा अर्घ उतारो सकलकीर्तिमुनि काज मुदा ॥

१७. नेमिनाथाष्टक	भूधरदास	हिन्दी	११७
१८. पूजासंग्रह	लालचन्द	"	१३८
१९. पद-उठ तेरो मुख देखूँ नाभिजो के नंदा	टोडर	"	१४५
२०. पद-देखो माई आज रिपभ घरि आवै	साहकीरत	"	"
२१. पद-संग्रह	शोभाचन्द शुभचन्द आनंद	"	१४६
२२. नृवरण मंगल	बंसा	"	१४७
२३. क्षेत्रपाल भैरवगीत	शोभाचन्द	"	१४९

२४. नृवण आरती थिरुपाल हिन्दी १५०
अन्तिम— केशवचन्द्रन करहिण्डु सेव, थिरुपाल भणै गिण चरण मेव ॥

२५. आरती सरस्वती ब्र० जिनदास ” १५३

६०८४. गुटका सं० ४० । पत्र सं० ७-६८ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८८४ ।

अपूर्णा । वे० सं० १५५१ ।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६०८५. गुटका सं० ४१ । पत्र सं० २२३ । आ० ८×४ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं० १७४२ । अपूर्णा । वे० सं० १५५२ ।

पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है । तथा समयसार नाटक भी है ।

६०८६. गुटका सं० ४२ । पत्र सं० १३६ । आ० ५×४ इ० । ले० काल १७२६ चैत सुदी १ । अपूर्णा । वे० सं० १५५३ ।

विशेष—मुख्य २ पाठ निम्न है:—

१. चतुर्विंशति स्तुति	×	प्राकृत	६
२. लब्धिविधान चौपई	भीषम कवि	हिन्दी	३०

२० काल सं० १६१७ फागुण सुदी १३ । ले० काल सं० १७३२ वैशाख बुदी ३ ।

विशेष—संवत् सोलसौ सतरौ, फागुण मास जबै ऊतरौ ।

उजलपापि तेरस तिथि जाणि, तादिन कथा चढी परवारि ॥१६६॥

बरतै निवाली मांहि विख्यात, जैन धर्म तसु गोधा जानि ।

वह कथा भीषम कवि कही, जिनपुराण मांहि जैसी लही ॥१६७॥

× × × × ×

कडा बन्ध चौपई जाणि, पूरा हुआ दोइसै प्रमारि ।

जिनवाणी का अन्त न जास, भवि जीव जे लहे सुखवास ॥

इति श्री लब्धिविधान चौपई संपूर्ण । लिखितं चोखा लिखायितं साह श्री भोगीदास पठनार्थं । सं०

१७३२ वैशाख बुदि ३ कृष्णपक्ष ।

३. जिनकुशल की स्तुति	साधुकीर्ति	हिन्दी
४. नेमिजी की लहरि	विश्वभूषण	”

५. नेमीश्वर राजुल की लहरि (बारहमासा) खेतसिंह साह		हिन्दी	
६. ज्ञानपंचमीवृहद् स्तवन	समयसुन्दर	"	
७. आदीश्वरगीत	रंगविजय	"	
८. कुशलगुरुस्तवन	जिनरंगसूरि	"	
९. "	समयसुन्दर	"	
१०. चौबीसीस्तवन	जयसागर	"	
११. जिनस्तवन	कनककीर्ति	"	
१२. भोगीदास को जन्म कुण्डली	×	"	जन्म सं० १६६७

६०८७. गुटका सं० ४३ । पत्र सं० २१ । आ० ५२×५३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १७३०
अपूर्ण । वे० सं० १५५४ ।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र तथा पद्मावतीस्तोत्र है । मलारना में प्रतिलिपि हुई थी ।

६०८८. गुटका सं० ४४ । पत्र सं० ४-७६ । आ० ७×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल× । अपूर्ण
वे० सं० १५५५ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं ।

१. श्वेताम्बर मत के ८४ बोल	जगरूप	हिन्दी	२० काल सं० १८११ ले० काल सं० १८६६ आसोज सुदी ३ ।
२. व्रतविधानरासो	दौलतराम पाटनी	हिन्दी	४० काल सं० १७६७ आसोज सुदी १०

६०८९. गुटका सं० ४५ । पत्र सं० ५-१०३ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं०
१८६६ । अपूर्ण । वे० सं० १५५६ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं ।

१. मुदामा की बारहखडी	×	हिन्दी	३२-३४
----------------------	---	--------	-------

विशेष—कुल २८ पद्य हैं ।

२. जन्मकुण्डली महाराजा सवाई जगतसिंहजी की	×	संस्कृत	१०३
--	---	---------	-----

विशेष—जन्म सं० १८४२ चैत बुदी ११ रत्री ७।३० घनेष्टा ५।२४ सिध योग जन्म नाम सदासुख ।

६०९०. गुटका सं० ४६ । पत्र सं० ३० । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल×
पूर्ण । वे० सं० १५५७ ।

विशेष—हिन्दी पद संग्रह है ।

६०६१. गुटका सं० ४७। पत्र सं० ३६। आ० ६×५२ इ०। भाषा संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५५८।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है।

६०६२. गुटका सं० ४८। पत्र सं० ६। आ० ६×५३ इ०। भाषा—संस्कृत। विषय—व्याकरण। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५५९।

विशेष—अनुभूतिस्वरूपाचार्य कृत सारस्वत प्रक्रिया है।

६०६३. गुटका सं० ४९। पत्र सं० ६५। आ० ६×५ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल सं० १५६० सावन बुदी १२। पूर्ण। वे० सं० १५६१।

विशेष—देवान्नह्य कृत विनती संग्रह तथा लोहट कृत अठारह नाते का चौदालिमा है।

६०६४. गुटका सं० ५०। पत्र सं० ७४। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५६४।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६५. गुटका सं० ५१। पत्र सं० १७०। आ० ५३×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० १५६३।

विशेष—निम्न मुख्य पाठ हैं।

१. कवित्त	कन्हैयालाल	हिन्दी	१०५-१०७
-----------	------------	--------	---------

विशेष—३ कवित्त हैं।

२. रावमाला के दोहे	जैतश्री	"	११३-११८
--------------------	---------	---	---------

३. बारहमासा	जसराज	" १२ दोहे हैं	११८-१२१
-------------	-------	---------------	---------

६०६६. गुटका सं० ५२। पत्र सं० १७८। आ० ६३×६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १५६६।

विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है।

६०६७. गुटका सं० ५३। पत्र सं० ३०४। आ० ६३×५ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १७८३ माह बुदी ४। पूर्ण। वे० सं० १५६७।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं।

१. अष्टालिङ्कारासो	विनयकीर्ति	हिन्दी	१५८
--------------------	------------	--------	-----

२. रोहिणी विधिकथा

बंसीदास

हिन्दी

१५६-६०

२० काल सं० १६६५ ज्येष्ठ सुदी २ ।

विशेष—

सोरह से पचानऊ ढई, ज्येष्ठ कृष्ण दुतिया भई
फातिहाबाद नगर मुखमात, अग्रवाल शिव जातिप्रधान ॥
मूलसिंह कीरति विख्यात, विशालकीर्ति गोयम सममान ।
ता शिष बंशीदास सुजान, माने जिनवर की आन ॥८६॥
अक्षर पद लुक तने जु हीन, पढौ बनाइ सदा परवीन ॥
क्षमौ शारदा पंडितराइ पढत सुनत उपजे धर्मी सुभाइ ॥८७॥

इति रोहिणीविधि कथा समाप्त ॥

१. सोलहकारणरासो	सकलकीर्ति	हिन्दी	१७२
२. रत्नत्रयका महार्घ व क्षमावणी	ब्रह्मसेन	संस्कृत	१७५-१८६
५. त्रिनती चौपड की	मान	हिन्दी	२४३-२४४
६. पार्वनाथजयमाल	लोहट	"	२५१

६०६८. गुटका सं० ५४ । पत्र सं० २२-३० । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल ५४
अपूर्णा । वे० सं० १५६८ ।

विशेष—हिन्दी पदों का संग्रह है ।

६०६९. गुटका सं० ५५ । पत्र सं० १०५ । आ० ६×५३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०
१८८४ । अपूर्णा । वे० सं० १५६९ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं—

१. अश्वत्थक्षणा	पं० नकुल	संस्कृत	अपूर्णा	१०-२६
-----------------	----------	---------	---------	-------

विशेष—श्लोकों के नीचे हिन्दी अर्थ भी है । अध्याय के अन्त में पृष्ठ १२ पर—

इति श्री महाराजि नकुल पंडित विरचिते अश्व सुभ विरचित प्रथमोऽध्यायः ॥

२. कुटकर दोहे

कवीर

हिन्दी

६१००. गुटका सं० ५६ । पत्र सं० १४ । आ० ७३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल ५ । पूर्णा ।
वे० सं० १५७० ।

विशेष—कोई उल्लेखनीय पाठ नहीं है ।

६१०१. गुटका सं० ५७ । पत्र सं० ७५ । आ० ६×४३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल० सं० १८४७
 जेठ सुदी ५ । पूर्ण । वे० सं० १५७१ ।
 विशेष—निम्न पाठ हैं—

१. वृन्दसतसई	वृन्द	हिन्दी	७१२ दोहे हैं ।
२. प्रश्नावलि कवित्त	वैद्य नंदलाल	"	
३. कवित्त चुगलखोर का	शिवलाल	"	

६१०२. गुटका सं० ५८ । पत्र सं० ८२ । आ० ५×५३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल X ।
 पूर्ण । वे० सं० १५७२ ।
 विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६१०३. गुटका सं० ५९ । पत्र सं० ९-९९ । आ० ७×४३ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल X
 अपूर्ण । वे० सं० १५७३ ।
 विशेष—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६१०४. गुटका सं० ६० । पत्र सं० १८० । आ० ७×५३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल X ।
 अपूर्ण । वे० सं० १५७४ ।
 विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१. लघुतत्त्वार्थसूत्र	X	संस्कृत	
२. आराधना प्रतिबोधसार	X	हिन्दी	५५ पद्य हैं

६१०५. गुटका सं० ६१ । पत्र सं० ९७ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०
 १८१४ भादवा चुदी ६ । पूर्ण । वे० सं० १५७५ ।
 विशेष—मुख्य पाठ निम्न प्रकार हैं ।

१. बारहखंडी	X	हिन्दी	३६
२. विनती-पार्श्व जिनेश्वर बंदिये रे साहित्य मुक्ति तणूँ दातार रे	कुशलविजय	"	४०
३. पद-किये आराधना तेरी हिये आनन्द व्यापत है	नवलराम	"	"
४. पद-हेली देहली कित जाय छै नेम कंवार	टीलाराम	"	"

५. पद—नेमकंवार रो वाटडी हो राणी राजुल जोवं खडी हो खडी	खुशालचंद	हिन्दी		४१
६. पद—पल नहीं लगदी माय में पल नहीं लगदी पीया मो मन भावें नेम पिया	बखतराम	"		४३
७. पद—जिनजी को दरसण नित करां हो सुमति सहेल्यो	रूपचन्द	"		"
८. पद—तुम नेम का भजन कर जिससे तेरा भला हो	बखतराम	"		४४
९. विनती	मजैराज	"		४८
१०. हमीररासो	×	हिन्दी	अपूर्णा	४९
११. पद—भोग दुखदाई तजभवि	जगताराम	"		५०
१२. पद	नवलराम	हिन्दी		५१
१३. " (मङ्गल प्रभाती)	विनोदीलाल	"		५२
१४. रेखाचित्र	आदिनाथ, चन्द्रप्रभ, वर्द्धमान एवं पार्वनाथ	"		५७-५८
१५. वसंतपूजा	मजैराज	"		५९-६१

बिषय—अन्तिम पद्य निम्न प्रकार हैं :—

मांवेरि सहर सुहावणू रति बसंत कूं पाय ।

मजैराज करि जोरि कै गावे हो मन वष काय ॥

६१०६. गुटका सं० ६२ । पत्र सं० १२० । आ० ६×५ $\frac{३}{४}$ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९३८ पूर्ण । वे० सं० १५७६ ।

बिषय—सामान्य पाठों का संग्रह है ।

६१०७. गुटका सं० ६३ । पत्र सं० १७ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५८१ ।

बिषय—देवान्नह्य कृत पद एवं भूधरदास कृत गुरुओं की स्तुति है ।

६१०८. गुटका सं० ६४ । पत्र सं० ४० । आ० ८ $\frac{१}{४}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८९७ । अपूर्ण । वे० सं० १५८० ।

६१०६ गुटका सं० ६५ । पत्र सं० १७३ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण
वे० सं० १५८१ ।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र संग्रह है ।

६११०. गुटका सं० ६६ । पत्र सं० ३२ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० १५८२ ।

विशेष—पंचमेरू पूजा, अष्टाह्निका पूजा तथा सोलहकारण एवं दशलक्षण पूजाएं हैं ।

६१११. गुटका सं० ६७ । पत्र सं० १८५ । आ० ८३×७ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल
सं० १७४३ । पूर्ण । वे० सं० १५८६ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६११२. गुटका सं० ६८ । पत्र सं० ११५ । आ० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।
वे० सं० १५८८ ।

विशेष—पूजा पाठों का संग्रह है ।

६११३. गुटका सं० ६९ । पत्र सं० १५१ । आ० ४३×४ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण
वे० सं० १५८८ ।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है ।

६११४. गुटका सं० ७० । पत्र सं० १७-५० । आ० ७३×५ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × ।
पूर्ण । वे० सं० १५८९ ।

विशेष—नित्य पूजा पाठों का संग्रह है ।

६११५. गुटका सं० ७१ । पत्र सं० १८ । आ० ५×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।
पूर्ण । वे० सं० १५९० ।

विशेष—चौबीस ठाणा चर्चा है ।

६११६. गुटका सं० ७२ । पत्र सं० ३८ । आ० ४३×३ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल ×
पूर्ण । वे० सं० १५९१ ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह एवं श्रीगाल स्तुति आदि है ।

६११७. गुटका सं० ७३ । पत्र सं० ३-५० । आ० ६३×५ इ० । भाषा—संस्कृत हिन्दी । ले० काल
। अपूर्ण । वे० सं० १५९५ ।

६११८. गुटका सं० ७४ । पत्र सं० ६ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।
वे० सं० १५६६ ।

विशेष—मनोहर एवं पूनो कवि के पद हैं ।

६११९. गुटका सं० ७५ । पत्र सं० १० । आ० ६×५३ इ० भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।
वे० सं० १५६८ ।

विशेष—पाषाणकेवली भाषा एवं बाईस परीषद् वर्णन है ।

६१२०. गुटका सं० ७६ । पत्र सं० २६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-सिद्धान्त ।
जे० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १५६६ ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थसूत्र है ।

६१२१. गुटका सं० ७७ । पत्र सं० ६-४२ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।
वे० सं० १६०० ।

विशेष—सम्यक् दृष्टि की भावना का वर्णन है ।

६१२२. गुटका सं० ७८ । पत्र सं० ७-२१ । आ० ६×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० १६०१ ।

विशेष—उमास्वामि कृत तत्त्वार्थ सूत्र है ।

६१२३. गुटका सं० ७९ । पत्र सं० ३० । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० १६०२ । सामान्य पूजा पाठ हैं ।

६१२४. गुटका सं० ८० । पत्र सं० ३४ । आ० ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० १६०५ ।

विशेष—देवान्नह्य, भूधरदास, जगराम एवं बुधजन के पदों का संग्रह है ।

६१२५. गुटका सं० ८१ । पत्र सं० २-२० । आ० ४×३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-विनती संग्रह ।
ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०६ ।

६१२६. गुटका सं० ८२ । पत्र सं० २८ । आ० ४×३ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा स्तोत्र । ले०
काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६०७ ।

६१२७. गुटका सं० ८३ । पत्र सं० २-२० । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल ×
अपूर्ण । वे० सं० १६०९ ।

विशेष—सहस्रनाम स्तोत्र एवं पदों का संग्रह है ।

६१२८. गुटका सं० ८५ । पत्र सं० १५ । आ० ८३×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० १६११ ।

विशेष— देवात्रह्य कृत पदों का संग्रह है ।

६१२९. गुटका सं० ८६ । पत्र सं० ४० । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १७२३ ।

पूर्ण । वे० सं० १६५६ ।

विशेष—उदयराम एवं बख्तराम के पद तथा मेजीराम कृत कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा है ।

६१३०. गुटका सं० ८७ । पत्र सं० ७०-१२८ । आ० ६×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १८६४

अपूर्ण । वे० सं० १६५७ ।

विशेष—पूजाओं का संग्रह है ।

६१३१. गुटका सं० ८८ । पत्र सं० २८ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । अपूर्ण

वे० सं० १६५८ ।

विशेष—नित्य नैमित्तिक पूजा पाठों का संग्रह है ।

६१३२. गुटका सं० ८९ । पत्र सं० १६ । आ० ७×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सं० १६५९ ।

विशेष—भगवानदास कृत आचार्य शान्तिसागर की पूजा है ।

६१३३. गुटका सं० ९० । पत्र सं० २६ । आ० ९३×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल १९१८ ।

पूर्ण । वे० सं० १६६० ।

विशेष—स्वरूपचन्द कृत सिद्ध क्षेत्रों की पूजाओं का संग्रह है ।

६१३४. गुटका सं० ९१ । पत्र सं० ७२ । आ० ९३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १९१४

पूर्ण । वे० सं० १६६१ ।

विशेष—प्रारम्भ के १९ पत्रों पर १ से ५० तक पहाड़े हैं जिनके ऊपर नीति तथा शृङ्गार रस के ४७ दोहे हैं । गिरधर के कवित्त तथा शनिश्चर देव की कथा आदि हैं ।

६१३५. गुटका सं० ९२ । पत्र सं० २० । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।

वे० सं० १६६२ ।

विशेष—कौतुक रत्नमंजूषा (मंत्र तंत्र) तथा ज्योतिष सम्बन्धी साहित्य है ।

६१३६. गुटका सं० ९३ । पत्र सं० ३७ । आ० ५×४ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।

वे० सं० १६६३ ।

विशेष—संघीजी श्रीदेवजी के पठनार्थ लिखा गया था। स्तोत्रों का संग्रह है।

६१३७. गुटका सं० ६४। पत्र सं० ८-४१। आ० ६×५ इ०। भाषा-गुजराती। ले० काल ×।
अपूर्ण। वे० सं० १६६४।

विशेष—वल्लभकृत रुक्मिणी विवाह वर्णन है।

६१३८. गुटका सं० ६५। पत्र सं० ४२। आ० ४×३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।
पूर्ण। वे० सं० १६६७।

विशेष—तत्त्वार्थसूत्र एवं पद (चारुं रथ की बजत बधाई जी सब जनमन भ्रानन्द दाई) है। चारों
रथों का मेला सं० १६१७ फागुण बुदी १२ को जयपुर हुआ था।

६१३९. गुटका सं० ६६। पत्र सं० ७६। आ० ८×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।
पूर्ण। वे० सं० १६६८।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है।

६१४०. गुटका सं० ६७। पत्र सं० ९०। आ० ६३×४३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।
पूर्ण। वे० सं० १६६९।

विशेष—पूजा एवं स्तोत्र संग्रह है।

६१४१. गुटका सं० ६८। पत्र सं० ५८। आ० ७×७ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×। अपूर्ण।
वे० सं० १६७०।

विशेष—सुभाषित दोहे तथा सवैये, लक्षण तथा नीतिग्रन्थ एवं शनिश्चरदेव की कथा है।

६१४२. गुटका सं० ६९। पत्र सं० २-१२। आ० ६×५ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले० काल ×।
अपूर्ण। वे० सं० १६७१।

विशेष—मन्त्र यन्त्रविधि, आयुर्वेदिक नुसखे, खण्डेलवालों के ८४ गोत्र, तथा दि० जैनों की ७२ जातियां
जिसमें से ३२ के नाम दिये हैं तथा चाणक्य नीति आदि है। गुमानोराम की पुस्तक से चाकसू में सं० १७२७ में लिखा
गया।

६१४३. गुटका सं० १००। पत्र सं० ५४। आ० ६×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×।
अपूर्ण। वे० सं० १६७२।

विशेष—बनारसीदास कृत समयसार नाटक है। ५४ से आगे पत्र खाली हैं।

६१४४. गुटका सं० १०१। पत्र सं० ८-२५। आ० ६×४३ इ०। भाषा-संस्कृत हिन्दी। ले०
काल सं० १८५२। अपूर्ण। वे० सं० १६७३।

विशेष—स्तोत्र संस्कृत एवं हिन्दी पाठ हैं।

६१४५. गुटका सं० १०२ । पत्र सं० ३३ । आ० ७×७ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । ले० काल ।
अपूर्ण । वे० सं० १६७४ ।

विशेष—बारहखडी (सूरत), नरक दोहा (भूधर), तत्त्वार्थसूत्र (उमास्वामि) तथा फुटकर सदीया हैं ।

६१४६. गुटका सं० १०३ । पत्र सं० १६ । आ० ५×४ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।
वे० सं० १६७५ ।

विशेष—विषावहार, निर्वाणकाण्ड तथा भक्तामरस्तोत्र एवं परीपह वर्णन है ।

६१४७. गुटका सं० १०४ । पत्र सं० ३८ । आ० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण ।
वे० सं० १६७६ ।

विशेष—पञ्चपरमेष्ठीगुण, बारहभावना, बाईस परिषद्, सोलहकारण भावना आदि हैं ।

६१४८. गुटका सं० १०५ । पत्र सं० ११-४७ । आ० ६×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० १६७७ ।

विशेष—स्वरोदय के पाठ है ।

६१४९. गुटका सं० १०६ । पत्र सं० ३६ । आ० ७×३ इ० । भाषा—संस्कृत । ले० काल × । पूर्ण ।
वे० सं० १६७८ ।

विशेष—बारह भावना, पंचमगल तथा दशलक्षण पूजा हैं ।

६१५०. गुटका सं० १०७ । पत्र सं० ८ । आ० ७×५ । भाषा—हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे०
सं० १६७९ ।

विशेष—सम्पेदशिखरमहात्म्य, निर्वाणकांड (सेना) फुटकर पद एवं नेमिनाथ के दश भव हैं ।

६१५१. गुटका सं० १०८ । पत्र सं० २-४ । आ० ७×५ इ० । भाषा—हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० १६८० ।

विशेष—देवाब्रह्म कृत कलियुग की वीनती है ।

६१५२. गुटका सं० १०९ । पत्र सं० ६६ । आ० ६×६ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । ले०
काल × । अपूर्ण । वे० सं० १६८१ ।

विशेष—१ से ४ तथा ३४ से ५२ पत्र नहीं हैं । निम्न पाठ हैं:—

१. हरजी के दोहा × हिन्दी ।

विशेष—७६ से २१४, ४४७ से ५५१ दोहे तक हैं आगे नहीं है ।

हरजी रसना सो कहै, ऐसो रस न ओर ।

तिसना तु पीवत नहीं, फिर पीहे किहि ठौर ॥ १६३ ॥

हरजी हरजी जो कहै रसना बारंवार ।

पिस तजि मन हूं क्यों न ह्वै जमन नाहि तिहि बार ॥ १६४ ॥

२. पुढर-स्त्री संवाद	रामचन्द्र	हिन्दी	१२ पद्य हैं ।
३. फुटकर कवित्त (शृंगार रस)	×	”	४ कवित्त है ।
४. दिल्ली राज्य का ब्यौरा	×	”	

विशेष—चौहान राज्य तक वर्णन दिया है ।

५. आधाशीसी के मंत्र व यन्त्र हैं ।

६१५३. गुटका सं० ११० । पत्र सं० ६५ । आ० ७×४ इ० । भाषा—हिन्दी संस्कृत । विषय—संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८२ ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड, भक्तामरस्तोत्र, तत्त्वार्थसूत्र, एकीभावस्तोत्र आदि पाठ हैं ।

६. ५४. गुटका सं० १११ । पत्र सं० ३८ । आ० ६×४ इ० । भाषा हिन्दी । विषय—संग्रह । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८३ ।

विशेष—निर्वाणकाण्ड-सेवग पद संग्रह-भूधरदास, जोधा, मनोहर, सेवग, पद-महेन्द्रकीर्ति (ऐसा देव जिनंद है सेवो भवि प्राणी) तथा चौरासी गोत्रोत्पत्ति वर्णन आदि पाठ हैं ।

६१५५. गुटका सं० ११२ । पत्र सं० ६१ । आ० ५×६ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १६८४ ।

विशेष—जैनेतर स्तोत्रों का संग्रह है । गुटका पेमसिंह भाटी का लिखा हुआ है ।

६१५६. गुटका सं० ११३ । पत्र सं० १३६ । आ० ६×४ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—संग्रह । ले० काल × । १८८३ । पूर्ण । वे० सं० १६८५ ।

विशेष—२० का १०००० का, १५ का २० का यंत्र, दोहे, पाशा केवली, भक्तामरस्तोत्र, पद संग्रह तथा राजस्थानी में शृंगार के दोहे हैं ।

६१५७. गुटका सं० ११४ । पत्र सं० १२३ । आ० ७×६ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—अश्व परीक्षा । ले० काल × । १८०४ अष्टादश वृत्ति ६ । पूर्ण । वे० सं० १६८६ ।

विशेष—पुस्तक ठाकुर हमीरसिंह गिलवाडी वालों की है खुशालचन्द्र ने पात्रटा में प्रतिलिपि की थी । गुटका सजिन्द है ।

६१५८. गुटका सं० ११५ । पत्र सं० ३२ । आ० ६१×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० ११५ ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे हैं ।

६१५९. गुटका सं० ११६ । पत्र सं० ७७ । आ० ८×६ इ० । भाषा हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण ।
वे० सं० १७०२ ।

विशेष—गुटका सजित्द है । खण्डेलवालों के ८४ गोत्र, विभिन्न कवियों के पद, तथा दीवारा अभयचन्द्रजी के पुत्र आनन्दीलाल की सं० १६१६ की जन्म पत्री तथा आयुर्वेदिक नुसखे हैं ।

६१६०. गुटका सं० ११७ । पत्र सं० ६१ । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० १७०३ ।

विशेष—नित्य नियम पूजा संग्रह है ।

६१६१. गुटका सं० ११८ । पत्र सं० ७६ । आ० ८×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० १७०५ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं स्तोत्र संग्रह है ।

६१६२. गुटका सं० ११९ । पत्र सं० २४० । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८४१
अपूर्ण । वे० सं० १७११ ।

विशेष—भागवत, गीता हिन्दी पद्य टीका तथा नासिकेतोपाख्यान हिन्दी पद्य में हैं दोनों ही अपूर्ण है ।

६१६३. गुटका सं० १२० । पत्र सं० ३२-१२८ । आ० ४×४ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० १७१२ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है —

१. नवपदपूजा	देवचन्द्र	हिन्दी	अपूर्ण	३२-४३
२. अष्टप्रकारीपूजा	”	”		४४-५०

विशेष—पूजा का क्रम श्वेताम्बर मान्यतानुसार निम्न प्रकार है—जल, चन्दन, दुष्प, धूप, दीप, अक्षत,
नैवेद्य, फल इनकी प्रत्येक की अलग अलग पूजा है ।

३. सत्तरभेदी पूजा	साधुकीर्ति	”	२० सं० १६७८	५०-६५
४. पदसंग्रह	×	”		

६१६४. गुटका सं० १२१ । पत्र सं० ६-१२२ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल
× । अपूर्ण । वे० सं० १७१३ ।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न प्रकार है —

१. गुरुजयमाला	ब्रह्म जिनदास	हिन्दी	१३
२. नन्दीश्वरपूजा	मुनि सकलकीर्ति	संस्कृत	३८
३. सरस्वतीस्तुति	आशाधर	”	५२
४. देवशास्त्रगुरुपूजा	”	”	६८
५. गणधरवल्लयपूजा	”	”	१०७-११२
६. आरती पंचपरमेष्ठी	पं० चिमना	हिन्दी	११४

ग्रन्थ में लेखक प्रशस्ति दी है। भट्टारकों का विवरण है। सरस्वती गच्छ बलात्कार गण मूल संघ के विशाल कीर्ति देव के पट्ट में भट्टारक शांतिकीर्ति ने नागपुर (नागौर) नगर में पार्श्वनाथ चैत्यालय में प्रतिलिपि की थी।

६१६५. गुटका सं० १२२। पत्र सं० २८-१२६। आ० ५ $\frac{३}{४}$ ×५ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी।

ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७१४।

विशेष—पूजा स्तोत्र संग्रह है।

६१६६. गुटका सं० १२३। पत्र सं० ६-४६। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×।

अपूर्ण। वे० सं० १७१५।

विशेष—विभिन्न कवियों ने हिन्दी पदों का संग्रह है।

६१६७। गुटका सं० १२४। पत्र सं० २५-७०। आ० ४×५ $\frac{३}{४}$ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×।

अपूर्ण। वे० सं० १७१६।

विशेष—विनती संग्रह है।

६१६८ गुटका सं० १२५। पत्र सं० २-४५। भाषा—संस्कृत। ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० १७१७।

विशेष—स्तोत्र संग्रह है।

६१६९. गुटका सं० १२६। पत्र सं० ३६-१८२। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल ×।

अपूर्ण। वे० सं० १७१८।

विशेष—भूधरदास कृत पार्श्वनाथ पुराण है।

६१७०. गुटका सं० १२७। पत्र सं० ३६-२४६। आ० ८×४ $\frac{३}{४}$ इ०। भाषा—गुजराती। लिपि—

हिन्दी। विषय—कथा। २० काल सं० १७८३। ले० काल सं० १६०५। अपूर्ण। वे० सं० १७१९।

विशेष—मोहन विजय कृत चन्दना चरित्र है।

६१७१. गुटका सं० १२८ । पत्र सं० ३१-६२ । आ० ५×४ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल
× । अपूर्ण । वे० सं० १७२० ।

विशेष—पूजा पाठ संग्रह है ।

६१७२. गुटका सं० १२९ । पत्र सं० १२ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काच × । अपूर्ण
वे० सं० १७२१ ।

विशेष—भक्तामर भाषा एवं चौबीसी स्तवन आदि है ।

६१७३. गुटका सं० १३० । पत्र सं० ५-१६ । आ० ६×४ इ० । भाषा-हिन्दी पद । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० १७२२ ।

रसकौतुकराजसभारंजन ३२ से १०० तक पद्य हैं ।

अन्तिम— कंता प्रेम समुद्र है गाहक चतुर सुजान ।

राजसभा रंजन यहै, मन हित प्रीति निदान ॥१॥

इति श्रीरसकौतुकराजसभारंजन समस्या प्रबन्ध प्रथम भाग संपूर्ण ।

६१७४. गुटका सं० १३१ । पत्र सं० ६-४१ । आ० ६×५ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १८६१
अपूर्ण । वे० सं० १७२३ ।

विशेष—भवानी सहस्रनाम एवं कवच है ।

६१७५. गुटका सं० १३२ । पत्र सं० ३-१६० । आ० १०×६ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं०
१७८७ । अपूर्ण । वे० सं० १७२४ ।

विशेष—हनुमन्त कथा (ब्र० राममञ्ज) घंटाकरण मंत्र, विनती, वशावलि, (भगवान महावीर से लेकर
सं० १८२२ सुरेन्द्रकीर्ति भट्टारक तक) आदि पाठ हैं ।

६१७६. गुटका सं० १३३ । पत्र सं० ५२ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण
वे० सं० १७१५ ।

विशेष—समयसार नाटक एवं सिन्दूर प्रकरण दोनों के ही अपूर्ण पाठ है ।

६१७७. गुटका सं० १३४ । पत्र सं० १६ । आ० ६×५ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण
वे० सं० १७२६ ।

विशेष—सामान्य पाठ संग्रह है ।

६१७८. गुटका सं० १३५ । पत्र सं० ४६ । आ० ७×५ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल सं०
१८१८ । अपूर्ण । वे० सं० १७२८ ।

१. पद- राखो हो वृजराज लाज मेरो	सूरदास	हिन्दी
२. ,, माहडो विसरि गई लोह कोउ काह्लन	मलूकदास	,,
३. पद-राजा एक पंडित पोली तुहारो	सूरदास	हिन्दी
४. पद-मेरो मुखनीको अक तेरो मुख थारी ०	चंद	,,
५. पद-अब मैं हरिरस चाखा लागी भक्ति खुमारी०	कबीर	,,
६. पद-बादि गये दिन साहिब बिना सतगुरु चरण सनेह बिना	,,	,,
७. पद-आ दिन मन पंछी उडि जो है	,,	,,

फुटकर मंत्र, श्लोकादि के नुसखे आदि हैं ।

६१७६. गुटका सं० १३६ । पत्र सं० ५-१६ । आ० ७×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल १७८४ । अपूर्ण । वे० सं० १७५५ ।

विशेष—बस्तराम, देवाब्रह्म, चैनमुख आदि के पदों का संग्रह है । १० पत्र से आगे खाली हैं ।

६१८०. गुटका सं० १३७ । पत्र सं० ८८ । आ० ६१×५ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० १७५६ ।

विशेष—बनारसोद्विलास के कुछ पाठ एवं दिलाराम, दौलतराम, जिनदास, सेवग, हरीसिंह, हरषचन्द, लालचन्द, गरीबदास, भूधर एवं किसनगुलाब के पदों का संग्रह है ।

६१८१. गुटका सं० १३८ । पत्र सं० १२१ । आ० ६३×५ इ० । वे० सं० २०४३ ।

विशेष—मुख्य पाठ निम्न हैं:—

१. बीस विरहमान पूजा	नरेन्द्रकोत्ति	हिन्दी संस्कृत
२. नेमिनाथ पूजा	कुवलयचन्द	संस्कृत
३. क्षीरोदानी पूजा	अभयचन्द	,,
४. हेमकारी	विश्वभूषण	हिन्दी
५. क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकीर्ति	,,
६. शिखर विलास भाषा	धनराज	,, २० काल सं० १८४८

६१८२. गुटका सं० १३९ । पत्र सं० ३-४६ । आ० १०३×७ इ० । भाषा-हिन्दी ५० । ले० काल सं० १९५५ । अपूर्ण वे० सं० २०४० ।

विशेष—जातकाभरण ज्योतिष का ग्रन्थ है इसका दूसरा नाम जातकालंकार भी है । भेरूलाल जोशी ने प्रतिलिपि की थी ।

६१८३. गुटका सं० १४० । पत्र सं० ४-४३ । आ० १०३×७ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १६०६ द्वि० भादवा बुदी २ । अपूर्ण । वे० सं० २०४५ ।

विशेष—अमृतचन्द सूरि कृत समयसार वृत्ति है ।

६१८४. गुटका सं० १४१ । पत्र सं० ३-१०६ । आ० १०३×६३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल सं० १८५३ अषाढ बुदी ६ । अपूर्ण । वे० सं० २०४६ ।

विशेष—नयनमुख कृत बैद्यमनोत्सव (२० सं० १६४६) तथा बनारसीविलास आदि के पाठ हैं ।

६१८५. गुटका सं० १४२ । पत्र सं० ८-६३ । भाषा-हिन्दी । ले० काल . × । अपूर्ण । वे० सं० २०४७ ।

विशेष—द्यानतराय कृत चर्चाशतक हिन्दी टक्का टीका सहित है ।

६१८६. गुटका सं० १४३ । पत्र सं० १६-१७१ । आ० ७३×६३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल सं० १६१५ । अपूर्ण । वे० सं० २०४८ ।

विशेष—पूजा स्तोत्र आदि पाठों का संग्रह है ।

संवत् १६१५ वर्षे क्वार सुदी ५ दिने श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारणो श्रीआदिनाथचंत्यालयेनु-
गामी शुभस्थाने भ० श्रीसकलकीर्ति, भ० भुवनकीर्ति, भ० ज्ञानभूषण, भ० विजयकीर्ति, भ० शुभचन्द्र, आ० गुरुपदेशात्
आ० श्रीरत्नकीर्ति आ० यशःकीर्ति गुणचन्द्र ।

६१८७. गुटका सं० १४४ । पत्र सं० ४६ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-कथा । ले० काल सं० १६२० । पूर्ण । वे० सं० २०४९ ।

विशेष—निम्न पाठों का संग्रह है ।

१. मुक्तावलिकथा	भारमल्ल	हिन्दी	२० काल सं० १७८८
२. रोहिणीव्रतकथा	×	"	
३. पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	ललितकीर्ति	"	
४. दशलक्षणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	"	
५. अष्टाह्निकाकथा	विनयकीर्ति	"	
६. सङ्कटचौषधव्रतकथा	देवेन्द्रभूषण [भ० विश्वभूषण के शिष्य]	"	
७. आकाशपञ्चमीकथा	पांडे हरिकृष्ण	"	२० काल सं० १७०६
८. निर्दोषसप्तमीकथा	"	"	" " १७७१

६. निशत्याष्टमीकथा	पाण्डे हरिकृष्ण	हिन्दी
१०. सुगन्धीदशमीकथा	हेमराज	"
११. अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	पांडे हरिकृष्ण	"
१२. बारहसौ चौतीसव्रतकथा	जिनेन्द्रभूषण	"

६१८८. गुटका सं० १४५। पत्र सं० २१६। आ० ६×६ $\frac{१}{२}$ इ०। ले० काल ×। पूर्ण। वे० सं० २०५०।

विशेष—गुटके के मुख्य पाठ निम्न हैं।

१. विरुदावली (पट्टावलि)	×	संस्कृत	७
२. सोलहकारणपूजा	ब्र० जिनदास	"	६१
३. दशलक्षण जयमाल	मुमतिसागर [अभयनन्दि के शिष्य]	हिन्दी	८०
४. दशलक्षण जयमाल	सोमसेन	संस्कृत	६०
५. मेरूपूजा	"	"	
६. चौरासी न्यातिमाला	ब्र० जिनदास	हिन्दी	१४७

विशेष—इन्हीं की एक चौरासी जातिमाला और है।

७. आदिनाथपूजा	ब्र० शांतिदास	"	१५०
८. अनन्तनाथपूजा	"	"	१६६
९. सप्तऋषिपूजा	भ० देवेन्द्रकीर्ति	संस्कृत	१७६
१०. ज्येष्ठजिनवरमोटा	श्रुतसागर	"	१७८
११. ज्येष्ठजिनवर लाहान	ब्र० जिनदास	संस्कृत	१७८
१२. पञ्चक्षेत्रपालपूजा	सोमसेन	हिन्दी	१६१
१३. शीतलनाथपूजा	धर्मभूषण	"	२१०
१४. व्रतजयमाला	मुमतिसागर	हिन्दी	२१३
१५. आदित्यवारकथा	पं० गङ्गादास [धर्मचन्द का शिष्य]	"	२१६

६१८९. गुटका सं० १४६। पत्र सं० ११-८८। आ० ८ $\frac{१}{२}$ ×४ $\frac{१}{२}$ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल सं० १७०१। अपूर्ण। वे० सं० २०५१।

विशेष—बनारस-विलास एवं नाममाला आदि के पाठों का संग्रह है।

६१६० गुटका सं० १४७ । पत्र सं० ३०-६३ आ० ४×४^३ इ० । भाषा-संस्कृत । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० २१८६ ।

विशेष—स्तोत्रों का संग्रह है ।

६१६१. गुटका सं० १४८ । पत्र सं० ३५ । आ० ८×१० इ० । ले० काल सं० १८४३ । पूर्ण । वे० सं० २१८७ ।

१. पञ्चकल्याणक हरिचन्द्र हिन्दी १-२०
२० काल सं० १८३३ ज्येष्ठ सुदी ७

२. त्रैलोक्यान्नतोद्यायन देवेन्द्रकीर्ति संस्कृत

विशेष—नीमैडा में चन्द्रप्रभ चैत्यालय में प्रतिलिपि हुई थी ।

३. पट्टावलि × हिन्दी ३५

६१६२. गुटका सं० १४९ । पत्र सं० २१ । आ० ६×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-इतिहास । ले० काल सं० १८२९ ज्येष्ठ सुदी १५ । पूर्ण । वे० सं० २१९१ ।

विशेष—गिरनार यात्रा का वर्णन है । चांदनगांव के महावीर का भी उल्लेख है ।

६१६३. गुटका सं० १५० । पत्र सं० ५४६ । आ० ८×६ इ० । भाषा-हिन्दी संस्कृत । ले० काल १७१७ । पूर्ण । वे० सं० २१९२ ।

विशेष—पूजा पाठ एवं दिल्ली की बादशाहत का व्योरा है ।

६१६४ गुटका सं० १५१ । पत्र सं० ६२ । आ० ९×६ इ० । भाषा-प्राकृत-हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० २१९५ ।

विशेष—मार्गणा चौबीस ठाणा चर्चा तथा भक्तामरस्तोत्र आदि हैं ।

६१६५ गुटका सं० १५२ । पत्र सं० ४० । आ० ७^३×५^३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल ×
अपूर्ण । वे० सं० २१९६ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६१६६. गुटका सं० १५३ । पत्र सं० २७-२२१ । आ० ६^३×६ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० २१९७ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६१६७. गुटका सं० १५४ । पत्र सं० २७-१४७ । आ० ८×७ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल × ।
अपूर्ण । वे० सं० २१९८ ।

विशेष—सामान्य पूजा पाठ संग्रह है ।

६१६८. गुटका सं० १५४ क। पत्र सं० ३२। भाषा—संस्कृत। विषय—पूजा। ले० काल X। अपूर्ण।
वे० सं० २१६६।

विशेष—समवशरण पूजा है।

६१६९. गुटका सं० १५५। पत्र सं० ५७-१५२। आ० ७३×६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X।
अपूर्ण। वे० सं० २२००।

विशेष—नासिकेत पुराण हिन्दी गद्य तथा गोरख संवाद हिन्दी पद्य में है।

६२००. गुटका सं० १५६। पत्र सं० १८-३६। आ० ७३×६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X।
अपूर्ण। वे० सं० २२०१।

विशेष—पूजा पाठ स्तोत्र आदि हैं।

६२०१. गुटका सं० १५७। पत्र सं० १०। आ० ७३×६ इ०। भाषा—हिन्दी। विषय—आयुर्वेद। ले०
काल X। अपूर्ण। वे० सं० २२०२।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे हैं।

६२०२. गुटका सं० १५८। पत्र सं० २-३०। आ० ७×५ इ०। भाषा—संस्कृत हिन्दी। ले० काल
सं० १८२७। अपूर्ण। वे० सं० २२०३।

विशेष—मंत्रों एवं स्तोत्रों का संग्रह है।

६२०३. गुटका सं० १५९। पत्र सं० ६३। आ० ७३×६ इ०। भाषा—हिन्दी। ले० काल X। पूर्ण
वे० सं० २२०४।

विशेष—कछुवाहा वंश के राजाओं की वंशावली, १०० राजाओं के नाम दिये हैं। सं० १७५६ तक
वंशावली है। पत्र ७ पर राजा पृथ्वीसिंह का गद्दी पर सं० १८२४ में बैठना लिखा है।

२. दिल्ली नगर की बसापत तथा बादशाहत का व्यौरा है किस बादशाह ने कितने वर्ष, महीने, दिन तथा
घड़ी राज्य किया इसका वृत्तान्त है।

३. बारहमासा, प्राणीडा गीत, जिनवर स्तुति, शृङ्गार के सबैया आदि है।

६२०४. गुटका सं० १६०। पत्र सं० ५६। आ० ६×४ इ०। भाषा—हिन्दी संस्कृत। ले० काल X
अपूर्ण। वे० सं० २२०५।

विशेष—बनारसी विलास के कुछ पाठ तथा भक्तामर स्तोत्र आदि पाठ हैं।

६२०५. गुटका सं० १६१। पत्र सं० ३५। आ० ७×६ इ०। भाषा-प्राकृत हिन्दी। ले० काल ×।
अपूर्ण। वे० सं० २२०६।

विशेष—श्रावक प्रतिक्रमण हिन्दी अर्थ सहित है। हिन्दी पर गुजराती का प्रभाव है।

१ से ५ तक की गिनती के यंत्र हैं। इसके बीस यंत्र हैं १ से ६ तक की गिनती के ३६ खानों का यंत्र हैं। इसके १२० पंत्र हैं।

६२०६. गुटका सं० १६२। पत्र सं० १६-४६। आ० ६३×७३ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद।
ले० काल सं० १६५५। अपूर्ण। वे० सं० २२०८।

विशेष—सेवग, जगताराम, नवल, बलदेव, माराक, धनराज, बनारसीदास, खुशालचन्द, बुधजन, न्यामत
आदि कवियों के विभिन्न राग रागिनियों में पद हैं।

६२०७. गुटका सं० १६३। पत्र सं० ११। आ० ५३×६ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×।
अपूर्ण। वे० सं० २२०७।

विशेष—नित्य नियम पूजा पाठ है।

६२०८. गुटका सं० १६४। पत्र सं० ७७। आ० ६३×६ इ०। भाषा-संस्कृत। ले० काल ×।
अपूर्ण। वे० सं० २२०९।

विशेष—विभिन्न स्तोत्रों का संग्रह है।

६२०९. गुटका सं० १६५। पत्र सं० ५२। आ० ६३×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। विषय-पद। ले०
काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१०।

विशेष—नवल, जगताराम, उदयराम, गुनपूरण, चैनविजय, रेखराज, जोधराज, चैनमुख, धर्मपाल,
भगताराम, भूधर, साहिबराम, विनोदीलाल आदि कवियों के विभिन्न राग रागिनियों में पद हैं। पुस्तक गोमतीलालजी
ने प्रतिलिपि करवाई थी।

६२१०. गुटका सं० १६६। पत्र सं० २४। आ० ६३×४३ इ०। भाषा-हिन्दी। ले० काल ×।
अपूर्ण। वे० सं० २२११।

१. अठारह नाते का चौडालिया	लोहट	हिन्दी	१-७
२. मुहूर्तमुक्तावलीभाषा	शङ्कराचार्य	”	१-२३

६२११. गुटका सं० १६७। पत्र सं० १४। आ० ६×४३ इ०। भाषा-संस्कृत। विषय-मन्त्रशास्त्र।
ले० काल ×। अपूर्ण। वे० सं० २२१२।

विशेष—पद्मावतीयन्त्र तथा युद्ध में जीत का यन्त्र, सीचा जाने का यन्त्र, नजर तथा वशीकरण यन्त्र तथा महालक्ष्मीसप्तभाविकस्तोत्र हैं ।

६२१२. गुटका सं० १६८ । पत्र सं० १२-३६ । आ० ७३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २२१३ ।

विशेष—वृन्द सतसई है ।

६२१३. गुटका सं० १६९ । पत्र सं० ४० । आ० ८३×६ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २२१४ ।

विशेष—भक्तामर, कल्याणमन्दिर आदि स्तोत्रों का संग्रह है ।

६२१४. गुटका सं० १७० । पत्र सं० ६६ । आ० ८×५३ इ० । भाषा-संस्कृत हिन्दी । विषय-संग्रह । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २२१५ ।

विशेष—भक्तामरस्तोत्र, रसिकप्रिया (केशव) एवं रत्नकोश हैं ।

६२१५. गुटका सं० १७१ । पत्र सं० ३-८१ । आ० ५३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-पद । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २२१६ ।

विशेष—जगताराम के पदों का संग्रह है । एक पद हरीसिंह का भी है ।

६२१६. गुटका सं० १७२ । पत्र सं० ५१ । आ० ५×४३ इ० । भाषा-हिन्दी । ले० काल X । अपूर्ण । वे० सं० २२१७ ।

विशेष—आयुर्वेदिक नुसखे एवं रति रहस्य है ।

अवशिष्ट-साहित्य

६२१७. अष्टोत्तरीस्नानविधि..... । पत्र सं० १ । आ० १०×५३ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-विधि विधान । २० काल X । ले० का० X । पूर्ण । वे० सं० २६१ । अ भण्डार ।

६२१८. जन्माष्टमीपूजन । पत्र सं० ७ । आ० ११३×६ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-पूजा । २० काल X । ले० काल X । वे० सं० ११५७ । अ भण्डार ।

६२१९. तुलसीविवाह । पत्र सं० ५ । आ० ६३×४३ इ० । भाषा-संस्कृत । विषय-विधिविधान । २० काल X । ले० काल सं० १८८६ । पूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २२२२ । अ भण्डार ।

६२२०. परमाणुनामविधि (नाप तोल परिमाण)..... । पत्र सं० २ । आ० ६३×५३ इ० । भाषा-हिन्दी । विषय-नापने तथा तोलने की विधि । २० काल X । ले० काल X । पूर्ण । वे० सं० २१३७ । अ भण्डार ।

६२२१. प्रतिष्ठापाठविधि..... । पत्र सं० २० । आ० ८१×६३ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा विधि । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७२ । अ भण्डार ।

६२२२. प्रायश्चित्तचूलिकाटीका—नन्दिगुरु । पत्र सं० २५ । आ० ८×५ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—आचारशास्त्र । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ५२८ । क भण्डार ।

विशेष—बाबा दुलीचन्द ने प्रतिलिपि की थी । इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ५२९) और है ।

६२२३. प्रति सं० २ । पत्र सं० १०५ । ले० काल × । वे० सं० ६५ । घ भण्डार ।

विशेष—टीका का नाम 'प्रायश्चित्त विनिश्चयवृत्ति' दिया है ।

६२२४. भक्तिरत्नाकर—वनमाली भट्ट । पत्र सं० १६ । आ० ११^१/_२×५ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—स्तोत्र । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । जीर्ण । वे० सं० २२६१ । अ भण्डार ।

६२२५. भद्रबाहुसंहिता—भद्रबाहु । पत्र सं० १७ । आ० ११^३/_४×४ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—ज्योतिष । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० ५१ । ज भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० १९६) और है ।

६२२६. विधि विधान..... । पत्र सं० ७२-१५३ । आ० १२×५ इ० । भाषा—संस्कृत । विषय—पूजा विधान । २० काल × । ले० काल × । अपूर्ण । वे० सं० १०८३ । अ भण्डार ।

६२२७. प्रति सं० २ । पत्र सं० ५२ । ले० काल × । वे० सं० ६६१ । क भण्डार ।

६२२८. समवशरणपूजा—पन्नालाल दूनीवाले । पत्र सं० ८५ । आ० १२^३/_४×८ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल सं० १६२१ । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० ७७५ । ड भण्डार ।

६२२९. प्रति सं० २ । पत्र सं० ४३ । ले० काल सं० १२२६ भाद्रपद शुक्ला १२ । वे० सं० ७७७ । ड भण्डार ।

विशेष—इसी भण्डार में एक प्रति (वे० सं० ७७६) और है ।

६२३०. प्रति सं० ३ । पत्र सं० ७५ । ले० काल सं० १६२८ भाद्रपद सुदी ३ । वे० सं० २०० । छ भण्डार ।

६२३१. प्रति सं० ४ । पत्र सं० १३९ । ले० काल × । वे० सं० २७८ । व्य भण्डार ।

६२३२. समुच्चयचौबीसतीर्थङ्करपूजा..... । पत्र सं० २ । आ० ११^३/_४×५ इ० । भाषा—हिन्दी । विषय—पूजा । २० काल × । ले० काल × । पूर्ण । वे० सं० २०५० । अ भण्डार ।



ग्रन्थानुक्रमिका

अ

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अकबर बीरबल वार्ता	—	(हि०)	६८१	अक्षयदशमीकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६६५
अकलङ्कचरित्र	—	(हि० ग०)	१६०	अक्षयदशमीविधान	—	(सं०)	५३८
अकलङ्कचरित्र	नाथूराम	(हि०)	१६०	अक्षयनिधिपूजा	—	(सं०)	४५४
अकलङ्कदेव कथा	—	(सं०)	२१३			५०६, ५३६, ७६३	
अकलङ्कनाटक	मकखनलाल	(हि०)	३१६	अक्षयनिधिपूजा	ज्ञानभूषण	(हि०)	४५४
अकलङ्काष्टक	भट्टाकलङ्क	(सं०)	५७५	अक्षयनिधिमुष्टिकाविधानव्रतकथा	—	(सं०)	२१३
			६३७, ६४६, ७१२	अक्षयनिधिमंडल [मंडलचित्र]	—		५२५
अकलङ्काष्टक	—	(सं०)	३७६	अक्षयनिधिविधान	—	(सं०)	४५४
अकलङ्काष्टकभाषा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	३७६	अक्षयनिधिविधानकथा	—	(सं०)	२४४
अकलङ्काष्टक	—	(हि०)	७६०	अक्षयनिधिव्रतकथा	खुशालचन्द	(हि०)	२४४
अकंपनाचार्यपूजा	—	(हि०)	६८६	अक्षयविधानकथा	—	(सं०)	२४६
अकलमंदवार्ता	—	(हि०)	३२४	अक्षरबावनी	द्यानतराय	(हि०)	१५, ६७६
अकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल	—	(प्रा०)	४५३	अजितपुराण	पंडिताचार्य अरुणमणि	(सं०)	१४२
अकृत्रिमजिनचैत्यालय जयमाल	भगवतोदास	(हि०)	६६४	अजितनाथपुराण	विजयसिंह	(अप०)	१४२
			७२०	अजितशान्तिजिनस्तोत्र	—	(प्रा०)	७५४
अकृत्रिमचैत्यालय जयमाल	—	(हि०)	७०४, ७४६	अजितशान्तिस्तवन	नन्दिषेण	(प्रा०)	३७६
अकृत्रिमचैत्यालयपूजा	मनरङ्गलाल	(हि०)	४५४				६८१
अकृत्रिमचैत्यालयपूजा	—	(सं०)	५१५	अजितशांतिस्तवन	—	(प्रा० सं०)	३८१
अकृत्रिमचैत्यालय वर्णन	—	(हि०)	७६३	अजितशांतिस्तवन	—	(सं०)	३७६
अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	जिनदास	(सं०)	४५३	अजितशांतिस्तवन	मेरुनन्दन	(हि०)	६१६
अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	चैनसुख	(हि०)	४५३	अजितशांतिस्तवन	—	(हि०)	६१६
अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	लालजीत	(हि०)	४५३	अजितशांतिस्तवन	—	(सं०)	४२३
अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	पांडे जिनदास	(सं०)	४५३	अजीर्णमञ्जरी	काशीराज	(सं०)	२६६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अजीर्णमञ्जरी	—	(सं०)	२६६	अनन्तचतुर्दशीकथा	—	(सं०)	२१४
अठारह का मंडल [चित्र]	—		५२५	अनन्तचतुर्दशीकथा	मुनीन्द्रकीर्त्ति	(प्रा०)	२१४
अठारह का व्यौरा	—	(सं०)	५४३	अनन्तचतुर्दशीकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२१४
अट्टाईस मूलगुण वर्णन	—	(सं०)	४८	अनन्तचतुर्दशीपूजा	भ० मेरुचन्द्र	(सं०)	६०७
अठारह नाते की कथा	ऋषि लालचन्द्र	(हि०)	२१३	अनन्तचतुर्दशीपूजा	शान्तिदास	(सं०)	४५६
अठारह नाते की कथा	लोहट (हि०)		६२३, ७७५	अनन्तचतुर्दशीपूजा	—	(सं०)	५५७, ७६३
अठारह नाते का चौढाला	लोहट	(हि०)	७२३	अनन्तचतुर्दशीपूजा	श्री भूषण	(हि०)	४५६
			७८०, ७९८	अनन्तचतुर्दशीपूजा	—	(सं० हि०)	४५६
अठारह नाते का चौढाल्या	—	(हि०)	७४५	अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा व पूजा	खुशालचन्द्र	(हि०)	५१६
अठारह नाते का व्यौरा	—	(हि०)	६२३	अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६६५
अठारह मूलगुणारास	ब्र० जिनदास	(हि०)	७०७	अनन्तचतुर्दशीव्रतकथा	पांडे हरिकृष्ण	(हि०)	७२५
अठोत्तरासनाथविधि	—	(हि०)	६६८	अनन्त के छप्पय	धर्मचन्द्र	(हि०)	७५७
अट्टाई [साद्धद्वय] द्वीपपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४५५	अनन्तजिनपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४५६
अट्टाईद्वीप पूजा	डालूराम	(हि०)	४५५	अनन्तजिनपूजा	—	(हि०)	७५६
अट्टाईद्वीप पूजा	—	(हि०)	७३०	अनन्तनाथपुराण	गुणभद्राचार्य	(सं०)	१४२
अट्टाईद्वीपवर्णन	—	(सं०)	३१६	अनन्तनाथपूजा	श्री भूषण	(सं०)	४५६
अण्णमितिबंधि	हरिश्चन्द्र अग्रवाल	(अप०)	२४३	अनन्तनाथपूजा	सेवग	(हि०)	४५६
			६२८, ६४२	अनन्तनाथपूजा	—	(सं०)	४५६
अण्ण का मंडल [चित्र]	—		५२५	अनन्तनाथपूजा	ब्र० शान्तिदास	(हि०)	६६०, ७२५
अतिशयक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	५५३	अनन्तनाथपूजा	—	(हि०)	४५७
अद्भुतसागर	—	(हि०)	२६६	अनन्तपूजा	—	(सं०)	५१६
अध्ययन गीत	—	(हि०)	६८०	अनन्तपूजाव्रतमहात्म्य	—	(सं०)	४५७
अध्यात्मकमलमार्तण्ड	कवि राजमल्ल	(सं०)	१२६	अनन्तविधानकथा	—	(अप०)	६३३
अध्यात्मतरङ्गिणी	सोमदेव	(सं०)	६६	अनन्तव्रतकथा	भ० पद्मनन्दि	(सं०)	२१४
अध्यात्मदोहा	रूपचन्द्र	(हि०)	७४६	अनन्तव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२१४
अध्यात्मपत्र	जयचन्द्र छाबड़ा	(हि०)	६६	अनन्तव्रतकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५
अध्यात्मव्रत्तीसी	बनारसीदास	(हि०)	६६	अनन्तव्रतकथा	मदनकीर्त्ति	(सं०)	२४७
अध्यात्मबाराहखंडी	कवि सूरत	(हि०)	६६	अनन्तव्रतकथा	—	(सं०)	२१४
अनगारधर्मावृत	प० आशाधर	(सं०)	४८	अनन्तव्रतकथा	—	(अप०)	२४५
अनन्तगंडीवर्णन [मन्त्र सहित]	—	(सं०)	५७६	अनन्तव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२१४

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अनन्तव्रतपूजा	श्री भूषण	(सं०)	५१५	अनेकार्थमञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	२७१, ७६६
अनन्तव्रतपूजा	—	(सं०)	४५७	अनेकार्थशत	भ० हर्षकीर्त्ति	(सं०)	२७१
			५३६, ६६३, ७२८	अनेकार्थसंग्रह	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२७१
अनन्तव्रतपूजा	भ० विजयकीर्त्ति	(हि०)	४५७	अनेकार्थसंग्रह [महीपकोष]	—	(सं०)	२७१
अनन्तव्रतपूजा	साह सेवगराम	(हि०)	४५७	अन्तरायवर्णन	—	(हि०)	५६०
अनन्तव्रतपूजा	—	(हि०)	५१८	अन्तरिक्षपार्वनाथाष्टक	—	(सं०)	५६०
			५१६, ५८६, ७२८	अन्ययोगव्यवच्छेदकद्विधिशिका	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	५७३
अनन्तव्रतपूजाविधि	—	(सं०)	४५७	अन्यस्फुट पाठ संग्रह	—	(हि०)	६२७
अनन्तव्रतविधान	मदनकीर्त्ति	(सं०)	२१४	अपराधसूदनस्तोत्र	शङ्कराचार्य	(सं०)	६६२
अनन्तव्रतरास	ब्र० जिनदास	(हि०)	५६०	अबजदकेवली	—	(सं०)	२७६
अनन्तव्रतोद्यापनपूजा	आ० गुणचन्द्र	(सं०)	४५७	अभिज्ञान शाकुन्तल	कालिदास	(सं०)	३१६
			५१३, ५३६, ५४०	अभिधानकोश	पुरुषोत्तमदेव	(सं०)	२७१
अनागारभक्ति	—	(सं०)	६२७	अभिधानचिन्तामणिनाममाला	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२७१
अनाथी ऋषि स्वाध्याय	—	(हि० पुत्र०)	३७६	अभिधानरत्नाकर	धर्मचन्द्रगणि	(सं०)	२७२
अनाथानोचोढाल्या	खेम	(हि०)	४३५	अभिधानसार	पं० शिवजीलाल	(सं०)	२७२
अनाथीसाध चौढालिया	बिमलविनयगणि	(हि०)	६८०	अभिषेक पाठ	—	(सं०)	४५८
अनाथीमुनि सज्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८				५६५, ७६१
अनाथीमुनि सज्जाय	—	(हि०)	४३५	अभिषेकविधि	लक्ष्मीसेन	(सं०)	४५८
अनादिनिधनस्तोत्र	—	(सं०)	३७६, ६०४	अभिषेकविधि	—	(सं०)	३६८
अनिटकारिका	—	(सं०)	२५७				४५८, ५७०
अनिटकारिकावचूरि	—	(सं०)	२५७	अभिषेकविधि	—	(हि०)	४५८
अनित्यपञ्चोसी	भगवतीदास	(हि०)	६८६	अमरकोश	अमरसिंह	(सं०)	२७२
अनित्यपञ्चासिका	त्रिभुवनचन्द्र	(हि०)	७५५	अमरकोशटीका	भानुजी दीक्षित	(सं०)	२७२
अनुभवप्रकाश	दीपचन्द्र कासलीवाल	(हि०)	४८	अमरचन्द्रिका	—	(हि०)	३०८
अनुभवविलास	—	(हि०)	५११	अमरशतक	—	(सं०)	१६०
अनुभवानन्द	—	(हि० ग०)	४८	अमृतधर्मरसकाव्य	गुणचन्द्रदेव	(सं०)	४८
अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	महीक्षपणकवि	(सं०)	२७१	अमृतसागर	म० सर्वाई प्रतापसिंह	(हि०)	२६६
अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	—	(सं०)	२७१	अरहना सज्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८
अनेकार्थनाममाला	नन्दिकवि	(हि०)	७०६	अरहन्तस्तवन	—	(सं०)	३७६

ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थ नाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अरिष्टकर्ता	—	(सं०)	२७६	अष्टप्रकारीपूजा	देवचन्द्र	(हि०)	७६०
अरिष्टाध्याय	—	(प्रा०)	४५६	अष्टशती [देवागम स्तोत्र टीका]	अकलङ्कदेव	(सं०)	१२६
अरिहन्त केवलीपात्रा	—	(सं०)	२७६	अष्टसहस्री	आ० विद्यानन्दि	(सं०)	१२६
अर्थदीपिका	जिनभद्रगणि	(प्रा०)	१	अष्टांगसम्यग्दर्शनकथा	सकलकीर्त्ति	(सं०)	२१५
अर्थप्रकाश	लङ्कानाथ	(सं०)	२६६	अष्टांगोपाख्यान	पं० मेधावी	(सं०)	२१५
अर्थप्रकाशिका	सदासुख कासलीवाल	(हि० ग०)	१	अष्टादशसहस्रशीलभेद	—	(सं०)	५६१
अर्थसार टिप्पण	—	(सं०)	१७	अष्टाह्निकाकथा	यशःकीर्त्ति	(सं०)	६४५
अर्हत्प्रवचन	—	(सं०)	१	अष्टाह्निकाकथा	शुभचन्द्र	(सं०)	२१५
अर्हत्प्रवचन व्याख्या	—	(सं०)	२	अष्टाह्निकाकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७४०
अर्हनकचौडालियागीत विमलविनय[विनयरंग](हि०)	—	(सं०)	४३५	अष्टाह्निकाकथा	नथमल	(हि०)	२१५
अर्हद्भक्तिविधान	—	(सं०)	५७४, ६५८	अष्टाह्निका कौमुदी	—	(सं०)	२१५
अलङ्कारटीका	—	(सं०)	३०८	अष्टाह्निकागीत	भ० शुभचन्द्र	(हि०)	६८६
अलङ्काररत्नाकर	दलपतिराय वंशीधर	(हि०)	३०८	अष्टाह्निका जयमाल	—	(सं०)	४५६
अलङ्कारवृत्ति	जिनवर्द्धन सूरि	(सं०)	३०८	अष्टाह्निका जयमाल	—	(प्रा०)	४५६
अलङ्कारशास्त्र	—	(सं०)	३०८	अष्टाह्निकापूजा	—	(सं०)	४५६, ५७०, ५६६, ६५८, ७८४
अवंति पार्श्वनाथजिनस्तवन	हर्षसूरि	(हि०)	३७६	अष्टाह्निकापूजा	द्यानतराय	(हि०)	४६०, ७०५
अव्ययप्रकरण	—	(सं०)	२५७	अष्टाह्निकापूजा	—	(हि०)	४६१
अव्ययार्थ	—	(सं०)	२५७	अष्टाह्निकापूजाकथा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४६०
अशनसमितिस्वरूप	—	(प्रा०)	५७२	अष्टाह्निकाभक्ति	—	(सं०)	५६४
अशोकरोहिणीकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२१६	अष्टाह्निकाभक्तकथा	विनयकीर्त्ति	(हि०)	६१४
अशोकरोहिणीव्रतकथा	—	(हि० ग०)	२१६	अष्टाह्निकाव्रतकथा	—	(सं०)	७८०, ७६४
अश्वलक्षण	पं० नकुल	(हि०)	७८१	अष्टाह्निकाव्रतकथा	—	(सं०)	२१५
अश्वपरीक्षा	—	(सं०)	७८६	अष्टाह्निकाव्रतकथासंग्रह	गुणचन्द्रसूरि	(सं०)	२१६
अपाङ्किकादशीमहात्म्य	—	(सं०)	२१५	अष्टाह्निकाव्रतकथा	लालचंद विनोदीलाल	(हि०)	६२२
अष्टक [पूजा]	नेमिदत्त	(सं०)	५६०	अष्टाह्निकाव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
अष्टक [पूजा]	—	(हि०)	५६०, ७०१	अष्टाह्निकाव्रतकथा	—	(हि०)	२४७ ७२७
अष्टकर्मप्रकृतिवर्णन	—	(सं०)	१	अष्टाह्निकाव्रतपूजा	—	(सं०)	५१६
अष्टपाहुड	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	६६	अष्टाह्निकाव्रतोद्यापनपूजा	भ० शुभचन्द्र	(हि०)	४६१
अष्टपाहुडभाषा	जयचन्द्र छाबडा	(हि० ग०)	६६				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६	आत्मशिक्षा	प्रसन्नचन्द	(हि०)	६१६
अष्टाह्निकाव्रतोद्यापन	—	(हि०)	४६१	आत्मशिक्षा	राजसमुद्र	(हि०)	६१६
अंकुरारोपणविधि	पं० आशाधर	(सं०)	४५३	आत्मशिक्षा	सालम	(हि०)	६१६
			५१७	आनुरप्रन्याख्यानप्रकीर्णक	—	(प्रा०)	२
अंकुरारोपणविधि	इन्द्रनन्दि	(सं०)	४५३	आत्मध्यान	बनारसीदास	(हि०)	१००
अंकुरारोपणविधि	—	(सं०)	४५३	आत्मनिन्दास्तवन	रत्नाकर	(सं०)	३८०
अंकुरारोपणमंडलचित्र			५२५	आत्मप्रबोध	कुमार कवि	(सं०)	१००
अञ्जनचोरकथा	—	(हि०)	२१५	आत्मसंबोध	जयमाल	(हि०)	७५५
अञ्जना को रास	धर्मभूषण	(हि०)	५६३	आत्मसंबोधन	द्यानतराय	(हि०)	७१४
अञ्जनारास	शांतिकुशल	(हि०)	३६०	आत्मसंबोधनकाव्य	—	(सं०)	१००
				आत्मसंबोधनकाव्य	—	(अप०)	१००
				आत्मानुशासन	गुणभद्राचार्य	(सं०)	१००
				आत्मानुशासनटीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(सं०)	१०१
				आत्मानुशासनभाषा	पं० टोडरमल	(हि० ग०)	१०२
				आत्मावलोकन	दीपचन्द कासलीवाल	(.. ,,)	१००
				आत्रेयवैद्यक	आत्रेय ऋषि	(सं०)	२६६
				आदिजिनवरस्तुति	कमलकीर्ति	(हि०)	४३६
				आदित्यवारकथा	—	(सं०)	६६६
				आदित्यवारकथा	गंगाराम	(हि०)	७६५
				आदित्यवारकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
				आदित्यवारकथा	भाऊ कवि	(हि०)	२४४
					६०१, ६८३, ६८५, ७२३, ७४०, ७४५, ७५६, ७६२		
				आदित्यवारकथा	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७१२
				आदित्यवारकथा	वादीचन्द्र	(हि०)	६०७
				आदित्यवारकथाभाषा टीका	मूलकर्ता- सकलकीर्ति		
					भाषाकार- सुरेन्द्रकीर्ति	(सं० हि०)	७०७
				आदित्यवारकथा	—	(हि०)	६२३
					६७६, ७१३, ७१४, ७१८, ७४१		
				आदित्यवारपूजा	—	(हि०)	४६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
आदित्यव्रतपूजा	—	(सं०)	४६१	आदीश्वर का जननधरणा	—	(हि०)	५६६
आदित्यव्रततोद्यायन	—	(सं०)	५४०	आदीश्वरस्तवन	जितचन्द्र	(हि०)	७००
आदित्यव्रतकथा	सुशालचन्द्र	(हि०)	७३१	आदीश्वरविद्वज्जति	—	(हि०)	४३७
आदित्यव्रतपूजा	केशवसेन	(सं०)	४६१	आद्रकुमारधमाल	वनकसोम	(हि०)	६१७
आदित्यव्रतोद्यायन	—	(सं०)	५४०	आध्यात्मिकगाथा	भ० लक्ष्मीचन्द्र	(अप्र०)	१०३
आदिनाथकल्पाणकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७०७	आनन्दलहरीस्तोत्र	शङ्कराचार्य	(सं०)	६०८
आदिनाथ गीत	मुनि हेमसिद्ध	(हि०)	४३६	आनन्दस्तवन	—	(सं०)	५१४
आदिनाथपूजा	मनहरदेव	(हि०)	५११	आसपरीक्षा	विद्यानन्दि	(सं०)	१३६
आदिनाथपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	४६१ ६५०	आसमीमांसा	समन्तभद्राचार्य	(सं०)	१३०
आदिनाथपूजा	ब्र० शांतिदास	(हि०)	७६५	आसमीमांसाभाषा	जयचन्द्र छावड़ा	(हि०)	१३०
आदिनाथपूजा	सेवगराम	(हि०)	६७४	आसमीमांसासंस्कृति	विद्यानन्दि	(सं०)	१३०
आदिनाथपूजा	—	(हि०)	४६२	आमनीबू का भगड़ा	—	(हि०)	६६३
आदिनाथ की विनती	—	(हि०)	७७४ ७५२	आमेर के राजाओंका राज्यकाल विवरण	—	(हि०)	७५६
आदिनाथ विनतां	कनककीर्त्ति	(हि०)	७२२	आमेर के राजाओंकी वंशावलि	—	(हि०)	७५६
आदिनाथसज्जकाय	—	(हि०)	४३६	आयुर्वेदिक ग्रन्थ	—	(सं०)	२६७, ७६३
आदिनाथस्तवन	कवि पलह	(हि०)	७३२	आयुर्वेदिक नुसखे	—	(सं०)	२६७, ५७६
आदिनाथस्तोत्र	समयसुन्दर	(हि०)	६१६	आयुर्वेदिक नुसखे	—	(हि०)	६०१
आदिनाथाष्टक	—	(हि०)	५६४	६६७, ६७७, ६६०, ६६६, ६६७, ७०१, ७०२, ७१४,			
आदिपुराण	जिनसेनाचार्य	(सं०)	१४२ ६४६	७१८, ७१६, ७२३, ७३०, ७३६, ७६०, ७६१, ७६६,			
आदिपुराण	पुष्पदन्त	(अप्र०)	१४३ ६४२	७६७, ७६६			
आदिपुराण	दौलतराम	(हि० ग०)	१४४	आयुर्वेद नुसखों का संग्रह	—	(हि०)	२६६
आदिपुराण टिप्पण	प्रभाचन्द्र	(सं०)	१४३	आयुर्वेदमहोदधि	सुखदेव	(सं०)	२६७
आदिपुराण विनती	गङ्गादास	(हि०)	७०१	आरती	—	(सं०)	६३५
आदीश्वर आरती	—	(हि०)	५६४	आरती	द्यानतराय	(हि०)	६२१, ६२२
आदीश्वरगीत	रङ्गविजय	(हि०)	७७६	आरती	दीपचन्द्र	(हि०)	७७७
आदीश्वर के १० भव	गुणचन्द्र	(हि०)	७६२	आरती	मानसिंह	(हि०)	७७७
आदीश्वरपूजाष्टक	—	(हि०)	४६२	आरती	लालचन्द्र	(हि०)	६२२
आदीश्वरफान	ज्ञानभूषण	(हि०)	३६०	आरती	विहारीदास	(हि०)	७७७
आदीश्वररेखता	रहस्यकीर्त्ति	(हि०)	६८२	आरती	शुभचन्द्र	(हि०)	७७६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
भारती पञ्चपरमेष्ठी	पं० चिमना	(हि०) ७६१	आश्रव वर्णन	—	(हि०) २
भारती सरस्वती	ब्र० जिनदास	(हि०) ३८६	आषाढभूति चौढालिया	कनकसोम	(हि०) ६१७
भारती संग्रह	ब्र० जिनदास	(हि०) ३८६	आहार के ४६ दोषवर्णन	भैया भगवतीदास	(हि०) ५०
भारती संग्रह	द्यानतराय	(हि०) ७७७		इ	
भारती सिद्धों की	खुशालचन्द	(हि०) ७७७	इक्कीसठाराचर्चा	सिद्धसेन सूरि	(प्रा०) २
आराधना	—	(प्रा०) ४३२	इन्द्रजाल	—	(हि०) ३४७
आराधना	—	(हि०) ३८०	इन्द्रध्वजपूजा	विश्वभूषण	(सं०) ४६२
आराधना कथा कोश	—	(सं०) २१६	इन्द्रध्वजमण्डलपूजा	—	(सं०) ४६२
आराधना प्रतिबोधसार	विमलेन्द्रकीर्त्ति	(हि०) ६५८	इष्टछत्तीसी	बुधजन	(हि०) ६६१
आराधना प्रतिबोधसार	सकलकीर्त्ति	(हि०) ६८५	इष्टछत्तीसी	—	(हि०) ७६० ७६३
आराधना प्रतिबोधसार	—	(हि०) ७८२	इष्टोपदेश	पूज्यपाद	(सं०) ३८०
आराधना विधान	—	(सं०) ४६२	इष्टोपदेशटीका	पं० आशाधर	(सं०) ३८०
आराधनासार	देवसेन	(प्रा०) ४६	इष्टोपदेशभाषा	—	(हि०) ७५५
	५७३, ६२८, ६३५, ७०६, ७३७, ७४४		इष्टोपदेशभाषा	—	(हि० गद्य) ३८०
आराधनासार	जिनदास	(हि०) ७५७		ई	
आराधनासारप्रबन्ध	प्रभाचन्द	(सं०) २१६	ईश्वरवाद	—	(सं०) १३१
आराधनासारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०) ४६		उ	
आराधनासारभाषा	—	(हि०) ५०	उच्चग्रहफल	बलदत्त	(सं०) २७६
आराधनासार वचनिका	वा० दुलीचन्द	(हि० ग०) ५०	उणादिसूत्रसंग्रह	उज्ज्वलदत्त	(सं०) २५७
आराधनासारवृत्ति	पं० आशाधर	(सं०) ५०	उत्तरपुराण	गुणभद्राचार्य	(सं०) १४५ ४१५
आरामशोभाकथा	—	(सं०) २१७	उत्तरपुराणटिप्पण	प्रभाचन्द	(सं०) १४५
आलापपद्धति	देवसेन	(सं०) १३०	उत्तरपुराणभाषा	खुशालचन्द	(हि० पद्य) १४५
आलोचना	—	(प्रा०) ५७२	उत्तरपुराणभाषा	संघी पन्नालाल	(हि० गद्य) १४६
आलोचनापाठ	जौहरीलाल	(हि०) ५६१	उत्तराध्ययन	—	(प्रा०) २
आलोचनापाठ	—	(हि०) ४२६	उत्तराध्ययनभाषाटीका	—	(हि०) ३
	६८५, ७६३, ७४६		उदयसत्ताबंधप्रकृतिवर्णन	—	(सं०) ३
आश्रवत्रिभङ्गी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०) २	उद्धवगोपीसंवाद	रसिकरास	(हि०) ६६४
आश्रवत्रिभङ्गी	—	(प्रा०) ७००	उद्धवसंदेशाख्यप्रबन्ध	—	(सं०) १६०
आश्रवत्रिभङ्गी	—	(हि०) २	उपदेशछत्तीसी	जिनहर्ष	(हि०) ३२४
			उपदेशपञ्चीसी	—	(हि०) ६५६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पदेशरत्नमाला	सकलभूषण	(सं०)	५०
उपदेशरत्नमाला	धर्मदासगणि	(प्रा०)	७५८
उपदेशरत्नमालागाथा	—	(प्रा०)	५२
उपदेशरत्नमालाभाषा	देवीसिंह छाबडा	(हि० पद्य)	५२
उपदेशरत्नमालाभाषा	बा० दुलीचन्द	(हि०)	५१
उपदेशशतक	द्यानतराय	(हि०)	३२५ ७४७
उपदेशसज्जाय	देवादिल	(हि०)	३८१
उपदेशसज्जाय	रंगविजय	(हि०)	३८१
उपदेशसज्जाय	ऋषि रामचन्द	(हि०)	३८०
उपदेशसिद्धान्तरत्नमाला	भंडारी नेमिचन्द	(प्रा०)	५१
उपदेशसिद्धान्तरत्नमालाभाषा	भागचन्द	(हि०)	५१
उपवासग्रहणविधि	—	(प्रा०)	४६३
उपवास के दश भेद	—	(सं०)	५७३
उपवासविधान	—	(हि०)	५७३
उपवासों का ब्योरा	—	(हि०)	७०१
उपसर्गहरस्तोत्र	पूर्णचन्द्राचार्य	(सं०)	३८१
उपसर्गहरस्तोत्र	—	(सं०)	४२४
उपसर्गार्थविवरण	बुपाचार्य	(सं०)	५२
उपांगललितप्रतकथा	—	(सं०)	२१७
उपाधिव्याकरण	—	(सं०)	२५७
उपासकाचार	—	(सं०)	५२
उपासकाचारदोहा	आ० लक्ष्मीचन्द्र	(ग्र०)	५२
उपासकाध्ययन	—	(सं०)	५२
उमेश्वरस्तोत्र	—	(सं०)	७३१
ऋ			
ऋणसम्बन्धकथा	अभयचन्द्रगणि	(प्रा०)	२१८
ऋतुंहार	कालिदास	(सं०)	१६१
ऋद्धिमन्त्र	—	(सं०)	७२३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ऋद्धिशतक	स्वरूपचन्द बिलाला	(हि०)	५२ ५११
ऋषभदेवस्तुति	जिनसेन	(सं०)	३८१
ऋषभदेवस्तुति	पद्यनन्दि	(प्रा०)	३८१ ५०६
ऋषभनाथचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	१६०
ऋषभस्तुति	—	(सं०)	३८२
ऋषिमण्डल [चित्र]	—		५२४
ऋषिमण्डलपूजा	आ० गुणनन्दि	(सं०)	४६३
			५३७, ५३६, ७६२
ऋषिमण्डलपूजा	मुनि ज्ञानभूषण	(सं०)	४६३ ६३६
ऋषिमण्डलपूजा	—	(सं०)	४६४ ७६१
ऋषिमण्डलपूजा	दौलत आसेरी	(हि०)	४६४
ऋषिमण्डलपूजा	—	(हि०)	७२७
ऋषिमण्डलपूजा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	७२६
ऋषिमण्डलमन्त्र	—	(सं०)	५६३
ऋषिमण्डलस्तवन	—	(सं०)	६४५ ६८३
ऋषिमण्डलस्तवनपूजा	—	(सं०)	६५८
ऋषिमण्डलस्तोत्र	गौतमस्वामी	(सं०)	३८२
			४२४, ४२८, ४३१, ६४७, ७३२
ऋषिमण्डलस्तोत्र	—	(सं०)	३८२ ६६२
ए			
एकसौगुनहत्तर जीववर्णन	—	(हि०)	७४४
एकाक्षरकोश	क्षपराक	(सं०)	२७४
एकाक्षरनाममाला	—	(सं०)	२७४
एकाक्षरीकोश	वररुचि	(सं०)	२७४
एकाक्षरीकोश	—	(सं०)	२७४
एकाक्षरीस्तोत्र [तकाराक्षर]	—	(सं०)	३८२
एकीभावस्तोत्र	बादिराज	(सं०)	२२४
			३८२, ४२४, ४२५, ४२८, ४३०, ४३२, ४३३, ५७२,
			५७५, ५६५, ६०५, ६३३, ६३७, ६४४, ६५१, ६५२,
			६६४, ७२०, ७३७, ७८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
एकीभावस्तोत्रटीका	नागचन्द्रसूरि	(सं०)	४०१	कथासंग्रह	—	(सं० हि०)	२२०
एकीभावस्तोत्रभाषा	भूधरदास	(हि०)	३८३	कथासंग्रह	—	(प्रा० हि०)	२२०
	४२६, ४४८, ६५२, ६६२, ७१६, ७२०			कथासंग्रह	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
एकीभावस्तोत्रभाषा	पन्नालाल	(हि०)	३८३	कथासंग्रह	—	(हि०)	७३७
एकीभावस्तोत्रभाषा	जगजीवन	(हि०)	६०५	कपडामाना का दूहा	सुन्दर	(राज०)	७७३
एकीभावस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	३८३	कमलाष्टक	—	(सं०)	६०७
एकश्लोकरामायण	—	(सं०)	६४६	कयवन्नाचोपई	जिनचन्द्रसूरि	(हि० रा०)	२२१
एकीश्लोकभागवत	—	(सं०)	६४६	करकण्डुचरित्र	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	१६१
	श्री			करकुण्डचरित्र	मुनि कनकामर	(अप०)	१६१
श्रीपधियों के नुमखे	—	(हि०)	५७५	करणकौतूहल	—	(सं०)	२७६
	क			करलखण	—	(प्रा०)	२७६
कक्का	गुलाबचन्द	(हि०)	६४३	करुणाष्टक	पद्मनन्दि	(सं०)	६३३
कक्काबत्तीसी	ब्र० गुलाल	(हि०)	६७६			६३७, ६६८	
कक्काबत्तीसी	नन्दराम	(हि०)	७३२	करुणाष्टक	—	(हि०)	६४२
कक्काबत्तीसी	मनराम	(हि०)	७२३	कर्णपिशाचिनीयन्त्र	—	(सं०)	६१२
कक्काबत्तीसी	—	(हि०)	६५१	कर्पूरचक्र	—	(सं०)	२७६
	६७५, ६८५, ७१३, ७१५, ७२३, ७४१			कर्पूरप्रकरण	—	(सं०)	३२५
कक्का विनती [बारहखड़ी]	धनराज	(हि०)	६२३	कर्पूरमञ्जरी	राजशेखर	(सं०)	३१६
कच्छवावतार [चित्र]	—	(हि०)	६०३	कर्मग्रन्थसतरी	—	(प्रा०)	३
कच्छवाहा वंशके राजाश्रीके नाम	—	(हि०)	६८०	कर्मचूर [मण्डलचित्र]	—		५२५
कच्छवाहा वंश के राजाश्रीकी वंशावलि	—	(हि०)	७६७	कर्मचूरव्रतवेलि	मुनि सकलकीर्त्ति	(हि०)	५६२
कठियार कानडरीचौपई	मानसागर	(हि०)	२१८	कर्मचूरव्रतोद्यापनपूजा	लक्ष्मीसेन	(सं०)	४६४, ५१६
कथाकोश	हरिषेणाचार्य	(सं०)	२१६	कर्मचूरव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५०६, ४६४, ५४०
कथाकोश [आरधनाकथाकोश]	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	२१६	कर्मछत्तीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
कथाकोश	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	२१६	कर्मछत्तीसी	—	(हि०)	६८६
कथाकोश	—	(सं०)	२१६	कर्मदहनपूजा	वादिचन्द्र	(सं०)	५६०
कथाकोश	—	(हि०)	२१६	कर्मदहनपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४६५
कथारत्नसागर	नारचन्द्र	(सं०)	२२०			५३७, ६४५	
कथासंग्रह	—	(सं०)	२२०	कर्मदहनपूजा	—	(सं०)	४६५
						५१७, ५४०, ७६१	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कर्मदहनपूजा	टेकचन्द्र	(हि०)	४६५	कलशारोपणविधि	—	(सं०)	४६६
कर्मदहन [मण्डल चित्र]	—	(हि०)	५२५	कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	भ० प्रभाचन्द्र	(सं०)	४६७
कर्मदहन का मण्डल	—	(हि०)	६३८	कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	यशोत्रिजय	(सं०)	६५८
कर्मदहनव्रतमन्त्र	—	(सं०)	३४७	कलिकुण्डपार्श्वनाथपूजा	—	(हि०)	५६७
कर्म नोकर्म वर्णन	—	(प्रा०)	६२६	कलिकुण्डपार्श्वनाथ [मंडलचित्र]	—	(हि०)	५२५
कर्मपञ्चीसी	भारमल	(हि०)	७६६	कलिकुण्डपार्श्वनाथस्तवन	—	(सं०)	६०६
कर्मप्रकृति	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३	कलिकुण्डपूजा	—	(सं०)	४६७
कर्मप्रकृतिचर्चा	—	(हि०)	५, ७२०				४७५, ५१४, ५७४, ६०६, ६४०
कर्मप्रकृतिचर्चा	—	(हि०)	६७०	कलिकुण्डपूजा और जयमाल	—	(प्रा०)	७६३
कर्मप्रकृतिटीका	सुमतिकीर्त्ति	(सं०)	५	कलिकुण्डस्तवन	—	(सं०)	६०७
कर्मप्रकृति का व्यौरा	—	(हि०)	७१८	कलिकुण्डस्तवन	—	(प्रा०)	६५५
कर्मप्रकृतिवर्णन	—	(हि०)	७०१	कलिकुण्डस्तोत्र	—	(सं०)	४७५
कर्मप्रकृतिविधान	बनारसीदास	(हि०)	५	कलियुग की कथा	केशव	(हि०)	६२२
			३६०, ६७७, ७४६	कलियुग की कथा	द्वारकादास	(हि०)	७७३
कर्मवत्तीसी	राजसमुद्र	(हि०)	६१७	कलियुग की विनती	देवाब्रह्म	(हि०)	६१५
कर्मयुद्ध की विनती	—	(हि०)	६६४				६८५, ७८८
कर्मविपाक	—	(सं०)	२२१, ५६६	कल्किअवतार [चित्र]	—		६०३
कर्मविपाकटीका	सकलकीर्त्ति	(सं०)	५	कल्पद्रुमपूजा	—	(सं०)	६६५
कर्मविपाकफल	—	(हि०)	२८०	कल्पसिद्धांतसंग्रह	—	(प्रा०)	६
कर्मराशिफल [कर्मविपाक]	—	(सं०)	२८०	कल्पसूत्र	भद्रबाहु	(प्रा०)	६
कर्मस्तवसूत्र	देवेन्द्रमूरि	(प्रा०)	५	कल्पसूत्र	भिकरू अडभग्याणं	(प्रा०)	६
कर्महिण्डोलना	—	(हि०)	६२२	कल्पसूत्रमहिमा	—	(हि०)	३८३
कर्मों की १४८ प्रकृतियाँ	—	(हि०)	७६०	कल्पसूत्रटीका	समयसुन्दरोपाध्याय	(सं०)	७
कलशविधान	मोहन	(सं०)	४६६	कल्पसूत्रवृत्ति	—	(प्रा०)	७
कलशविधान	—	(सं०)	४६६	कल्पस्थान [कल्पव्याख्या]	—	(सं०)	२६७
कलशविधि	—	(सं०)	४२८, ६१२	कल्पाराणक	समन्तभद्र	(प्रा०)	३८३
कलशविधि	विश्वभूषण	(हि०)	४६६	कल्पाराण [बडा]	—		५७६
कलशाभिषेक	पं० आशाधर	(सं०)	४६७	कल्पाराणमञ्जरी	विनयसागर	(सं०)	३८४
कलशारोपणविधि	पं० आशाधर	(सं०)	४६६	कल्पाराणमन्दिर	हर्षकीर्त्ति	(सं०)	४०१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कल्याणमन्दिरस्तोत्र	कुमुदचन्द्र	(सं०)	३८४	कवित्त	बनारसीदास	(हि०)	७०६, ७७३
४०२, ४२५, ४३०, ४३१, ४३३, ५६५, ५७२, ५७५.				कवित्त	मोहन	(हि०)	७७२
५६५, ६०५, ६१५, ६१६, ६३३, ६३७, ६५१, ६८०				कवित्त	वृन्दावनदास	(हि०)	६८२
६८१, ६६३, ७०१, ७३१, ७६३				कवित्त	सन्तराम	(हि०)	६६२
कल्याणमन्दिरस्तोत्रटीका	—	(सं०)	३८५	कवित्त	सुखलाल	(हि०)	६५६
कल्याणमन्दिरस्तोत्रवृत्ति	देवतिलक	(सं०)	३८५	कवित्त	सुन्दरदास	(हि०)	६४३
कल्याणमन्दिरस्तोत्र हिन्दी टीका	—	(सं० हि०)	६८१	कवित्त	संवग	(हि०)	७७२
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	पन्नालाल	हि०)	३८५	कवित्त	— (राज० डिंगल)		७७०
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	(हि०)	३८५	कवित्त	—	(हि०)	६८१
४२६, ५६६, ५६६, ६०३, ६०४, ६२२, ६४३, ६४८,							७१७, ७५८, ७६०, ७६३, ७६७, ७७१
६६२, ६६५, ६७७, ७०३, ७०५				कवित्त	चुगलखोर का शिवलाल	(हि०)	७८२
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	मेलीराम	(हि०)	७८६	कवित्तमंग्रह	—	(हि०)	६५६, ७४३
कल्याणमन्दिरस्तोत्रभाषा	ऋषि रामचन्द्र	(हि०)	३८५	कविप्रिया	केशवदेव	(हि०)	१६१
कल्याणमन्दिरभाषा	—	(हि०)	६८६	कविवल्लभ	हरिचरणदास	(हि०)	६८८
७४५, ७५४, ७५५, ७५८, ७६८				कक्षपुट	सिद्धनागार्जुन	(सं०)	२६७
कल्याणमाला	पं० आशाधर	सं०)	५७५, ३८५	कातन्त्रटीका	—	(सं०)	२५७
कल्याणविधि	मुनि विनयचन्द्र	(अप०)	६४१	कातन्त्ररूपमालाटीका	दौर्गसिंह	(सं०)	२५८
कल्याणाष्टकस्तोत्र	पद्मनन्दि	(सं०)	५७४	कातन्त्ररूपमालावृत्ति	—	(सं०)	२५८
कवलचन्द्रायणव्रतकथा	—	(सं०)	२२१, २४६	कातन्त्रविभ्रमसूभावचूरि	चारित्रसिंह	(सं०)	२५७
कविकर्पटी	—	(सं०)	३०६	कातन्त्रव्याकरण	शिववर्मा	(सं०)	२५६
कवित्त	अमदास	(हि०)	७६८	कादम्बरीटीका	—	(सं०)	१६१
कवित्त	कन्हैयालाल	(हि०)	७८०	कामन्दकीयनीतिसारभाषा	—	(हि०)	३२६
कवित्त	कंसवदास	(हि०)	६४३	कामशास्त्र	—	(हि०)	७३७
कवित्त	गिरधर	(हि०)	७७२ ७८६	कामसूत्र	कविहाल	(प्रा०)	३५३
कवित्त	ब्र० गुलाल	(हि०)	६७०, ६८२	कारकप्रक्रिया	—	(सं०)	२५६
कवित्त	छीहल	(हि०)	७७०	कारकविवेचन	—	(सं०)	२५६
कवित्त	जयकिशन	(हि०)	६४३	कारकसमासप्रकरण	—	(सं०)	२५६
कवित्त	देवीदास	(हि०)	६७५	कारखानों के नाम	—	(हि०)	७५६
कवित्त	पद्माकर	(हि०)	७५६	कार्तिकेयानुप्रेक्षा	स्वामी कार्तिकेय	(प्रा०)	१०३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
कार्तिकेयानुप्रेक्षाटीका	शुभचन्द्र	(सं०)	१०४	कृष्णरुक्मणिवेलि पृथ्वीराज राठौर (राज० डिगल)			७७०
कार्तिकेयानुप्रेक्षाटीका	—	(सं०)	१०४	कृष्णरुक्मणिवेलिटीका	—		७७०
कार्तिकेयानुप्रेक्षाभाषा	जयचन्द्र छात्रज्ञा	(हि० गद्य)	१०४	कृष्णरुक्मणिवेलि हिन्दोटोका सहित	—	(हि०)	६५६
कालचक्रवर्णन	—	(हि०)	७७०	कृष्णरुक्मणिमङ्गल पदम भगत		(हि०)	२२१
कालीनागदमनकथा	—	(हि०)	७३८	कृष्णावतारचित्र	—		६०३
कालीसहस्रनाम	—	(सं०)	६०८	केवलज्ञान का व्यौरा		(हि०)	५३
काले बिच्छूके डङ्कु उतारनेका मंत्र	—	(सं० हि०)	५७१	केवलजानीसज्जाय विनयचन्द्र		(हि०)	३८५
काव्यप्रकाशटीका	—	(सं०)	१६१	कोकमञ्जरी	—	(हि०)	६५७
कासिम रसिकविलास	—	(हि०)	७७१	कोकशास्त्र	—	(सं०)	३५३
किरातार्जुनीय महाकवि भारवि		(सं०)	१६१	कोकसार	आनन्द	(हि०)	३५३
कुयुरुलक्षण	—	(हि०)	५५	कोकसार	—	(हि०)	३५३, ६६६
कुण्डलगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	४६७	कोकिलावञ्चमीकथा	ब्र० हर्षा	(हि०)	२२८
कुण्डलिया	अगरदास	(हि०)	६६०	कौतुकरत्नमञ्जूषा	—	(हि०)	७८६
कुदेवस्वरूपवर्णन	—	(हि०)	७२०	कौतुकलीलावती	—	(सं०)	२८०
कुमारसम्भव	कालिदास	(सं०)	१६२	कौमुदीकथा	आ० धर्मकीर्त्ति	(सं०)	२२२
कुमारसम्भवटीका	कनकसागर	(सं०)	१६२	कञ्जिकाव्रतोद्यापनपूजा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	४६८
कुवलयानन्द	अप्य दीक्षित	(सं०)	३०८	कञ्जिकाव्रतोद्यापन	—	(सं०)	४६४
कुवलयानन्द	—	(सं०)	३०८				४६८, ५१७
कुवलयानन्दकारिका	—	(सं०)	३०६	कांजीवारस (मण्डल चित्र)	—		५२५
कुशलस्तवन	जिनरङ्गसूरि	(हि०)	७७६	कांजीव्रतोद्यापनमण्डलपूजा	—	(सं०)	५१३
कुशलस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	७७६	क्रियाकलाप	—	(सं०)	५७६
कुशलागुबधि अञ्जुपर्यां	—	(प्रा०)	१०४	क्रियाकलापटीका	ब्रभाचन्द्र	(सं०)	५३, ४३४
कुशीलखण्डन	जयलाल	(हि०)	५२	क्रियाकलापटीका	—	(सं०)	५३
कृदन्तपाठ	—	(सं०)	२५६	क्रियाकलापवृत्ति	—	(प्रा०)	५३
कृपणछन्द	ठक्कुरसी	(हि०)	६३८	क्रियाकोशभाषा	किशानसिंह	(हि०)	५३, ६१५
कृपणछन्द	चन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	३८६	क्रियाकोशभाषा	—	(हि०)	५३
कृपणपञ्चीसी	विनोदीलाल	(हि०)	७३३	क्रियावादियों के ३६ भेद	—	(हि०)	६७१
कृष्णप्रेमाष्टक	—	(हि०)	७३८	क्रोधमानमायालोभ की सज्जाय	—	(हि०)	४४८
कृष्णबालविलास	श्री किशानलाल	(हि०)	४३७	क्षत्रचूडामणि	वादीभसिंह	(सं०)	१६२
कृष्णारास	—	(हि०)	७३८	क्षणासारटीका	—	(सं०)	७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
क्षपणासारवृत्ति	माधवचन्द्र त्रैविधदेव	(सं०)	७	खण्डेलवालोत्पत्तिवर्णन	—	(हि०)	३७०
क्षपणासारभाषा	पं० टोडरमल	(हि०)	७	खण्डेलवालों की उत्पत्ति	—	(हि०)	७०२
क्षमाछत्तीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१७	खण्डेलवालोंकी उत्पत्ति और उनके ८४ गोत्र	—	(हि०)	७२१
क्षमावतीसी	जिनचन्द्रसूरि	(हि०)	५४	खण्डेला की चरचा	—	(हि०)	७०२
क्षमात्रयं पूजा	ब्रह्मसेन	(सं०)	५६४	खण्डेला की वंशावलि	—	(हि०)	७५६
क्षीर नीर	—	(हि०)	७६२	ख्याल गाँराचन्दका	—	(हि०)	२२२
क्षीरव्रतनिधिपूजा	—	(सं०)	५१५	ग			
क्षीरोदानीपूजा	अभयचन्द्र	(सं०)	७६३	गजपंथामण्डलपूजा	भ० ज्येमेन्द्रकीर्ति	(सं०)	४६८
क्षेत्रपाल की आरती	—	(हि०)	६०७	गजमोक्षकथा	—	(हि०)	६००
क्षेत्रपालगीत	शुभचन्द्र	(हि०)	६२३	गजसिंहकुमारचरित्र	विनयचन्द्रसूर	(सं०)	१६३
क्षेत्रपाल जयमाल	—	(हि०)	७६३	गडाराशांतिकविधि	—	(सं०)	६१२
क्षेत्रपाल नामावली	—	(सं०)	३८६	गणधरचरणारविदपूजा	—	(सं०)	४६६
क्षेत्रपालपूजा	मणिभद्र	(सं०)	६८३	गणधरजयमान	—	(प्रा०)	४६६
क्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	(सं०)	४६७	गणधरत्रलयपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	६६०
क्षेत्रपालपूजा	—	(सं०)	४६८	गणधरत्रलयपूजा	आशाधर	(सं०)	७६१
	५१५, ५१७, ५६७, ६४०, ६५५, ७६३			गणधरत्रलयपूजा	—	(सं०)	४६६
क्षेत्रपालपूजा	सुमतिकीर्ति	(हि०)	७१३				
क्षेत्रपाल भैरवी गीत	शोभाचन्द्र	(हि०)	७७७	गणधरवल्लय [मडलचित्र]	—		५१४, ६३६, ६४५, ७६१
क्षेत्रपालस्तोत्र	—	(सं०)	३४७	गणधरवल्लयमन्त्र	—	(सं०)	६०७
	५६१, ५७५, ६४४, ६४६, ६४७			गणधरवल्लयमन्त्रमंडल [कोठे]	—	(हि०)	६३८
क्षेत्रपालाष्टक	—	(सं०)	६५५	गणपाठ	बादिराज जगन्नाथ	(सं०)	२५६
क्षेत्रपालश्रवणहार	—	(सं०)	२८०	गणसार	—	(सं०)	५४
क्षेत्रसमासटीका	हरिभद्रसूरि	(सं०)	५४	गणितनाममाला	—	(सं०)	३६८
क्षेत्रसमामप्रकरण	—	(प्रा०)	५४	गणितशास्त्र	—	(सं०)	३६८
	ख			गणितसार	हेमराज	(हि०)	३६८
खण्डप्रशस्तिकाव्य	—	(सं०)	१६३	गणेशछन्द	—	(हि०)	७५३
खण्डेलवालगोत्र	—	(हि०)	७५६	गणेशद्वादशनाम	—	(सं०)	६४६
खण्डेलवालों के ८४ गोत्र	—	(हि०)	७६०	गर्गमनोरमा	—	(सं०)	२८०
				गर्गसंहिता	गर्गऋषि	(सं०)	२८०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
गर्भकल्याणकक्रियामें भक्तियों	—	(हि०)	५७३	गुरुस्थानवर्णन	—	(हि०)	६
गर्भषडारचक्र	देवनन्दि	(स०)	१३१, ७३७	गुरुस्थानव्याख्या	—	(सं०)	५७३
गिरनारक्षेत्रपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	४६६	गुणाक्षरमाला	मनराम	(हि०)	७५०
गिरनारक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	४६६, ५१३	गुरावली	—	(सं०)	६२८, ६८६
गिरनारक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	५१८	गुरुप्रष्टक	द्यानतराय	(हि०)	७७७
गिरिनारयात्रावर्णन	—	(हि०)	७६६	गुरुचन्द्र	शुभचन्द्र	(हि०)	३८६
गीत	कवि पल्ह	(हि०)	७३८	गुरुत्रयमाल	ब्र० जिनदास	(हि०)	६५८
गीत	धमेकीर्त्ति	(हि०)	७४३				६८५, ७६१
गीत	पांडे नाथूराम	(हि०)	६२२	गुरुदेव की विनती	—	(हि०)	७०२
गीत	विद्याभूषण	(हि०)	६०७	गुरुनामावलिचन्द्र	—	(हि०)	३८६
गीत	—	(हि०)	७४३	गुरुपारतन्त्र एवं सतस्मरण	जिनदत्तसूरि	(हि०)	६१६
गीतगोविंद	जयदेव	(सं०)	१६३	गुरुपूजा	जिनदास	(हि०)	५३७
गीतप्रबन्ध	—	(सं०)	३८६	गुरुपूजाष्टक	—	(सं०)	६४६
गीतमहात्म्य	—	(सं०)	६७७	गुरुसहस्रनाम	—	(सं०)	३८७
गीतवीतराग	अभिनवचरुकीर्त्ति	(सं०)	३८६	गुरुस्तवन	शांतिदास	(सं०)	६५७
गुणबेलि [चन्दनवाला गीत]	—	(हि०)	६२३	गुरुस्तुति	—	(सं०)	६०७
गुणबेलि	—	(हि०)	६४३	गुरुस्तुति	भूधरदास	(हि०)	१५
गुणमञ्जरी	—	(हि०)	७१६				४३७, ४४७, ६१४, ६४२, ६६३, ७८३
गुणस्तवन	—	(सं०)	३२७	गुरुओं की विनती	—	(हि०)	७०४
गुणस्थानगीत	श्रीवर्द्धन	(हि०)	७६३	गुरुओं की स्तुति	—	(सं०)	६२३
गुणस्थानक्रमारोहसूत्र	रत्नशेखर	(सं०)	८	गुर्वाष्टक	वादिराज	(सं०)	६५७
गुणस्थानचर्चा	—	(प्रा०)	८, ६२८	गुर्वावलि	—	(सं०)	५६५, ६३३
गुणस्थानचर्चा	चन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	८	गुर्वावलीपूजा	—	(सं०)	५१६
गुणस्थानचर्चा	—	(हि०)	७५१	गुर्वावलीवर्णन	—	(हि०)	३७१
गुणस्थानचर्चा	—	(सं०)	८	गोकुलगांवकी लीला	—	(हि०)	३६८
गुणस्थानप्रकरण	—	(सं०)	८	गोम्मटसार [कर्मकाण्ड]	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	१२
गुणस्थानभेद	—	(सं०)	८	गोम्मटसार [कर्मकाण्ड] टीका	कनकनन्दि	(सं०)	१२
गुणस्थानमार्गगा	—	(हि०)	८	गोम्मटसार [कर्मकाण्ड] टीका	ज्ञानभूषण	(सं०)	१२
गुणस्थानमार्गगा रचना	—	(सं०)	८	गोम्मटसार [कर्मकाण्ड] टीका	—	(सं०)	१३
गुणस्थानवर्णन	—	(सं०)	६				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
गोम्मटसार [कर्मकांड] भाषा	पं० टोडरमल	(हि०)	१३	ग्यारह अंग एवं चौदह पूर्व का वर्णन	—	(हि०)	६२६
गोम्मटसार [कर्मकांड] भाषा	हेमराज	(हि०)	१३	गृहप्रवेश विचार	—	(सं०)	५७१
गोम्मटसार [जीवकांड] नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	६	गृहविवलक्षण	—	(सं०)	५७६	
गोम्मटसार [जीवकांड] (तत्वप्रदीपिका)	(सं०)	१२	ग्रहदशावर्णन	—	(सं०)	२८०	
गोम्मटसार [जीवकांड] भाषा	टोडरमल	(हि०)	१०	ग्रहफल	—	(हि०)	६६४
गोम्मटसारटीका	धर्मचन्द्र	(सं०)	६	ग्रहफल	—	(सं०)	२८०
गोम्मटसारटीका	सकलभूषण	(सं०)	१०	ग्रहों की ऊंचाई एवं आयुवर्णन	—	(हि०)	३१६
गोम्मटसारभाषा	टोडरमल	(हि०)	१०	घ			
गोम्मटसारपीठिकाभाषा	टोडरमल	(हि०)	११	घटकपर्पराकान्य	घटकपर्प	(सं०)	१६४
गोम्मटसारवृत्ति	केशववर्णी	(सं०)	१०	घग्घरनिसारणी	जिनहर्ष	(सं०)	३८७, ७३४
गोम्मटसारवृत्ति	—	(सं०)	१०	घण्टाकार्णकल्प	—	(सं०)	३४७
गोम्मटसार संदृष्टि	पं० टोडरमल	(हि०)	१२	घण्टाकार्णमन्त्र	—	(सं०)	३४७
गोम्मटसारस्तोत्र	—	(सं०)	३८७	घण्टाकार्णमन्त्र	—	(हि०)	६५०, ७६२
गोरखपदावली	गोरखनाथ	(हि०)	७६७	घण्टाकार्णवृद्धिकल्प	—	(हि०)	३४८
गोरखसंवाद	—	(हि०)	७६४	च			
गोविंदाष्टक	शङ्कराचार्य	(सं०)	७३३	चउबीसीठाणाचर्चा	—	(हि०)	७००
गौडीपार्श्वनाथस्तवन	जोधराज	(राज०)	६१७	चउसरप्रकरण	—	(प्रा०)	५४
गौडीपार्श्वनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	(राज०)	६१७ ६१६	चक्रवर्ति की बारहभावना	—	(हि०)	१०५
गौतमकुलक	गौतमस्वामी	(प्रा०)	१४	चक्र श्वरीस्तोत्र	—	(सं०)	३४८
गौतमकुलक	—	(प्रा०)	१४				३८७, ४३२, ४२८, ६४७
गौतमपृच्छा	—	(प्रा०)	६४३	चतुर्गति की पद्धती	—	(ग्रप०)	६४२
गौतमपृच्छा	समयसुन्दर	(हि०)	६१६	चतुर्दशगुणशानचर्चा	—	(हि०)	६८४
गौतमरासा	—	(हि०)	७५४	चतुर्दशतीर्थङ्करपूजा	—	(सं०)	६७२
गौतमस्वामीचरित्र	धर्मचन्द्र	(सं०)	१६३	चतुर्दशमार्गणाचर्चा	—	(हि०)	६७१
गौतमस्वामीचरित्रभाषा	पद्मालाल चौधरी	(सं०)	१६३	चतुर्दशसूत्र	विनयचन्द्र	(सं०)	१४
गौतमस्वामीरास	—	(हि०)	६१७	चतुर्दशसूत्र	—	(प्रा०)	१४
गौतमस्वामीसञ्ज्ञाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८	चतुर्दशांगबाह्यद्विवरण	—	(सं०)	१४
गौतमस्वामी सञ्ज्ञाय	—	(हि०)	६१८	चतुर्दशीकथा	टीकम	(हि०)	७५४, ७७३
गधकुटीपूजा	—	(सं०)	५१७				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चतुर्दशीकथा	डालूराम	(हि०)	७४२	चतुर्विंशतितीर्थङ्कराष्टक	चन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५६४
चतुर्दशीविधानकथा	—	(सं०)	२२२	चतुर्विंशतिपूजा	—	(हि०)	४७१
चतुर्दशीव्रतपूजा	—	(सं०)	४६६	चतुर्विंशतियज्ञविधान	—	(हि०)	३४८
चतुर्विधध्यान	—	(सं०)	१०५	चतुर्विंशतिविनती	चन्द्रकवि	(हि०)	६८५
चतुर्विंशति	गुणकीर्त्ति	(हि०)	६०१	चतुर्विंशतिव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६
चतुर्विंशतिगुणस्थानपीठिका	—	(सं०)	१८	चतुर्विंशतिस्थानक	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	१८
चतुर्विंशतिजयमाल	यति माघनन्दि	(सं०)	४६६	चतुर्विंशतिसमुच्चयपूजा	—	(सं०)	५०६
चतुर्विंशतिजिनपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	७२६	चतुर्विंशतिस्तवन	—	(सं०)	३८७ ४२६
चतुर्विंशतिजिनराजस्तुति	जितसिंहसूरि	(हि०)	७००	चतुर्विंशतिस्तुति	—	(प्रा०)	७७८
चतुर्विंशतिजिनस्तवन	जयसागर	(हि०)	६१६	चतुर्विंशतिस्तुति	विनोदीलाल	(हि०)	७७६
चतुर्विंशतिजिनस्तुति	जिनलाभसूरि	(सं०)	३८७	चतुर्विंशतिस्तोत्र	भूधरदास	(हि०)	४२६
चतुर्विंशतिजिनाष्टक	शुभचन्द्र	(सं०)	५७८	चतुर्लोकोगीता	—	(सं०)	६७६
चतुर्विंशतितोर्थङ्कर जयमाल	—	(प्रा०)	३८७	चतुर्लोकस्तोत्र	—	(सं०)	६६२
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	—	(सं०)	४७०, ६४५	चतुर्लोकस्तोत्र	—	(सं०)	३८८
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	ने तीचन्द्र पाटनी	(हि०)	४७२	चन्द्रकथा	लक्ष्मण	(हि०)	७४८
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	ब्रह्मदासलाल	(हि०)	४७३	चन्द्रकुंवर की वार्ता	—	(हि०)	७३४
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	मनरङ्गलाल	(हि०)	४७३	चन्दनबालारास	—	(हि०)	३६१
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	४७२	चन्दनमलयागिरीकथा	भद्रसेन	(हि०)	२२३
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	वृन्दावन	(हि०)	४७१	चन्दनमलयागिरीकथा	चतर	(हि०)	२२३
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	सुगनचन्द्र	(हि०)	४७३	चन्दनमलयागिरीकथा	—	(हि०)	७४८
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	सेवाराम साह	(हि०)	४७०	चन्दनषष्ठिकथा	ब्र० श्रुतसागर	(सं०)	२२४, ५१४
चतुर्विंशतितीर्थङ्करपूजा	—	(हि०)	४७३	चन्दनषष्ठिकथा	—	(सं०)	२२४
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तवन	हेमविमलसूरि	(हि०)	४३७	चन्दनषष्ठिकथा	पं० हरिचन्द्र	(प्रप०)	२४३
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र	कमलविजयगणि	(सं०)	३८८	चन्दनषष्ठीपूजा	खुशालचन्द्र	(हि०)	५१६
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति	चन्द्र	(हि०)	७२०	चन्दनषष्ठीविधानकथा	—	(प्रप०)	२४६
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति	समन्तभद्र	(सं०)	६४७	चन्दनषष्ठीव्रतकथा	आ० छत्रसेन	(सं०)	६३१
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तुति	—	(सं०)	३८८ ६२८	चन्दनषष्ठीव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	५१०
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र	माघनन्दि	(सं०)	३८८ ५७६	चन्दनषष्ठीव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२२४
चतुर्विंशतितीर्थङ्करस्तोत्र	—	(सं०)	३८८				२४४, २४६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चन्दनपष्ठीव्रतपूजा	चोखचन्द्र	(सं०)	४७३	चन्द्रहंसकथा	हर्षकवि	(हि०)	७१४
चन्दनपष्ठीव्रतपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	४७३	चन्द्रावलोक	—	(सं०)	३०६
चन्दनपष्ठीव्रतपूजा	विजयकीर्ति	(सं०)	५०६	चन्द्रोन्मूलन	—	(सं०)	२५६
चन्दनपष्ठीव्रतपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४७३	चमत्कारअतिशयक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	४७४
चन्दनपष्ठीव्रतपूजा	—	(सं०)	४७४	चमत्कारपूजा	स्वरूपचन्द्र	(हि०)	५११
चन्दनाचरित्र	शुभचन्द्र	(सं०)	१६४				६६३, ७५६
चन्दनाचरित्र	मोहनविजय	(गु०)	७६१	चम्पाशतक	चम्पाबाई	(हि०)	४३७
चन्द्रकीर्तिछन्द	—	(हि०)	३५६	चरचा	—	(प्रा०, हि०)	६६५
चन्द्रकुंवर की वार्ता	प्रतापसिंह	(हि०)	२२३	चरचा	—	(हि०)	६५२, ७५५
चन्द्रकुंवरकी वार्ता	—	(हि०)	७११	चरचावर्णन	—	(हि०)	१५
चन्द्रगुप्त के सोलह स्वप्न	—	(हि०)	७१८	चरचाशतक	द्यानतराय	(हि०)	१४
			७२३, ७३८				६६४, ७६४
चन्द्रगुप्तके सोलह स्वप्नोंका फल	—	(हि०)	६२१	चर्चासमाधान	भूधरदास	(हि०)	१५
चन्द्रप्रज्ञप्ति	—	(प्रा०)	३१६				६०६, ६४६, ७३३
चन्द्रप्रभवचरित्र	वीरनन्दि	(सं०)	१६४	चर्चासागर	चम्पालाल	(हि०)	१६
चन्द्रप्रभवकाव्यपञ्जिका	गुणनन्दि	(सं०)	१६५	चर्चासागर	—	(हि०)	१६
चन्द्रप्रभवचरित्र	शुभचन्द्र	(सं०)	१६४	चर्चासार	शिवजीलाल	(हि०)	१६
चन्द्रप्रभवचरित्र	दामोदर	(अप०)	१६५	चर्चासार	—	(हि०)	१६
चन्द्रप्रभवचरित्र	यशःकीर्ति	(अप०)	१६५	चर्चासंग्रह	—	(सं० हि०)	१५
चन्द्रप्रभवचरित्र	जयचन्द्र छाबड़ा	(हि०)	१६६	चर्चासंग्रह	—	(हि०)	१५, ७१०
चन्द्रप्रभवचरित्रपञ्जिका	—	(सं०)	१६५	चहुंगति चौपई	—	(हि०)	७६२
चन्द्रप्रभजिनपूजा	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	४७४	चाराणक्यनीति	चाराणक्य	(सं०)	३२६
चन्द्रप्रभजिनपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	४७४				७२३, ७६८
चन्द्रप्रभपुराण	हीरालाल	(हि०)	१४६	चाराणक्यनीतिभाषा	—	(हि०)	३२७
चन्द्रप्रभपूजा	—	(सं०)	५०६	चाराणक्यनीतिसारसंग्रह	मथुरेश भट्टाचार्य	(सं०)	३२७
चन्द्रलेहारास	मतिकुशल	(हि०)	३६१	चांदनपुरके महावीरकीपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	५४८
चन्द्रवरदाई की वार्ता	—	(हि०)	६७६	चामुण्डस्तोत्र	पृथ्वीधराचार्य	(सं०)	३८८
चन्द्रसागरपूजा	—	(हि०)	७३३	चामुण्डोपनिषद्	—	(सं०)	६०८
चन्द्रहंसकथा	टीकगचन्द्र	(हि०)	२२४, ६३६	चारभावना	—	(सं०)	५५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चारमाहकी पञ्चमी [मंडलचित्र] —			५२५	चिन्तामणिसार्वर्षनाथपूजा एवं स्तोत्र	लक्ष्मीसेन	(सं०)	४२३
चारमित्रों की कथा	अजयराज	(हि०)	२२५	चिन्तामणिसार्वर्षनाथपूजास्तोत्र	—	(सं०)	५६७
चारित्रपूजा	—	(सं०)	६५८	चिन्तामणिसार्वर्षनाथस्तवन	—	(सं०)	६४५
चारित्रभक्ति	—	(सं०)	६२७, ६३३	चिन्तामणिसार्वर्षनाथस्तवन	लालचन्द्र	(राज०)	६१७
चारित्रभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०	चिन्तामणिसार्वर्षनाथस्तवन	—	(हि०)	४५१
चारित्रशुद्धिविधान	श्रीभूषण	(सं०)	४७४	चिन्तामणिसार्वर्षनाथस्तोत्र	—	(सं०)	५६३
चारित्रशुद्धिविधान	शुभचन्द्र	(सं०)	४७५				६१४, ६५०
चारित्रशुद्धिविधान	सुमतिब्रह्म	(सं०)	४७५	चिन्तामणिसार्वर्षनाथस्तोत्र [मंत्र सहित]		(सं०)	३८८
चारित्रसार	श्रीमन्नामुण्डराय	(सं०)	५५	चिन्तामणिपूजा [वृहद्]	विद्याभूषणमूरि	(सं०)	४७५
चारित्रसार	—	(सं०)	५६	चिन्तामणिपूजा	—	(सं०)	६४७
चारित्रसारभाषा	मन्नालाल	(हि०)	५६	चिन्तामणियन्त्र	—	(सं०)	३४८
चारुदत्तचरित्र	कल्याणकीर्ति	(हि०)	१६७	चिन्तामणिलग्न	—	(सं०)	५६५
चारुदत्तचरित्र	उदयलाल	(हि०)	१६६	चिन्तामणिस्तवन	लक्ष्मीसेन	(सं०)	७६१
चारुदत्तचरित्र	भारामल्ल	(हि०)	१६८	चिन्तामणिस्तोत्र	—	(सं०)	३४८
चारों गतियोंकी आयु आदिका वर्णन		(हि०)	७६३				४७५, ६४५
चिकित्सासार	—	(हि०)	२६८	चिद्धिविलाल	दीपचन्द्र कासलीवाल	(हि०)	१०५
चिकित्साजनम	उपाध्याय विद्यापति	(सं०)	२६८	चूनडी	विनयचन्द्र	(ग्र०)	६४१
चित्र तीर्थङ्कर	—		५६४	चूनडीरास	विनयचन्द्र	(ग्र०)	६२८
चित्रबंधस्तोत्र	—	(सं०)	३८६, ४२६	चूर्णाधिकार	—	(सं०)	२६७
चित्रमेनकथा	—	(सं०)	२२५	चेतनकर्मचरित्र	भगवतीदास	(हि०)	६०५, ६८६
चित्रपभास	—	(हि०)	७०७	चेतनगीत	जिनदास	(हि०)	७६२
चिन्तामणियजमाल	ठक्कुरसी	(हि०)	७३८	चेतनगीत	मुनि सिंहनन्दि	(हि०)	७३८
चिन्तामणियजमाल	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	६५५	चेतनचरित्र	भगवतीदास	(हि०)	६१३
चिन्तामणियजमाल	मनाथ	(हि०)	६४४				६४८, ७४०
चिन्तामणिसार्वर्षनाथ [मण्डलचित्र]			५२४	चेतनढाल	फतेहमल	(हि०)	४५२
चिन्तामणिसार्वर्षनाथजयमाल	सोम	(ग्र०)	७६२	चेतननारीसञ्जाय	—	(हि०)	६१६
चिन्तामणिसार्वर्षनाथजयमालस्तवन	—	(सं०)	३८८	चेतावनीगीत	नाथू	(हि०)	७५७
चिन्तामणिसार्वर्षनाथपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४७५	चेतनासञ्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	४३७
			६०६, ६४५, ७४५	चेत्यपरिपाटी	—	(हि०)	४३७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठसं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	क्रमसं०
चैत्यवंदना	सकलचन्द्र	(सं०)	६६८	चौबीसतीर्थङ्कररास	—	(हि०)	७२२
चैत्यवंदना	—	(सं०)	३८६	चौबीसतीर्थङ्करवर्णन	—	(हि०)	४३८
			३६२, ६५०, ७१८	चौबीसतीर्थङ्करस्तवन	देवनन्दि	(सं०)	६०६
चैत्यवंदना	—	(हि०)	४२६, ४३७	चौबीसतीर्थङ्करस्तवन	सूणकरणकासलीवाल	(हि०)	४३८
चौभाराधनाउद्योतककथा	जोधराज	(हि०)	२२५	चौबीसतीर्थङ्करस्तवन	—	(हि०)	६५०
चौतीस अतिशयभक्ति	—	(सं०)	६२७	चौबीसतीर्थङ्करस्तुति	—	(अग०)	६२५
चौदश की जयमाल	—	(हि०)	७४२	चौबीसतीर्थङ्करस्तुति	ब्रह्मदेव	(हि०)	४३८
चौदहगुणस्थानचर्चा	अश्वयराज	(हि०)	१६	चौबीसतीर्थङ्करस्तुति	—	(हि०)	६०१, ६६४
चौदहपूजा	—	(सं०)	४७६	चौबीसतीर्थङ्करों के चिह्न	—	(सं०)	६२३
चौदहमार्गगा	—	(हि०)	१६	चौबीसतीर्थङ्करोंके पञ्चकल्याणक की तिथियां—	(हि०)	५३८	
चौदहविद्या तथा कारखाने जातके नाम	—	(हि०)	७५६	चौबीसतीर्थङ्करों की वंदना	—	(हि०)	७७५
चौबीसगणधरस्तवन	गुणकीर्त्ति	(हि०)	६८६	चौबीसदण्डक	दौलतराम	(हि०)	५६
चौबीसजिनमातपितास्तवन	आनन्दसूरि	(हि०)	६१६		४२६, ४४८, ५११, ६७२, ७६०		
चौबीसजिनदजयमाल	—	(अप०)	६३७	चौबीसदण्डकविचार	—	(हि०)	७३२
चौबीसजिनस्तुति	सोमचन्द्र	(हि०)	४३७	चौबीसस्तवन	—	(हि०)	३८६
चौबीसठाणाचर्चा	—	(सं०)	१८, ७६५	चौबीसोमहाराज [मंडलचित्र]	—		५२४
चौबीसठाणाचर्चा	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	१६	चौबीसो विनती	भ० रत्नचन्द्र	(हि०)	६४६
			७२०, ६६६	चौबीसोस्तवन	जयसागर	(हि०)	७७६
चौबीसठाणाचर्चा	—	(हि०)	१८	चौबीसोस्तुति	—	(हि०)	४३७, ७७३
			६२७, ६७०, ६८०, ६८६, ६६४, ७८४	चौरासीप्रसादना	—	(हि०)	५७
चौबीसठाणाचर्चावृत्ति	—	(सं०)	१८	चौरासीगोत	—	(हि०)	६८०
चौबीसतीर्थङ्करतीर्थपरिचय	—	(हि०)	४३७	चौरासीगोत्रोत्पत्तिवर्णन	—	(हि०)	७८६
चौबीसतीर्थङ्करपरिचय	—	(हि०)	५६४	चौरासीजातिकी जयमाल	बिनोदीलाल	(हि०)	३७०
			६२१, ७००, ७५१	चौरासीजातिछन्द	—	(हि०)	३७०
चौबीसतीर्थङ्करपूजा [समुच्चय]	द्यानतराय	(हि०)	७०५	चौरासी जातिकी जयमाल	—	(हि०)	७४०
चौबीसतीर्थङ्करपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	६६६	चौरासीजाति भेद	—	(हि०)	७४८
			७१२, ७२७, ७७२	चौरासीजातिवर्णन	—	(हि०)	७४७
चौबीसतीर्थङ्करपूजा	—	(हि०)	५६२, ७२७	चौरामीन्यात की जयमाल	—	(हि०)	७४७
चौबीसतीर्थङ्करभक्ति	—	(सं०)	६०४	चौरामीन्यातमाला	ब्र० जिनदास	(हि०)	७६५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
चौरासीबोल	कवरपाल	(हि०)	७०१	छंदशिरोमंग	सोमनाथ	(हि०)	३५५
चौरासीलाखउत्तरगुण	—	(हि०)	५७	छंदसंग्रह	—	(हि०)	३८६
चौसठरुद्धिपूजा	स्वरूपचन्द	(हि०)	४७६	छदानुशासनवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	३०६
चौसठकला	—	(हि०)	६०६	छद्मगतक	हृषीकृति	(सं०)	३०६
चौसठयोगिनीयन्त्र	—	(सं०)	६०३	ज			
चौसठयोगिनीस्तोत्र	—	(सं०)	३४८, ४२४	जकडी	दरिगह	(हि०)	७५५, ६६१
चौसठशिवकुमारकांजी की पूजा	ललितकीर्ति (सं०)		५१४	जकडी	द्यानतराय	(हि०)	६४३ ६५०, ७१६
छ				जकडी	देवेन्द्रकीर्ति	(हि०)	६२१
छठा आरा का विस्तार	—	(हि०)	३७०	जकडी	नेमिचन्द्र	(हि०)	६६२
छत्तीस कारखानोंके नाम	—	(हि०)	६८०	जकडी	रामकृष्ण	(हि०)	४३८
छहढाला	किशन	(हि०)	६७४	जकडी	रूपचन्द	(हि०)	६५० ६६१, ७५२, ७५५
छहढाला	द्यानतराय	(हि०)	६५२ ५७३, ६७४, ७४७	जकडी	—	(हि०)	७६३
छहढाला	दौलतराम	(हि०)	५७ ७०७, ७४६	जगन्नाथनारायणकवच	—	(हि०)	६०१
छहढाला	बुधजन	(हि०)	५७	जगन्नाथाष्टक	शङ्कराचार्य	(सं०)	३८६
छातीमुखकी श्रौषधि का नुसखा	—	(हि०)	५७३	जन्मकुंडली [महाराजा सवाई जगतसिंह]	—	(सं०)	७७६
छिनवै क्षेत्रपाल व चौबीस तीर्थङ्क [मंडलचित्र]	—	(हि०)	५२५	जन्मकुंडलीविचार	—	(हि०)	६०३
छियालीसगुण	—	(हि०)	५६४	जन्मपत्रो दीवाण ग्रान्दीलाल	—	(हि०)	७६०
छियालीसठाणा	ब्र० रायमल्ल	(सं०)	७६५	जम्बूकुमारमज्जाय	—	(हि०)	४३८
छियालीसठाणाचर्चा	—	(सं०)	१६	जम्बूद्वीपपूजा	पांडे जिनदास	(सं०)	४७७ ५०६, ५३७
छेदपिण्ड	इन्द्रनन्द	(प्रा०)	५७	जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३१६
छोटादर्शन	बुधजन	(हि०)	३६८	जम्बूद्वीपफल	—	(सं०)	१६
छोतीनिवारणविधि	—	(हि०)	४७६	जम्बूद्वीप सम्बन्धी पञ्चमेखवर्गान	—	(हि०)	७६६
छंदकीयकवित्त	भ० सुरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	३५५	जम्बूस्वामीचरित्र	ब्र० जिनदास	(सं०)	१६८
छंदकोश	—	(सं०)	३१०	जम्बूस्वामीचरित्र	पं० राजमल्ल	(सं०)	१६६
छंदकोश	रत्नशेखरसूरि	(सं०)	३०६	जम्बूस्वामीचरित्र	विजयकीर्ति	(हि०)	१६६
छंदशातक	चुन्दावनदास	(हि०)	३२७	जम्बूस्वामीचरित्रभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१६६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
जम्बूस्वामीचरित्र	नाथूराम	(हि०)	१६६	जिनगुणसंपत्तिपूजा	केशवसेन	(स०)	५३७
जम्बूस्वामीचरित्र	—	(हि०)	६३६	जिनगुणसंपत्तिपूजा	रत्नचन्द	(सं०)	४७७, ५११
जम्बूस्वामीचौपई	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७१०	जिनगुणसंपत्तिपूजा	—	(सं०)	५३६
जम्बूस्वामी पूजा	—	(हि०)	४७७	जिनगुणस्तवन	—	(सं०)	५७५
जयकुमार सुलोचना कथा	—	(हि०)	२२५	जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	भ० जिणचन्द्र	(सं०)	५५७
जयतिहुवणस्तोत्र	अभयदेवसूरि	(प्रा०)	७५४	जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	—	(सं०)	४३३
जयपुरका प्राचीन ऐतिहासिकवर्णन	—	(हि०)	३७०	जिनचरित्र	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५
जयपुरके मंदिरोंकी वंदना स्वरूपचन्द	हि०) ४३८, ५३८			जिनचरित्रकथा	—	(सं०)	१६६
जयमाल [मालारोहण]	—	(अप०)	५७३	जिनचैत्यबंदना	—	(सं०)	३६०
जयमाल	रायचन्द	(हि०)	४७७	जिनचैत्यालयजयमाल	रत्नभूषण	(हि०)	५६४
जलगालणरास	ज्ञानभूषण	(हि०)	३६२	जिनचौबीसभवान्तररास	विमलेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	५७८
जलयात्रा [तीर्थोदकदानविधान]	—	(सं०)	४७७	जिनदत्तचरित्र	गुणभद्राचार्य	(सं०)	१६६
जलयात्रा	ब्र० जिनदास	(सं०)	६८३	जिनदत्तचरित्रभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१७०
जलयात्रापूजाविधान	—	(हि०)	४७७	जिनदत्त चौपई	रत्न कवि	(हि०)	६८२
जलयात्राविधान	पं० आशाधर	(सं०)	४७७	जिनदत्तसूरिगीत	सुन्दरगणि	(हि०)	६१८
जलहरतेलाविधान	—	(हि०)	४७७	जिनदत्तसूरि चौपई	जयसागर उपाध्याय	(हि०)	६१८
जलालगाहाणी की वार्ता	—	(हि०)	४७७	जिनदर्शन	भूधरदास	(हि०)	६०५
जातकसार	नाथूराम	(हि०)	६८४	जिनदर्शनस्तुति	—	(सं०)	४२४
जातकाभरण [जातकालङ्कार]	—	(हि०)	७६३	जिनदर्शनाष्टक	—	(सं०)	३६०
जातकवर्णन	—	(सं०)	५७४	जिनपञ्चीसी	नवलराम	(हि०)	६५१
जाप्य इष्ट अनिष्ट [माला फेरनेकी विधि]	—	(सं०)	५५५		६६३, ७०४, ७२५, ७५५		
जिनकुशलकी स्तुति	साधुकीर्त्ति	(हि०)	७७८	जिनपञ्चीसी व अन्य संग्रह	—	(हि०)	४३८
जिनकुशलसूरिस्तवन	—	(हि०)	६१८	जिनपिंगलछंदकोश	—	(हि०)	७०६
जिनगुणउच्चारण	—	(हि०)	६३८	जिनपुरन्दरव्रतपूजा	—	(सं०)	४७८
जिनगुणपञ्चीसी	सेवगराम	(हि०)	४४७	जिनपूजापुरन्दरकथा	सुशालचन्द	(हि०)	२४४
जिनगुणमाला	—	(हि०)	३६०	जिनपूजापुरन्दरविधानकथा	अमरकीर्त्ति	(अप०)	२४६
जिनगुणसंपत्ति [मंडलचित्र]	—		५२४	जिनपूजाफलप्राप्तिकथा	—	(सं०)	४७८
जिनगुणसंपत्तिकथा	—	(सं०)	२२५, २४६	जिनपूजाविधान	—	(हि०)	६५२
जिनगुणसंपत्तिकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२८	जिनपञ्जरस्तोत्र	कमलप्रभाचार्य	(सं०)	३६०, ४३२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
जिनयज्ञरस्तोत्र	—	(सं०)	३६०	६५२, ६८३, ६८६, ६९२, ७१२, ७१५, ७२०, ७५२, ७४० ।			
			४२४, ४३१, ४३३, ६४७, ६४८, ६६३	जिनसहस्रनाम	जिनसेनाचार्य	(सं०)	३६३
जिनयज्ञरस्तोत्रभाषा	स्वरूपचन्द्र	(हि०)	५११				४२५, ५७३, ७०७, ७४७
जिनभक्तिपद	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	४३८, ६२१	जिनसहस्रनाम	सिद्धसेन दिवाकर	(सं०)	३६३
जिनमुखावलोकनकथा	—	(सं०)	२४६	जिनसहस्रनाम [लघु]	—	(सं०)	३६३
जिनयज्ञकल्प [प्रतिष्ठासार]	पं० आशाधर	(सं०)	४७८	जिनसहस्रनामभाषा	वनारसीदास	(हि०)	६६०, ७४६
			६०८, ६३६, ६६७, ७६१	जिनसहस्रनामभाषा	नाथूराम	(हि०)	३६३
जिनयज्ञविधान	—	(सं०)	४७६, ६५५	जिनसहस्रनामटीका	अमरकीर्त्ति	(सं०)	३६३
जिनयशमङ्गल	सेवगराम	(हि०)	४४७	जिनसहस्रनामटीका	श्रतसागर	(सं०)	३६३
जिनराजमहिमास्तोत्र	—	(हि०)	५७६	जिनसहस्रनामटीका	—	(सं०)	३६३
जिनरात्रिविधानकथा	—	(सं०)	२४२	जिनसहस्रनामपूजा	धर्मभूषण	(सं०)	४८०
जिनरात्रिविधानकथा	नरसेन	(अप्र०)	६२८	जिनसहस्रनामपूजा	—	(सं०)	५१०
जिनरात्रिविधानकथा	—	(अप्र०)	२४६, ६३१	जिनसहस्रनामपूजा	चैनसुख लुहाड़िया	(हि०)	४८०
जिनरात्रिव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०	जिनसहस्रनामपूजा	स्वरूपचन्द्र विलाहा	(हि०)	४८०
जिनलाहू	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७३८	जिनस्तपन [अभिषेकपाठ]	—	(सं०)	४७६, ५७४
जिनवरकी विनती	देवाशंडे	(हि०)	६८५	जिनसहस्रनामपूजा	—	(हि०)	४८१
जिनवर दर्शन	पद्मनन्दि	(प्रा०)	३६०	जिनस्तवन	कनककीर्त्ति	(हि०)	७७६
जिनवरव्रतजयमाल	ब्र० गुलाल	(हि०)	३६०	जिनस्तवन	दौलतराम	(हि०)	७०७
जिनवरस्तुति	—	(हि०)	७६७	जिनस्तवनद्वित्रिशिका	—	(सं०)	३६१
जिनवरस्तोत्र	—	(सं०)	३६०, ५७८	जिनस्तुति	शोभनमुनि	(सं०)	३६१
जिनवाणीस्तवन	जगतराम	(हि०)	३६०	जिनस्तुति	जोधराज गोदीका	(हि०)	४७६
जिनशतकर्टाका	नरसिंह	(सं०)	३६१	जिनस्तुति	रूपचन्द्र	(हि०)	७०२
जिनशतकटीका	शंबुसाधु	(सं०)	३६०	जिनसंहिता	सुमतिकीर्त्ति	(हि०)	७६३
जिनशतकालङ्कार	समन्तभद्र	(सं०)	३६१	जिनस्तुति	—	(हि०)	६१८
जिनशासनभक्ति	—	(प्रा०)	६३८	जिनानन्तर	वीरचन्द्र	(हि०)	६२७
जिनसप्तसई	—	(हि०)	७०६	जिनाभिषेकनिरणय	—	(हि०)	४८१
जिनसहस्रनाम	पं० आशाधर	(सं०)	३६१	जिनेन्द्रपुराण	भ० जिनेन्द्रभूषण	(सं०)	१४६
			५४०, ५६६, ६०५, ६०७, ६३६, ६४६, ६४७, ६५५,	जिनेन्द्रभक्तिस्तोत्र	—	(हि०)	४२८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
जिनेन्द्रस्तोत्र	—	(सं०)	६०६	४२६, ६५२, ६७०, ६८६, ६९८, ७०६, ७१०, ७१३,			
जिनोपदेशोपकारस्मरस्तोत्र	—	(सं०)	४१३	७१६, ७३२, ७५४			
जिनोपकारस्मरणस्तोत्र	—	(सं०)	४२६	जैनसदाचार मार्तण्डनामक पत्रका प्रत्युत्तर	बा० दुलीचन्द्र	(हि०)	२०
जिनोपकारस्मरणस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	३६३				
जीवकायासम्भाष्य	भुवनकीर्ति	(हि०)	६१६	जैनागारप्रक्रिया	बा० दुलीचन्द्र	(हि०)	५७
जीवकायासम्भाष्य	राजसमुद्र	(हि०)	६१६	जैनेन्द्रमहावृत्ति	अभयनन्दि	(सं०)	२६०
जीवजीतसंहार	जैतराम	(हि०)	२२५	जैनेन्द्रव्याकरण	देवनन्दि	(सं०)	२५६
जीवन्धरचरित्र	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	१७०	जोगीरासो	पांडे जिनदास	(हि०)	१०५
जीवन्धरचरित्र	नथमल खिलाला	(हि०)	१७०	६०१, ६२२, ६३६, ६५२, ७०३, ७२३, ७४५, ७६१			
जीवन्धरचरित्र	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१७१	जोधराजपञ्चीसी	—	(हि०)	७६०
जीवन्धरचरित्र	—	(हि०)	१७१	ज्येष्ठजिनवर [मंडलषिष्य]	—		५२५
जीवविचार	मानदेवसुरि	(प्रा०)	६१६	ज्येष्ठजिनवरउद्यापनपूजा	—	(सं०)	५०६
जीवविचार	—	(प्रा०)	७३२	ज्येष्ठजिनवरकथा	—	(सं०)	२२५
जीव वेलड़ी	देवीदास	(हि०)	७५७	ज्येष्ठजिनवरकथा	जसकीर्ति	(हि०)	२२५
जीवसमास	—	(प्रा०)	७६५	ज्येष्ठजिनवरपूजा	श्रुतसागर	(सं०)	७६५
जीवसमासटिप्पण	—	(प्रा०)	१६	ज्येष्ठजिनवरपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	५१६
जीवसमासभाषा	—	(प्रा० हि०)	१६	ज्येष्ठजिनवरपूजा	—	(सं०)	४८१
जीवस्वरूपवर्णन	—	(सं०)	१६	ज्येष्ठजिनवरपूजा	—	(हि०)	६०७
जीवाजीवविचार	—	(सं०)	१६	ज्येष्ठजिनवरलाहान	ब्र० जिनदास	(सं०)	७६५
जीवाजीवविचार	—	(प्रा०)	१६	ज्येष्ठजिनवरव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२४४, ७३१
जैनगायत्रीमन्त्रविधान	—	(सं०)	३४८	ज्येष्ठजिनवरव्रतपूजा	—	(सं०)	४८१
जैनपञ्चीसी	नवलराम	(हि०)	६७०	ज्येष्ठपूर्णिमाकथा	—	(हि०)	६८२
			६७५, ६६४	ज्योतिषचर्चा	—	(सं०)	५६७
जैनबद्री मूढबद्रीकी यात्रा	सुरेन्द्रकीर्ति	(हि०)	३७०	ज्योतिष	—	(सं०)	७१४
जैनबद्री देशकी पत्रिका	मजलसराय	(हि०)	७०३, ७१८	ज्योतिषयत्नमाला	श्रीपति	(सं०)	६७२
जैनमतका संकल्प	—	(हि०)	५६२	ज्योतिषशास्त्र	—	(सं०)	६६५
जैनरक्षास्तोत्र	—	(सं०)	६४७	ज्योतिषसार	कृपाराम	(हि०)	५६८
जैनविवाहपद्धति	—	(सं०)	४८१	ज्वरचिकित्सा	—	(सं०)	२६८
जैनशतक	भूधरदास	(हि०)	३२७	ज्वरतिमिरभास्कर	चामुण्डराय	(सं०)	२६८
				ज्वरलक्षण	—	(हि०)	२६८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ज्वालामालिनीस्तोत्र	—	(सं०)	४२४	जानांकुश	—	(सं०)	६३५
४२८, ४३३, ५६१, ६०८, ६४६, ६४७, ६४६				जाकांकुशपाठ	भद्रबाहु	(सं०)	४२०
ज्ञानचिन्तामणि	मनोहरदास	(हि०)	५८	जानांकुशस्तोत्र	—	(सं०)	४२६
			७१४, ७३६	जानार्णव	शुभचन्द्राचार्य	(सं०)	१०६
ज्ञानदर्पण	साह दीपचन्द्र	हि०	१०५	जानार्णवटीका [गद्य]	श्रुतसागर	(सं०)	१०७
ज्ञानदीपक	—	(हि०)	१३०, ६६०	जानार्णवटीका	नयाविलास	(सं०)	१०८
ज्ञानदीपकवृत्ति	—	(हि०)	१३१	जानार्णवभाषा	जयचंद्र झाबड़ा	(हि०)	१०८
ज्ञानपञ्चोसी	बनारसीदास	हि०	६१४	जानार्णवभाषाटीका	लाटिथि विमलगणि	(हि०)	१०८
६३४, ६५०, ६८५, ६८६, ७४३, ७७५				ज्ञानोपदेश के पद्य	—	(हि०)	६६२
ज्ञानपञ्चमीस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	४३८	ज्ञानोपदेशबत्तीसी	—	(हि०)	६६२
ज्ञानपदवी	मनोहरदास	(हि०)	७१८				
ज्ञानपञ्चविंशतिका व्रतोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	४८१				
			५३६				
ज्ञानपञ्चभ्रुवृहदस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	७७६	भखड़ी श्री मन्दिरजी की	—	(हि०)	४३८
ज्ञानपिण्डकी त्रिंशतिपद्धतिका	—	(अप०)	६३५	भाड़ा देनेका मन्त्र	—	(हि०)	५७१
ज्ञानपूजा	—	(सं०)	६५८	भांभरियानु चोढाल्या	—	(हि०)	४३८
ज्ञानपैडो	मनोहरदास	(हि०)	७५७	भूलना	रंगाराम	(हि०)	७५७
ज्ञानबावनी	मतिशेखर	(हि०)	७७२				
ज्ञानभक्ति	—	(सं०)	६२७				
ज्ञानसूर्योदयनाटक	वादिचन्द्रसूरि	(सं०)	३१६				
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा पारमदाम	निगौल्या	(हि०)	३१७				
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	बखतावरमल	(हि०)	३१७				
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	भगवतीदास	(हि०)	३१७				
ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	भागचंद्र	(हि०)	३१७				
ज्ञानस्वरोदय	चरणदास	(हि०)	७५६				
ज्ञानस्वरोदय	—	(हि०)	७५६				
ज्ञानानन्द	रायमल्ल	(हि०)	५८				
ज्ञानबावनी	बनारसीदास	(हि०)	१०५				
ज्ञानसागर	मुनि पद्मसिंह	(प्रा०)	१०५				

भ

ट-ठ-ड-ढ-ण

टंडाणागीत	बूचराज	(हि०)	७५०
ठाणांग सूत्र	—	(सं०)	२०
डोकरी अर राजा भोजराज की वार्ता	—	(हि०)	६६५
ढाढसी गाथा	—	(प्रा०)	६२८
ढाढसी गाथा	ढाढसी मुनि	(प्रा०)	७०७
ढालगण	—	(हि०)	३२७
ढाल मङ्गलमकी	—	(हि०)	६५५
ढोला मारुणी की बात	—	(हि०)	२२६, ६००
ढोला मारुणी की वार्ता	—	(हि०)	७११
ढोला मारुणी चौपाई कुशल लाभ	(हि०) राज०	२२५	
णवकार पंचविंशति पूजा	—	(सं०)	५१०
णमोकारकल्प	—	(सं०)	३४८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
गणोकारच्छंद	त्र० लालसागर	(हि०)	६८३	तत्त्वार्थबोध	—	(हि०)	२१
गणोकारपच्चीसी	ऋषि ठाकुरसी	(हि०)	४३६	तत्त्वार्थबोध	बुधजन	(हि०)	२१
गणोकारवाथडीजयमाल	—	(अ०)	६३७	तत्त्वार्थबोधिनीटीका	—	(सं०)	२१
गणोकारपैतीसी	कनककीर्ति	(सं०)	५१७, ४८२, ६७६	तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	प्रभाचन्द्र	(सं०)	२१
गणोकारपैतीसी	—	(प्रा०)	३४८	तत्त्वार्थराजवातिक	भट्टाकंकदेव	(सं०)	२२
गणोकारपैतीसीपूजा	अक्षयराम	(सं०)	४८२, ५१७, ५३६	तत्त्वार्थराजवातिकभाषा	—	(हि०)	२२
गणोकारपंचासिकापूजा	—	(सं०)	५४०	तत्त्वार्थवृत्ति	पं० योगदेव	(सं०)	२२
गणोकारमंत्र कथा	—	(हि०)	२२६	तत्त्वार्थसार	अमृतचन्द्राचार्य	(सं०)	२२
गणोकारस्तवन	—	(हि०)	३६४	तत्त्वार्थसारदीपक	भ० सकलकीर्ति	(सं०)	२३
गणोकारादि पाठ	—	(प्रा०)	३६४	तत्त्वार्थसारदीपकभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	२३
गणगण्ड	—	(अ०)	६४२	तत्त्वार्थ सूत्र	उमास्वामि	(सं०)	४२५, ४२७, ५३७, ५६१, ५६६ ५७३, ५६४, ५६५, ५६६, ६०३ ६०५, ६३३, ६३७, ६४०, ६४४, ६४६, ६४७, ६४८, ६५० ६५२, ६५६, ६७३, ६७५, ६८१, ६८६, ६६४, ६८६, ७००, ७०३, ७०४, ७०५, ७०७, ७१०, ७२७, ७३१, ७४१, ७७६, ७८७, ७८८, ७८९,
गोमिणाहचारिउ	लक्ष्मणदेव	(अ०)	१७१	तत्त्वार्थसूत्रटीका	श्रुतसागर	(सं०)	२८
गोमिणाहचारिउ	दामोदर	(अ०)	१७१	तत्त्वार्थसूत्रटीका	आ० कनककीर्ति	(हि०)	३०, ७२६
त				तत्त्वार्थसूत्रटीका	छोटीलाल जैसवाल	(हि०)	३०
तकराक्षरीस्तोत्र	—	(सं०)	३६४	तत्त्वार्थसूत्रटीका	पं० राजमल्ल	(हि०)	३०
तत्वकौमुभ	पन्नालाल संघी	(हि०)	१०	तत्त्वार्थसूत्रटीका	जयचंद्र छाबडा	(हि०)	२६
तत्वज्ञानतरंगिणी	भ० ज्ञानभूषण	(सं०)	५८	तत्त्वार्थसूत्रटीका	पांडे जयवंत	(हि०)	२६
तत्वदीपिका	—	(हि०)	२०	तत्त्वार्थसूत्रटीका	—	(हि०)	६८६
तत्वधर्माग्न	—	(सं०)	३२८	तत्त्वार्थदशाध्यायपूजा	दयाचंद्र	(सं०)	४८२
तत्वबोध	—	(सं०)	१०८	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	शिखरचन्द्र	(हि०)	३०
तत्ववर्णन	शुभचन्द्र	(सं०)	२०२	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	२८
तत्वसार	देवसेन	(प्रा०)	२०, ५७५, ६३७, ७३७, ७४४, ७४७	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	—	(हि०)	३०
तत्वसारभाषा	द्यानतराय	(हि०)	७४७	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	—	(हि०)	३०
तत्वसारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	२१	तत्त्वार्थसूत्र भाषा	—	(हि०)	३१
तत्त्वार्थदर्पण	—	(सं०)	२१	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति	सिद्धसेन गण	(सं०)	२८
तत्त्वार्थबोध	—	(सं०)	२१	तत्त्वार्थसूत्र वृत्ति	—	(सं०)	२८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
तद्वित प्रक्रिया	—	(सं०)	२६०	तीर्थमालास्तवन	समयसुन्दर	(राज०)	६१७
तपलक्षण कथा	खुशालचंद्र	(हि०)	५१६	तीर्थावलीस्तोत्र	—	(सं०)	४३२
तमाखू की जयमाल	आणंदमुनि	(हि०)	४३८	तीर्थोदकविधान	—	(सं०)	६३६
तर्कदीपिका	—	(सं०)	१३१	तीर्थकरजकडी	हर्षकीर्ति	(हि०)	६२२, ६४४
तर्कप्रकरण	—	(सं०)	१३१	तीर्थकरपरिचय	—	(हि०)	३७०
तर्कप्रमाण	—	(सं०)	१३२				६५०, ६५२
तर्कभाषा	केशव मिश्र	(सं०)	१३२	तीर्थकरस्तोत्र	—	(सं०)	४३०
तर्कभाषा प्रकाशिका	बालचन्द्र	(सं०)	१३२	तीर्थकरों का अंतराल	—	(हि०)	३७०
तर्करहस्य दीपिका	गुणरत्न सूरि	(सं०)	१३२	तीर्थकरों के ६२ स्थान	—	(हि०)	७२०
तर्कसंग्रह	अन्नभट्ट	(सं०)	१३२	तीसचौबीसी	—	(हि०)	६५१, ७५८
तर्कसंग्रहटीका	—	(सं०)	१३३	तीसचौबीसीचौपई	श्याम	(हि०)	७५८
तारातंबोल की कथा	—	(हि०)	७४२	तीसचौबीसीनाम	—	(हि०)	४८३
तार्किकशिरोमणि	रघुनाथ	(सं०)	१३३	तीसचौबीसीपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	५३७
तीनचौबीसी	—	(हि०)	६६३	तीसचौबीसीपूजा	वृन्दावन	(हि०)	४८३
तीनचौबीसीनाम	—	(हि०)	५६६	तीसचौबीसीसमुच्चयपूजा	—	(हि०)	४८३
			६७०, ६६३, ७०३, ७५८	तीसचौबीसीस्तवन	—	(सं०)	३६४
तीनचौबीसीपूजा	—	(सं०)	४८२	तेईसबोलबिबरण	—	(हि०)	७३२
तीनचौबीसीपूजा	नेमीचन्द्र	(हि०)	४८२	तेरहकाठिया	बनारसीदास	(हि०)	४२६
तीनचौबीसीपूजा	—	(हि०)	४८२				६०४, ७५०
तीनचौबीसीरास	—	(हि०)	६५१	तेरहद्वीपपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	४८३
तीनचौबीसी समुच्चय पूजा	—	(सं०)	४८२	तेरहद्वीपपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	४८४
तीन मियां की जकडी	धनराज	(हि०)	६२३	तेरहद्वीपपूजा	—	(सं०)	४८४
तीनलोककथन	—	(हि०)	३१६	तेरहद्वीपपूजा	लालजीत	(हि०)	४८४
तीनलोक चार्ट	—	(हि०)	३१६	तेरहद्वीपपूजा	—	(हि०)	४८४
तीनलोकपूजा [त्रिलोक सार पूजा, त्रिलोक पूजा]				तेरहद्वीपपूजाविधान	—	(सं०)	४८४
	नेमीचन्द्र	(हि०)	४८३	तेरहपंधपञ्चीसी	माणिकचन्द्र	(हि०)	४४८
तीनलोकपूजा	टेकचन्द्र	(हि०)	४८३	तेरहपन्थबीसपन्थभेद	—	(हि०)	७३३
तीनलोकवर्णन	—	(हि० ग०)	३१६	तंत्रसार	—	(हि०)	७३४
तीर्थमालास्तवन	तेजरास	(हि०)	६१७	त्रयोविंशतिका	—	(सं०)	१०६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
त्रिकाण्डशेषसूची [अमरकोश]	अमरसिंह	(सं०)	२७४	त्रिलोकवर्णन	—	(हि०)	६६०
त्रिकाण्डशेषामिधान	पुरुषोत्तमदेव	(सं०)	२७५			७००	७०२
त्रिकालचतुर्दशीपूजा	—	(सं०)	६६६	त्रिलोकसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३२०
त्रिकालचौबीसी	—	(हि०)	६५१	त्रिलोकसारकथा	—	(हि०)	२२७
त्रिकालचौबीसीकथा [रोटतीज]	अभ्रदेश	(सं०)	२२६, २४२	त्रिलोकसारचौपई	स्वरूपचंद्र	(हि०)	५११
त्रिकालचौबीसीकथा [रोटतीज]	गुणनन्दि	(सं०)	२२६	त्रिलोकसारपूजा	अभयनन्दि	(सं०)	४८५
त्रिकालचौबीसीनाम	—	(सं०)	४२४	त्रिलोकसारपूजा	— (सं०)	४८५, ५१३	
त्रिकालचौबीसीपूजा	त्रिभुवनचंद्र	(सं०)	४८४,	त्रिलोकसारभाषा	टोडरमल	(हि०)	३२१
त्रिकालचौबीसीपूजा	—	(सं०)	४८४, ५१७	त्रिलोकसारभाषा	—	(हि०)	३२१
त्रिकालचौबीसीपूजा	—	(प्रा०)	५०६	त्रिलोकसारभाषा	—	(हि०)	३२१
त्रिकालदेवबंदना	—	(हि०)	६२७	त्रिलोकसारवृत्ति	माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव	(सं०)	३२२
त्रिकालपूजा	—	(सं०)	४८५	त्रिलोकसारवृत्ति	—	(सं०)	३२२
त्रिचतुर्विंशतिविधान	—	(सं०)	२४६	त्रिलोकसारसंहृष्टि	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३२२
त्रिपंचाशतक्रिया	—	(हि०)	५१७	त्रिलोकस्तोत्र	भ० महीचन्द्र	(हि०)	६८१
त्रिपंचाशतव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५१३	त्रिलोकस्थजिनालयपूजा	—	(हि०)	४८५
त्रिभुवन की विनती	गंगादास	(हि०)	७७२	त्रिलोकस्वरूप व्याख्या	उदयलाल गंगवाल	(हि०)	३२२
त्रिभुवन की विनती	—	(हि०)	७७४	त्रिवर्णाचार	भ० सोमसेन	(सं०)	५८
त्रिभंगीसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३१	त्रिशती	शार्ङ्गधर	(सं०)	२६८
त्रिभंगीसारटीका	त्रिवेकानन्दि	(सं०)	३२	त्रिषष्ठिशालाकाछंद	श्रीपाल	(सं०)	६७०
त्रिलोकक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	४८५	त्रिषष्ठिशालाका पुरुषवर्णन	—	(सं०)	१४६
त्रिलोकचित्र	—	(हि०)	३२०	त्रिषष्ठिस्मृति	आशाधर	(सं०)	१४६
त्रिलोकतिलकस्तोत्र	भ० महीचन्द्र	(सं०)	७१२	त्रिशतजिणचऊबीसी	महणसिंह	(सप०)	६८६
त्रिलोकदीपक	वामदेव	(सं०)	३२०	त्रेपनक्रिया	—	(सं०)	५६, ७६२
त्रिलोकदर्पणकथा	खड्गसेन	(हि०)	६८६, ३२१	त्रेपनक्रिया	ब० गुलाल	(हि०)	७४०
				त्रेपनक्रियाकोश	दौलतराम	(हि०)	५६
त्रिलोकवर्णन	—	(सं०)	३२२	त्रेपनक्रियापूजा	—	(सं०)	४८५
त्रिलोकवर्णन	—	(प्रा०)	३२२	त्रेपनक्रिया [मण्डल चित्र]	—		५२४
त्रिलोकवर्णन [चित्र]	—		३२३	त्रेपनक्रियाव्रतपूजा	—	(सं०)	४८५
त्रिलोकवर्णन	—	(सं०)	३२३	त्रेपनक्रियाव्रतोद्यापन	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	६३८, ७६६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
त्रेपनक्रियाव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५८०	दर्शनसार	देवसेन	(प्रा०)	१३३
त्रेषठशलाकापुरुषचित्र	—	(प्रा०)	१७१	दर्शनमारभाषा	नथमल	(हि०)	१३३
त्रेषठशलाकापुरुषवर्णन	—	(हि०)	७०२	दर्शनमारभाषा	शिवजीलाल	(हि०)	१३३
त्रैलोक्य तीज कथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०	दर्शनसारभाषा	—	(हि०)	१३३
त्रैलोक्य मोहनकवच	रायमल्ल	(सं०)	६६०	दर्शनस्तुति	—	(सं०)	६५८, ६७०
त्रैलोक्यसारटीका	सहस्रकीर्ति	(प्रा०)	३२३	दर्शनस्तुति	—	(हि०)	६५२
त्रैलोक्यसारपूजा	सुमतिसागर	(सं०)	४८५	दर्शनस्तोत्र	सकलचन्द्र	(सं०)	५७४
त्रैलोक्यसारमहापूजा	—	(सं०)	४८६	दर्शनस्तोत्र	—	(सं०)	३८१
थ				दर्शनस्तोत्र	पद्मनन्दि	(प्रा०)	५०६
थूलभद्रजीकारासो	—	(हि०)	७२५	दर्शनस्तोत्र	—	(प्रा०)	५७४
थंभरणपार्वर्षनाथस्तवन	मुनि अभयदेव	(हि०)	६१६	दर्शनाष्टक	—	(हि०)	६४४
थंभरणपार्वर्षनाथस्तवन	—	(राज)	६१६	दलालीनीसम्भाष	—	(हि०)	३६४
द				दश प्रकारके ब्राह्मण	—	(सं०)	५७१
दक्षणासूक्तिस्तोत्र	शङ्कराचार्य	(सं०)	६६०	दशप्रकार विप्र	—	(सं०)	५७६
दण्डकपाठ	—	(सं०)	५६	दशबाल	—	(हि०)	३२८
दत्तात्रय	—	(सं०)	२२७	दशबालपञ्चीसी	द्यानतराय	(हि०)	४४८
दर्शनकथा	भारामल्ल	(हि०)	२२७	दशभक्ति	—	(हि०)	५६
दर्शनकथाकोश	—	(सं०)	२२७	दशसूक्तोंकी कथा	—	(हि०)	२२७
दर्शनपञ्चीसी	—	(हि०)	७१६	दशलक्षणउद्यापन पाठ	—	(सं०)	५५७
दर्शनपाठ	—	(सं०)	५६६	दशलक्षणकथा	लोकसेन	(सं०)	२२७
६००, ६०४, ६५०, ६६३, ६७७, ६६३, ७०३, ७६३				दशलक्षणकथा	मुनि गुणभद्र	(अप०)	६३१
दर्शनपाठ	बुधजन	(हि०)	४३६	दशलक्षणकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२४४
दर्शनपाठ	—	(हि०)	६००	दशलक्षण जयमाल	सोमसेन	(सं०)	७६५
			६६२, ६६३, ७०५	दशलक्षणजयमाल	पं० भावशर्मा	(प्रा०)	४२६, ५१७
दर्शनपाठस्तुति	—	(हि०)	४३६	दशलक्षणजयमाल	—	(प्रा०)	४८७
दर्शनपाहुडभाषा	—	(हि०)	१०६	दशलक्षणजयमाल	—	(प्रा० सं०)	४८७
दर्शनप्रतिमास्वरूप	—	(हि०)	५६	दशलक्षणजयमाल	पं० रङ्गधू	(अप०)	२४३
दर्शनभक्ति	—	(सं०)	६२७				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
दशलक्षणाजयमाल	सुमतिसागर	(हि०)	७६५	दशलक्षणीकथा	ललितकीर्ति	(सं०)	६६५
दशलक्षणाजयमाल	—	(हि०)	४८८	दशलक्षणीरास	—	(अप०)	६४२
दशलक्षणाधर्मवर्णन पं० सदासुख कासलीवाल	(हि०)	५६	दशवैकालिकगीत	जैतसिंह	(हि०)	७००	
दशलक्षणाधर्मवर्णन	—	(हि०)	६०	दशवैकालिकसूत्र	—	(प्रा०)	३२
दशलक्षणापूजा	अभयनन्दि	(सं०)	४८८	दशवैकालिकसूत्रटीका	—	(सं०)	३२
दशलक्षणापूजा	—	(सं०)	४८८	दशश्लोकीशम्भुस्तोत्र	—	(सं०)	६६०
५१७, ५३६, ५७४, ५६४, ५६६, ६०६, ६०७, ६४९, ६४४, ६४६, ६५२, ६५८, ६६४, ७०४, ७३१, ७५६, ७६३, ७८४				दशसूत्राष्टक	—	(सं०)	६७०
दशलक्षणापूजा	—	(अप० सं०)	७०५	दशारास	ब्र० चन्द्र	(सं०)	६८३
दशलक्षणापूजा	अभ्रदेव	(सं०)	४८८	दादूपद्यावली	—	(हि०)	३७१
दशलक्षणापूजा	खुशालचन्द्र	(हि०)	५१६	दानकथा	ब्र० जिनदास	(हि०)	७०७
दशलक्षणापूजा	द्यानतराय	(हि०)	४८८	दानकथा	भारामल्ल	(हि०)	२२८
			५१६, ७०५	दानकुल	—	(प्रा०)	६०
दशलक्षणापूजा	भूधरदास	(हि०)	५६१	दानतपशीलसंवाद	समयसुन्दर	(राज०)	६१७
दशलक्षणापूजा	—	(हि०)	४८६	दानपञ्चाशत	पद्मनन्दि	(सं०)	६०
			७२०, ७८८	दानबावनी	द्यानतराय	(हि०)	६०५, ६८६
दशलक्षणापूजाजयमाल	—	(सं०)	५६६	दानलीला	—	(हि०)	६००
दशलक्षण [मंडलचित्र]	—		५२५	दानवर्णन	—	(हि०)	६८६
दशलक्षणमण्डलपूजा	—	(हि०)	४८६	दानविनती	जतीदास	(हि०)	६४३
दशलक्षणविधानकथा	लोकसेन	(सं०)	२४२, २४६	दानशीलतपभावना	—	(सं०)	६०
दशलक्षणविधानपूजा	—	(हि०)	४६०	दानशीलतपभावना	धर्मसी	(हि०)	६०
दशलक्षणव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२२७	दानशीलतपभावना	—	(हि०)	६०, ६०१
दशलक्षणव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	७३१	दानशीलतपभावना का चौढाल्या	समयसुन्दरगण		
दशलक्षणव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७६४			(हि०)	२२८
दशलक्षणव्रतकथा	—	(हि०)	२४७	दिल्ली की बादशाहतका व्यौरा	—	(हि०)	७६६
दशलक्षणव्रतोद्यापन	जिनचन्द्रसूरि	(सं०)	४८६	दिल्लीके बादशाहों पर कवित्त	—	(हि०)	७५६
दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	सुमतिसागर	(सं०)	४८६	दिल्ली नगरकी बसापत तथा बादशाहत का व्यौरा	—		
			५४०, ६३८			(हि०)	७८४
दशलक्षणव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५१३	दिल्ली राजका व्यौरा	—	(हि०)	७८६
				दीक्षापटल	—	(सं०)	५७५
				दीपमालिका निर्याय	—	(हि०)	६०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
दीपावतारमन्त्र	—	(सं०)	५७१, ५७६	देवागमस्तोत्रभाषा	—	(हि० पद्य)	३६६
दुधारसविधानकथा	मुनि विनयचन्द्र	(अप०)	२४४	देवाप्रभस्तोत्रवृत्ति	आणुभा	[शिष्य विजयमेनसूरि]	
दुर्घटकाव्य	—	(सं०)	१७१			(सं०)	३६६
दुर्लभानुप्रेक्षा	—	(प्रा०)	६३७	देवीसूक्त	—	(सं०)	६०८
देवकीढाल	रतनचन्द्र	(हि०)	४४०	देशों [भारत] के नाम	—	(हि०)	६७१
देवकीढाल	लूणकरण कासलीवाल	(हि०)	४३६	देहलीके बादशाहोंकी नामावली एवं परिचय	—		
देवतास्तुति	पद्मनन्दि	(हि०)	३६४			(हि०)	७४३
देवपूजा	इन्द्रनन्दि योगीन्द्र	(सं०)	४६०	देहलीके बादशाहोंके परगनोंके नाम	—	(हि०)	६८०
देवपूजा	—	(सं०)	४१५	देहलीके बादशाहोंका व्यौरा	—	(हि०)	३७२
			५६४, ६०५, ७२५, ७३१	देहलीके राजाओंकी वंशावलि	—	(हि०)	६८०
देवपूजा	—	(हि० सं०)	५६६, ७०४	दोहा	कबीर	(हि०)	७६६
देवपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५१६	दोहापहुड	रामसिंह	(अप०)	६०
देवपूजा	—	(हि०)	६४६	दोहाशतक	रूपचन्द्र	(हि०)	६७३, ७४०
			६७०, ७०६, ७३५, ७५८	दोहासंग्रह	नानिगराम	(हि०)	६२३
देवपूजाटीका	—	(सं०)	४६०	दोहासंग्रह	—	(हि०)	७४३
देवपूजाभाषा	जयचन्द्र छाबड़ा	(हि०)	४६०	द्यानतविलास	द्यानतराय	(हि०)	३२८
देवपूजाष्टक	—	(सं०)	६५७	द्रव्यसंग्रह	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	३२
देवराज बच्छराज चौपई	सोमदेवसूरि	(हि०)	२२८				५७५, ६२८, ७४४, ७११
देवलोकनकथा	—	(सं०)	२२८	द्रव्यसंग्रहटीका	—	(सं०)	३५, ६६४
देवशास्त्रगुरुपूजा	आशाधर	(सं०)	६३६, ७६१	द्रव्यसंग्रहगाथा भाषा सहित	(प्रा० हि०)	७५५, ६८६	
देवशास्त्रगुरुपूजा	—	(सं०)	६०७	द्रव्यसंग्रहबालावबोध टीका	वंशीधर	(हि०)	७६१
देवशास्त्रगुरुपूजा	—	(हि०)	५६२	द्रव्यसंग्रहभाषा	जयचन्द्र छाबड़ा	(हि० पद्य)	३६
देवसिद्धपूजा	—	(सं०)	४२८	द्रव्यसंग्रहभाषा	जयचन्द्र छाबड़ा	(हि० गद्य)	३६
			४६०, ६४०, ६४४, ७३०	द्रव्यसंग्रहभाषा	बा० दुलीचन्द्र	(हि० गद्य)	३७
देवसिद्धपूजा	—	(हि०)	७०५	द्रव्यसंग्रहभाषा	द्यानतराय	(हि०)	७१२
देवागमस्तोत्र	आ० समन्तभद्र	(सं०)	३६४	द्रव्यसंग्रहभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	३६
			३६५, ४२५, ५७५, ६०४, ७२०	द्रव्यसंग्रहभाषा	हैमराज	(हि०)	७३३
देवागमस्तोत्रभाषा	जयचन्द्र छाबड़ा	(हि०)	३६५	द्रव्यसंग्रहभाषा	—	(हि०)	३५
				द्रव्यसंग्रहभाषा	पर्वत धर्मार्थी	(गुज०)	३६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठसं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	क्रम सं०
द्रव्यसंग्रहवृत्ति	ब्रह्मदेव	(स०)	३४	द्वादशानुप्रेक्षा	—	(हि०)	१०९
द्रव्यसंग्रहवृत्ति	प्रभाचन्द्र	(सं०)	३४				६५२, ७५८, ७६५
द्रव्यस्वरूपवर्णन	—	(सं०)	३७	द्वादशांगपूजा	—	(सं०)	४९१
दृष्टान्तशतक	—	(सं०)	३२८	द्वादशांगपूजा	डालूगाम	(हि०)	४९१
द्वादशभावनाटीका	—	(हि०)	१०९	द्वाश्रयकाव्य	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	१७१
द्वादशभावनादृष्टान्त	—	(गुज०)	१०९	द्विजवचनचपेटा	—	(सं०)	१३३
द्वादशमाला	कवि राजसुन्दर	(हि०)	७४३	द्वितीयसप्तोत्तरण	ब्र० गुलाल	(हि०)	५६६
द्वादशमासा [वारहमासा]	कवि राइसुन्दर	(हि०)	७७१	द्विपंचकल्याणकपूजा	—	(सं०)	५१७
द्वादशमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३९	द्विसंधानकाव्य	धनञ्जय	(सं०)	१७१
द्वादशराशिफल	—	(सं०)	६९०	द्विसंधानकाव्यटीका [पदकौमुदी]	नेमिचन्द्र	(सं०)	१७२
द्वादशव्रतकथा	पं० अश्रुदेव	(सं०)	२२८ २४६, ४९०	द्विसंधानकाव्यटीका	विनयचन्द्र	(सं०)	१७२
द्वादशव्रतकथा	चन्द्रसागर	(हि०)	२२८	द्विसंधानकाव्यटीका	—	(सं०)	१७२
द्वादशव्रतकथा	—	(सं०)	२२८	द्वीपसमुद्रों के नाम	—	(हि०)	६७१
द्वादशव्रतपूजाजयमाला	—	(सं०)	६७६	द्वीपायनढाल	गुणसागरसूरि	(हि०)	४४०
द्वादशव्रतमण्डलोद्यापन	—	(सं०)	५४०				
द्वादशव्रतोद्यापन	—	(सं०)	४९१, ६९९				
द्वादशव्रतोद्यापन	जगतकीर्त्ति	(सं०)	४९१				
द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४९१				
द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	पद्मनन्दि	(सं०)	४९१				
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(सं०)	१०९, ६७२				
द्वादशानुप्रेक्षा	लक्ष्मीसेन	(सं०)	७४४				
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(प्रा०)	१०९				
द्वादशानुप्रेक्षा	जल्हण	(ग्रप०)	६२८				
द्वादशानुप्रेक्षा	—	(ग्रप०)	६२८				
द्वादशानुप्रेक्षा	साह आलु	(हि०)	१०९				
द्वादशानुप्रेक्षा	कवि छत्त	(हि० पद्य)	१०९				
द्वादशानुप्रेक्षा	लोहट	(हि०)	७६९				
द्वादशानुप्रेक्षा	सूरत	(हि०)	७६४				

ध

धनदत्त सेठ की कथा	—	(हि०)	२२९
धननाकथानक	—	(सं०)	२२९
धननाचौपई	—	(हि०)	७७२
धननाशलिभद्रचौपई	—	(हि०)	२२९
धननाशलिभद्ररास	जिनराजसूरि	(हि०)	३६२
धन्यकुमारचरित्र	आ० गुणभद्र	(सं०)	१७२
धन्यकुमारचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	१७३
धन्यकुमारचरित्र	सकलकीर्त्ति	(सं०)	१७२
धन्यकुमारचरित्र	—	(सं०)	१७४
धन्यकुमारचरित्र	खुशालचन्द्र	(हि०)	१७३, ७२६
धर्मचक्र [मण्डल चित्र]	—		५२५
धर्मचक्रपूजा	यशोनन्दि	(सं०)	४९१, ५९५
धर्मचक्रपूजा	साधु रणमल्ल	(सं०)	४९२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
धर्मचक्रपूजा	—	(सं०)	४६२	धर्मरासा	—	(हि०)	३६२
			५१०, ५३७	धर्मरासो	—	(हि०)	६२३, ६७७
धर्मचन्द्रप्रबंध	धर्मचन्द्र	(प्रा०)	३६६	धर्मलक्षणा	—	(सं०)	६२
धर्मचाह	—	(हि०)	७२७	धर्मविलास	द्यानतराय	(हि०)	३२८, ७१०
धर्मचाहना	—	(हि०)	६१	धर्मशार्माभ्युदय	महाकवि हरिश्चन्द्र	(सं०)	१७४
धर्मतस्मगीत	जिनदास	(हि०)	७६२	धर्मशार्माभ्युदयटीका	यशःकीर्ति	(सं०)	१७४
धर्मदशावतार नाटक	—	(सं०)	३१७	धर्मशास्त्रप्रदीप	—	(सं०)	६३
धर्म दुहेला जैनी का [त्रेपन क्रिया]		(हि०)	६३८	धर्मसरोवर	जोधराज गोदीका	(हि०)	६३
धर्मपञ्चीस	द्यानतराय	(हि०)	७४७	धर्मसार [चौपई]	पं० शिरोमणिदास	(हि०)	६३, ६६६
धर्मपरीक्षा	अभितिगति	(सं०)	३५५	धर्मसंग्रहश्रावकाचार	पं० मेघावी	(सं०)	६२
धर्मपरीक्षा	विशालकीर्ति	(हि०)	७३५	धर्मसंग्रहश्रावकाचार	—	(सं०)	६३
धर्मपरीक्षाभाषा	मनोहरदास सोनी		३५७, ७१६	धर्मसंग्रहश्रावकाचार	—	(हि०)	६३
धर्मपरीक्षाभाषा	दशरथ निगोत्या	(हि० ग०)	३५६	धर्माधर्मस्वरू	—	(हि०)	७०७
धर्मपरीक्षाभाषा	—	(हि०)	३५८, ७१०	धर्माभ्युदयसंग्रह	आशाधर	(सं०)	६४
धर्मपरीक्षारास	ब्र० जिनदास	(हि०)	३५७	धर्मोपदेशपीयूषश्रावकाचार	सिद्धनन्दि	(सं०)	६४
धर्मपंचविशतिका	ब्र० जिनदास	(हि०)	६१	धर्मोपदेशश्रावकाचार	अमोधवर्ष	(सं०)	६४
धर्मप्रदीपभाषा	पन्नालाल संधी	(हि०)	६१	धर्मोपदेशश्रावकाचार	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	६४
धर्मप्रश्नोत्तर	विमलकीर्ति	(सं०)	६१	धर्मोपदेशश्रावकाचार	—	(सं०)	६४
धर्मप्रश्नोत्तर	—	(हि०)	६१	धर्मोपदेशसंग्रह	सेवारामसाह	(हि०)	६४
धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचार भाषा	—	(सं०)	६२	धवल	—	(प्रा०)	३७
धर्मप्रश्नोत्तर श्रावकाचार भाषा	चम्पाराम	(हि०)	६१	धातुपाठ	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२६०
धर्मप्रश्नोत्तरी	—	(हि०)	६१	धातुपाठ	—	(सं०)	२६०
धर्मबुद्धिचौपई	लालचन्द्र	(हि०)	२२६	धातुप्रत्यय	—	(सं०)	२६१
धर्मबुद्धि पाप बुद्धि कथा	—	(सं०)	२२६	धातुरूपावलि	—	(सं०)	२६१
धर्मबुद्धि मंत्री कथा	वृन्दाबन	(हि०)	२२६	धू लीला	—	(हि०)	६००
धर्मरत्नाकर	पं० मंगल	(सं०)	६२	श्रीधूचरित्र	—	(हि०)	७४१
धर्मरसायन	पद्मनन्दि	(प्रा०)	६२	ध्वजारोपणपूजा	—	(सं०)	५१३
धर्मरसायन	—	(सं०)	६२	ध्वजारोपणमंत्र	—	(सं०)	४६२
धर्मरास [श्रावकाचार]	—	(हि०)	७७३	ध्वजारोपणयंत्र	—	(सं०)	४६२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
ध्वजारोपणविधि	आशाधर	(सं०)	४६२	नन्दीश्वरपूजा	—	(प्रा०)	४६३, ७०५
ध्वजारोपणविधि	—	(सं०)	४६२	नन्दीश्वरपूजा	—	(सं० प्रा०)	४६३
ध्वजारोहणविधि	—	(सं०)	४६२	नन्दीश्वरपूजा	—	(अप०)	४६३
न				नन्दीश्वरपूजा	—	(हि०)	४६३
नखशिखवर्णन	केशवदास	(हि०)	७७२	नन्दीश्वरपूजा जयमाल	—	(सं०)	७५६
नखशिखवर्णन	—	(हि०)	७१४	नन्दीश्वरपूजाविधान	टेकचन्द	(हि०)	४६४
नगर स्थापना का स्वरूप	—	(हि०)	७५०	नन्दीश्वरपत्तिपूजा	पद्मनन्दि	(सं०)	६३६
नगरों की बसापत का संवत्वार विवरण	—	(हि०)	७५०	नन्दीश्वरपत्तिपूजा	—	(सं०)	४६३
	मुनि कनककीर्ति	(हि०)	५६१				५१४, ७६३
ननद भोजाई का ऋगड़ा	—	(हि०)	७४७	नन्दीश्वरपत्तिपूजा	—	(हि०)	४६३
नन्दिताढ्यछंद	—	(प्रा०)	३१०	नन्दीश्वरभक्ति	—	(सं०)	६३३
नन्दिषेण महाभुनि सज्जाय	—	३ ०	६१६	नन्दीश्वरभक्ति	पन्नालाल	(हि०)	४६४, ४५०
नन्दीश्वरउद्यापन	—	(सं०)	५३७	नन्दीश्वरविधान	जिनेश्वरदास	(हि०)	४६४
नन्दीश्वरकथा	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	२२६	नन्दीश्वरविधानकथा	हरिषेण	(सं०)	२२६, ५१४
नन्दीश्वरजयमाल	—	(सं०)	४६२	नन्दीश्वरविधानकथा	—	(सं०)	२२६, २४६
नन्दीश्वरजयमाल	—	(प्रा०)	६३६	नन्दीश्वरव्रतविधान	टेकचन्द	(हि०)	५१८
नन्दीश्वरजयमाल	कनककीर्ति	(अप०)	५१६	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	अनन्तकीर्ति	(सं०)	४६४
नन्दीश्वरजयमाल	—	(अप०)	४६२	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	नन्दिषेण	(सं०)	४६४
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	रत्ननन्दि	(सं०)	४६२	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	४६४
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	—	(सं०)	४६३	नन्दीश्वरव्रतोद्यापनपूजा	—	(हि०)	४६४
			६०१, ६५२	नन्दीश्वरादिभक्ति	—	(प्रा०)	६२७
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	—	(प्रा०)	६५५	नान्दीसूत्र	—	(प्रा०)	३७
नन्नीश्वरद्वीपपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५१६, ५६२	नन्दूसप्तमीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	४६४
नन्दीश्वरद्वीपपूजा	मङ्गल	(हि०)	४६३	नमस्कारमन्त्रकल्पविधिसहित	सिंहनन्दि	(सं०)	३४६
नन्दीश्वरपुष्पाञ्जलि	—	(सं०)	५७६	नमस्कारमन्त्रसटीक	—	(सं० हि०)	६०१
नन्दीश्वरपूजा	सकलकीर्ति	(सं०)	७६१	नमस्कारस्तोत्र	—	(सं०)	४२८
नन्दीश्वरपूजा	—	(सं०)	४६३	नमिऊणस्तोत्र	—	(प्रा०)	६८१
				नयचक्र	देवसेन	(प्रा०)	१३४
				नयचक्रटीका	—	(हि०)	६८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नयचक्रभाषा	हेमराज	(हि०)	१३४	नवग्रहपूजाविधान	भद्रबाहु	(सं०)	४६४
नयचक्रभाषा	—	(हि०)	१३४	नवग्रहस्तोत्र	वेदव्यास	(सं०)	६४६
नरकदुःखवर्णन [दोहा]	भूधरदास	(हि०)	६५	नवग्रहस्तोत्र	—	(सं०)	४३०
			७६०, ७८८	नवग्रहस्थापनाविधि	—	(सं०)	६१२
नरकवर्णन	—	(हि०)	६५	नवतत्त्वगाथा	—	(प्रा०)	३७
नरकस्वर्गकेयन्त्र पृथ्वी आदिका वर्णन	—	(हि०)	६५२	नवतत्त्वप्रकरण	—	(प्रा०)	७३२
नरपतिजयचर्चा	नरपति	(सं०)	२८५	नवतत्त्वप्रकरण	लक्ष्मीबल्लभ	(हि०)	३७
नल दमयन्ती नाटक	—	(सं०)	३१७	नवतत्त्ववचनिका	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	३८
नलोदयकाव्य	कालिदास	(सं०)	१७५	नवतत्त्ववर्णन	—	(हि०)	३८
नलोदयकाव्य	माणिक्यसूरि	(सं०)	१७४	नवतत्त्वविचार	—	(हि०)	६१६
नवकारकल्प	—	(सं०)	३४६	नवतत्त्वविचार	—	(हि०)	३८
नवकारपैतृसी	—	(सं०)	६६६	नवपदपूजा	देवचन्द	(हि०)	७६०
नवकारपैतृसीपूजा	—	(सं०)	५३७	नवमङ्गल	विनोदीलाल	(हि०)	६८५, ७३४
नवकार बड़ो विनती	ब्रह्मदेव	(हि०)	६५१	नवरत्नकवित्त	—	(सं०)	३२६
नवकारमहिमास्तवन	जिनवल्लभसूरि	(हि०)	६१८	नवरत्नकवित्त	बनारसीदास	(हि०)	७४३
नवकारमन्त्र	—	(सं०)	४३१	नवरत्नकवित्त	—	(हि०)	७१७
नवकारमन्त्र	—	(प्रा०)	६३६	नवरत्नकाव्य	—	(सं०)	१७५
नवकारमन्त्रचर्चा	—	(हि०)	७१८	नष्टोदिष्ट	—	(सं०)	६५
नवकारराम	अचलकीर्त्ति	(हि०)	६४७	नहनसीगाराविधि	—	(हि०)	२६८
नवकारराम	—	(हि०)	३६२	नागकुमारचरित्र	धर्मधर	(सं०)	१७६
नवकाररामो	—	(हि०)	७४५	नागकुमारचरित्र	मल्लिषेणसूरि	(सं०)	१७५
नवकारश्रावकाचार	—	(प्रा०)	६५	नागकुमारचरित्र	—	(सं०)	१७६
नवकारसज्ज्भाय	गुणप्रभसूरि	(हि०)	६१८	नागकुमारचरित्र	उदयलाल	(हि०)	१७६
नवकारसज्ज्भाय	पद्मराजगणि	(हि०)	६१८	नागकुमारचरित्र	—	(हि०)	१७६
नवग्रह [मण्डलचित्र]	—		५२५	नागकुमारचरितटीका	प्रभाचन्द	(सं०)	१७६
नवग्रहगर्भितपार्श्वनाथस्तवन	—	(सं०)	६०६	नागमंता	—	(हि० राज०)	२२६
नवग्रहगर्भितपार्श्वस्तोत्र	—	(प्रा०)	७३२	नागलीला	—	(हि०)	६६५
नवग्रहपूजा	—	(सं०)	४६५	नागश्रीकथा	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	२३१
नवग्रहपूजा	—	(पं० हि०)	५१८	नागश्रीकथा	किशनसिंह	(हि०)	२३१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नागश्रीसञ्ज्ञाय	विनयचन्द्र	(हि०)	४४१	नित्यनियमपूजा	सदासुख कासलीवाल	(हि०)	४६६
नाटकसमयसार	बनारसीदास	(हि०)	६४०	नित्यनियमपूजासंग्रह	—	(हि०)	७१२
	६५७, ६८२, ७२१, ७५०, ५६१, ७७६			नित्यनैमित्तिकपूजापाठ संग्रह	—	(सं०)	५६६
नाडीपरीक्षा	—	(सं०)	२६८	नित्यपाठसंग्रह	—	(सं० हि०)	३६८
			६०२, ६६७	नित्यपूजा	—	(सं०)	५६०
नांदीमङ्गलपूजा	—	(सं०)	५१८			६६४, ६६४, ६६७	
नाममाला	धनञ्जय	(सं०)	२७५	नित्यपूजा	—	(हि०)	४६८
	२७६, ५७४, ६८६, ६६६, ७०१, ७११, ७१२, ७३६			नित्यपूजाजयमाल	—	(हि०)	४६८
नाममाला	बनारसीदास	(हि०)	२७६	नित्यपूजापाठ	—	(सं० हि०)	६६३
			६०६, ७६५			७०२, ७१५	
नाममञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	६६७ ७६६	नित्यपूजापाठसंग्रह	—	(प्रा० सं०)	६६४
नायिकालक्षण	कवि सुन्दर	(हि०)	७४२	नित्यपूजापाठसंग्रह	—	(सं०)	६६३
नायिकावर्णन	—	(हि०)	७३७	नित्यपूजापाठसंग्रह	—	(सं०)	७००
नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र	नारचन्द्र	(सं०)	२८५			७७५, ७७६	
नारायणकवच एवं अष्टक	—	(सं०)	६०८	नित्यपूजासंग्रह	—	(प्रा० अ०)	४६७
नारीरासो	—	(हि०)	७५७	नित्यपूजासंग्रह	—	(सं०)	४६७, ७६३
नासिकेतपुराण	—	(हि०)	७६७	नित्यवदनासामायिक	—	(सं० प्रा०)	६३३
नासिकेतोपाख्यान	—	(हि०)	७६०	निमित्तज्ञान [भद्रबाहु संहिता] भद्रबाहु		(सं०)	२८५
निघंटु	—	(सं०)	२६६	नियमसार	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	३८
निजःश्रुति	जयतिलक	(सं०)	३८	नियमभारटीका	पद्मप्रभमलधारिदेव	(सं०)	३८
निजामणि	ब्र० जिनदास	(हि०)	६५	निरयावलीसूत्र	—	(प्रा०)	३८
नित्य एवं भाद्रपदपूजा	—	(सं०)	६४४	निरञ्जनशतक	—	(हि०)	७४१
नित्यकृत्यवर्णन	—	(हि०)	६५ ४६५	निरञ्जनस्तोत्र	—	(सं०)	४२४
नित्यक्रिया	—	(सं०)	४६५	निर्भरपञ्चमावधानकथा	विनयचन्द्र	(अ०)	२४५, ६२८
नित्यनियम के दोहे	—	(हि०)	७१८	निर्दोषनमोक्त्या	—	(अ०)	२४५
नित्यनियमपूजा	—	(सं०)	४६५	निर्दोषनसमीकथा	पांडे हरिकृष्ण	(हि०)	७६४
			५१३, ६७६	निर्दोषनसमीकथा	ब्र० रायमल्ल	(सं०)	६७६, ७३६
नित्यनियमपूजा	—	(सं० हि०)	४०६	निर्दोषनसमीकथा	बा० दुलीचन्द्र	(हि०)	६५
			५६७, ६८६	निर्दोषनसमीकथा	—	(सं०)	४६८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
निर्वाणकाण्डगाथा	—	(प्रा०)	३६८	नीतिवाक्यामृत	सोमदेवसूरि	(सं०)	३३०
४२६, ४३१, ५२६, ६२१, ६२८, ६३५, ६३८, ६६२, ६७०, ६६४, ७१६, ७५३, ७७४, ७८८, ७८६				नीतिविनोद	—	(हि०)	३३०
निर्वाणकाण्डटीका	—	(प्रा० सं०)	३६९	नीतिशतक	भर्तृहरि	(सं०)	३२६
निर्वाणकाण्डपूजा	—	(न०)	४६८	नीतिशास्त्र	चाणक्य	(सं०)	७१७
निर्वाणकाण्डभाषा	भैया भगवतीदास	(सं०)	३६९	नीतिसार	इन्द्रनन्दि	(सं०)	३२६
४२३, ४२६, ४४१, ५६२, ५७०, ५६६, ६००, ६०५, ६१४, ५६५, ६४३, ६५०, ६५१, ६६२, ६७५, ७०४, ७२०, ७४७				नीतिसार	चाणक्य	(सं०)	६८४
निर्वाणकाण्डभाषा	सेवग	(हि०)	७८८	नीतिसार	—	(सं०)	३२६
निर्वाणक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	४६६, ५१८	नीलकण्ठताजिक	नीलकंठ	(सं०)	२८५
निर्वाणक्षेत्रमण्डलपूजा	—	(हि०)	४६२	नीलसूक्त	—	(सं०)	३३०
निर्वाणपूजा	—	(सं०)	४६६	नेमिगीत	पासचंद	(हि०)	४४१
निर्वाणपूजापाठ	मनरङ्गलाल	(हि०)	४६६	नेमिगीत	भूधरदास	(हि०)	४३२
निर्वाणप्रकरण	—	(हि०)	६५	नेमिजिनंदव्याहलो	खेतसी	(हि०)	६३८
निर्वाणभक्ति	—	(सं०)	३६६, ६३३	नेमिजिनस्तवन	मुनि जोधराज	(हि०)	६१८
निर्वाणभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०	नेमिजीका चरित्र	आणन्द	(हि०)	१७६
निर्वाणभक्ति	—	(हि०)	३६६	नेमिजीकी लहुरी	विश्वभूषण	(हि०)	७७६
निर्वाणभूमिमङ्गल	विश्वभूषण	(हि०)	६६८	नेमिदूतकाव्य	महाकवि विक्रम	(सं०)	१७६
निर्वाणमोदकनिर्णय	नेमिदास	(हि०)	६५	नेमिनरेन्द्रस्तोत्र	जगन्नाथ	(सं०)	३६६
निर्वाणविधि	—	(सं०)	६०८	नेमिनाथएकाक्षरीस्तोत्र	पं० शालि	(सं०)	४२६
निर्वाणसप्तशतीस्तोत्र	—	(सं०)	३६६	नेमिनाथका बारहमासा	विनोदीलाल लालचन्द	—	
निर्वाणस्तोत्र	—	(सं०)	३६६			(हि०)	७५३
निःशल्याष्टमीकथा	—	(सं०)	२३१	नेमिनाथका बारहमासा	—	(हि०)	६६२
निःशल्याष्टमीकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०	नेमिनाथकी भावना	सेवकराम	(हि०)	६७४
निःशल्याष्टमीकथा	पांडे हरिकृष्ण	(हि०)	७६५	नेमिनाथ के दशभव	—	(हि०)	१७७
निःशिमोजनकथा	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	२३१				६००, ७०४, ७८८
निःशिमोजनकथा	—	(हि०)	२३१	नेमिनाथ के नवमङ्गल	विनोदीलाल	(हि०)	४४०
निपेकाध्यायवृत्ति	—	(सं०)	२८५	नेमिनाथ के बारह भव	—	(हि०)	७६०
				नेमिजीकोमङ्गल	जगतभूषण	(हि०)	५६७
				नेमिनाथचरित्र	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	१७७
				नेमिनाथछन्द	शुभचन्द्र	(हि०)	३८६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
नेमिनाथपुराण	ब्र० जिनदास	(सं०)	१४७	नेमिराजुलगीत	जिनहर्षसूरि	(हि०)	६१८
नेमिनाथपुराण	भागचन्द	(हि०)	१४६	नेमिराजुलगीत	भुवनकीर्त्ति	(हि०)	६१८
नेमिनाथपूजा	कुवलयचन्द	(सं०)	७६३	नेमिराजुलपञ्चीसी	विनोदीलाल	(हि०)	४४१, ७४७
नेमिनाथपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	४६६	नेमिराजुलसज्जाय	—	(हि०)	४४३
नेमिनाथपूजा	—	(हि०)	४६६	नेमिरासो	—	(हि०)	७४५
नेमिनाथपूजाष्टक	शंभूराम	(सं०)	४६६	नेमिस्तवन	जितसागरगणी	(हि०)	४००
नेमिनाथपूजाष्टक	—	(हि०)	४६६	नेमिस्तवन	ऋषि शिव	(हि०)	४००
नेमिनाथफागु	पुण्यरत्न	(हि०)	७४८	नेमिस्तोत्र	—	(सं०)	४३२
नेमिनाथमङ्गल	लालचन्द	(हि०)	६०५	नेमिसुरकवित्त [नेमिसुर राजमतित्रेलि]	कवि ठक्कुरसी	(हि०)	६३८
नेमिनाथराजुल का बारहमासा	—	(हि०)	७२५	नेमीश्वरका गीत	नेमीचन्द	(हि०)	६२१
नेमिनाथरास	ऋषि रामचन्द	(हि०)	३६२	नेमीश्वरका बारहमासा	खेतसिंह	(हि०)	७६२
नेमिनाथस्तोत्र	पं० शालि	(सं०)	७५७	नेमीश्वरकी वेलि	ठक्कुरसी	(हि०)	७२२
नेमिनाथरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७१६, ७५२	नेमीश्वरकी स्तुति	भूधरदास	(हि०)	६५०
नेमिनाथरास	रत्नकीर्त्ति	(हि०)	६३८	नेमीश्वरका हिंडोलना	मुनि रतनकीर्त्ति	(हि०)	७२२
नेमिनाथरास	विजयदेवसूरि	(हि०)	३६२	नेमीश्वरके दशभव	ब्र० धर्मरुचि	(हि०)	७३८
नेमिनाथस्तोत्र	पं० शालि	(सं०)	३६६	नेमीश्वरको रास	भाऊकवि	(हि०)	६३८
नेमिनाथाष्टक	भूधरदास	(हि०)	७७७	नेमीश्वरचीमासा	सिहनन्दि	(हि०)	७३८
नेमिपुराण [हरिवंशपुराण]	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	१४७	नेमीश्वरका फाग	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७६३
नेमिनिर्वाण	महाकवि वाग्भट्ट	(सं०)	१७७	नेमीश्वरराजुलकी लहुरी	खेतसिंह साद	(हि०)	७७६
नेमिनिर्वाणपञ्जिका	—	(सं०)	१७७	नेमीश्वरराजुलविवाद	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	६१३
नेमिव्याहलो	—	(हि०)	२३१	नेमीश्वररास	मुनि रतनकीर्त्ति	(हि०)	७२२
नेमिराजमतीका चोमासिया	—	(हि०)	६१६	नेमीश्वररास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	६०१
नेमिराजमर्तः की घोड़ी	—	(हि०)	४४१				६२१, ६३८
नेमिराजमतीका गीत	हीरानन्द	(हि०)	४४१	नेमित्तिक प्रयोग	—	(सं०)	६३३
नेमिराजमति बारहमासा	—	(हि०)	६५७	नेपथचरित्र	हर्षकीर्त्ति	(सं०)	१७७
नेमिराजमतिराम	रत्नमुक्ति	(हि०)	६१७	नौशेरवां बादशाहकी दम ताज	—	(हि०)	३३०
नेमिराजलव्याहलो	गोपीकृष्ण	(हि०)	२३२	न्यायकुमुदचन्द्रिका	प्रभाचन्द्रदेव	(सं०)	१३४
नेमिराजुलबारहमासा	आनन्दसूरि	(हि०)	६१८	न्यायकुमुदचन्द्रोदय	भट्टाकलङ्कदेव	(सं०)	१३४
नेमिराजपिसज्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
न्यायदीपिका	यति धर्मभूषण	(सं०)	१३५	पञ्चकल्याणकपूजा	छोटेलाल मित्तल	(हि०)	५००
न्यायदीपिकाभाषा	मंघी पन्नालाल	(हि०)	१३५	पञ्चकल्याणकपूजा	टेकचन्द	(हि०)	५०१
न्यायदीपिकाभाषा	सदासुख कामलीवाल	(हि०)	१३५	पञ्चकल्याणकपूजा	पन्नालाल	(हि०)	५०१
न्यायमाना	परमहंस परित्राजकाचार्य	(सं०)	१३५	पञ्चकल्याणकपूजा	भैरवदास	(हि०)	५०१
न्यायशास्त्र	—	(सं०)	१३५	पञ्चकल्याणकपूजा	रूपचन्द	(हि०)	५००
न्यायसार	माधवदेव	(सं०)	१३५	पञ्चकल्याणकपूजा	शिवजीलाल	(हि०)	४९९
न्यायसार	—	(सं०)	१३५	पञ्चकल्याणकपूजा	—	(हि०)	४२९
न्यायसिद्धान्तमञ्जरी	भ० चूडामणि	(सं०)	१३६				५०१, ७१२
न्यायसिद्धान्तमञ्जरी	जानकीदास	(सं०)	१३५	पञ्चकल्याणकपूजाष्टक	—	(सं०)	६८३
न्यायसूत्र	—	(सं०)	१३६	पञ्चकल्याणक [मण्डलचित्र]	—		५२५
नृसिंहपूजा	—	(हि०)	६०८	पञ्चकल्याणकस्तुति	—	(प्रा०)	६१८
नृसिंहावतारचित्र	—		६०३	पञ्चकल्याणकोद्यापनपूजा	ज्ञानभूषण	(सं०)	६६०
नृहरणप्रारती	थिरूपाल	(हि०)	७७७	पञ्चकुमारपूजा	—	(हि०)	५०२, ७५९
नृहरणमङ्गल	वंसी	(हि०)	७७७	पञ्चक्षेत्रपालपूजा	गङ्गादास	(सं०)	५०२
नृहरणवधि	—	(सं०)	५६४, ६४०	पञ्चक्षेत्रपालपूजा	सोमसेन	(सं०)	७९५
	प			पञ्चख्यारण	—	(प्रा०)	६१६
पञ्चकरणावार्तिक	सुरेश्वराचार्य	(सं०)	२६१	पञ्चगुरुकल्याणपूजा	शुभचन्द्र	(सं०)	५०२
पञ्चकल्याणकपाठ	हरचन्द	(हि०)	४००	पञ्चगुरुकी जयमाल	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७६३
पञ्चकल्याणकपाठ	हरिचन्द	(हि०)	७९६	पञ्चतत्त्वधारणा	—	(सं०)	१०९
पञ्चकल्याणकपाठ	—	(सं०)	६९९	पञ्चतन्त्र	पं० विष्णुशर्मा	(सं०)	३३०
पञ्चकल्याणकपूजा	अरुणमणि	(सं०)	५००	पञ्चतन्त्रभाषा	—	(हि०)	३३०
पञ्चकल्याणकपूजा	गुणकीर्ति	(सं०)	५००	पञ्चदश [१५] यन्त्रकी विधि	—	(सं०)	३४९
पञ्चकल्याणकपूजा	वादीभसिंह	(सं०)	५७०	पञ्चनमस्कारस्तोत्र	उमास्वामी	(सं०)	५७६, ७३९
पञ्चकल्याणकपूजा	मुधासागर	(सं०)	५००	पञ्चनमस्कारस्तोत्र	विद्यानन्दि	(सं०)	४०१
			५१६, ५३७	पञ्चपरमेष्ठीउद्यापन	—	(सं०)	५०२
पञ्चकल्याणकपूजा	सुयशकीर्ति	(सं०)	५००	पञ्चपरमेष्ठीगुण	—	(हि०)	६६
पञ्चकल्याणकपूजा	सुरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	४९९				४२९, ७८८
पञ्चकल्याणकपूजा	—	(सं०)	५००	पञ्चपरमेष्ठीगुणमाल	—	(हि०)	७४५
			५१६, ५१८, ५१९, ६३९, ६९९	पञ्चपरमेष्ठीगुणवर्णन	डालूराम	(हि०)	६६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	सं० पृष्ठ
पञ्चपरमेष्ठीगुणस्तवन	—	(हि०)	७०७	पंचमीव्रतोद्यापन	हर्षकल्याण	(सं०)	५०४, ५३६
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	यशोनन्दि	(सं०)	५०२, ५१८	पंचमीव्रतोद्यापनपूजा	केशवसेन	(सं०)	६३८
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	५०२	पंचमीव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५०४
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	(सं०)	५०३	पंचमीस्तुति	—	(सं०)	६१८
			५१४, ५६६	पंचमेरुद्यापन	भ० रत्नचन्द्र	(सं०)	५०५
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	डालूगाम	(हि०)	५०३	पंचमेरुजयमाल	भूधरदास	(हि०)	५३६
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	टेकचन्द्र	(हि०)	५०३, ५१८	पंचमेरुजयमाल	—	(हि०)	७१७
पञ्चपरमेष्ठीपूजा	—	(हि०)	५०३	पंचमेरूपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५१६
			५१८, ५१६, ६५२, ७१२	पंचमेरूपूजा	भ० महीचन्द्र	(सं०)	६०७
पञ्चपरमेष्ठी [मण्डलचित्र]	—		५२५	पंचमेरूपूजा	—	(सं०)	५३६
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	—	(सं०)	४२२				५५७, ४६४, ६६४, ६६६, ७८४
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	—	(प्रा०)	६६१	पंचमेरूपूजा	—	(प्रा०)	६३५
पञ्चपरमेष्ठीस्तवन	जिनवल्लभसूरि	(हि०)	४४३	पंचमेरूपूजा	—	(प्रा०)	६३६
पञ्चपरमेष्ठीसनुच्चयपूजा	—	(सं०)	५०२	पंचमेरूपूजा	डालूराम	(हि०)	५०५
पञ्चपरावर्तन	—	(सं०)	३८	पंचमेरूपूजा	टेकचन्द्र	(हि०)	५०५
पञ्चपालपैतीसो	—	(हि०)	६८६	पंचमेरूपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५०५
पञ्चप्ररूपगा	—	(सं०)	२६६				५१६, ५६२, ५६६, ७०४, ७५६
पञ्चबधावा	—	(हि०)	६४३, ६६१	पंचमेरूपूजा	सुखानन्द	(हि०)	५०५
पंचबधावा	—	(राज०)	६८२	पंचमेरूपूजा	—	(हि०)	५०५
पंचबालयतिपूजा	—	(हि०)	५०४				५१६, ७४५
पंचमगतिवेलि	दृषकीर्त्ति	(हि०)	६२१	पंचमङ्गलपाठ, पंचमंकल्याणकमङ्गल, पंचमङ्गल	—		—
			६६१, ६६८, ७५०, ७६५		रूपचन्द्र	(हि०)	३६८,
पंचमासचतुर्दशीपूजा	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५४०				४२८, ४०१ ५०४, ५१८, ५६५, ५७०, ६०४, ६२४,
पंचमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५०४				६४२, ६४६, ६५०, ६५२, ६६१, ६६४, ६७०, ६७३,
पंचमासचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६				६७५, ६७६, ६८१, ६६१, ६६३, ७०४, ७०५, ७१०,
पंचमीउद्यापन	—	(सं० हि०)	५१७				७१४, ७२०, ७३५, ७६३, ७८८
पंचमीव्रतपूजा	केशवसेन	(सं०)	५१५	पंचयतिस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
पंचमीव्रतपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५०४	पंचरत्नपरोक्षा की गाथा	—	(प्रा०)	७५८
पंचमीव्रतपूजा	—	(सं० हि०)	५१७	पंचलब्धिविचार	—	(प्रा०)	७०७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पंचसंग्रह	आ० नेमिचन्द्र	(प्रा०)	३८	पक्षीशास्त्र	—	(सं०)	६७४
पंचसंग्रहटीका	अमितगति	(सं०)	३६	पट्टीपहाड़ोंको पुस्तक	—	(हि०)	३६८
पंचसंग्रहटीका	—	(सं०)	४०	पट्टरीति	विष्णुभट्ट	(सं०)	१३६
पंचसंग्रहवृत्ति	अभयचन्द्र	(सं०)	३६	पट्टावलि	—	(हि०)	३७३, ७६६
पंचसंधि	—	(सं०)	२६१	पडिकम्मणसूत्र	—	(प्रा०)	६१६
पंचस्तोत्र	—	(सं०)	५७८	पणकरहाजयमाल	—	(अप्र०)	६३६
पंचस्तोत्रटीका	—	(सं०)	४०१	पत्रपरीक्षा	पात्रकेशरी	(सं०)	१३६
पंचस्तोत्रसंग्रह	—	(सं०)	४०१	पत्रपरीक्षा	विद्यानन्दि	(सं०)	१३६
पंचाख्यान	विष्णुशर्मा	(सं०)	२३२	पथ्यापथ्यविचार	—	(सं०)	१३६
पंचाङ्ग	चण्डू		२८५	पद	अखैराम	(हि०)	५८५
पंचांगप्रबोध	—	(सं०)	२८५	पद	अक्षयराम	(हि०)	५८५
पंचाङ्गसाधन	गणेश [विश्वपुत्र]	(सं०)	२८५	पद	अजयराम	(हि०)	५८१
पंचाधिकार	—	(सं०)	३७३, ५१६				६२७, ७२४, ५८०
पंचाध्यायी	—	(हि०)	७५६	पद	अनन्तकीर्ति	(हि०)	५८५
पंचासिका	त्रिभुवनचन्द्र	(हि०)	६७३	पद	अमृतचन्द्र	(हि०)	५८६,
पंचास्तिकाय	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	४०	पद	उदयराम	हि०)	७८३, ७६८
पंचास्तिकायटीका	अमृतचन्द्रमूरि	(सं०)	४१	पद	कनकीर्ति	(हि०)	५६१
पंचास्तिकायभाषा	बुधजन	(हि०)	४१				६६४, ७०२, ७२४, ७७४
पंचास्तिकायभाषा	पं० हीरानन्द	(हि०)	४१	पद	ब्र० कपूरचन्द्र	(हि०)	५७०
पंचास्तिकायभाषा	पांडे हेमराज	(हि०)	४१				६१५, ६२४
पंचास्तिकायभाषा	—	(हि०)	७१६, ७२०	पद	कबीर	(हि०)	७७७, ७६३
पंचेन्द्रियवेलि	छीहल	(हि०)	७३८	पद	कर्मचन्द्र	(हि०)	५८७
पंचेन्द्रियवेलि	ठक्कुरसी	(हि०)	७०३	पद	किशनगुलाब	(हि०)	६६४, ७६३
			७२२, ७६५	पद	किशनदास	(हि०)	६४६
पंचेन्द्रियरास	—	(हि०)	६६३	पद	किशनसिंह	(हि०)	५६०, ७०४
पंडितमरण	—	(सं०)	६०४	पद	कुमुदचन्द्र	(हि०)	७५७, ६७०
पंथीगीत	छीहल	(हि०)	८३८, ७६५	पद	केशरगुलाब	(हि०)	४४५
पंद्रहतिथी	—	(हि०)	११०	पद	खुशालचन्द्र	(हि०)	५८२
पक्की स्याही बनानेकी विधि	—	(हि०)	७४१				६२४, ६६४, ६६४, ६६८, ७०३, ७८३, ७६८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	नयनसुख	(हि०)	५८३	पद	भाउ	(हि०)	५८७
पद	नरपाल	(हि०)	५८८	पद	भागचन्द	(हि०)	५७०
पद	नवल	(हि०)	५७१	पद	भानुकीर्त्ति	(हि०)	५८३
५८२, ५८६, ५९०, ६१५, ६४८, ६५३, ६५४, ६५५, ७०६, ७८२, ७८३, ७९८							५८५, ६१५
पद	ब्र० नाथू	(हि०)	६२२	पद	भूधरदास	(हि०)	५८०
पद	निर्मल	(हि०)	५८१	५८६, ५८९, ५९०, ६१४, ६१५, ६४८, ६५४, ६६४ ६९४, ७८५, ७९३, ७९८			
पद	नेमिचन्द	(हि०)	५८०	पद	मञ्जलसराय	(हि०)	५८१
			६२२, ६३३	पद	मनराम	(हि०)	६६०
पद	न्यामत	(हि०)	७९८	७२४, ७४६, ७६४, ७६६, ७७६			
पद	पद्मतिलक	(हि०)	५८३	पद	मनसाराम	(हि०)	५८०
पद	पद्मनन्दि	(हि०)	६४३				६६३, ६६४
पद	परमानन्द	(हि०)	७७०	पद	मनोहर	(हि०)	७६३
पद	पारसदास	(हि०)	६५४				७६४, ७८५
पद	पुरुषोत्तम	(हि०)	५८१	पद	मलूकचन्द	(हि०)	४४६
पद	पूनो	(हि०)	७८५	पद	मलूकदास	(हि०)	७९३
पद	पूरणदेव	(हि०)	६६३	पद	महीचन्द	(हि०)	५७६
पद	फतेहचन्द	(हि०)	५७६	पद	महेन्द्रकीर्त्ति	(हि०)	६२०, ७८६
			५८०, ५८१, ५८२	पद	माणिकचन्द	(हि०)	४४७
पद	बखतराम	(हि०)	५८३				४४८, ७९८
			५८६, ६६८, ७८२, ७८६, ७९३	पद	मुकुन्ददास	(हि०)	६९०
पद	बनारसीदास	(हि०)	५८२	पद	मेला	(हि०)	७७६
५८३, ५८५, ५८६, ५८७, ५८९, ६२१, ६२३, ६९७, ७९८				पद	मेलीराम	(हि०)	७७६
पद	बलदेव	(हि०)	७९८	पद	मोतीराम	(हि०)	५९१
पद	बालचन्द	(हि०)	६२५	पद	मोहन	(हि०)	७६४
पद	बुधजन	(हि०)	५७०	पद	राजचन्द्र	(हि०)	५७७
			५७१, ६५३, ६५४, ७०६, ७८५, ७९८	पद	राजसिंह	(हि०)	५८७
पद	भगतराम	(हि०)	७९८	पद	राजाराम	(हि०)	५९०
पद	भगवतीदास	(हि०)	७०६	पद	राम	(हि०)	६५३
पद	भगोसाह	(हि०)	५८१	पद	रामकिशन	(हि०)	६६८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
पद	रामचन्द्र	(हि०) ५८१ ६६८, ६६९	पद	सकलकीर्त्ति	(हि०) ५८८
पद	रामदास	(हि०) ५८३ ५८८, ६६७	पद	सन्तदास	(हि०) ६५४, ७५६
पद	रामभगत	(हि०) ५८२	पद	सबलसिंह	(हि०) ६२४
पद	रूपचन्द्र	(हि०) ५८५ ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ६२४, ६६१, ७२४, ७४९ ७५५, ७६३, ७६५, ७८३	पद	समयसुन्दर	(हि०) ५७९ ५८८, ५८९, ७७७
पद	रेखराज	(हि०) ७९८	पद	श्यामदास	(हि०) ७६४
पद	लक्ष्मीसागर	(हि०) ६८२	पद	सवाईराम	(हि०) ५९०
पद	ऋषि लहरी	(हि०) ५८५	पद	साईदास	(हि०) ६२०
पद	लालचन्द्र	(हि०) ५८२ ५८३, ५८७, ६६९, ७६३	पद	साहकीर्त्ति	(हि०) ७७७
पद	विजयकीर्त्ति	(हि०) ५८० ५८२, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८९, ६६७	पद	साहिराम	(हि०) ७६८
पद	विनोदीलाल	(हि०) ५९० ७२३, ७५७, ७८३, ७९८	पद	सुखदेव	(हि०) ५८०
पद	विश्वभूषण	(हि०) ५६१, ६२१	पद	सुन्दर	(हि०) ७२४
पद	विसनदास	(हि०) ५८७	पद	सुन्दरभूषण	(हि०) ५८७
पद	बिहारीदास	(हि०) ५८७	पद	सूरजमल	(हि०) ५८१
पद	चुन्दावन	(हि०) ६४३	पद	सूरदास	(हि०) ७६९, ७६३
पद	ऋषि शिवलाल	(हि०) ४४३	पद	सुरेन्द्रकीर्त्ति	(हि०) ६२२
पद	शिवसुन्दर	(हि०) ७५०	पद	सेवग	(हि०) ७६३, ७६८
पद	शुभचन्द्र	(हि०) ७०२, ७२४	पद	हठमलदास	(हि०) ६२४
पद	शोभाचन्द्र	(हि०) ५८३	पद	हरखचन्द्र	(हि०) ५८३ ५८४, ५८५, ७६३
पद	श्रीपाल	(हि०) ६७०	पद	हर्षकीर्त्ति	(हि०) ५८६ ५८५, ५८८, ५९०, ६२०, ६२४, ६६३, ७०१, ७५० ७६३, ७६४
पद	श्रीभूषण	(हि०) ५८३	पद	हरिभद्र	(हि०) ६४९
पद	श्रीराम	(हि०) ५९०	पद	हरिसिंह	(हि०) ५८२ ५८५, ६२०, ६४३, ६४४, ६६३, ६६९, ७७२, ७७६ ७६३, ७६९
			पद	हरीदास	(हि०) ७७०
			पद	मुनि हीराचन्द्र	(हि०) ५८१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पद	हेमराज	(हि०)	५६०
पद	—	(हि०)	४४६
	५७०, ५७६, ६०१, ६४३, ६४४, ६५०, ६५३, ७०३		
	७०४, ७०५, ७२४, ७३१, ७५३, ७५४, ७७०, ७७७		
पद्धती	यशःकीर्त्ति	(अप्र०)	६४२
पद्धती	सहस्रपाल	(अप्र०)	६४१
पद्मकोष	गोवर्धन	(सं०)	६६६
पद्मचरितसार	—	(हि०)	१७७
पद्मपुराण	भ० धर्मकीर्त्ति	(सं०)	१४६
पद्मपुराण	रविषेणाचार्य	(सं०)	१४८
पद्मपुराण (रामपुराण)	भ० सोमसेन	(सं०)	१४८
पद्मपुराण (उत्तरखण्ड)	—	(सं०)	१४६
पद्मपुराणभाषा	खुशालचन्द्र	(हि०)	१४६
पद्मपुराणभाषा	दौलतराम	(हि०)	१४६
पद्मनदिपंचविशतिका	पद्मनदि	(सं०)	६६
पद्मनदिपंचविशतिकाटीका	—	(सं०)	६७
पद्मनदिपंचविशतिका	जगतराय	(हि०)	६७
पद्मनदिपद्मीसीभाषा	मन्नालाल खिदूका	(हि०)	६८
पद्मनदिपद्मीसीभाषा	—	(हि०)	६८
पद्मनदिश्रावकाचार	पद्मनदि	(सं०)	६८
पद्मावत्याष्टकवृत्त	पाशुबंदेव	(सं०)	४०२
पद्मावती की ढाल	—	(हि०)	४०२
पद्मावतीकल्प	—	(सं०)	३४६
पद्मावतीकवच	—	(सं०)	५०६, ७४१
पद्मावतीचक्रेश्वरीस्तोत्र	—	(सं०)	४३२
पद्मावतीछंद	महाचंद्र	(सं०)	६०७
पद्मावती दण्डक	—	(सं०)	४०२, ७४१
पद्मावतीपटल	—	(सं०)	५०६, ७४१
पद्मावतीपूजा	—	(सं०)	४०२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
	४७५, ५०६, ५६७, ६५५, ६६२		
पद्मावतीमण्डलपूजा	—	(सं०)	५०६
पद्मावतीरानीआराधना	समयमुन्दर	(हि०)	६१७
पद्मावतीशांतिक	—	(सं०)	५०६
पद्मावतीसहस्रनाम	—	(सं०)	४०२
	५०६, ५६६, ६३६, ७११, ७४१		
पद्मावतीसहस्रनामवपूजा	—	(सं०)	५०६
पद्मावतीस्तवनमंत्रसहित	—	(सं०)	४२३
पद्मावतीस्तोत्र	—	(सं०)	४०२
	४२३, ४३०, ४३२, ४३३, ५०६, ५३६, ५६६, ६४५		
	६४६, ६४७, ६७६, ७३५, ७५७, ७७६		
पद्मावतीस्तोत्र	समयमुन्दर	(हि०)	६८५
पद्मावतीस्तोत्रबीजएवंसाधनविधि	—	(सं०)	७४१
पदविनती	—	(हि०)	७१५
पद्यसंग्रह	बिहारी	(हि०)	७१०
पद्यसंग्रह	गंगा	(हि०)	७१०
पदसंग्रह	आनन्दघन	(हि०)	७१०, ७७७
पदसंग्रह	ब्र० कपूरचंद	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	खेमराज	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	गंगाराम वैद्य	(हि०)	६१५
पदसंग्रह	चैनविजय	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	चैनसुख	(हि०)	४४६
पदसंग्रह	जगतराम	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	जिनदास	(हि०)	७७२
पदसंग्रह	जोधा	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	मांभूराम	(हि०)	४४५
पदसंग्रह	दलाराम	(हि०)	६२०
पदसंग्रह	देवाब्रह्म	(हि०)	४४६
	६३५, ७४०		७८३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पदसंग्रह	दौलतराम	(हि०)	४४५, ४४६	पदस्तुति	—	(हि०)	७११
पदसंग्रह	द्यानतराय	(हि०)	४४५, ७७७	परमज्योति	बनारसीदास	(हि०)	४०२
पदसंग्रह	नयनमुख	(हि०)	४४५, ७२६			५६०, ६६४, ७७४	
पदसंग्रह	नवल	(हि०)	४४५, ७२६	परमसप्तस्थानकभूजा	सुधासागर	(सं०)	५१६
पदसंग्रह	परमानन्द	(हि०)	६८४	परमात्मपुराण	दीपचन्द	(हि०)	१०६
पदसंग्रह	बखतराम	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाश	योगीन्द्रदेव	(अप०)	११०
पदसंग्रह	बनारसीदास	(हि०)	६२२, ७६५			५७५, ६३७, ६६३, ७०७, ७४७	
पदसंग्रह	बुधजन	(हि०)	४४५ ४४६, ६८२	परमात्मप्रकाशटीका	आ० अमृतचन्द	(सं०)	११०
पदसंग्रह	भगतराम	(हि०)	७३६	परमात्मप्रकाशटीका	ब्रह्मदेव	(सं०)	१११
पदसंग्रह	भागचन्द	(हि०)	४४५, ४४६	परमात्मप्रकाशटीका	—	(सं०)	१११
पदसंग्रह	भूधरदास	(हि०)	४४५ ६२०, ७७६, ७७७, ७८६	परमात्मप्रकाशबालाबोधनीटीका	खानचंद	(हि०)	१११
पदसंग्रह	मंगलचन्द	(हि०)	४४७	परमात्मप्रकाशभाषा	दौलतराम	(हि०)	१०८
पदसंग्रह	मनोहर	(हि०)	४४५, ७८६	परमात्मप्रकाशभाषा	नथमल	(हि०)	१११
पदसंग्रह	लाल	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाशभाषा	प्रभुदास	(हि०)	७६५
पदसंग्रह	विश्वभूषण	(हि०)	४४५	परमात्मप्रकाशभाषा	सूरजभान ओसवाल	(हि०)	११६
पदसंग्रह	शोभाचन्द	(हि०)	७७७	परमात्मप्रकाशभाषा	—	(हि०)	११६
पदसंग्रह	शुभचंद	(हि०)	७७७	परमानन्दपंचविंशति	—	(सं०)	४०४
पदसंग्रह	साहिबराम	(हि०)	४४५	परमात्मराजस्तोत्र	पद्मनदि	(सं०)	४०२, ४३७
पदसंग्रह	सुन्दरदास	(हि०)	७१०	परमात्मराजस्तोत्र	सकलकीर्त्ति	(सं०)	४०३
पदसंग्रह	सूरदास	(हि०)	६८४	परमानन्दस्तवन	—	(सं०)	४२४, ४२५
पदसंग्रह	सेवक	(हि०)	४४७	परमानन्दस्तोत्र	कुमुदचंद्र	(सं०)	७२४
पदसंग्रह	हरखचंद	(हि०)	६६३	परमानन्दस्तोत्र	पूज्यपाद	(सं०)	५७४
पदसंग्रह	हरीसिंह	(हि०)	७७२	परमानन्दस्तोत्र	—	(सं०)	४०४
पदसंग्रह	हीराचन्द	(हि०)	४४५, ४४७			४३३, ६०४, ६०६, ६२८, ६३७	
पदसंग्रह	—	(हि०)	४४४	परमानन्दस्तोत्र	बनारसीदास	(हि०)	५६२
				परमानन्दस्तोत्र	—	(हि०)	४२६
				परमार्थगीत व दोहा	रूपचंद	(हि०)	७०६, ७६४
				परमारथसुहरी	—	(हि०)	७२४
				परमार्थस्तोत्र	—	(सं०)	४०४

४४५, ६७६, ६८०, ६६१, ७०१, ७०८, ७०९, ७१०
 ७१६, ७१७, ७१८, ७२१, ७४३, ७४६, ७५६, ७६०
 ७५२, ७५६, ७५७, ७६१, ७७४, ७७६, ७८१, ७९०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
परमार्थहिण्डोलना	रूपचंद्र	(हि०)	७६५	पांचपरवीत्रतकीकथा	वेणीदास	(हि०)	६२१
परमेष्ठिपोंकेगुणवप्रतिशय	—	(प्रा०)	५७५	पांचबोल	—	(गुजराती)	३३०
पर्यषणकल्प	—	(सं०)	११७	पांचमाहकीचौदस (मण्डलचित्र)	—	—	५२५
पर्यषणस्तुति	—	(हि०)	४५२	पांचवासोंकामंडलचित्र	—	—	५२५
परसरामकथा	—	(सं०)	२३३	पाटनपुरसज्जाय	श्यामसुन्दर	(हि०)	४४६
परिभाषासूत्र	—	(सं०)	२६१	पाठसंग्रह	—	(सं०)	४०५, ५७६
परिभाषेन्दुशेखर	नागोजीभट्ट	(सं०)	२६१	पाठसंग्रह	—	(सं०प्रा०)	५७३
परिशिष्टपर्व	—	(सं०)	१७८	पाठसंग्रह	—	(प्रा०)	५७३
परीक्षामुख	माणिक्यनंदि	(सं०)	१३६	पाठसंग्रह	—	(सं०हि०)	४०५
परीक्षामुखभाषा	जयचन्द्र छाबड़ा	(हि०)	१३७	पाठसंग्रह	संग्रहकर्ता जैतरामबाफना	—	—
परोषहवर्णन	—	(हि०)	६८	पाण्डवपुराण	यशःकीर्ति	(सं०)	१५०
पत्यमंडलविधान	शुभचन्द्र	(सं०)	५३८	पाण्डवपुराण	श्रीभूषण	(सं०)	१५०
पत्यविचार	—	(सं०)	२८६	पाण्डवपुराण	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	१५०
पत्यविचार	—	(हि०)	२८६	पाण्डवपुराणभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	१५०
पत्यविधानकथा	—	(सं०)	२४३, २४६	पाण्डवपुराणभाषा	बुलाकीदास	(हि०)	१५०, ७४५
पत्यविधानकथा	खुशालचंद्र	(हि०)	२३३	पाण्डवचरित्र	लालवर्द्धन	(हि०)	१७८
पत्यविधानपूजा	अनन्तकीर्ति	(सं०)	५०७	पाणिनीयव्याकरण	पाणिनि	(सं०)	२६१
पत्यविधानपूजा	रत्ननन्दि	(सं०)	५०६	पात्रकेशरीस्तोत्र	—	(सं०)	४०५
			५०६, ५१६	पात्रदानकथा	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	२३३
पत्यविधानपूजा	ललितकीर्ति	(सं०)	५०६	पार्थिवेश्वर	—	(सं०)	४०५
पत्यविधानपूजा	—	(सं०)	५०७	पार्थिवेश्वरचितामणि	—	(सं०)	४०५
पत्यविधानरास	भ० शुभचन्द्र	(हि०)	३६३	पार्श्वछंद	ब्र० लेखराज	(हि०)	३८६
पत्यविधानव्रतोपाख्यानकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२३३	पार्श्वजिनगीत	छाजू समयसुन्दर के शिष्य	—	—
पत्यविधि	—	(सं०)	६७०			(हि०)	४४८
पत्यव्रतोद्यापन	शुभचन्द्र	(सं०)	५०७	पार्श्वजिनपूजा	साह लोहट	(हि०)	५०७
पत्योपवासविधि	—	(सं०)	५०७	पार्श्वजिनस्तवन	जितचन्द्र	(हि०)	७००
पवनदूतकाव्य	वादिचन्द्रसूरि	(सं०)	१७८	पार्श्वजिनेश्वरस्तोत्र	—	(सं०)	४२६
पहेलियां	मारू	(हि०)	६५१	पार्श्वनाथएवंवर्द्धमानस्तवन	—	(सं०)	४०५
पांचपरवीत्रकथा	ब्रह्मवेणु	(हि०)	६८५	पार्श्वनाथकीआरती	मुनि कनककीर्ति	(हि०)	५६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पार्श्वनाथकीशुणमाल	लोहट	(हि०)	७७६	पार्श्वनाथस्तवन	समथराज	(हि०)	६६७
पारसनाथकीनिसाणी	—	(हि०)	६५०	पार्श्वनाथस्तवन	समथसुन्दरगणि	(राज०)	६१७
पार्श्वनाथकीनिशानी	जिनहर्ष	(हि०)	४४८, ५७९	पार्श्वनाथस्तवन	—	(हि०)	४४९, ६४५
पार्श्वनाथकीनिशानी	—	(हि०)	७०२	पार्श्वनाथस्तुति	—	(हि०)	७४५
पार्श्वनाथकेदर्शन	वृन्दावन	(हि०)	६२५	पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(सं०)	६१४
पार्श्वनाथचरित्र	रङ्गधू	(अप०)	१७९				७०२, ७४५
पार्श्वनाथचरित्र	वादिराजसूरि	(सं०)	१७९	पार्श्वनाथस्तोत्र	पद्मनंदि	(सं०)	५६९, ७४४
पार्श्वनाथचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	१७९	पार्श्वनाथस्तोत्र	रघुनाथदास	(सं०)	४१३
पार्श्वनाथचरित्र	विश्वभूषण	(हि०)	५६८	पार्श्वनाथस्तोत्र	राजसेन	(सं०)	५६९
पार्श्वजिनचैत्यालयचित्र			६०३	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(सं०)	४०५
पार्श्वनाथजयमाल	लोहट	(हि०)	६४२				४०६, ४२४, ४२५, ४२६, ४३२, ५६९, ५७८, ६४५,
पार्श्वनाथजयमाल	—	(हि०)	६५५, ६७६				६४७, ६४८, ६५१, ६७०, ७६३
पार्श्वनाथपद्मावतीस्तोत्र	—	(सं०)	४०५	पार्श्वनाथस्तोत्र	द्यानतराय	(हि०)	४०६
पार्श्वनाथपुराण [पार्श्वपुराण]	भूधरदास	—					४०६, ५६९, ६१५
		(हि०)	१७९, ७४४, ७९१	पार्श्वनाथस्तोत्र	—	(हि०)	४०६
पार्श्वनाथपूजा	—	(सं०)	४२३				४४९, ५६९, ७३३
			५६०, ६०६, ६४०, ६५५, ७०४, ७३१	पार्श्वनाथस्तोत्रटीका	—	(सं०)	४०६
पार्श्वनाथपूजा (विधानसहित)	—	(सं०)	५१३	पार्श्वनाथाष्टक	—	(सं०)	४०६, ६७६
पार्श्वनाथपूजा	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	६६३	पार्श्वनाथाष्टक	सकलकीर्त्ति	(हि०)	७७७
पार्श्वनाथपूजा	—	(हि०)	५०७	पाराविधि	—	(हि०)	२९९
			५६९, ६००, ६२३, ६४५, ६४८	पाराशरी	—	(सं०)	२८६
पार्श्वनाथपूजाग्रन्थसहित	—	(सं०)	५७५	पाराशरीसञ्जनरंजनीटीका	—	(सं०)	२८६
पार्श्वमहिम्नस्तोत्र	महामुनि रामसिंह	(सं०)	४०६	पावागिरीपूजा	—	(हि०)	७३०
पार्श्वनाथलक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(सं०)	४०५	पाशाकेवली	गर्गमुनि	(सं०)	२८६, ६४७
पार्श्वनाथस्तवन	देशचंद्रसूरि	(सं०)	६३३	पाशाकेवली	ज्ञानभास्कार	(सं०)	२८६
पार्श्वनाथस्तवन	राजसेन	(हि०)	७३७	पाशाकेवली	—	(सं०)	२८६, ७०१
पार्श्वनाथस्तवन	जगरूप	(हि०)	६८१	पाशाकेवली	अबजद	(हि०)	७१३
पार्श्वनाथस्तवन [पार्श्वविनती]	ब्र० नाथू	—		पाशाकेवली	—	(हि०)	२८७
		(हि०)	६७०, ६८३				५६५, ६०३, ७१३, ७१८, ७८५, ७८९

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पिंगलछंदशास्त्र	माखन कवि	(हि०)	३१०	पुरुषार्थसिद्धयुपायभाषा	टोडरमल	(हि०)	६६
पिंगलछंदशास्त्र (छंद रत्नावली)—				पुष्कराढ्यपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	४६७
	हरिरामदास	(हि०)	३११	पुष्पदन्तजिनपूजा	—	(सं०)	५०६
पिंगलप्रदीप	भट्ट लक्ष्मीनाथ	(सं०)	३११	पुष्पाञ्जलिकथा	—	(अप०)	६३३
पिंगलभाषा	रूपदीप	(हि०)	७०६	पुष्पाञ्जलिजयमाल	—	(अप०)	७४४
पिंगलशास्त्र	नागराज	(सं०)	३११	पुष्पाञ्जलिविधानकथा	पं० हरिश्चन्द्र	(अप०)	२४५
पिंगलशास्त्र	—	(सं०)	३११	पुष्पाञ्जलिविधानकथा	—	(सं०)	२४३
पीठपूजा	—	(सं०)	६०८	पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	जिनदास	(सं०)	२३४
पीठप्रक्षालन	—	(सं०)	६७२	पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	श्रुतकीर्ति	(सं०)	२३४
पुच्छोसेरा	—	(प्रा०)	६६	पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	ललितकीर्ति	(सं०)	६६५, ७६४
पुण्यछत्तीसी	समयसुन्दर	(हि०)	६१६	पुष्पाञ्जलिव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२३४
पुण्यतत्त्वचर्चा	—	(सं०)	४१				२४५, ७३१
पुण्यास्रवकथाकोश	मुमुक्षु रामचंद्र	(सं०)	२३३	पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन [पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा]	गङ्गादास	(सं०)	५०८, ५१६
पुण्यास्रवकथाकोश	टेकचंद्र	(हि०)	२३४				
पुण्यास्रवकथाकोश	दौलतराम	(हि०)	२३३	पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	भ० रतनचन्द्र	(सं०)	५०८
पुण्यास्रवकथाकोश	—	(हि०)	२३३	पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	भ० शुभचन्द्र	(सं०)	५०८
पुण्यास्रवकथाकोशसूची	—	(हि०)	२३४	पुष्पाञ्जलिव्रतपूजा	—	(सं०)	५०८, ५३६
पुण्याहवाचन	—	(सं०)	५०७, ६६६	पुष्पाञ्जलिव्रतविधानकथा	—	(सं०)	२३४
पुरन्दरचौपई	मालदेव	(हि०)	७३८	पुष्पाञ्जलिव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५४०
पुरन्दरपूजा	—	(सं०)	५१६	पूजा	पद्मनन्दि	(सं०)	५६०
पुरन्दरविधानकथा	—	(सं०)	२४३	पूजा एवं कथासंग्रह	खुशालचन्द्र	(हि०)	५१६
पुरन्दरव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५०८	पूजाक्रिया	—	(हि०)	५०८
पुरश्चरणविधि	—	(सं०)	२८७	पूजासामग्री की सूची	—	(हि०)	६१२
पुराणसार	श्रीचन्द्रमुनि	(सं०)	१५१	पूजा व जयमाल	—	(सं०)	५६१
पुराणसारसंग्रह	भ० सकलकीर्ति	(सं०)	१५१	पूजा धमाल	—	(सं०)	६५५
पुरुषस्त्रीसंवाद	—	(हि०)	७८६	पूजापाठ	—	(हि०)	५१२
पुरुषार्थानुशासन	गोविन्दभट्ट	(सं०)	६६	पूजापाठसंग्रह	—	(सं०)	५०८
पुरुषार्थसिद्धयुपाय	अमृतचन्द्राचार्य	(सं०)	६८				६४६, ६८२, ६६७, ६६६, ७१३, ७१५, ७१८, ७१६
पुरुषार्थसिद्धयुपायवचनिका	भूधर मिश्र	(हि०)	६६				७८०, ७६६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
पूजापाठसंग्रह	—	(हि०)	५१०	प्रक्रियाकौमुदी	—	(सं०)	२६१
			५११, ७४३, ७४४	पृच्छावली	—	(हि०)	६५७
पूजापाठस्तोत्र	—	(सं० हि०)	७१०	प्रत्याख्यान	—	(प्रा०)	७०
			७८४	प्रतिक्रमण	—	(सं०)	६६
पूजाप्रकरण	उमास्वामी	(सं०)	५१२				४२६, ५७१
पूजाप्रतिष्ठापाठसंग्रह	—	(सं०)	६६६	प्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	६६
पूजामहात्म्यविधि	—	(सं०)	५१२	प्रतिक्रमण	—	(प्रा० सं०)	४२५
पूजावर्णविधि	—	(सं०)	५१२				५७३
पूजाविधि	—	(प्रा०)	५१२	प्रतिक्रमणपाठ	—	(प्रा०)	६६
पूजाष्टक	विश्वभूषण	(सं०)	५१३	प्रतिक्रमणसूत्र	—	(प्रा०)	६६
पूजाष्टक	अभयचन्द्र	(हि०)	५१२	प्रतिक्रमणसूत्र [वृत्तिसहित]	—	(प्रा०)	६६
पूजाष्टक	आशानन्द	(हि०)	५१२	प्रतिमाउत्थापकः उपदेश	जगरूप	(हि०)	७०
पूजाष्टक	लोहट	(हि०)	५१२	प्रतिमासांतचतुर्दशी [प्रतिमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा]			
पूजाष्टक	विनोदीलाल	(हि०)	७७७		अक्षयराम	(सं०)	५१६
पूजाष्टक	—	(हि०)	५१२, ७४५	प्रतिमासांतचतुर्दशीपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	७६१
पूजासंग्रह	—	(सं०)	६०३	प्रतिमासांतचतुर्दशीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५१४,
			६६४, ६६८, ७११, ७१२, ७२५				५२०, ५४०
पूजासंग्रह	रामचन्द्र	(हि०)	५२०	प्रतिमासान्तचतुर्दशीव्रतोद्यापनपूजा	रामचन्द्र	(सं०)	५२०
पूजासंग्रह	लालचन्द	(हि०)	७७७	प्रतिष्ठाकुंकुंमपत्रिका	—	(सं०)	३७३
पूजासंग्रह	—	(हि०)	५६५	प्रतिष्ठादर्श	श्रीराजकीर्त्ति	(सं०)	५२०
			६०४, ६६२, ६६५, ७०७, ७०८, ७११, ७१४, ७२६,	प्रतिष्ठादीपक	प० नरेन्द्रसेन	(सं०)	५२१
			७३०, ७३१, ७३३, ७३४, ७३६, ७४८ ।	प्रतिष्ठापाठ	आशाधर	(सं०)	५२१
पूजासार	—	(सं०)	६२०	प्रतिष्ठापाठ [प्रतिष्ठासार]	बसुनंदि	(सं०)	५२१, ५२२
पूजास्तोत्रसंग्रह	—	(सं० हि०)	६६६	प्रतिष्ठापाठ	—	(सं०)	५२२
			७०२, ७०८, ७०९, ७११, ७१३, ७१४, ७१६, ७२५,				६६६, ७५६
			७३४, ७५२, ७५३, ७५४, ७७८ ।	प्रतिष्ठापाठभाषा	बा० दुलीचन्द	(हि०)	५२२
पूर्वमीमांसार्थप्रकरणसंग्रह	लोगान्निभास्कर	(सं०)	१३७	प्रतिष्ठानामावलि	—	(हि०)	३७४, ७२६
पैसठबोल	—	(हि०)	३३१	प्रतिष्ठाविधानकी सामग्रीवर्णन	—	(हि०)	७२३
पांसहरास	ज्ञानभूषण	(हि०)	७६२	प्रतिष्ठाविधि	—	(सं०)	५२२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
प्रतिष्ठासम्बन्धीयन्त्र	—		६६८	प्रवचनसार	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	११६
प्रतिष्ठासार	—	(सं०)	५२२	प्रवचनसारटीका	अमृतचन्द्र	(सं०)	११७
प्रतिष्ठासार	पं० शिवजीलाल	(हि०)	५२२	प्रवचनसारटीका	—	(सं०)	११३
प्रतिष्ठासारोद्धार	—	(सं०)	५२२	प्रवचनसारटीका	—	(हि०)	११३
प्रतिष्ठासूक्तिसंग्रह	—	(सं०)	५२२	प्रवचनसारप्राभृतवृत्ति	—	(सं०)	११३
प्रद्युम्नकुमाररास [प्रद्युम्नरास]		ब्र०	रायमल्ल	प्रवचनसारभाषा	जोधराज गोदीका	(हि०)	११४
	(हि०)	५६५, ६३६, ७१२, ७३७		प्रवचनसारभाषा	वृन्दावनदास	(हि०)	११४
प्रद्युम्नचरित्र	महासेनाचार्य	(सं०)	१८०	प्रवचनसारभाषा	पांडे हेमराज	(हि०)	११३
प्रद्युम्नचरित्र	सोमकीर्ति	(सं०)	१८१	प्रवचनसारभाषा	—	(हि०)	११४, ७१७
प्रद्युम्नचरित्र	—	(सं०)	१८२	प्रस्ताविकश्लोक	—	(सं०)	३३२
प्रद्युम्नचरित्र	सिंहकवि	(अप०)	१८२	प्रश्नचूडामणि	—	(सं०)	२८७
प्रद्युम्नचरित्रभाषा	मन्नालाल	(हि०)	१८२	प्रश्नमनोरमा	गर्ग	(सं०)	२८७
प्रद्युम्नचरित्रभाषा	—	(हि०)	१८२	प्रश्नमाला	—	(सं०)	२८८
प्रद्युम्नरास	कृष्णराय	(हि०)	७२२	प्रश्नविद्या	—	(सं०)	२८७
प्रद्युम्नरास	—	(हि०)	७४६	प्रश्नविनोद	—	(सं०)	२८७
प्रबोधचन्द्रिका	बैजलभूपति	(सं०)	३१७	प्रश्नसार	हयग्रीव	(सं०)	२८८
प्रबोधसार	यशःकीर्ति	(सं०)	३३१	प्रश्नसार	—	(सं०)	२८८
प्रभावतीकल्प	—	(हि०)	६०२	प्रश्नसुगनावलि	—	(सं०)	२८८
प्रमाणनक्षत्रालोकालंकारटीका [रत्नाकरावतारिका]				प्रश्नावलि	—	(सं०)	२८८
	रत्नप्रभसूरि	(सं०)	१३७	प्रश्नावलि कवित	वैद्य नंदलाल	(हि०)	७८२
प्रमाणनिर्याय	—	(सं०)	१३७	प्रश्नोत्तर माणिक्यमाला	ब्र० ज्ञानसागर	(सं०)	२८८
प्रमाणपरीक्षा	आ० विद्यानन्दि	(सं०)	१३७	प्रश्नोत्तरमाला	—	(सं०)	२८८
प्रमाणपरीक्षाभाषा	भागचन्द्र	(हि०)	१३७	प्रश्नोत्तरमालिका [प्रश्नोत्तररत्नमाला]	अमोघवर्ष		
प्रमाणप्रमेयकलिका	नरेन्द्रसूरि	(सं०)	५७५			सं०	३३२, ५७३
प्रमाणमोमांसा	विद्यानन्दि	(सं०)	१३८	प्रश्नोत्तररत्नमाला	तुलसीदास	(गुज०)	३३२
प्रमाणमोमांसा	—	(सं०)	१३८	प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	—	(सं०)	७०
प्रमाणप्रमेयकलिका	नरेन्द्रसेन	(सं०)	१३७	प्रश्नोत्तरश्रावकाचारभाषा	बुलाकीदास	(हि०)	७०
प्रमेयकमलमार्त्तण्ड	आ० प्रभाचन्द्र	(सं०)	१३८	प्रश्नोत्तरश्रावकाचारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	७०
प्रमेयरत्नमाला	अनन्तवीर्य	(सं०)	१३८	प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	—	(हि०)	७१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
प्रश्नोत्तरस्तोत्र	—	(सं०)	४०६	प्रीत्यङ्कुरचौपई	नेमिचन्द्र	(हि०)	७७५
प्रश्नोत्तरोपासकाचार	भ० सकलकीर्ति	(सं०)	७१	प्रीत्यङ्कुरचरित्र	—	(हि०)	६८६
प्रश्नोत्तरोद्धार	—	(हि०)	७३	प्रोषधदोषवर्णन	—	(हि०)	७५
प्रशस्ति	भ० दामोदर	(सं०)	६०८	प्रोषधोपवासव्रतोद्यापन	—	(सं०)	६६६
प्रशस्ति	—	(सं०)	१७७	फ			
प्रशस्तिकीर्तिका	बालकृष्ण	(सं०)	७३	फलफांदल [पञ्चमेरु]	मण्डलचित्र	—	५९५
प्रह्लाद चरित्र	—	(हि०)	६००	फलवधीपार्श्वनावस्तवन	समयसुन्दरगणि	(सं०)	६१६
प्राकृतछन्दकोश	—	(प्रा०)	३११	फुटकरकवित्त	—	(हि०)	७४८
प्राकृतछन्दकोश	रत्नशेखर	(प्रा०)	३११				७६६, ७७३
प्राकृतछन्दकोश	अन्हु	(प्रा०)	३११	फुटकरज्योतिषपद्य	—	(सं०)	५७३
प्राकृतपिगलशास्त्र	—	(सं०)	३१२	फुटकर दोहे	—	(हि०)	६६५
प्राकृतव्याकरण	चण्डकवि	(सं०)	२६२				६६६, ७८१
प्राकृतरूपमाला	श्रीरामभट्ट	(प्रा०)	२६२	फुटकरपद्य	—	(हि०)	
प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका	सौभाग्यगणि	(सं०)	२६२	फुटकरपद्य एवं कवित्त	—	(हि०)	६४३
प्राणप्रतिष्ठा	—	(सं०)	५२३	फुटकरपाठ	—	(सं०)	५७३
प्राणायामशास्त्र	—	(सं०)	११५	फुटकरवर्णन	—	(सं०)	५७४
प्राणोडागीत	—	(हि०)	७६७	फुटकरसवेया	—	(हि०)	७७५
प्रातःक्रिया	—	(सं०)	७४	फूलभीतरी का दूहा	—	(हि०)	६७५
प्रातःस्मरणमन्त्र	—	(सं०)	४०६	ब			
प्रामृतसार	भ्रा० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	१३०	बंकचूलरास	जयकीर्ति	(हि०)	३६३
प्रायश्चित्तग्रन्थ	—	(सं०)	७४	बंभरावाडीस्तवन	कमलकलश	(हि०)	६१६
प्रायश्चित्तविधि	अकलङ्कचरित्र	(सं०)	७४	बख्तविलास	—	(हि०)	७२६
प्रायश्चित्तविधि	भ० एकसंधि	(सं०)	७४	बडाकक्का	गुलाबराय	(हि०)	६८५
प्रायश्चित्तविधि	—	(सं०)	७४	बडाकक्का	—	(हि०)	६६३, ७५९
प्रायश्चित्तशास्त्र	इन्द्रनन्दि	(प्रा०)	७४	बडादर्शन	—	(सं०)	३६८, ४३२
प्रायश्चित्तशास्त्र	—	(गुज०)	७४	बडी सिद्धपूजा [कर्मदहनपूजा]	सोमदत्त	(सं०)	६३६
प्रायश्चित्तसमुच्चटीका	नन्दिगुरु	(सं०)	७५	बदरीनाथ के छंद	—	(हि०)	६००
प्रीतिङ्कुरचरित्र	भ० नेमिदत्त	(सं०)	१८२	बधावा	—	(हि०)	७१०
प्रीतिङ्कुरचरित्र	जोधराज	(हि०)	१८३				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बधावाव विनती	—	(हि०)	६८५	बारहर डो	पाशवदास	(हि०)	३३२
बन्दना जकड़ी	बुधजन	(हि०)	४४६	बारहखड़ी	रामचन्द्र	(हि०)	७१५
बन्दना जकड़ी	बिहारीदास	(हि०)	४४६, ७२७	बारहखड़ी	सूरत	(हि०)	३२२
बन्दे तू सूत्र	—	(प्रा०)	६१६			६७०, ७१५, ७८८	
बन्दोमोक्षस्तोत्र	—	(सं०)	६०८	बारहखड़ी	—	(हि०)	३३२
बधउदयसत्ताचौपई	श्रीलाल	(हि०)	४१			४४६, ६०१, ६६४, ७८२	
बंधस्थिति	—	(सं०)	५७२	बारहभावना	रङ्गधू	(हि०)	११४
बनारसीविलास	बनारसीदास	(हि०)	६४०	बारहभावना	आलु	(हि०)	६६१
६८६, ६६८, ७०६, ७०८, ७२१, ७३४, ७६३, ७६५, ७६७				बारहभावना	जसोमगणि	(हि०)	६१७
बनारसीविलास के कुछ पाठ	—	(हि०)	७५२, ७५६	बारहभावना	जितचन्द्रसूरि	(हि०)	७००
बरहावतारचित्र	—		६०३	बारहभावना	नवल	(हि०)	१५
बलदेव महामुनि सञ्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१६			११५, ४२६	
बलभद्रगीत	—	(हि०)	७२३	बारहभावना	भगवतदास	(हि०)	७२०
बलात्कारगणपूर्वावलि	—	(सं०)	३७४	बारहभावना	भूधरदास	(हि०)	११५
			५७२, ५७४	बारहभावना	दौलतराम	(हि०)	५६१, ६७५
बलिभद्रगीत	अभयचन्द्र	(हि०)	७३६	बारहभावना	—	(हि०)	११५
बसंतराजशकुनावली	—	(सं० हि०)	७११			३८३, ६४४, ६८५, ६८६, ७८८	
वसंतपूजा	अजैराज	(हि०)	६८३	बारहमासकी चौदस	[मण्डलचित्र]	—	५२५
बहतरकलापुरुष	—	(हि०)	६०६	बारहमासा	गोविन्द	(हि०)	६६६
बाईसअभयवर्णन	बा० दुलीचन्द्र	(हि०)	७५	बारहमासा	चूहरकधि	(हि०)	६६६
बाईसपरिषहवर्णन	भूधरदास	(हि०)	७५	बारहमासा	जसराज	(हि०)	७८०
			६०५, ६७०, ७२०, ७८५, ७८८	बारहमासा	—	(हि०)	६६३
बाईसपरिषह	—	(हि०)	७५			७४७, ७६७	
			५६६, ६४६	बारहमाहकी पञ्चमी [मण्डलचित्र]	—		५२५
बारहअक्षरीं	—	(सं०)	७४७	बारहव्रतों का ब्यौरा	—	(हि०)	५१६
बाहरअनुप्रेक्षा	—	(प्रा०)	७३६	बारहसौ चौतीसव्रतकथा	जिनेन्द्रभूषण	(हि०)	६६५
बाहरअनुप्रेक्षा	अवधू	(हि०)	७२२	बारहसौ चौतीसव्रतपूजा	श्रीभूषण	(सं०)	५३७
बारहअनुप्रेक्षा	—	(हि०)	७७७	बालपद्मपुराण पं० पन्नालाल बाकलीवाल	(हि०)	१५१	
बारहखड़ी	दत्तलाल	(हि०)	७४५	बाल्यकालवर्णन	—	(हि०)	५२३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बालाविवोध [गणमांकार पाठका अर्थ]	—	(प्रा० हि०)	७५
बावनी	बनारसीदास	(हि०)	७५०
बावनी	हेमराज	(हि०)	६५७
बासठकुमार	[मण्डलचित्र]		५२५
बाहुबलीसञ्ज्ञाय	विमलकीर्ति	(हि०)	४४६
बाहुवलीसञ्ज्ञाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१६
बिम्बनिर्माणविधि	—	(सं०)	३५४
बिम्बनिर्माणविधि	—	(हि०)	३५४, ६६१
विह.रीसतसई	बिहारीलाल	(हि०)	६७५
बिहारीसतसईटीका	कृष्णदास	(हि०)	७२७
बिहारीसतसईटीका	हरिचरनदास	(हि०)	६८७
बिहारीसतसईटीका	—	(हि०)	७०६
बीजक [कोश]	—	(हि०)	२७६
बीजकोश [मातृका निर्घट]	—	(सं०)	३४६
बीसतीर्थङ्करजयमाल	—	(हि०)	५११
बीसतीर्थङ्करजिनस्तुति	जितसिंह	(हि०)	७००
बीसतीर्थङ्करपूजा	—	(सं०)	५१४
			५१६, ७३०
बीसतीर्थङ्करपूजा	थानजी अजमेरा	(हि०)	५२३
बीसतीर्थङ्करपूजा	—	(हि०)	५२३, ५३७
बीसतीर्थङ्करस्तवन	—	(हि०)	४००
बीसतीर्थङ्करोंकी जयमाल [बीस विरह पूजा]			
	दर्पकीर्ति		५६५, ७२२
बीसविद्यमान तीर्थङ्करपूजा	—	(सं०)	५६५
बीसविरहमानजकड़ी	समयसुन्दर	(हि०)	६१७
बीसविरहमानजयमाल तथा स्तवनविधि	—	(हि०)	५०५
बीसविरहमाणपूजा	—	(सं०)	६३६
बीसविरहमाणपूजा	नरेन्द्रकीर्ति	(सं० हि०)	७६३
बुधजनविलास	बुधजन	(हि०)	३३०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
बुधजनसतसई	बुधजन	(हि०)	३३२, ३३३
बुद्धावतारचित्र	—		६०३
बुद्धिविलास	बखतरामसाह	(हि०)	७५
बुद्धिरास	शालिभद्र द्वारा संकलित	(हि०)	६१७
बुलाखीदास खत्रीकी बरात	—	(हि०)	७५३
बेलि	छीहल	(हि०)	७३८
बैतालपञ्चीसी	—	(सं०)	२३४
बोधप्राभूत	कुंदकुंदाचार्य	(प्रा०)	११५
बोधसार	—	(हि०)	७५
ब्रह्मचर्याष्टक	—	(सं०)	३३३
ब्रह्मचर्यवर्णन	—	(हि०)	७५
ब्रह्मविलास	भैया भगवतीदास	(हि०)	३३३, ७६०

भ

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भक्तामरपञ्जिका	—	(सं०)	४०६
भक्तामरस्तोत्र	मानतुंगाचार्य	(सं०)	४०२
			४०७, ४२५, ४२८, ४२६, ४३०, ४३१, ४३३, ५६६, ५७२, ५७३, ५६६, ५६७, ६०३, ६०५, ६१६, ६२८, ६३४, ६३७, ६४४, ६४८, ६५१, ६५२, ६६४, ६६५, ६६४, ६६४, ६५१, ६५२, ६६४, ६६५, ६७०, ६७३, ६७५, ६७६, ६७७, ६८०, ६८१, ६८५, ६८६, ६८१, ६८३, ६८६, ७०३, ७०६, ७०७, ७३५, ७३७, ७४५, ७५२, ७५४, ७५८, ७६१, ७८८, ७८६, ७६६, ७६७
भक्तामरस्तोत्र [मन्त्रसहित]	—	(सं०)	६१२
			६३६, ६७०, ६६७, ७०५, ७१४, ७४१
भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमन्त्रसहित	—	(सं०)	४०६
भक्तामरस्तोत्रकथा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	२३५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भक्तामरस्तोत्रकथा				भक्तिपाठ	कनककीर्त्ति	(हि०)	६५१
भक्तामरस्तोत्र ऋद्धिमन्त्रसहित नथमल		(हि०)	२३४, ७०६	भक्तिपाठ	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४४६
भक्तामरस्तोत्रकथा	विनोदीलाल	(हि०)	२३४	भक्तिपाठ	—	(हि०)	४५०
भक्तामरस्तोत्रटीका	हर्षकीर्त्तिसूरि	(सं०)	४०६	भक्तिपाठसंग्रह	—	(सं०)	४२६
भक्तामरस्तोत्रटीका	—	(सं०)	४०६, ६१५	भक्तिसंग्रह [आचार्य भक्ति तक]	—	(सं०)	५७३
भक्तामरस्तोत्रटीका	—	(सं० हि०)	४०६	भगतवत्सावलि	—	(हि०)	६००
भक्तामरस्तोत्रपूजा	केशवसेन	(सं०)	५१५, ५४०	भगवतीआराधना	शिखाचार्य	(सं०)	७६
भक्तामरस्तोत्रपूजा				भगवती आराधनाटीका अपराजितसूरि		(सं०)	७६
भक्तामरपूजा उद्यापन	श्रीज्ञानभूषण	(सं०)	५२३	भगवतीआराधनाभाषा सदासुख कासलीवाल		(हि०)	७६
भक्तामरव्रतोद्यापनपूजा	विश्वकीर्त्ति	(सं०)	५२३	भगवतीसूत्र	—	(प्रा०)	४२
भक्तामरस्तोत्रपूजा	श्रीभूषण	(सं०)	५४०	भगवतीस्तोत्र	—	(सं०)	४२५
भक्तामरस्तोत्रपूजा	—	(सं०)	५१६ ५२४, ६६६	भगवद्गीता [कृष्णार्जुन संवाद]	—	(हि०)	७६ ७६०
भक्तामरस्तोत्रभाषा	अख्यराज	(हि०)	७५५	भगवद्गीता के कुछ स्थल	—	(सं०)	६७३
भक्तामरस्तोत्रभाषा	गंगाराम	(सं०)	४१०	भजन	—	(हि०)	७७०
भक्तामरस्तोत्रभाषा	जयचन्द झाबडा	(हि०)	४१०	भजनसंग्रह	नयनकवि	(हि०)	४५०
भक्तामरस्तोत्रभाषा	हेमराज	(हि० प०)	४१० ४२६, ५२६, ६०४, ६४८, ६६१, ७७०. ७७४, ७६२	भजनसंग्रह	—	(हि०)	५६७, ६४३
भक्तामरस्तोत्रभाषा	नथमल	(हि०)	७२०	भट्टाभिषेक	—	(सं०)	५५७
भक्तामरस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	४११ ६१५, ६४४, ६६४, ६६६, ७०६, ७५३, ७७४, ७६८, ७६६	भट्टारकविजयकीर्त्तिग्रन्थक	—	(सं०)	६८६
भक्तामरस्तोत्र [मण्डलचित्र]	—		५२४	भट्टारकपट्टावलि	—	हि०)	३७४, ६७५
भक्तामरस्तोत्रवृत्ति	ब्र० राममल्ल	(सं०)	४०८	भडली	—	(सं०)	२८६
भक्तामरस्तोत्रोत्पत्तिकथा	—	(हि०)	७०६	भद्रबाहुचरित्र	रत्ननन्दि	(सं०)	१८३
भक्तिनामवर्णन	—	(सं० हि०)	५७१	भद्रबाहुचरित्र	चंपाराम	(हि०)	१८३
भक्तिपाठ	—	(सं०)	५७१ ५६५, ६८६, ७०६	भद्रबाहुचरित्र	नवलकवि	(हि०)	१८३
				भद्रबाहुचरित्र	—	(हि०)	१८३
				भयहरस्तोत्र	—	(सं०)	३८१
				भयहरस्तोत्र व मन्त्र	—	(सं०)	५७२
				भयहरस्तोत्र	—	(प्रा०)	४२३
				भयहरस्तोत्र	—	(प्रा० हि०)	६६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भयहरस्तोत्र	—	(हि०)	६१६	भावनाचौतीसी	भ० पद्मनन्दि	(सं०)	६३४
भरतेशवैभव	—	(हि०)	१८३	भावनाद्वात्रिशिका	आ० अमितगति	(सं०)	५७३
भर्तृहरिशतक	भर्तृहरि	(सं०)	३३३, ७१५	भावनाद्वात्रिशिकाटीका	—	(सं०)	११५
भववैराग्यशतक	—	(प्रा०)	११७	भावनाद्वात्रिशिका	—	(सं०)	११५, ६३७
भवानीवाक्य	—	(हि०)	२८८	भावपाहुड	कुंदकुंदाचार्य	(प्रा०)	११५
भवानीसहस्रनाम एवं कवच	—	(सं०)	७६२	भावनापच्चीसीप्रतोद्यापन	—	(सं०)	५२४
भविष्यदत्तकथा ^१	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	३६४	भावनापद्धति	पद्मनन्दि	(सं०)	५७५
	५६४, ६४८, ७४०, ७५१, ७५२, ७६३, ७७५			भावनाबत्तीसी	—	(सं०)	६२८, ६३३
भविष्यदत्तचरित्र	पं० श्रीधर	(सं०)	१८४	भावनासारसंग्रह	चामुण्डराय	(सं०)	७७, ६१५
भविष्यदत्तचरित्रभाषा	पद्मलाल चौधरी	(हि०)	१८४	भावनास्तोत्र	द्यानतराय	(हि०)	६१४
भविष्यदत्ततिलकामुन्दरीनाटक	न्यामतसिंह	(हि०)	३१७	भावप्रकाश	मानमिश्र	(सं०)	२६६
भव्यकुमुदचन्द्रिका	[सागारधर्माश्रितस्वोपज्ञटीका]			भावप्रकाश	—	(सं०)	२६६
	पं० आशाधर	(सं०)	६३	भावशतक	श्री नागराज	(सं०)	३३४
भागवत	—	(सं०)	६७५	भावसंग्रह	देवसेन	(प्रा०)	७७
भागवतद्वादशमस्कंधटीका	—	(सं०)	१५१	भावसंग्रह	श्रुतमुनि	(प्रा०)	७८
भागवतपुराण	—	(सं०)	१५१	भावसंग्रह	वामदेव	(सं०)	७८
भागवतमहिमा	—	(हि०)	६७६	भावसंग्रह	—	(सं०)	७८, २६६
भागवतमहापुराण [सप्तमस्कंध]	—	(सं०)	१५१	भाषा भूषण	जसवंतसिंह	(हि०)	३१२
भाद्रपदपूजा	—	(हि०)	७७५	भाषाभूषण	धीरजसिंह		
भाद्रपदपूजासंग्रह	द्यानतराय	(हि०)	५२४	भाष्यप्रदीप	कैटघट	(सं०)	२६२
भावत्रिभङ्गी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	४२, ७००	भाष्यती	पद्मनाभ	(सं०)	२८६
भावदीपक	जोधराज गोदीका	(हि०)	७७	भुवनकीर्ति	बूवराज	(हि०)	२८६
भावदीपक	—	(हि०)	६६०	भुवनदीपक	पद्मभूमूरि	(सं०)	२८६
भावदापिका	कृष्णशर्मा	(सं०)	१३८	भुवनदीपिका	—	(सं०)	२८६
भावदीपिकाभाषा	—	(हि०)	४२	भुवनेश्वरीस्तोत्र [सिद्धमहामंत्र]			
भावनाउण्तीसी	—	(प्र०)	६४२		पृथ्वीधराचार्य	(सं०)	३४
भावनाचतुर्विंशति	पद्मनन्दि	(सं०)	७३६	भूगोलनिर्माण	—	(हि०)	३२३
				भूतकालचौबीसी	बुधजन	(हि०)	३६८

नोट—रचना के यह नाम और हैं—

१ भविष्यदत्तचौपई भविष्यदत्तपञ्चमीकथा भविष्यदत्तपञ्चमीरास

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
भूत भविष्य वर्तमानजिनपूजा	पांडे जिनदास	(सं०)	४७०	मंडपविधि	—	(हि०)	५२५
भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्र	भूपाल	(सं०)	४०२	मन्त्र	—	(सं०)	५७३
	४११, ४२५, ४०८, ४३२, ५७२, ५६४, ६०५,			मन्त्र व औषधिका तुमखा	—	(हि०)	३००
	६३३, ६३७, ७३७			मन्त्र महौदधि	पं० महीधर	(सं०)	३५१, ५७७
भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्रटीका	आशाधर	(सं०)	४०१, ४११	मन्त्रशास्त्र	—	(सं०)	३५०
भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्रटीका	विनयचन्द्र	(सं०)	४१२	मन्त्रशास्त्र	—	(हि०)	३५०
भूपालचौबीसीभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४१२	मन्त्रसंग्रह	—	(सं०)	३५१
भूपालचौबीसीभाषा	—	(हि०)	७७४				६७५, ६६६, ७०३, ७३६, ७६७
भूवल	—	(सं०)	३४६	मन्त्रसंहिता	—	(सं०)	६०८
भैरवनामस्तोत्र	—	(सं०)	५६६	मन्त्रादिसंग्रह	—	(सं०)	५७२
भैरवपद्मावतीकल्प	मल्लिषेणसूरि	(सं०)	३४६	मक्षीपार्श्वनाथस्तवन	जोधरा मुनि	(हि०)	६१८
भैरवपद्मावतीकल्प	—	(सं०)	३५०	मच्छावतार [चित्र]	—		६०३
भैरवाष्टक	—	(सं०)	६१२, ६४६	मणिरत्नाकर जयमाल	—	(हि०)	५६४
भोगीदासकी जन्मकुंडली	—	(हि०)	७७६	मणुवसधि	—	(अप०)	६४२
भोजप्रबन्ध	पं० बल्लाल	(सं०)	१८५	मदनपराजय	जिनदेवसूरि	(सं०)	३१७
भोजप्रबन्ध	—	(सं०)	२३५	मदनपराजय	—	(प्रा०)	३१८
भोजरासो	उदयभान	(हि०)	७६७	मदनपराजय	स्वरूपचन्द	(हि०)	३१८
भौमचरित्र	भ० रत्नचन्द	(सं०)	१८५	मदनमोदनरक्षतीभाषा	छत्रपति जैसवाल	(हि०)	३३४
सृष्टिसंहिता	—	(सं०)	२८६	मदनविनोद	मदनपाल	(सं०)	३००
अमरगीत	मानसिंह	(हि०)	७५०	मधुकैटभवध [महिषासुरवध]	—	(सं०)	२३५
अमरगीत	—	(हि०)	६०१, ७४५	मधुमालतीकथा	चतुर्भुजदास	(हि०)	६३६
				मध्यलोकपूजा	—	(सं०)	५२५
				मनोरथमाला	अचलकीर्ति	(हि०)	७६४
मङ्गल	विनोदोलाल	(हि०)	७२०	मनोरथमाला	—	(हि०)	७८
मङ्गलकलशमहामुनिचतुष्टी				मनोहरपुराकी	पीठियोंका वरान	(हि०)	७५६
	रंगविनयगणि	(हि० राज०)	१८५	मनोहरमञ्जरी	मनोहर मिश्र	(हि०)	७६६
मङ्गलपाठ	—	(सं०)	५६६	मरकतविलास	पन्नालाल	(हि०)	७८
मङ्गलाष्टक	—	(सं०)	५६०, ६३४	मरणकरंडिका	—	(प्रा० हि०)	४२
मंडपविधि	—	(सं०)	५२५				

म

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मस्देवोकी सञ्ज्ञाय ऋषि लालचन्द	(हि०)	४५०	महावीरस्तोत्र	स्वरूपचन्द	(हि०)	५११	
मल्लिनाथपुराण	सकलकीर्त्ति	(सं०)	१५२	महावीराष्टक	भागचन्द	(सं०)	४१३
मल्लिनाथपुराणभाषा	सेवाराम पाटनी	(हि०)	१५२	महाशान्तिकविधान	पं० धर्मदेव	(सं०)	६२५
मल्हारचरित्र	—	(हि०)	७४१	महिम्नस्तवत	जयकीर्त्ति	(सं०)	४२५
महर्षिस्तवन	—	(सं०)	६५८	महिम्नस्तोत्र	—	(सं०)	४१३
			४१३, ४२६	महीपालचरित्र	चारित्रभूषण	(सं०)	१८६
महर्षिस्तवन	—	(हि०)	४१२	महीपालचरित्र	भ० रत्नान्दि	(सं०)	१८६
महागरुडपतिकवच	—	(सं०)	६९२	महीपालचरित्रभाषा	नथमल	(हि०)	१८६
महादण्डक	—	(हि०)	७३५	मांगीतु गीगिरिमंडलपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	५२६
महापुराण	जिनसेनाचार्य	(सं०)	१५३	माणिक्यमालाग्रन्थप्रश्नोत्तरी	संग्रहकर्त्ता—		
महापुराण [संक्षिप्त]	—	(सं०)	१५२	ब्र० ज्ञानसागर	(सं० प्रा० हि०)	६०४	
महापुराण महाकवि पुष्पदन्त	(अप०)	१५३	माताके सोलह स्वप्न	—	(हि०)	४२४	
महाभारतविष्णुसहस्रनाम	—	(सं०)	६७६	माता पद्मावतीछन्द	भ० महीचन्द	(सं० हि०)	५६०
महाभिषेकपाठ	—	(सं०)	६०७	माधवनिदान	माधव	(सं०)	३००
महाभिषेकसामग्री	—	(हि०)	६६८	माधवानलकथा	आनन्द	(सं०)	२३५
महामहर्षिस्तवनटीका	—	(सं०)	४१३	मानतुंगमानवति चौपई	मोहनविजय	(सं०)	२३५
महामहिम्नस्तोत्र	—	(सं०)	४१३	मानकी बड़ी बावनी	मनासाह	(हि०)	६३८
महालक्ष्मीस्तोत्र	—	(सं०)	४१३	मानबावनी	मानकवि	(हि०)	३३४, ६०१
महाविद्या [मन्त्रोका संग्रह]	—	(सं०)	३५१	मानमञ्जरी	नन्दराम	(हि०)	६५१
महाविद्याविडम्बन	—	(सं०)	१३८	मानमञ्जरी	नन्ददास	(हि०)	२७६
महावीरजीका चौढाल्या ऋषि लालचन्द	(हि०)	४५०	मानलघुबावनी	मनासाह	(हि०)	६३८	
महावीरछन्द	शुभचन्द	(हि०)	३८६	मानविनोद	मानसिंह	(सं०)	३००
महावीरनिर्वाणपूजा	—	(सं०)	५२६	मानुषोत्तरगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	४६७
महावीरनिर्वाणकल्याणपूजा	—	(सं०)	५२६	मायाब्रह्मका विचार	—	(हि०)	७६७
महावीरनिर्वाणकल्याणकपूजा	—	(हि०)	३६८	मार्कण्डेयपुराण	—	(सं०)	१५३, ६०७
महावीरपूजा	वृन्दावन	(हि०)	५२६	मार्गणा व गुणस्थान वर्णन	—	(प्रा०)	४३
महावीरस्तवन	जितचन्द्र	(हि०)	७००	मार्गणावर्णन	—	(प्रा०)	७६६
महावीरस्तवनपूजा	समयमुन्द्र	(हि०)	७३५	मार्गणाविधान	—	(हि०)	७६०
महावीरस्तोत्र	भ० अमरकीर्त्ति	(सं०)	७५७	मार्गणासमास	—	(प्रा०)	४३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मालीरातो	जिनदास	(हि०)	५७६	मुनिमुव्रतपुराण	ब्र० कृष्णदास	(स०)	१५३
मिच्छादुक्कड़	ब्र० जिनदास	(हि०)	६८६	मुनिमुव्रतपुराण	इन्द्रजीत	(हि०)	१५३
मित्रविलास	घासी	(हि०)	३३४	मुनिमुव्रत विनती	देवाब्रह्म	(हि०)	४५०
मिथ्यात्वखंडन	वस्तराम	(हि०)	७८, ५६०	मुनीश्वरोकी जयमाल	—	(स०)	४२८
मिथ्यात्वखंडन	—	(हि०)	७६				५७६, ५७८, ६४६, ७५२
मुकुटमसमोकथा	पं० अश्रुदेव	(सं०)	२४४	मुनीश्वरोकी जयमाल	—	(अ०)	६३७
मुकुटमसमोकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२४४, ७३१	मुनीश्वरोकी जयमाल	ब्र० जिनदास	(हि०)	५७१
मुकुटमसमीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५२७				६२२, ७५०
मुक्तावलि कथा	—	(सं०)	६३१	मुनीश्वरोकी जयमाल	—	(हि०)	६२१
मुक्तावलि कथा	भारामल	(हि०)	७६४	मुष्टिज्ञान	ज्योतिषाचार्य देवचन्द्र	(हि०)	३००
मुक्तावलिगीत	सकलकीर्ति	(हि०)	६८६	मुहूर्त्तचिन्तामणि	—	(हि०)	२८६
मुक्तावलि [मण्डलचित्र]	—	—	५२५	मुहूर्त्तदोषक	महादेव	(सं०)	२६०
मुक्तावलिपूजा	वर्णी सुखसागर	(सं०)	५२७	मुहूर्त्त मुक्तावली	परमहंसपरिव्राजकाचार्य—		
मुक्तावलिपूजा	—	(सं०)	५३६, ६६६	मुहूर्त्तमुक्तावली	शङ्कराचार्य	(हि०)	७६८
मुक्तावलि विधान कथा	श्रुतसागर	(सं०)	२३६	मुहूर्त्तमुक्तावली	—	(सं० हि०)	२६०
मुक्तावलि व्रत कथा	सोमप्रभ	(सं०)	२३६	मुहूर्त्तसंग्रह	—	(सं०)	२६०
मुक्तावलि विधान कथा	—	(अ०)	२३६	मूढताज्ञानाकुश	—	(सं०)	७६२
मुक्तावलि व्रत कथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२४५	मूर्खकेलक्षण	—	(सं०)	३५८
मुक्तावलि व्रत कथा	—	(हि०)	६७३	मूलसंवकीपट्टावलि	—	(सं०)	७३७
मुक्तावलि व्रतकी तिथियां	—	(हि०)	५७१	मूलाचारटीका	आ० वसुनन्दि	(प्रा० सं०)	७६
मुक्तावलि व्रत पूजा	—	(सं०)	५२७	मूलाचारप्रदीप	सकलकीर्ति	(सं०)	७६
मुक्तावलि व्रत विधान	—	(सं०)	५२७	मूलाचारभाषा	ऋषभदास	(हि०)	८०
मुक्तावलि व्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५२७	मूलाचारभाषा	—	(हि०)	८०
मुक्तावलोत्तरगीत	—	(हि०)	७६५	मृगापुत्र उडाला	—	(हि०)	२३५
मुखावलीकन कथा	—	(सं०)	२४३	मृत्युमहोत्सव	—	(सं०)	११५, ५७६
मुनिराजका बारहमासा	—	(हि०)	७०७	मृत्युमहोत्सवभाषा	सदासुख कासलीवाल—		
मुनिमुव्रतचन्द्र	भ० प्रभाचन्द्र	(सं० हि०)	५५७				(हि०) ११५
मुनिमुव्रतनाथपूजा	—	(सं०)	५०६	मृत्युमहोत्सवभाषा	—	(हि०)	४१२
मुनिमुव्रतनाथस्तुति	—	(अ०)	६३७				६६१, ७२२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
मेघकुमारगीत	पूतो	(हि०)	७३८ ७४६, ७५०, ७६४	मोहविवेकयुद्ध	बनारसीदास	(हि०)	७१४, ७६४
मेघकुमारचौढालिया	कनकसोम	(हि०)	६१७	मौनएकादशीकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२२८
मेघकुमारचौपई	—	(हि०)	७७४	मौनएकादशीस्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६२०
मेघकुमारवासि	—	(हि०)	६६४	मौनव्रतकथा	गुणभद्र	(सं०)	२३६
मेघकुमारसज्जाय	समयसुन्दर	(हि०)	६१८	मौनव्रतकथा	—	(सं०)	२३७
मेघदूत	कालिदास	(सं०)	१८७	मौनव्रतविधान	रत्नकीर्त्ति	(सं० ग०)	२४४
मेघदूतटीका	परमहंसपरिव्राजकः चार्थ—			मौनव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५१७
मेघमाला	—	(सं०)	२६०	य			
मेघमालाविधि	—	(सं०)	५२७	यन्त्र [भगे हुए व्यक्तिके वापस आनेका]			६०३
मेघमालाव्रतकथा	श्रुतसागर	(सं०)	५१४	यन्त्रमन्त्रविधिफल	—	(हि०)	३५१
मेघमालाव्रतकथा	—	(सं०)	२३६, २४२	यन्त्रमन्त्रसंग्रह	—	(सं०)	७०१, ७६६
मेघमालाव्रतकथा	सुशालचन्द्र	(हि०)	२३६, २४४	यन्त्रसंग्रह	—	(सं०)	३५१ ६६७, ७६८
मेघमालाव्रत	[मण्डनवित्र]—		५२५	यक्षिणीकल्प	—	(सं०)	३५१
मेघमालाव्रतोद्यापनकथा	—	(सं०)	५२७	यज्ञकीसामग्रीका व्यौरा	—	(हि०)	५६५
मेघमालाव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५२७	यज्ञमहिमा	—	(हि०)	५६५
मेघमालाव्रतोद्यापन	—	(सं० हि०)	५१७ ५३६	यतिदिनचर्या	देवसूरि	(प्रा०)	८०
मेदिनीकोश	—	(सं०)	२७६	यतिभावनाष्टक	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	५७३
मेरूपूजा	सोमसेन	(सं०)	७६५	यतिभावनाष्टक	—	(सं०)	६१७
मेरुपत्ति तपकी कथा	सुशालचन्द्र	(हि०)	५१६	यतिआहार के ४६ दोष	—	(हि०)	६२७
मोक्षपैडी	बनारसीदास	(हि०)	८० ६४३, ७४६	यत्याचार	आ० बसुनन्दि	(सं०)	८०
मोक्षमार्गप्रकाशक	पं० टोडरमल	(राज०)	८०	यमक	—	(सं०)	४२६
मोक्षशास्त्र	उमास्वामी	(सं०)	६६४	(यमकाष्टक)			
मोरपिच्छधारी [कृष्ण] के कवित्त कपोत		(हि०)	६७३	यमकाष्टकस्तोत्र	भ० अमरकीर्त्ति	(सं०)	४१३, ४२६
मोरपिच्छधारी [कृष्ण] के कवित्त धर्मदास		(हि०)	६७३	यमपालमातङ्गी कथा	—	(सं०)	२३७
मोरपिच्छधारी [कृष्ण] के कवित्त विचित्रदेव		(हि०)	६७३	यशस्तिलकचम्पू	सोमदेवसूरि	(सं०)	१८७
मोहम्मदराजाकी कथा	—	(हि०)	६००	यशस्तिलकचम्पूटीका	श्रुतसागर	(सं०)	१८७
				यशस्तिलकचम्पूटीका	—	(सं०)	१८८

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
यशोधरकथा [यशोधरचरित्र]	सुशालचन्द्र	(हि०)	१६१	योगशात	वररुचि	(सं०)	३०२
			७११	योगशतक	—	(सं०)	३०२
यशोधरचरित्र	ज्ञानकीर्त्ति	(सं०)	१६२	योगशतक	—	(हि०)	३०२
यशोधरचरित्र	कायस्थपद्मनाभ	(सं०)	१६६	योगशतटीका	—	(सं०)	३०२
यशोधरचरित्र	पूरणदेव	(सं०)	१६०	योगशास्त्र	हेमचन्द्रसूरि	(सं०)	११६
यशोधरचरित्र	षादिराजसूरि	(सं०)	१६१	योगशास्त्र	—	(सं०)	११६
यशोधरचरित्र	वासवसेन	(सं०)	१६१	योगसार	योगचन्द्र	(सं०)	५७५
यशोधरचरित्र	श्रतसागर	(सं०)	१६२	योगसार	योगीन्द्रदेव (अप०)	११६, ७५५	
यशोधरचरित्र	सकलकीर्त्ति	(सं०)	१६८	योगनारभाषा	नन्दराम	(हि०)	११६
यशोधरचरित्र	पुष्पदन्त	(अप०)	१६८	योगसारभाषा	बुधजन	(हि०)	११७
यशोधरचरित्र	गारवदास	(हि० प०)	१६१	योगसारभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि० ग०)	११६
यशोधरचरित्र	पन्नालाल	(हि०)	१६	योगसारभाषा	—	(हि० प०)	११७
यशोधरचरित्र	—	(हि०)	१६२	योगसारसंग्रह	—	(सं०)	११७
यशोधरचरित्रटिप्पण	प्रभाचन्द्र	(सं०)	१६२	योगिनीकवच	—	(सं०)	६०८
यात्रावर्णन	—	(हि०)	३७४	योगिनीस्तोत्र	—	(सं०)	४३०
यादववशावलि	—	(हि०)	६७६	योगीचर्चा	महात्मा ज्ञानचन्द्र	(अप०)	६२८
युक्त्यानुशासन	आ० समन्तभद्र	(सं०)	१३६	योगीरासो	योगीन्द्रदेव	(अप०)	६०३
युक्त्यानुशासनटीका	विद्यानन्दि	(सं०)	१३६				७१२, ७४८
युगादिदेवमहिम्नस्तोत्र	—	(सं०)	४१३	योगीन्द्रपूजा	—	(सं०)	६७६
यूनानी नूतन	—	(सं०)	६६१				
योगचिंतामणि	मनूसिंह	(सं०)	३०१				
योगचिंतामणि	उपाध्याय हर्षकीर्त्ति	(सं०)	३०१	रङ्ग बनाने की विधि	—	(हि०)	६२३
योगचिंतामणि	—	(सं०)	३०१	रक्षाबंधनकथा	—	(सं०)	२३७
योगचिंतामणिबीजक	—	(सं०)	३०१	रक्षाबंधनकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०
योगफल	—	(सं०)	२६०	रक्षाबंधनकथा	नाथूराम	(हि०)	२४३
योगबिन्दुप्रकरण	आ० हरिभद्रसूरि	(सं०)	११६	रक्षाविधानकथा	—	(सं०)	२४३, ७३१
योगभक्ति	—	(सं०)	६३३, ६२८	रघुनाथविलाम	रघुनाथ	(हि०)	३१२
योगभक्ति	—	(प्रा०)	११६	रघुवंशटीका	मल्लिनाथसूरि	(सं०)	१६३
योगभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०	रघुवंशटीका	गुणविलयगणि	(सं०)	१६४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
रघुवंशटीका	समयसुन्दर	(सं०)	१६४	रत्नत्रयपूजा	पं० नरेन्द्रसेन	(सं०)	५६४
रघुवंशटीका	सुमतिविजयगणि	(सं०)	१६४	रत्नत्रयपूजा	—	(सं०)	५१६
रघुवंशमहाकाव्य	कालिदास	(सं०)	१६३				५२६, ५३७, ५५५, ५७४, ६०६, ६४०, ६४६,
रतिरहस्य	—	(हि०)	७६६				६५२, ६६४, ७०४, ७०५, ७५६, ७६३
रत्नकरंडश्रावकाचार	समन्तभद्र	(सं०)	८१	रत्नत्रयपूजा	—	(सं० हि०)	५१८
			६६१, ७६५	रत्नत्रयपूजा	—	(प्रा०)	६३५, ६५५
रत्नकरंडश्रावकाचार	पं० सदासुख कासलीवाल			रत्नत्रयपूजा	ऋषभदास	(हि०)	५३०
	(हि० गद्य)		८२	रत्नत्रयपूजाजयमाल	ऋषभदास	(अप०)	५३७
रत्नकरंडश्रावकाचार	नथमल	(हि०)	८३	रत्नत्रयपूजा	द्यानतराय	(हि०)	४८८
रत्नकरंडश्रावकाचार	संघी पन्नालाल	(हि०)	८३				५०३, ५२६
रत्नकरंडश्रावकाचारटीका	प्रभाचन्द्र	(सं०)	८२	रत्नत्रयपूजा	सुशालचन्द्र	(हि०)	५१६
रत्नकोष	—	(सं०)	३३४, ७०६	रत्नत्रयपूजा	—	(हि०)	५१६
रत्नकोष	—	(हि०)	३३५				५३०, ६४५, ७४५
रत्नत्रयउद्यापनपूजा	—	(सं०)	५२७	रत्नत्रयपूजाविधान	—	(सं०)	६०७
रत्नत्रयकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७४०	रत्नत्रयमण्डल [चित्र]			५२५
रत्नत्रयका महार्घ व क्षमावणी ब्रह्मसेन		(सं०)	७८१	रत्नत्रयमण्डलविधान	—	(हि०)	५३०
रत्नत्रयगुरुराकथा	पं० शिवजीलाल	(सं०)	२३७	रत्नत्रयविधान	—	(सं०)	५३०
रत्नत्रयजयमाल	—	(प्रा०)	५२७	रत्नत्रयविधानकथा	रत्नकीर्त्ति	(सं०)	२२०, २४२
रत्नत्रयजयमाल	—	(सं०)	५२८	रत्नत्रयविधानकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२३७
रत्नत्रयजयमाल	ऋषभदास बुधदास	(हि०)	५१६	रत्नत्रयविधानपूजा	रत्नकीर्त्ति	(सं०)	५३०
रत्नत्रयजयमाल	—	(अप०)	५२८	रत्नत्रयविधान	टेकचन्द्र	(हि०)	५३१
रत्नत्रयजयमाल	—	(हि०)	५२६	रत्नत्रयविधि	आशाधर	(सं०)	२४२
रत्नत्रयजयमालभाषा	नथमल	(हि०)	५२८	रत्नत्रयव्रतकथा [रत्नत्रयकथा]			
रत्नत्रयजयमाल तथा विधि	—	(प्रा०)	६५८				ललितकीर्त्ति (सं०) ६४५, ६६५
रत्नत्रयपाठविधि	—	(सं०)	५६०	रत्नत्रयव्रत विधि एवं कथा	—	(हि०)	७३३
रत्नत्रयपूजा	पं० आशाधर	(सं०)	५२६	रत्नत्रयव्रतोद्यापन	केशवसेन	(सं०)	५३६
रत्नत्रयपूजा	केशवसेन	(सं०)	५२६	रत्नत्रयव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५१३
रत्नत्रयपूजा	पद्मनन्दि	(सं०)	५२६				५३१, ५३६, ५४०
			५७५, ६३६	रत्नदीपक	गणपति	(सं०)	२६०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
रत्नदीपक	—	(सं०)	२६०	रसप्रकरण	—	(सं०)	३०२
रत्नदीपक	रामकवि	(हि०)	३५८	रसप्रकरण	—	(हि०)	३०२
रत्नमाला	आ० शिवकोटि	(सं०)	८३	रसमञ्जरी	शालिनाथ	(सं०)	३०२
रत्नमञ्जूषा	—	(सं०)	३१२	रसमंजरी	शार्ङ्गधर	(सं०)	३०२
रत्नमञ्जूषिका	—	(सं०)	३१२	रसमंजरी	भानुदत्त मिश्र	(हि०)	३५६
रत्नावलिप्रतकथा	गुणनन्दि	(हि०)	२४६	रसमञ्जरीटीका	गोपालभट्ट	(सं०)	३५६
रत्नावलिप्रतकथा	जोशी रामदास	(सं०)	२३७	रससागर	—	(हि०)	६८६
रत्नावलिप्रतविधान	ब्र० कृष्णदास	(हि०)	५३१	रसायनविधि	—	(हि०)	५६०
रत्नावलिप्रतोद्यापत	—	(सं०)	५३६	रसालकुंवरकी चौई	नरवरु कवि	(हि०)	५७७
रत्नावलिप्रतोंकी तिथियों के नाम	—	हि०)	६५५	रसिकप्रिया	इन्द्रजीत	(हि०)	६७६ ७४३
रथयात्रावर्णन	—	(हि०)	७१६	रसिकप्रिया	केशव	(हि०)	७७१ ७६६
रमलज्ञान	—	(हि० ग०)	२६१	रागर्चातराकाद्रुहा	—	(हि०)	६७५
रमलशास्त्र	पं० चिंतामणि	(सं०)	२६०	रागमाला	—	(सं०)	३१८
रमलशास्त्र	—	(हि०)	२६०	रागमाला	श्याममिश्र	(हि०)	७७१
रयणशास्त्र	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	८४	रागमाला के दोहे	जैतश्री	(हि०)	७८०
रविवारकथा	सुशालचन्द	(हि०)	७७५	रागमाला के दोहे	—	(हि०)	७७७
रविवारपूजा	—	(सं०)	५३७	रागरागनियों के नाम	—	(हि०)	३१८
रविवारव्रतमण्डल [विभ्र]	—	—	५२५	रागु आसावरी	रूपचन्द	(अप०)	६४१
रविव्रतकथा	श्रुतसागर	(हि०)	२३७	रागों के नाम	—	(हि०)	७७३
रविव्रतकथा	जयकीर्त्ति	(हि०)	६६६	राजनीति कवित्त	देवीदास	(हि०)	७५२
रविव्रतकथा [रविवारकथा]	देवेन्द्रभूषण	(हि०)	२३७	राजनीतिशास्त्र	चारणक्य	(सं०)	६४०, ६४६
			७०७	राजनीतिशास्त्र	जसुराम	(हि०)	३३१
रविव्रतकथा	भाद्रकवि (हि० प०)	२३७, ५६५		राजनीतिशास्त्रभाषा	देवीदास	(हि०)	३३६
रविव्रतकथा	भानुकीर्त्ति	(हि०)	७५०	राजप्रशास्त	—	(सं०)	३७४
रविव्रतकथा	—	(हि०)	२४७	राजा चन्द्रगुप्तकी चौपई	ब्र० गुलाल	(हि०)	६२०
			६०३, ७५३	राजादिफल	—	(सं०)	२६१
रविव्रतोद्यापनपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५३२	राजा प्रजाको वशमें करने का मन्त्र	—	(हि०)	५७१
रसकौतुक राजसभारंजन	गंगादास	(हि०)	५७६	राजारानीसम्भाय	—	(हि०)	४५०
रसकौतुकराजसभारञ्जन	—	(हि०)	७६२				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
राजुलपञ्चीसी	लालचंद विनोदीलाल	(हि०)	६००	रामायणमहाभारतकथाप्रश्नोत्तर	—	(हि०ग०)	५६२
	६१३, ६२२, ६४३, ६५१, ६८३, ६८५, ७२२, ७५३			रामावतार	[चित्र]	—	६०३
राजुलमङ्गल	—	(हि०)	७५३	रायपसेणीसूत्र	—	(प्रा०)	४३
राजुलकी सञ्जाय	जिनदास	(हि०)	७५७	राशिफल	—	(सं०)	७६३
राठीढरतन महेश दशोत्तरी	—	(हि०)	२३८	रासायनिकशास्त्र	—	(हि०)	३३०
रांडपुरास्तवन	—	(हि०)	४५०	राहुफल	—	(हि०)	२६१
रांडपुरका स्तवन	समयसुन्दर	(हि०)	६१६	रक्तविभागप्रकरण	—	(सं०)	८४
रात्रिभोजनकथा	—	(सं०)	२३८	रिदुगोमिचरित	स्वयंभू	(अप०)	६४२
रात्रिभोजनकथा	किशानसिंह	(हि०)	२३८	रुमणिकथा	मदनकीर्ति	(सं०)	२४७
रात्रिभोजनकथा	भारामल	(हि०)	२३८	रुमणिकृष्णजी को रासो	तिपरदास	(हि०)	७७०
रात्रिभोजनकथा	—	(हि०)	२२८	रुमणिविधानकथा	छत्रसेन (सं०)	२४४, २४६	
रात्रिभोजनचोपई	—	(हि०)	२३६	रुमणिविवाह	वल्लभ	(हि०)	७८७
रात्रिभोजनत्यागवर्णन	—	(हि०)	८४	रुमणितिवाहवेलि	पृथ्वीराज राठौड	(हि०)	३६४
राधाजनभोत्सव	—	(हि०)	८४	रुगनिनिश्चय	—	(सं०)	७९३
राधिकानाममाला	—	(हि०)	४१४	रुक्मिणीगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	७३३
रामकवच	विश्रामित्र	(हि०)	६६७	रुद्रज्ञान	—	(सं०)	२६१
रामकृष्णकाव्य	द्वैबल्ल पं० सूर्य	(सं०)	१६४	रूपमञ्जरीनाममाला	गोपालदास	(सं०)	२७६
रामचन्द्रचरित्र	बधीचन्द	(हि०)	६६१	रूपमाला	—	(सं०)	२६२
रामचन्द्रस्तवन	—	(सं०)	४१४	रुद्रसेनचरित्र	—	(सं०)	२३६
रामचन्द्रिका	केशवदास	(हि०)	१६४	रुद्रस्थध्यानवर्णन	—	(सं०)	११७
रामचरित्र [कवित्तबंध]	तुलसीदास	(हि०)	६६७	रेखाचित्र [आदिनाथ चन्द्रप्रभ वर्द्धमान एवं पार्वतीनाथ]	—		७८३
रामबत्तीसी	जगनकवि	(हि०)	४१४	रेखाचित्र	—		७६३
रामविनोद	रामचन्द्र	(हि०)	३०२	रेवानदीपूजा [आहूडकोटिपूजा]	विश्वभूषण (सं०)		५३२
रामविनोद	रामविनोद	(हि०)	६४०	रैदन्नत	गंगाराम	(सं०)	५३२
रामविनोद	—	(हि०)	६०३	रैदन्नतकथा	देवेन्द्रकीर्ति	(सं०)	२३६
रामस्तवन	—	(सं०)	४१४	रैदन्नतकथा	—	(सं०)	२३६
रामस्तोत्र	—	(सं०)	४१४	रैदन्नतकथा	ब्र० जिनदास	(हि०)	२४६
रामस्तोत्रकवच	—	(सं०)	६०१				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
रोहिणीचरित्र	देवनन्द	(अप०)	२४३	लग्नचन्द्रिकाभाषा	—	(सं०)	२६१
रोहिणीविधान	मुनि गुणभद्र	(अप०)	६२६	लग्नशास्त्र	वर्द्धमानसूरि	(सं०)	२६१
रोहिणीविधानकथा	—	(सं०)	२४०	लघुअनन्तव्रतपूजा	—	(सं०)	५३३
रोहिणीविधानकथा	देवनन्द	(अप०)	२४३	लघुअभिषेकविधान	—	(सं०)	५३३
रोहिणीविधानकथा	ब सीदास	(हि०)	७८१	लघुकल्याण	—	(सं०)	५१४, ५३३
रोहिणीव्रतकथा	आ० भानुकीर्त्ति	(सं०)	२३६	लघुकल्याणपाठ	—	(हि०)	७४४
रोहिणीव्रतकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५	लघुचारणक्यराजनीति	चाणिक्य	(सं०)	३३६ ७१२, ७२०
रोहिणीव्रतकथा	—	(अप०)	२४५	लघुजातक	भट्टोत्पल	(सं०)	२६१
रोहिणीव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२२०	लघुजिनसहस्रनाम	—	(सं०)	६०६
रोहिणीव्रतकथा	—	(हि०)	२३६	लघुतत्त्वार्थसूत्र	—	(सं०)	७४०, ७८२
रोहिणीव्रतकथा	—	(हि०)	७६४	लघुनाममाला	हर्षकीर्त्तिसूरि	(सं०)	२७६
रोहिणीव्रतपूजा	केशवसेन कृष्णसेन	(सं०)	५१२, ५१६	लघुन्यासवृत्ति	—	(सं०)	२६२
रोहिणीव्रतपूजामंडल [चित्रसहित]	—	(सं०)	५३२, ७२६	लघुप्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	७१७
रोहिणीव्रतमण्डलविधान	—	(हि०)	६३८	लघुप्रतिक्रमण	—	(प्रा० सं०)	५७२
रोहिणीव्रतपूजा	—	(सं०)	५१३	लघुमङ्गल	रूपचन्द	(हि०)	६२४
रोहिणीव्रतमण्डल [चित्र]	—	(सं०)	५३२, ५४०	लघुमङ्गल	—	(हि०)	७१६
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	(हि०)	५४०	लघुवाचणी	—	(सं०)	६७२
रोहिणीव्रतोद्यापन	—	(हि०)	५४०	लघुराविव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	२४४
लंघनपथ्यनिराध	—	(सं०)	३०३	लघुरूपसर्गवृत्ति	—	(सं०)	२६३
लक्ष्मणोत्सव	श्रीलक्ष्मण	(सं०)	३०३	लघुशांतिकविधान	—	(सं०)	५३२
लक्ष्मीमहास्तोत्र	पद्मनन्द	(सं०)	६३७	लघुशांतिकमन्त्र	—	(सं०)	४२४
लक्ष्मीस्तोत्र	पद्मप्रभदेव	(सं०)	४१४	लघुशांतिक [मण्डलचित्र]	—		५२५
			४२३, ४२६, ४३२, ५६६, ५७२, ५७४, ५६६,	लघुशांतिस्तोत्र	—	(सं०)	४१४, ४२३
			६४४, ६४८, ६६३, ६६५, ६७०, ७०३, ७१६	लघुश्रेयविधि [श्रेयोविधान]	अभयनन्द	(सं०)	५३३
लक्ष्मीस्तोत्र	—	(सं०)	४१४	लघुसहस्रनाम	—	(सं०)	३६२ ६३७, ६६०
			४२४, ६४०, ६४५, ६५०	लघुसामायिक [पाठ]	—	(सं०)	८४
लक्ष्मीस्तोत्र	द्यानतराय	(हि०)	५६२				
लग्नचन्द्रिकाभाषा	स्योजीराम सोगानी	(हि०)	७५१	लघुसामायिक	—	(सं० हि०)	८४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा पृष्ठ सं०
लघुसामायिक	—	(हि०) ७१८	लहरियाजी की पूजा	—	(हि०) ७५२
लघुसामायिकभाषा	महाचन्द्र	(हि०) ७१६	लहुरी	नाथू	(हि०) ६९३
लघुमारम्बत अनुभूति स्वरूपाचार्य	—	(सं०) २६३	लहुरी नेमीश्वरकी	विश्वभूषण	(हि०) ७२४
लघुमिद्धान्तकौमुदी	वरदराज	(सं०) २६३	लाटीसंहिता	राजमल	(सं०) ८४
लघुसिद्धान्तकौस्तुभ	—	(सं०) २६३	लावणी मांगोतुंगीकी	हर्षकीर्त्ति	(हि०) ६६७
लघुस्तोत्र	—	(सं०) ४१५	लिंगवाहुड	आ० कुंदकुंद	(प्रा०) ११७
लघुस्नपन	—	(सं०) ५३३	लिंगपुराण	—	(सं०) १५३
लघुस्नपनटीका	भावशर्मा	(सं०) ५३३	लिंगानुशासन	हेमचन्द्र	(सं०) २७७
लघुस्नपनविधि	—	(सं०) ६५८	लिंगानुशासन	—	(सं०) २७६
लघुस्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	(सं०) ५१५	लीलावती	भाष्कराचार्य	(सं०) ३६६
लघुस्वयंभूस्तोत्र	—	(सं०) ५३७, ५६४	लीलावतीभाषा	व्यास मथुरादास	(हि०) ३६६
लघुशब्देन्दुशेखर	—	(सं०) २६३	लुहरी	नेमिचन्द्र	(हि०) ६२२
लब्धिविधानकथा	पं० अभ्रदेव	(सं०) २३६	लुहरी	सभाचन्द्र	(हि०) ७२४
लब्धिविधानकथा	खुशालचन्द्र	(हि०) २४४	लोकप्रत्याख्यानधमिलकथा	—	(सं०) २४०
लब्धिविधानचौपई	भीपमकवि	(हि०) ७७८	लोकवर्णन	—	(हि०) ६२७, ७६३
लब्धिविधानपूजा	अभ्रदेव	(सं०) ५१७			
लब्धिविधानपूजा	हर्षकीर्त्ति	(सं०) ३३३			
लब्धिविधानपूजा	—	(सं०) ५१३			
		५३४, ५४०			
लब्धिविधानपूजा	ज्ञानचन्द्र	(हि०) ५३४	वक्ता श्रोता लक्षण	—	(सं०) ३५६
लब्धिविधानपूजा	—	(हि०) ५३४	वक्ता श्रोता लक्षण	—	(हि०) ३५६
लब्धिविधानमण्डल [चित्र]	—	५२५	वज्रदन्तचक्रवर्त्ति का बारहमासा	—	हि०) ७२७
लब्धिविधानउद्यापनपूजा	—	(सं०) ५३५	वज्रनाभिककवर्त्ति की भावना	भूधरदास	(हि०) ८५
लब्धिविधानोद्यापन	—	(सं०) ५४०			४४६, ६०४, ७३६
लब्धिविधानव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०) ५३४	वज्रपञ्जरस्तोत्र	—	(सं०) ४१५, ४३२
लब्धिसार	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०) ४३, ७३६	वनस्पतिसत्तरी	मुनिचन्द्रसूरि	(प्रा०) ८५
लब्धिसारटीका	—	(सं०) ४३	वन्देतानकीजयमाल	—	(सं०) ५७२
लब्धिसारभाषा	पं० टोडरमल	(हि०) ४३			६६५, ६५५
लब्धिसारक्षपणासारभाषा	पं० टोडरमल	(हि० गद्य) ४३	वरांगचरित्र	भर्तृहरि	(सं०) १६५
लब्धिसारक्षपणासारसंहृष्टि	पं० टोडरमल	(हि०) ४३	वरांगचरित्र	पं० वर्द्धमानदेव	(सं०) १६५
			वर्द्धमानकथा	जयमित्रहल	(अप०) १६६
			वर्द्धमानकाव्य	श्रीमुनि पद्मानन्दि	(सं०) १६५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
वर्द्धमानचरित्र	पं० केशरीसिंह	(हि०)	१५४, १६६	विज्जुच्चरकी जयमाल	—	(हि०)	६३८
वर्द्धमानद्वात्रिंशिका	सिद्धसेन दिवाकर	(सं०)	४१५	विज्ञप्तिपत्र	हंसराज	(हि०)	३७५
वर्द्धमानपुराण	सकलकीर्त्ति	(सं०)	१५३	विदग्धमुखमंडन	धर्मदास	(सं०)	१६६
वर्द्धमानविद्याकल्प	सिंहतिलक	(सं०)	३५१	विदग्धमुखमंडनटोका	त्रिनयन	(सं०)	१६७
वर्द्धमानस्तोत्र	आ० गुणभद्र	(सं०)	४१५ ४२४, ४२६	विद्वज्जनबोधक	—	(सं०)	८६, ४८१
वर्द्धमानस्तोत्र	—	(सं०)	६१५, ६५१	विद्वज्जनबोधकभाषा	संधी पन्नालाल	(हि०)	८६
वर्षबोध	—	(सं०)	२६१	विद्वज्जनबोधकटोका	—	(हि०)	८६
वसुनन्दि श्रावकाचार	आ० वसुनन्दि	(प्रा०)	८५	विद्यमानबोसतीर्थङ्करपूजा	नरेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५३५, ६५५
वसुनन्दिश्रावकाचार	पन्नालाल	(हि०)	८५	विद्यमानबोसतीर्थङ्करपूजा	जौहरीलाल विलाला	(हि०)	५३५
वसुधारा गठ	—	(सं०)	४१५	विद्यमानबोसतीर्थङ्करोंकी पूजा	—	(हि०)	५११
वसुधारास्तोत्र	—	(सं०)	४१५, ४२३	विद्यमानबोसतीर्थङ्करस्तवन	मुनि दीप	(हि०)	४१५
वाग्भट्टालङ्कार	वाग्भट्ट	(सं०)	३१२	विद्यानुशासन	—	(सं०)	३५२
वाग्भट्टालङ्कारटीका	बादिराज	(सं०)	३१३	विनतियां	—	(हि०)	६८५
वाग्भट्टालङ्कारटीका	—	(सं०)	३१३	विनती	अजैराज	(हि०)	७७६, ७८३
वाजिदजी के अडिह	वाजिद	(हि०)	६१३	विनती	कनककीर्त्ति	(हि०)	६२१
वाणी अष्टक व जयमाल	द्यानतराय	(हि०)	७७७	विनती	कुरालविजय	(हि०)	७८२
वारिषेणमुनिकथा	जोधराज गोदीका	(हि०)	२४०	विनती	ब्र० जिनदास	(हि०)	४२४, ७५७
वार्तासंग्रह	—	(हि०)	८६	विनती	बनारसीदास	(हि०)	६१५ ६४२, ६६३, ६६४
वासुपूज्यपुराण	—	(हि०)	११५	विनती	रूपचन्द	(हि०)	७६५
वास्तुपूजा	—	(सं०)	५३५	विनती	समयसुन्दर	(हि०)	७३२
वास्तुपूजाविधि	—	(सं०)	५१८	विनती	—	(हि०)	७४६
वास्तुविन्यास	—	(सं०)	३५४	विनती गुरुओंकी	भूधरदास	(हि०)	५११
विक्रमचरित्र	वाचनाचार्य अभयसोम	(हि०)	१६६	विनती चौपड़की	मान	(हि०)	७८१
विक्रमचौबोली चौपई	अभयचन्दनूरि	(हि०)	२४०	विनतीपाठस्तुति	जितचन्द्र	(हि०)	७००
विक्रमादित्यराजाकी कथा	—	(हि०)	७१३	विनतीसंग्रह	ब्रह्मदेव	(हि०)	४५१
विचारगाथा	—	(प्रा०)	७००	विनतीसंग्रह	देवाब्रह्म	(हि०)	६६५, ७८०
विजयकुमारसज्जाय	ऋषि लालचन्द	(हि०)	४५०	विनतीसंग्रह	—	(हि०)	४५० ७१०, ७४७
विजयकीर्त्तिछन्द	शुभचन्द	(हि०)	३८६	विनोदसतसई	—	(हि०)	६८०
विजयचन्द्रविधान	—	(सं०)	३५२				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
त्रिपाकसूत्र	—	(प्रा०)	४३	विष्णुकुमारमुनिकथा	श्रुतसागर	(सं०)	२४०
विमलनाथपुराण	ब्र० कृष्णदास	(सं०)	१५५	विष्णुकुमारमुनिकथा	—	(सं०)	२४०
विमानशुद्धि	चन्द्रकीर्ति	(सं०)	५३५	विष्णुकुमारमुनिपूजा	बाबूलाल	(हि०)	५३६
विमानशुद्धिपूजा	—	(सं०)	५३६	विष्णुपञ्जररक्षा	—	(सं०)	७७०
विमानशुद्धिशालिक [मण्डलचित्र]	—		५२५	विष्णुसहस्रनाम	—	(सं०)	६७४
विरदावली	—	(सं०)	६५८	विशेषसत्तात्रिभङ्गी	आ० नेमिचन्द्र	(प्रा०)	४३
			७७२, ७६५	विश्वप्रकाश	वैद्यराज महेश्वर	(सं०)	४३
विरहमानतीर्थङ्करजकड़ी	—	(हि०)	७५६	विश्वलोचन	धरसेन	(सं०)	२७७
विरहमानपूजा	—	(सं०)	६०५	विश्वलोचनकोशकी	शब्दानुक्रमणिका	(सं०)	२७७
विरहमञ्जरी	नन्ददास	(सं०)	६५७	विहारकाव्य	कालिदास	(सं०)	१६७
विरहमञ्जरी	—	(हि०)	५०१	वीतरागगाथा	—	(प्रा०)	६३३
विरहिनी का वर्णन	—	(हि०)	७७०	वीतरागस्तोत्र	पद्मनन्दि	(सं०)	४२४
विवाहप्रकरण	—	(सं०)	५३६				४३१, ५७४, ६३४, ७३७
विवाहपद्धति	—	(सं०)	५३६	वीतरागस्तोत्र	आ० हेमचन्द्र	(सं०)	१३६, ४१६
विवाहविधि	—	(सं०)	५३६	वीतरागस्तोत्र	—	(सं०)	७५८
विवाहशोधन	—	(सं०)	२६१	वीरचरित्र [अनुप्रेक्षा भाग]	रङ्गधू	(अप०)	६४२
विवेकजकड़ी	—	(सं०)	२६१	वीरछत्तीसी	—	(सं०)	४१६
विवेकजकड़ी	जिनदास	(हि०)	७२२, ७५०	वीरजिण्डगीत	भगौतीदास	(हि०)	५६६
विवेकविलास	—	(हि०)	८६	वीरजिण्डकी संघावलि			
विषहरनविधि	संतोषकवि	(हि०)	३०३	मेघकुमारगीत	पूनो	(हि०)	७७५
विषापहारस्तोत्र	धनञ्जय	(सं०)	४०२	वीरद्वान्त्रिशतिका	हेमचन्द्रसूरि	(सं०)	१३६
			४१५, ४२३, ४२५, ४२८, ४३२, ५६५, ५७२,	वीरनाथस्तवन	—	(सं०)	४२६
			५६५, ६०५, ६३७, ६४६, ७८८	वीरभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
विषापहारस्तोत्रटीका	नागचन्द्रसूरि	(सं०)	४१६	वीरभक्ति तथा निर्वाणभक्ति	—	(हि०)	४५१
विषापहारस्तोत्रभाषा	अचलकीर्ति	(हि०)	४१६	वीररस के कवित्त	—	(हि०)	७४६
			६०४, ६५०, ६७०	वीरस्तवन	—	(प्रा०)	४१६
विषापहारभाषा	पन्नालाल	(हि०)	४१६	वृजलालकी बारहभावना	—	(हि०)	६८५
विषापहारस्तोत्रभाषा	—	(हि०)	४३०	वृत्तरत्नाकर	कालिदास	(सं०)	३१४
			७१६, ७४७	वृत्तरत्नाकर	भट्ट केदार	(सं०)	३१४
विष्णुकुमारपूजा	—	(हि०)	६८६	वृत्तरत्नाकर	—	(सं०)	३१४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
वृत्तरत्नाकरछन्दटीका	समयसुन्दरगणि	(सं०)	३१४	वैद्यवृत्त	—	(सं०)	३०४, ७३८
वृत्तरत्नाकरटीका	सुल्हणकवि	(सं०)	३१४	वैद्यविनोद	भट्टशङ्कर	(सं०)	३०५
वृन्दसतई	वृन्दकवि	(हि०)	३३६	वैद्यविनाद	—	(हि०)	३०५
	६७५, ७४५, ७५१, ७८२, ७९९	(सं०)	६३६	वैद्यसार	—	(सं०)	७३८
वृहदकलिकुण्डपूजा	—	(सं०)	५७१	वैद्यामृत	माणिक्यभट्ट	(सं०)	३०५
वृहदकल्याण	—	(हि०)	५७१	वैद्याकरणभूषण	कौहनभट्ट	(सं०)	२६३
वृहदगुरावलीशांतिमण्डलपूजा [चौसठकृद्धिपूजा]	स्वरूपचन्द	(हि०)	५४१	वैद्याकरणभूषण	—	(सं०)	२६३
वृहदघंटाकर्णकल्प	कवि भोगीलाल	(हि०)	७२६	वैराग्यगीत [उदरगीत]	छीहल	(हि०)	६३७
वृहदचार्याण्यनीतिशास्त्रभाषा	मिश्ररामराय	(हि०)	३३६	वैराग्यगीत	महमत	(हि०)	४१६
वृहदचार्याण्यराजनीति	चारणक्य	(सं०)	७१२	वैराग्यपञ्चोर्षी	भगवतीदास	(हि०)	६८५
वृहज्जातक	भट्टोत्पल	(सं०)	२९१	वैराग्यशतक	भर्तृहरि	(सं०)	११७
वृहदनवकार	—	(सं०)	४३१	व्याकरण	—	(सं०)	२६४
वृहदप्रतिक्रमण	—	(सं०)	८६, ८७	व्याकरणाटीका	—	(सं०)	२६४
वृहदप्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	८६	व्याकरणभाषाटीका	—	(सं०)	२६४
वृहदषोडशकारणपूजा	—	(सं०)	५०९, ७३०	व्रतकथाकोश	पं० दामोदर	(सं०)	२४१
वृहदशांतिस्तोत्र	—	(सं०)	४२३	व्रतकथाकोश	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	२४२
वृहदस्नपनविधि	—	(सं०)	६५८	व्रतकथाकोश	श्रुतसागर	(सं०)	२४१
वृहदस्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	(सं०)	५७२	व्रतकथाकोश	सकलकीर्त्ति	(सं०)	२४२
			६२८, ६९१	व्रतकथाकोश	—	(सं०)	२४४
वृहस्पतिविचार	—	(सं०)	६९१	व्रतकथाकोश	—	(सं० अ०)	२४२
वृहस्पतिविधान	—	(सं०)	५४०	व्रतकथाकोश	सुशालचन्द	(हि०)	२४४
वृहदसिद्धचक्र [मण्डलचित्र]	—		५२४	व्रतकथाकोश	—	(हि०)	२४४
वैदरभी विवाह	पेमराज	(हि०)	२४०	व्रतकथासंग्रह	—	(सं०)	२४६
वैद्यकमार	—	(सं०)	३०४	व्रतकथासंग्रह	—	(अ०)	२४५
वैद्यकसारोद्धार	हर्षकीर्त्तिसूरि	(सं०)	३०५	व्रतकथासंग्रह	ब्र० महतिसागर	(हि०)	२४६
वैद्यजीवन	लोलिम्बराज	(सं०)	३०३, ७१५	व्रतकथासंग्रह	—	(हि०)	२४७
वैद्यजीवनग्रन्थ	—	(सं०)	३०३	व्रतजयमाला	सुमतिसागर	(हि०)	७९५
वैद्यजीवनटीका	रुद्रभट्ट	(सं०)	३०४	व्रतनाम	—	(हि०)	५३६
वैद्यमनोत्सव	नयनमुख	(हि०)	३०४	व्रतनामावली	—	(सं०)	८७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
व्रतनिर्णय	मोहन	(सं०)	५३६	पट्टाहुड [प्राभृत]	आ० कुन्दकुन्द	(प्रा०)	११७, ७४८
व्रतपूजासंग्रह	—	(सं०)	५३७	पट्टाहुडटीका	श्रुतसागर	(सं०)	११९
व्रतविधान	—	(हि०)	५३८	पट्टाहुडटीका	—	(सं०)	११८
व्रतविधानरामो	दौलतराम संघी	(हि०)	६३८, ७७६	पट्टमतचरचा	—	(सं०)	७५७
व्रतविवरण	—	(सं०)	५३८	पट्टरसकथा	—	(सं०)	६८३
व्रतविवरण	—	(हि०)	५३८	पट्टलेश्यावर्णन	—	(सं०)	७४८
व्रतमार	आ० शिवकोटि	(सं०)	५३८	पट्टलेश्यावर्णन	—	(हि०)	४४
व्रतमार	—	(सं०)	८७	पट्टलेश्यावेलि	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	७७५
व्रतसंख्या	—	(हि०)	८७	पट्टलेश्यावेलि	साह लोहट	(हि०)	३६६
व्रतोद्यापनश्रावकाचार	—	(सं०)	८७	पट्टसंहननवर्णन	मकरन्द	(हि०)	८८
व्रतोद्यापनसंग्रह	—	(सं०)	५३८	पड्डर्शनवार्त्ता	—	(सं०)	१३६
व्रतोद्यापनवर्णन	—	(सं०)	८७	पड्डर्शनविचार	—	(सं०)	१३६
व्रतोद्यापनवर्णन	—	(हि०)	८७	पड्डर्शनसमुच्चय	हरिभद्रसूरि	(सं०)	१३६
व्रतों के चित्र	—		७२३	पड्डर्शनसमुच्चयटीका	—	(सं०)	१४०
व्रतोंकी तिथियोंका व्यौरा	—	(हि०)	६५५	पड्डर्शनसमुच्चयवृत्ति	गणरतनसूरि	(सं०)	१३६
व्रतों के नाम	—	(हि०)	८७	पट्टभक्तिपाठ	—	(सं०)	७५२
व्रतोंका व्यौरा	—	(हि०)	६०३	पड्डभक्तिवर्णन	—	(सं०)	८८
प				पणवतिक्षेत्रपालपूजा	विश्वसेन	(सं०)	५१६, ५४१
पट्टावश्यक [लघु सामायिक]	महाचन्द्र	(हि०)	८७	पण्डितकटिप्पण	भक्तिलाल	(सं०)	३३६
पट्टावश्यकविधान	पन्नालाल	(हि०)	८७	पण्ड्याधिकशतकटीका	राजहंसोपाध्याय	(सं०)	४४
पट्टावश्यकविधान	पन्नालाल	(हि०)	८७	पोडशकारणउद्यापन	—	(सं०)	५४२
पट्टावश्यकविधान	पन्नालाल	(हि०)	८७	पोडशकारणकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५
पट्टावश्यकविधान	पन्नालाल	(हि०)	८७	पोडशकारणजयमाल	—	(प्रा०)	५४१
पट्टावश्यकविधान	पन्नालाल	(हि०)	८७	पोडशकारणजयमाल	—	(प्रा० सं०)	५४२
पट्टावश्यकविधान	पन्नालाल	(हि०)	८७	पोडशकारणजयमाल	रङ्गू (अ०)	५१७, ५४२	
पट्टावश्यकविधान	पन्नालाल	(हि०)	८७	पोडशकारणजयमाल	—	(अ०)	५४२
पट्टावश्यकविधान	पन्नालाल	(हि०)	८७	पोडशकारणजयमाल	—	(हि० ग०)	५४२
पट्टावश्यकविधान	पन्नालाल	(हि०)	८७	पोडशकारणपूजा [पोडशकारणव्रतोद्यापन]	—		
पट्टावश्यकविधान	पन्नालाल	(हि०)	८७	पेशवसेन	(सं०)	५३६, ५४२, ६७६	
पट्टावश्यकविधान	पन्नालाल	(हि०)	८७	पोडशकारणपूजा	श्रुतसागर	(सं०)	५१०

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
षोडशकारणपूजा [षोडशकारणव्रतोद्यापनपूजा]			
सुमतिसागर (सं०)	५१७, ५४३, ५५७		
षोडशकारणपूजा	— (सं०)	५१५	
		५३७, ५४२, ५४३, ५६६, ५७४, ५६५, ५६६.	
		६०७, ६४६, ६५८, ७६३	
षोडशकारणपूजा	खुशालचन्द्र	(हि०)	५१६
षोडशकारणपूजा	द्यानतराय	(हि०)	७०५
षोडशकारणभावना	—	(प्रा०)	८६
षोडशकारणभावना	पं० सदासुख	(हि०ग०)	८८
षोडशकारणभावना	—	(हि०)	८८
षोडशकारणभावनाजयमाल	नथमल	(हि०)	८८
षोडशकारणभावनावर्णनवृत्ति	पं० शिवजीलाल	(हि०)	८८
षोडशकारणविधानकथा	पं० अश्रुदेव	(सं०)	२२०
		२४२, २४५, २३७	
षोडशकारणविधानकथा	मदनकीर्ति	(सं०)	५१४
षोडशकारणव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२४४
षोडशकारणव्रतकथा	—	(गुज०)	२४७
षोडशकारणव्रतोद्यापनपूजा	राजकीर्ति	(सं०)	५४३

श

शम्भुप्रभु म्प्रबन्ध	समयसुन्दरगणि	(सं०)	१६७
शकुनविचार	—	(सं०)	२६२
शकुनशास्त्र	—	(हि०)	६०७
शकुनावली	गर्ग	(सं०)	२६२
शकुनावली	—	(सं०)	२६२, ६०३
शकुनावली	अब्रजद	(हि०)	२६२
शकुनावली	—	(हि०)	२६३, ६४३
शनमृत्तरी	—	(हि०)	६८६
गतक	—	(सं०)	२७७
शत्रुघ्नयगिरिपूजा	भ० विश्वभूषण	(सं०)	५१३, ५४३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
शत्रुघ्नयनीधरान [शत्रुघ्नयराम]			
समयसुन्दर (सं०)	६१७, ७००		
शत्रुघ्नयभान	राजसमुद्र	(हि०)	६१६
शत्रुघ्नयस्तवन	राजसमुद्र	(हि०)	६१६
शनिश्वरदेवकी कथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	६८३
शनिश्वरदेवकीकथा [शनिश्वरकथा]	—	(हि०)	६६२
		६६४, ७११, ७१३, ७१४, ७२३, ७४३, ७८६	
शनिश्वरदृष्टिचित्र	—	(सं०)	२६३
शनिस्तोत्र	—	(सं०)	४२४
शब्दप्रभेद व धानुप्रभेद	श्री महेश्वर	सं०	२७७
शब्दरत्न	—	(सं०)	२७७
शब्दरूपावलि	—	(सं०)	२६४
शब्दरूपिणी	आ० वररुचि	(सं०)	२६४
शब्दशोभा	कवि नीलकंठ	(सं०)	२६४
शब्दानुशासन	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२६४
शब्दानुशासनवृत्ति	हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२६४
शरदुत्सवदीपिका [मण्डलविधानपूजा]			
	सिंहनन्दि	(सं०)	५४३
शहरमारोठ की पत्रो	मुनि महीचन्द्र	(हि०)	५६२
शाकटायनव्याकरण	शाकटायन	(सं०)	२६५
शान्तिकनाम	—	(हि०)	६६८
शान्तिकरस्तोत्र	विद्यासिद्धि	(प्रा०)	६८१
शान्तिकरस्तोत्र	सुन्दरसूर्य	(प्रा०)	४२३
शान्तिकविधान	—	(हि०)	५४४
शान्तिकविधान (वृहद्)	—	(सं०)	५४४
शान्तिकविधि	अर्हदेव	(सं०)	५४४
शान्तिकहोमविधि	—	(सं०)	६४६
शान्तिकघोषणास्तुति	—	(सं०)	४१७
शांतिचक्रपूजा	—	(सं०)	५१७
शांतिचक्रमण्डल (चित्र)			५२४

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
शान्तिनाथचरित्र	अजितप्रभसूरि	(सं०)	१६८	शारदाष्टक	बनारसीदास	(हि०)	७७६
शान्तिनाथचरित्र	भ० सकलकीर्ति	(सं०)	१६८	शारदाष्टक	—	(हि०)	१७०
शान्तिनाथपुराण	महाकवि अशाग	(सं०)	१५५	शारदीनाममाला	—	(सं०)	२७७
शान्तिनाथपुराण	खुशालचन्द्र	(हि०)	१५५	शाङ्गधरसंहिता	शाङ्गधर	(सं०)	३०५
शान्तिनाथपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	५४५	शाङ्गधरसंहिताटीका	नादमल्ल	(सं०)	३०६
शान्तिनाथपूजा	—	(सं०)	५०६	शालिभद्रचौपई	जितसिंहसूरि	(हि०)	७००
शान्तिनाथस्तवन	—	(सं०)	४१७	शालिभद्रमहामुनिसञ्ज्ञाय	—	(हि०)	६१६
शान्तिनाथस्तवन	गुणसागर	(हि०)	७०२	शालिभद्र चौपई	मतिसागर	(हि०)	१६८, ७२६
शान्तिनाथस्तवन	ऋषि लालचंद्र	(हि०)	४१७	शालिभद्रधन्वानीचौपई	जितसिंहसूरि	(हि०)	२५३
शान्तिनाथस्तोत्र	मुनि गुणभद्र	(सं०)	६१४	शालिभद्रमहामुनिसञ्ज्ञाय	—	(हि०)	६१६
शान्तिनाथस्तोत्र	गुणभद्र स्वामी	(सं०)	७२२	शालिभद्रसञ्ज्ञाय	—	(हि०)	७३४
शान्तिनाथस्तोत्र	मुनिभद्र	(सं०)	४१७, ७१५	शालिहोत्र	—	(सं०)	७३०
शान्तिनाथस्तोत्र	—	(सं०)	३८३	शालिहोत्र [अश्वचिचिस्ता]	—	(सं०)	३०६
	४०२, ४१८, ६४६, ६७३, ७४५				पं० नकुल	(सं०-हि०)	३०६
शान्तिपाठ	—	(सं०)	४१८	शालिहोत्र [अश्वचिचिस्ता]	—	(सं०)	३०६
	४२८, ५४५, ५६६, ६४०, ६६१, ६६७, ७०४, ७०५			शास्त्रगुरुजयमाल	—	(प्रा०)	५४५
	७३३, ७५८			शास्त्रजयमाल	ज्ञानभूषण	(सं०)	४५५
शान्तिपाठ (बृहद्)	—	(सं०)	५४५	शास्त्रजयमाल	—	(प्रा०)	५६५
शान्तिपाठ	द्यानतराय	(हि०)	५१६	शास्त्रपूजा	—	(सं०)	५३६
शान्तिपाठ	—	(हि०)	६४५			५६४, ५६५, ६५२	
शान्तिपाठ	—	(हि०)	५०६	शास्त्रपूजा	—	(हि०)	५१६
शान्तिमंडलपूजा	—	(प०)	५०६	शास्त्रप्रवचन प्रारंभ करने			
शान्तिरत्नमूची	—	(सं०)	५४५	को विधि	—	(सं०)	५४६
शान्तिविधि	—	(सं०)	५४०	शास्त्रजीकामंडल [चित्र]	—		५२५
शान्तिविधान	—	(सं०)	४१८	शासनदेवतार्चनविधान	—	(सं०)	५४६
अत्रार्थशांतिगागरपूजा	भगवानदास	(हि०)	४६१, ७८६	शिक्षाचतुष्क	नवलराम	(हि०)	६६८
शान्तिस्तवन	देवसूरि	(सं०)	४१६	शिखरविनास	रामचन्द्र	(हि०)	६६३
शान्तिहोमविधान	आशाधर	(सं०)	५४५	शिखरविलासपूजा	—	(हि०)	५४६
शारदाष्टक	—	(सं०)	४२४	शिखरविलासभाषा	धनराज	(हि०)	७६३

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
शिलानखसंग्रह	—	(सं०)	३७५	शृंगारकवित्त	—	(हि०)	६६६
शिलोच्छ्रकोश	कवि सारस्वत	(सं०)	२७७	शृंगारतिलक	कालिदास	(सं०)	३५६
शिवरात्रिउद्यापनविधिकथा	शंकरभट्ट	(सं०)	२४७	शृंगारतिलक	रुद्रभट्ट	(सं०)	३५६
शिशुपालवध	महाकवि माघ	(सं०)	१८६	शृंगाररसकेकवित्त	—	(हि०)	७७०
शिशुपालवधटीका	मल्लिनाथसूरि	(सं०)	१८६	शृंगाररस के फुटकरछंद	—	(हि०)	५६३
शिशुबोध	काशीनाथ	सं०)	२६५	शृंगारसवैया	—	(हि०)	७६७
			२६३, ६०३, ६७२, ६७५	श्यामवत्तीसी	नन्ददास	(हि०)	६८४
शीतलनाथपूजा	धर्मभूषण	(सं०)	५४६, ७६५	श्यामवत्तीसी	श्याम	(हि०)	७६६
शीतलनाथस्तवन	ऋषिलालचंद्र	(हि०)	४५१	श्रवणभूषण	नरहरिभट्ट	(सं०)	१८६
शीतलनाथस्तवन	समयसुन्दरगणि	(राज०)	६१६	श्राद्धरडिकम्मणमूत्र	—	(प्रा०)	८६
शीतलाष्टक	—	(सं०)	६४७	श्रावकउत्तरातिवर्णन	—	(हि०)	३७५
शीलकथा	भारामल्ल	(हि०)	२४७	श्रावककीकरण	हृषकीर्त्ति	(हि०)	५६७
शीलनववाड	—	(हि०)	८६	श्रावकक्रिया	—	(हि०)	७५७
शीलवत्तीसी	अकूमल	हि०)	७५०	श्रावकधर्मवर्णन	—	(सं०)	८६
शीलवत्तीसी	—	(हि०)	६१६	श्रावकप्रतिक्रमण	—	(सं०)	८६, ५७५
शीलरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	७४६	श्रावकप्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	८६
शीलराम	विजयदेवसूरि	(हि०)	३६५, ६१७	श्रावणप्रतिक्रमण	—	(सं० प्रा०)	५७२
शीलविधानकथा	—	(सं०)	२४६	श्रावकप्रतिक्रमण	—	(प्रा०)	७५४
शीलव्रतकेभेद	—	(हि०)	६१५	श्रावकप्रतिक्रमण	—	(प्रा० हि०)	७६८
शीलमुदर्शनरामो	—	(हि०)	६०३	श्रावकप्रतिक्रमण	पन्नालालचौधरी	(हि०)	८६
शीलोत्प्रेषणमात्रा	मेरुसुन्दरगणि	(गुज०)	२४७	श्रावकप्रापश्चित्त	वीरसेन	(सं०)	८६
शुकसप्तति	—	(सं०)	२४७	श्रावकाचार	उमास्वामि	(सं०)	६०
शुक्लपंचमीव्रतपूजा	—	(सं०)	५४०	श्रावकाचार	अमितगति	(सं०)	६०
शुक्लपंचमीव्रतपूजा	—	(सं०)	५४६	श्रावकाचार	आशाधर	(सं०)	६३५
शुक्लपंचमीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५४६	श्रावकाचार	गुणभूषणार्थ	(सं०)	६०
शुद्धिविधान	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	५१८	श्रावकाचार	पद्मनंदि	(सं०)	६०
शुभमालिका	श्रीधर	(सं०)	५७४	श्रावकाचार	पूज्यपाद	(सं०)	६०
शुभमुहूर्त्त	—	(हि०)	५६६	श्रावकाचार	सकलकीर्त्ति	(सं०)	६१
शुभसीख	—	(हि.ग.)	३३६, ७१८	श्रावकाचार	—	(सं०)	६१
शुभाशुभयोग	—	(सं०)	२६३	श्रावकाचार	—	(प्रा०)	६१

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
श्रावकाचारदोहा	रामसिंह	(अप०)	६४२, ७४८	श्रीवन्तजयस्तोत्र	—	(प्रा०)	७५४
श्रावकाचारभाषा	पं० भागचन्द्र	(हि.ग.)	६१	श्रीस्तोत्र	—	(सं०)	४१८
श्रावकाचार	—	(हि०)	६१	श्रुतज्ञानपूजा	—	(सं०)	७२७, ५४६
श्रावकों की उत्पत्ति तथा ८४ गोत्र	—	(हि०)	७५६	श्रुतज्ञानभक्ति	—	(सं०)	६२७
श्रावकों की चौरासी जातियां	—	(हि०)	३७५	श्रुतज्ञानमण्डलचित्र	—	(सं०)	५२५
श्रावकों की बहन्तर जातियां	—	(सं०हि०)	३०५	श्रुतज्ञानवर्णन	—	(हि०)	६२
श्रावणोद्गादशीउपाख्यान	—	(सं०)	२४७	श्रुतव्रतोद्योतनपूजा	—	(हि०)	३१३
श्रावणोद्गादशीकथा	पं० अश्रदेव	(सं०)	२४२, २४५	श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५१३
श्रावणोद्गादशीकथा	—	(सं०)	२४८	श्रुतभक्ति	—	(सं०)	६३३
श्रीपतिस्तोत्र	चैनसुखजी	(सं०)	४१८	श्रुतभक्ति	—	(सं०)	४२५
श्रीपालकथा	—	(हि०)	२४८	श्रुतभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
श्रीपालचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	२००	श्रुतज्ञानव्रतपूजा	—	(सं०)	५४६
श्रीपालचरित्र	भ० सकलकीर्ति	(सं०)	२०१	श्रुतज्ञानव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५४६
श्रीपालचरित्र	—	(सं०)	२००	श्रुतपंचमीकथा	स्वयंभू	(अप०)	६४२
श्रीपालचरित्र	—	(अप०)	२०१	श्रुतपूजा	ज्ञानभूषण	(सं०)	५३७
श्रीपालचरित्र	परिभल	(हि.प.)	२२, ७७३	श्रुतपूजा	—	(सं०)	५४६
श्रीपालचरित्र	—	(हि०)	२०२				५६५, ६६६
श्रीपालचरित्र	—	(हि०)	२०३	श्रुतबोध	कालिदास	(सं०)	३१५, ६६४
श्रीपालदर्शन	—	(हि०)	६१५	श्रुतबोधटीका	मनोहरश्याम	(सं०)	३१५
श्रीपालरास	जिनहर्ष गण	(हि०)	३६५	श्रुतबोध	वररुचि	(सं०)	३१५
श्रीपालरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	६३८	श्रुतबोधटीका	—	(सं०)	३१५
			६८४, ७१२, ७१७, ७४६	श्रुतबोधवृत्ति	हर्षकीर्ति	(सं०)	३१५
श्रीपालविनती	—	(हि०)	६५१	श्रुतस्कंध	ब्र० हेमचन्द्र	(प्रा०)	३७६
श्रीपालस्तवन	—	(हि०)	६२३				५७२, ७०६, ७३७
श्रीपालस्तुति	—	(सं०)	४२३	श्रुतस्कंधपूजा	श्रुतसागर	(सं०)	५४७
			७४५, ७५२, ७८४,	श्रुतस्कंधपूजा	—	(सं०)	५४७
श्रीपालजीकीस्तुति	टीकमसिंह	(हि०)	६३६	श्रुतस्कंधपूजा [ज्ञानपंचविधितपूजा]	सुरेन्द्रकीर्ति	(सं०)	५४७
श्रीपालजीकीस्तुति	भगवतीदास	(हि०)	६४३	श्रुतस्कंधपूजाकथा	—	(हि०)	५४७
श्रीपालस्तुति	—	(हि०)	६०६	श्रुतस्कंधमंडल [चित्र]	—		५२४
			६४४, ६५०				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
श्रुतस्कंधविधानकथा	पं० अश्रुदेव (सं०)		२४५
श्रुतस्कंधव्रतकथा	ब्र० ज्ञानसागर (हि०)		२२८
श्रुतावतार	पं० श्रीधर (सं०)		३७६, ५७२
श्रुताष्टक	—	(सं०)	६५७
श्रेणिकचरित्र	भ० शुभचन्द्र (सं०)		२०३
श्रेणिकचरित्र	भ० सकलकीर्ति (सं०)		२०३
श्रेणिकचरित्र	—	(प्रा०)	२०३
श्रेणिकचरित्र	विजयकीर्ति (हि०)		२०४
श्रेणिकचौपई	डूंगा वैद (हि०)		२४८
श्रेणिकराजासज्जमाय	समयसुन्दर (हि०)		६१६
श्रेयांसस्तवन	विजयमानसूरि (हि०)		४५१
श्लोकवात्तिक	आ० विद्यानन्दि (सं०)		४४
श्वेताम्बरमतकेचौरासीबोल	जगरूप (हि०)		७७६
श्वेताम्बरमतकेचौरासीबोल	—	(हि०)	५८२
श्वेताम्बरों के ८४ बाद	—	(हि०)	६२६

स

सङ्कटचौव्रतकथा	देवेन्द्रभूषण (हि०)		७६४
सङ्कटचौपईकथा	—	(हि०)	७४१
संक्रातिफल	—	(सं०)	२६३, २६४
संक्षिप्तवेदान्तशास्त्रप्रक्रिया	—	(सं०)	१४०
संगीतबंधपाशर्वजिनस्तुति	—	(हि०)	६१८
संग्रहणीबालाबोध शिवनिधानगणि	(प्रा०हि०)		४५
संग्रहणीसूत्र	—	(प्रा०)	४५
संग्रहसूक्ति	—	(सं०)	५७५
संघपरणटपत्र	—	(प्रा०)	३२३
संधोत्पत्तिकथन	—	(हि०)	६२६
संघपचचीसी	द्यानतराय (हि०)		३७६
संज्ञाप्रक्रिया	—	(सं०)	२६५, २६७
संतानविधि	—	(हि०)	३०६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
संधाराविधि	—	(सं०)	५४८
संहृष्टि	—	(सं०)	५७३
सबन्धविवक्षा	—	(सं०)	२६५
संबोधमक्षरबावनी	द्यानतराय (हि०)		११६
संबोधपंचासिका	गौतमस्वामी (प्रा०)		११६, १२८
संबोधपंचासिका	—	(प्रा०)	५७२
			६२८, ७०६, ७५५
संबोधपंचासिका	रङ्गभू (अप०)		१२८
संबोधपंचासिका	—	(अप०)	५७३
संबोधपंचासिका	द्यानतराय (हि०)		६०५
			६४८, ६८५, ६६३, ७१३,
			७१६, ७२५
संबोधपंचासिका	—	(हि०)	४३०
संबोधशतक	द्यानतराय (हि०)		१२८
संबोधसतरी	—	(प्रा०)	१२८
संबोधसत्ताणु	वीरचन्द्र (हि०)		३३६
संभवजिनस्तोत्र	मुनिगुणनन्दि (सं०)		४१६
संभवजिगणणाहचरिउ	तेजपाल (अप०)		२०४
संभवनाथपद्ध डी	—	(अप०)	५७६
संयोगपंचमीकथा	धर्मचन्द्र (हि०)		२५३
संयोगबत्तीसी	मानकवि (हि०)		६१३
संवत्सरवर्णन	—	(हि०)	३७६
संवत्सरीविचार	—	(हि० ग०)	२६४
संसारअटवी	—	(हि०)	७६२
संसारस्वरूपवर्णन	—	(हि०)	६३
संस्कृतमंजरी	—	(सं०)	२६५
संहनननाम	—	(हि०)	६२६
सकलीकरण	—	(सं०)	५४८
सकलीकरणविधि	—	(सं०)	५१४, ५७८
सकलीकरणविधि	—	(सं०)	५१५
			५४७, ६३६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सज्जनचित्तवल्लभ	मल्लिषेण	(सं०)	३३७, ५७३	सप्तपदार्थी	शिवादित्य	(सं०)	१४०
सज्जनचित्तवल्लभ	शुभचन्द्र	(सं०)	३३७	सप्तपदार्थी	—	(सं०)	१४०
सज्जनचित्तवल्लभ	—	(सं०)	३३७	सप्तपदी	—	(सं०)	५४८
सज्जनचित्तवल्लभ	मिहरचन्द्र	(हि०)	३३७	सप्तपरमस्थान	खुशालचन्द्र	(हि०)	७३१
सज्जनचित्तवल्लभ	द्वर्गूलाल	(हि०)	३३७	सप्तपरमस्थानकथा	आ० चन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	२४६
सज्ज्माय [चौदह बोल]	ऋषि रामचन्द्र	(हि०)	४५१	सप्तपरमस्थानकपूजा	—	(सं०)	५१७, ५४८
सज्ज्माय	समयमुन्दर	(हि०)	६१८	सप्तपरमस्थानव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	२४४
सतसई	बिहारीलाल	(हि०)	५७६, ७६८	सप्तपरमस्थानव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६
सतियों की सज्ज्माय	ऋषिद्वजमलजी	(हि०)	४५१	सप्तभंगीवाणी	भगवतीदास	(हि०)	६८८
सत्तरभेदपूजा	साधुकीर्त्ति	(हि०)	७३५, ७६०	सप्तत्रिधि	—	(हि०)	३०७
सत्तात्रिभंगी	नेमिचन्द्राचार्य	(प्रा०)	४५	सप्तव्यसनसनकथा	आ० सोमकीर्त्ति	(सं०)	२५०
सत्ताद्वार	—	(सं०)	४५	सप्तव्यसनकथा	भारामल	(हि०)	२५०
सद्भाषितावली	सकलकीर्त्ति	(सं०)	३३८	सप्तव्यसनकथा भाषा	—	(हि०)	२५०
सद्भाषितावलीभाषा	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	३३८	सप्तव्यसनकवित्त	बनारसीदास	(हि०)	७२३
सद्भाषितावली	—	(हि०)	३३८	सप्तशती	गोवर्धनाचार्य	(सं०)	७१५
सन्निपातकलिका	—	(सं०)	३०७	सप्तश्लोकीगीता	—	(सं०)	६२
सन्निपातनिदान	—	(सं०)	३०६				३६८, ६६२
सन्निपातनिदानचिकित्सा	बाहडदास	(सं०)	३०६	सप्तसूत्रभेद	—	(सं०)	७६१
सन्देहसमुच्चय	धर्मकलशसूरि	(सं०)	३३८	सभातरंग	—	(सं०)	३३८
सन्मतितर्क	सिद्धसेनदिवाकर	(सं०)	१४०	सभाशृंगार	—	(सं०)	३३६
सप्तपिजिनस्तवन	—	(प्रा०)	६१६	सभाशृंगार	—	(सं० हि०)	३३८
सप्तपिपूजा	जिणदास	(सं०)	५४८	सभासारनाटक	रघुराम	(हि०)	३३८
सप्तपिपूजा	देवेन्द्रकीर्त्ति	(सं०)	७६६	सप्तकित्ठाल	आसकरण	(हि०)	६२
सप्तपिपूजा	लक्ष्मीसेन	(सं०)	५४८	सप्तकित्तविणवोधर्म	जिनदास	(हि०)	७०१
सप्तपिपूजा	विश्वभूषण	(सं०)	५४८	सप्तमंतभद्रकथा	जोधराज	(हि०)	७५८
सप्तपिपूजा	—	(सं०)	५४६	सप्तमंतभद्रस्तुति	सप्तमंतभद्र	(सं०)	७७८
सप्तपिपूजा	—	(सं०)	५४६	सप्तमयमार (गाथा)	कुन्दकुन्दाचार्य	(प्रा०)	११६
सप्तऋषिमंडल [चित्र]	—	(सं०)	५२४				५७४, ७०३, ७६२
सप्तनवविचारस्तवन	—	(सं०)	४१८	सप्तमयमारकलशा	अमृतचन्द्राचार्य	(सं०)	१२०
सप्तनयावबोध	मुनिनेत्रसिंह	(सं०)	१४०	सप्तमयमारकलशाटीका	—	(हि०)	१२५

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
समयसारकलशाभाषा	—	(हि०)	१२५	समाधिमरण	—	(अप०)	६२८
समयसारटीका	—	(सं०)	१२२, ६६५	समाधिमरणभाषा पन्नालालचौधरी		(हि०)	१२७
समयसारनाटक	बनारसीदास	(हि०)	१२३	समाधिमरणभाषा	सूरचन्द्र	(हि०)	१२७
	६०४, ६३६, ६८०, ६८३, ६८८,			समाधिमरण	—	(हि०)	१५, १२७
	६८६, ६९१, ७०२, ७१६, ७२०,						७१०, ७४८
	७३१, ७५३, ७५६,			समाधिमरणपाठ	द्यानतराय	(हि०)	१२६, ३६४
	७७८, ७८७, ७९२			समाधिमरण स्वरूपभाषा	—	(हि०)	१२७
समयसारभाषा	जयचन्द्रछावडा	(हि० ग०)	१२४	समाधिशतक	पूज्यपाद	(सं०)	१२७
समयसारवचनिका	—	(हि०)	१२५	समाधिशतकटीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(सं०)	१२७
समयसारभृत्ति	अमृतचन्द्रसूरि	(सं०)	५७५, ७६४	समाधिशतकटीका	—	(सं०)	१२८
समयसारवृत्ति	—	(प्रा०)	१२२	समुदायस्तोत्र	विश्वसेन	(सं०)	४१६
समरसार	रामबाजपेय	(सं०)	२६४	समुद्घातभेद	—	(सं०)	६२
समवशरणपूजा	ललितकीर्ति	(सं०)	५४६	सम्मेदगिरिपूजा	—	(हि०)	७३६, ७४०
समवशरणपूजा	रत्नशेखर	(सं०)	५३७	सम्मेदशिखरपूजा	गंगादास	(सं०)	५४६ ७२०
समवशरणपूजा [वृहद्]	रूपचन्द्र	(सं०)	५७६	सम्मेदशिखरपूजा	पं० जवाहरलाल	(हि०)	५५०
समवशरणपूजा	—	(सं०)	५४६, ७६७	सम्मेदशिखरपूजा	भागचन्द्र	(हि०)	५५०
समवशरणस्तोत्र	विष्णुसेन मुनि	(सं०)	४१२	सम्मेदशिखरपूजा	रामचन्द्र	(हि०)	५५०
समवशरणस्तोत्र	विश्वसेन	(सं०)	४१५	सम्मेदशिखरपूजा	—	(हि०)	५११
समवशरणस्तोत्र	—	(सं०)	४१६				५१८, ६७८
समस्तव्रत की जयमाल	चन्द्रकीर्ति	(हि०)	५६४	सम्मेदशिखरनिर्वाणकाण्ड	—	(हि०)	५२६
समाधि	—	(अप०)	६४२	सम्मेदशिखरमहात्म्य	दीक्षित देवदत्त	(सं०)	६२
समाधितन्त्र	पूज्यपाद	(सं०)	१२५	सम्मेदशिखरमहात्म्य	मनसुखलाल	(हि०)	६२
समाधितंत्र	—	(सं०)	१२५	सम्मेदशिखरमहात्म्य	लालचन्द्र	(हि० प०)	६२, २५१
समाधितंत्रभाषा	नाथूरामदोसी	(हि०)	१२६	सम्मेदशिखरमहात्म्य	—	(हि०)	७८८
समाधितंत्रभाषा	पर्वतधर्मार्थी	(हि०)	१२६	सम्मेदशिखरविलास	केशरीसिंह	(हि०)	६२
समाधितंत्रभाषा	माणिकचन्द्र	(हि०)	१२५	सम्मेदशिखरविलास	देवाब्रह्म	(हि० प०)	६३
समाधितंत्रभाषा	—	(हि० ग०)	१२५	सम्भवत्वकौमुदीकथा	खेता	(सं०)	५५१
समाधिमरण	—	(सं०)	६१२	सम्भवत्वकौमुदीकथा	गुणाकरसूरि	(सं०)	२५१
समाधिमरण	—	(प्रा०)	१२६	सम्भवत्वकौमुदीभाग १	सहणपाल	(अप०)	६४२

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सगन्धदशमीव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५५५	सुभाषितपद्य	—	(हि०)	६२१
सुगुरुशतक	जिनदासगोधा	(हि०प०)	३४०, ४४७	सुभाषितपाठसंग्रह	—	(सं०हि०)	६६८
सुगुरुस्तोत्र	—	(सं०)	४२२	सुभाषितमुक्तावली	—	(सं०)	३४१
सदयवच्छसावलिगाकी चौपई	मुनिकेशव	(हि०)	२५४	सुभाषितरत्नसंदोह	अमितिगति	(सं०)	३४१
दयवच्छसालिगारीवार्ता	—	(हि०)	७३४	सुभाषितरत्नसंदोहभाषा	पन्नालालचौधरी	(हि०)	३४१
सुदर्शनचरित्र	ब्र० नेमिदत्त	(सं०)	२०८	सुभाषितसंग्रह	—	(सं०)	३४१, ५७५
सुदर्शनचरित्र	सुमुक्षुविद्यानंदि	(सं०)	२०६	सुभाषितसंग्रह	—	(सं०प्रा०)	३४२
सुदर्शनचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	२०८	सुभाषितसंग्रह	—	(सं०हि०)	३४२
सुदर्शनचरित्र	—	(सं०)	२०६	सुभाषितार्णव	शुभचन्द्र	(सं०)	३४१
सुदर्शनचरित्र	—	(हि०)	२०६	सुभाषितावली	सकलकीर्त्ति	(सं०)	३४३
सुदर्शनरास	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	३६६	सुभाषितावली	—	(सं०)	३४३, ७०६
			६३६, ७१२, ७४६	सुभाषितावलीभाषा	बा० दुलीचन्द	(हि०)	३४४
सुदर्शनसेठकीडाल [कथा]	—	(हि०)	२५४	सुभाषितावलीभाषा	पन्नालालचौधरी	(हि०)	३४४
मुदामाकीबारहखडी	—	(हि०)	७७६	सुभाषितावलीभाषा	—	(हि०प०)	३४४
मुदृष्टिरंगिणीभाषा	टेकचन्द	(हि०)	६७	सुभौमचरित्र	भ० रतनचन्द	(सं०)	२०६
मुदृष्टिरंगिणीभाषा	—	(हि०)	६७	सुभौमचक्रवर्तिरास	ब्र० जिनदास	(हि०)	३६७
मुन्दरविलास	सुन्दरदास	(हि०)	७४५	सूक्तावली	—	(सं०)	३४५, ६७२
मुन्दरशृङ्गार	महाकविराय	(हि०)	६८३	सूक्तिमुक्तावली	सोमप्रभाचार्य	(सं०)	३४४, ६३५
सुन्दरशृङ्गार	सुन्दरदास	(हि०)	७२३, ७६८	सूक्तिमुक्तावलीस्तोत्र	—	(सं०)	६०६
सुन्दरशृङ्गार	—	(हि०)	६८५	सूतकनिर्णय	—	(सं०)	५५५
मुपासर्वनाथपूजा	रामचन्द	(हि०)	५५५	सूतकवर्णन [यशस्तिलक से]	सोमदेव	(सं०)	५७१
मुप्यय दोहा	—	(प्रप०)	६२८	सूतकवर्णन	—	(सं०)	५५५
मुप्यय दोहा	—	(प्रप०)	६३७	सूतकविधि	—	(सं०)	५७६
मुप्यय दोहा	—	(हि०)	७६५	सूत्रकृतांग	—	(प्रा०)	४७
मुप्रभातस्तवन	—	(सं०)	५७४	सूर्यकवच	—	(सं०)	६४०
मुप्रमाताष्टक	यति नेमिचन्द्र	(सं०)	६३३	सूर्यकेदशनाम	—	(सं०)	६०८
मुप्रभातिकस्तुति	भुवनभूषण	(सं०)	६३३	सूर्यगमनविधि	—	(सं०)	२६५
सुभाषित	—	(सं०)	५७५	सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	ब्र० जयसागर	(सं०)	५५७
सुभाषित	—	(हि०)	७०१				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सूर्यस्तोत्र	—	(सं०)	६४६, ६६२	सोलहसतियोकेनाम	राजसमुद्र	(हि०)	६१६
सोनागिरिपच्चीसी	भागीरथ	(हि०)	६८	सोलहसतीसज्जाय	—	(हि०)	४५२
सोनागिरिपच्चीसी	—	(हि०)	६६२	सौंदर्यलहरी स्तोत्र	—	(सं०)	४२२
सोनागिरिपूजा	आशा	(सं०)	५५५	सौंदर्यलहरीस्तोत्र	भट्टारक जगद्भूषण	(सं०)	४२२
सोनागिरिपूजा	—	(हि०)	५५६	सौख्यव्रतोद्यापन	अक्षयराम	(सं०)	५१६, ५५६
			६७४, ७३०	सौख्यव्रतोद्यापन	—	(सं०)	५३६
सोमउत्पत्ति	—	(सं०)	२६५	सौभाग्यपंचमीकथा	सुन्दरविजयगणि	(सं०)	२५५
सोमशर्मावारिषेणकथा	—	(प्रा०)	२५५	स्कन्दपुराण	—	(सं०)	६७०
सोलहकारणकथा	रत्नपाल	(सं०)	६६५	स्तवन	—	(अप०)	६६०
सोलहकारणकथा	ब्र० ज्ञानसागर	(हि०)	७४०	स्तवनअरिहन्त	—	(हि०)	६४८
सोलहकारण जयमाल	—	(अप०)	६७६	स्तवन	आशाधर	(सं०)	६६१
सोलहकारणपूजा	ब्र० जिनदास	(सं०)	७६५	स्तुति	—	(सं०)	४४२
सोलहकारणपूजा	—	(सं०)	६०६	स्तुति	कनककीर्त्ति	(हि०)	६०१ ६५०
			६४४, ६५२, ६६४, ७०४,	स्तुति	टीकमचन्द्र	(हि०)	६३६
			७३१, ७८४	स्तुति	नवल	(हि०)	६६२
सोलहकारणपूजा	—	(अप०)	७०५	स्तुति	बुधजन	(हि०)	७०४
सोलहकारणपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५११	स्तुति	हरीसिंह	(हि०)	७७६
			५१६, ५५६	स्तुति	—	(हि०)	६६३
सोलहकारणपूजा	—	(हि०)	५५६ ६७०				६७३, ७५८
सोलहकारणभावनावर्णन	सदासुख	(हि०)	६८	स्तोत्र	पद्मनांदि	(सं०)	५७५
सोलहकारणभावना	—	(हि०)	७८८	स्तोत्र	लक्ष्मीचन्द्रदेव	(प्रा०)	५७६
सोलहकारणभावना एवं दशलक्षण				स्तोत्रसंग्रह	—	(सं०/हि०)	६२८ ६५१
वर्णन—सदासुखकासलीवाल		(हि०)	६८				६६८, ७०३, ७१४, ७१५
सोलहकारणमंडलविधान	टेकचद	(हि०)	५५६				७३६, ७४१, ७६२, ७६६, ७६७
सोलहकारणमंडल [चित्र]	—		५२४	स्तोत्रसंग्रह	—	(सं०/हि०)	७२१
सोलहकारणव्रतोद्यापन	केशवसेन	(सं०)	५१७				७३८, ७४५, ७४८, ७७४
सोलहकारणराम	भ० सकलकीर्त्ति	(हि०)	५६४	स्तोत्रपूजापाठसंग्रह	—	(सं०/हि०)	६६८,
			६३६, ७८१				७७३
सोलहतिथिवर्णन	—	(हि०)	५६४				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
स्त्रीमुक्तिखंडत	—	(हि०)	६४०	स्वयंभूस्तोत्र टीका	प्रभाचन्द्राचार्य	(सं०)	४३४
स्त्रीलक्षण	—	(सं०)	३५६	स्वयंभूस्तोत्रभाषा	द्यानतराय	(सं०)	७१५
स्त्रीशृंगारवर्णन	—	(सं०)	५७६	स्वरविचार	—	(सं०)	५७२
स्थापनानिर्णय	—	(सं०)	६८	स्वरोदय	—	(सं०)	१२८
स्थूलभद्रकाचीमासावर्णन	—	(हि०)	३०७	स्वरोदय रनजीतदास (चरनदास)	(हि०)	३४५	
स्थूलभद्रगीत	—	(हि०)	६१८	स्वरोदय	— (हि०)	६४०, ७५६	
स्थूलभद्रशीलरासो	—	(हि०)	५६६	स्वरोदयविचार	—	(हि०)	५६६
स्थूलभद्रसज्जाय	—	(हि०)	४५२, ६१६	स्वर्गनरकवर्णन	—	(हि०)	६२७
स्नपनविधान	—	(हि०)	५५६, ६५५,				७०१, ७६३
स्नपनविधि [बृहद्]	—	(सं०)	५५६	स्वर्गमुखवर्णन	—	(हि०)	७२०
स्नेहलीला	जनमोहन	(हि०)	७७३	स्वर्णकर्षणविधान	महीधर	(सं०)	४२८
स्नेहलीला	—	(हि०)	३६८	स्वस्त्ययनविधान	—	(सं०)	५७४
स्फुटकवित्त	—	(हि०)	७०१				६५८, ६४६
स्फुटकवित्तएवंपद्यसंग्रह	—	(सं०हि०)	६७२	स्वाध्याय	—	(सं०)	५७१
स्फुट दोहे	—	(हि०)	६२३, ६७३	स्वाध्ययपठ	—	(सं०प्रा०)	५६४
स्फुटपद्यएवं मंत्रमादि	—	(हि०)	६७०	स्वाध्यायपाठ	—	(प्रा०सं०)	६८ ६३३
स्फुटपाठ	—	(हि०)	६६४, ७२६	स्वाध्यायपाठ	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	४५०
स्फुटवार्ता	—	(हि०)	७४१	स्वाध्यायपाठभाषा	—	(हि०)	६८
स्फुटश्लोकसंग्रह	—	(सं०)	३४५	स्वानुभवदर्पण	नाथूराम	(हि०प०)	१२८
स्फुटहिन्दीपद्य	—	(हि०)	५६५	स्वार्थबीसी	मुनि श्रीधर	(हि०)	६१६
स्वप्नविचार	—	(हि०)	२६५				
स्वप्नाध्याय	—	(सं०)	२६५				
स्वप्नावली	देवनिदि	(सं०)	२६५, ६३३	हंसकीडालतथाविनतीडाल	—	(हि०)	६८५
स्वप्नावली	—	(सं०)	२६५	हंसतिलकरास	ब्र० अजित	(हि०)	७०७
स्याद्वादचूलिका	—	(हि०ग०)	१४१	हठयोगदीपिका	—	(सं०)	१२८
स्याद्वादमंजरी	मल्लिषेणसूरि	(सं०)	१४१	हरावंतकुमारजयमाल	—	(प्रप०)	६३८
स्वयंभूस्तोत्र	समन्तभद्र	(सं०)	४२३	हनुमच्चरित्र	ब्र० अजित	(सं०)	२१०
			४२५, ४२७, ५७४, ५६५,	हनुमच्चरित्र	ब्र० रायमल्ल	(हि०)	२११
			६३३ ६६५, ६८६,				
			७२०, ७३१	(हनुमन्तकथा)		५६५, ५६६, ७१७,	
				(हनुमतकथा)		७३४, ७३६,	

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
(हनुमतरास)			७४०, ७४४,	हरिवंशपुराणभाषा	—	(हि०)	१५८, १५९
(हनुमंत चौपई)			७५२, ७६२	हरिवंशवर्णन	—	(हि०)	२५५
हनुमान स्तोत्र	—	(हि०)	४३२	हरिहरनामानलिवर्णन	—	(सं०)	६६०
हनुमतानुप्रेक्षा	महाकवि स्वयंभू	(अप०)	६३५	हवनविधि	—	(सं०)	७३१
हमीरचौपई	—	(हि०)	३७८	हारान्नलि	महामहोपाध्याय पुरुत्तषोम देव		
हमीररासो	महेशकवि	(हि०)	३६७, ७८३			(सं०)	२११
हयग्रीवावतारचित्र	—		६०३	हिण्डोलना	शिवचंद्रमुनि	(सं०)	६८३
हरगौरीसंवाद	—	(सं०)	६०८	हितोपदेश	देवीचन्द्र	(सं०)	७४४
हरजीके दोहे	हरजी	(हि०)	७८८	हितोपदेश	विष्णुशर्मा	(सं०)	३४५
हरडैकल्प	—	(हि०)	३०७	हितोपदेशभाषा	—	(हि०)	३४६, ७६३
हरिचन्द्रशतक	—	(हि०)	७४१	हुण्डावसर्पिणीकालदोष	माणकचन्द्र	(हि०)	६८, ४४८
हरिनाममाला	शंकराचार्य	(सं०)	३६८	हेमभारी	विश्वभूषण	(हि०)	७६३
हरिबोलाचित्रावली	—	(हि०)	६०१	हेमनीवृहद्वृत्ति	—	(सं०)	२७०
हरिरस	—	(हि०)	६०१	हेमव्याकरण [हेमव्याकरणवृत्ति]			
हरिवंशपुराण	ब्र० जिनदास	(सं०)	१५६		हेमचन्द्राचार्य	(सं०)	२७०
हरिवंशपुराण	जिनसेनाचार्य	(सं०)	१५५	होडाचक्र	—	(सं०)	६६६
हरिवंशपुराण	श्री भूषण	(सं०)	१५७	होराज्ञान	—	(सं०)	२६५
हरिवंशपुराण	सकलकीर्ति	(सं०)	१५७	होलीकथा	जिनचन्द्रसूरि	(सं०)	२५६
हरिवंशपुराण	धवल	(अप०)	१५७	होलिकाकथा	—	(सं०)	२५५
हरिवंशपुराण	यशः कीर्ति	(अप०)	१५७	होलिकाचौपई	डूंगर कवि	(हि०प०)	२५५
हरिवंशपुराण	महाकवि स्वयंभू	(अप०)	१५७	होलीकथा	छीतर ठोलिया	(हि०)	२४६,
हरिवंशपुराणभाषा	खुशालचन्द्र	(हि०प०)	१५८				२५५, ६८५
हरिवंशपुराणभाषा	दौलतराम	(हि०ग०)	१५७	होलिरेणुकाचरित्र	ब्र० जिनदास	(सं०)	२११



ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सम्यक्त्वकौमुदीकथा	—	(सं०)	२५१	सरस्वतीस्तोत्रमाला [शारदास्तवन]		(सं०)	४२०
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा	जगतराम	(हि०)	२५२	सरस्वतीस्तोत्रभाषा	बनारसीदास	(हि०)	५४७
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा	जोधराजगोदीका	(हि०)	२५२, ६८६	सर्वतोभद्रपूजा	—	(सं०)	५५१
सम्यक्त्वकौमुदीकथाभाषा	विनोदीलाल	(हि० ग०)	२५२	सर्वतोभद्रमंत्र	—	(सं०)	४१६
सम्यक्त्वकौमुदी भाषा	—	(हि०)	२५३	सर्वज्वर समुच्चयदर्पण	—	(सं०)	३०७
सम्यक्त्व जयमाल	—	(अप०)	७६४	सर्वार्थसाधनी	भट्टवररुचि	(सं०)	२७८
सम्यक्त्वपञ्चमी	—	(हि०)	७६०	सर्वार्थसिद्धि	पूज्यपाद	(सं०)	४५
सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका	पं० टोडरमल	(हि०)	७	सर्वार्थसिद्धिभाषा	जयचंद्राबडा	(हि०)	४६
सम्यग्ज्ञानीधमाल	भगौतीदास	(हि०)	५६६	सर्वार्थसिद्धिसञ्ज्ञाय	—	(हि०)	४५२
सम्यग्दर्शनपूजा	—	(सं०)	६५८	सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	जिनदत्तसूरि	(हि०)	६१६
सम्यग्दृष्टिकीभावनावर्गन	—	(हि०)	७८५	सर्वैयाएवंपद	सुन्दरदास	(हि०)	६८१
सरस्वतीअष्टक	—	(हि०)	४५२	सहस्रकूटजिनालयपूजा	—	(सं०)	५५१
सरस्वतीकल्प	—	(सं०)	३५२	सहस्रगुणितपूजा	धर्मकीर्त्ति	(सं०)	५५२
सरस्वतीचूर्णकानुसखा	—	(हि०)	७५७	सहस्रगुणितपूजा	—	(सं०)	५५२
सरस्वती जयमाल	ब्र० जिनदास	(हि०)	६५८	सहस्रनामपूजा	धर्मभूषण	(सं०)	५५२, ७४७
सरस्वतीपूजा	आशाधर	(सं०)	६५८	सहस्रनामपूजा	—	(सं०)	५५२
सरस्वतीपूजा [जयमाल]	ज्ञानभूषण	(सं०)	५१५, ५६५	सहस्रनामपूजा	चैनसुख	(हि०)	५५२
सरस्वतीपूजा	पद्मनंदि	(सं०)	५५१, ७१६	सहस्रनामपूजा	—	(हि०)	५५२
सरस्वतीपूजा	—	(सं०)	५५१	सहस्रनामस्तोत्र	पं० आशाधर	(सं०)	५६६
सरस्वतीपूजा	नेमीचन्द्रबखशी	(हि०)	५५१				६३६, ७०५
सरस्वतीपूजा	संघी पन्नलाल	(हि०)	५५१	सहस्रनामस्तोत्र	—	(सं०)	६६४
सरस्वतीपूजा	पं० बुधजन	(हि०)	५५१				७५३, ७६३
सरस्वतीपूजा	—	(हि०)	५५१, ६५२	सहस्रनाम [बडा]	—	(सं०)	४३१
सरस्वतीस्तवन	लघुकवि	(सं०)	४१६	सहस्रनाम [लघु]	आ० समंतभद्र	(सं०)	४२०
सरस्वतीस्तुति	ज्ञानभूषण	(सं०)	६५७	सहस्रनाम [लघु]	—	(सं०)	४३१
सरस्वतीस्तोत्र	आशाधर	(सं०)	६४७, ७६१	सहेलीगीत	सुन्दर	(हि०)	७६४
सरस्वतीस्तोत्र	वृहस्पति	(सं०)	४२०	साखी	कवीर	(हि०)	७२३
सरस्वतीस्तोत्र	श्रुतसागर	(सं०)	४२०	सागरदत्तचरित्र	हीरकवि	(हि०)	२०४
सरस्वतीस्तोत्र	—	(सं०)	४२०, ५७५				

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सांगारधर्माश्रम	आशाधर	(सं०)	६३	सामुद्रिकपाठ	—	(हि०)	७५६
सातव्यसनस्वाध्याय	—	(हि०)	६४	सामुद्रिकलक्षण	—	(सं०)	२६४
साधुकीप्रारती	हेमराज	(हि०)	७७७	सामुद्रिकविचार	—	(हि०)	२६४
साधुदिनचर्चा	—	(प्रा०)	६४	सामुद्रिकशास्त्र	श्री निधिसमुद्र	(सं०)	२६४
साधुवंदना	आनन्दसूरि	(हि०)	६१७	सामुद्रिकशास्त्र	—	(सं०)	२६४, २६५
साधुवंदना	पुण्यसागर (पुरानी)	(हि०)	४५२	सामुद्रिकशास्त्र	—	(प्रा०)	२६४
साधुवंदना	वनारसीदास	(हि०)	६४४	सामुद्रिकशास्त्र	—	(हि०)	२६५
			६५२, ७१६, ७४६				६०३, ६२७, ७०२
साधुवंदना	माणिकचन्द्र	(हि०)	४५२	सायंसध्यापाठ	—	(सं०)	४२०
साधुवंदना	—	(हि०)	६६४	सारचतुर्विंशति	—	(सं०)	४२०
सामायिकपाठ	अमितगति	(सं०)	६०४, ७३७	सारचौबीसीभाषा	पारसदासनिगोत्या	(हि०)	४५३
सामायिकपाठ	—	(सं०)	६५	सारणी	—	(अप०)	२६५
			४२५, ४२६, ४२६, ४३०,	सारणी	—	(हि०)	६७२
			५६५, ५६७, ६०६, ६३७,	सारसंग्रह	वरदराज	(सं०)	१४०
			६४६, ६८६, ७६३	सारसंग्रह	—	(सं०)	३०७
सामायिकपाठ	बहुमुनि	(प्रा०)	६४	सारसमुच्चय	कुलभद्र	(सं०)	६७, ५७४
सामायिकपाठ	—	(प्रा०)	६४, ५७८	सारसुतयंत्रमंडल [चित्र]	—		५२५
सामायिकपाठ	—	(सं० प्रा०)	५७८	सारस्वत दशाध्यायी	—	(सं०)	२६६
सामायिकपाठ	महाचन्द्र	(हि०)	४२६	सारस्तदीपिका	चन्द्रकीर्तिसूरि		२६६
सामायिकपाठ	—	(हि०)	६७१	सारस्वतपंचसंधि	—	(सं०)	२६५
			७४६, ७५४, ७५५	सारस्वतप्रक्रिया अनुभूतिस्वरूपाचार्य		(सं०)	२६५, ७८०
सामायिकपाठभाषा	जयचन्द्रकाबडा	(हि०)	६६, ५६७	सारस्वतप्रक्रियाटीका	गहीभट्ट	(सं०)	२६७
सामायिकपाठभाषा	तिलोकचन्द्र	(हि०)	६६	सारस्वतयंत्रपूजा	—	(सं०)	५१०
सामायिकपाठभाषा	बुधमहाचन्द्र	(हि०)	६५	सारस्वतयंत्रपूजा	—	(सं०)	५५२, ६३६
सामायिकपाठभाषा	—	(हि० ग०)	६६	सारस्वती धातुपाठ	—	(सं०)	२६५
सामायिकबडा	—	(सं०)	४३१, ६०५	सारवली	—	(सं०)	२६५
सामायिकलघु	—	(सं०)	४३१	सालोत्तररास	—	(हि०)	३०७
			५६६, ६०५, ६०७	सावपधम्म दोहा	मुनि रामसिंह	(अप०)	६७
सामायिकवठवृत्तिनहित	—	(सं०)	७०३	सांवलाजी के मन्दिर की रथयात्रा का वर्णन	—	(हि०)	७१६

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सामूहकाभङ्गडा	ब्रह्मदेव	(हि०)	४५१, ६४८	सिद्धवन्दना	—	(सं०)	४२०
सिद्धहृत्पूजा	विश्वभूषण	(सं०)	५१६	सिद्धभक्ति	—	(सं०)	६२७
सिद्धकूटमंडल [चित्र)	—		५२४	सिद्धभक्ति	—	(प्रा०)	५७६
सिद्धक्षेत्र पूजा	स्वरूपचन्द्र	(हि०)	४६७ ५५३	सिद्धभक्ति	पन्नालाल चौधरी	(हि०)	
सिद्धक्षेत्रपूजा	—	(हि०)	५५३	सिद्धस्तवन	—	(सं०)	४२०
सिद्धक्षेत्रपूजाष्टक	द्यानतराय	(हि०)	७०५	सिद्धस्तुति	—	(सं०)	५७४
सिद्धक्षेत्रमहात्म्यपूजा	—	(सं०)	५५३	सिद्धहेमतन्त्रवृत्ति	जिनप्रभसूरि	(सं०)	२६७
सिद्धचक्रकथा	—	(हि०)	२५३	सिद्धान्त अर्थसार	पं० रडधू	(अप०)	४६
सिद्धचक्रपूजा	प्रभाचन्द्र	(सं०)	५१० ५१४, ५५३	सिद्धान्तकौमुदी	भट्टोजीदीक्षित	(सं०)	२६७
सिद्धचक्रपूजा	श्रुतमागर	(सं०)	५५३	सिद्धान्तकौमुदी	—	(सं०)	२६७
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]	भानुकीर्त्ति	(सं०)	५५३	सिद्धान्तकौमुदी टीका	—	(सं०)	२६८
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]	शुभचन्द्र	(सं०)	५५३	सिद्धान्तचन्द्रिका	रामचन्द्राश्रम	(सं०)	२६८
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]	—	(सं०)	५५४	सिद्धान्तचन्द्रिका टीका	लोकेशकर	(सं०)	२६६
सिद्धचक्रपूजा	—	(सं०)	५१४ ५५४, ६३८, ६५८, ७३५	सिद्धान्तचन्द्रिका टीका	—	(सं०)	२६६
सिद्धचक्रपूजा [वृहद्]	संतलाल	(हि०)	५५३	सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति	सदानन्दगणि	(सं०)	२६६
सिद्धचक्रपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५५३	सिद्धान्तत्रिलोकदीपक	वामदेव	(सं०)	३२३
सिद्धपूजा	आशाधर	(सं०)	५५४, ७१६	सिद्धान्तधर्मोपदेशमाला	—	(प्रा०)	६८
सिद्धपूजा	पद्मनादि	(सं०)	५३७	सिद्धान्तविन्दु	श्रीमधुसूदन सरस्वती	(सं०)	२७०
सिद्धपूजा	रत्नभूषण	(सं०)	५५४	सिद्धान्तमंजरी	—	(सं०)	१३८
सिद्धपूजा	—	(सं०)	४१५ ५५४, ५७४, ५६४, ६०५ ६०७, ६४६, ६५१, ६७० ६७६, ६७८, ७०४, ७३१ ७४५, ७६३	सिद्धान्तमंजूषिका	नागेशभट्ट	(सं०)	२७०
				सिद्धान्तमुक्तावली	पंचानन भट्टाचार्य	(सं०)	२७०
				सिद्धान्तमुक्तावली	—	(सं०)	२७०
				सिद्धान्तमुक्तावलीटीका	महादेवभट्ट	(सं०)	१४०
				सिद्धान्तलेश संग्रह	—	(हि०)	४६
				सिद्धान्तसारदीपक	मकलकीर्त्ति	(सं०)	४६
सिद्धपूजा	—	(सं० हि०)	५६६	सिद्धान्तसारदीपक	—	(सं०)	४७
सिद्धपूजा	द्यानतराय	(हि०)	५१६	सिद्धान्तसारभाषा	नथमलयिलाला	(हि०)	४७
सिद्धपूजा	—	(हि०)	५५५	सिद्धान्तसारभाषा	—	(हि०)	४६
सिद्धपूजाष्टक	दौलतराम	(हि०)	७७७	सिद्धान्तसार संग्रह	आ० नरेन्द्रदेव	(सं०)	४७

ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०	ग्रन्थनाम	लेखक	भाषा	पृष्ठ सं०
सिद्धिप्रियस्तोत्र	देवनादि	(सं०)	४०१	सीमन्धरस्वामीपूजा	—	(सं०)	५५५
	४२१, ४२२, ४२५, ४२६, ४३१,			सीमन्धरस्वामीस्तवत्र	—	(हि०)	६१६
	५३२, ५७२, ५७४, ५७८, ५६५			सोलरास	गुराकीर्त्ति	(हि०)	६०२
	५६७, ६०५, ६४०, ६३३			सुकुमालचरित्र	भ० सकलकीर्त्ति	(सं०)	२०६
	६३७, ७०१			सुकुमालचरित्र	श्रीधर	(अप०)	२०६
सिद्धिप्रियस्तोत्रटीका	—	(सं०)	४२१	सुकुमालचरित्रभाषा पं० नाथूलालदेसी	(हि०ग)	२०७	
सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	नथमल	(हि०)	४२१	सुकुमालचरित्र	हरचंद्र गंगवाल	(हि०प०)	२०७
सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	पन्नालालचौधरी	(हि०)	४२१	सुकुमालचरित्र	—	(हि०)	२०७
सिद्धियोग	—	(सं०)	३०७	सुकुमालमुक्तिका	—	(हि०ग०)	२५३
सिद्धोकास्वरूप	—	(हि०)	६७	सुकुमालस्वामीरा	ब्र० जिनदास	(हि०गुज)	३६६
सिन्दूरप्रकरण	सोमप्रभाचार्य	(सं०)	३४०	मुखघडो	धनराज	(हि०)	६२३
सिन्दूरप्रकरणभाषा	बनारसीदास	(हि०)	२२४	मुखघडी	हर्षकीर्त्ति	(हि०)	७४६
	३४०, ५६१, ५६५, ७१०, ७१२			मुक्तनिधान	कवि जगन्नाथ	(सं०)	२०७
	७४३, ७५५, ७६२			मुखसंपत्तिपूजा	—	(सं०)	५१७
सिन्दूरप्रकरणभाषा	हुन्दरदास	(हि०)	३४०	मुखसंपत्तिविधानकथा	—	(सं०)	२४६
सिरिपालचरित्र	पं० नरसेन	(अप०)	२०५	मुखसंपत्तिविधानकथा	विमलकीर्त्ति	(अप०)	२४५
सिंहासनहात्रिशिक्का	क्षेमंकरमुनि	(सं०)	२५३	मुखसंपत्तिव्रतपूजा	आख्यराम	(सं०)	५५५
सिंहासनद्वारिशिक्का	—	(सं०)	२५३	मुखसंपत्तिव्रतोद्यापनपूजा	—	(सं०)	५१४
सिंहासनबत्तीसी	—	(सं०)	२५३	सुगन्धदशमीकथा	ललितकीर्त्ति	(सं०)	६४५
सोखसत्तरी	—	(हि०)	६८०	सुगन्धदशमीकथा	श्रुतसागर	(सं०)	५१४
सीताचरित्र	कविरामचन्द्र (वाल्मीकि)	(हि०प०)	२०६	सुगन्धदशमीकथा	—	(सं०)	२५४
			७२५, ७५५	सुगन्धदशमीकथा	—	(अप०)	६३२
सीताचरित्र	—	(हि०)	५६६	सुगन्धदशमीव्रतकथा [सुगन्धदशमीकथा]			
सीताढाल	—	(हि०)	४५२		हेमराज	(हि०)	२५४, ७६५
सीताजीका बारहमासा	—	(हि०)	७२७	सुगन्धदशमीपूजा	स्वरूपचन्द्र	(हि०)	५११
सीताजीकीविनती	—	(हि०)	६४८, ६८५	सुगन्धदशमीमण्डल [चित्र]	—		५२५
सीताजीकीसङ्भाव	—	(हि०)	६१८	सुगन्धदशमीव्रतकथा	—	(सं०)	२४२
सीमन्धरकीजबर्डी	—	(हि०)	६४४	सुगन्धदशमीव्रतकथा	—	(अप०)	४
सीमन्धरस्तवत्र	ठक्कुरसी	(हि०)	७३८	सुगन्धदशमीव्रतकथा	खुशालचन्द्र	(हि०)	५१६

←← ग्रंथ एवं ग्रंथकार →→

प्राकृत भाषा

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
अभयचन्द्रगणि—	ऋणसंबंधकथा	२१८	देवसेन—	आराधनासार	४६
अभयदेवसूरि—	जयतिह्वरणस्तोत्र	७५४		५७२, ५७३, ६२८, ६३५,	
अल्हू—	प्राकृतछंदकोष	३११		७०६, ७३७, ७४४	
इन्द्रनंदि—	छेदपिण्ड	५७		तत्वसार	२०, ५७५
	प्रायश्चित्तविधि	७४		६३७, ७३७, ७४४, ७४७	
कार्तिकेय—	कार्तिकेयानुप्रेक्षा	१०३		दर्शनसार	१३३
कुंदकुंदाचार्य—	अष्टपाहुड	६६		नयचक्र	१३४
	पंचास्तिकाय	४०	देवेन्द्रसूरि—	भावसंग्रह	७७
	प्रवचनसार	११२		कर्मस्तवसूत्र	५
	नियमसार	३८	धर्मचन्द्र—	धर्मचन्द्रप्रवचन	३६६
	बोधप्रामृत	११५	धर्मदासगणि—	उपदेशरत्नमाला	५०
	यतिभावनाष्टक	५७३	नन्दिषेण—	अजितशांतिस्तवन	३७६
	रयणसार	८४	भंडारी नेमिचन्द्र—	उपदेशसिद्धान्त	
	लिंगपाहुड	११७		रत्नमाला	५१
	षट्पाहुड	११७, ७४८	नेमिचन्द्राचार्य—	आश्रवत्रिभंगी	२
	समयसार	११६,		कर्मप्रकृति	३
	५७४, ७३७, ७६२			गोम्मटसारकर्मकाण्ड	५२
गौतमस्वामी—	गौतमकुलक	१४		गोम्मटसारजीवकाण्ड	६,
	संबोधपंचास्तिका	११६, १२८			१६, ७२०
जिनभद्रगणि	अर्थदिपिका	१		चतुरविंशतिस्थानक	१८
ढाढसीमुनि—	ढाढसीगाथा	७०७		जीवविचार	७३२
देवसूरि—	यतिदिनचर्मा	८१		त्रिभंगीसार	३१
	जीवविचार	६१६		द्रव्यसंग्रह	३२, ५७५,
					६२८, ७४४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	त्रिलोकसार	३२०
	त्रिलोकसारसंहृष्टि	३२२
	पंचसंग्रह	३८
	भावत्रिभंगी	४२
	लब्धिसार	४३
	विशेषसत्तात्रिभंगी	४३
	सत्तात्रिभंगी	४५
पद्मनंदि—	ऋषभदेवस्तुति	३८१
	जिनवरदर्शन	३९०
	जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति	३१९
मुनिपद्मसिंह—	ज्ञानसार	१०५
भद्रबाहु—	कल्पसूत्र	६७
भावशर्मा—	दशलक्षणजयमाला ४८६, ५१७	
मुनिचन्द्रसूरि—	वनस्पतिसत्तरी	८५
मुनीन्द्रकीर्ति—	अनन्तचतुर्दशीकथा	२१४
रत्नशेखरसूरि—	प्राकृतछंदकोश	३११
लक्ष्मीचन्द्रदेव—	स्तोत्र	५७६
लक्ष्मीसेन—	द्वादशानुप्रेक्षा	७४४
वसुनन्दि—	वसुनन्दिश्रावकाचार	८५
विद्यासिद्धि—	शांतिकरस्तोत्र	६८१
शिवार्य—	भगवतीआराधना	७६
श्रीराम—	प्राकृतरूपमाला	२६२
श्रुतमुनि—	भावसंग्रह	७८
समंतभद्र—	कल्याणक	३८३
सिद्धसेनसूरि—	इत्कीसठाणाचर्चा	२
सुन्दरसूर्य—	शांतिकरस्तोत्र	४०३
कविहाल—	कामसूत्र	३५३
ब्र० हेमचन्द्र—	श्रुतस्कंध	३७६, ५७२, ७०७, ७३७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
-----------------	-----------	------------------------

अपभ्रंश भाषा

अमरकीर्ति—	पट्कर्मोपदेशरत्नमाला	८८
ऋषभदास—	रत्नत्रयनूजाजयमाला	५३७
कनककीर्ति—	नन्दोश्वरजयमाला	५१६
मुनिजनकामर—	करकण्डुचरित्र	१६१
मुनिगुणभद्र—	दशलक्षणकथा	६३१
	रोहिणीविधान	६२६
जयमित्रहल—	वर्द्धमानकथा	१६६
जल्हण—	द्वादशानुप्रेक्षा	६२८
ज्ञानचंद्र—	योगचर्चा	६२८
तेजपाल—	संभवजिहणाहचरिउ	२०४
देवनन्दि—	रोहिणीचरित्र	२४३
	रोहिणीविधानकथा	२४३
धवल—	हरिवंशपुराण	१५७
नरसेन—	जिनरात्रिविधानकथा	६२८
	सिरिपालचरिय	२०५
पुष्पदन्त—	आदिपुराण	१४३, ६४२
	महापुराण	१५३
	यशोधरचरित्र	१८८
महणसिंह—	त्रिशतजिहणचन्द्रनीसी	६८६
यराः कीर्ति—	चन्द्रभ्रमचरित्र	१६५
	पद्मिणी	६४२
	पाण्डवपुराण	१५०
	हरिवंशपुराण	१५७
योगीन्द्रदेव—	परमात्मप्रकाश	११०, ५७५, ६६३, ७०७, ७४७
	योगसार	११६, ७४८, ७५५
	दशलक्षणजयमाला	२४३, ४८६, ५१८, ५३७, ५७२, ६३७
रङ्गू—		

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्श्वनाथचरित्र	१७६
	वीरचरित्र	६४२
	पोडराकारण जयमाल	५१७, ५४२
	खंबोधपंचासिका	१२८
	सिद्धान्तार्थसार	४६
रामसिंह—	सावयधम्म दोहा (श्रावकाचार)	६७, ६४१, ७४८
	दोहापाहुड	६०
रूपचन्द्र—	रागभ्रासावरी	६४१
लक्ष्मण—	रोमिणाहचरित्र	१७१
लक्ष्मीचन्द्र—	आध्यात्मिकगाथा	१०३
	उपासकाचार दोहा	५२
	चूनडी	६२८, ६४१
	कल्याणकविधि	६४१
विनयचन्द्र—	दुधारसविधानकथा	२४५, ६२८
	निर्भर चमोविधानकथा	२४५, ६२८
विजयसिंह—	अजितनाथपुराण	१४२
विमलकीर्ति—	सुगन्धदशमीकथा	६३२
सहणपाल—	पदडी (कौमुदीमध्यात्)	६४१
	सम्यक्त्वकौमुदी	६४२
सिंहकवि—	प्रद्युम्नचरित्र	१८२
महाकविस्वयंभू—	रिटुगोमिचरित्र	१५७, ६४२
	श्रुतपंचमीकथा	६४२
	हनुमतानुप्रेक्षा	६३५
श्रीधर—	मुकुमालचरित्र	२०६
हरिश्चन्द्र—	अणस्तमितिसंधि	२४३, ६२८, ६४३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
-----------------	-----------	------------------------

संस्कृत भाषा

अकलंकदेव—	अकलंकाष्टक	५७५, ६३७, ६४६, ७१२
	तत्त्वार्थराजवात्तिक	३२
	न्यायकुमुदचन्द्रोदय	१३४
	प्रायश्चित्तसंग्रह	७४
अक्षयराम—	णमोकारपैतीसी पूजा	४८२, ५१७
	प्रतिमासान्त चतुरर्दशी	
	व्रतोद्यापन पूजा	५१६, ५२०
	सुखसंपत्तिव्रत पूजा	५५५
	सौख्यकाव्य व्रतोद्यापन	५१६, ५५६
ब्रह्म अजित—	हनुमच्छरित्र	२१०
अजितप्रभसूरि—	शान्तिनाथचरित्र	१६८
अनन्तकीर्ति—	नन्दीश्वरव्रतोद्यापन पूजा	४६४
	पत्नविधान पूजा	५०७
	प्रमेयरत्नमाला	१३८
	तर्कसंग्रह	१३२
अनुभूतिस्वरूपाचार्य—	सारस्वतप्रक्रिया	६२५, २६६, ७८०
	नचुसारस्वत	२६३
अपराजितसूरि	भगवतीआराधनाटिका	७६
अप्यदीक्षित—	कुवलयानंद	३०८
अभयचन्द्रगणि—	पंचसंग्रहवृत्ति	३६
अभयचन्द्र—	क्षीरोदानीपूजा	७६३
अभयनंदि—	जैनेन्द्रमहावृत्ति	२६०
अभयनन्दि—	त्रिलोकसार पूजा	४८५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	दशलक्षण पूजा	४८६	अमोलकचन्द्र—	रथयात्राप्रभाव	३७४
	लघुश्रेयविधि	५३३	अमृतचन्द्र—	तत्त्वार्थसार	२२
अभयसोम—	विक्रमचरित्र	१६६		पंचास्तिकायटीका	४१
पं० अश्रदेव—	त्रिकालवीरःकीकथा	२२६,		परमात्यप्रकाश टीका	११०
	(रोटतीजकथा)	२४२		प्रवचनसार टीका	११२
	दशलक्षण पूजा	४८८		पुरुषार्थसिद्धचुपाय	६८
	द्वादशव्रतकथा	२२८, २४६		समयसारकलशा	१२०
	द्वादशव्रत पूजा	४६०		समयसार टीका	१२१
	मुकुटसप्तमीकथा	२४४			७५५, ७६४
	लब्धिविधानकथा	२३६	अरुणमणि—	अजितपुराण	१४२
	लब्धिविधान पूजा	५१७	अर्हदेव—	पंचकल्याणक पूजा	५००
	श्रवणद्वादशीकथा	२४५	अशग—	शान्तिकविधि	५४४
	श्रुतस्कंधविधानकथा	२४५	आशग—	शान्तिनाथपुराण	१५५
	षोडशकारणकथा	२४२,	आत्रेयऋषि—	आत्रेयवैद्यक	२६६
		२४५, २४७	आनन्द—	माधवानलकथा	२३५
			आशा—	सोनागिर पूजा	५५५
अनरकीर्ति—	जिनसहस्रनामटीका	३६३	आशाधर—	अंकुरारोपणविधि	४५३,
	महावीरस्तोत्र	७५२			५१७
	यमकाष्टकस्तोत्र	४१३, ४२६		अनगारधर्मामृत	४८
अमरसिंह—	अमरकोश	२७२		आराधनासारवृत्ति	६४
	त्रिकाण्डशेषसूची	२७४		इष्टोपदेशटीका	३८०
अमितिगति—	धर्मपरीक्षा	३५६		कल्याणमंदिरस्तोत्रटीका	३८५
	पंचसंग्रह टीका	३६		कल्याणमाला	५७५
	भावनान्नात्रिशतिका	५७३		कलशाभिषेक	४६७
	(सामायिक पाठ)	७३७		कलशारोपणविधि	४६६
	श्रावकाचार	६०		गणधरवल्यपूजा	७६१
	सुभाषितरत्नसन्दोह	३४१		जलयात्राविधान	४७७
अमोधवर्ष—	धर्मोद्देशश्रावकाचार	६४		जिनयज्ञकल्प	
	प्रश्नोत्तररत्नमाला	५७३		(प्रतिष्ठापाठ)	५२१
					४७८, ६०८, ६३६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	जिनसहस्रनामस्तोत्र	३६१,
		५४०, ५६६, ५६६, ६०५,
		६०७, ६३६, ६४६, ६५५,
		६८३, ६८६, ६९२, ७१२,
		७१५, ७२०, ७४०, ७५२
	धर्माभूतसूक्तिसंग्रह	६३
	ध्वजारोपणविधि	४६२
	त्रिषष्टिस्मृति	१४६
	देवशास्त्रगुरुपूजा	७६१
	भूगालचतुर्विंशतिका	
	टीका	४११
	रत्नत्रयपूजा	५२६
	श्रावकाचार	
	(सागारधर्माभूत)	६३५
	शांतिहोमविधान	५४५
	सरस्वतीस्तुति	६४७,
		६५८, ७६१
	सिद्धपूजा	५५४, ७१६
	स्तवन	६६१
इन्द्रनंदि—	अंकुरारोपणविधि	४५३
	देवपूजा	४६०
	नीतसार	३२६
उज्ज्वलदत्त (संग्रहकर्ता)—	उणादिसूत्रसंग्रह	२५७
उमास्वामि—	तत्त्वार्थसूत्र	२३, ४२५
		४२७, ४३७, ५३७, ५६२, ५६६,
		५७१, ५७३, ५६५, ५६६, ६०१,
		६०३, ६०५, ६३३, ६३७, ६३६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	६४४, ६४५, ६४७, ६४८, ६५०,	
	६५२, ६५६, ६६४, ७००, ७०४,	
	७०५, ७०७, ७२७, ७८५, ७८८	
	पंचनमस्कारस्तोत्र	५७६
	पूजाप्रकरण	५१२
	श्रावकाचार	६०
	प्रायश्चित्तविधि	७४
	रागोकारपर्वतीसीम्रत	
	विधान	४८२, ५१७
	देवागमस्तोत्रवृत्ति	३६६
	योन्मटसार कर्मकाण्डटीका	१२
	कुमारसंभवटीका	१६२
	जिनपंजरस्तोत्र	३६०,
		४३०, ६४६
	चतुर्विंशति तीर्थकर	
	स्तोत्र	३८८
कालिदास—	कुमारसंभव	१६२
	ऋतुसंहार	१६१
	मेघदूत	१८७
	रघुवंश	१६३
	वृतरत्नाकर	३१४
	श्रुतबोध	६४४
	शाकुन्तल	३१६
कालिदास—	नलोदयकाव्य	१७५
	शृंगारतिलक	३५६
काशीनाथ—	ज्योतिषसारलग्नचंद्रिका	२८३
	शीघ्रबोध	२६२, ६०३
	अजीर्णमंजरी	२६६
कुमुदचन्द्र—	कल्याणमंदिरस्तोत्र	३८४
		४२५, ४२७, ४३०, ४३१,

भ० एकसंधि—

कनककीर्त्ति—

कनककुशल—

कनकनंदि—

कनकसागर—

कमलप्रभाचार्य—

कमलविजयराणि—

कालिदास—

कालिदास—

काशीनाथ—

काशीराज—

कुमुदचन्द्र—

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
		५६५, ५७२, ५७५, ५६५,	गणपति—	रत्नदीपक	२६०
		६१६, ६३३, ६३७, ६७०,	गणिरतनसूरि—	षडदर्शनसमुच्चयवृत्ति	१३६
		७२४, ७५७	गणेश—	ग्रहलाघव	२८०
कुलभद्र—	सारसमुच्चय	६७, ५७४		पंचांगसाधन	२८५
भट्टकेदार—	वृत्तरत्नाकर	३१४	गर्गऋषि—	गर्गसंहिता	२८०
केशव—	जातकपद्धति	२८१		पाशाकेवली	२८६, ६४७
	ज्योतिषमणिमाला	२८२		प्रश्नमनोरमा	२८७
केशवमिश्र—	तर्कभाषा	१३२	गुणकीर्त्ति—	शकुनावली	२६२
केशववर्णा—	गोम्मटसारवृत्ति	१०	गुणचन्द्र—	पंचकल्याणकपूजा	५००
	आदित्यव्रतपूजा	४६१		अनन्तव्रतोद्यापन	५१३
केशवसेन—	रत्नत्रयपूजा	५२६			५३६, ५४०
	रोहिणीव्रतपूजा	५१३,		अष्टाङ्गिकाव्रतकथा	
		५३२, ७२६		संग्रह	२१६
	षोडशकारणपूजा	५४२,	गुणचन्द्रदेव—	अमृतधर्मरसकाव्य	४८
		६७६	गुणानंदि—	ऋषिमंडलपूजाविधान	४६३,
कैथ्यट—	भाष्यप्रदीप	२६२			५३६, ७६२
कौहनभट्ट—	वैय्याकरणभूषण	२६३		चंद्रप्रभकाव्यपंजिका	१६५
ब्र० कृष्णदास	मुनिमुव्रतपुराण	१५३		त्रिकालचौबीसीकथा	६२२
	विमलनाथपुराण	१५४		संभवजिनस्तोत्र	४९६
कृष्णशर्मा—	भावदीपिका	१३८	गुणभद्र—	शांतिनाथस्तोत्र	६१४,
क्षपणक—	एकाक्षरकोवा	२७४			७२२
क्षेमंकरमुनि—	सिंहासनद्वात्रिंशिका	२५३	गुणभद्राचार्य—	अनन्तनाथपुराण	१४२
क्षेमन्द्रकीर्त्ति—	गजपंथामंडलपूजा	४६८		आत्मानुशासन	१००
खेता—	सम्यक्त्वकौमुदीकथा	२५१		उत्तरपुराण	१४४
गंगादास—	पंचश्रेत्रपालपूजा	५०२		जिनदत्तचरित्र	१६६
	पुष्पांजलिब्रतोद्यापन	५०८		धन्यकुमारचरित्र	१७२
		५१६		मौनिव्रतकथा	२३६
	देवव्रत	५३२		वर्द्धमानस्तोत्र	४१५
	सम्मोदशिखरपूजा	५४६,	गुणभूषणाचार्य—	श्रावकाचार	६०
		७२७			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
गुणरत्नसूरि—	तर्करहस्यदीपिका	१३२	चिंतामणि—	रमलशास्त्र	२९०
गुणविनयगणि—	रघुवंशटीका	१६४	चूडामणि—	न्यायसिद्धान्तमंजरी	१३६
गुणाकरसूरि—	सम्यक्त्वकौमुदीकथा		चोखचन्द—	चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	४७३
गोपालदास—	रूपमंजरीनाममाला	२७६	छत्रसेन—	चन्दनषष्ठीव्रतकथा	६३१
गोपालभट्ट—	रसमंजरीटीका	३५६	जगतकीर्त्ति—	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	४६१
गोवर्द्धनाचार्य—	सप्तशती	७१५	जगद्भूषण—	सौन्दर्यलहरीस्तोत्र	४२२
गोविन्दभट्ट—	पुरुषार्थानुशासन	६६	जगन्नाथ—	गरुडपाठ	२५६
गौतमस्वामी—	ऋषिमंडलपूजा	६०७		नेमिनरेन्द्रस्तोत्र	३६६
	ऋषिमंडलस्तोत्र	३८२		सुखनिधान	२०७
	४२४, ६४६, ७३२		जतीदास—	दानकीवीनती	६४३
घटकपर्प—	घटकपर्पकाव्य	१६४	जयतिलक—	निजस्मृत	३८
चंड कवि—	प्राकृतव्याकरण	२६२	जयदेव—	गीतगोविन्द	१६३
चन्द्राकीर्त्ति—	चतुर्विंशतितोत्राकाराष्टक	५६४	ब्र० जयसागर—	सूर्यव्रतोद्यापनपूजा	५५७
	विमानशुद्धि	५३५	जानकीनाथ—	न्यायसिद्धान्तमंजरी	१३५
	सप्तपरमस्थानकथा	२४६	भ० जिष्णुचन्द्र—	जिनचतुर्विंशतिस्तोत्र	७५७
चन्द्रकीर्त्तिसूरि—	सारस्वतदीपिका	२६६	जिनचंद्रसूरि—	दशलक्षणव्रतोद्यापन	४८६
चाणक्य—	चाणक्यराजनीति	३२६, ६४०, ६४६, ६८३, ७१२, ७१७, ७२३, ७८७	ब्र० जिनदास—	जम्बूद्वीपपूजा	४७७
	लघुचाणक्यराजनीति	३३६, ७१२, ७२०		५०९, ५३७	
चामुण्डराय—		५५		जम्बूस्वामीचरित्र	१६८
	ज्वरतिमिरभास्कर	२६८		ज्येष्ठजिनवरलाहान	७६५
	भावनासारमंग्रह	५५, ७७, ६१५		नेमिनाथपुराण	१४७
चाण्कीर्त्ति—	गीतगीतराग	३८६		पुष्पांजलीव्रतकथा	२३४
चारित्रभूषण—	महीपालचरित्र	१८६		सप्तषिपूजा	५४८
चारित्रसिंह—	कातन्त्रविभ्रमसूत्राव-			हरिवंशपुराण	१५६
	चूरि	२५७	पं० जिनदास—	सोलहकारणपूजा	७६५
				जलययात्राविधि	६८३
				होलीरेणुकाचरित्र	२११
				भक्तत्रिमजिनचैत्यालय	
				पूजा	४५३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
जिनप्रभसूरि—	सिद्धहेमतंत्रवृत्ति	२६७	दामोदर—	चन्द्रप्रभचरित्र	१६५
जिनदेयसूरि—	मदनपराजय	३१७		प्रशस्ति	६०८
जिनलाभसूरि—	चतुर्विंशतिजिनस्तुति	३८७		व्रतकथाकोश	२४१
जिनवद्धेनसूरि—	अलंकारवृत्ति	३०८	देवचन्द्रसूरि—	पाशर्वनाथस्तवन	६३३
जिनसेनाचार्य—	आदिपुराण	१४२, ६४६	दीक्षितदेवदत्त—	सम्मोदशिखरमहात्म्य	६२
	ऋषभदेवस्तुति	३८१	देवनदि—	गर्भण्डारचक्र	१३१, ७३७
	जिनसहस्रनामस्तोत्र	३६२		जैनेन्द्रव्याकरण	२५६
	४२५, ५७३, ६४७			चौबासतीर्थकरस्तवन	६०६
	७०७, ७४७			सिद्धिप्रियस्तोत्र	४२१
जिनसेनाचार्य—	हरिवंशपुराण	१५५		४२५, ४२७, ४२६, ४३१,	
जिनसुन्दरसूरि—	होलीकथा	२५६		५७२, ५६५, ५७८, ५६७,	
भ० जिनेन्द्रभूषण—	जिनेन्द्रपुराण	१४६		६०५, ६०६, ६३३,	
भ० ज्ञानकीर्त्ति—	यशोधरचरित्र	१६२		६३७, ६४४	
ज्ञानभास्कर—	पाशाकेवली	२८६	देवसूरि—	शांतिस्तवन	६१६
ज्ञानभूषण—	आत्मसंबोधनकाव्य	१००	देवसेन—	आलापपद्धति	१३०
	ऋषिमंडलपूजा	४६३, ६२६	देवेन्द्रकीर्त्ति—	चन्दनषष्ठीव्रतपूजा	१७३
	गौम्मटसारकर्मकाण्डटीका	१२		चन्द्रप्रभजिनपूजा	४७४
	तत्त्वज्ञानतरंगिणी	५८		त्रैपन्नक्रियोद्यापन	६३८, ७६६
	पंचकल्याणकोद्यापनपूजा	६६०		द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	४६१
	भक्तामरपूजा	५२		पंचमीव्रतपूजा	५०४
	श्रुतपूजा	५३७		पंचमेरूपूजा	५१६
	सरस्वतीपूजा	५१५		प्रतिमासांतचतुर्दशोपूजा	७६१
	५४५, ५५१			रविज्ञतकथा	२३७, ५३५
	सरस्वती स्तुति	६५७		रैव्रतकथा	२३६
दैवज्ञद्विंदिराज—	जातकाभरण	२८२		व्रतकथाकोश	२४२
त्रिभुवनचंद्र—	त्रिकालचौबीसी	४८४		सप्तऋषिपूजा	७६५
दयाचंद्र—	तत्त्वार्थसूत्रदशाध्यायपूजा	४८२	दौर्गसिंह—	कातंत्ररूपमालाटीका	२५८
		३०८	धनञ्जय—	द्विसंधानकाव्य	१७१
दलिपतराय बंशीधर—	अलंकाररत्नाकार	३०८		नाममाला	२७५, ५७४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
		६८६, ६९९, ७११, ७१२, ७१३	नरहरिभट्ट—	श्रवणभूषण	१९९
	विषापहारस्तोत्र	४१५, ४२५, ४२७, ५६५, ५७२, ५९५, ६०५, ६३३, ६३७, ६४९	नरेन्द्रकीर्ति—	विद्यमानबीसतीर्थकर	पूजा ५३५ ६५५, ७९३
धर्मकलशसूरि—	सन्देहसमुच्चय	३३८	नरेन्द्रसेन—	प्रमाणप्रमेयकलिका	१३७, ५७५
धर्मकीर्ति—	कौमुदीकथा	२२२		प्रतिष्ठादीपक	५२१
	पद्मपुराण	१४९		रत्नत्रय पूजा	५९४
	सहस्रगुणितपूजा	५५२		सिद्धान्तसारसंग्रह	४७
मं० धर्मचन्द्र—	कथाकोश	२१९	नागचन्द्रसूरि—	विषापहारस्तोत्रटीका	४१६
	गौतमस्व. मोचरित्र	१६३	नागराज—	पिगलशास्त्र	३११
	गोम्भटसारटीका	१०	नागेशभट्ट—	सिद्धान्तमंजूषिका	२७०
	संयोगपंचमीकथा	२५३	न गोजीभट्ट—	परिभाषेन्दुबोखर	२६१
	सहस्रनामपूजा	७४७	नाठमल्ल—	शाङ्गधरसंहिताटीका	३०६
धर्मचन्द्रगणि—	आभिधानरत्नाकर	२७२	नारचंद्र—	कथारत्नसागर	२२०
धर्मदास—	विदग्धमुखमडन	१९६		ज्योतिषसारसूत्रटिप्पण	२८३
धर्मधर—	नागकुमारचरित्र	१७६		नारचन्द्रज्योतिषशास्त्र	२८५
धर्मभूषण—	जिनसहस्रनामपूजा	४८०, ५५०	कविनीलकंठ—	नीलकंठताजिक	२८५
	न्यायदीपिका	१३५		शब्दशोभा	२६४
	शीतलनाथपूजा	५४६	मुनिनेत्रसिंह—	सप्तनयावबोध	१४०
नंदिगुरु—	प्रायश्चित्त समुच्चय		नेमिचन्द्र—	द्विसंधानकाव्यटीका	१०२
	चूलिका टीका	७५, ७८०		सुप्रभाताष्टक	६३३
नन्दिषेण—	नन्दीश्वरप्रतीघापन	४९४	ब्र० नेमिदत्त—	श्रीषधदानकथा	२१८
प० नकुल—	अश्वलक्षणा	७८१		अष्टकपूजा	५६०
	शालिहोत्र	३०६		कथाकोश (आराधना- कथा कोश)	२१९
प० नयविलास—	ज्ञानार्णवटीका	१०८		नाग श्री कथा	२३१
नरपति—	नरपतिजयचर्या	२८५			
नरसिंहभट्ट—	जिनघटटीका	३९१			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	धन्यकुमार चरित्र	१७३		सिद्धपूजा	१३७
	धर्मोपदेशश्रावकाचार	६४		स्तोत्र	५७५
	निशिभोजनकथा	२३१	पद्मनाभ—	भावती	२८६
	पात्रदानकथा	२३३	पद्मनाभकायस्थ—	यशोधरचरित्र	१८६
	प्रीतिकरचरित्र	१८२	प्रद्युम्नप्रभदेव—	पार्श्वनाथस्तोत्र	४०५
	श्रीपालचरित्र	२००		६१४, ७०२, ७४५	
	सुदर्शनचरित्र	२०८		लक्ष्मीस्तोत्र	४१४, ४२३
पंचाननभट्टाचार्य—	सिद्धान्तमुक्तावली	२७०		४२६, ४३२, ५६६, ५७२,	
पद्मनंदि I—	पद्मनन्दिपंचविंशतिका	६६		५७४, ५६६, ६४४, ६४८	
	पद्मनन्दिश्रावकाचार	६८, ६०		६६३, ६६५, ७०३, ७१६	
पद्मनंदि II—	अनन्तव्रतकथा	२१४	पद्मप्रभसूरि—	भुवनदीपक	२८६
	करुणाष्टक	५७४	परमहंसपरिव्राजकाचार्य—	मुहूर्त्तमुक्तावली	२८६
	६३३, ६३७, ६८८			मेघदूतटीका	१८७
	द्वादशव्रतोद्यापनपूजा	४६१	पाणिनी—	पाणिनीव्याकरण	२६१
	दानपंचाशत	६०	पात्रकेशरी—	पात्रपरीक्षा	१३६
	धर्मरसायन	६१	पार्श्वदेव—	पद्मावत्यष्टकवृत्ति	४०२
	पार्श्वनाथस्तोत्र	५६६	पुरुषोत्तमदेव—	अभिधानकोश	२७१
		७४४		निकाण्डशेषाभिधान	२७५
	पूजा	५६०		हारावलि	२११
	नंदीश्वरपंक्तिपूजा	६३६	पूज्यपाद—	इष्टोपदेश (स्वयभूस्तोत्र)	
	भावनाचौतीसी			६३५, ६३७	
	(भावनापद्धति)	५७५, ६३४		परमानंदस्तोत्र	५७४
	रत्नत्रयपूजा	५२६		श्रावकाचार	६०
		५७५, ६३६		समाधितत्र	१२५
	लक्ष्मीस्तोत्र	६३७		समाधिशतक	१२७
	वीतरागस्तोत्र	४२४,		सर्वाथिसिद्धि	४५
	४३१, ५७४, ६३४, ७३१		पूर्णदेव—	यशोधरचरित्र	१६०
	सरस्वतीपूजा	५५१, ७११	पूर्णचन्द्र—	उपसर्गहरस्तोत्र	३८१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
पृथ्वीधराचार्य—	चामुण्डस्तोत्र	३८८	भक्तिलाभ—	षष्ठिशतकटिप्पण	३३६
	भुवनेश्वरोस्तोत्र		भट्टशंकर—	वैद्यविनोद	३०५
	(सिद्धमहामत्र)	३४६	भट्टोजीदीक्षित—	सिद्धान्तकौमुदी	२६७
प्रभाचन्द्र—	आत्मानुशासनटीका	१०१	भट्टोत्पल—	लघुजातक	२६१
	आराधनासारप्रबंध	२१६		बृहज्जातक	२६१
	आदिपुराणटिप्पण	१४३		षट्पंचासिकावृत्ति	२६२
	उत्तरपुराणटिप्पण	१४५	भद्रबाहु—	नवग्रहपूजाविधान	४६४
	क्रियाकलापटीका	५३		भद्रबाहुसंहिता	२८५
	तत्त्वार्थरत्नप्रभाकर	२१		(निमित्तज्ञान)	४८०, ८००
	द्रव्यसंग्रहवृत्ति	३४	भर्तृहरि—	नीतिशतक	३२५
	नागकुमारचरित्रटीका	१७६		वरांगचरित्र	१६५
	न्यायकुमुदचन्द्रिका	१३५		वेराभ्यशतक	११७
	प्रमेयकमलमार्तण्ड	१३८		भर्तृहरिशतक	३३३, ७१५
	रत्नकरण्डभ्रावकाचार-		भागचद—	महावीराष्टक	४१३, ४२६
	टीका	८२	भानुकीर्ति—	रोहिणीव्रतकथा	२३६
	यशोधरचरित्रटिप्पण	१६२		सिद्धचक्रपूजा	५५३
	समाधिशतकटीका	१२७	भानुजीदीक्षित—	अमरकोषटीका	२७४
	स्वयंभूस्तोत्रटीका	४३४	भानुदत्तमिश्र—	रसमंजरी	३५६
भ० प्रभाचंद्र—	कलिकुण्डपाशर्वनाथपूजा	४६७	तीर्थमुनि—	न्यायमाला	१३५
	मुनिमुवतछंद	५५७	परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीभारती—		
	सिद्धचक्रपूजा	५५३	तीर्थमुनी—	न्यायमाला	१३५
ब्रह्मुनि—	सामायिकपाठ	६४	भारवी—	किराताजुनीय	१६१
बालचन्द्र—	तर्कभाषाप्रकाशिका	१३२	भावशर्मा—	लघुस्नपनटीका	५३३
ब्रह्मदेव—	द्रव्यसंग्रहवृत्ति	३४	भास्कराचार्य—	लोलावती	३६८
	परमात्मप्रकाशटीका	१११	भूपालकवि—	भूपालचतुर्विंशतिस्तोत्र	४११
ब्रह्मसेन—	क्षमावणीपूजा	५६४			४२५, ५७२, ५६५
	रत्नत्रयकामहार्घ व				६०५, ६३३
	क्षमावणी	७८१			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
पं० मंगल (संग्रह कर्त्ता) —	घर्मरत्नाकर	६२		शब्द व धातुभेदप्रमेद	२७७
माणिक्यभद्र —	क्षेत्रपालपूजा	६८६	माघ —	शिशुपालवध	१८६
मदनकीर्ति —	अनंतप्रतविधान	२१४	माघनंदि —	चतुर्विंशतितीर्थकर	
	षोडशकारणविधान	५१४		जयमाल	३८८, ४६६
मदनपाल —	मदनविनोद	३००			५७६
मानमिश्र —	भावप्रकाश	२४६	माणिक्यनंदि —	परीक्षामुख	१३६
मधुसूदनसरस्वती —	सिद्धान्तबिन्दु	२७०	माणिक्यभट्ट —	वैद्यामृत	३०५
मनूसिंह —	योगचिन्तामणि	३०१	माणिक्यपुरि —	नलोदयकाव्य	१७४
मनोहरश्याम —	श्रुतबोधटीका	३१५	माधवचन्द्रत्रैविद्यदेव —	त्रिलोकसारवृत्ति	३२२
मल्लिनाथसूरि —	रघुवंशटीका	१६३		क्षयणासारवृत्ति	७
	शिशुपालवधटीका	१६६	माधवदेव —	न्यायसार	१३५
मल्लिभूषण —	दशलक्षणश्रतोद्यापन	४८६	मानतु गाचार्य —	भक्तामरस्तोत्र	४०७,
मल्लिषैणसूरि —	नागकुमारचरित्र	१७५		४२५, ४२६, ४२१, ५६६,	
	भैरवपद्मावतीकल्प	३४६		५६६, ६०३, ६०५, ६१६,	
	सज्जनचित्तवल्लभ	३३७		६२८, ६३४, ६३७, ६३६,	
		५७३		६४४, ६४८, ६५१, ६५२,	
	स्याद्वदमंजरी	१४१		६६४, ६६५, ६७०, ६८१,	
महादेव —	मुहूर्त्तदीपक	२६०		६८५, ६९१, ७०३, ७०५,	
	सिद्धान्तमुक्तावलि	१४०		७०६, ७०७, ७४१	
महासेनाचार्य —	प्रद्युम्नचरित्र	१८०	मुनिभद्र —	शांतिनाथस्तोत्र	४१७, ७१५
महीक्षपणकवि —	अनेकार्थध्वनिमंजरी	२७१	पं० मेधावी —	अष्टांगोपाख्यान	२१५
भ० महीचन्द्र —	त्रिलोकतिलकस्तोत्र	६८२, ७१२		धर्मसंग्रहभावकाचार	६२
	पंचमेरूपूजा	६०७	भ मेरूचंद —	अनन्तचतुर्दशीपूजा	६०७
	पद्मावतीछंद	५६०, ६०७	मोहन —	कलशविधान	४६६
महीधर —	मंत्रमहोदधि	३५१, ५७७	यशःकीर्ति —	अष्टाह्निकाकथा	६४५
	स्वर्णाकर्षणविधान	४२८		धर्मशर्माभ्युदयटीका	१७४
महीभट्टी —	सारस्वतप्रक्रियाटीका	२६७	यशोनन्दि —	प्रबोधसार	३३१
महेरवर —	विश्वप्रकाश	२७७		धर्मचक्रपूजा	४६१, ५१५
				पंचपरमेष्ठीपूजाविधि	५०२,
					५०६, ५१८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
यशोविजय —	कलिकुण्डपाश्वर्चनाथपूजा	६५८	राजमल्ल —	ग्रध्यात्मकमलमार्त्तण्ड	१२६
यागदेव —	तत्त्वार्थवृत्ति	२२		जम्बूस्वामीचरित्र	१६६
रघुनाथ —	तार्किकशिरोमणि	१३३		लाटीसंहिता	८४
	रघुनाथविलास	३१२	राजशेखर —	कपूर् रमंजरी	३१६
साधुरणमल्ल —	धर्मचक्रपूजा	४६२	राजसिंह —	पार्वर्ममहिम्नस्तोत्र	४०६
रत्नशेखरसूरि —	छंदकोश	३०६	राजसेन —	पार्वर्नाथस्तोत्र	५६६, ७३७
रत्नकीर्त्ति —	रत्नत्रयविधानकथा	२४२	राजहंसोपाध्याय —	षष्ठ्याधिकशतकटीका	४४
	रत्नत्रयविधानपूजा	५३०	मुमुक्षुरामचन्द्र —	पुण्याश्रवकथाकोष	२३३
रत्नचन्द्र —	जिनगुणसंपत्तिपूजा	४७७, ५१०	रामचंद्राश्रम —	सिद्धान्तचन्द्रिका	२६८
	पंचमेरुपूजा	५०५	रामवाजपेय —	समरसार	२६४
	पुष्पांजलिप्रतपूजा	५०८	रायमल्ल —	त्रैलोक्यमोहनकवच	६६०
	मुभौमचरित्र		रुद्रभट्ट —	वैद्यजीवनटीका	३०४
	(भौमचरित्र)	१८५, २०६		शृङ्गारतिलक	३५६
रत्ननंदि —	नन्दीश्वरद्वीपपूजा	४६२	रोमकाचार्य —	जन्मप्रदीप	२८१
	पल्यविधानपूजा	५०६, ५०६, ५१६	लकानाथ —	ग्रथप्रकाश	२६६
	भद्रबाहुचरित्र	१८३	लक्ष्मण (अमरसिंहात्सज) —	लक्ष्मणोत्सव	३०३
	महीपालचरित्र	१८६	लक्ष्मीनाथ —	पिंगलप्रदीप	३११
रत्नपाल —	सोलहकारणकथा	६६५	लक्ष्मीसेन —	अभिषेकविधि	४५८
रत्नभूषण —	मिद्धपूजा	५५४		कर्मचूरप्रतोद्यापनपूजा	४६४, ५१७
रत्नशेखर —	गुणस्थान क्रमारोहसूत्र	८		चिन्तामणि पार्वर्नाथ	
	समवसरणपूजा	५३७		पूजा एवं स्तोत्र	४२३
रत्नप्रभसूरि —	प्रमाणनयतत्त्वावलोक- लंकार टीका	१३७		चिन्तामणिस्तवन	७६१
रत्नाकर —	आत्मनिदास्तवन	३८०		सप्तपिपूजा	५४८
रविषेणाचार्य —	पद्मपुराण	१४८	लयुक्वि —	सरस्वतीस्तवन	४१६
राजकीर्त्ति —	प्रतिष्ठादर्घ	५२०	ललितकीर्त्ति —	अक्षयदशमीकथा	६६५
	षोडशकारणप्रतोद्यापन पूजा	५४३		अनंतव्रतकथा	६४५, ६६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	आकाशपंचमीकथा	६४५	चराहमिहर—	पट्पंचासिका	२६२
	कंजिकारतोद्यापनपूजा	४६८	भ० बद्धमानदेव—	वरांगचरित्र	१६४
	चौसठशिवकुमारका		बद्धमानसूरि—	लग्नशास्त्र	२६१
	कांजी की पूजा	५१४	बल्लाल—	भोजप्रबन्ध	१८५
	जिनचरित्रकथा	६४५	वसुनन्दि—	देवागमस्तोत्रटीका	३६५
	दशलक्षणीकथा	६६५		प्रतिष्ठापाठ	५२१
	पत्यविधानपूजा	५०६		प्रतिष्ठासारसंग्रह	५२२
	पुष्पांजलिब्रतकथा	६६५		मूलाचारटीका	७६
		७६४	वाग्भट्ट—	नेमिनिर्वाण	१७७
	रत्नत्रयव्रतकथा	६४५, ६६५		वाग्भट्टालंकार	३१२
	रोहिणीव्रतकथा	६४५	वादिचन्द्रसूरि—	कर्मदहनपूजा	५६०
	पोडशकारणकथा	६४५		ज्ञानसूर्योदयनाटक	३१६
	समवसरणपूजा	५४६		पवनदूतकाव्य	१७८
	सुगंधदशमीकथा	६४५	वादिराज—	एकीभावस्तोत्र	३८२
लोकसेन—	दशलक्षणकथा	२२७, २४२		४२५, ४२७, ५७२, ५७४,	
लोकेशकर—	सिद्धान्तचन्द्रिकाटीका	२६६		५६५, ६०५, ६३३, ६३७	
लोलिम्बराज—	वैद्यजीवन	७१५		६४४, ६५१, ६५२, ६५७,	
लोगान्तिभास्कर—	पूर्वमीमांसार्थप्रकरण			७२१	
	संग्रह	१३७		गुर्वाष्टक	६५७
लोलिम्बराज—	वैद्यजीवन	३०३		पार्ष्वनाथचरित्र	१७८
वनमालीभट्ट—	भक्तिरत्नाकर	८००		यशोधरचरित्र	१६०
वरदराज—	लघुसिद्धान्तवैश्वदेवी	२६३	वादीभसिंह—	क्षत्रचूडामणि	१६२
	सारसंग्रह	१४०		पंचकल्याणकपूजा	५००
वररुचि—	एकाक्षरीकोश	२७०	वामदेव—	त्रिलोकदीपक	३२०
	योगदात	३०२		भावसंग्रह	७८
	शब्दरूपिणी	२६४		सिद्धान्तत्रिलोकदीपक	३२३
	श्रुतबोध	३१५	वासवसेन—	यशोधरचरित्र	१६०
	सर्वार्थसाधनी	२७८	वाहडदास—	सन्निपातनिदान	३०६

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
विजयकीर्ति—	चन्द्रनपष्ठितपूजा	५०६		तेरहद्वीपपूजा	४८४
आ० विद्यानन्दि—	अष्टसहस्री	१२६, १३०		पद	५६१
	आप्तपरीक्षा	१२६		पूजाष्टक	५१३
	पत्रपरीक्षा	१३६		मांगीतुंगीगिरिमंडल	
	पंचनमस्कारस्तोत्र	४०१		पूजा	५२६
	प्रमाणपरीक्षा	१३७		रेवानदीपूजा	५३२
	प्रमाणमीमांसा	१३८		शत्रुञ्जयगिरिपूजा	५१३
	युक्त्यनुशासनटीका	१३६		सप्तविपूजा	५४८
	श्लोकवात्तिक	४४		सिद्धकूटपूजा	५१६
मुमुक्षुविद्यानन्दि—	सुदर्शनचरित्र	२०६	विश्वसेन—	क्षेत्रपालपूजा	४६७
उपाध्यायविद्यापति—	चिकित्साजनम्	२६८		षणवतिक्षेत्रपालपूजा	५१६
विद्याभूषणसूरि—	चिताभरणपूजा (बृहद्)	४७५		षणवतिक्षेत्रपूजा	५४१
विनयचन्द्रसूरी—	गजसिंहकुमारचरित्र	१६३		समवसरणस्तोत्र	४१६
विनयचन्द्रमुनि—	चतुर्विंशसूत्र	१४	विष्णुभट्ट—	पट्टीति	१३६
विनयचन्द्र—	द्विसंधानकाव्यटीका	१७२	विष्णुशर्मा—	चतत्र	३३०
	भूपालचतुर्विंशतिका			पंचाख्यान	२३२
	स्तोत्रटीका	४१२		हितोपदेश	३४५
विनयरत्न—	विदाधमुखमंडनटीका	१६७	विष्णुसेनमुनि—	समवसरणस्तोत्र	४१६, ४२५
विमलकीर्ति—	धर्मप्रश्नोत्तर	६१	वीरनन्दि—	आचारसार	४६
	सुखसंपत्तिविधानकथा	२४५		चन्द्रप्रभचरित्र	१६४
विवेकनन्दि—	त्रिभंगीसारटीका	३२	वीरसेन—	श्रावकप्रायश्चित्त	८६
विश्वकीर्ति—	भक्तामरव्रतोद्यापनपूजा	५२३	बुपाचार्य—	उससगार्थविवरण	५२
विश्वभूषण—	मढाईद्वीपपूजा	४४५	वेदव्यास—	नवग्रहस्तोत्र	६४६
	आठकोडमुनिपूजा	४६१	वैजलभूपति—	प्रबोधचंद्रिका	३१७
	इन्द्रध्वजपूजा	४६२	बृहस्पति—	सरस्वतीस्तोत्र	४२०
	कलशविधि	४६६	शंकरभगति—	बालबोधिनी	१३८
	कुण्डलगिरिपूजा	४६७	शंकरभट्ट—	शिवरात्रिउद्यापन	
	गिरिनारक्षेत्रपूजा	४६६		विधिकथा	२४७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
शंकराचार्य—	आनन्दलहरी	६०८		गणधरवल्लयपूजा	६६०
	अपराधमूदनस्तोत्र	६६२		चन्दनपष्ठिव्रतपूजा	४७३
	गोविन्दाष्टक	७३३		चन्दनाचरित्र	१६४
	जगन्नाथाष्टक	३८६		चतुर्विंशतिजिनाष्टक	५७८
	दक्षणामूर्तिस्तोत्र	६६०		चन्दमभचरित्र	१६५
	हरिनाममाला	३६७		चारित्रशुद्धिविधान	४७५
शंभूसाधु—	जिनशतटीका	३६०		चिन्तामणिएपार्श्वनाथ	
शंभूराम—	नेमिनाथपूजाष्टक	४६६		पूजा	६४५
शाकटायन—	शाकटायनव्याकरण	२६५		जीवन्धरचरित्र	१७०
शान्तिदास—	अनंतचतुर्दशीपूजा	४५६		तत्त्ववर्णन	२०
	गुरुस्तवन	६५७		तोसचौबीसीपूजा	५३७
शाङ्गधर—	रसमंजरी	३०२		तेरहद्वीपपूजा	४८३
	शाङ्गधरसंहिता	३०५		पंचकल्याणपूजा	५०२
पं० शाली—	नेमिनाथस्तोत्र	३१६, ७५७		पंचपरमेष्ठीपूजा	५०२
शालिनाथ—	रसमञ्जरी	३०२		पत्यन्नतोद्यापन	५०७, ५३८
आ० शिवकोटि—	रत्नमाला	८३		पांडवपुराण	१५०
शिवजीलाल—	अभिधानसार	२७२		पुष्पांजलिब्रतपूजा	५०८
	पंचकल्याणकपूजा	४८६		श्रेणिकचरित्र	२०३
	रत्नत्रयगुणकथा	२३७		सज्जनचित्तवत्सलभ	३३७
	पोडसाकारणभावनावृत्ति	८८		सार्द्धद्वयदीपपूजा	
शिववर्मा—	कातन्त्रव्याकरण	२५६		(अढाईद्वीपपूजा)	४५५
शिवादित्य—	सप्तपदार्थी	१४०		मुभाषितार्णव	३४१
शुभचन्द्राचार्य—	ज्ञानार्णव	१०६		सिद्धचक्रपूजा	५५३
शुभचन्द्र—II	अष्टाह्निकाकथा	२१५	शोभनमुनि—	जिनस्तुति	३६१
	करकण्डुचरित्र	१६१	श्रीचन्द्रमुनि—	पुराणसार	१५१
	कर्मदहनपूजा	४६५, ५३७	श्रीधर—	भविष्यदत्तचरित्र	१८४
		६४५		शुभमालिका	५७४
	कार्तिकेयानुप्रेक्षाटीका	१०४		श्रुतावतार	३०१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
नागराज—	भावशतक	३३४		व्रतकथाकोष	२४१
श्रीनिधिसमुद्र—				षट्पाहुडटीका	११६
श्रीपति—	जातककर्मपद्धति	२८१		श्रुतस्कंधपूजा	५५७
	ज्योतिषयटलमाला	६७२		षोडशकारणपूजा	५१०
श्रीभूषण—	अनन्तव्रतपूजा	४५६, ५१५		सरस्वतीस्तोत्र	४२०
	चारित्र्यशुद्धिविधान	४७४		सिद्धचक्रपूजा	५५३
	पाण्डवपुराण	१५०		सुगन्धदशमीकथा	५१४
	भक्तामरउद्यापनपूजा	५२३, ५४०	सकलकीर्त्ति—	अष्टांगसम्यग्दर्शन	२१५
	हरीवंशपुराण	१५७		ऋषभनाथचरित्र	१६०
श्रुतकीर्त्ति—	पुष्पांजलीव्रतकथा	२३४		कर्मविपाकटीका	५
श्रुतसागर—	अनंतव्रतकथा	२१४		तत्त्वार्थसारदीपक	२३
	अशोकरोहिणीकथा	२१६		द्वादशानुप्रेक्षा	१०६
	आकाशपंचमीव्रतकथा	२१६		धर्म्यकुमारचरित्र	१७२
	चन्दनषष्ठिव्रतकथा	२२४		परमात्मराजस्तोत्र	४०३
		५१४, ५१७		पुराणसारसंग्रह	१५१
	जिनसहस्रनामटीकां	३६३		प्रश्नोत्तरोपासकाचार	७१
	ज्ञानार्णवगद्यटीका	१०७			६१
	तत्त्वार्थसूत्रटीका	२८		पार्व्वनाथचरित्र	१७६
	दशलक्षणव्रतकथा	२२७		मल्लिनाथपुराण	१५२
	पत्यविधानव्रतोपाख्यान			मूलाचारप्रदीप	७६
	कथा	२३३		यशोधरचरित्र	१२८
	मुक्तावलिव्रतकथा	२३६		वर्द्धमानपुराण	१५३
	मेघमालाव्रतकथा	५१४		व्रतकथाकोश	२४२
	यशस्तिलकचम्यूटीका	१८७		शांतिनाथचरित्र	१६८
	यशोधरचरित्र	१६२		श्रीपालचरित्र	२०१
	रत्नत्रयविधानकथा	२३७		सद्भाषितावलि	३३८, ३४२
	रविव्रतकथा	२३७		सिद्धान्तसारदीपक	४६
	विष्णुकुमारमुनिकथा	२४०		सुदर्शनचरित्र	२०८

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
मुनिसकलकीर्ति —	नंदीश्वरपूजा	७६१		नमस्कारसंस्कृतपविधि	
सकलचन्द्र—	चैत्यवंदना	६६८		सहित	३४६
	दर्शनस्तोत्र	५७४	सिद्धनागार्जुन—	वक्षपुट	२६७
सकलभूषण—	उपदेशरत्नमाला	५०		जिनसहस्रनामस्तोत्र	३६२
	गोम्मटसारटीका	१०	सिद्धसेनदिवाकर—	वर्द्धमानद्वात्रिंशिका	४१५
सदानंदगणि—	सिद्धान्तचन्द्रिकावृत्ति	२६६	सुखदेव—	सन्मतितर्क	१४०
आचार्यसभंतभद्र—	आप्तमीमांसा	६४७	वर्णासुखसागर—	आयुर्वेदमहोदधि	२६७
	जिनशतकालंकार	३६१	सुधासागर—	मुक्तावलीपूजा	५२७
	देवागमस्तोत्र	३६४		पंचकल्याणकपूजा	५००,
	४२५, ५७५, ७२०			५१६, ५३७	
	युक्त्यनुशासन	१३० १३६	सुन्दरविजयगणि—	परमसप्तस्थानकपूजा	५१६
		६४७	सुमतिकीर्ति—	सौभाग्यपंचमीकथा	२५५
	रत्नकरण्डश्रावकाचार		सुमतिब्रह्म—	कर्मप्रकृतिटीका	३
	८१, ६६१, ७६५		सुमतिविजयगणि—	चारित्र्यशुद्धिविधान	४७५
	बृहद्स्वयंभूस्तोत्र	५७२, ६२८	सुमतिसागर—	रघुवंशटीका	१६४
	समंतभद्रस्तुति	५७८		त्रैलोक्यसारपूजा	४८५
	सहस्रनामलघु	४२०		दशलक्षणव्रतपूजा	४८६,
	स्वयंभूस्तोत्र	४२५, ४३३,		५४०	
	५७४, ५६५, ६३३,			षोडशकारणपूजा	५१७
	७२०			५५७	
समयसुन्दरगणि—	रघुवंशटीका	१६४	सुरेन्द्रकीर्ति—	अनन्तजिनपूजा	४५६
	वृत्तरत्नाकरछंदटीका	३१४		अष्टाह्निकापूजाकथा	४६०
	शंभुप्रद्युम्नप्रबंध	१६७		छंदकोयकवित्त	३५५
समयसुन्दरोपाध्याय—	कल्पसूत्रटीका	७		ज्ञानपंचविंशतिका	
सहस्रकीर्ति—	त्रैलोक्यसारटीका	३२३		व्रतोद्यापन	४८१
कविसारस्वत—	शिलोच्छकोश	२७०		(श्रुतस्कंधपूजा)	५४७
सिंहतिलक—	वर्द्धमानविद्याकल्प	३५१		ज्येष्ठजिनवरपूजा	५१६
सिंहनन्दि—	धर्मोपदेशपीयूषश्रावका			पंचकल्याणकपूजा	४६६
	चार	६४		पंचमासचतुर्दशीपूजा	५०४
					५४०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	नेमिनाथपूजा	४६६		छंदोशतक	३०६
	सुखसपत्तिव्रतोद्यापन	५५५		पंचमीव्रतोद्यापन	५०४
सुरेश्वराचार्य—	पंचिकरणवातिक	२६१		भक्तामरस्तोत्रटीका	४०६
सुयशकीर्ति—	पंचकल्याणकपूजा	५००		योगचिंतामणि	३०१
सुन्दरकवि—	वृत्तरत्नाकरटीका	३१४		लघुनाममाला	२७६
द्वैवह्न पं० सूर्य—	रामकृष्णकाव्य	१६४		लब्धिविधानपूजा	५३३
आ० सोमकीर्ति—	ब्रह्मचरित्र	१८१	महाकविहरिचन्द्र—	श्रुतबोधवृत्ति	३१५
	ऋतव्यसनकथा	२५०		धर्मशर्माभ्युदय	१७४
	समवशरणपूजा	५४६	हरिभद्रसूरि—	क्षेत्रसमासटीका	५४
सोमदत्त—	बर्डीसिद्धपूजा			योगबिंदुप्रकरण	११६
	(कर्मदहनपूजा)	६३६		षट्दर्शनसमुच्चय	१३६
सोमदेव—	अध्यात्मतरंगिणी	६६	हरिरामदास—	पिंगलछंदशास्त्र	३११
	नीतिवाक्यामृत	३३०	हरिषेण—	नन्दीश्वरविधानकथा	२२६
	यशस्तिलकचम्पू	१८७		कथाकोश	२१६
सोमदेव—	सूतक वर्णन		हेमचन्द्राचार्य—	अभिधानचिन्तामणि	
सोमप्रभाचार्य—	मुक्तावलिव्रतकथा	२३६		नाममाला	२७१
	सिन्दूरप्रकरण	३४०		अनेकार्थसंग्रह	२७१
	सूक्तिमुक्तावलि	३४२, ६३५		अन्ययोगव्यवच्छेदकद्वारि-	
सोमसेन—	त्रिवर्णाचार	५८		शिक्षा	५७३
	दशनक्षणजयमाल	७६५		छंदानुशासनवृत्ति	३०६
	पद्मपुराण	१४८		द्वाश्रयकाव्य	१७१
	मेरूपूजा	७६५		धातुपाठ	२६०
	विवाहपद्धति	५३६		नेमिनाथचरित्र	१७७
सौभाग्यगणि—	प्राकृतव्युत्पत्तिदीपिका	२६२		योगशास्त्र	११६
हयग्रीव—	प्रश्नसार	२८८		लिंगानुशासन	२७७
हर्ष—	नैपथ्यचरित्र	१७७		वीतरागस्तोत्र	१३६, ४१६
हर्षकल्याण—	पंचमीव्रतोद्यापन	५३६		वीरद्वारिशक्तिका	१३८
हर्षकीर्ति—	अनेकार्थशतक	२७१		शब्दानुशासन	२६४

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	शब्दानुशासनवृत्ति	२६४	आणंद—	चतुर्विंशतित्तीयंकरस्तवन	
	हेमीव्याकरण	२७०			४३७
	हेमीव्याकरणवृत्ति	२७०		तमासूकीजयमाल	४३६
				पद	७७७
			आनन्द—	कोकसार	३५३
			आनन्दघन—	पद	७१०
			आनन्दसूरि—	चौबीसजिनमातापिता	
				स्तवन	६१६
				नेमिराजुलबारहमामा	६१८
				साधुवंदना	६१७
			साह आलू—	द्वादशानुप्रेक्षा	१०६, ६६१
			आशानंद—	पूजाष्टक	५१२
			आसकरण—	समकितढाल	६२
			इन्द्रजीत—	रसिकप्रिया	६७६, ७४३
			इन्द्रजीत—	मुनिमुप्रतपुराण	१५३
			उत्तमचंद्र—	पद	४४५
			उदयभानु—	भोजरासो	७६७
			उदयराम—	पद	७८६, ७६८
			उदयलाल—	चारुदत्तचरित्र	१६८
				त्रिलोकस्वरूपव्याख्या	३२२
				नागकुमारचरित्र	१७६
			ऋषभदास—	मूलाचारभाषार	५१६, ५३०
				तत्रयपूजा	७६
			ऋषभहरी—	पद	५८५
			कनककीर्ति—	आदिनाथकीविनती	५६१
					७२५
				जिनस्तवन	७७६
				तत्त्वार्थसूत्रटीका	३०, ७२६
				पार्वनाथकीआरती	५६१

हिन्दी भाषा

अकूमज—	शीलबत्तीसी	७५०
अखयराज—	चौदहशुणस्थानचर्चा	१६
	भक्तामरभाषा	७५५
अक्षयराम—	पद	५८५, ५८६
अगरदास—	कवित्त	७४८, ७६८
	कुंडलिया	६६०
अचलकीर्ति—	मनोरथमाला	७६४
	विषापहारस्तोत्रभाषा	४१६
		६५०, ६७०, ७७४, ६६४
	मंत्रनवकाररास	६४७
अजयराज—	चारमित्रोंकीकथा	२२५
	पद	५८१, ६६७
		७२४, ५८०, ५८१
	विनती	७७६, ७८३
	वंसतपूजा	७८३
ब्रह्मअजित—	हंसतिलकरास	७०७
अनन्तकीर्ति—	पद	५८५
अशजद—	शकुनावली	२६२
अभयचन्द्र—	पूजाष्टक	५१२
अभयचन्द्रसूरि—	विक्रमचौबोलीचौपई	२४०
मुनिअभयदेव—	थंसेणपार्वनाथस्तवन	६१६
अमृतचन्द्र—	पद	५८६
अवधू—	बारहअनुप्रेक्षा	७२२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	भक्तिपाठ	६५१		रात्रिभोजनकथा	२३८
	पद	६६४, ७०२	कुवलयचन्द—	नेमिनाथपूजा	७६३
		७२४, ७७४	कुशललाभगणि—	ढोलामारुवणीचौपई	२२५
	विनती	६२१	कुशल विजय—	विनती	७८२
	स्तुति	६०१, ६५०	केशरगुलाब—	पद	४४५
कनकसोम—	आद्रकुमारधमाल	६१७	केशरीसिंह—	सम्मेदशिखरविलास	६२
	आषाढभूतिचौढालिया	६१७		वर्द्धमानपुराण	१५४
	मेघकुमारचौढालिया	६१७			१६६
कन्हैयालाल—	कवित्त	७८०	केशव—	कलियुगकीकथा	६२२
कपांत—	मोरपिच्छधारीकृष्ण			सदयवच्छसावर्णिगा	
	के कवित्त	६७३		की चौपई	२५४
ब्र. कपूरचन्द—	पद	४४५	केशवदास—।	वैद्यमनोत्सव	६४६
		५७०, ६२४	केशवदास—॥	कवित्त	६४३, ७७०
कबीर—	दोहा	७६०, ७८१		कविप्रिया	१६१
	पद	७७७, ७६३		नखसिखवर्णन	७७२
	साली	७२३		रसिकप्रिया	७७१, ७६६
कमलकलश—	वंभणवाडीस्तवन	६१६	केशवसेन—	रामचन्द्रिका	१६४
कमलकीर्त्ति—	आदिजिनवरस्तुति		कौरपाल—	पंचमोन्नतोद्यापन	६३८
	(गुजराती)	४३६	कृपाराम—	चौरासीबोल	७०१
कर्मचन्द—	पद	५८७		ज्योतिषसारभाषा	२८१
कल्याणकीर्त्ति—	चारुदत्तचरित्र	१६७	कृष्णदास—		५६८
किशन—	छहठाला	६७४,	कृष्णदास—	रत्नावलीव्रतविधान	५३१
किशनगुलाब—	पद	५८४, ६१४, ६६६	कृष्णराय—	सतसईटीका	७२७
किशनदास—	पद	६४६	खजमल—	प्रद्युम्नरास	७२२
			खड्गसेन—	सतियों की सज्भाष	४५१
किशनलाल—	कृष्णबालविलास	४३७		त्रिलोकसारदर्पणकथा	३२१
किशनसिंह—	क्रियाकोशभाषा	५३	खानचन्द—		६८६, ६६०,
	पद	५६०, ७०४		परमात्मप्रकाशबालाव	
				बोधटीका	१११

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	
खुशालचन्द —	अनन्तव्रतकथा	२१४	खेतसिंह—	पद	५८२, ६२४	
	आकाशपंचमीकथा	२४५		६६४, ६६८, ७०३,		
	आदित्यव्रतकथा			७८३, ७९८		
	(रविवारकथा)	७७५		नेमोश्वर का बारहमासा		
	आरतोसिद्धांकी	७७७			७६२	
	उत्तरपुराणभाषा	१४५		नेमोश्वरराजुलकोलहुरि		
	चन्दनषष्ठीव्रतकथा	२२४			७७९	
		२४४, २४६		नेमिजिनंदव्याहली		
	जिनपूजापुरन्दकथा	२४४		चौबीसजिनस्तुति		
	ज्येष्ठजिनव्रतकथा	२४४		पद	५८०, ५८३,	
	धन्यकुमारचरित्र	१७३, ७२६			५९१, ६४९	
	दशलक्षणाकथा	२४४, ७३१		गङ्ग—	पद्यसंग्रह	७१०
	पद्मपुराणभाषा	१४९		गंगादास —	रसकौतुक	
	पल्पविधानकथा	२३३			राजसभारंजन	५७६
	पुण्यांजलिव्रतकथा	२३४		गंगादास—	आदिपुराणविनती	७०१
		२४४, ७३१			आदित्यवारकथा	७९५
	पूजाएवंकथामग्रह	५१९			भूलना	७५७
	मुकुटसप्तमीकथा	२४४		गंगाराम—	त्रिभुवनकीवीनती	७७२
		७३१			पद	६१५
	मुक्तावली व्रतकथा	२४५		गारवदास—	भक्तामरस्तोत्रभाषा	४१०
मेघमालाव्रतकथा	२३६	गिरधर—	यशोधरचरित्र	१९१		
	२४४		कवित्त	७७२, ७८६		
यशोधरचरित्र	१९१, ७११	गुणकीर्त्ति —	चतुर्विंशतिछप्पय	६०१		
लब्धिविधानकथा	२४४		चौबीसगणधरस्तवन	६-६		
शांतिनाथपुराण	१५५	गुणचन्द्र—	सीलरास	६०२		
षोडशकारणव्रतकथा	२४४		झादीश्वरकेदशभव	७६२		
सप्तपरमस्थानव्रतकथा	२४४		पद	५८१, ५८५, ५८७		
हरिवंशपुराण	१५८	गुणनंदि—		१८८		
			रत्नावलिकथा	२४६		

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
गुणपूरण—	पद	७६८	चम्पालाल—	चर्चासागर	१६
गुणप्रभसूरी—	नवकारसज्जाय	६१८	चतर—	चन्दनमलयागिरिकथा	२२३
गुणसागर—	द्वीपायनढाल	४४०	चतुर्भुजदास—	पद	७७८
	शांतिनाथस्तवन	७०२	चरणदास—	ज्ञानस्वरोदय	२३५
गुमान्नीराम—	पद	६६६	चिमना—	आरतीपंचपरमेष्ठी	७६१
गुलाबचन्द—	कवका	६४३	चैनबिजय—	पद	५८८, ७६८
गुलाबराय—	बडाकक्का	६८५	चैनसुखलुहाडिया—	अकृत्रिमजिनचैत्यालयपूजा	४५२
ब्रह्म गुलाल—	कक्काबत्तीसी	६७६		जिनसहस्रनामपूजा	४८०
	कवित्त	६७०, ६८२			५५२
	गुलालपच्चीसी	७१४		पद	४४६, ७६८
	त्रैपनक्रिया	७४०	छत्रपतिजैसवाल—	श्रीपतिस्तोत्र	४१८
	द्वितीयसमोसरण	५६६		द्वादशानुप्रेक्षा	१०६
गोपीकृष्ण—	नेमिराजुलब्याहलो	२३२	छाजू—	मनमोदनपंचशतीभाषा	३३४
गोरखनाथ—	गोरखपदावली	७६७	छातुर—	पार्वजिनगीत	४८
गोविन्द—	बारहमासा	६६६	छोटीरठोलिया—	होलीकीकथा	२५५,
घनश्याम—	पद	६२३			६८५
घासी—	मित्रविलास	३३४	छोहल—	पंचेन्द्रियबेलि	६३८
चन्द—	चतुर्विंशतितीर्थकरस्तुति	६८५		पंथोगीत	७६५
		७२०		पद	७२३
	पद	५८७, ७६३		वैराग्यगीत (उदरगीत)	६३७
	गुणस्थानचर्चा	८	छोटीलालजैसवाल—	तत्त्वार्थसारभाषा	३०
चन्द्रकीर्ति—	समस्तव्रतकीजयमाल	५६४	छोटेलालभित्तल—	पंचकव्याणकपूजा	५००
चन्द्रभान—	पद	५६१	जगजीवन—	एकीभावस्तोत्रभाषा	६०५
चन्द्रसागर—	द्वादशव्रतकथासंग्रह	२२८	जगतरामगोदीका—	पद	४४५, ५८१, ५८२
चम्पाबाई—	चम्पाशतक	४३७			५८४, ६१५, ६६७,
चम्पाराम—	धर्मप्रश्नोत्तरधावका				६६६, ७२४, ७५७,
	चार	६१			७८३, ७६८, ७६६
	भद्रवाहचरित्र	१८३			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
जगतराय—	जिनवाणीस्तवन	३६०		द्रव्यसंग्रहभाषा	३६
	पद्यनादि चौबीसीभाषा	६७		परोक्षामुखभाषा	१३६
जगनकवि—	सम्यक्त्वकौमुदीकथा	२५२		भक्तामरस्तोत्रभाषा	४१०
जगराम—	रामव्रत्तीसी	४१४		समयसारभाषा	१२४
	पद	४०५, ६६८ ७८५		सर्वार्थसिद्धिभाषा	४६
जगरूप—	प्रतिमा-त्यापककू'			सामायिकपाठभाषा	६६
	उपदेश	७०	जयलाल—	कुशीलखंडन	५२
	पार्श्वनाथस्तवन	६८१	पांडे जयवंत—	तत्त्वार्थसूत्रटीका	२६
	श्वेतांबरमतके ८४ बोल	७७६	जयसागर—	चतुर्विंशतिजिनस्तवन	
जनमल	पद	५८५		(चौबीसीस्तवन)	
जनमोहन—	स्नेहलीला	७७१		६१६, ७०६	
जनराज—	षट् ऋतुवर्णनबारहमासा	६५६	जयसोमगणि—	जिनकुशलसूरिचौपई	६१८
जयकिशन—	कवित्त	६४३	जवाहरलाल—	बारहभावना	६१७
जयकीर्त्ति—	पद	५८५ ५८८	जसकीर्त्ति—	सम्मोद शिखरपूजा	५५०
	बंकचूलरास	३६३	जसराज—	ज्येष्ठजिनवरकथा	२२५
	महिम्नस्तवन	४२५	जसवंतसिहराठौड—	बारहमासा	७८०
	रविब्रतकथा	६६६	जसुराम—	भाषाभूषण	३१२
जयचन्द्रछाबडा—	अध्यात्मपत्र	६६	जादूराम—	राजनीतिशास्त्रभाषा	३३५
	अष्टपाहुडभाषा	६६	जितचंद्रसूरि—	पद	४४५
	आप्तमीमासाभाषा	१३०		आदीश्वरस्तवन	७००
	कार्तिकेयानुप्रेक्षाभाषा	१०४		पार्श्वजिनस्तवन	७००
	चंद्रप्रभचरित्रभाषा	१६६		बारहभावना	७००
	ज्ञानार्णवभाषा	१०८		महावीरस्तवन	७००
	तत्त्वार्थसूत्रभाषा	२६	जितसागरगणि—	विनतीपाठस्तुति	७००
	देवपूजाभाषा	४६०	जितसिंहसूरि—	नेमिस्तवन	४००
	देवागमस्तोत्रभाषा	३६५		चतुर्विंशतिजिनराज	
				स्तुति	७००

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
जिनचंद्रसूरि—	बासतीर्थकरस्तुति	७००	जिनरंगसूरि—	धर्मपत्रविशतिका	६१
	शालिभद्रचौपई	७००		निजामणि	६५
	कयवन्नाचौपई	२२१		मिच्छादुक्कड	६८६
	क्षमावतीसी	६४		रैदन्नतकथा	२४६
जिनदत्तसूरि—	गुरुवारतंत्रएवंसप्तस्मरणा	६१६	समकितविणवोधर्म	७०१	
	सर्वारिष्टनिवारणस्तोत्र	६१६	सुकुमालस्वामीरास	३६६	
पं० जिनदास—	चेतनगीत	७६२	सुभौमचक्रवर्तिरास	३६७	
	धर्मतरंगीत	७६२	कुशलगुरुस्तवन	७७६	
	पद	५८१, ५८८, ६६८	धन्नाशालिभद्ररास	३६२	
		७६४, ७७२, ७७४	नवकारमहिमास्तवन	६१८	
	आराधनासार	७५७	जिनसिंहसूरि—	शालिभद्रधन्नाचौपई	२५३
	मुनीश्वरोकीजयमाल	५७१	जिनहर्ष—	धधरनिमाणी	३८७, ७३६
		५७६, ६२२, ६५८		उपदेशछत्तीसी	३२४
		६८३, ७५०, ७६१		पद	५६०
	राजुलसज्जाय	७५०	नेमिराजुलगीत	६१८	
	विनती	७७५	पार्वनाथकीनिशानी	४४६	
	विवेकजकडी	७२२, ७५०	श्रीपालरास	३६५	
	सरस्वतीजयमाल	६५८	बारहसीचौतीसव्रतकथा	७६५	
		७७८,	जिनेश्वरदास—	नन्दीश्वरविधान	४६४
			जीवणदास—	पद	४४६
पाण्डेजिनदास—	योगीरासा	१०५, ६०१	जीवणराम—	पद	५८०
		६०३, ६२२, ६३६	जीवराम—	पद	५६०, ७६१
		६५२, ७०३, ७१२	जैतराम—	जीवजीतसंहार	२२५
		७२३	जैतश्री—	रागमालाके दोहे	७८०
	मालीरासो	५७६	जैतसिंह—	दशवैकालिकगीत	७००
			जोधराजगोदीका—	चोभाराधनाउद्योतकथा	२२५
जिनदासगोधा—	सुगुह्यशतक	३४० ४४७		गोडीपार्वनाथस्तवन	६१७
ब्र० जिनदास—	प्रठावीसमूलगुणरास	७०७	जिनस्तुति	७७५	
	अनन्तव्रतरास—	५६०	धर्मसरोवर	६३	
	चौरासीन्यात्मिमाला	७६५			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	नेमिजिनस्तवन	६१८		सोलहकारणकथा	७४०
	प्रवचनसार	११४	भांभूराम—	पद	४४५
	प्रीतिकरचरित्र	१८३	टीकमचंद—	चतुर्दशीकथा	७५४, ७७३
	भावदीपक	७७		चंद्रहंसकथा	६३६
	वारिषेणमुनिकथा	२४०		श्रीपालजीकीस्तुति	६३६
	सम्पत्त्वकौमुदीभाषा	२५२		स्तुति	६३६
		६८६	टीलाराम—	पद	७८२
	समन्तभद्रकथा	७५८	टेकचंद—	कर्मदहनपूजा	४६५, ५१८
	पद	४४५, ६६४, ६६६			७१२
		७८६, ७६८		तीनलोकपूजा	४८३
जौहरीलालबिलाला—	विद्यमानबोसतीर्थकर			नंदीश्वरव्रतविधान	४६४
	पूजा	५३५			५१८
	आलोचनापाठ	५६१		पंचकल्याणकपूजा	५०१
ज्ञानचंद—	लब्धिविधानपूजा	५३४		पंचपरमेष्ठीपूजा	५०३, ५१८
ज्ञानभूषण—	अक्षयनिधिपूजा	४५४		पंचमेरूपूजा	५०५
	आदीश्वरफाग	३६०		पुण्याश्रवकथाकोश	२३४
	जलगालणरास	३६२		रत्नत्रयविधानपूजा	५३१
	प्लेमहरास	७६२		सुदृष्टिलरंगिणीभाषा	६७
ब्र० ज्ञानसागर—	अनन्तचतुर्दशीकथा	२१४		सोनेहकारणमंडलविधान	
	अष्टाल्लिकाकथा	७४०	टोडर—		५५६
	आदिनाथकल्याणकथा	७०७		पद	५८२, ६१४, ६२३
	कथासंग्रह	२२०			७६७, ७७६, ७७७
	दशलक्षणव्रतकथा	७६४	पं० टोडरमल—	आत्मानुशासनभाषा	१०२
	नेमीश्वरराजुलविवाद	६१३		क्षणसारभाषा	७
	माणिक्यमालाग्रंथ			गोम्मटसारकर्मकाण्डभाषा	४३
	प्रश्नोत्तरी	६०४		गोम्मटसारजीकाण्डभाषा	१०
	रत्नत्रयकथा	७४०		गोम्मटसारपीठिका	११
	लघुरविव्रतकथा	२४४		गोम्मटसारसंरुष्टि	१२
				त्रिलोकसारभाषा	३२१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पुरुषार्थसिद्धिपायभाषा	६६	थानजीअजमेरा—	बीसतीर्थकरपूजा	५२३
	मोक्षमार्गप्रकाशक	८०	थिरूमल—	हृवणभारती	७७८
	लब्धिसारभाषा	४३	दत्तलाल—	बारहसडी	७४५
	लब्धिसारक्षपणासार	४३	ब्रह्मदयाल—	पद	५८७
	लब्धिसारसंहृष्टि	४३	दयालराम—	जकडी	७४६
ठक्कुरसी—	कृपणछंद	६३८	दरिगह—	जकडी	६६१, ७५५
	नेमीश्वरकीबेलि (नेमीश्वरकवित्त)	७२२	दलजी—	पद	७४६
	पंचेन्द्रियबेलि	७०३	दलाराम—	बारहभावना	५७१
		७२२, ७६५	दशरथनिगोत्या—	पद	६२०
कबिठाकुर—	रामोकारपञ्चीसी	४३६	दास—	धर्मपरीक्षाभाषा	३५५
	सज्जनप्रकाश दोहा	२८४	मुनिदीप—	पद	७४६
डालूराम—	मढाईद्वीपपूजा	४५५		विद्यमानबीसतीर्थकर पूजा	४१५
	चतुर्दशीकथा	७४२	दीपचन्द—	अभुभवप्रकाश	४८
	द्वन्द्वशांगपूजा	४६१		आत्मावलोकन	१००
	पंचपरमेष्ठीपुणवर्णन	६६		चिद्विलास	१०५
	पंचपरमेष्ठीपूजा	५०३		भारती	७७७
	पंचमेरुपूजा	५०५		ज्ञानदर्पण	१०५
डूंगरकवि—	होलिकाचौपई	२५५		परमात्मपुराण	११०
डूंगाबैद—	धेरिणकचौपई	२४८		पद	५८३
तिपरदास—	श्री स्वमणिक्कणजी को रासो	७७०	दुलीचंद—	भाराधनासारवचनिका	५०
तिलोकचंद—	सामायिकपाठभाषा	६६		उपदेशरत्नमाला	५१
तुलसीदास—	कवित्तबंधरामचरित्र	६६७		जैनसदाचारमार्तण्ड	
तुलसीदास—	प्रद्वनोत्तररत्नमाला	३३२		नामकपत्रकाप्रत्युत्तर	२०
तेजराम—	तीर्थमालास्तवन	६१७		जैनागारप्रक्रियाभाषा	५७
		६७३		द्रव्यसंग्रहभाषा	३७
त्रिभुवनचंद—	अनित्यपंचमसिका	७५५		निर्मात्यदोषवर्णन	६५
	पद	७१५		पद	६६३

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	प्रतिष्ठापाठभाषा	५२२		संकटचीथव्रतकथा	७६४
	बाईसअभ्यवर्णन	७५	दौलतराम—	छहडाला	५७, ७४६
	सुभाषितावली	३४४			७०७
देवचन्द—	मुष्टिज्ञान	३००		जिनस्तवन	७०७
देवचन्द—	अष्टप्रकारीपूजा	७६०		पद	४४६, ६५४
	नवपदपूजा	७६०		बारहभावना	५६१, ६७५
देवसिंह—	पद	६६४	दौलतरामपाटनी—	व्रतविधानरासो	७७६
देवसेन—	पद	५८६	दौलतराम—	आदिपुराण	१४४
देवादिल—	उपदेशसज्जाप	३८१		चौबीसदण्डकभाषा	५६,
देवापाण्डे—	जिनवरजीकीविनती	६८५			४२६, ४४८
देवाप्रह—	कलियुगकोविनती	६१५,			५११, ६७२
		६८५		त्रेपनक्रियाकोश	५६
	चौबीसतीर्थकरस्तुति	४३८		पद्मपुराणभाषा	१४६
	पद	४४६, ७८३, ७८५		परमात्मप्रकाशभाषा	१११
	विनती	४५१, ६६५, ७८०		पुण्याश्रवकथाकोश	२३३
	नवकारबडीवीनती	६५१		सिद्धपूजाष्टक	७७७
	मुनिमुक्तवीनती	४५०		हरिवंशपुराण	१५७
	सम्पेदशिखरविलास	६३	दौलतआसेरी—	ऋषिमंडलपूजा	४६४
	सासबहूकाभगडा	६४८	द्यानतराय—	अष्टालिकापूजा	७०५, ४६०
देवीचन्द—	हितोपदेशभाषा	७६४		अक्षरबावनी	६७६
देवीदास—	कवित्त	६७५		आगमविलास	४६
	जीवनेलडी	७५७		आरतीसंग्रह	६२१, ६२२
	पद	६४६			७७७
	राजनीतिकवित्त	३३६, ७५२		उपदेशशतक	३२५, ७१७
देवीसिंहछावडा—	उपदेशरत्नमालाभाषा	५२		चर्चाशतक	१४, ६६४,
देवेन्द्रकीर्त्ति—	जकडी	६२१			७६४
देवेन्द्रभूषण—	पद	५८७		चौबीसतीर्थकरपूजा	७०४
	रविवारकथा	७०७		छहडाला	६५२, ६७२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
		६७४, ७४७		संबोधप्रक्षरबावनी	११६
	गुरुअष्टक	७७७		समाधिमरणभाषा	१२६
	जकडी	६४३		सिद्धक्षेत्रपूजाष्टक	७०५
	तत्त्वसारभाषा	७४७		स्वर्यभूस्तोत्रभाषा	४२६
	दशबोलपञ्चीसी	४४८		भाद्रपदपूजा	५२४
	दशलक्षणपूजा	५१६, ७०५	द्वारिकादास—	कलियुगकीकथा	७७३
	दानबावनी	६०५, ६८६	धनराज—	तीनर्मियांकीजकडी	६२३
	द्यानतविलास	३२८		पद	७६८
	द्रव्यसंग्रहभाषा	७१२		शिखरविलासभाषा	७६३
	धर्मविलास	३२८	धर्मचन्द—	अनन्तकेछप्पय	७५७
	धर्मपञ्चीसी	७१०, ७४७	धर्मदास—	मोरपिच्छधारीकृष्ण के कवित्त	६७३
	पंचमेरुपूजा	५०५, ७०५		पद	५८८, ७६८
	पार्श्वनाथस्तोत्रभाषा	५६६, ४०६	धर्मपाल—	अंजनाकोरास	५६३
	पदसंग्रह	४४५, ५८३	धर्मभूषण—	दानशीलतपभावना	६०
		५८४, ५८५, ५८६	धर्मसी—	भाषाभूषण	६६८
		५८८, ५८९, ५९०	धीरजसिहराठौड—	अनेकार्थनाममाला	७०६
		६२२, ६२४, ६४३	नन्ददास—	अनेकार्थमंजरी	२७१, ७६६
		६४६, ६५४, ७०४		पद	५८७, ७०४
		७४६, ७८७			७७०
	भावनास्तोत्र	६१४		नाममंजरी	६६७, ७६६
	रत्नत्रयपूजा	५२६, ७०५		मानमंजरी	२७६, ६६१
	वाणीअष्टभवजयमाल	७७७		विरहमंजरी	६५७, ७५६
	षोडशकारणपूजा	५११		श्यामबत्तीसी	६८३
		५१६, ५५६, ७०५		योगसारभाषा	११६
	संघपञ्चीसी	३७५	नन्दराम—	कक्काबत्तीसी	७३२
	संबोधपंचासिका	१२८		प्रश्नावलिकवित्त	७८२
		६०५, ६४८, ६८५, ६६३	वैद्यनन्दलाल—	रसालकुंवरकीचौपई	५७७
		७१३, ७१६, ७२५	नखरूकवि—		

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	
नथमलबिलाला—	अष्टाह्निकाकथा	२१५	नाथूरामदोसी—	६५३, ६५४, ६५५ ७८२		
	जीवंधरचरित्र	१७०			७८३, ७८८	
	दर्शनसारभाषा	१३३		बारहभावना	११५	
	परमात्मप्रकाशभाषा	१११			४२६, ५७१	
	महीपालचरित्र	१८६		भद्रबाहुचरित्र	१८३	
	भक्तवामरस्तोत्रकथा			शिक्षाचतुष्क	६६८	
	भाषा २३४, ७२०			समाधितंत्रभाषा	१२६	
	रत्नकरण्डश्रावकाचार			चेतावनीगीत	७५७	
	भाषा ८३			पद	६२२	
	रत्नत्रयजयमालभाषा	५२८		पार्श्वनाथस्तवन	६२२	
नयबिमल—	षोडशकारणभावना		नाथूराम—	अकलंकचरित्रगीत	१६०	
	जयमाल ८८		गीत	६२२		
	सिद्धान्तसारभाषा	४७	जम्बूस्वामीचरित्र	१६६		
	सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	४२१	जातकसार	६८३		
	पद	५८१	जिनसहस्रनामस्तोत्र	३६३		
	नयनसुख—।	वैद्यमनोत्सव	३०४, ६०३, ६६५, ७६८, ७६४	रक्षाबंधनकथा	२३७	
		पद	४४५, ५८३	स्वानुभवदर्पण	१२८	
	नयनसुख—।।	भजनसंग्रह	४५०	नाथूलालदोसी—	सुकुमालचरित्र	२०७
		पद	५८८	नानिगराम—	दोहासंग्रह	६२३
	नरपाल—	ढालमंगलकी	६५५	निर्मल—	पद	५८१
रत्नावलीव्रतों की तिथियों के नाम		६५५	निहालचंद्रअग्रवाल—	नयचक्रभावप्रकाशिनी	टोका १३४	
नवलराम—	गुरुओंकीवीनती	७०४	नेमीचन्द्र—	जकडी	६२२	
	जिनपञ्चीसी	६५१, ६७०		तीनलोकपूजा	४८३	
	६७५, ६६३, ७२५			चौबीसतीर्थकरोंकी	वंदना ७७५	
	पद	४४५, ५८२		पद	५८०, ६२२	
	५८६, ५६०, ६१५, ६४८			प्रीत्यंकरचौपई	७७५	

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	नेमीश्वरगीत	६२१		जीवंधरचरित्र	१७१
	लुहरि	६२२		तन्वकौस्तुभ	२०
	विनती	६६३		तत्त्वार्थसारभाषा	२३
नेमीचंद्रपाटनी—	चतुर्विंशतितीर्थकर			तत्त्वसारभाषा	२१
	पूजा	४७२		द्रव्यसंग्रहभाषा	३६
	तीनचौबीसीपूजा	४८२		धर्मप्रदीपभाषा	६१
नेमीचंद्रबख्शी—	सरस्वतीपूजा	५५१		नंदीश्वरभक्तिभाषा	४६४
नेमीदास—	निर्वाणमोदकनिर्णय	६५		नवतत्त्ववचनिका	३८
न्यामतसिंह—	पद	७६५		न्यायदीपिकाभाषा	१३५
	भविष्यदत्तदत्ततिलका—			पांडवपुराण	१५०
	सुन्दरीनाटक	३१७		प्रश्नोत्तरश्रावकाचार	
	पद	७६५		भाषा	७०
पद्मभगत—	कृष्णरूक्मिणीमंगल	२२१		भक्तामरस्तोत्रकथा	२३५
पद्मकुमार—	श्रातमशिक्षासञ्ज्ञाय	६१६		भक्तिपाठ	४४६
पद्मतिलक—	पद	५८३		भविष्यदत्तचरित्र	१८४
पद्मनंदि—	देवतास्तुति	३६४		भूपालचौबीसीभाषा	४१२
	पद	६४३		मरकतविलास	७८
	परमात्मराजस्तवन	४०२		योगसारभाषा	११६
पद्मराजगणि—	नवकारसञ्ज्ञाय	६१८		यशोधरचरित्र	१६२
पद्माकर—	कवित्त	७५६		रत्नकरण्डश्रावकाचार	८३
चौधरीपन्नालालसंधी—	आचारसारभाषा	४६		वसुनंदिश्रावकाचारभाषा	८५
	श्राधनासारभाषा	४६		विषापहारस्तोत्रभाषा	४१६
	उत्तरपुराणभाषा	१४६		षट्श्रावश्यकविधान	८७
	एकीभावस्तोत्रभाषा	३८३		श्रावकप्रतिक्रमणभाषा	८६
	कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	३८५		सद्भाषितावलीभाषा	३३८
	गौतमस्वामीचरित्र	१६३		समाधिमरणभाषा	१२७
	जम्बूस्वामीचरित्र	१६६		सरस्वतीपूजा	५५१
	जिनदत्तचरित्र	१७०		सिद्धिप्रियस्तोत्रभाषा	४२१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
पन्नालालदूनीवाले—	सुभाषितावलीभाषा	३४४	प्रभुदास—	परमात्मप्रकाशभाषा	७६५
	पंचकल्याणकपूजा	५०१	प्रसन्नचंद—	भ्रातृमशिक्षासंज्ञकाय	६१६
	विद्वज्जनबोधकभाषा	८६	फतेहचंद—	पद	५७६, ५८०, ५८१ ५८२, ५८३
	समवसरणपूजा	८००	बंशी—	न्हवणमंगल	७७७
पन्नालालवाकलीवाल—	बालपद्मपुराण	१५१	बंशीदास—	रोहिणीविधिकथा	७८१
परमानंद—	पद	६८४, ७७०	बंशीधर—	द्रव्यसंग्रहबालावबोधटीका	७६१
परिमल्ल—	श्रीपालचरित्र	२०१, ७७३	बखतराम—	पद	५८३, ५८६, ६६८ ७८३, ७८६
पर्वतधर्मार्थी—	द्रव्यसंग्रहभाषा	३६		मिथ्यात्वखंडन	७८
पारसदासनिगोत्या—	समाधितंत्रभाषा	१२६	बरूतावरलाल—	चतुर्विंशतितीर्थकरपूजा	४७३
	ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	३१७		ज्ञानसूर्योदयनाटकभाषा	३१७
पारसदास—	सारचौबीसी	४५२	बधीचन्द—	रामचन्द्रचरित्र	६६१
	पद	६५४	बनारसीदास—	अध्यात्मबत्तीसी	६६
पार्श्वदास—	बारहखडी	३३२		भ्रातृमध्यान	१००
पुण्यरत्न—	नेमिनाथफागु	७४८		कर्मप्रकृतिविधान	५ ३६०, ६७७, ७४६
पुण्यसागर—	साधुबंदना	४५२		कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	३८५, ४२६, ५६६ ५६६, ६०३, ६४३ ६४८, ६५०, ६६१ ६६२, ६६५, ६७० ७०३, ७०५
पुरुषोत्तमदास—	वोहे	६८७		कवित्त	७०६, ७७३
पून्थो—	पद	७८५		जिनसहस्रनामभाषा	६६० ७४६
	मेघकुमारगीत	६६१, ७२२ ७४६, ७५०, ७६४ ७७५		ज्ञानपञ्चीसी	६१४, ६२४ ६५०, ७४३, ७७५
	वीरजिरांदकीसंघावली	७७५			
पूरणदेव—	पद	६६३			
पेमराज—	वैदरभोविवाह	२४०			
पृथ्वीराजराठौड—	कृष्णरूक्मिणीबेलि	३६४ ६५६, ७००			
महाराजासवाईप्रतापसिंह—	अमृतसागर	२६६			
	चंद्रकुंबरकीवार्ता	२२३			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	ज्ञानबावनी	१०५, ७५०	बलदेव—	पद	७६८
	तेरहकाठिया	४२६, ७५०	बाबूलाल—	विष्णुकुमारमुनिपूजा	५३६
	नवरत्नकवित्त	७४३,	बालचंद—	पद	६२५
	नाममाला	२७६, ७०६	बिहारीदास—	भारती	७७७
	पद	५८२, ५८३		कवित्त	७७०
		५८५, ५८६, ५८६,		पद	५८७
		५६०, ६१५, ६२१		पद्यसंग्रह	७१०
		६२२, ६२३ ६६७		बंदनाजकडी	४४६, ७२७
	पार्श्वनाथस्तुति	७२३	बिहारीलाल—	सतसई	५७६, ६७५
	परमज्योतिस्तोत्रभाषा	४०२			६८८, ७२७, ७६८
		५६०	बुधजन—	इष्टछत्तीसी	६६१
	परमानंदस्तोत्रभाषा	५६२		छहढाला	५७
	बनारसीविलास	६४०		तत्त्वार्थबोध	२१
		६८६, ७०६		दर्शनपाठ	४३६
	मोहविवेकयुद्ध	७१४, ७६४		पञ्चास्तिकायभाषा	४१
	मोक्षपैठी	८०, ७१६		पद	४४५, ४४६, ५७१
		७४६			६४८, ६५३, ६५४
	शारदाष्टक	७७६			७८५, ७६८
	समयसारनाटक	१२३, ६०४		बंदनाजकडी	४४६
		६३६, ६४०, ६५७		बुधजनविलास	३३२
		६०, ६८३, ६८८		बुधजनसतसई	३३२, ३३३
		६८६, ६६४ ६६८		योगसारभाषा	११७
		७०२, ७१६, ७२०		षटपाठ	४१६
		७२१, ७३१, ७५६		संबोधपंचसिकामाषा	५७०
		७७८, ७८७		सरस्वतीपूजा	५५६
	साधुबंदना	६४०, ६५२	बुधमहाचंद—	स्तुति	७०४
		७१६	बुलाकीवास—	सामायिकपाठभाषा	६५
	सिन्दूरप्रकरण	३४०, ७१०		पाण्डवपुराण	१५०, ७४५
		७१२, ७४६	बूचराज—	प्रश्नोत्तरभावकाचार	७०
				टंडाणागीत	७२२, ७५०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	भुवनकीर्तिगीत	६६६		पद	५८७
भगतराम—	पद	७६८		नेमीश्वरकोरास	६३८
भैयाभगतीदास—	आहारके ४६ दोप		भागचंद्र—	उपदेशसिद्धान्तरत्न	
	वर्णन	५०		माला	५१
	प्रकृत्रिमचैत्यालय			ज्ञानसूर्योदयनाटक	३१७
	जयमाल	६६४, ७२०		नेमिन.थपुराण	१४६
	चेतनकर्मचरित्र	७४०		प्रमाणपरीक्षाभाषा	१३७
		६१३, ६०५, ६८६		पद	४४५, ४४६, ५७०
	अनित्यपञ्चीसी	६८६		श्रावकाचारभाषा	६१
	निर्वाणकाण्डभाषा	३६६		सम्मोदशिखरपूजा	५५०
		४२६, ५६२, ५६५,	भागीरथ—	सोनागिरपञ्चीसी	६८
		५७०, ६५०, ५६६			
		६००, ६०५, ६१४	भानुकीर्ति—	जीवकायाऽऽभाय	६१६
		६१०, ६४३, ६५१		पद	५८३, ५८५, ६१५
		६६२, ७०४, ७२०		रविन्नतकथा	७५०
	ब्रह्मविलास	३३३	भारामल्ल—	कर्मपञ्चीसी	७६६
	बारहभावना	७२०		चारुदत्तचरित्र	१६८
	वैराग्यपञ्चीसी	६८५		दर्शनकथा	२२७
	श्रीपालजीकीस्तुति	६४३		दानकथा	२२८
	सप्तभंगीवाणी	६८८		मुक्तावलि कथा	७६४
भगौतीदास—	वीरजिरांदगीत	५६६		रात्रिभोजनकथा	२३८
भमवानदास—	श्री. शांतिसागरपूजा	४६१		शीलकथा	२४७
		७८६		सप्तव्यसनकथा	२५०
भगोसाह—	पद	५८१	भीषनकवि—	लब्धिविधानचौपई	७७२
भद्रसेन—	चन्दनमलयागिरी	२२३	भुवनकीर्ति—	नेमिराजुलगीत	६१८
भाऊ—	आदित्यवारकथा		भुवनभूषण—	प्रभातिकस्तुति	६४४
	(रविन्नतकथा)	२३७, २४४		एकीभावस्तोत्रभाषा	३८३
		६०१, ६८५, ७४०			४२६, ४४८, ६५२
		७४५, ७५६, ७६२			६६२, ७१६, ७२०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
भूधरदास—	कवित्त	७७०		बारहभावना	११४
	गुरुभ्रोंकीवीनती	४४७		वज्रनाभिवक्रवत्तिकी भावना	५३३
	५११, ६१४, ६४२, ६६३			४४८, ७३३	
	चर्चासमाधान	१५, ६०६		विनती	६४२, ६६३
		६४६			६७५
	चतुर्विंशतिस्तोत्र	४२६		स्तुति	७१०
	जकडी	६५०, ७१६	भूधरमिश्र—	पुरुषार्थसिद्धयुपाय	
	जिनदर्शन	६०५		वचनिका	६६६
	जैनशतक	३२७, ४२६		पद	७७६
	६५२, ६७०, ६८६		भेलीराम—	पञ्चकल्याणकपूजा	२०१
	६६८, ७०६, ७१०		भैरवदास—	बृहद्घंटाकार्णिकल्प	७२६
	७१३, ७१६, ७३२		भोगीलाल—	नन्दीश्वरद्वीपपूजा	४६६
	दशलक्षणपूजा	५६२	मंगलचंद—	पदसंग्रह	४४७
	नरकदुखवर्णन	६५, ७८८		मकरंदपद्मावतिपुरवाल—	षट्संहननवर्णन
	नेमीश्वरकीस्तुति	६५०			७८
		७७७	मकखनलाल—	मकलंकनाटक	३१६
	पंचमेरुपूजा	५०५, ५६६	मजलसराय—	जैनबद्रीदेशकीपत्रो	५८१
		७०४, ७५६	मतिकुसल—	चन्द्रलेहारास	३६१
	पार्श्वपुराण	१७६, ७४४	मतिशेखर—	ज्ञानबावनी	७७९
		७६१	मतिसागर—	शालिभद्रचौपई	१६८, ७२६
	पुरुषार्थसिद्धयुपाय		मथुरादासव्यास—	लीलावतीभाषा	६६८
	भाषा	६६	मनरंगलाल—	मकूत्रिमचैत्यालयपूजा	४५४
	पद	४४५, ५८०, ५८६		चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	४७३
		५६०, ६१५, ६२०		निर्वाणपूजापाठ	४६६
		६४८, ६६४, ६५४		बितामरिणजीकीजयमाल	
		६६४, ७७६, ७७७	मनरथ—		६४४
		७८५, ७८६, ७८८		मनराम—	७४६
	वाइसपरीपहवर्णन	७५, ६०५		मक्षरगुणमाला	७४६
				गुणाक्षरमाला	७५०

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पद	६६०, ७२३, ७२४ ७६४, ७६६, ७७६		पद	४४७, ४४८, ७६८
मनसाराम—	पद	६६३, ६६४		समाधितंत्रभाषा	१२५
मनसुखलाल—	सम्मोदशिखरमहाल्य	६२		साधुबंदना	४५२
मनहरदेव—	आदिनाथपूजा	५११	मानकवि—	हुण्डावसपिणीकाल दो वर्णन	६८
मन्नालालखिन्दूका—	चारित्रसारभाषा	५६		मानबावनी	३३४, ६०१
	पद्यनंदिपच्चीसीभाषा	६८		विनतीचौपडकी	७८१
	प्रद्युम्नचरित्रभाषा	१८२	मानसागर—	संयोगबत्तीसी	६१३
मनासाह—	मानकीबडीबावनी	६३८	मानसिंह—	कठियारकानडरीचौपई	२१८
	मानकीलघुबावनी	६३८		भारती	७७७
मनोहर—	पद	४४५, ७६३, ७६४ ७८५, ७८६		पद	७७७
	ज्ञानचिंतामणि	१८, ७१४ ७३६	मारू—	अमरगीत	७५०
मनोहरदास—	ज्ञानपदवी	७१८		मानविनोद	३००
	ज्ञानपैडी	७५७	मिहरचंद—	पहेलियां	६५१
	धर्मपरोक्षा	३५७, ७१६	मुकुन्ददास—	सज्जनचित्तवल्लभ	३३७
मल्लूकचंद—	पद	४४६	मेरूनन्दन—	पद	६६०
मल्लूकदास—	पद	७६३	मेरूसुन्दरगणि—	अजितशांतिस्तवन	६१६
महमत—	वैराग्यगीत	४१६	मैला—	शीलोपदेशमाला	२४७
महाचन्द—	लघुस्वयंभूस्तोत्र	७१६	मेलीराम—	पद	७७६
	षट्श्रावश्यक	८७	महेशकवि—	कल्याणमंदिरस्तोत्र	७८६
	सामायिकपाठ	४२६	मोतीराम—	हमीररासो	३६७
महीचन्द्रपुरि—	पद	५७६	मोहन—	पद	५६१
महेन्द्रकीर्ति—	जकडी	६२०	मोहनमिश्र—	कवित्त	७७२
	पद	७८६	मोहनविजय—	लीलावतीभाषा	३६७
माखनकवि—	पिंगलछंदशास्त्र	३१०	रंगविजय—	चन्दनाचरित्र	७६१
माणकचंद—	तेरहपंथपच्चीसी	४४८	रंगविनयगणि—	मानतुंगमानवतिचौपई	२३५
				आदीश्वरगीत	७७६
				उपदेशसज्ज्भाय	
				मंगलकलशमहामुनि	
				चतुष्पदी	१८५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
रङ्गभू—	बारहभावना	११४		चतुर्विंशतितीर्थकरपूजा	
रघुराम—	सभासारनाटक	३३८		४७२, ६६६, ७२७,	
रणबीतदास—	स्वरोदय	३४५		७२६, ७७२	
रत्नकीर्ति—	नेमीश्वरकाहिण्डोलना	७२२		पद ५८१, ६६८, ६८६	
	नेमीश्वररास	६३८		पूजासंग्रह	५२०
		७२२		प्रतिमासान्तचतुर्दशी	
रतनचंद्र—	चौबीसीविनती	६४६		व्रतोद्यापन	५२०
	देवकीकीढाल	४४०		पुरुषस्त्रीसंवाद	७८६
रत्नमुक्ति—	नेमीराजमतीरास	६१७		बारहखडी	७१५
रत्नभूषण—	जिनचैत्यालयजयमाल	५६४		शांतिनाथपूजा	५४५
रत्नकवि—	जिनदत्तचौपई	६८२		शिखरविलास	६६३
रसिकराय—	स्नेहलीला	६६४		सम्मोदशिखरपूजा	५५०
राजमल—	तत्त्वार्थसूत्रटीका	३०		सीताचरित्र	२०६, ७२५
राजसमुद्र—	कर्मबत्तीसी	६१७			७५६
	जीवकायासज्जाय	६१६		सुपाहर्वनाथपूजा	५५५
	शत्रुञ्जयभास	६१६	ऋषिरामचन्द्र—	उपदेशसज्जाय	३८०
	शत्रुञ्जयस्तवन	६१६		कल्याणमंदिरस्तोत्रभाषा	
	सोलहसतियोकेनाम	६१६			३८५
राजसिंह—	पद	५८७	रामचन्द्र—	नेमिनाथरास	३६२
राजसुन्दर—	द्वादशमाला	७४३, ७७१	रामदास—	रामविनोद	३०२
	सुन्दरश्रृंगार	६८३, ७२६		पद	५८३, ५८८
राजाराम—	पद	५६०		६६३, ६६७, ७७२	
राम—	पद	६५३	रामभगत—	पद	५८२
	रत्नपरीक्षा	३५८	मिश्ररामराय—	वृहद्चारणिक्यनीति	
रामकृष्ण—	जकडी	४३८		शास्त्रभाषा	३३६
	पद	६६८	रामविनोद—	रामविनोदभाषा	६४०
रामचंद्र—	आदिनाथपूजा	६५१	अ० रायमल्ल—	आदित्यवारकथा	७१२
	चंद्रप्रमजिनपूजा	४७४		चिंतामणिजयमाल	६५५
				द्वियालीसठाणा	७६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	जम्बूस्वामीचरित्र	७१०		पंचमंगल	४०१, ४२८, ४४७
	निर्दोषसप्तमीकथा	६७६			५१८, ५६५, ५७०
	नेमीश्वरकाण्ड	३६३, ६०१			६२४, ६४२, ६५०
		६२१, ६३८, ७५२			६५८, ६६१, ६६४,
	पंचगुरुकीजयमाल	७६३			६७३, ७०४, ७०५
	प्रद्युम्नरास	६६५, ६३६			७१५, ७२०
		७१२, ७३७, ७४६		पंचकल्याणकपूजा	५००
	भक्तामस्तोत्रवृत्ति	४०८		दोहाशतक	७४०, ७४३
	भविष्यदत्तरास	३६४, ५६४		पद	५८५, ५८७, ५८८
		६४८, ७४०, ७५१			६२४, ६६१, ७२४
		७५२, ७७३, ७७५			७४६, ७५५, ७६३
	राजाचन्द्रगुप्तकीचौपई	६२०			७६५, ७८३
	श्रीलरास	७४६		परमार्थगोत	७६४
	श्रीपालरास	६३८		परमार्थदोहा	७०६
		६८४, ७१२		परमार्थहिडोलना	७६४
		७१७, ७४६		लघुमंगल	६२४, ७१६
	सुदर्शनरास	३६६, ६३६		विनती	७६५
		७१२, ७४६		समवसरणपूजा	५४६
	हनुमच्चरित्र	२१६, ५६५	पांडे रूपचंद्र—	तत्त्वार्थसूत्रभाषाटीका	६४०
		५६६, ७१७, ७३४	रूपदीप—	पिगलभाषा	७०६
		७४०, ७५२	रेखराज—	पद	७६८
		७४४, ७६२	लक्ष्मण—	चन्दकथा	७४८
साधर्मीभाईरायमल्ल—	ज्ञानानन्दश्रावका		लक्ष्मीवल्लभ—	नवतत्त्वप्रकरण	३७
	चार	५८	लक्ष्मीसागर—	पद	६८२
रूपचंद्र—	अध्यात्मदोहा	७४६	लब्धिविमलगण—	ज्ञानार्णवटीकाभाषा	१०८
	जकडी	६५०, ७५२	पं० लाखो—	पार्श्वनाथचौपई	४४८
		६६१, ७५५	लाल—	पद	४४५, ६८६
	जिनस्तुति	७०२	लालचन्द्र—	आरती	६२२

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	चिन्तामणि गार्श्वनाथ			पार्श्वजिनपूजा	५०७
	स्तवन	६१७		पूजाष्टक	५१२
	धर्मबुद्धिचौपई	२२६		षट्प्लेण्याबेलि	३६६
	नेमिनाथमंगल	६०५, ७२२	वल्लभ—	रुक्मिणीविवाह	७८७
	नेमीश्वरका व्याहला	६५१	वाजिद—	वाजिदकेषडिल्ल	६७३
	पद	५८२, ५८३, ५८७	वादिचन्द्र—	आदित्यवारकथा	६०७
	पूजासंग्रह	७७७	विचित्रदेव—	मोरपिच्छधारीके कवित्त	६७३
पांडे लालचंद—	षट्कर्मोपदेशरत्नमाला	८८	विजयकीर्ति—	अनन्तव्रतपूजा	४५७
	सम्मदेशिखरमहात्म्य	६२		जम्बूस्वामीचरित्र	१६६
शुचि लालचंद—	अठारहनातेकीकथा	२१३		पद	५८०, ५८२
	मरुदेवीसज्जाप	४५०			५८३, ५८४, ५८५
	महावीरजीचौढाल्या	४५०			५८६, ५८७, ५८८
	विजयकुमारसज्जाय	४५०		श्रेणिकचरित्र	२०४
	शान्तिनाथस्तवन	४१७	विजयदेवसूरि—	नेमिनाथरास	३६३
	शीतलनाथस्तवन	४५१		शीलरास	३६५, ६१७
लालजीत—	तेरहद्वीपपूजा	४८४	विजयमानसूरि—	श्रेयांसस्तवन	४५१
ब्रह्मलाल—	जिनवरव्रतजयमाला	६८५	विद्याभूषण—	गीत	६०७
लालबद्धन—	पाण्डवचरित्र	१७८	विनयकीर्ति—	अष्टाल्लिकाव्रतकथा	६१४
ब्रह्मलालसागर—	एमोकारछंद	६८३			७८०, ७६४
लूणकरणकासलीवाल—	चीबीसतीर्थकरस्तवन	४३८	विनयचंद—	केवलज्ञानसज्जाय	३८५
	देवकीकीठाल	४३६	विनोदीलाललालचंद—	कृपणपच्चीसी	७७३
साहलोहट—	अठारहनातेकीकथा			चीबीसीस्तुति	७७३, ७७५
	(चौढाल्या)	६२३		चौरासीजातिका	
		७२३, ७७५, ७८०, ७६८		जयमाल	३६६
	द्वादशानुप्रेक्षा	७६६		नेमिनाथकेनवमंगल	४४०
	पार्श्वनाथकीगुणमाला	७७६			६८६, ७२०, ७३४
	पार्श्वनाथजयमाल	६४२		नेमिनाथकाबारहमासा	७५३
		७८१			

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पूजाष्टक	७७७	वृजलाल—	बारहभावना	६८५
	पद	५६०, ६२३ ७५७, ७८३, ७९८	वृन्वकवि—	वृन्वसतसई	३३६ ६७५, ७५१, ७८५
	भक्तामरस्तोत्रकथा	२३४	वृन्दावन—	कवित्त	६८२
	सम्यक्त्वकौमुदीकथा	२५२		चतुर्विंशतितीर्थव्रतपूजा	४७१
	राजुलपञ्चीसी	६००		छंदशतक	३२७
		६१३, ६२२, ६४३ ६५१, ६८५ ७४७, ७५३		तीसचीबीसीपूजा	४८३
विमलकीर्ति—	बाहुबलीसज्जाय	४४६		पद	६२५, ६४३
विमलेन्द्रकीर्ति—	आराधनाप्रतिबोधसार	६५८	शंकराचार्य—	प्रवचनसारभाषा	११४
	जिनचीबीसीभवान्तर		शांतिकुशल—	मुहूर्त्तमुक्तावलिभाषा	७६८
	राम	५७८	ब० शांतिदास—	अञ्जनारास	३६०
विमलविनयगणि—	अनाथीसाधचौढालिया	६८०		अनन्तनाथपूजा	६६०, ७६५
	अर्हन्नकचौढालियागीत	४३५	शालिभद्र—	आदिनाथपूजा	७६५
विशालकीर्ति—	धर्मपरीक्षाभाषा	७३५	बुद्धिरास		६१७
विरवभूषण—	अष्टकपूजा	७०१	शिखरचंद—	तत्त्वार्थसूत्रभाषा	३०
	नेमिजीकीमंगल	५६७	शिरोमणिदास—	धर्मसार	६३, ६६६
	नेमिजीकीलहुरि	७४६, ७७८	ऋषिशिव—	नेमिस्तवन	४००
	पद	४४५, ६६८	शिवजीलाल—	चर्चासार	१६
	पार्वनाथचरित्र	५६८		दर्शनसारभाषा	१३३
	विनती	६२१	शिवनिधानगणि—	प्रतिष्ठासार	५२२
	हेमकारी	७६३	शिवलाल—	संग्रहणीबालावबोध	४५
विश्वामित्र—	रामकवच	६६७	शिवसुन्दर—	कवित्तचुगलखोरका	७८२
त्रिसनदास—	पद	५८७	शुभचन्द्र—	पद	७५०
वीरचंद—	जिनान्तर	६२७		अष्टाङ्गकागीत	६८६
	संबोधसताणु	३३६		आरती	७७६
वेणीदास [ब० वेणु]—	पांचपरवीरव्रतकीकथा	६२१ ६८५		क्षेत्रपालगीत	६२३
				पद	७०२, ७२४ ७७७

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
शोभाचन्द—	शिवादेवीमाताकोआठवों क्षेत्रपालभैरवगीत	७२४ ७७७		अकलंकाष्टकभाषा	३७९
श्यामदास—	पद	५८३, ७७७		ऋषिमंडलपूजा	७२६
	तीसचौबीसी	७५८		तत्त्वार्थसूत्रभाषा	२९
	पद	७६४		दशलशरणधर्मवर्णन	५९
	श्यामवतीसी	७६९		नित्यनियमपूजा	४९६
श्याममिश्र—	रागमाला	७७१		न्यायदीपिकाभाषा	१३५
श्रीपाल—	त्रिषष्टिशलाकाछंद	६७०		भगवतीआराधनाभाषा	७६
	पद	६७०		मृत्युमहोत्सवभाषा	११५
श्रीभूषण—	अनन्तचतुर्दशीपूजा	४५६		रत्नकरण्डश्रावकाचार	८२
	पद	५८३	सबलसिंह—	षोडशकारणभावना	८८, ९८
श्रीराम—	पद	५९०		पद	६२४
श्रीवर्द्धन—	गुणस्थानगीत	७६३	सभाचन्द—	लुहरि	७२४
मुनिश्रीसार—	स्वार्थबीसी	६१९	सवाईराम—	पद	५९०
संतदास—	पद	६५४	समयराज—	पार्श्वनाथस्तवन	६६७
संतराम—	कवित्त	६९२	समयमुन्दर—	अनाथीमुनिसञ्भाय	६१८
संतलाल—	सिद्धचक्रपूजा	५५४		अरहनासञ्भाय	६१८
संतीदास—	पद	७५६		आदिनाथस्तवन	६१६
संतोषकवि—	विषहरणविधि	३०३		कर्मछत्तीसी	६१९
मुनिसकलकीर्त्ति—	आराधनाप्रतिबोधसार	६८५		कुशलगुरुस्तवन	७७९
	कर्मचूरप्रतवेलि	५६२		क्षमाछत्तीसी	६१७
	पद	५८८		गौडीपार्श्वनाथस्तवन	६१७
	पार्श्वनाथाष्टक	७७७		गौतमपृच्छा	६१९
	मुक्तावलिगीत	६८६		गौतमस्वामीसञ्भाय	६१८
	सोलहकारणरास	५९४		ज्ञानपंचमीवृहद्स्तवन	७७९
		६३६, ७८१		तीर्थमालास्तवन	६१७
सदासागर—	पद	५८०		दानतपशीलसंवाद	६१७
सदामुखकासलीवाल—	अर्थप्रकाशिका	१		नमिराजपिसञ्भाय	६१८
				पंचयतिस्तवन	६१९

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पद	५७६, ५८८	सुखानंद—	पंचमेरूपूजा	५०५
		५८६, ७७७	सुगनचंद—	चतुर्विंशतितीर्थकर	
	पद्मावतीरानीधाराधना	६१७		पूजा	४७३
	पद्मावतीस्तोत्र	६८५	सुन्दर—	कपडामाला का दूहा	७७३
	पार्श्वनाथस्तवन	६१७		नायिकालक्षणा	७४२
	पुण्यछत्तीसी	६१६		पद	७२४
	फलबधीपार्श्वनाथस्तवन	६१६		सहेलीगीत	७६४
	बाहुबलिसञ्जाय	६१६	सुन्दरगणि—	जिनदत्तसूरिगीत	६१८
	बीसविरहमानजकडी	६१७	सुन्दरदास—।	कवित्त	६४३
	महावीरस्तवन	७३५		पद	७१०
	मेघकुमारसञ्जाय	६१८		सुन्दरविलास	७४५
	मौनएकादशीस्तवन	६२०		सुन्दरशृंगार	७६८
	राणपुरस्तवन	६१६	सुन्दरदास— II	सिन्दूरप्रकरणभाषा	३४०
	बलदेवमहामुनिसञ्जाय	६१६	सुन्दरभूषण—	पद	५८७
	विनती	७३२	सुमतिकीर्त्ति—	क्षेत्रपालपूजा	७६३
	शत्रुञ्जयतीर्थरास	६१७, ७००		जिनस्तुति	७६३
	श्रेणिकराजासञ्जाय	६१६	सुमतिसागर—	दशलक्षणव्रतोद्यापन	६३८
	सञ्जाय	६१८			७६५
सहसकीर्त्ति—	आदीश्वररेखता	६८२		व्रतजयमाला	७६५
साईदास—	पद	६२०	सुरेन्द्रकीर्त्ति—	आदित्यदारकथाभाषा	७०७
साधुकीर्त्ति—	सत्तरभेदपूजा	७३५, ७६०		जैनबद्रीमूडबद्रीकीयात्रा	३६६
	जिनकुशलकीस्तुति	७७८		पद	६२२
सालम—	आत्मशिक्षासञ्जाय	६१६		सम्भेदशिखरपूजा	५५०
साहकीरत—	पद	७७७	सूरचंद—	समाधिमरणभाषा	१२७
साहिवराम—	पद	४४५, ७६८	सूरदास—	पद	६८४
सुखदेव—	पद	५८०			७६६, ७६३
सुखराम—	कवित्त	७७०	सूरजभानऔसवाल—	परमात्मप्रकाशभाषा	११२
सुखलाल—	कवित्त	६५६	सूरजमल—	पद	५८१

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
कविसूरत—	द्वादशानुप्रेक्षा	७६४		निर्वाणक्षेत्रमंडलपूजा	४६८
	बारहखडी ६६, ३३२, ७१५	७८८		पंचकुमारपूजा	७५६
सेवगराम—	अनन्तनाथपूजा	४५६		पूजापाठसंग्रह	५११
	आदिनाथपूजा	६७४		मदनपराजय	३१८
	कवित्त	७७२		महावीरस्तोत्र	५११
	जिनगुणपञ्चमी	४४७		वृहद्गुरावलीशांतिमंडल	
	जिनयशमंगल	४४७		(चौसठऋद्धिपूजा)	४७६, ५११
	पद ४४७, ७८६, ७६८			सिद्धक्षेत्रोंकीपूजा	५५३, ७८६
	निर्वाणकाण्ड	७८८	हंसराज—	सुगन्धदशमीपूजा	५११
	नेमिनाथकीभावना	६७४	हठमलदास—	विज्ञप्तिपत्र	३७४
सेवारामपाटनी—	मल्लिनाथपुराण	१५२	हरखचंद—	पद	६२४
सेवारामसाह—	अनन्तव्रतपूजा	४५७		पद	५८३, ५८४
	चतुर्विंशतितीर्थंकरपूजा	४७०	हरचंद्रअग्रवाल—	सुकुमालचरित्र	२०७
	धर्मोपदेशसंग्रह	६४		पंचकल्याणकपाठ	४००
सोम—	चितामणिपार्वनाथ				७६६
	जयमाल	७६२	हगूलाल—	सज्जनचित्तवत्तलभ	३३७
सोमदेवसूरि—	देवराजवच्छराजचौपई	२२८	हर्षकवि—	चंद्रहंसकथा	७१४
सोमसेन—	पंचक्षेत्रपालपूजा	७६५		पद	५७६
स्यौजीरामसौगाणी—	लग्नचंद्रिका	७५१	हर्षकीर्त्ति—	जिणभक्ति	४३८
स्वरूपचंद—	ऋद्धिसिद्धिशतक	५२, ५११		तीर्थंकरजकडी	६२२
	चमत्कारजिनेश्वरपूजा	५११		पद	५८६, ५८७
		६६३			५८८, ५९०, ६२१
	जयपुरनगरसंबंधी				६२४, ६६३, ७०१
	चैत्यालयोंकीवंदना	४३८			७५०, ७६३, ७६४
		५११		पंचमगतिवेलि	६२१
	जिनसहस्रनामपूजा	४८०			६६१, ६६८, ७५०
	त्रिलोकसारचौपई	५११			७६५

ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०	ग्रंथकार का नाम	ग्रंथ नाम	ग्रंथ सूची की पत्र सं०
	पार्श्वनाथपूजा	६६३		विनती	६६३
	बीसतीर्थकरों की जकडी			स्तुति	७७६
	(जयमाल) ६४४, ७२२		हीरकवि—	सागरदत्तचरित्र	२०४
	बीस विरहमानपूजा	५६५	हीराचंद—	पद	४४७, ५८१
	श्रावककीकरणी	५६७		पूजासंग्रह	५१६
	षट्श्लेश्यावेलि	७७५	हीरानंद—	पंचास्तिकायभाषा	४१
	सुखघडी	७४६	हीरालाल—	चन्द्रप्रभपुराण	१४६
हर्षचन्द—	पद	५८५, ६२०	हेमराज—	गरुडसार	३६७
हर्षसूरि—	अर्वात्तिपार्श्वजिनस्तवन	३७६		गोम्मटसारकर्मकाण्ड	१३
पांडेहरिकृष्ण—	अनन्तचतुर्दशीव्रत			द्रव्यसंग्रहभाषा	७३३
	कथा	७६६		पंचास्तिकायभाषा	४१
	आकाशपंचमीकथा	७६४		पद	५६०
	निर्दोषसप्तमीकथा	७६४		प्रवचनसारभाषा	११३
	निशल्याष्टमीकथा	७६५		नयचक्रभाषा	१३४
हरिचरणदास—	कविवल्लभ	६८८		बावनी	६५७
	बिहारीसतसईटीका	६८७		भक्तामरस्तोत्रभाषा	४१०
हरीदास—	ज्ञानोपदेशबत्तीसी	७१३			५६६, ६४८, ६६१
	पद	७७०			७०७, ७७४
हरिश्चन्द—	पद	६४६		साधुकीआरती	७७७
हरिसिंह—	पद	५८२, ५८५, ६२०		सुगन्धदशमीकथा	२५४
		६४३, ६४४, ६६६			७६५
		७७२, ७७६, ७६६	मुनिहेमसिद्ध—	आदिनाथगीत	४३६



➔ शसकों की नामावलि ➔

अकबर	६, १२२, १६७, ५६१, ५६२	चन्द्रगुप्त	६२०
(इकवर)	६८१, ७६७, ७७३	चित्रंगदमोडीये	५६२
अजपालपंवार	५६२	छत्रसाल	४०६
अणहलशुवाल	५६२	जगतसिंह	१७०, १८१, ३६६, ७७६
अनंगसालतुंवर	५६१	जगपाल	६६
अरविद	५६८	जयसिंह (सवाई)	५३, ७१, ६३, ६६, १२० १२८, २०४, ३०५, ४८२ ५१५, ५२०, ५६१
अलाउद्दीन	३५६, २५६	जयसिंहदेव	१४५, १७६
(अलावदीन)		जहांगीर	४१, १४४
अलावलखां	१५७	जैतसी	५६२
अलावद्दीनलोदी	५६	जैसिंह (सिघराव)	५६२
अहमदशाह	२१६, ५६१	जोधवत	५६१
अलभ	२५१	जोधे	५६१
अौरगजेब	६७, ४७८, ५५४, ६६८	टोडरमल	७६७
अौरंगसाहि पातसाहि	३१, ३६, ५६२	झंगरेन्द्र	१७२
इन्द्रजीत	७४३	तैतवो	५६२
इब्राहीमलोदी	१४२	देवडों	५६२
इब्राहीम (सुलितान)	१४५	नाहरराव (पवार)	५६१
ईसरीसिंह	२२६	नौरंगजीव	३०५
ईश्वरसिंह	२३१	नौरंग	४४८
उदयसिंह	२०६, २५१, ५६१, ५६२	पूरणमल्ल	१६४
उभैसिंह	२१६	पेरोजासाह	७८
किशनसिंह	५६२	पृथ्वीराज	१०७
कीर्तिसिंह	२६५	पृथ्वीसिंह	७३, १४४, ६८३, ७६७
कुशलसिंह	४८	प्रतापसिंह	२७, १४६, १८६, ४५७, ४६१
केशरीसिंह	३४७	फत्तेसिंह	४८०
खेतसी	१६०	वस्तावरसिंह	७२६
गयामुद्दीन	५३	बहलोलशाह	६२
गजुद्दीहबहादुर	१२५		
घडसीराय	१७२		

बाबर	१६३	रामस्यंघ	२२६
बीकै	५६१	रायचद	४४
बुर्धसिंह	५, २००	रायमल्ल	३८१
भगवंतसिंह	३४	रायसिंह	२४६, ३२०
भाटीजैसे	१५१, १८८	लालाह	५२२
भारामल	५६१	लिछमरास्यंघ	२२६
भावसिंह	७१	वसुदेव	४३६
भावसिंह (हाडा)	३६	विक्रमसाहि	५६७
भोज	५६१	विक्रमादित्य	२५१, २५३, ६१२
भोजदेव	३५	विजयसिंह	२८३
मकरधुज	४३६	विमलमंत्रीस्वर	५६२
मदन		विशानसिंह	२८३
महमदखां	१०	वीदै	५६१
महमदसाह	१५६	वीरनारायण (राजाभोजकापुत्र)	५६१
महमूदसाहि	१८८	वीरमदे	५६२
महाशेरखान	५३	वीरबल	६८१
माधोसिंह	१०४, १६२, ५५१, ६३६	शक्तिसिंह	३७
माधवसिंह	६३८	शाहजहां	६०२, ६६८
मानसिंह	३४, १५६, १८४, १८६ १६२, १६६, ३१३ ४७६, ४८०	श्रीपाल	३५
मालदे	५६१, ५६२	श्रीमालदे	१६०
मूलराज	१३२	श्रीराव	५६५
मोहम्मदराज	६००	श्रेणिक	३६३
रणधीरसिंह	३८६	सलेमसाह	७७, २०६, २१२
राजसिंह	१३१, २७१, ३१३	सांवलदास	१८४
राजामल्ल	७२६	सिकन्दर	१४५
रामचन्द्र	७७, २४०	सूर्यसेन	४, १६४
रामसिंह	२७, १४६, २७४, २७५ ६१०, ६११	सूर्यमल्ल	२६६
		संग्रामसिंह	२६३
		मोनडारे	५६१
		हमीर	३७८, ५६१, ६०६

★ ग्राम एवं नगरों की नामावलि ★

मंजनगीई	७२६	आगरा	१२३, २०१, २५५, ५६१
मंभावतीगढ (आमेर)	४, ३४, ४०, ७१, १२० १६३, १८७, १६६, ४५६		७४६, ७५३, ७७१
मकबरानगर	४७६	आभानेरी	७४८
मकबराबाद	६, ३६१	आमेर	३१, ७१, ६३, ११६, १२० १३२, १३३, १७२, १८४, १८८, १९०, २३३, २६४ ३३७, ३६४, ३६५, ४२२ ४६२, ६८३, ७५६
मकम्बरपुर	२५०	आम्रगढ	१५१
मकीर	३६७	आलमगंज	२०१
मजमेर	२१६, ३२१, ३४७, ३७३ ४६६, ५०५, ५६२, ७२६	आवर (आमेर)	१८१
मटोशिनगर	१२	आश्रम नगर	३५
मणहिलपत्तन (मणहिल्लपाट)	१७५, ३५१	इन्दौर (तुकोगंज)	५४७
ममरसर	६१७	इन्द्रपुरी	३५८, ३६३
ममरावती	४८७	इंभावतिपुर (मालवदेश में)	३४०
मवंती	६६, २७६, ३६७	इंदोखली	३७१
मर्गलपुरदुर्ग (आगरा)	२०६, ३४६	ईढर	३७७
मराह्वयपुर	१७	ईसरदा	२७, ३०, ५०३
मलकापुरी	४३५	उग्रियावास	३१६
मलवर	२४, ५६७	उज्जैन	१२१, ६८३
मलाउपुर (मलवर)	१४४	उज्जैणी (उज्जैन)	५६१
मलीगढ (उ. प्र)	३०, ४३७	उदयपुर	३६, १७६, १६६, २४२ २६३, ५६१
मवन्तिकापुरी	६६०	एकोहमा नगर	४५४
महमदाबाद	२३३, ३०५, ५६१ ५६२, ७५३	एलिचपुर	१८१
महिपुर (नागीर)	८६, २५१	म्रीरंगाबाद	७०, ५६२, ६१७
मांधी	३७२	कंकणलाट	३६७
मंभावती	३७२	कछोविदा	५६२
मावां महानगर	१६४		
मावेर (आमेर)	१०७		

६३२]

कटक	२५४	केरल	३६७
कफोतपुर	१६१	केरवाग्राम	२५०
कभणउ	३६७	कैनाश	६८२
कडीग्राम	१६३	कोटपुतली	७५७
कनारा (जिला)	२२	कोटा	६४, २२७, ४५०
कर्णाटक	३८६	कोरटा	३२३
कराडम	३६७	कौशबी	५६२
करौली	६०४	कृष्णगढ	१८३, २२१, २६८, ३१६
कलकत्ता	१५१	कृष्णद्रह (कालाडेहरा)	२१०
कल्पवल्लीपुर	३६३	खण्डार	४८०
कर्लिंग	३६७	खतौली	३३७
काडीग्राम	२४६	खिराडदेश	७१
काणौता	३७२	खेटक	२५१
कानपुरकैंट	१३४	गंधार	१५५
कामानगर	१२०	गऊड	३६७
कारंजा	२०४	गढकोटा	६३८
कालख	८२	गाजीकाथाना	७१४
कालाडेहरा (कालाडेहरा)	४५, २१०	गिरनार	६७०
	३०६, ३७२	गिरपोर	३६२
किरात	३६७	ग्रीवापुर	४०८
किशनगढ	५४, २५३, ५६२	गुजरात	२२४
किहरोर	२१८	गुज्जर (गुजरात)	३६७
कुंकुणदेश	५२२	गुर्जरदेश (गुजरात)	३६३
कृचामण	४४१	गुरूवचनगर	४३६
कुंभनगर	२२	गूलर	३७१
कुंभलमेरूदुर्ग	२५१	गोपाचलनगर (बवालियर)	१५५, १७२, २६५, ४५३
कुंभलसेस	३६७	गोलागिरि	३७२
कुरंगण	३६७	गोदटीपुरी	१८१
कुरूजांगलदेश	१४५	गोविन्दगढ	४१०
केकडी	२००	गौन्देर (गोनेर)	३७२

ग्वालियर	१७२, ४५३	५३, ६१, ६६, ७१, ७२
घडसोला	४७५	७४, ७७, ७६, ८५, ८६, ८२
घाटडे	३७१	६३, ६६, ६८, १०२, १०४
घाटमपुर	४१२	११०, १२१, १२८, १३०
घाटसल	२३४	१३४, १४०, १४२, १४५
चऊड	३६७	१५२, १५३, १५४, १५५
चन्द्रपुरी	४१, १८८, ५३१	१५८, १६२, १६६, १७२
चन्द्रापुरी	१७, ३०३	१७३, १८०, १८२, १८३
चन्देरीदेशा	५३, १७१	१८६, १८५, १८६, १८७
चंपनेरी	५६३	१८८, २००, २०१, २०२
चम्पावती (चाकसू)	३०२, ३२८	२०५, २०७, २२०, २२५
चम्पापुर	१६४	२३०, २३१, २३४, २३५
चमत्कार क्षेत्र	६६३	२३६, २३६, २५०, २५३
चाकसू	२२५, २८७, ४३४, ४६७ ४६८, ५६३, ७८०	२५५, २६२, २७४, २७५
चान्दनपुर	५४८	२८०, ३०२, ३०४, ३०८
चावडल्य	३७२	३०६, ३४१, ३५०, ३५७
चावली (आगरा)	५४७	३६२, ३६४, ३७५, ३८६
चितौड	२१३, ५६२	३६४, ४१०, ४११, ४२१
चित्रकूट	३६, १३६, २०६	४४५, ४५०, ४५६, ४६०
चीतौडा	१८५, १८६	४६१, ४६६, ४७२, ४८१
चूरू	५०२	४८७, ४६४, ४६६, ५०४
चोसू	४४०	५०५, ५११, ५२०, ५२१
जम्बूद्वीप	२१८	५२७, ५३३, ५४६, ५७७
जयदुर्ग	२७३	५६१, ६००, ६१५, ६६६
जयनगर (जयपुर)	१६, ११२, १२४ १६८, ३०१, ३१६	६८३, ७१५, ७२६, ७४४ ७६८, ७७५, ७७६
(सवाई) जयनगर (जयपुर)	१६६, १७०, २६८ ३१८, ३३०	
जयपुर (सवाई) जयपुर	७, १६, २५, २७, ३१ ३४, ३६, ४२, ४४, ५२	जलपथ (पानीपत) ७० जहानाबाद ४१, ७०, ६१, १४२ ५५२, ६६८ जागरू ३८०

जालौर	१०६, २०५, ५६२	तिलात्त	३६७
जैसलपुर	१३२	तुक्क	३६७
जैसलमेर	५६१, ६२०	तुरूक्क	३६७
जैसिंहपुरा	२५, ३१, ६१, ४४६	तोडा (टोडा)	६०६
	५०२, ६०१	दक्खण	३, ६७
जोधपुर	२०५, ३८१, ५६१	दविएण	३६७
जोधनेर	२६, ३४, ७४, २३१	दारू	३६५
	२६३, ३०२, ३३३	दिल्ली-देहली	३७, ८८, १२८, १४०
	४५५, ४६१, ४६६		१५६, १७५, १६७, ४४८
	४८७, ४६१, ६४४		४४६, ५६१, ७५६, ५६७
झालरापाटन	१६३	दिवसानगर (दौसा)	३५५
झालाणा	३७२	दूदू	१७२
झिलती	३१४	दूनी	३८०
झिलाय	१७०, ३२६, ४७७	देघणाग्राम	२६१
भोटवाडा	३७२	देवगिरि (दौसा)	१७३, २८६, ३६४
टहटडा	३०२	देवपल्ली	१५६
टोंक	३२, १८६, २०३	देवुली	६६
टोडाग्राम	१४८, ३१३	देवल	३७१
ड्योडीग्राम	२६३	दौसा-धौसा	१७३, ३२८, ३७२, ३७३
डिंगी	४१	द्रव्यपुर (मालपुरा)	२६२, ४०६
डिडवाना	३११, ३७१	द्वारिका	५६७
डूँडारदेश	३१६, ३२८	घवलक्खपुर	२५८
रागवचाल (नागरचाल)	३६७	धाणानगर	१८
तक्षकगढदुर्ग (टोडारायसिंह)	७७	धारानगरी	३५, १३३, १४५, १७६
	१३८, १७५, १८३, २००	नंदतटग्राम	६२
	२०५, २३६, ३१३, ४६४	नंदपुर	७७४
तमाल	३६७	नगर	२२७, ५६२
तारणपुर	२०१	नगरा	४३५
तिजारा	१४४, १५७	नयनपुर	११८
तिलंग	३६७	नरवरनगर	५२

ग्राम एवं नगरों की नामावलि]

[६३५]

नरवल	२२७	पाली	३६३
नरायणा	११७, ३५३, ३६२, ४१४	पावटा	६४६, ७८६
नरायणा (बडा)	२८४	पावागिरि	७३०
नलकच्छपुरा	१४५	पिपलाइ	३६३
नलवर दुर्ग	५२४	पिपलौन	३७३
नवलक्षपुर	२१२	पुन्या	४४१
नांगल	३७२	पूर्णासानगर	२००
नागरचालदेश	४४८	पूरवदेस	३६७
नागपुरनगर	३३, ३४, ८८, २८०, २८२ ३८४, ४७३, ५४३	पेरोजकोट	२७८
नागपुर (नागौर	७३५, ७६१	पेरोजापत्तन	६२
नागौर	३७३, ४६६, ४८८ ५६०, ७१८, ७६२	पोदनानगर	५६८
नामादेश	३७	फतेहपुर	३७१
निमखपुर	४०७	फलौधी	५६२
निराणौ (नरायणा)	३७०	फागपुर	३४
निवासपुरी (सांगानेर)	२८६	फागी	३१, ६८, १७०
नीमैडा	७६६	फौफली	३७१
नेवटा	१६८, २५०, ४८४, ४८७	बंग	३६७
नेणवा	१७, ३४१	बंगाल	४७६
पइठतपुर	४३६	बंधगोपालपुर	३६३
पचेवरनगर	४२, ४८०	बगरू	६६
पहन	३८७	बगरू-नगर	७४, २७०
पनवाडनगर	७१	बराहटा	३४२, ४४८
पलाडा	५६२	बटेरपुर	१५३
पांचोलास	७३	बनारस	४८३
पाटण	२३०, ३०४, ३६६, ५६२	बरब्बर	३६७
पाटनपुर	४४६	बराड	३६७
पानीपत	७०	बसई (बस्सी)	१८६, २६६, ४१५
पालव	६८२	बसवानगर	१६५, १७०, ३२०, ४४६
		बहादुरपुर	४८४, ७२१
			१६७, १६८

बागडदेश	६७, १५४, २३४	मथुरा	४७८
बाणपुर	११६	मधुपुरी	३१६
बायनगर	५७६	मनोहरपुरा	७५६
बाराहदरी	३७२	मलारना	७७६
बालाहेडी	२८८	मरुत्थल	३६७
बासी	५०६	मसूतिकापुर	४०
बीकानेर	५६१, ५६२, ६८४	मलयखेड	२०४
बून्दी	८४, ४०६	महाराष्ट्र	२५३
बैराठ	६७, ५६४	महुवा	२५, २६४, ४५५, ४७३
बैराठ (बैराठ)	२०४	महेबो	५६१
बीलीनगर	४८, १५६, १८३	माधोपुर	२६८
ब्रह्मपुरी	६६८	माधोराजपुरा	३३३, ४५५
भडौच	३७१	मारवाड	४४०
भदावरदेश	२५४, ३४०	मारोठ	१६३, ३१२, ३७२ ३८४, ५६२, ५६३
भरतखण्ड	१४३	मालकोट	५६१
भरतपुर	३८६	मालपुरा	४, २८, ३४, ५६, १२२, १३० २३१, २४८, २४६, २६२, ३०१ ३४२, ३४३, ३४४, ४६०, ५६२ ६३६, ७६८
भानगढ	३७२	मालवदेश	३५, २००, ३४०, ३६७
भानुमतीनगर	३०५	माल्हपुर	३४
भावनगर	११७	मिथिलापुरी	५४३
भिण्ड	२५४	मुकन्दपुर	७७०
भिरुद	२६७	मुलतान	१११, ५६२
भिलोड	१६८	मूलताण (मुलतान)	१७७
भैंसलाना	३०३	मेडता	१८४, ३७२, ५६१
भोपाल	३७३	मेडूरग्राम	३०
भृगुकच्छपुरी	२१०	मेदपाट	२०५, ३८१
भंडोवर	५६१	मेवाड	३७१
भंडानगर	७०६	मेवाडा	३७२
भांडोडी	३७१		
भांडौगढ	५३		
मुंबावती	७४		
भंडलाणापुर	२५१		

ग्राम एवं नगरों की नामावलि ।

१ ६३७

मोहनवाडी	४६०	रैणवान	४८०
मोहा	११२, ४५७, ५२०	रैनवाल	३४५, ६६५
मोहाणा	१२८	रैवासा	२००
मैनपुरी	४६	लखनऊ	१२५
मौजमाबाद	५६, ७१, १०५, १७४	ललितपुर	१७८
	१६२, २०८, २५५, ४११	लश्कर	२३६, ३८६, ७००
	४१२, ४१६, ४१७, ५४३	लाखेरी	६६५
यवनपुर	३४३	लाडगा	१८६
योगिनीपुर (दिल्ली)	२६४	लाबा	४३
यौवनपुर	३०७	लासोट	३०
रणतभंवर (रणथंभौर)	३७१	लाहौर	६६८, ७७१
रणथम्भौरगढ	७१२, ७४३	लूणाकर्णसर	७
रणस्तभदुर्ग (रणथंभौर)	२१२	वनपुर	२११
रतीय	३७१	वाम	२०१
रूहितगपुर (रोहतक)	१०१	विक्रमपुर	१६४, २२३
राजपुर नगर		विदाघ	३७१
राजगढ	१७६	विमल	५६२
राजग्रह	२१७, २५४, ३६३	वीरमपुर	१७८
रांडपुरा	४५०	वृन्दावती नगरी	५, ३६, १०१, १७८, २००
राणपुर	६१६		४२२
रामगढ नगर	१४६, ३७०	वृन्दावन	४, ११०, २७६
रामपुर	१३, ३५६, ३७१	वेसरे ग्राम	५३
रामपुरा	५६, ४५१	वैरागर ग्राम	४६, २१०
रामसर (नगर)	१८१	वैराट (वैराठ)	१०६
रामसरि	६६	वोराब (वोराज) नगर	५६४
रायदेश	१६७	षेमलासा नगर	१५४
रावतफलोधी	५६१	शाकमडगपुर	४५८
राहेरी	३७२	शाकवाटपुर	१५०
रेवाडी	६२, २५१	शाहजहांनाबाद	४७, १०८, ५०२
रैणपुरा	५६२		६०१

शिवपुरी	७३५	सागवत्तन नगर (सागवाडा)	१५४
सुजाउलपुर	८०	सागवाडपुर	५०८
शेरगढ	६८२, ७७१	सागवाडा	६७, १४१
शेरपुर	५०, २१२, ३६६	सादडी	३१३
शेरपुरा	१३६	सामोद	८३
श्रीपत्तन	१३८	सारकग्राम	७
श्रीपथ	८५, ३६५	सारंगपुर	८५, १२६
संग्रामगढ	२१४	सालकोट	५६६
संग्रामपुर	३४१, ५५४	साहीवाड	४६०
सांखीण	१६०	सिकदरपुर	४४
सांगानायर (सांगानेर)	६७८	सिकदराबाद	७७, १४२, १५५, ३६७
सांगानेर	३४, ६३, ७३, ६३, १३६ १४४, १४८, १४६, १५३ १५६, १६४, १८१, २०२ २०७, २२६, ३०१, ३७१ ३८४, ३६५, ४०८, ४२० ४६०, ४८५, ४८८, ७७५	सिमरिया	५६५
सांगिवती (सांगाधर)	१६५	सिरोही	५६२
सांभर	३७१	सीकर	४६६
सथाणा नगर	२६०	सिरोज	८४, ६१३
सनावद	३४२	सीलपुर	२५६
समरपुर	४८७	सीलोरनगर	३४, १२६
समीरपुर	१२७	सुपोट	३६७
सम्मेदगिखर	३७३, ६७८	सुवेट	३६७
सल्लक्षणपुर	२४३	सुभोट	३६७
सवाई माधीपुर	६३, ७०, १३२, १५४ ३७०, ६६३	सुम्हेरवाली आंधी	३७२
सहारनपुर	३३७	सुरंगपत्तन	३८६
सहिजानन्दपुर	२७६	सुआनगर	५८१
भाकेत नगरी	३	सूरत	६७०
		सूर्यपुर	५५६
		सेवाणो	५६१
		सोनागिरि	५५६, ६७४, ७३०
		सोभंत्रा (सोजत)	१६१
		सौरठदेश	५६७
		हांसी	१८१

ग्राम एवं नगरों की नामावलि]

हिण्डीन	२५०, २६६, ७०१, ७२६	हाथरस	१४३
हथिकंतपुर	५६७	हिरणौड	२०२
हरसौर	१८४	हिमाचल	३६७
(गढ) हरसौर	६३६	हिरणोदा	६४४
हरिदुर्ग	२००, २६६	हिसार	६२, २७८
हरिपुर	१६७	हीरापुर	२३०
हलसूरि	७३४	हुडवतीदेश	१७
हाडौती	६०४	होलीपुर	१८८



★ शुद्धाशुद्धि पत्र ★

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
१×४	अथ प्रकाशिका	अर्थ प्रकाशिका
६×८	धिकउ	किधउ
७×२६	गोमट्टसार	गोम्मटसार
१६×६	३०४	३१४
१७×१६	१८१४	१८४४
३१×११	तत्त्वार्थ सूत्र भाषा	तत्त्वार्थ सूत्र भाषा-जयवंत
३८×१०	वे. सं. २३१	वे. सं. १६६२
४४×५	५४५	५४६
४४×२४	वष	वर्षे
४८×२२	—	५६६
५०×१२	नयचन्द्र	नयनचन्द्र
५३×१	कात	काल
५५×२६	सह	साह
५६×१५	र. काल	ले० काल
६३×६	न्योपार्जि	न्यायोपार्जित
६६×१०	भूधरदास	भूधरमिश्र
६६×१३	१८७१	१८०१
७५×१८	बालाविवेध	बालावबोध
७५×२१	आधार	आचार
७६×१३	श्रीनंदिगण	—
६८×१	सोनागिर पच्चीसी	सोनागिरपच्चीसी
६६×६	१४ वीं शताब्दी	१६ वीं शताब्दी
१०४×२०	१४४१	१३४१
१२१×१	धर्म एवं आचारशास्त्र	अध्यात्म एवं योग शास्त्र

पत्र एवं पंक्ति

१३१×१

१४०×२८

१४६×७

१४६×७

१६४×१०

१६५×१

१७१से१७६

१७६×२८

१८१×१७

१६२×६

१६२×१४

२०८×६

२१६×११

२१६×६

२४२×२५

२६४×१६

३११ . १२

३१६×१०

३२०×१५

३३६×१३

३६६×-

३८५×१

३८६×५

३६६×४

४०१×२१

४५६×२५

४६४×१२

५०२×८

५५७×२

अशुद्ध पाठ

त्र

१७२८

१० काल

१०४०

सं० १७८५

क्र० सं० ३००० से ३०५८

रङ्गू

ढमल्ल

३२१८

भट्टार

१७७५

आकाशपंचमीकथा

धर्मचन्द्र

वर्द्धमानमानस्य

२१२०

३२८

नेमिचन्द्राचार्य

३६३

भक्तिलाल

३६८-३७५

कल्याणमन्दिर स्तोत्र टीका

—

अणुभा

भूपालचतुर्विंशति

संस्कृत

भादवापुरी

पञ्चगुरुकल्याण पूजा

पाटोकी

शुद्ध पाठ

व

१८२८

१० कालसं० १६६६

ले० काल

२०४०

सं० १५८५

क्र० सं० २१०० से २१५८

कवि तेजपाल

नाढमल्ल

२३१८

भट्टारक

१७१५

आकाशपंचमीकथा

देवेन्द्रकीर्ति

वर्द्धमानमानस्य

३१२०

३२८०

पद्मनन्दि

३३६३

भक्तिलाभ

३६६-३७६

कल्याणमाला

और

कनककुशल

भूपालचतुर्विंशतिटीका

हिन्दी

भादवासुदी

पञ्चगुरुकल्याण पूजा

पाटोदी

पत्र एवं पक्ति

५७३×१६

५७४×१२

५७४×१३

५७५×१०

५७६ २०

५८८×१७

५९१×१०

५९४×१८

६०७×२२

६१६×२

६१५×१७

६२३×२३

६२३×२४

६२८×१४

६२८×२१

६३५×१०

,, ×१६

६३६×१४

६३७×१०

६३६×१०

,, ×२६

६४२×६

६४५×४

६४८×६

६४६×१७

६६१×२

६७०×१५

६७१×१२

६८०×२५

६९१×६

अशुद्ध पाठ

संस्कृत

संस्कृत

—

संस्कृत

रसकौतुकरायसभा रञ्जन

छानतराय

”

सोलकारणरास

पद्मवतीछन्द

पडिकम्मणसूल

५४५१

नानिगरास

जग

प्राकृत

योगिचर्चा

अपभ्रंश

आ० सोमदेव

अपभ्रश

स्वयम्भूस्तोत्रइष्टोपदेश

पंकल्याण पूजा

त

रामसेन

”

रायमल्ल

कमलमलसूरि

पधावा

पच्चीसी

ज्योतिषपटलमाला

कल्याणमन्दिर स्तोत्र

नन्दराम

शुद्ध पाठ

प्राकृत

प्राकृत

संस्कृत

अपभ्रंश

रसकौतुकराजसभा रञ्जन

छानतराय

—

सोलहकारणरास

पद्मावतीछन्द

पडिकम्मणसूत्र

५४३१

नानिगराम

जब

अपभ्रंश

योगचर्चा

प्राकृत

सोमप्रभ

संस्कृत

इष्टोपदेश

पंचकल्याणपूजा

कृत

रामसिंह

संस्कृत

ब्रह्म रायमल्ल

कमलप्रभसूरि

बधावा

जैन पच्चीसी

ज्योतिषपटलमाला

कल्याणमन्दिर स्तोत्र

नन्ददास

पत्र एवं पंक्ति	अशुद्ध पाठ	शुद्ध पाठ
७१६×६	नन्दराम	हिन्दी
७३१×२१	”	—
७३२×६	”	हिन्दी
७३३×३,४	हिन्दी	संस्कृत
७३३×५	”	हिन्दी
७३८×२६	ब्रह्मरायवल्ल	ब्रह्म रायसल्ल
७५०×६	मनसिंघ	मानसिंह
७५४×१८	अभवदेवसूरि	अभयदेवसूरि
७५५×१७	”	अषभ्रंश
७६५×५	१८६३	१६६३



